तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (2)

(पारा 6 से 10 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर
"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम.ए. अलीग.)

http://salfibooks.blogspot.com

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

इस्लामी दुनिया की निहायत मोतबर क़ुरआनी तफ़सीर। मुस्लिम उलेमा इस पर एकमत हैं कि इसके बाद की तमाम क़ुरआनी तफ़सीरों में इससे मदद ली गयी है।

Maktab E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर

जिल्द (2)

(पारा 6 से 10 तक)

तफ़सीर

अबुल-फ़िदा इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर

"अ़ल्लामा इब्ने कसीर" रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हिन्दी अनुवादक

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

रीडर अ़ल्लामा इक़बाल यूनानी मेडिकल कॉलेज, मुज़फ़्फ़र नगर (उ.प्र.)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

http://salfibooks.blogspot.com

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

Maktab E Ashraf

तफ़सीर इब्ने कसीर - जिल्द (2)

(पारा 6 से 10 तक)

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम.ए. (अलीग.)

ISBN 81-7231-982-7

प्रथम संस्करण - 2011

पुनः प्रकाशन - 2015

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा० लि०)

1511-12, पटौदी हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)
फोन : +91-11-23244556, 23253514, 23269050, 23286551
e-mail: info@ibsbookstore.com
Website: www.ibsbookstore.com

OUR ASSOCIATES

- Angel Book House FZE, **Sharjah (U.A.E.)**
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kingdom)**
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarata (Indonesia)**
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**

Printed in India

Maktab E Ashraf

समर्पित

✿ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला के कलाम क़ुरआन मजीद के प्रथम व्याख्यापक, हादी-ए-आ़लम, आख़िरी पैग़म्बर, तमाम नबियों में अफ़ज़ल **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम** के नाम, जिनका एक-एक क़ौल व अ़मल कलामे रब्बानी और मन्शा-ए-इलाही की अ़मली तफ़सीर था।

✿ **दारुल-उलूम देवबन्द** के नाम, जो क़ुरआन मजीद और उसकी तफ़सीर (हदीसे पाक) की अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमत और दीनी रहनुमाई के सबब पूरी इस्लामी दुनिया में एक मिसाली संस्था है। जिसके इल्मी फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद (लाभान्वित) होने के सबब इस नाचीज़ को इल्मी समझ और क़ुरआन मजीद की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

✿ वालिदे मोहतरम **जनाब मुहम्मद दीन त्यागी मरहूम** के नाम, जिनकी जिद्दोजहद, मेहनत भरी ज़िन्दगी और बहाया हुआ पसीना मेरी रग व जाँ में ख़ून के क़तरे बनकर दौड़ रहा है, जो मेरी जिस्मानी और इल्मी ऊर्जा का ज़ाहिरी सबब है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktaba Ashraf

दिल की गहराईयों से शुक्रिया

❁ मोहतरम जनाब अ़ब्दुस्समी साहिब (मालिक समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) का, जिनकी मुहब्बतों, इनायतों, क़द्रदानियों और मुझे अपने इदारे से जोड़े रखने के सबब क़ुरआन मजीद की यह अहम ख़िदमत अन्जाम पा सकी।

❁ मोहतरम जनाब हाजी मुहम्मद शाहिद अख़्लाक़ साहिब (पूर्व मेयर/सांसद लोक सभा, मेरठ शहर) का, जिनकी नवाज़िशों, मुहब्बत व इनायत, ख़ास तवज्जोह, हौसला-अफ़ज़ाई, दुआ़ओं, उलेमा नवाज़ी और हर तरह की मदद ने शौक़ व जज़्बात में नई उमंगें पैदा कीं, जिससे इस काम के पूरा करने में बड़ी मदद मिली।

❁ जनाब मौलाना मुफ़्ती निसार अहमद शम्सुल-हुसैनी साहिब का, जिन्होंने मेरी इस कोशिश को आंशिक रूप से मुलाहिज़ा फ़रमाकर मेरी और इसका प्रकाशन करने वाले इदारे की सराहना की।

अल्लाह तआ़ला इन सब हज़रात और इनके अ़लावा मेरे दूसरे सहयोगियों, सलाह मश्विरा देने वालों, शुभ-चिन्तकों और हौसला बढ़ाने वाले हज़रात को भी अपनी तरफ़ से ख़ास जज़ा और बदला इनायत फ़रमाये जो क़दम-क़दम पर मेरी हिम्मत बढ़ाते और मेरी मामूली कोशिशों को सराहते हैं। आमीन या रब्बल्-अ़लमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktab E Ashraf

प्रकाशक की ओर से

अल्लाह रब्बुल-आलमीन का बेहद करम व एहसान है कि उसने मुझे और मेरे इदारे (समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस नई दिल्ली) को इस्लामी किताबों के प्रकाशन के ज़रिये अपने दीन की अदना ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़ा।

माशा-अल्लाह हमारे इदारे से क़ुरआन पाक, हदीस मुबारक और दीनी विषयों पर अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बल्कि मुझे कहना चाहिये कि ख़िदमत का एक मैदान ऐसा है जिसको पूरा करने में इस्लामिक बुक सर्विस के हिस्से में जो दीनी ख़िदमत आई है देहली की दूसरी प्रकाशन-संस्थाओं को वह मक़ाम नहीं मिल सका। मेरी मुराद अंग्रेज़ी भाषा में इस्लामिक किताबों का मेयारी प्रकाशन और अमेरिकी व यूरोपीय देशों में इस्लामी तालीमात से वाक़फ़ियत तलब करने वालों तक इस्लामिक लिट्रेचर का पहुँचाना है। अल्लाह का करम व फ़ज़्ल है कि इस्लामिक बुक सर्विस के द्वारा प्रकाशित क़ुरआन पाक के अ़रबी और इंग्लिश तर्जुमे पूरी दुनिया में फैले हुए और मक़बूल हैं।

सन् 2003 में हमने हिन्दी भाषा में अनुवादित क़ुरआन करीम प्रकाशित किया। यह **हकीमुल-उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह.** के तर्जुमे (यानी 81 नम्बर क़ुरआन पाक) का हिन्दी संस्करण था। जिसको इस्लामिक बुक सर्विस की दरख़्वास्त पर एक मुआ़हदे के तहत **जनाब मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी साहिब** ने हिन्दी ज़बान में तर्जुमा किया था। अल्लाह का शुक्र है कि इस तर्जुमे को उर्दू की तरह हिन्दी भाषा में भी बहुत ज़्यादा मक़बूलियत हासिल हुई और हिन्दी में क़ुरआन पाक का तर्जुमा पढ़ने वालों ने इसे हाथों-हाथ लिया।

बहुत दिनों से मेरे दिल में यह बात खटकती थी कि हिन्दी भाषा में क़ुरआन पाक की कोई ऐसी तफ़सीर नहीं है जो हर तब्क़े के लिये क़ाबिले क़ुबूल हो। मैंने इसका ज़िक्र **मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी** से किया। उन्होंने बताया कि मेरा इरादा "तफ़सीर इब्ने कसीर" पर काम करने का है, और इस बारे में वह काम का एक ख़ाका भी तैयार कर चुके हैं। मैंने कहा सुब्हानल्लाह! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। और उनसे समी पब्लिकेशंस नई दिल्ली के लिये इस तफ़सीर को हिन्दी में तैयार करने का आग्रह किया। उन्होंने इसको मन्ज़ूर कर लिया और इस तरह मौजूदा ज़माने की एक अहम ज़रूरत की तकमील का सामान मुहैया हो गया।

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी की हिन्दी और उर्दू में दर्जनों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह लेखक भी हैं और अनुवादक भी। उनकी लिखी और अनुवाद की हुई पचास से ज़ायद किताबें मार्केट में मौजूद हैं। वह अपने तर्जुमे में न तो अ़रबी और फ़ारसी के अलफ़ाज़ को ज्यों का त्यों बाक़ी रहने देते हैं और न ही मुश्किल और कठिन हिन्दी शब्दों को इस्तेमाल करते हैं। एक आ़म हिन्दुस्तानी ज़बान, जो ख़ास तौर पर मुस्लिमों में बोली और समझी जाती है, उसका इस्तेमाल करते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआनी ख़िदमत की हिन्दी ज़बान में यह अहम कड़ी आपके सामने है। उम्मीद है कि आपको पसन्द आयेगी और क़ुरआन पाक के पैग़ाम को समझने और उसको आ़म करने में एक अहम रोल अदा करेगी।

हमने इस तफ़सीर को पाँच-पाँच पारों पर तक़सीम किया है। इस तरह मुकम्मल तफ़सीर छह जिल्दों में है। जो चार हज़ार से ज़्यादा पृष्ठों पर मुश्तमिल है।

मैं अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ होने पर सरे नियाज़ झुकाता हूँ और उस पाक ज़ात का बेहद शुक्र अदा करता हूँ। अल्लाह तआ़ला क़ुरआन पाक की इस ख़िदमत को आक़ा-ए-नामदार नबी-ए-रहमत, हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये, आपकी आले पाक और अहले-बैत के लिये, आपके सहाबा किराम के लिये, तमाम बुज़ुर्गाने दीन और उलेमा-ए-किराम के लिये, मेरे और मेरे माँ-बाप, अहले ख़ानदान, अहल व अ़याल और मेरे इदारे से जुड़े तमाम हज़रात के लिये मग़फ़िरत व रहमत और ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाये। आमीन

अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार

अ़ब्दुस्समी

चेयरमैन

समी पब्लिकेशंस/इस्लामिक बुक सर्विस, नई दिल्ली

Maktab E Ashraf

फ़ेहरिस्ते उनवानात

पारा नम्बर 6-10

उनवान	पेज
समर्पित	3
दिल की गहराईयों से शुक्रिया	4
प्रकाशक की ओर से	5
पारा नम्बर छह	
बुराईयों को फैलाना बुरा इक़्दाम है	17
अम्बिया और रसूलों पर ईमान लाना वाजिब है	19
आपकी नुबुव्वत का इनकार अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की वजह से था	20
यहूदियों के बेहूदा मुतालबे	21
यहूद को उनकी लगातार नाफ़रमानियों पर इब्रतनाक सज़ा	23
ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान पर उठाया जाना	24
ईसाईयत अनेक फ़िर्क़ों में	26
यहूदियों का आपसी इख़्तिलाफ़	28
एक भविष्यवाणी	29
रिवायत और फिर उसकी अ़क़्ली दलील	30
हज़रत ईसा से मुताल्लिक़ हदीसें	31
हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम	32
दज्जाल का निकलना	32
याजूज व माजूज	33
क़ियामत की निशानियाँ	33
हज़रत ईसा अ़लैहि. का उतरना	34
दज्जाल और उसकी निशानियाँ	34
एक और फ़ितना	35
ईसा अ़लैहिस्सलाम की बरकतें	36
अम्बिया का हुलिया	40
नाफ़रमानी ख़ुदा की नेमतों से मेहरूम होने का सबब	42
दीन में एकता	43
अम्बिया की तादाद	44
क़ुरआन मजीद अल्लाह का कलाम है	49
ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल हैं	51
ईसा अ़लैहिस्सलाम का इम्तियाज़ बन्दा होने में है	54
हक़्क़ानियत की दलीलें और हुज्जतें क़ायम की जा चुकीं	55
मीरास के चन्द मसाईल	56
तफ़सीर सूरः मायदा	60
सूरः मायदा	
हराम और हलाल चीज़ें	62
वो महीने जिनमें जंग हराम है	65
एक उसूल	68
अ़दल का हुक्म	68
अ़दल की वजह से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं	68
बाज़ हराम चीज़ें को बयान	70
फ़ाल और उसकी हुर्मत	73

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
इस्तिख़ारा	79
हलाल चीज़ें	85
अहले किताब का ज़बीहा और उसका शरई हुक्म	90
दाम्पत्य जीवन के अहकाम	92
वुज़ू और उससे मुताल्लिक़ अहकाम	95
अल्लाह की नेमत का शुक्र	107
एक वाक़िआ	108
बनी इस्राईल से कुछ वादे	109
इमाम मेहदी	111
शियों का ग़लत अक़ीदा	111
हुज़ूरे पाक का नबी बनकर आना और अहले किताब का फ़र्ज़	112
ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा कहना कुफ़्र है	114
आपके नबी बनकर आने के बाद कोई उज़्र नहीं सुना जायेगा	115
नुबुव्वत और बादशाहत ख़ुदा के दो इनाम हैं	118
बनी इस्राईल की नाफ़रमानी	119
औ़ज बिन उनुक़	121
अ़जायबात	123
रू-ए-ज़मीन पर पहला क़त्ल	125
इनसान का क़त्ल कायनात का क़त्ल है	131
हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का मामला	137
अच्छे आमाल का वसीला	139
अ़ज़ाब दर अ़ज़ाब	140
एक वाक़िआ	140
चोरी और उससे संबन्धित अहकाम	142

उनवान	पेज
क़ुरआन के मज़ामीन को बदलना बहुत बड़ा जुर्म है	146
क़िसास का हुक्म	151
एक उसूल	152
तौरात व इन्जील	154
क़ुरआन की बड़ाई और शान	156
अल्लाह के दुश्मनों से दोस्ती और दिली ताल्लुक़ रखना ईमान की कमज़ोरी है	160
शाने नुज़ूल	161
इस्लाम लाने बाद उससे फिर जाना	162
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिदायतें	163
दीन के साथ मज़ाक़ करना	165
काफ़िर लोग मुसलमानों से नफ़रत रखते हैं	167
यहूद की बकवास	169
इस्लाम का प्रचार व प्रसार पैग़म्बर का फ़र्ज़ है	172
इस्लाम के अ़लावा और कोई दीन क़ाबिले एतिबार नहीं	176
अहले किताब से अ़हद लिया गया था	176
ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के बेटे नहीं हैं	178
शिर्क का रद्द	180
यहूद पर लानत	181
यहूदी मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन हैं	184

पारा नम्बर सात

उनवान	पेज
क़ुरआन मजीद का दिलों पर असर	186
हराम व हलाल होना	187

Maktab-E-Ashraf

उनवान	पेज
कसम और हलफ़ का बयान	191
शैतानी आमाल	194
शराब हराम होने के सिलसिले में हदीसें	195
हज़रत उमर रज़ि. और शराब का हराम होना	196
सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और उनकी इताअ़त का प्रदर्शन	198
शराब और लानत	198
शराब के नुक़सानात	201
शराब और बदकारी	201
इम्तिहान या आज़माईश	203
एहराम में बाज़ जानवरों को मारने की इजाज़त	203
फ़िक़्ही मतभेद	205
इसे मसले से संबन्धित पहले उलेमा और बुज़ुर्गों के अक़्वाल	208
ख़ास हालात में इजाज़त	210
अच्छी और बुरी चीज़ें बराबर नहीं हो सकतीं	214
अपनी शरीअ़त खुद बनाये हुए क़ानून	217
बुत-परस्ती की बुनियाद डालने वाला	218
हिदायत और गुमराही	220
वसीयत की अहमियत और उसके अहकाम	224
पैग़म्बरों की गवाही	227
ईसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ और कुछ तफ़सीलात	229
आसमानी दस्तरख़्वान	231
हवारियों की मायदा से मुताल्लिक़ रिवायतें	232

उनवान	पेज
सवाल व जवाब का मुहासबा	237
क़ियामत के दिन इनसान के अहवाल	238
रहमत व मग़फ़िरत	239
सच्चाई को पसन्द करना और उसके परिणाम	240
सूरः अन्आ़म	
ख़ुदा एक है और वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है	242
अल्लाह की निशानियों का इनकार और मुँह मोड़ना	244
ईमान की कोई उम्मीद नहीं	245
अल्लाह के एक होने, उसकी रहमत और आख़िरत के दिन का ज़िक्र	247
मुश्किलों को दूर करने वाला ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं	249
क़ियामत के दिन सवाल व जवाब और आमाल का हिसाब	251
क़ियामत और काफ़िरों के हालात	253
झुठलाना और घाटा उठाना	255
नबी करीम को तसल्ली व दिलासा	256
क़ुरआन की तासीर	257
अल्लाह की निशानियों के मज़ाहिर	259
क़ादिर व तवाना	262
काफ़िरों को धमकी व डाँट	263
हुज़ूर सल्ल. ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं	266
नबी अपनी मर्ज़ी से अ़ज़ाब नहीं ला सकता	270
आ़लिमुल-ग़ैब	271
वही पैदा करता है और वही मारता है	273
मुसीबतों से निजात देने वाला	275

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
इस्लाम के मुख़ालिफ़ों का बायकाट ज़रूरी है	279
काफ़िरों और ख़ुदा के इनकारियों से ताल्लुक़ व दोस्ती ख़त्म करना	281
बुतपरस्ती में न दीन का नफ़ा है न दुनिया का	283
पिंडली का जलवा दिखाना	288
गुनाहगारों के शफ़ी	289
दावते इस्लाम और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दावते तौहीद	292
कायनात में इबरत की निगाह डालना	295
हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का बातिल-परस्तों से मुनाज़रा	297
ईमान और उसके तक़ाज़े	299
हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर करम व इनायत	301
अल्लाह के रसूल और उसकी किताबों का इनकार करने वालों से ख़िताब	306
ख़ुदा पर बोहतान सबसे बड़ा ज़ुल्म है	309
ख़ुदा पूरी तरह हर चीज़ पर क़ादिर है	312
तरह-तरह की मख़्लूक़ात	314
अब भी ख़ुदा के शरीक ठहराते हो?	315
बुलन्द रुतबे वाला पाक ख़ुदा	316
हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला ख़ुदा	317
हक़ की दलीलें वाज़ेह हो चुकीं	320
मुश्रिकों को ज़्यादा मुँह न लगाईये	321
मुश्रिकों के माबूदों को बुरा-भला मत कहो	322
मुश्रिकों का अपने आपको धोखा देना	323

पारा नम्बर आठ

उनवान	पेज
मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों के लिये हुज्जत का पूरा होना भी कारामद नहीं है	325
दीन के दुश्मन हर उम्मत में हुए हैं	326
मोमिन ख़ुदा के ग़ैर को ख़ुदा नहीं बना सकता	329
यह गुमराही है	330
हर चीज़ के हराम व हलाल होने में अल्लाह का फ़ैसला नाफ़िज़ है	330
गुनाह छोड़ दो	331
यह हराम है	331
मोमिन और काफ़िर की मिसाल	335
नाफ़रमानी करने वाले सचेत हो जाएँ	337
हिदायत और गुमराही ख़ुदा के इरादे पर मौक़ूफ़ है	339
इस्लाम ही सीधा रास्ता है	340
गुमराही जहन्नम का एक रास्ता है	341
बुरे अ़मल वाले एक दूसरे के अन्जाम में शरीक	342
दुनिया की ज़िन्दगी एक धोखा है	343
आमाल का हिसाब-किताब ज़रूरी है	345
वह हर चीज़ पर क़ादिर है	346
यह क्या इन्साफ़ है?	348
औलाद को क़त्ल करना शैतानी वस्वसा था	348
मनमानी कार्रवाईयाँ	349
यह भी ग़लत है	350
औलाद का क़त्ल करना बड़ा ज़ुल्म था	350
अल्लाह तआ़ला की कुछ खुली निशानियाँ	351

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
जाहिलीयत के कुछ रिवाज और रस्में	354
शरीअत की रोशनी	355
यहूद पर कुछ चीज़ें हराम की गई थीं	357
अहकाम में मामूली-सा फेर-बदल भी अज़ाबे इलाही को ले आता है	357
मुजरिम लोग अपने बुरे अन्जाम को पहुँचेंगे	358
यह दलील बेकार है	359
ये अहकाम हैं	261
यतीम का माल खाना सख़्त गुनाह है	364
सीधा रास्ता	365
मुबारक किताब	367
क़ुरआन का नाज़िल होना दर हक़ीक़त हुज्जत का पूरा होना है	368
अब किस बात का इन्तिज़ार कर रहे हैं?	370
ख़ुदा तआ़ला से अलग हो जाने वालों का बयान	372
अच्छाई पर अज्र व सवाब बढ़ जाता है	373
ख़ुदा की नेमतों का ऐलान हुज़ूर सल्ल. की ज़बान से	375
हर शख़्स अपने किये का ज़िम्मेदार है	378
ज़मीन की ख़िलाफ़त	379
सूरः आराफ़	
एक किताब जिसकी इत्तिबा वाजिब है	381
इनकार और फिर ख़ुदा का अज़ाब	382
आमाल का तौला जाना	384
एक वज़ाहत	384
नेमत की नाशुक्री	385
इनसान पर किया गया एक और इनाम	386
शैतान का ग़ुरूर व घमंड	387
शैतान का तकब्बुर और उस पर हमेशा की लानत	388
शैतान मलऊन की जुर्रत व हिम्मत	388
इबरत-अंगेज़ अन्जाम	390
शैतान की गुमराह करने वाली कोशिशें	391
प्रतिबन्धित पेड़ का इस्तेमाल, उसके असरात और हज़रत आदम का अल्लाह की तरफ़ रुजू व ख़ता का इक़रार	392
अल्लाह के अहकाम और उनका निफ़ाज़	393
परहेज़गारी का लिबास	394
शैतानी बहकावे और फ़रेब से हिफ़ाज़त का एहतिमाम	396
बुराईयों को अल्लाह की तरफ़ मन्सूब करना गुस्ताख़ी है	397
मस्जिदों के लिए एहतिमाम	399
शरीअ़त में उलट-फेर का किसी को हक़ नहीं	401
बुराईयों को छोड़ने का हुक्म	401
मौत टल सकती है लेकिन वक़्त नहीं टल सकता	402
हसरत व नाकामी	402
नतीजा जहन्नम	403
काफ़िरों पर जन्नत हराम कर दी गई है	405
शरीअ़त के अहकाम ताक़त के मुताबिक़ होते हैं	408
जन्नती और दोज़ख़ी लोगों की एक गुफ़्तगू	410
आराफ़ का स्थान	411
गुफ़्तगू और बातचीत	413

Maktaba E Ashraf

उनवान	पेज
जहन्नमियों की दरख़्वास्त	415
हिदायत की किताब	417
छह दिन	418
ख़ुशू व ख़ुज़ू	420
रहमत की हवाएँ	422
लगातार तब्लीग़	424
नबी के भेजे जाने पर हैरत क्यों?	425
क़ौमे आद और उनके पैग़म्बर	426
बुत-परस्ती के साथ बाप-दादाओं की भी पूजा	428
क़ौमे समूद	432
नबी की नसीहत पर अ़मल न करने का नुक़सान	437
क़ौमे लूत	438
नाफ़रमानी	439
सख़्त और बड़ा अ़ज़ाब	439
मदयन	440
कुछ नसीहतें	441
पारा नम्बर नौ	
सरकशी और दुश्मनी का इबरतनाक अन्जाम	443
घाटे में पड़ना बदबख़्त क़ौम ही का हिस्सा है	444
बेज़ारी	445
बदनसीब क़ौमें ख़ुदा के अ़ज़ाब की मुस्तहिक़ हैं	445
ईमान की बरकतें	447
उनके दिलों पर बन्द लगे हुए हैं	448
बस्तियों के अफ़साने	449
अल्लाह का दुश्मन फ़िरऔ़न	450
तब्लीग़ और हिदायत व रहनुमाई	451

उनवान	पेज
हज़रत मूसा अ़लैहि. के मोजिज़ात	451
तोहमत लगाना और जादूगरी के इल्ज़ामात	452
झूठ के पुजारियों का धावा बोलना	453
बातिल-परस्ती की एक और मिसाल	453
जादू यह था	454
हक़ की फ़तह, बातिल की शिकस्त	455
ईमान के बाद सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही का डर	456
फ़िरऔ़नियों का बनी इस्राईल के बच्चों को ज़िबह करने का मन्सूबा	458
कुफ़्र की नहूसत	459
अल्लाह के अ़ज़ाब का न टूटने वाला सिलसिला	460
आख़िरी अ़ज़ाब और फ़िरऔ़न की हलाकत	463
सदियों का कुफ़्र व शिर्क फिर रंग लाया	465
शुक्र के बजाय नेमत की नाशुक्री	466
अ़ज़ीमुश्शान इनाम	466
तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते	467
कलीमुल्लाह (अल्लाह के साथ कलाम करने वाले)	470
सीधी राह	471
गाय के बछड़े की पूजा	473
हज़रत मूसा व हारून और मूसा अ़लैहिस्सलाम की नाराज़गी व ग़ुस्सा	474
बछड़े को पूजने की इबरतनाक सज़ा	475
हिदायत की किताब	476
सत्तर आदमियों की गुस्ताख़ी, ख़ुदा का क़हर और मूसा अ़लैहि. की परेशानी	477
रहमत व ज़हमत	479

Maktab E Ashraf

उनवान	पेज
नबी-ए-उम्मी	481
तमाम दुनिया जहान के रसूल	487
हक़ की पैरवी करने वाले	489
अल्लाह के अहकाम से खेल करने का इबरतनाक अन्जाम	491
नेक कामों का हुक्म करने की बरकतें	492
हमेशा की फटकार	495
विभिन्न जमाअ़तें विभिन्न काम	496
पहाड़ सर पर	497
अ़हदे अलस्त	499
रहमत के बाद लानत	503
हिदायत और गुमराही	508
जहन्नम का ईंधन	509
ख़ुदा तआ़ला को अच्छे नामों से याद करो	510
हिदायत पाने वाली उम्मत	511
मज़बूत हाथ	512
मजनूँ व दीवाना नहीं	512
इबरत की निगाह	513
गुमराही से निजात नहीं	514
क़ियामत का किसी को इल्म नहीं	514
हुज़ूरे पाक सल्ल. ग़ैब के आ़लिम नहीं थे	517
शुक्र के बजाय नाशुक्री	519
दुनिया में सबसे ज़्यादा कमज़ोर मख़्लूक़ बुतों के पुजारियों के माबूद हैं	522
नेक कामों का हुक्म करना	525
शैतान के बहकावे से महफ़ूज़ रहने का कामयाब तरीक़ा	527
अल्लाह की तरफ़ से आये अहकाम की इत्तिबा	529
अल्लाह का कलाम सुनने के आदाब	529
ख़ुदा तआ़ला से सरगोशी	531
सूरः अनफ़ाल	
माले ग़नीमत की तक़सीम तरीक़ा-ए-तक़सीम और उसके बारे में अहकाम वग़ैरह	533
इस आयत नाज़िल होने का दूसरा सबब	535
नर्म-दिली ईमान की निशानी है	538
बदर की लड़ाई, मोमिनों पर नाज़ुक हालात का असर और रहमते इलाही की मदद	541
अल्लाह की मदद	546
एक और रास्ते से मदद	550
जंग से भागना कुफ़्र है	554
असली कारसाज़ अल्लाह है	557
तेरा फ़ैसला तेरे हाथों में है	559
इताअ़ते ख़ुदा और उसके बाद इताअ़ते रसूल	560
इत्मीनान नहीं है	561
बहुत बड़ी आज़माईश	563
बड़ा इन्क़िलाब	565
ख़ियानत बड़ा पाप है	566
तक़वे और परहेज़गारी की बरकतें	568
कमज़ोर तदबीरें और ग़ालिब तदबीर	568
काफ़िरों की बकवास और बेहूदा बातें	571
दुनिया का वह ज़ुल्म व ज़्यादती जिसकी दुनिया की तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती	574
बेफ़ायदा ख़र्च, नफ़ा बरबाद और नुक़सान लाज़िम	576

Maktaba E Ashraf

उनवान	पेज
तौबा पिछले तमाम गुनाहों को मिटा देती है	578
पारा नम्बर दस	
ग़नीमतों की तक़सीम	582
हालात का मुवाफ़िक़ न होना और अल्लाह की मदद का ज़बरदस्त मुज़ाहरा	587
मदद व ताईद एक नई शक्ल में	590
अल्लाह का ज़िक्र एक कारामद हथियार	591
शैतानी फ़रेब का पर्दा चाक हो गया	593
फ़रिश्तों का काफ़िरों पर टूट पड़ना और काफ़िरों का जहन्नम रसीद होना	597
फ़िरऔन और उसकी हलाकत	598
क़ुदरत का क़ानून	598
कुफ़्फ़ार एक घिनौनी मख़्लूक़ हैं	599
जंग न करने का मुआहिदा और अहद का तोड़ना	599
जिहाद की तैयारी	601
जंग न करने का मुआहिदा	603
निडर रहिये और जिहादी हिम्मत पैदा कीजिये	605
एक ग़ैर-मुनासिब इक़्दाम	606
जज़ा या सज़ा	609
मुसलमानों के शानदार कारनामे	612
कुफ़्र का फ़ितना	613
ईमान, हिजरत और जिहाद	614
सूरः तौबा	
मक्का के आस-पास में सिर्फ़ मुसलमान रह सकते हैं	616
ख़ुदा का दीन ग़ालिब है	618
अहद का पूरा करना	621

उनवान	पेज
अब जंग का इक़्दाम सही है	621
अमन की तलब और इस्लामी हुक्म	624
अमल में बराबरी	625
क़ुरआन का बयान और उसकी सच्चाई पर इतिहास की मोतबर गवाही	626
अभी मौक़ा है कि वे अपनी सरकशी से बाज़ आ जायें	626
अहद को तोड़ें तो उनसे लड़ो	627
तुम्हारे हाथों काफ़िरों पर अज़ाब	628
एक ख़ुदा को मानते हो तो इसका सुबूत दो	629
मस्जिदों को मुश्रिक लोग आबाद नहीं कर सकते	630
बड़ा कारनामा, बड़ा अज्र व सवाब	632
काफ़िरों से कोई रिश्ता और ताल्लुक़ नहीं	634
हुनैन का दिन	635
एक मनाही	640
यहूद व ईसाईयों के ज़ेहनी धोखे	643
अल्लाह के नूर का बोल-बाला	644
ग़लत तरीक़े से लोगों के माल को उड़ाना जुर्म है	647
बारह महीने	652
ख़ुदा के हुक्म के साथ मुश्रिकों का बुरा सुलूक	656
सहाबा के ईमानी जज़्बे और दीन पर जमाव का इम्तिहान ग़ज़वा-ए-तबूक	659
अपने रसूल की मदद के लिये उसका ख़ुदा काफ़ी है	660
जिहाद में शिर्कत का हुक्म	661
दुनिया की तलब	663

Maktaba Ashraf

उनवान	पेज
अल्लाह की शाने करम	664
गुनाह करके झूठा बहाना बनाना और भी बुरा है	665
इस्लाम की तरक़्क़ी और कुफ़्र की ताक़त टूटना	666
अपने आपको फ़रेब देना	667
मुनाफ़िक़ों की दुश्मनी व बैर	668
हालात का उलट-फेर और उतार-चढ़ाव	668
नाक़ाबिले एतिबार हालात	669
झूठी क़समें	670
एक ग़लत इल्ज़ाम	670
ज़कात व सदक़ात के मसारिफ़	671
मुनाफ़िक़ों का तकलीफ़ पहुँचाना	676
एक ही को राज़ी करो	676
मुनाफ़िक़ों की आपस में बातें	677
कितनी बड़ी जुर्रत	677
मुनाफ़िक़ हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे	679
उनके आमाल बरबाद हो गये	680
नाफ़रमान क़ौमों का अन्जाम इन्हें मालूम है	681
मुसलमान ख़ुदा की रहमत व शफ़क़त के मुस्तहिक़	681
मुसलमानों से ख़ुदा का वायदा	682
काफ़िर और मुनाफ़िक़ जहन्नम में जायेंगे	685
मुनाफ़िक़ अपने वादे से फिर गये	689
मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ	691
मुनाफ़िक़ों की बकवास और बेहूदा बातें	691
आपका इस्तिग़फ़ार मुनाफ़िक़ों के हक़ में मुफ़ीद नहीं	693
जहन्नम की लपट	694
पूरी तरह बायकाट	695
मुनाफ़िक़ की नमाज़े जनाज़ा	696
बहाने बाज़ियों की निंदा	698
मोमिनों की ख़ुसूसियत	699
मजबूरियाँ	700
इन पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं	701

Maktab E Ashraf

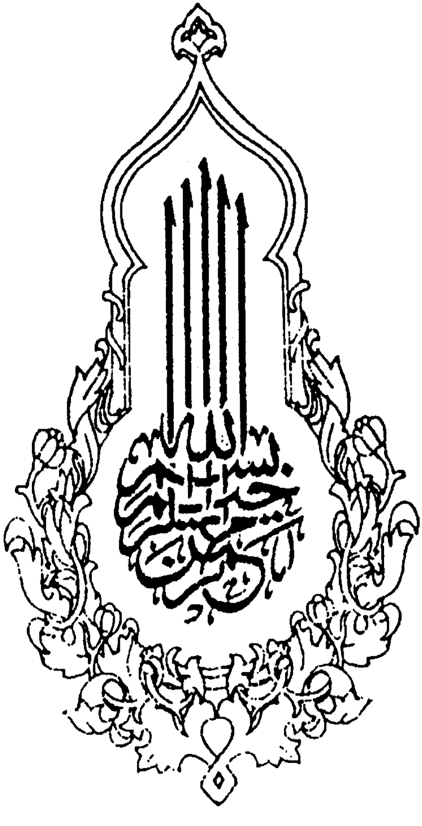

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर छह

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝	अल्लाह तआ़ला बुरी बात ज़बान पर लाने को पसन्द नहीं करते सिवाय मज़्लूम के, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब ज़ानते हैं। (148) अगर नेक काम ऐलानिया करो या उसको ख़ुफ़िया करो या किसी बुराई को माफ़ कर दो तो अल्लाह तआ़ला बड़े माफ़ करने वाले हैं, पूरी क़ुदरत वाले हैं। (149)

बुराईयों को फैलाना बुरा इक़दाम है

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि किसी मुसलमान को दूसरे के लिये बददुआ़ करनी जायज़ नहीं। हाँ जिस पर ज़ुल्म किया गया हो उसे अपने ज़ालिम के लिये बददुआ़ करनी जायज़ है, और वह भी अगर सब्र व संयम से काम ले तो फ़ज़ीलत इसी में है। अबू दाऊद में है कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की कोई चीज़ चोर चुराकर ले गये तो आप उनके लिये बददुआ़ करने लगीं, हुज़ूर रसूले मक़बूल सल्ल. ने सुनकर फ़रमाया- क्यों उसका बोझ हल्का कर रही हो? (यानी इस तरह उसे बददुआ़ देकर तुम उसके गुनाह को हल्का कर दोगी)। हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि उसके लिये बददुआ़ न करनी चाहिये, बल्कि यह दुआ़ करनी चाहियेः

اللّٰهم اعنى عليه استخرج حقى منه.

ऐ अल्लाह! उस चोर पर तू मेरी मदद कर और उससे मेरा हक़ दिलवा दे।

आपसे एक और रिवायत में है कि अगरचे मज़लूम (जिस पर ज़ुल्म हुआ हो) को ज़ालिम के हक़ में बददुआ़ करने की इजाज़त और छूट है मगर यह ख़्याल रहे कि हद से न बढ़ जाये (और चूँकि उस वक़्त में हद में रह पाना आ़म तौर पर मुश्किल है इसलिये अच्छा यही है कि बददुआ़ न करे)।

अ़ब्दुल-करीम बिन मालिक जज़री रह. इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि गाली देने वाले को यानी बुरा कहने वाले को बुरा तो कह सकते हैं, लेकिन बोहतान बाँधने (यानी झूठा इल्ज़ाम लगाने) वाले पर बोहतान न बाँधो। एक दूसरी आयत में हैः

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ.

जो मज़्लूम अपने ज़ालिम से उसके ज़ुल्म का इन्तिक़ाम (बदला) ले उस पर कोई पकड़ नहीं।

अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- दो गालियाँ देने वाले जो कहें उसका वबाल उस पर है जिसने शुरूआ़त की हो। हाँ अगर मज़्लूम हद से बढ़ जाये तो और बात है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी के यहाँ मेहमान बनकर जाये और मेज़बान उसका मेहमानी का हक़ अदा न करे तो उसे जायज़ है कि लोगों के सामने अपने मेज़बान की शिकायत करे, जब तक कि वह मेहमान-नवाज़ी का हक़ अदा न करे। अबू दाऊद और इब्ने माजा वग़ैरह में है कि सहाबा

Maktab E Ashraf

रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की कि आप हमें इधर-उधर भेजते हैं, बाज़ मर्तबा ऐसा भी होता है कि वहाँ के लोग हमारी मेहमान-नवाज़ी नहीं करते। आपने फ़रमाया सुनो! अगर वे अपने लायक़ मेज़बानी करें तो ख़ैर! वरना तुम उनसे अपने लायक़ ले लिया करो। मुस्नद अहमद की हदीस में फ़रमाने रसूल है कि जो मुसलमान किसी क़बीले वाले के यहाँ मेहमान बनकर जाये और सारी रात गुज़र जाये लेकिन वे लोग उसकी मेहमान-नवाज़ी न करें तो हर मुसलमान पर उस मेहमान की मदद ज़रूरी है, उस शख़्स के माल से उसकी खेती से उसकी मेहमान-नवाज़ी के बक़द्र उसको दिलवा दें (यह एक तरह से मेहमान की मेहमान-नवाज़ी की अहमियत बयान करना मक़सद है)।

मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि मेहमान-नवाज़ी की रात हर मुसलमान पर वाजिब है, अगर कोई मुसाफ़िर सुबह तक मेहरूम रह जाये तो यह उस मेज़बान के ज़िम्मे क़र्ज़ है, चाहे अदा करे चाहे बाक़ी रखे। इन अहादीस की वजह से इमाम अहमद रह. वग़ैरह का मज़हब है कि ज़ियाफ़त (मेहमान-नवाज़ी) वाजिब है। अबू दाऊद वग़ैरह में है कि एक शख़्स सरकारे दो आलम सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करता है कि या रसूलल्लाह! मुझे मेरा पड़ोसी बहुत तकलीफ़ पहुँचाता है। आपने फ़रमाया जा एक काम कर, अपना तमाम माल व असबाब घर से निकाल कर बाहर रख दे। उसने ऐसा ही किया और रास्ते पर असबाब (घर का सामान) डालकर वहीं बैठ गया। अब जो गुज़रता है वह पूछता है क्या बात है? यह कहता है मेरा पड़ोसी मुझे सताता है, मैं तंग आ गया हूँ। वह उसे बुरा-भला कहता है। कोई कहता है ख़ुदा की मार उस पर, कोई कहता है अल्लाह उसे ग़ारत करे। जब पड़ोसी को अपनी इस तरह की रुस्वाई का हाल मालूम हुआ तो उसके पास आया, मिन्नतें करके ले गया कि अपने घर चलो। ख़ुदा की क़सम अब मरते दम तक आपको किसी तरह न सताऊँगा।

फिर इरशाद है कि ऐ लोगो! तुम किसी नेकी को ज़ाहिर करो तो और छुपाओ तो, तुम पर किसी ने ज़ुल्म किया हो और तुम उससे दरगुज़र (माफ़) करो तो, अल्लाह के पास तुम्हारे लिये बड़ा सवाब, पूरा अज्र और आला दर्जे हैं। वह ख़ुद भी माफ़ करने वाला है और बन्दों की भी यह आदत उसे भाती है। वह बावजूद इन्तिक़ाम (बदला लेने) की क़ुदरत के फिर भी माफ़ फ़रमाता रहता है। एक रिवायत में है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते ख़ुदा की तस्बीह करते रहते हैं। बाज़ तो कहते हैं:

سُبحانك على حلمك بعد علمك.

ख़ुदाया! तेरी ज़ात पाक है कि तू बावजूद जानने के फिर भी बुर्दबारी और चश्मपोशी (अन्देखी) करता रहता है।

बाज़ कहते हैं:

سبحانك على عفوك بعد قدرتك.

ऐ क़ुदरत के बावजूद दरगुज़र करने वाले ख़ुदा! तमाम पाकियाँ तेरी ज़ात के लायक़ हैं।

सही हदीस में है कि सदक़ा और ख़ैरात से किसी का माल घटता नहीं, दरगुज़र करने और माफ़ कर देने से अल्लाह तआला और इज़्ज़त बढ़ाता है, और जो शख़्स ख़ुदा के हुक्म से तवाज़ो, फ़रोतनी और आजिज़ी (यानी विनम्रता) इख़्तियार करे अल्लाह उसके मर्तबे और उसकी इज़्ज़त व वक़ार को बढ़ा देता है।

Mahtab E Ashraf

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ ع

जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआ़ला के साथ और उसके रसूलों के साथ और (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के और उसके रसूलों के दरमियान में फ़र्क़ रखें, और कहते हैं कि हम बाज़ों पर तो ईमान लाते हैं और बाज़ों के इनकारी हैं, और (यूँ) चाहते हैं कि बीच की एक राह तजवीज़ करें (150) ऐसे लोग यक़ीनन काफ़िर हैं, और काफ़िरों के लिए हमने तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। (151) और जो लोग अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हैं और उसके सब रसूलों पर भी, और उनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआ़ला ज़रूर उनके सवाब देंगे, और अल्लाह तआ़ला बड़े मग़फ़िरत वाले हैं, बड़े रहमत वाले हैं। (152)

अम्बिया और रसूलों पर ईमान लाना वाजिब है

इस आयत में बयान हो रहा है कि एक नबी को भी अगर न माने तो काफ़िर है। यहूदी सिवाय हज़रत ईसा व हज़रत मुहम्मद सल्ल. के और तमाम अम्बिया को मानते थे। ईसाई ख़ातिमुल-अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल. के सिवा और तमाम अम्बिया पर ईमान रखते थे, सामरी हज़रत यूशा अ़लैहिस्सलाम के बाद किसी की नुबुव्वत के क़ायल न थे। हज़रत यूशा हज़रत मूसा बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा थे। मजूसियों (आग को पूजने वालों) के बारे में मशहूर है कि वे अपना नबी ज़रदुश्त को मानते थे लेकिन उनकी शरीअ़त के जब ये मुन्किर हो गये तो अल्लाह तआ़ला ने वह शरीअ़त ही उनसे उठा ली। वल्लाहु आलम।

पस ये लोग हैं जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलों में तफ़रीक़ (भेदभाव) की, यानी किसी नबी को माना किसी का इनकार कर दिया, किसी ख़ुदाई दलील की बिना पर नहीं बल्कि महज़ अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश, जोश, तास्सुब और अपने बाप-दादा की पैरवी की वजह से। इससे यह भी मालूम हुआ कि एक नबी को न मानने वाला अल्लाह के नज़दीक तमाम नबियों का मुन्किर है। इसलिये कि अगर और अम्बिया को उनके नबी होने के सबब मानता है तो उस नबी का मानना भी इसी वजह से उस पर ज़रूरी था। जब वह एक को नहीं मानता तो मालूम हुआ कि जिन्हें वह मानता है उन्हें भी किसी दुनियावी ग़र्ज़ और अपनी इच्छा की वजह से मानता है। पस उनकी शरीअ़त मानने न मानने के दरमियान की है, ये यक़ीनी और निश्चित कुफ़्फ़ार हैं, किसी नबी पर उनका शरई ईमान नहीं बल्कि तक़लीदी और तास्सुबी ईमान है, जो क़ाबिले क़बूल नहीं। पस उन काफ़िरों को तौहीन और रुस्वाई वाले अ़ज़ाब होंगे, क्योंकि जिन पर ये ईमान न लाकर उनकी तौहीन करते थे उसका बदला यही है कि उनकी तौहीन और उन्हें ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब में

Maktab E Ashraf

डाला जाये। उनके ईमान न लाने की वजह चाहे ग़ौर व फ़िक्र करके नुबुव्वत की तस्दीक़ न करना हो, चाहे हक़ स्पष्ट हो जाने के बाद दुनियावी वजह से मुँह मोड़कर नुबुव्वत से इनकार किया जाता हो।

आपकी नुबुव्वत का इनकार अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की वजह से था

जैसे अक्सर यहूदी उलेमा का शेवा हुज़ूर सल्ल. के बारे में था कि महज़ हसद (जलन) की वजह से **आपकी अज़ीमुश्शान** नुबुव्वत के मुन्किर हो गए और आपकी मुख़ालफ़त व दुश्मनी में आकर मुक़ाबले पर **तुल गये। पस ख़ुदा** ने उन पर दुनिया की ज़िल्लत भी डाली और आख़िरत की ज़िल्लत की मार भी उनके **लिये तैयार** कर रखी है। फिर उम्मते मुहम्मदिया की तारीफ़ हो रही है कि ये ख़ुदा पर ईमान रखकर तमाम **अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम** को बिना किसी पक्षपात और भेदभाव के मानते हैं। ख़ुदा की इस आख़िरी किताब **पर ईमान** लाकर और तमाम आसमानी किताबों को भी ख़ुदाई किताबें तस्लीम करते हैं। जैसा कि एक **आयत में है:**

كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ.......

यानी हर वह आदमी जो ईमान लाया अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर......।

फिर उनके लिये जो बेहतरीन अज्र और बड़ा सवाब उसने तैयार कर रखा है उसे भी बयान फ़रमा दिया कि उनके ईमाने कामिल के सबब उन्हें अज्र व सवाब अ़ता होंगे। अगर उनसे कोई गुनाह भी सरज़द हो गया तो अल्लाह माफ़ फ़रमायेगा, और उन पर अपनी रहमत की बारिश बरसायेगा।

يَسْئَلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ	आपसे अहले किताब यह दरख़्वास्त करते हैं कि आप उनके पास एक ख़ास तहरीर आसमान से मंगवा दें, सो उन्होंने मूसा से इससे भी बड़ी बात की दरख़्वास्त की थी और (यूँ) कहा था कि हमको अल्लाह तआ़ला को खुल्लम-खुल्ला दिखला दो, उनकी (इस) गुस्ताख़ी के सबब उन पर कड़क बिजली आ पड़ी, फिर उन्होंने गौसाला को तजवीज़ किया था, उसके बाद कि बहुत-सी दलीलें उनको पहुँच चुकी थीं। फिर हमने उनसे दरगुज़र कर दिया था। और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को हमने बहुत बड़ा रौब दिया था। (153) और हमने उन लोगों से क़ौल व क़रार लेने के वास्ते तूर पहाड़ को उठाकर उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया था, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि दरवाज़े में

سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا○	आजिज़ी से दाख़िल होना, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि हफ़्ते "यानी शनिवार" के दिन के बारे में हद से मत बढ़ना, और हमने उनसे क़ौल व क़रार बहुत सख़्त लिए। (154)

यहूदियों के बेहूदा मुतालबे

यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि जिस तरह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा की तरफ़ से पूरी तौरात लिखी हुई हमारे पास लाये, आप भी कोई आसमानी किताब पूरी लिखी लिखाई ले आईये। यह भी रिवायत है कि उन्होंने कहा था कि हमारे नाम अल्लाह तआ़ला ख़त भेजे कि हम आपकी नुबुव्वत को मान लें। यह सवाल भी उनका बद-नीयती से बतौर मज़ाक़ के और बतौर कुफ़्र (इनकार) के था, जैसा कि मक्का वालों ने भी इसी तरह का एक सवाल किया था जो सूरः बनी इस्राईल में मज़कूर है कि जब तक अ़रब की सरज़मीन पर दरियाओं की रेल-पेल और तरोताज़गी का दौर-दौरा न हो जाये हम आप पर ईमान नहीं लायेंगे।

पस बतौर तसल्ली के नबी करीम सल्ल. से ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि उनकी इस नाफ़रमानी और बेकार के सवाल पर आप रन्जीदा और परेशान न हों, उनकी यह आ़दत पुरानी है। उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से इससे भी ज़्यादा बेहूदा सवाल किया था कि हमें अल्लाह तआ़ला को दिखा दो। इस तकब्बुर, सरकशी और फ़ुज़ूल सवाल का परिणाम भी यह भुगत चुके हैं। यानी इन पर आसमानी बिजली गिरी थी, जैसा कि सूरः ब-क़रह में तफ़सील से इसका बयान गुज़र चुका है, मुलाहिज़ा फ़रमायें आयतः

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً...... الاية

यानी जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लायेंगे जब तक कि अल्लाह तआ़ला को हम साफ़ तौर पर अपनी आँखों से न देख लें। पस तुम्हें बिजली के कड़ाके ने पकड़ लिया। और एक दूसरे के सामने सब हलाक हो गये। फिर भी हमने तुम्हारी मौत के बाद फिर तुम्हें ज़िन्दा कर दिया ताकि तुम शुक्र करो। (सूरः ब-क़रह आयत 55)

फिर फ़रमाता है कि बड़ी-बड़ी निशानियाँ देख चुकने के बाद भी उन लोगों ने बछड़े को पूजना शुरू कर दिया, मिस्र में अपने दुश्मन फ़िरऔ़न का हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबले में हलाक होना, उसके तमाम लश्करों का नाकामी की मौत मरना, इनका उस दरिया में से बचकर बाहर निकल आना, अभी-अभी उनकी निगाहों के सामने था, लेकिन वहाँ से चलकर कुछ दूर जाकर बुत-परस्तों को बुत-परस्ती करते हुए देखकर अपने पैग़म्बर से कहते हैं कि हमारा भी एक ऐसा ही माबूद बना दो जिसका पूरा बयान सूरः आराफ़ में है, और सूरः तॉ-हा में भी। फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा तआ़ला के सामने मुनाजात करते हैं, उनकी तौबा की क़बूलियत की यह सूरत ठहरती है कि जिन्होंने गौसाला परस्ती नहीं की (यानी बछड़े को नहीं पूजा) वे गौसाला परस्तों को क़त्ल करें। जब क़त्ल शुरू हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उनकी तौबा क़बूल कर लेता है और मरे हुओं को भी दोबारा ज़िन्दा कर देता है।

पस यहाँ फ़रमाता है कि हमने उसको भी माफ़ किया और यह इतना बड़ा जुर्म भी बख़्श दिया, और मूसा को ज़ाहिरी हुज्जत और खुला ग़लबा इनायत फ़रमाया। और जब उन लोगों ने तौरात के अहकाम

मानने से इनकार कर दिया, या हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की फ़रमाँबरदारी से बेज़ारी ज़ाहिर की तो उनके सरों पर तूर पहाड़ को लटका दिया, और उनसे कहा कि अब बोलो पहाड़ गिराकर दबा दूँ या अहकाम क़बूल करते हो? तो ये सब सज्दे में गिर पड़े और रोना-धोना शुरू किया और अहकामे ख़ुदा बजा लाने का मज़बूत अ़हद व पैमान किया। यहाँ तक दिल में दहशत थी कि सज्दे में भी कन-अंखियों से ऊपर को देख रहे थे कि कहीं पहाड़ न गिर पड़े और दबकर न मर जायें। फिर पहाड़ हटा लिया गया।

उनकी दूसरी सरकशी (नाफ़रमानी) का बयान हो रहा है कि क़ौल व फ़ेल दोनों को बदल दिया, हुक्म मिला था कि बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े में सज्दे करते हुए जायें और 'हित्ततुन्' कहें, यानी ऐ अल्लाह हमारी ख़तायें बख़्श कि हमने जिहाद छोड़ दिया और थककर बैठ रहे। जिसकी सज़ा में चालीस साल 'मैदाने तीह' में हैरान व परेशान फिरते रहे, लेकिन उनकी कम-ज़र्फ़ी का यहाँ भी प्रदर्शन हुआ और अपनी रानों के बल घसीटते हुए दरवाज़े में जाने लगे और "हिन्ततुन् फ़ी शअ़्रतिन्" कहने लगे, यानी गेहूँ की बालें हमें दे।

फिर उनकी और शरारत सुनिये- हफ़्ते वाले दिन (यानी शनिवार) का सम्मान व ताज़ीम करने का उनसे वादा लिया गया और मज़बूत अ़हद व पैमान हो गया। लेकिन उन्होंने इसकी भी मुख़ालफ़त की, नाफ़रमानी पर कमर बाँधकर इस हराम काम करने के हीले-बहाने निकाले जैसा कि सूरः आराफ़ में इसका तफ़सीली बयान है। मुलाहिज़ा फ़रमायें आयतः

وَاسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ..... الخ

और आप (अपने ज़माने के यहूदी) लोगों से (बतौर तंबीह) उस बस्ती वालों का (जो कि दरिया-ए-शोर के क़रीब आबाद थे) उस वक़्त का हाल पूछिये.......। (सूरः आराफ़ आयत 163)

एक हदीस में भी है कि यहूदियों से अल्लाह तआ़ला ने ख़ालिस अपने लिये शनिवार के दिन की ताज़ीम का अ़हद लिया था, यह पूरी हदीस सूरः बनी इस्राईल की आयत नम्बर 101 यानीः

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ ۢ بَيِّنٰتٍ.... الخ

की तफ़सीर में आयेगी, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۝ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا	सो (हमने उनको सज़ा में मुब्तला किया) उनके अ़हद तोड़ने की वजह से और अल्लाह के अहकाम के साथ उनके कुफ़्र की वजह से, और उनके नबियों को नाहक़ क़त्ल करने की वजह से, और उनके इस कहने की वजह से कि हमारे दिल महफ़ूज़ हैं। (महफ़ूज़ नहीं) बल्कि उनके कुफ़्र के सबब उन (के दिलों) पर अल्लाह तआ़ला ने बन्द लगा दिया है, सो उनमें ईमान नहीं मगर बहुत मामूली। (155) और (उन्हें सज़ा दी) उनके कुफ़्र की वजह से, और (हज़रत) मरियम (अ़लैहस्सलाम) पर उनके बड़ा भारी बोहतान धरने की वजह से। (156) और उनके

Maktab E Ashraf

قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ۝ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ۝

इस कहने की वजह से कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरियम को जो कि अल्लाह तआला के रसूल हैं, कुत्ल कर दिया, हालाँकि उन्होंने न उनको कृत्ल किया न उनको सूली पर चढ़ाया, लेकिन उनको धोखा और शुब्हा हो गया। और जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वे ग़लत ख़्याल में हैं। उनके पास इस पर कोई दलील नहीं सिवाय अटकली बातों पर अमल करने के, और यक़ीनी बात है कि उन्होंने उनको क़त्ल नहीं किया। (157) बल्कि उनको ख़ुदा तआ़ला ने अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह तआ़ला बड़े ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। (158) और कोई शख़्स अहले किताब से नहीं रहता मगर वह ईसा अ़लैहिस्सलाम की अपने मरने से पहले ज़रूर तस्दीक़ कर लेता है, और क़ियामत के दिन वह उन पर गवाही देंगे। (159)

यहूद को उनकी लगातार नाफ़रमानियों पर इबरतनाक सज़ा

अहले किताब के उन गुनाहों का बयान हो रहा है जिनकी वजह से वे ख़ुदा की रहमतों से मेहरूम हो गये और मलऊन व मरदूद हो गये। पहले तो उनका अ़हद तोड़ना, कि जो वादे ख़ुदा से उन्होंने किये थे उन पर क़ायम न थे। दूसरे ख़ुदा की आयतों यानी हुज्जत व दलील और नबियों के मोजिज़ों से इनकार और कुफ़्र। तीसरे बेवजह नाहक़ अम्बिया-ए-किराम का क़त्ल व ख़ून, ख़ुदा के रसूलों की एक बड़ी जमाअ़त उनके हाथों क़त्ल हुई। चौथे उनका यह ख़्याल और यह क़ौल कि हमारे दिल ग़िलाफ़ों में यानी पर्दे में हैं जैसा कि मुश्रिक लोगों ने कहा थाः

قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ.

यानी ऐ नबी तेरी दावत से हमारे दिल पर्दे में हैं।

और यह भी कहा गया है कि उनके इस क़ौल का यह मतलब है कि हमारे दिल इल्म के बरतन हैं, वे इल्म व इरफ़ान से भरे हैं। सूरः ब-क़रह में भी इसकी नज़ीर गुज़र चुकी है। अल्लाह तआ़ला उनके इस क़ौल की तरदीद करता है। यूँ नहीं बल्कि उन पर ख़ुदा तआ़ला ने मुहर लगा दी है, क्योंकि ये कुफ़्र में पुख़्ता हो चुके थे। पस पहली तफ़सीर की बिना पर यह मतलब हुआ कि वे उज़्र (बहाने) करते थे कि हमारे दिल पर्दे में होने की वजह से नबी की बातों को याद नहीं कर सकते, तो उन्हें जवाब दिया गया कि ऐसा नहीं! बल्कि तुम्हारे कुफ़्र की वजह से तुम्हारे दिल मसख़ हो गये (बिगड़ चुके) हैं। और दूसरी तफ़सीर की बिना पर तो जवाब हर तरह ज़ाहिर है। सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में इसकी पूरी तफ़सील व तशरीह गुज़र चुकी है। पस बतौर नतीजे के फ़रमा दिया कि अब उनके दिल कुफ़्र व सरकशी और नाक़िस ईमान पर ही रहेंगे।

Maktab E Ashraf

फिर उनका पाँचवाँ बड़ा जुर्म बयान हो रहा है कि उन्होंने हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम पर ज़िनाकारी जैसी बदतरीन और शर्मनाक तोहमत लगाई और उसी ज़िनाकारी के अ़मल से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को पैदा शुदा बतलाया। बाज़ ने इससे भी एक क़दम आगे रखा और कहा कि यह बदकारी हैज़ (माहवारी) की हालत में हुई थी। ख़ुदा तआ़ला की उन पर फटकार हो, कि उनकी बद-ज़ुबानी से ख़ुदा के मक़बूल बन्दे भी न बच सके।

फिर उनका छठा गुनाह बयान हो रहा है कि ये अपनी बुराई को बतौर मज़ाक़ उड़ाने के बयान करते हुए यह बकवास करते हैं कि हमने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को मार डाला, जैसा कि बतौर मज़ाक़ उड़ाने के मुश्रिक लोग हुज़ूर सल्ल. से कहते हैं कि ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन उतारा गया है, तू तो मजनूँ (पागल) है।

पूरा वाक़िआ़ यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को नुबुव्वत से सम्मानित फ़रमाकर भेजा, और आपके हाथ पर बड़े-बड़े मोजिज़े दिखलाये जैसे- पैदाईशी अन्धों को बीना (देखने वाला) करना, कोढ़ियों को अच्छा करना, मुर्दों को ज़िन्दा करना, मिट्टी के परिन्दे बनाकर फूँक मारना और उनका जानदार होकर उड़ जाना वग़ैरह, तो यहूदियों को बहुत तेश आया और ये मुख़ालफ़त पर अड़ गये और हर तरह से सताना व तकलीफ़ देना शुरू कर दिया। आपकी ज़िन्दगी तंग कर दी, किसी बस्ती में चन्द दिन आराम करना भी आपको नसीब न हुआ। सारी उम्र जंगलों और बयाबानों में अपनी वालिदा (माँ) के साथ घूमते-फिरते गुज़ार दी, फिर भी उन्हें चैन न आया।

ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान पर उठाया जाना

और यह उस ज़माने के दमिश्क़ के बादशाह के पास गये, यह सितारों को पूजने वाला मुश्रिक शख़्स था। इस मज़हब वालों को उस वक़्त यूनान कहा जाता था। यहाँ आकर ये बहुत रोये-पीटे और बादशाह को हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ उकसाया और कहा कि यह शख़्स बड़ा फ़सादी और बिगाड़ पैदा करने वाला है। लोगों को बहका रहा है, रोज़ नये फ़ितने खड़े करता है। अमन में ख़लल डालता है, लोगों को बग़ावत सिखाता है, वग़ैरह। बादशाह ने अपने गवर्नर को जो बैतुल-मुक़द्दस में था, एक फ़रमान लिखा कि वह ईसा को गिरफ़्तार कर ले और सूली पर चढ़ाकर उसके सर पर काँटों का ताज रखकर लोगों को उसके दुख से निजात दिलवाये। उसने फ़रमाने शाही पढ़कर यहूदियों के एक गिरोह को अपने साथ लेकर उस मकान का घेराव कर लिया जिसमें रूहुल्लाह (हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम) थे। आपके साथ उस वक़्त बारह या तेरह या ज़्यादा से ज़्यादा सत्रह आदमी थे। जुमे के दिन अ़सर के बाद उसने घेरा डाल दिया और शनिवार की रात तक मकान को घेरे में लिये रहा। जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने महसूस कर लिया कि अब या तो वे मकान में घुसकर आपको गिरफ़्तार कर लेंगे या आपको ख़ुद बाहर निकलना पड़ेगा, तो आपने अपने सहाबा (मानने वालों और साथियों) से फ़रमाया तुममें से कौन इस बात को पसन्द करता है कि उसको मेरे जैसी शक्ल व सूरत का बना दिया जाये। यानी उसकी सूरत अल्लाह तआ़ला मुझ जैसी बना दे और वह उनके हाथों गिरफ़्तार हो, और मुझे ख़ुदा छुटकारा दे। मैं उसके लिये जन्नत का ज़मानती हूँ।

यह सुनकर एक नौजवान ने कहा मुझे यह मन्ज़ूर है, लेकिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें इस क़ाबिल न जानकर दोबारा यही कहा, तीसरी बार कहा मगर हर बार सिर्फ़ यही तैयार हुए। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

Maktab E Ashraf

अब आपने भी मन्ज़ूर फ़रमा लिया और देखते ही देखते उसकी सूरत क़ुदरती तौर पर बदल गई, बिल्कुल यह मालूम होने लगा कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम यही हैं। फिर छत की तरफ़ एक बड़ा सूराख़ ज़ाहिर हो गया, और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ऊँघ तारी हो गई, और उसी तरह वह आसमान पर उठा लिये गए। जैसा कि क़ुरआने करीम में है:

اِذْقَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ..... الخ

यानी जब अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ ईसा! मैं तुझे पूरा-पूरा लेने वाला हूँ और अपनी तरफ़ उठाने वाला हूँ.....।

हज़रत रूहुल्लाह के आसमान पर उठाये जाने के बाद ये लोग घर से बाहर निकले, यहूदियों की जमाअ़त ने उस बुज़ुर्ग सहाबी को जिसको जनाब मसीह अ़लैहिस्सलाम के मुशाबह (यानी उन जैसी शक्ल व सूरत का) कर दिया गया था, ईसा समझकर पकड़ लिया और रातों रात उसे सूली पर चढ़ाकर उसके सर पर काँटों का ताज रख दिया। अब यहूद ख़ुशियाँ मनाने लगे कि हमने ईसा बिन मरियम को क़त्ल कर दिया और लुत्फ़ तो यह है कि ईसाईयों की कम-अ़क़्ल और जाहिल जमाअ़त ने भी यहूदियों की हाँ में हाँ मिला दी। लेकिन सिर्फ़ वे लोग जो मसीह अ़लैहिस्सलाम के मकान में थे और जिन्हें यक़ीनी तौर पर मालूम था कि मसीह अ़लैहिस्सलाम आसमान पर उठा लिये गए और यह फ़ुलाँ शख़्स है, जो धोखे में उनकी जगह शहीद हो गया, बाक़ी ईसाई भी यहूदियों की रागनी अलापने लगे, यहाँ तक कि फिर यह भी गढ़ लिया कि ईसा की वालिदा सूली तले बैठकर रोती चिल्लाती रहीं, और यह भी कहते हैं कि आपने उनसे कुछ बातें भी कीं। वल्लाहु आलम

दर असल ये सब बातें ख़ुदा की तरफ़ से अपने बन्दों का इम्तिहान हैं, जो उसकी हिक्मते बालिग़ा का तक़ाज़ा है। पस इस ग़लती को अल्लाह तआ़ला ने वाज़ेह और ज़ाहिर करके असल हक़ीक़त से अपने बन्दों को मुत्तला (अवगत) फ़रमा दिया और अपने सबसे बेहतर रसूल और बड़े मर्तबे वाले पैग़म्बर की ज़बानी अपने पाक, सच्चे और बेहतरीन कलाम में साफ़ फ़रमा दिया कि हक़ीक़त में न किसी ने हज़रत ईसा को क़त्ल किया न सूली दी, बल्कि उनके जैसी शक्ल व सूरत जिस शख़्स को बख़्शी गयी थी उसे ईसा ही समझ बैठे। जो यहूद व ईसाई आपके क़त्ल के क़ायल हो गए हैं वे सबके सब शक व शुब्हे में, हैरत व गुमराही में मुब्तला हैं। उनके पास कोई दलील नहीं, न उन्हें ख़ुद कुछ इल्म है, सुनी सुनाई बातों के सिवा कोई दलील नहीं। इसीलिये फिर इसी के साथ फ़रमा दिया कि यक़ीनी बात है कि रूहुल्लाह को किसी ने क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने जो सबसे ग़ालिब है और जिसकी क़ुदरतें बन्दों की समझ में भी नहीं आ सकतीं, और जिसकी हिक्मतों की तह तक और जिसके कामों के सबब और कारणों तक कोई नहीं पहुँच सकता, अपने ख़ास बन्दे को जिन्हें अपनी रूह कहा था अपने पास उठा लिया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को आसमान पर उठाना चाहा तो आप घर में आये, उस वक़्त मकान में बारह हवारी (आपके सहाबी) थे। आपके बालों से पानी के क़तरे टपक रहे थे, आपने फ़रमाया तुम में बाज़ ऐसे हैं जो मुझ पर ईमान ला चुके हैं मगर बारह-बारह बार मुझसे कुफ़्र करेंगे। फिर आपने फ़रमाया तुम में से कौन शख़्स इसे पसन्द करता है कि उस पर मेरी शबीह (शक्ल व सूरत) डाली जाये और मेरी जगह वह क़त्ल कर दिया जाये, और जन्नत में मेरा साथी बने। इस रिवायत में यह भी है कि रूहुल्लाह की पेशीनगोई के मुताबिक़ बाज़ों ने आपसे बारह-बारह बार कुफ़्र किया।

Maktab E Ashraf

ईसाईयत अनेक फ़िर्क़ों में

फिर उनके तीन गिरोह हो गए। याक़ूबिया, नस्तूरिया और मुसलमान। यक़ूबिया तो कहने लगे कि ख़ुद ख़ुदा हम में से था, जब तक चाहा रहा, जब चाहा फिर आसमान पर चढ़ गया। नस्तूरिया का ख़्याल यह हो गया कि ख़ुदा का लड़का हम में था, जिसे एक ज़माने तक हम में रखकर फिर ख़ुदा ने अपने पास उठा लिया, और मुसलमानों का यह अक़ीदा रहा कि ख़ुदा का बन्दा और रसूल हम में था, जब तक ख़ुदा ने चाहा वह हम में रहा और फिर ख़ुदा ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया। उन पहले दो गुमराह फ़िर्क़ों का ज़ोर हो गया और उन्होंने तीसरे सच्चे और अच्छे फ़िर्क़े को कुचलना और दबाना शुरू किया। चुनाँचे ये कमज़ोर हो गए यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ (यानी हज़रत मुहम्मद सल्ल.) को मबऊस फ़रमाकर इस्लाम को ग़ालिब किया। इसकी सनद बिल्कुल सही है और नसाई में हज़रत अबू मुआविया से भी यह मन्क़ूल है। इसी तरह पहले उलेमा और बुज़ुर्गों में से बहुत से बुज़ुर्गों का क़ौल है।

हज़रत वहब बिन मुनब्बह रह. फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त शाही सिपाही और यहूदी लोग हज़रत ईसा पर चढ़कर आये और मकान को अपने घेरे में लिया उस वक़्त आपके साथ सत्रह हवारी मौजूद थे। उन लोगों ने जब दरवाज़े खोलकर देखा तो सब लोग हज़रत ईसा की शक्ल व सूरत के हैं, वे यह देखकर कहने लगे कि तुम लोगों ने हम पर जादू कर दिया है, अब या तो तुम उसे जो असली ईसा हों हमें सौंप दो या इसे मन्ज़ूर कर लो कि हम तुम सबको क़त्ल कर डालें। यह सुनकर रूहुल्लाह (हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया- कोई है जो जन्नत में मेरा रफ़ीक़ (साथी) बनना और यहाँ मेरे बदले सूली पर चढ़ना मन्ज़ूर कर ले? एक सहाबी इसके लिये तैयार हो गए और कहने लगे ईसा मैं हूँ। चुनाँचे दीन के दुश्मनों ने उन्हें गिरफ़्तार किया, क़त्ल किया और सूली पर चढ़ा दिया और फिर बग़लें बजाने लगे कि हमने ईसा को क़त्ल कर दिया, हालाँकि दर असल ऐसा नहीं हुआ, बल्कि वे धोखे में पड़ गए और ख़ुदा ने अपने रसूल को उसी वक़्त अपने पास बुलाकर बुलन्दी बख़्शी।

तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को इसकी इत्तिला की कि वह दुनिया से वापस होने वाले हैं तो आप पर बहुत भारी गुज़रा और मौत की घबराहट बढ़ गई। आपने अपने हवारियों (सहाबियों और अपने पर ईमान लाने वालों) की दावत की, खाना तैयार किया और सबसे कह दिया कि आज रात को मेरे पास तुम सब ज़रूर आना, मुझे एक ज़रूरी काम है। जब हवारी हज़रात आये तो ख़ुद खाना खिलाया, सब काम-काज अपने हाथों से करते रहे। जब वे खाने से फ़ारिग़ हुए तो ख़ुद उनके हाथ धुलाये और अपने कपड़ों से उनके हाथ पौंछे। यह उन पर भारी गुज़रा और अच्छा मालूम नहीं हुआ, लेकिन आपने फ़रमाया सुनो! इस रात मैं जो कुछ कर रहा हूँ अगर तुम में से किसी ने मुझे उससे रोका तो मेरा उससे कुछ वास्ता नहीं, न वह मेरा न मैं उसका। चुनाँचे हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के तमाम मोतक़िद (अनुयायी) ख़ामोश हो गये और जब आप इस सम्मानित दावत के कामों से फ़ारिग़ हो गए तो फ़रमाया देखो तुम्हारे नज़दीक मैं तुम सबमें ज़्यादा रुतबे वाला हूँ इसके बावजूद मैंने ख़ुद तुम्हारी ख़िदमत की है, यह इसलिये कि तुम मेरी इस सुन्नत (तरीक़े) पर आ़मिल बन जाओ। ख़बरदार तुम में से कोई अपने आपको अपने भाईयों से बड़ा न समझे बल्कि हर छोटे बड़े की ख़िदमत करे, जिस तरह ख़ुद मैंने तुम्हारी की है। अब तुमसे जो मेरा ख़ास काम था और जिसकी वजह से आज मैंने तुम्हें बुलाया है वह भी सुन लो। तुम सब मिलकर आज रात भर ख़ुशू व ख़ुज़ू से मेरे लिये दुआ़यें करो कि ख़ुदा मेरी अजल (मौत या मुद्दत) को पीछे

कर दे। चुनाँचे सबने दुआयें कीं, लेकिन खुशू व खुज़ू का वक़्त आने से पहले ही इस बुरी तरह उन्हें नींद आने लगी कि ज़बान से एक लफ़्ज़ निकालना मुश्किल हो गया। आप उन्हें जगाने लगे और एक-एक को झिंझोड़-झिंझोड़कर कहने लगे तुम्हें क्या हो गया? एक रात भी जाग नहीं सकते? मेरी कुछ मदद नहीं करते? लेकिन सबने जवाब दिया ऐ अल्लाह के रसूल! हम खुद हैरान हैं कि यह क्या हो रहा है? एक ही नहीं बल्कि हम कई-कई रातें जागते थे, जागने के आदी थे, लेकिन खुदा जाने आज क्या बात है कि नींद ने घेर रखा है, दुआ के और हमारे बीच कोई क़ुदरती रुकावट पैदा हो गई है। आपने फ़रमाया फिर चरवाहा न रहेगा और बकरियाँ भाग जायेंगी।

ग़र्ज़ इशारों किनायों में सूरतेहाल का इज़्हार करते रहे। फिर फ़रमाया देखो तुम में का एक शख़्स सुबह का मुर्ग़ बोलने से पहले तीन बार मेरे साथ कुफ़्र करेगा, और तुम में से एक चन्द दिर्हम (उस वक़्त में चलने वाले सिक्कों) के बदले मुझे बेच देगा और मेरी क़ीमत खायेगा। अब ये लोग यहाँ से बाहर निकले। इधर-उधर चले गये। यहूद जो अपनी जुस्तजू में थे, उन्होंने शमऊन हवारी को पहचान कर उसे पकड़ लिया और कहा यह भी उसका साथी है, मगर शमऊन ने कहा ग़लत है, मैं उसका साथी नहीं हूँ। उन्होंने यह यक़ीन करके उसे छोड़ दिया लेकिन कुछ आगे जाकर यह दूसरी जमाअत के हाथ लग गया और वहाँ से भी इसी तरह इनकार करके अपने आपको छुड़वाया। इतने में मुर्ग़ ने बाँग (आवाज़) दी, अब यह अफ़सोस करने लगे और सख़्त ग़मगीन हुए। सुबह को एक हवारी यहूदी के पास पहुँचता है और कहता है कि अगर मैं तुमको ईसा का पता बता दूँ तो तुम मुझे क्या दिलवाओगे? उन्होंने कहा तीस हज़ार दिर्हम। चुनाँचे उसने वह रक़म ली और और हज़रत ईसा का पता बता दिया। इससे पहले वे शक में थे। अब उन्होंने गिरफ़्तार कर लिया और रस्सियों में जकड़ कर घसीटते हुए ले चले और बतौर ताना मारने के कहते थे कि आप तो मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे, जिन्नात को भगा दिया करते थे, पागल को अच्छा कर दिया करते थे, अब क्या बात है कि खुद अपनी ज़ात को भी नहीं बचा सकते? इन रस्सियों को भी नहीं तोड़ सकते? अफ़सोस है तुम पर।

यह कहते जाते थे और काँटे उनके ऊपर डालते जाते थे। इसी तरह बेदर्दी से घसीटते हुए जब उस लकड़ी के पास गये जहाँ सूली देनी थी और इरादा किया कि सूली पर चढ़ा दें, उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को अपनी तरफ़ चढ़ा लिया और उन्होंने दूसरे शख़्स को जो आपके जैसा था, सूली पर चढ़ा दिया। फिर सात दिन के बाद हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम और वह औ़रत जिसको हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने जिन्न से निजात दिलवाई थी वहाँ आईं और रोने व फ़रियाद करने लगीं, तो उनके पास हज़रत ईसा आये और उनसे कहा क्यों रोती हो? मुझे तो अल्लाह तआ़ला ने अपनी तरफ़ उठा लिया है और मुझे उनकी तकलीफ़ें नहीं पहुँचीं। उन पर तो शुब्हा (भ्रम और कन्फ़्यूज़न) डाल दिया गया है। मेरे हवारियों से कहो कि मुझसे फ़ुलाँ जगह आकर मिलें।

चुनाँचे यह खुशख़बरी जब हवारियों को मिली तो वे सबके सब ग्यारह आदमी उस जगह पहुँचे। जिस हवारी ने आपको बेचा था उसे उन्होंने वहाँ न पाया, मालूम करने पर मालूम हुआ कि वह नदामत और शर्मिन्दगी की वजह से अपना गला घोंटकर आप ही मर गया। उसने खुदकुशी कर ली। आपने फ़रमाया अगर वह तौबा करता तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़बूल फ़रमा लेता। फिर पूछा कि यह बच्चा जो तुम्हारे साथ है इसका नाम यहया है, अब यह तुम्हारा साथी है। सुनो! सुबह को तुम्हारी ज़बानें (भाषायें) बदल दी जायेंगी, हर शख़्स अपनी-अपनी क़ौम की ज़बान बोलने लगेगा तो उसे चाहिये कि उस क़ौम में

जाकर मेरी दावत पहुँचाये और ख़ुदा से डराये।

यह वाक़िआ बहुत ही ग़रीब है। इब्ने इस्हाक़ का क़ौल है कि बनी इस्राईल का यह बादशाह जिसने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के लिये अपनी फ़ौज भेजी थी, उसका नाम दाऊद था। हज़रत ईसा उस वक़्त सख़्त घबराहट में थे। कोई शख़्स अपनी मौत से इस क़द्र परेशान, बद-हवास और इस क़द्र हाय वाय करने वाला न होगा जिस क़द्र आपने उस वक़्त की, यहाँ तक कि फ़रमाया ख़ुदाया! अगर तू मौत के प्याले को किसी से भी टालने वाला है तो मुझसे टाल दे। और यहाँ तक कि घबराहट और ख़ौफ़ की वजह से उनके जिस्म से ख़ून फूटने लगा। उस वक़्त उस मकान में आपके साथ बारह हवारी थे, जिनके नाम यह हैं: 1. फ़तरुस। बग़ीफ़ूबस। 2. यहनस (यह याक़ूब का भाई था)। (4) अन्दारबीस। (5) फ़ेलबस। (6) अबर सलमा। (7) मिना। (8) तूमास। (9) याक़ूब बिन हलफ़िया। (10) तदावसीस। (11) क़सानिया। (12) यूदस ज़करिया यूता।

बाज़ कहते हैं कि तेरह आदमी थे। एक और का नाम सरजिस था, उसी ने अपने आपको सूली पर चढ़ाया जाना हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की ख़ुशख़बरी पर मन्ज़ूर कर लिया था।

यहूदियों का आपसी इख़्तिलाफ़

जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान पर चढ़ाये गए और बक़ीया लोग यहूदियों के हाथों में क़ैदी और बन्दी हो गये। अब जो शुमार करते हैं तो एक कम है। एक शख़्स की कमी हो जाने से उनके बीच इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो गया। ये लोग जब उस जमाअ़त पर छापा मारते हैं और उन्हें गिरफ़्तार करना चाहते हैं तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को पहचानते न थे, लियूविस ज़करिया यूता ने तीस दिर्हम लेकर उनसे कहा था कि मैं सबसे पहले जाता हूँ जिस शख़्स को जाकर मैं बोसा दूँ तुम समझ लेना कि ईसा वही हैं। जब ये अन्दर पहुँचते हैं तो उस वक़्त ईसा अ़लैहिस्सलाम उठा लिये गए थे और हज़रत सरजिस आपकी सूरत में बना दिये गए थे। उसने जाकर प्रोग्राम के मुताबिक़ उन्हीं का बोसा लिया और सरजिस को गिरफ़्तार कर लिया गया।

उसकी इस हरकत और मुख़बिरी के बाद यह हवारी (हज़रत ईसा का साथी) बहुत नादिम हुआ (पछताया) और अपने गले में रस्सी डालकर फाँसी पर लटक गया और ईसाईयों में मलऊन बना। बाज़ कहते हैं कि उसका नाम लयूविस ज़करिया यूता था। यह जैसे ही हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शनाख़्त के लिये उस घर में दाख़िल हुआ तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम तो उठा लिये गए और ख़ुद इसकी सूरत ईसा जैसी हो गई और इसी को लोगों ने पकड़ लिया। यह हज़ार चीख़ता चिल्लाता रहा कि मैं ईसा नहीं हूँ, मैं तो तुम्हारा साथी हूँ, मैंने ही तो तुम्हें ईसा का पता दिया था, लेकिन कौन सुने? आख़िर उसी को सूली पर लटका दिया। अब ख़ुदा ही को इल्म है कि ईसा की मुशाबहत (यानी उन जैसी शक्ल का दिखने) में सरफ़रोशी करने वाला सच्चा मोमिन सरजिस था, या लयूविस ज़करिया यूता मुनाफ़िक़ हवारी।

हज़रत मुजाहिद रह. का क़ौल है कि हज़रत रूहुल्लाह की मुशाबहत जिस पर डाली गई थी उसे सूली पर चढ़ाया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शबीह उनके तमाम साथियों पर डाल दी गई थी (यानी वे सब हज़रत ईसा की शक्ल व सूरत के हो गये थे)।

Mahtab E Ashraf

एक भविष्यवाणी

उसके बाद बयान होता है कि जनाब रूहुल्लाह (हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम) की मौत से पहले तमाम अहले किताब आप पर ईमान लायेंगे और क़ियामत के दिन आपके गवाह होंगे। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि इसकी तफ़सीर में कई क़ौल हैं- एक तो यह है कि ईसा अ़लैहिस्सलाम की मौत से पहले यानी जब आप दज्जाल के क़त्ल के लिये दोबारा ज़मीन पर आयेंगे, उस वक़्त तमाम मज़ाहिब उठ जायेंगे और सिर्फ़ मिल्लते इस्लामिया जो दर असल इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत है, रह जायेगी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं 'मौतिही' से मुराद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की मौत है। अबू मालिक रह. फ़रमाते हैं कि जनाबे मसीह उतरेंगे उस वक़्त तमाम अहले किताब आप पर ईमान लायेंगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से दूसरी रिवायत में है कि ख़ुसूसन यहूदी एक भी बाक़ी नहीं रहेगा। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं यानी नज्जाशी और उनके साथी। आपसे रिवायत है कि क़सम ख़ुदा की हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के पास अब भी ज़िन्दा हैं। जब आप ज़मीन पर नाज़िल होंगे उस वक़्त अहले किताब में से एक भी बाक़ी न बचेगा जो आप पर ईमान न लाये। आपसे जब इस आयत की तफ़सीर पूछी जाती तो आप फ़रमाते कि अल्लाह तआ़ला ने मसीह को अपने पास उठा लिया है, और क़ियामत से पहले आपको दोबारा ज़मीन पर इस हैसियत से भेजेगा कि हर नेक व बद आप पर ईमान लायेगा।

हज़रत क़तादा और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान वग़ैरह बहुत से मुफ़स्सिरीन का यही फ़ैसला है और यही क़ौल हक़ है, और यही तफ़सीर बिल्कुल ठीक है, इन्शा-अल्लाह तआ़ला ख़ुदा तआ़ला की मदद और उसकी तौफ़ीक़ से हम इसे दलाईल से साबित करेंगे। दूसरा क़ौल यह है कि हर अहले किताब आप पर अपनी मौत से पहले ईमान लाता है, इसलिये कि मौत के वक़्त हक़ व बातिल सब पर वाज़ेह हो जाता है, तो हर किताबी यानी अहले किताब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की हक़्क़ानियत (यानी उनके हक़ पर होने) को इस दारे फ़ानी से रवानगी के पहले ही यक़ीन कर लेता है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि कोई यहूदी नहीं मरता जब तक कि वह हज़रत रूहुल्लाह पर ईमान न लाये। हज़रत मुजाहिद रह. का यही क़ौल है, बल्कि इब्ने अ़ब्बास से तो यहाँ तक रिवायत है कि अगर किसी अहले किताब की गर्दन तलवार से उड़ा दी जाये तब भी उस वक़्त तक उसकी रूह नहीं निकलती जब तक कि वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान न लाये, और यह न कह दे कि आप ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से पूछा गया कि फ़र्ज़ करो कोई दीवार से गिरकर मर जाये? फ़रमाया फिर भी इस बीच के फ़ासले में वह ईमान ला चुकता है। हज़रत इक्रिमा, मुहम्मद बिन सीरीन, ज़ह्हाक और ज़ुबैर रह. से भी यही नक़ल किया गया है। एक क़ौल इमाम हसन रज़ि. से भी रिवायत है कि जिसका मतलब पहले वाले क़ौल की ताईद में भी हो सकता है और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की मौत से पहले का भी हो सकता है। तीसरा क़ौल यह है कि अहले किताब में से कोई नहीं मगर यह कि वह नबी करीम सल्ल. पर अपनी मौत से पहले ईमान लायेगा। हज़रत इक्रिमा रह. यही फ़रमाते हैं। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि इन सब अक़वाल में ज़्यादा सही क़ौल पहला ही है कि जब हज़रत ईसा आसमान से क़ियामत के क़रीब उतरेंगे उस वक़्त कोई अहले किताब (यहूदी व ईसाई) आप पर ईमान लाये बग़ैर न रहेगा।

Maktab E Ashraf

रिवायत और फिर उसकी अ़क़्ली दलील

वास्तव में इमाम साहिब (यानी इब्ने जरीर रह.) का यह फ़ैसला हक़ बजानिब है, इसलिये कि इस मौक़े की आयतों से साफ़ ज़ाहिर है कि असल मक़सूद यहूदियों के इस दावे को ग़लत साबित करना है कि हमने हज़रत मसीह को क़त्ल किया और सूली दी। और इसी तरह जिन जाहिल ईसाईयों ने भी यह कहा है, उनके क़ौल को भी बातिल करना है। तो अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि हक़ीक़त में न तो रूहुल्लाह मक़्तूल हुए न उनको सूली दी गयी, बल्कि उनके लिये शुब्हा डाल दिया गया और उन्होंने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के एक हम-शक्ल शख़्स को क़त्ल किया, लेकिन ख़ुद उन्हें इस हक़ीक़त का इल्म न हो सका। ख़ुदा तआ़ला ने अपने नबी को तो अपने पास उठा लिया, वह ज़िन्दा हैं, अब तक बाक़ी हैं, क़ियामत के क़रीब उतरेंगे जैसा कि सही मुतवातिर हदीसों में है। हज़रत मसीह दज्जाल को क़त्ल करेंगे, सलीब (ईसाईयों के निशान) को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीरों को क़त्ल करेंगे, जिज़या (टैक्स) क़बूल नहीं करेंगे। ऐलान करेंगे या तो इस्लाम को क़बूल करो या तलवार से मुक़ाबला करो। पस इस आयत में ख़बर देता है कि उस वक़्त तमाम अहले किताब आपके हाथ पर ईमान क़बूल करेंगे, और एक भी ऐसा न रहेगा जो इस्लाम से रुक सके या रुके।

पस जिसे ये गुमराह यहूद और ये जाहिल ईसाई मरा हुआ जानते हैं और सूली पर चढ़ा हुआ मानते हैं, यह उनकी असली मौत से पहले ही उन पर ईमान लायेंगे और जो काम उन्होंने इनकी मौजूदगी में किये हैं और करेंगे यह उन पर क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने गवाही देंगे। यानी आसमान पर उठाये जाने से पहले की ज़िन्दगी के मुआ़यना किये हुए काम और दोबारा की आख़िरी ज़िन्दगी जो ज़मीन पर गुज़ारी, उसमें उनके सामने जो काम उन्होंने किये वे सब आपकी निगाहों के सामने होंगे और ख़ुदा के सामने उन्हें पेश करेंगे। हाँ इसकी तफ़सीर में जो दो क़ौल और बयान हुए हैं वे भी वास्तविकता के एतिबार से बिल्कुल सही और दुरुस्त हैं। मौत के फ़रिश्ते के आ जाने के बाद आख़िरत के हालात के सच झूठ का मुआ़यना हो जाता है, उस वक़्त हर शख़्स सच्चाई को सच कहने और समझने लगता है। लेकिन वह ईमान ख़ुदा के नज़दीक मोतबर नहीं। इसी सूरः के शुरू में है:

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْاٰنَ...... الخ.

दूसरी जगह फ़रमान है:

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ.

यानी जो लोग मौत के आ जाने तक बुराईयों में मश्ग़ूल रहे उनकी तौबा क़बूल नहीं और जो लोग अ़ज़ाबे ख़ुदा देखकर ईमान लायें उन्हें भी उनका ईमान नफ़ा न देगा।

पस इन दोनों आयतों को सामने रखकर हम कहते हैं कि पिछले दो अक़वाल की जो इमाम इब्ने जरीर ने तरदीद की है यह ठीक नहीं। इसलिये कि इमाम साहिब फ़रमाते हैं- अगर पिछले दोनों क़ौलों को इस आयत की तफ़सीर में सही माना जाये तो लाज़िम आता है कि किसी यहूदी या ईसाई के परिजन उसके वारिस न हों इसलिये कि वह तो हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर ईमान लाकर मरा और उसके वारिस यहूद व ईसाई हैं, और मुसलमान का वारिस काफ़िर नहीं हो सकता। लेकिन हम कहते हैं कि यह उस वक़्त है जब ईमान ऐसे वक़्त लाये कि ख़ुदा के नज़दीक मोतबर हो, न कि ऐसे वक़्त ईमान लाना जो

बिल्कुल बेफ़ायदा है। इब्ने अब्बास रज़ि. के क़ौल पर गहरी नज़र डालिये कि दीवार से गिरते हुए, दरिन्दे के चबाते हुए, तलवार के चलते हुए वह ईमान लाता है। पस साफ़ ज़ाहिर है कि ऐसी हालत का ईमान बिल्कुल भी नफ़ा नहीं दे सकता। जैसे क़ुरआन की उपरोक्त दोनों आयतें ज़ाहिर कर रही हैं। वल्लाहु आलम

मेरे ख़्याल से तो यह बात बहुत साफ़ है कि इस आयत की तफ़सीर के पिछले दोनों क़ौल भी मोतबर मान लेने से कोई इशकाल (शुब्हा) पेश नहीं आता। अपनी जगह वे भी ठीक हैं। लेकिन हाँ आयत का असली मतलब तो वही है जो पहला क़ौल है, तो इससे मुराद यह है कि ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमानों पर ज़िन्दा मौजूद हैं, क़ियामत के क़रीब ज़मीन पर उतरेंगे और यहूदियों व ईसाईयों दोनों को झूठा बतायेंगे। और जो इफ़रात व तफ़रीत उन्होंने की है, उसे बातिल क़रार देंगे। एक तरफ़ मलऊन जमाअ़त यहूदियों की है, जिन्होंने आपको आपके मक़ाम से बहुत गिरा दिया, और ऐसी नापाक बातें आपकी शान में कहीं जिनसे एक भला इनसान नफ़रत करे। दूसरी जानिब ईसाई हैं जिन्होंने आपके मर्तबे को इतना बढ़ाया कि जो आप में न था उसको भी आपके लिये साबित किया और मक़ामे नुबुव्वत से मक़ामे रबूबियत तक पहुँचा दिया। जिससे ख़ुदा की ज़ात बिल्कुल पाक है।

हज़रत ईसा से मुताल्लिक़ हदीसें

अब उन हदीसों को सुनिये जिनमें बयान है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आख़िर ज़माने में क़ियामत के क़रीब आसमान से ज़मीन पर उतरेंगे और अल्लाह तआ़ला वाहिद ला-शरीक की इबादत की तरफ़ सब को बुलायेंगे। सही बुख़ारी जिसे सारी उम्मत ने क़बूल किया है, उसमें इमाम बुख़ारी रह. किताब ज़िक्रे अम्बिया में यह हदीस लाये हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अ़न्क़रीब तुम में इब्ने मरियम (यानी हज़रत ईसा) नाज़िल होंगे, आ़दिल हाकिम बनकर। सलीब को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, जिज़्या (टैक्स) हटा देंगे. माल इस क़द्र बढ़ जायेगा कि उसे कोई लेना मन्ज़ूर न करेगा। एक सज्दा कर लेना दुनिया और दुनिया की सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब होगा।

इस हदीस को बयान फ़रमाकर हदीस के रावी अबू हुरैरह रज़ि. ने बतौर क़ुरआनी गवाही के इसी आयत 'व इम्मिन् अहलिल् किताबि' को आख़िर तक तिलावत की। सही मुस्लिम में भी यह हदीस है और एक दूसरी सनद से यही रिवायत बुख़ारी व मुस्लिम में नक़ल की गयी है। उसमें है कि सज्दा उस वक़्त सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन के लिये ही होगा और इस आयत की तिलावत में 'क़ब्-ल मौतिही' के बाद यह फ़रमान है किः

قَبْلَ مَوْتِ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ.

यानी हज़रत ईसा बिन मरियम की मौत से पहले।

फिर इसे हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का तीन बार दोहराना भी है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम हज या उमरे पर या दोनों पर लब्बैक कहेंगे। मैदाने 'फ़ज रोहा' में, यह हदीस मुस्लिम में भी है। मुस्नद की दूसरी हदीस में है कि ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम उतरेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, सलीब को मिटायेंगे, नमाज़ जमाअ़त के साथ होगी और माल राहे ख़ुदा में इस क़द्र कसरत से दिया जायेगा कि कोई कबूल करने वाला न मिलेगा। ख़िराज (टैक्स) छोड़ देंगे, रौहा में जायेंगे और वहाँ से हज या उमरा करेंगे, या दोनों एक साथ करेंगे। फिर अबू हुरैरह रज़ि. ने यही आयत पढ़ी लेकिन आपके

Maktaba Ashraf

शागिर्द हज़रत हन्ज़ला का ख़्याल है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के इन्तिक़ाल से पहले आप पर ईमान लायेंगे। मुझे नहीं मालूम कि ये सब हदीस के ही अलफ़ाज़ हैं या अबू हुरैरह रज़ि. के अपने। सही बुख़ारी में है कि उस वक़्त क्या होगा जब तुम्हारे बीच मसीह बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम उतरेंगे और तुम्हारा इमाम तुम्हीं में से होगा।

अबू दाऊद व मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम सब एक बाप के बेटे भाई की तरह हैं, मायें अलग-अलग और दीन एक। ईसा बिन मरियम से सबसे ज़्यादा नज़दीक मैं हूँ इसलिये कि मेरे और उनके बीच कोई नबी नहीं, यक़ीनन वह उतरने वाले हैं।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम

पस तुम उन्हें पहचान लो, दरमियाना क़द है, सुर्ख़ व सफ़ेद रंग है, दो कपड़े ओढ़े बाँधे हुए होंगे, उनके सर से क़तरे टपक रहे होंगे, अगरचे तरी न पहुँची हो। सलीब तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, जिज़्या क़बूल न करेंगे। लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलायेंगे और उनके ज़माने में तमाम मिल्लतें मिट जायेंगी, सिर्फ़ इस्लाम ही इस्लाम रहेगा। उनके ज़माने में अल्लाह तआ़ला उनसे दज्जाल को हलाक करेगा। फिर ज़मीन पर अमानत वाक़े होगी, यहाँ तक कि काले नाग ऊँटों के साथ, चीते गायों के साथ और भेड़िये बकरियों के साथ चुगते फिरेंगे और बच्चे साँपों से खेलेंगे, उन्हें वे कोई नुक़सान न पहुँचायेंगे। चालीस बरस तक ठहरेंगे, फिर फ़ौत होंगे और मुसलमान आपके जनाज़े की नमाज़ अदा करेंगे।

इब्ने जरीर की इसी रिवायत में है कि आप लोगों से उनको मुसलमान करने के लिये जिहाद करेंगे। इस हदीस का एक टुकड़ा सही बुख़ारी में भी है। एक और रिवायत में है कि सबसे ज़्यादा क़रीब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से दुनिया और आख़िरत में मैं हूँ। सही मुस्लिम में है कि क़ियामत क़ायम न होगी जब तक रूमी आमाक़ या वाबिक़ में न उतरें और उनके मुक़ाबले के लिये मदीने से मुसलमानों का लश्कर न जाये, जो उस वक़्त ज़मीन के लोगों से ज़्यादा अल्लाह के पसन्दीदा बन्दे होंगे। जब सफ़ें बंध जायेंगी तो रूमी कहेंगे हम तुमसे लड़ना नहीं चाहते, हम में से जो दीन बदलकर तुम में जा मिले हैं हम उनसे लड़ना चाहते हैं, तुम बीच से हट जाओ। लेकिन मुसलमान कहेंगे अल्लाह की क़सम! यह हो ही नहीं सकता कि हम अपने इन कमज़ोर भाईयों को तुम्हारे हवाले कर दें। चुनाँचे लड़ाई शुरू होगी। मुसलमानों के इस लश्कर का तिहाई हिस्सा तो शिकस्त खाकर भाग खड़ा होगा। उन लोगों की तौबा अल्लाह तआ़ला हरगिज़ क़बूल न फ़रमायेगा और तिहाई हिस्सा शहीद हो जायेगा, जो ख़ुदा के नज़दीक सबसे अफ़ज़ल शहीद होंगे। लेकिन आख़िरी तिहाई हिस्सा फ़तह हासिल कर लेगा और रूमियों पर ग़ालिब आ जायेगा। ये फिर किसी फ़ितने में न पड़ेंगे। क़ुस्तुनतुनिया को फ़तह करेंगे।

दज्जाल का निकलना

वे अपनी तलवार ज़ैतून में लटकाये हुए माले ग़नीमत तक़सीम ही कर रहे होंगे कि ऐन उसी हालत में शैतान चीख़कर कहेगा कि तुम्हारे बाल-बच्चों में दज्जाल आ गया, उसके इस झूठ को सच जानकर मुसलमान यहाँ से निकल खड़े होंगे। शाम (मुल्क सीरिया) पहुँचेंगे दुश्मनों से जंग करने के लिये सफ़ें ठीक कर रहे होंगे कि दूसरी जानिब से नमाज़ की तकबीर होगी और हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम

Maktab E Ashraf

नाज़िल होंगे, उनकी इमामत करायेंगे। जब दुश्मने खुदा उन्हें देखेगा तो इस तरह पिघलने लगेगा जिस तरह नमक पानी में घुलता है। अगर हज़रत ईसा उसे यूँ ही छोड़ दें तो वह घुलते-घुलते ख़त्म हो जाये लेकिन अल्लाह तआ़ला उसे आपके हाथ से क़त्ल करायेगा और आप अपने नेज़े पर उसका ख़ून लोगों को दिखायेंगे। मुस्नद अहमद और इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेराज वाली रात मैंने इब्राहीम, मूसा और ईसा अ़लैहिमुस्सलाम से मुलाक़ात की, आपस में क़ियामत के बारे में बातचीत होने लगी। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी लाइल्मी (अनभिज्ञता) ज़ाहिर की, इसी तरह मूसा ने भी, लेकिन ईसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसके आने का ठीक वक़्त तो सिवाय अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं जानता, हाँ मुझसे मेरे रब ने जो अ़हद लिया है वह यह है कि दज्जाल जब निकलेगा उसके साथ दो शाख़ें होंगी, मुझे देखकर वे इस तरह पिघलने लगेंगी जिस तरह सीसा पिघलता है। पस अल्लाह तआ़ला उसे हलाक करेगा। जब वह मुझे देख लेगा यहाँ तक कि पत्थर और दरख़्त भी बोलने लगेंगे कि ऐ मुसलमान यहाँ मेरे पीछे एक काफ़िर है, आ और उसे क़त्ल कर। पस अल्लाह तआ़ला उन सब को ग़ारत कर देगा और लोग अमन व अमान के साथ अपने-अपने वतन और शहरों को लौट जायेंगे।

याजूज व माजूज

उसके बाद याजूज और माजूज निकलेंगे और हर तरफ़ चढ़ आयेंगे, तमाम शहरों को रौंद डालेंगे, जिस जिस चीज़ पर उनका गुज़र होगा उसे हलाक और तबाह कर देंगे। जिस पानी के पास से गुज़रेंगे पी जायेंगे। लोग फिर लौटकर मेरे पास आयेंगे, मैं अल्लाह से दुआ़ करूँगा तो अल्लाह तआ़ला उन सबको एक साथ फ़ना कर देंगे। लेकिन उनके मुर्दा जिस्मों से हवा प्रदूषित हो जायेगी, बदबू फैल जायेगी, फिर बारिश बरसेगी और इस क़द्र कि उनकी तमाम लाशों को बहाकर समुद्र में डाल देगी। बस उस वक़्त क़ियामत की इस तरह आमद-आमद होगी जिस तरह पूरे दिन की हामिला (गर्भवती) औ़रत हो, कि उसके घर वाले नहीं जानते कि सुबह को बच्चा हो जाये या शाम को हो जाये, रात को पैदा हो या दिन को।

क़ियामत की निशानियाँ

मुस्नद अहमद में है, हज़रत अबू नज़रा फ़रमाते है कि हम हज़रत उस्मान बिन अबुल-आ़स रज़ि. के पास जुमा के दिन आये कि अपना लिखा हुआ क़ुरआन उनकी क़िराअत से मिलायें। जुमे का जब वक़्त आया तो आपने हमसे फ़रमाया गुस्ल कर लो, फिर ख़ुशबू ले आये जो हमने मली, फिर मस्जिद में आये और एक शख़्स के पास बैठ गये जिन्होंने हमसे दज्जाल वाली हदीस बयान की। फिर हज़रत उस्मान बिन अबुल-आ़स रज़ि. आये, हम खड़े हो गयें, फिर सब बैठ गये, आपने फ़रमाया- मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि मुसलमानों के तीन शहर हो जायेंगे एक दोनों समुद्र मिलने की जगह पर, एक ख़ैरा में और एक शाम (मुल्क सीरिया) में। फिर तीन घबराहटें लोगों को होंगी, फिर दज्जाल निकलेगा, यह पहले शहर की तरफ़ जायेगा, वहाँ के लोग तीन हिस्सों में हो जायेंगे, एक हिस्सा तो कहेगा कि हम उसके मुक़ाबले पर डटेंगे और देखेंगे कि क्या होता है। दूसरी जमाअ़त गाँवों के लोगों में मिल जायेगी, और तीसरी जमाअ़त दूसरे शहर में चली जायेगी जो उनसे क़रीब होगा। दज्जाल के साथ सत्तर हज़ार लोग होंगे जिनके सरों पर ताज होंगे, उनकी अक्सरियत यहूदियों और औ़रतों की होगी। यहाँ के ये मुसलमान एक घाटी में सिमटकर घिर जायेंगे, उनके जानवर जो चरने चुगने गये होंगे वे भी हलाक हो जायेंगे। इस वजह से

उनकी मुसीबतें और परेशानियाँ बहुत बढ़ जायेंगी और भूख की वजह से बुरा हाल हो जायेगा, यहाँ तक कि अपनी कमानों की तानें भूनकर खा लेंगे। जब सख़्त तंगी में होंगे तो उन्हें समुद्र में से आवाज़ आयेगी कि लोगो! तुम्हारे लिये इमदाद आ गई। इस आवाज़ को सुनकर ये लोग ख़ुश होंगे, क्योंकि आवाज़ से जान लेंगे कि यह किसी अच्छे शख़्स की आवाज़ है।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का उतरना

ऐन सुबह की नमाज़ के वक़्त हज़रत ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम नाज़िल होंगे। उनका अमीर आपसे कहेगा कि ऐ रूहुल्लाह! आगे बढ़िये और नमाज़ पढ़ाईये। आप कहेंगे कि इस उम्मत के बाज़ लोग बाज़ के अमीर हैं, चुनाँचे उन्हीं का अमीर आगे बढ़ेगा और नमाज़ पढ़ायेगा। फ़ारिग़ होने के बाद आप अपना हथियार हाथ में लेकर दज्जाल का रुख़ करेंगे। दज्जाल आपको देखकर सीसे की तरह पिघलने लगेगा। आप उसके सीने पर वार करेंगे जिससे वह हलाक हो जायेगा और उसके साथी शिकस्त खाकर भाग खड़े होंगे, लेकिन उन्हें कहीं अमन न मिलेगा, यहाँ तक कि अगर वे किसी दरख़्त के नीचे छुपेंगे तो वह दरख़्त पुकारकर कहेगा कि ऐ मोमिन! यह एक काफ़िर मेरे पास छुपा हुआ है, और इसी तरह पत्थर भी बता देगा।

दज्जाल और उसकी निशानियाँ

इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने एक ख़ुतबे (तक़रीर और बयान) में कम व बेश हिस्सा दज्जाल का वाक़िआ़ बयान करने और उससे डराने में ही सर्फ़ किया। जिसमें यह भी फ़रमाया कि दुनिया की शुरूआ़त से लेकर इसके ख़ात्मे तक कोई फ़ितना उससे बड़ा नहीं। तमाम अम्बिया अपनी-अपनी उम्मतों को इससे आगाह करते रहे हैं, मैं सबसे आख़िरी नबी हूँ और तुम सबसे आख़िरी उम्मत हो, वह यक़ीनन तुम्हीं में आयेगा, अगर मेरी मौजूदगी में आ गया तो मैं ख़ुद उससे निपट लूँगा और अगर बाद में आया तो हर शख़्स को ख़ुद को उससे बचाना पड़ेगा। मैं अल्लाह तआ़ला को हर मुसलमान का ख़लीफ़ा बनाता हूँ। वह शाम और इराक़ के दरमियान निकलेगा दायें बायें घूमेगा। लोगो! ऐ अल्लाह के बन्दो! देखो देखो तुम साबित-क़दम (यानी दीन इस्लाम पर जमे) रहना। सुनो मैं तुम्हें उसकी ऐसी सिफ़त सुनाता हूँ जो किसी नबी ने अपनी उम्मत को नहीं सुनाई। वह शुरू में दावा करेगा कि मैं नबी हूँ पस तुम याद रखना कि मेरे बाद कोई नबी नहीं। फिर वह इससे भी बढ़ जायेगा और कहेगा कि मैं ख़ुदा हूँ पस तुम याद रखना कि ख़ुदा को इन आँखों से कोई नहीं देख सकता, मरने के बाद आ़लमे आख़िरत में दीदारे बारी हो सकता है। और सुनो वह काना होगा और तुम्हारा रब काना नहीं, उसकी दोनों आँखों के बीच "काफ़िर" लिखा हुआ होगा, जिसे पढ़ा लिखा और अनपढ़ ग़र्ज़ हर ईमान वाला पढ़ लेगा। उसके साथ आग होगी और बाग़ होगा। उसकी आग दर असल जन्नत होगी और उसका बाग़ जहन्नम होगा।

सुनो! तुम में से जिसे वह आग में डाले वह अल्लाह से अपनी मदद चाहे और सूरः कहफ़ की शुरू की आयतें पढ़े, उसकी वह आग उस पर ठंडक और सलामती का कारण बन जायेगी। जैसे इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम पर नमरूद की आग हो गई थी। उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह एक अ़रब देहाती से कहेगा कि अगर मैं तेरे मरे हुए बाप को ज़िन्दा कर दूँ फिर तो तू मुझे रब मान लेगा? वह इक़रार करेगा। इतने में दो शैतान उसकी माँ और बाप की शक्ल में ज़ाहिर होंगे और उससे कहेंगे बेटे यही तेरा रब

Muftah E Ashraf

है, तू इसे मान ले। उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह एक शख़्स पर मुसल्लत कर दिया जायेगा, उसे आरे से चिरवाकर दो टुकड़े करवा देगा, फिर लोगों से कहेगा मेरे इस बन्दे को देखना अब मैं इसे ज़िन्दा करूँगा लेकिन यह फिर भी यही कहेगा कि इसका रब मेरे सिवा और कोई है। चुनाँचे यह उसे उठायेगा बैठायेगा और यह ख़बीस उसी से पूछेगा कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देगा मेरा रब अल्लाह तआ़ला है और तू खुदा का दुश्मन दज्जाल है। खुदा की क़सम अब तो मुझे पहले से भी बहुत ज़्यादा यक़ीन हो गया। दूसरी सनद से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- यह मोमिन मेरी उम्मत में सबसे ज़्यादा बुलन्द दर्जे का जन्नती होगा। हज़रत अबू सईदी खुदरी रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस हदीस को सुनकर हमारा यह ख़्याल था कि वह शख़्स हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ही होंगे और आपकी शहादत तक हमारा यही ख़्याल रहा।

एक और फ़ितना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि उसका एक फ़ितना (इम्तिहान में डालने वाली बात) यह भी होगा कि वह आसमान को पानी बरसाने का हुक्म देगा और आसमान से बारिश होगी, वह ज़मीन को पैदावार उगाने का हुक्म देगा और ज़मीन से पैदावार होगी। उसका एक फ़ितना यह भी होगा कि वह एक क़बीले के पास जायेगा, वे उसे न मानेंगे, उसी वक़्त उनकी तमाम चीज़ें बरबाद व हलाक हो जायेंगी। दूसरे क़बीले के पास जायेगा जो उसे खुदा मान लेगा उसी वक़्त उसके हुक्म से उन पर बारिश होगी और ज़मीन फल और खेती उगायेगी, उनके जानवर पहले से ज़्यादा मोटे ताज़े और दूध देने वाले हो जायेंगे। सिवाय मक्का और मदीना के तमाम ज़मीन (मुल्कों) का दौरा करेगा, जब मदीने का रुख़ करेगा तो यहाँ हर-हर राह पर फ़रिश्तों को खुली तलवारें लिये हुए पायेगा तो सन्जा की आख़िरी सीमा पर ज़रीबे अहमर के पास ठहर जायेगा। फिर मदीने में तीन भूँचाल आयेंगे, इस वजह से जितने मुनाफ़िक़ मर्द और जिस क़द्र मुनाफ़िक़ औरतें होंगी सब मदीने से निकल कर उसके लश्कर में मिल जायेंगे और मदीना उन गन्दे लोगों को इस तरह अपने से दूर फेंक देगा जिस तरह भट्टी लोहे के मैल-कुचैल को अलग कर देती है। उस दिन का नाम "यौमे ख़लास" होगा।

उम्मे शुरैक रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! उस दिन अ़रब कहाँ होंगे? फ़रमाया पहली बात तो यह है कि होंगे ही बहुत कम और अक्सरियत उनकी बैतुल-मुक़द्दस में होगी। उनका इमाम एक सालेह (नेक परहेज़गार) शख़्स होगा, जो आगे बढ़कर सुबह की नमाज़ पढ़ा रहा होगा, तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम नाज़िल होंगे। यह इमाम पिछले पैरों पीछे हटेगा ताकि आप आगे बढ़कर इमामत करायें। लेकिन आप उसकी कमर पर हाथ रखकर फ़रमायेंगे कि आगे बढ़ो और नमाज़ पढ़ाओ, तकबीर तुम्हारे लिये की गई है। पस उनका इमाम ही नमाज़ पढ़ायेगा।

नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप फ़रमायेंगे कि दरवाज़ा खोल दो, पस दरवाज़ा खोल दिया जायेगा। उधर दज्जाल सत्तर हज़ार यहूदियों का लश्कर लिये हुए मौजूद होगा, जिनके सरों पर ताज और जिनकी तलवारों पर सोना होगा। दज्जाल आपको देखकर इस तरह पिघलने लगेगा जिस तरह नमक पानी में घुलता है, और एक दम पीठ फेरकर भागना शुरू कर देगा। लेकिन आप फ़रमायेंगे खुदा ने तय कर दिया है कि तू मेरे हाथ से एक ज़रब (चोट) खायेगा, तू उसे टाल नहीं सकता। चुनाँचे आप उसे पूर्वी दरवाज़े लुद के पास पकड़ लेंगे और वहीं उसे क़त्ल करेंगे। अब यहूदी बदहवासी से बिखर कर भागेंगे, लेकिन उन्हें कहीं सर छुपाने को जगह नहीं मिलेगी। हर पत्थर, हर दरख़्त, हर दीवार और हर जानवर बोलता होगा कि ऐ मुसलमानो! यहाँ

यहूदी है आकर उसे मार डालो। हाँ बबूल का दरख़्त यहूदियों का दरख़्त है, यह नहीं बोलेगा। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि उसका रहना चालीस साल तक होगा। साल आधे साल के बराबर और आधा साल एक महीने के बराबर और महीना जुमे जैसा और बाक़ी दिन एक अंगारे जैसा (मतलब यह है कि यह वक़्त बहुत तेज़ी से गुज़र जायेगा)। सुबह ही एक शख़्स नहर के दरवाज़े से चलेगा और अभी दूसरे दरवाज़े तक नहीं पहुँचा होगा कि शाम हो जायेगी। लोगों ने पूछा कि या रसूलल्लाह! फिर इतने छोटे दिनों में हम नमाज़ कैसे पढ़ेंगे? आपने फ़रमाया अन्दाज़ा कर लिया करो, जिस तरह इन लम्बे दिनों में अन्दाज़े से पढ़ा करते थे।

ईसा अ़लैहिस्सलाम की बरकतें

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- पस ईसा बिन मरियम मेरी उम्मत में हाकिम होंगे, आ़दिल होंगे, इमाम होंगे, इन्साफ़ करने वाले होंगे, सलीब को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, जिज़्ये को हटा देंगे, सदक़ा छोड़ दिया जायेगा। पस बकरी और ऊँट पर कोशिश न की जायेगी, हसद और बुग़्ज़ बिल्कुल जाता रहेगा, हर ज़हरीले जानवर का ज़हर हटा दिया जायेगा, बच्चे अपनी उंगली साँप के मुँह में डालेंगे लेकिन वह उन्हें कोई नुक़सान न पहुँचायेगा। शेरों से लड़के खेलेंगे, नुक़सान कुछ न होगा। भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इस तरह फिरेंगे जैसे रखवाला कुत्ता हो। तमाम ज़मीन इस्लाम और सुधार से इस तरह भर जायेगी जैसे कोई बरतन पानी से लबालब भरा हुआ हो। सबका कलिमा एक हो जायेगा। अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न होगी, लड़ाई और जंग बिल्कुल बन्द हो जायेगी, क़ुरैश अपना मुल्क छीन लेंगे, ज़मीन चाँदी की तरह सफ़ेद और मुनव्वर हो जायेगी और जैसी बरकतें आदम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में थीं उगा देगी। एक जमाअ़त को एक अंगूर का गुच्छा पेट भरने के लिये काफ़ी होगा, एक अनार इतना बड़ा होगा कि एक जमाअ़त खाये और सेर हो जाये, बैल इतनी इतनी (यानी ज़्यादा) क़ीमत पर मिलेगा और घोड़ा चन्द दिर्हमों पर मिलेगा। लोगों ने पूछा कि इसकी क़ीमत गिर जाने की क्या वजह होगी? फ़रमाया इसलिये कि लड़ाईयों में उसकी सवारी बिल्कुल न ली जायेगी (अब सब देख रहे हैं कि बजाय घोड़ों के आधुनिक हथियारों और नई-नई मशीनों व टैंकों वग़ैरह का इस्तेमाल किस क़द्र बढ़ चुका है)। मालूम किया गया कि बैल की क़ीमत बढ़ जाने की क्या वजह होगी? फ़रमाया इसलिये कि तमाम ज़मीन में खेतियाँ शुरू हो जायेंगी।

दज्जाल के ज़हूर (ज़ाहिर होने) के तीन साल पहले से सख़्त क़हत-साली होगी (यानी सूखा पड़ा होगा), पहले साल बारिश का तीसरा हिस्सा अल्लाह के हुक्म से रोक लिया जायेगा और ज़मीन की पैदावार का भी तीसरा हिस्सा कम हो जायेगा, फिर दूसरे साल ख़ुदा आसमान को हुक्म देगा कि बारिश के दो तिहाई हिस्से कम कर दे, तीसरे साल आसमान से बारिश का एक क़तरा भी न बरसेगा, न ज़मीन से कोई चीज़ उगेगी न कोई पैदावार होगी। तमाम जानवर उस सूखे में हलाक हो जायेंगे, मगर जिसे ख़ुदा चाहे। आपसे पूछा गया कि फिर उस वक़्त लोग ज़िन्दा कैसे रहेंगे? आप सल्ल. ने फ़रमाया उनकी ग़िज़ा के क़ायम-मक़ाम उस वक़्त उनका "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहना और "अल्लाहु अकबर" कहना और "सुब्हानल्लाह" कहना और "अल्हम्दु लिल्लाह" कहना होगा।

इमाम इब्ने माजा रह. फ़रमाते हैं कि मेरे उस्ताद ने अपने उस्ताद से सुना, वह फ़रमाते थे यह हदीस इस क़ाबिल है कि बच्चों के उस्ताद इसे बच्चों को भी सिखा दें, बल्कि लिखवा दें ताकि उन्हें भी याद रहे। यह हदीस इस सनद से है तो ग़रीब, लेकिन इसके बाज़ हिस्सों की ताईद दूसरी हदीसों से भी होती है। इसी

Maktab E Ashraf

हदीस के जैसी एक हदीस हज़रत नुवास बिन समआन रज़ि. से नक़ल की गयी है, उसे भी हम यहाँ ज़िक्र करते हैं। सही मुस्लिम में है कि एक दिन सुबह को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दज्जाल का ज़िक्र किया और इस तरह उसके उतार-चढ़ाव बयान किये कि हम समझे कहीं वह मदीने के नख़लिस्तान (यानी शहर से बाहर किनारे के बाग़ों) में मौजूद न हो, फिर जब हम लौटकर आपकी तरफ़ आये तो हमारे चेहरों से आपने जान लिया और दरियाफ़्त फ़रमाया कि क्या बात है? हमने बयान कर दिया तो आपने फ़रमाया दज्जाल के अ़लावा तो मुझे तुम पर उससे भी बढ़कर ख़ौफ़ है। अगर वह मेरी मौजूदगी में आ निकला तो मैं ख़ुद उससे समझ लूँगा। और वह मेरे बाद आये तो हर मुसलमान उससे ख़ुद भुगत लेगा। मैं अपना ख़लीफ़ा हर मुसलमान पर ख़ुदा को बनाता हूँ। वह जवान होगा, आँख उसकी उभरी हुई होगी, बस यूँ समझ लो कि अ़ब्दुल-उ़ज़्ज़ा बिन क़तन की तरह होगा। तुम में से जो उसे देखे उसको चाहिये कि सूरः कहफ़ की शुरू की आयतें पढ़े। वह शाम (मुल्क सीरिया) व इराक़ के दरमियानी गोशे से निकलेगा और दायें बायें गश्त करेगा। ऐ अल्लाह के बन्दो! ख़ूब साबित-क़दम (यानी इस्लाम पर जमे) रहना।

हमने पूछा हुज़ूर! वह कितनी मुद्दत रहेगा? आपने फ़रमाया चालीस दिन। एक दिन एक साल के बराबर, एक दिन एक महीने के बराबर, एक दिन जुमे के बराबर, और बाक़ी तीन दिन तुम्हारे मामूली दिनों की तरह। फिर हमने दरियाफ़्त किया कि जो दिन साल भर के बराबर होगा क्या उसमें एक ही दिन की नमाज़ें काफ़ी होंगी? आपने फ़रमाया नहीं, बल्कि अन्दाज़ा कर लो। हमने पूछा या रसूलल्लाह! उसकी रफ़्तार की तेज़ी कैसी होगी? फ़रमाया ऐसी जैसे बादल हवाओं के ज़रिये भागते हैं। एक क़ौम को अपनी तरफ़ बुलायेगा वे मान लेंगे तो आसमान से उन पर बारिश होगी, ज़मीन से खेती और फल उगेंगे, उनके जानवर तरोताज़ा और ज़्यादा दूध देने वाले हो जायेंगे। एक क़ौम के पास जायेगा जो उसे झुठलायेगी और उसका इनकार कर देगी। यह वहाँ से वापस होगा तो उनके हाथ में कुछ न रहेगा, वह बंजर ज़मीन पर खड़ा होकर हुक्म देगा कि ऐ ज़मीन के ख़ज़ानो! निकल आओ तो वे सब निकल आयेंगे और शहद की मक्खियों की तरह उसके पीछे-पीछे फिरेंगे। यह एक नौजवान को बुलायेगा उसे क़त्ल करेगा और उसके ठीक दो टुकड़े करके इतनी-इतनी दूर डाल देगा कि एक तीर की रफ़्तार हो, फिर उसे आवाज़ देगा तो वह ज़िन्दा होकर हंसता हुआ उसके पास आ जायेगा। अब अल्लाह तआ़ला मसीह बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम को भेजेगा और वह दमिश्क़ के सफ़ेद पूर्वी मीनार के पास दो चादरें ओढ़े बाँधे दो फ़रिश्तों के परों पर बाज़ू रखे हुए उतरेंगे, जब सर झुकायेंगे तो क़तरे टपकेंगे और जब उठायेंगे तो मोतियों की तरह वे क़तरे लुढ़केंगे। जिस काफ़िर तक उनका साँस पहुँच जायेगा वह मर जायेगा, और आपका साँस वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ तक निगाह पहुँचे।

आप दज्जाल का पीछा करेंगे और लुद दरवाज़े के पास उसे पाकर क़त्ल करेंगे। फिर उन लोगों के पास आयेंगे जिन्हें ख़ुदा ने इस फ़ितने से बचा रखा होगा, उनके चेहरों पर हाथ फेरेंगे और उनके आला दर्जों की उन्हें ख़बर देंगे। अब ख़ुदा की तरफ़ से हज़रत ईसा के पास 'वही' आयेगी कि मैं अपने बन्दों को भेजता हूँ जिनका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता, तो तुम मेरे उन ख़ास बन्दों को तूर की तरफ़ ले जाओ। फिर याजूज माजूज निकलेंगे और वे हर तरफ़ से कूदते-फाँदते आ जायेंगे। बुहैरा-ए-तबरिया पर उनका पहला गिरोह आयेगा और उसका सारा पानी पी जायेगा, जब उनके बाद ही दूसरा गिरोह आयेगा तो वह ऐसा सूखा पड़ा होगा कि वे कहेंगे शायद यहाँ कभी पानी न रहा हो। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और आपके साथी मोमिन वहाँ इस क़द्र घिरे रहेंगे कि एक बैल का सर उन्हें इससे भी अच्छा लगेगा जैसे तुम्हें आज एक सौ दीनार (सोने के सिक्के) महबूब (पसन्दीदा और अच्छे लगते) हैं।

अब आप और मोमिन ख़ुदा से दुआयें और इल्तिजायें करेंगे, अल्लाह उन पर गर्दन की गिल्टी की बीमारी भेज देगा, जिसमें वे सब एक साथ फ़ना हो जायेंगे। फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और आपके साथी ज़मीन पर उतरेंगे मगर ज़मीन पर बालिश्त भर जगह भी ऐसी न पायेंगे जो उनकी लाशों से और बदबू से ख़ाली हो। फिर आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़यें और इल्तिजायें करेंगे तो बुख़्ती (यानी बहुत बड़े) ऊँटों की गर्दनों के बराबर एक क़िस्म के परिन्दे अल्लाह तआ़ला भेजेगा जो उनकी लाशों को उठाकर जहाँ ख़ुदा चाहे डाल आयेंगे, फिर बारिश होगी और तमाम ज़मीन धुल-धुलाकर हथेली जैसी साफ़ हो जायेगी। फिर ज़मीन को हुक्म होगा कि अपने फल निकाल और अपनी बरकतें ज़ाहिर कर। उस दिन एक अनार एक जमाअ़त को काफ़ी होगा और वे सब उसके छिलके के नीचे आराम हासिल कर सकेंगे (बाज़ इलाक़ों में अब भी तरबूज़-ख़रबूज़े कई कई धड़ी के होते हैं)। एक ऊँटनी का दूध एक पूरे क़बीले से नहीं पिया जायेगा। फिर परवर्दिगारे आ़लम एक लतीफ़ और पाकीज़ा हवा चलायेगा जो तमाम ईमान वाले मर्द व औ़रतों की बग़ल के नीचे से निकल जायेगी और साथ ही उनकी रूह भी परवाज़ कर जायेगी, और बुरे लोग बाक़ी रह जायेंगे जो आपस में गधों की तरह धेंगा-मुश्ती में मशग़ूल हो जायेंगे, उन पर क़ियामत क़ायम होगी।

मुस्नद अहमद में भी एक ऐसी ही हदीस है उसे हम सूरः अम्बिया की आयत "हत्ता इज़ा फ़ुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु....." (आयत नम्बर 96) की तफ़सीर में बयान करेंगे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला। मुस्लिम शरीफ़ में है कि एक शख़्स हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. के पास आया और कहा कि यह क्या बात है जो मुझे पहुँची है कि आप फ़रमाते हैं क़ियामत यहाँ यहाँ तक आ जायेगी? आपने "सुब्हानल्लाह" या "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहकर फ़रमाया कि मेरा तो अब जी चाहता है कि तुम्हें अब कोई हदीस ही न सुनाऊँ (यानी तुम सही तरीक़े से हदीस समझते ही नहीं, फिर क्या फ़ायदा)। मैंने तो यह कहा था कि कुछ ज़माने के बाद तुम बड़े-बड़े मामले देखोगे। बैतुल्लाह जला दिया जायेगा और यह होगा वह होगा वग़ैरह। फिर फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है कि दज्जाल निकलेगा और मेरी उम्मत में चालीस तक ठहरेगा। मुझे नहीं मालूम कि चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस साल।

फिर अल्लाह तआ़ला ईसा अ़लैहिस्सलाम को भेजेगा, आपकी सूरत उर्वा बिन मसऊद के जैसी है, आप उसे तलाश करके क़त्ल करेंगे, फिर सात साल तक लोग इस तरह रहेंगे कि दो आदमियों में भी कुछ दुश्मनी और बैर न होगा। फिर एक ठंडी हवा शाम (मुल्क सीरिया) की तरफ़ से चलेगी और सब ईमान वालों को मौत के मुँह में पहुँचा देगी। जिसके दिल में एक ज़र्रा बराबर भी भलाई या ईमान होगा अगरचे वह किसी पहाड़ के ग़ार में हो वह भी फ़ौत हो जायेगा, फिर बदतरीन (गुनाहगार और बेईमान) लोग बाक़ी रह जायेंगे जो परिन्दों जैसे हल्के और दरिन्दों जैसे दिमाग़ों वाले होंगे। अच्छाई बुराई की कोई तमीज़ उनमें न होगी। शैतान उनके पास इनसानी सूरत में आकर उन्हें बुत-परस्ती की तरफ़ माईल कर देगा लेकिन उनकी इस हालत में भी उनकी रोज़ियों के दरवाज़े उन पर खुले हुए होंगे और ज़िन्दगी आराम से गुज़र रही होगी। फिर सूर फूँका जायेगा जिससे लोग गिरने पड़ने लगेंगे, एक शख़्स जो अपने ऊँटों को पानी पिलाने के लिये उनका हौज़ ठीक कर रहा होगा, सबसे पहले सूर की आवाज़ उसके कान में पड़ेगी जिससे यह और तमाम लोग बेहोश हो जायेंगे।

ग़र्ज़ सब के फ़ना हो चुकने के बाद अल्लाह तआ़ला बारिश बरसायेगा जो ओस या साये की तरह होगी, उससे दोबारा जिस्म पैदा होंगे। फिर दूसरा सूर फूँका जायेगा, सबके सब जी उठेंगे। फिर कहा जायेगा लोगो! अपने रब की तरफ़ चलो। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से कहा जायेगा उन्हें रोको, उनसे सवाल

Maktab E Ashraf

किया जायेगा फिर फ़रमाया जायेगा जहन्नम का हिस्सा निकालो। पूछा जायेगा कितनों में से कितने? जवाब मिलेगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। यह दिन है जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा और यही दिन है जिसमें पिंडली खोली जायेगी।

मुस्नद अहमद में है कि इब्ने मरियम (हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम) लुद दरवाज़े के पास या लुद की जानिब मसीह दज्जाल को क़त्ल करेंगे। तिर्मिज़ी में बाबे लुद है, और यह हदीस सही है। उसके बाद इमाम तिर्मिज़ी रह. ने और चन्द सहाबा के नाम लिये हैं कि उनसे भी इस बाब की हदीसें नक़ल की गयी हैं, तो इससे मुराद वे हदीसें हैं जिनमें दज्जाल का मसीह अ़लैहिस्सलाम के हाथ से क़त्ल होना बयान हुआ है। सिर्फ़ दज्जाल के ज़िक्र की हदीसें तो बेशुमार हैं जिन्हें जमा करना सख़्त दुश्वार है। मुसन्द में है कि अ़रफ़ा से आते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के एक मजमे के पास से गुज़रे, उस वक़्त वहाँ क़ियामत के बारे में गुफ़्तगू हो रही थी तो आपने फ़रमाया जब तक दस बातें न हो लें क़ियामत क़ायम न होगी।

1. सूरज का पश्चिम की तरफ़ से निकलना।
2. धुएँ का आना।
3. दाब्बुतल-अर्ज़ का निकलना।
4. याजूज माजूज का आना।
5. ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम का नाज़िल होना।
6. दज्जाल का आना।
7. तीन जगहों का धंस जाना।

8-10 पूरब में, पश्चिम में और अ़रब के इलाक़े में और अ़दन से एक आग का निकलना जो लोगों को हंकाकर इकट्ठे कर देगी। वह रात भी उन्हीं के साथ गुज़ारेगी और जब दोपहर को वे आराम करेंगे यह आग उनके साथ ही रहेगी। यह हदीस मुस्लिम और सुनन में भी है और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी से मौक़ूफ़न भी मरवी है। वल्लाहु आलम

पस नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ये मुतवातिर हदीसें जो हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत उस्मान बिन अबुल-आ़स, हज़रत अबू उमामा, हज़रत नुवास बिन समआ़न, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर, हज़रत मजमा बिन जारिया, हज़रत अबू शुरैहा, हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मरवी हैं, ये साफ़ दलालत करती हैं कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल होगा, साथ ही उनमें यह भी बयान है कि किस तरह उतरेंगे और कहाँ उतरेंगे और किस वक़्त उतरेंगे। यानी सुबह की नमाज़ की तकबीर के वक़्त शाम (मुल्क सीरिया) के शहर दमिश्क़ के पूर्वी मीनार पर आप उतरेंगे।

इस ज़माने (यानी सन् सात सौ इक्तालीस हिजरी) में जामिया उमवी का मीनारा सफ़ेद पत्थर से बहुत मज़बूत बनाया गया है इसलिये कि आग लगने से यह जल गया है, और यह आग लगाने वाले ग़ालिबन मलऊन ईसाई थे। क्या अ़जब है कि यही वह मीनारा हो जिस पर मसीह अ़लैहिस्सलाम नाज़िल होंगे और ख़िन्ज़ीरों को क़त्ल करेंगे, सलीबों को तोड़ेंगे, जिज़्ये को हटा देंगे और सिवाय दीने इस्लाम के और दीन क़बूल न फ़रमायेंगे जैसा कि सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीसें गुज़र चुकीं, जिनमें पैग़म्बरे सादिक़ व मुसद्दक़ अ़लैहिस्सलाम ने यह ख़बर दी है और इसे साबित बतलाया है। यह वह वक़्त होगा जबकि तमाम शक व शुब्हे हट जायेंगे और लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की पैरवी में इस्लाम क़बूल कर लेंगे, जैसा कि

Mahtab E Ashraf

इस आयत में है, और जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ.

यानी जनाब मसीह अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल (आसमान से उतरना) क़ियामत के क़रीब आने का एक ज़बरदस्त निशान है।

इसलिये कि आप दज्जाल के आ चुकने के बाद तशरीफ़ लायेंगे, उसे क़त्ल करेंगे जैसा कि सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने कोई बीमारी ऐसी नहीं पैदा की जिसका इलाज न मुहैया किया हो, आप ही के वक़्त में याजूज व माजूज निकलेंगे जिन्हें अल्लाह तआ़ला आपकी दुआ़ की बरकत से हलाक करेगा। क़ुरआने करीम उनके निकलने की भी ख़बर देता है। अल्लाह का फ़रमान है:

حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ٥ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ.

यानी उनका (याजूज माजूज का) निकलना भी क़ियामत के नज़दीक होने की दलील है।

अब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की सिफ़तें मुलाहिज़ा हों।

अम्बिया का हुलिया

पहले की दो हदीसों में भी आपकी सिफ़त गुज़र चुकी है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि मेराज की रात में मैंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से भी मुलाक़ात की, वह दरमियाना क़द के, साफ़ बालों वाले हैं, जैसे शनवा क़बीले के लोग होते हैं। और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से भी मुलाक़ात की, वह सुर्ख़ रंग, दरमियाना क़द के हैं, ऐसा मालूम होता है कि गोया अभी हम्माम से निकले हैं। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को भी मैंने देखा, बस वह बिल्कुल मुझ जैसे थे।

बुख़ारी की एक और रिवायत में है कि हज़रत ईसा सुर्ख़ रंग, घुंघरियाले बालों वाले, चौड़े चकले सीने वाले थे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम गन्दुमी रंग के, तन्दुरुस्त जिस्म के और सीधे बालों वाले थे, जैसे ज़ुत के लोग होते हैं। इसी तरह आपने दज्जाल की शक्ल व सूरत भी बयान फ़रमा दी है कि उसकी दाहिनी आँख कानी होगी, जैसे फूला हुआ अंगूर। आप फ़रमाते हैं कि मुझे काबे के पास ख़्वाब में दिखलाया गया कि एक बहुत ही गन्दुमी रंग वाले जिनके सर के बाल दोनों मोंढो तक थे, साफ़ बालों वाले जिनके सर से पानी के क़तरे टपक रहे थे दो शख़्सों के मोंढों पर हाथ रखे तवाफ़ कर रहे हैं। मैंने पूछा यह कौन हैं? तो मुझे बतलाया गया कि यह मसीह बिन मरियम हैं। मैंने उनके पीछे ही एक शख़्स को देखा जिसकी दाहिनी आँख कानी थी। इब्ने क़ुतन से बहुत मिलता जुलता था, सख़्त उलझे हुए बाल थे, वह भी दो शख़्सों के कन्धों पर हाथ रखे बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा है। मैंने कहा यह कौन है? कहा गया यह मसीह दज्जाल है। बुख़ारी की एक और रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से मरवी है कि ख़ुदा की क़सम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत ईसा को सुर्ख़ रंग का नहीं बतलाया बल्कि आपने गन्दुमी रंग बतलाया है। फिर ऊपर वाली पूरी हदीस है।

हज़रत ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि इब्ने क़ुत्न कबीला ख़ुज़ाआ का एक शख़्स था जो जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) में मर चुका था। वह हदीस भी गुज़र चुकी जिसमें यह बयान है कि जनाब मसीह अ़लैहिस्सलाम अपने नुज़ूल (आसमान से उतरने) के बाद चालीस साल यहाँ रहेंगे, फिर इन्तिक़ाल करेंगे और मुसलमान आपके जनाज़े की नमाज़ अदा करेंगे। हाँ मुस्लिम की एक हदीस में है कि आप यहाँ

Maktab E Ashraf

सात साल रहेंगे तो मुम्किन है कि चालीस साल का फ़रमान उस मुद्दत समेत का हो जो आपने दुनिया में अपने आसमानों पर उठाये जाने से पहले गुज़ारी है, जिस वक़्त आप उठाये गए उस वक़्त आपकी उम्र तैंतीस साल की थी और सात साल अब आख़िर ज़माने के, तो पूरे चालीस साल हो गये। वल्लाहु आलम (इब्ने असाकिर)

बाज़ का क़ौल है कि जब आप आसमानों पर चढ़ाये गए उस वक़्त आपकी उम्र डेढ़ साल की थी, यह बिल्कुल फ़ुज़ूल की बात और दूर का क़ौल है, हाँ हाफ़िज़ अबू क़ासिम रह. ने अपनी तारीख़ में बाज़ पहले उलेमा से यह भी नक़ल किया है कि आप हुज़ूर सल्ल. के हुजरे में आपके साथ दफ़न किये जायेंगे। वल्लाहु आलम

फिर इरशाद है कि यह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होंगे यानी इस बात के कि ख़ुदा की रिसालत आपने उन्हें पहुँचा दी थी, और ख़ुद आपने ख़ुदा की बन्दगी का इक़रार किया था। जैसा कि सूरः मायदा के आख़िर में आयत नम्बर 116 से आयत नम्बर 118 तक बयान किया गया है। यानी आपकी गवाही का वहाँ ज़िक्र है और ख़ुदा के सवाल का।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ ع ٢٢ ٢

सो यहूद के इन्ही बड़े-बड़े जुर्मों के सबब हमने बहुत-सी पाकीज़ा चीज़ें जो उनके लिए हलाल थीं उन पर हराम कर दीं, और इस सबब से कि वे बहुत आदमियों के लिए अल्लाह तआ़ला की राह से रुकावट बन जाते थे। (160) और इस सबब से कि वे सूद लिया करते थे हालाँकि उनको इससे मना किया गया था, और इस सबब से कि वे लोगों के माल नाहक़ तरीक़े से खा जाते थे। और हमने उन लोगों के लिये जो उनमें से काफ़िर हैं दर्दनाक सज़ा का सामान कर रखा है। (161) लेकिन उनमें जो लोग (दीन के) इल्म में पुख़्ता हैं और जो (उनमें) ईमान ले आने वाले हैं, कि इस (किताब) पर भी ईमान लाते हैं जो आपके पास भेजी गई और (उस पर भी ईमान रखते हैं) जो आपसे पहले भेजी गई थी, और जो (उनमें) नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं और जो (उनमें) ज़कात देने वाले हैं और जो (उनमें) अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर एतिक़ाद रखने वाले हैं, (सो) ऐसे लोगों को हम (आख़िरत में) ज़रूर बहुत बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाएँगे। (162)

Maktab-e-Ashraf

नाफ़रमानी ख़ुदा की नेमतों से मेहरूम होने का सबब

इस आयत के दो मतलब हो सकते हैं- एक तो यह कि यह हुर्मते तक़दीरी हो, यानी ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से ही यह था कि ये लोग अपनी किताब को बदल दें, उसमें तहरीफ़ कर लें और हलाल चीज़ों को अपने ऊपर हराम ठहरा लें, सिर्फ़ अपने तशद्दुद और अपनी सख़्त-मिज़ाजी की वजह से। दूसरा यह कि यह हुर्मत (हराम होना) शरई है, यानी तौरात के उतरने से पहले जो बाज़ चीज़ें उन पर हलाल थीं तौरात के उतरने के वक़्त उनकी बाज़ बदकारियों की वजह से वे हराम कर दी गईं। जैसा कि फ़रमायाः

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِىٓ اِسْرَآئِيْلَ.

यानी ऊँट का गोश्त और दूध जो हज़रत इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था। इसके अ़लावा तमाम खाने की चीज़ें बनी इस्राईल के लिये हलाल थीं, फिर तौरात में उन पर बाज़ चीज़ें हराम की गईं जैसा कि सूरः अन्आ़म में फ़रमायाः

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا.....

यहूदियों पर हमने हर नाख़ुन वाले जानवर को हराम कर दिया और गाय बकरी की चर्बी भी जो अलग थलग हो, हमने उन पर हराम क़रार दे दी। यह इसलिये कि ये बाग़ी, सरकश, मुख़ालिफ़े रसूल और इख़्तिलाफ़ करने वाले लोग थे। पस यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि उनके ज़ुल्म व ज़्यादती के सबब, ख़ुद राहे ख़ुदा से अलग होकर दूसरों को भी उससे भटकाने के सबब, जो उनकी पुरानी आ़दत थी रसूलों के दुश्मन बन जाते थे, उन्हें क़त्ल कर डालते थे, उन्हें झुठलाते थे, मुक़ाबला करते थे और तरह-तरह के हीले-बहाने करके सूद खाने के काम करते थे जो बिल्कुल हराम थे, और भी जिस तरह बन पड़ता लोगों के माल खाने की ताक में लगे रहते और इस बात को जानते हुए कि ख़ुदा ने ये काम हराम किये हैं जुर्रत से उन्हें कर गुज़रते थे। इस सबब उन पर हलाल चीज़ों में से भी कोई-कोई हमने हराम कर दीं। उन काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार हैं, लेकिन उनमें जो सच्चे दीन वाले और पुख़्ता इल्म वाले हैं। इस जुमले की तफ़सीर सूरः आले इमरान में गुज़र चुकी है। और जो ईमान वाले हैं ये तो क़ुरआन को और तमाम पहली किताबों को मानते हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत सालबा बिन सईद, हज़रत ज़ैद बिन सईद, हज़रत उसैद बिन अ़बीद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हैं, जो इस्लाम में आ गये थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत को मान चुके थे। आगे फ़रमाया कि वे इस पर भी ईमान लाते हैं और नमाज़ के क़ायम करने पर भी उनका ईमान है यानी उसे वाजिब व बरहक़ मानते हैं। और ज़कात अदा करने वाले हैं, यानी माल की या जान की और दोनों भी मुराद हो सकते हैं वल्लाहु आलम। और सिर्फ़ ख़ुदा ही को लायक़े इबादत जानते हैं और मौत के बाद की ज़िन्दगी पर भी कामिल यक़ीन रखते हैं, कि हर भले-बुरे अ़मल की सज़ा व जज़ा (यानी अच्छा-बुरा बदला) उस दिन मिलेगी। यही लोग हैं जिन्हें हम बहुत बड़ा अज्र यानी जन्नत देंगे।

Maktab E Ashraf

اِنَّـآ اَوْحَيْـنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ ۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْـمٰعِيْـلَ وَاِسْـحٰـقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّـوْبَ وَيُوْنُـسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۝ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝	हमने आपके पास 'वही' भेजी है जैसे नूह के पास भेजी थी, और उनके बाद और पैग़म्बरों के पास। और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान के पास 'वही' भेजी थी, और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी। (163) और (ऐसे) पैग़म्बरों को (वही वाला बनाया) जिनका हाल हम इससे पहले आपसे बयान कर चुके हैं और ऐसे पैग़म्बरों को जिनका हाल हमने आपसे बयान नहीं किया, और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से अल्लाह तआ़ला ने ख़ास तौर पर कलाम फ़रमाया। (164) उन सबको ख़ुशख़बरी देने वाले और ख़ौफ़ सुनाने वाले पैग़म्बर बनाकर इसलिए भेजा ताकि लोगों के पास अल्लाह तआ़ला के सामने उन पैग़म्बरों के बाद कोई उज़्र बाक़ी न रहे, और अल्लाह तआ़ला पूरे ज़ोर वाले हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (165)

दीन में एकता

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि सकीन और अ़दी बिन ज़ैद ने कहा ऐ मुहम्मद! हम नहीं मानते कि हज़रत मूसा के बाद अल्लाह ने किसी इनसान पर कुछ उतारा हो। इस पर ये आयतें उतरीं। मुहम्मद बिन कअ़ब क़रज़ी रह. फ़रमाते हैं कि जब आयत "यस्अलु-क अहलुल् किताबि...... अ़ज़ीमा तक" (यानी छठे पारे के दूसरे रुकूअ़ की शुरू की आयतें) और यहूदियों के बुरे आमाल का आईना उनके सामने रख दिया गया तो उन्होंने साफ़ कह दिया कि किसी इनसान पर ख़ुदा ने कोई अपना कलाम नाज़िल नहीं फ़रमाया, न मूसा पर न ईसा पर, न किसी और नबी पर। आप उस वक़्त गोट लगाये (अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ कपड़ा पिंडली से बाँधे) बैठे थे उसने आपने खोल दी और फ़रमाया किसी पर भी नहीं? पस अल्लाह तआ़ला ने आयतः

وَمَاقَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ......الخ

नाज़िल फ़रमाई। (यानी सूरः अन्आ़म की आयत 91)

लेकिन इसमें थोड़ा संकोच है (यानी यह विचारनीय है), इसलिये कि यह आयत सूरः अन्आ़म में है जो मक्की है और सूरः निसा की उपरोक्त आयत मदनी है जो उनके रद्द में है। जिस वक़्त कि उन्होंने कहा था कि आसमान से कोई किताब ख़ुद पर उतार लायें जिसके जवाब में फ़रमाया गया कि हज़रत मूसा से इन्होंने

इससे भी बड़ा सवाल किया था....। फिर उनके ऐब बयान फ़रमाये और उनकी पहली और अबकी बद-आमालियाँ खोलीं, फिर फ़रमाया कि ख़ुदा ने अपने बन्दे और रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ उसी तरह 'वही' (अपना पैग़ाम) नाज़िल फ़रमाई है जिस तरह और अम्बिया की तरफ़। ज़बूर उस किताब का नाम है जो हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर उतरी थी। इन अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के क़िस्से सूरः क़सस की तफ़सीर में हम बयान करेंगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

Maktab-e-Ashraf

फिर फ़रमाता है इस आयत (यानी मक्की सूरः की आयत) से पहले बहुत से अम्बिया का ज़िक्र हो चुका है और बहुत सों का नहीं भी हुआ, जिन अम्बिया-ए-किराम के नाम लफ़्ज़ों में आ गये हैं ये हैं आदम, इदरीस, नूह, हूद, सालेह, लूत, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब, युसूफ़, शुऐब, मूसा, हारून, यूनुस, दाऊद, सुलैमान, यसअ़, ज़करिया, ईसा, यहया और बक़ौल अक्सर मुफ़स्सिरीन ज़ुलकिफ़्ल (और अय्यूब व इलियास) अ़लैहिमुस्सलाम और इन सबके सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। और बहुत से ऐसे रसूल भी हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद में नहीं किया गया।

अम्बिया की तादाद

इसी वजह से अम्बिया और रसूलों की तादाद में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। इस बारे में मशहूर हदीस हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की है. जो तफ़सीर इब्ने मरदूया में यूँ है कि आपने पूछा या रसूलल्लाह! अम्बिया कितने हैं? फ़रमाया एक लाख चौबीस हज़ार। मैंने पूछा उनमें से रसूल कितने हैं? फ़रमाया तीन सौ तेरह, बहुत बड़ी जमाअ़त। मैंने फिर दरियाफ़्त किया कि सबसे पहले कौन हैं? फ़रमाया आदम अ़लैहिस्सलाम, मैंने कहा क्या वह भी रसूल थे? फ़रमाया हाँ अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने हाथ से पैदा किया, फिर उनमें अपनी रूह फूँकी, फिर दुरुस्त और ठीक-ठाक किया। फिर फ़रमाया ऐ अबूज़र! चार सुरयानी हैं- आदम, शीस, नूह ख़नूख़ जिनका मशहूर नाम इदरीस है। उन्होंने ही पहले क़लम से ख़त लिखा। चार अ़रबी हैं- हूद, सालेह, शुऐब और तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)। ऐ अबूज़र! बनी इस्राईल के पहले नबी हज़रत मूसा हैं और आख़िरी हज़रत ईसा हैं। तमाम नबियों में सबसे पहले नबी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं और सबसे आख़िरी नबी तुम्हारे नबी (सल्ल.) हैं।

इस पूरी हदीस को जो बहुत लम्बी है, हाफ़िज़ अबू हातिम ने अपनी "किताबुल-अनवाअ़ वत्तक़ासीम" में रिवायत किया है और इसके सही होने को बयान किया है, लेकिन उनके विपरीत इमाम अबू फरज इब्ने जोज़ी रह. इसे बिल्कुल मौज़ू (जाली और गढ़ी हुई) बतलाते हैं और इब्राहीम बिन हाशिम इसके रावी पर नक़ली हदीसें बयान करने का शक ज़ाहिर करते हैं। हक़ीक़त यह है कि हदीसों की जाँच-पड़ताल करने वाले इमामों में से बहुत से लोगों ने उन पर इस हदीस की वजह से कलाम किया है, वल्लाहु आलम।

लेकिन यह हदीस दूसरी सनद से हज़रत अबू उमामा से भी रिवायत की गयी है, मगर उसमें मआ़न बिन रिफ़ाआ़ सलामी कमज़ोर हैं और अ़ली बिन यज़ीद भी कमज़ोर हैं और क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रहमान भी कमज़ोर हैं। एक और हदीस अबू यअ़ला में है कि अल्लाह तआ़ला ने आठ हज़ार नबी भेजे हैं, चार हज़ार बनी इस्राईल की तरफ़ और चार हज़ार बाक़ी और लोगों की तरफ़। यह हदीस भी कमज़ोर है, इसमें ज़ैदी और उनके उस्ताद रक़्क़ाशी दोनों कमज़ोर हैं। वल्लाहु आलम

अबू यअ़ला की एक और हदीस में है कि आपने फ़रमाया- आठ हज़ार अम्बिया मेरे भाई गुज़र चुके हैं उनके बाद हज़रत ईसा आये, और उनके बाद मैं आया हूँ। एक और हदीस में है कि मैं आठ हज़ार नबियों

Maktab E Ashraf

के बाद आया हूँ जिनमें से चार हज़ार बनी इस्राईल में से थे। यह हदीस इस सनद से ग़रीब तो ज़रूर है लेकिन इसके तमाम रावी मारूफ़ (जाने पहचाने) हैं और सनद में कोई नुक़्स नहीं सिवाय अहमद बिन तारिक़ के, कि उनके बारे में मुझे कोई अदालत या जरह नहीं मिली (यानी न तो किसी ने उनको मोतबर ही कहा और न उनकी कोई कमज़ोरी ही बयान की) वल्लाहु आलम।

हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वाली लम्बी हदीस जो अम्बिया की गिनती के बारे में है, उसे भी सुन लीजिए। आप फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में आया उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं भी आपके पास बैठ गया और कहा आपने नमाज़ का हुक्म दिया है? आपने फ़रमाया हाँ वह बेहतर चीज़ है कोई ज़्यादती करे चाहे कमी। मैंने कहा हुज़ूर कौनसे आमाल अफ़ज़ल हैं? फ़रमाया अल्लाह पर ईमान लाना, उसकी राह में जिहाद करना। मैंने कहा हुज़ूर कौनसा मोमिन अफ़ज़ल है? फ़रमाया सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाला। मैंने कहा हुज़ूर कौनसा मुसलमान आला है? फ़रमाया जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान सलामत रहें। मैंने पूछा कौनसी हिजरत अफ़ज़ल है? फ़रमाया बुराईयों को छोड़ देना। मैंने पूछा कौनसी नमाज़ अफ़ज़ल है? फ़रमाया लम्बे क़ुनूत वाली। मैंने पूछा कौनसा रोज़ा अफ़ज़ल है? फ़रमाया फ़र्ज़ किफ़ायत करने वाला है (यानी फ़र्ज़ जो काफ़ी हो जाये) और अल्लाह के पास बहुत बेहद सवाब है। मैंने पूछा कौनसा जिहाद अफ़ज़ल है? फ़रमाया जिसका घोड़ा भी काट दिया जाये और ख़ुद उसका भी ख़ून बहा दिया जाये (यानी अल्लाह की राह में इस क़द्र बहादुरी से लड़ा हो कि ऐसी नौबत आ जाये)। मैंने कहा कौनसा ग़ुलाम आज़ाद करना अफ़ज़ल है? फ़रमाया जिस क़द्र ज़्यादा क़ीमती हो और मालिक को ज़्यादा पसन्द हो। मैंने पूछा सदक़ा कौनसा अफ़ज़ल है? फ़रमाया कम माल वाले का कोशिश करना और चुपके से मोहताज को दे देना। मैंने कहा क़ुरआन में सबसे बड़ी आयत कौनसी है? (यानी अज्र व फ़ज़ीलत के एतिबार से) फ़रमाया आयतुल-कुर्सी।

फिर आपने फ़रमाया ऐ अबूज़र! सातों आसमान कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे कोई हल्क़ा (छल्ला) किसी चटियल मैदान के मुक़ाबले में, और अर्श की फ़ज़ीलत कुर्सी पर भी ऐसी है जैसे एक लम्बे-चौड़े मैदान की एक छोटे से छल्ले पर। मैंने कहा या हुज़ूर! अम्बिया कितने हैं? फ़रमाया एक लाख चौबीस हज़ार। मैंने कहा उनमें से रसूल कितने हैं? फ़रमाया तीन सौ तेरह, बहुत बड़ी पाक जमाअत। मैंने पूछा सबसे पहले कौन हैं? फ़रमाया आदम अलैहिस्सलाम। मैंने कहा क्या वह भी नबी थे? फ़रमाया हाँ उन्हें अल्लाह तआला ने अपने हाथ से पैदा किया और अपनी रूह उनमें फूँकी और उन्हें बहुत अच्छा करके बनाया। फिर आपने फ़रमाया सुनो! चार तो सुरयानी हैं, आदम अलैहिस्सलाम, शीस, ख़ुनूख़ और यही इदरीस हैं, जिसने सबसे पहले क़लम से लिखा और नूह। और चार अरबी हैं- हूद, शुऐब, सालेह और तुम्हारे नबी (सल्ल.)।

सबसे पहले रसूल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं और सबसे आख़िरी नबी व रसूल मुहम्मद (सल्ल.) हैं। मैंने पूछा या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने किताबें किस क़द्र नाज़िल फ़रमाई हैं? फ़रमाया एक सौ चार। हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर पचास सहीफ़े, हज़रत ख़नूख़ अलैहिस्सलाम पर तीस सहीफ़े, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर दस सहीफ़े और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात से पहले दस सहीफ़े और तौरात, इन्जील, ज़बूर और फ़ुरक़ान। मैंने कहा या रसूलल्लाह! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों में क्या था? फ़रमाया उसका कुल यह था- ऐ बादशाह मुसल्लत किया हुआ मतेली मग़रूर मैंने तुझे दुनिया जमा करने के लिये नहीं भेजा, बल्कि इसलिये कि तो मज़लूम की पुकार को मेरे सामने से हटा दे, अगर वह मेरे पास पहुँचे तो मैं उसे रद्द न करूँगा अगरचे वह मज़लूम काफ़िर ही हो। और उनमें मिसालें भी थीं ये कि

अक़्लमन्द आदमी को लाज़िम है कि वह अपने औक़ात (समय) के कई हिस्से करे, एक वक़्त अपने नफ़्स का हिसाब ले, एक वक़्त ख़ुदा की सिफ़ात पर ग़ौर करे, एक वक़्त अपने खाने पीने की फ़िक्र करे।

अक़्लमन्द को तीन चीज़ों के सिवा किसी चीज़ में मशग़ूल (व्यस्त) नहीं होना चाहिये- या तो आख़िरत की तैयारी करे, या रोज़ी कमाने की फ़िक्र करे, या जायज़ चीज़ों से सुरूर व लज़्ज़त हासिल करे। आक़िल को चाहिये कि अपना वक़्त देखता रहे, अपने काम में लगा रहे, अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे। जो शख़्स अपने क़ौल को अपने फ़ेल से मिलाता रहेगा वह बहुत कम बोलने वाला होगा। कलाम वही करो जो तुम्हें नफ़ा दे।

मैंने पूछा मूसा अ़लैहिस्सलाम के सहीफ़ों में क्या था? फ़रमाया सरासर इबरतें (यानी नसीहत व सबक़ लेने वाली बातें)। मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत का यक़ीन रखता है फिर मस्त है, तक़दीर का यक़ीन रखता है फिर हाय-हाय करता है, दुनिया की नापायदारी देखता है फिर उस पर इत्मीनान किये हुए है, क़ियामत के दिन के हिसाब को जानता है फिर बेअ़मल है। मैंने कहा हुज़ूर! पहले अम्बिया की किताबों में जो था उसमें से भी कुछ हमारी किताब में हमारे हाथों में है? आपने फ़रमाया हाँ पढ़ोः

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى.........وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا.

(यानी सूरः वश्शम्सि की आख़िरी सात आयतें)

मैंने कहा हुज़ूर! मुझे वसीयत कीजिये। आपने फ़रमाया मैं तुझे अल्लाह से डरते रहने की वसीयत करता हूँ यही तेरे काम की चीज़ है। मैंने कहा या रसूलल्लाह! कुछ और भी, आपने फ़रमाया तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रुल्लाह में मशग़ूल रह। वह तेरे लिये आसमानों में ज़िक्र का और नूर का सबब होगा। मैंने फिर कहा हुज़ूर और ज़्यादा फ़रमाईये। फ़रमाया ख़बरदार! ज़्यादा हंसी से बच, वह दिल को मुर्दा कर देती है और चेहरे का नूर दूर कर देती है। मैंने कहा और ज़्यादा, फ़रमाया जिहाद में मशग़ूल रह। मेरी उम्मत की रहबानियत दुरवेशी (यानी दुनिया और उसकी हर चीज़ से ताल्लुक़ ख़त्म कर लेना) यही है। मैंने कहा और वसीयत कीजिए। फ़रमाया सिवाय भली बात कहने के ज़बान बन्द रखा कर, इससे शैतान दूर भाग जायेगा और दीनी कामों में बड़ी ताईद होगी। मैंने कहा और कुछ भी फ़रमा दीजिये, फ़रमाया अपने से नीचे दर्जे के लोगों को देखा कर और अपने से आला दर्जे के लोगों पर नज़रें न डाल, इससे तेरे दिल में ख़ुदा की नेमतों की अ़ज़मत (बड़ाई और वक़्अ़त) पैदा होगी। मैंने कहा मुझे और ज़्यादा नसीहत कीजिए। फ़रमाया मिस्कीनों से मुहब्बत रख और उनके साथ बैठ, इससे ख़ुदा की रहमतें तुझे बहुत बड़ी मालूम होंगी। मैंने कहा और फ़रमाईये, फ़रमाया क़राबत दारों (यानी रिश्तेदारों और अ़ज़ीज़ों) से मिला रह, अगरचे वे तुझसे न मिलें। मैंने कहा और, फ़रमाया हक़ बात कह अगरचे वह किसी को कड़वी लगे। मैंने और भी नसीहत तलब की, फ़रमाया अल्लाह तआ़ला के बारे में मलामत करने वाले की मलामत का ख़ौफ़ न कर (यानी दीन के किसी हुक्म पर चलने में अगर कोई बुरा-भला कहे तो उसकी परवाह मत कर)। मैंने कहा और फ़रमाईये, फ़रमाया अपने ऐबों पर नज़र डालकर दूसरों के ऐब तलाशने और पकड़ने से बाज़ आ जा, फिर मेरे सीने पर आपने अपना हाथ मुबारक रखकर फ़रमाया ऐ अबूज़र! तदबीर के बराबर कोई अ़क़्लमन्दी नहीं और हराम से रुक जाने के बराबर कोई परहेज़गारी नहीं, और अच्छे अख़्लाक़ जैसा कोई नसब (यानी ख़ानदानी शराफ़त) नहीं। मुस्नद अहमद में भी यह हदीस कुछ कमी के साथ मज़कूर है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. पूछते हैं कि क्या ख़ारजी भी दज्जाल के क़ायल हैं? लोगों ने कहा नहीं।

फ़रमाया- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं एक हज़ार बल्कि ज़्यादा नबियों का ख़त्म (यानी उनके मिशन को पूरा) करने वाला हूँ। हर-हर नबी ने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है, लेकिन मेरे सामने ख़ुदा ने उसकी वह अ़लामत (निशानी और पहचान) बयान फ़रमाई है जो किसी और से नहीं फ़रमाई। सुनो! वह भेंगा है और रब ऐसा नहीं हो सकता, उसकी दाहिनी आँख भेंगी कानी है, दीदा ऊपर को उठा हुआ है, ऐसा है जैसे चूने की साफ़ दीवार पर किसी का खंकार पड़ा हुआ हो, और उसकी बाईं आँख एक चमकीले सितारे जैसी है, वह तमाम ज़बानें (भाषायें) बोलेगा, उसके साथ जन्नत की सूरत होगी, हरी भरी और पानी वाली, और दोज़ख़ की सूरत होगी, सियाह धुएँदार। एक हदीस में है कि मैं एक लाख नबियों को ख़त्म करने वाला हूँ बल्कि ज़्यादा का...। फिर फ़रमाया है- मूसा से ख़ुद ख़ुदा ने साफ़ तौर पर कलाम किया यह उनकी ख़ास सिफ़त है कि वह कलीमुल्लाह थे। एक शख़्स अबू बक्र बिन अ़य्याश रह. के पास आता है और कहता है कि एक शख़्स इस जुमले को यूँ पढ़ता है:

وَكَلَّمَ اللّٰهَ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا.

यानी मूसा ने अल्लाह से बात की।

इस पर आप बहुत बिगड़े और फ़रमाया यह किसी काफ़िर ने पढ़ा होगा। मैंने आमश से, आमश ने यहया से, यहया ने अ़ब्दुर्रहमान से, अ़ब्दुर्रहमान ने अ़ली से, अ़ली ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पढ़ा है कि:

وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا.

यानी अल्लाह ने मूसा से कलाम किया।

ग़र्ज़ उस शख़्स की मानवी और लफ़्ज़ी तहरीफ़ (रद्दोबदल) पर आप इस क़द्र नाराज़ हुए। अ़जब नहीं यह कोई मोतज़िली हो, इसलिये कि मोतज़िला का यह अ़क़ीदा है कि न ख़ुदा ने मूसा से कलाम किया न किसी और से। किसी मोतज़िली ने एक बुज़ुर्ग के सामने इसी आयत को इसी तरह पढ़ा तो उन्होंने उसे बुरा कहा, फ़रमाया फिर इस आयत में यह बेईमानी कैसे करोगे जहाँ फ़रमाया है:

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ.

यानी मूसा हमारे वादे पर आये और उनसे उनके रब ने कलाम किया।

मतलब यह है कि यहाँ तो यह रद्दोबदल और तुम्हारी राय नहीं चलेगी। इब्ने मरदूया की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कलाम किया तो वह सियाह चींवटी का अंधेरी रात में किसी साफ़ पत्थर पर चलना भी देख लेते थे। यह हदीस ग़रीब है और इसकी इसनाद सही नहीं, और जब मौक़ूफ़ की हैसियत से साबित हो जाये जैसा कि हज़रत अबू हुरैरह का क़ौल है तो फिर ठीक है। मुस्तद्रक हाकिम वग़ैरह में है कि कलीमुल्लाह से जब ख़ुदा ने कलाम किया वह सूफ़ (ऊन) की चादर और सूफ़ की सिरदोल और बिना ज़िबह किये हुए गधे की खाल की जूतियाँ पहने हुए थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक लाख चौबीस हज़ार बातें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कीं जो सब वसीयतें थीं, फिर लोगों का कलाम हज़रत मूसा से सुना नहीं जाता था, क्योंकि कानों में उसी पाक कलाम की गूँज थी। इसकी सनद भी कमज़ोर हैं। फिर यह मुन्क़ता भी है। एक क़ौल

इब्ने मरदूया वग़ैरह में है हज़रत जाबिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि तूर वाले दिन हज़रत मूसा से जो कलाम अल्लाह तआ़ला ने किया उसकी सिफ़त जिस दिन पुकारा था उस कलाम की सिफ़त से अलग थी, तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इसका भेद मालूम करना चाहा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मूसा अभी तो मैंने दस हज़ार ज़बानों के बराबर की क़ुव्वत से कलाम किया है, हालाँकि मुझे तमाम ज़बानों (भाषाओं) की क़ुव्वत है, बल्कि इन सबसे भी बहुत ज़्यादा। बनी इस्राईल आपसे कलामे रब्बानी की सिफ़त पूछने लगे तो आपने फ़रमाया मैं तो कुछ नहीं कह सकता। उन्होंने कहा अच्छा कोई तशबीह (मिसाल और उदाहरण) तो बयान करो। आपने फ़रमाया तुमने कड़ाके (आसमानी बिजली) की आवाज़ सुनी होगी, वह उसके जैसी थी, लेकिन वैसी न थी। इसके एक रावी फ़ज़्ल रक़ाशी कमज़ोर हैं और बहुत ही कमज़ोर हैं।

हज़रत कअ़ब रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कलाम किया तो वह तमाम ज़बानों (भाषाओं) से हुआ, अपने कलाम के दरमियान हज़रत कलीमुल्लाह ने ख़ुदा से पूछा बारी तआ़ला! यह तेरा कलाम है? फ़रमाया नहीं, और न तू मेरे कलाम को बरदाश्त कर सकता है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दरियाफ़्त किया कि ऐ रब! तेरी मख़्लूक़ में से किसी का कलाम तेरे कलाम के जैसा या मिलता-जुलता है? फ़रमाया नहीं, सिवाय बहुत ज़्यादा सख़्त कड़ाके के। यह रिवायत भी मौक़ूफ़ है और यह ज़ाहिर है कि हज़रत कअ़ब रज़ि. अगली किताबों से रिवायत किया करते थे, जिनमें बनी इस्राईल की हिकायतें हर तरह की सही और ग़ैर-सही होती हैं।

फिर आगे फ़रमाया ये रसूल हैं जो अल्लाह की इताअ़त करने वालों और उसकी रज़ामन्दी को तलाश करने वालों को ख़ुशख़बरियाँ जन्नतों की देते हैं, और उसके फ़रमान के ख़िलाफ़ करने वालों और उसके रसूलों को झुठलाने वालों को अ़ज़ाब व सज़ा से डराते हैं। फिर फ़रमाता है अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताबें जो नाज़िल फ़रमाई हैं और अपने रसूल जो भेजे हैं, और उनसे अपनी मर्ज़ी ना-मर्ज़ी जो मालूम कराई है, यह इसलिये कि किसी को कोई हुज्जत, किसी का कोई उज़्र (बहाना) बाक़ी न रह जाये। जैसा कि एक दूसरी आयत में है:

وَلَوْ اَنَّـآ اَهْلَكْنٰـهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ...... الخ

यानी अगर हम उन्हें इससे पहले ही अ़ज़ाब से हलाक कर देते तो वे यह कह सकते थे कि ऐ हमारे रब! तूने हमारी तरफ़ रसूल क्यों नहीं भेजे जो हम उनकी बातें मानते और इस ज़िल्लत व रुस्वाई से बच जाते। इसी जैसी यह आयत भी है "व लौ ला अन् तुसीबहुम् मुसीबतुन्........"।

सहीहैन (यानी बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस में हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरत वाला कोई नहीं, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने तमाम बुराईयों को हराम किया है, चाहे ज़ाहिर हों चाहे पोशीदा। और ऐसा भी कोई नहीं जिसे ख़ुदा के मुक़ाबले में तारीफ़ ज़्यादा पसन्द हो। यही वजह है कि उसने ख़ुद अपनी तारीफ़ आप की है और कोई ऐसा नहीं जिसे ख़ुदा से ज़्यादा उज़्र (बहाना और किसी मजबूरी का इज़हार) पसन्द हो। इसी वजह से अल्लाह तआ़ला ने नबियों को ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा। दूसरी रिवायत में ये अलफ़ाज़ हैं कि इसी वजह से उसने रसूल भेजे और किताबें उतारीं।

Maktab E Ashraf

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ
بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا ۢ
بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ
يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ
طَرِيْقًا ۝ اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ
بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ
تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝

लेकिन अल्लाह तआ़ला (इस किताब) के ज़रिये से जिसको आपके पास भेजा है, और भेजा भी अपने इल्मी कमाल के साथ, शहादत दे रहे हैं और फ़रिश्ते तस्दीक़ कर रहे हैं, और अल्लाह ही की शहादत काफ़ी है। (166) जो लोग इनकारी हैं और ख़ुदाई दीन से रुकावट होते हैं, वे बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़े हैं। (167) बेशक जो लोग इनकारी हैं और (दूसरों का भी) नुक़सान कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला उनको कभी न बख़्शेंगे और न उनको कोई और राह दिखाएँगे (168) सिवाय जहन्नम की राह के, इस तरह पर कि उसमें हमेशा-हमेशा रहा करेंगे, और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यह (सज़ा देना) मामूली बात है। (169) ऐ तमाम लोगो! तुम्हारे पास यह रसूल सच्ची बात लेकर तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तशरीफ़ लाए हैं, सो तुम यक़ीन रखो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और अगर तुम मुन्किर "यानी इनकार करने वाले" रहे तो ख़ुदा तआ़ला की मिल्क है यह सब जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है, और अल्लाह तआ़ला पूरी इत्तिला रखते हैं, पूरी हिक्मत वाले हैं। (170)

क़ुरआन मजीद अल्लाह का कलाम है

चूँकि पिछली आयतों में हुज़ूर सल्ल. की नुबुव्वत का सुबूत था और आपकी नुबुव्वत के मुन्किरों (इनकार करने वालों) का रद्द था, इसलिये यहाँ फ़रमाता है कि अगर कुछ लोग तुझे झुठलायें, तेरी मुख़ालफ़त करें, लेकिन ख़ुदा ख़ुद तेरी रिसालत का शाहिद (गवाह) है। वह फ़रमाता है कि उसने अपनी पाक किताब क़ुरआन मजीद तुझ पर नाज़िल फ़रमायी है जिसके पास बातिल फटक ही नहीं सकता। उसमें उन चीज़ों का इल्म है जिन पर उसने अपने बन्दों को आगाह फ़रमाना चाहा, यानी हिदायत की दलीलें और फ़ुरक़ान (यानी हक़ व ग़ैर-हक़ में फ़र्क़ करने वाली), और ख़ुदा को राज़ी करने वाले आमाल। और नाराज़गी पैदा करने वाली बद-आमालियों और पिछली और आईन्दा की ख़बरें और अल्लाह तबारक व तआ़ला की वे पवित्र सिफ़तें जिन्हें न तो कोई नबी व रसूल जानता है और न कोई मुक़र्रब (क़रीबी और आला रुतबे वाला) फ़रिश्ता, सिवाय उसके कि जिसे वह ख़ुद मालूम कराये। जैसा कि इरशाद है:

وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ.

Maktab E Ashraf

यानी उसके इल्म में से किसी चीज़ का कोई इहाता नहीं कर सकता, हाँ मगर जिस क़द्र इल्म वही देना चाहे।

और फ़रमान हैः

وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا.

और उसको उनका इल्म इहाता नहीं कर सकता।

हज़रत अ़ता बिन साइब रह. जब हज़रत अ़ब्दुर्रहमान सुलमी से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ चुके तो आप फ़रमाते हैं तूने अल्लाह का इल्म हासिल किया है, पस आज तुझसे अफ़ज़ल कोई नहीं, सिवाय उसके जो अ़मल में तुझसे बढ़ जाये। फिर आपने आयत "व अन्ज़-लहू बि-इल्मिही....." आख़िर तक पढ़ी।

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा की शहादत (गवाही) के साथ ही साथ फ़रिश्तों की शहादत भी है कि जो तेरे पास आया है, जो 'वही' तुझ पर उतरी है वह बिल्कुल सच है और सरासर हक़ है। यहूदियों की एक जमाअ़त हुज़ूर सल्ल. के पास आती है तो आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम मुझे ख़ूब मालूम है कि तुम मेरी रिसालत का इल्म रखते हो। उन लोगों ने इसका इनकार कर दिया, पस अल्लाह जल्ल शानुहू ने यह आयत उतारी। फिर फ़रमाता है कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हक़ की इत्तिबा न की बल्कि और लोगों को भी हक़ राह से रोकते रहे, ये सही राह से हट गए हैं और सदाक़त (सच्चाई) से अलग हो गये हैं और हिदायत से दूर जा पड़े हैं। ये लोग हमारी आयतों के मुन्किर हैं, हमारी किताबों को नहीं मानते, अपनी जान पर ज़ुल्म करते हैं, हमारी राह से रोकते हैं, हमारे मना किये हुए कामों को करते हैं, हमारे अहकाम से मुँह मोड़े हुए हैं, उन्हें हम न बख़्शेंगे न ख़ैर व भलाई की तरफ़ उनकी रहबरी करेंगे। हाँ उन्हें जहन्नम का रास्ता दिखा देंगे, जिसमें वे हमेशा पड़े रहेंगे।

लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ को लेकर ख़ुदा के रसूल आ गये। तुम उस पर ईमान लाओ और उसकी फ़रमाँबरदारी करो, यही तुम्हारे हक़ में अच्छा है, और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो ख़ुदा तुमसे बेनियाज़ (बेपरवाह) है, तुम्हारा ईमान न उसे नफ़ा पहुँचाये न तुम्हारा कुफ़्र उसे नुक़सान पहुँचाये, ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ें उसकी मिल्कियत में हैं। यही क़ौल हज़रत मूसा का अपनी क़ौम से था कि तुम और रू-ए-ज़मीन के तमाम लोग भी अगर कुफ़्र पर इजमा कर लें (यानी एक राय होकर ऐसा करें) तो ख़ुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, वह तमाम जहान से बेपरवाह है, वह अ़लीम (सब कुछ जानने वाला) है, जानता है कि हिदायत का मुस्तहिक़ कौन है और गुमराही का मुस्तहिक़ कौन है। वह हकीम है, उसके अक़वाल (बातें) उसके अफ़आ़ल (काम) उसकी शरअ़ (शरीअ़त और क़ानून) उसकी तक़दीर (तय की हुई बातें और मामलात) सब हिक्मत से भरे हैं।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۡ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में हद से मत निकलो और ख़ुदा तआ़ला की शान में ग़लत बात मत कहो। मसीह ईसा इब्ने मरियम तो और कुछ भी नहीं अलबत्ता अल्लाह के रसूल हैं और उसका एक कलिमा हैं, जिसको उसने मरियम तक पहुँचाया था और उसकी तरफ़ से एक जान हैं। सो अल्लाह पर और

وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۠	उसके सब रसूलों पर ईमान लाओ, और (यूँ) मत कहो कि तीन हैं, बाज़ आ जाओ तुम्हारे लिए बेहतर होगा। माबूदे हक़ीक़ी तो एक ही माबूद है, वह औलाद वाला होने से पाक है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद चीज़ें हैं सब उसकी मिल्क हैं, और अल्लाह तआ़ला कारसाज़ होने में काफ़ी हैं। (171)

ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल हैं

अहले किताब को हद से आगे बढ़ जाने से अल्लाह तआ़ला रोक रहा है। ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में हद से गुज़र गये हैं, उनको नुबुव्वत से बढ़ाकर ख़ुदाई तक पहुँचा रहे थे, बजाय इताअ़त के इबादत करने लगे थे, बल्कि और बुज़ुर्गाने दीन के बारे में भी उनका अ़क़ीदा ख़राब हो चुका था, वे उन्हें भी जो ख़ुदाई दीन के आ़लिम और आ़मिल थे मासूमे महज़ (ख़ताओं से पाक और बिल्कुल महफ़ूज़) जानने लगे थे और यह ख़्याल कर लिया था कि जो कुछ ये दीनी पेशवा कह दें उसका मानना हमारे लिये ज़रूरी है। सच झूठ, हक़ व बातिल, हिदायत व गुमराही के परखने का कोई हक़ हमें हासिल नहीं, जिसका ज़िक्र क़ुरआन मजीद की इस आयत में है:

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ.

यानी उन्होंने ख़ुदा को छोड़कर अपने उलेमा और बुज़ुर्गों को (उनकी इताअ़त करने के एतिबार से) रब बना रखा है।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मुझे तुम ऐसा न बढ़ाना जैसे ईसाईयों ने ईसा इब्ने मरियम को बढ़ाया, मैं तो सिर्फ़ एक बन्दा हूँ पस तुम मुझे अ़ब्दुल्लाह और रसूल कहना। यह हदीस बुख़ारी वग़ैरह में भी है। मुस्नद की एक और हदीस में है कि किसी शख़्स ने आपसे कहा ऐ मुहम्मद! ऐ हमारे सरदार और सरदार के लड़के! ऐ हम सबसे बेहतर और बेहतर के लड़के! तो आपने फ़रमाया लोगो! अपनी बात का ख़ुद ख़्याल कर लिया करो, तुम्हें शैतान इधर-उधर न कर दे, मैं मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हूँ। मैं ख़ुदा का ग़ुलाम और उसका रसूल हूँ। क़सम ख़ुदा की मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे मेरे मर्तबे से बढ़ा दो।

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह पर झूठ और बोहतान न बाँधो, उसके लिये बीवी और औलाद न तजवीज़ करो, ख़ुदा इससे पाक है, इससे बुलन्द व बाला है। उसकी बड़ाई और इ़ज़्ज़त में कोई उसका शरीक नहीं, उसके सिवा न कोई माबूद न रब, मसीह ईसा बिन मरियम अल्लाह के रसूल हैं, वह ख़ुदा के ग़ुलामों में से एक ग़ुलाम हैं और उसकी मख़्लूक़ हैं। वह सिर्फ़ कलिमा 'कुन' के कहने से पैदा हुए हैं, जिस कलिमे को लेकर हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हज़रत मरियम के पास गये और ख़ुदा की इजाज़त से उसे उनमें फूँक दिया। पस हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए चूँकि महज़ इसी कलिमे से बग़ैर बाप के आप पैदा हुए इसलिये ख़ुसूसियत से कलिमतुल्लाह कहा गया। क़ुरआन की एक दूसरी आयत में है:

Maktab E Ashraf

مَاالْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ..... الخ

यानी मसीह बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम सिर्फ़ अल्लाह के रसूल हैं, उनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, उनकी वालिदा सच्ची हैं, ये दोनों खाना खाया करते थे। एक और आयत में हैः

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَاللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ...... الخ

ईसा की मिसाल ख़ुदा के नज़दीक आदम की तरह है, जिसे मिट्टी से बनाकर फ़रमाया "हो जा" पस वह हो गया। क़ुरआने करीम एक और जगह फ़रमाता हैः

وَالَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا.... الخ

जिसने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की, और हमने उसमें अपनी रूह फूँकी और ख़ुद उसे और उसके बच्चे को लोगों को लिये निशान बनाया। एक और जगह फ़रमायाः

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا....

और मरियम इमरान की बेटी जिसने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की....। (सूरः तहरीम आयत 12)

हज़रत ईसा के बारे में एक और आयत में हैः

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ..... الخ

वह हमारा एक बन्दा था जिस पर हमने इनाम किया था।

पस यह मतलब नहीं कि ख़ुद कलिमा-ए-ख़ुदा ईसा बन गया, बल्कि यह कलिमा-ए-ख़ुदा से हज़रत ईसा पैदा हुए। इमाम इब्ने जरीर ने आयत "व इज़् क़ालतिल् मला-इकतु...." की तफ़सीर में जो कहा उससे यह मुराद ठीक है कि ख़ुदा तआ़ला का कलिमा जो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के द्वारा फूँका गया उससे हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए। सही बुख़ारी में है कि जिसने अल्लाह के एक और ला-शरीक होने और मुहम्मद सल्ल. के बन्दा व रसूल होने की और ईसा अ़लैहिस्सलाम के बन्दा व रसूल होने की और यह कि आप ख़ुदा के हुक्म से पैदा हुए थे जो मरियम की तरफ़ डाला गया था और ख़ुदा की फूँकी हुई रूह थे, और जिसने जन्नत व दोज़ख़ को बरहक़ माना वह चाहे कैसे ही आमाल पर हो अल्लाह पर हक़ है कि उसे जन्नत में ले जाये। एक और रिवायत में इतना इज़ाफ़ा भी है कि जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिससे चाहे दाख़िल हो जाये। जैसे कि हज़रत ईसा को आयत व हदीस में "रूहुम्-मिन्हु" (यानी उसकी तरफ़ से रूह) कहा है ऐसे ही क़ुरआन की एक आयत में हैः

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ...

उसने मुसख़्ख़र (तावे औ क़ब्ज़े में) किया तुम्हारे लिये जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है तमाम का तमाम अपनी तरफ़ से।

यानी अपनी मख़्लूक़ और अपने पास से। यही मतलब "रूहुम्-मिन्हु" का है, यानी अपनी मख़्लूक़ और अपने पास की रूह से। पस लफ़्ज़ "मिन" (से) का मतलब यह नहीं कि हज़रत ईसा अल्लाह की ज़ात का हिस्सा हैं, जैसा कि मलऊन ईसाईयों का ख़्याल है कि हज़रत ईसा ख़ुदा का एक हिस्सा और अंग थे, बल्कि "मिन" इब्तिदा के लिये है। जैसा कि एक दूसरी आयत में है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं "रूहुम्-मिन्हु" से मुराद "रसूलुम् मिन्हु" है (यानी वह अल्लाह की तरफ़ से रसूल हैं)। कुछ लोग कहते हैं

Maktab E Ashraf

कि इसका मतलब है 'महब्बतम् मिन्हु' (यानी वह अल्लाह की तरफ़ से मुहब्बत थे) लेकिन ज़्यादा वाज़ेह पहला क़ौल है यानी आप पैदा किये गए हैं रूह से जो ख़ुदा की मख़्लूक़ है। पस आपको रूहुल्लाह कहना ऐसा ही है जैसे नाक़तुल्लाह (अल्लाह की ऊँटनी) और बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) कहा गया है, यानी इन चीज़ों (ऊँटनी व घर) के सिर्फ़ सम्मान व मर्तबे के इज़हार के लिये अपनी तरफ़ निस्बत की। और हदीस में भी है कि मैं अपने रब के पास उसके घर में जाऊँगा।

फिर फ़रमाता है तुम इसका यक़ीन कर लो कि अल्लाह एक है, बीवी बच्चों से पाक है और यक़ीन करो कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के ग़ुलाम, ख़ुदा की मख़्लूक़ और उसके मक़बूल व चुने हुए रसूल हैं। तुम तीन न कहो, यानी ईसा अ़लैहिस्सलाम और मरियम अ़लैहस्सलाम को शरीके ख़ुदा न बनाओ, ख़ुदा शिर्कत से बरी और पाक है। सूरः मायदा में फ़रमायाः

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ..... الخ

यानी जो कहते हैं कि अल्लाह तीन में का तीसरा है (यानी एक अल्लाह, दूसरा ईसा और तीसरी मरियम) वे काफ़िर हो गये। अल्लाह तआ़ला एक ही है उसके सिवा कोई और लायक़े इबादत नहीं।

सूरः मायदा के आख़िर में है कि क़ियामत के दिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से सवाल होगा कि अपनी और अपनी वालिदा (माँ) की इबादत का हुक्म इन लोगों को तुमने दिया था? आप साफ़ तौर पर इनकार कर देंगे। ईसाईयों का इस बारे में कोई ज़ाब्ता (उसूल और नियम) ही नहीं है, वे बुरी तरह भटक रहे हैं और ख़ुद को बरबाद कर रहे हैं। उनमें से बाज़ तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को ख़ुद ख़ुदा मानते हैं और बाज़ ख़ुदा का शरीक मानते हैं, और बाज़ ख़ुदा का बेटा कहते हैं। सच तो यह है कि अगर दस ईसाई जमा हों तो उनके ख़्यालात ग्यारह होंगे।

सईद बिन बतरीक़ सिकन्दरी जो सन् 400 हिजरी के क़रीब गुज़रा है, उसने और बाज़ उनके और बड़े उलेमा ने ज़िक्र किया है कि क़ुस्तुनतीन (संस्थापक क़ुस्तुनतुनिया) के ज़माने में उस ज़माने के ईसाईयों का उस बादशाह के हुक्म से इज्तिमा हुआ (यानी सब जमा हुए) जहाँ दो हज़ार से ज़्यादा उनके लाट पादरी थे। फिर आपस में इस क़द्र मतभेद हुआ कि किसी बात पर सत्तर आदमियों से ज़्यादा इत्तिफ़ाक़ ही नहीं करते। दस का एक अ़क़ीदा है, बीस का एक ख़्याल है, चालीस और ही बात कहते हैं, साठ और तरफ़ जा रहे हैं, ग़र्ज़ हज़ारों की तादाद थी मगर बड़ी मुश्किल से तीन सौ अट्ठारह आदमी एक क़ौल पर जमा हो गये। बादशाह ने उसी अ़क़ीदे को ले लिया, बाक़ी सब को छोड़ दिया और उसी की ताईद व मदद की और उनके लिये कनीसे और गिरजे बना दिये और किताबें लिखवा दीं और क़वानीन बना दिये। यहीं उन्होंने अमानते कुबरा का मसला गढ़ा जो दर असल बदतरीन ख़ियानत है। उन लोगों को मलकानिया कहते हैं। फिर दोबारा उनका इज्तिमा हुआ, उस वक़्त जो फ़िर्क़ा बना उसका नाम याक़ूबिया था। फिर तीसरी बार के इज्तिमा में जो फ़िर्क़ा बना उसका नाम नस्तूरिया था। ये तीनों फ़िर्क़े "अक़ानीमे सलासा" को हज़रत ईसा के लिये साबित करते हैं, उनमें भी आपस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है और हर एक दूसरे को काफ़िर कहता है और हमारे नज़दीक तो तीनों काफ़िर हैं। अल्लाह फ़रमाता है कि इससे बाज़ आओ यह बाज़ रहना ही तुम्हारे लिये अच्छा है, अल्लाह तो एक ही है वह तौहीद वाला है, उसकी ज़ात इससे पाक है कि उसके यहाँ औलाद हो। तमाम चीज़ें उसकी मख़्लूक़ (बनाई हुई और पैदा की हुई) हैं और उसकी मिल्कियत में हैं। सब उसकी ग़ुलामी में हैं और सब उसके क़ब्ज़े में हैं, वह हर चीज़ का निगराँ है। फिर मख़्लूक़ में से कोई उसकी बीवी और कोई उसका बच्चा कैसे हो सकता है? दूसरी आयत में हैः

Maktab E Ashraf

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ.

यानी वह तो आसमान व ज़मीन की पहली बार में (बिना किसी नमूने के) पैदाईश करने वाला है, उसका लड़का कैसे हो सकता है? सूरः मरियम में है:

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا.........فَرْدًا.

वे लोग कहते हैं कि रहमान ने अपना एक बेटा बना लिया है......। (सूरः मरियम आयत 88-95)

इन आयतों में भी इसका विस्तृत तौर पर इनकार फ़रमाया है।

(ईसाईयों की बाज़ जमाअतें क़ायल थीं कि ख़ुदा तीन हैं ईसा, मरियम और ख़ुदा तआ़ला, इन्हीं को 'अक़ानीमे सलासा' भी कहा जाता है। यह अ़क़ीदा भी कुफ़्र है। क़ुरआन मजीद की इस आयत में इसी अ़क़ीदे की तरदीद की गई है)।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝	मसीह हरगिज़ ख़ुदा के बन्दे बनने से शर्म नहीं करेंगे और न क़रीबी फ़रिश्ते, और जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला की बन्दगी से शर्म करेगा 'या बुरा समझेगा' और तकब्बुर करेगा तो ख़ुदा तआ़ला ज़रूर सब लोगों को अपने पास जमा करेंगे। (172) फिर जो लोग ईमान लाए होंगे और उन्होंने अच्छे काम किए होंगे तो उनको उनका पूरा सवाब देंगे और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा देंगे, और जिन लोगों ने शर्म की होगी और तकब्बुर किया होगा तो उनको सख़्त दर्दनाक सज़ा देंगे। (173) और वे लोग अल्लाह के अ़लावा किसी और को अपना मददगार और हिमायती न पाएँगे। (174)

ईसा अ़लैहिस्सलाम का इम्तियाज़ बन्दा होने में है

मतलब यह है कि मसीह अ़लैहिस्सलाम और मुक़र्रब (ख़ास और क़रीबी) फ़रिश्ते भी ख़ुदा तआ़ला की बन्दगी से तकब्बुर और इनकार नहीं कर सकते, न यह उनकी शान के लायक़ है, बल्कि जो जिस क़द्र रुतबे में क़रीब होता है वह उसी क़द्र ख़ुदा की इबादत में ज़्यादा मशग़ूल होता है। बाज़ बुज़ुर्गों ने इस आयत से दलील पकड़ी है कि फ़रिश्ते इनसानों से अफ़ज़ल हैं, लेकिन दर असल इसका कोई सुबूत इस आयत में नहीं, इसलिये कि यहाँ फ़रिश्तों को हज़रत मसीह के हुक्म में शामिल किया गया है।

और यह भी कहा गया है कि जिस तरह हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम को लोग पूजते थे उसी तरह फ़रिश्तों की भी इबादत करते थे, तो इस आयत में मसीह अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा की इबादत से न रुकने

वाले बताकर फिर फ़रिश्तों की भी यही हालत बयान कर दी, जिससे साबित हो गया कि जिन्हें तुम पूजते हो वे ख़ुद ख़ुदा को पूजते हैं, फिर उनकी पूजा कैसी? जैसा कि एक और आयत में है "बल् हुम् अ़िबादुम् मुक्रमून" कि वे ख़ुद अल्लाह के इकराम वाले बन्दे हैं।

और इसी लिये यहाँ भी फ़रमाया कि जो उसकी इबादत से इनकार करे, मुँह मोड़े और ख़ुद को इस तरह हलाक करे वह एक वक़्त उसी के पास लौटने वाला है। और अपने बारे में उसका फ़ैसला सुनने वाला है। जो ईमान लायें, जो नेक अ़मल करें उनका पूरा सवाब भी दिया जायेगा। फिर अल्लाह तआ़ला अपनी तरफ़ से भी इनाम अ़ता फ़रमायेंगे। इब्ने मरदूया की हदीस में है कि अज्र तो यह है कि जन्नत में पहुँचा दिया जाये और फ़ज़्ल व मेहरबानी की ज़्यादती यह है कि जो लोग क़ाबिले दोज़ख़ हों उन्हें भी उनकी शफ़ाअ़त हासिल होगी जिनसे उन्होंने भलाई और अच्छाई की थी। लेकिन इसकी सनद साबित शुदा नहीं है, हाँ अगर इब्ने मसऊद रज़ि. के क़ौल पर ही इसे रिवायत किया जाये तो ठीक है।

फिर फ़रमाया जो लोग अल्लाह की इबादत व इताअ़त से रुक जायें और उससे तकब्बुर करें उन्हें परवर्दिगार दर्दनाक अ़ज़ाब देगा और ये ख़ुदा के सिवा किसी को वली और मददगार नहीं पायेंगे। जैसा कि एक और आयत में है:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ.

जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करें वे ज़लील व हक़ीर होकर जहन्नम में जायेंगे।

यानी उनके इनकार और उनके तकब्बुर का यह बदला उन्हें मिलेगा कि ज़लील व हक़ीर और रुस्वा व मजबूर होकर जहन्नम में दाख़िल किये जायेंगे।

ऐ लोगो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक दलील आ चुकी है, और हमने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा है। (175) सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने उसको मज़बूत पकड़ा, तो ऐसों को अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में दाख़िल करेंगे और अपने फ़ज़्ल में और अपने तक उनको सीधा रास्ता बता देंगे। (176)	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝

हक़्क़ानियत की दलीलें और हुज्जतें क़ायम की जा चुकीं

अल्लाह तबारक व तआ़ला तमाम इनसानों को ख़िताब फ़रमाता है कि मेरी तरफ़ से कामिल दलील और उज़्र व माज़िरत को तोड़ देने वाली चीज़ और शक व शुब्हे को अलग करने वाली दलीलें और हुज्जतें तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हो चुकी हैं और हमने तुम्हारी तरफ़ खुला नूर, साफ़ रोशनी और उजाला उतार दिया है, जिससे हक़ की राह अच्छी तरह पर वाज़ेह हो जाती है (यानी अब किसी के लिये कोई बहाना और उज़्र बाक़ी नहीं रहता)।

इब्ने जरीर वग़ैरह फ़रमाते हैं कि इससे मुराद क़ुरआने करीम है। अब जो लोग अल्लाह तआ़ला पर

Maktaba E Ashraf

ईमान लायें और तवक्कुल और भरोसा उसी पर करें, उसी की इताअ़त को ख़ुद पर लाज़िम जानें, बन्दगी और तवक्कुल के मक़ाम को इख़्तियार करें, तमाम मामलात उसी को सौंप दें, और यह भी हो सकता है कि ईमान ख़ुदा पर लायें और मज़बूती के साथ अल्लाह की किताब को थाम लें, उन पर ख़ुदा अपना रहम फ़रमायेगा और अपना फ़ज़्ल उन पर नाज़िल फ़रमायेगा। नेमतों और ख़ुशियों वाली जन्नत में उन्हें ले जायेगा, उनके सवाब बढ़ा देगा, उनके दर्जे बुलन्द कर देगा और उन्हें अपनी तरफ़ की सीधी और साफ़ राह दिखायेगा। जो कहीं से टेढ़ी नहीं, कहीं से तंग नहीं। पस मोमिन दुनिया में सिराते मुस्तक़ीम (सीधे और सही रास्ते) पर होता है और राहे इस्लाम पर होता है, और आख़िरत में राहे जन्नत पर और राहे सलामती पर होता है। तफ़सीर के शुरू में एक पूरी हदीस गुज़र चुकी है जिसमें फ़रमाने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) है कि ख़ुदा की सीधी राह और ख़ुदा की मज़बूत रस्सी क़ुरआने करीम है।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ؏	लोग आपसे हुक्म दरियाफ़्त करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुमको कलाला के बारे में हुक्म देता है। अगर कोई शख़्स मर जाए जिसके औलाद न हो (और न माँ-बाप) और उसके एक (हक़ीक़ी या माँ-शरीक सौतेली) बहन हो तो उसको तमाम तर्के का आधा मिलेगा, और वह शख़्स उस (अपनी बहन) का वारिस होगा, अगर (वह बहन मर जाए और) उसके औलाद न हो, (और माँ-बाप भी न हों)। और अगर (बहनें) दो हों (या ज़्यादा) तो उनको उसके कुल तर्के में से दो तिहाई मिलेगें। और अगर (कई वारिस) भाई (बहन) हों मर्द और औरत तो एक मर्द को दो औरतों के हिस्से के बराबर, अल्लाह तआ़ला तुमसे (दीन की बातें) इसलिए बयान करते हैं कि तुम गुमराही में न पड़ो, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (177)

ع ٢٢

मीरास के चन्द मसाईल

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सूरतों में सबसे आख़िरी सूरत सूरः बराअत उतरी है, और आयतों में सबसे आख़िरी आयत "यस्तफ़्तून-क" (यानी यह आयत जिसका बयान चल रहा है) उतरी है। हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं मैं अपनी बीमारी में बेहोशी में पड़ा था, ख़ुदा के रसूल सल्ल. मेरी इयादत (बीमारी का हाल पूछने) के लिये तशरीफ़ लाये, आपने वुज़ू किया और वह पानी मुझ पर डाला जिससे मुझे सुकून और आराम हुआ और मैंने कहा या हुज़ूर! वारिसों के लिहाज़ से मैं कलाला हूँ मेरी मीरास कैसे बटेगी? इस पर अल्लाह तआ़ला ने मीरास की आयत नाज़िल फ़रमाई। (बुख़ारी व मुस्लिम)

Maktab E Ashraf

एक और रिवायत में इसी आयत का उतरना भी आया है। पस फ़रमाता है कि लोग तुझसे पूछते हैं यानी कलाला के बारे में। पहले यह बयान गुज़र चुका है कि लफ़्ज़ कलाला 'अकलील' (ताज) से लिया गया है जो कि सर को चारों तरफ़ से घेरे होता है, अक्सर उलेमा ने कहा है कि कलाला वह है जिस मय्यित के लड़के पोते न हों, और बाज़ का क़ौल यह भी है कि जिसके लड़के न हों, जैसा कि आयत में है "व लै-स लहू व-लदुन्" यानी उसके लड़का न हो।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. को जो नये मसाईल दुश्वार और नाक़ाबिले हल मालूम होते थे उनमें एक मसला यह भी था। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आपने फ़रमाया तीन चीज़ों के बारे में मेरी तमन्ना रह गई कि रसूले ख़ुदा सल्ल. उनमें हमारी तरफ़ कोई ऐसा अ़हद करते कि हम उसी की तरफ़ रुजू करते। दादा, कलाला और सूद के अध्याय। एक रिवायत में है कि आप फ़रमाते हैं कि कलाला के बारे में मैंने जिस क़द्र सवालात हुज़ूर सल्ल. से किये उतने किसी और मसले में नहीं किये, यहाँ तक कि आपने अपनी उंगली से मेरे सीने पर कुछ लगाकर फ़रमाया कि तुझे गर्मियों की वह आयत काफ़ी है जो सूरः निसा के आख़िर में है। एक और हदीस में है कि अगर मैं हुज़ूर सल्ल. से मज़ीद इत्मीनान कर लेता तो वह मेरे लिये सुर्ख़ ऊँटों (अ़रब में ये बहुत क़ीमती समझे जाते थे) के मिलने से भी बहुत ज़्यादा था। हुज़ूर सल्ल. के इस फ़रमान का मतलब यह है कि यह आयत गर्मी के मौसम में नाज़िल हुई होगी, वल्लाहु आलम। और चूँकि हुज़ूर सल्ल. ने इसके समझने की तरफ़ रहनुमाई की और इसमें किफ़ायत (काफ़ी होना) बतलाई थी अब फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु इसके मायने पूछना भूल गये जिसपर अफ़सोस का इज़हार कर रहे हैं।

तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि जनाब फ़ारूक़े आ़ज़म ने हुज़ूर सल्ल. से कलाला के बारे में सवाल किया, आपने फ़रमाया अल्लाह ने इसे बयान नहीं फ़रमाया, फिर यह आयत उतरी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. अपने ख़ुतबे में फ़रमाते हैं कि जो आयत सूरः निसा के शुरू में फ़राईज़ (मीरास) के बारे में है वह औलाद और बाप के लिये है और दूसरी आयत मियाँ-बीवी के लिये है, और माँ-शरीक बहनों के लिये। और जिस आयत से सूरः निसा को ख़त्म किया है वह सगे बहन भाईयों के बारे में है जो रहमी (गर्भ का) रिश्ता अ़सबा में चलता है। (इब्ने जरीर) इस आयत के मायने 'ह-ल-क' के मायने हैं, यानी मर गया, जैसा कि फ़रमान हैः

كُلُّ شَيْءٍ هٰلِكٌ.

यानी हर चीज़ फ़ना होने वाली है सिवाय ज़ाते ख़ुदा के, जो हमेशा बाक़ी रहने वाला है। जैसा कि एक और आयत में फ़रमायाः

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ○ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُوالْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ○

यानी हर एक जो इस पर है फ़ानी है, और तेरे रब का चेहरा ही बाक़ी रहेगा, जो जलाल व इकराम वाला है।

फिर फ़रमाया जिसका वलद (औलाद) न हो। इससे बाज़ लोगों ने दलील पकड़ी है कि कलाला की शर्त में बाप का न होना नहीं बल्कि जिसकी औलाद न हो वह कलाला है। इब्ने जरीर की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से भी यही मन्क़ूल है, लेकिन सही क़ौल जमहूर का है और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का फ़ैसला भी यही है कि कलाला वह है जिसका न बेटा हो न बाप, और इसी की दलालत आयत के इसके बाद के अलफ़ाज़ से भी होती है, जो फ़रमायाः

وَلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ.

यानी उसकी बहन हो तो उसके लिये कुल छोड़े हुए माल का आधा है, अगर बहन बाप के साथ हो तो बाप उसे मीरास पाने से रोक देता है और उसे कुछ भी नहीं मिलता, इस पर सब सहमत हैं। पस साबित हुआ कि कलाला वह है जिसका बेटा न हो और यह नस (शरई दलील) से साबित है, और बाप भी न हो, यह भी नस से साबित होता है। लेकिन थोड़ा ग़ौर करने के बाद। इसलिये कि बहन का आधा हिस्सा बाप की मौजूदगी में होता ही नहीं, बल्कि वह मीरास के हिस्से से मेहरूम होती है। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. से मसला पूछा जाता है कि एक औरत मर गई, उसका शौहर है और उसकी एक हक़ीक़ी (सगी) बहन है, तो आपने फ़रमाया आधा बहन को दे दो और आधा शौहर को। जब आपसे इसकी दलील पूछी गई तो आपने फ़रमाया मेरी मौजूदगी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसी सूरत में यही फ़ैसला फ़रमाया था। हज़रत इब्ने अ़ब्बास और हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इब्ने जरीर में मन्क़ूल है कि इन दोनों का फ़तवा उस मय्यित के बारे में जो एक लड़की और एक बहन छोड़ जाये यह था कि इस सूरत में बहन मेहरूम रहेगी उसे कुछ भी न मिलेगा, इसलिये कि क़ुरआन की इस आयत में बहन को आधा मिलने की सूरत यह बयान की गई है कि मय्यित (मरने वाले) की औलाद न हो, और यहाँ औलाद है, लेकिन जमहूर इनके ख़िलाफ़ हैं कि इस सूरत में भी आधा लड़की को मिलेगा, फ़ुर्ज़ होने की बिना पर और आधा बहन को मिलेगा अ़सबा होने की वजह से। इब्राहीम इब्ने उस्वद कहते हैं- हमारा हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में फ़ैसला किया कि आधा लड़की का और आधा बहन का।

सही बुख़ारी की एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू मूसा रज़ि. ने लड़की, पोती और बहन के बारे में फ़तवा दिया कि आधा लड़की को और आधा बहन को, फिर फ़रमाया ज़रा इब्ने मसऊद के पास भी हो आओ, वह भी मेरी मुवाफ़क़त ही करेंगे, लेकिन जब हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से सवाल हुआ और हज़रत अबू मूसा रज़ि. का फ़ैसला भी उन्हें सुनाया गया तो आपने फ़रमाया फिर तो मैं गुमराह हो जाऊँ और सही रास्ते वाले लोगों में मेरा शुमार न रहे (यानी मुझे इल्म हो और मैं सुन्नत के ख़िलाफ़ अगर फ़तवा दूँ तो मैं तो गुमराह हो जाऊँगा)। सुनो! मैं इसमें वह फ़ैसला करता हूँ जो रसूले ख़ुदा सल्ल. ने किया है, आधा तो बेटी को और छठा हिस्सा पोती को, और इस तरह दो तिहाई पूरे हो गये और जो बाक़ी बचा वह बहन को। हम फिर वापस आये और हज़रत अबू मूसा रज़ि. को यह ख़बर दी तो आपने फ़रमाया जब तक यह अ़ल्लामा (दीन का बहुत ज़्यादा जानने वाला) तुम में मौजूद है मुझसे ये मसाईल न पूछा करो।

आगे फ़रमाता है कि यह उसका वारिस होगा अगर उसकी औलाद न हो, यानी भाई अपनी बहन के कुल माल का वारिस होगा जबकि वह कलाला मरे, यानी उसकी औलाद और बाप न हो, इसलिये कि बाप की मौजूदगी में तो भाई को छोड़े हुए माल में से कुछ न मिलेगा। हाँ अगर भाई के साथ में और कोई मुक़र्ररा हिस्से वाला वारिस हो जैसे शौहर माँ-शरीक भाई तो उसे उसका हिस्सा दे दिया जायेगा और बाक़ी का वारिस भाई होगा। सही बुख़ारी में हैं कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- फ़राइज़ (मीरास के हिस्से) उसके हक़दारों तक पहुँचा दो, फिर जो बाक़ी बचे वह उस मर्द का है जो सबसे ज़्यादा क़रीब हो। फिर फ़रमाता है कि अगर बहनें दो हों तो उन्हें छोड़े हुए माल के तीन हिस्से करके दो हिस्से मिलेंगे, यही हुक्म दो से ज़्यादा का भी है। यहीं से एक जमाअ़त ने दो बेटियों का हुक्म लिया है, जैसा कि दो से ज़्यादा बहनों का हुक्म लड़कियों के हुक्म से लिया है, उस आयत के अलफ़ाज़ ये हैं:

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

فَاِنْ كُنَّ نِسَاۤءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَاتَرَكَ.

यानी अगर औरतें दो से ज़्यादा हों तो उनके लिये छोड़े हुए माल के तिहाई तिहाई के दो हिस्से हैं।

फिर फ़रमाता है कि अगर बहन-भाई दोनों हों तो हर मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है, यही हुक्म असबात का है, चाहे वे लड़के हों या पोते हों या भाई हों, जबकि उनमें मर्द व औरत दोनों मौजूद हों। तो जितना दो औरतों को मिलेगा उतना एक मर्द को, अल्लाह अपने फ़राईज़ बयान फ़रमा रहा है, अपनी हदें मुक़र्रर कर रहा है, अपनी शरीअ़त वाज़ेह कर रहा है, ताकि तुम बहक न जाओ। अल्लाह तआ़ला तमाम कामों के अन्जाम से वाक़िफ़ और हर मस्लेहत का जानना वाला है। बन्दों की भलाई बुराई जानने वाला मुस्तहिक़ (हक़दार) की हक़दारी को पहचानने वाला है।

इब्ने जरीर की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहीं सफ़र में थे, हुज़ैफ़ा रज़ि. की ऊँटनी का सर रसूलुल्लाह सल्ल. के बैठे हुए सहाबी के कजावे के पास था, और हज़रत उमर रज़ि. की सवारी का सर हुज़ैफ़ा की सवारी के दूसरे सवार के पास था जो यह आयत उतरी, पस हुज़ूर सल्ल. ने हुज़ैफ़ा रज़ि. को सुनाई और हज़रत हुज़ैफ़ा ने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. को। उसके बाद फिर हज़रत उमर रज़ि. ने जब इसके बारे में सवाल किया तो कहा वल्लाह तुम बेसमझ हो, इसलिये कि जैसे मुझे हुज़ूर सल्ल. ने सुनाई वैसे ही मैंने आपको सुना दी। वल्लाह मैं तो इस पर कुछ ज़्यादती नहीं कर सकता। पस हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. फ़रमाया करते थे ऐ ख़ुदा अगरचे तूने ज़ाहिर कर दिया मगर मुझ पर तो खुला नहीं, लेकिन यह रिवायत मुन्क़ता है। इसी रिवायत की एक और सनद में है कि हज़रत उमर रज़ि. ने दोबारा यह सवाल अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में किया था। एक और हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा था कि कलाला का वरसा (मरने बाद छोड़ा हुआ माल) किस तरह तक़सीम होगा? इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी लेकिन चूँकि हज़रत की पूरी तसल्ली न हुई थी इसलिये अपनी बेटी (हुज़ूर सल्ल. की पाक बीवी) हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. ख़ुशी में हों तो तुम पूछ लेना। चुनाँचे हज़रत हफ़्सा रज़ि. ने एक रोज़ ऐसा ही मौक़ा पाकर दरियाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया शायद तेरे बाप ने तुझे इसके पूछने की हिदायत की है? मेरा ख़्याल है कि वह इसे मालूम न कर सकेंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब यह सुना तो कहने लगे जब हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमा दिया है तो बस मैं अब इसे जान ही नहीं सकता। एक और रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ि. के हुक्म पर जब हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सवाल किया तो अपने एक शाने (कन्धे की हड्डी) पर यह आयत लिखवा दी। फिर फ़रमाया उमर ने तुझे इसके पूछने को कहा था? मेरा ख़्याल है कि वह इसे ठीक-ठाक न कर सकेंगे, गर्मी की वह आयत जो सूरः निसा में है, क्या काफ़ी नहीं? वह आयत यह है (सूरः निसा आयत 12 का हिस्सा):

وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً .....الخ.

फिर जब दूसरे लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया तो वह आयत उतरी जो सूरः निसा के ख़ात्मे पर है और शाना डाल दिया। यह हदीस मुर्सल है। एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि. ने सहाबा को जमा करके शाने (कन्धे की हड्डी) के एक टुकड़े को लेकर फ़रमाया- मैं कलाला के बारे में आज ऐसा फ़ैसला करूँगा कि पर्दे में बैठी औरतों तक को मालूम रहे, उसी वक़्त एक साँप निकल आया और सब लोग इधर-उधर हो

गये। पस आपने फ़रमाया अगर अल्लाह जल्ल शानुहू का इरादा इस काम को पूरा करने का होता तो इसे पूरा कर लेने देता। इसकी सनद सही है।

मुस्तदरक हाकिम में है कि हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- काश मैं तीन मसले रसूले मक़बूल सल्ल. से दरियाफ़्त कर लेता तो मुझे सुर्ख़ ऊँटों के मिलने से भी ज़्यादा महबूब होता। एक तो यह कि आपके बाद ख़लीफ़ा कौन होगा? दूसरे यह कि जो लोग ज़कात के क़ायल हों लेकिन कहें कि हम तेरी तरफ़ अदा नहीं करेंगे उनसे लड़ना हलाल है या नहीं? तीसरे कलाला के बारे में। एक हदीस में बजाय ज़कात अदा न करने वालों के सूदी मसाईल का बयान है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर के आख़िरी वक़्त मैंने आपसे सुना, फ़रमाते थे कि क़ौल वही है जो मैंने कहा। तो मैंने पूछा वह क्या? फ़रमाया यह कि कलाला वह है जिसकी औलाद न हो। एक और रिवायत में है हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरे और हज़रत सिद्दीक़े अकबर के दरमियान कलाला के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हुआ और बात वही थी जो मैं कहता था। हज़रत उमर रज़ि. ने हक़ीक़ी (सगे) भाईयों और माँ-शरीक भाईयों को जबकि वे जमा हों, तिहाई में शरीक किया था और हज़रत अबू बक्र रज़ि. इसके ख़िलाफ़ थे।

इब्ने जरीर में है कि मोमिनों के ख़लीफ़ा जनाब उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने एक काग़ज़ पर दादा के वरसे (छोड़े हुए माल) और कलाला के बारे में कुछ लिखा, फिर इस्तिख़ारा किया और ठहरे रहे, और ख़ुदा से दुआ की कि परवर्दिगार! अगर तेरे इल्म में इसमें बेहतरी है तो तू इसे जारी कर दे। फिर जब आपको ज़ख़्म लगाया गया तो आपने उस काग़ज़ के टुकड़े को मंगवाकर फाड़ दिया और किसी को इल्म न हुआ कि उसमें क्या तहरीर था। फिर ख़ुद फ़रमाया कि मैंने उसमें दादा का और कलाला का हुक्म लिखा था, और मैंने इस्तिख़ारा किया था, फिर मेरा ख़्याल हुआ कि तुम्हें उसी पर छोड़ दूँ जिस पर तुम हो। इब्ने जरीर में है कि मैं इस बारे में अबू बक्र की राय के ख़िलाफ़ करते हुए शर्माता हूँ और अबू बक्र रज़ि. का फ़रमान था कि कलाला वह है जिसका न बच्चा हो और न बाप हो, और इसी पर जमहूर सहाबा और ताबिईन और दीन के इमाम हज़रात हैं और यही चारों इमामों और सातों फ़क़ीहों (मसाईल का इल्म रखने वाले उलेमा) का मज़हब है, और इसी पर दलालत है क़ुरआने करीम की। जैसा कि बारी तआ़ला ने इसे वाज़ेह करके फ़रमाया- अल्लाह तुम्हारे लिये खोल-खोलकर बयान फ़रमा रहा है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। वल्लाहु आलम

तफ़सीर सूरः मायदा

हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं रसूले ख़ुदा सल्ल. की ऊँटनी अ़ज़बा की नकेल थामे हुए थी कि आप पर सूरः मायदा पूरी नाज़िल हुई। बोझ इतना बढ़ गया कि ऊँटनी के बाज़ू टूट जायें। (मुस्नद अहमद)

दूसरी रिवायत में है कि उस वक़्त आप सफ़र में थे, वही के बोझ से यह मालूम होता था कि गोया ऊँटनी की गर्दन टूट गई। (इब्ने मरदूया)

एक और रिवायत में है कि जब ऊँटनी की ताक़त से ज़्यादा बोझ हो गया तो हुज़ूर सल्ल. उस पर से उतर गये। (मुस्नद अहमद) तिर्मिज़ी शरीफ़ में रिवायत है कि सबसे आख़िरी सूरः जो हुज़ूर सल्ल. पर उतरी वह सूरः "इज़ा जा-अ नस्रुल्लाह" है। मुस्तद्रक हाकिम में है, हज़रत जुबैर बिन नज़ीर रह. फ़रमाते हैं कि मैं हज के लिये गया, वहाँ हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मुझसे

फ़रमाया तुम सूरः मायदा पढ़ा करते हो? मैंने कहा हाँ। फ़रमाया सुनो! सबसे आख़िर में यही सूरः नाज़िल हुई है। इसमें जिस चीज़ को हलाल पाओ हलाल ही समझो और इसमें जिस चीज़ को हराम पाओ हराम ही जानो। मुस्नद अहमद में भी यह रिवायत है, उसमें यह भी है कि फिर मैंने उनसे नबी करीम सल्ल. के अख़्लाक़ के बारे में सवाल किया तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने फ़रमाया- हुज़ूर सल्ल. के अख़्लाक़ क़ुरआन के अ़मली नमूने थे। यह रिवायत नसाई शरीफ़ में भी है।

सूरः मायदा

सूरः मायदा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 120 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۬ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ○ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ص

ऐ ईमान वालो! अ़हदों को पूरा करो, तुम्हारे लिए तमाम चौपाये "यानी चार पैरों पर चलने वाले चरने वाले जानवर" (यानी ऊँट, बकरी, गाय) हलाल किए गए हैं, मगर जिनका ज़िक्र आगे आता है, लेकिन शिकार को हलाल मत समझना जिस हालत में कि तुम एहराम में हो। बेशक अल्लाह तआ़ला जो चाहें हुक्म करें। (1) ऐ ईमान वालो! ख़ुदा तआ़ला की निशानियों की बेहुर्मती न करो और न हुर्मत वाले महीने की, और न (हरम में) क़ुरबानी होने वाले जानवर की, और न उन (जानवरों) की जिनके गले में पट्टे पड़े हुए हों, और न उन लोगों की जो कि बैतुल-हराम के इरादे से जा रहे हों, अपने रब के फ़ज़्ल और रज़ामन्दी के तालिब हों। और जिस वक़्त तुम एहराम से बाहर आ जाओ तो शिकार किया करो। और ऐसा न हो कि तुमको किसी क़ौम से, जो इसी सबब से बुग़्ज़ है कि उन्होंने तुमको मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, वह तुम्हारे लिए इसका सबब हो जाए कि तुम हद से निकल जाओ। और नेकी और परहेज़गारी में एक-दूसरे की मदद किया

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ٥	करो, और गुनाह और "ज़ुल्म व" ज़्यादती में एक-दूसरे की मदद मत करो, और अल्लाह तआला से डरा करो, बेशक अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (2)

हराम और हलाल चीज़ें

इब्ने अबी हातिम में है कि एक शख़्स ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से कहा- आप मुझे कोई ख़ास नसीहत कीजिये। आपने फ़रमाया जब तू क़ुरआन में लफ़्ज़ "या अय्युहल्लज़ी-न आमनू" (ऐ ईमान वालो!) सुने तो फ़ौरन कान लगाकर दिल से मुतवज्जह हो जा, क्योंकि उसके बाद किसी न किसी भलाई का हुक्म होगा, या किसी न किसी बुराई से रुकने को कहा गया होगा। हज़रत ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि जहाँ कहीं अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों को कोई हुक्म दिया है उस हुक्म में नबी सल्ल. शामिल हैं। हज़रत ख़सीमा रह. फ़रमाते हैं कि तौरात में बजाय "या अय्युहल्लज़ी-न आमनू" (ऐ ईमान वालो!) के "या अय्युहल् मसाकीन" (ऐ मिस्कीन लोगो!) है।

एक रिवायत में है जो इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के नाम से बयान की जाती है, कि जहाँ कहीं लफ़्ज़ "या अय्युहल्लज़ी-न आमनू" (ऐ ईमान वालो!) है उन तमाम मौक़ों पर उन सब ईमान वालों के सरदार और अमीर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। रसूले पाक के सहाबा में से हर एक को डाँटा गया है सिवाय हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. के, कि उन्हें किसी मामले में नहीं डाँटा गया।

लेकिन यह याद रहे कि यह क़ौल बिल्कुल वाही (बेबुनियाद और ग़लत) है, इसके अलफ़ाज़ मुन्कर हैं और इसकी सनद भी सही नहीं। हज़रत इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं कि इसका रावी ईसा बिन राशिद मजहूल है, उसकी रिवायत मुन्कर है। मैं कहता हूँ कि इसी तरह इसका दूसरा रावी अ़ली बिन बज़ीमा अगरचे मोतबर है मगर आला दर्जे का शिया है। फिर भला उसकी ऐसी रिवायत जो उसके अपने ख़ास ख़्यालात की ताईद में हो कैसे क़बूल की जा सकेगी? यक़ीनन वह इसमें नाक़ाबिले क़बूल ठहरेगा।

इस रिवायत में यह जो है कि तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को सिवाय हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के डाँटा गया है, इससे मुराद उनकी वह आयत है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी से सरगोशी (चुपके-चुपके और कान में बात) करने से पहले सदक़ा निकालने का हुक्म दिया था। पस एक से ज़्यादा मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि इस पर अ़मल सिर्फ़ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ही किया था और फिर यह फ़रमान "अ-अश्फ़क़्तुम अन् तुक़द्दिमू...." लेकिन यह ग़लत है कि इस आयत में सहाबा को डाँटा गया, बल्कि दर असल यह हुक्म बतौर वुजूब (ज़रूरी और लाज़िमी होने की हैसियत) के था ही नहीं, इख़्तियारी मामला था, फिर इस पर अ़मल होने से पहले ही अल्लाह ने इसे मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया।

पस हक़ीक़त में किसी से इस हुक्म के ख़िलाफ़ हुआ ही नहीं। फिर यह बात भी ग़लत है कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को किसी बात में डाँटा नहीं गया। सूरः अनफ़ाल की आयत मुलाहिज़ा हो, जिसमें उन तमाम सहाबा को डाँटा गया है जिन्होंने बदर के क़ैदियों से फ़िदया लेकर उन्हें छोड़ देने का मश्विरा दिया था। दर असल सिवाय हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. के बाक़ी तमाम सहाबा रज़ि. का मश्विरा यही था, पस उसमें यह डाँट सिवाय हज़रत उमर रज़ि. के बाक़ी सब को है, जिनमें हज़रत अ़ली रज़ि. भी शामिल

हैं। पस ये तमाम बातें इस बात की खुली दलील हैं कि यह असर (क़ौल और रिवायत) बिल्कुल कमज़ोर और ग़लत है। वल्लाहु आलम

इब्ने जरीर में है, हज़रत मुहम्मद बिन सलमा रह. फ़रमाते हैं- जो किताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़मर बिन हज़्म रज़ि. को लिखवाकर दी थी जबकि उन्हें नजरान भेजा था, उस किताब को मैंने अबू बक्र बिन हज़्म के पास देखा था और उसे पढ़ा था, उसमें ख़ुदा और रसूल के बहुत से अहकाम थे। उसमें सूरः मायदा की शुरू की ये चार आयतें भी लिखी हुई थीं (जिनकी यह तफ़सीर बयान हो रही है) यानी ""या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू ....से.....सरीउल-हिसाब...तक"।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत अ़मर बिन हज़्म रज़ि. के पोते हज़रत अबू बक्र बिन मुहम्मद रह. ने फ़रमाया- हमारे पास रसूलुल्लाह सल्ल. की यह किताब है जिसे आपने हज़रत अ़मर बिन हज़्म को लिखकर दी थी, जबकि उन्हें यमन वालों को दीनी समझ और हदीस सिखाने और उनसे ज़कात वसूल करने के लिये यमन भेजा था, उस वक़्त यह किताब लिखकर दी थी। इसमें अ़हद व पैमान और अहकाम का बयान है। इसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद लिखा है- यह किताब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से है, ऐ ईमान वालो! वादे को अ़हद व पैमान को पूरा करो, यह अ़हद है मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से अ़मर बिन हज़्म के लिये, जबकि उन्हें यमन भेजा, उन्हें अपने तमाम कामों में अल्लाह से डरते रहने का हुक्म है। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उनके साथ है जो उससे डरते रहें और जो एहसान व ख़ुलूस और नेकी करें।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह फ़रमाते हैं कि "अुक़ूद" से मुराद अ़हद हैं। इब्ने जरीर इस पर इजमा (तमाम उलेमा की सहमति) बतलाते हैं चाहे क़समिया अ़हद व पैमान हो या वादे हों, सबको पूरा करना फ़र्ज़ है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह भी रिवायत है कि अ़हद को पूरा करने में अल्लाह के हलाल को हलाल जानना, उसके हराम को हराम जानना, उसके फ़राईज़ की पाबन्दी करना, उसकी हदों की हिफ़ाज़त करना भी है, किसी बात का ख़िलाफ़ न करो, किसी हद को न तोड़ो, किसी हराम काम को न करो। इस पर सख़्ती बहुत है जैसा कि इस आयत में है:

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ ....الى.....سُوْءُ الدَّار.

यह सूरः रअ़द की आयत नम्बर 25 है। जिसमें फ़रमाया गया है कि जो लोग ख़ुदा तआ़ला के मुआ़हिदों को उनकी पुख़्तगी के बाद तोड़ते हैं और ख़ुदा तआ़ला ने जिन ताल्लुक़ात और रिश्तों के क़ायम रखने का हुक्म फ़रमाया है उनको काटते और तोड़ते हैं और ज़मीन (यानी दुनिया) में फ़साद और बिगाड़ करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत होगी और उनके लिये उस जहान में ख़राबी होगी।

हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं- मुराद यह है कि ख़ुदा के हलाल को, उसके हराम को, उसके वादों को, जो ईमान के बाद हर मोमिन के ज़िम्मे आ जाते हैं पूरा करना ख़ुदा की तरफ़ से फ़र्ज़ है। फ़राईज़ की पाबन्दी हलाल हराम का अ़क़ीदा रखना वग़ैरह वग़ैरह। हज़रत ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं- ये छह अ़हद हैं: (1) अल्लाह का अ़हद। (2) आपस की एकता का क़समिया अ़हद। (3) शिर्कत का अ़हद। (4) तिजारत का अ़हद। (5) निकाह का अ़हद (6) और क़समिया वादा। मुहम्मद बिन कअ़ब कहते हैं कि पाँच हैं जिनमें जाहिलीयत के ज़माने की क़समें हैं और तिजारत की शिर्कत के अ़हद व पैमान हैं। जो लोग कहते हैं कि ख़रीद व फ़रोख़्त पूरी हो चुकने के बाद अगरचे अब तक ख़रीदार और बेचने वाले एक दूसरे से जुदा न हुए हों, लेकिन वापस लौटाने का इख़्तियार नहीं, वे अपनी दलील इस आयत को बतलाते हैं। इमाम अबू

हनीफ़ा रह. और इमाम मालिक रह. का यही मज़हब है, लेकिन इमाम शाफ़ई रह. और इमाम अहमद रह. इसके ख़िलाफ़ हैं और जमहूर उलेमा-ए-किराम भी इसके मुख़ालिफ़ हैं, और दलील में वह सही हदीस पेश करते हैं जो बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूले करीम सल्ल. ने फ़रमाया- ख़रीद व फ़रोख़्त करने वाले को सौदे के वापस लेने देने का इख़्तियार है, जब तक कि वे अलग-अलग न हो जायें। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में यूँ भी है कि जब दो शख़्सों ने ख़रीद व फ़रोख़्त कर ली तो उनमें से हर एक को दूसरे से अलग होने तक इख़्तियार बाक़ी है। यह हदीस साफ़ और स्पष्ट है कि यह इख़्तियार ख़रीद व फ़रोख़्त पूरी होने के बाद का है, हाँ इसे बै के लाज़िम हो जाने के ख़िलाफ़ न समझा जाये बल्कि यह शरई तौर पर इसी का मुक़्तज़ा है, पस इसे निभाना भी इसी आयत के अन्तर्गत ज़रूरी है।

फिर फ़रमाता है- मवेशी चौपाये तुम्हारे लिये हलाल किये गए हैं। यानी ऊँट, गाय, बकरी।

अबुल-हसन और क़तादा रह. वग़ैरह का यही क़ौल है। इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि अ़रब में उनके लुग़त (मुहावरे और बोल-चाल) के मुताबिक़ भी यही है। हज़रत इब्ने उमर, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह बहुत से बुज़ुर्गों ने इस आयत से दलील पकड़ी है कि जिस हलाल मादा को ज़िबह किया जाये और उसके पेट में से बच्चा निकले अगरचे वह मुर्दा हो, फिर भी हलाल है। अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि ऊँटनी, गाय, बकरी ज़िबह की जाती हैं, उनके पेट में से बच्चा निकलता है तो हम उसे खा लें या फेंक दें? आपने फ़रमाया अगर चाहो तो खा लो उसका ज़बीहा उसकी माँ का ज़बीहा है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन कहते हैं। अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं पेट के अन्दर वाले बच्चे का ज़बीहा (ज़िबह होना) उसकी माँ का ज़बीहा है।

फिर फ़रमाता है वह जिनका बयान तुम्हारे सामने किया जायेगा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मतलब मुर्दार ख़ून और ख़िन्ज़ीर का गोश्त है। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि मुराद इससे अपने आप अपनी मौत मरा हुआ जानवर और वह जानवर है जिसके ज़बीहे पर अल्लाह के अ़लावा किसी और का नाम लिया गया हो, पूरा इल्म तो अल्लाह तआ़ला को है लेकिन बज़ाहिर यह मालूम होता है कि इससे मुराद अल्लाह का फ़रमानः

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ..... الخ

यानी तुम पर मुर्दार और ख़ून और ख़िन्ज़ीर का गोश्त और हर वह चीज़ जो ख़ुदा के सिवा दूसरे के नाम पर मशहूर की जाये, वह जो गला घोंटने से मर जाये और जो किसी चोट से मर जाये और जो ऊँचाई से गिरकर मर जाये और जो किसी टक्कर लगने से मर जाये और जिसे दरिन्दा खाने लगे, पस ये भी अगरचे मवेशी चौपायों में से हैं लेकिन इन कारणों से वे हराम हो जाते हैं। इसलिये इसके बाद फ़रमाया "लेकिन जिसको ज़िबह कर डालो"। और जो जानवर पूजा-स्थलों पर ज़िबह किया जाये वह भी हराम है और ऐसा हराम कि उसमें से कोई चीज़ हलाल नहीं, इसलिये इससे इस्तिदराक नहीं किया गया और हलाल के साथ इसका कोई फ़र्द मिलाया नहीं गया। पस यहाँ यही फ़रमाया जा रहा है कि चौपाये मवेशी (पशु) तुम पर हलाल हैं मगर वे जिनका ज़िक्र अभी आयेगा जो बाज़ हालात में हराम हैं, उसके बाद का जुमला हाल होने की वजह से मन्सूब है। मुराद जानवरों से आ़म है, बाज़ तो वे जो इनसानों में रहते पलते हैं जैसे ऊँट, गाय, बकरी और बाज़ वे जो जंगली हैं जैसे हिरण, नील गाय और जंगली गधे। पस पालतू जानवरों में से तो इनको मख़्सूस कर लिया जो बयान हुए और वहशी (जंगली) जानवरों में से एहराम की हालत में

किसी को भी शिकार करना वर्जित (मना) क़रार दिया।

यह भी कहा गया है कि मुराद यह है कि हमने तुम्हारे लिये चौपाये जानवर हर हाल में हलाल किये हैं। पस तुम एहराम की हालत में शिकार खेलने से रुक जाओ और इसे हराम जानो। क्योंकि ख़ुदा तआ़ला का यही हुक्म है, और उसके तमाम अहकाम सरासर हिक्मत से पुर हैं। इसी तरह उसकी हर मनाही (किसी काम से रोकने) में भी हिक्मत है, अल्लाह वह हुक्म फ़रमाता है जो इरादा करता है। ऐ ईमान वालो! रब के निशानों की तौहीन न करो, यानी मनासिके हज, सफ़ा मर्वा, क़ुरबानी के जानवर ऊँट और ख़ुदा की हराम की हुई चीज़।

वो महीने जिनमें जंग हराम है

एहतिराम वाले महीनों की तौहीन न करो, उनका अदब करो, उनका लिहाज़ रखो, उनकी ताज़ीम को मानो और उनमें ख़ुसूसियत के साथ ख़ुदा की नाफ़रमानियों से बचो और उन मुबारक और मोहतरम (सम्मानित) महीनों में अपने दुश्मनों से अपनी तरफ़ से लड़ाई न छेड़ो। जैसा कि इरशाद है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ..... الخ

ऐ नबी! लोग तुमसे हुर्मत वाले (इ़ज़्ज़त व सम्मान वाले) महीनों में जंग करने का हुक्म पूछते हैं, तुम उनसे कहो कि उनमें लड़ाई करना बड़ा गुनाह है।

एक और आयत में है कि महीनों की गिनती ख़ुदा के नज़दीक बारह है....। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू बक्र रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने आख़िरी हज में फ़रमाया- ज़माना घूम कर ठीक उसी तर्ज़ पर आ गया है जिस पर वह उस वक़्त था जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया था। साल बारह महीने का है, जिनमें से चार हुर्मत वाले महीने हैं, तीन लगातार ज़िल-क़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम, और चौथा रजब, जिसे मुज़र क़बीला रजब कहता है, जो जमादिउल-आख़िर और शाबान के बीच है। इससे यह भी मालूम हुआ कि इन महीनों की हुर्मत क़ियामत तक के लिये है जैसा कि अगले उलेमा और बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त का मज़हब है।

आयत की तफ़सीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह से यह भी नक़ल है कि इन महीनों में लड़ाई करना भी जायज़ न कर लिया करो, लेकिन जमहूर का मज़हब यह है कि यह हुक्म मन्सूख़ (यानी ख़त्म हो चुका) है, और हुर्मत वाले महीनों में भी इस्लाम के दुश्मनों से जिहाद की इब्तिदा (शुरूआ़त) करना जायज़ है। उनकी दलील अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान है:

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ.

यानी जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जायें तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहाँ पाओ।

और मुराद यहाँ इन चार महीनों का गुज़र जाना है। जब वे चार महीने गुज़र चुकें जो उस वक़्त थे तो अब उनके बाद बराबर जिहाद जारी है और क़ुरआन ने फिर कोई महीना ख़ास नहीं किया बल्कि इमाम अबू जाफ़र तो इस पर इजमा (सब की एक राय) नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकों से जिहाद करना हर वक़्त और हर महीने में जारी ही रखा है। आप फ़रमाते हैं कि इसी तरह इस पर भी इजमा है कि अगर कोई काफ़िर हरम के तमाम दरख़्तों की छाल अपने ऊपर लपेट ले तब भी उसके लिये अमन व अमान न समझी जायेगी। अगर मुसलमानों ने अपनी तरफ़ से इससे पहले उसे अमन न दिया हो। इस मसले

की पूरी बहस यहाँ नहीं हो सकती।

फिर फ़रमाया कि "हदी" और "क़लाइद" की बेहुर्मती भी मत करो, यानी बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ क़ुरबानियाँ भेजने से बाज़ न रहो, क्योंकि इसमें ख़ुदा के निशानों की ताज़ीम (सम्मान) है, और क़ुरबानी के लिये जो ऊँट बैतुल-हराम (काबा शरीफ़) की तरफ़ भेजो उनके गले में बतौर निशान पट्टा डालने से भी न रुको, ताकि उस निशान से हर कोई पहचान ले कि यह जानवर अल्लाह के लिये और उसकी राह के लिये ख़ास हो चुका है। अब उसे कोई बुरे इरादे से हाथ न लगायेगा, बल्कि उसे देखकर दूसरों को भी शौक़ पैदा होगा कि हम भी इसी तरह ख़ुदा के नाम जानवर भेजें और इस सूरत में तुम्हें उसकी नेकी पर भी अज्र मिलेगा क्योंकि जो शख़्स हिदायत (भलाई और नेकी) की तरफ़ दूसरों को बुलाये उसे भी वह अज्र मिलेगा जो उसकी बात मानकर उस पर अ़मल करने वालों को मिलता है, हाँ अल्लाह तआ़ला उनके अज्र को कम करके उसे नहीं देगा बल्कि उसे अपने पास से अ़ता फ़रमायेगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब हज के लिये निकले तो आपने वादी-ए-अ़क़ीक़ यानी ज़ुल-हलीफ़ा में रात गुज़ारी, सुबह अपनी नौ बीवियों के पास गये फिर ग़ुस्ल करके ख़ुशबू मली और दो रक्अ़त अदा की और अपनी क़ुरबानी के जानवर के कोहान पर निशान किया, उसके गले में पट्टा डाला और हज व उमरे का एहराम बाँधा। क़ुरबानी के लिये आपने बहुत अच्छे दिखने वाले, मज़बूत और नौजवान ऊँट साठ से ऊपर अपने साथ लिये थे जैसा कि क़ुरआन का फ़रमान है- जो शख़्स ख़ुदा के अहकाम की ताज़ीम (इकराम व सम्मान) करे उसका दिल तक़्वे वाला है।

बाज़ बुज़ुर्गों का फ़रमान है कि ताज़ीम यह भी है कि क़ुरबानी के जानवरों को अच्छी तरह रखा जाये और उन्हें ख़ूब खिलाया पिलाया जाये, मज़बूत और मोटा किया जाये। हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब फ़रमाते हैं- हमें रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुक्म दिया कि हम क़ुरबानी के जानवरों की आँखें और कान देख-भालकर ख़रीदें (यह रिवायत सुनन में है)। मुक़ातिल बिन हय्यान रह. फ़रमाते हैं- जाहिलीयत के ज़माने में जब ये लोग अपने वतन से निकले थे और हुर्मत वाले महीने नहीं होते थे तो ये अपने ऊपर बालों और ऊन को लपेट लेते थे और हरम में रहने वाले मुश्रिक लोग हरम के दरख़्तों की छालें अपने जिस्म पर बाँध लेते थे, इससे आ़म लोग उन्हें अमन देते थे और उनको मारते पीटते न थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से हज़रत मुजाहिद रह. की रिवायत से मरवी है कि इस सूरः की दो आयतें मन्सूख़ हैं, आयते क़लाईद और आयत 'फ़-इन् जाऊ-क फ़हकुम् बैनहुम् औ अअ़्रिज़् अ़न्हुम'। लेकिन हज़रत हसन रह. से जब दरियाफ़्त किया गया कि इस सूरः में से कोई आयत मन्सूख़ हुई है? तो आपने फ़रमाया नहीं। हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि वे लोग हरम के दरख़्तों की छालें लटका लिया करते थे और इससे उन्हें अमन मिलता था। पस अल्लाह तआ़ला ने हरम के दरख़्तों को काटना मना फ़रमा दिया।

फिर फ़रमाता है कि जो लोग बैतुल्लाह के इरादे से निकले हों उनसे लड़ाई मत लड़ो। यहाँ जो आये वह अमन में पहुँच गया। पस जो इसके इरादे से चला है कि उसकी नीयत ख़ुदा के फ़ज़्ल की तलाश और उसकी रज़ामन्दी की जुस्तजू है, तो अब उसे डर ख़ौफ़ में न रखो, उसकी इज़्ज़त और अदब करो और उसे बैतुल्लाह से न रोको। बाज़ हज़रात का क़ौल है कि ख़ुदा का फ़ज़्ल तलाश करने से मुराद व्यापार तिजारत है, जैसा कि इस आयत में है:

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ

यानी हज के ज़माने में तिजारत करने में तुम पर कोई गुनाह नहीं।

'रिज़वान' से मुराद हज करने में ख़ुदा की मर्ज़ी तलाश करना है। इब्ने जरीर रह. वग़ैरह फ़रमाते हैं यह आयत ख़तीम बिन हिन्द बकरी के बारे में नाज़िल हुई है, उस शख़्स ने मदीने की चरागाह पर धावा डाला था। फिर अगले साल यह उमरे के इरादे से आ रहा था तो बाज़ सहाबा का इरादा हुआ कि उसे रास्ते में रोकें। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। इमाम इब्ने जरीर ने इस मसले पर इजमा (यानी तमाम उलेमा की सहमति) नक़ल किया है कि जो मुश्रिक मुसलमानों की अमान लिये हुए न हो तो चाहे वह बैतुल्लाह शरीफ़ के इरादे से जा रहा हो, या बैतुल-मुक़द्दस के इरादे से, उसे क़त्ल करना जायज़ है। यह हुक्म उनके हक़ में मन्सूख़ है वल्लाहु आलम। हाँ जो शख़्स वहाँ बेदीनी फैलाने के लिये जा रहा हो और शिर्क व कुफ़्र के इरादे से जाना चाहता हो वह तो रोका जायेगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि पहले मोमिन व मुश्रिक सब हज किया करते थे और ख़ुदा तआ़ला की मनाही थी कि किसी मोमिन व काफ़िर को न रोको, लेकिन उसके बाद यह आयत उतरी कि:

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا.

यानी मुश्रिक लोग सरासर नजिस (नापाक) हैं, वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास भी न आयें। और एक जगह फ़रमान है:

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسَاجِدَ اللّٰهِ.

यानी मुश्रिक लोग ख़ुदा की मस्जिदों को आबाद रखने के हरगिज़ अहल (पात्र) नहीं। एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ.

यानी ख़ुदा की मस्जिदों को सिर्फ़ वही आबाद रख सकते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं।

पस मुश्रिक लोग मस्जिदों से रोक दिये गये। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि आयत 'व लल् क़लाइ-द व ला आम्मीनल् बैतल् हरा-म' मन्सूख़ है। जाहिलीयत के ज़माने में जब कोई शख़्स अपने घर से हज के इरादे से निकलता तो वह दरख़्त की छाल वग़ैरह बाँध लेता, तो रास्ते में उसे कोई न सताता। फिर लौटते वक़्त बालों का हार डाल लेता और महफ़ूज़ रहता। उस वक़्त तक मुश्रिक लोग बैतुल्लाह से रोके न जाते थे, तो मुसलमानों को हुक्म दिया गया कि वे हुर्मत वाले महीनों में न लड़ें और न बैतुल्लाह के पास लड़ें। फिर इस हुक्म को इस आयत ने मन्सूख़ कर दिया कि मुश्रिकों से लड़ो जहाँ कहीं उन्हें पाओ।

इब्ने जरीर रह. का क़ौल है कि क़लाइद से मुराद यही है जो हार वे हरम से गले में डाल लेते थे और इसकी वजह से अमन में रहते थे। अ़रब में इसकी ताज़ीम (सम्मान व एहतिराम) बराबर चली आ रही थी और जो इसके ख़िलाफ़ करता था उसे बहुत बुरा कहा जाता था, और शायर उसकी बुराई अपने शे'रों में करते थे। फिर फ़रमाता है कि जब तुम एहराम खोल डालो तो शिकार कर सकते हो। एहराम में शिकार की मनाही थी, अब एहराम के बाद फिर उसकी इजाज़त व छूट हो गई।

Markab E Ashraf

एक उसूल

जो हुक्म मनाही और रोके जाने के बाद हो उस हुक्म से वही साबित होता है जो कि पहले असल में था। यानी अगर उसका वाजिब होना असली था तो मनाही के बाद का हुक्म भी वुजूब के लिये होगा, और इसी तरह मुस्तहब व मुबाह। अगरचे बाज़ों ने कहा है कि ऐसा हुक्म वुजूब के लिये ही होता है और बाज़ ने कहा है कि सिर्फ़ मुबाह (जायज़) होने के लिये ही होता है, लेकिन दोनों जमाअ़तों के ख़िलाफ़ क़ुरआन की आयतें मौजूद हैं। पस सही मज़हब जिससे तमाम दलीलें मिल जायें वही है जो हमने ज़िक्र किया और बाज़ उलेमा-ए-उसूल ने भी इसे ही इख़्तियार किया है। वल्लाहु आलम

अ़दल का हुक्म

फिर फ़रमाता है कि जिस क़ौम ने तुम्हें हुदैबिया वाले साल मस्जिदे हराम से रोका था तो तुम उनसे दुश्मनी बाँधकर बदला लेने पर आमादा होकर ख़ुदा के हुक्म का लिहाज़ न करते हुए ज़ुल्म व ज़्यादती पर न उतर आना। बल्कि तुम्हें किसी वक़्त भी अ़दल (इन्साफ़ और सही राह) को हाथ से न छोड़ना चाहिये। इसी तरह की वह आयत भी है जिसमें फ़रमाया है कि तुम्हें किसी क़ौम की अ़दावत (दुश्मनी) ख़िलाफ़े इन्साफ़ करने पर आमादा न कर दे। अ़दल किया करो, अ़दल ही तक़वे से ज़्यादा क़रीब है। बाज़ उलेमा का क़ौल है कि अगरचे कोई तुझसे तेरे बारे में ख़ुदा की नाफ़रमानी करे, लेकिन तुझे चाहिये कि तू उसके बारे में ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी ही कर।

अ़दल की वजह से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं

हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा को जबकि मुश्रिकों ने बैतुल्लाह की ज़ियारत से रोका और हुदैबिया से आगे बढ़ने ही न दिया, इसी रंज व ग़म में सहाबा वापस आ रहे थे जो मुश्रिक मक्का जाते हुए उन्हें मिले तो उनका इरादा हुआ कि जैसे इनके गिरोह ने हमें रोका हम भी इन्हें उन तक न जाने दें। इस पर यह आयत उतरी। फिर अल्लाह तआ़ला अपने ईमान वाले बन्दों को नेकी के कामों पर एक दूसरे की ताईद करने को फ़रमाता है। 'बिर्र' कहते हैं नेकियों के करने को और 'तक़वा' कहते हैं बुराईयों के छोड़ने को। और उन्हें मना फ़रमाता है गुनाहों और हराम कामों पर किसी की मदद करने से।

इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं कि जिस काम के करने का ख़ुदा का हुक्म हो और इनसान उसे न करे यह 'इस्म' (गुनाह) है, और दीन में जो हदें ख़ुदा ने मुक़र्रर कर दी हैं, जो फ़राइज़ अपनी जान या दूसरों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर फ़रमाये हैं उनसे आगे निकल जाना 'उदवान' (ज़्यादती) है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो, तो हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि या रसूलल्लाह! मज़लूम होने की सूरत में मदद करना ठीक है, लेकिन ज़ालिम होने की सूरत में कैसे मदद करें? फ़रमाया उसे ज़ुल्म न करने दो, ज़ुल्म से रोक लो यही उस वक़्त उसकी मदद है। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। मुस्नद अहमद में है कि जो मुसलमान लोगों से मिले जुले और उनकी तरफ़ से पेश आने वाली तकलीफ़ों पर सब्र करे वह उस मुसलमान से बड़े अज्र वाला है जो न लोगों से मिले जुले न उनकी ईज़ाओं (सताने) पर सब्र करे। मुस्नद बज़्ज़ार में है:

اَلدَّالُّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِه.

Maktab E Ashraf

यानी जो शख़्स किसी भली बात की किसी दूसरे को हिदायत करे वह उस भलाई के करने वाले जैसा ही है।

इमाम अबू बक्र बज़्ज़ार रह. इसे बयान फ़रमाकर फ़रमाते हैं कि यह हदीस सिर्फ़ इसी एक सनद से मरवी है, लेकिन मैं कहता हूँ कि इसकी शाहिद यह सही हदीस है कि जो शख़्स हिदायत की तरफ़ लोगों को बुलाये उसे उन तमाम के बराबर सवाब मिलेगा जो क़ियामत तक आयेंगे और उसकी ताबेदारी करेंगे (यानी बताई हुई राह पर चलेंगे) लेकिन उनके सवाब में से घटाकर नहीं। और जो शख़्स किसी बुराई की तरफ़ बुलाये तो क़ियामत तक जितने लोग उस बुराई को करेंगे उन सब को जो गुनाह होगा वह सारा उस अकेले को होगा, लेकिन उनके गुनाह घटाकर नहीं। तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- जो शख़्स किसी ज़ालिम के साथ जाये ताकि उसकी मदद व सहयोग करे और वह जानता हो कि यह ज़ालिम है, वह यक़ीनन दीने इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है (देखिये किस क़द्र सख़्त धमकी है, असल यह बताना है कि मुसलमान की यह शान ही नहीं कि वह ज़ालिम के साथ खड़ा हो)।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ط ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ط اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ لا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○	तुम पर हराम किये गये हैं मुर्दार और ख़ून और ख़िन्ज़ीर "यानी सुअर" का गोश्त और जो (जानवर) कि अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो, और जो गला घुटने से मर जाए, और जो किसी चोट से मर जाए, और जो गिरकर मर जाए, और जो किसी की टक्कर से मर जाए, और जिसको कोई दरिन्दा खाने लगे लेकिन जिसको ज़िबह कर डालो, और जो (जानवर) इबादत-गाहों पर ज़िबह किया जाए, और यह कि तक़सीम करो तीरों के क़ुर्आ डालने के ज़रिये, ये सब गुनाह हैं। आजके दिन नाउम्मीद हो गये काफ़िर लोग तुम्हारे दीन से, सो उनसे मत डरना और मुझसे डरते रहना, आजके दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया, और मैंने तुम पर अपना इनाम मुकम्मल कर दिया, और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन (बनने के लिए) पसन्द कर लिया, पस जो शख़्स शिद्दत की भूख में बेताब हो जाए शर्त यह है कि किसी गुनाह की तरफ़ उसका मैलान "यानी रुझान" न हो, तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाले हैं, रहमत वाले हैं। (3)

Maktab E Ashraf

बाज़ हराम चीज़ें का बयान

इन आयतों में अल्लाह तआला उनका बयान फ़रमा रहा है जिनका खाना उसने हराम किया है। यह ख़बर उन चीज़ों के न खाने के हुक्म को शामिल है। 'मुर्दार' वह है जो अपने आप मर जाये, न तो उसे ज़िबह किया जाये न शिकार किया जाये। उसका खाना इसलिये हराम किया गया है कि उसका वह ख़ून जो मुज़िर (नुकसान देने वाला) है उसी में रह जाता है, ज़िबह करने से तो बह जाता है और यह ख़ून दीन और बदन को नुकसान देने वाला है। हाँ यह याद रहे कि हर मुर्दार हराम है मगर मछली नहीं, क्योंकि हदीस की किताब मुवत्ता इमाम मालिक, मुस्नदे शाफ़ई, मुस्नद अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, सही इब्ने ख़ुज़ैमा और सही इब्ने हिब्बान में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. से समुद्र के पानी का मसला पूछा गया तो आपने फ़रमाया उसका पानी पाक है और उसका मुर्दा हलाल है, और इसी तरह टिड्डी भी, अगरचे ख़ुद ही मरी हो, हलाल है। इसके जवाज़ की हदीस आगे आ रही है।

'ख़ून' से मुराद 'दमे मसफ़ूह' यानी वह ख़ून है जो ज़िबह के वक़्त बहता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सवाल होता है कि आया तिल्ली खा सकते हैं? आपने फ़रमाया हाँ। लोगों ने कहा वह तो ख़ून है? आपने फ़रमाया हाँ, सिर्फ़ वह ख़ून हराम है जो ज़िबह के वक़्त बहा हो। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा भी यही फ़रमाती हैं कि सिर्फ़ बहा हुआ ख़ून हराम है। इमाम शाफ़ई रह. ने हदीस ज़िक्र की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- हमारे लिये दो क़िस्म के मुर्दे और दो ख़ून हलाल किये गए हैं- मछली और टिड्डी, कलेजी और तिल्ली। यह हदीस मुस्नद अहमद, इब्ने माजा, दारे क़ुतनी और बैहक़ी में भी हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रह. की रिवायत से मौजूद है, और यह कमज़ोर हैं। हाफ़िज़ बैहक़ी रह. फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुर्रहमान के साथ ही इसे इस्माईल बिन इदरीस और अ़ब्दुल्लाह भी रिवायत करते हैं लेकिन मैं कहता हूँ कि ये दोनों ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं। हाँ यह ज़रूर है कि उनके ज़ईफ़ होने में कमी बेशी है। सुलैमान बिन बिलाल रह. ने भी इस हदीस को रिवायत किया है और वह हैं भी सिक़ा (मोतबर और भरोसे के लायक़) लेकिन इस रिवायत को बाज़ ने इब्ने उमर रज़ि. पर मौक़ूफ़ रखा है। हाफ़िज़ अबू ज़ुरआ़ राज़ी रह. फ़रमाते हैं कि ज़्यादा सही इसका मौक़ूफ़ होना ही है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत सुद्दी बिन अ़जलान से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्ल. ने अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा कि मैं उन्हें ख़ुदा और रसूल की तरफ़ बुलाऊँ और अहकामे इस्लाम उनके सामने पेश करूँ, मैं वहाँ पहुँचकर अपने काम में मशग़ूल हो गया। इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ वह एक प्याला ख़ून का भरकर मेरे सामने आ बैठे और दायरा बनाकर खाने के इरादे से बैठे और मुझसे कहने लगे आओ सुद्दी तुम भी खा लो। मैंने कहा तुम ग़ज़ब कर रहे हो। मैं तो उनके पास से आ रहा हूँ जो इसका खाना हम सब पर हराम करते हैं। तो वे सब के सब मेरी तरफ़ मुतवज्जह हो गये और कहा पूरी बात कहो, मैंने यही आयतः

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ..... الخ

पढ़कर सुना दी (जिसकी यह तफ़सीर चल रही है)। यह रिवायत इब्ने मरदूया में भी है, उसमें इसके बाद यह भी है कि मैं वहाँ बहुत दिनों तक रहा और उन्हें पैग़ामे इस्लाम पहुँचाता रहा, लेकिन वे ईमान न लाये। एक दिन जबकि मुझे सख़्त प्यास लगी और पानी बिल्कुल न मिला तो मैंने उनसे पानी माँगा और कहा कि प्यास के मारे मेरा बुरा हाल है, थोड़ा सा पानी पिला दो, लेकिन किसी ने मुझे पानी न दिया, बल्कि कहा हम तो तुझे यूँ ही प्यासा तड़पा-तड़पाकर मार डालेंगे। मैं ग़मगीन होकर धूप में तपते हुए अंगारों जैसे

संगरेज़ों (पत्थर के टुकड़ों) पर अपना खुरदुरा कम्बल मुँह पर डालकर उसी सख़्त गर्मी में मैदान में पड़ा रहा। इत्तिफ़ाक़न मेरी आँख लग गई तो ख़्वाब में देखता हूँ कि एक शख़्स बेहतरीन जाम लिये हुए और उसमें बेहतरीन अच्छे ज़ायके वाली मज़ेदार पीने की चीज़ लिये हुए मेरे पास आया और जाम मेरे हाथ में दे दिया, मैंने ख़ूब पेट भरकर उसमें से पिया, वहीं आँख खुल गई तो ख़ुदा की क़सम मुझे बिल्कुल भी प्यास न थी बल्कि उसके बाद से लेकर आज तक मुझे कभी प्यास की तकलीफ़ ही नहीं हुई, बल्कि यूँ कहना चाहिये कि प्यास ही नहीं लगी। ये लोग मेरे जागने के बाद आपस में कहने लगे कि आख़िरकार है तो यह तुम्हारी क़ौम का सरदार ही, तुम्हारा मेहमान बनकर आया है, इतनी बेरुख़ी भी ठीक नहीं कि एक घूँट पानी भी हम इसे न दें। चुनाँचे अब ये लोग मेरे पास कुछ लेकर आये, मैंने कहा अब मुझे कोई हाजत नहीं, मुझे मेरे रब ने खिला-पिला दिया। यह कहकर मैंने उन्हें अपना भरा हुआ पेट दिखा दिया। इस करामत (करिश्मे) को देखकर वे सबके सब मुसलमान हो गये। अअ़्शा (शायर) ने अपने क़सीदे में क्या ही ख़ूब कहा है कि मुर्दार के क़रीब भी न हो, और किसी जानवर की रग काटकर ख़ून निकाल कर न पी, और पूजा-स्थलों पर चढ़ा हुआ न खा, और ख़ुदा के सिवा दूसरे की इबादत न कर, सिर्फ़ ख़ुदा ही की इबादत किया कर।

'सुअर का गोश्त' हराम है, चाहे वह जंगली हो या पालतू। लफ़्ज़ गोश्त शामिल है उसके तमाम अंगों को, जिसमें चर्बी भी दाख़िल है। पस ज़ाहिरिया (यह एक फ़िर्क़ा है) की तरह तकल्लुफ़ से काम लेने की कोई हाजत नहीं, कि वे दूसरी आयत में से "फ़-इन्नहू रिजसुन्" (वह नापाक और गन्दगी है) लेकर यह कहते हैं कि यहाँ नापाकी और गन्दगी से ख़िन्ज़ीर मुराद है। ताकि उसके तमाम हिस्से और अंग हुर्मत में आ जायें।

सही मुस्लिम की हदीस में है कि शतरंज खेलने वाला अपने हाथों को सुअर के गोश्त व ख़ून में रंगने वाला है। ख़्याल कीजिये कि सिर्फ़ छूना भी शरअ़न् किस क़द्र नफ़रत के क़ाबिल है, फिर खाने के बेहद बुरा होने में क्या शक रहा? और इसमें दलालत है कि लफ़्ज़ गोश्त शामिल है तमाम अंगों और हिस्सों को चाहे वह चर्बी हो चाहे कुछ और। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने शराब, मुर्दार, सुअर और बुतों की तिजारत की मनाही कर दी है, तो पूछा गया कि या रसूलल्लाह! मुर्दार की चर्बी के बारे में क्या इरशाद होता है? वह कश्तियों पर चढ़ाई जाती है, खालों पर लगाई जाती है और चिराग़ जलाने के काम भी आती है। आपने फ़रमाया नहीं नहीं! वह हराम है।

सही बुख़ारी में है कि अबू सुफ़ियान ने हिरक्ल से कहा वह (नबी) हमें मुर्दार से और ख़ून से रोकता है, वह जानवर भी हराम है, जिसको ज़िबह करने के वक़्त अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया जाये, अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ पर इसे फ़र्ज़ कर दिया है कि वह उसी का नाम लेकर जानवर को ज़िबह करे। पस अगर कोई इससे हट जाये और उसके पाक नाम के बदले किसी बुत वग़ैरह का नाम ले, चाहे मख़्लूक़ में से कोई भी हो, तो यक़ीनन वह जानवर तमाम इमामों के नज़दीक हराम हो जायेगा। हाँ जिस जानवर के ज़बीहे के वक़्त बिस्मिल्लाह कहना रह जाये, चाहे जान-बूझकर या भूल-चूक से वह हराम है या हलाल? इसमें उलेमा का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है, जिसका बयान सूरः अन्आ़म में आयेगा।

हज़रत अबू तुफ़ैल रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के वक़्त से लेकर आज तक ये चारों चीज़ें हराम रहीं, किसी वक़्त इनमें से कोई भी हलाल नहीं हुई:

1. मुर्दार। 2. ख़ून। 3. सुअर का गोश्त। 4. और ख़ुदा के सिवा दूसरे के नाम की चीज़।

अलबत्ता बनी इस्राईल के गुनाहगारों के गुनाह की वजह से बाज़ ग़ैर-हराम चीज़ें भी उन पर हराम कर

Maktab_e_Ashraf

Maktab E Ashraf

दी गई थीं। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़रिये वे दोबारा हलाल कर दी गईं लेकिन बनी इस्राईल ने आपको सच्चा न जाना और आपकी मुख़ालफ़त की। (इब्ने अबी हातिम)

यह असर (क़ौल) ग़रीब है। हज़रत अ़ली रज़ि. जब कूफ़े के हाकिम थे, उस वक़्त इब्ने नाइल नाम के क़बीले बनू रबाह का एक शख़्स जो शायर था फ़रज़्दक़ के दादा ग़ालिब से मुक़ाबिल हुआ और यह तय हुआ कि दोनों आमने सामने एक-एक सौ ऊँटों की कोचें काटेंगे (जानवर के पाँव में पीछे कुछ ऐसी रगें होती हैं जिनको काटने से पूरे जिस्म का ख़ून निचुड़ जाता है और जानवर मर जाता है, उसी का ज़िक्र है) चुनाँचे कूफ़े की पुश्त पर पानी की जगह ये आये और जब वहाँ उनके ऊँट आये तो ये अपनी तलवारें लेकर खड़े हो गये और ऊँटों की कोचें काटनी शुरू कीं, और फ़ख़्र व दिखावे के लिये दोनों उसमें मशग़ूल हो गये। कूफ़ियों को जब यह मालूम हुआ तो वे अपने गधों और ख़च्चरों पर सवार होकर गोश्त लेने के लिये आने लगे, इतने में हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. के सफ़ेद ख़च्चर पर सवार होकर यह मुनादी करते हुए वहाँ पहुँचे कि लोगो! यह गोश्त न खाना, ये जानवर अल्लाह के नाम पर ज़िबह नहीं किये गये इसलिये ग़ैरे-ख़ुदा के नाम पर ज़िबह किये हुए के हुक्म में दाख़िल हैं। (इब्ने अबी हातिम)

यह असर (क़ौल और रिवायत) भी ग़रीब है। हाँ इसके सही होने का सुबूत वह हदीस है जो अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देहातियों की तरह मुक़ाबले में कोचें काटने से मनाही फ़रमा दी। फिर अबू दाऊद ने फ़रमाया है कि मुहम्मद इब्ने जाफ़र ने इसे इब्ने अ़ब्बास पर मौक़ूफ़ किया है। अबू दाऊद ही की एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्ल. ने उन दोनों शख़्सों का खाना खाना मना फ़रमा दिया जो आपस में एक दूसरे पर सबक़त ले (यानी एक दूसरे से आगे निकल) जाना और एक दूसरे का मुक़ाबला करना और दिखावा करना चाहते हैं।

'जिसका गला घुट जाये' चाहे किसी ने जान-बूझकर गला घोंटकर, गला मरोड़कर उसे मार डाला हो चाहे अपने आप उसका गला घुट गया हो, जैसे अपने खूँटे में बंधा हुआ है और भागने लगा, फन्दा गले में आ पड़ा और खिच-खिचाव करता हुआ मर गया। पस यह हराम है। 'जो चोट से मर जाये' यह वह है जिस जानवर को किसी ने ज़र्ब (चोट) लगाई, लकड़ी वग़ैरह ऐसी चीज़ से जो धारदार नहीं और उसी से वह मर गया तो वह भी हराम है। जाहिलीयत में यह भी दस्तूर था कि जानवर को लठ से मार डालते फिर खाते। क़ुरआन ने ऐसे जानवर को हराम बतलाया। सही सनद से नक़ल है कि हज़रत अ़दी बिन अबी हातिम रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं मेराज़ से शिकार खेलता हूँ तो क्या हुक्म है? फ़रमाया जब तू उसे फेंके और वह जानवर को ज़ख़्म लगाये तो खा सकता है, और अगर वह चौड़ाई की तरफ़ से लगे तो वह जानवर लठ मारे हुए के हुक्म में है उसे न खा। पस आपने उसमें जिसे धारदार और नोक से शिकार किया हो और उसमें जिसे चौड़ाई की तरफ़ से लगा हो, फ़र्क़ किया। अव्वल को हलाल और दूसरे को हराम। फ़ुक़हा (दीन के आ़लिमों) के नज़दीक भी यह मसला इत्तिफ़ाक़ी है, हाँ इख़्तिलाफ़ इसमें है कि जब किसी ज़ख़्म लगाने वाली चीज़ ने शिकार को सदमा तो पहुँचाया लेकिन वह मरा है उसके बोझ और चौड़ाई की तरफ़ से तो आया यह जानवर हलाल है या हराम? इमाम शाफ़ई रह. के इसमें दोनों क़ौल हैं- एक तो हराम होना, ऊपर वाली हदीस को सामने रखकर, दूसरे हलाल होना कुत्ते के शिकार के हलाल होने को मद्देनज़र रखकर। इस मसले की पूरी तफ़सीर यह है।

Maktab E Ashraf

फ़स्ल

उलेमा-ए-किराम रहमतुल्लाहि अ़लैहिम का इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि जब किसी शख़्स ने अपना कुत्ता शिकार पर छोड़ा और कुत्ते ने उसे अपनी मार से और बोझ से मार डाला, ज़ख़्मी नहीं किया, या उसे इस क़द्र सदमा (तकलीफ़) पहुँचा कि वह मर गया और ज़ख़्मी नहीं हुआ तो वह हलाल है या नहीं? इसमें दो क़ौल हैं- एक यह कि यह हलाल है, क्योंकि क़ुरआन के अलफ़ाज़ आ़म हैं:

فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ

यानी वे जिन जानवरों को रोक लें तुम उन्हें खा सकते हो।

इसी तरह हज़रत अ़दी रज़ि. वग़ैरह की सही हदीसें भी आ़म हैं (यानी उनमें किसी तरह की शर्त नहीं)। इमाम शाफ़ई रह. के साथियों ने इमाम साहिब का यह क़ौल नक़ल किया है और बाद के उलेमा ने इसको सही कहा है, जैसा कि इमाम नववी और राफ़ई रह.। मैं कहता हूँ कि अगरचे यूँ कहा जाता है लेकिन इमाम साहिब के कलाम से साफ़ तौर पर यह मालूम नहीं होता, देखिये उनकी किताब 'उम्म' और 'मुख़्तसर', इन दोनों में जो कलाम है वह दोनों मायनों की गुंजाईश रखता है। पस दोनों फ़रीक़ ने इसकी तौजीह करके दोनों जानिब मुतलक़ तौर पर एक क़ौल कह दिया, या हम तो बहुत मुश्किल से सिर्फ़ यही कह सकते हैं कि इस बहस में हलाल होने के क़ौल की रिवायत कुछ थोड़े और मामूली ज़ख़्म का होना भी है, अगरचे इन दोनों में से किसी की वज़ाहत नहीं, और न किसी की मज़बूती। इब्ने सब्बाग़ ने इमाम अबू हनीफ़ा रह. से हलाल होने का क़ौल नक़ल किया है और दूसरा कोई क़ौल उनसे नक़ल नहीं किया, और इमाम इब्ने जरीर रह. ने अपनी तफ़सीर में इस क़ौल को हज़रत सलमान फ़ारसी, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से नक़ल किया है। लेकिन यह बहुत ग़रीब है और दर असल इन बुज़ुर्गों से वज़ाहत के साथ ये अक़वाल पाये नहीं जाते, यह सिर्फ़ अपना तसर्रुफ़ है। वल्लाहु आलम।

दूसरा क़ौल यह है कि वह हलाल नहीं है। हज़रत इमाम शाफ़ई रह. के दो क़ौलों में से एक क़ौल यह है। मुज़नी रह. ने इसी को पसन्द किया है और इब्ने सब्बाग़ के क़ौल से भी इसकी तरजीह ज़ाहिर होती है वल्लाहु आलम। और इसी को रिवायत किया है अबू युसूफ़ और मुहम्मद बन अबी हनीफ़ा रह. ने, और यही मशहूर है इमाम अहमद बिन हंबल रह. से, और यह क़ौल ठीक मालूम होता है। वल्लाहु आलम।

इसलिये कि उसूली क़वाईद और शरई अहकाम के मुताबिक़ यही जारी है। इब्ने सब्बाग़ ने हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज रह. की हदीस से दलील पेश की है कि उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! हम कल दुश्मनों का सामना और मुक़ाबला करने वाले हैं और हमारे साथ छुरियाँ नहीं तो क्या हम तेज़ बाँस से ज़िबह कर लिया करें? आपने फ़रमाया जो चीज़ ख़ून बहा दे और उसके ऊपर अल्लाह का ज़िक्र किया जाये उसे खा लिया करो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

यह हदीस अगरचे एक ख़ास मौक़े के लिये है लेकिन हुक्म आ़म अलफ़ाज़ का होगा जैसा कि जमहूर उलेमा-ए-उसूल व फ़ुरूअ़ का फ़रमान है। इसकी दलील वह हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया गया कि बतअ़ तबई जो शहद की नबीज़ (निचोड़ी हुई) है उसका क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया हर वह पीने की चीज़ जो नशा लाये हराम है। पस यहाँ सवाल है शहद की नबीज़ से लेकिन जवाब के अलफ़ाज़ आ़म हैं और मसला भी उनसे आ़म समझा गया। इसी तरह ऊपर वाली हदीस है कि अगरचे सवाल एक

Maktaba E Ashraf

ख़ास सूरत से ज़िबह करने का है लेकिन जवाब के अलफ़ाज़ से वह इसके अ़लावा की भी आ़म सूरतों को शामिल है। अल्लाह के रसूल सल्ल. का यह भी एक ख़ास मोजिज़ा (करामत और करिश्मा) है कि अलफ़ाज़ थोड़े और मायने बहुत। इसे ज़ेहन में रखने के बाद अब ग़ौर कीजिये कि कुत्ते के सदमे (तकलीफ़ पहुँचाने और ज़ख़्मी करने) से जो शिकार मर जाये या उसके बोझ और थप्पड़ की वजह से जिस शिकार का दम निकल जाये ज़ाहिर है कि उसका ख़ून किसी चीज़ से नहीं बहा, पस इस हदीस के मफ़हूम की बिना पर वह हलाल नहीं हो सकता। हाँ इस पर यह एतिराज़ हो सकता है कि इस हदीस को कुत्ते के शिकार के मसले से दूर का ताल्लुक़ भी नहीं, इसलिये कि पूछने वाले ने ज़िबह करने के लिये एक आले (औज़ार) के बारे में सवाल किया था, उनका सवाल उस चीज़ के बारे में न था जिससे ज़िबह किया जाये, इसी लिये हुज़ूर सल्ल. ने इससे दाँत और नाखुन को अलग कर लिया और फ़रमाया सिवाय दाँत और नाखुन के। और मैं तुम्हें बताऊँ कि उनके सिवा क्यों? दाँत तो हड्डी है और नाखुन हब्शियों की छुरी है, और यह क़ायदा है कि मुस्तसना (जिस चीज़ को किसी हुक्म से अलग किया जाये) की दलालत मुस्तसना मिन्हु (जिससे किसी चीज़ को अलग किया जाये) पर हुआ करती है वरना वह उससे मिला और जुड़ा हुआ नहीं माना जा सकता, पस साबित हुआ कि सवाल ज़िबह करने के औज़ार और उपकरण ही का था, तो अब कोई दलालत तुम्हारे क़ौल पर बाक़ी नहीं रही।

इसका जवाब यह है कि हुज़ूर सल्ल. के जवाब के जुमले को देखो, आपने यह फ़रमाया है कि जो चीज़ ख़ून बहा दे और उस पर ख़ुदा का नाम भी लिया गया हो उसे खा लो, यह नहीं फ़रमाया कि उसके साथ ज़िबह कर लो। पस इस जुमले से दो हुक्म एक साथ मालूम होते हैं, ज़िबह करने के आले (उपकरण और औज़ार) का हुक्म भी और ज़बीहे (ज़िबह किये गये जानवर) का हुक्म भी। और यह कि उस जानवर का ख़ून किसी आले (उपकरण) से बहाना ज़रूरी है जो दाँत और नाखुन के अ़लावा कोई और चीज़ हो। एक मस्लक तो यह है।

दूसरा मस्लक जो इमाम मुज़नी रह. का है, वह यह कि तीर के बारे में साफ़ लफ़्ज़ आ चुके हैं कि अगर वह अपनी चौड़ाई की तरफ़ से लगा है और जानवर मर गया है तो न खाओ। और अगर उसने अपनी धार और इन्नी से ज़ख़्म किया है फिर मरा है तो खा लो। और कुत्ते के बारे में मुतलक़ तौर पर अहकाम हैं। पस चूँकि मूजिब यानी शिकार दोनों एक जगह ही है तो मुतलक़ का हुक्म भी मुक़ैयद पर महमूल होगा कि सबब अलग-अलग हों, जैसा कि ज़िहार के वक़्त गुलाम का आज़ाद करना जो मुतलक़ है (यानी उसमें कोई क़ैद और शर्त नहीं) महमूल की जाती है क़त्ल के सबब गुलाम आज़ाद करने पर, जो मुक़ैयद है ईमान के साथ (यानी वह गुलाम मोमिन हो)। बल्कि इससे भी ज़्यादा ज़रूरत शिकार के इस मसले में है। यह दलील उन लोगों पर यक़ीनन बहुत बड़ी हुज्जत है जो इस क़ायदे की असल को मानते हैं और चूँकि उन लोगों में इस क़ायदे के मुसल्लम होने में कोई इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं तो ज़रूरी है कि या तो वे इसे तस्लीम करें वरना कोई पुख़्ता जवाब दें। इसके अ़लावा यह फ़रीक़ यह भी कह सकता है कि चूँकि इस शिकार को कुत्ते ने अपने भारी होने और उस पर गिर पड़ने की वजह से मार डाला है और यह साबित है कि तीर जब अपनी चौड़ाई से लगकर शिकार को मार डाले तो वह हराम हो जाता है। पस इस पर क़ियास करके कुत्ते का यह शिकार भी हराम हो गया। दोनों में यह बात मुश्तरक है कि दोनों शिकार के आलात (हथियार और उपकरण) हैं और दोनों ने अपने बोझ और ज़ोर से शिकार की जान ले ली है, और आयत का हुक्म में आ़म होना उसके विपरीत नहीं हो सकता, क्योंकि उमूम (यानी हुक्म के आ़म होने) पर क़ियास

Maktab E Ashraf

मुक़द्दम है, जैसा कि चारों इमामों और जमहूर का मज़हब है, यह मस्लक भी बहुत अच्छा है। दूसरी बात यह है कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ.

यानी शिकारी कुत्ते जिस जानवर को रोक रखें उसका खाना तुम्हारे लिये हलाल है।

यह आ़म है, शामिल है उसे भी जो ज़ख़्मी किया हो और उसके अ़लावा को भी, लेकिन इस वक़्त जिस सूरत की बहस चल रही है वह या तो टक्कर लगा हुआ है या उसके हुक्म में, या गला घोंटा हुआ है या उसके हुक्म में।

हर सूरत में इन कारणों पर इस आयत को सामने रखना ज़रूरी होगा। अव्वल तो यह कि शारेअ़ ने इस आयत का हुक्म शिकार की हालत में मोतबर माना है, क्योंकि हज़रत अ़दी इब्ने हातिम से अल्लाह के रसूल सल्ल. ने यही फ़रमाया- अगर वह चौड़ाई की तरफ़ से लगा है तो वह लठ मारा हुआ है, उसे न खाओ। जहाँ तक हमारा इल्म है हम जानते हैं कि किसी आ़लिम ने यह नहीं कहा कि लठ से और मार से मरा हुआ तो शिकार की हालत में मोतबर हो और सींग और टक्कर लगा हुआ मोतबर न हो। पस जिस सूरत में इस वक़्त बहस हो रही है उस जानवर को हलाल कहना इजमा को तोड़ना होगा, जिसे कोई भी जायज़ नहीं कह सकता बल्कि अक्सर उलेमा इसे ममनू (वर्जित) बतलाते हैं। दूसरे यह कि आयत "शिकारी कुत्ते जिस जानवर को रोक रखें उसका खाना तुम्हारे लिये हलाल है" अपने उमूम पर बाक़ी नहीं, और इस पर इजमा है (सब उलेमा एक राय हैं) बल्कि आयत से मुराद सिर्फ़ हलाल जानवर हैं तो इसके आ़म अलफ़ाज़ से वे हैवान (जानवर) जिनका खाना हराम है इत्तिफ़ाक़े राय से निकल गये।

एक तक़रीर इसी मसले में और भी सुन लीजिये कि इस तरह का शिकार मुर्दार के हुक्म में है, इसलिये कि उसका ख़ून और उसके ख़राब रतूबात उसी में रहे, पस जिस वजह से मुर्दार हराम है वही वजह यहाँ भी है, तो यह भी इसी क़ियास से हलाल नहीं। एक और वजह भी सुनिये कि हुर्मत की आयत "हुर्रिमत् अ़लैकुम्....." बिल्कुल मोहकम है, उसमें किसी तरह से नस्ख़ का दख़्ल नहीं, न कोई तख़्सीस होती है, ठीक इसी तरह आयते तहलील (यानी जिसमें हलाल होने का बयान है) भी मोहकम ही होनी चाहिये। यानी फ़रमाने बारी तआ़ला:

يَسْئَلُونَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ.

लोग तुझसे पूछते हैं कि उनके लिये क्या हलाल किया गया है? तू कह दे कि तमाम तैयब (पाक और अच्छी) चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल हैं।

जब दोनों आयतें मोहकम और ग़ैर-मन्सूख़ हैं तो यक़ीनन उनमें टकराव न होना चाहिये। पस हदीस को इसके बयान के लिये समझना चाहिये और इसी की शहादत तीर का वाक़िआ़ है, जिसमें यह बयान है कि इसमें यह सूरत दाख़िल है, यानी जबकि जानवर इन्नी, धार और तेज़ी की तरफ़ से ज़ख़्मी हो तो वह हलाल होगा, क्योंकि वह पाक और हलाल चीज़ों में आ गया। साथ ही हदीस में यह भी बयान आ गया कि आयते तहरीम (जिसमें हराम होने वाली चीज़ों का बयान है) में कौनसी सूरत दाख़िल है, यानी वह सूरत जिसमें जानवर की मौत तीर की चौड़ाई की चोट से हुई है, वह हराम हो गया, जिसे खाया न जायेगा, इसलिये वह वक़ीज़ है, और वक़ीज़ आयते तहरीम का एक फ़र्द है। ठीक इसी तरह अगर शिकारी कुत्ते ने जानवर को अपने दबाव, ज़ोर, बोझ और सख़्त पकड़ की वजह से मार डाला है, तो वह ततीह है या फ़तीह, यानी

टक्कर और सींग लगे होने के हुक्म में है और हलाल नहीं। हाँ अगर उसे ज़ख़्मी किया है तो वह आयते तहलील (वह आयत जिसमें हलाल चीज़ों का बयान है) के हुक्म में है, और यक़ीनन हलाल है।

इस पर अगर यह एतिराज़ किया जाये कि अगर यही मक़सूद होता तो कुत्ते के शिकार में भी तफ़सील कर दी जाती, और फ़रमा दिया जाता कि अगर वह जानवर को चीर फाड़ दे, ज़ख़्मी कर दे तो हलाल और अगर ज़ख़्म न लगाये तो हराम। इसका जवाब यह है कि चूँकि कुत्ते का बग़ैर ज़ख़्मी किये क़त्ल करना बहुत ही कम होता है, उसकी आ़दत यह नहीं बल्कि आ़दत तो यह है कि अपने पंजों या कुचलियों से ही शिकार को मारे या दोनों से। बहुत कम कभी-कभी इत्तिफ़ाक़ से ही ऐसा होता है कि वह अपने दबाव और बोझ से शिकार को मार डाले, इसलिये इसकी ज़रूरत ही नहीं थी कि उसका हुक्म बयान किया जाये और दूसरी वजह यह भी है कि जब आयते तहरीम (जिसमें हराम होने की सूरतों का बयान है) में 'मुर्दार' 'गला घुटने से मर जाने वाले' 'किसी चोट से मरने वाले' 'नीचे गिरकर मरने वाले' 'किसी टक्कर से मरने वाले' की हुर्मत (हराम होना) मौजूद है तो उसके जानने वाले के सामने इस क़िस्म के शिकार का हुक्म बिल्कुल ज़ाहिर है। तीर और मेराज़ में इस हुक्म को इसलिये अलग बयान कर दिया कि वह उमूमन ग़लती कर जाता है, ख़ासकर उस शख़्स के हाथ से जो निशाने का माहिर न हो, और सही अन्दाज़ा लगाने में दक्ष न हो, इसलिये उसके दोनों हुक्म तफ़सील के साथ बयान फ़रमा दिये वल्लाहु आलम।

देखिये चूँकि कुत्ते के शिकार में यह एहतिमाल (गुंजाईश और शुब्हा) था कि मुम्किन है वह अपने किये हुए शिकार में से कुछ खा ले, इसलिये यह हुक्म स्पष्टता के साथ अलग बयान फ़रमा दिया और इरशाद हुआ कि अगर वह ख़ुद खा ले तो तुम उसे न खाओ, मुम्किन है कि उसने ख़ुद अपने लिये ही शिकार को रोका हो। यह हदीस सहीहैन में मौजूद है और यह सूरत अक्सर हज़रात के नज़दीक आयते तहलील के उमूम से मख़्सूस है, और उनका क़ौल है कि जिस शिकार को कुत्ता खा ले उसका खाना हलाल नहीं। हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यही मन्क़ूल है। हज़रत हसन, शअ़बी और नख़ई रह. का क़ौल भी यही है और इसी तरफ़ अबू हनीफ़ा रह. और उनके दोनों साथी और अहमद बिन हंबल और मशहूर रिवायत में शाफ़ई भी गये हैं।

इब्ने जरीर रह. ने अपनी तफ़सीर में अ़ली, सअ़द, सलमान, अबू हुरैरह, इब्ने उमर और इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अ़ज्मईन से नक़ल किया है कि अगरचे कुत्ते ने शिकार में से कुछ खा लिया हो लेकिन उसे खा लेना जायज़ है। बल्कि हज़रत सईद, हज़रत सलमान, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. वग़ैरह तो फ़रमाते हैं कि अगरचे कुत्ता आधा खा गया हो तब भी उस शिकार का खा लेना जायज़ है। इमाम मालिक और इमाम शाफ़ई रह. भी अपने पहले क़ौल में इसी तरफ़ गये हैं और बाद के क़ौल में दोनों क़ौलों की तरफ़ इशारा किया है। जैसे इमाम अबू मन्सूर बिन सब्बाग़ वग़ैरह ने कहा है, अबू दाऊद में मज़बूत सनद से मरवी है कि रसूले करीम सल्ल. ने फ़रमाया है- जब तू अपने कुत्ते को छोड़े और ख़ुदा का नाम तूने लिया हो तो खा ले, अगरचे उसने भी उसमें से खा लिया हो। और खा ले उस चीज़ को जिसे तेरा हाथ तेरी तरफ़ लौटाये। नसाई में भी यह रिवायत है।

तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जब किसी शख़्स ने अपना कुत्ता शिकार पर छोड़ा, उसने शिकार को पकड़ा और उसका कुछ गोश्त खा लिया तो अब उसे इख़्तियार है कि बाक़ी जानवर ये अपने खाने के काम में ले। इसमें इतनी कमज़ोरी है कि यह हदीस मौक़ूफ़न् हज़रत सलमान रज़ि. के क़ौल से नक़ल की गयी है। जमहूर ने अ़दी वाली हदीस को इस पर मुक़द्दम किया है और अबू सालबा

Maktab E Ashraf

वग़ैरह की हदीस को कमज़ोर बतलाया है। बाज़ उलेमा-ए-किराम ने इस हदीस को इस बात पर महमूल किया है कि यह हुक्म उस वक़्त है जब कुत्ते ने शिकार पकड़ा और देर तक अपने मालिक का इन्तिज़ार किया, जब वह न आया तो भूल वग़ैरह के कारण उसने कुछ खा लिया, इस सूरत में यह हुक्म है कि बाक़ी का गोश्त मालिक खा ले, क्योंकि ऐसी हालत में यह डर बाक़ी नहीं रहता कि शायद शिकारी कुत्ता अभी सधा हुआ नहीं है, मुम्किन है उसने अपने लिये ही शिकार किया हो। इसके विपरीत कि कुत्ते ने पकड़ते ही खाना शुरू कर दिया तो इससे मालूम हो जाता है कि उसने अपने लिये ही शिकार को दबोचा है। वल्लाहु आलम। अब रहे शिकारी परिन्दे तो इमाम शाफ़ई रह. ने तो साफ़ कहा है कि ये कुत्ते के हुक्म में हैं, इसलिये अगर ये शिकार में से कुछ खा लें तो शिकार का खाना जमहूर के नज़दीक तो हराम है और दूसरों के नज़दीक हलाल है। हाँ इमाम मुज़नी रह. का पसन्दीदा क़ौल यह है कि अगरचे शिकारी परिन्दों ने शिकार का गोश्त खा लिया हो फिर भी वह हराम नहीं, यही मज़हब अबू हनीफ़ा और इमाम अहमद का है। इसलिये कि परिन्दों को कुत्तों की तरह मार-पीटकर सधा भी नहीं सकते। और वह तालीम हासिल कर ही नहीं सकता जब तक उसे खाये नहीं। तो यहाँ यह बात माफ़ है और इसलिये भी कि शरीअ़त का हुक्म कुत्ते के बारे में आया है परिन्दों के बारे में नहीं। शैख़ अबू अ़ली 'इफ़ज़ाह' में फ़रमाते हैं कि जब हमने यह तय कर लिया कि उस शिकार का खाना हराम है जिसमें से शिकारी कुत्ते ने खा लिया हो तो जिस शिकार में से शिकारी परिन्दा खा ले उसमें दो वजहें हैं लेकिन क़ाज़ी अबुत्तैयब ने इस फ़रअ़ का और इस तरतीब का इनकार किया है, क्योंकि इमाम शाफ़ई ने इन दोनों को साफ़ लफ़्ज़ों में बराबर रखा है वल्लाहु तआ़ला आलम।

'गिरकर मरने वाला' वह है जो पहाड़ी या किसी बुलन्द जगह से गिरकर मर गया हो, वह जानवर भी हराम है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यही फ़रमाते हैं। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि यह वह है जो कुएँ में गिर पड़े। 'टक्कर खाकर मरने वाला' वह है जिसे दूसरा जानवर सींग वग़ैरह से टक्कर लगाये और वह इस सदमे से मर जाये, चाहे उससे ज़ख़्म भी हुआ हो और चाहे उससे ख़ून भी बहा हो, बल्कि अगर ठीक ज़िबह करने की जगह ही ज़ख़्म लगा हो और ख़ून भी निकला हो तब भी।

'और जिसको कोई दरिन्दा खाने लगे' से मुराद वह जानवर है जिस पर शेर या भेड़िया या चीता या कुत्ता वग़ैरह दरिन्दे हमला करें और उसका कोई हिस्सा खा जायें, और इस सबब से वह मर जाये तो उस जानवर को खाना भी हराम है, अगरचे उससे ख़ून बहा हो, बल्कि अगरचे ज़िबह करने की जगह से ही ख़ून निकला हो फिर भी वह जानवर सब की राय में हराम है। इस्लाम से पहले के ज़माने के लोग ऐसे जानवरों का बचा हुआ खा लिया करते थे, अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को इससे मना फ़रमाया। फिर फ़रमाता है मगर वह जिसे तुम ज़िबह कर लो, यानी गला घोंटा हुआ, लठ मारा हुआ, ऊपर से गिर पड़ा हो, सींग और टक्कर लगा हुआ, दरिन्दों का खाया हुआ अगर इस हालत में तुम्हें मिल जाये कि उसमें जान बाक़ी है तो तुम उस पर बाक़ायदा अल्लाह का नाम लेकर छुरी फेर लो तो फिर ये जानवर तुम्हारे लिये हलाल हो जायेंगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास, सईद बिन जुबैर, हसन, और सुद्दी रह. यही फ़रमाते हैं। हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि अगर तुम उनको इस हालत में पा लो कि छुरी फेरते हुए वे दुम रगड़ें या पैर हिलायें या आँखें घुमायें तो बेशक ज़िबह करके खा लो। इब्ने जरीर में आप से नक़ल किया गया है कि जिस जानवर को चोट लगी हो या ऊपर से गिर पड़ा हो या टक्कर लगी हो और उसमें रूह बाक़ी हो और तुम्हें वह हाथ-पैर रगड़ता मिल जाये तो तुम उसे ज़िबह करके खा सकते हो।

हज़रत ताऊस, हसन, क़तादा, अ़बीद बिन उमैर, ज़ह्हाक और बहुत से हज़रात से नक़ल है कि ज़िबह के वक़्त अगर कोई हरकत भी उस जानवर की ऐसी ज़ाहिर हो जाये जिससे यह मालूम हो कि उसमें ज़िन्दगी है तो वह हलाल है। जमहूर फ़ुक़हा का यही मज़हब है। तीनों इमामों का भी यही क़ौल है, इमाम मालिक उस बकरी के बारे में जिसे भेड़िया फाड़ डाले और उसकी आँतें निकल आयें, फ़रमाते हैं- मेरा ख़्याल है कि उसे ज़िबह न किया जाये, उसमें से किस चीज़ का ज़बीहा होगा? एक बार आपसे सवाल हुआ कि दरिन्दा (कोई फाड़कर खाने वाला जानवर) अगर हमला करके बकरी की पीठ तोड़ दे तो क्या उस बकरी को जान निकलने से पहले ज़िबह कर सकते हैं? आपने फ़रमाया अगर बिल्कुल आख़िर तक पहुँच गया है तो मेरी राय में न खानी चाहिये, और अगर इधर-उधर किनारे में ही है तो कोई हर्ज नहीं। पूछने वाले ने कहा दरिन्दे ने उस पर हमला किया और कूदकर उसे पकड़ा, जिससे उसकी कमर टूट गई, तो आपने फ़रमाया मुझे उसका खाना पसन्द नहीं, क्योंकि इतनी ज़बरदस्त चोट के बाद वह ज़िन्दा नहीं रह सकती। आपसे फिर पूछा गया कि अच्छा अगर पेट फाड़ डाला और आँतें निकल पड़ीं तो क्या हुक्म है? फ़रमाया मैं तो यही राय रखता हूँ कि न खाई जाये। यह है इमाम मालिक रह. का मज़हब। लेकिन चूँकि आयत आ़म है इसलिये इमाम मालिक रह. ने जिन सूरतों को मख़्सूस किया है उन पर कोई ख़ास दलील चाहिये। वल्लाहु आलम।

सहीहैन (हदीस की किताबों बुख़ारी व मुस्लिम) में हज़रत राफ़े बिन ख़दीज रज़ि. से रिवायत की गयी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया कि हुज़ूर! हम कल दुश्मन से लड़ाई में उलझने वाले हैं और हमारे साथ छुरियाँ नहीं, क्या हम बाँस से ज़िबह कर लें? आपने फ़रमाया जो चीज़ ख़ून बहाये और उस पर अल्लाह का नाम लिया जाये उसे खा लो, सिवाय दाँत और नाख़ुन के, यह इसलिये कि दाँत हड्डी है और नाख़ुश हब्शियों की छुरियाँ हैं। मुस्नद अहमद और सुनन में है कि हुज़ूर सल्ल. से पूछा गया कि ज़बीहा सिर्फ़ हलक़ और नरख़रे ही में होता है? आपने फ़रमाया अगर तूने उसकी रान में भी ज़ख़्म लगा दिया तो काफ़ी है। यह हदीस है तो सही लेकिन यह हुक्म उस वक़्त है जबकि सही तौर पर ज़िबह करने पर क़ादिर न हो। 'नुसुब' पर जो जानवर ज़िबह किये जायें वे भी हराम हैं। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं- ये इबादतगाहें (पूजा-स्थल) काबे के इर्दगिर्द थीं। इब्ने जुरैज रह. फ़रमाते हैं ये तीन सौ साठ बुत थे, जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) के अ़रब लोग उनके सामने अपने जानवर क़ुरबान करते थे और उनमें से जो बैतुल्लाह के बिल्कुल क़रीब था उस पर उन जानवरों का ख़ून छिड़कते थे और गोश्त को उन बुतों पर बतौर चढ़ावे के चढ़ाते थे। पस ख़ुदा तआ़ला ने यह काम मोमिनों पर हराम किया और उन जानवरों का खाना भी हराम कर दिया, अगरचे उन जानवरों के ज़िबह करने के वक़्त बिस्मिल्लाह भी कही गई हो, क्योंकि यह शिर्कत (यानी ख़ुदा की ख़ुदाई में दूसरों को शरीक करना) है जिसे अल्लाह तआ़ला ने और उसके रसूल सल्ल. ने हराम किया है, और यही सही है और इस जुमले से भी मतलब यही है क्योंकि इससे पहले उनका हराम होना बयान हो चुका है जो अल्लाह के सिवा दूसरों के नाम पर चढ़ाये जायें।

फ़ाल और उसकी हुर्मत

'अज़लाम' से तक़सीम करना जो हराम है वह वह है जो जाहिलीयत के अ़रब में दस्तूर था। उन्होंने तीन तीर रख छोड़े थे एक पर लिखा हुआ था 'इफ़अ़ल' यानी कर। दूसरे पर लिखा हुआ था 'ला तफ़अ़ल' यानी न कर। तीसरा ख़ाली था। बाज़ कहते हैं कि एक पर लिखा हुआ था कि मुझे मेरे रब का हुक्म है। दूसरे पर लिखा हुआ था कि मुझे मेरे रब की मनाही है। तीसरा ख़ाली था, उस पर कुछ भी न लिखा हुआ

था। जब किसी काम के करने न करने में उन्हें दुविधा होती तो वे लोग बतौर क़ुर्आ डालने के उन तीरों को निकालते, अगर हुक्म का तीर निकलता तो उस काम को करते, अगर मनाही का तीर निकलता तो उस काम से रुक जाते, अगर ख़ाली निकलता तो फिर नये सिरे से क़ुर्आ-अन्दाज़ी करते।

'इस्तिस्क़ाम' के मायने उन तीरों से तक़सीम की तलब है। क़ुरैशियों का सबसे बड़ा बुत हुबुल ख़ाना काबा के अन्दर के कुएँ पर स्थापित था, जिस कुएँ में काबा के हदिये और माल जमा रहा करते थे, उस बुत के पास सात तीर थे जिन पर कुछ लिखा हुआ था। जिस काम में इख़्तिलाफ़ (आपस में मतभेद और विवाद) पड़ता ये क़ुरैशी यहाँ आकर उन तीरों में से किसी तीर को निकालते और उस पर जो लिखा पाते उसी के मुताबिक़ अ़मल करते। सहीहैन में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब काबे में दाख़िल हुए तो वहाँ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के मुजस्समे (मूर्ति और प्रतिमायें) गड़े हुए पाये जिनके हाथों में तीर थे। तो आपने फ़रमाया अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, उन्हें ख़ूब मालूम है कि इन बुज़ुर्गों ने कभी तीरों से फ़ाल नहीं की। सही हदीस में है कि सुराक़ा बिन मालिक बिन जासम जब नबी सल्ल. और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. को ढूँढने निकला कि उन्हें पकड़कर मक्का के काफ़िरों के सुपुर्द करे और आप उस वक़्त हिजरत करके मक्का से मदीना को जा रहे थे, तो उसने इसी तरह क़ुर्आ-अन्दाज़ी की। उसका बयान है कि पहली बार वह तीर निकला जो मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ था, मैंने फिर तीरों को मिला-जुलाकर तीर निकाला तो अबकी बार भी यही निकला कि तू उन्हें कोई नुक़सान न पहुँचा सकेगा। मैंने फिर न माना। तीसरी बार फ़ाल लेने के लिये तीर निकाला तो अबकी बार भी यही निकला, लेकिन मैं हिम्मत करके उनका कोई लिहाज़ न करके इनाम हासिल करने और अपने मक़सद में कामयाबी के लिये आपकी तलब में निकल खड़ा हुआ, उस वक़्त तक सुराक़ा मुसलमान नहीं हुआ था, यह हुज़ूर सल्ल. का कुछ न बिगाड़ सका और फिर बाद में उसे ख़ुदा ने इस्लाम से मुशर्रफ़ (सम्मानित) फ़रमाया।

इब्ने मरदूया में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- वह शख़्स जन्नत के बुलन्द दर्जों को नहीं पा सकता जो ज्योतिष का काम करे या तीर-अन्दाज़ी करे या किसी बदफ़ाली की वजह से सफ़र से लौट आये। हज़रत मुजाहिद रह. ने यह भी कहा है कि अ़रब उन तीरों के ज़रिये और फ़ारसी और रूमी पाँसों के ज़रिये जुआ खेला करते थे, जो मुसलमानों पर हराम किया जाता है, मुम्किन है कि इस क़ौल के मुताबिक़ हम यूँ कहें कि थे तो ये तीर इस्तिख़ारे के लिये मगर उनसे जुआ भी कभी-कभी खेल लिया करते थे। वल्लाहु आलम।

इसी सूरः के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने जुए को भी हराम किया है और फ़रमाया- ऐ ईमान वालो! शराब, जुआ, बुत और तीर नजिस (गन्दी और नापाक) और शैतानी काम हैं तुम इनसे अलग रहो, ताकि तुम्हें निजात मिले। शैतान तो यह चाहता है कि उनके ज़रिये तुम्हारे दरमियान दुश्मनी व बैर डाल दे....। इसी तरह यहाँ भी फ़रमाया कि तीरों से तक़सीम करना हराम है, इस काम का करना फ़िस्क़, गुमराही, जहालत और शिर्क है।

इस्तिख़ारा

इसके बजाय मोमिनों को हुक्म हुआ कि जब तुम्हें अपने किसी काम में शुब्हा व शंका हो तो तुम अल्लाह तआ़ला से इस्तिख़ारा कर लो, उसकी इबादत करके उससे भलाई तलब करो। मुस्नद अहमद, बुख़ारी और सुनन में रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम जिस तरह क़ुरआन की सूरतें सिखाते थे उसी तरह हमारे कामों में इस्तिख़ारा करना भी तालीम फ़रमाते थे। आप इरशाद फ़रमाया करते थे कि जब तुममें से किसी को कोई काम आ पड़े तो उसे चाहिये कि दो रक्अ़त नफ़िल नमाज़ पढ़कर फिर यह दुआ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ. فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ. اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ..... خَيْرٌ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَ مَعَاشِىْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاقْدِرْهُ لِىْ وَيَسِّرْهُ لِىْ. ثُمَّ بَارِكْ لِىْ فِيْهِ. وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ ......شَرٌّ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاصْرِفْهُ عَنِّىْ وَاصْرِفْنِىْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِىَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِىْ بِهٖ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्तख़ीरु-क बि-इल्मि-क व अस्तक़्दिरु-क बिक़ुद्रति-क व अस्अलु-क मिन् फ़ज़्लिकल् अ़ज़ीमि। फ़-इन्न-क तक़्दिरु व ला अक़्दिरु व तअ्लमु व ला अअ्लमु व अन्-त अ़ल्लामुल् ग़ुयूबि। अल्लाहुम्-म इन् कुन्-त तअ्लमु अन्-न हाज़ल् अम्-र ..... ख़ैरुल्-ली फ़ी दीनी व मआ़शी व आ़क़ि-बति अम्री फ़क़्दिर्हु ली व यस्सिर्हु ली सुम्-म बारिक् ली फ़ीहि। व इन् कुन्-त तअ्लमु अन्-न हाज़ल् अम्-र ..... शर्रुल्-ली फ़ी दीनी व मआ़शी व आ़क़ि-बति अम्री फ़स्रिफ़्हु अ़न्नी वस्रिफ़्नी अ़न्हु वक़्दिर् लियल्ख़ै-र हैसु का-न सुम्-म अर्ज़िनी बिही।

यानी ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे इल्म के ज़रिये भलाई तलब करता हूँ और तेरी क़ुदरत के वसीले से तुझसे क़ुदरत तलब करता हूँ और तुझसे तेरे बहुत बड़े फ़ज़्ल का तालिब हूँ। यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ादिर है और मैं महज़ मजबूर हूँ। तू पूरी तरह इल्म रखने वाला है और मैं बिल्कुल बेइल्म हूँ। तू ही है जो तमाम ग़ैब को बख़ूबी जानने वाला है। ऐ मेरे अल्लाह! अगर तेरे इल्म में यह काम मेरे लिये दीन व दुनिया, आग़ाज़ व अन्जाम के एतिबार से बेहतर ही बेहतर है तो तू इसे मेरे लिये मुक़द्दर कर दे, और इसे मेरे लिये आसान कर दे, और इसमें मुझे हर तरह की बरकतें अ़ता फ़रमा। और अगर तेरे इल्म में यह काम मेरे लिये दीन व दुनिया की ज़िन्दगी और अन्जाम के एतिबार से बुरा है तो इसे मुझसे दूर कर दे और मेरे लिये ख़ैर व बरकत जहाँ कहीं हो मुक़र्रर कर दे, फिर मुझे उसी से राज़ी रज़ामन्द कर दे।

दुआ़ के ये अलफ़ाज़ मुस्नद अहमद में हैं:

'हाज़ल् अम्-र' जहाँ है वहाँ अपने काम का नाम ले। जैसे निकाह हो तो कहे 'हाज़न्निकाह' सफ़र हो तो कहे 'हाज़स्सफ़र' व्यापार हो तो 'हाज़िहित्तिजारत' वग़ैरह। बाज़ रिवायत में 'ख़ैरुल्-ली फ़ी दीनी' से 'अम्री' तक के बजाय ये अलफ़ाज़ हैं 'ख़ैरुल्-ली फ़ी आ़जिलि अम्री व आजिलिही'।

इमाम तिर्मिज़ी रह. इस हदीस को 'हसन ग़रीब' बतलाते हैं। फिर फ़रमाता है- आज काफ़िर तुम्हारे दीन से मायूस हो गये हैं, यानी उनकी ये उम्मीदें ख़ाक में मिल गईं कि वे तुम्हारे दीन में कुछ ख़ल्त-मल्त (उलट-पलट और गड्-मड्) कर सकें। अपने दीन को तुम्हारे दीन में गड्-मड् कर लें। चुनाँचे सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- शैतान इससे मायूस हो चुका है कि नमाज़ी मुसलमान अ़रब के इलाक़े में उसकी पूजा और इबादत करें, हाँ वह इस कोशिश में लगा रहेगा कि मुसलमानों को आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काता रहे। यह भी हो सकता है कि मक्का के मुश्रिक

इससे मायूस हो गये कि मुसलमानों से मिले-जुले रहें, क्योंकि अहकामे इस्लाम ने इन दोनों जमाअ़तों में बहुत कुछ फ़ासला और फ़र्क़ डाल दिया। इसी लिये हुक्मे ख़ुदावन्दी हो रहा है कि मोमिन सब्र करें, साबित-क़दम रहें और सिवाय ख़ुदा के और किसी से न डरें। कुफ़्फ़ार की मुख़ालफ़त की कुछ परवाह न करें। ख़ुदा उनकी मदद करेगा और उन्हें अपने मुख़ालिफ़ों पर ग़लबा देगा, और उनके नुक़सान पहुँचाने से उनकी हिफ़ाज़त करेगा और दुनिया और आख़िरत में उन्हें बुलन्द व बाला रखेगा। फिर अपनी ज़बरदस्त, बेहतरीन, आला और सबसे अफ़ज़ल नेमत का ज़िक्र फ़रमाता है कि मैंने तुम्हारा दीन हर तरह और हर हैसियत से पूरी तरह कामिल दिया। तुम्हें इस दीन के सिवा किसी दीन की ज़रूरत और आवश्यकता नहीं, न इस नबी के सिवा किसी और नबी की तरफ़ तुम्हारी हाजत है। ख़ुदा ने तुम्हारे नबी को ख़ातिमुन्नबिय्यीन (नबियों के सिलसिले को मुकम्मल और ख़त्म करने वाला) बनाया है, उन्हें तमाम जिन्नात और इनसानों की तरफ़ भेजा है, हलाल वही है जिसे वह हलाल कहें, हराम वही है जिसे वह हराम कहें, दीन वही है जिसे वह मुक़र्रर करें, उनकी तमाम बातें हक़ और सच्चाई वाली हैं, जिनमें किसी तरह झूठ और ख़िलाफ़ नहीं। जैसे अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا.

यानी तेरे रब का कलिमा पूरा हुआ जो ख़बरें देने में सच्चा है और हुक्म व मना करने में अ़दल वाला है। दीन को कामिल करना तुम पर अपनी नेमत को भरपूर करना है, चूँकि ख़ुद तुम्हारे इस दीने इस्लाम पर ख़ुश हूँ इसलिये तुम भी इसी पर राज़ी रहो। यही दीन ख़ुदा का पसन्दीदा है, इसी को देकर उसने अपने अफ़ज़ल रसूल (सल्ल.) को भेजा है और अपनी सबसे सम्मानित किताब नाज़िल फ़रमाई। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस दीने इस्लाम को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये कामिल व मुकम्मल कर दिया है और अपने नबी और मोमिनों को इसका कामिल होना ख़ुद अपने कलाम में फ़रमा चुका है। अब यह रहती दुनिया तक किसी ज़्यादती (इज़ाफ़े) का मोहताज नहीं। इसे ख़ुदा ने पूरा किया है, जो क़ियामत तक नाक़िस नहीं होने का। इससे ख़ुदा ख़ुश है और कभी भी नाख़ुश होने वाला नहीं है।

हज़रत सुद्दी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि यह आयत अ़रफ़ा के दिन नाज़िल हुई, इसके बाद हलाल हराम का कोई हुक्म नहीं उतरा, उस हज से लौटकर अल्लाह के रसूल सल्ल. का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रत अस्मा बिन्ते अ़मीस रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इस आख़िरी हज में हुज़ूर सल्ल. के साथ मैं भी थी। हम जा रहे थे, इतने में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की तजल्ली हुई। हुज़ूर सल्ल. अपनी ऊँटनी पर झुक पड़े, 'वही' उतरनी शुरू हुई, ऊँटनी वही के बोझ की ताक़त न रखती थी, मैंने उसी वक़्त अपनी चादर अल्लाह के रसूल सल्ल. पर डाल दी। इब्ने जरीर वग़ैरह फ़रमाते हैं कि उसके बाद इक्यासी दिन तक रसूलुल्लाह सल्ल. ज़िन्दा रहे, हज्जे अकबर वाले दिन जबकि यह आयत उतरी तो हज़रत उमर रज़ि. रोने लगे, हुज़ूर सल्ल. ने सबब दरियाफ़्त फ़रमाया तो जवाब दिया कि हम अभी दीन की और ज़्यादती (ज़्यादा होने) की उम्मीद में थे, अब वह कामिल हो गया और दस्तूर यह है कि कमाल के बाद नुक़सान (यानी किसी चीज़ के पूरा होने के बाद उसमें कमी होना) शुरू हो जाता है। आपने फ़रमाया सच है, इस मायने का सुबूत उस साबित शुदा हदीस से मिलता है जिसमें हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान है कि इस्लाम ग़ुर्बत और अनजानेपन से शुरू हुआ और जल्द ही फिर ग़रीब अनजान हो जायेगा। पस ग़रीबों के लिये ख़ुशख़बरी है। मुस्नद अहमद में है कि एक यहूदी ने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. से कहा- तुम जो इस आयत "अल्यौ-म

अक्मलतु लकुम् दीनकुम्...." को पढ़ते हो, अगर वह हम यहूदियों पर नाज़िल होती तो हम इस दिन को ईद मना लेते। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! मुझे इल्म है कि यह आयत किस वक़्त और किस दिन नाज़िल हुई, अ़रफ़े के दिन जुमे की शाम को नाज़िल हुई है, हम सब उस वक़्त मैदाने अ़रफ़ा में थे, और नबी पाक के हालात और इस्लामी तारीख़ लिखने वाले तमाम हज़रात इस बात पर सहमत हैं कि आख़िरी हज वाले साल अ़रफ़े का दिन जुमे को था।

एक और रिवायत में है कि हज़रत कअ़ब रज़ि. ने हज़रत उमर रज़ि. से यह कहा था, और हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया यह आयत हमारे यहाँ दो ईद वाले दिन नाज़िल हुई है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की ज़बानी इस आयत की तिलावत सुनकर भी यहूदियों ने यही कहा था, जिस पर आपने फ़रमाया हमारे यहाँ तो यह आयत दो ईद वाले दिन नाज़िल हुई है। ईद का दिन भी था और जुमे का दिन भी। हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि यह आयत अ़रफ़े के दिन शाम को नाज़िल हुई है। हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मिम्बर पर इस पूरी आयत की तिलावत की और फ़रमाया जुमे के दिन अ़रफ़े को यह नाज़िल हुई है। हज़रत समुरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. मौक़फ़ में खड़े हुए थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से जो रिवायत है कि तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पीर के दिन पैदा हुए, पीर के दिन ही मक्का से निकले और पीर के दिन ही मदीने में तशरीफ़ लाये, यह क़ौल ग़रीब है और इसकी सनद कमज़ोर है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. पीर के दिन पैदा हुए, पीर के दिन नबी बनाये गये, पीर के दिन हिजरत के इरादे से मक्का से निकले, पीर के रोज़ ही मदीना पहुँचे और पीर के दिन ही इन्तिक़ाल फ़रमाया। हजरे अस्वद भी पीर के दिन ही वाक़े हुआ। उसमें सूरः मायदा का पीर के दिन नाज़िल होना ज़िक्र नहीं है। मेरा ख़्याल यह है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा होगा दो ईदों के दिन यह आयत नाज़िल हुई तो दो के लिये भी लफ़्ज़ 'इस्नैन' है और पीर के दिन को भी अ़रबी में 'इस्नैन' कहते हैं, इसलिये रिवायत करने वाले को शुब्हा सा हो गया। वल्लाहु आलम।

दो क़ौल इसमें और भी हैं- एक तो यह कि यह दिन लोगों को नामालूम है, दूसरा यह कि यह आयत ग़दीरे ख़ुम के दिन नाज़िल हुई है, जिस दिन कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. के बारे में फ़रमाया था कि जिसका मौला मैं हूँ उसका मौला अ़ली है। तो गोया ज़िलहिज्जा की अट्ठारहवीं तारीख़ हुई जबकि आप हज्जतुल-विदा (अपने आख़िरी हज) से वापस लौट रहे थे, लेकिन यह याद रहे कि ये दोनों सही नहीं, बल्कि सही क़ौल यही है कि यह आयत अ़रफ़े के दिन जुमा को नाज़िल हुई है।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और अमीरुल-मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब और इस्लाम के पहले बादशाह हज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान और तर्जुमाने क़ुरआन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से यही रिवायत है और इसी को हज़रत शअ़बी, हज़रत क़तादा, हज़रत शहर वग़ैरह इमामों और उलेमा ने मुख़्तार (पसन्दीदा) कहा है। यही मुख़्तार क़ौल इब्ने जरीर रह. और तबरी का है।

फिर फ़रमाता है कि जो शख़्स इन हराम की हुई चीज़ों में से किसी चीज़ के इस्तेमाल की तरफ़ मजबूर व बेबस हो जाये तो वह ऐसी लाचारी व मजबूरी की हालत में उन्हें काम में ला सकता है। अल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम है, वह जानता है कि उसके बन्दे ने उसकी हद नहीं तोड़ी, लेकिन बेबसी और मजबूरी के मौक़े पर उसने यह किया है, तो ख़ुदा उसे माफ़ फ़रमा देगा। सही इब्ने हिब्बान में हज़रत उमर रज़ि. से मरफ़ू रिवायत है कि ख़ुदा तआ़ला को अपनी दी हुई रुख़्सतों (सहूलतों और रियायतों) पर बन्दों का अ़मल करना

ऐसा भाता है जैसे अपनी नाफ़रमानी से रुक जाना। मुस्नद अहमद में है कि जो शख़्स ख़ुदा की दी हुई रुख़्सत (छूट और रियायत) को क़बूल न करे उस पर अ़रफ़ात के पहाड़ के बराबर गुनाह है। इसी लिये फ़ुक़हा (दीन के उलेमा) कहते हैं कि बाज़ सूरतों में मुर्दार का खाना वाजिब हो जाता है, जैसे कि एक शख़्स की भूख की हालत यहाँ तक पहुँच गई है कि अब मरा चाहता है, और कभी जायज़ हो जाता है और कभी मुबाह। हाँ इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि भूख के वक़्त जबकि हलाल चीज़ मयस्सर न हो तो हराम सिर्फ़ उतना ही खा सकता है कि जान बच जाये या पेट भर सकता है? बल्कि साथ भी रख सकता है? यह तफ़सील अहकाम की किताबों में ज़िक्र होगी।

इस मसले में कि जब भूखा शख़्स जिसके ऊपर बेक़रारी और मजबूरी की हालत है, मुर्दार और दूसरे का खाना और हालते एहराम में शिकार तीनों चीज़ें मौजूद पाये तो क्या वह मुर्दार खा ले? या हालते एहराम में होने के बावजूद शिकार कर ले और अपनी आसानी की हालत में उसकी जज़ा यानी फ़िदया अदा कर दे, या दूसरे की चीज़ बिना इजाज़त खा ले और अपनी आसानी के वक़्त उसे वापस कर दे। इसमें दो क़ौल हैं- इमाम शाफ़ई रह. से दोनों क़ौल मन्क़ूल हैं। यह भी याद रहे कि मुर्दार खाने की यह शर्त जो अ़वाम में मशहूर है कि जब तीन दिन का फ़ाक़ा हो जाये तो हलाल होता है, यह बिल्कुल ग़लत है, बल्कि जब बेक़रारी और मजबूरी की हालत में हो उसके लिये मुर्दार खाना हलाल हो जाता है। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि हुज़ूर! हम ऐसी जगह रहते हैं कि जब हमें फ़क़्र व फ़ाक़े (तंगदस्ती और भुखमरी) की नौबत आ जाती है तो हमारे लिये मुर्दार खाना कब जायज़ होता है? आपने फ़रमाया जब सुबह शाम खाना न मिले और न कोई सब्ज़ी मिले तो तुम्हें इख़्तियार है। इस हदीस की एक सनद में इरसाल भी है, लेकिन मुस्नद अहमद वाली मरफ़ूअ़ हदीस की इसनाद इमाम बुख़ारी व मुस्लिम की शर्त पर सही है।

इब्ने औ़न फ़रमाते हैं कि हज़रत हसन के पास हज़रत समुरा की किताब थी, जिसको मैं उनके सामने पढ़ता था, उसमें यह भी लिखा था कि सुबह शाम न मिलना 'इज़्तिरार' (बेक़रारी और मजबूरी) है। एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि हराम खाना कब हलाल हो जाता है? आपने फ़रमाया जब तक कि तू अपने बच्चों को दूध से पेट भरकर न खिला सके और जब तक कि उनका सामान न आ जाये। एक देहाती ने हुज़ूर सल्ल. से हलाल हराम का सवाल किया तो आपने जवाब दिया कि तमाम पाकीज़ा चीज़ें हलाल और तमाम ख़बीस (नापाक) चीज़ें हराम हैं, हाँ जबकि उनकी तरफ़ मोहताज हो जाये तो उन्हें खा सकता है, जब तक कि तू उनसे ग़नी (बेनियाज़) न हो जाये। उसने फिर दरियाफ़्त किया कि वह मोहताजी कौनसी है जिसमें मेरे लिये वे हराम चीज़ें हलाल हो जायें? वह ग़नी (बेनियाज़ और बेपरवाह) होना कौनसा है जिससे मुझे उससे रुक जाना चाहिये? फ़रमाया जबकि तू सिर्फ़ रात को अपने बाल-बच्चों को दूध से उनका पेट भर सकता हो तो हराम चीज़ से परहेज़ कर। अबू दाऊद में है कि हज़रत मजीअ़ आ़मिरी रज़ि. ने रसूले करीम सल्ल. से दरियाफ़्त किया कि हमारे लिये मुर्दार का खाना कब हलाल हो जाता है? आपने फ़रमाया तुम्हें खाने को क्या मिलता है? उसने कहा सुबह को सिर्फ़ एक प्याला दूध और शाम को सिर्फ़ एक प्याला दूध। आपने कहा यही है और कौनसी भूख होगी? पस इस हालत में आपने उन्हें मुर्दार खाने की इजाज़त अ़ता फ़रमाई। मतलब हदीस का यह है कि सुबह शाम एक-एक प्याला दूध उन्हें नाकाफ़ी था, भूख बाक़ी रहती थी, इसलिये उन पर मुर्दार हलाल कर दिया गया, ताकि वे पेट भर लिया करें। इसी को दलील बनाकर बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि 'इज़्तिरार' (बेक़रारी और मजबूरी) के वक़्त मुर्दार को पेट भरकर खा

Maktab E Ashraf

सकता है, सिर्फ़ जान बच जाये उतना ही खाना जायज़ हो तो यह क़ैद ठीक नहीं। वल्लाहु आलम।

अबू दाऊद की एक और हदीस में है कि एक शख़्स मय अपने घर वालों और बाल-बच्चों के आया और हर्रा में ठहरा। किसी साहिब की ऊँटनी गुम हो गई थी उसने उनसे कहा अगर मेरी ऊँटनी तुम्हें मिल जाये तो उसे पकड़ लेना। इत्तिफ़ाक़ से यह ऊँटनी उन्हें मिल गई। अब यह उसके मालिक को तलाश करने लगे, लेकिन वह न मिला और ऊँटनी बीमार पड़ गई तो उस शख़्स की बीवी साहिबा ने कहा कि हम भूखे रहा करते हैं, तुम इसे ज़िबह कर डालो, लेकिन उसने इनकार कर दिया, आख़िर ऊँटनी मर गई तो फिर बीवी साहिबा ने कहा अब इसकी खाल खींच लो और इसके गोश्त और चर्बी के टुकड़े करके सुखा लो, हम भूखों के काम आ जायेगी। उस बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि मैं तो यह भी नहीं करूँगा। हाँ अगर अल्लाह के नबी सल्ल. इजाज़त दे दें तो और बात है। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. के पास हाज़िर होकर उसने तमाम क़िस्सा बयान किया। आपने फ़रमाया क्या तुम्हारे पास और कुछ खाने को है जो तुम्हें काफ़ी हो? जवाब दिया कि नहीं। आपने फ़रमाया फिर तुम खा सकते हो। उसके बाद ऊँटनी वाले से मुलाक़ात हुई और जब उसे यह इल्म हुआ तो उसने कहा फिर तुमने उसे ज़िबह करके खा क्यों न लिया? उस बुज़ुर्ग सहाबी ने जवाब दिया कि शर्म मालूम हुई। यह हदीस दलील है उन लोगों की जो कहते हैं कि मजबूरी और बेक़रारी के वक़्त मुर्दार का पेट भरकर खाना बल्कि अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ पास रख लेना भी जायज़ है। वल्लाहु आलम।

फिर इरशाद हुआ कि यह हराम मजबूरी और बेक़रारी के वक़्त के लिये मुबाह (जायज़) है जो किसी गुनाह की तरफ़ मैलान न रखता हो, इसलिये कि इसे मुबाह करके दूसरे से ख़ामोशी है जैसा कि सूरः ब-क़रह में है:

فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ.

यानी जो शख़्स बेक़रार किया जाये सिवाय बाग़ी और हद से गुज़रने वाले के, पस उस पर कोई गुनाह नहीं, अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला मेहरबानी करने वाला है।

इस आयत से इस पर दलील पकड़ी गयी है कि जो शख़्स ख़ुदा की नाफ़रमानी के लिये सफ़र कर रहा हो उसे शरीअ़त की रुख़्सतों (छूट और रियायतों) में से कोई रुख़्सत हासिल नहीं, इसलिये कि रुख़्सतें गुनाहों से हासिल नहीं होतीं। वल्लाहु आलम

(मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने फ़रमाया है कि गुनाह के सफ़र में शरीअ़त की रियायतों के बारे में जो राय बयान हुई यह इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. के नज़दीक इन रियायतों का ताल्लुक़ सफ़र से है मुसाफ़िर या उसकी नीयत से नहीं, लिहाज़ा सफ़र की सहूलतें हर मुसाफ़िर को हासिल होंगी, वह किस तरह का सफ़र कर रहा है यह उसका फ़ेल है जिसका वह जवाबदेह है। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

लोग आपसे पूछते हैं कि क्या-क्या (जानवर) उनके लिए हलाल किये गये हैं, आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारे लिए कुल हलाल (जानवर) हलाल रखे हैं, और जिन शिकारी जानवरों को तुम तालीम दो और तुम उनको छोड़ो भी, और उनको उस तरीक़े से तालीम दो जो तुमको	يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ط قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ لا وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ز

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआला ने तालीम दिया है, तो ऐसे शिकारी जानवर जिस (शिकार) को तुम्हारे लिए पकड़ें उसको खाओ और उस पर अल्लाह का नाम भी लिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो, बेशक अल्लाह तआला जल्दी हिसाब लेने वाले हैं। (4)	فَكُلُوا مِمَّآ أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

हलाल चीज़ें

चूँकि इससे पहले अल्लाह तआला ने नुक़सान पहुँचाने वाली ख़बीस (बुरी) चीज़ों की हुर्मत (हराम होने) का बयान फ़रमाया, चाहे वह नुक़सान जिस्मानी हो या दीनी या दोनों। फिर ज़रूरत की हालत को ख़ास कर लिया जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ.

यानी तमाम जानवरों का बयान तफ़सील के साथ तुम्हारे सामने आ चुका है, हाँ यह और बात है कि तुम उनकी तरफ़ बेबस और बेक़रार हो जाओ तो। इसके बाद इरशाद हो रहा है कि हलाल चीज़ों के बारे में मालूम करने वालों से कह दीजिये कि तमाम पाक चीज़ें तुम पर हलाल हैं। सूरः आराफ़ में नबी करीम सल्ल. की यह सिफ़त बयान फ़रमाई है कि आप तैयब (पाक और अच्छी) चीज़ों को हलाल करते हैं और ख़बीस (बुरी और गन्दी) चीज़ों को हराम करते हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि क़बीला ताई के दो शख़्सों हज़रत अ़दी बिन हातिम और ज़ैद बिन मुहल्हल रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि मुर्दा जानवर तो हराम हो चुका, अब हलाल क्या है? इस पर यह आयत उतरी। हज़रत सईद रह. फ़रमाते हैं यानी ज़िबह किये हुए जानवर पाक हलाल हैं। मुक़ातिल रह. फ़रमाते हैं कि हर हलाल रिज़्क़ पाक चीज़ों में दाख़िल है। इमाम ज़ोहरी रह. से सवाल किया गया कि दवा के तौर पर पेशाब का पीना कैसा है? जवाब दिया कि वह तैयबात (पाक चीज़ों) में दाख़िल नहीं। इमाम साहिब रह. से पूछा गया कि उस मिट्टी का बेचना कैसा है जिसे लोग खाते हैं? फ़रमाया वह तैयबात (पाक चीज़ों) में नहीं और तुम्हारे लिये शिकारी जानवरों के ज़रिये खेला हुआ शिकार भी हलाल किया जाता है जैसे सधे कुत्ते और शकरे वग़ैरह के ज़रिये, यही मज़हब है जमहूर सहाबा, ताबिईन और इमामों वग़ैरह का।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल है कि शिकारी सधे हुए कुत्ते, बाज़, चीते, शकरे वग़ैरह, हर वह परिन्दा जो शिकार करने की तालीम दिया जा सकता हो, और भी बहुत से बुज़ुर्गों से यही नक़ल है कि फाड़ने वाले जानवरों और ऐसे ही परिन्दों में से जो भी तालीम हासिल कर ले उनके ज़रिये शिकार खेलना हलाल है। लेकिन हज़रत मुजाहिद रह. से नक़ल है कि उन्होंने तमाम शिकारी परिन्दों का किया हुआ शिकार मक्रूह कहा है, और दलील में 'व मा अ़ल्लमतुम् मिनल् जवारिहि मुकल्लिबी-न....' पढ़ा (यानी जिन शिकारी जानवरों को तुम तालीम दो)।

सईद बिन जुबैर रह. से भी इसी तरह रिवायत की गई है। ज़ह्हाक और सुद्दी का भी यही क़ौल इब्ने जरीर में है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि बाज़ वग़ैरह पक्षी जो शिकार पकड़ें अगर वह तुम्हें ज़िन्दा मिल जाये तो ज़िबह करके खा लो, वरना न खाओ। लेकिन जमहूर उलेमा-ए-इस्लाम का फ़तवा यह है कि

शिकारी परिन्दों के ज़रिये जो शिकार हो उसका और शिकारी कुत्तों के किये हुए शिकार का एक ही हुक्म है, इसलिये कि वह भी अपने पंजों के ज़रिये कुत्ते की तरह शिकार खेलता है, फिर उनमें फ़र्क़ होने की कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहती, चारों इमाम वग़ैरह का मज़हब भी यही है।

इमाम इब्ने जरीर भी इसी को पसन्द करते हैं और इसकी दलील में इस हदीस को लाते हैं कि हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़ि. ने रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बाज़ के किये हुए शिकार का मसला पूछा तो आपने फ़रमाया जिस जानवर को वह तेरे लिये रोक रखे तू उसे खा ले। इमाम अहमद रह. ने काले कुत्ते का किया हुआ शिकार भी इससे अलग कर लिया है, इसलिये कि उनके नज़दीक उसका क़त्ल करना वाजिब और पालना हराम है, क्योंकि सही मुस्लिम में हदीस है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- नमाज़ को तीन चीज़ें तोड़ देती हैं- गधा, औरत और काला कुत्ता। इस पर हज़रत उबई रज़ि. ने सवाल किया- या रसूलल्लाह! काले कुत्ते को ख़ास करने की क्या वजह है? आपने फ़रमाया वह शैतान है। दूसरी हदीस में है कि आपने कुत्तों के मार डालने का हुक्म दिया, फिर फ़रमाया उन्हें कुत्तों से क्या वास्ता? इन कुत्तों में बहुत ज़्यादा काले कुत्तों को मार डाला करो। शिकारी जानवरों को 'जवारेह' इसलिये कहा गया कि अ़रबी में 'जरह' कहते हैं कमाई को। जैसे अ़रब में कहते हैं 'फ़ुलानुन् ज-र-ह अह्लहू ख़ैरुन्' यानी फ़ुलाँ शख़्स ने अपने घर वालों के लिये भलाई हासिल कर ली। और अ़रब कहते हैं कि 'फ़ुलानुन् ला जार-ह लहू' फ़ुलाँ शख़्स का कोई कमाने वाला नहीं। क़ुरआन में भी लफ़्ज़ 'ज-र-ह' कसब और कमाई हासिल करने के मायने में आया है। अल्लाह का फ़रमान हैः

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ.

यानी दिन को जो भलाई बुराई तुम हासिल करते हो उसे भी ख़ुदा जानता है।

इस आयते करीमा के उतरने की वजह इब्ने अबी हातिम में यह है कि हुज़ूर सल्ल. ने कुत्तों के क़त्ल करने का हुक्म दिया और वे क़त्ल किये जाने लगे, तो लोगों ने आकर आपसे पूछा कि या रसूलल्लाह! जिस उम्मत के क़त्ल का आपने हुक्म दिया है उनसे हमारे लिये क्या फ़ायदा उठाना हलाल है? आप ख़ामोश रहे, इस पर यह आयत उतरी। पस आपने फ़रमाया जब कोई शख़्स अपने कुत्ते को शिकार के पीछे छोड़े और बिस्मिल्लाह भी कहे, फिर वह शिकार पकड़े और रोक रखे तो जब तक वह न खाये उसे खा ले। इब्ने जरीर में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्ल. से अन्दर आने की इजाज़त माँगी, आपने इजाज़त दे दी, लेकिन वह फिर भी अन्दर न आये तो आपने फ़रमाया ऐ ख़ुदा के क़ासिद! हम तो तुम्हें इजाज़त दे चुके हैं, फिर क्यों नहीं आते? इस पर फ़रिश्ते ने कहा हम उस घर में नहीं जाते जिसमें कुत्ता हो। इस पर आपने हज़रत अबू राफ़ेअ़ रज़ि. को हुक्म दिया कि मदीने के तमाम कुत्ते मार डाले जायें। अबू राफ़ेअ़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं गया और सब कुत्तों को क़त्ल करने लगा। एक बुढ़िया के पास एक कुत्ता था जो उसके दामन से लिपटने लगा और बतौर फ़रियाद के उसके सामने भौंकने लगा, मुझे रहम आ गया और मैंने उसे छोड़ दिया और आकर हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी। आपने हुक्म दिया कि उसे भी बाक़ी न छोड़ो। मैं फिर वापस गया और उसे भी क़त्ल कर दिया। अब लोगों ने आकर हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि जिस उम्मत (प्रजाति) के क़त्ल का आपने हुक्म दिया है उनसे कोई फ़ायदा हमारे लिये हलाल भी है या नहीं? इस पर यह आयत उतरी जिसकी तफ़सीर चल रही है।

एक रिवायत में यह भी है कि मदीने के कुत्तों को क़त्ल करके फिर अबू राफ़ेअ़ रज़ि. आस-पास की

Miftah Ul Ashraf

बस्तियों में पहुँचे और मसला पूछने वालों के नाम भी उसमें हैं यानी हज़रत आसिम बिन अदी, हज़रत सईद बिन ख़ेसमा, हज़रत उवैमर बिन साअिदा रज़ियल्लाहु अन्हुम। मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुर्ज़ी रह. फ़रमाते हैं कि आयत का शाने-नुज़ूल कुत्तों का क़त्ल है। 'मुकल्लिबीन' का लफ़्ज़ मुम्किन है कि 'अ़ल्लमतुम' की ज़मीर यानी फ़ाअ़िल का हाल हो और मुम्किन है कि 'जवारेह' यानी मक़्तूल का हाल हो, यानी जिन शिकार हासिल करने वाले जानवरों को तुमने सधाया हो इस हाल में कि वे शिकार को अपने पंजों और नाख़ुनों से शिकार करते हों। इससे भी यह दलील पकड़ी जा सकती है कि शिकारी जानवर जब शिकार को अपने सदमे से ही दबोच कर मार डाले तो वह हलाल न होगा, जैसा कि इमाम शाफ़ई रह. के दो क़ौल में से एक क़ौल यही है कि तुम छोड़ दो तो वह शिकार पर जाये और जब तुम रोको तो रुक जाये और शिकार को पकड़कर तुम्हारे लिये रोके रखे, ताकि तुम जाकर उसे ले लो। उसने ख़ुद अपने लिये उसे शिकार न किया हो। इसी लिये उसके बाद ही फ़रमाया कि जब शिकारी जानवर सधा हुआ हो और उसने अपने छोड़ने वाले के लिये शिकार किया हो और उसने भी उसके छोड़ने के वक़्त ख़ुदा का नाम लिया हो तो वह शिकार मुसलमानों के लिये हलाल है, चाहे वह शिकार मर भी गया हो। इस पर इजमा (सबकी एक राय) है।

इस आयत के मसले के मुताबिक़ ही सहीहैन की यह हदीस है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! मैं अल्लाह का नाम लेकर अपने सधाये हुए कुत्ते को शिकार पर छोड़ता हूँ तो आपने फ़रमाया जिस जानवर को वह पकड़ रखे तू उसे खा ले, अगरचे कुत्ते ने उसे मार भी डाला हो। हाँ यह ज़रूर है कि उसके साथ शिकार करने में दूसरा कुत्ता न मिलना चाहिये, इसलिये कि तूने अपने कुत्ते को ख़ुदा का नाम लेकर छोड़ा है, दूसरे को बिस्मिल्लाह पढ़कर नहीं छोड़ा। मैंने कहा मैं नोकदार लकड़ी से शिकार खेलता हूँ? फ़रमाया अगर वह अपनी तेज़ी (यानी धार) की तरफ़ से ज़ख़्मी करे तो खा ले, और अगर अपनी चौड़ाई की तरफ़ से लगा हो तो न खा, क्योंकि वह लठ मारा हुआ है। दूसरी रिवायत में ये लफ़्ज़ हैं कि जब तू अपने कुत्ते को छोड़े तो अल्लाह का नाम ले लिया कर, फिर अगर वह शिकार को तेरे लिये पकड़ रखे और तेरे पहुँच जाने पर शिकार ज़िन्दा मिल जाये तो तू उसे ज़िबह कर डाल, और अगर कुत्ते ने ही उसे मार डाला हो और उसमें से न खाया हो तो तू उसे भी खा सकता है, इसलिये कि कुत्ते का उसे शिकार कर लेना ही उसका ज़बीहा (ज़िबह हो जाना) है। एक और रिवायत में ये अलफ़ाज़ भी हैं कि अगर उसने खा लिया हो तो फिर उसे तू न खा, मुझे डर है कि कहीं उसने अपने खाने के लिये शिकार को न पकड़ा हो। यही दलील जमहूर की है और हक़ीक़त में इमाम शाफ़ई रह. का मज़हब भी यही है कि जब कुत्ता शिकार को खा ले तो वह बिल्कुल हराम हो जाता है, इसमें कोई तफ़सील नहीं जैसा कि हदीस में है, हाँ उलेमा की एक जमाअ़त का क़ौल यह भी है कि वह मुतलक़ हलाल है, उनकी दलीलें ये हैं- हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. फ़रमाते हैं कि तू खा सकता है अगरचे कुत्ते ने तिहाई हिस्सा खा लिया हो। हज़रत सईद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगरचे एक टुकड़ा ही बाक़ी रह गया हो, फिर भी खा सकते हो। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. फ़रमाते हैं अगरचे दो तिहाईयाँ कुत्ता खा गया हो, फिर भी तू खा सकता है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का भी यही फ़रमान है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जब बिस्मिल्लाह कहकर तूने अपने सधाये हुए कुत्ते को शिकार पर छोड़ा हो तो जिस जानवर को उसने तेरे लिये पकड़ रखा है तू उसे खा ले, कुत्ते ने उसमें से खाया हो या न खाया हो। यही रिवायत है हज़रत अ़ली और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से। हज़रत अ़ता और हज़रत हसन बसरी रह. से इसमें मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) अक़वाल मन्क़ूल हैं। इमाम ज़ोहरी, रबीआ़ और मालिक से भी यही रिवायत की गई है, यही

Maktaba E Ashraf

इमाम शाफ़ई रह. का पहला क़ौल है और नये क़ौल में भी इसी की तरफ़ इशारा किया है।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. से इब्ने जरीर की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जब कोई शख़्स अपने कुत्ते को शिकार पर छोड़े फिर शिकार को इस हालत में पाये कि कुत्ते ने उसे खा लिया हो तो जो बाक़ी हो उसे वह खा सकता है। इस हदीस की सनद में बक़ौल इब्ने जरीर कुछ इश्काल हैं और सईद रावी का हज़रत सलमान रज़ि. से सुनना मालूम नहीं हुआ। और दूसरे मोतबर रावी इसे मरफ़ूअ़ नहीं करते, बल्कि हज़रत सलमान रज़ि. का क़ौल नक़ल करते हैं। यह क़ौल तो सही है लेकिन इसके मायने की दूसरी और मरफ़ूअ़ हदीसें भी हैं।

अबू दाऊद में है कि हज़रत अ़मर बिन शुऐब अपने बाप से, वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि एक देहाती अबू सालबा ने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा कि हुज़ूर! मेरे पास शिकारी कुत्ते सधाये हुए हैं, उनके शिकार के बारे में क्या फ़तवा है? आपने फ़रमाया जो जानवर तेरे लिये पकड़ें वह तुझ पर हलाल है। उसने कहा ज़िबह कर सकूँ जब भी और ज़िबह न कर सकूँ तो भी? और अगरचे कुत्ते ने खा लिया हो तो भी? आपने फ़रमाया हाँ अगरचे खा भी लिया हो। उन्होंने दूसरा सवाल किया कि मैं अपने तीर कमान से जो शिकार करूँ उसका क्या फ़तवा है? फ़रमाया उसे भी तू खा सकता है। पूछा अगर ज़िन्दा मिले और मैं उसे ज़िबह कर सकूँ तो भी और तीर लगते ही मर जाये तब भी? फ़रमाया बल्कि अगरचे वह तुझे नज़र न पड़े और ढूँढने से मिल जाये तो भी। बशर्तेकि उसमें किसी दूसरे शख़्स के तीर का निशान न हो। उन्होंने तीसरा सवाल किया कि ज़रूरत के वक़्त मजूसियों (आग को पूजने वालों) के बरतनों का इस्तेमाल करना कैसा है? फ़रमाया तुम उन्हें धो लो, फिर उनमें खा पी सकते हो। यह हदीस नसाई में भी है। अबू दाऊद की दूसरी हदीस में है कि जब तूने अपने कुत्ते को अल्लाह का नाम लेकर छोड़ा हो तो तू उसके शिकार को खा सकता है अगरचे उसने उसमें से खा भी लिया हो। और तेरा हाथ जिस शिकार को तेरे लिये लाया हो उसे भी तू खा सकता है। इन दोनों हदीसों की सनदें बहुत ही आला और उम्दा हैं।

एक और हदीस में है कि तेरा सधाया हुआ कुत्ता जो शिकार तेरे लिये खेले तू उसे खा ले। हज़रत अ़दी रज़ि. ने पूछा अगरचे उसने उसमें से खा लिया हो? फ़रमाया हाँ फिर भी। इन आसार व अहादीस से साबित होता है कि शिकारी कुत्ते ने शिकार को अगरचे खा लिया हो फिर भी बक़िया शिकार शिकारी खा सकता है। कुत्ते वग़ैरह के खाये हुए शिकार को हराम न कहने वालों के ये दलाईल हैं।

और एक जमाअ़त इन दोनों जमाअ़तों के बीच की है, वह कहती है कि अगर शिकार पकड़ते ही खाने बैठ गया तो शिकार का बचा हुआ हराम, और अगर शिकार पकड़कर अपने मालिक का इन्तिज़ार किया और बावजूद अच्छी-ख़ासी देर गुज़र जाने के अपने मालिक को न पाया और भूख की वजह से उसे खा लिया तो बक़िया हलाल। पहली बात पर महमूल है हज़रत अ़दी वाली हदीस, और दूसरी पर महमूल है अबू सालबा वाली हदीस। यह फ़र्क़ भी बहुत अच्छा है, और इससे दो सही हदीसें जमा हो जाती हैं। उस्ताद अबुल-मआ़ली जवेनी रह. ने अपनी किताब 'निहाया' में यह तमन्ना ज़ाहिर की थी कि काश कोई इसमें यह तफ़सील करे तो अल्हम्दु लिल्लाह यह तफ़सील लोगों ने कर ली।

इस मसले में एक चौथा क़ौल भी है, वह यह कि कुत्ते का खा लिया हुआ शिकार हराम है, जैसा कि हज़रत अ़दी रज़ि. की हदीस में है, और शकरे वग़ैरह का खाया हुआ शिकार हराम नहीं, इसलिये कि वह तो खाने से ही तालीम क़बूल करता है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं अगर परिन्द अपने मालिक के पास लौट आये और मारे नहीं लेकिन वह पर नोचे और गोश्त खाये तो वह खा ले। इब्राहीम नख़ई, शअ़बी, हम्माद

बिन सुलैमान यही कहते हैं। उनकी दलील इब्ने अबी हातिम की यह रिवायत है कि हज़रत अदी ने रसूले खुदा सल्ल. से पूछा कि हम लोग कुत्तों और बाज़ से शिकार खेला करते हैं, तो हमारे लिये क्या हलाल है? आपने फ़रमाया जो शिकारी जानवर शिकार हासिल करने वाले सधाये हुए तुम्हारे लिये शिकार रोक रखें, और तुमने उन पर अल्लाह का नाम ज़िक्र किया हो तो उसे तुम खा लो। फिर फ़रमाया जिस कुत्ते को तूने अल्लाह का नाम लेकर छोड़ा हो वह जिस जानवर को रोक रखे तू उसे खा ले। मैंने कहा अगरचे उसे मार डाला हो? फ़रमाया अगरचे उसे मार डाला हो, लेकिन शर्त यह है कि खाया न हो। मैंने कहा अगर उस कुत्ते के साथ दूसरे कुत्ते भी मिल गए हों तो? फ़रमाया फिर न खा, जब तक तुझे इस बात का पूरा इत्मीनान न हो कि तेरे ही कुत्ते ने शिकार किया है। मैंने कहा हम लोग तीर से शिकार किया करते हैं, उसमें कौनसा हलाल है? फ़रमाया जो तीर ज़ख़्मी करे और तूने खुदा का नाम लेकर छोड़ा हो, उसे खा ले। दलालत की वजह यह है कि कुत्ते में न खाने की शर्त आपने बतलाई और बाज़ में नहीं बतलाई। पस इन दोनों में फ़र्क़ साबित हो गया। वल्लाहु आलम

अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त फ़रमाता है कि तुम खा लो जिन हलाल जानवरों को तुम्हारे ये शिकारी जानवर पकड़ लें और तुमने उनको छोड़ने के वक़्त अल्लाह का नाम याद कर लिया हो। जैसा कि हज़रत अदी रज़ि. और हज़रत अबू सालबा रज़ि. की हदीस में है। इसी लिये हज़रत इमाम अहमद वग़ैरह इमामों ने यह शर्त ज़रूरी बतलाई है कि शिकार के लिये जानवर को छोड़ते वक़्त और तीर चलाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना शर्त है, जमहूर का मशहूर मज़हब भी यही है कि इस आयत और इससे मुराद जानवर के छोड़ने का वक़्त है। इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि अपने शिकारी जानवर को भेजते वक़्त बिस्मिल्लाह कह ले। हाँ अगर भूल जाये तो कोई हर्ज नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि मुराद खाने के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना है जैसा कि सहीहैन में उमर बिन अबू सलमा के रबीबा को हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान नक़ल किया गया है कि अल्लाह का नाम ले और अपने दाहिने हाथ से अपने सामने से खा। सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से पूछा- लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं, वे हैं नौ मुस्लिम, इसका इल्म नहीं होता कि उन्होंने अल्लाह का नाम लिया भी है या नहीं, तो क्या हम उसे खा लें? आपने फ़रमाया तुम खुद खुदा का नाम ले लो और खा लो।

मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल. छह सहाबा के साथ खाना खा रहे थे कि एक देहाती ने आकर दो लुक़्मे उसमें से उठाये, आपने फ़रमाया यह बिस्मिल्लाह कह लेता तो यह खाना तुम सबको काफ़ी हो जाता। तुम में से जब कोई खाने बैठे तो बिस्मिल्लाह पढ़ लिया करे, अगर शुरू में भूल गया तो जब याद आ जाये कह दे "बिस्मिल्लाहि अव्व-लहू व आख़ि-रहू" यही हदीस मुन्क़ते सनद के साथ इब्ने माजा में भी है। दूसरी सनद से यह हदीस अबू दाऊद ,तिर्मिज़ी, नसाई और मुस्नद अहमद में है, और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सही बतलाते हैं। जाबिर इब्ने सबीह फ़रमाते हैं कि हज़रत मुसन्ना बिन अब्दुर्रहमान ख़ज़ाई के साथ मैंने वासित का सफ़र किया, उनकी आदत यह थी कि खाना शुरू करते वक़्त बिस्मिल्लाह कह लेते और आख़िरी लुक़्मे के वक़्त "बिस्मिल्लाहि अव्व-लहू व आख़ि-रहू" कह लिया करते थे, और मुझसे फ़रमाया कि ख़ालिद बिन उमैया बिन मख़्शा सहाबी का फ़रमान है कि शैतान उस शख़्स के साथ खाना खाता रहता है जिसने अल्लाह का नाम न लिया हो, जब खाने वाला अल्लाह का नाम याद करता है तो उसे कै हो जाती है और जितना उसने खाया है सब निकल जाता है। (मुस्नद अहमद वग़ैरह)

इसके रावी को इब्ने मईन और नसाई तो सिक़ा (मोतबर और भरोसेमन्द) बतलाते हैं लेकिन अबू फ़तह

Maktab E Ashraf

अज़्दी फ़रमाते हैं कि यह रावी इस क़ाबिल नहीं कि उनकी रिवायत पर एतिमाद किया जाये। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम नबी सल्ल. के साथ खाना खा रहे थे तो एक लड़की गिरती-पड़ती आई जैसे उसे कोई धक्के दे रहा हो और आते ही लुक़्मा उठाना चाहा। हुज़ूर सल्ल. ने उसका हाथ पकड़ लिया और एक देहाती भी इसी तरह आया और प्याले में हाथ डाला, आपने उसका भी हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया जब किसी खाने पर बिस्मिल्लाह न कही जाये तो शैतान उसे अपने लिये हलाल कर लेता है, वह पहले तो इस लड़की के साथ आया ताकि हमारा खाना खाये तो मैंने इसका हाथ थाम लिया, फिर वह इस देहाती के साथ आया तो मैंने इसका भी हाथ थाम लिया, उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि शैतान का हाथ इन दोनों के हाथ के साथ मेरे हाथ में है। (मुस्नद, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई)

मुस्लिम शरीफ़, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा में है कि जब इनसान अपने घर जाते हुए और खाना खाते हुए अल्लाह का नाम याद कर लिया करता है तो शैतान कहता है कि ऐ शैतानो! न तो तुम्हारे लिये यह रात गुज़ारने की जगह है न रात का खाना। और जब वह घर में जाते हुए और खाते हुए अल्लाह का नाम नहीं लेता तो वह पुकार कर कहता है कि तुमने रात गुज़ारने की और खाने की जगह पा ली। मुस्नद, अबू दाऊद और इब्ने माजा में है कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में शिकायत की कि हम खाते हैं और हमारा पेट नहीं भरता। आपने फ़रमाया शायद तुम अलग-अलग खाते होगे, खाना सब मिलकर खाओ और बिस्मिल्लाह कह लिया करो, उसमें ख़ुदा की तरफ़ से बरकत दी जायेगी।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ص وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ
لَّهُمْ ز وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ
وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ
اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ
عَمَلُهٗ ز وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ ع ٥

आज तुम्हारे लिए हलाल चीज़ें हलाल रखी गईं और जो लोग किताब दिये गये हैं उनका खाना (यानी ज़बीहा) तुमको हलाल है, और तुम्हारा खाना (यानी ज़बीहा) उनको हलाल है, और पारसा औरतें भी जो मुसलमान हों, और पारसा औरतें उन लोगों में से भी जो तुमसे पहले किताब दिये गये हैं जबकि तुम उनका मुआवज़ा दे दो, इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, न तो खुलेआम बदकारी करो न ख़ुफ़िया ताल्लुक़ात पैदा करो, और जो शख़्स ईमान के साथ कुफ़्र करेगा तो उस शख़्स का अमल ग़ारत हो जायेगा और वह आख़िरत में बिल्कुल घाटे में होगा। (5)

अहले किताब का ज़बीहा और उसका शरई हुक्म

हलाल व हराम के बयान के बाद बतौर ख़ुलासा फ़रमाया कि तमाम पाक चीज़ें हलाल हैं, फिर यहूद व ईसाईयों के ज़िबह किये हुए जानवरों की हिल्लत (हलाल होना) बयान फ़रमाई। हज़रत इब्ने अ़ब्बास, अबू उमामा, मुजाहिद, सईद बिन जुबैर, इक्रिमा, अ़ता, हसन मक्हूल, इब्राहीम नख़ई, सुद्दी, मुक़ातिल बिन हय्यान (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) ये सब यही कहते हैं कि तआम (खाने) से मुराद उनका अपने हाथ से ज़िबह किया

हुआ जानवर है, जिसका खाना मुसलमानों को हलाल है। उलेमा-ए-इस्लाम का इस पर इजमा (सहमति) है कि उनका ज़बीहा हमारे लिये हलाल है, क्योंकि वे भी ग़ैरुल्लाह के लिये ज़िबह करना नाजायज़ जानते हैं और ज़िबह के वक़्त अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम नहीं लेते, अगरचे अल्लाह की पाक ज़ात के बारे में उनके अक़ीदे पूरी तरह ग़लत और सरासर बातिल हैं, जिससे अल्लाह तआला बुलन्द व बाला और पाक है। सही हदीस में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि. का बयान है कि जंगे ख़ेबर में मुझे चर्बी की भरी हुई मश्क मिल गई, मैंने उसे क़ब्ज़े में किया और कहा इसमें से तो आज मैं किसी को भी हिस्सा न दूँगा, अब इधर-उधर निगाह दौड़ाई तो देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्ल. मेरे पास ही खड़े हुए मुस्कुरा रहे हैं। इस हदीस से यह भी दलील पकड़ी गयी है कि माले ग़नीमत में से खाने पीने की ज़रूरी चीज़ें तक़सीम से पहले भी ले लेनी जायज़ हैं, और यह इस्तिदलाल इस हदीस से साफ़ ज़ाहिर है। तीनों मज़हबों के फ़ुक़हा (दीन के उलेमा) ने इमाम मालिक के मानने वालों पर अपनी यह सनद पेश की है, और कहा है कि तुम जो यह कहते हो कि अहले किताब (यहूदी व ईसाईयों) का वही खाना हम पर हलाल है जो ख़ुद उनके यहाँ भी हलाल हो, यह ग़लत है। देखो चर्बी को यहूदी हराम जानते हैं लेकिन मुसलमान इसे ले रहा है। लेकिन यह एक व्यक्तिगत वाक़िआ है, साथ ही यह भी हो सकता है कि यह वह चर्बी हो जिसे ख़ुद यहूदी भी हलाल जानते थे, यानी पीठ की चर्बी, अंतड़ियों से लगी हुई चर्बी और हड्डी से मिली हुई चर्बी। इससे भी ज़्यादा वाज़ेह इशारा करने वाली तो वह रिवायत है जिसमें है कि ख़ेबर वालों ने सालिम भुनी हुई एक बकरी हुज़ूर सल्ल. को तोहफ़े में दी, जिसके शाने के गोश्त को उन्होंने ज़हर युक्त कर रखा था, क्योंकि उन्हें मालूम था कि हुज़ूर सल्ल. को शाने का गोश्त पसन्द है, चुनाँचे आपने उसका यही गोश्त लेकर मुँह में रखकर दाँतों से तोड़ा, तो फ़रमाने बारी से उस शाने ने कहा कि मुझमें ज़हर मिला हुआ है। आपने उसी वक़्त उसे थूक दिया और उसका असर आपके सामने के दाँतों वग़ैरह में रह भी गया।

आपके साथ हज़रत बशर बिन बरा बिन मारूर रज़ि. भी थे। जो उसी के असर से इन्तिक़ाल फ़रमा गये, जिनके क़िसास (बदले) में ज़हर मिलाने वाली औरत को भी क़त्ल किया गया, जिसका नाम ज़ैनब था। दलील हासिल होने की वजह यह है कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल. ने मय अपने साथियों के उस गोश्त के खाने का पुख़्ता इरादा कर लिया और यह न पूछा कि इसकी उस चर्बी को जिसको तुम हराम जानते हो, उसे निकाल भी डाला है या नहीं?

एक और हदीस में है कि एक यहूदी ने आपकी दावत में जौ की रोटी और पुरानी सूखी चर्बी पेश की थी, हज़रत मक्हूल रह. फ़रमाते हैं जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम न लिया जाये उसका खाना हराम करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर रहम फ़रमाकर इसे मन्सूख़ करके अहले किताब के ज़िबह किये हुए जानवर हलाल कर दिये। यह याद रहे कि अहले किताब का ज़बीहा हलाल होने से यह साबित नहीं होता कि जिस जानवर पर भी नामे ख़ुदा न लिया जाये वह हलाल हो? इसलिये कि वे अपने ज़बीहों पर ख़ुदा का नाम लेते थे, बल्कि वे जिस गोश्त को खाते थे उसे ज़बीहे पर मौक़ूफ़ न रखते थे बल्कि मुर्दा जानवर को भी खा लेते थे, बख़िलाफ़ उनके अ़लावा के, जैसे सामिरा और सायबा और इब्राहीम व शीस वग़ैरह पैग़म्बरों के दीन के दावेदार, जैसा कि उलेमा के दो क़ौलों में से एक क़ौल है, और अ़रब के ईसाई जैसे बनू तुग़लब, तनूख़, बहरा. जुज़ाम, लख़्म, आ़मिला और उन जैसे दूसरे, कि जमहूर के नज़दीक उनके हाथ का किया हुआ ज़बीहा नहीं खाया जायेगा। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़बीला बनू तुग़लब के हाथ का ज़िबह किया हुआ जानवर न खाओ इसलिये कि उन्होंने ईसाईयत में से सिवाय शराब पीने के और

कोई चीज़ नहीं ली। हाँ सईद बिन मुसैयब और हसन बनू तुग़लब के ईसाईयों के हाथों ज़िबह किये हुए जानवर खा लेने में कोई हर्ज नहीं जानते थे।

बाक़ी रहे मजूसी (आतिश-परस्त) तो उनसे अगरचे जिज़या (इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स) ले लिया गया है, क्योंकि उन्हें इस मसले में यहूद व ईसाईयों से मिला दिया गया है, और उनके हुक्म में रखा गया है लेकिन उनकी औरतों से निकाह करना और उनके ज़िबह किये हुए जानवर का खाना मना है, हाँ अबू सौर, इब्राहीम बिन ख़ालिद कलबी जो शाफ़ई और अहमद के साथियों में से थे, इसके ख़िलाफ़ हैं। जब उन्होंने यह कहा और लोगों में इसकी शोहरत हुई तो फ़ुक़हा (दीनी मसाईल के आ़लिमों) ने इस क़ौल की ज़बरदस्त तरदीद की, यहाँ तक कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने तो फ़रमाया कि अबू सौर इस मसले में अपने नाम की तरह ही है, यानी 'बैल का बाप'। मुम्किन है अबू सौर ने एक हदीस के उमूम (हुक्म में आ़म होने) को सामने रखकर यह मसला कहा हो, जिसमें है कि मजूसियों के साथ अहले किताब का तरीक़ा बरतो, लेकिन अव्वल तो यह रिवायत इन अलफ़ाज़ से साबित ही नहीं, दूसरे यह रिवायत मुर्सल है, अलबत्ता सही बुख़ारी शरीफ़ में सिर्फ़ इतना तो है कि हिज्र के मजूसियों से रसूलुल्लाह सल्ल. ने जिज़या लिया, इसके अ़लावा हम कहते हैं कि अबू सौर की पेश की हुई हदीस को अगर हम सही मान लें तो भी हम कह सकते हैं कि उसके उमूम से भी इस आयत की दलील से अहले किताब के सिवा और दीन वालों का ज़बीहा हमारे लिये हराम साबित होता है।

फिर फ़रमाता है कि तुम्हारा ज़बीहा (ज़िबह किया हुआ) उनके लिये हलाल है। यानी तुम उन्हें अपने ज़बीहे खिला सकते हो। यह इस बात की ख़बर नहीं कि उनके दीन में उनके लिये तुम्हारा ज़बीहा हलाल है, हाँ ज़्यादा से ज़्यादा इतना कहा जा सकता है कि यह ख़बर हो इस बात की कि उन्हें भी उनकी किताब में यह हुक्म दिया गया है कि जिस जानवर पर ज़िबह करते वक़्त ख़ुदा का नाम लिया गया हो उसे वे खा सकते हैं। चाहे ज़िबह करने वाला उन्हीं में से हो या उनके सिवा कोई और हो, लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर बात पहली ही है, यानी यह कि तुम्हें इजाज़त है कि उन्हें अपने ज़बीहे खिलाओ, जैसे उनके ज़िबह किये हुए जानवर तुम खा लेते हो। यह गोया अदल-बदल के तौर पर है, जिस तरह हुज़ूर सल्ल. ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ को अपने ख़ास कुर्ते में कफ़न दिया, जिसकी वजह बाज़ हज़रात ने यह बयान की है कि उसने आपके चाचा हज़रत अ़ब्बास रज़ि. को अपना कुर्ता दिया था जबकि वह मदीने में आये थे, तो आपने उसका बदला कर दिया। हाँ एक हदीस में है कि मोमिन के सिवा और किसी के पास उठना-बैठना न कर और अपना खाना सिवाय परहेज़गारों के और किसी को न खिला, इसे इस बदले के ख़िलाफ़ न समझना चाहिये। हो सकता है कि हदीस का यह हुक्म बतौर अच्छा और बेहतर होने के हो। वल्लाहु आलम

दाम्पत्य जीवन के अहकाम

फिर इरशाद होता है कि पाकदामन औ़रतों से निकाह करना तुम्हारे लिये हलाल कर दिया गया है। यह बतौर तम्हीद के है, इसी लिये इसके बाद ही फ़रमाया कि तुमसे पहले जिन्हें किताब दी गई है उनमें की पाकदामन औ़रतों से भी निकाह तुम्हें हलाल है। यह क़ौल भी है कि मुराद पारसा औ़रतों से आज़ाद औ़रतें हैं, यानी बाँदियाँ न हों। यह क़ौल हज़रत मुजाहिद रह. की तरफ़ मन्सूब है। हज़रत मुजाहिद रह. के अलफ़ाज़ ये हैं कि पाकदामन और पारसा औ़रतों से आज़ाद औ़रतें मुराद हैं, और जब यह है तो जहाँ इस क़ौल का वह मतलब लिया जा सकता है कि बाँदियाँ इससे ख़ारिज हैं, वहाँ यह मायने भी लिये जा सकते हैं

Muhammad Ashraf

कि पाकदामन और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करने वाली, जैसा कि उन ही से दूसरी रिवायत इन्हीं लफ़्ज़ों में मौजूद है। जमहूर भी यही कहते हैं और यही ज़्यादा ठीक है, ताकि ज़िम्मिया (वह ग़ैर-मुस्लिम औरत जो मुसलमान हुकूमत में रहती हो) होने के साथ ही ग़ैर-पारसा होना शामिल होकर बिल्कुल ही ख़राबी और फ़साद का सबब न बन जाये, और उसका शौहर सिर्फ़ फ़ुज़ूल भर्ती के तौर पर और बुरे पैमाने के तौर पर न हो जाये। पस ज़ाहिर में यही ठीक मालूम होता है कि 'मुह्सनात' से मुराद यहाँ पाकदामन और बदकारी से बचने वालियाँ ही ली जायें, जैसा कि दूसरी आयत में 'मुह्सनात' के साथ ही 'ग़ै-र मुसाफ़िहातिन व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दान' आया है (यानी न तो वे खुलेआम बदकारी करने वाली हों और न छुपे तौर पर किसी से सम्बंध रखती हों)।

उलेमा और मुफ़स्सिरीन का इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि क्या यह आयत हर पाकदामन किताबिया औरत को शामिल है, चाहे वह आज़ाद हो या बाँदी? इब्ने जरीर में पहले उलेमा की एक जमाअत से इसे नक़ल किया है, जो कहते हैं कि 'मुह्सनात' से मुराद पाकदामन है। एक क़ौल यह भी नक़ल किया गया है कि यहाँ मुराद अहले किताब से इस्राईली औरतें हैं। इमाम शाफ़ई रह. का यही मज़हब है। और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद ज़िम्मिया औरतें हैं, अलावा आज़ाद औरतों के, और दलील में यह आयत पेश की गयी है:

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ.....الخ.

यानी उनसे लड़ो जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं लाते।

चुनाँचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ईसाई औरतों से निकाह करना जायज़ नहीं जानते थे, और फ़रमाते थे कि इससे बड़ा शिर्क क्या होगा कि वह कहती हो कि उसका रब ईसा है, और जब ये मुश्रिक (अल्लाह के साथ शिर्क करने वाली) ठहरीं तो क़ुरआन का खुला हुक्म मौजूद है किः

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ..... الخ

यानी मुश्रिक औरतों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न लायें।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि जब मुश्रिक औरतों से निकाह न करने का हुक्म नाज़िल हुआ तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम उनसे रुक गये, यहाँ तक कि इसके बाद की आयत अहले किताब की पाकदामन औरतों से निकाह करने की रुख़्सत (छूट) की नाज़िल हुई, तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अहले किताब औरतों से निकाह किये। और सहाबा रज़ि. की एक जमाअ़त से ऐसे निकाह इसी आयत को दलील बनाकर साबित करते हैं, तो गोया पहले सूरः ब-क़रह की आयत की मनाही में यह दाख़िल थीं, लेकिन दूसरी आयत ने इन्हें मख़्सूस कर दिया। यह उस वक़्त है जबकि यह मान लिया जाये कि मनाही वाली आयत के हुक्म में ये भी दाख़िल थीं, वरना इन दोनों आयतों में कोई टकराव नहीं, इसलिये कि और भी बहुत सी आयतों में आ़म मुश्रिकों से उन्हें अलग बयान किया गया है, जैसा कि आयत "लम् यकुनिल्लज़ी-न क-फ़रू....' और 'क़ुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल् किता-ब वल् उम्मिय्यी-न....'।

फिर फ़रमाता है कि जब तुम उन्हें उनके मुक़र्ररा (निर्धारित) मेहर दे दो, वे अपने नफ़्स को बचाने वालियाँ हों और तुम उनके मेहर अदा करने वाले हो। हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, आ़मिर शअ़बी, इब्राहीम नख़ई और हसन बसरी का फ़तवा है कि जब किसी शख़्स ने किसी औरत से निकाह कर लिया और दुख़ूल (यानी उसके साथ हमबिस्तरी) से पहले उसने बदकारी की तो मियाँ-बीवी में जुदाई करा दी जायेगी, और जो मेहर शौहर ने औरत को दिया है उसे वापस दिलवा दिया जायेगा। (इब्ने जरीर)

MaktabE Ashraf

फिर फ़रमाता है कि तुम भी पाकदामन, आबरू वाले होओ और खुलेआ़म या छुपे तौर पर बदकार न बनो। पस औ़रतों में जिस तरह पाकदामन और आबरू वाली होने की शर्त लगाई थी मर्दों में भी यही शर्त लगाई। और साथ ही फ़रमाया कि वे खुले बदकार न हों कि इधर-उधर मुँह मारते फिरते हों, और न ऐसे हों कि ख़ास ताल्लुक़ से हरामकारी करते हों। सूरः निसा में भी इसी तरह का मज़मून गुज़र चुका है।

हज़रत इमाम अहमद रह. इसी तरफ़ गये हैं कि ज़ानिया (बदकार) औ़रतों से तौबा से पहले हरगिज़ किसी भले आदमी को निकाह करना जायज़ नहीं, और यही हुक्म उनके नज़दीक मर्दों का भी है, कि बदकार मर्दों का निकाह नेक और पारसा औ़रतों से भी नाजायज़ है, जब तक कि वे सच्ची तौबा न करें और इस घटिया और ज़लील काम से बाज़ न आ जायें। उनकी दलील एक हदीस भी है जिसमें है कि कोड़े लगाया हुआ ज़ानी अपने जैसे से ही निकाह कर सकता है। ख़लीफ़तुल-मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने एक बार फ़रमाया कि मैं इरादा कर रहा हूँ कि जो मुसलमान कोई बदकारी करे मैं उसे हरगिज़ किसी मुसलमान पाकदामन औ़रत से निकाह न करने दूँ। इस पर हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि. ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! शिर्क इससे बहुत बड़ा है, बावजूद इसके भी उसकी तौबा क़बूल हो जाती है। इस मसले को हम आयत 'अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानियतन् औ मुश्रि-कतन्' (यह आयत सूरः नूर की तीसरी आयत है जो अट्ठारहवें पारे में है) की तफ़सीर में पूरी तरह बयान करेंगे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

आयत के ख़ात्मे पर इरशाद होता है कि काफ़िरों के आमाल अकारत (बरबाद) हैं और वे आख़िरत में नुक़सान और घाटा उठाने वाले हैं।

يَآ يُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ
اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا
فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْعَلٰى
سَفَرٍ اَوْجَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ
لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا
صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ
اَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ
مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ को उठने लगो तो अपने चेहरों को धोओ और अपने हाथों को भी (धोओ) कोहनियों समेत, और अपने सरों पर हाथ फेरो और (धोओ) अपने पैरों को भी टख़्नों समेत, और अगर तुम नापाकी की हालत में हो तो (सारा बदन) पाक करो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र की हालत में हो, या तुममें से कोई शख़्स इस्तिन्जे से आया हो या तुमने बीवियों से नज़दीकी की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन से तयम्मुम (कर लिया) करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर हाथ फेर लिया करो इस (ज़मीन पर) से, अल्लाह तआ़ला को यह मन्ज़ूर नहीं कि तुमपर कोई तंगी डालें, लेकिन उसको (यानी अल्लाह तआ़ला को) यह मन्ज़ूर है कि तुमको पाक साफ़ रखे, और यह कि तुम पर अपना इनाम पूरा फ़रमाये ताकि तुम शुक्र अदा करो। (6)

Maktab E Ashraf

वुज़ू और उससे मुताल्लिक़ अहकाम

अक्सर मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने कहा है कि वुज़ू का हुक्म उस वक़्त है जबकि आदमी बेवुज़ू हो। एक जमाअ़त कहती है कि जब तुम खड़े हो, यानी नींद से जागो। इन दोनों क़ौल का मतलब तक़रीबन एक ही है। दूसरे कुछ हज़रात फ़रमाते हैं कि आयत तो आ़म है और अपने उमूम पर ही रहेगी, लेकिन जो बेवुज़ू हो उस पर वुज़ू करने का हुक्म वाजिब की हैसियत से है और जो वुज़ू से हो उस पर इस्तेहबाब के तौर पर है।

एक जमाअ़त का ख़्याल है कि इस्लाम के शुरू ज़माने में हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू करने का हुक्म था फिर यह मन्सूख़ हो गया। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू किया करते थे। मक्का की फ़तह के दिन आपने वुज़ू किया, जुराबों पर मसह किया और उसी एक वुज़ू से कई नमाज़ें अदा कीं। यह देखकर हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! आज आपने वह काम किया जो आज से पहले नहीं करते थे। आपने फ़रमाया मैंने भूलकर ऐसा नहीं किया बल्कि यह जान-बूझकर किया है। इब्ने माजा वग़ैरह में है कि हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. एक वुज़ू से कई नमाज़ें पढ़ा करते थे। हाँ पेशाब करें या वुज़ू टूट जाये तो फिर कर लिया करते और वुज़ू ही के बचे हुए पानी से जुराबों पर मसह कर लिया करते। यह देखकर हज़रत फ़ज़्ल बिन मुबश्शिर रह. ने सवाल किया कि क्या आप इसे अपनी राय कहते हैं? फ़रमाया नहीं बल्कि मैंने नबी सल्ल. को ऐसा ही करते देखा है। मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. को हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू करते देखकर चाहे वुज़ू टूटा हो या न टूटा हो, उनके साहिबज़ादे हज़रत उबैदुल्लाह रह. से सवाल किया गया कि इसकी क्या सनद है? फ़रमाया उनसे हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद बिन ख़त्ताब रह. ने कहा है, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला रह. ने जो फ़रिश्तों के गुस्ल दिये हुए के साहिबज़ादे थे, बयान किया है कि हुज़ूर सल्ल. को हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू करने का हुक्म दिया गया था, उस हालत में कि वुज़ू बाक़ी हो तो भी। लेकिन इसमें किसी क़द्र मशक़्क़त और परेशानी मालूम हुई तो वुज़ू के हुक्म के बदले मिस्वाक का हुक्म रखा गया, हाँ जब वुज़ू टूटे तो नमाज़ के लिये नया वुज़ू ज़रूरी है। इसे सामने रखकर हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. का ख़्याल है कि चूँकि उन्हें क़ुव्वत है, इसलिये वह हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू करते हैं, आख़िरी दम तक आपका यही हाल रहा। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु व अ़न वालिदिही।

इस रिवायत के एक रावी (बयान करने वाले) हज़रत मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. हैं। लेकिन चूँकि उन्होंने स्पष्ट तौर पर 'हद्दसना' (यानी हमसे हदीस बयान की) कहा है इसलिये किसी शक की गुंजाईश भी नहीं रही, हाँ इब्ने अ़साकिर की रिवायत में यह लफ़्ज़ नहीं। वल्लाहु आलम।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. के इस फ़ेल (अ़मल) और इसे हमेशा करने से यह साबित होता है कि यह मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) ज़रूर है, और यही मज़हब जमहूर का है। इब्ने जरीर में है कि ख़ुलफ़ा रज़ि. हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू कर लिया करते थे। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू हर नमाज़ के लिये वुज़ू करते और दलील में यह आयत तिलावत फ़रमा देते। एक बार आपने ज़ोहर की नमाज़ अदा की, फिर लोगों के मजमे में तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर पानी लाया गया और आपने मुँह धोया, हाथ धोये, फिर सर का मसह किया और पैर धोये, और फ़रमाया यह वुज़ू है उसका जो बेवुज़ू न हुआ हो। एक बार आपने हल्का सा वुज़ू करके भी यही फ़रमाया था। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से भी इसी तरह मरवी है। अबू दाऊद में

हज़रत सईद बिन मुसैयब रह. का क़ौल है कि वुज़ू टूटे बग़ैर वुज़ू करना इसराफ़ (हद से बढ़ना) और पानी का बिना ज़रूरत इस्तेमाल है। अव्वल तो सनद के एतिबार से यह क़ौल बहुत ग़रीब है, दूसरे यह कि मुराद इससे वह शख़्स है जो इसे वाजिब जानता हो। और सिर्फ़ मुस्तहब समझकर जो ऐसा करे वह तो एक तरह से हदीस पर अ़मल करने वाला है। बुख़ारी और सुनन वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्ल. हर नमाज़ के लिये नया वुज़ू करते थे। एक अन्सारी सहाबी ने हज़रत अनस रज़ि. से यह सुनकर कहा और आप लोग क्या करते थे? फ़रमाया एक वुज़ू से कई नमाज़ें पढ़ते थे, जब तक वुज़ू टूटे नहीं। इब्ने जरीर में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि जो शख़्स वुज़ू पर वुज़ू करे उसके लिये दस नेकियाँ लिखी जाती हैं। तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह रिवायत है और इमाम तिर्मिज़ी रह. ने इसे कमज़ोर कहा है।

एक जमाअ़त कहती है कि आयत से सिर्फ़ इतना ही मक़सूद है कि किसी और काम के वक़्त वुज़ू करना वाजिब नहीं, सिर्फ़ नमाज़ के लिये ही इसका वुजूब है। यह इसलिये कि हुज़ूर सल्ल. की सुन्नत यह थी कि वुज़ू टूटने पर कोई काम न करते थे जब तक कि वुज़ू न कर लें। इब्ने अबी हातिम वग़ैरह की एक ज़ईफ़ व ग़रीब रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. जब पेशाब का इरादा करते हम आपसे बोलते लेकिन आप जवाब न देते, हम सलामु अ़लैक करते फिर भी आप जवाब न देते, यहाँ तक कि यह आयत रुख़्सत की उतरी। अबू दाऊद में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल. पाख़ाने से निकले और खाना आपके सामने लाया गया तो हमने कहा अगर फ़रमायें तो वुज़ू का पानी हाज़िर करें? फ़रमाया वुज़ू का हुक्म तो मुझे सिर्फ़ नमाज़ के लिये खड़ा होने के वक़्त ही किया गया है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन बताते हैं। एक और रिवायत में है कि आपने फ़रमाया मुझे नमाज़ तो पढ़नी नहीं जो मैं वुज़ू करूँ। आयत के इन अलफ़ाज़ से कि जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो वुज़ू कर लिया करो, उलेमा-ए-किराम की एक जमाअ़त ने दलील पकड़ी है कि वुज़ू में नीयत वाजिब है।

(इमाम शाफ़ई रह. का यह मस्लक है, इमाम अबू हनीफ़ा रह. के नज़दीक वुज़ू में नीयत शर्त नहीं। **हिन्दी अनुवादक**)

मतलब कलामुल्लाह शरीफ़ का यह है कि नमाज़ के लिये वुज़ू कर लिया करो, जैसा कि अ़रब में कहा जाता है कि जब तू अमीर को देखे तो खड़ा हो जा, तो मतलब यह होता है कि अमीर के लिये खड़ा हो जा। सहीहैन की हदीस में है कि आमाल का दारोमदार नीयत पर है और हर शख़्स के लिये सिर्फ़ वही है जो वह नीयत करे, और मुँह धोने से पहले वुज़ू में बिस्मिल्लाह कहना मुस्तहब है क्योंकि एक पुख़्ता और सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- उस शख़्स का वुज़ू ही नहीं जो अपने वुज़ू पर बिस्मिल्लाह न कहे। यह भी याद रहे कि वुज़ू के पानी के बरतन में हाथ डालने से पहले उनका धो लेना मुस्तहब है, और जब सोकर उठा हो तब तो सख़्त ताकीद की गई है। सहीहैन में रसूले ख़ुदा सल्ल. का फ़रमान है कि तुममें से कोई नींद से जागकर बरतन में हाथ न डाले जब तक कि तीन मर्तबा धो न ले, उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ रात के वक़्त कहाँ रहे हों।

मुँह की सीमा फ़ुक़हा के नज़दीक लम्बाई में सर के बालों के उगने की जो उमूमन जगह है वहाँ से दाढ़ी की हड्डी और ठोड़ी तक है, और चौड़ाई में एक से दूसरे कान तक। इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि दोनों जानिब की पेशानी के उड़े हुए बालों की जगह सर के हुक्म में है या मुँह के? और दाढ़ी के लटके हुए बालों का धोना मुँह के धोने की फ़र्ज़ियत में दाख़िल है या नहीं? इसमें दो क़ौल हैं- एक तो यह कि उन पर पानी बहाना वाजिब है, इसलिये कि मुँह सामने करने के वक़्त उसका भी सामना होता है। एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक शख़्स को दाढ़ी ढाँपे हुए देखकर फ़रमाया इसे खोल दे, यह भी मुँह में दाख़िल

Maktab_E_Ashraf

है। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि अ़रब का मुहावरा भी यही है कि जब बच्चे के दाढ़ी निकलती है तो वे कहते हैं 'त-ल-अ़ वज्हुहू' यानी उसका चेहरा निकल आया।

पस मालूम होता है कि कलामे अ़रब में दाढ़ी मुँह के हुक्म में है और लफ़्ज़ 'वज्हुन्' (चेहरे) में दाख़िल है। दाढ़ी घनी और भरी हुई हो तो उसका ख़िलाल करना भी मुस्तहब है। हज़रत उस्मान रज़ि. के वुज़ू का ज़िक्र करते हुए रावी (हदीस बयान करने वाला) कहता है कि आपने मुँह धोते वक़्त तीन दफ़ा दाढ़ी का ख़िलाल किया, फिर फ़रमाया जिस तरह तुमने मुझे करते हुए देखा उसी तरह मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को करते देखा है। (तिर्मिज़ी वग़ैरह)

इस रिवायत को इमाम बुख़ारी रह. और इमाम तिर्मिज़ी रह. हसन बतलाते हैं। अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. वुज़ू करते वक़्त एक चुल्लू पानी लेकर अपनी ठोड़ी तले डालकर अपनी दाढ़ी मुबारक का ख़िलाल करते थे और फ़रमाते थे कि मुझे मेरे रब ने इसी तरह हुक्म फ़रमाया है। हज़रत इमाम बैहक़ी रह. फ़रमाते हैं कि दाढ़ी का ख़िलाल करना हज़रत अ़म्मार, हज़रत आ़यशा, हज़रत उम्मे सलमा और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से रिवायत है, और इसको छोड़ देने की गुंजाईश इब्ने उमर, हसन बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा और इब्राहीम नख़ई रह. और ताबिईन की एक जमाअ़त से नक़ल की गयी है।

हदीस की बड़ी किताबों में है कि हुज़ूर सल्ल. जब वुज़ू करने बैठते तो कुल्ली करते और नाक में पानी देते। इमामों का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि ये दोनों वुज़ू और ग़ुस्ल में वाजिब हैं या मुस्तहब? इमाम अहमद बिन हंबल रह. का मज़हब तो वुजूब का है, और इमाम शाफ़ई रह. और इमाम मालिक रह. मुस्तहब कहते हैं। उनकी दलील सुनन की वह हदीस है जिसमें जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ने वाले से हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमाना मौजूद है कि वुज़ू कर, जिस तरह अल्लाह ने तुझे हुक्म दिया है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. का मस्लक यह है कि ग़ुस्ल में वाजिब और वुज़ू में नहीं। एक रिवायत इमाम अहमद रह. से यह है कि नाक में पानी देना तो वाजिब और कुल्ली करना मुस्तहब। क्योंकि बुख़ारी व मुस्लिम में हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है जो वुज़ू करे वह नाक में पानी डाले। एक और रिवायत में है कि तुममें से जो वुज़ू करे वह अपने दोनों नथनों में पानी डाले और अच्छी तरह। मुस्नद अहमद और बुख़ारी में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. वुज़ू करने बैठे तो मुँह धोया, एक चुल्लू पानी लेकर कुल्ली की और नाक को साफ़ किया, फिर एक चुल्लू लेकर दाहिना हाथ धोया फिर एक चुल्लू लेकर बायाँ हाथ धोया, फिर अपने सर का मसह किया, फिर पानी का एक चुल्लू लेकर अपने दाहिने पाँव पर डालकर उसे धोया, फिर एक चुल्लू से बायाँ पाँव धोया फिर फ़रमाया मैंने ख़ुदा के पैग़म्बर सल्ल. को इसी तरह वुज़ू करते देखा है।

'इलल् मराफ़िक़ि' (कोहनियों तक) से मुराद 'मअ़ल् मराफ़िक़ि' (कोहनियों समेत) है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का एक और फ़रमान हैः

وَلَا تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا.

यानी यतीमों के मालों को अपने मालों समेत न खा जाया करो, यह बड़ा ही गुनाह है।

इसी तरह यहाँ भी है। तो हाथों को कोहनियों तक नहीं बल्कि कोहनियों समेत धोना चाहिये। दारे क़ुतनी वग़ैरह में है कि हुज़ूर सल्ल. वुज़ू करते हुए अपनी कोहनियों पर पानी बहाते थे, लेकिन इसके दो रावियों में कलाम है, वल्लाहु आलम। वुज़ू करने वाले के लिये मुस्तहब है कि कोहनियों से आगे अपने शाने को वुज़ू में धोये क्योंकि बुख़ारी व मुस्लिम में हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरी उम्मत वुज़ू के निशानों की वजह से क़ियामत में चमकते अंगों से आयेगी, पस तुम में से जिससे हो सके वह अपनी चमक

को दूर तक ले जाये। सही मुस्लिम में है कि मोमिन को वहाँ तक ज़ेवर पहनाये जायेंगे जहाँ तक उसके वुज़ू का पानी पहुँचा था।

'बिरुऊसिकुम्' में जो "ब" है उसका 'इलसाक़' यानी मिला देने के मायने में होना तो ज़ाहिर है, और 'तबईज़' यानी कुछ हिस्से के लिये होना ग़ौर-तलब है। बाज़ उसूली हज़रात फ़रमाते हैं कि चूँकि आयत में इजमाल है (यानी स्पष्ट हुक्म नहीं है) इसलिये हदीस ने जो इसकी तफ़सील की है वही मोतबर है, और उसी पर अ़मल करना मुनासिब है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आ़सिम सहाबी रज़ि. से एक शख़्स ने कहा आप वुज़ू करके हमें बतलाईये। आपने पानी मंगवाया और अपने दोनों हाथ दो-दो बार धोये, फिर तीन बार कुल्ली की और नाक में पानी दिया, तीन ही दफ़ा अपना मुँह धोया, फिर कोहनियों समेत अपने दोनों हाथ दो बार धोये, फिर दोनों हाथ से सर का मसह किया, सर के शुरू के हिस्से से गुद्दी तक ले गये फिर वहाँ से यहीं तक वापस लाये, फिर अपने दोनों पैर धोये। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अ़ली रज़ि. से भी नबी करीम सल्ल. के वुज़ू का तरीक़ा इसी तरह नक़ल किया गया है। अबू दाऊद में हज़रत मुआ़विया और हज़रत मिक़्दाद रज़ि. से भी इसी तरह रिवायत है। ये हदीसें दलील हैं इस पर कि पूरे सर का मसह फ़र्ज़ है। यही मज़हब इमाम मालिक और हज़रत इमाम अहमद रह. का है, और यही मज़हब उन तमाम हज़रात का है जो आयत को मुजमल (ग़ैर-तफ़सीली) मानते हैं और हदीस को इसका बयान जानते हैं। हनफ़ियों का ख़्याल है कि चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है, जो सर का इब्तिदाई (शुरू का) हिस्सा है, और हमारे साथी कहते हैं कि फ़र्ज़ सिर्फ़ इतना है जितने पर मसह का इतलाक़ (हुक्म जारी) हो जाये। इसकी कोई हद नहीं। सर के चन्द बालों पर भी मसह हो गया तो फ़र्ज़ियत पूरी हो गई। इन दोनों जमाअ़तों की दलील हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि. वाली हदीस है कि नबी सल्ल. पीछे रह गये और मैं भी आपके साथ पीछे रह गया, जब आप क़ज़ा-ए-हाजत (पाख़ाने की ज़रूरत पूरी) कर चुके तो मुझसे पानी तलब किया, मैं लोटा ले आया। आने अपने दोनों पहुँचे धोये फिर मुँह धोया, फिर कलाईयों पर से कपड़ा हटाया और पेशानी से मिले हुए बालों और पगड़ी पर मसह किया और दोनों जुराबों पर भी। (मुस्लिम वग़ैरह)

इसका जवाब इमाम अहमद और उनके साथी यह देते हैं कि सर के शुरू के हिस्से पर मसह करके बाक़ी पगड़ी पर पूरा कर लिया जाये और इसकी बहुत सी मिसालें हदीसों में हैं कि आप साफ़े पर और जुराबों पर बराबर मसह किया करते थे। पस यही बेहतर है और इसमें हरगिज़ इस बात पर कोई दलालत नहीं कि सर के कुछ हिस्से पर या सिर्फ़ पेशानी के बालों पर ही मसह करे और इसकी तकमील पगड़ी पर हो, वल्लाहु आलम।

फिर इसमें भी इख़्तिलाफ़ (राय अलग-अलग) हैं कि सर का मसह भी तीन बार हो या एक ही बार? इमाम शाफ़ई रह. का मज़हब पहला है और इमाम अहमद रह. और उनके पैरोकारों का दूसरा। दलाईल ये हैं- हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. वुज़ू करने बैठते हैं और अपने दोनों हाथों पर तीन बार पानी डालते हैं और उन्हें धोकर फिर कुल्ली करते हैं और नाक में पानी डालते हैं, फिर तीन मर्तबा मुँह धोते हैं, फिर तीन-तीन बार दोनों हाथ कोहनियों समेत धोते हैं, पहले दायाँ हाथ फिर बायाँ। फिर अपने सर का मसह करते हैं, फिर दोनों पैर तीन मर्तबा धोते हैं, पहले दायाँ फिर बायाँ। फिर आपने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को इसी तरह वुज़ू करते देखा, और वुज़ू के बाद आपने फ़रमाया जो शख़्स मेरे इस वुज़ू जैसा वुज़ू करे फिर दो रक्अ़त नमाज़ अदा करे जिसमें दिल से बातें न करे तो उसके तमाम पहले गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सुनने अबी दाऊद में इसी रिवायत में सर के मसह करने के साथ ही ये लफ़्ज़ भी हैं कि सर का मसह एक मर्तबा किया। हज़रत अ़ली रज़ि. से भी इसी तरह रिवायत है। और जिन लोगों ने सर के मसह को भी तीन बार कहा है उन्होंने उस हदीस से दलील ली है जिसमें है कि हुज़ूर सल्ल. ने तीन-तीन बार वुज़ू के हिस्सों और अंगों को धोया। हज़रत उस्मान रज़ि. से रिवायत है कि आपने वुज़ू किया। फिर इसी तरह रिवायत है कि उसमें कुल्ली करने और नाक में पानी देने का ज़िक्र नहीं, और उसमें है कि फिर आपने तीन मर्तबा सर का मसह किया और तीन मर्तबा अपने दोनों पैर धोये, फिर फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्ल. को इसी तरह करते देखा और आपने फ़रमाया जो ऐसा वुज़ू करे उसे काफ़ी है। लेकिन हज़रत उस्मान रज़ि. से जो हदीसें सिहाह (हदीस की बड़ी किताबों) में हैं उनसे तो सर का मसह एक बार ही साबित होता है।

'अरूजु-लकुम्' (और अपने पैरों को) की भी आयत के पहले टुकड़ों ''चेहरे और हाथ' के हुक्म में है न कि 'सर' के हुक्म में (यानी पैरों को धोया जायेगा, उन पर मसह नहीं किया जायेगा)। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यूँ ही पढ़ते थे और यही फ़रमाते थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत उर्वा, हज़रत अ़ता, हज़रत इक्रिमा, हज़रत हसन, हज़रत मुजाहिद, हज़रत इब्राहीम, हज़रत ज़ह्हाक, हज़रत सुद्दी, हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान, हज़रत ज़ोहरी, हज़रत इब्राहीम तैमी रह. वग़ैरह का यही क़ौल है, और यही क़िराअत है, और यह बिल्कुल ज़ाहिर है कि पाँव को धोना चाहिये यही फ़रमान पहले तमाम उलेमा का है, और यहीं से जमहूर ने वुज़ू की तरतीब के वुजूब पर दलील पकड़ी है, सिर्फ़ अबू हनीफ़ा रह. इसके ख़िलाफ़ हैं, वह वुज़ू में तरतीब को शर्त नहीं जानते, उनके नज़दीक अगर कोई शख़्स पहले पैरों को धोये फिर सर का मसह करे, फिर हाथ धोये फिर मुँह धोये तब भी जायज़ है। इसलिये कि आयत ने इन आज़ा (बदन के अंगों) के धोने का हुक्म दिया है 'वाव' की दलालत तरतीब पर नहीं होती। इसके जवाब जमहूर ने कई एक दिये हैं। एक तो यह कि ''फ़'' तरतीब पर दलालत करती है, आयत के अलफ़ाज़ में नमाज़ पढ़ने वाले को मुँह धोने का हुक्म 'फ़ग़्सिलू' से होता है, तो कम से कम मुँह का पहले धोना तो लफ़्ज़ों से साबित हो गया, अब इसके बाद अंगों में तरतीब इजमा (उलेमा की सहमति) से साबित है, जिसमें मतभेद नज़र नहीं आता।

(हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी ने लिखा है कि 'इजमा' वाली बात सही नहीं। और ज़ाहिर बात है कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा, उनके असहाब और मानने वालों के इसमें शरीक न होने पर भी आ़म इजमा कैसे हो सकता है? रही तरतीब की बात तो हनफ़ियों के पास इसकी मुस्तक़िल दलीलें हैं। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

फिर जबकि ''फ़'' तो ताक़ीब (यानी किसी काम को बाद में करने) के लिये है, और जो तरतीब को चाहती है, एक पर दाख़िल हो चुकी तो इस एक की तरतीब मानते हुए दूसरे की तरतीब का इनकार कोई नहीं करता, बल्कि या तो सब की तरतीब के क़ायल हैं या किसी एक की भी तरतीब के क़ायल नहीं। पस यह आयत उन पर यक़ीनन हुज्जत है जो सिरे से तरतीब के मुन्किर हैं। दूसरा जवाब यह है कि 'वाव' तरतीब पर दलालत नहीं करता, इसे भी हम तस्लीम नहीं करते, बल्कि वह तरतीब पर दलालत करता है जैसा कि नहवियों की एक जमाअ़त का और बाज़ फ़ुक़हा का मज़हब है। फिर यह चीज़ भी क़ाबिले ग़ौर है कि अगर मान लें कि लुग़त के एतिबार से इसकी दलालत तरतीब पर न भी हो लेकिन शरअ़न् तो जिन चीज़ों में तरतीब हो सकती है उनमें इसकी दलालत तरतीब पर होती है। चुनाँचे सही मुस्लिम शरीफ़ में हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल. जब बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करके बाबे सफ़ा से निकले तो आप आयतः

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ.

की तिलावत कर रहे थे और फ़रमाया मैं उसी से शुरू करूँगा जिसे ख़ुदा ने पहले बयान फ़रमा दिया चुनाँचे 'सफ़ा' से सअ़ी शुरू की।

नसाई में रसूले ख़ुदा सल्ल. का यह हुक्म है कि उससे शुरू करो जिससे ख़ुदा तआ़ला ने शुरू किया है, इसकी सनद भी सही है और इसमें हुक्म भी है। पस मालूम हुआ कि जिसका ज़िक्र पहले हुआ उसे पहले करना और उसके बाद उसे जिसका ज़िक्र बाद में हो करना वाजिब है। पस साफ़ साबित हो गया कि ऐसे मौक़ों पर शरई तरतीब मुराद होती है। वल्लाहु आलम

तीसरी जमाअ़त जवाब में कहती है कि हाथों को कोहनियों समेत धोने के हुक्म और पैरों के धोने के हुक्म के बीच सर के मसह के हुक्म को बयान करना साफ़ दलील है इस बात की कि यहाँ तरतीब को बाक़ी रखना मुराद है, वरना कलाम की तरतीब को यूँ उलट-पलट न किया जाता। एक जवाब इसका यह भी है कि अबू दाऊद वग़ैरह में सही सनद से है कि हुज़ूर सल्ल. ने वुज़ू के अंगों को एक-एक बार धोकर वुज़ू किया, फिर फ़रमाया यह वुज़ू है कि जिसके बग़ैर अल्लाह तआ़ला नमाज़ को क़बूल नहीं फ़रमाता। अब दो सूरतें हैं या तो उस वुज़ू में तरतीब थी या न थी? अगर कहा जाये कि हुज़ूर सल्ल. का यह वुज़ू तरतीब से था यानी बाक़ायदा एक के पीछे एक उज़्व (बदन का हिस्से) को धोया था तो मालूम हुआ कि जिस वुज़ू में बदन के हिस्सों का धोना आगे-पीछे हो और सही तौर पर तरतीब न हो वह नमाज़ नामाक़ूल है, लिहाज़ा तरतीब वाजिब व फ़र्ज़ हुई। और अगर यह मान लिया जाये कि उस वुज़ू में तरतीब न थी बल्कि वुज़ू बिना तरतीब था, पैर धो लिये, फिर कुल्ली कर ली, फिर मसह कर लिया, फिर मुँह धो लिया वग़ैरह, तो तरतीब का न होना वाजिब हो जायेगा, हालाँकि इसका क़ायल उम्मत में से एक भी नहीं। पस साबित हो गया कि वुज़ू में तरतीब फ़र्ज़ है।

आयत के इस जुमले की एक क़िराअत और भी है 'व अरजुलिकुम' लाम के ज़ेर से। और इसी से शिया हज़रात ने अपने इस क़ौल की दलील ली है कि पैरों पर मसह करना वाजिब है, क्योंकि उनके नज़दीक इसका ताल्लुक़ और जोड़ सर के मसह करने पर है। बाज़ पहले उलेमा से भी कुछ ऐसे अक़वाल नक़ल किये गये हैं जिनसे मसह के क़ौल का वहम होता (यानी धोखा लगता) है। चुनाँचे इब्ने जरीर में है कि मूसा बिन अनस ने हज़रत अनस रज़ि. से लोगों की मौजूदगी में कहा कि हज्जाज ने अहवाज़ में ख़ुतबा देते हुए तहारत और वुज़ू के अहकाम में कहा कि मुँह हाथ धोओ और सर का मसह करो, और पैरों को धोया करो, उमूमन पैरों पर ही गन्दगी लगती है, पस तलवों को और पैरों की पुश्त को और ऐड़ी को ख़ूब अच्छी तरह धोया करो। हज़रत अनस रज़ि. ने जवाब में कहा कि अल्लाह सच्चा है और हज्जाज झूठा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلِكُمْ

(कि अपने सरों का मसह करो और अपने पैर)

और हज़रत अनस रज़ि. की आ़दत थी कि पैरों का जब मसह करते उन्हें बिल्कुल भिगोया करते। आप ही से रिवायत है कि क़ुरआने करीम में पैरों पर मसह करने का हुक्म है। हाँ हुज़ूर सल्ल. की सुन्नत पैरों का धोना है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि वुज़ू में दो चीज़ों का धोना है और दो पर मसह करना। हज़रत क़तादा रह. से भी यही रिवायत है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि आयत में पैरों पर मसह करने का बयान है। इब्ने उमर, इक्रिमा, अबू जाफ़र, मुहम्मद बिन अ़ली और एक रिवायत

Maktab E Ashraf

में हज़रत हसन और जाबिर बिन ज़ैद और एक रिवायत में मुजाहिद रह. से भी इसी तरह मन्क़ूल है। हज़रत इक्रिमा रह. अपने पैरों पर मसह कर लिया करते थे। शअबी रह. फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की मारिफ़त मसह का हुक्म नाज़िल हुआ है। आपसे यह भी रिवायत है कि क्या तुम देखते नहीं हो कि जिन चीज़ों के धोने का हुक्म था उन पर तो तयम्मुम के वक़्त मसह का हुक्म रहा और जिन चीज़ों के मसह का हुक्म था तयम्मुम के वक़्त उन्हें छोड़ दिया गया। आ़मिर रह. से किसी ने कहा कि लोग कहते हैं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम पैरों के धोने का हुक्म लाये हैं, आपने फ़रमाया जिब्राईल मसह के हुक्म के साथ नाज़िल हुए थे।

पस ये सब आसार (रिवायात और अक़्वाल) बिल्कुल ग़रीब हैं, और महमूल हैं इस बात पर कि मुराद मसह से उन बुज़ुर्गों की ज़्यादा मुबालग़े से न धोना है, क्योंकि सुन्नत से साफ़ साबित है कि पैरों का धोना वाजिब है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह. ने इसकी एक तौजीह यह भी बयान की है कि यह हुक्म उस वक़्त है जब पैरों पर जुराबें हों। बाज़ कहते हैं कि मुराद मसह से हल्का धो लेना है, जैसा कि बाज़ रिवायतों में सुन्नत से साबित है। ग़र्ज़ यह कि पैरों का धोना फ़र्ज़ है, जिसके बग़ैर वुज़ू न होगा। आयत में भी यही है और हदीसों में भी यही है। चुनाँचे अब हम उन्हें बयान करेंगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

बैहक़ी में है कि हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. ज़ोहर की नमाज़ के बाद मजलिस (बैठक) में बैठे रहे और अ़सर तक लोगों के काम-काज में मश्ग़ूल रहे। फिर पानी मंगवाया और एक चुल्लू से मुँह का और दोनों हाथों का और सर का और दोनों पैरों का मसह किया और खड़े होकर बचा हुआ पानी पी लिया। फिर फ़रमाया कि लोग खड़े-खड़े पानी पीने को मक्रूह कहते हैं और मैंने जो किया यही करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा है। और फ़रमाया यह वुज़ू है उसका जो बेवुज़ू न हुआ हो। (बुख़ारी)

शियों में से जिन लोगों ने पैरों का मसह इसी तरह क़रार दिया जिस तरह जुराबों पर मसह करते हैं, उन लोगों ने यक़ीनन ग़लती की और लोगों को गुमराही में डाला। इसी तरह वे लोग भी ख़ताकार हैं जो मसह को और धोने को जायज़ क़रार देते हैं, और जिन लोगों ने इमाम इब्ने जरीर के बारे में यह ख़्याल किया है कि उन्होंने हदीसों की बिना पर पैरों के धोने को और आयते क़ुरआनी की बिना पर पैरों के मसह को फ़र्ज़ क़रार दे दिया है। उनकी तहक़ीक़ भी सही नहीं। तफ़सीर इब्ने जरीर हमारे हाथों में मौजूद है। उनके कलाम का ख़ुलासा यह है कि पैरों को रगड़ना वाजिब है दूसरे अंगों में यह वाजिब नहीं, क्योंकि पैर ज़मीन की मिट्टी वग़ैरह से सनते रहते हैं, तो उनको धोना ज़रूरी है ताकि जो कुछ लगा हो हट जाये। लेकिन इस रगड़ने के लिये वह 'मसह' का लफ़्ज़ लाये हैं और इसी से बाज़ लोगों को शुब्हा सा हो गया है और वे यह समझ बैठे हैं कि मसह और धोने के दरमियान इस तरह जमा कर दी है, हालाँकि दर असल इसके कुछ मायने ही नहीं होते, मसह तो धोने में दाख़िल है चाहे पहले हो या बाद में हो, पस हक़ीक़त में इमाम साहिब का इरादा वही है जो मैंने ज़िक्र किया और इसको न समझ कर अक्सर फ़ुक़हा ने इसे मुश्किल जान लिया है। मैंने ग़ौर व फ़िक्र किया (यानी गहराई से सोचा) तो मुझ पर साफ़ तौर से यह स्पष्ट हो गया है कि इमाम साहिब दोनों क़िराअतों में जमा करना तलाश कर रहे हैं। पस ज़ेर की क़िराअत यानी मसह को तो वह महमूल करते हैं 'दल्क़' पर, यानी अच्छी तरह मल-रगड़कर साफ़ करने पर, और ज़बर की क़िराअत तो 'ग़ुस्ल' पर, यानी धोने और मलने को दोनों को वाजिब कहते हैं ताकि ज़ेर और ज़बर दोनों क़िराअतों पर एक साथ अ़मल हो जाये।

Maktab E Ashraf

अब उन हदीसों को सुनिये जिनमें पैरों के धोने के ज़रूरी होने का ज़िक्र है। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि., अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत मुआ़विया, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आ़सिम, हज़रत मिक़दाद बिन मादीकरब रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की रिवायतें पहले बयान हो चुकी हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने वुज़ू करते हुए अपने पैरों को धोया। एक बार या दो बार या तीन बार।

उमर बिन शुऐब की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने वुज़ू किया और अपने दोनों पैर धोये, फिर फ़रमाया यह वुज़ू है जिसके बग़ैर अल्लाह तआ़ला नमाज़ क़ुबूल नहीं फ़रमाता। सहीहैन में है कि एक बार सफ़र में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमसे पीछे रह गये थे, जब आप आये तो हम जल्दी-जल्दी वुज़ू कर रहे थे, क्योंकि अ़सर की नमाज़ का वक़्त काफ़ी देर से हो चुका था, हमने जल्दी-जल्दी अपने पैरों पर पानी बहाना शुरू कर दिया तो आपने बहुत बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया- वुज़ू कामिल और पूरा करो, ऐड़ियों की ख़राबी है आग लगने से। एक और हदीस में है कि ख़राबी है ऐड़ियों के लिये आग से। (बैहक़ी व हाकिम) एक और रिवायत में है कि टख़्नों को ख़राबी है आग से। (मुस्नद इमाम अहमद)

एक शख़्स के पैर में एक दिर्हम के बराबर जगह बेधुली देखकर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ख़राबी है ऐड़ियों के लिये आग से। (मुस्नद) इब्ने माजा वग़ैरह में है कि कुछ लोगों को वुज़ू करते हुए देखकर जिनकी ऐड़ियों पर अच्छी तरह पानी नहीं पहुँचा था, अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया इन ऐड़ियों को आग से ख़राबी होगी। मुस्नद अहमद में भी हुज़ूर सल्ल. के ये अलफ़ाज़ वारिद हैं। इब्ने जरीर में दो बार हुज़ूर सल्ल. का इन अलफ़ाज़ को कहना वारिद है, रावी हज़रत उमामा रज़ि. फ़रमाते हैं फिर तो मस्जिद में एक मुअ़ज़्ज़ज़ व शरीफ़ ऐसा न रहा जो अपनी ऐड़ियों को मोड़-मोड़कर न देखता हो (यानी सबने यह देखा कि उनकी ऐड़ी का कोई हिस्सा पानी से धुले बग़ैर न रह गया हो)। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक शख़्स को नमाज़ पढ़ते हुए देखा जिसकी ऐड़ी टख़्ने में बक़द्र एक दिर्हम के ख़ुश्की बाक़ी रह गई थी तो यही फ़रमाया, फिर तो यह हालत थी कि अगर ज़रा सी जगह पैर की किसी की ख़ुश्क रह जाती तो वह पूरा वुज़ू दोबारा करता। पस इन हदीसों से ज़ाहिर है कि पैरों का धोना फ़र्ज़ है। अगर उनका मसह फ़र्ज़ होता तो ज़रा सी जगह के ख़ुश्क रह जाने पर अल्लाह के नबी सल्ल. वईद (सज़ा की धमकी) से और वह भी जहन्नम की आग की धमकी से न डराते। इसलिये कि मसह में ज़रा सी जगह पर हाथ का पहुँचाना दाख़िल ही नहीं, बल्कि फिर तो पैर के मसह की वही सूरत है जो और चीज़ों के मसह की होती है, यही चीज़ इब्ने जरीर ने शियों के मुक़ाबले में पेश की है। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि एक शख़्स ने वुज़ू किया और उसका पैर किसी जगह से नाख़ुन के बराबर धुला नहीं, ख़ुश्क रह गया तो आपने फ़रमाया लौट जाओ और अच्छी तरह वुज़ू करो। बैहक़ी वग़ैरह में भी यह हदीस है।

मुस्नद अहमद में है कि एक नमाज़ी को आपने नमाज़ में देखा कि उसके पैर में एक दिर्हम के बराबर जगह ख़ुश्क रह गई है तो उसे वुज़ू लौटाने का हुक्म किया। हज़रत उस्मान रज़ि. से हुज़ूर सल्ल. के वुज़ू का जो तरीक़ा नक़ल किया गया है, उसमें यह भी है कि आपने उंगलियों के बीच ख़िलाल भी किया। सुनन में है कि हज़रत सबरा रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्ल. से वुज़ू के बारे में मालूम किया तो आपने फ़रमाया- वुज़ू कामिल और अच्छा करो, उंगलियों के दरमियान ख़िलाल करो और नाक में पानी अच्छी तरह दो, रोज़े की हालत में हो तो और बात है। मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि हज़रत अ़मर बिन अ़बसा रज़ि. कहते हैं या

रसूलल्लाह! मुझे वुज़ू के बारे में ख़बर दीजिये। आपने फ़रमाया जो शख़्स वुज़ू का पानी लेकर कुल्ली करता है और नाक में पानी देता है, उसके मुँह और नथनों से पानी के साथ ही ख़तायें झड़ जाती हैं, जबकि वह नाक झाड़ता है। फिर जब वह मुँह धोता है जैसा कि ख़ुदा का हुक्म है तो उसके मुँह की ख़तायें दाढ़ी और दाढ़ी के बालों के साथ पानी के गिरने के साथ ही झड़ जाती हैं, फिर वह अपने दोनों हाथ धोता है कोहनियों समेत तो उसके हाथों के गुनाह उसकी पोरियों की तरफ़ से झड़ जाते हैं, फिर वह मसह करता है तो उसके सर की ख़तायें उसके बालों के किनारों से पानी के साथ ही झड़ जाती हैं। फिर जब वह अपने पाँव टख़्नों समेत अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ धोता है तो उंगलियों से पानी टपकने के साथ-साथ उसके पैरों के गुनाह भी दूर हो जाते हैं। फिर वह खड़ा होकर अल्लाह तआ़ला के लायक़ जो तारीफ़ व हम्द है उसे बयान करके दो रक्अ़त नमाज़ जब अदा करता है तो वह अपने गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ हो जाता है जैसे आज ही वह पैदा हुआ हो।

यह सुनकर हज़रत अबू उमामा रज़ि. ने हज़रत अ़मर बिन अ़बसा रज़ि. से कहा ख़ूब ग़ौर कर लीजिये कि आप क्या फ़रमा रहे हैं? रसूलुल्लाह सल्ल. से आपने इसी तरह सुना है? क्या यह सब कुछ एक ही मक़ाम में इनसान हासिल कर लेता है? हज़रत अ़मर ने जवाब दिया कि ऐ अबू उमामा! मैं बूढ़ा हो गया हूँ मेरी हड्डियाँ ज़ईफ़ (कमज़ोर) हो चुकी हैं, मेरी मौत क़रीब आ पहुँची है। मुझे क्या फ़ायदा जो मैं अल्लाह के रसूल सल्ल. पर झूठ बोलूँ। एक दफ़ा नहीं दो दफ़ा नहीं तीन दफ़ा नहीं मैंने तो इसे हुज़ूर सल्ल. की ज़बानी सात बार बल्कि इससे भी ज़्यादा सुना है। इस हदीस की सनद बिल्कुल सही है।

सही मुस्लिम की दूसरी हदीस में है कि फिर वह अपने दोनों पाँव को धोता है, जैसा कि ख़ुदा ने उसे हुक्म दिया है, पस साफ़ साबित हुआ कि क़ुरआन का हुक्म पैरों के धोने का है। अबू इस्हाक़ सबीअ़ी ने हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से हज़रत हारिस के वास्ते से रिवायत की है कि आपने फ़रमाया दोनों पैर टख़्नों समेत धोओ जैसा कि तुमको हुक्म दिया गया है। इससे यह भी मालूम होता है कि जिस रिवायत में हज़रत अ़ली रज़ि. से नक़ल है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने दोनों पैर जूतियों में ही भिगो लिये, इससे मुराद जूतियों में ही बिला मुबालग़ा (यानी बहुत ज़्यादा एहतिमाम के बग़ैर) धोना है, चप्पल जूती पैर में होते हुए पैर धुल सकता है। ग़र्ज़ यह हदीस भी धोने की दलील है, अलबत्ता इसी से वहमी और जिन्हें बहुत ज़्यादा वस्वसे आते हैं उन लोगों का रद्द होता है जो हद से गुज़र जाते हैं।

इसी तरह की एक और हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक क़ौम के कूड़ी डालने की जगह पर खड़े होकर पेशाब किया, फिर पानी मंगवाकर वुज़ू किया और अपने जूतों पर मसह कर लिया, लेकिन यह हदीस दूसरी सनदों से नक़ल की गयी है, और उनमें है कि आपने अपनी जुराबों पर मसह किया। और उनमें इस तरह जमा (दोनों हदीसों में जोड़) भी हो सकती है (यानी उनमें जोड़ और मुवाफ़क़त की जा सकती है) कि जुराबें पैरों में थीं और उनपर जूते थे और दोनों पर आपने मसह कर लिया। यही मतलब इस हदीस का भी है। मुस्नद अहमद में ओस बिन अबू ओस रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने मेरे देखते हुए वुज़ू किया और अपने जूतों पर मसह किया और नमाज़ के लिये खड़े हो गये। यही रिवायत दूसरी सनद से है, उसमें आपका कूड़ी पर पेशाब करना, फिर वुज़ू करना और उसमें जूतों और दोनों क़दमों पर मसह करना मज़कूर है। इमाम इब्ने जरीर इसे लाये हैं। फिर फ़रमाया है कि यह महमूल है इस पर कि उस वक़्त आपका पहला वुज़ू था। भला कोई मुसलमान इसे क़बूल कर सकता है कि ख़ुदा के फ़रीज़े में और पैग़म्बर सल्ल. की सुन्नत में तआ़रुज़ (टकराव) हो? ख़ुदा कुछ फ़रमाये और पैग़म्बर कुछ और ही करें? पस हुज़ूर सल्ल. के हमेशा के

फ़ेल से वुज़ू में पैरों के धोने की फ़र्ज़ियत साबित है और आयत का सही मतलब भी यही है, जिसके कानों तक यह दलीलें पहुँच जायें उस पर ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गयी।

चूँकि 'ज़बर' की क़िराअत से पैरों का धोना और 'ज़ेर' की क़िराअत का भी उसी पर महमूल होना फ़र्ज़ियत का क़तई सुबूत है, इससे बाज़ पुराने उलेमा तो यह भी कह गये हैं कि इस आयत से जुराबों का मसह ही मन्सूख़ है। अगरचे एक रिवायत में हज़रत अ़ली रज़ि. से भी ऐसी रिवायत नक़ल की गयी है लेकिन उसकी सनद सही नहीं है, बल्कि ख़ुद आपसे इसके विपरीत सही रिवायत से साबित है, और जिनका भी यह क़ौल है उनका यह ख़्याल सही नहीं बल्कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम से इस आयत के नाज़िल होने के बाद भी जुराबों पर मसह करना साबित है।

मुस्नद अहमद में हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली रज़ि. का क़ौल है कि सूरः मायदा के नाज़िल होने के बाद ही मैं मुसलमान हुआ, और अपने इस्लाम के बाद मैंने पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. को जुराबों पर मसह करते देखा। सहीहैन में है कि हज़रत जरीर रज़ि. ने पेशाब किया, फिर वुज़ू करते हुए अपनी जुराबों पर मसह किया, उनसे पूछा गया कि आप ऐसा करते हैं? तो फ़रमाया हाँ यही करते हुए मैंने ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा है। हदीस के रावी हज़रत इब्राहीम रह. फ़रमाते हैं कि लोगों को यह हदीस बहुत अच्छी लगती थी। इसलिये कि हज़रत जरीर रह. का इस्लाम ही सूरः मायदा के नाज़िल हो चुकने के बाद का था। अहकाम की बड़ी-बड़ी किताबों में तवातुर के साथ हुज़ूर सल्ल. के क़ौल व फ़ेल से जुराबों पर मसह करना साबित है। अब मसह की मुद्दत है या नहीं? इसके ज़िक्र की यह जगह नहीं, अहकाम (मसाईल) की किताबों में इसकी तफ़सील मौजूद है।

राफ़ज़ियों (शियों) ने इसमें ख़िलाफ़ किया है और इसकी कोई दलील उनके पास नहीं, सिर्फ़ जहालत और गुमराही है। ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ि. की रिवायत से सही मुस्लिम में यह साबित है, लेकिन राफ़ज़ी लोग इसे नहीं मानते जैसा कि अ़ली रज़ि. की ही रिवायत से बुख़ारी व मुस्लिम में निकाहे मुता की मनाही साबित है। लेकिन फिर भी शिया लोग इसे मुबाह (जायज़) क़रार देते हैं।

ठीक इसी तरह यह आयते करीमा दोनों पैरों के धोने पर साफ़ दलालत करती है और यही बात हुज़ूर सल्ल. की मुतवातिर हदीसों से साबित है, लेकिन शिया जमाअ़त इसकी भी मुख़ालिफ़ है। हक़ीक़त में इन मसाईल में उनके हाथ दलील से बिल्कुल ख़ाली हैं। इसी तरह उन लोगों ने टख़्नों के बारे में भी आयत के और पहले बुज़ुर्गों के ख़िलाफ़ किया है। वे कहते हैं कि वह क़दम की पुश्त पर है। पस उनके नज़दीक हर क़दम में एक की कअ़ब (यानी टख़्ना) है और जमहूर के नज़दीक टख़्ने की हड्डियाँ जो पिन्डली और क़दम के बीच उभरी हुई हैं वे 'कअ़बैन' (टख़्ने) हैं। इमाम शाफ़ई रह. का फ़रमान है कि जिन 'कअ़बैन' (टख़्नों) का यहाँ ज़िक्र है यह टख़्ने की दो हड्डियाँ हैं, जो इधर-उधर दोनों तरफ़ किसी क़द्र ज़ाहिर हैं, एक ही क़दम में दो टख़्ने हैं। लोगों के उर्फ़ (आ़म बोल-चाल) में भी यही है, और हदीस की दलालत भी इसी पर है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत उस्मान रज़ि. ने वुज़ू करते हुए अपने दाहिने पाँव को 'कअ़बैन' (टख़्नों) समेत धोया, फिर बायें पाँव को भी। इसी तरह बुख़ारी में, सही इब्ने ख़ुज़ैमा में और सुनने अबी दाऊद में है कि हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर ख़ुदा के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया- अपनी सफ़ें ठीक-ठीक दुरुस्त कर लो, तीन बार यह फ़रमाकर फ़रमाया क़सम ख़ुदा की या तो तुम अपनी सफ़ों को पूरी तरह दुरुस्त कर लो वरना अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिलों में मुख़ालफ़त (फूट) डाल देगा। हज़रत नोमान बिन बशीर रह. हदीस के रावी फ़रमाते हैं फिर तो यह हाल हो गया कि हर शख़्स अपने साथी के टख़्ने से टख़्ने, घुटने

Maktab E Ashraf

से घुटने और मोंढे से मोढा मिला लिया करता था।

इस रिवायत से साफ़ मालूम हो गया कि 'कअ़बैन' उस हड्डी का नाम नहीं जो क़दम की पुश्त की तरफ़ है, क्योंकि उसका मिलाना दो पास-पास के शख़्सों में मुम्किन नहीं, बल्कि यह वही दो उभरी हुई हड्डियाँ हैं जो पिन्डली के अंत पर हैं और यही मज़हब अहले सुन्नत का है। इब्ने अबी हातिम में यहया बिन हारिस तैमी से मन्क़ूल है कि ज़ैद के जो शिया साथी क़त्ल किये गए थे उन्हें मैंने देखा तो उनका टख़्ना क़दम की पुश्त पर पाया, यह उन्हें क़ुदरती सज़ा थी जो उनकी मौत के बाद ज़ाहिर की गई और हक़ बात की मुख़ालफ़त और हक़ को छुपाने का बदला दिया गया।

इसके बाद तयम्मुम की सूरतें और तयम्मुम का तरीक़ा बयान हुआ है। इसकी पूरी तफ़सीर सूरः निसा में गुज़र चुकी है, लिहाज़ा यहाँ बयान नहीं की जाती। आयते तयम्मुम का शाने-नुज़ूल भी वहीं बयान कर दिया गया है। लेकिन हदीस में मुसलमानों के इमाम यानी इमाम बुख़ारी रह. ने इस आयत के मुताल्लिक़ एक हदीस ज़िक्र की है, उसे सुन लीजिये। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उम्मुल-मोमिनीन का बयान है कि मेरे गले का हार बैदा में गिर पड़ा, हम मदीने में दाख़िल होने वाले थे। हुज़ूर सल्ल. ने अपनी सवारी रोकी और मेरी गोद में सर रखकर सो गये, इतने में मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ मेरे पास तशरीफ़ लाये और मुझ पर बिगड़ने लगे कि हार खोकर लोगों को रोक दिया, और मुझे कचोके मारने लगे, जिससे मुझे तकलीफ़ हुई, लेकिन हुज़ूर सल्ल. की नींद में ख़लल न पड़े इस ख़्याल से मैं हिली नहीं। हुज़ूर सल्ल. जब जागे और सुबह की नमाज़ का वक़्त हो गया और पानी तलाश किया गया तो पानी न मिला, इस पर यह पूरी आयत नाज़िल हुई।

हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ि. कहने लगे आले अबू बक्र अल्लाह तआ़ला ने लोगों के लिये तुम्हें बरकत वाला बना दिया है। तुम उनके लिये सर से पैर तक बरकत हो। फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तुम पर हर्ज (किसी तरह की तंगी) डालना नहीं चाहता, इसलिये अपने दीन को सहल, आसान और हल्का कर रहा है, बोझल, सख़्त और मुश्किल नहीं बनाता। हुक्म तो उसका यह था कि पानी से वुज़ू करो, लेकिन जब मयस्सर न हो या बीमारी हो तो तुम्हें तयम्मुम करने की रुख़्सत (छूट और रियायत) अ़ता फ़रमाता है। बाक़ी अहकाम मसाईल की किताबों में मुलाहिज़ा हों। बल्कि ख़ुदा की ख़्वाहिश यह है कि तुम्हें पाक-साफ़ कर दे और तुम्हें पूरी-पूरी नेमतें अ़ता फ़रमाये, ताकि तुम उसकी रहमतों पर उसकी शुक्रगुज़ारी करो। अहकाम में उसकी छूट, नर्मी व रहमत, आसानी और रुख़्सत पर उसका एहसान मानो। वुज़ू के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल. ने एक दुआ़ तालीम फ़रमाई है जो गोया इस आयत के मातहत है।

मुस्नद अहमद, सुनन और सही मुस्लिम में हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि. से रिवायत है कि हम बारी बारी ऊँटों को चराया करते थे। मैं अपनी बारी वाली रात इशा के वक़्त चला तो देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खड़े हुए लोगों से कुछ फ़रमा रहे हैं। मैं जब वहाँ पहुँचा उस वक़्त आप से यह सुना कि जो मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू करके दिली तवज्जोह के साथ दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर ले उसके लिये जन्नत वाजिब है। मैंने कहा वाह-वाह यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मेरी यह बात सुनकर एक साहिब ने जो मेरे ही आगे बैठे थे फ़रमाया- इससे पहले जो बात हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमायी है वह इससे भी ज़्यादा बेहतर है। मैंने जो ग़ौर से देखा तो वह हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. थे। आप मुझसे फ़रमाने लगे तुम अभी आये हो, तुम्हारे आने से पहले हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि जो शख़्स बहुत अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर कहे "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू" उसके लिये जन्नत

के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं, जिसमें से चाहे दाख़िल हो।

एक और रिवायत में है कि जब ईमान व इस्लाम वाला वुज़ू करने बैठता है, उसके मुँह धोते हुए उसकी आँखों की तमाम ख़तायें पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरों के साथ झड़ जाती हैं। इसी तरह हाथों के धोने के वक़्त हाथों की तमाम ख़तायें और इसी तरह पैरों के धोने के वक़्त पाँव की तमाम ख़तायें धुलकर वह गुनाहों से बिल्कुल पाक साफ़ हो जाता है। इब्ने जरीर में है जो शख़्स वुज़ू करते हुए अपने हाथ या बाज़ुओं को धोता है उनसे उसके गुनाह दूर हो जाते हैं। मुँह को धोते वक़्त मुँह के गुनाह अलग हो जाते हैं, सर का मसह सर के गुनाहों को झाड़ देता है, पैरों का धोना उनके गुनाह धो देता है। दूसरी सनद में सर के मसह का ज़िक्र नहीं। इब्ने जरीर में है कि जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करके नमाज़ के लिये खड़ा होता है उसके कानों से, आँखों से, हाथों से, पाँव से सब गुनाह दूर कर दिये जाते हैं।

सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि वुज़ू आधा ईमान है, अल्हम्दु लिल्लाह कहने से नेकी का पलड़ा भारी हो जाता है, क़ुरआन या तो तेरी मुवाफ़क़त में दलील है या तेरे ख़िलाफ़ दलील है। हर शख़्स सुबह ही सुबह अपने नफ़्स की ख़रीद व फ़रोख़्त करता है, पस या तो अपने आपको आज़ाद करा लेता है या हलाक कर गुज़रता है। एक और हदीस में है कि हराम माल का सदक़ा अल्लाह क़बूल नहीं फ़रमाता, और बेवुज़ू की नमाज़ भी ग़ैर-मक़बूल है। (सही मुस्लिम)

यह रिवायत अबू दाऊद, तयालिसी, मुस्नद अहमद, नसाई और इब्ने माजा में भी है।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِیْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِیْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا یَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤی اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰی ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ○ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِیْمٌ ○ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

और तुम लोग अल्लाह तआ़ला के इनाम को जो तुम पर हुआ है याद करो और उसके उस अ़हद को भी जिसका तुमसे मुआ़हदा किया है, जबकि तुमने कहा था कि हमने सुना और मान लिया, और अल्लाह तआ़ला से डरो बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला दिलों तक की बातों की पूरी ख़बर रखते हैं। (7) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला के लिए पूरी पाबन्दी करने वाले, इन्साफ़ के साथ शहादत अदा करने वाले रहो, और किसी ख़ास क़ौम की दुश्मनी तुम्हारे लिए इसका सबब न हो जाए कि तुम अ़दल "यानी इन्साफ़" न करो। इन्साफ़ किया करो कि वह तक़वे "यानी परहेज़गारी" से ज़्यादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (8) अल्लाह तआ़ला ने ऐसे लोगों से जो ईमान ले आए और उन्होंने अच्छे काम किए वायदा किया है कि उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा सवाब है। (9) और जिन लोगों ने कुफ़्र

Maktab E Ashraf

الْجَحِيْمِ ٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ٥ ع	किया और हमारे अहकाम को झूठा ठहराया ऐसे लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं। (10) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला के इनाम को याद करो जो तुम पर हुआ है, जबकि एक क़ौम फ़िक्र में थी कि तुमपर हाथ डाल दें, सो अल्लाह तआ़ला ने तुमपर उनका क़ाबू न चलने दिया, और अल्लाह तआ़ला से डरो, और ईमान वालों को हक़ तआ़ला ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11)

अल्लाह की नेमत का शुक्र

इस अ़ज़ीम दीन और इस रसूले करीम को भेजकर जो एहसान ख़ुदा तआ़ला ने इस उम्मत पर किया है उसे याद दिला रहा है, और उस अ़हद पर मज़बूत रहने की हिदायत कर रहा है जो मुसलमानों ने ख़ुदा के पैग़म्बर की ताबेदारी और इमदाद करने, दीन पर क़ायम रहने, इसे क़बूल कर लेने, इसे दूसरों तक पहुँचाने का किया है। इस्लाम लाने के वक़्त इन्हीं चीज़ों का हर मोमिन अपनी बैअ़त में इक़रार करता था। चुनाँचे सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के अलफ़ाज़ हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बैअ़त की कि हम आपकी बात सुनेंगे और मानेंगे चाहे दिली रज़ामन्दी और ख़ुशी से या नागवारी से, चाहे दूसरों पर हमको तरजीह दी जाये और किसी लायक़ शख़्स से हम किसी काम को छीनेंगे नहीं। बारी तआ़ला का इरशाद है कि तुम क्यों ईमान नहीं लाते हालाँकि रसूल तुम्हें रब पर ईमान लाने की दावत दे रहे हैं, और उन्होंने तुमसे अ़हद भी लिया है अगर तुम्हें यक़ीन हो। यह भी कहा गया है कि इस आयत में यहूदियों को याद दिलाई जा रही है कि तुमसे हुज़ूर सल्ल. की ताबेदारी के क़ौल व क़रार हो चुके हैं, फिर आपके न मानने के क्या मायने? यह भी कहा गया है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ से उनकी तमाम औलाद को निकाल कर जो अ़हद ख़ुदा रब्बुल-इ़ज़्ज़त ने आदम की औलाद से लिया था उसे याद दिलाया जा रहा है, जो फ़रमाया था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सबने इक़रार किया था कि हाँ हम इस पर गवाह हैं। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है। यही सुद्दी और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है। और इमाम इब्ने जरीर ने भी इसी को मुख़्तार (पसन्दीदा) बतलाया है। हर हाल में इनसान को ख़ौफ़े ख़ुदा रखना चाहिये, दिलों और सीनों के भेद से वह वाक़िफ़ है। ऐ ईमान वालो! लोगों को दिखाने को नहीं बल्कि ख़ुदा की वजह से हक़ पर क़ायम हो जाओ और इन्साफ़ के साथ सही गवाह बन जाओ।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि. से रिवायत है कि मेरे बाप ने मुझे एक अ़तीया दे रखा था, मेरी माँ उमरा बिन्ते रवाहा ने कहा मैं तो उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं हूँगी जब तक कि तुम इस पर रसूलुल्लाह सल्ल. को गवाह न बना लो। मेरे बाप हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए, वाक़िआ़ बयान किया तो आपने दरियाफ़्त किया कि क्या अपनी दूसरी औलाद को भी ऐसा ही अ़तीया दिया है? जवाब दिया कि नहीं। आपने फ़रमाया कि अल्लाह से डरो, अपनी औलाद में इन्साफ़ और बराबरी किया करो, जाओ मैं किसी ज़ुल्म पर गवाह नहीं बनता। चुनाँचे मेरे बाप ने वह अ़तीया (दी हुई चीज़) लौटा लिया, फिर फ़रमाया देखो किसी की दुश्मनी और ज़िद में आकर अ़दल (इन्साफ़) से न हट जाना, दोस्त हो या

दुश्मन तुम्हें अ़दल व इन्साफ़ का साथ देना चाहिये, तक़्वे से ज़्यादा क़रीब यही है।

Maktab E Ashraf

एक वाक़िआ

फिर अपनी एक और नेमत याद दिलाता है जिसकी तफ़सील यह है, हज़रत जाबिर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. एक मन्ज़िल में उतरे, लोग इधर-उधर सायेदार दरख़्तों की तलाश में लग गये। आपने अपने हथियार उतारकर एक दरख़्त पर लगा दिये। एक देहाती ने आकर आपकी तलवार अपने हाथ में ले ली और उसे खींचकर नबी करीम सल्ल. के पास खड़ा हो गया, और कहने लगा कि अब बता मुझसे तुझे कौन बचा सकता है? आपने फ़ौरन जवाब दिया कि अल्लाह जल्ल शानुहू। उसने फिर यही सवाल किया, आपने फिर यही जवाब दिया। तीसरी बार के जवाब के साथ ही उसके हाथ से तलवार गिर पड़ी। अब आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को आवाज़ दी, वे आ गये तो आपने उनसे सारा क़िस्सा कह सुनाया। देहाती उस वक़्त भी मौजूद था, लेकिन आपने उससे कोई बदला नहीं लिया।

क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि कुछ लोगों ने धोखे से हुज़ूर सल्ल. को क़त्ल करना चाहा था और उन्होंने उस देहाती को घात में भेजा था, लेकिन ख़ुदा ने उसे नाकाम और नामुराद रखा। फ़ल्हम्दु लिल्लाह। उस देहाती का नाम सही हदीसों में ग़ोरस बिन हारिस आया है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि यहूदियों ने आपको और आपके सहाबा को क़त्ल के इरादे से ज़हर मिलाकर खाना पकाकर दावत कर दी लेकिन ख़ुदा तआ़ला ने आपको इल्म करा दिया और आप बच रहे। यह भी कहा गया है कि कअ़ब बिन अशरफ़ और उसके यहूदी साथियों ने अपने घर में बुलाकर आपको सदमा (तकलीफ़ और नुक़सान) पहुँचाना चाहा था। इब्ने इस्हाक़ वग़ैरह कहते हैं कि इससे मुराद बनू नज़ीर के वे लोग हैं जिन्होंने चक्की का पाट क़िले के ऊपर से आपके सर पर गिराना चाहा था, जबकि आप आ़मिरी लोगों की दियत (ख़ून के बदले में मुआ़वज़ा) लेने के लिये उनके पास गये थे, तो उन शरीरों ने अ़मर बिन जह्हाश बिन कअ़ब को इस बात पर आमादा कर लिया था कि हम तो मुहम्मद (सल्ल.) को नीचे खड़ा करके बातों में मशग़ूल कर लेंगे तू ऊपर से यह फेंककर आपका काम तमाम कर देना, लेकिन रास्ते ही में ख़ुदा तआ़ला ने अपने पैग़म्बर को उनकी शरारत व ख़बासत से आगाह कर दिया। आप मय अपने सहाबा के वहीं से लौट गये। इसी का ज़िक्र इस आयत में है। मोमिनों को अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा करना चाहिये, किफ़ायत करने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला वही है। इसके बाद हुज़ूर सल्ल. ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से बनू नज़ीर की तरफ़ मय लश्कर के गये, उनका घेराव किया, वे हारे और उन्हें जिला-वतन कर दिया (यानी वतन से निकाल दिया)।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَىْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّىْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِىْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ	और अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया था, और हमने उनमें से बारह सरदार मुक़र्रर किये, और अल्लाह तआ़ला ने (यूँ) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ की पाबन्दी रखोगे और ज़कात अदा करते रहोगे और मेरे सब रसूलों पर ईमान लाते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह को अच्छे तौर पर क़र्ज़ देते रहोगे, तो

Maktaba Ashraf

وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ
عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ
بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ
السَّبِيْلِ ○ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ
وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا
بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○ وَمِنَ الَّذِيْنَ
قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا
حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَ
سَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ○

मैं ज़रूर तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दूँगा और ज़रूर तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें जारी होंगी। और जो शख़्स इसके बाद भी कुफ़्र करेगा तो बेशक वह सही रास्ते से दूर जा पड़ा। (12) तो सिर्फ़ उनके अ़हद तोड़ने की वजह से हमने उनको अपनी रहमत से दूर कर दिया, और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया। वे लोग कलाम को उसके मौक़ों से बदलते हैं, और वे लोग जो कुछ उनको नसीहत की गई थी उसमें से एक बड़ा हिस्सा ज़ाया कर बैठे, और आपको आये दिन किसी न किसी (नई) ख़ियानत की इत्तिला होती रहती है जो उनसे सादिर होती है, सिवाय उनमें के गिने-चुने चन्द शख़्सों के, सो आप उनको माफ़ कीजिए और उनसे दरगुज़र कीजिए, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला अच्छा मामला करने वालों से मुहब्बत करता है। (13) और जो लोग कहते हैं कि हम ईसाई हैं, हमने उनसे भी उनका अ़हद लिया था, सो वे भी जो कुछ उनको नसीहत की गई उसमें से अपना एक बड़ा हिस्सा ज़ाया कर बैठे, तो हमने उनमें आपस में क़ियामत तक के लिए बुग़्ज़ और दुश्मनी डाल दी, और उनको अल्लाह तआ़ला उनका किया हुआ जतला देंगे। (14)

बनी इस्राईल से कुछ वादे

ऊपर की आयतों में अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को अ़हद व पैमान की वफ़ादारी का, हक़ पर क़ायम रहने का, इन्साफ़ के साथ गवाही देने का हुक्म दिया था, साथ ही अपनी ज़ाहिरी व बातिनी रहमतों को याद दिलाया था, तो अब इन आयतों में इनसे पहले के अहले किताब से अ़हद व पैमान जो लिया था उसकी हक़ीक़त को बयान फ़रमा रहा है। फिर जबकि उन्होंने ख़ुदा से किये हुए अ़हद व पैमान तोड़ डाले तो उनका क्या हश्र हुआ इसे बयान फ़रमाकर गोया मुसलमानों को अ़हद तोड़ने से रोकता है।

उनके (यानी बनी इस्राईल के) बारह सरदार थे, यानी बारह क़बीलों के चौधरी थे जो उनसे उनकी बैअ़त को पूरा कराते थे कि ये ख़ुदा रसूल के फ़रमान के ताबे रहें और किताबुल्लाह की इत्तिबा करते रहें। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब सरकशों (नाफ़रमानों) से लड़ने के लिये गये तब हर क़बीले में से एक-एक

सरदार चुनकर गये थे, ओबेल क़बीले का सरदार शामून बिन ज़कूर था और शमऊनियों का चौधरी शाफ़ात बिन जदी, और यहूदा का कालिब बिन यूफ़न्ना और फ़ीख़ाईल का इब्ने युसूफ़ और अफ़राईम का यूशा बिन नून और बिनयामीन क़बीले का चौधरी क़िबतमी बिन वफ़ून, और ज़बूलून का जदी बिन शूरी और मन्शा का जदी बिन मूसा और रिदान हमलासिल का इब्ने हमल और इशार का सातूर, तुफ़ताली का बजज़ और यसाख़ुरर का लाबिल। तौरात के चौथे हिस्से में बनी इस्राईल के क़बीलों के सरदारों के नाम मज़कूर हैं जो इन नामों से थोड़े अलग हैं। वल्लाहु आलम।

मौजूदा तौरात में ये नाम हैं- बनू ओबेल पर सूनी बिन सादून, बनी शमऊन पर शमवाल बिन सूर, बनी यहूदा पर हशू बिन अ़मयाज़ाब, बनी यसाख़िर पर शाल बिन साऊन, बनी ज़बूलून पर इलियाब बिन हालूब, बनू फ़राईम पर मन्शा बिन अ़मन्हूर, बनू मन्शा पर हमयाईल, बनू बिनयामीन पर अबीदन, बनू दान पर जईज़र, बनू अशार पर तहाईल, बनू कान पर सैफ़ बिन दअ़वाईल, बनू नफ़साली पर अज्ज़अ़।

यह याद रहे कि अ़क़्बा की रात में जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्सार से बैअ़त ली उस वक़्त उनके सरदार भी बारह ही थे, तीन क़बीला औस के- हज़रत उसैद बिन हज़ीर, हज़रत सईद बिन ख़ेसमा और हज़रत रिफ़ाअ़ा बिन अ़ब्दुल-मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। बाज़ रिवायतों में इनके बजाय हज़रत अबू हैसम बिन तीहान का नाम है, और नौ सरदार क़बीला ख़ज़्रज के थे- अबू उमामा, असद बिन ज़िरारा, सअ़द बिन रबीअ़, अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा, राफ़ेअ़ बिन मालिक बिन अ़जलान, बर इब्ने मअ़रूर, उबादा बिन सामित, सअ़द बिन उबादा, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर हराम, मुन्ज़र बिन उमर बिन ख़ुनैस रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। इन्हीं सरदारों ने अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ से पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनने और मानने की बैअ़त की।

हज़रत मसरूक़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि हम लोग अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास बैठे हुए थे, आप हमें उस वक़्त क़ुरआन पढ़ा रहे थे, एक शख़्स ने सवाल किया कि आप लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से यह भी पूछा है कि इस उम्मत के कितने ख़लीफ़ा होंगे? हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने फ़रमाया मैं जब से इराक़ से आया हूँ इस सवाल को सिवाय तेरे और किसी ने नहीं पूछा। हमने हुज़ूर सल्ल. से इस बारे में दरियाफ़्त किया था तो आपने फ़रमाया बारह होंगे, जितनी गिनती बनी इस्राईल के नक़ीबों (सरदारों) की थी। यह रिवायत सनद के एतिबार से ग़रीब है, लेकिन मज़मूने हदीस बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायतों से भी साबित है। जाबिर बिन समुरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, लोगों का काम चलता रहेगा जब तक उनके वाली बारह शख़्स न हो लें, फिर एक लफ़्ज़ हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया लेकिन मैं न सुन सका, तो मैंने दूसरों से पूछा कि हुज़ूर सल्ल. ने अब कौनसा लफ़्ज़ फ़रमाया है? उन्होंने जवाब दिया कि ये सब क़ुरैश होंगे। सही मुस्लिम में यही लफ़्ज़ हैं।

इस हदीस का मतलब यह है कि बारह ख़लीफ़ा सालेह नेकबख़्त होंगे जो हक़ को क़ायम करेंगे और लोगों में अ़दल (इन्साफ़) करेंगे। इससे यह साबित नहीं होता कि ये सब लगातार एक के बाद एक ही हों, बस चार ख़लीफ़ा तो लगातार हुए- हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम, जिनकी ख़िलाफ़त नुबुव्वत के तरीक़े पर रही। इन्हीं बारह में से पाँचवे हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. हैं। बनू अ़ब्बास में से भी बाज़ इसी तरह के ख़लीफ़ा हुए हैं और क़ियामत से पहले

Mahtab E Ashraf

पहले इन बारह की तादाद पूरी होनी ज़रूरी है।

इमाम मेहदी

और उन्हीं में से हज़रत इमाम मेहदी रहमतुल्लाहि अ़लैहि हैं, जिनकी ख़ुशख़बरी हदीसों में आ चुकी है। उनका नाम हुज़ूर सल्ल. के नाम पर होगा और उनके वालिद का नाम हुज़ूर सल्ल. के वालिद के नाम पर होगा, ज़मीन को अ़दल व इन्साफ़ से भर देंगे, हालाँकि उससे पहले वह ज़ुल्म व ज़्यादती से पुर होगी।

शियों का ग़लत अ़क़ीदा

लेकिन इससे शियों का इमामे मुन्तिज़र मुराद नहीं, उसकी तो दर असल कोई हक़ीक़त ही नहीं, न सिरे से उसका कोई वजूद है, बल्कि यह तो सिर्फ़ शियों का ग़लत अ़क़ीदा, अंधविश्वास और उनकी कोरी कल्पना है। न इस हदीस से शियों के फ़िर्क़े 'इसना अ़शरिया' के इमाम मुराद हैं। इस हदीस को उन इमामों पर महमूल करना भी शियों के फ़िर्क़े की मन-गढ़त बात है जो उनकी कम-अ़क़्ली और जहालत का करिश्मा है। तौरात में हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की बशारत (ख़ुशख़बरी) के साथ ही लिखा है कि उनकी नस्ल में बारह बड़े शख़्स होंगे, इससे मुराद भी यही मुसलमानों के बारह क़ुरैशी ख़लीफ़ा और सरदार हैं, लेकिन जो यहूदी मुसलमान हुए थे और था उनका इस्लाम नाक़िस और साथ ही वे जाहिल भी थे, उन्होंने शियों के कान में यह सूर फूँक दिया और वे समझ बैठे कि इससे मुराद उनके बारह इमाम हैं, वरना हदीसें साफ़ तौर पर इसके ख़िलाफ़ मौजूद हैं।

अब उस अ़हद व पैमान का ज़िक्र हो रहा है जो अल्लाह तआ़ला ने यहूदियों से लिया था कि वे नमाज़ें पढ़ते रहें, ज़कात देते रहें, ख़ुदा के रसूलों की तस्दीक़ करें, उनकी मदद और नुसरत करें और ख़ुदा की मर्ज़ी के कामों पर अपना माल ख़र्च करें। जब वे यह करेंगे तो ख़ुदा की मदद व नुसरत उनके साथ रहेगी। उनके गुनाह माफ़ होंगे और ये जन्नतों में दाख़िल किये जायेंगे। मक़सूद हासिल होगा और ख़ौफ़ दूर होगा। लेकिन अगर वे इस अ़हद व पैमान के बाद भी फिर गये और इसे छुपा लिया तो यक़ीनन वे हक़ से दूर हो जायेंगे, भटक और बहक जायेंगे। चुनाँचे यही हुआ कि उन्होंने मीसाक़ (अ़हद) तोड़ दिया, वादा ख़िलाफ़ी की, तो उन पर लानत नाज़िल हुई, हिदायत से दूर हो गये, दिल के सख़्त हो गये, वअ़ज़ व नसीहत से फ़ायदा न उठा सके, समझ बिगड़ गई, ख़ुदा की बातों में तावीलें (उल्टी-सीधी वुजूहात बयान) करने लगे और बातिल तावीलें गढ़ने लगे, जो असली मुराद थी उससे कलामुल्लाह को फेरकर और ही मतलब समझाने लगे और ख़ुदा का नाम लेकर वो-वो मसाईल बयान करने लगे जो ख़ुदा के बतलाये हुए न थे, यहाँ तक कि ख़ुदा की किताब उनके हाथों से छूट गई, वे उससे बेअ़मल ही नहीं बल्कि बेरग़बत हो गये (यानी अल्लाह की किताब से उन्हें कोई दिलचस्पी न रही)।

दीन की असल (बुनियाद और जड़) जब उनके हाथों से छूट गई फिर फ़रूअ़ी अ़मल कैसे क़बूल होते? अ़मल छूट जाने की वजह से न तो दिल ठीक रहे न फ़ितरत अच्छी रही, न ख़ुलूस व इख़्लास रहा, ग़द्दारी और मक्कारी को अपना शेवा (आ़दत और तरीक़ा) बना लिया, नये-नये जाल हुज़ूर सल्ल. और आपके सहाबा के ख़िलाफ़ बुनते रहे। फिर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म होता है कि आप उनसे चश्मपोशी कीजिये (यानी उनको अनदेखा कर दीजिये, उनकी तरफ़ ध्यान न दीजिये) यही मामला उनके साथ अच्छा है। जैसा कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. से रिवायत है कि जो तुझसे ख़ुदा के फ़रमान के ख़िलाफ़

Maktab E Ashraf

मामला करे तू उससे हुक्मे ख़ुदा को पूरा करने के साथ मामला कर। इसमें एक बड़ी मस्लेहत यह भी है कि मुम्किन है उनके दिल हक़ की तरफ़ माईल हो जायें, हिदायत नसीब हो जाये और हक़ की तरफ़ आ जायें। अल्लाह तआ़ला एहसान करने वालों को दोस्त रखता है, यानी दूसरों के बुरे सुलूक को अनदेखा करके ख़ुद नेक सुलूक रखने वाले ख़ुदा के महबूब और प्यारे हैं। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि 'दरगुज़र' (किसी की ग़लती को छोड़ देने और माफ़) करने का हुक्म जिहाद की आयत से मन्सूख़ है।

फिर इरशाद होता है कि इन ईसाईयों से भी हमने वादा लिया था कि जो रसूल आयेगा ये उस पर ईमान लायेंगे, उसकी मदद करेंगे और उसकी बातें मानेंगे, लेकिन उन्होंने भी यहूदियों की तरह बद-अ़हदी की (यानी अ़हद को पूरा नहीं किया) जिसकी सज़ा में हमने उनमें आपस में दुश्मनी और फूट डाल दी, जो क़ियामत तक जारी रहेगी। उनमें फ़िर्क़े-फ़िर्क़े बन गये जो एक दूसरे को काफ़िर व मलऊन कहते हैं और अपने इबादत-ख़ानों (गिरजा घरों) में भी नहीं आने देते। मलकिया फ़िर्क़ा याक़ूबिया फ़िर्क़े को और याक़ूबिया फ़िर्क़ा मलकिया फ़िर्क़े को खुलेआ़म काफ़िर कहता है, इसी तरह दूसरे फ़िर्क़े इन्हें। उनके आमाल पर पूरी तंबीह जल्द होगी, उन्होंने भी ख़ुदा की नसीहतों को भुला दिया है और ख़ुदा के ज़िम्मे तोहमतें लगाई हैं, उसकी बीवी और औलाद क़ायम की (यानी मानी और लोगों के सामने यह नज़रिया पेश किया) है। ये क़ियामत के दिन बुरी तरह पकड़े जायेंगे। अल्लाह तआ़ला अकेला है, वह सबसे बेनियाज़ है, न उसने किसी को जन्म दिया और न उसे किसी ने जन्म दिया, और कोई उसके बराबर का है ही नहीं।

يَـٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَـٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ
لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ
ٱلْكِتَـٰبِ وَيَعْفُوا۟ عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَآءَكُم
مِّنَ ٱللَّهِ نُورٌ وَكِتَـٰبٌ مُّبِينٌ ۝ يَهْدِى بِهِ
ٱللَّهُ مَنِ ٱتَّبَعَ رِضْوَٰنَهُۥ سُبُلَ ٱلسَّلَـٰمِ
وَيُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَـٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ
بِإِذْنِهِۦ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

ऐ किताब वालो! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आए हैं, किताब में से जिन उमूर को तुम छुपाते हो उनमें से बहुत-सी बातों को तुम्हारे सामने साफ़-साफ़ खोल देते हैं और बहुत-से उमूर को दरगुज़र कर देते हैं। तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशन चीज़ आई है और एक स्पष्ट किताब (15) कि उसके ज़रिये से अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्सों को जो हक़ की रज़ा के तालिब हों सलामती की राहें बतलाते हैं, और उनको अपनी तौफ़ीक़ से अंधेरियों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले आते हैं, और उनको सही रास्ते पर क़ायम रखते हैं। (16)

हुज़ूरे पाक का नबी बनकर आना और अहले किताब का फ़र्ज़

फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बुलन्द-रुतबा रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हिदायत और दीने हक़ के साथ तमाम मख़्लूक़ की तरफ़ भेज दिया है, मोजिज़े और रोशन दलीलें उन्हें अ़ता फ़रमाईं। जो बातें यहूद व ईसाईयों ने बदल डाली थीं, तावीलें करके दूसरे मतलब बना

लिये थे और ख़ुदा की ज़ात पर बोहतान बाँधते थे, किताबुल्लाह के जो हिस्से अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पाते थे उन्हें छुपा लेते थे, उन सबको यह रसूल ज़ाहिर करते हैं। हाँ जिसके बयान की ज़रूरत ही न हो यह बयान नहीं फ़रमाते।

मुस्तदरक हाकिम में है कि जिसने 'रजम' (शादी शुदा ज़िनाकार को पत्थर मार-मारकर हलाक करने) के मसले का इनकार किया उसने क़ुरआन का इनकार किया। चुनाँचे इस आयत में इसी रजम के छुपाने का ज़िक्र है। फिर क़ुरआने अज़ीम के बारे में फ़रमाता है कि उसी ने इस नबी (हुज़ूर सल्ल.) पर अपनी यह किताब उतारी है, जो हक़ के इच्छुक को सलामती की राह बतलाती है, लोगों को अंधेरियों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाती है, और सीधी राह की तरफ़ रहबरी करती है। इस किताब की वजह से ख़ुदा के इनामों को हासिल कर लेना और उसकी सज़ाओं से बच जाना बिल्कुल आसान हो गया है। यह गुमराही को मिटा देने वाली और हिदायत को स्पष्ट कर देने वाली है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ز وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

बिला शुब्हा वे लोग काफ़िर हैं जो (यूँ) कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ऐन मसीह इब्ने मरियम है। आप (यूँ) पूछिये (कि अगर ऐसा है तो यह बतलाओ) कि अगर अल्लाह तआ़ला हज़रत मसीह इब्ने मरियम को और उनकी माँ को और जितने ज़मीन में हैं उन सबको हलाक करना चाहें तो कोई शख़्स ऐसा है जो ख़ुदा तआ़ला से उनको ज़रा भी बचा सके? और अल्लाह तआ़ला ही के लिए ख़ास है हुकूमत आसमानों पर और ज़मीन पर, और जितनी चीज़ें इन दोनों के दरमियान हैं उन पर, और वह जिस चीज़ को चाहें पैदा कर दें, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है। (17) और यहूद व नसारा "यानी ईसाई" दावा करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं, आप (यह) पूछिये कि (अच्छा तो) फिर तुमको तुम्हारे गुनाहों के बदले अ़ज़ाब क्यों देंगे, बल्कि तुम भी और सब मख़्लूक़ ही की तरह के एक (मामूली) आदमी हो, अल्लाह तआ़ला जिसको चाहेंगे बख़्शेंगे और जिसको चाहेंगे सज़ा देंगे, और अल्लाह तआ़ला ही की है सब हुकूमत आसमानों में भी और ज़मीन में भी और जो कुछ उनके दरमियान में है (उनमें भी)। उसी की (यानी अल्लाह ही की) तरफ़ सबको लौटकर जाना है। (18)

Maktab-E-Ashraf

ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा कहना कुफ़्र है

अल्लाह तबारक व तआ़ला ईसाईयों के कुफ़्र को बयान फ़रमाता है कि उन्होंने खुदा की मख़्लूक़ को खुदाई का दर्जा दे रखा है। खुदा तआ़ला शरीक से पाक है, तमाम चीज़ें उसकी महकूम (अधीन) और मुक़दूर (क़ुदरत के ताबे) हैं। हर चीज़ पर उसकी हुकूमत और मिल्कियत है, कोई नहीं जो उसे किसी इरादे से बाज़ रख सके, कोई नहीं जो उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ज़बान हिलाने की जुर्रत कर सके। वह अगर मसीह (हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम) को, उनकी माँ (हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम) को और रू-ए-ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ को नेस्त व नाबूद कर देना चाहे तो भी किसी की मजाल नहीं कि उसके आगे आये, उसे रोक सके। तमाम मौजूद चीज़ें और तमाम मख़्लूक़ात का बनाने और पैदा करने वाला वही है, सबका ख़ालिक़ और सबका हाकिम वही है, जो चाहे कर गुज़रे, कोई चीज़ उसके इख़्तियार से बाहर नहीं। उससे कोई पूछगछ नहीं कर सकता, उसकी सल्तनत व मिल्कियत बहुत बड़ी और फैली हुई है। उसकी बड़ाई, इज़्ज़त बहुत बुलन्द है, वह आ़मिल व ग़ालिब है, जिसे जिस तरह चाहता है बनाता है बिगाड़ता है, उसकी क़ुदरतों की कोई इन्तिहा नहीं। ईसाईयों की तरदीद के बाद अब यहूदियों और ईसाईयों दोनों की तरदीद हो रही है कि उन्होंने खुद पर एक झूठ यह बाँधा कि हम खुदा के बेटे और उसके महबूब हैं। हम अम्बिया की औलाद हैं, और वे खुदा के लाडले फ़रज़न्द हैं, अपनी किताब से नक़ल करते थे कि खुदा तआ़ला ने इस्राईल को कहा है:

اَنْتَ اِبْنِیْ بِکْرِیْ.

फिर तावीलें करके, मतलब उलट-पलट करके कहते हैं कि जब वह खुदा के बेटे हुए तो हम भी खुदा के बेटे और प्यारे हुए, हाँलाकि खुद उन्हीं में से जो अ़क़्लमन्द और दीनदार थे वे उन्हें समझाते थे कि इन लफ़्ज़ों से सिर्फ़ उनकी बड़ाई और सम्मान साबित होता है, न कि रिश्तेदारी। इस मायने की आयत ईसाई लोग अपनी किताब से नक़ल करते थे कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی اَبِیْ وَاَبِیْکُمْ.

कि मैं अपने और तुम्हारे बाप के पास जा रहा हूँ।

इससे मुराद भी सगा बाप न था, बल्कि उनके अपने मुहावरे में खुदा के लिये यह लफ़्ज़ भी आता था। पस मतलब इसका यह है कि मैं अपने और तुम्हारे रब की तरफ़ जा रहा हूँ और यह इससे ज़ाहिर हो रहा है कि यहाँ इस आयत में जो निस्बत हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ है वही निस्बत उनकी तमाम उम्मत की तरफ़ है, लेकिन वे लोग अपने ग़लत और बेबुनियाद अ़क़ीदे में हज़रत ईसा को खुदा से निस्बत देते हैं, उस निस्बत पर अपने आपको नहीं समझते। पस यह लफ़्ज़ इज़्ज़त व सम्मान के लिये था, न कि कुछ और। अल्लाह तआ़ला उन्हें जवाब देता है कि अगर यह सही है तो फिर तुम्हारे कुफ़्र व झूठ, बोहतान व इल्ज़ाम पर खुदा तुम्हें सज़ा क्यों देता है?

किसी सूफ़ी (बुज़ुर्ग और अल्लाह वाले) ने किसी फ़क़ीह (मसाईल का इल्म रखने वाले आ़लिम) से दरियाफ़्त फ़रमाया कि क़ुरआन में यह भी कहीं है कि हबीब अपने हबीब को अ़ज़ाब नहीं करता? उससे कोई जवाब न बन पड़ा। सूफ़ी ने यही आयत तिलावत फ़रमा दी, यह क़ौल बहुत ही अच्छा और उम्दा है और इसी की दलील मुस्नद अहमद की यह हदीस है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्ल. अपने सहाबा की एक

Maktab E Ashraf

जमाअ़त के साथ रास्ते से गुज़र रहे थे। एक छोटा-सा बच्चा राह में खेल रहा था, उसकी माँ ने जब देखा कि एक जमाअ़त की जमाअ़त इसी राह से आ रही है तो उसे डर लगा कि कहीं बच्चा रौंदा न जाये, मेरा बच्चा मेरा बच्चा कहती हुई दौड़ी आई और झट से बच्चे को गोद में उठा लिया। इस पर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा या हुज़ूर! यह औ़रत तो अपने प्यारे बच्चे को कभी आग में नहीं डाल सकती। आपने फ़रमाया ठीक है, अल्लाह तआ़ला भी अपने प्यारे बन्दों को हरगिज़ जहन्नम में नहीं डालेगा।

यहूदियों के जवाब में फ़रमाता है कि तुम भी दूसरी और मख़्लूक़ की तरह ही एक इनसान हो, तुम्हें दूसरों पर बरतरी और बड़ाई हासिल नहीं, अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपने बन्दों पर हाकिम है और वही उनमें सच्चे फ़ैसले करने वाला है। वह जिसे चाहे बख़्शे जिसे चाहे पकड़े, वह जो चाहे कर गुज़रता है उसका कोई हुक्म रद्द नहीं कर सकता। वह बहुत जल्द बन्दों से हिसाब लेने वाला है। ज़मीन व आसमान और उनके बीच की मख़्लूक़ सब उसकी मिल्क है, उसके दबाव में है, उसकी बादशाहत के नीचे है, सबको लौटना उसी की तरफ़ है। वह बन्दों का फ़ैसला करेगा, वह ज़ालिम नहीं आ़दिल है, नेकों को नेकी और बदों को बदी (यानी अच्छे बुरे आमाल का बदला) देगा।

नोमान बिन आसा, बहर बिन उमर, शानिस बिन अ़दी जो यहूदियों के बड़े दर्जे के उलेमा थे, हुज़ूर सल्ल. के पास आये। आपने उन्हें समझाया बुझाया और आख़िर में अ़ज़ाबों से डराया तो कहने लगे- सुनिये हज़रत! आप हमें क्या डरा रहे हैं, हम तो अल्लाह के बच्चे और उसके प्यारे हैं। यही ईसाई भी कहते हैं, तो यह आयत उतरी। उन लोगों ने यह एक बात भी गढ़कर अपने आपस में मशहूर कर दी थी कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्राईल अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ 'वही' (अपना पैग़ाम) नाज़िल फ़रमाई कि तेरा सबसे पहला बेटा मेरी औलाद में से है, उसकी औलाद चालीस दिन तक जहन्नम में रहेगी, इस मुद्दत में आग उन्हें पाक कर देगी और उनकी ख़ताओं और गुनाहों को खा जायेगी। फिर एक फ़रिश्ता मुनादी करेगा कि इस्राईल की औलाद में से जो भी ख़तना-शुदा हों निकल आयें। यही मायने हैं उनके इस क़ौल के जो क़ुरआन में नक़ल किया गया है कि वे कहते थे कि हमें गिनती के चन्द ही दिन जहन्नम में रहना पड़ेगा।

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आ पहुँचे जो कि तुमको साफ़-साफ़ बतलाते हैं, ऐसे वक़्त में कि रसूलों का सिलसिला मौक़ूफ़ 'यानी रुका हुआ और बन्द' था, ताकि तुम (यूँ न) कहने लगो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला नहीं आया। सो तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले आ चुके हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। (19)	يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ ع ٣

आपके नबी बनकर आने के बाद कोई उज़्र नहीं सुना जायेगा

इस आयत में अल्लाह तआ़ला यहूद व नसारा (ईसाईयों) को ख़िताब करके फ़रमाता है कि मैंने तुम

सब की तरफ़ अपना रसूल भेज दिया है जो ख़ातिमुल-अम्बिया हैं और जिनके बाद कोई नबी व रसूल आने वाला नहीं। यह सब के बाद हैं। देख लो हज़रत ईसा से लेकर अब तक कोई रसूल नहीं आया, वक़्फ़े (अन्तराल) की इस लम्बी मुद्दत के बाद यह रसूल आया। बाज़ कहते हैं कि यह मुद्दत छह सौ साल थी, बाज़ कहते हैं साढ़े पाँच सौ बरस की, बाज़ कहते हैं पाँच सौ चालीस बरस की, कोई कहता है चार सौ कुछ ऊपर तीस बरस की। इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत ईसा के आसमान की तरफ़ उठाये जाने और हमारे नबी सल्ल. के हिजरत करने के बीच नौ सौ तैंतीस साल का फ़ासला था, लेकिन मशहूर क़ौल पहला ही है यानी छह सौ साल का। बाज़ कहते हैं कि छह सौ बीस साल का फ़ासला था, इन दोनों में इस तरह भी ततबीक़ (मुवाफ़क़त) हो सकती है कि पहला क़ौल सूरज के हिसाब से हो और दूसरा चाँद के हिसाब से हो, और इस गिनती में हर तीन सौ साल में तक़रीबन आठ साल का फ़र्क़ पड़ जाता है। इसी तरह अहले कहफ़ के क़िस्से में है:

وَلَبِثُوْا فِىْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا.

वे लोग अपने ग़ार (गुफा) में तीन सौ साल रहे और नौ बरस और ज़्यादा।

पस सूरज के हिसाब से अहले किताब को जो मुद्दत उनके ग़ार की मालूम थी वह तीन सौ साल थी, नौ बढ़ाकर चाँद का हिसाब पूरा हो गया। आयत से मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से जो बनी इस्राईल के आख़िरी नबी थे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक जो पूरी तरह नबियों के सिलसिले को मुकम्मल और ख़त्म करने वाले थे, फ़त्रत (अन्तराल) का ज़माना था, यानी दरमियान में कोई नबी नहीं हुआ। चुनाँचे सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से और सब लोगों के मुक़ाबले में ज़्यादा औला हूँ इसलिये कि मेरे और उनके दरमियान कोई नबी नहीं। इसमें उन लोगों का भी रद्द है जो ख़्याल करते हैं कि दोनों बुलन्द-रुतबा पैग़म्बरों के दरमियान भी एक नबी गुज़रे हैं, जिनका नाम ख़ालिद बिन सनान था, जैसा कि क़ुज़ाई वग़ैरह ने बयान किया।

मक़सूद यह है कि ख़ातिमुल-अम्बिया हबीबे ख़ुदा सल्ल. दुनिया में उस वक़्त तशरीफ़ लाते हैं जबकि रसूलों की तालीम मिट चुकी है। उनकी राहें बेनिशान हो चुकी हैं। दुनिया तौहीद को भुला चुकी है। जगह जगह मख़्लूक़ की पूजा हो रही है। सूरज चाँद बुत आग पूजे जा रहे हैं। ख़ुदा का दीन बदल चुका है। कुफ़्र की अंधेरी दीन के नूर पर छा चुकी है। दुनिया का चप्पा-चप्पा सरकशी और नाफ़रमानी से भर गया है। अ़दल व इन्साफ़ बल्कि इनसानियत भी फ़ना हो चुकी है। जहालत व नासमझी का दौर-दौरा है। सिवाय चन्द आदमियों के ख़ुदा का नाम लेवा ज़मीन पर नहीं रहा।

पस मालूम हुआ कि आपकी बुज़ुर्गी व इज़्ज़त ख़ुदा के पास बहुत बड़ी थी और आपने जो ख़ुदा के पैग़ाम को पहुँचाया वह कोई मामूली रिसालत (पैग़ाम) न थी, सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने एक ख़ुतबे (बयान) में फ़रमाया मुझे मेरे रब का हुक्म है कि मैं तुम्हें वे बातें सिखाऊँ जिनसे तुम वाक़िफ़ नहीं, और ख़ुदा तआ़ला ने मुझे आज ही बताई हैं। फ़रमाया मैंने अपने बन्दों को जो कुछ इनायत फ़रमाया है वह उनके लिये हलाल किया है। मैंने अपने सब बन्दों को तौहीद वाला पैदा किया है, लेकिन फिर शैतान उनके पास आता है और उन्हें बहकाता है और मेरी हलाल की हुई चीज़ें उन पर हराम करता है, और उन्हें कहता है कि मेरे साथ बिना किसी दलील के शिर्क करें। सुनो! अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन वालों को देखा और अ़रब व ग़ैर-अ़रब को नापसन्द फ़रमाया सिवाय उन

Maktab E Ashraf

चन्द बाक़ी रहे बनी इस्राईल के (जो तौहीद पर क़ायम हैं) फिर (मुझसे) फ़रमाया मैंने तुझे इसलिये अपना नबी बनाकर भेजा है कि मैं तेरी आज़माईश करूँ और तेरी वजह से औरों की भी आज़माईश कर लूँ। मैंने तुझ पर वह किताब नाज़िल की है जिसे पानी धो नहीं सकता, जिसे तू सोते जागते पढ़ता है। फिर मुझे मेरे रब ने हुक्म दिया कि मैं क़ुरैशियों में पैग़ामे हक़ पहुँचाऊँ। मैंने कहा ऐ ख़ुदा! ये तो मेरा सर कुचल कर रूई जैसा बना देंगे। परवर्दिगार ने फ़रमाया तू उन्हें निकाल जैसे उन्होंने तुझे निकाला, तू उनसे जिहाद कर तेरी इमदाद की जायेगी, तू उन पर ख़र्च कर तुझ पर ख़र्च किया जायेगा, तू उनके मुक़ाबले पर लश्कर भेज हम उनसे पाँच गुना लश्कर और भेजेंगे, अपने फ़रमाँबरदारों को लेकर अपने नाफ़रमानों से जंग कर।

जन्नती लोग तीन क़िस्म के हैं- इन्साफ़ करने वाला बादशाह, ख़ैर की तौफ़ीक़ वाला सदक़ा ख़ैरात करने वाला, और रहम-दिल। हर रिश्तेदार और ताल्लुक़ व नज़दीकी रखने वाले मुसलमान के साथ नर्म-दिली करने वाला और बावजूद तंग-हाल होने के हराम से बचने वाला। हालाँकि अहल व अ़याल भी है।

और जहन्नमी लोग पाँच क़िस्म के हैं- वे कमीने और ज़लील लोग जो बेदीन ख़ुशामद-पसन्द और मातहत हैं, जिनके आल औलाद, धन दौलत नहीं, और वे ख़ियानत करने वाले लोग जिनकी नज़र छोटी से छोटी चीज़ पर भी होती है और हक़ीर (मामूली और घटिया) चीज़ों में भी ख़ियानत से नहीं चूकते। और वे लोग जो सुबह शाम लोगों को उनके माल और घर वालों में धोखा देते फिरते हैं, फिर बख़ील या झूठा फ़रमाया। और दूसरों की बदगोई करने वाला। यह हदीस मुस्लिम और नसाई में भी है।

मक़सद यह है कि हुज़ूर सल्ल. के दुनिया में रसूल बनकर तशरीफ़ लाने के वक़्त सच्चा दीन दुनिया पर न था, ख़ुदा तआ़ला ने आपकी वजह से लोगों को अंधेरों और गुमराहियों से निकाल कर उजाले में और सही रास्ते पर ला खड़ा किया, और उन्हें रोशन व ज़ाहिर शरीअ़त अ़ता फ़रमाई ताकि लोगों का उज़्र (बहाना) ख़त्म हो जाये। उन्हें यह कहने की गुंजाईश न रहे कि हमारे पास कोई नबी नहीं आया, हमें न तो किसी ने कोई ख़ुशख़बरी सुनाई न धमकाया न डराया। पस कामिल क़ुदरतों वाले ख़ुदा ने अपने ख़ास और चुने हुए पैग़म्बर को सारी दुनिया की हिदायत के लिये भेज दिया, वह अपने फ़रमाँबरदारों (हुक्म मानने वालों) को सवाब देने और नाफ़रमानों को अ़ज़ाब देने पर क़ादिर है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۞ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۞ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह तआ़ला के इनाम को जो कि तुम पर हुआ है याद करो, जबकि अल्लाह तआ़ला ने तुममें से बहुत-से पैग़म्बर बनाए और तुमको मुल्क वाला बनाया और तुमको वे चीज़ें दीं जो दुनिया जहान वालों में से किसी को नहीं दीं। (20) ऐ मेरी क़ौम! बरकत वाले मुल्क में दाख़िल हो कि इसको अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हिस्से में लिख दिया, और पीछे वापस मत चलो कि फिर बिल्कुल ख़सारे में पड़ जाओगे। (21) कहने लगे कि ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े-बड़े

Maktab E Ashraf

جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۖ فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَاخِلُونَ ۝ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَالِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ ع ٨

ज़बरदस्त आदमी हैं, और हम तो वहाँ हरगिज़ क़दम न रखेंगे जब तक कि वे वहाँ से (न) निकल जायें, (हाँ) अगर वे वहाँ से (कहीं और) चले जाएँ तो हम बेशक जाने को तैयार हैं। (22) उन दो शख़्सों ने जो कि डरने वालों में से थे, जिन पर अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़्ल किया था, कहा कि तुम उन पर दरवाज़े तक तो चलो, सो जिस वक़्त तुम दरवाज़े में क़दम रखोगे उसी वक़्त ग़ालिब आ जाओगे, और अल्लाह तआ़ला पर नज़र रखो अगर तुम ईमान रखते हो। (23) कहने लगे कि ऐ मूसा! हम तो हरगिज़ कभी भी वहाँ क़दम न रखेंगे जब तक वे लोग वहाँ मौजूद हैं, तो आप और आपके अल्लाह मियाँ चले जाईये और दोनों लड़-भिड़ लीजिये, हम तो यहाँ से सरकते नहीं। (24) (मूसा) दुआ़ करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैं अपनी जान और अपने भाई पर अलबत्ता इख़्तियार रखता हूँ। सो आप हम दोनों के और इस नाफ़रमान क़ौम के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दीजिये। (25) इरशाद हुआ कि यह (मुल्क) तो उनके हाथ चालीस साल तक न लगेगा, यूँ ही ज़मीन में सर मारते फिरते रहेंगे। सो आप इस बेहुक्म क़ौम पर ग़म न कीजिए। (26)

नुबुव्वत और बादशाहत ख़ुदा के दो इनाम हैं

हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को ख़ुदा की नेमतें याद दिलाकर ख़ुदा की इताअ़त की तरफ़ माईल किया था। यहाँ उसी का बयान है। फ़रमाया लोगो! ख़ुदा की उस नेमत को याद करो उसने निरन्तर नबी तुम्हारे अन्दर तुम्हीं में से भेजे। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के बाद उन्हीं की नस्ल में नुबुव्वत रही, ये सब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम तुम्हें दावते तौहीद देते रहे, यह सिलसिला हज़रत ईसा रूहुल्लाह अ़लैहिस्सलाम पर ख़त्म हुआ। फिर नबियों व रसूलों के ख़ातिम हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नुबुव्वते कामिला अ़ता हुई। आप हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के वास्ते से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से थे जो अपने से पहले के तमाम रसूलों और नबियों से अफ़ज़ल थे। ख़ुदा आप पर दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाये। और तुम्हें उसने बादशाह बना दिया

Maktab E Ashraf

यानी ख़ादिम दिये, बीवियाँ दीं, घर-बार दिया और उस वक़्त जितने लोग थे उन सबसे ज़्यादा नेमतें तुम्हें अ़ता फ़रमाईं। ये लोग इतना पाने के बाद बादशाह कहलाने लगे थे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से एक शख़्स ने पूछा- क्या मैं ग़रीब मुहाजिरों में से नहीं हूँ? आपने फ़रमाया क्या तेरी बीवी है? उसने कहा हाँ। कहा घर भी है? कहा हाँ। फिर तो तू ग़नी (मालदार और अमीर) है। उसने कहा यूँ तो मेरे पास ख़ादिम भी है। आपने फ़रमाया फिर तो तू बादशाहों में से है। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि सवारी और ख़ादिम मुल्क है, बनी इस्राईल ऐसे लोगों को बादशाह कहा करते थे। बक़ौल क़तादा रह. ख़ादिमों का सबसे पहले रिवाज इन बनी इस्राईलियों ने ही दिया है। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि उन लोगों में से जिसके पास ख़ादिम, सवारी और बीवी हो वह बादशाह कहा जाता था। एक और मरफ़ूअ़ हदीस में है कि जिसका घर हो और ख़ादिम हो वह बादशाह है। यह हदीस मुर्सल और ग़रीब है। एक हदीस में आया है कि जो शख़्स इस हालत में सुबह करे कि उसका जिस्म सही सालिम हो, उसका नफ़्स (जान) अमन व अमान में हो, दिन भर के लिये काफ़ी हो इतना माल भी हो, तो गोया उसके पास तमाम दुनिया सिमटकर आ गई। उस वक़्त जो यूनानी क़िबती वग़ैरह थे उनसे यह ज़्यादा सम्मानित व अफ़ज़ल बना दिये गये थे।

एक और आयत में है कि हमने बनी इस्राईल को किताबे हुक्म, नुबुव्वत, पाकीज़ा रोज़ियाँ और सब पर फ़ज़ीलत दी थी। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से जब उन्होंने मुश्रिकों को देखा-देखी ख़ुदा बनाने को कहा इसके जवाब में मूसा ने ख़ुदा के फ़ज़्ल बयान करते हुए यही फ़रमाया था कि उसने तुम्हें तमाम जहान पर फ़ज़ीलत (बड़ाई) दे रखी है। मतलब सब जगह यही है कि उस वक़्त के तमाम लोगों पर। क्योंकि एक हक़ीक़त यह है कि यह उम्मत उनसे अफ़ज़ल (बेहतर और बड़ाई वाली) है, शरई हैसियत से भी और अहकामी हैसियत से भी, नुबुव्वत की हैसियत से भी, बादशाहत व इज़्ज़त और मिल्कियत व दौलत, शान व माल, औलाद वग़ैरह की हैसियत से भी। ख़ुद क़ुरआने करीम फ़रमाता है:

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ..... الخ

कि तुम बेहतरीन उम्मत हो जिसको लोगों के लिये निकाला गया है....।

और फ़रमाया

وَجَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا...

यानी हमने तुम्हें एक एतिदाल पर चलने वाली उम्मत बनाया।

यह भी कहा गया है कि बनी इस्राईल के साथ इस फ़ज़ीलत में उम्मते मुहम्मदिया को शामिल करके ख़िताब किया गया है। और यह भी कहा गया है कि बाज़ बातों में उन्हें वास्तव में सब पर बड़ाई दी गई थी, जैसे **मन्न** व **सल्वा** का उतरना, बादलों से साया देना वग़ैरह-वग़ैरह, जो असाधारण और अ़जीब चीज़ें थीं। यह क़ौल तो अक्सर मुफ़स्सिरीन का है जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि मुराद इससे उनके अपने ज़माने वालों पर उन्हें फ़ज़ीलत दिया जाना है। वल्लाहु तआ़ला आलम

बनी इस्राईल की नाफ़रमानी

फिर बयान होता है कि बैतुल-मुक़द्दस उनके दादा हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में उन्हीं के क़ब्ज़े में था, और जब वे मय अपने अहल व अ़याल (बाल-बच्चों और घर वालों) के हज़रत यूसुफ़

Maktab E Ashraf

अ़लैहिस्सलाम के पास मिस्र चले गये तो यहाँ अ़मालिक़ा क़ौम उस पर क़ब्ज़ा जमा बैठी थी, वह बड़े मज़बूत हाथ पैरों की थी। अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम से फ़रमाते हैं कि तुम उनसे जिहाद करो ख़ुदा तुम्हें उन पर ग़ालिब करेगा, और यहाँ का क़ब्ज़ा फिर तुम्हें मिल जायेगा। लेकिन ये नामर्दी और बुज़दिली दिखाते हैं और मुँह फेर लेते हैं, इसकी सज़ा में उन्हें चालीस साल तक वादी-ए-तीह में हैरान व परेशान ख़ाना-बदोशी में रहना पड़ता है। मुक़द्दसा से मुराद पाक है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह तूर पहाड़ और उसके पास की ज़मीन का ज़िक्र है। एक रिवायत में है कि उरैहा का ज़िक्र है, लेकिन यह ठीक नहीं, इसलिये कि न तो उरैहा का फ़तह करना मक़सूद था न वह उनके रास्ते में था, क्योंकि वे फ़िरऔ़न की हलाकत के बाद मिस्र के शहरों से आ रहे थे, और बैतुल-मुक़द्दस जा रहे थे। यह हो सकता है कि वह मशहूर शहर हो जो तूर की तरफ़ बैतुल-मुक़द्दस के पूरब में था, अल्लाह ने उसे तुम्हारे लिये लिख दिया है। मतलब यह है कि तुम्हारे बाप इस्राईल से ख़ुदा ने वादा किया है कि वह तेरी औलाद के ईमान वाले लोगों के वरसे (विरासत और हिस्से) में आयेगी, तुम अपनी पीठों को न फेर लो, यानी जिहाद से मुँह फेरकर थककर न बैठ जाओ, वरना ज़बरदस्त नुक़सान में पड़ जाओगे।

वे जवाब देते हैं कि जिस शहर में जाने को और जिन शहरियों से जिहाद करने को आप फ़रमा रहे हैं हमें मालूम है कि वे बड़े क़वी, ताक़तवर और लड़ाके हैं, हम उनसे मुक़ाबला नहीं कर सकते, और जब तक वे वहाँ मौजूद हैं हम वहाँ जा नहीं सकते। हाँ अगर वे लोग वहाँ से निकल जायें तो हम चले जायेंगे, वरना आपका हुक्म बजा लाना हमारी ताक़त से बाहर है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि हज़रत मूसा अ़लैहि. जब उरैहा के क़रीब पहुँच गये तो आपने बारह जासूस मुक़र्रर किये, बनी इस्राईल के हर क़बीले से एक जासूस लिया और उन्हें उरैहा में भेजा कि सही ख़बरें ले आयें।

ये लोग जब गये तो उनकी क़द-काठी, लम्बे चौड़े जिस्म और क़ुव्वत से ख़ौफ़ खा गये। एक बाग़ में ये सब के सब थे, इत्तिफ़ाक़न बाग़ वाला फल तोड़ने के लिये आ गया, वह फल तोड़ता हुआ इनके क़दमों के निशान ढूँढता हुआ इनके पास पहुँच गया और इन्हें भी फलों के साथ ही साथ अपनी गठरी में बाँध लिया और जाकर बादशाह के सामने बाग़ के फल की गठरी खोलकर डाल दी, जिसमें ये सब के सब थे। बादशाह ने इन्हें कहा कि अब तो तुम्हें हमारी क़ुव्वत का अन्दाज़ा हो गया, मैं तुम्हें क़त्ल नहीं करता जाओ वापस जाओ और अपने लोगों से कह दो। चुनाँचे इन्होंने जाकर उनका सब हाल अपने लोगों से बयान किया जिससे बनी इस्राईल रौब में आ गये। इस रिवायत की सनद ठीक नहीं।

एक दूसरी रिवायत में है कि उन बारह लोगों को उनमें से एक शख़्स ने पकड़ लिया और अपनी चादर में उनकी गठरी बाँधकर शहर में ले गया और लोगों के सामने उन्हें डाल दिया। उन्होंने पूछा कि तुम कौन लोग हो? जवाब दिया कि हम मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के लोग हैं। हम तुम्हारी ख़बरें लेने के लिये भेजे गये थे। उन्होंने एक अंगूर उनको दिया जो एक शख़्स को काफ़ी था, और कहा जाओ उनसे कह दो कि ये हमारे मेवे हैं। उन्होंने जाकर क़ौम से सब हाल कह दिया। अब हज़रत मूसा ने उन्हें जिहाद का और शहर में जाने का हुक्म दिया तो उन्होंने साफ़ कह दिया कि आप और आपका ख़ुदा जायें और लड़ें, हम तो यहाँ से हिलने के भी नहीं। हज़रत अनस रज़ि. ने एक बाँस लेकर नापा जो पचास या पचपन हाथ का था, फिर उसे गाड़कर फ़रमाया उन अ़मालीक़ के क़द इस क़द्र लम्बे थे। मुफ़स्सिरीन ने यहाँ पर इस्राईली (यानी कमज़ोर और बेबुनियाद) रिवायतें भी बहुत सी बयान की हैं, कि ये लोग इस क़द्र ताक़तवर थे, ऐसे मोटे और इस क़द्र लम्बे थे।

Maktab E Ashraf

औज बिन उनुक़

उन्हीं में औज बिन उनुक़ बिन हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम था, जिसका क़द लम्बाई में तीन हज़ार तीन सौ तीन तैंतीस गज़ का था, और चौड़ाई उसके जिस्म की तीन गज़ की थी, लेकिन ये सब बातें वाही (यानी बेबुनियाद और ख़ुराफ़ात) हैं, इनके तो ज़िक्र से भी शर्म आती है। फिर ये सही हदीस के ख़िलाफ़ भी हैं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को साठ हाथ का पैदा किया था, उस वक़्त से आज तक मख़्लूक़ के क़द घटते ही रहे।

इन इस्राईली (ग़ैर-मोतबर) रिवायतों में यह भी है कि औज बिन उनुक़ काफ़िर था, और हरामी था। यह तूफ़ाने नूह में था और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के साथ कश्ती में न बैठा था, लेकिन फिर भी पानी उसके घुटनों तक भी न पहुँचा था। यह भी बिल्कुल बेहूदा और झूठ है, बल्कि क़ुरआने करीम के ख़िलाफ़ है। क़ुरआने करीम में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ यह बयान की गयी है कि ज़मीन पर एक काफ़िर भी न बाक़ी रख, यह दुआ़ क़बूल हुई और यही हुआ भी। क़ुरआन फ़रमाता है कि हमने नूह को और उन कश्ती वालों को निजात दी और सब काफ़िरों को ग़र्क़ कर दिया। ख़ुद क़ुरआन में है कि आजके दिन सिवाय उन लोगों के जिन पर रहमते ख़ुदा है कोई भी बचने वाला नहीं। ताज्जुब है कि नूह अ़लैहिस्सलाम का लड़का भी जो ईमान वाला न था, न बच सके, लेकिन औज बिन उनुक़ काफ़िर हरामी बच जाये? यह बिल्कुल अ़क़्ल व नक़ल के ख़िलाफ़ है, बल्कि हम तो सिरे से इसके भी क़ायल नहीं कि औज बिन उनुक़ नाम का कोई शख़्स था। वल्लाहु आलम

बनी इस्राईल जब अपने नबी की नहीं मानते, बल्कि उनके सामने सख़्त-कलामी और बेअदबी करते हैं तो दो शख़्स जिन पर ख़ुदा का इनाम व इकराम था वे उन्हें समझाते हैं क्योंकि उनके दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा था, वह डरते थे कि बनी इस्राईल की इस नाफ़रमानी से कहीं अ़ज़ाबे ख़ुदा न आ जाये। एक क़िराअत में 'यख़ाफ़ू-न' के बजाय 'युहाब्बू-न' है। इससे मुराद यह है कि उन दोनों बुज़ुर्गों का क़ौम में इज़्ज़त व सम्मान था, एक का नाम यूशा बिन नून था, दूसरे का नाम कालिब बिन यूफ़न्ना था। उन्होंने कहा कि अगर तुम अल्लाह पर भरोसा रखोगे, उसके रसूल की इताअ़त करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें उन दुश्मनों पर ग़ालिब कर देगा, और वह ख़ुद तुम्हारी मदद और ताईद करेगा और तुम उस शहर में ग़लबे के साथ पहुँच जाओगे। तुम दरवाज़े तक तो चलो, यक़ीन मानो कि ग़लबा तुम्हारा ही है। लेकिन उन नामर्दों ने बड़ी हठ के साथ कहा कि उस ताक़तवर और जब्बार क़ौम की मौजूदगी में हमारा एक क़दम बढ़ाना भी नामुम्किन है।

हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम ने यह देखकर बहुत समझाया, यहाँ तक कि उनके सामने बड़ी आ़जिज़ी की, लेकिन वे न माने। यह हाल देखकर हज़रत यूशा बिन नून और हज़रत कालिब ने अपने कपड़े फाड़ डाले और उन्हें बहुत कुछ बुरा-भला कहा, लेकिन ये बदनसीब और अकड़ गये, बल्कि यह भी कहा गया है कि इन दोनों बुज़ुर्गों को उन्होंने पत्थरों से शहीद कर दिया। एक तूफ़ाने बदतमीज़ी शुरू हो गया, और बुरी तरह रसूल की मुख़ालफ़त पर तुल गये।

उनके इस हाल को सामने रखकर फिर हुज़ूर सल्ल. के सहाबा के हाल को देखिये कि जब नौ सौ या एक हज़ार काफ़िर अपने क़ाफ़िले को बचाने के लिये चले, क़ाफ़िला तो दूसरे रास्ते से निकल गया लेकिन उन्होंने अपनी ताक़त और क़ुव्वत के घमण्ड पर रसूलुल्लाह सल्ल. को नुक़सान पहुँचाये बग़ैर वापस जाना अपनी उम्मीदों पर पानी फिरना समझकर इस्लाम और मुसलमानों को कुचल डालने के इरादे से मदीने का

रुख़ किया। इधर हुज़ूर सल्ल. को जब यह हालात मालूम हुए तो आपने अपने सहाबा से कहा कि बतलाओ अब क्या करना चाहिये। अल्लाह उन सबसे ख़ुश रहे, उन्होंने हुज़ूर सल्ल. के सामने अपने माल, अपनी जानें और अपने बाल-बच्चे सब रख दिये और कहा हुज़ूर सल्ल. मालिक हैं, हम न तादाद को देखते हैं न ग़लबे को देखते हैं, न असबाब पर नज़रें हैं बल्कि हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान के मुन्तज़िर हैं। सबसे पहले हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ि. ने इस क़िस्म की गुफ़्तगू की, फिर मुजाहिरीन सहाबा में से बहुत सों ने इसी क़िस्म की तक़रीर की, लेकिन फिर भी आपने फ़रमाया और हज़रात भी अपना इरादा ज़ाहिर करें। आपका मक़सद इससे यह था कि अन्सार का दिली इरादा मालूम करें, इसलिये कि यह जगह उन्हीं की थी और तादाद में भी ये मुहाजिरों से ज़्यादा थे। इस पर सअ़द बिन मुआ़ज़ अन्सारी रज़ि. खड़े हो गये और फ़रमाने लगे- शायद आपका इरादा हमारी मंशा मालूम करने का है? सुनिये या रसूलल्लाह! क़सम है उस ख़ुदा की जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है कि अगर आप हमें समुद्र के किनारे खड़ा करके फ़रमायें कि इसमें कूद जाओ तो हम बिना सोचे-समझे उसमें कूद जायेंगे। आप देख लेंगे कि हम में से एक भी न होगा जो किनारे पर खड़ा रह जाये। हुज़ूर! आप अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में हमें शौक़ से ले चलिये, आप देख लेंगे कि हम लड़ाई में सब्र और साबित-क़दमी दिखाने वाले लोग हैं, आप जान लेंगे कि हम ख़ुदा की मुलाक़ात को सच जानने वाले लोग हैं। आप अल्लाह का नाम लीजिये, उठ खड़े होजिये, हमें देखकर हमारी बहादुरी और जमाव को देखकर आपकी आँखें ठंडी होंगी। यह सुनकर अल्लाह के रसूल ख़ुश हो गये और आपको अन्सार सहाबा की ये बातें बहुत ही अच्छी मालूम हुईं, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम।

एक रिवायत में है कि बदर की लड़ाई के मौक़े पर आपने मुसलमानों से मश्विरा लिया, हज़रत उमर रज़ि. ने कुछ कहा फिर अन्सारियों ने कहा- अगर आप हमारी सुनना चाहते हैं तो सुनिये! हम बनी इस्राईल की तरह नहीं हैं कि कह दें आप और आपका ख़ुदा जाकर लड़ें, हम यहाँ बैठे हैं, बल्कि हमारा जवाब यह है कि आप ख़ुदा की मदद लेकर जिहाद के लिये चलिये, हम जान माल से आपके साथ हैं। हज़रत मिक़दाद अन्सारी रज़ि. ने भी खड़े होकर यही फ़रमाया था। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाया करते थे कि हज़रत मिक़दाद रज़ि. के इस क़ौल से अल्लाह के रसूल सल्ल. ख़ुश हो गये उन्होंने कहा था कि हुज़ूर! आप लड़ाई के वक़्त देख लेंगे कि आपके आगे पीछे दायें बायें हम ही होंगे, काश कि कोई ऐसा मौक़ा मुझे मयस्सर आता कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल. को इस क़द्र ख़ुश कर सकता। एक रिवायत में हज़रत मिक़दाद रज़ि. का यह क़ौल हुदैबिया के दिन का है, जबकि मुश्रिकों ने आपको उमरे के लिये बैतुल्लाह जाते हुए रास्ते में रोका और क़ुरबानी के जानवर भी ज़िबह की जगह न पहुँच सके, तो आपने फ़रमाया कि मैं तो अपने क़ुरबानी के जानवर को लेकर बैतुल्लाह पहुँचकर क़ुरबान करना चहता हूँ तो हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद रज़ि. ने फ़रमाया कि हम हज़रत मूसा के साथियों की तरह नहीं, यह उन्हीं से हो सका कि अपने नबी से कह दिया कि आप और आपका ख़ुदा जाकर लड़ें, हम तो यहाँ बैठे हैं। हम कहते हैं कि हुज़ूर आप चलिये, ख़ुदा की मदद आपके साथ हो और हम सबके सब आपके साथी हैं। यह सुनकर और सहाबा ने भी इसी तरह जाँनिसारियों के वादे करने शुरू कर दिये। पस अगर इस रिवायत में हुदैबिया का ज़िक्र महफ़ूज़ हो तो हो सकता है कि बदर वाले दिन भी आपने यह फ़रमाया हो और हुदैबिया वाले दिन भी यह फ़रमाया हो। वल्लाहु आलम

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को यह सुनकर अपनी उम्मत पर बहुत गुस्सा आया और ख़ुदा के सामने उनसे अपनी बेज़ारी का इज़हार किया, रब्बुल-आ़लमीन मुझे तो अपनी जान और अपने भाई पर इख़्तियार है,

Maktaba Ashraf

तू अब मेरे और मेरी क़ौम के इन फ़ासिक़ों (बदकारों) के दरमियान फ़ैसला फ़रमा। अल्लाह तआला ने इस दुआ को क़बूल फ़रमाया और फ़रमाया कि ये अब चालीस साल तक यहाँ से जा नहीं सकते, वादी-ए-तीह में हैरान व परेशान फिरते रहेंगे, किसी तरह उसकी सीमाओं से बाहर नहीं जा सकते थे।

अजायबात

यहाँ उन्होंने अजीब व ग़रीब ख़िलाफ़े आदत चीज़ें देखीं जैसे बादल का साया उन पर होना, मन्न व सल्वा का उतरना, एक ठोस पत्थर से जो उनके साथ था पानी का निकलना। हज़रत मूसा ने उस पत्थर पर एक लकड़ी मारी तो फ़ौरन ही उससे बारह चश्मे पानी के जारी हो गये और हर क़बीले की तरफ़ एक चश्मा बह निकला। इसके अलावा और भी बहुत से मोजिज़े बनी इस्राईल ने वहाँ पर देखे। यहीं तौरात उतरी, यहीं अहकामे ख़ुदा नाज़िल हुए वग़ैरह वग़ैरह। इसी मैदान में चालीस साल तक ये घूमते फिरते रहे लेकिन कोई राह वहाँ से निकल जाने की उन्हें नहीं मिली। हाँ बादल का साया कर दिया गया और मन्न व सल्वा उतार दिया गया। एक लम्बी हदीस में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से यह नक़ल किया गया है। फिर हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात हो गई और उसके तीन साल बाद कलीमुल्लाह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी इन्तिक़ाल फ़रमा गये, फिर आपके ख़लीफ़ा हज़रत यूशा बिन नून अ़लैहिस्सलाम नबी बनाये गये, इस दौरान में बहुत से बनी इस्राईल मर-मरा चुके थे, बल्कि यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ हज़रत यूशा और कालिब ही बाक़ी रहे थे।

इस चालीस साल की मुद्दत के गुज़र जाने के बाद जो भी बाक़ी थे उन्हें लेकर हज़रत यूशा अ़लैहिस्सलाम निकले और दूसरे पहाड़ से बाक़ी बनी इस्राईल उनके साथ हो लिये और आपने बैतुल मुक़द्दस का घेराव कर लिया। जुमे के दिन अ़सर के बाद जबकि फ़तह का वक़्त आ पहुँचा दुश्मनों के क़दम उखड़ गये इतने में सूरज डूबने लगा और सूरज के डूबने के बाद हफ़्ते (शनिवार के दिन) की ताज़ीम की वजह से लड़ाई हो नहीं सकती थी, इसलिये अल्लाह तआला के नबी ने फ़रमाया ऐ सूरज तू भी ख़ुदा का ग़ुलाम है और मैं भी ख़ुदा का महकूम हूँ। ऐ अल्लाह! इसे ज़रा सी देर रोक दे, चुनाँचे हुक्मे ख़ुदा से सूरज रुक गया और आपने इत्मीनान के साथ बैतुल-मुक़द्दस को फ़तह कर लिया।

ख़ुदा तआला का हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल से कह दो कि इस शहर के दरवाज़े में सज्दा करते हुए जायें और 'हित्ततुन्' कहें यानी ख़ुदाया हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा, लेकिन उन्होंने ख़ुदा के हुक्म को बदल दिया, रानों पर घिसटते हुए और ज़बान से "हब्बतुन फ़ी शअ़रतिन्" कहते हुए शहर में गये (जिसका मतलब है कि एक दाना जौ का, यह एक तरह से उन्होंने अल्लाह के हुक्म का मज़ाक़ उड़ाया)। इसकी ज़्यादा तफ़सील सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में गुज़र चुकी है।

दूसरी रिवायत में इतना और है कि इस क़द्र माले ग़नीमत उन्हें हासिल हुआ कि इतना माल कभी उन्होंने देखा न था। फ़रमाने ख़ुदा के मुताबिक़ उसे आग में जलाने के लिये आग के पास ले गये, लेकिन आग ने उसे न जलाया, इस पर उनके नबी हज़रत यूशा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम में से किसी ने इसमें से कुछ चुरा लिया है, पस मेरे पास हर क़बीले का सरदार आये और मेरे हाथ पर बैअ़त करे। चुनाँचे यूँ ही किया गया, एक क़बीले के सरदार का हाथ अल्लाह के नबी के हाथ से चिपक गया, आपने फ़रमाया तेरे पास वह ख़ियानत की चीज़ है, जा उसे ले आ। उसने एक गाय का सर सोने का बना हुआ पेश किया जिसकी आँखें याक़ूत (जवाहिरात) की थीं और दाँत मोतियों के थे, जब वह भी दूसरे माल के साथ डाल

Maktab E Ashraf

दिया गया अब आग ने सब माल को जला दिया। इमाम इब्ने जरीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने भी इसी क़ौल को पसन्द किया है:

'अरबअ़ी-न स-नतन्' में 'फ़-इन्नहा मुहर्रमतुन्' आ़मिल है, और बनी इस्राईल की यह जमाअ़त चालीस बरस तक उसी मैदाने तीह में परेशान रही, फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ ये लोग निकले और बैतुल-मुक़द्दस को फ़तह किया। इसकी दलील पहले उलेमा-ए-यहूद का इजमा (एक राय होना) है, कि औ़ज बिन उनुक़ को हज़रत कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने ही क़त्ल किया है तो उसका क़त्ल अ़मालीक़ की इस जंग से पहले का होता तो कोई वजह न थी कि बनी इस्राईल जंगे अ़मालीक़ का इनकार कर बैठते? तो मालूम हुआ कि यह वाक़िआ़ तीह से निकलने के बाद का है।

यहूद के उलेमा का इस पर भी इजमा (यानी सबकी एक राय) है कि बलअ़म बिन बाऊर ने क़ौमे अ़मालीक़ के नाफ़रमानों की मदद की और उसने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर बद्दुआ़ की। यह वाक़िआ़ भी उस मैदान की क़ैद से छूटने के बाद का है, इसलिये कि उससे पहले तो सरकशों को मूसा और उनकी क़ौम से कोई डर न था। इब्ने जरीर की यही दलील है, वह भी कहते हैं कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का अ़सा (लाठी) दस हाथ का था, और दस हाथ ऊपर उछल कर आपने औ़ज बिन उनुक़ को वह अ़सा मारा था जो उसके टख़्ने पर लगा और वह मर गया। उसके जुस्से (शरीर) से दरिया-ए-नील का पुल बनाया गया था जिस पर से साल भर तक लोग आते-जाते रहे। नोफ़ बक्काली कहते हैं कि उसका तख़्त तीन सौ गज़ का था।

फिर अल्लाह तआ़ला अपने नबी को तसल्ली देते हुए फ़रमाता है कि तू अपनी क़ौम बनी इस्राईल पर ग़म व रंज न कर, वे इसी जेलख़ाने के हक़दार हैं। इस वाक़िए में यहूदियों को डाँट-डपट है और उनकी मुख़ालफ़तों और बुराईयों का बयान है कि ये ख़ुदा के दुश्मन सख़्ती के वक़्त ख़ुदा के दीन पर क़ायम नहीं रहते, रसूलों की पैरवी से इनकार कर जाते हैं, जिहाद से जी चुराते हैं ख़ुदा के इस कलीम व बुज़ुर्ग रसूल की मौजूदगी का, उनके वादे का, उनके हुक्म का कोई पास उन्होंने नहीं किया। दिन रात मोजिज़े देखते थे, फ़िरऔ़न की बरबादी अपनी आँखों से देख ली थी और उसे कुछ ज़माना भी न गुज़रा था कि ख़ुदा तआ़ला अपने कलीम पैग़म्बर के साथ हैं, वह नुसरत व फ़तह के वादे कर रहे हैं, मगर ये हैं कि अपनी बुज़दिली में मरे जा रहे हैं। और न सिर्फ़ इनकार बल्कि बेबाकी के साथ इनकार करते हैं, नबी की बेअदबी करते हैं और साफ़ जवाब दे देते हैं। अपनी आँखों देख चुके हैं कि फ़िरऔ़न जैसे शान व शौकत वाले बादशाह को उसके साज़ व सामान और लश्कर समेत उस रब ने डूबो दिया, लेकिन फिर भी उस बस्ती वालों की तरफ़ ख़ुदा के भरोसे पर उसके हुक्म की मातहती में बढ़ते, हालाँकि ये तो फ़िरऔ़न के दसवें हिस्से में भी न थे। पस ख़ुदा का ग़ज़ब उन पर नाज़िल होता है, उनकी बुज़दिली दुनिया पर ज़ाहिर हो जाती है और आये दिन उनकी रुस्वाई और ज़िल्लत बढ़ती जाती है। ये अगरचे अपने आपको ख़ुदा के महबूब और प्यारे जानते थे लेकिन हक़ीक़त इसके बिल्कुल विपरीत थी। रब की नज़रों से ये गिर गये थे, दुनिया में इन पर तरह-तरह के अ़ज़ाब आये, सुअर बन्दर भी बनाये गये, हमेशा की लानत में यहाँ गिरफ़्तार होकर आख़िरत के हमेशा वाले अ़ज़ाब का शिकार हो गये। पस तमाम तारीफ़ उस ख़ुदा के लिये है जिसकी फ़रमाँबरदारी तमाम भलाईयों की कुंजी (चाबी) है।

Maktab E Ashraf

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ۝

النصف

और आप इन अहले किताब को आदम के दो बेटों का क़िस्सा सही तौर पर पढ़कर सुनाईये, जबकि दोनों ने एक-एक नियाज़ पेश की और उनमें से एक की तो मक़बूल हो गई और दूसरे की मक़बूल न हुई। (वह दूसरा) कहने लगा कि मैं तुझको ज़रूर क़त्ल करूँगा, (उस एक ने) जवाब दिया कि ख़ुदा तआ़ला मुत्तक़ियों का ही अ़मल क़बूल करते हैं। (27) अगर तू मुझ पर मेरे क़त्ल करने के लिए दस्त-दराज़ी करेगा जब भी मैं तुझपर तेरे क़त्ल करने के लिए हरगिज़ दस्त-दराज़ी करने वाला नहीं, मैं तो ख़ुदा परवर्दिगारे आ़लम से डरता हूँ। (28) मैं (यूँ) चाहता हूँ कि तू मेरे गुनाह और अपने गुनाह सब अपने सर रख ले, फिर तू दोज़ख़ियों में शामिल हो जाये, और यही सज़ा होती है ज़ुल्म करने वालों की। (29) सो उसके जी ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर दिया, फिर उसको क़त्ल ही कर डाला जिससे बड़े नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया। (30) फिर अल्लाह तआ़ला ने एक कौआ भेजा कि वह ज़मीन को खोदता था ताकि उसको तालीम कर दे कि अपने भाई की लाश को किस तरीक़े से छुपाये। कहने लगा कि अफ़सोस मेरी हालत पर! क्या मैं इससे भी गया गुज़रा कि इस कौए ही के बराबर होता और अपने भाई की लाश को छुपा देता, सो बड़ा शर्मिन्दा हुआ। (31)

रू-ए-ज़मीन पर पहला क़त्ल

इस क़िस्से में हसद व बुग़्ज़, नाफ़रमानी और तकब्बुर का बुरा अन्जाम बयान हो रहा है, कि किस तरह हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के दो सगे बेटों में कश्मकश हो गई और एक अल्लाह का होकर मज़लूम बनकर मार डाला गया और अपना ठिकाना जन्नत में बना लिया, और दूसरे ने उसे ज़ुल्म व ज़्यादती के साथ बेवजह क़त्ल किया और दोनों जहान में बरबाद हुआ। इरशाद है ऐ नबी! इन्हें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के दोनों बेटों का सही-सही बिना कम-ज़्यादा किये क़िस्सा सुना दो। उन दोनों का नाम हाबील

व क़ाबील था। रिवायत है कि चूँकि उस वक़्त दुनिया की इब्तिदाई (प्रारंभिक) हालत थी, इसलिये यूँ होता था कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के यहाँ एक हमल (गर्भ) से लड़का लड़की दो होते थे, फिर दूसरे हमल (गर्भ) से भी इसी तरह, तो उसका लड़का और दूसरे हमल की लड़की इन दोनों का निकाह करा दिया जाता था। हाबील की बहन तो ख़ूबसूरत न थी और क़ाबील की बहन ख़ूबसूरत थी, तो क़ाबील ने चाहा कि अपनी ही बहन से अपना निकाह कर ले। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने उसे मना किया, आख़िर यह फ़ैसला हुआ कि तुम दोनों ख़ुदा के नाम पर कुछ निकालो, जिसकी ख़ैरात क़बूल हो जाये उसका निकाह इसके साथ कर दिया जायेगा। हाबील की ख़ैरात क़बूल हो गई, जिसका सारा बयान क़ुरआन की इन आयतों में है।

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) के अक़वाल सुनिये- हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की अपनी सगी औलाद के निकाह का क़ायदा जो ऊपर मज़कूर हुआ, उसको बयान फ़रमाने के बाद रिवायत है कि बड़ा भाई क़ाबील खेती करता था और हाबील जानवरों वाला था। क़ाबील की बहन हाबील की बहन के मुक़ाबले में ख़ूबसूरत थी। जब हाबील की मंगनी उससे हुई तो क़ाबील ने इनकार कर दिया और अपना निकाह उससे करना चाहा। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने इससे रोका, अब दोनों ने ख़ैरात निकाली कि जिसकी क़बूल हो जाये वह निकाह का ज़्यादा हक़दार है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त मक्का चले गए कि देखें क्या होता है। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया ज़मीन पर जो मेरा घर है उसे जानते हो? आपने कहा नहीं, हुक्म हुआ मक्का में है, वहीं जाओ। हज़रत आदम ने आसमान से कहा मेरे बच्चों की तू हिफ़ाज़त करेगा? उसने इनकार किया। ज़मीन से भी कहा वह भी इनकारी हो गई। पहाड़ों से कहा उन्होंने भी इनकार कर दिया। क़ाबील से कहा उसने कहा हाँ मैं मुहाफ़िज़ हूँ आप जाईये, आकर आप देख लेंगे और ख़ुश होंगे।

अब हाबील ने एक ख़ूबसूरत, मोटा-ताज़ा भेड़ा ख़ुदा के नाम पर ज़िबह किया और बड़े भाई ने अपनी खेती का हिस्सा अल्लाह के नाम पर निकाला। आग आई और हाबील की नज़्र (ख़ैरात) तो जला गई जो उस ज़माने में क़बूलियत की निशानी थी और क़ाबील की नज़्र क़बूल न हुई, उसकी खेती यूँ ही रह गई। उसने अल्लाह की राह में निकालने के बाद उसमें से अच्छी-अच्छी बालें तोड़कर खा ली थीं। चूँकि क़ाबील मायूस हो चुका था कि उसके निकाह में उसकी बहन नहीं आयेगी, इसलिये अपने भाई को क़त्ल की धमकी दी। उसने कहा अल्लाह तआ़ला तक़्वे वालों की क़ुरबानी क़बूल करता है, इसमें मेरा क्या क़सूर है?

एक रिवायत में है कि यही भेड़ा जन्नत में पलता रहा और यही वह भेड़ा है जिसे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बच्चे के बदले ज़िबह किया। एक रिवायत में है कि हाबील ने अपने जानवरों में से बेहतरीन और पसन्दीदा व महबूब जानवर ख़ुदा के नाम पर क़ुरबान किया था और ख़ुशी के साथ। इसके उलट उसके भाई क़ाबील ने अपनी खेती में से निहायत रद्दी और बेकार चीज़ें और वह भी बुरे दिल के साथ ख़ुदा के नाम पर निकाली थीं। हाबील सेहत और ताक़त में क़ाबील से ज़्यादा था, फिर भी ख़ुदा के ख़ौफ़ की वजह से उसने अपने भाई का ज़ुल्म व ज़्यादती बरदाश्त की और हाथ न उठाया। बड़े भाई की क़ुरबानी जब क़बूल न हुई और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने उससे कहा तो उसने कहा कि आप चूँकि हाबील को जानते हैं, इसलिये दुआ़ की तो उसकी दुआ़ क़बूल हो गई। अब उसने ठान ली कि मैं इस काँटे ही को उखाड़ डालूँ। मौक़े का मुन्तज़िर था इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ हज़रत हाबील के आने में देर हो गई तो उन्हें बुलाने के लिये हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने क़ाबील को भेजा, यह एक छुरी अपने साथ छुपाकर चला,

रास्ते में ही दोनों भाईयों की मुलाक़ात हो गई तो उसने कहा मैं तुझे मार डालूँगा, क्योंकि तेरी क़ुरबानी क़बूल हुई और मेरी न हुई। इस पर हाबील ने कहा मैंने बेहतरीन और उम्दा, पसन्दीदा और अच्छी चीज़ अल्लाह के नाम पर निकाली और तूने रद्दी चीज़ें, अल्लाह तआ़ला मुतक़्क़ियों ही की नेकी क़बूल करता है। इस पर वह और बिगड़ा और छुरी उनको भोंक दी। हाबील कहते ही रह गये कि ख़ुदा को क्या जवाब देगा? अल्लाह के यहाँ इस ज़ुल्म का बदला तुझसे बुरी तरह लिया जायेगा। अल्लाह का ख़ौफ कर मुझे क़त्ल न कर। लेकिन उस बेरहम ने अपने भाई को मार ही डाला। क़ाबील ने अपनी ही जुड़वाँ बहन से अपना निकाह करने की एक यह वजह भी बयान की थी कि हम दोनों जन्नत में पैदा हुए हैं और ये दोनों ज़मीन में पैदा हुए हैं, इसलिये मैं ही इसका हक़दार हूँ। यह भी रिवायत है कि क़ाबील ने गेहूँ निकाले थे और हाबील ने गाय की क़ुरबानी की थी। चूँकि उस वक़्त कोई मिस्कीन तो था ही नहीं जिसे सदक़ा दिया जाये, इसलिये यही दस्तूर था कि सदक़ा निकाल देते, आसमान से आग आती और उसे जला जाती। यह निशान था क़बूलियत का, इस बरतरी से जो छोटे भाई को हासिल हुई बड़ा भाई ख़ार खा गया और उसके क़त्ल पर उतर आया।

यूँ ही बैठे-बैठे दोनों भाईयों ने क़ुरबानी की थी, निकाह के विवाद को मिटाने की वजह न थी, क़ुरआन के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ का तक़ाज़ा भी यही है कि नाराज़गी का सबब क़ुरबानी का क़बूल न होना था, न कि कुछ और। एक रिवायत इन दर्ज हुई रिवायतों के ख़िलाफ़ भी है कि क़ाबील ने खेती ख़ुदा के नाम पर भेंट कर दी थी जो क़बूल हुई, लेकिन मालूम होता है कि इसमें रिवायत करने वाले का हाफ़ज़ा (याद्दाश्त) ठीक नहीं और यह मशहूर बात के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। वल्लाहु आलम

अल्लाह तआ़ला उसका अ़मल क़बूल करता है जो अपने फ़ेल में उससे डरता रहे। हज़रत मुआ़ज़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि लोग मैदाने क़ियामत में होंगे कि एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) ऐलान करेगा कि परहेज़गार कहाँ हैं? पस परवर्दिगार से डरने वाले खड़े हो जायेंगे और ख़ुदा के बाज़ू के नीचे जाकर ठहरेंगे, अल्लाह तआ़ला उनसे न अपना चेहरा छुपायेगा न पर्दा करेगा। हदीस के बयान करने वाले अबू अ़फ़ीफ़ से दरियाफ़्त किया गया कि मुत्तक़ी कौन हैं? फ़रमाया जो शिर्क और बुत-परस्ती से बचे और ख़ालिस ख़ुदा तआ़ला की इबादत करे। फिर ये सब लोग जन्नत में जायेंगे।

जिस नेकबख़्त की क़ुरबानी क़बूल की गई थी वह अपने भाई के इस इरादे को सुनकर कहता है कि ख़ैर तू जो चाहे कर मैं तो तेरी तरह नहीं करूँगा। बल्कि मैं सब्र कर लूँगा। थे तो ज़ोर व ताक़त में यह उससे ज़्यादा, मगर अपनी भलाई, नेकबख़्ती और तवाज़ो व विनम्रता और परहेज़गारी की वजह से यह फ़रमाया कि तू गुनाह पर आमादा हो जाये लेकिन मुझसे इस जुर्म का इर्तिकाब नहीं होगा, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ वह तमाम जहान का रब है।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि जब दो मुसलमान तलवार लेकर भिड़ गये तो क़ातिल मक़्तूल दोनों जहन्नम में हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा क़ातिल तो ख़ैर! लेकिन मक़्तूल क्यों हुआ? आपने फ़रमाया इसलिये कि वह भी अपने साथी के क़त्ल पर आमादा था। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. ने उस वक़्त जबकि बाग़ियों ने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि. को घेर रखा था, कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया है कि जल्द ही फ़ितना बरपा होगा, बैठा रहना वाला उस वक़्त खड़े रहने वाले से बेहतर होगा, और खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा, और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। किसी ने पूछा हुज़ूर! अगर कोई मेरे घर में भी घुस आये और मुझे क़त्ल करना चाहे? तो आपने

Maktab E Ashraf

Maktaba E Ashraf

फ़रमाया फिर भी तू हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बेटे की तरह हो जा। एक रिवायत में आपका इसके बाद इस आयत को तिलावत करना भी नक़ल किया गया है।

हज़रत अय्यूब सख़्तियानी रह. फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में सबसे पहले जिसने इस आयत पर अ़मल किया वह अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. हैं। एक बार एक जानवर पर हुज़ूर सल्ल. सवार थे और आपके साथ ही आपके पीछे हज़रत अबूज़र थे। आपने फ़रमाया अबूज़र! बताओ तो जब लोगों पर ऐसे फ़ाक़े आयेंगे कि घर से मस्जिद तक न जा सकेंगे तो तू क्या करेगा? मैंने कहा जो हुक्मे ख़ुदा और रसूल हो। फ़रमाया सब्र करो। फिर फ़रमाया जबकि आपस में ख़ूँरेज़ी (रक्तपात) होगी यहाँ तक कि रेत के पत्थर भी ख़ून में डूब जायेंगे तो तू क्या करेगा? मैंने वही जवाब दिया तो फ़रमाया कि अपने घर में बैठ जा और दरवाज़े बन्द कर ले। कहा फिर अगरचे में न उतरूँ? फ़रमाया तू उनमें चला जा जिनका तू है और वहीं रह। अ़र्ज़ किया कि फिर मैं अपने हथियार ही क्यों न ले लूँ? फ़रमाया फिर तो तू भी उनके साथ शामिल हो जायेगा, बल्कि अगर तुझे किसी तलवार की किरनें परेशान करती नज़र आयें तो भी अपने मुँह पर कपड़ा डाल ले, ताकि तेरे और ख़ुद अपने गुनाहों को वही ले जाये।

हज़रत रबओ़ी रह. फ़रमाते हैं कि हम हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. के जनाज़े में थे कि एक साहिब ने फ़रमाया मैंने मरहूम से सुना है, आप रसूलुल्लाह सल्ल. की सुनी हुई हदीसें बयान फ़रमाते हुए कहते थे कि अगर तुम आपस में लड़ोगे तो मैं अपने सब से दूर-दराज़ के घर में चला जाऊँगा और उसे बन्द करके बैठ जाऊँगा। अगर वहाँ भी कोई घुस आयेगा तो मैं कह दूँगा कि ले अपना और मेरा गुनाह अपने सर पर रख ले। पस मैं हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के उन दो बेटों में से जो बेहतर था उसकी तरह हो जाऊँगा। मैं तो चाहता हूँ कि तू मेरा और अपना गुनाह अपने सर पर रखकर ले जाये, यानी तेरे वे गुनाह जो इससे पहले के हैं और मेरे क़त्ल का गुनाह भी। यह मतलब भी हज़रत मुजाहिद रह. से मन्क़ूल है कि मेरी ख़तायें भी तुझ पर आ पड़ें और मेरे क़त्ल का गुनाह भी, लेकिन उन्हीं से एक क़ौल पहले जैसा भी है। मुम्किन है यह दूसरा साबित न हो, इसी बिना पर बाज़ लोग कहते हैं कि क़ातिल मक़्तूल के सब गुनाह अपने ऊपर ले लेता है। और इस मायने की एक हदीस भी बयान की जाती है लेकिन उसकी कोई असल नहीं।

बज़्ज़ार में एक हदीस में है कि बिना वजह क़त्ल होना तमाम गुनाहों को मिटा देता है। अगरचे यह हदीस ऊपर वाले मायने में नहीं लेकिन यह भी सही नहीं, और इस रिवायत का मतलब यह भी है कि क़त्ल की तकलीफ़ और पीड़ा के सबब अल्लाह तआ़ला मक़्तूल के सब गुनाह माफ़ कर देता है। अब वे क़ातिल पर आ जाते हैं। यह बात साबित नहीं, मुम्किन है बाज़ क़ातिल ऐसे भी हों। क़ातिल को मैदाने क़ियामत में मक़्तूल ढूँढता फिरेगा और उसके ज़ुल्म के मुताबिक़ नेकियाँ लेता जायेगा, और अगर सब नेकियाँ ले लेने के बाद भी उस ज़ुल्म की तलाफ़ी (भरपाई) न हुई तो मक़्तूल के गुनाह क़ातिल पर रख दिये जायेंगे, यहाँ तक कि बदला हो जाये। मुम्किन है कि सारे ही गुनाह बाज़ क़ातिलों के सर पर पड़ जायें, क्योंकि ज़ुल्म के इस तरह के बदले के लिये जो हदीसों से साबित हैं, और यह ज़ाहिर है कि क़त्ल सबसे बड़ा ज़ुल्म है और सबसे बुरा। वल्लाहु आलम

इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- मतलब इस जुमले का ज़्यादा सही यही है कि मैं चाहता हूँ कि तू अपने गुनाह और मेरे क़त्ल के गुनाह सब ही अपने ऊपर ले ले, तेरे और गुनाहों के साथ एक गुनाह यह भी बढ़ जाये। इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं कि मेरे गुनाह भी तुझ पर आ जायें। इसलिये कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि हर आ़मिल (कोई काम करने वाले) को उसके अ़मल की जज़ा सज़ा (यानी

Maktab E Ashraf

अच्छा बुरा बदला) मिलती है, फिर यह कैसे हो सकता है कि मक़्तूल के उम्र भर के गुनाह क़ातिल पर डाल दिये जायें और उसके गुनाहों पर इसकी पकड़ हो? बाक़ी रही यह बात कि फिर हाबील ने यह बात अपने भाई से क्यों कही? इसका जवाब यह है कि उसने आख़िरी बार नसीहत की और डराया कि इस काम से बाज़ आ जा, वरना गुनाहगार होकर जहन्नम का हक़दार हो जायेगा, क्योंकि मैं तो तेरा मुक़ाबला करने का ही नहीं, तो सारा बोझ तुझ पर ही होगा और तू ही ज़ालिम ठहरेगा, और ज़ालिमों का ठिकाना जहन्नम है। बावजूद इस नसीहत के भी उसके नफ़्स ने उसे धोखा दिया और गुस्से, हसद और तकब्बुर में आकर अपने भाई को क़त्ल कर दिया। उसे शैतान ने क़त्ल पर उभार दिया और उसने अपने नफ़्से अम्मारा की पैरवी कर ली, और लोहे से उसे मार डाला।

एक रिवायत में है कि यह अपने जानवरों को लेकर पहाड़ों पर चले गये थे, यह ढूँढता हुआ वहाँ पहुँचा और एक बड़ा भारी पत्थर उठाकर उनके सर पर दे मारा, यह उस वक़्त सोये हुए थे। बाज़ कहते हैं कि दरिन्दे की तरह काट-काटकर और गला दबा-दबाकर उनकी जान ली। यह भी कहा गया है कि शैतान ने जब देखा कि इसे क़त्ल करने का ढंग नहीं आता, यह उसकी गर्दन मरोड़ रहा है तो उस मरदूद ने एक जानवर को पकड़ा और उसका सर एक पत्थर पर रखकर ऊपर से दूसरा पत्थर ज़ोर से मारा, जिससे वह जानवर उसी वक़्त मर गया। यह देखकर उसने भी अपने भाई के साथ यही किया। यह भी नक़ल किया गया है कि चूँकि अब तक ज़मीन पर कोई क़त्ल न हुआ था तो क़ाबील अपने भाई को गिराकर कभी उसकी आँखें बन्द करता, कभी उसे थप्पड़ और घूँसे मारता, यह देखकर इब्लीस उसके पास आया और उसे बतलाया कि पत्थर लेकर इसका सर कुचल डाल। जब उसने कुचल डाला तो शैतान दौड़ता हुआ हज़रत हव्वा अ़लैहस्सलाम के पास आया और कहा- क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया। उन्होंने कहा क़त्ल कैसे होता है? कहा अब न वह खाता है न पीता है, न बोलता चालता है न हिलता डुलता है, कहा शायद मौत आ गई। उसने कहा हाँ वही मौत। इस पर हव्वा चीख़ने चिल्लाने लगीं, इतने में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम आये, पूछा क्या बात है? लेकिन यह जवाब न दे सकीं। आपने दोबारा दरियाफ़्त फ़रमाया लेकिन रंज व ग़म की ज़्यादती की वजह से उनकी ज़बान न उठी तो कहा अच्छा तू और तेरी बेटियाँ हाय-वाय में ही रहेंगी और मैं और मेरे बेटे इससे बरी हैं। क़ाबील ख़सारे, घाटे और नुक़सान वाला हो गया, दुनिया और आख़िरत दोनों ही बिगड़ीं।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो इनसान ज़ुल्म से क़त्ल किया जाता है उसके ख़ून का बोझ आदम अ़लैहिस्सलाम के उस लड़के पर भी पड़ता है, इसलिये कि उसी ने सबसे पहले रू-ए-ज़मीन पर नाहक़ ख़ून गिराया है। मुजाहिद का क़ौल है कि क़ातिल के एक पैर की पिन्डली को रान से उस दिन से लटका दिया गया और उसका मुँह सूरज की तरफ़ कर दिया, वह सूरज के घूमने के साथ घूमता रहता है। जाड़ों और गर्मियों में आग और बर्फ़ के गड्ढे में वह अ़ज़ाब में गिरफ़्तार है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि जहन्नम का आधों-आध अ़ज़ाब सिर्फ़ उस एक को हो रहा है, सबसे बड़ा अ़ज़ाब पाने वाला यही है। ज़मीन के हर क़त्ल के गुनाह में उसका भी हिस्सा है। इब्राहीम नख़ई रह. फ़रमाते हैं कि उस पर और शैतान पर हर नाहक़ ख़ून का बोझ पड़ता है।

जब मार डाला तो अब यह मालूम न था कि क्या करे, किस तरह उसे छुपाये? तो अल्लाह तआ़ला ने दो कौए भेजे, वे दोनों आपस में भाई-भाई थे, ये उसके सामने लड़ने लगे, यहाँ तक कि एक ने दूसरे को मार डाला, फिर एक गड्ढा खोदकर उसमें उसकी लाश को रखकर ऊपर से मिट्टी डाल दी। यह देखकर

क़ाबील की समझ में भी यही तरकीब आ गई और उसने भी ऐसा ही किया। हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि अपने आप मरे हुए एक कौए को दूसरे कौए ने इसी तरह गड्ढा खोदकर दफ़न किया था। यह भी रिवायत है कि साल भर तक तो क़ाबील अपने भाई की लाश अपने काँधे पर लाद फिरता रहा, फिर कौए को देखकर अपने नफ़्स पर मलामत करने लगा कि मैं इतना भी न कर सका। यह भी कहा गया है कि मार डालकर फिर बहुत पछताया और लाश को गोद में रखकर बैठ गया और इसलिये भी कि सबसे पहली मय्यित और सबसे पहला क़त्ल रू-ए-ज़मीन पर यही था।

अहले तौरात कहते हैं कि जब क़ाबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल किया तो अल्लाह ने उससे पूछा कि तेरे भाई हाबील को क्या हुआ? उसने कहा मुझे क्या ख़बर, मैं उसका निगहबान (सुरक्षा कर्मी) तो था ही नहीं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तेरे भाई का ख़ून ज़मीन में से मुझे पुकार रहा है, तुझ पर मेरी लानत है। इस ज़मीन में जिसका मुँह खोलकर तूने उस अपने बेगुनाह भाई का ख़ून पिलाया है अब तू ज़मीन में जो कुछ काम करेगा वह अपनी खेती तुझे नहीं देगी, जब तक कि तू उसमें मेहनत और जिद्दोजहद न करे, तो उसने इस काम को कर लिया, लेकिन फिर तो बड़ा ही नादिम हुआ। नुक़सान के साथ ही पछतावा, गोया अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब था।

इस क़िस्से में मुफ़स्सिरीन के अक़वाल इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ये दोनों हज़रत आदम के सगे बेटे थे, और यही क़ुरआन के अलफ़ाज़ से बज़ाहिर मालूम होता है, और यही हदीस में भी है कि रू-ए-ज़मीन पर जो नाहक़ और बेख़ता क़त्ल होता है उसके गुनाह का एक हिस्सा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के उस पहले लड़के पर होता है, इसलिये कि उसी ने सबसे पहले क़त्ल का तरीक़ा ईजाद किया है, लेकिन हसन बसरी रह. का क़ौल है कि ये दोनों बनी इस्राईल में से थे, क़ुरबानी सबसे पहले इन्हीं में और ज़मीन पर सबसे पहले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हुआ है, लेकिन यह क़ौल ग़ौर-तलब है, और इसकी सनद भी सही नहीं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि यह वाक़िआ़ बतौर एक मिसाल के है, तुम इसमें से अच्छाई ले लो और बुरे को छोड़ दो। यह हदीस मुर्सल है।

कहते हैं कि इस सदमे से हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम बहुत ग़मगीन हुए और साल भर तक उन्हें हंसी न आई। आख़िर फ़रिश्तों ने उनके ग़म के दूर होने की और उन्हें हंसी आने की दुआ़ की। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने उस वक़्त अपने रंज व ग़म में यह भी कहा था कि शहर और शहर की सब चीज़ें तब्दील हो गईं, ज़मीन का रंग बदल गया और वह अत्यंत बदसूरत हो गई। हर हर चीज़ का रंग व मज़ा जाता रहा, और कशिश वाले चेहरों की नमकीनी भी ख़त्म हो गई। इस पर उन्हें जवाब दिया गया कि उस मुर्दे के साथ ज़िन्दा ने भी गोया अपने आपको हलाक कर दिया और जो बुराई क़ातिल ने की थी उसका बोझ उस पर आ गया। बज़ाहिर मालूम होता है कि क़ाबील को उसी वक़्त कोई सज़ा दी गई। चुनाँचे बयान किया गया है कि उसकी पिन्डली उसकी रान से लटका दी गई और उसका मुँह सूरज की तरफ़ कर दिया गया वह उसके साथ ही साथ घूमता रहता था, यानी जिधर सूरज होता उधर ही उसका मुँह उठा रहता। हदीस शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जितने गुनाह इस लायक़ हैं कि बहुत जल्दी उनकी सज़ा दुनिया में भी दी जाये और फिर आख़िरत के ज़बरदस्त अ़ज़ाब बाक़ी रहें, उनमें सबसे बढ़कर गुनाह सरकशी (अल्लाह की नाफ़रमानी) और क़ता-रहमी (रिश्तेदारी का ख़त्म करना) है, तो क़ाबील में ये दोनों बातें जमा हो गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।

Maktab E Ashraf

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِىْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا ۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ
اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ
جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا
النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا
بِالْبَيِّنٰتِ ۫ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ
فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا
الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ
فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا
اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ
اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ
فِى الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ ع ٥

इसी वजह से हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी शख़्स को बिना मुआवज़ा दूसरे शख़्स के या बिना किसी फ़साद के (जो ज़मीन में उससे फैला हो) क़त्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को क़त्ल कर डाला। और जो शख़्स किसी शख़्स को बचा ले तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया, और उनके (यानी बनी इस्राईल के) पास हमारे बहुत-से पैग़म्बर भी खुले दलाईल लेकर आए, फिर उसके बाद भी उनमें से बहुत-से दुनिया में ज़्यादती करने वाले ही रहे। (32) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और मुल्क में फ़साद फैलाते फिरते हैं, उनकी यही सज़ा है कि क़त्ल किए जाएँ या सूली दिए जाएँ या उनके हाथ और पाँव विपरीत दिशा से काट दिए जाएँ या ज़मीन पर से निकाल दिए जाएँ। यह उनके लिए दुनिया में सख़्त रुस्वाई है और उनको आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब होगा। (33) हाँ मगर जो लोग इससे पहले कि तुम उनको गिरफ़्तार करो तौबा कर लें तो जान लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्श देंगे, मेहरबानी फ़रमा देंगे। (34)

इनसान का क़त्ल कायनात का क़त्ल है

इरशाद है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के उस लड़के के नाहक़ क़त्ल की वजह से हमने बनी इस्राईल में लिख दिया और उनके लिये इस हुक्म को हुक्मे शरई कर दिया कि जो शख़्स किसी एक को बिना वजह मार डाले, न उसने किसी को क़त्ल किया था न उसने ज़मीन में फ़साद फैलाया था, तो गोया उसने तमाम लोगों को क़त्ल किया। इसलिये कि ख़ुदा के नज़दीक सारी मख़्लूक़ बराबर है, और जो किसी बेक़सूर शख़्स के क़त्ल से रुका रहे, उसे हराम जाने, तो गोया उसने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा। इसलिये कि सब लोग इस तरह सलामती के साथ रहेंगे।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ि. को जब बाग़ी घेर लेते हैं तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. उनके

पास जाते हैं और कहते हैं मैं आपकी तरफ़दारी में आपके मुख़ालिफ़ों से लड़ने के लिये आया हूँ। आप ज़रा ध्यान दीजिये कि अब पानी सर से ऊँचा हो गया है। यह सुनकर बेगुनाह ख़लीफ़ा ने फरमाया- क्या तुम इस बात पर आमादा हो कि सब लोगों को क़त्ल कर दो, जिनमें एक मैं भी हूँ? हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया नहीं नहीं। फ़रमाया सुनो एक को क़त्ल करना ऐसा बुरा है जैसे सब का क़त्ल करना, जाओ वापस लौट जाओ, यही मेरी ख़्वाहिश है, अल्लाह तुम्हें अज्र दे, और गुनाह न दे। यह सुनकर आप वापस लौट गये और न लड़े। मतलब यह है कि क़त्ल का इक़्दाम (अपनी तरफ़ से शुरूआ़त और पहल) दुनिया की बरबादी का सबब है, और उससे रुक जाना लोगों की ज़िन्दगी का सबब है। हज़रत सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि एक मुसलमान का ख़ून हलाल करने वाला तमाम लोगों का क़ातिल है, और एक मुस्लिम के ख़ून को बचाने वाला तमाम लोगों के ख़ून को गोया बचा रहा है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल. को और इन्साफ़ करने वाले मुस्लिम बादशाह को क़त्ल करने वाले पर सारी दुनिया के इनसानों के क़त्ल का गुनाह है, और नबी और इमामे आ़दिल के मक़सद को मज़बूत कर देना ज़िन्दगी देना है। (इब्ने जरीर)

एक और रिवायत में है कि एक (इनसान) को बेवजह मार डालते ही जहन्नमी हो जाता है, गोया सब को मार डाला। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि मोमिन को बिना किसी शरई वजह के मार डालने वाला जहन्नमी, ख़ुदा का दुश्मन, मलऊन और सज़ा का मुस्तहिक़ हो जाता है। फिर अगर वह सब लोगों को भी मार डालता तो इससे ज़्यादा अ़ज़ाब उसे और क्या होता? जो क़त्ल से रुक जाये गोया कि उसकी तरफ़ से सब की ज़िन्दगी सुरक्षित है। अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि एक क़त्ल के बदले ही उसका ख़ून हलाल हो गया, यह नहीं कि कई एक को क़त्ल करे तब ही वह क़िसास के क़ाबिल हो, और जो उसे बचा ले यानी क़ातिल के वली (सरपरस्त) से माफ़ करे उसने गोया लोगों को जिला दिया और बचा लिया। और यह मतलब भी बयान किया गया है कि जिसने किसी इनसान की जान बचा ली, जैसे डूबते को निकाल लिया, जलते को बचा लिया, किसी को हलाकत से हटा लिया, तो गोया उसने सबको बचा लिया। मक़सद लोगों को ख़ूने नाहक़ से रोकना और लोगों की ख़ैरख़्वाही और अमन व अमान पर आमादा करना है। हज़रत हसन रह. से पूछा गया कि क्या बनी इस्राईल जिस तरह इस हुक्म के मुकल्लफ़ थे हम भी हैं? फ़रमाया हाँ यक़ीनन ख़ुदा की क़सम बनी इस्राईल के ख़ून ख़ुदा के नज़दीक हमारे से ज़्यादा वक़अ़त वाले न थे। पस एक शख़्स का बिना वजह और सबब के क़त्ल करना सब के क़त्ल का बोझ है, और एक की जान की हिफ़ाज़त का सवाब सब को बचा लेने के बराबर है।

एक बार हज़रत हमज़ा बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि हुज़ूर! मुझे कोई ऐसी बात बतलाईये कि मेरी ज़िन्दगी आराम से गुज़रे। आपने फ़रमाया क्या किसी को मार डालना तुमको पसन्द है या किसी को बचा लेना? जवाब दिया बचा लेना। फ़रमाया बस अब अपनी इस्लाह (ख़ुद को सुधारने) में लगे रहो।

फिर अल्लाह फ़रमाता है कि उनके पास हमारे रसूल खुली और स्पष्ट दलीलें, रोशन अहकाम और खुले मोजिज़े लेकर आये, लेकिन इसके बाद भी अक्सर लोग अपनी सरकशी (नाफ़रमानी) और हरकतों से बाज़ न रहे। बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूद बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर वग़ैरह को देख लीजिये कि औस व ख़ज़्रज के साथ मिलकर आपस में एक दूसरे से लड़ते थे और मक़्तूल की दियत अदा करते थे, जिस पर उन्हें क़ुरआन में समझाया गया कि तुमसे यह अ़हद लिया गया था कि न तो अपने आदमियों का ख़ून बहाओ न उन्हें देस निकाला दो, लेकिन तुमने बावजूद पुख़्ता इक़रार और मज़बूत अ़हद व पैमान के इसके ख़िलाफ़ किया,

अगरचे फ़िदये दिये लेकिन निकालना भी तो हराम था, इसके क्या मायने कि किसी हुक्म को मानो और किसी से इनकार करो? ऐसों की सज़ा यही है कि दुनिया में रुस्वा और ज़लील हों और आख़िरत में बहुत सख़्त अ़ज़ाब का शिकार हों। अल्लाह तुम्हारे आमाल से ग़ाफ़िल नहीं।

'मुहारबा' के मायने ख़िलाफ़ करना, हुक्म के उलट करना, मुख़ालफ़त पर तुल जाना है। मुराद इससे कुफ़्र, डाका डालना, ज़मीन में हंगामा व फ़साद और तरह-तरह की बद-अमनी (अशान्ति) पैदा करना है, यहाँ तक कि पुराने उलेमा ने यह भी फ़रमाया है कि सिक्के को तोड़ देना भी ज़मीन में फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) मचाना है। क़ुरआन की एक दूसरी आयत में है कि जब वे किसी काम के निगराँ हो जाते हैं तो फ़साद फैला देते हैं और खेत और नस्ल को हलाक करने लगते हैं, ख़ुदा तआ़ला फ़साद को पसन्द नहीं फ़रमाता। यह आयत मुश्रिकों के बारे में नाज़िल हुई है, इसलिये कि इसमें यह भी है कि जब ऐसा शख़्स इन कामों के बाद मुसलमानों के हाथों में गिरफ़्तार होने से पहले ही तौबा कर ले तो फिर उस पर कोई मुवाख़ज़ा (पकड़) नहीं। इसके विपरीत अगर कोई मुसलमान इन कामों को करे और भागकर काफ़िरों में जा मिले तो शरई सज़ा से आज़ाद नहीं होगा।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह आयत मुश्रिकों के बारे में उतरी है। फिर उनमें से जो कोई मुसलमानों के हाथ आ जाने से पहले तौबा कर ले तो जो हुक्म उस पर उसके फ़ेल के सबब साबित हो चुका है वह टल नहीं सकता। हज़रत उबई से रिवायत है कि अहले किताब के एक गिरोह से रसूलुल्लाह सल्ल. का मुआ़हिदा हो गया था, लेकिन उन्होंने उसे तोड़ दिया और फ़साद किया, इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को इख़्तियार दिया कि अगर आप चाहें तो उल्टे-सीधे पाँव कटवा दें। हज़रत सअ़द फ़रमाते हैं कि यह हरूरिया ख़्वारिज के बारे में नाज़िल हुई है। सही यह है कि जो भी यह काम करे उसके लिये यह हुक्म है। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि क़बीला उक्ल के आठ आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये, आपने उनसे फ़रमाया अगर तुम चाहो तो हमारे चरवाहों के साथ चले जाओ, ऊँटों का दूध और पेशाब तुम्हें मिलेगा। चुनाँचे ये गये और जब उनकी बीमारी जाती रही तो उन्होंने उन चरवाहों को मार डाला और ऊँट लेकर चलते बने।

हुज़ूर सल्ल. को जब यह ख़बर पहुँची तो आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को उनके पीछे दौड़ाया कि उनको पकड़ लाओ, चुनाँचे ये गिरफ़्तार कर लिये गए और हुज़ूर सल्ल. के सामने पेश किये गए। फिर उनके हाथ-पाँव काट दिये गए और आँखों में गर्म सलाईयाँ फेरी गईं और धूप में पड़े हुए तड़प-तड़पकर मर गये। (इस तरह की सज़ा देने का उस वक़्त रिवाज था, इसको मुस्ला करना कहते हैं, मगर बाद में इस्लाम में इसको हराम कर दिया गया। **हिन्दी अनुवादक**)

मुस्लिम में है कि ये लोग या तो उकल के थे या उरैना के, ये पानी माँगते थे मगर इन्हें पानी न दिया गया, न उनके ज़ख़्म दाग़े गये। उन्होंने चोरी भी की थी, क़त्ल भी किया था, ईमान के बाद कुफ़्र भी किया था, और ख़ुदा रसूल से लड़े भी थे। उन्होंने चरवाहों की आँखों में गर्म सलाईयाँ भी फेरी थीं। मदीने की आब व हवा उस वक़्त दुरुस्त न थी, सिरसाम की बीमारी थी, हुज़ूर सल्ल. ने उनके पीछे बीस अन्सारी घोड़े-सवार भेजे थे और एक पग्गी था जो पैरों के निशान देखकर रहबरी करता जाता था। मौत के वक़्त उनकी प्यास के मारे यह हालत थी कि ज़मीन चाट रहे थे, उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी है। एक बार हज्जाज ने हज़रत अनस रज़ि. से सवाल किया कि सबसे बड़ी और सबसे सख़्त सज़ा जो रसूलुल्लाह सल्ल. ने किसी को दी हो तुम बयान करो, तो आपने यह वाक़िआ़ बयान फ़रमाया। उसमें यह भी है कि ये लोग

Maktab E Ashraf

बहरीन से आये थे, बीमारी की वजह से उनके रंग पीले पड़ गये थे और पेट बढ़ गये थे, तो आपने उन्हें फ़रमाया कि जाओ ऊँटों में रहो और उनका दूध और पेशाब पियो (आपको मालूम हो गया होगा कि इनकी बीमारी का इलाज यही है)।

हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि फिर मैंने देखा कि हज्जाज ने तो इस रिवायत को अपने अत्याचारों की दलील बना ली, तब मुझे सख़्त शर्मिन्दगी हुई कि मैंने उससे यह हदीस क्यों बयान की। एक और रिवायत में है कि उनमें से चार शख़्स तो उरैना क़बीले के थे और तीन उकल के थे, ये सब तन्दुरुस्त हो गए तो ये मुर्तद (बेदीन) बन गये। एक और रिवायत में है कि रास्ते भी उन्होंने बन्द कर दिये थे और ये ज़ानी (बदकार) भी थे। ये जब आये तो उनके पास गुर्बत की वजह से पहनने के कपड़े तक न थे, ये क़त्ल व ग़ारत करके भागकर अपने शहर को जा रहे थे। हज़रत जरीर रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये अपनी क़ौम के पास पहुँचने वाले ही थे कि हमने उन्हें जा पकड़ा, वे पानी माँगते थे और हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते थे अब तो पानी के बदले जहन्नम की आग मिलेगी। इस रिवायत में यह भी है कि आँखों में सलाईयाँ फेरना ख़ुदा को नापसन्द आया। यह हदीस कमज़ोर और ग़रीब है लेकिन इससे यह मालूम हुआ कि जो लश्कर उन मुर्तदों (दीन इस्लाम से फिर जाने वालों) को गिरफ़्तार करने के लिये भेजा गया था उनके सरदार हज़रत जरीर रज़ि. थे। हाँ इस रिवायत में यह जुमला बिल्कुल क़ाबिले रद्द है कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी आँखों में सलाईयाँ फेरना नापसन्द फ़रमाया, इसलिये कि सही मुस्लिम में यह मौजूद है कि उन्होंने चरवाहों के साथ भी यही किया था, पस यह उसका बदला और उनका क़िसास था। जो उन्होंने उनके साथ किया था वही उनके साथ किया गया। वल्लाहु आलम

एक और रिवायत में है कि ये लोग बनू फ़ज़ारा के थे। इस वाक़िए के बाद हुज़ूर सल्ल. ने किसी को यह सज़ा नहीं दी। एक और रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल. का एक ग़ुलाम था जिसका नाम यसार था, चूँकि यह बड़े अच्छे नमाज़ी थे इसलिये हुज़ूर सल्ल. ने इन्हें आज़ाद कर दिया था और अपने ऊँटों में उन्हें भेज दिया था कि यह उनकी निगरानी रखें। इन्हीं को उन मुर्तदों ने क़त्ल किया और इनकी आँखों में काँटे गाड़कर ऊँट लेकर भाग गये, जो लश्कर उन्हें गिरफ़्तार करके लाया था उनमें एक बहुत ताक़तवर शख़्स हज़रत गुज़र बिन जाबिर क़हरी थे। हाफ़िज़ अबू बक्र बिन मरदूया रह. ने इस रिवायत के तमाम तरीक़ों (सनदों) को जमा कर दिया है, ख़ुदा उन्हें जज़ा-ए-ख़ैर दे। अबू हमज़ा बिन अ़ब्दुल-करीम रह. से ऊँटों के पेशाब के बारे में सवाल होता है तो आप इन मुहारिबीन का क़िस्सा बयान फ़रमाते हैं, इसमें यह भी है कि ये लोग मुनाफ़िक़ाना (यानी ज़ाहिरी) तौर पर ईमान लाये थे और हुज़ूर सल्ल. से मदीने की आब व हवा के मुवाफ़िक़ न आने की शिकायत की थी। जब हुज़ूर सल्ल. को उनकी दग़ाबाज़ी, क़त्ल व ग़ारत और दीन इस्लाम से फिर जाने का इल्म हुआ तो आपने मुनादी कराई कि अल्लाह के लश्करियो! उठ खड़े हो जाओ, यह आवाज़ सुनते ही मुजाहिदीन खड़े हो गये, बग़ैर इसके कि कोई किसी का इन्तिज़ार करे, उन मुर्तद (दीन से फिर जाने वाले) डाकुओं और बाग़ियों के पीछे दौड़े, ख़ुद हुज़ूर सल्ल. भी उनको रवाना करके उनके पीछे चले। वे लोग अपनी सुरक्षित जगह में पहुँचने को थे कि सहाबा रज़ि. ने उन्हें घेर लिया और उनमें से जितने गिरफ़्तार किये गये उन्हें लेकर हुज़ूर सल्ल. के सामने पेश कर दिया और यह आयत उतरी। उनकी जिला-वतनी (देश-निकाला) यही थी कि उन्हें इस्लाम की हदों से ख़ारिज कर दिया गया, फिर उनको इब्रतनाक सज़ायें दी गईं। उसके बाद हुज़ूर सल्ल. ने किसी के भी जिस्मानी अंग जुदा नहीं कराये, बल्कि आपने इससे मना फ़रमाया है। जानवरों के साथ भी इस तरह करना मना है। बाज़ रिवायतों में है कि क़त्ल

Maktab-E-Ashraf

के बाद उन्हें जला दिया गया, बाज़ कहते हैं कि ये बनू सुलैम के लोग थे, बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो सज़ा उन्हें दी वह ख़ुदा को पसन्द न आई और इस आयत से इसे मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया। उनके नज़दीक गोया इस आयत में नबी करीम सल्ल. को रोका गया है इस सज़ा से जैसा कि "अ़फ़ल्लाहु अ़न्-क" (कि अल्लाह ने आपको माफ़ कर दिया) में है।

और बाज़ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने मुस्ला करने से यानी हाथ-पाँव कान-नाक काटने से जो मनाही फ़रमाई है इस हदीस से यह सज़ा मन्सूख़ हो गई, लेकिन है ज़रा यह बात ग़ौर-तलब। फिर भी यह सवाल होता है कि नासिख़ (पहले हुक्म को निरस्त करने वाले) के बाद में होने की दलील क्या है? बाज़ कहते हैं कि इस्लामी सज़ाओं के मुक़र्रर होने से पहले का यह वाक़िआ है, लेकिन यह भी ठीक नहीं मालूम होता, बल्कि सज़ाओं के निर्धारण के बाद का वाक़िआ मालूम होता है। इसलिये कि इस हदीस के रावी हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. हैं और उनका इस्लाम सूरः मायदा के नाज़िल हो चुकने के बाद का है। बाज़ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने उनकी आँखों में गर्म सलाईयाँ फेरनी चाही थीं लेकिन यह आयत उतरी और आप अपने इरादे से रुक गये। लेकिन यह भी दुरुस्त नहीं, इसलिये कि बुख़ारी व मुस्लिम में ये लफ़्ज़ हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने उनकी आँखों में सलाईयाँ फिरवाईं।

मुहम्मद बिन अ़जलान रह. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने जो सख़्त सज़ा उन्हें दी उसके इनकार में यह आयतें उतरी हैं। और इनमें सही सज़ा बयान की गई है जो क़त्ल करने और हाथ-पाँव उल्टी तरफ़ से काटने और वतन से निकाल देने के हुक्म पर शामिल है। चुनाँचे देख लीजिये कि उसके बाद फिर किसी की आँखों में सलाईयाँ फेरनी साबित नहीं, लेकिन ओज़ाई कहते हैं कि यह ठीक नहीं कि इस आयत में हुज़ूर सल्ल. के इस फ़ेल पर आपको डाँटा गया हो। बात यह है कि जो कुछ उन्होंने किया था उसका वही बदला मिल गया। अब आयत नाज़िल हुई जिसने एक ख़ास हुक्म ऐसे लोगों का बयान फ़रमाया और उसमें आँखों में गर्म सलाईयाँ फेरने का हुक्म नहीं दिया। इस आयत से जमहूर उलेमा ने दलील पकड़ी है कि रास्तों में बाधा खड़ी करके लड़ना और शहरों में लड़ना दोनों बराबर हैं, क्योंकि लफ़्ज़ः

وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا.

(यानी वे मुल्क में फ़साद और बिगाड़ फैलाते फिरते हैं) के हैं।

इमाम मालिक, ओज़ाई, लैस, शाफ़ई और अहमद रह. का यही मज़हब है कि बाग़ी लोग चाहे शहर में ऐसा फ़ितना मचायें या शहर से बाहर, उनकी सज़ा यही है। बल्कि इमाम मालिक रह. तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स दूसरे को उसके घर में इस तरह धोखा देकर मार डाले तो उसे पकड़ लिया जाये और उसका तमाम माल व असबाब जो उसके पास है ले लिया जाये, और उसे क़त्ल कर दिया जाये। और उस वक़्त का हाकिम इन कामों को ख़ुद करे न कि मक़्तूल के वारिस और परिजनों के हाथ में यह काम दिया जाये। बल्कि अगर वे माफ़ करना चाहें तो भी उनके इख़्तियार में नहीं बल्कि यह डायरेक्ट इस्लामी हुकूमत का मामला और जुर्म है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. का मज़हब यह नहीं, वह कहते हैं कि मुहारबा (मुक़ाबला और लड़ाई का चैलेंज) उसी वक़्त माना जायेगा जबकि शहर के बाहर ऐसे फ़साद कोई करे, क्योंकि शहर में तो इमदाद का पहुँचना मुम्किन है, रास्तों में यह बात नामुम्किन सी है, जो सज़ा उन मुहारिबीन की बयान हुई है उसके बारे में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मुसलमानों पर तलवार उठाये, मुसलमानों को ख़तरों में धकेल दे, मुसलमानों का हाकिम इन तीनों में से जो सज़ा देना चाहे यह उसका इख़्तियार है। यही क़ौल और भी बहुत से हज़रात का है, और इस तरह का इख़्तियार ऐसी ही

दूसरी आयतों के अहकाम में भी मौजूद है, जैसा कि मुहर्रम में जो शिकार खेले उसका बदला शिकार के बराबर की क़ुरबानी या मसाकीन का खाना, या उसके बराबर के रोज़े। बीमारी या सर की तकलीफ़ की वजह से एहराम की हालत में सर मुंडवाने और एहराम के ख़िलाफ़ करने वाले के फ़िदये में भी रोज़े या सदके या क़ुरबानी का बयान है। क़सम के कफ़्फ़ारे में दरमियानी दर्जे का खाना दस मिस्कीनों का या उनका कपड़ा या एक ग़ुलाम की आज़ादी है। तो जिस तरह यहाँ इन सूरतों में से किसी एक के पसन्द कर लेने का इख़्तियार है उसी तरह ऐसे मुहारिब मुर्तद लोगों की सज़ा भी या तो क़त्ल है, या हाथ-पाँव उल्टी तरफ़ से काटना है, या देश-निकाला देना। और जमहूर का क़ौल है कि यह आयत कई हालात को लिये हुए है, जब डाकू क़त्ल व ग़ारत दोनों के मुजरिम हुए हों तो सूली पर चढ़ाये जाने और क़त्ल किये जाने के मुस्तहिक़ हैं, और जब सिर्फ़ क़त्ल सरज़द हो तो क़त्ल का बदला सिर्फ़ क़त्ल है। और अगर केवल माल लिया हो तो हाथ-पाँव उल्टी-सीधी तरफ़ से काट दिये जायेंगे, और जबकि रास्ता ख़तरों से भर दें और उसको असुरक्षित बना दें, लोगों को भयभीत कर दें और किसी दूसरे गुनाह के मुर्तकिब न हुए हों और गिरफ़्तार कर लिये जायें तो सिर्फ़ देश-निकाला है। अक्सर पहले उलेमा व इमामों का यही मज़हब है।

फिर बुज़ुर्गों ने इसमें भी इख़्तिलाफ़ किया (अलग-अलग राय ज़ाहिर की) है कि आया सूली पर लटकाकर यूँही छोड़ दिया जाये कि भूखा-प्यासा मर जाये या नेज़े वग़ैरह से क़त्ल कर दिया जाये? या पहले क़त्ल कर दिया जाये फिर सूली पर लटकाया जाये, ताकि और लोगों को इबरत (सीख) हासिल हो, और क्या तीन दिन तक सूली पर रहने देकर फिर उतार लिया जाये, या यूँही छोड़ दिया जाये। लेकिन तफ़सीर का यह मौज़ू (विषय) नहीं कि ऐसे आंशिक मतभेदों में पड़ें और हर एक की दलीलें वग़ैरह बयान करें, हाँ एक हदीस में सज़ा की कुछ तफ़सील है, अगर उसकी सनद सही हो तो। वह यह कि हुज़ूर सल्ल. ने जब उन मुहारिबों के बारे में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से मालूम किया तो आपने फ़रमाया जिन्होंने माल चुराया और रास्तों को ख़तरनाक बना दिया, उनके हाथ तो चोरी के बदले काट दीजिये, और पाँव बद-अमनी के बदले। और जिसने क़त्ल किया है उसे क़त्ल कर दीजिये, और जिसने क़त्ल और रास्ते को ख़तरनाक बनाने और बदकारी का इर्तिकाब (जुर्म) किया है उसे सूली पर चढ़ा दो।

फ़रमान है कि ज़मीन से अलग कर दिये जायें, यानी उन्हें तलाश करके उन पर हद (सज़ा) क़ायम की जाये। या वे दारुल-इस्लाम से भागकर कहीं चले जायें या यह कि एक शहर से दूसरे शहर और दूसरे शहर से तीसरे शहर भेज दिया जाता रहे। या यह कि इस्लामी सल्तनत से बिल्कुल ही ख़ारिज कर दिया जाये। शअ़बी तो निकाल ही देते थे, और अ़ता ख़ुरासानी कहते हैं कि एक लश्कर में से दूसरे लश्कर में पहुँचा दिया जाये, यूँही कई साल तक मारा-मारा फिराया जाये, लेकिन दारुल-इस्लाम से बाहर न किया जाये।

इमाम अबू हनीफ़ा रह. और उनके साथी कहते हैं कि उसे जेलख़ाने में डाल दिया जाये। इब्ने जरीर का मुख़्तार (पसन्दीदा) क़ौल है कि उसे उस शहर से निकाल कर दूसरे शहर के जेलख़ाने में डाल दिया जाये। ऐसे लोग दुनिया में ज़लील दर ज़लील और आख़िरत में बड़े भारी अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे। आयत का यह टुकड़ा तो उन लोगों की ताईद करता है जो कहते हैं कि यह आयत मुश्रिकों के बारे में उतरी है, और मुस्लिमों के बारे में वह सही हदीस है जिसमें है कि हुज़ूर सल्ल. ने हमसे वैसे ही अ़हद लिये जैसे औ़रतों से लिये थे कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करें, चोरी न करें, ज़िना न करें, अपनी औलाद को क़त्ल न करें, एक दूसरे की नाफ़रमानी न करें, जो इस वादे को निभाये उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है और जो इनमें से किसी गुनाह में लिप्त हो जाये फिर अगर उसे सज़ा हो गई तो वह सज़ा कफ़्फ़ारा बन

जायेगी, और अगर अल्लाह तआ़ला ने उसके गुनाह को छुपा लिया तो उसका मामला अल्लाह की तरफ़ है। अगर चाहे अ़ज़ाब करे, अगर चाहे छोड़ दे।

एक और हदीस में है कि जिस किसी ने कोई गुनाह किया, फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे ढाँप लिया और उससे नज़र बचा ली (यानी उसका गुनाह ज़ाहिर न किया, छुपा लिया) तो अल्लाह की ज़ात और उसका रहम व करम इससे बहुत बुलन्द व बाला है कि माफ़ किये हुए जुर्म पर फिर से पकड़े। इसी दुनियावी सज़ा में अगर बिना तौबा किये मर गए तो आख़िरत की वे सज़ायें बाक़ी हैं जिनका इस वक़्त सही तसव्वुर भी मुहाल है। हाँ तौबा नसीब हो जाये तो और बात है। फिर तौबा करने वालों के बारे में जो फ़रमाया है उसका इज़हार इस सूरत में तो साफ़ है कि इस आयत को मुश्रिकों के बारे में नाज़िल हुई माना है, लेकिन जो मुसलमान मुहारिब हों और वे क़ब्ज़े में आने से पहले तौबा कर लें तो उनसे क़त्ल और सूली और पाँव का काटना तो हट जाता है, लेकिन हाथ का काटना भी हट जाता है या नहीं, इसमें उलेमा के दो क़ौल हैं- आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ से तो यही मालूम होता है कि सब कुछ हट जाये, सहाबा रज़ि. का अ़मल भी इसी पर है।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का मामला

चुनाँचे जारिया बिन बदर तैमी बसरी ने ज़मीन में फ़साद किया, मुसलमानों से लड़ा, इस बारे में चन्द क़ुरैशियों ने हज़रत अ़ली रज़ि. से सिफ़ारिश की जिनमें हज़रत हसन, हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हुम भी थे। लेकिन आपने उसे अमन देने से इनकार कर दिया। वह सईद बिन क़ैस हमदानी के पास आया, आपने अपने घर में उसे ठहराया, हज़रत अ़ली रज़ि. के पास आये और कहा बतलाईये तो सही जो ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल. से लड़े और ज़मीन में फ़साद की कोशिश करे फिर इन आयतों की (जिनकी तफ़सीर चल रही है) तिलावत की तो आपने फ़रमाया मैं तो ऐसे शख़्स को अमन लिख दूँ। हज़रत सईद रज़ि. ने फ़रमाया यह जारिया इब्ने बदर है, चुनाँचे जारिया ने उसके बाद उनकी तारीफ़ में अश्आ़र भी कहे हैं।

क़बीला मुराद का एक शख़्स हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. के पास कूफ़ा की मस्जिद में जहाँ के यह गवर्नर थे, एक फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आया और कहने लगा ऐ अमीरे कूफ़ा! मैं फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ मुरादी क़बीले का हूँ। मैंने अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई लड़ी, ज़मीन में फ़साद करने की कोशिश की, लेकिन आप लोग मुझ पर क़ाबू पायें इससे पहले मैंने तौबा कर ली, अब मैं आपसे पनाह हासिल करने वाले की जगह पर खड़ा हूँ। इस पर हज़रत अबू मूसा रज़ि. खड़े हो गए और फ़रमाया ऐ लोगो! तुम में से कोई अब इस तौबा के बाद इससे किसी तरह की बुराई न करे। अगर यह सच्चा है तो अल्हम्दु लिल्लाह, और यह झूठा है तो इसके गुनाह ही इसको हलाक कर देंगे। यह शख़्स एक मुद्दत तक तो ठीक-ठाक रहा, फिर निकल खड़ा हुआ, ख़ुदा ने भी उसके गुनाहों के बदले उसे ग़ारत कर दिया, और यह मार डाला गया।

अ़ली नाम के एक असदी शख़्स ने भी लड़ाई की, रास्ते असुरक्षित कर दिये, लोगों को क़त्ल किया, माल लूटा, बादशाह लश्कर और जनता ने हर चन्द उसे गिरफ़्तार करना चाहा लेकिन यह हाथ न लगा, एक बार यह एक जंगल में था कि एक शख़्स को क़ुरआन पढ़ते सुना और वह उस वक़्त यह आयत तिलावत कर रहा था:

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا..... الخ

Maktaba Ashraf

Maktab E Ashraf

कि ऐ मेरे वे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर (गुनाह व ज़ुल्म करके) ज़्यादती की है, तुम अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद मत होओ, बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ करने वाला है......।

यह इसे सुनकर ठिठक गया और उससे कहा ऐ ख़ुदा के बन्दे! यह आयत मुझे दोबारा सुना। उसने फिर पढ़ी, ख़ुदा की इस आवाज़ को सुनकर कि वह फ़रमाता है ऐ मेरे गुनाहगार बन्दो! तुम मेरी रहमत से ना-उम्मीद न हो जाओ, मैं तमाम गुनाहों के बख़्शने पर क़ादिर हूँ। मैं ग़फ़ूर व रहीम हूँ।

उस शख़्स ने झट अपनी तलवार को म्यान में कर ली, उसी वक़्त सच्चे दिल से तौबा की और सुबह की नमाज़ से पहले मदीने में पहुँचकर ग़ुस्ल किया और मस्जिदे नबवी में नमाज़े सुबह जमाअ़त के साथ अदा की, और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. के पास जो लोग बैठे थे उन्हीं में एक तरफ़ यह भी बैठ गया। जब दिन ख़ूब निकल आया तो लोगों ने इसे देखकर पहचान लिया कि यह सल्तनत का बाग़ी, बहुत बड़ा मुजरिम और भगोड़ा शख़्स अ़ली असद है। उठ खड़े हुए कि इसे गिरफ़्तार कर लें। उसने कहा सुनो भाईयो! तुम मुझे गिरफ़्तार नहीं कर सकते, इसलिये कि तुम मुझ पर क़ाबू पाओ इससे पहले मैं तौबा कर चुका हूँ बल्कि तौबा के बाद तुम्हारे पास आ गया हूँ। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने कहा यह सच कहता है और उसका हाथ पकड़कर मरवान बिन हकम के पास ले चले, यह उस वक़्त हज़रत मुआ़विया रज़ि. की तरफ़ से मदीने के गवर्नर थे, वहाँ पहुँचकर फ़रमाया कि यह अ़ली असदी हैं, यह तौबा कर चुके हैं, इसलिये अब तुम इन्हें गिरफ़्तार नहीं कर सकते। चुनाँचे किसी ने उसके साथ कुछ न किया।

जब मुजाहिदीन की एक जमाअ़त रोमियों से लड़ने के लिये चली तो उन मुजाहिदीन के साथ यह भी हो लिये। समुद्र में इनकी कश्ती जा रही थी कि सामने से चन्द कश्तियाँ रोमियों की आ गईं। यह अपनी कश्ती से रोमियों की गर्दनें मारने के लिये उनकी कश्ती में कूद गये। इनकी आबदार और मज़बूत तलवार की चमक की ताब रोमी न ला सके और नामर्दी से एक तरफ़ को भागे। यह भी उनके पीछे उसी तरफ़ चले, चूँकि सारा बोझ एक तरफ़ हो गया, इसलिये कश्ती पलट गई जिससे वे सारे रोमी काफ़िर हलाक हो गए और हज़रत अ़ली असदी रह. भी डूबकर शहीद हो गये। (ख़ुदा उन पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ
الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ
مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا
بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ يُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ز
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ○

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला से डरो और अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब "यानी निकटता" ढूँढो और अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद किया करो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओगे। (35) यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया भर की चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ इतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उसको देकर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से छूट जाएँ तब भी वे चीज़ें उनसे क़ुबूल न की जाएँगी और उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (36) (इस बात की) ख़्वाहिश करेंगे कि दोज़ख़ से निकल आएँ और वे उससे (कभी) न निकलेंगे और उनको हमेशा का अ़ज़ाब होगा। (37)

Maktab E Ashraf

अच्छे आमाल का वसीला

तक़्वे (अल्लाह से डरने और परहेज़गारी) का हुक्म हो रहा है और वह भी इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) से मिला हुआ। मतलब यह है कि ख़ुदा के मना किये हुए कामों से रुके रहो, उसकी तरफ़ क़ुर्बत यानी नज़दीकी तलाश करो, यही मायने वसीले के हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल किये गये हैं। हज़रत मुजाहिद, हज़रत अबू वाईल, हज़रत हसन, हज़रत इब्ने ज़ैद और बहुत से मुफ़स्सिरीन रह. से भी यही रिवायत है। क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की इताअ़त और उसकी मर्ज़ी के आमाल से उससे क़रीब हो जाओ। इब्ने ज़ैद ने यह आयत भी पढ़ीः

أُولٰئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ.

जिन्हें ये पुकारते हैं वे तो ख़ुद ही अपने रब की नज़दीकी की जुस्तजू में लगे हुए हैं।

इन इमामों ने 'वसीला' के जो मायने इस आयत में किए हैं इस पर सब मुफ़स्सिरीन का गोया इजमा (एक राय) है, इसमें किसी एक का भी बिल्कुल मतभेद नहीं। इमाम इब्ने जरीर ने इस पर एक अ़रबी शे'र भी बयान किया है जिसमें वसीला मायने में क़ुर्बत और नज़दीकी के इस्तेमाल हुआ है। वसीले के मायने उस चीज़ के हैं जिससे मक़सूद हासिल करने की तरफ़ पहुँचा जाये, और वसीला जन्नत की उस आला और बेहतरीन मन्ज़िल का नाम है जो रसूलुल्लाह सल्ल. की जगह है। अ़र्श से बहुत ज़्यादा क़रीब यही दर्जा है। सही बुख़ारी की हदीस में है कि जो शख़्स अज़ान सुनकरः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ..... الخ

(यानी अज़ान के बाद की दुआ़) पढ़े उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त हलाल हो जाती है।

मुस्लिम की हदीस में है कि जब तुम अज़ान सुनो तो जो अलफ़ाज़ मुअज़्ज़िन कह रहा हो वही तुम भी कहो। फिर मुझ पर दुरूद भेजो। एक दुरूद के बदले अल्लाह तआ़ला तुम पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा। फिर मेरे लिये अल्लाह तआ़ला से वसीला तलब करो, वह जन्नत का एक दर्जा है, जिसे सिर्फ़ एक ही बन्दा पायेगा, मुझे उम्मीद है कि वह बन्दा मैं ही हूँ। पस जिसने मेरे लिये वसीला तलब किया उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। मुस्नद अहमद में है कि जब तुम मुझ पर दुरूद पढ़ो तो मेरे लिये वसीला माँगो। पूछा गया कि वसीला क्या है? फ़रमाया जन्नत का सबसे बुलन्द दर्जा जिसे सिर्फ़ एक शख़्स ही पायेगा और मुझे उम्मीद है कि वह शख़्स मैं हो जाऊँ। तबरानी में है कि तुम अल्लाह से दुआ़ करो कि ख़ुदा मुझे वसीला अ़ता फ़रमाये, जो शख़्स दुनिया में मेरे लिये दुआ़ करेगा मैं उस पर गवाह या उसका सिफ़ारिशी क़ियामत के दिन बन जाऊँगा। एक और हदीस में है कि वसीले से बड़ा दर्जा जन्नत में कोई नहीं। पस तुम अल्लाह तआ़ला से मेरे लिये वसीला मिलने की दुआ़ करो। एक ग़रीब और मुन्कर हदीस में इतना और ज़्यादा है कि लोगों ने आपसे पूछा कि उस वसीले में आपके साथ और कौन लोग होंगे? तो आपने हज़रत फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ि. का नाम लिया और एक बहुत ही ग़रीब रिवायत में है कि हज़रत अ़ली रज़ि. ने मिम्बरे कूफ़ा पर फ़रमाया कि जन्नत में दो मोती हैं एक सफ़ेद और एक ज़र्द। ज़र्द तो अ़र्श के नीचे है और मक़ामे महमूद सफ़ेद मोती का है, जिसमें सत्तर हज़ार बालाख़ाने हैं, जिनमें से हर-हर घर तीन-तीन मील का है, उसके दरीचे दरवाज़े तख़्त वग़ैरह सब के सब गोया एक ही जड़ से हैं। उसी का नाम वसीला है, यह मुहम्मद सल्ल. और आपके घर वालों के लिये है।

Maktab E Ashraf

तक़्वे का यानी मना की हुई चीज़ों से रुकने का और अहकाम को बजा लाने का हुक्म देकर फिर फ़रमाया उसकी राह में जिहाद करो, मुश्रिकों व कुफ़्फ़ार को जो उसके दुश्मन हैं, उसके दीन से अलग हैं उसकी राह से भटक गए हैं, उन्हें क़त्ल करो। ऐसे मुजाहिदीन मुराद वाले हैं, फ़लाह व बेहतरी, सआदत व शराफ़त उन्हीं के लिये है, जन्नत के बुलन्द बालाख़ाने और ख़ुदा की बेशुमार नेमतें उन्हीं के लिये हैं। ये उस जन्नत में पहुँचाये जायेंगे जहाँ मौत नहीं, जहाँ कमी और नुक़सान नहीं, जहाँ कभी ख़त्म न होने वाली जवानी और हमेशा की सेहत और दवामी ऐश व आराम है।

अ़ज़ाब दर अ़ज़ाब

अपने दोस्तों का अच्छा अन्जाम बयान फ़रमाकर अब अपने दुश्मनों का बुरा नतीजा ज़ाहिर फ़रमाता है कि ऐसे सख़्त और बुरे अ़ज़ाब उन्हें हो रहे होंगे कि अगर उस वक़्त रू-ए-ज़मीन के मालिक हों बल्कि उतना ही और भी हो तो उन अ़ज़ाबों से बचने के लिये बतौर बदले के सब दे डालेंगे, अगर ऐसा हो भी जाये तो भी उनसे अब फ़िदया क़बूल नहीं, बल्कि जो अ़ज़ाब उन पर हैं वे हमेशा के लिये हैं। जैसे एक और जगह है कि जहन्नमी जब जहन्नम में से निकलना चाहेंगे तो फिर दोबारा उसी में लौटा दिये जायेंगे...। भड़कती हुई आग के अंगारों के साथ ऊपर आ जायेंगे कि दारोग़ा फिर उन्हें हथौड़े मार-मारकर जहन्नम की गहराई में गिरा देंगे। ग़र्ज़ इन हमेशा के अ़ज़ाबों से छुटकारा मुहाल है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि एक जहन्नमी को लाया जायेगा, फिर उससे पूछा जायेगा कि ऐ इब्ने आदम! कहो तुम्हारी जगह कैसी है? वह कहेगा बहुत बुरी और बहुत सख़्त। उससे पूछा जायेगा कि उससे छूटने के लिये तू क्या ख़र्च कर देने पर राज़ी है? वह कहेगा कि सारी ज़मीन भर का सोना देकर भी मैं यहाँ से छूटूँ तो भी सस्ता छूटा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तू झूठा है, मैंने तो तुझसे इससे बहुत ही कम माँगा था, लेकिन तूने कुछ भी न किया। फिर हुक्म दिया जायेगा और उसे जहन्नम में डाल दिया जायेगा। (मुस्लिम)

एक वाक़िआ़

एक बार हज़रत जाबिर रज़ि. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह फ़रमान बयान किया कि एक क़ौम जहन्नम में से निकाल कर जन्नत में पहुँचाई जायेगी, इस पर उनके शागिर्द हज़रत यज़ीद फ़क़ीर रह. ने पूछा कि फिर इस आयते क़ुरआनी का क्या मतलब है? किः

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا.... الخ

यानी वे जहन्नम से आज़ाद होना चाहेंगे लेकिन वे आज़ाद होने वाले नहीं। तो आपने फ़रमाया- इससे पहले की आयतः

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا..... الخ

पढ़ो, जिससे साफ़ मालूम हो जाता है कि ये काफ़िर लोग हैं, ये कभी न निकलेंगे। (मुस्नद वग़ैरह)

दूसरी रिवायत में है कि यज़ीद का ख़्याल यही था कि जहन्नम में से कोई भी न निकलेगा, इसलिये यह सुनकर उन्होंने हज़रत जाबिर रज़ि. से कहा कि मुझे और लोगों पर तो अफ़सोस नहीं, हाँ आप सहाबियों पर अफ़सोस है कि आप भी क़ुरआन के ख़िलाफ़ कहते हैं। उस वक़्त मुझे भी ग़ुस्सा आ गया था इस पर उनके

साथियों ने मुझे डाँटा, लेकिन हज़रत जाबिर रज़ि. बहुत ही बुर्दबार और बरदाश्त करने वाले आदमी थे, उन्होंने सब को रोक दिया और मुझे समझाया कि क़ुरआन में जिनके जहन्नम से न निकलने का ज़िक्र है वे काफ़िर लोग हैं, तुमने क़ुरआन नहीं पढ़ा? मैंने कहा-हाँ मुझे सारा क़ुरआन याद है। कहा फिर क्या यह आयत क़ुरआन में नहीं है?

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا.

इसमें मक़ामे महमूद का ज़िक्र है, यही मक़ामे शफ़ाअ़त है। अल्लाह तआ़ला बाज़ लोगों को जहन्नम में उनकी ख़ताओं की वजह से डालेगा और जब तक चाहे उन्हें जहन्नम ही में रखेगा, फिर जब चाहेगा उन्हें उससे आज़ाद कर देगा। हज़रत यज़ीद रह. फ़रमाते हैं कि उसके बाद से मेरा ख़्याल ठीक हो गया। हज़रत तलक़ बिन हबीब रह. कहते हैं मैं भी शफ़ाअ़त का मुन्किर था, यहाँ तक कि हज़रत जाबिर रज़ि. से मिला और अपने दावे के सुबूत में जिन-जिन आयतों में जहन्नम की हमेशगी का बयान है, सब पढ़ डालीं, तो आपने सुनकर फ़रमाया ऐ तलक़! क्या तुम अपने आपको किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल के इल्म में मुझसे अफ़ज़ल (बेहतर और बढ़ा हुआ) जानते हो? सुनो जितनी आयतें तुमने पढ़ी हैं वे सब अहले जहन्नम के बारे में हैं, यानी मुश्रिकों के लिये। लेकिन जो लोग निकलेंगे ये वे लोग हैं जो मुश्रिक न थे, लेकिन गुनाहगार थे। गुनाहों के बदले सज़ा भुगत ली, फिर जहन्नम से निकाल दिये गये। हज़रत जाबिर रज़ि. ने यह सब फ़रमाकर अपने दोनों हाथों से अपने दोनों कानों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया ये दोनों बहरे हो जायें अगर मैंने रसूले ख़ुदा सल्ल. से यह न सुना हो कि जहन्नम में दाख़िल होने के बाद भी लोग उसमें से निकाले जायेंगे और वे जहन्नम से आज़ाद कर दिये जायेंगे। क़ुरआन की ये आयतें जिस तरह तुम पढ़ते हो हम भी पढ़ते ही हैं।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ○ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○	और जो मर्द चोरी करे और जो औरत चोरी करे, सो उन दोनों के (दाहिने) हाथ (गट्टे पर से) काट डालो उनके किरदार के बदले में बतौर सज़ा के, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से, और अल्लाह तआ़ला बड़े क़ुव्वत वाले हैं (जो सज़ा चाहें मुक़र्रर फ़रमाएँ) बड़ी हिक्मत वाले हैं (कि मुनासिब ही सज़ा मुक़र्रर फ़रमाते हैं)। (38) फिर जो शख़्स अपनी (इस) ज़्यादती के बाद तौबा करे और (आमाल की) दुरुस्ती रखे तो बेशक अल्लाह उस पर तवज्जोह फ़रमाएँगे, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (39) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए (साबित) है हुकूमत सब आसमानों की और ज़मीन की, वह जिसको चाहें सज़ा दें और जिसको चाहें माफ़ कर दें, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है। (40)

Maktaba E Ashraf

Maktab E Ashraf

चोरी और उससे संबन्धित अहकाम

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में "फ़क़्तऊ ऐमानहुमा" (कि उनके दोनों दायों को काट दो) है लेकिन यह क़िराअत 'शाज़' है अगरचे अ़मल इसी पर है, लेकिन वह अ़मल इस क़िराअत की वजह से नहीं बल्कि दूसरी दलीलों की बिना पर है। चोर के हाथ काटने का तरीक़ा इस्लाम से पहले भी था, इस्लाम ने इसे तफ़सील और व्यवस्थित कर दिया। इसी तरह तक़सीम करने, दियत, फ़राईज़ के मसाईल भी पहले थे लेकिन ग़ैर-मुनज़्ज़म (यानी व्यवस्था से ख़ाली) और अधूरे, इस्लाम ने उन्हें ठीक-ठाक कर दिया। एक क़ौल यह भी है कि सबसे पहले दवीक नाम के एक ख़ज़ाई शख़्स के हाथ चोरी के इल्ज़ाम में क़ुरैश ने काटे थे, उसने काबे का ग़िलाफ़ चुराया था। और यह भी कहा गया है कि चोरों ने उसके पास रख दिया था, बाज़ फ़ुक़हा का ख़्याल है कि चोरी की चीज़ की कोई हद नहीं, थोड़ी हो या बहुत, सुरक्षित जगह से ली हो या असुरक्षित जगह से, हर सूरत में हाथ काटा जायेगा।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि आयत आ़म है तो मुम्किन है इस क़ौल का यही मतलब हो। और दूसरे मतालिब भी मुम्किन हैं। एक दलील इन हज़रात की यह हदीस भी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला चोर पर लानत करे कि अंडा चुराता है और हाथ कटवाता है, रस्सी चुराई है और हाथ काटा जाता है। जमहूर उलेमा का मज़हब यह है कि चोरी के माल की हद मुक़र्रर है, अगरचे इस हद के निर्धारण में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। इमाम मालिक रह. कहते हैं कि तीन दिर्हम सिक्के वाले ख़ालिस या उनकी क़ीमत की या ज़्यादा की कोई चीज़। चुनाँचे सही बुख़ारी व मुस्लिम में हुज़ूर सल्ल. का एक ढाल की चोरी पर हाथ काटना नक़ल किया गया है, और उसकी क़ीमत इतनी ही थी।

हज़रत उस्मान रज़ि. ने उतरंज के चोर के हाथ काटे थे, जबकि वह तीन दिर्हम की क़ीमत का था। हज़रत उस्मान रज़ि. का यह फ़ेल और इस पर बाक़ी सहाबा का ख़ामोश रहना गोया सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की सहमति को दर्शाता है और इससे भी यह साबित होता है कि फल के चोर के हाथ काटे जायेंगे। हनफ़िया इसे नहीं मानते और उनके नज़दीक चोरी के माल का दस दिर्हम की क़ीमत का होना ज़रूरी है, इसमें शाफ़ई हज़रात की राय अलग है, वे पाव दीनार होने की शर्त रखते हैं। इमाम शाफ़ई का फ़रमान है कि पाव दीनार की क़ीमत की चीज़ हो या इससे ज़्यादा। उनकी दलील सहीहैन की हदीस है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- चोर का हाथ पाव दीनार में, फिर जो इससे ऊपर हो उसमें काटना चाहिये। मुस्लिम की एक हदीस में है कि चोर का हाथ न काटा जाये मगर पाव दीनार, या इससे ऊपर में। पस यह हदीस इस मसले का साफ़ फ़ैसला करती है, और जिस हदीस में तीन दिर्हम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हाथ काटने को फ़रमाना नक़ल किया गया है वह इसके ख़िलाफ़ नहीं, इसलिये कि उस वक़्त दीनार बारह दिर्हम का था, पस असल चौथाई दिनार है, न कि तीन दिर्हम।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान, हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हुम भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़, लैस बिन ओज़ाई, शाफ़ई, इस्हाक़ बिन राहवैह, अबू सौर, दाऊद बिन अ़ली ज़ाहिरी रह. का भी यही क़ौल है। एक रिवायत में इमाम इस्हाक़ बिन राहवैह और इमाम अहमद बिन हंबल से मरवी है कि चाहे चौथाई दीनार हो चाहे तीन दिर्हम, दोनों ही हाथ काटने का निसाब (हद और मिक़्दार) हैं। मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि चौथाई दीनार की चोरी पर हाथ काट दो, इससे कम पर नहीं। उस वक़्त दीनार बारह दिर्हम का था तो चौथाई दीनार तीन दिर्हम का हुआ।

Maktab E Ashraf

नसाई शरीफ़ में है कि चोर का हाथ ढाल की कीमत से कम में न काटा जाये। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया ढाल की कीमत क्या है? फ़रमाया पाव दीनार। पस इन तमाम हदीसों से साफ़-साफ़ साबित हो रहा है कि दस दिर्हम की शर्त लगाना खुली ग़लती है। वल्लाहु आलम

इमाम अबू हनीफ़ा रह. और उनके साथियों ने कहा है कि जिस ढाल के बारे में हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में चोर का हाथ काटा गया उसकी कीमत दस दिर्हम थी, चुनाँचे अबू बक्र बिन शैबा में यह मौजूद है, और अ़ब्दुल्लाह बिन उमर से अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़मर मुख़ालिफ़त कर रहे हैं, और सज़ाओं के बारे में एहतियात पर अ़मल करना चाहिये, और एहतियात ज़्यादती (अधिकता) में है, इसलिये दस दिर्हम निसाब हमने मुक़र्रर किया है। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि दस दिर्हम या एक दीनार हद है। अ़ली बिन मसऊद, इब्राहीम नख़ई, अबू जाफ़र बाक़िर रह. से यही मरवी है। सईद इब्ने ज़ुबैर रज़ि. फ़रमाते हैं कि पाँचों उंगली न काटी जायें मगर पाँच दीनार या पचास दिर्हम की कीमत के बराबर के माल की चोरी में।

अहले ज़ाहिर का यह मज़हब है कि हर थोड़ी बहुत चीज़ की चोरी पर हाथ कटेगा। उन्हें जमहूर ने यह जवाब दिया कि अव्वल तो यह उमूमी हुक्म मन्सूख़ है, लेकिन यह जवाब ठीक नहीं, इसलिये कि नस्ख़ की तारीख़ का कोई यक़ीन नहीं। दूसरा जवाब यह है कि अंडे से मुराद लोहे का अंडा है, और रस्सी से मुराद कश्तियों के कीमती रस्से हैं। तीसरा जवाब यह है कि यह फ़रमान नतीजे के एतिबार से है, यानी इन छोटी-छोटी मामूली सी चीज़ों से चोरी शुरू करता है आख़िर कीमती चीज़ें चुराने लगता है, और हाथ काटा जाता है। यह भी हो सकता है कि हुज़ूर सल्ल. का यह फ़रमान एक वाक़िए को बयान करने के तौर पर हो। जाहिलीयत के दिनों में हर छोटी सी चीज़ की चोरी पर भी हाथ काट दिया जाता था, तो गोया हुज़ूर सल्ल. बतौर अफ़सोस के और चोर को शर्मिन्दा करने के लिये फ़रमा रहे हैं कि कैसा ज़लील और बेवक़ूफ़ इनसान है कि मामूली चीज़ के लिये हाथ जैसी नेमत से मेहरूम होकर बैठ जाता है।

बयान किया गया है कि अबुल-उला मिस्री जब बग़दाद में आया तो उसने इस बारे में बड़े एतिराज़ शुरू किये और उसके जी में यह बैठ गया कि मेरे इस एतिराज़ का जवाब किसी से नहीं हो सकता। तो उसने एक शे'र कहा कि अगर हाथ काट डाला जाये तो दियत में पाँच सौ दिलवायें और फिर उसी हाथ को पाव दीनार की चोरी पर कटवा दें। यह ऐसा परस्पर विरोधी हुक्म है कि हमारी समझ में तो आता ही नहीं, ख़ामोश हैं और कहते हैं कि हमारा मौला हमें जहन्नम से बचाये, लेकिन जब उसकी यह बकवास मशहूर हुई तो उलेमा-ए-किराम ने उसे जवाब देना चाहा, यह भाग गया, फिर जवाब भी मशहूर कर दिये गये। क़ाज़ी अ़ब्दुल-वहाब ने जवाब दिया कि जब तक हाथ 'अमीन' (अमानतदार) था तब तक 'समीन' यानी कीमती था और जब यह ख़ाईन (चोरी और ख़ियानत करने वाला) हो गया, इसने चोरी कर ली तो इसकी कीमत घट गई। बाज़ बुज़ुर्गों ने उसे किसी क़द्र तफ़सील से जवाब दिया था, कि इससे शरीअ़त की कामिल हिक्मत ज़ाहिर होती है और दुनिया का अमन व अमान क़ायम होता है। जो किसी का हाथ बेवजह काट डाले उस पर बड़ा जुर्माना रखा, ताकि लोग इस बुरे फ़ेल से बचें, वहाँ यही हुक्म मुनासिब था। चोरी में थोड़ी सी चीज़ पर उसे काट देने का हुक्म दिया ताकि चोरी का दरवाज़ा इस ख़ौफ़ से बन्द हो जाये। पस यह तो हिक्मत के बिल्कुल मुताबिक़ है, चोरी में भी इतनी रक़म की क़ैद लगा दी जाती तो चोरियों को न रोका जा सकता। यह दर असल बदला है उनकी बुरी हरकतों का। मुनासिबे मक़ाम यही है कि बदन के जिस अंग से उसने दूसरे को नुक़सान पहुँचाया है उसी अंग पर सज़ा होती है, कि उन्हें काफ़ी इबरत हासिल हो, और दूसरों को भी तंबीह हो जाये। अल्लाह तआ़ला अपने इन्तिक़ाम (बदला लेने) में ग़ालिब है और अपने हुक्मों में हकीम

Maktab E Ashraf

(हिक्मत वाला) है। जो शख़्स अपने गुनाह के बाद तौबा कर ले ख़ुदा तआ़ला उसके गुनाह माफ़ कर देते हैं। हाँ जो माल चोरी में किसी का ले लिया है चूँकि वह उस शख़्स का हक़ है लिहाज़ा सिर्फ़ तौबा करने से वह माफ़ नहीं होता, जब तक कि वह माल जिसका है उसे न पहुँचाये या उसके बदले पूरी-पूरी क़ीमत अदा न करे। जमहूर इमामों का यही क़ौल है, सिर्फ़ इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि जब चोरी पर हाथ हट गया और माल ज़ाया हो चुका है तो उसका बदला दुनिया में उस पर ज़रूरी नहीं।

दारे क़ुतनी वग़ैरह की एक मुर्सल हदीस में है कि एक चोर हुज़ूर सल्ल. के सामने लाया गया जिसने चादर चुराई थी, आपने उससे फ़रमाया मेरा ख़्याल है कि तुमने चोरी नहीं की होगी। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मैंने चोरी की है, तो आपने फ़रमाया इसको ले जाओ और इसका हाथ काट दो। जब हाथ कट चुका और आपके पास वापस आये तो आपने फ़रमाया तौबा करो। उन्होंने तौबा की तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा ली (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)।

इब्ने माजा में है कि हज़रत उमर बिन समुरा रज़ि. हुज़ूर सल्ल. के पास आकर कहते हैं कि हज़रत! मुझसे चोरी हो गई है, आप मुझे पाक कीजिये, फ़ुलाँ क़बीले वालों का ऊँट मैंने चुरा लिया है। आपने उस क़बीले वालों के पास आदमी भेजकर दरियाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने कहा कि हमारा एक ऊँट ज़रूर गुम हो गया है। आपने हुक्म दिया और उनका हाथ काट डाला गया। वह हाथ कटने पर कहने लगे कि ख़ुदा का शुक्र है जिसने तुझे मेरे जिस्म से अलग कर दिया, तूने तो मेरे सारे जिस्म को जहन्नम में ले जाना चाहा था (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)।

इब्ने जरीर में है कि एक औ़रत ने कुछ ज़ेवर चुरा लिये। लोगों ने हुज़ूर सल्ल. के पास उसे पेश किया आपने उसका दाहिना हाथ काटने का हुक्म दिया, जब कट चुका तो उस औ़रत ने कहा या रसूलल्लाह! क्या मुझ पर तौबा भी है? आपने फ़रमाया तुम ऐसी पाक साफ़ हो गईं कि गोया आज ही पैदा हुई हो। इस पर आयत "फ़मन् ता-ब...." नाज़िल हुई।

मुस्नद अहमद में इतना और भी है कि उस वक़्त उस औ़रत वालों ने कहा हम इसका फ़िदया देने को तैयार हैं। लेकिन आपने उसे क़बूल न किया और हाथ काटने का हुक्म दे दिया। यह औ़रत क़बीला मख़ज़ूम की थी और उसका यह वाक़िआ़ सहीहैन में भी मौजूद है। चूँकि यह बड़े घराने की औ़रत थी लोगों में बड़ी तश्वीश (बेचैनी) फैली और इरादा किया कि रसूलुल्लाह सल्ल. से इसके बारे में कुछ कहें सुनें, यह वाक़िआ़ फ़तह मक्का में हुआ था। आख़िरकार यह तय हुआ कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि. जो रसूलुल्लाह सल्ल. के बहुत अ़ज़ीज़ हैं, वह उनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सिफ़ारिश करें। हज़रत उसामा रज़ि. ने जब उनकी सिफ़ारिश की तो हुज़ूर सल्ल. को सख़्त नागवार गुज़रा और गुस्से से फ़रमाया उसामा! तू ख़ुदा की हदों में से एक हद के बारे में सिफ़ारिश कर रहा है? अब तो हज़रत उसामा रज़ि. बहुत घबराये और कहने लगे मुझसे बड़ी ख़ता हुई, मेरे लिये आप इस्तिग़फ़ार कीजिये। शाम के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक ख़ुतबा दिया जिसमें ख़ुदा तआ़ला की पूरी तारीफ़ व प्रशंसा के बाद फ़रमाया कि पहले लोग इसी ख़स्लत पर तबाह व बरबाद हो गए कि उनमें से जब कोई बड़ा आदमी चोरी करता था तो उसे छोड़ देते थे और जब कोई मामूली आदमी होता तो उस पर हद (सज़ा) जारी करते। उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद भी चोरी करें तो मैं उनके भी हाथ काट दूँ। फिर हुक्म दिया और उस औ़रत का हाथ काट दिया गया। हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि फिर उस सहाबिया ने तौबा की और पूरी और पुख़्ता तौबा की (यानी ऐसी ग़लती उनसे कभी न हुई) और निकाह कर लिया। फिर वह

मेरे पास कभी अपने किसी काम के लिये आती थी और मैं उसकी ज़रूरत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बयान कर दिया करती थी (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)।

मुस्लिम में है कि एक औरत लोगों के सामान उधार लेती थी फिर इनकार कर दिया करती थी। हुज़ूर सल्ल. ने उसके हाथ काटने का हुक्म दिया। एक और रिवायत में है कि यह ज़ेवर इसी तरह लेती थी और उसका हाथ काटने का हुक्म हज़रत बिलाल रज़ि. को हुआ था, किताबुल-अहकाम में ऐसी बहुत सी हदीसें हैं जो चोरी के साथ ताल्लुक़ रखती हैं। फ़ल्हम्दु लिल्लाह

तमाम चीज़ों का मालिक और सारी कायनात का असली बादशाह सच्चा हाकिम अल्लाह ही है। जिसके किसी हुक्म को कोई रोक नहीं सकता, जिसके किसी इरादे को कोई बदल नहीं सकता, जिसे चाहे बख़्शे जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, हर चीज़ पर वह क़ादिर है। उसकी क़ुदरत कामिल और उसका क़ब्ज़ा सच्चा है।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ ٱلَّذِينَ يُسَـٰرِعُونَ فِى ٱلْكُفْرِ مِنَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِأَفْوَٰهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ ٱلَّذِينَ هَادُوا۟ ۛ سَمَّـٰعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّـٰعُونَ لِقَوْمٍ ءَاخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ ٱلْكَلِمَ مِنۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهِۦ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَـٰذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَٱحْذَرُوا۟ ۚ وَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ فِتْنَتَهُۥ فَلَن تَمْلِكَ لَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا ۚ أُو۟لَـٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ لَمْ يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِى ٱلدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَلَهُمْ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ○ سَمَّـٰعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّـٰلُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِن جَآءُوكَ فَٱحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ

ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में दौड़-दौड़ गिरते हैं आपको ग़मगीन न करें, (चाहे वे) उन लोगों में (हों) जो अपने मुँह से तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए और उनके दिल यक़ीन नहीं लाए, और (चाहे) उन लोगों में से हों जो यहूदी हैं। ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आ़दी हैं, (आपकी बातें) दूसरी क़ौम की ख़ातिर कान धर-धर सुनते हैं। (जिस क़ौम के ये हालात हैं) कि आपके पास नहीं आए, कलाम को बाद इसके कि वह अपने मौक़े पर होता है बदलते रहते हैं। कहते हैं कि अगर तुमको यह (हुक्म) मिले तब तो इसको क़बूल कर लेना और अगर तुमको यह हुक्म न मिले तो एहतियात रखना। और जिसका ख़राब होना ख़ुदा तआ़ला ही को मन्ज़ूर हो तो उसके लिए अल्लाह से तेरा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता। ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह को उनके दिलों का पाक करना मन्ज़ूर नहीं हुआ, उन लोगों के लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी सज़ा है। (41) ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आ़दी हैं, बड़े हराम खाने वाले हैं, तो अगर ये लोग आप के पास आएँ तो (आप मुख़्तार हैं) चाहे आप उनमें फ़ैसला कर दीजिए या उनको टाल दीजिये

Maktab e Ashraf

وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْئًا ط
وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ط
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ وَكَيْفَ
يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ
اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ م بَعْدِ ذٰلِكَ ط
وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّآ ع ٦/١٠
اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ج يَحْكُمُ
بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ
كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ج فَلَا
تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا
بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ط وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

और अगर आप उनको टाल दें तो उनकी मजाल नहीं कि वे आपको ज़रा भी नुक़सान पहुँचा सकें, और अगर आप फ़ैसला करें तो उनमें इन्साफ़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कीजिए, बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करते हैं। (42) और वे आपसे कैसे फ़ैसला कराते हैं हालाँकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म है, फिर उसके बाद हट जाते हैं, और ये लोग हरगिज़ एतिक़ाद वाले नहीं। (43)

हमने तौरात नाज़िल फ़रमाई थी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी, अम्बिया जो कि अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबरदार थे उसके मुवाफ़िक़ यहूद को हुक्म दिया करते थे, और अल्लाह वाले और उलेमा भी इस वजह से कि उनको उस अल्लाह की किताब की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया गया था और वे उसके इक़रारी हो गए थे, सो तुम भी लोगों से अन्देशा मत करो और मुझसे डरो और मेरे अहकाम के बदले में मता-ए-क़लील "यानी मामूली सा फ़ायदा" मत लो, और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल किए हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे सो ऐसे लोग बिल्कुल काफ़िर हैं। (44)

क़ुरआन के मज़ामीन को बदलना बहुत बड़ा जुर्म है

इन आयतों में उन लोगों की बुराई और निंदा बयान हो रही है जो राय, क़ियास और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को ख़ुदा की शरीअ़त पर मुक़द्दम रखते हैं। अल्लाह व रसूल की इताअ़त से निकलकर कुफ़्र की तरफ़ दौड़ते भागते रहते हैं। अगरचे ये लोग ज़बानी ईमान के दावे करें लेकिन इनका दिल ईमान से ख़ाली है। मुनाफ़िक़ों की यही हालत है कि ज़बान के खरे दिल के खोटे। और यही ख़स्लत यहूदियों की है जो इस्लाम और मुसलामों के दुश्मन हैं, ये झूठ को मज़े से सुनते हैं और दिल खोलकर क़बूल करते हैं, लेकिन सच्च से भागते हैं बल्कि नफ़रत करते हैं। और जो लोग आपकी मजलिस में नहीं आते ये यहाँ की वहाँ लगाते हैं, उनकी तरफ़ से जासूसी करने को आते हैं, फिर और ज़ुल्म यह करते हैं कि ये बात को बदल डाला करते हैं, मतलब कुछ हो ले कुछ उड़ते हैं। इरादे यही हैं कि अगर तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ कहे तो मान लो, तबीयत के ख़िलाफ़ हो तो दूर रहो।

कहा गया है कि यह आयत उन यहूदियों के बारे में उतरी थी जिनमें एक को दूसरे ने क़त्ल कर दिया

Maktab E Ashraf

था, अब कहने लगे चलो हुज़ूर सल्ल. के पास चलें, अगर आप दियत जुर्माने का हुक्म दें तो मन्ज़ूर कर लें और अगर क़िसास (ख़ून के बदले ख़ून) को फ़रमायेंगे तो नहीं मानेंगे। लेकिन ज़्यादा सही बात यह है कि वे एक ज़िनाकार को लेकर आये थे, उनकी किताब तौरात में दर असल हुक्म तो यह था कि शादीशुदा ज़ानी को संगसार किया जाये, लेकिन उन्होंने इसे बदल डाला था और सौ कोड़े मारकर मुँह काला करके उल्टे गधे पर सवार करके रुस्वाई करके छोड़ देते थे। जब हिजरत के बाद उनमें से कोई ज़िना के जुर्म में पकड़ा गया तो ये कहने लगे कि आओ हुज़ूर सल्ल. के पास चलें और आपसे इसके बारे में सवाल करें, अगर आप भी वही फ़रमायें जो हम करते हैं तो उसे क़बूल कर लें और ख़ुदा के यहाँ भी यह हमारी सनद हो जायेगी। और 'रजम' यानी संगसार करने को फ़रमायें तो नहीं मानेंगे। चुनाँचे ये आये और हुज़ूर सल्ल. से ज़िक्र किया कि हमारे एक मर्द व औरत ने बदकारी की है, उनके बारे में आप क्या इरशाद फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया तुम्हारे यहाँ तौरात में क्या हुक्म है? उन्होंने कहा हम तो उसे ज़लील करते हैं और कोड़े मारकर छोड़ देते हैं। यह सुनकर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि. ने फ़रमाया झूठ कहते हैं, तौरात में संगसार (पत्थर मार-मारकर हलाक) करने का हुक्म है, लाओ तौरात पेश करो। उन्होंने तौरात खोली, लेकिन रजम की आयत पर हाथ रखकर आगे पीछे की सब इबारत पढ़कर सुनाई। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. समझ गये और आपने फ़रमाया अपने हाथों को तो हटा, हाथ हटाया तो संगसार करने की आयत मौजूद थी। अब तो उन्हें भी इक़रार करना पड़ा। हुज़ूर सल्ल. के हुक्म से ज़ानियों को संगसार कर दिया गया। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. फ़रमाते हैं- मैंने देखा कि वह ज़ानी उस ज़ानी औरत को पत्थर से बचाने के लिये आड़े आ जाता था।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

एक दूसरी सनद से है कि यहूदियों ने कहा हम तो उसे काला मुँह करके कुछ मार-पीटकर छोड़ देते हैं। और आयत के ज़ाहिर होने के बाद उन्होंने कहा कि है तो यही हुक्म लेकिन हमने तो इसे छुपा लिया था। जो पढ़ रहा था उसी ने रजम की आयत पर अपना हाथ रख दिया था, जब उसका हाथ उठवाया तो आयत झपकती हुई नज़र पड़ गई। उन दोनों के रजम करने वालों में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. भी मौजूद थे। एक और रिवायत में है कि उन लोगों ने अपने आदमी को भेजकर आपको बुलवाया था, अपने मदरसे में गद्दी पर आपको बैठाया था और जो तौरात आपके सामने पढ़ रहा था वह उनका बहुत बड़ा आ़लिम था। एक और रिवायत में है कि आपने उनसे क़सम देकर पूछा था कि तुम तौरात में शादीशुदा ज़ानी की क्या सज़ा पाते हो? तो उन्होंने यही जवाब दिया था लेकिन एक नौजवान कुछ न बोला, ख़ामोश ही खड़ा रहा। आपने उसकी हालत देखकर उसे दोबारा क़सम दी और जवाब माँगा, उसने कहा जब आप ऐसी क़समें दे रहे हैं तो मैं झूठ न बोलूँगा। वाक़ई तौरात में इन लोगों के ज़िम्मे संगसारी है। आपने फ़रमाया अच्छा फिर यह भी सच-सच बताओ कि सबसे पहले इस रजम (संगसारी) को तुमने क्यों और किस पर उड़ाया? उसने कहा हुज़ूर! किसी बादशाह के रिश्तेदार बड़े आदमी ने ज़िना किया, उसकी शान और बादशाह के डर के मारे उसे रजम न किया। फिर एक आ़म आदमी ने बदकारी की तो उसे रजम करना चाहा, लेकिन उसकी सारी क़ौम चढ़ दौड़ी कि या तो उस पहले शख़्स को रजम करो वरना इसे भी छोड़ दो। आख़िर हमने मिल-मिलाकर यह तय किया कि बजाय रजम के इस क़िस्म की कोई सज़ा मुक़र्रर कर दी जाये। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने तौरात के हुक्म को जारी किया और इसी बारे में यह आयत 'इन्ना अन्ज़लनत्तौरा-त........" उतरी।

पस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इन अहकाम के जारी करने वालों में से हैं। (अहमद अबू दाऊद) मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स को यहूदी काला मुँह किये हुए लेजा रहे थे और उसे कोड़े भी मार रखे थे, तो आपने बुलाकर उनसे माजरा पूछा। उन्होंने कहा कि इसने ज़िना किया है। आपने फ़रमाया क्या ज़ानी की यही सज़ा तुम्हारे यहाँ है? कहा हाँ। आपने उनके एक आ़लिम को बुलाकर उसे सख़्त क़सम देकर पूछा तो उसने कहा कि अगर आप ऐसी क़सम न देते तो मैं हरगिज़ न बताता। बात यह है कि हमारे यहाँ दर असल ज़िना की सज़ा संगसारी है, लेकिन चूँकि बड़े लोगों और मालदारों में यह बदकारी बढ़ गई थी, और उन्हें इस क़िस्म की सज़ा देनी हमने मुनासिब न जानी, इसलिये उन्हें तो छोड़ देते थे और हुक्मे ख़ुदा मारा न जाये इसलिये ग़रीब-ग़ुरबा कम हैसियत के लोगों पर रजम करा देते थे। फिर हमने आपस में तय किया कि आओ कोई ऐसी सज़ा तजवीज़ करो कि शरीफ़ और ग़ैर-शरीफ़ अमीर और ग़रीब सब पर बराबर जारी हो सके, चुनाँचे हम सब की इस बात पर सहमति हुई कि मुँह काला कर दें और कोड़े लगायें। यह सुनकर हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म दिया कि इन दोनों को संगसार करो। चुनाँचे उन्हें रजम कर दिया गया। और आपने फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं पहला वह शख़्स हूँ जिसने तेरे एक मुर्दा हुक्म को ज़िन्दा किया। इस पर आयतः

يَآاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَايَحْزُنْكَ........هُمُ الْكٰفِرُوْنَ.

नाज़िल हुई। इन्हीं यहूदियों के बारे में एक और आयत में है कि ख़ुदा के नाज़िल किये हुए हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसले न करने वाले ज़ालिम हैं। एक और आयत में है कि फ़ासिक़ यानी गुनाहगार व बदकार हैं (मुस्लिम वग़ैरह)। एक और रिवायत में है कि ज़िना का यह वाक़िआ फ़िदक में हुआ था और वहाँ के यहूदियों ने मदीना शरीफ़ के यहूदियों को लिखकर हुज़ूर सल्ल. से मालूम कराया था, जो आ़लिम उनका आया उसका नाम इब्ने सूरया था, यह आँख का भैंगा था और उसके साथ एक दूसरा आ़लिम भी था। हुज़ूर सल्ल. ने जब उन्हें क़सम दी तो दोनों ने इक़रार कर लिया था। आपने उन्हें कहा था कि तुम्हें उस ख़ुदा की क़सम जिसने बनी इस्राईल के लिये पानी में राह कर दी थी, और बादल का साया उन पर किया था और फ़िरऔनियों से बचा लिया था और मन्न व सल्वा उतारा था, इस क़सम से वे चौंक गये और आपस में कहने लगे कि बड़ी ज़बरदस्त क़सम है, इस मौक़े पर झूठ बोलना ठीक नहीं, तो कहा हुज़ूर! तौरात में यह है कि बुरी नज़र से देखना भी ज़िना की तरह है, और गले लगाना भी और बोसा लेना भी, अगर चार गवाह इस बात के हों कि उन्होंने सोहबत और संभोग किया है जैसा कि सलाई सुर्मेदानी में आती जाती है, तो रजम वाजिब हो जाता है। आपने फ़रमाया यही मसला है। फिर हुक्म दिया और उन्हें रजम करा दिया गया। इस पर आयतः

فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ.... الخ

उतरी। (अबूदा ऊद वग़ैरह)

एक रिवायत में है कि जो दो आ़लिम आपके सामने लाये गये थे ये दोनों सूरया के लड़के थे। सज़ा को छोड़ देने का सबब इस रिवायत में यहूदियों की तरफ़ से यह बयान हुआ है कि जब हमारी हुकूमत ही न रही तो हमने अपने आदमियों की जान लेनी मुनासिब न समझी। फिर आपने गवाहों को बुलवाकर गवाही ली, जिन्होंने बयान किया कि हमने अपनी आँखों से इन्हें इस बुराई में इस तरह मुब्तला देखा जिस तरह सुर्मेदानी में सलाई होती है। दर असल तौरात वग़ैरह का मंगवाना, उन आ़लिमों को बुलवाना, यह सब उन्हें

इल्ज़ाम देने के लिये न था, न इसलिये था कि वे उसी के मानने के मुकल्लफ़ हैं, बल्कि ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान वाजिबुल-अ़मल है। इससे मक़सद एक तो हुज़ूर सल्ल. की सच्चाई का इज़हार था कि ख़ुदा की 'वही' से आपने यह मालूम कर लिया कि उनकी तौरात में भी रजम का हुक्म मौजूद है, और यही निकला। दूसरे उनकी रुस्वाई और बदनामी कि उन्हें पहले के इनकार के बाद इक़रार करना पड़ा, और दुनिया पर ज़ाहिर हो गया कि ये लोग फ़रमाने ख़ुदा को छुपा लेने वाले और अपनी राय व क़ियास पर अ़मल करने वाले हैं, और इसलिये भी कि ये लोग सच्चे दिल से हुज़ूर सल्ल. के पास कुछ इसलिये नहीं आये थे कि आपका हुक्म मानेंगे बल्कि महज़ इसलिये आये थे कि अगर आपसे भी अपनी राय और मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ पायें तो ले लेंगे वरना हरगिज़ क़बूल नहीं करेंगे। इसलिये फ़रमान है कि इन्हें ख़ुदा गुमराह कर दे, तू इनकी हिदायत का ज़िम्मेदार नहीं है, इनके गन्दे दिलों को पाक करने का इरादा ख़ुदा का नहीं। ये दुनिया में ज़लील व ख़्वार होंगे, आख़िरत में दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। ये बातिल को कान लगाकर मज़े लेकर सुनने वाले हैं और रिश्वत जैसी हराम चीज़ को दिन दहाड़े खाने वाले हैं। भला इनके नजिस (नापाक और गन्दे) दिल कैसे पाक होंगे? और इनकी दुआ़यें ख़ुदा कैसे सुनेगा? अगर ये तेरे पास आयें तो तुझे इख़्तियार है कि उनके फ़ैसले कर या न कर। अगर तू उनसे मुँह फेरे जब भी ये तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, क्योंकि इनका मक़सद हक़ की पैरवी नहीं बल्कि अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी है। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि यह आयत 'व अनिह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु....' वाली आयत से मन्सूख़ है।

फिर फ़रमाया अगर तू उनमें फ़ैसले करे तो अ़दल व इन्साफ़ के साथ कर, अगरचे ये ख़ुद ज़ालिम हैं और इन्साफ़ से हटे हुए हैं, और जान ले कि अल्लाह तआ़ला आ़दिल (इन्साफ़ करने वाले) लोगों से मुहब्बत रखता है। फिर उनकी ख़बासत, अन्दरूनी बुराई और सरकशी बयान हो रही है कि एक तरफ़ तो अल्लाह की उस किताब को छोड़ रखा है जिसकी ताबेदारी और हक़्क़ानियत के ख़ुद क़ायल हैं, दूसरी तरफ़ इस जानिब झुक रहे हैं जिसे नहीं मानते, और जिसे झूठ मशहूर कर रखा है, और फिर उसमें भी बुरी नीयत है कि अगर वहाँ से हमारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ हुक्म मिले तो ले लेंगे वरना छोड़ देंगे। तो फ़रमाया ये कैसे तेरा हुक्म मानेंगे? इन्होंने तो तौरात को भी छोड़ रखा है, जिसमें अल्लाह के हुक्म होने का इक़रार इन्हें भी है लेकिन फिर भी बेईमानी करके उससे फिर जाते हैं। फिर इस तौरात की तारीफ़ व प्रशंसा बयान फ़रमाई जो उसने अपने मक़बूल रसूल हज़रत मूसा बिन इमरान अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाई थी कि उसमें हिदायत व नूरानियत थी। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम जो ख़ुदा के फ़रमान के ताबे थे इसी पर फ़ैसला करते रहे, यहूदियों में इसी के अहकाम जारी करते रहे। उसमें रद्दोबदल और कमी-बेशी करने से बचते रहे और रब्बानी यानी आ़बिद उलेमा और अहबार यानी इल्म वाले लोग भी इसी तरीक़े पर रहे, क्योंकि उन्हें यह किताब सौंपी गई थी और इसके इज़हार का और इस पर अ़मल करने का उन्हें हुक्म दिया गया था, और वे इस पर गवाह व शाहिद थे। अब तुम्हें चाहिये कि सिवाय ख़ुदा तआ़ला के किसी और से न डरो, हाँ क़दम-क़दम और लम्हे-लम्हे पर ख़ौफ़े ख़ुदा रखो और मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े मोल पर न बेचा करो। जान लो कि ख़ुदा की 'वही' को जो न माने वह काफ़िर है। इसमें दो क़ौल हैं जो अभी बयान होंगे इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

इन आयतों का एक शाने-नुज़ूल (उतरने का मौक़ा और सबब) भी सुन लीजिये। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि ऐसे लोगों को इस आयत में तो काफ़िर कहा, दूसरी में ज़ालिम, तीसरी में फ़ासिक़। बात यह है कि यहूदियों के दो गिरोह थे- एक ग़ालिब था दूसरे मग़लूब। उनकी आपस में इस बात पर सुलह हुई थी

Maktab E Ashraf

कि ग़ालिब (यानी जो छाया हुआ था) इज़्ज़त वाले फ़िर्के का कोई शख़्स अगर मग़लूब (पस्त और पिछड़े हुए) ज़लील फ़िर्के के किसी शख़्स को क़त्ल कर डाले तो पचास वसक़ दियत दे, और ज़लील लोगों में से कोई किसी इज़्ज़तदार और बड़े आदमी को क़त्ल कर दे तो एक सौ वसक़ दे। यही रिवाज उनमें चला आ रहा था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीने में आये, उसके बाद एक वाक़िआ़ ऐसा हुआ कि उन नीचे वाले यहूदियों में से किसी ने ऊँचे यहूदी को मार डाला, यहाँ से आदमी गया कि लाओ सौ वसक़ दिलवाओ। वहाँ से जवाब मिला कि यह खुली नाइन्साफ़ी है कि हम दोनों ही क़बीले एक ही दीन के, एक ही नसब के एक ही शहर के हैं, फिर हमारी दियत कम और तुम्हारी ज़्यादा। हम चूँकि अब तक तुम्हारे से दबे हुए थे इस नाइन्साफ़ी को दिल के न चाहते हुए भी बरदाश्त करते रहे, लेकिन अब जबकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. जैसे आ़दिल बादशाह यहाँ आ गये हैं, हम तुम्हें उतनी ही दियत देंगे जितनी तुम हमें देते हो। इस बात पर दोनों तरफ़ आस्तीनें चढ़ गईं। फिर आपस में यह बात तय हुई कि अच्छा इस झगड़े का फ़ैसला रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सौंप दिया जाये, लेकिन ऊँची क़ौम के लोगों ने जब मश्विरा किया तो उसके समझदारों ने कहा देखो यह बात दिमाग़ से निकाल दो कि हुज़ूर सल्ल. कोई नाइन्साफ़ी का हुक्म करें, यह तो खुली ज़्यादती है कि हम आधी दें और पूरी लें, और वास्तव में उन लोगों ने दबकर इसे मन्ज़ूर किया था, अब जो तुमने नबी करीम सल्ल. को जज और मध्यस्त मुक़र्रर किया है तो यक़ीनन तुम्हारा यह हक़ मारा जायेगा।

किसी ने राय दी कि अच्छा यूँ करो किसी को हुज़ूर सल्ल. के पास चुपके से भेज दो, वह मालूम कर आये कि आप फ़ैसला क्या करेंगे? अगर हमारी मुवाफ़क़त में हो तो बहुत अच्छा, चलो और उनसे हक़ हासिल कर आओ, और अगर ख़िलाफ़ हो तो बस फिर अलग थलग ही अच्छे हैं। चुनाँचे मदीने के चन्द मुनाफ़िक़ों को उन्होंने जासूस बनाकर हुज़ूर सल्ल. के पास भेजा। यहाँ वे पहुँचें इससे पहले अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें उतारकर अपने रसूल को उन दोनों फ़िर्क़ों के बुरे इरादों से बाख़बर फ़रमा दिया। (अबू दाऊद)

एक और रिवायत में है कि ये दोनों क़बीले बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा थे। बनू नज़ीर की पूरी दियत थी और बनू क़ुरैज़ा की आधी। हुज़ूर सल्ल. ने दोनों की दियत बराबर यक्साँ देने का फ़ैसला सादिर फ़रमाया। एक और रिवायत में है कि क़ुरैज़ा वाला अगर किसी बनू नज़ीर के आदमी को क़त्ल कर डाले तो उससे क़िसास लेते थे, लेकिन इसके विपरीत अगर होता तो क़िसास था ही नहीं, सौ वसक़ दियत थी। यह बहुत मुम्किन है कि इधर यह वाक़िआ़ हुआ उधर ज़िना का क़िस्सा वाक़े हुआ, जिसका तफ़सीली बयान पहले गुज़र चुका है। और इन दोनों पर ये आयतें नाज़िल हुई हों वल्लाहु आलम। हाँ एक बात और है जिससे दूसरे शाने-नुज़ूल को प्रबलता मिलती है, वह यह कि इसके बाद ही फ़रमाया हैः

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا...... الخ

यानी हमने यहूदियों पर तौरात में यह हुक्म फ़र्ज़ कर दिया था कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख........। वल्लाहु आलम

फिर उन्हें काफ़िर कहा गया जो अल्लाह की शरीअ़त और उसकी उतारी हुई 'वही' के मुताबिक़ फ़ैसले और इन्साफ़ न करें। अगरचे यह आयत शाने-नुज़ूल के एतिबार से बक़ौल मुफ़स्सिरीन अहले किताब के बारे में है लेकिन हुक्म के एतिबार से हर शख़्स को शामिल है। बनी इस्राईल के बारे में उतरी और इस उम्मत का भी यही हुक्म है। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि रिश्वत हराम है और रिश्वत लेने के बाद किसी

Maktab E Ashraf

शरई मसले के ख़िलाफ़ फ़तवा देना कुफ़्र है। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं जिसने अल्लाह की वही के ख़िलाफ़ जान-बूझकर फ़तवा दिया बावजूद जानने के उसकी मुख़ालफ़त की वह काफ़िर है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिसने ख़ुदा के फ़रमान का इनकार किया उसका यह हुक्म है और जिसने इनकार तो न किया लेकिन उसके मुताबिक़ भी न कहा वह ज़ालिम और फ़ासिक़ (गुनाहगार) है, चाहे अहले किताब हो चाहे कोई भी हो।

शअ़बी रह. फ़रमाते हैं कि मुसलमानों में जिसने अल्लाह की किताब के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया वह काफ़िर है, और यहूदियों में दिया तो वह ज़ालिम है, और ईसाईयों में दिया तो वह फ़ासिक़ है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उसका कुफ़्र इस आयत के साथ है। ताऊस रह. फ़रमाते हैं कि उसका कुफ़्र उसके कुफ़्र जैसा नहीं जो सिरे से ख़ुदा और रसूल, क़ुरआन और फ़रिश्तों का मुन्किर हो। अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि कुफ़्र कुफ़्र से कम है, इसी तरह ज़ुल्म व फ़िस्क़ के भी अदना आला दर्जे हैं। इस कुफ़्र से वह मिल्लते इस्लाम से निकल जाने वाला नहीं हो जाता। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद वह कुफ़्र नहीं जिसकी तरफ़ तुम जा रहे हो।

और हमने उन पर उसमें यह बात फ़र्ज़ की थी कि जान बदले जान के, और आँख बदले आँख के, और नाक बदले नाक के, और कान बदले कान के, और दाँत बदले दाँत के, और ख़ास ज़ख़्मों का भी बदला है, फिर जो शख़्स उसको माफ़ कर दे तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगा, और जो शख़्स ख़ुदा के नाज़िल किए हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे, तो ऐसे लोग बिल्कुल सितम कर रहे हैं। (45)	وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ لا وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ لا وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ط فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ط وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

क़िसास का हुक्म

यहूदियों को और तंबीह की जा रही और फटकार लगायी जा रही है कि उनकी किताब में साफ़ लफ़्ज़ों में जो हुक्म था ये खुल्लम-खुल्ला उसका उल्लंघन कर रहे हैं और सरकशी और बेपरवाही से उसे भी छोड़ रहे हैं। बनू नज़ीर वाले यहूदियों को तो क़ुरैज़ी यहूदियों के बदले क़त्ल करते हैं लेकिन क़ुरैज़ा के यहूद को बनू नज़ीर के यहूद के बदले क़त्ल नहीं करते बल्कि दियत लेकर छोड़ देते हैं। इसी तरह उन्होंने शादीशुदा ज़ानी की संगसारी के हुक्म को बदल दिया है, और सिर्फ़ काला मुँह करके रुस्वा करके मार-पीटकर छोड़ देते हैं, इसी लिये तो वहाँ उन्हें काफ़िर कहा। यहाँ इन्साफ़ न करने की वजह से उन्हें ज़ालिम कहा।

उलेमा-ए-किराम का क़ौल है कि पहली शरीअ़त जो हमारे सामने बतौर तक़रीर के बयान की जाये और मन्सूख़ न हो जाये तो वह हमारे लिये भी शरीअ़त है, जैसे ये अहकाम सब के सब हमारी शरीअ़त में भी इसी तरह हैं। इमाम नववी फ़रमाते हैं कि इसी मसले में तीन मस्लक हैं- एक तो वही जो बयान हुआ, एक उसके उलट, एक यह कि इब्राहिमी शरीअ़त सिर्फ़ जारी और बाक़ी है और कोई बाक़ी नहीं। इस आयत के

Maktab E Ashraf

उमूम से यह भी दलील ली गयी है कि मर्द औरत के बदले भी क़त्ल किया जायेगा क्योंकि यहाँ नफ़्स (जान) है, जो मर्द औरत दोनों को शामिल है। चुनाँचे यह हदीस शरीफ़ में भी है कि मर्द औरत के ख़ून के बदले क़त्ल किया जायेगा। एक और हदीस में है कि मुसलमानों के ख़ून आपस में बराबर हैं।

कुछ बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया है कि मर्द जब किसी औरत को क़त्ल कर दे तो उसके बदले क़त्ल न किया जायेगा बल्कि सिर्फ़ दियत ली जायेगी लेकिन यह जमहूर के ख़िलाफ़ है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. तो फ़रमाते हैं कि ज़िम्मी काफ़िर के क़त्ल के बदले में भी मुसलमान क़त्ल कर दिया जायेगा और ग़ुलाम के क़त्ल के बदले आज़ाद भी क़त्ल कर दिया जायेगा। लेकिन यह मज़हब जमहूर के ख़िलाफ़ है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मुसलमान को काफ़िर के बदले में क़त्ल न किया जायेगा और पहले उलेमा के बहुत से आसार (अक़वाल व आमाल) इस बारे में मौजूद हैं, कि वे ग़ुलाम का क़िसास (बदला) आज़ाद से नहीं लेते थे, और आज़ाद को ग़ुलाम के बदले में क़त्ल न किया जाता था। हदीसें भी इस बारे में नक़ल की गयी हैं, लेकिन वे सही के दर्जे को नहीं पहुँचतीं। इमाम शाफ़ई रह. तो फ़रमाते हैं कि इस मसले में इमाम अबू हनीफ़ा रह. के ख़िलाफ़ इजमा (बाक़ी तमाम उलेमा की राय एक) है। लेकिन इन बातों से इस क़ौल का ग़लत होना लाज़िम नहीं आता, जब तक कि आयत के उमूम को ख़ास करने वाली कोई ज़बरदस्त साफ़ साबित दलील न हो।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि हज़रत अनस बिन नज़र रज़ि. की फूफी रबीअ़ ने एक बाँदी के दाँत तोड़ दिये। अब लोगों ने उससे माफ़ी चाही लेकिन वह न मानी। हुज़ूर सल्ल. के पास मामला आया आपने बदला लेने का हुक्म दे दिया। इस पर हज़रत अनस रज़ि. ने फ़रमाया क्या उस औरत के सामने के दाँत तोड़े जायेंगे? आपने फ़रमाया हाँ ऐ अनस! ख़ुदा की किताब में क़िसास का हुक्म मौजूद है। यह सुनकर फ़रमाया नहीं नहीं या रसूलल्लाह! क़सम है उस ख़ुदा की जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, उसके दाँत हरगिज़ न तोड़े जायेंगे। चुनाँचे यही हुआ भी कि वे लोग रज़ामन्द हो गये और क़िसास छोड़ दिया, बल्कि माफ़ कर दिया। उस वक़्त आपने फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दों में बाज़ ऐसे भी हैं कि अगर वे ख़ुदा पर कोई क़सम खा लें तो अल्लाह तआ़ला उसे पूरी ही कर दे। दूसरी रिवायत में है कि पहले उन्होंने न तो माफ़ी दी न दियत लेनी मन्ज़ूर की।

हदीस की किताब नसाई वग़ैरह में है कि एक ग़रीब जमाअ़त के ग़ुलाम ने किसी मालदार जमाअ़त के ग़ुलाम के कान काट दिये, उन लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से आकर अ़र्ज़ किया कि हम लोग फ़क़ीर मिस्कीन हैं, माल हमारे पास नहीं है, तो हुज़ूर सल्ल. ने उन पर कोई जुर्माना नहीं किया। हो सकता है कि ये ग़ुलाम बालिग़ न हों। और हो सकता है कि आपने दियत अपने पास से दे दी हो और यह भी हो सकता है कि उनसे सिफ़ारिश करके माफ़ करा लिया हो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जान जान के बदले मारी जायेगी, आँख फोड़ देने वाले की आँख फोड़ दी जायेगी, नाक काटने वाले की नाक काट दी जायेगी, दाँत तोड़ने वाले का दाँत तोड़ दिया जायेगा, इसमें आज़ाद मुसलमान सब के सब बराबर हैं। मर्द औरत एक ही हुक्म में हैं।

एक उसूल

बदन के अंगों का कटना कभी तो जोड़ से होता है, इसमें तो क़िसास वाजिब है, जैसे हाथ, पैर, क़दम, हथेली वग़ैरह, लेकिन जो ज़ख़्म जोड़ पर न हों बल्कि हड्डी पर आये हों उनके बारे में हज़रत इमाम मालिक

Maktab E Ashraf

रह. फ़रमाते हैं कि उनमें भी क़िसास है। मगर रान में और उस जैसे हिस्से में इसलिये कि वह ख़ौफ़ व ख़तरे की जगह है। उनके उलट हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह. और उनके दोनों साथियों का मज़हब है कि किसी हड्डी में क़िसास नहीं, सिवाय दाँत के। और इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक मुतलक़ किसी हड्डी का क़िसास नहीं। यही रिवायत है हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी। और यही कहते हैं अ़ता, शअ़बी, हसन बसरी, ज़ोहरी, इब्राहीम नख़ई और उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ भी। और इसी की तरफ़ गये हैं सुफ़ियान सौरी और लैस बिन सअ़द रह. भी। इमाम अहमद से भी यही क़ौल ज़्यादा मशहूर है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. की दलील वही हज़रत अनस रज़ि. वाली रिवायत है जिसमें रबीअ़ से दाँत का क़िसास (बदला) दिलवाने का हुक्म नबी करीम सल्ल. ने दिया है। लेकिन दर असल रिवायत से यह मज़हब साबित नहीं होता, क्योंकि इसमें यह लफ़्ज़ हैं कि उसके सामने के दाँत उसने तोड़ दिये थे और हो सकता है कि बग़ैर टूटे झड़ गये हों। इस हालत में क़िसास सबकी सहमति से वाजिब है, उनकी दलील का पूरा हिस्सा वह है जो इब्ने माजा में है कि एक शख़्स ने दूसरे के बाज़ू को कोहनी से नीचे नीचे तलवार मार दी, जिससे उसकी कलाई कट गई। हुज़ूर सल्ल. के पास मुक़द्दमा आया, आपने हुक्म दिया कि दियत अदा करो। उसने कहा मैं क़िसास चाहता हूँ। आपने फ़रमाया इसी को ले ले, अल्लाह तुझे इसी में बरकत देगा, और आपने क़िसास को नहीं फ़रमाया, लेकिन यह हदीस बिल्कुल कमज़ोर और कम दर्जे की है। इसके एक रावी हशम बिन उकली आराबी कमज़ोर हैं, उनकी हदीस में हुज्जत नहीं पकड़ी जाती, दूसरे रावी ग़र्रान बिन जारिया आराबी भी कमज़ोर हैं। फिर वह कहते हैं कि ज़ख़्मों का क़िसास उनके दुरुस्त हो जाने और फिर भर जाने से पहले लेना जायज़ नहीं। और अगर पहले ले लिया गया फिर ज़ख़्म बढ़ गया तो कोई बदला न दिलवाया जायेगा।

इसकी दलील मुस्नद अहमद की यह हदीस है कि एक शख़्स ने दूसरे के घुटने में चोट मारी, वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और कहा मुझे बदला दिलवाईये। आपने दिलवा दिया। उसके बाद वह फिर आया और कहने लगा या रसूलल्लाह! मैं तो लंगड़ा हो गया, आपने फ़रमाया मैंने तो तुझे मना किया था लेकिन तू न माना, अब तेरे इस लंगड़ेपन का कुछ बदला नहीं। फिर हुज़ूर सल्ल. ने ज़ख़्मों के भर जाने से पहले बदला लेने से मना फ़रमाया।

मसलाः अगर किसी ने दूसरे को ज़ख़्मी किया और बदला उससे लिया गया, उसमें वह मर गया तो उस पर कुछ नहीं। इमाम मालिक व इमाम शाफ़ई व इमाम अहमद और जमहूर सहाबा व ताबिईन रह. का यही क़ौल है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. का क़ौल है कि उस पर दियत वाजिब है, उसी के माल से बाज़ और बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि उसके माँ बाप की तरफ़ से रिश्तेदारों के माल पर वह दियत वाजिब है। बाज़ और हज़रात कहते हैं कि उसके बदले के बराबर तो ख़त्म है बाक़ी उसी के माल में से वाजिब है।

फिर फ़रमाता है कि जो शख़्स क़िसास से दरगुज़र कर ले और बतौर सदक़े के अपने बदले को माफ़ कर दे तो ज़ख़्मी करने वाले का कफ़्फ़ारा अदा हो गया। और जो ज़ख़्मी हुआ है उसे सवाब होगा जो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है, बाज़ ने यह भी कहा है कि वह कफ़्फ़ारा है जो ज़ख़्मी के लिये यानी उसके गुनाह उसी ज़ख़्म की मिक़्दार से अल्लाह तआ़ला बख़्श देता है। एक मरफ़ूअ़ हदीस में यह आया है कि अगर चौथाई दियत के बराबर की चीज़ है और उसने दरगुज़र कर लिया, तो उसके चौथाई गुनाह माफ़ हो जाते हैं। तिहाई है तो तिहाई गुनाह, आधी है तो आधे गुनाह और पूरी है तो पूरे गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

एक क़ुरैशी ने एक अन्सारी को ज़ोर से धक्का दिया, जिससे उसके आगे के दाँत टूट गये। हज़रत

मुआविया रज़ि. के पास मुक़द्दमा गया। और जब उसने इसरार किया तो आपने फ़रमाया अच्छा जा तुझे इख़्तियार है। हज़रत अबूदर्दा रज़ि. वहीं थे, फ़रमाने लगे- मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है कि जिस मुसलमान के जिस्म में कोई तकलीफ़ और यातना पहुँचाई जाये और वह सब्र करे, बदला न ले तो अल्लाह तआला उसके दर्जे बढ़ाता है और उसकी ख़तायें माफ़ फ़रमाता है। उस अन्सारी सहाबी ने यह सुनकर कहा क्या सच-मुच आपने ख़ुद इसे हुज़ूर सल्ल. की ज़बान से सुना है? आपने फ़रमाया हाँ मेरे इन कानों ने सुना है और मेरे दिल ने याद किया है। उसने कहा फिर गवाह रहो कि मैंने अपने मुजरिम को माफ़ कर दिया। हज़रत मुआविया रज़ि. यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए और उसे इनाम दिया। (इब्ने जरीर)

तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है, लेकिन बक़ौल इमाम तिर्मिज़ी रह. यह हदीस ग़रीब है। अबू सफ़र रावी का अबू दाऊद से सुनना साबित नहीं और रिवायत में है कि तीन गुनी दियत वह देना चाहता था लेकिन यह राज़ी नहीं होता था, उसमें हदीस के ये अलफ़ाज़ हैं कि जो शख़्स ख़ून या इससे कम माफ़ कर दे वह उसकी पैदाईश से लेकर मौत तक का कफ़्फ़ारा है। मुस्नद अहमद में है कि जिस शख़्स के जिस्म पर कोई ज़ख़्म लगे और वह माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला उसके उतने ही गुनाह माफ़ फ़रमाता है। मुस्नद में भी यह हदीस है कि ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ हुक्म न करने वाले ज़ालिम हैं, पहले गुज़र चुका है कि कुफ़्र कुफ़्र से कम है और ज़ुल्म और ज़ुल्म में भी फ़र्क़ है, और फ़िस्क़ (गुनाह और बुराई) में भी दर्जे हैं।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝	और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरियम (अलैहिमस्सलाम) को इस हालत में भेजा कि वे अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ फ़रमाते थे, और हमने उनको इन्जील दी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी और अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ करती थी, और वह (सरासर) हिदायत और नसीहत थी (ख़ुदा से) डरने वालों के लिए। (46) और इन्जील वालों को चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ उसमें नाज़िल फ़रमाया है उसके मुवाफ़िक़ हुक्म किया करें, और जो शख़्स ख़ुदा तआला के नाज़िल किए हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे तो ऐसे लोग बिल्कुल बेहुक्मी करने वाले हैं। (47)

तौरात व इन्जील

बनी इस्राईल के नबियों में सबसे बाद में हम ईसा नबी को लाये जो तौरात पर ईमान रखते थे। उसके अहकाम के मुताबिक़ लोगों में फ़ैसले करते थे। हमने उन्हें भी अपनी किताब इन्जील दी, जिसमें हक़ की हिदायत थी और शुब्हात व मुश्किलात की वज़ाहत थी और अगली ख़ुदाई किताबों की मुवाफ़क़त थी। हाँ चन्द मसाईल जिनमें यहूदी विभिन्न राय रखते थे उनके साफ़ फ़ैसले उसमें मौजूद थे। जैसे क़ुरआन में एक

Maktab E Ashraf

और जगह है कि हज़रत ईसा ने फ़रमाया- मैं तुम्हारे लिये बाज़ वे चीज़ें हलाल करूँगा जो तुम पर हराम कर दी गई हैं, इसलिये उलेमा का मशहूर मक़ूला है कि इन्जील ने तौरात के बाज़ अहकाम मन्सूख़ कर दिये हैं, इन्जील से पारसा लोगों की रहनुमाई और वअ़्ज़ व नसीहत हुई थी कि वे नेकी की तरफ़ रग़बत करें (दिलचस्पी लें) और बुराई से बचें। 'अहलल् इन्जीलि' भी पढ़ा गया है, इस सूरत में यह मतलब होगा कि हमने हज़रत ईसा को इन्जील इसलिये दी थी कि वह अपने ज़माने में अपने मानने वालों को उसी के मुताबिक़ चलायें और इस लाम को अमर का लाम समझें। और मशहूर क़िराअत 'वल्यहकुम् अहलुल् इन्जीलि' पढ़ी जाये तो यह मायने होंगे कि उन्हें चाहिये कि इन्जील के अहकाम पर ईमान लायें और उसी के मुताबिक़ अ़मल करें, जैसे एक और आयत में है:

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ...... الخ

यानी ऐ अहले किताब! जब तक तुम तौरात व इन्जील पर और जो कुछ ख़ुदा की तरफ़ से उतरा है उस पर क़ायम न हो तुम किसी चीज़ पर नहीं। एक और आयत में है:

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ...... الخ

जो लोग इस रसूल नबी उम्मी सल्ल. की ताबेदारी करते हैं जिसकी सिफ़त अपने यहाँ तौरात में लिखी हुई पाते हैं......।

वे लोग जो अल्लाह की किताब और अपने नबी के फ़रमान के मुताबिक़ हुक्म न करें वे इताअ़ते ख़ुदा से बाहर, हक़ के छोड़ने वाले और बातिल पर अ़मल करने वाले हैं। यह आयत ईसाईयों के हक़ में है, आयत से भी यह ज़ाहिर है और पहले बयान भी गुज़र चुका है।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا	और हमने (यह) किताब आपके पास भेजी है जो (ख़ुद भी) सच्चाई के साथ मौसूफ़ है और इससे पहले जो किताबें हैं उनकी तस्दीक़ करती है, और उन (किताबों) की मुहाफ़िज़ है, तो उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफ़िक़ फ़ैसला फ़रमाया कीजिए, और यह जो सच्ची किताब आपको मिली है इससे दूर होकर उनकी ख़्वाहिशों पर अ़मल दरामद न कीजिए, तुममें से हर एक के लिए हमने (ख़ास) शरीअ़त और (ख़ास) तरीक़ा तजवीज़ किया था। और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देते, लेकिन (ऐसा नहीं किया) ताकि जो दीन तुमको दिया है उसमें तुम सबका इम्तिहान फ़रमाएँ, तो मुफ़ीद बातों की तरफ़ दौड़ो, तुम

Maktab E Ashraf

فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَأَنِ
احْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَن يَفْتِنُوكَ عَنْ
بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا
فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُصِيبَهُم بِبَعْضِ
ذُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ
لَفَاسِقُونَ ۝ أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ
وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُوقِنُونَ ۝ ع

सबको ख़ुदा ही के पास जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देगा, जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे। (48) और (हम एक बार फिर हुक्म देते हैं कि) आप उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफ़िक़ फ़ैसला फ़रमाया कीजिए और उनकी ख़्वाहिशों पर अ़मल दरामद न कीजिए और उनसे (यानी उनकी इस बात से) एहतियात रखिए कि वे आपको ख़ुदा तआ़ला के भेजे हुए किसी हुक्म से भी बिचला दें, फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो (यह) यक़ीन कर लीजिए कि बस ख़ुदा ही को मन्ज़ूर है कि उनके बाज़े जुर्मों पर उनको सज़ा दें, और ज़्यादा आदमी तो बेहुक्म ही (होते) हैं। (49) क्या ये लोग ज़माना-ए-जाहिलीयत का फ़ैसला चाहते हैं, और फ़ैसला करने में अल्लाह से अच्छा कौन होगा यक़ीन रखने वालों के नज़दीक। (50)

क़ुरआन की बड़ाई और शान

तौरात व इन्जील की तारीफ़ व ख़ूबी के बाद अब क़ुरआने अ़ज़ीम की बुज़ुर्गी (बड़ाई और सम्मान) बयान हो रही है कि हमने इसे हक़ व सच्चाई के साथ नाज़िल फ़रमाया है। यक़ीनन यह ख़ुदा की तरफ़ से है और उसी का कलाम है। यह पहली तमाम आसमानी किताबों को सच्चा बताता है, और उन किताबों में भी इसकी सिफ़त व तारीफ़ मौजूद है, और यह भी बयान उनमें है कि यह पाक और आख़िरी किताब आख़िरी और अफ़ज़ल रसूल पर उतरेगी। पस हर दाना (अ़क़्लमन्द) शख़्स इस पर यक़ीन रखता है और इसे मानता है। जैसा कि फ़रमायाः

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ..... الخ

जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया था जब उनके सामने इसकी तिलावत की जाती है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं (यानी इसकी बुज़ुर्गी का एतिराफ़ करते हैं) और ज़बानी इक़रार करते हैं कि हमारे रब का वादा सच्चा है, और वह सच्चा साबित हो चुका है। उसने रसूलों की ज़बानी जो ख़बर दी थी वह पूरी हुई और आख़िरी रसूल, तमाम अम्बिया के सरदार सल्ल. आ ही गये। और यह किताब उन पहली किताबों की अमीन है, यानी इसमें जो है वही पहली किताबों में था। अब इसके ख़िलाफ़ कोई कहे कि फ़ुलाँ किताब में यूँ है तो यह ग़लत है, यह उनकी सच्ची गवाह और उन्हें घेर लेने वाली और समेट लेने वाली है, जो अच्छाईयाँ पहले की तमाम किताबों में मिलकर थीं वे सब इस आख़िरी किताब में एक जगह मौजूद हैं। इसी लिये यह सब पर हाकिम और मुक़द्दम है, और इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार ख़ुद ख़ुदा तआ़ला है।

Miftah E Ashraf

जैसा कि फ़रमायाः

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ.

यानी हमने ही इस क़ुरआन को उतारा है और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

बाज़ों ने कहा है कि इससे मुराद यह है कि हुज़ूर सल्ल. अमीन हैं इस किताब पर। वास्तव में तो यह क़ौल बहुत सही है, लेकिन इस आयत की तफ़सीर यह करनी ठीक नहीं, बल्कि अ़रबी ग्रामर के एतिबार से यह भी सोचने-लायक़ बात है। सही तफ़सीर पहली ही है। इमाम इब्ने जरीर रह. ने भी हज़रत मुजाहिद रह. से इस क़ौल को नक़ल करके फ़रमाया है कि यह बहुत दूर की बात है, बल्कि ठीक नहीं है, इसलिये कि 'मुहैमिन' का अ़त्फ़ 'मुसद्दिक़' पर है, पस यह भी उसी चीज़ की सिफ़त है जिसकी सिफ़त मुसद्दिक़ का लफ़्ज़ था। अगर हज़रत मुजाहिद रह. के मायने सही मान लिये जायें तो इबारत बग़ैर अ़त्फ़ के होनी चाहिये थी।

पस ऐ नबी! आप उन सब में ख़ुदा की इस किताब के अहकाम फैलाईये, चाहे अ़रब के लोग हों या ग़ैर-अ़रब के, चाहे लिखे-पढ़े हों चाहे अनपढ़ हों। ख़ुदा के उतारे हुए से मुराद अल्लाह की तरफ़ से आई 'वही' है, चाहे वह इस किताब की सूरत में हो चाहे जो पहले अहकाम ख़ुदा ने आपके लिये मुक़र्रर कर रखे हों। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इस आयत से पहले तो आपको आज़ादी दी गई थी, अगर चाहें उनमें फ़ैसला करें या न करें, लेकिन इस आयत ने हुक्म दिया कि ख़ुदा की 'वही' के ज़रिये उनमें फ़ैसले कराने ज़रूरी हैं। उन बदनसीब जाहिलों ने अपनी तरफ़ से जो अहकाम गढ़ लिये हैं और उनकी वजह से किताबुल्लाह को पीठ पीछे डाल दिया है, ख़बरदार ऐ नबी! तू उनकी ख़्वाहिशों के पीछे लगकर हक़ को न छोड़ बैठना। उनमें से हर एक के लिये हमने रास्ता और तरीक़ा बना दिया है। किसी चीज़ की तरफ़ इब्तिदा करने को 'शिर्अ़त' कहते हैं। 'मिन्हाज' लुग़त में कहते हैं स्पष्ट और आसान रास्ते को, पस इन दोनों लफ़्ज़ों की यही तफ़सीर ज़्यादा मुनासिब है। पहली तमाम शरीअ़तें जो ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से थीं वे सब तौहीद (अल्लाह के एक होने और मानने) पर तो मुत्तफ़िक़ थीं, अलबत्ता छोटे-मोटे अहकाम में किसी क़द्र हेर-फेर था, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि हम सब अम्बिया अ़ल्लाती (माँ शरीक) भाई हैं, हम सबका दीन एक है। हर नबी तौहीद के साथ भेजा जाता रहा और हर आसमानी किताब में तौहीद का बयान, उसका सुबूत और उसी की तरफ़ दावत होती रही है। जैसे क़ुरआन फ़रमाता है कि तुझसे पहले जितने भी रसूल हमने भेजे सब की तरफ़ यही 'वही' की कि मेरे सिवा कोई वास्तविक माबूद नहीं, तुम सब सिर्फ़ मेरी ही इबादत करते रहो। एक और आयत में हैः

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا..... الخ

कि हमने हर उम्मत को रसूल की ज़बान से कहलवा दिया कि अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और उसके सिवा दूसरों की इबादत से बचो।

हाँ अहकाम का इख़्तिलाफ़ (भिन्नता) ज़रूर रहा, कोई चीज़ किसी ज़माने में हराम थी फिर हलाल हो गई, या इसके उलट। या किसी हुक्म में सहूलत और नर्मी थी अब ताकीद हो गई, या इसके विपरीत। और यह भी हिक्मत और मस्लेहत और अल्लाह की हुज्जत के साथ। पस तौरात जैसे एक शरीअ़त है, इन्जील एक शरीअ़त है, क़ुरआन एक मुस्तक़िल शरीअ़त है। ताकि हर ज़माने के फ़रमाँबरदारों और नाफ़रमानों का इम्तिहान हो जाया करे। अलबत्ता तौहीद सब ज़मानों में एक जैसी और बराबर रही। और मायने इस जुमले

Maktab E Ashraf

के यह हैं कि ऐ उम्मते मुहम्मदिया! तुम में से हर शख़्स के लिये हमने अपनी इस किताब क़ुरआने करीम को शरीअ़त और तरीक़ा बनाया है, तुम सबको इसकी पैरवी और ताबेदारी करनी चाहिये।

इस सूरत में 'जअ़ल्ना' के बाद ज़मीर 'हू' की पोशीदा माननी पड़ेगी, पस बेहतरीन मक़ासिद हासिल करने का ज़रिया और तरीक़ा सिर्फ़ क़ुरआने करीम ही है, और बस। लेकिन सही क़ौल पहला ही है और इसकी एक दलील यह भी है कि उसके बाद ही फ़रमान हुआ है कि अगर अल्लाह चाहता तो सबको एक ही उम्मत कर देता। पस मालूम हुआ कि अगला ख़िताब सिर्फ़ इस उम्मत से ही नहीं बल्कि सब उम्मतों से है और इसमें ख़ुदा तआ़ला की बहुत बड़ी और कामिल क़ुदरत का बयान है, कि अगर वह चाहता तो सब लोगों को एक ही शरीअ़त और दीन पर कर देता, कोई तब्दीली किसी वक़्त न होती, लेकिन रब की कामिल हिक्मत का तक़ाज़ा यह हुआ कि अलग-अलग शरीअ़तें मुक़र्रर करे, एक के बाद दूसरा नबी भेजे और बाज़ अहकाम अगले नबी के पिछले नबी से बदलवा दे, यहाँ तक कि तमाम पहले दीन मुहम्मद सल्ल. की नुबुव्वत से मन्सूख़ हो गये और आप तमाम रू-ए-ज़मीन की तरफ़ भेजे गये और ख़ातिमुल-अम्बिया (नबियों और रसूलों के सिलसिले को मुकम्मल और ख़त्म करने वाले) बनाकर भेजे गये। ये विभिन्न शरीअ़तें सिर्फ़ तुम्हारी आज़माईश के लिये हुईं ताकि ताबेदारों को जज़ा (सवाब और अच्छा बदला) और नाफ़रमानों को सज़ा (अ़ज़ाब और बुरा बदला) मिले।

यह भी कहा गया है कि वह तुम्हें आज़माये उस चीज़ में जो तुम्हें उसने दी है, यानी किताब। पस तुम्हें ख़ैरात और नेकियों की तरफ़ दौड़ना चाहिये। अल्लाह तआ़ला की इताअ़त, उसकी शरीअ़त की फ़रमाँबरदारी की तरफ़ आगे बढ़ना चाहिये और इस आख़िरी शरीअ़त, आख़िरी किताब और आख़िरी पैग़म्बर की दिल व जान से हुक्म-बरदारी करनी चाहिये। लोगो! तुम सब का ठिकाना, उम्मीदों का केन्द्र और लौटना फिर अल्लाह ही की तरफ़ है, वहाँ वह तुम्हें तुम्हारे इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) की असलियत बता देगा। सच्चों को उनकी सच्चाई का अच्छा फल देगा और बुरों को उनके झुठलाने, सरकशी और मन-मर्ज़ी पर चलने की सज़ा देगा। जो हक़ को मानना तो एक तरफ़, हक़ से चिड़ते हैं, और मुक़ाबला करते हैं।

हज़रत ज़ह्हाक रह. कहते हैं कि मुराद उम्मते मुहम्मदिया है। मगर पहली बात ही ज़्यादा बेहतर है। फिर पहली बात की और ताकीद हो रही है और उसके ख़िलाफ़ से रोका जाता है, और फ़रमाया जाता है कि देखो कहीं इन ख़ियानत करने वाले, मक्कार, झूठे कुफ़्फ़ार यहूद की बातों में आकर किसी ख़ुदाई हुक्म से इधर-उधर न हो जाना। अगर वे तेरे अहकाम से मुँह फेरें और शरीअ़त के ख़िलाफ़ करें तो तू समझ ले कि उनकी बद-आमालियों की वजह से अल्लाह तआ़ला का कोई अ़ज़ाब उन पर आने वाला है। इसी लिये अच्छाई और ख़ैर की तौफ़ीक़ उनसे छीन ली गई है। अक्सर लोग फ़ासिक़ हैं यानी हक़ की बात न मानने से दीन से बाहर, ख़ुदा के मुख़ालिफ़ और हिदायत से दूर हैं। जैसा कि फ़रमायाः

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ.

यानी आप कितना ही चाहें लेकिन अक्सर लोग मोमिन नहीं हैं। और फ़रमायाः

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

यानी अगर तू ज़मीन वालों की अक्सरियत की मानेगा तो वे तुझे भी राहे ख़ुदा से बहका देंगे।

यहूदियों के चन्द बड़े-बड़े सरदारों और आ़लिमों ने आपस में एक मीटिंग की और हुज़ूर पाक के पास हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया- आप जानते हैं कि अगर हम आपको मान लें तो तमाम यहूद आपकी नुबुव्वत का

Maktab E Ashraf

इक़रार कर लेंगे और हम आपकी मानने के लिये तैयार हैं, आप सिर्फ़ इतना कीजिये कि हम में और हमारी क़ौम में एक झगड़ा है, उसका फ़ैसला हमारे मुताबिक़ कर दीजिये। आपने इनकार कर दिया, और इसी पर ये आयतें उतरीं।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला उन लोगों पर इनकार कर रहा है जो ख़ुदा के हुक्म से हट जायें, जिसमें तमाम भलाईयाँ मौजूद हैं और तमाम बुराईयाँ उससे दूर हैं। ऐसे पाक हुक्म से हटकर राय और अपने अन्दाज़े की तरफ़ नफ़्सानी ख़्वाहिश की तरफ़ और उनके अहकाम की तरफ़ झुके लोगों ने अपने आप अपनी तरफ़ से बग़ैर शरई दलील के गढ़ लिये हैं जैसा कि ज़माना जाहिलीयत के लोग अपनी जहालत व गुमराही, अपनी राय और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अहकाम जारी कर लिया करते थे। और जैसे कि तातारी लोग मुल्की मामलात में चंगेज़-ख़ानी अहकाम की पैरवी करते थे, जिन्हें इलयासिक़ ने गढ़ दिये थे। ये बहुत से अहकाम के मजमूए के दफ़ातिर थे, जो अनेक शरीअ़तों और मज़हबों से छाँटे गये थे। यहूदियत, ईसाईयत और इस्लामियत वग़ैरह सबके अहकाम का वह मजमूआ़ (संग्रह) था, और फिर उसमें बहुत से अहकाम वे भी थे जो सिर्फ़ अपनी अ़क्ल, राय और समझ व तजुर्बे से तैयार किये गये थे, जिनमें अपनी ख़्वाहिश (इच्छा) की पैरवी थी, बस वही मजमूए उनकी औलाद के लिये क़ाबिले अ़मल ठहर गये और उसी को किताब व सुन्नत पर फ़ौक़ियत (बरतरी) और तरजीह दे ली।

दर हक़ीक़त ऐसा करने वाले काफ़िर हैं और उनसे जिहाद वाजिब है। यहाँ तक कि वे लौटकर अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. के हुक्म की तरफ़ आ जायें और किसी छोटे या बड़े, अहम या ग़ैर-अहम मामले में सिवाय किताब व सुन्नत के कोई हुक्म किसी का न लें। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क्या ये जाहिलीयत के अहकाम का इरादा करते हैं और हुक्मे ख़ुदा से हट रहे हैं? यक़ीन वालों के लिये अल्लाह से बेहतर हाकिम व मालिक और कारसाज़ कौन होगा, अल्लाह से ज़्यादा अ़दल व इन्साफ़ वाले अहकाम किसके होंगे, ईमान वाले और पूरा यक़ीन रखने वाले बख़ूबी जानते और मानते हैं कि उस अहकमुल-हाकिमीन और अरहमुर्राहमीन से ज़्यादा अच्छे, साफ़, सहज, और उम्दा अहकाम, क़ायदे क़ानून किसी के नहीं हो सकते। वह अपनी मख़्लूक़ पर उससे भी ज़्यादा मेहरबान है जितनी एक माँ अपनी औलाद पर होती है। वह पूरे और पुख़्ता इल्म वाला, कामिल और अ़ज़ीमुश्शान क़ुदरत वाला और अ़दल व इन्साफ़ वाला है।

हज़रत हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के फ़ैसले के बग़ैर जो फ़तवा दे उसका फ़तवा जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) का हुक्म है। एक शख़्स ने हज़रत ताऊस से पूछा क्या मैं अपनी औलाद में से एक को ज़्यादा और एक को कम दे सकता हूँ? तो आपने यही आयत पढ़ी। तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- सबसे बड़ा दुश्मने ख़ुदा वह है जो इस्लाम में जाहिलीयत का तरीक़ा तलाश करे और बिना वजह किसी की गर्दन मारने के पीछे लग जाये। यह हदीस बुख़ारी में भी मज़मून की थोड़ी सी ज़्यादती के साथ है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۭ

ऐ ईमान वालो! तुम यहूद और ईसाईयों को दोस्त मत बनाना। वे एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो शख़्स तुममें से उनके साथ दोस्ती करेगा बेशक वह उन्हीं में से होगा। बेशक अल्लाह तआ़ला समझ नहीं देते उन लोगों को

Maktab E Ashraf

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ٥ فَتَرَى الَّذِينَ فِى قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللّٰهُ أَنْ يَأْتِىَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ فَيُصْبِحُوا عَلٰى مَآ أَسَرُّوا فِىٓ أَنْفُسِهِمْ نٰدِمِينَ ٥ وَيَقُولُ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا أَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خٰسِرِينَ ٥	जो अपना नुक़सान कर रहे हैं। (51) (इसी लिये) तुम ऐसे लोगों को जिनके दिल में रोग है देखते हो कि दौड़-दौड़कर उनमें घुसते हैं, कहते हैं कि हमको अन्देशा है कि हम पर कोई हादसा पड़ जाए, सो क़रीब ही उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला कामिल फ़तह को ज़ाहिर फ़रमा दे या किसी और बात को ख़ास अपनी तरफ़ से, फिर अपने छुपे हुए दिली ख़्यालात पर शर्मिन्दा होंगे। (52) और मुसलमान लोग कहेंगेः (अरे) क्या ये वही लोग हैं कि बड़े मुबालग़े से 'यानी बढ़-बढ़ कर' अल्लाह तआ़ला की क़समें खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, इन लोगों की सारी कार्रवाईयाँ ग़ारत गईं, जिससे नाकाम रहे। (53)

अल्लाह के दुश्मनों से दोस्ती और दिली ताल्लुक़ रखना ईमान की कमज़ोरी है

इस्लाम के दुश्मनों यहूद व ईसाईयों से दोस्ती करने की अल्लाह तबारक व तआ़ला मनाही फ़रमा रहा है, और फ़रमाता है कि वे तुम्हारे दोस्त हरगिज़ नहीं हो सकते, क्योंकि तुम्हारे दीन से उन्हें बुग़्ज़ व दुश्मनी है। हाँ अपने वालों से उनकी दोस्ती और मुहब्बत है। मेरे नज़दीक जो भी उनसे दिली मुहब्बत रखे वह उन्हीं में से है। हज़रत उमर रज़ि. ने हज़रत अबू मूसा रज़ि. को इस बात पर पूरी तंबीह की और यह आयत पढ़कर सुनाई। हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उतबा ने फ़रमाया लोगो! तुम्हें इससे बचना चाहिये कि तुम्हें ख़ुद तो मालूम न हो और तुम ख़ुदा के नज़दीक यहूदी व ईसाई बन जाओ, हम समझ गये कि आपकी मुराद इसी आयत के मज़मून से है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से अ़रब के ईसाईयों के ज़बीहे (ज़िबह किये हुए जानवरों) का मसला पूछा जाता है तो आप यही आयत तिलावत कर देते हैं। जिनके दिल में खोट है वे बढ़कर पोशीदा तौर पर उनसे साज़-बाज़ और मुहब्बत व दोस्ती करते हैं और बहाना यह बनाते हैं कि हमें ख़तरा है कि अगर मुसलमानों पर ये ग़ालिब आ गये तो फिर हमारे तिक्के बोटियाँ कर देंगे, इसलिये हम उनसे भी मेल-मिलाप रखते हैं, हम क्यों किसी से बिगाड़ें।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मुम्किन है अल्लाह मुसलमानों को साफ़ तौर पर ग़ालिब कर दे, मक्का भी उनके हाथों फ़तह हो जाये, फ़ैसले और हुक्म उन्हीं के चलने लगें, हुकूमत उनके क़दमों में डाल दे, या अल्लाह तआ़ला और कोई चीज़ अपने पास से लाये, यानी यहूद व ईसाई लोगों को मग़लूब करके उन्हें ज़लील करके उनसे जिज़्या (टैक्स और तावान) लेने का हुक्म मुसलमानों को दे दे। फिर तो ये मुनाफ़िक़

लोग जो आज बढ़कर साज़िशें करते फिरते हैं बड़े भन्नाने लगेंगे और अपनी चालाकी पर ख़ून के आँसू बहाने लगेंगे, उनके पर्दे खुल जायेंगे और ये जैसे अन्दर थे वैसे ही बाहर से नज़र आयेंगे। उस वक़्त मुसलमान उनकी मक्कारियों पर ताज्जुब करेंगे और कहेंगे यही वे लोग हैं जो बड़ी-बड़ी क़समें खा-खाकर हमें यक़ीन दिलाते थे कि ये हमारे साथी हैं? खो दिया जो किया था और बरबाद हो गये।

Maktab E Ashraf

शाने नुज़ूल

मदीना वालों के नज़दीक इन आयतों का शाने नुज़ूल (उतरने की वजह और मौक़ा) यह है कि जंगे उहुद के बाद एक शख़्स ने कहा कि मैं उस यहूदी से दोस्ती करता हूँ ताकि मौक़े पर मुझे नफ़ा महुँचे। दूसरे ने कहा मैं फ़ुलाँ ईसाई के पास जाता हूँ उससे दोस्ती करके उसकी मदद करूँगा। इस पर ये आयतें उतरीं। हज़रत इक्रिमा रज़ि. फ़रमाते हैं कि लबाबा बिन अ़ब्दुल-मन्ज़िर के बारे में ये आयतें उतरी हैं। जबकि हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ भेजा था तो उन्होंने आपसे पूछा कि हुज़ूर! हमारे साथ क्या सुलूक करेंगे? तो आपने अपने गले की तरफ़ इशारा किया, यानी तुम सबको क़त्ल करा देंगे। एक रिवायत में है कि ये आयतें अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के बारे में उतरी हैं। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. ने तो हज़रत नबी करीम सल्ल. से कहा कि बहुत से यहूदियों से मेरी दोस्ती है मगर मैं उन सब की दोस्तियाँ तोड़ता हूँ मुझे अल्लाह व रसूल की दोस्ती काफ़ी है, इस पर एक मुनाफ़िक़ ने कहा मैं आगा पीछा सोचने का आ़दी हूँ मुझसे यह न हो सकेगा, न जाने किस वक़्त क्या मौक़ा पड़ जाये। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल्लाह! तू उबादा से बहुत ही घाटे में रहा। इस पर ये आयतें उतरीं।

एक रिवायत में है कि जब बदर में मुश्रिकों को शिकस्त हुई तो बाज़ मुसलमानों ने अपने मिलने वाले यहूदियों से कहा कि तुम्हारी दुर्गत हो इससे पहले ही तुम इस सच्चे दीन को क़बूल कर लो, उन्होंने जवाब दिया कि चन्द क़ुरैशियों पर जो लड़ाई के दाव-पेच से नावाक़िफ़ हैं, फ़तह हासिल करके कहीं तुम घमंडी न हो जाना, हमसे अगर पाला पड़ा तो हम तो तुम्हें मालूम करा देंगे कि लड़ाई इसे कहते हैं। इस पर हज़रत उबादा रज़ि. और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की वह गुफ़्तगू हुई जो ऊपर बयान हो चुकी। जब यहूदियों के उस क़बीले से मुसलमानों की जंग हुई और अल्लाह के फ़ज़्ल से ये ग़ालिब आ गये तो अब अ़ब्दुल्लाह आपसे कहने लगा- हुज़ूर! मेरे दोस्तों के मामले में मुझ पर एहसान कीजिये। ये लोग ख़ज़रज के साथी थे। हुज़ूर सल्ल. ने उसे कोई जवाब न दिया, उसने फिर कहा, आपने मुँह मोड़ लिया, यह आपके दामन से लटक गया, आपने गुस्से से फ़रमाया छोड़ दे, उसने कहा नहीं या रसूलल्लाह! मैं न छोड़ूँगा यहाँ तक कि आप उनके बारे में एहसान करें, उनकी बड़ी जमाअ़त है और आज तक ये लोग मेरे हिमायती रहे और एक ही दिन में ये सब फ़ना के घाट उतर जायेंगे मुझे तो आने वाली मुसीबतों का बड़ा खटका है। आख़िर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया जा वे सब तेरे लिये हैं।

एक और रिवायत में है कि जब बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूदियों ने हुज़ूर सल्ल. से जंग की और ख़ुदा ने उन्हें नीचा दिखाया तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई तो उनकी हिमायत हुज़ूर सल्ल. के सामने करने लगा और हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. इसके बावजूद कि ये भी उनके साथी और उनसे जुड़े हुए थे, लेकिन इन्होंने उनसे साफ़ तौर पर बेताल्लुक़ी ज़ाहिर की। इस पर ये आयतें (जिनकी तफ़सीर हो रही है, और इनसे भी आगे की तीन आयतें) उतरीं।

मुस्नद अहमद में है कि इस मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की इयादत (बीमारी का हाल पूछने) के

लिये हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ ले गये तो आपने फ़रमाया मैंने तो तुझे कितनी बार इन यहूदियों की मुहब्बत से रोका। उसने कहा सअ़द बिन ज़िरारह तो उनसे दुश्मनी रखता था वह भी मर गया'

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِۦ فَسَوْفَ يَأْتِى ٱللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلْكَـٰفِرِينَ يُجَـٰهِدُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ○ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ○ وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَـٰلِبُونَ ○ ع ٨ ١٢

ऐ ईमान वालो! जो शख़्स तुममें से अपने दीन से फिर जाये तो अल्लाह बहुत जल्दी ऐसी क़ौम पैदा कर देगा जिससे उसको (यानी अल्लाह तआ़ला को) मुहब्बत होगी और उनको उससे (यानी अल्लाह तआ़ला से) मुहब्बत होगी। वे मुसलमानों पर मेहरबान होंगे और काफ़िरों पर तेज़ होंगे, जिहाद करते होंगे अल्लाह की राह में, और वे लोग किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे। यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसको चाहें अ़ता फ़रमाएँ, और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुस्अ़त वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं। (54) तुम्हारे दोस्त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वाले लोग हैं जो कि इस हालत से नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं कि उनमें ख़ुशूअ़ "यानी आ़जिज़ी और गिड़गिड़ाना" होता है। (55) और जो शख़्स अल्लाह से दोस्ती रखेगा और उसके रसूल से और ईमान वाले लोगों से, सो अल्लाह का गिरोह बिला शुब्हा ग़ालिब है। (56)

इस्लाम लाने के बाद उससे फिर जाना

अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त जो क़ादिर व ग़ालिब है, ख़बर देता है कि अगर कोई इस पाक दीन से मुर्तद हो जाये तो वह इस्लाम की क़ुव्वत घटा नहीं देगा। अल्लाह तआ़ला ऐसों के बदले उन लोगों को इस सच्चे दीन की ख़िदमत पर लगा देगा जो उनसे हर हैसियत में अच्छे होंगे। जैसा कि एक और आयत में है:

وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ.

एक और आयत में है:

إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِاٰخَرِيْنَ.

एक और जगह फ़रमाया:

وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ.

मतलब इन सब आयतों का वही है जो बयान हुआ। यानी अगर तुम इससे मुँह मोड़ोगे तो अल्लाह तआ़ला दूसरी क़ौम और लोगों को तुम्हारी जगह ला देगा।

इर्तिदाद कहते हैं हक़ को छोड़कर बातिल की तरफ़ फिर जाने को। मुहम्मद बिन कअ़ब रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत क़ुरैश के सरदारों के बारे में उतरी है। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में जो लोग इस्लाम से फिर गये थे उनका हुक्म इस आयत में है। जिस क़ौम को उनके बदले लाने का वादा हो रहा है वे क़ादसिया वाले हैं या क़ौमे सबा है, या यमन वाले हैं, जो कन्दा और सकून क़बीलों के हैं। एक बहुत ही ग़रीब मरफ़ूअ़ हदीस में भी यह पिछली बात बयान हुई है। एक और रिवायत में है कि आपने हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया वह इसकी क़ौम है।

इन कामिल ईमान वालों की सिफ़त बयान हो रही है कि ये अपने दोस्तों यानी मुसलमानों के सामने तो बिछ जाने वाले होते हैं और कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में तन जाने वाले, उन पर भारी पड़ने वाले और उन पर तेज़ होने वाले होते हैं। जैसा कि फ़रमायाः

اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ.

यानी नबी और उनके साथी काफ़िरों के मुक़ाबले में सख़्त और आपस में रहम करने वाले और नर्मी बरतने वाले हैं।

हुज़ूर सल्ल. की सिफ़तों में है कि आप 'हंसने वाले' थे और 'सख़्त व जंगजू' थे। यानी दोस्तों के सामने हंस-मुख, मुस्कुराते चेहरे वाले और दीन के दुश्मनों के मुक़ाबले में सख़्त और लड़ाका। सच्चे मुसलमान राहे ख़ुदा में जिहाद से मुँह नहीं मोड़ते, न पीठ दिखाते हैं, न थकते न बुज़दिली न आराम-तलबी करते हैं, न किसी की मुरव्वत में आते हैं, न किसी के बुरा-भला कहने का ख़ौफ़ करते हैं, वे बराबर अल्लाह की इताअ़त में, उसके दुश्मनों से जंग करने में, भलाई का हुक्म करने में और बुराईयों से रोकने में मश्ग़ूल रहते हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिदायतें

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे दोस्त नबी करीम सल्ल. ने सात बातों का हुक्म दिया है- मिस्कीनों से मुहब्बत रखने और उनके साथ उठने बैठने का, और दुनियावी मामलात में अपने से कम दर्जे के लोगों को देखने और अपने से बढ़े हुओं को न देखने का, और सिला-रहमी करते रहने का अगरचे दूसरे न करते हों, और किसी से कुछ न माँगने का, और हक़ बात बयान करने का अगरचे वह सबको कड़वी लगे, और दीन के मामलात में किसी मलामत करने वाले की मलामत (बुरा-भला कहने) से न डरने का, और ख़ूब अधिकता के साथ 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह' पढ़ने का। क्योंकि यह कलिमा अ़र्श के नीचे का ख़ज़ाना है। (मुस्नद अहमद)

एक और रिवायत में है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पाँच बार बैअ़त की और सात बातों की आपने मुझे नसीहत की है और सात बार मैं अपने ऊपर अल्लाह को गवाह करता हूँ कि मैं ख़ुदा के दीन के बारे में किसी बदगोई (किसी के बुरा कहने) की बिल्कुल परवाह नहीं करता। मुझे बुलाकर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया क्या मुझसे जन्नत के बदले में बैअ़त करेगा? मैंने मन्ज़ूर करके हाथ बढ़ाया तो आपने शर्त की कि किसी से कुछ भी न माँगना। मैंने कहा बहुत अच्छा। फ़रमाया अगरचे कोड़ा भी हो, यानी अगर वह भी गिर पड़े तो ख़ुद सवारी से उतरकर लेना। (मुस्नद अहमद)

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि लोगों की हैबत (डर और आतंक) में आकर हक़ कहने से न रुकना। याद रखो न तो कोई मौत को क़रीब कर सकता है न रिज़्क़ को दूर कर सकता है।

Maktab E Ashraf

इमाम अहमद रह. अपनी मुस्नद में फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़े शरअ़ बात देखकर सुनकर अपने आपको कमज़ोर जानकर ख़ामोश न हो जाना, वरना ख़ुदा के यहाँ इसकी बाज़-पुर्स (पूछ और पकड़) होगी। उस वक़्त इनसान जवाब देगा कि मैं लोगों के डर से चुपका हो गया, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मैं इसका ज़्यादा हक़दार था कि तू मुझसे डरता। (मुस्नद अहमद)

फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे से क़ियामत के दिन एक सवाल यह भी करेगा कि तूने ख़िलाफ़े शरीअ़त मामले और बातें देखकर उससे रोका क्यों नहीं? फिर अल्लाह तआ़ला ख़ुद ही उसे जवाब समझायेगा और यह कहेगा कि परवर्दिगार! मैंने तुझ पर भरोसा किया और लोगों से डरा। (इब्ने माजा)

एक और सही हदीस में है कि मोमिन को न चाहिये कि ख़ुद को ज़िल्लत में डाले। सहाबा रज़ि. ने पूछा किस तरह? फ़रमाया उन बलाओं को अपने ऊपर ले ले जिनके बरदाश्त करने की ताक़त न हो। फिर फ़रमाया अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे यानी कामिल ईमान की ये सिफ़तें ख़ुदा ही का अ़तीया हैं उसी की तरफ़ से इनकी तौफ़ीक़ होती है, उसका फ़ज़्ल बहुत ही बड़ा है और वह कामिल इल्म वाला है। ख़ूब जानता है कि इस बहुत बड़ी नेमत का मुस्तहिक़ कौन है? फिर इरशाद होता है कि तुम्हारे दोस्त कुफ़्फ़ार नहीं बल्कि हक़ीक़त में तुम्हें अल्लाह से, उसके रसूल और मोमिनों से ताल्लुक़ रखना चाहिये। मोमिन भी वे जिनमें ये सिफ़तें हों कि वे नमाज़ के पूरे पाबन्द हों, जो इस्लाम का ऊँचा और बेहतरीन रुक्न है, और सिर्फ़ ख़ुदा का हिस्सा है। और ज़कात अदा करते हैं जो अल्लाह के कमज़ोर और ग़रीब बन्दों का हक़ है।

इन आयतों के बारे में कुछ लोगों ने इसके अ़लावा एक दूसरा शाने नुज़ूल बयान किया है मगर हमारे नज़दीक वह सही नहीं, सही वही है जो हम पहले बयान कर चुके हैं कि ये सब आयतें हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि. के बारे में नाज़िल हुई हैं, जबकि उन्होंने खुले अलफ़ाज़ में यहूद की दोस्ती तोड़ दी और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों की दोस्ती पर राज़ी हो गये। इसी लिये इन तमाम आयतों के आख़िर में इरशाद हुआ कि जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों से दोस्ती रखे वह ख़ुदाई लश्कर में दाख़िल है, और यही ख़ुदाई लश्कर ग़ालिब है। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ..... الخ

यानी अल्लाह यह लिख चुका है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। ख़ुदा पर और आख़िरत पर ईमान रखने वालों को तू ख़ुदा व रसूल के दुश्मनों से दोस्ती रखने वाला न पायेगा अगरचे वे बाप बेटे भाई और कुनबे क़बीले के लोग हों। यही हैं जिनके दिलों पर ख़ुदा ने ईमान लिख दिया है और अपनी रूह से उनकी ताईद की है। उन्हें अल्लाह तआ़ला उन जन्नतों में लेकर जायेगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। रब उनसे राज़ी है, ये ख़ुदा से ख़ुश हैं, यही ख़ुदा के लश्कर हैं और ख़ुदा ही का लश्कर फ़लाह पाने वाला है। पस जो भी ख़ुदा, उसके रसूल और मोमिनों के ताल्लुक़ पर रज़ामन्द हो जाये वह दुनिया में कामयाब है और आख़िरत में फ़लाह (कामयाबी) पाने वाला है, इसी लिये इस आयत को भी इस जुमले पर ख़त्म किया।

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिल चुकी है, जो ऐसे हैं कि जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रखा है, उनको और दूसरे कुफ़्फ़ार को दोस्त	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ

أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○ وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ○	मत बनाओ और अल्लाह तआ़ला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57) और जब तुम नमाज़ के लिये ऐलान करते हो तो वे लोग उसके साथ हँसी और खेल करते हैं, यह इस सबब से है कि वे लोग ऐसे हैं कि बिल्कुल अ़क्ल नहीं रखते। (58)

Maktab E Ashraf

दीन के साथ मज़ाक़ करना

अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को ग़ैर-मुस्लिमों से नफ़रत दिलाता है, और फ़रमाता है कि क्या तुम उनसे ताल्लुक़ क़ायम करोगे जो तुम्हारे पाकीज़ा व पाक करने वाले दीन को हंसी में उड़ाते हैं और इसे एक बच्चों का खेल बनाये हुए हैं।

इब्ने मसऊद रज़ि. की क़िराअत में 'व मिनल्लज़ी-न अशरकू' है कि अल्लाह से डरो और उनसे ताल्लुक़ न रखो, अगर तुम सच्चे मोमिन हो। ये तो तुम्हारे दीन की और शरीअ़त की दुश्मनी करने वाले हैं। जैसा कि फ़रमायाः

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنِيْنَ...... الخ

मोमिन मोमिनों को छोड़कर कुफ़्फ़ार से ताल्लुक़ न करें, और जो ऐसा करे वह अल्लाह के यहाँ किसी भलाई में नहीं, हाँ उनसे बचाव मक़सूद हो तो और बात है। अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपनी ज़ात से डरा रहा है और अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ लौटना है।

इसी तरह ये अहले किताब, काफ़िर और मुश्रिक भी उस वक़्त मज़ाक़ उड़ाते हैं जब तुम नमाज़ों के लिये पुकारते हो, हालाँकि वह अल्लाह तआ़ला की सबसे प्यारी इबादत है, लेकिन ये बेवक़ूफ़ इतना भी नहीं जानते, इसलिये कि ये शैतान के पैरोकार हैं और उसकी हालत यह है कि अज़ान सुनते ही हवा ख़ारिज करता हुआ दुम दबाये भागता है, और वहाँ जाकर ठहरता है जहाँ अज़ान की आवाज़ न आये। उसके बाद आ जाता है। फिर तकबीर सुनकर भाग खड़ा होता है और उसके ख़त्म होते ही आकर बहकाने में लग जाता है। इनसान को भूली-बिसरी बातें याद दिलाता है, यहाँ तक कि उसे यह भी ख़बर नहीं रहती कि नमाज़ की कितनी रक्अ़तें पढ़ीं? जब ऐसा हो तो सज्दा-ए-सह्व करे (बुख़ारी व मुस्लिम)।

इमाम ज़ोहरी रह. फ़रमाते हैं कि अज़ान का ज़िक्र क़ुरआने करीम में भी है, फिर यही आयत तिलावत की। एक ईसाई मदीने में था, अज़ान में जब 'अश्हदु अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' सुनता तो कहता "झूठा जल जाये"। एक बार रात को उसकी ख़ादिमा घर में आग लाई, कोई पतंगा उड़ा जिससे घर में आग लग गई, वह शख़्स और उसका सारा घर-बार जलकर ख़ाक हो गया।

फ़तह-मक्का वाले साल हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत बिलाल रज़ि. को काबे में अज़ान कहने का हुक्म दिया, क़रीब ही अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, इताब बिन उसैद, हारिस बिन हिशाम बैठे हुए थे। इताब ने तो अज़ान सुनकर कहा मेरे बाप पर तो अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ कि वह इस ग़ुस्सा दिलाने वाली आवाज़ सुनने से पहले ही दुनिया से चल बसा। हारिस कहने लगा कि अगर मैं इसे सच्चा जानता तो मान ही लेता। अबू सुफ़ियान

ने कहा भई मैं तो कुछ भी ज़बान से नहीं निकालता, डर है कि कहीं ये कंकरियाँ उसे ख़बर न कर दें। इन्होंने बातें ख़त्म की ही थीं कि हुज़ूर सल्ल. आ गये और फ़रमाने लगे इस वक़्त तुमने ये बातें कही हैं। यह सुनकर इताब और हारिस बोल उठे कि हमारी गवाही है कि आप ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं, यहाँ तो कोई चौथा था ही नहीं, वरना हम गुमान कर सकते थे कि उसने जाकर आपसे कह दिया होगा। (सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुहैरीज़ जब शाम (सीरिया) के सफ़र में जाने लगे तो हज़रत अबू महज़ूरा रज़ि. से जिनकी गोद में इन्होंने यतीमी के दिन बसर किये थे, कहा कि आपकी अज़ान के बारे में मुझसे वहाँ के लोग ज़रूर सवाल करेंगे तो आप अपने वाक़िआ़त तो मुझे बता दीजिये। फ़रमाया हाँ सुनो! जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हुनैन से वापस आ रहे थे रास्ते में हम लोग एक जगह थे और नमाज़ के वक़्त हुज़ूर सल्ल. के मुअज़्ज़िन ने अज़ान कही, हमने उसका मज़ाक़ उड़ाना शुरू किया, कहीं आपके कान में भी आवाज़ें पड़ गईं, सिपाही आया और हमें आपके पास ले गया। आपने दरियाफ़्त किया कि तुम सब में ज़्यादा ऊँची आवाज़ किसकी थी? सबने मेरी तरफ़ इशारा किया तो आपने और सबको तो छोड़ दिया मुझे रोक लिया और फ़रमाया उठो अज़ान कहो। अल्लाह की क़सम उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. की ज़ात से आपके हुक्म का पालन करने से ज़्यादा बुरी चीज़ मेरे नज़दीक कोई न थी, लेकिन बेबस खड़ा हो गया। अब ख़ुद आपने मुझे अज़ान सिखाई और जो आप सिखाते रहे मैं कहता रहा (फिर अज़ान पूरी बयान की)। जब मैं अज़ान से फ़ारिग़ हुआ तो आपने मुझे एक थैली दी जिसमें चाँदी थी, फिर अपना हाथ मुबारक मेरे सर पर रखा और पीठ तक लाये, फिर फ़रमाया अल्लाह तुझमें और तुझ पर बरकत दे। अब तो अल्लाह की क़सम मेरे दिल से रसूले पाक सल्ल. की दुश्मनी बिल्कुल जाती रही और बजाय उसके ऐसी ही मुहब्बत हुज़ूर सल्ल. की दिल में पैदा हो गई। मैंने आरज़ू की कि मक्के का मुअज़्ज़िन हुज़ूर मुझको बना दें। आपने मेरी दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली, और मैं मक्का चला गया और वहाँ के गर्वनर हज़रत इताब बिन उसैद से मिलकर मुअज़्ज़िनी पर मामूर हो गया। हज़रत अबू महज़ूरा का नाम समुरा बिन मुग़ीरा बिन लोज़ान था, हुज़ूरे पाक के चार मुअज़्ज़िनों में से एक आप थे और मुद्दत तक आप मक्का वालों के मुअज़्ज़िन रहे। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु व अरज़ाहु।

आप कहिये कि ऐ अहले किताब! तुम हममें कौन-सी बात ऐबदार और बुरी पाते हो, सिवाय इसके कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस पर जो हमारे पास भेजी गई है और उस पर जो पहले भेजी जा चुकी है बावजूद इसके कि तुममें अक्सर लोग ईमान से ख़ारिज हैं। (59) आप कहिए कि क्या मैं तुमको ऐसा तरीक़ा बतलाऊँ जो इससे भी ख़ुदा के यहाँ पादाश "यानी नतीजा और बदला" मिलने में ज़्यादा बुरा हो। वह उन शख़्सों का तरीक़ा है जिनको अल्लाह तआ़ला ने दूर कर दिया हो	قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ

Maktab E Ashraf

الطَّاغُوتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ○ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْآ اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ○ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ○

और उन पर ग़ज़ब फ़रमाया हो और उनको बन्दर और सुअर बना दिया हो, और उन्होंने शैतान की परस्तिश की हो, ऐसे लोग मक़ाम के एतिबार से भी बहुत बुरे हैं और सही रास्ते से भी बहुत दूर हैं। (60) और जब ये लोग तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालाँकि वे कुफ़्र को ही लेकर आए थे और कुफ़्र को ही लेकर चले गए, और अल्लाह तआ़ला तो ख़ूब जानते हैं जिसको ये छुपाते हैं। (61) और आप उनमें बहुत आदमी ऐसे देखते हैं जो दौड़-दौड़कर गुनाह और ज़ुल्म और हराम खाने पर गिरते हैं, वाक़ई उनके ये काम (बहुत) बुरे हैं। (62) उनको नेक लोग और उलेमा गुनाह की बात कहने से और हराम माल खाने से क्यों नहीं मना करते, वाक़ई उन की यह आ़दत बुरी है। (63)

काफ़िर लोग मुसलमानों से नफ़रत रखते हैं

हुक्म होता है कि जो अहले किताब तुम्हारे दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं उनसे कहो कि तुमने जो दुश्मनी हमसे कर रखी है उसकी वजह इसके सिवा और कुछ नहीं कि हम अल्लाह पर और उसकी तमाम किताबों पर ईमान रखते हैं। पस दर असल न तो यह दुश्मनी की कोई वजह है न बुराई का सबब।

एक और आयत में है:

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ اَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ.

यानी उन्होंने सिर्फ़ इसका इन्तिक़ाम (बदला) लिया है कि उन्हें ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से और रसूल सल्ल. ने माल देकर ग़नी (मालदार) कर दिया।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि इब्ने जमील इसी का बदला लेता है कि वह फ़क़ीर था तो अल्लाह ने उसे ग़नी कर दिया, और यह कि तुममें के अक्सर सीधे रास्ते से अलग हो चुके हैं। तुम जो हमारे बारे में गुमान रखते हो आओ मैं तुम्हें बताऊँ कि ख़ुदा के पास बदला पाने में कौन बुरा है? और वह तुम हो, क्योंकि ये ख़स्लतें तुम में ही पाई जाती हैं। यानी जिस पर ख़ुदा ने लानत की हो, अपनी रहमत से दूर डाल दिया हो, उस पर नाराज़ और ग़ुस्सा हुआ हो, ऐसा जिसके बाद रज़ामन्द नहीं होने का, और जिनमें से बाज़ों की सूरतें बिगाड़ दी हों, बन्दर और सुअर बना दिये हों। इसका पूरा बयान सूरः ब-क़रह में गुज़र चुका है। हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि क्या ये बन्दर सुअर वही हैं? तो आपने फ़रमाया जिस क़ौम पर ख़ुदा का ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल होता है उनकी नस्ल ही नहीं होती, उनसे पहले भी सुअर और बन्दर थे। यह

रिवायत विभिन्न अलफ़ाज़ में सही मुस्लिम और नसाई में भी है। मुस्नद अहमद में है कि जिन्नों की एक क़ौम साँप बना दी गई थी जैसा कि बन्दर और सुअर बना दिये गये थे। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है, उन्हीं में से बाज़ों को ग़ैरुल्लाह के पुजारी बना दिये। फिर इसके मायने में दूरी पड़ जाती है, लेकिन वास्तव में दूरी भी नहीं, मतलब यह है कि तुम ही वह हो जिनमें ताग़ूत (शैतान) की इबादत की गई।

ग़र्ज़ यह कि अहले किताब को इल्ज़ाम दिया जाता है कि तुम हम में तो ऐब निकालते हो हालाँकि हम अल्लाह को एक मानने वाले हैं, सिर्फ़ एक सच्चे ख़ुदा के मानने वाले हैं और तुम तो वह हो कि ये बातें तुममें पाई गईं इसी लिये अंत में फ़रमाया कि यही लोग अपनी हैसियत के एतिबार से बहुत बुरे हैं और सही राह पर होने के एतिबार से भी बहुत दूर की ग़लत राह पर पड़े हुए हैं।

फिर मुनाफ़िक़ों की एक बुरी ख़स्लत (आ़दत) बयान हो रही है कि ज़ाहिर में तो वे मोमिनों के सामने ईमान का इज़हार करते हैं और बातिन उनके कुफ़्र से भरे पड़े हैं। ये तेरे पास आते हैं तो कुफ़्र की हालत में और तेरे पास से जाते हैं तो उसी हालत में। तेरी नसीहतें उन पर कुछ भी असर नहीं करतीं। भला इस तरह अपने को छुपाना उन्हें क्या काम आयेगा, जिससे काम पड़ता है वह तो आ़लिमुल-ग़ैब है, दिलों के भेद उस पर खुले हैं, वहाँ जाकर पूरा-पूरा बदला भुगतना पड़ेगा। तू देख रहा है कि ये गुनाहों पर हराम पर और बातिल के साथ लोगों के माल लेने पर किस तरह चढ़ दौड़ते हैं, उनके आमाल बहुत ही ख़राब हो चुके हैं। उनके औलिया-अल्लाह यानी आ़बिद व आ़लिम और उनके उलेमा उन्हें इन बातों से क्यों नहीं रोकते? दर असल उन उलेमा और पीरों के आमाल भी बदतरीन हो गये हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि उलेमा और पीरों की डाँट के लिये इससे ज़्यादा सख़्त आयत क़ुरआन में कोई नहीं है। हज़रत ज़ह्हाक रह. से भी इसी तरह मन्क़ूल है।

हज़रत अ़ली रज़ि. ने अपने एक बयान में अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना के बाद फ़रमाया लोगो! तुमसे पहले लोग इसी बिना पर हलाक कर दिये गये हैं कि वे बुराईयाँ करते थे और उनके आ़लिम और नेक लोग ख़ामोश रहते थे। जब यह आ़दत उनमें पड़ गई तो ख़ुदा ने उन्हें क़िस्म-क़िस्म की सज़ायें दीं। पस तुम्हें चाहिये कि भलाई का हुक्म करो, बुराई से रोको, इससे पहले कि तुम पर भी वही अ़ज़ाब आ जायें जो तुमसे पहले वालों पर आये। यक़ीन रखो कि अच्छाई का हुक्म और बुराई से रोकना न तो तुम्हारी रोज़ी घटायेगा न तुम्हारी मौत क़रीब कर देगा। रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि जिस क़ौम में कोई ख़ुदा की नाफ़रमानी करे और वे लोग बावजूद रोकने की क़ुदरत और अपने प्रभाव के उसे न मिटायें तो अल्लाह तआ़ला सब पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमायेगा। (मुस्नद अहमद) अबू दाऊद में है कि यह अ़ज़ाब उनकी मौत से पहले ही आ पड़ेगा। इब्ने माजा में भी यह रिवायत है।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُاللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ	और यहूद ने कहा कि अल्लाह तआ़ला का हाथ बन्द हो गया है। उन्हीं के हाथ बन्द हैं और अपने इस कहने से ये रहमत से दूर कर दिए गये। बल्कि अल्लाह तआ़ला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं, जिस तरह चाहते हैं ख़र्च करते हैं। और जो (मज़मून) आपके पास आपके परवर्दिगार की तरफ़ से भेजा जाता है वह उनमें

Maktab E Ashraf

رَبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝ ع

से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र की तरक़्क़ी का सबब हो जाता है, और हमने उनमें आपस में क़ियामत तक दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया। जब कभी लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआ़ला उसको ख़त्म कर देते हैं, और मुल्क में फ़साद "यानी बिगाड़ और ख़राबी" करते फिरते हैं, और अल्लाह फ़साद करने वालों को महबूब नहीं रखते। (64) और अगर अहले किताब ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार करते तो हम ज़रूर उनकी तमाम बुराईयाँ माफ़ कर देते और ज़रूर उनको चैन के बाग़ों में दाख़िल करते। (65) और अगर ये लोग तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) उनके परवर्दिगार की तरफ़ से उनके पास भेजी गई है उसकी पूरी पाबन्दी करते तो ये लोग अपने ऊपर से और अपने नीचे से ख़ूब फ़राग़त से खाते। उनमें एक जमाअ़त सही रास्ते पर चलने वाली है, और ज़्यादा उनमें ऐसे ही हैं कि उनके किरदार बहुत बुरे हैं। (66)

यहूद की बकवास

मलऊन यहूदियों का एक ख़बीस क़ौल बयान फ़रमाया जा रहा है कि ये ख़ुदा को बख़ील कहते थे, यही लोग ख़ुदा को फ़क़ीर भी कहते हैं। अल्लाह की ज़ात इस नापाक मक़ूले से बहुत बुलन्द व बाला है। पस 'अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं' से मतलब उनका यह न था कि जकड़ दिये गये हैं, बल्कि मुराद इससे बुख़्ल (कन्जूसी) था। यही मुहावरा क़ुरआने करीम में दूसरी जगह भी है। फ़रमाता है:

لَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ..... الخ

यानी अपने हाथ अपनी गर्दन से बाँध भी न ले, और न हद से ज़्यादा फैला दे कि फिर थकान और शर्मिन्दगी के साथ बैठ रहना पड़े।

पस बुख़्ल से और फ़ुज़ूलख़र्ची से अल्लाह तआ़ला ने आयत में रोका। पस मलऊन यहूदियों के भी हाथ बंधा हुआ होने से यही मुराद थी। फ़िनहास नाम के यहूदी ने यह कहा था और इसी मलऊन का वह दूसरा क़ौल भी था कि ख़ुदा फ़क़ीर है और हम ग़नी (मालदार) हैं। जिस पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने उसे पीटा था। एक रिवायत में है कि शास बिन क़ैस ने यह कहा था जिस पर यह आयत उतरी, और इरशाद हुआ कि बख़ील और कन्जूस ज़लील और बुज़दिल ये लोग ख़ुद हैं। चुनाँचे एक और आयत में है कि अगर

Maktab E Ashraf

ये बादशाह बन जायें तो किसी को कुछ न दें बल्कि ये तो औरों की नेमतें देखकर जलते हैं, ये बहुत ज़लील लोग हैं। बल्कि ख़ुदा के हाथ खुले हैं, वह बहुत कुछ ख़र्च करता रहता है, उसका फ़ज़्ल फैला हुआ है, उसकी बख़्शिश आम है, हर चीज़ के ख़ज़ाने उसके हाथों में हैं, हर नेमत उसकी तरफ़ से है। सारी मख़्लूक़ दिन रात हर वक़्त हर जगह उसी की मोहताज है:

وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَاسَاَلْتُمُوْهُ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَاتُحْصُوْهَا، اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ.

तुमने जो माँगा अल्लाह ने वह दिया, अगर तुम ख़ुदा की नेमतों को शुमार करना चाहो भी तो नहीं कर सकते, यक़ीनन इनसान बड़ा ही ज़ालिम बेहद नाशुक्रा है।

मुस्नद अहमद में हदीस है कि अल्लाह तआ़ला का दाहिना हाथ पुर है, दिन रात का ख़र्च उसके ख़ज़ाने को घटाता नहीं। शुरू से लेकर आज तक जो कुछ भी उसने अपनी मख़्लूक़ को अ़ता फ़रमाया उसने उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं की, उसका अ़र्श पहले पानी पर था। उसी के हाथ में फ़ैज़ है या क़ब्ज़ा है, वही बुलन्दी और पस्ती करता है, उसका फ़रमान है कि लोगो तुम मेरी राह में ख़र्च करो तुम दिये जाओगे। बुख़ारी व मुस्लिम में भी यह हदीस है।

फिर फ़रमाया- जिस क़द्र ख़ुदा की नेमतें ऐ नबी तेरे पास बढ़ेंगी उतना ही इन शैतनों का कुफ़्र, हसद, जलन और बढ़ेगा। ठीक इसी तरह मोमिनों का ईमान और उनकी इताअ़त और अल्लाह के अहकाम के आगे झुकना बढ़ता है। जैसे एक और आयत में है:

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ......الخ

ईमान वालों के लिये तो यह हिदायत व शिफ़ा है, और बेईमान इससे अंधे बहरे हैं। यही हैं जो दरवाज़े से पुकारे जाते हैं। एक और आयत में है:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَاهُوَ شِفَآءٌ..... الخ

हमने वह क़ुरआन उतारा है जो मोमिनों के लिये शिफ़ा और रहमत है, और ज़ालिमों को तो नुक़सान ही बढ़ता रहता है।

फिर इरशाद हुआ कि उनके दिलों में से खुद आपस का बुग़्ज़ व हसद भी क़ियामत तक ख़त्म न होगा। एक दूसरे के आपस में ही ख़ून पीने वाले ये लोग हैं, नामुम्किन है कि ये हक़ पर जम जायें। ये अपने ही दीन में टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं, झगड़े और दुश्मनियाँ इनमें हमेशा से चलती आ रही हैं और जारी ही रहेंगी। ये बहुत सी बार लड़ाई के सामान करते हैं, चारों तरफ़ एक आग तेरे ख़िलाफ़ भड़काना चाहते हैं, लेकिन हर बार मुँह की खाते हैं। उनका मक्र (फ़रेब और धोखा) उन ही पर लौट जाता है। ये बिगाड़ पैदा करने वाले लोग हैं और ख़ुदा के दुश्मन हैं। किसी फ़सादी और बिगाड़ फैलाने वाले को अल्लाह अपना दोस्त नहीं बनाता। अगर ये ईमान वाले और परहेज़गार बन जायें तो हम उनसे तमाम डर दूर कर दें, और मक़सद से उन्हें मिला दें। अगर ये तौरात व इन्जील और इस क़ुरआन को मान लें क्योंकि तौरात व इन्जील का मानना इस क़ुरआन के मानने को लाज़िम कर देगा। उनकी सही तालीम यही है कि ये क़ुरआन सच्चा है, इसकी और नबी-ए-आख़िरुज़्ज़माँ सल्ल. की तस्दीक़ पहले की किताबों में मौजूद है, तो अगर ये अपनी किताबों को बग़ैर तहरीफ़ व तब्दील (यानी किसी रद्दोबदल और कमी-बेशी) और तावील व तफ़सीर के मानें तो वे उन्हें इसी इस्लाम की हिदायत करेंगी, जो नबी करीम सल्ल. बतलाते हैं। इस सूरत में ख़ुदा उन्हें

Maktab E Ashraf

दुनिया के फ़ायदे भी देगा और आसमान से पानी बरसायेगा, ज़मीन से पैदावार उगायेगा, नीचे ऊपर की यानी ज़मीन व आसमान की बरकतें उन्हें मिल जायेंगी। जैसा कि एक और आयत में है:

وَلَوْاَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا.... الخ

यानी अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतें नाज़िल फ़रमाते। एक और आयत में है:

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِى النَّاسِ.

लोगों की बुराईयों की वजह से ख़ुश्की और तरी में फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) ज़ाहिर हो पड़ा।

और यह भी मायने हो सकते हैं कि बग़ैर मशक़्क़त व मुश्किल के हम उन्हें बहुत ज़्यादा बरकत वाली रोज़ियाँ देते। बाज़ों ने इस जुमले का मतलब यह भी बयान किया है कि ये लोग ऐसा करने से ख़ैर में हो जाते, लेकिन यह क़ौल पुराने उलेमा व बुज़ुर्गों के ख़िलाफ़ है। इब्ने अबी हातिम में इस जगह एक रिवायत बयान की गयी है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क़रीब है कि इल्म उठा लिया जाये, यह सुनकर हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ि. ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह कैसे हो सकता है कि इल्म उठ जाये? हमने क़ुरआन सीखा और अपनी औलाद को सिखाया। आपने फ़रमाया अफ़सोस मैं तो तमाम मदीने वालों से ज़्यादा तुमको समझदार जानता था, तुम नहीं देखते कि यहूद व ईसाईयों के हाथों में भी तौरात व इन्जील हैं, लेकिन किस काम की जबकि उन्होंने अहकामे ख़ुदा छोड़ दिये हैं। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। यह हदीस मुस्नद में भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी चीज़ का बयान फ़रमाया कि यह बात इल्म के ख़त्म होने के वक़्त होगी, इस पर हज़रत इब्ने लबीद रज़ि. ने कहा इल्म कैसे जाता रहेगा? हम क़ुरआन पढ़े हुए हैं, अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं, वे अपनी औलाद को पढ़ायेंगे यही सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा। इस पर आपने जवाब में वह फ़रमाया जो बयान हुआ। फिर फ़रमाया उनमें एक जमाअ़त दरमियानी राह पर चलने वाली भी है और अक्सर बुरे आमाल वाले हैं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ.

मूसा की क़ौम में से एक गिरोह (जमाअ़त) हक़ की हिदायत करने वाला और इसी के साथ अ़दल व इन्साफ़ करने वाला भी था। और ईसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के बारे में फ़रमान है:

فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ.... الخ

उनमें के ईमान वाले लोगों को हमने उनके सवाब इनायत फ़रमाये।

इस नुक्ते का ख़्याल रहे कि उनका बेहतरीन दर्जा बीच का दर्जा बयान फ़रमाया, और इस उम्मत का यह दर्जा दूसरा दर्जा है जिस पर एक तीसरा दर्जा भी है, जैसा कि फ़रमाया:

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا..... الخ

फिर हमने किताब का वारिस अपने ख़ास और चुने हुए बन्दों को बनाया, उनमें से बाज़ तो अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म करने वाले हैं, बाज़ दरमियानी चाल चलने वाले हैं और बाज़ ख़ुदा के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़ने वाले हैं, यही बहुत बड़ा फ़ज़्ल है....। पस ये तीनों क़िस्में इस उम्मत की जन्नत में दाख़िल होने वाली हैं।

Maktaba-E-Ashraf

इब्ने मरदूया में है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के सामने हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया मूसा की उम्मत के इकहत्तर गिरोह हो गये जिनमें से एक तो जन्नती है बाक़ी सत्तर दोज़ख़ी। ईसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत के बहत्तर गिरोह हो गये जिनमें से एक जन्नती और बाक़ी इकहत्तर दोज़ख़ी। मेरी यह उम्मत इन दोनों से बढ़ जायेगी, इनका भी एक गिरोह जन्नत में जायेगा बाक़ी बहत्तर गिरोह जहन्नम में जायेंगे। लोगों ने पूछा वे कौन हैं? फ़रमाया जमाअ़तें, जमाअ़तें। याक़ूब बिन यज़ीद कहते हैं कि जब हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. यह हदीस बयान करते तो क़ुरआन की आयतः

وَلَوْاَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا....... الخ

और

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ.

भी पढ़ते (यानी सूरः मायदा की आयत 65 और सूरः आराफ़ की आयत 181) और फ़रमाते इससे मुराद उम्मते मुहम्मदिया है। लेकिन यह हदीस इन लफ़्ज़ों में और इस सनद से बेहद ग़रीब है और सत्तर से ज़्यादा फ़िर्क़ों की हदीस बहुत सी सनदों से नक़ल की गयी है जिसे हमने दूसरी जगह बयान कर दिया है। फ़ल्हम्दु लिल्लाह।

يٰٓـاَيُّهَاالرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآاُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَابَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَايَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ○	ऐ रसूल! जो-जो कुछ आपके रब की जानिब से आप पर नाज़िल किया गया है आप सब पहुँचा दीजिये, और अगर आप ऐसा न करेंगे तो आपने अल्लाह तआ़ला का एक पैग़ाम भी नहीं पहुँचाया, और अल्लाह तआ़ला आपको लोगों से महफ़ूज़ रखेगा, यक़ीनन अल्लाह पाक उन काफ़िर लोगों को राह न देंगे। (67)

इस्लाम का प्रचार व प्रसार पैग़म्बर का फ़र्ज़ है

अपने नबी को ख़ुदा तआ़ला हुक्म देता है कि ख़ुदा तआ़ला के तमाम अहकाम लोगों को पहुँचा दो। हुज़ूर ने भी ऐसा ही किया, सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। सही बुख़ारी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं- जो तुझसे कहे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह की तरफ़ से किसी नाज़िल हुए हुक्म को छुपा लिया तो जान लो कि वह झूठा है। अल्लाह ने अपने नबी को यह हुक्म दिया है, फिर इसी आयत की तिलावत आपने की। यह हदीस यहाँ पर मुख़्तसर है दूसरी जगह तफ़सील के साथ है। सहीहैन में भी है कि अगर हुज़ूर सल्ल. ख़ुदा के किसी फ़रमान को छुपाने वाले होते तो इस आयत को छुपा लेतेः

وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَااللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰهُ.

यानी तू अपने दिल में वह छुपाता था जिसे ख़ुदा ज़ाहिर करने वाला था, और तू लोगों में शर्मिन्दा हो रहा था हालाँकि ख़ुदा ज़्यादा हक़दार है कि तू उससे डरे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से किसी ने कहा कि लोगों में यह चर्चा हो रहा है कि तुम्हें कुछ बातें हुज़ूर सल्ल. ने ऐसी बताई हैं जो और लोगों से पोशीदा रखी थीं? तो आपने यही आयत पढ़ी और फ़रमाया क़सम ख़ुदा की

हमें हुज़ूर सल्ल. ने किसी ऐसी मख़्सूस चीज़ का वारिस नहीं बनाया। (इब्ने अबी हातिम)

सही बुख़ारी में है कि हज़रत अ़ली रज़ि. से एक शख़्स ने पूछा क्या तुम्हारे पास क़ुरआन के अ़लावा कुछ और 'वही' भी है? आपने फ़रमाया उस ख़ुदा की क़सम जिसने दाने को उगाया है और जानवरों को पैदा किया है, कुछ नहीं! सिवाय उस समझ व रिवायत के जो ख़ुदा किसी शख़्स को दे और जो कुछ इस सहीफ़े (किताब) में है। उसने पूछा सहीफ़े में क्या है? फ़रमाया दीन के मसाईल हैं, क़ैदियों को छोड़ देने के अहकाम हैं और यह है कि मुसलमान को काफ़िर के बदले क़िसास में क़त्ल न किया जाये। सही बुख़ारी में है कि हज़रत ज़ोहरी का फ़रमान है कि ख़ुदा की तरफ़ से रिसालत (यानी अपने अहकाम भेजना) है और पैग़म्बर के ज़िम्मे तब्लीग़ है, और हमारे ज़िम्मे क़बूल करना और फ़रमान के ताबे होना है। हुज़ूर सल्ल. ने ख़ुदा की सब बातें पहुँचा दीं, इसकी गवाह आपकी तमाम उम्मत है कि वास्तव में आपने अमानत की पूरी अदायेगी की और सबसे बड़ी मजलिस जो थी उसमें सबने इस बात का इक़रार किया यानी हज्जतुल्-विदा (नबी करीम सल्ल. के आख़िरी हज) के ख़ुतबे में, जिस वक़्त आपके सामने चालीस हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का विशाल जनसमूह था। सही मुस्लिम में है कि आपने उस ख़ुतबे (बयान) में लोगों से फ़रमाया तुमसे मेरे बारे में ख़ुदा के यहाँ सवाल होगा तो बताओ क्या जवाब दोगे? सबने कहा हमारी गवाही है कि आपने तब्लीग़ कर दी और रिसालत (अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने) का हक़ अदा कर दिया और हमारी पूरी ख़ैरख़्वाही की। आपने हाथ और सर आसमान की तरफ़ उठाये, फिर लोगों की तरफ़ झुका कर फ़रमाया ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुँचा दिया? ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुँचा दिया।

मुस्नद अहमद में यह भी है कि आपने उस ख़ुतबे में पूछा कि लोगो यह कौनसा दिन है? सबने कहा हुर्मत (यानी सम्मान व इज़्ज़त) वाला। पूछा यह कौनसा शहर है? जवाब दिया हुर्मत वाला। फ़रमाया यह कौनसा महीना है? जवाब दिया हुर्मत वाला। फिर फ़रमाया तुम्हारे माल और ख़ून व आबरूएँ आपस में एक दूसरे पर ऐसी ही हुर्मत वाली हैं जैसे इस दिन की, इस शहर में और इस महीने में हुर्मत है। फिर बार-बार इसी को दोहराया, फिर अपनी उंगली आसमान की तरफ़ उठाकर फ़रमाया ऐ अल्लाह! मैंने पहुँचा दिया। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- ख़ुदा की क़सम यह आपके रब की तरफ़ से आपको वसीयत थी (यानी यह कि अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने पर उम्मत से गवाही लें)। फिर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया देखो हर हाज़िर (यहाँ मौजूद) शख़्स ग़ैर-हाज़िर को पहुँचा दे। देखो मेरे बाद कहीं काफ़िर न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारते फिरो (यानी मुसलमानों का आपस में ख़ून बहाना यह कुफ़्रिया अ़मल है)। इमाम बुख़ारी रह. ने भी इसे रिवायत किया है।

फिर फ़रमाता है- अगर तूने मेरे फ़रमान बन्दों तक न पहुँचाये तो तूने रिसालत का हक़ अदा नहीं किया। फिर इसकी जो सज़ा है वह ज़ाहिर है। अगर एक आयत भी छुपा ली तो रिसालत तोड़ दी (यानी रसूल की जो ज़िम्मेदारी है कि अल्लाह के अहकाम और पैग़ाम बन्दों तक पहुँचाये उसको अदा न किया)। हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जब यह हुक्म नाज़िल हुआ कि जो कुछ उतरा है सब पहुँचा दो तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया मैं अकेला हूँ और ये सब मिलकर मुझ पर चढ़ दौड़ते हैं, मैं किस तरह करूँ? तो दूसरा जुमला उतरा कि अगर तूने न किया तो तूने रिसालत का काम भी नहीं किया, फिर फ़रमाया तुझे लोगों से बचा लेना मेरे ज़िम्मे है, तेरा हाफ़िज़ व मददगार मैं हूँ बेख़ौफ़ व ख़तर रह, तेरा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

इस आयत से पहले हुज़ूर सल्ल. अपना पहरा रखते थे, लोग सुरक्षा पर मुक़र्रर रहते थे। चुनाँचे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक रात हुज़ूर सल्ल. बेदार थे, नींद नहीं आ रही थी, मैंने कहा या रसूलल्लाह! आज क्या बात है? फ़रमाया काश कि मेरा कोई नेकबख़्त सहाबी आज पहरा देता। यह बात हो ही रही थी कि मेरे कानों में हथियार की आवाज़ आई। आपने फ़रमाया कौन है? जवाब मिला कि मैं सअ़द बिन मालिक हूँ। फ़रमाया कैसे आये हो? जवाब दिया इसलिये कि रात भर हुज़ूर की चौकीदारी करूँ। इसके बाद हुज़ूर सल्ल. आराम से सो गये, यहाँ तक कि ख़र्राटों की आवाज़ आने लगी। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि यह वाक़िआ सन् दो हिजरी का है। इस आयत के नाज़िल होते ही आपने ख़ेमे से सर निकालकर मुहाफ़िज़ हज़रात (सुरक्षा कर्मियों) से फ़रमाया जाओ अब मैं ख़ुदा की पनाह में आ गया हूँ तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं रही।

एक रिवायत में है कि अबू तालिब आपके साथ-साथ किसी न किसी आदमी को रखते थे। जब यह आयत उतरी तो आपने फ़रमाया बस चचा अब मेरे साथ किसी को भेजने की ज़रूरत नहीं, मैं अल्लाह की हिफ़ाज़त में आ गया हूँ। लेकिन यह रिवायत ग़रीब और मुन्कर है। यह वाक़िआ तो मक्का का हो सकता है, यह आयत तो मदनी है बल्कि मदीने की भी आख़िरी मुद्दत की आयत है। इसमें शक नहीं कि मक्के में भी ख़ुदा की हिफ़ाज़त अपने रसूल सल्ल. के साथ रही, बावजूद जान के दुश्मन होने के और हर-हर सामान और असबाब से लैस होने के मक्का के सरदार और मक्का वाले आपका बाल तक बाँका न कर सके। नुबुव्वत के शुरू के ज़माने में अपने चचा अबू तालिब की वजह से जो कि क़ुरैशियों के सरदार और रुसूख़ वाले शख़्स थे, आपकी हिफ़ाज़त होती रही। उनके दिल में ख़ुदा ने आपकी मुहब्बत व अ़ज़मत डाल दी, यह मुहब्बत तबई थी शरई न थी। अगर शरई होती तो क़ुरैश हुज़ूर सल्ल. के साथ ही उनकी भी जान के पीछे पड़ जाते। उनके इन्तिक़ाल के बाद अल्लाह ने अन्सार के दिलों में हुज़ूर सल्ल. की शरई मुहब्बत पैदा कर दी और आप उन्हीं के यहाँ चले गये। अब तो मुश्रिक लोग भी और यहूद भी एक साथ निकल खड़े हुए। बड़े-बड़े पासबान लश्कर लेकर चढ़ दौड़े, लेकिन बार-बार की नाकामियों ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। इसी तरह ख़ुफ़िया साज़िशें भी जितनी कीं क़ुदरत ने वे भी उन ही पर उलट दीं। इधर वे जादू करते हैं इधर 'सूरः फ़लक़ और सूरः नास' नाज़िल होती हैं और उनका जादू उतर जाता है। उधर वे हज़ारों कोशिशें करके बकरी के गोश्त में ज़हर मिलाकर हुज़ूर सल्ल. की दावत करके आपके सामने रखते हैं, इधर अल्लाह तआ़ला अपने नबी को उनकी धोखादेही से आगाह फ़रमाते हैं और ये हाथ काटते रह जाते हैं। और भी ऐसे वाक़िआ़त आपकी ज़िन्दगी में बहुत सारे नज़र आते हैं।

इब्ने जरीर में है कि एक सफ़र में आप एक सायेदार दरख़्त के नीचे जो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अपनी आ़दत के मुताबिक़ हर मन्ज़िल में तलाश करके आपके लिये छोड़ देते थे, दोपहर के वक़्त क़ैलूला (आराम) कर रहे थे कि एक देहाती अचानक आ गया। आपकी तलवार जो उसी दरख़्त में लटक रही थी उतार ली और म्यान से बाहर निकाल ली और डाँटकर आपसे कहने लगा अब बता कौन है जो तुझे बचा ले? आपने फ़रमाया अल्लाह मुझे बचायेगा। उसी वक़्त देहाती का हाथ काँपने लगा और तलवार उसके हाथ से गिर गयी और वह दरख़्त से टकरा गया जिससे उसका दिमाग़ टुकड़े-टुकड़े हो गया और अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी।

इब्ने अबी हातिम में है कि जब हुज़ूर सल्ल. ने बनू अनमार से ग़ज़्वा किया (मुक़ाबला और दीन के लिये लड़ाई की) ज़ातुर्रिक़ा के खजूर के बाग़ में आप एक कुएँ पर पैर लटकाये बैठे हुए थे कि बनू नज्जार

Maktab-E-Ashraf

के एक शख़्स वारिस नाम के ने कहा देखो अब मैं मुहम्मद को क़त्ल करता हूँ। लोगों ने कहा कैसे? कहा मैं किसी बहाने से आपसे तलवार ले लूँगा और फिर एक ही वार में परले पार कर दूँगा। यह आपके पास आया और इधर-उधर की बातें बनाकर आपसे तलवार देखने को माँगी आपने उसे दे दी, लेकिन तलवार के हाथ में आते ही उस पर इतनी कपकपी चढ़ी कि तलवार संभल न सकी और हाथ से गिर पड़ी तो आपने फ़रमाया तेरे और तेरे बुरे इरादे के बीच अल्लाह बाधा और रोक हो गया। हुवैरस बिन हारिस का भी ऐसा ही क़िस्सा मशहूर है। इब्ने मरदूया में है कि सहाबा रज़ि. की आ़दत थी कि सफ़र में जिस जगह ठहरते नबी करीम सल्ल. के लिये घने साये वाला बड़ा दरख़्त छोड़ देते थे कि आप उसके साये में आराम फ़रमायें। एक दिन आप इसी तरह ऐसे दरख़्त के नीचे सो गये और आपकी तलवार उसी दरख़्त में लटक रही थी। एक शख़्स आ गया और तलवार हाथ में लेकर कहने लगा अब बता कि मेरे हाथ से तुझे कौन बचायेगा? आपने फ़रमाया अल्लाह बचायेगा, तलवार रख दे। वह इस क़द्र हैबत (डर और घबराहट) में आ गया कि आपका हुक्म मानना पड़ा और तलवार आपके सामने डाल दी और अल्लाह ने यह आयत उतारी किः

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ.

कि आपको लोगों से अल्लाह बचायेगा।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. ने एक मोटे आदमी के पेट की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया अगर यह इसके अ़लावा किसी और जगह में होता तो तेरे लिये बेहतर था। एक शख़्स को सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पकड़कर आपके पास लाये और कहा कि यह आपको क़त्ल करने का इरादा कर रहा था। वह काँपने लगा, आपने फ़रमाया घबरा नहीं, अगरचे तू इरादा करे लेकिन ख़ुदा उसे पूरा नहीं करेगा।

फिर फ़रमाता है- तेरे ज़िम्मे सिर्फ़ तब्लीग़ (बात का पहुँचाना) है, हिदायत ख़ुदा के हाथ में है। वह काफ़िरों को हिदायत नहीं देगा। तू पहुँचा दे हिसाब का लेने वाला अल्लाह तआ़ला ही है।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○	आप कहिये कि ऐ अहले किताब! तुम किसी भी (सही) चीज़ पर नहीं, जब तक कि तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजी गई है उसकी भी पूरी पाबन्दी न करोगे। और ज़रूर जो (मज़्मून) आपके पास आपके रब की तरफ़ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र के बढ़ने का सबब बन जाता है, तो आप उन काफ़िर लोगों पर ग़म न किया कीजिये (68) यह तहक़ीक़ी बात है कि मुसलमान और यहूदी और साबिईन का फ़िर्क़ा और ईसाईयों में से जो शख़्स यक़ीन रखता हो अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे, ऐसों पर न किसी तरह का अन्देशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (69)

इस्लाम के अ़लावा और कोई दीन क़ाबिले एतिबार नहीं

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यहूद व ईसाई किसी दीन पर नहीं जब तक कि अपनी किताबों पर और ख़ुदा की इस किताब पर ईमान न लायें। लेकिन उनकी हालत तो यह है कि जैसे-जैसे क़ुरआन उतरता है तो ये सरकशी और कुफ़्र में बढ़ते जाते हैं। पस ऐ नबी! तू इन काफ़िरों से हसरत व अफ़सोस करके क्यों अपनी जान में घुन लगाता है। साबी, ईसाईयों और मजूसियों की बेदीन जमाअ़त को कहते हैं, और सिर्फ़ मजूसियों को भी, और यह एक गिरोह था यहूद व ईसाई दोनों में से मजूसियों की तरह। क़तादा रह. कहते हैं कि ये ज़बूर पढ़ते थे, क़िब्ले के बजाय दूसरी दिशा की तरफ़ मुँह करके नमाज़ें पढ़ते थे और फ़रिश्तों को पूजते थे। वहब रह. फ़रमाते हैं अल्लाह तआ़ला को पहचानते थे, अपनी शरीअ़त पर आ़मिल थे, उनमें कुफ़्र की ईजाद नहीं हुई थी। ये इराक़ के निकट आबाद थे, यलूता कहे जाते थे, नबियों को मानते थे, हर साल तीस रोज़े रखते थे और यमन की तरफ़ मुँह करते, दिन भर में पाँच नमाज़ें भी पढ़ते थे, इसके अ़लावा और क़ौल भी हैं।

इन तमाम लोगों से अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अमन व अमान वाले, बिना डर और ख़ौफ़ के वे हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत पर सच्चा ईमान रखें और नेक आमाल करें, और यह नामुम्किन है जब तक इस आख़िरी रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर ईमान न हो, जो कि तमाम जिन्नात व इनसानों की तरफ़ ख़ुदा के रसूल बनाकर भेजे गये हैं। पस आप पर ईमान लाने वाले आने वाली ज़िन्दगी के ख़तरों से बेख़ौफ़ हैं और यहाँ छोड़कर जाने वाली चीज़ों की उन्हें कोई तमन्ना, अफ़सोस और हसरत नहीं। सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में इस जुमले के मुफ़स्सल (विस्तृत) मायने बयान कर दिये गये हैं।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَ
اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ ۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا
كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ۝ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا
تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ
وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝

हमने बनी इस्राईल से अ़हद लिया और हमने उनके पास (बहुत-से) पैग़म्बर भेजे। जब कभी उनके पास कोई पैग़म्बर वह (हुक्म) लाया जिसको उनका जी न चाहता था तो उन्होंने बाज़ों को झूठा बतलाया और बाज़ों को क़त्ल ही कर डालते थे। (70) और (यही) गुमान किया कि कुछ सज़ा न होगी, तो वे (उससे और भी) अन्धे और बहरे बन गये, फिर अल्लाह तआ़ला ने उन पर तवज्जोह फ़रमाई, फिर भी उनमें के बहुत-से अन्धे और बहरे बने रहे, और अल्लाह तआ़ला उनके आमाल को ख़ूब देखने वाले हैं। (71)

अहले किताब से अ़हद लिया गया था

अल्लाह तआ़ला ने यहूद व ईसाईयों से वादे लिये थे कि वे ख़ुदाई अहकाम पर आ़मिल और 'वही' के पाबन्द रहेंगे। लेकिन उन्होंने वह अ़हद तोड़ दिया और अपनी ख़्वाहिश के पीछे लग गये। किताबुल्लाह की

Maktab E Ashraf

जो बात उन्होंने अपनी मंशा और राय के मुताबिक़ पाई मान ली, जिसमें अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नज़र आया छोड़ दी। और न सिर्फ़ इतना ही बल्कि रसूलों के मुख़ालिफ़ होकर बहुत से रसूलों को झूठा बताया और बहुतों को क़त्ल भी कर दिया, क्योंकि उनके लाये हुए अहकाम उनकी राय व क़ियास के ख़िलाफ़ थे। इतने बड़े पाप के बाद भी बेफ़िक्र हो बैठे और समझ लिया कि हमें कोई सज़ा न होगी, लेकिन उन्हें ज़बरदस्त रूहानी सज़ायें हुईं यानी वे हक़ से दूर डाल दिये गये और उससे अंधे बहरे बना दिये गये, न हक़ को सुनें और न हिदायत को देख सकें, फिर भी अल्लाह तआ़ला ने उन पर मेहरबानी की, लेकिन उसके बाद भी उनमें के अक्सर ऐसे हो गये कि हक़ से नाबीना (अंधे) और हक़ के सुनने से मेहरूम। अल्लाह उनके आमाल से बाख़बर है, वह जानता है कि कौन किस चीज़ का हक़दार है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ○ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ○

बेशक वे लोग काफ़िर हो चुके जिन्होंने (यह) कहा कि अल्लाह तआ़ला ऐन मरियम के बेटे मसीह हैं, हालाँकि मसीह ने ख़ुद फ़रमाया (था) कि ऐ बनी इस्राईल! तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो जो मेरा भी और तुम्हारा भी रब है। बेशक जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक क़रार देगा, सो उस पर अल्लाह तआ़ला जन्नत को हराम कर देगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और (ऐसे) ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। (72) बिला शुब्हा वे लोग भी काफ़िर हैं जो कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला तीन में का एक है, हालाँकि सिवाय एक माबूद के और कोई माबूद नहीं, और अगर ये लोग अपने इन क़ौलों से बाज़ न आये तो जो लोग उनमें काफ़िर रहेंगे उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (73) क्या फिर भी अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा नहीं करते और उससे माफ़ी नहीं चाहते, हालाँकि अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत फ़रमाने वाले हैं। (74) मरियम के बेटे मसीह कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं, जिनसे पहले (और) भी पैग़म्बर गुज़र चुके हैं, और उनकी वालिदा सिद्दीक़ा (यानी एक वली बीबी) हैं, दोनों खाना खाया करते थे। देखिए तो हम उनसे कैसी (कैसी) दलीलें बयान कर रहे हैं, फिर देखिये वे उल्टे किधर जा रहे हैं। (75)

ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के बेटे नहीं हैं

ईसाईयों के फ़िर्के की (यानी मलकिया, याक़ूबिया, नस्तूरिया के कुफ़्र की) हालत यहाँ बयान की जा रही है कि ये मसीह ही को ख़ुदा कहते हैं और मानते हैं। ख़ुदा उनके क़ौल से पाक और मुबर्रा है। मसीह तो ख़ुदा के बन्दे थे, सबसे पहला कलिमा उनका दुनिया में क़दम रखते ही गहवारे में यह था कि "इन्नी अ़ब्दुल्लाहि" यानी मैं ख़ुदा का बन्दा हूँ। उन्होंने यह नहीं कहा था कि मैं ख़ुदा हूँ या ख़ुदा का बेटा हूँ बल्कि अपनी बन्दगी का इक़रार किया था, और साथ ही फ़रमाया था कि मेरा और तुम सबका रब अल्लाह ही है। उसी की इबादत करते रहो, सीधी और सही राह यही है। और यही क़ौल अपनी जवानी के बाद की उम्र में भी कहा कि अल्लाह ही की इबादत करो, उसके साथ दूसरे की इबादत करने वाले पर जन्नत हराम है और उसके लिये जहन्नम वाजिब है। जैसा कि क़ुरआन की एक और आयत में है कि अल्लाह तआ़ला शिर्क को माफ़ नहीं फ़रमाता, जहन्नमी जब जन्नतियों से खाना पानी माँगेंगे तो जन्नत वालों का जवाब यही होगा कि ये दोनों चीज़ें कुफ़्फ़ार पर हराम हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुसलमानों में आवाज़ लगवाई थी कि जन्नत में सिर्फ़ ईमान व इस्लाम वाले ही जायेंगे। सूरः निसा की आयतः

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ.... الخ

(यानी सूरः निसा की आयत 48) की तफ़सीर में वह हदीस भी बयान कर दी गई जिसमें है कि गुनाह के तीन दीवान हैं जिसमें से एक वह है जिसे ख़ुदा कभी नहीं बख़्शता और वह ख़ुदा के साथ शिर्क है।

हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम ने भी अपनी क़ौम में यही वअ़ज़ बयान किया और फ़रमा दिया कि ऐसे ना-इन्साफ़ मुश्रिकों का कोई मददगार भी खड़ा न होगा। अब उनका कुफ़्र बयान हो रहा है जो अल्लाह को तीन में से एक मानते थे। यहूदी हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को और ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते थे, और अल्लाह को तीन में का एक मानते थे। लेकिन यह आयत सिर्फ़ ईसाईयों के बारे में है, वे बाप बेटा और उसके कलिमे को जो बाप की तरफ़ से बेटे की जानिब था, ख़ुदा मानते थे। फिर इन तीन के मुक़र्रर करने में बहुत बड़ा इख़्तिलाफ़ (मतभेद) था, हर फ़िर्क़ा दूसरे को काफ़िर कहता था, और हक़ यह है कि सभी काफ़िर थे। हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम को और उनकी माँ को और अल्लाह को मिलाकर ख़ुदा मानते थे इसी का बयान इस सूरः के आख़िर में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रमायेगा क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को भी ख़ुदा मानो? वह इससे इनकार कर देंगे और ला-इल्मी (जानकारी न होने) और अपना बेक़सूर होना ज़ाहिर करेंगे। ज़्यादा ज़ाहिर क़ौल भी यही है। वल्लाहु आलम

दर असल इबादत के लायक़ सिवाय उस ज़ाते वाहिद के और कोई नहीं, तमाम कायनात और तमाम मौजूद चीज़ों का माबूदे बरहक़ वही है। अगर ये अपने इस कुफ़्रिया क़ौल से बाज़ न आये तो यक़ीनन ये दर्दनाक अ़ज़ाबों का शिकार होंगे।

फिर अल्लाह तआ़ला अपने करम व मेहरबानी, बख़्शिश व इनाम, लुत्फ़ व रहमत को बयान कर फ़रमा रहा है और बावजूद उनके इस सख़्त जुर्म, इतनी सख़्त बेहयाई और झूठ व बोहतान के उन्हें अपनी रहमत की दावत देता है, और फ़रमाता है कि अब भी मेरी तरफ़ झुक जाओ, अभी सब को माफ़ फ़रमा दूँगा और रहमत के दामन में ले लूँगा। हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के बन्दे और रसूल ही थे, उन जैसे रसूल उनसे पहले भी हुए हैं। जैसा कि फ़रमायाः

Maktab E Ashraf

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا......

वह हमारे एक बन्दे ही थे, हाँ हमने उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाई थी और बनी इस्राईल के लिये क़ुदरत की एक निशानी बनाई। हज़रत ईसा की माँ एक मोमिना और सच्ची थीं।

इससे मालूम हुआ कि हज़रत मरियम नबिया न थीं, क्योंकि यह ख़ूबी और कमाल बयान करने का मक़ाम है तो उनकी जो बेहतरीन ख़ूबी और कमाल था वह बयान कर दिया। अगर नुबुव्वत वाली होतीं तो इस मौक़े पर उसका बयान बहुत ज़रूरी था। इब्ने हज़्म रह. वग़ैरह का ख़्याल है कि हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की माँ, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की माँ और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की माँ नबिया थीं, और दलील यह देते हैं कि फ़रिश्तों ने हज़रत सारा, हज़रत मरियम से ख़िताब और कलाम किया, और हज़रत मूसा की माँ के बारे में अल्लाह का फ़रमान है:

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّ مُوسَىٰ...... الخ

कि हमने मूसा की वालिदा (माँ) की तरफ़ 'वही' की, कि तू उन्हें दूध पिला।

लेकिन जमहूर का मज़हब इसके ख़िलाफ़ है। वे कहते हैं कि नुबुव्वत मर्दों में रही है, जैसा कि क़ुरआने करीम का बयान है:

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا...... الخ

तुझसे पहले हमने बस्ती वालों में से मर्दों ही को रसूल चुना है।

शैख़ अबुल-हसन अश्अ़री रह. ने तो इस पर इजमा (तमाम उलेमा और बुज़ुर्गों की सहमति) नक़ल किया है।

फिर फ़रमाता है कि माँ बेटा तो दोनों खाने के मोहताज थे और ज़ाहिर है कि जो अन्दर जायेगा वह बाहर भी आयेगा, पस साबित हुआ कि वे भी दूसरों की तरह बन्दे ही थे, वे ख़ुदा न थे। देख तू हम किस तरह खोल-खोलकर उनके सामने अपने दलाईल पेश कर रहे हैं। फिर यह भी देख कि बावजूद इसके ये किस तरह इधर-उधर भटकते और भागते फिरते हैं? कैसे गुमराह मज़हब को अपना रहे हैं? और कैसे कमज़ोर और बेदलील अक़्वाल को दलील बनाये हुए हैं?

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ قُلْ يَٰٓأَهْلَ الْكِتَٰبِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوٓا أَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَن سَوَآءِ السَّبِيلِ ○	आप फ़रमाईये क्या ख़ुदा के सिवा ऐसे की इबादत करते हो जो कि तुमको न कोई नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार रखता हो और न नफ़ा पहुँचाने का, हालाँकि अल्लाह तआ़ला सब सुनते हैं, सब जानते हैं। (76) आप फ़रमाईये कि ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में नाहक़ का ग़ुलू मत करो "यानी हद से मत गुज़रो" और उन लोगों के ख़्यालात पर मत चलो जो पहले (ख़ुद भी) ग़लती में पड़ चुके हैं और बहुतों को ग़लती में डाल चुके हैं, और वे लोग सीधे रास्ते से बहक गये (यानी दूर हो गये) थे। (77)

ع ١٠ ١٤

Maktab E Ashraf

शिर्क का रद्द

अल्लाह को छोड़कर दूसरे झूठे माबूदों की जो इबादत करने से मनाही की जाती है कि उन तमाम लोगों से कह तो दो कि जो तुमसे ज़रर (नुक़सान) को दफ़ा करने की और नफ़ा पहुँचाने की कुछ भी ताक़त नहीं रखते, आख़िर तुम उन्हें पूजे चले जा रहे हो? तमाम बातों के सुनने वाले, तमाम चीज़ों से बाख़बर, ख़ुदा से से हटकर अंधे-बहरे, जो न नफ़ा व नुक़सान के मालिक हैं और न वे कोई क़ुदरत रखते हैं ऐसी चीज़ों के पीछे पड़ जाना कौनसी अ़क़्लमन्दी है? ऐ किताब वालो! हक़ की पैरवी की हदों से आगे न बढ़ो, जिसकी इज़्ज़त व सम्मान करने का जितना हुक्म हो उतना ही उसका सम्मान व इज़्ज़त करो। इनसानों को जिन्हें ख़ुदा ने नुबुव्वत दी है नुबुव्वत के दर्जे से ख़ुदाई के दर्जे तक न पहुँचाओ, जैसा कि तुम हज़रत मसीह के बारे में ग़लती कर रहे हो। और इसकी और कोई वजह नहीं सिवाय इसके कि तुम अपने पीरों मुर्शिदों उस्तादों और इमामों के पीछे लग गये हो, वे तो ख़ुद ही गुमराह हैं बल्कि गुमराह करने वाले हैं। सच्चाई और इन्साफ़ के रास्ते को छोड़े हुए उन्हें ज़माना गुज़र गया, गुमराही और बिदअ़तों में मुब्तला हुए अ़रसा हो गया।

इब्ने अबी हातिम में है कि उनमें एक शख़्स ख़ुदा के दीन का बड़ा पाबन्द था। एक ज़माने के बाद शैतान ने उसे बहका दिया कि जो पहले लोग कर गये वही तुम भी कर रहे हो, इसमें क्या रखा है? इसकी वजह से न तो आ़म लोगों में तुम्हारी क़द्र होगी न शोहरत, तुम्हें चाहिये कि कोई नई बात ईजाद करो, उसे लोगों में फैलाओ, फिर देखो कि कैसी शोहरत होती है और किस तरह जगह-जगह तुम्हारा ज़िक्र होने लगता है। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया, उसकी वे बिदअ़तें (दीन में निकाली हुई नयी-नयी बातें) लोगों में फैल गईं और एक ज़माना उसकी तक़लीद (अनुसरण) करने लगा।

अब तो उसे बड़ी शर्मिन्दगी हुई। सल्तनत व मुल्क छोड़ दिया और तन्हाई में ख़ुदा की इबादतों में मशग़ूल हो गया, लेकिन ख़ुदा की तरफ़ से उसे यह जवाब मिला कि मेरी ख़ता ही सिर्फ़ होती तो मैं माफ़ कर देता, लेकिन तूने आ़म लोगों को बिगाड़ दिया और उन्हें गुमराह करके ग़लत राह पर लगा दिया। जिस राह पर चलते-चलते वे मर भी गये, उनका बोझ तुम पर से कैसे हटेगा? मैं तो तेरी तौबा क़बूल नहीं फ़रमाऊँगा। बस ऐसों ही के बारे में यह आयत उतरी है।

लُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ○ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ○ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ	**बनी इस्राईल में जो लोग काफ़िर थे उन पर लानत की गई थी दाऊद और ईसा इब्ने मरियम की ज़बान से, यह (लानत) इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालफ़त की और हद से निकल गये। (78) जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था उससे एक-दूसरे को मना न करते थे, वाक़ई उनका फ़ेल (बेशक) बुरा था। (79) आप उनमें बहुत आदमी देखेंगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं, जो (काम) उन्होंने आगे के लिये किया है वह बेशक बुरा है कि अल्लाह**

Maktab E Ashraf

يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ
لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَوْ كَانُوْا
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ
مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ۝

तआ़ला उनसे नाख़ुश हुआ और ये लोग अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे। (80) और अगर ये लोग अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते और पैग़म्बर पर और उस (किताब) पर जो उनके पास भेजी गई तो उन (मुश्रिकों) को कभी दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें ज़्यादा लोग ईमान से ख़ारिज ही हैं। (81)

यहूद पर लानत

इरशाद है कि बनी इस्राईल के काफ़िर मलऊन हैं। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बानी उन ही के ज़माने में मलऊन क़रार पा चुके हैं। क्योंकि वे ख़ुदा के नाफ़रमान थे और मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्म करते थे। तौरात, इन्जील, ज़बूर, क़ुरआन सब किताबें उन पर लानत करती रहीं। ये अपने ज़माने में भी एक दूसरे को बुरे कामों पर देखते रहे, लेकिन ख़ामोश रहते थे। हरामकारियाँ और गुनाह खुलेआ़म होते थे और कोई किसी को रोकता न था, यह था उनका बदतरीन अ़मल।

मुस्नद अहमद में है, फ़रमाने रसूल सल्ल. है कि बनी इस्राईल में जब सबसे पहले गुनाह शुरू हुए तो उनके उलेमा ने उन्हें रोका, लेकिन जब देखा कि बाज़ नहीं आते तो उन्होंने उन्हें अलग न किया, बल्कि उन्हीं के साथ उठते बैठते खाते पीते रहे। अल्लाह तआ़ला ने एक दूसरे के दिल भिड़ा दिये (यानी उनमें आपस में फूट पड़ गयी और विवाद खड़े हो गये)। और हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम व हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की ज़बानी उन पर लानत नाज़िल फ़रमाई। क्योंकि वे नाफ़रमान और ज़ालिम थे। इनके बयान के वक़्त हुज़ूर सल्ल. तकिया लगाये हुए थे लेकिन अब ठीक होकर बैठ गये और फ़रमाया नहीं नहीं ख़ुदा की क़सम! तुम पर ज़रूरी है कि लोगों को ख़िलाफ़े शरीअ़त बातों से रोको और शरीअ़त की पाबन्दी करो।

अबू दाऊद की हदीस में है कि सबसे पहली बुराई बनी इस्राईल में यही दाख़िल हुई थी कि एक शख़्स दूसरे को ख़िलाफ़े शरीअ़त कोई काम करते देखता तो उसे रोकता, उससे कहता कि अल्लाह से डरो और इस बुरे काम को छोड़ दो, यह हराम है। लेकिन दूसरे रोज़ वह न छोड़ता तो यह उससे किनारा न करता बल्कि उसका साथी और दोस्त बना रहता और मेल-जोल बाक़ी रखता। इस वजह से सब में ही संगदिली आ गई। फिर आपने इस पूरी आयत की तिलावत करके फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! तुम पर फ़र्ज़ है कि भली बातों का हर एक को हुक्म करो, बुराईयों से रोको, ज़ालिम को उसके ज़ुल्म से रोको और उसे मजबूर करो कि हक़ पर आ जाये। तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी यह हदीस मौजूद है। अबू दाऊद वग़ैरह में इसी हदीस के आख़िर में यह भी है कि अगर तुम ऐसा न करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिल भी आपस में एक दूसरे के साथ ख़िलाफ़ कर देगा और तुम पर भी अपनी फटकार नाज़िल फ़रमायेगा, जैसी उन पर

Maktab E Ashraf

नाज़िल फ़रमाई। इस मज़मून की और बहुत सी हदीसें हैं, कुछ सुन भी लीजिये।

हज़रत जाबिर रज़ि. वाली हदीस तो आयत "लौ ला यन्हाहुमुर्रब्बानिय्यू-न...." की तफ़सीर में गुज़र चुकी है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ..... الخ

की तफ़सीर में हज़रत अबू बक्र और हज़रत अबू सालबा की हदीसें आयेंगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

मुस्नद अहमद और तिर्मिज़ी में है कि या तो तुम भलाई का हुक्म और बुराई से मना करते रहोगे या अल्लाह तआ़ला तुम पर कोई अ़ज़ाब भेज देगा, फिर तुम उससे दुआ़यें भी करोगे लेकिन वह क़बूल नहीं फ़रमायेगा। इब्ने माजा में है कि अच्छाई का हुक्म और बुराई से मनाही करो इससे पहले कि तुम्हारी दुआ़यें क़बूल होने से रोक दी जायें। एक सही हदीस में है कि तुम में से जो शख़्स ख़िलाफ़े शरीअ़त काम देखे तो उस पर फ़र्ज़ है कि उसे अपने हाथ से मिटाये, अगर इसकी ताक़त न हो तो ज़बान से, अगर इसकी भी ताक़त न रखता हो तो दिल से, और यह बहुत ही कमज़ोर ईमान वाला है। (मुस्लिम)

मुस्नद अहमद में है कि अल्लाह तआ़ला ख़ास लोगों के गुनाहों की वजह से आ़म लोगों को अ़ज़ाब नहीं करता, लेकिन उस वक़्त जबकि बुराईयाँ उनमें फैल जायें और वे बावजूद क़ुदरत के इनकार न करें (यानी लोगों को न रोकें) उस वक़्त आ़म व ख़ास सबको अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब में घेर लेता है। अबू दाऊद में है कि जिस जगह ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ होनी शुरू हो जायें तो जो वहाँ हो और उन ख़िलाफ़े शरअ़ बातों से नाराज़ हो (एक रिवायत में है कि उनका इनकार करता हो) वह ऐसा है जैसे कि वहाँ हाज़िर ही न हो, और जो उन ख़ताओं और नाफ़रमानियों से राज़ी हो अगरचे वहाँ मौजूद न हो, वह ऐसा है गोया उनमें हाज़िर है। अबू दाऊद में है कि लोगों के उज़्र (बहाने और मजबूरियाँ) जब तक ख़त्म न हो जायें वे हलाक न होंगे। इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल. ने अपने एक ख़ुतबे में फ़रमाया- ख़बरदार! किसी शख़्स को लोगों का डर हक़ बात कहने से रोक न दे। इस हदीस को बयान फ़रमाकर हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. रोने लगे और फ़रमाया अफ़सोस हमने ऐसे मौक़ों पर लोगों का डर दिल में बैठा लिया।

अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में है कि अफ़ज़ल जिहाद ज़ालिम बादशाह (हाकिम) के सामने हक़ बात कह देना है। इब्ने माजा में है कि 'जमरा-ए-सानिया' (हाजी लोग जहाँ कंकरियाँ मारते हैं, वहाँ जो दूसरे शैतान का सुतून बना है) के पास हुज़ूर सल्ल. के सामने एक शख़्स आया और आप से सवाल किया, आप ख़ामोश रहे। जब 'जमरा-ए-अ़क़बा' (आख़िर वाले शैतान) पर कंकर मार चुके और सवारी पर सवार होने के इरादे से रकाब में पाँव रखे तो मालूम किया कि वह पूछने वाला कहाँ है? उसने कहा हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ। फ़रमाया हक़ बात ज़ालिम बादशाह के सामने कह देना। इब्ने माजा में है कि तुम में से किसी शख़्स को अपनी बेइज़्ज़ती न करनी चाहिये। लोगों ने पूछा हुज़ूर यह कैसे? फ़रमाया ख़िलाफ़े शरीअ़त कोई अ़मल देखे और कुछ न कहे। क़ियामत के दिन उससे पूछ-गछ होगी कि फ़ुलाँ मौक़े पर तू क्यों ख़ामोश रहा? यह जवाब देगा कि लोगों के डर की वजह से। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मैं सबसे ज़्यादा हक़दार था कि तू मुझसे ख़ौफ़ खाये। एक रिवायत में है कि जब उसे अल्लाह अपनी हुज्जत याद दिलायेगा तो यह कहेगा कि तुझसे तो मैंने उम्मीद रखी और लोगों से ख़ौफ़ खा गया। मुस्नद अहमद में है कि मुसलमानों को अपने आप ज़लील न होना चाहिये। लोगों ने पूछा कैसे? फ़रमाया उन बलाओं को सर पर लेना जिनकी बरदाश्त की ताक़त न हो। इब्ने माजा में है कि हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया गया- 'अमर बिल-मारूफ़' (अच्छे कामों का हुक्म करना) और 'नही अ़निल-मुन्कर' (बुरे कामों से रोकना) कब छोड़ दी जाये? फ़रमाया उस वक़्त जब

Maktaba Ashraf

तुम में वही ज़ाहिर हो जाये जो तुमसे पहले लोगों में ज़ाहिर हुआ था। हमने पूछा वह क्या चीज़ है? फ़रमाया कमीने आदमियों में सल्तनत का चला जाना, बड़े आदमियों में बदकारी आ जाना, घटिया और रज़ील लोगों में इल्म का आ जाना। हज़रत ज़ैद कहते हैं कि 'रज़ीलों में इल्म आ जाने' से मुराद फ़ासिक़ों (बदकारों और बुरे लोगों) में इल्म आ जाना है। इस हदीस की ताईद करने वाली रिवायतें अबू सालबा रज़ि. की हदीस से आयत 'ला यजुर्रुकुम्' की तफ़सीर में आयेंगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

फिर फ़रमाता है कि अक्सर मुनाफ़िक़ों को तू देखेगा कि वे काफ़िरों से दोस्ती गाँठते हैं। उनके इस फ़ेल की वजह से यानी मुसलमानों से दोस्तियाँ छोड़कर काफ़िरों से दोस्ती करने की वजह से उन्होंने अपने लिये बड़ा ज़ख़ीरा जमा कर रखा है, उसी के परिणाम स्वरूप उनके दिलों में निफ़ाक़ (दोग़लापन) पैदा हो गया है और इसी बिना पर ख़ुदा का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ है। और क़ियामत के दिन के लिये हमेशा के अ़ज़ाब भी उनके लिये आगे आ रहे हैं।

इब्ने अबी हातिम में है- ऐ मुसलमानो! ज़िना से बचो, इससे छह बुराईयाँ आती हैं, तीन दुनिया में और तीन आख़िरत में।

(1) इससे इज़्ज़त व वक़ार और रौनक़ व ताज़गी जाती रहती है।

(2) इससे फ़क्र व फ़ाक़ा (तंगदस्ती और भुखमरी) आ जाता है।

(3) इससे उम्र घटती है।

और क़ियामत के दिन की तीन बुराईया ये हैं-

(1) ख़ुदा का ग़ज़ब। (2) हिसाब की सख़्ती और बुराई। (3) जहन्नम का दाख़िला।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसी आख़िरी जुमले की तिलावत फ़रमाई। यह हदीस कमज़ोर है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि अगर ये लोग ख़ुदा पर, उसके रसूल पर और क़ुरआन पर पूरा ईमान रखते तो हरगिज़ काफ़िरों से दोस्तियाँ न करते, और छुप-छुप कर उनसे मेल-मिलाप जारी न रखते, न सच्चे मुसलमानों से दुश्मनी रखते। दर असल बात यह है कि उनमें के अक्सर फ़ासिक़ हैं यानी ख़ुदा और उसके रसूल की इताअ़त से ख़ारिज हो चुके हैं। उसकी 'वही' और उसके पाक कलाम की आयतों के मुख़ालिफ़ बन बैठे हैं।

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ○	तमाम आदमियों से ज़्यादा मुसलमानों से दुश्मनी रखने वाले आप इन यहूद और इन मुश्रिकों को पाएँगे, और उनमें मुसलमानों के साथ दोस्ती रखने के ज़्यादा क़रीब उन लोगों को पाईयेगा जो अपने को ईसाई कहते हैं, यह इस सबब से है कि उनमें बहुत-से (इल्म से दोस्ती रखने वाले) आ़लिम हैं, और बहुत-से दुनिया से बेताल्लुक़ (दुर्वेश), और (यह इस सबब से है कि) ये लोग तकब्बुर करने वाले नहीं हैं। (82)

यहूदी मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन हैं

यह आयत और इसके बाद की चार आयतें नज्जाशी और उसके साथियों के बारे में उतरी हैं, जबकि उनके सामने हब्शा के मुल्क में हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा तो उनकी आँखों से आँसू बहने लगे और इस क़द्र रोये कि उनकी दाढ़ियाँ तर हो गईं। लेकिन यह ख़्याल रहे कि ये आयतें मदीने में उतरी हैं और हज़रत जाफ़र रज़ि. का यह वाक़िआ हिजरत से पहले का है। यह भी रिवायत है कि ये आयतें उस वफ़्द (जमाअ़त) के बारे में नाज़िल हुई हैं जिसे नज्जाशी ने हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में भेजा था कि वे आपसे मिलें, हाज़िरे ख़िदमत होकर आपके हालात व सिफ़ात देखें और आपका कलाम सुनें। जब ये आये आपसे मिले और आपकी ज़बाने मुबारक से क़ुरआने पाक सुना तो उनके दिल नर्म हो गये, बहुत रोये और इस्लाम क़बूल कर लिया और वापस जाकर नज्जाशी बादशाह से सब हाल बयान किया। नज्जाशी अपनी सल्तनत छोड़कर हुज़ूर सल्ल. की तरफ़ हिजरत करके आने लगे लेकिन रास्ते में ही इन्तिक़ाल हो गया। यहाँ यह भी ख़्याल रहे कि यह बयान सिर्फ़ हज़रत सुद्दी रह. का है। एक और सही रिवायत से साबित है कि वह हब्शा में ही हुकूमत करते हुए फ़ौत हुए। उनके इन्तिक़ाल वाले दिन ही हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा को उनके इन्तिक़ाल की ख़बर दी और उनकी नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना अदा की। बाज़ तो कहते हैं कि उस वफ़्द में सात उलेमा थे और पाँच हज़ार ज़ाहिद (इबादतगुज़ार) थे। बाज़ कहते हैं कि ये कुल पचास आदमी थे, और कहा गया है कि साठ से कुछ ऊपर थे। एक क़ौल यह भी है कि वे सत्तर थे। वल्लाहु आलम

हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि जिनकी सिफ़ात और ख़ूबियाँ आयत में बयान हुई हैं ये हब्शा वाले हैं। मुसलमान मुहाजिर जब उनके पास पहुँचे तो ये सब मुसलमान हो गये थे। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि पहले ये ईसवी दीन पर क़ायम थे, लेकिन जब इन्होंने मुसलमानों को देखा और क़ुरआने करीम को सुना तो फ़ौरन सब मुसलमान हो गये। इमाम इब्ने जरीर रह. का फ़ैसला इन सब अक़्वाल को ठीक कर देता है, वह फ़रमाते हैं कि ये आयतें उन लोगों के बारे में हैं जिनमें ये सिफ़ात और ख़ूबियाँ हों, चाहे वे हब्शा के हों या और कहीं के।

यहूदियों को मुसलमानों से सख़्त दुश्मनी है। इसकी वजह यह है कि उनमें सरकशी और इनकार का माद्दा ज़्यादा है, और जान-बूझकर कुफ़्र करते हैं, और ज़िद से नाहक़ पर अड़ते हैं, हक़ के मुक़ाबले में बिगड़ बैठते हैं, हक़ वालों पर हिक़ारत (अपमान) की नज़रें डालते हैं, उनसे बैर और दुश्मनी बाँधते हैं, इल्म से कोरे हैं, उलेमा की तादाद उनमें बहुत ही कम है, इल्म और इल्म रखने वाले हज़रात की कोई वक़्अ़त उनके दिल में नहीं। यही थे जिन्होंने बहुत से अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को क़त्ल किया, ख़ुद पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़त्ल का इरादा भी किया, और एक दफ़ा नहीं बल्कि बार-बार आपको ज़हर दिया। आप पर जादू किया और अपने जैसे बुरी फ़ितरत वाले लोगों को अपने साथ मिलाकर हुज़ूर सल्ल. पर हमले किये, लेकिन ख़ुदा ने हर बार उन्हें नामुराद और नाकाम किया।

इब्ने मरदूया में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- जब कोई यहूदी किसी मुसलमान को तन्हाई में पाता है, उसके दिल में उसके क़त्ल का इरादा और जज़्बा पैदा होता है। एक दूसरी सनद से भी यह हदीस है लेकिन बहुत ही ग़रीब है। हाँ मुसलमानों से दोस्ती में ज़्यादा क़रीब वे लोग हैं जो अपने आपको ईसाई कहते हैं। हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम के सच्चे ताबेदार हैं, इन्जील के असली और सही तरीक़े पर क़ायम हैं,

Maktab E Ashraf

कुल मिलाकर उनमें एक हद तक मुसलमानों और इस्लाम की मुहब्बत है। यह इसलिये कि उनमें नर्मदिली है जैसा कि अल्लाह का इरशाद है:

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَأْفَةً وَّرَحْمَةً.

यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ताबेदारों के दिलो में हमने नर्मी और रहम डाल दिया है।

उनकी किताब में हुक्म है कि जो तेरे दाहिने कल्ले पर थप्पड़ मारे तू उसके सामने बायाँ कल्ला भी पेश कर दे। उनकी शरीअ़त में लड़ाई है ही नहीं। यहाँ उनकी दोस्ती की वजह यह बयान फ़रमाई कि उनमें ख़तीब और वाज़िज़ (यानी दीनी बयान करने वाले और लोगों को नसीहत की बातें बताने वाले) हैं।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. से एक शख़्स 'क़िस्सीसीन व रुहबाना' पढ़कर इसके मायने दरियाफ़्त करता है तो आप फ़रमाते हैं 'क़िस्सीसीन' को ख़ानक़ाहों और ग़ैर-आबाद जगहों में छोड़ मुझे तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने 'सिद्दीक़ीन व रुहबाना' पढ़ाया है। (बज़्ज़ार और इब्ने मरदूया)

ग़र्ज़ यह कि इनके तीन औसाफ़ (ख़ूबियाँ और सिफ़ात) बयान हुए हैं- उनमें आ़लिमों का होना, उनमें आ़बिदों का होना, उनमें तवाज़ो, विनम्रता और आ़जिज़ी का होना।

अल्लाह का शुक्र है कि छठे पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर सात

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ○ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ○ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ○ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ○ ع

और जब वे उसको सुनते हैं जो कि रसूल की तरफ़ भेजा गया है तो आप उनकी आँखें आँसुओं से बहती हुई देखते हैं, इस सबब से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया। (यूँ) कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम मुसलमान हो गए, तो हमको भी उन लोगों के साथ लिख लीजिए जो तस्दीक़ करते हैं। (83) और हमारे पास कौन-सा उज़्र है कि हम अल्लाह पर और जो हक़ हमको पहुँचा है उस पर ईमान न लाएँ, और इस बात की उम्मीद रखें कि हमारा रब हमको नेक लोगों के साथ दाख़िल कर देगा। (84) सो उनको अल्लाह तआ़ला उनके क़ौल के बदले में ऐसे बाग़ देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, ये उनमें हमेशा- हमेशा को रहेंगे, और नेक काम करने वालों की यही जज़ा (बदला) है। (85) और जो लोग काफ़िर रहे और हमारी आयतों को झूठा कहते रहे वे लोग दोज़ख़ वाले हैं। (86)

क़ुरआन मजीद का दिलों पर असर

और जब वे रसूल पर उतरी हुई 'वही' को सुनते हैं तो तुम उनकी आँखों को देखोगे कि आँसुओं से भरी हुई होंगी। क्योंकि वे उस ख़ुशख़बरी को पहचान गये हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नबी बनाकर भेजे जाने से मुताल्लिक़ उन्होंने अपनी किताबों तौरात इन्जील में देखी थी। चुनाँचे वे कहने लगते हैं कि ऐ रब! हम मुहम्मद पर ईमान ले आये, अब तू हमको उस गिरोह में शामिल रख जिसने गवाही दी है। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि यह आयत नज्जाशी और उसके साथियों के बारे में नाज़िल हुई है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि "मअ़श्शहिदीन' से मुहम्मद सल्ल. और उनकी उम्मत मुराद है, जिन्होंने अपने नबी के लिये गवाही दी है कि नबी ने तब्लीग़ का हक़ अदा कर दिया और रसूल की भी गवाही दी है कि वह तब्लीग़ का फ़रीज़ा अदा कर चुके। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि आँसू बहाने वालों से वे काश्तकार लोग मुराद हैं जो जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि. के साथ हब्शा से आये थे, और जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़ुरआन सुनाया तो वे ईमान ले आये, उनकी आँखों में आसूँ आ गये। रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनसे फ़रमाया कि जब तुम अपने वतन जाओगे तो अपने पिछले मज़हब को इख़्तियार तो नहीं करोगे? वे

Maktab_E_Ashraf

कहने लगे कि हम अपने इस दीन से हरगिज़ न पलटेंगे। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उनके क़ौल को इस तरह नक़ल फ़रमाया है:

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ.

यानी आख़िर हम क्यों ईमान न लाएँ अल्लाह तआ़ला पर और अल्लाह की वही पर। हमारी तो ख़्वाहिश ही यही है कि हमारा रब हमें नेक लोगों में दाख़िल फ़रमा ले। ये नसारा (ईसाई) थे, जिनका ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने यूँ फ़रमाया है कि अहले किताब में से ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाते हैं, ख़ुशू व ख़ुज़ू (विनम्रता और आ़जिज़ी) इख़्तियार करते हैं और तुम्हारे क़ुरआन और अपनी इन्जील पर भी ईमान रखते हैं। ये लोग हैं जो इससे पहले भी इन्जील पर ईमान लाए थे और जब क़ुरआन उनके सामने तिलावत किया (यानी पढ़ा) जाता है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से हक़ है, हम तो पहले ही मुसलमान हैं। इसीलिए यहाँ अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उनके इस मानने के सबब उन्हें जन्नतें दी जाएँगी, जिनमें पानी के चश्मे बह रहे होंगे। ये उनके ईमान और तस्दीक़ का सिला है। उन जन्नतों में वे हमेशा रहेंगे। हक़ की पैरवी करने वालों का बदला यही है, जिस तरह भी वे हों या जहाँ भी हों या जिसके साथ हों वे इसी सिले के हक़दार हैं। इसके बाद उन बदनसीबों के हाल की ख़बर दी जाती है जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे सब दोज़ख़ी हैं।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला ने जो पाक व लज़ीज़ चीज़ें तुम्हारे वास्ते हलाल की हैं, उन्हें हराम मत करो, और हदों से आगे मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। (87) और ख़ुदा तआ़ला ने जो चीज़ें तुमको दी हैं उनमें से हलाल पसन्दीदा चीज़ें खाओ और अल्लाह तआ़ला से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (88)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ○

हराम व हलाल होना

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि यह आयत नबी पाक के सहाबा के एक गिरोह के बारे में नाज़िल हुई। उन्होंने ये कहा था कि हम अपने गुप्त अंगों को काटना और शहवत (भोग इच्छा) से वास्ता ख़त्म करना चाहते हैं, और ये कि राहिबों की तरह इधर-उधर घूमते रहें और दुनिया से बिल्कुल बेपरवाह हो जायें। नबी सल्ल. को जब ये इत्तिला मिली तो आपने उन्हें बुला भेजा और पूछा तो कहा हाँ हमारा ऐसा इरादा है, तो आपने फ़रमाया लेकिन देखो! मैं तो रोज़ा भी रखता हूँ और नहीं भी रखता हूँ। रात को नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सो भी रहता हूँ। औरतों से भी निकाह करता हूँ, राहिब बना नहीं फिरता। जो मेरे तरीक़े पर चला वह मुसलमान है और जो मेरा तरीक़ा इख़्तियार न करे उससे मेरा कोई ताल्लुक़ नहीं है।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. के बाज़ सहाबा ने हज़रत के घरेलू अ़मल और ज़िन्दगी के बारे में आपकी बाज़ बीवियों से कुछ सवालात किये (तो हुज़ूर सल्ल. की

रात-दिन की इबादत-गुज़ारी का हाल मालूम हुआ होगा) तो उनमें से एक कहने लगा कि मैं अब से कभी गोश्त नहीं खाऊँगा। किसी ने कहा मैं कभी किसी औरत के क़रीब न जाऊँगा। किसी ने कहा मैं नीचे ज़मीन पर सोऊँगा, कभी बिस्तर पर न सोऊँगा। यह ख़बर नबी करीम सल्ल. को मिली तो आपने फ़रमाया उन लोगों को क्या हुआ? कोई यह कहता है, कोई वह कहता है। मैं तो रोज़ा रखता भी हूँ और नहीं भी रखता। सोता भी हूँ और नमाज़ भी पढ़ता हूँ। गोश्त भी खाता हूँ और निकाह भी करता हूँ। जो मेरे तौर-तरीक़े से हट गया वह मुझ में से नहीं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि एक शख़्स नबी सल्ल. के पास आकर कहने लगा कि मैं गोश्त खाता हूँ तो बहुत शहवत (हमबिस्तरी की इच्छा) पैदा हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर गोश्त हराम कर लिया है। तो यह आयत उतरी कि ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला की हलाल की हुई चीज़ों को अपने ऊपर हराम न कर डालो।

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि हम एक लड़ाई में लम्बे समय से नबी सल्ल. के साथ थे, हमारे साथ औरतें न थीं। जब हमको रहना दूभर मालूम होने लगा तो हमने हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि क्या हम ख़स्सी हो जायें कि ख़्वाहिश (संभोग की इच्छा) ही न पैदा हो, तो आपने मना फ़रमाया और हमें एक कपड़े (एक-एक जोड़े) मेहर के बदले में एक वक़्ती (सीमित अवधि के लिये) निकाह की इजाज़त दी। फिर अ़ब्दुल्लाह ने यह आयत पढ़ी कि ऐ ईमान वालो! अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को अपने ऊपर हराम न कर लो। लेकिन यह वाक़िआ निकाहे मुता को हराम क़रार दिये जाने से पहले का है। वल्लाहु आलम्।

नोटः कुछ लोग आज भी निकाहे मुता को जायज़ कहते हैं मगर यह सही नहीं। इस्लाम के शुरू ज़माने में वक़्त की सीमा के साथ और निकाहे मुता जायज़ था मगर बाद में इसको हराम क़रार दिया गया और अब चारों इमामों के नज़दीक मुता या कोई वक़्त मुतैयन करके निकाह करना हराम है। तफ़सील उलेमा की किताबों में देखी जा सकती है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास पकी हुई खीर का तोहफ़ा आया, लोग मिलकर खाने लगे तो एक आदमी मजलिस से हट गया। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने कहा आओ शरीक हो जाओ। वह कहने लगा कि मैंने तो इसके न खाने की क़सम खा ली है। आपने फ़रमाया आओ खा लो, क़सम तोड़ डालो और कफ़्फ़ारा दे दो। फिर इस आयत की तिलावत फ़रमायी। कहते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा ने एक मेहमान को दावत दी, लेकिन हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में होने की वजह से देर हो गयी। घर आकर मालूम हुआ कि मेहमान को इन्तिज़ार में रखा गया और खाना नहीं खिलाया गया, तो बीवी पर ग़ुस्सा और नाराज़ होकर कहा कि मेरे वास्ते तुमने मेहमान को भूखा रखा, मुझ पर आज खाना ही हराम है। औरत ने कहा हाँ मुझ पर भी हराम है, मैं भी नहीं खाऊँगी। मेहमान ने यह देखकर कहा मुझ पर भी हराम है। अ़ब्दुल्लाह रज़ि. यह देखकर परेशान हुए फिर हाथ बढ़ाकर खाने लगे और कहा बिस्मिल्लाह पढ़कर सब शुरू करो। ग़र्ज़ कि यह ख़बर नबी पाक को मिली तो यह ऊपर वाली आयत नाज़िल हुई। यह हदीस असरे मुन्क़ता समझी जाती है।

सही बुख़ारी की वह हदीस जिसमें हज़रत सिद्दीक़े अकबर और उनके मेहमानों का वाक़िआ़ है, वह भी इसी के जैसा है और ये दोनों क़िस्से इस बात की दलील हैं कि इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह उलेमा का यह मस्लक है कि जिसने अपने ऊपर कोई खाना या लिबास या औरतों को छोड़कर और कोई चीज़ अगर हराम कर ली तो वह हराम नहीं हो जाती और उसका कफ़्फ़ारा नहीं, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने कह दिया है कि

अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ अपने ऊपर हराम न करो। यही वजह है कि जिसने गोश्त खाना अपने ऊपर हराम कर लिया था उसको नबी सल्ल. ने कफ़्फ़ारा देने का हुक्म नहीं दिया था। लेकिन इमाम अहमद बिन हंबल रह. यह कहते हैं कि जिसने कोई खाना पीना, लिबास या और कोई चीज़ हराम कर ली तो क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करना पड़ेगा, इसलिये कि जब कोई शख़्स क़सम के ज़रिये किसी चीज़ का छोड़ना अपने ऊपर लाज़िम कर ले तो जैसे क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है उसी तरह बग़ैर क़सम के किसी चीज़ को सिर्फ़ हराम कर लेने से भी ग़ैर-लाज़िम को लाज़िम क़रार देने की सज़ा में उसकी पकड़ की जानी चाहिए जो कफ़्फ़ारे की सूरत में हो सकती है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने भी ऐसा ही फ़तवा दिया है। वह फ़रमाते हैं कि खुदा के क़ौल से भी यही निकलता है, इरशाद हैः

يَآاَيُّهَاالنَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ ....الخ

और फ़रमायाः

قَدْفَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ.

यानी ऐ नबी! अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी (यानी उनको ख़ुश करने) की ख़ातिर अल्लाह ने जो तुम पर हलाल कर दिया है उसको क्यों हराम किये लेते हैं। अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

फिर फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला तुम पर फ़र्ज़ करता है कि अपनी क़समों को तोड़ दो।

यहाँ उपरोक्त आयत के ज़िक्र के बाद क़सम के कफ़्फ़ारे का ज़िक्र फ़रमाया है। इससे यह बात साबित हुई कि यमीन (क़सम) का ज़िक्र न भी हो और अपने ऊपर हराम कर लिया हो तो भी कफ़्फ़ारा लाज़िम होने में वह क़सम ही के हुक्म में है। वल्लाहु आलम।

मुजाहिद रह. से रिवायत है कि बाज़ बुज़ुर्ग (ज़्यादा उम्र वाले) सहाबा जैसे उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. और अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाह अ़न्हु ने इरादा किया कि दुनिया से बिल्कुल किनारा कर लेंगे, ख़स्सी हो जायेंगे, टाट के सिवा कुछ न पहनेंगे, तो यह ऊपर ज़िक्र हुई आयत उतरी, जिसके आख़िर में फ़रमाया गया कि जिस खुदा पर तुम ईमान ला चुके उससे डरो।

हज़रत इक्रिमा से रिवायत है कि उस्मान बिन मज़ऊन, अ़ली बिन अबी तालिब, इब्ने मसऊद, मिक़दाद बिन अस्वद, सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम, इन सहाबा ने दुनिया के तमाम मामलात से बिल्कुल किनारा करने का इरादा कर लिया। घरों में बैठ गये, औ़रतों को छोड़ दिया, टाट पहन लिया, खाने पहनने की अच्छी अच्छी चीज़ें सब अपने ऊपर हराम कर लीं। बनी इस्राईल के रुहबानों के जैसा खाना पीना इख़्तियार कर लिया, ख़स्सी होने का इरादा किया, तय कर लिया कि रात भर नमाज़ पढ़ा करेंगे और दिन भर रोज़ा रखेंगे तो यह आयत उतरी कि अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को अपने ऊपर हराम न बना लो, हद से आगे न बढ़ जाओ, हम ऐसे लोगों को हरगिज़ पसन्द नहीं करते, यह मुसलमानों का तरीक़ा नहीं कि औ़रतों से अलग रहना, अच्छा खाना पीना और अच्छा लिबास छोड़ देना, रात भर जागना, दिन भर रोज़ा रखना, ख़स्सी हो जाना, ये सब ग़लत तरीक़े हैं।

हुज़ूरे पाक ने फ़रमाया कि तुम पर तुम्हारे नफ़्स का भी हक़ है, कभी नफ़िल रोज़ा रखो कभी न रखो, कभी नमाज़ पढ़ो कभी सो जाओ, हमारे इस तरीक़े को छोड़ दोगे तो तुम हम में से नहीं। यह सुनकर सब ने कहा ऐ खुदा! हमको हमारे इन इरादों से बचा और अपने हुक्म की पैरवी की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा।

Maktab E Ashraf

नबी सल्ल. एक वक़्त नसीहत व वअ़ज़ करके उठे और सिर्फ़ अ़ज़ाबे इलाही से ख़ौफ़ दिलाते रहे तो आपके सहाबा में से दस आदमियों ने कहा जिनमें हज़रत अ़ली भी थे, उस्मान बिन मज़ऊन भी थे, कहने लगे कि अगर नसारा (ईसाई लोग) और रुहबान (यहूदियों के धर्मगुरू) अपने ऊपर ऐश व राहत हराम कर सकते हैं तो हमको उनसे भी ज़्यादा इसका हक़ है। चुनाँचे बाज़ ने गोश्त चर्बी अपने ऊपर हराम कर ली, बाज़ ने नींद और बाज़ ने औ़रतों को हराम कर लिया। चुनाँचे इब्ने मज़ऊन रज़ि. ने औ़रत को अपने ऊपर हराम कर लिया था। न यह बीवी के पास जाते न बीवी इनके पास आ सकती। अब उनकी औ़रत हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास आई। आ़यशा सिद्दीक़ा के साथ नबी करीम की दूसरी पाक बीवियाँ भी बैठी हुई थीं। हज़रत आ़यशा ने पूछा ऐ हौला यह तुझे क्या हो गया, चेहरे का रंग उड़ा हुआ है। न कंघी चोटी है न तेल इत्र है? तो उसने कहा कंघी करके, तेल व इत्र लगाकर क्या करूँ, शौहर तो मेरे पास आते तक नहीं। सबकी सब उसकी बात सुनकर हंस पड़ीं। इतने में रसूलुल्लाह सल्ल. तशरीफ़ लाये। आपने फ़रमाया सबकी सब क्यों हंस रही हो? कहा या रसूलल्लाह हौला ऐसा-ऐसा कह रही है। आपने उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि. को बुलाकर कहा- यह तूने क्या किया? वह कहने लगे कि मैंने यह ऐश ख़ुदा के लिए छोड़ दिया है, ताकि इबादत के लिए बिल्कुल ख़ास रहूँ। बल्कि मेरा इरादा है कि मैं अपने आपको ख़स्सी ही कर लूँ। तो हज़रत सल्ल. ने फ़रमाया कि तुझको ख़ुदा की क़सम है हरगिज़ ऐसा न करना, फ़ौरन घर जा, बीवी से मिल। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मेरा रोज़ा है, हज़रत सल्ल. ने फ़रमाया रोज़ा तोड़ दे। चुनाँचे उन्होंने आपका हुक्म माना।

अब हौला हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास आई। कंघी की हुई, सुर्मा और इत्र लगाये हुए। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हंसकर पूछा हौला! क्या हुआ? कहने लगी कल वह आया था। नबी करीम सल्ल. उस्मान से फ़रमाते थे कि उस्मान ऐसा क़तई न करना। यह दीन पर बहुत बड़ी ज़्यादती है, और क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करने का हुक्म दे दिया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी बेकार की क़समों पर पकड़ नहीं करता है। हाँ क़सम का अ़हद बाँधा गया हो तो गिरफ़्त करेगा।

"हद से निकलने वालों" के मायने में यह भी गुंजाईश हो सकती है कि जायज़ चीज़ों को अपने ऊपर हराम करके अपने नफ़्सों पर तंगी न कर लो, और यह भी एहतिमाल है कि यह मुराद हो कि हलाल को हराम न बना लो और हलाल से फ़ायदा उठाने में हद से आगे न बढ़ जाओ। हलाल को भी ज़रूरत के बक़द्र ही हासिल करो, ज़रूरत से ज़ायद नहीं, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا.

खाओ पियो लेकिन खाने पीने में ज़रूरत से ज़ायद ख़र्च न करो।

फ़रमाया कि मोमिन वे लोग हैं जो ख़र्च करते हैं तो फ़ुज़ूलख़र्ची नहीं करते, न कन्जूसी करते हैं, बल्कि एतिदाल (दरमियानी राह) को अपनाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने न हद से आगे बढ़ने की इजाज़त दी है न कमी करने की। इसी लिए फ़रमाया कि "हद से आगे न बढ़ो"। फिर फ़रमाया कि हर हालत में हलाल व पाक चीज़ें खाओ और अपने तमाम कामों में ख़ुदा से डरो, उसकी ताक़त और मर्ज़ी की इत्तिबा करो, मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी से रुके रहो।

Maktab E Ashraf

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○	अल्लाह तआ़ला तुम्हारी पकड़ नहीं फ़रमाते तुम्हारी क़स्मों में लग़्व "यानी बेकार" क़स्म (तोड़ने) पर, लेकिन पकड़ इस पर फ़रमाते हैं कि तुम क़स्मों को मज़बूत करो (फिर तोड़ दो), सो इसका कफ़्फ़ारा दस मोहताजों को खाना देना है दरमियानी दर्जे का जो अपने घर वालों को खाने को दिया करते हो, या उनको कपड़ा देना या एक गर्दन (यानी एक ग़ुलाम या बाँदी) आज़ाद करना। और जिसको यह हासिल न हो तो तीन दिन के रोज़े हैं। यह कफ़्फ़ारा है तुम्हारी क़स्मों का, जबकि तुम क़सम खा लो (फिर तोड़ दो), और अपनी क़स्मों का ख़्याल रखा करो। इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हारे वास्ते अपने अहकाम बयान फ़रमाते हैं ताकि तुम शुक्र करो। (89)

क़सम और हलफ़ का बयान

बेकार और बेहूदा क़समें जिनको झूठी क़समें या तकिया-ए-कलाम क़समें कहना चाहिए, उनका ज़िक्र सूरः ब-क़रह में गुज़र चुका है। उसको यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। ऐसी क़समें आदमी बिना मक़सद अपनी बातों में बोलता रहता है। "ख़ुदा क़सम" "अल्लाह क़सम" यह इमाम शाफ़ई रह. का क़ौल है। दूसरों का क़ौल है कि ऐसी बेकार क़समें हज़ल (बेकार बातों, मज़ाक़ दिल्लगी करने) में हुआ करती हैं या नाफ़रमानी के मौक़े पर भी हो सकती हैं। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह. और इमाम अहमद रह. का क़ौल है कि किसी चीज़ के ग़ालिब गुमान होने के मौक़े पर भी कहा जाता हो तो बेकार क़सम की तारीफ़ में आ जायेगा, या ग़ुस्से के वक़्त या भूलकर क़सम खाई गयी हो। और यह भी कहा गया है कि खाने-पीने और लिबास को छोड़ने के बारे में भी क़सम हो तो इसी दलील की वजह से उस पर कोई गिरफ़्त नहीं है जैसा कि फ़रमाया गया कि "अपने ऊपर अल्लाह की हलाल की हुई पाक चीज़ों को हराम मत करो"। लेकिन ज़्यादा सही यही बात है कि बिना इरादे के जो क़सम ज़बान से निकलती है वही बेकार क़सम है।

وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ.....

यानी क़सम खाने की नीयत और इरादे से क़सम खाई गयी हो तो अल्लाह तआ़ला उस पर पकड़ फ़रमायेगा।

فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ...

यानी दिल के पक्के इरादे वाली क़सम को तोड़ने का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को खाना खिलाना है,

Maktaba Ashraf

जिनके पास "अपनी ज़रूरत को पूरा करने की" कोई सबील नहीं और वह दरमियानी किस्म की गिज़ा दी जानी चाहिए जो तुम खाते हो और अपने अ़याल (बाल-बच्चों) को खिलाते हो।

यह दरमियानी गिज़ा रोटी और दूध या रोटी और रोग़न है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने बयान किया है कि बाज़ लोग अपने अ़याल (बाल-बच्चों और घर वालों) को हैसियत से भी ख़राब गिज़ा खिलाते हैं और बाज़ हैसियत से भी अच्छी, इसलिये अल्लाह ने कहा है कि औसत किस्म की हो, न उसमें तंगी बरती गयी हो न दिल खोलकर ख़र्च किया गया हो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं कि वह रोटी गोश्त है, या रोटी दूध। रोग़न या सिरका वग़ैरह है या रोटी खजूर वग़ैरह। इब्ने जरीर यह कहते हैं कि औसत (दरमियानी) से मुराद गिज़ा की कमी और ज़्यादती है, चुनाँचे उलेमा ने गिज़ा की मात्रा में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया है। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि सुबह व शाम दो वक़्त दस मिस्कीनों को खिलाया जाये। मुहम्मद बिन सीरीन कहते हैं कि एक ही वक़्त काफ़ी है, यानी रोटी और गोश्त। अगर गोश्त न हो तो रोटी और रोग़न सही, या सिरका और पेट भरकर रोटी खिलाई जाये। बाज़ कहते हैं कि हर एक को आधा साअ़ गेहूँ या खजूरें दी जायें, यानी तक़रीबन सवा सेर। अबू हनीफ़ा कहते हैं कि गेहूँ हों तो आधा साअ़ और दूसरा ग़ल्ला हो तो एक साअ़। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक साअ़ खजूर का कफ़्फ़ारा दिया था और यही हुक्म लोगों को दिया था। और खजूरें न हों तो आधा साअ़ गेहूँ। फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा एक मुद गेहूँ यानी 56 तौला, सालन के साथ। इब्ने उमर, ज़ैद बिन साबित, मुजाहिद, इक्रिमा और मुहम्मद बिन सीरीन वग़ैरह से भी यही रिवायत है। इमाम शाफ़ई ने कहा कि क़सम के कफ़्फ़ारे में मुद् की मात्रा यानी वही 56 तौला गेहूँ है लेकिन सालन की कोई क़ैद नहीं। यहाँ इमाम शाफ़ई के इस क़ौल की दलील नबी सल्ल. के उस हुक्म से है जो आपने एक शख़्स को दिया था, जिससे रमज़ान के रोज़े की हालत में बीवी से सोहबत का फ़ेल सरज़द हो गया था, कि साठ मिस्कीनों को एक ऐसे पैमाने (माप) से नापकर गेहूँ दो जिसमें पन्द्रह साअ़ समा सकें, कि हर एक को एक-एक मुद मिल सके। इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. क़सम का कफ़्फ़ारा एक मुद गेहूँ क़रार देते थे। अहमद बिन हंबल कहते हैं कि एक मुद गेहूँ या दो मुद ग़ैर-गंदुम वाजिब है। वल्लाहु आलम

अल्लाह तआ़ला के क़ौल "या उनको कपड़ा देना" के बारे में इमाम शाफ़ई रह. कहते हैं कि अगर उन दस में से हर एक को इस क़द्र कपड़ा दें जिस पर लिबास का हुक्म हो सकता हो तो काफ़ी है। जैसे एक क़मीज़ या एक पाजामा या पगड़ी या चादर। टोपी के बारे में मतभेद है कि सिर्फ़ टोपी काफ़ी हो सकती है या नहीं। बाज़ कहते हैं कि जायज़ है, दलील यह हदीस है कि इमरान बिन हसीन से सवाल किया गया तो कहा कि अगर चन्द लोग तुम्हारे अमीर (सरदार) के पास आयें और वह हर एक को एक-एक टोपी उढ़ा दे तो तुम कहते हो कि लिबास दिया गया, पस "कपड़ा देने" में टोपी भी आ गयी। लेकिन इसकी सनदें कमज़ोर हैं। इमाम मालिक और अहमद बिन हंबल कहते हैं कि हर एक को इतना लिबास देना ज़रूरी है जितना कि नमाज़ पढ़ने में लिबास पहने रहना ज़रूरी है। मर्द और औ़रत को उसकी शरई ज़रूरत के मुताबिक़। वल्लाहु आलम

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि ऊपर का लिबास, या नीचे का लिबास जो चाहो कोई एक दे सकते हो। इब्राहीम नख़ई कहते हैं कि ऐसा लिबास जो पहना जाये और चादर दोनों पर मुश्तमिल हो, देना

Maktab E Ashraf

चाहिए। यानी लिहाफ़ और चादर वग़ैरह, न कि सिर्फ़ जाँगिया और क़मीज़ और ओढ़नी वग़ैरह, इसको पूरा लिबास नहीं कहेंगे। सईद बिन मुसैयब कहते हैं कि पगड़ी जैसे सर पर लपेटते हैं और अ़बा (लम्बा कुर्ता या चोग़ा) जैसे बदन पर पहनते हैं, यह पूरे लिबास की तारीफ़ में है। इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि कहते हैं कि दो-दो कपड़े दिये जायें। अबू मूसा ने क़सम खाई थी तो दो कपड़े कफ़्फ़ारे में दिये थे। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि "कपड़ा देने" से हर मिस्कीन के लिए एक अ़बा (लम्बा कुर्ता या जुब्बा) मुराद है, और यह हदीस ग़रीब है।

या "एक गुलाम आज़ाद कर दिया जाये" इमाम अबू हनीफ़ा रह. आ़म गुलाम मुराद लेते हैं चाहे काफ़िर गुलाम आज़ाद किया जाये या मोमिन। इमाम शाफ़ई और दूसरे फ़ुक़हा कहते हैं कि मोमिन गुलाम होना ज़रूरी है जैसा कि क़त्ल के कफ़्फ़ारे में मोमिन गुलाम की क़ैद (शर्त) है। हदीसे मुआ़विया बिन हकम से मालूम होता है और सही मुस्लिम में भी है कि इब्ने हकम सुलमी के ज़िम्मे एक गुलाम को आज़ाद करना था, चुनाँचे वह एक हब्शी बाँदी को लेकर आये, रसूलुल्लाह सल्ल. ने उससे पूछा कि ख़ुदा कहाँ है? उस बाँदी ने कहा आसमान में। फिर पूछा मैं कौन हूँ? कहा आप अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं। तो हज़रत ने फ़रमाया कि हाँ यह ईमान वाली है, इसको आज़ाद कर सकते हो। अब इन तीन क़िस्म के कफ़्फ़ारों में से जिस क़िस्म का कफ़्फ़ारा भी अदा किया जायेगा अदा हो जायेगा, क़ुरआन में सबसे आसान का ज़िक्र है, उसके बाद दर्जा-बदर्जा यानी खिलाना ज़्यादा आसान है लिबास देने से, फिर लिबास गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा सरल है। ग़र्ज़ यह कि अदना से आला की तरफ़ क़दम बढ़ाया गया है। सबके आख़िर में यह है कि अगर मुकल्लफ़ (जिस पर शरीअ़त के अहकाम लागू हैं यानी आ़क़िल-बालिग़) इन तीनों में से किसी पर क़ादिर न हो तो तीन दिन के रोज़े रखे। इब्ने जुबैर और हसन बसरी ने कहा है कि जिसके पास तीन दिर्हम भी हों तो वह खाना खिलाये, वरना रोज़े रखे। बाद के कुछ फ़ुक़हा से नक़ल किया गया है कि उसके लिये जायज़ है कि जिसके पास अपनी ज़रूरियात के अ़लावा और कोई चीज़ ज़्यादा न हो, जिसको वह क़सम के कफ़्फ़ारे में दे सकता हो। तफ़सीर इब्ने जरीर में यह भी कहा है कि तथा वह इस क़द्र ग़रीब हो कि वह अपनी या अपने अ़याल (घर वालों और बाल-बच्चों) की उस दिन की रोज़ी से ज़्यादा कुछ न रखता हो।

अब उलेमा का इख़्तिलाफ़ इसमें भी है कि लगातार तीन रोज़े रखना क्या वाजिब है या मुस्तहब है, और क्या अलग-अलग भी रख सकते हैं। इमाम शाफ़ई रह. कहते हैं कि लगातार रखना वाजिब नहीं, इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि भी यही कहते हैं। इसलिए कि हुक्म मुतलक़ (आ़म) है कोई क़ैद (शर्त) नहीं। जैसे रमज़ान के लगातार रोज़े क़ज़ा हों तो उनको भी लगातार क़ज़ा रखने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि जिस आयत में उनकी क़ज़ा का हुक्म है वहाँ लगातार की क़ैद नहीं। इमाम शाफ़ई रह. से एक जगह लगातार वाजिब होने का बयान है। हनफ़ियों और हनाबिला (इमाम अहमद के मानने वालों) का भी यही क़ौल है। वे इस रिवायत की बिना पर कि उबई बिन कअ़ब की एक क़िराअत हैः

فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ مُتَتَابِعَاتٍ.

यानी तीन दिन तक लगातार रोज़े रखे जायें।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. के असहाब भी इसी तरह पढ़ते थे, अगरचे यह क़िराअत मुतवातिर तौर पर साबित नहीं, लेकिन कम से कम ख़बरे वाहिद ज़रूर है, या सहाबा की तफ़सीर से इसका सुबूत मिलता है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि जब कफ़्फ़ारे की आयत उतरी तो हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा या

Maktab E Ashraf

रसूलल्लाह! क्या हम इन तीनों में से किसी एक को इख़्तियार करने में आज़ाद हैं? आपने फ़रमाया हाँ चाहो तो ग़ुलाम आज़ाद कर दो, या किसी को लिबास पहना दो, या खाना खिला दो, और कुछ भी न हो तो तीन दिन के लगातार रोज़े रखो। यह हदीस ग़रीब है।

"यह कफ़्फ़ारा है तुम्हारी क़स्मों का" यानी यह क़सम का शरई कफ़्फ़ारा है। "और अपनी क़समों का ख़्याल रखो" यानी कफ़्फ़ारा अदा किए बग़ैर न रहना। अल्लाह पाक इसी तरह वज़ाहत (खोलकर और स्पष्टता) के साथ अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि शायद तुम शुक्र अदा करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ
مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ○ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ
بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ
وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ
الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ○ وَاَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ○ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا
اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○ ع ١٢ ٢

ऐ ईमान वालो! (बात यही है कि) शराब और जुआ और बुत (वग़ैरह) और क़ुर्आ के तीर (ये सब) गन्दे शैतानी काम हैं, सो इनसे बिलकुल अलग रहो ताकि तुमको कामयाबी हो। (90) शैतान तो यूँ चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिये से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग़ज़ पैदा कर दे और अल्लाह तआ़ला की याद से और नमाज़ से तुमको रोक दे। सो अब भी बाज़ (नहीं) आओगे? (91) और तुम अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करते रहो और रसूल की इताअ़त करते रहो और एहतियात रखो, और अगर मुँह मोड़ोगे तो यह जान रखो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना था। (92) ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिसको वे खाते-पीते हों, जबकि वे लोग परहेज़ रखते हों और ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ईमान रखते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ख़ूब नेक अ़मल करते हों, और अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। (93)

शैतानी आमाल

अल्लाह पाक अपने मोमिन बन्दों को शराब पीने और जुए-बाज़ी वग़ैरह से मना फ़रमाता है। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि शतरंज भी एक क़िस्म का जुआ है। मुजाहिद और ताऊस रह. से

रिवायत है कि हर चीज़ जिसमें क़िमार का लगाव हो जुआ है, यहाँ तक कि बच्चों का शर्तें लगाकर मनके या कोड़ियाँ खेलना यह सब जुआ है। इस्लाम आने तक यह जुआ ज़माना-ए-जाहिलीयत में ख़ुसूसियत के साथ खेला जाता था, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को इन बुरे अख़्लाक़ से मना फ़रमाया। जाहिलीयत के दौर में लोगों में आ़म तौर पर ये जुआ यूँ होता था कि एक बकरी या दो बकरी का गोश्त शर्त के तौर पर बेच दिया जाता था।

इमाम ज़ोहरी कहते हैं कि जुआ यूँ होता था कि माल और फलों पर पाँसे फेंके जाते थे और इस तरह जुए के ज़रिये उन पर क़ब्ज़ा किया जाता था। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि पाँसों के ज़रिये जो खेल खेला जाता है वह भी क़िमार है। और शायद इससे यह मुराद है कि शतरंज का खेल हराम है, और इसी तरह चौसर का। क्योंकि उसमें मोहरे को मारकर जीता जाता है।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि जो शतरंज या चौसर खेले, गोया कि उसने अपना हाथ सुअर के गोश्त में डाल दिया और उसके ख़ून में डुबो दिया। अबू मूसा अश्अ़री की रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया जो नरद खेले वह ख़ुदा तआ़ला का बाग़ी है। अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैंने अपने बाप से सुना कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जो चौसर खेलकर नमाज़ पढ़ने को खड़ा हो उसकी मिसाल ऐसी है कि कोई पीप और ख़िन्ज़ीर के ख़ून से वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हुआ हो। शतरंज के बारे में तो अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. कहते हैं कि यह चौसर से भी बुरी चीज़ है और वह उसे क़िमार व जुए में शुमार करते हैं। इमाम मालिक रह. इमाम अबू हनीफ़ा रह. इमाम अहमद रह. इसके हराम होने के क़ायल हैं। लेकिन इमाम शाफ़ई रह. इसको मक्रूह (बुरा और नापसन्दीदा) बताते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और दूसरे बहुत से सहाबा कहते हैं कि "अनसाब" उन पत्थरों को कहते हैं कि जिन पर मुश्रिक लोग क़ुरबानियाँ करके बुतों पर चढ़ाते थे और 'अज़लाम' भी उन पाँसों को कहते हैं जिन्हें तक़सीम करके फ़ाल (अच्छा बुरा शगून) लिया जाता था, ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि ये शैतानी आमाल की गन्दगी है और सबसे बुरे शैतानी आमाल हैं। इसलिए ऐ मेरे बन्दो! इस गन्दगी से बचो, तुम फ़लाह (कामयाबी) पा सकोगे। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है-

"शैतान का मक़सद हमेशा यह रहता है कि शराब और जुए में मुब्तला करके तुम में कीना-कपट और दुश्मनी पैदा करता रहे, और ख़ुदा के ज़िक्र से, नमाज़ से ग़ाफ़िल करता रहे। अब भी इन बातों से बाज़ आओगे कि नहीं।"

यह ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से ज़बरदस्त तंबीह (चेतावनी) और डरावा है।

शराब हराम होने के सिलसिले में हदीसें

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि शराब की हुर्मत (हराम होना) तीन बार हुई। जबकि नबी सल्ल. मदीना तशरीफ़ लाए उस वक़्त लोग शराब पीते थे, जुए का माल खाते थे, हुज़ूर सल्ल. से इस बारे में सवाल किया गया तो यह 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल हुई कि-

"तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं तो कह दो कि इसमें फ़ायदा तो है लेकिन बहुत कम, और इसके मुक़ाबले में नुक़सान बहुत ज़्यादा है।"

तो लोगों ने कहा कि फ़ायदा कम और ज़्यादा नुक़सान बताया गया है, हराम नहीं कहा गया है। चुनाँचे शराब पीते रहे। लेकिन एक दिन इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि एक मुहाजिर सहाबी ने नमाज़े मग़रिब में क़ुरआन पढ़ते वक़्त नशे के आ़लम में क़ुरआन को ग़लत और उलट-सुलट कर दिया। चुनाँचे यह आयत उतरी कि-

"ऐ मोमिनो! नशे की हालत में नमाज़ न पढ़ा करो। जब तक कि तुम्हें होश न हो कि क्या पढ़ते हो और क्या नहीं।"

यह आयत पहले से ज़्यादा सख़्त थी, चुनाँचे लोगों ने नमाज़ के वक़्त शराब पीना छोड़ दिया। लेकिन फिर भी बराबर पीते रहे। क्योंकि स्पष्ट तौर पर मनाही नहीं थी। लेकिन एक दिन शराब में मस्त होकर कोई नमाज़ पढ़ रहा था, चुनाँचे मनाही की साफ़ आयत नाज़िल हो गई कि-

"ऐ लोगो! शराब और जुआ और पाँसे और तीर, ये सब शैतान के गन्दे अमल हैं, तुम फ़ौरन रुक जाओ, शायद फ़लाह (कामयाबी और भलाई) पा सको।"

तो लोगों ने कहा ऐ रब! हम रुक गये, बाज़ आ गये। फिर लोगों ने हुज़ूर सल्ल. से उन लोगों के बारे में पूछा जो यह मनाही आने से पहले अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो गए थे, या अपनी तबई (साधारण) मौत मर गये थे, लेकिन शराब पीते थे और जुआ खेलते थे, कि उनका क्या होगा जैसा कि अल्लाह ने इनको शैतानी अमल फ़रमा दिया और मनाही कर दी, तो यह आयत नाज़िल हुई कि-

"जो लोग ईमान लाए थे और नेक अमल किए थे तो मनाही आने से पहले जो कुछ उन्होंने हराम खाया था उस पर इल्ज़ाम नहीं दिया जाएगा।"

और हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि अगर उनकी ज़िन्दगी में उन पर यह हराम हो जाती तो वे भी इसको ऐसे ही छोड़ देते जैसा कि तुमने छोड़ दिया है।

हज़रत उमर रज़ि. और शराब का हराम होना

अबू मैसरा से रिवायत है कि शराब के हराम होने की आयत उतरने से पहले हज़रत उमर रज़ि. ने यह दुआ माँगी थी- ऐ ख़ुदा! शराब के हराम होने के बारे में हमारे पास वही भेज, तो यह आयत उतरी थी कि इसमें नुक़सान ज़्यादा और फ़ायदा कम है। लेकिन हज़रत उमर रज़ि. को जब यह आयत सुनाई गई तो उन्होंने फिर दुआ माँगी कि ऐ ख़ुदा! शाफ़ी व काफ़ी बयान नाज़िल फ़रमा। तो सूरः निसा में यह आयत उतरी कि-

"ऐ ईमान वालो! नशे की हालत में हरगिज़ नमाज़ न पढ़ो।"

तो नबी सल्ल. के मुअज़्ज़िन ने "हय्-य अलस्सलाह" के बाद पुकार कर कह दिया कि नशे की हालत में नमाज़ पढ़ने की मनाही आ गई है। उमर रज़ि. को फिर यह 'वही' सुनाई गई। फिर भी आप कहने लगे कि ऐ ख़ुदा! बयाने शाफ़ी व काफ़ी उतार। तो सूरः मायदा में यह आयत नाज़िल हुई कि शराब बिल्कुल हराम है, बिल्कुल रुक जाओ। हज़रत उमर रज़ि. कहने लगे कि रुक गये ऐ ख़ुदा हम रुक गए।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस से साबित है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने मिम्बर पर ख़ुतबा देते हुए फ़रमाया कि ऐ लोगो! शराब हराम हो गई है, और इन पाँच चीज़ों में से जिससे भी बनाई जाये वह शराब है- अंगूर, खजूर, शहद, जौ और ख़मर का लफ़्ज़ आम है हर ऐसी नशे की चीज़ पर जो अक़्ल को ढाँक दे। इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं कि शराब के हराम होने के वक़्त अंगूर की शराब चालू नहीं थी।

एक दूसरी हदीस यह भी है कि शराब से मुताल्लिक़ जब पहली 'वही' (अल्लाह का हुक्म और पैग़ाम) आई तो आम चर्चा हुआ कि शराब हराम हो गई है। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि इसमें नफ़ा (फ़ायदा) है तो हमको नफ़ा उठाते रहना चाहिए। हुज़ूर सल्ल. चुप रहे। जब दूसरी आयत उतरी तो फिर शोहरत हो गई कि शराब हराम हो गई। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह!

Maktab-E-Ashraf

हम नमाज़ के वक़्त नहीं पियेंगे। आप फिर ख़ामोश हो गए। लेकिन जब यह आयत नाज़िल हुई कि यह शैतान का अमल है, इससे रुक जाओ, तो हज़रत सल्ल. ने साफ़ फ़रमा दिया कि शराब हराम हो गई है।

एक दूसरी हदीस में है जो कि इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि क़बीला सक़ीफ़ या क़बीला दोस का एक शख़्स हुज़ूर सल्ल. का दोस्त था। वह मक्का की फ़तह वाले दिन आप से मिला और शराब का एक मटका हज़रत सल्ल. को तोहफ़े में पेश किया। आपने फ़रमाया क्या तुमको नहीं मालूम कि अल्लाह तआला ने शराब हराम कर दी है? वह आदमी अपने ग़ुलाम की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहा इसे बाज़ार में ले जाकर बेच दो। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया जिसने शराब हराम की है उसने इसकी ख़रीद व फ़रोख़्त भी हराम की है। तो उसने अपने ग़ुलाम को हुक्म दिया कि शहर से बाहर ले जाओ और यह मटका लुँढा (यानी गिरा) दो।

एक दूसरी हदीस हज़रत तमीम दारी से नक़ल की गयी है कि वह हर साल नबी सल्ल. को शराब का एक मटका तोहफ़े में भेजते थे और जब शराब हराम हो गई और वह अपने मामूल के मुताबिक़ मटका ले आए तो हुज़ूर सल्ल. ने मुस्कुराकर फ़रमाया- तुम्हारे पीछे शराब हराम कर दी गई है तो उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मैं इसे बेच देता हूँ और क़ीमत हासिल कर लेता हूँ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ख़ुदा यहूदियों पर लानत करे जिन पर गाय और बकरी की चर्बी हराम कर दी गई थी तो वे उसको पिघलाकर रोग़न बनाकर बेच देते थे। अल्लाह ने शराब और उसकी क़ीमत सब हराम कर दी है। बिल्कुल ऐसी ही एक हदीस अब्दुर्रहमान बिन ग़नम से रिवायत है जिसमें मायनों के एतिबार से कोई फ़र्क़ नहीं। इसी तरह की एक और हदीस है कि इब्ने कीसान का बाप हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में शराब की तिजारत करता था। चुनाँचे वह तिजारत के लिए मुल्क शाम (यानी सीरिया) से शराब के मटके ले आये और हज़रत के पास भी एक मटका लाकर कहने लगे या रसूलल्लाह! आपके लिए बड़ी नफ़ीस (उम्दा और बेहतरीन) शराब ले आया हूँ। आपने फ़रमाया ऐ कीसान! यह तो तेरे पीछे हराम हो गई है। उसने पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी! क्या मैं इसे फ़रोख़्त कर दूँ? इस पर आपने फ़रमाया इसकी क़ीमत भी हराम है। इब्ने कीसान ने मटकों को लेजाकर पाँव से ठोकर मारकर तिजारत की तमाम शराब बहा दी।

हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है कि मैं अबू उबैदा और उनके दूसरे साथियों को शराब पिला रहा था यहाँ तक कि क़रीब था कि शराब उन्हें नशे में मस्त कर दे कि इतने में किसी ने कहा, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि शराब हराम हो गई है? लोगों ने कहा अभी हम इन्तिज़ार करेंगे और पता लगायेंगे। दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा, नहीं ऐ अनस! जो कुछ तेरे मटके में बच रही है वह सब लुंढा दे। ख़ुदा की क़सम अब हम फिर नहीं पियेंगे। यह खजूर और जौ की शराब थी। उस वक़्त अनस और उनके साथी अबू तल्हा के घर में थे। आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाने लगा तो कहा गया कि निकल कर देखो और सुनो, मालूम हुआ कि शराब हराम हो गई है। मदीने की गलियों में शराब बह रही है। बाज़ ने कहा कि उन लोगों का क्या हाल होगा जो शराब पीते थे और जिहाद में क़त्ल हो गये? तो यह आयत उतरी कि जो मोमिन नेक अमल करते थे और मर गये हैं उन पर कोई गुनाह नहीं।

Maktab E Ashraf

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और उनकी इताअ़त का प्रदर्शन

हज़रत अनस कहते हैं कि मैं शराब पिला रहा था, लोगों के सर नशे से ढुलक रहे थे कि मुनादी (ऐलान करने वाले) ने शराब की हुर्मत (हराम होना) सुना दी। हर आने जाने वाले ने शराब बहा दी और मटके तोड़ दिये। बाज़ ने वुज़ू किया और बाज़ ने ग़ुस्ल किया, बाज़ ने उम्मे सलीम के पास से लेकर ख़ुशबू लगाई। फिर मस्जिद में आए तो नबी सल्ल. ने शराब के हराम होने की आयत सुनाई। एक आदमी ने हज़रत क़तादा रह. से कहा कि क्या तुमने यह हज़रत अनस से सुना है? और किसी ने अनस रज़ि. से पूछा कि क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है? तो अनस रज़ि. ने कहा हाँ, न हुज़ूर सल्ल. झूठ बोलते हैं न हम झूठ कहते हैं, बल्कि हम तो जानते भी नहीं कि झूठ क्या चीज़ है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर कहते हैं कि नबी सल्ल. ने आ़म शराब और जुआ और गेहूँ की शराब और शतरंज, चौसर, गाने बजाने के आलात (उपकरण और सामान) सब हराम कर दिये हैं और सिर्फ़ मुझ पर नमाज़े वित्र वाजिब फ़रमाई है। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से जो शख़्स झूठी हदीस बनाकर पेश करे उसका ठिकाना दोज़ख़ है। आपने अ़बीरा दरख़्त से खींची हुई शराब भी हराम क़रार दी और हर नशा लाने वाली चीज़ को हराम फ़रमा दिया।

शराब और लानत

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- शराब से संबन्धित दस चीज़ों और अफ़राद पर लानत। ख़ुद शराब पर लानत, पीने वाले और पिलाने वाले पर लानत, बेचने वाले और ख़रीदने वाले पर लानत, शराब तैयार करने वाले शराब बनाने वाले, शराब उठाकर लेजाने और जिसकी तरफ़ लेजा रहे हों उस पर और शराब की क़ीमत खाने वाले, इन सब पर लानत।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. एक बाड़े की तरफ़ निकले, मैं आपकी सीधी तरफ़ था कि अबू बक्र सामने की तरफ़ आये मैं पीछे हो गया। अबू बक्र आपकी सीधी तरफ़ हो गये, मैं बायीं तरफ़ हो गया कि इतने में हज़रत उमर आते दिखाई दिए मैं बाज़ू में हो गया, हज़रत उमर आपकी बाईं तरफ़ हो गए। अब नबी सल्ल. उस बाड़े पर आए जो घरों के पीछे ऊँटों के बैठने की जगह थी, वहाँ शराब का एक मशकीज़ा दिखाई दिया। इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं कि हज़रत ने मुझे बुलाया, एक छुरा दिया और कहा इस मशकीज़े को चीर दो और फ़रमाया कि शराब पर और शराब के पीने और पिलाने वाले पर, लेजाने वाले पर, तैयार करने वाले और बनाने वाले और उसकी क़ीमत खाने वाले सब पर लानत है। इब्ने उमर रज़ि. ही से रिवायत है कि एक दिन नबी सल्ल. अपने सहाबा को लेकर मदीने के बाज़ारों में गये। वहाँ शराब के मशकीज़े रखे हुए थे जो मुल्क शाम से लाए गए थे। मेरे हाथ में छुरा था, मुझसे आपने छुरा लिया, फिर जितने मशकीज़े (चमड़े की मशक) आपके सामने थे, सब को चीर दिया। फिर छुरा मुझे दिया और अपने सहाबा से कहा कि इसके साथ जाओ इसकी मदद करो और मुझे हुक्म दिया कि बाज़ार में कोई ऐसा मशकीज़ा न छोड़ना जिसको चीरकर शराब बहा न दी गई हो। चुनाँचे मैंने ऐसा ही किया।

यज़ीद ख़ौलानी से रिवायत है कि उनका चचा शराब बेचने का काम करता था और बहुत ख़ैर ख़ैरात करने वाला आदमी था। मैंने उसको शराब बेचने से मना किया। उसने न सुनी, जब मैं मदीने आया तो इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से शराब और उसकी क़ीमत के बारे में दरियाफ़्त किया, वह कहने लगे कि शराब और शराब

की क़ीमत हराम है। फिर कहा कि ऐ उम्मते मुहम्मद! अगर तुम्हारी किताब के बाद और कोई किताब आई होती या तुम्हारे नबी के बाद दूसरा नबी आया होता तो तुम्हारे गुनाहों और नाफ़रमानियों का उसमें इसी तरह ज़िक्र होता जैसे कि पहली गुनाहगार उम्मतों का ज़िक्र तुम्हारे क़ुरआन में है और वे रुस्वा हो गये हैं। लेकिन अब अल्लाह की कोई दूसरी किताब आने वाली नहीं है, इसलिए तुम्हारी रुस्वाई क़ियामत तक के लिए टाल दी गयी है। ख़ुदा की क़सम यह उन लोगों की रुस्वाई से भी अहम है।

Maktaba Ashraf

हज़रत साबित कहते हैं कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से शराब की क़ीमत के बारे में पूछा तो कहा सुनो मैं मस्जिद में रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ था। आप गोट लगाए (यानी एक ख़ास तरीक़े पर) बैठे थे। फ़रमाने लगे जिसके पास शराब है ले आये। लोग लाने लगे। कोई मटका लाया, किसी ने मशकीज़ा किसी ने कुछ और। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- सारी शराब बक़ी के मैदान में जमा करके मुझे इत्तिला दो। ऐसा ही किया गया, अब आप उठ खड़े हुए मैं भी आपके साथ चला और आपकी सीधी तरफ़ था, आप मुझ पर सहारा लिए हुए थे। इतने में अबू बक्र मिल गये, हुज़ूर सल्ल. ने अबू बक्र को मेरी जगह ले लिया और मुझे बाईं तरफ़ कर दिया। फिर चलते में हज़रत उमर मिले, हज़रत उमर रज़ि. को हुज़ूर सल्ल. ने बाईं तरफ़ कर दिया और मुझे पीछे कर दिया। अब आप सल्ल. शराब के ज़ख़ीरे पर पहुँचे और लोगों से कहा जानते हो यह क्या है? लोगों ने जवाब दिया- हाँ या रसूलल्लाह! यह शराब है। फ़रमाया तुम सच कहते हो। फिर शराब से संबन्धित दस चीज़ों और अफ़राद पर लानत भेजी। फिर एक छुरी मंगवाई, आपने छुरी तेज़ करवाई, फिर सारे मशकीज़े चीर दिये। लोगों ने कहा कि इसमें नफ़ा और फ़ायदा भी था? आपने फ़रमाया हाँ मैं ख़ुदा के ग़ज़ब से डरकर ऐसा कर रहा हूँ। शराब में ख़ुदा की नाराज़गी है। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! लाईये मैं सब मशकीज़े चीर दूँ? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया मैं ख़ुद इसको ज़ाया (बरबाद और नष्ट) करूँगा।

हज़रत सअ़द रज़ि. से रिवायत है कि शराब के बारे में चार आयतें उतरी हैं, फिर वह हदीस बयान करते हैं कि एक अन्सारी ने हमारी दावत की। हमने वहाँ ख़ूब शराब पी। यह शराब के हराम होने से पहले का ज़िक्र है। जब हम ख़ूब नशे में हो गये तो आपस में फ़ख़्र करने लगे। अन्सार कहते थे कि हम अफ़ज़ल (बेहतर) हैं और क़ुरैश कहते थे कि हम अफ़ज़ल हैं। चुनाँचे एक अन्सारी ने ऊँट की एक बड़ी हड्डी लेकर सअ़द की नाक पर दे मारी। सअ़द की नाम की हड्डी टूट गई। इसी बिना पर शराब की हुर्मत नाज़िल हुई जिसको मुस्लिम शरीफ़ ने बयान किया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि शराब की हुर्मत (हराम होने) की वजह यह हुई कि अन्सार के दो क़बीलों ने ख़ूब शराब पी ली। जब मस्त हो गए तो एक दूसरे पर हाथ छोड़ने लगे। और जब नशा उतर गया तो किसी के चेहरे पर ज़ख़्म आया हुआ था, किसी के सर पर चोट आई हुई थी, किसी की दाढ़ी नुची हुई थी, कोई कहता था कि मेरे फ़ुलाँ साथी ने मुझे यह ज़ख़्म पहुँचाया है। चुनाँचे एक दूसरे के दुश्मन हो गए हालाँकि पहले आपस में बड़ी मुहब्बत थी, कीना नहीं था। कहते थे कि अगर यह मेरा हमदर्द होता तो कभी मुझे ज़ख़्मी न करता। चुनाँचे दुश्मनी बढ़ गई। अब अल्लाह तआ़ला ने शराब की हुर्मत नाज़िल फ़रमा दी। लोग कहने लगे कि मरे हुओं का क्या होगा तो 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) उतरी कि जो मोमिन नेक आमाल करके मर गये हैं उन पर कोई गुनाह नहीं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हम एक टीले पर बैठे शराब पी रहे थे। हम तीन चार अफ़राद थे, शराब का मटका रखा था और चल रहा था कि मैं उठकर नबी सल्ल. के पास आया, उसी वक़्त शराब के हराम होने की आयत

Maktab E Ashraf

उतरी। मैं फ़ौरन अपने साथियों के पास आया और उन्हें 'वही' सुनाई। बाज़ ने शराब पी ली थी और बाज़ ने कुछ पी थी और कुछ हाथ में ले रखी थी। किसी के मुँह से शराब लगी हुई थी। यह सुनते ही सब ने अपनी-अपनी शराब ज़मीन पर बहा दी और आयत के आख़िरी हिस्से "सो अब भी बाज़ आओगे?" को सुनकर कहने लगे-

انتهينا ربنا

ऐ हमारे रब हम रुक गए।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जंगे उहुद की सुबह में लोगों ने शराब पी थी और लड़ाई में उस रोज़ अक्सर शहीद हो गए। यह शराब के हराम होने से पहले की बात है, तो अक्सर यहूदी कहने लगे कि जो लोग क़त्ल हो गए और उनके पेटों में शराब थी, तो यह आयत नाज़िल हुई कि नेक अ़मल करने वाले मोमिनों पर कुछ आँच नहीं जबकि शराब के हराम होने से पहले शराब पी हो।

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि एक शख़्स ख़ैबर से मदीने की तरफ़ शराब ला रहा था ताकि यहाँ लाकर बेचे और जब मदीने पहुँचा तो एक मुसलमान ने उससे कहा शराब तो हराम हो गई है। उसने लेजाकर एक टीले पर रख दी और उसे कपड़ों से ढाँक दिया। फिर नबी सल्ल. के पास आया और पूछा क्या शराब हराम हो गई है? आपने फ़रमाया हाँ। कहने लगा क्या मैं माल लेजाकर वापस कर दूँ? आपने फ़रमाया कि शराब में वापस किए जाने की भी सलाहियत नहीं। तो उसने कहा क्या मैं उस शख़्स को दे दूँ जो इसका कुछ मुआ़वज़ा अदा करे? आपने फ़रमाया कि यह भी नहीं। उसने कहा कि तिजारत में यतीमों का भी पैसा लगा हुआ है जो मेरी परवरिश में हैं। तो हज़रत ने फ़रमाया जब बेहरीन का माल आएगा तो तुम मेरे पास आना, मैं उसमें से तुम्हारे यतीमों को मुआ़वज़ा दे दूँगा। फिर शराब के हराम होने की मदीने में मुनादी हो गई। एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह! शराब के बरतनों से हमें काम लेने और लाभ उठाने की इजाज़त दीजिए। आपने कहा कि बरतनों के मुँह खोल डालो, शराब बहा दो, चुनाँचे शराब इतनी बहाई गई कि नीची और गहरी ज़मीनों में शराब जमा हो गई थी।

हज़रत अबू तल्हा रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया कि मेरी परवरिश में यतीम हैं और विरासत में उनको शराब मिली है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया बहा दो, सब बहा दो। अबू तल्हा रज़ि. ने कहा हम उसका सिरका बना लें? आपने फ़रमाया नहीं। मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी सब ने इसकी ताईद की है।

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि यह आयतः

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ .... لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ.

यही आयत तौरात में भी है कि अल्लाह तआ़ला ने हक़ को इसलिए नाज़िल किया है कि बातिल को नेस्त व नाबूद कर दे और गाने बजाने के सामान, बरबत, सितार, सारंगी, दफ़, तंबूरे ताकि सब को बातिल कर दे। अल्लाह पाक अपनी इज़्ज़त की क़सम खाकर कहता है कि हराम होने के बाद जो इसको पियेगा मैं उसको क़ियामत के दिन प्यासा रखूँगा, और जो इसको छोड़ देगा मैं उसको जन्नत के पाकीज़ा चश्मे से शराब पिलाऊँगा।

Maktab E Ashraf

शराब के नुक़सानात

इब्नुल-आस रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जिसने नशे की वजह से एक वक़्त की नमाज़ खो दी तो गोया कि सारी दुनिया की दौलत उसको हासिल थी और छिन गई। और जिसने नशे की वजह से चार वक़्त की नमाज़ खो दी तो अब ख़ुदा को हक़ है कि उसको तीनतुल-ख़िबाल पिलाये। लोगों ने कहा तीनतुल-ख़िबाल क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया जहन्नमियों के जिस्म से निचोड़ी हुई गन्दगी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अ़क़्ल पर पर्दा डाल देने वाली हर पीने की चीज़ शराब है और हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है। जो शख़्स कोई नशा लाने वाली चीज़ पियेगा उसकी चालीस दिन की नमाज़ क़ुबूल नहीं होगी। लेकिन अगर वह तौबा कर ले तो तौबा क़ुबूल कर ली जाएगी। और चौथी बार अगर शराब पिये तो ख़ुदा को हक़ है कि उसको तीनतुल-ख़िबाल पिलाये। आपने फ़रमाया कि "तीनतुल-ख़िबाल" दोज़ख़ वालों का पीप है। और जिसने किसी बच्चे को शराब पिलाई जो हराम हलाल को नहीं पहचानता तो उस आदमी को भी तीनतुल-ख़िबाल पिलाया जाएगा।

इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि जिसने दुनिया में शराब पी और तौबा नहीं की तो आख़िरत की शराब उस पर हराम है। आपने फ़रमाया कि हर नशीली चीज़ शराब है और हराम है। जो उम्र भर शराब पीता रहा और मर गया और तौबा नहीं की तो वह जन्नत की शराब से बिल्कुल मेहरूम रहेगा। आपने फ़रमाया कि तीन आदमी हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन नज़र उठाकर भी नहीं देखेगा- एक वह जो अपने वालिदैन (माँ-बाप) की नाफ़रमान औलाद है, दूसरे हमेशा शराब पीने वाला और तीसरे एहसान करके जताने वाला। आपने फ़रमाया कि एहसान जताने वाला, माँ-बाप का नाफ़रमान और हमेशा शराब पीने वाला, ये तीनों कभी जन्नत में नहीं जाएँगे।

शराब और बदकारी

हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. से रिवायत है कि शराब से बचते रहो क्योंकि वह सारी बुराईयों की जड़ है। एक वाक़िआ़ सुनो- तुमसे पहले के ज़माने में एक शख़्स बड़ा ही आ़बिद (इबादत करने वाला और नेक) शख़्स था, लोगों को छोड़-छाड़कर बस्ती से अलग-थलग इबादत-ख़ाने में इबादत करता, पड़ा रहता था। एक बदकार औ़रत की उस पर नज़र थी, उसने अपनी ख़ादिमा (नौकरानी) को भेजा कि एक गवाही के बहाने उसको बुला ला। वह बेचारा आ गया। जब वह किसी दरवाज़े के अन्दर दाख़िल होता तो बाहर से उसका दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता, यहाँ तक कि उस बदकार औ़रत तक पहुँचे। उसके पास एक बच्चा और शराब का मटका रखा था, वह उस बुज़ुर्ग से कहने लगी कि ख़ुदा की क़सम मैंने तुझको किसी गवाही के लिए नहीं बुलाया है बल्कि इसलिये बुलाया है कि तू मेरे साथ रात गुज़ारे, या यह कि इस बच्चे को क़त्ल कर दे या यह कि यह शराब पिये। उस शख़्स ने यह मुनासिब जाना कि दोनों गुनाहों के मुक़ाबले में शराब हल्का गुनाह है। चुनाँचे उसने शराब पी ली। अब वह एक जाम के बाद लगातार और जाम माँगने लगा, यहाँ तक कि शराब के नशे में उस लड़के को भी क़त्ल कर दिया और उस औ़रत के साथ रात भी गुज़ारी। इसलिए शराब से बचो वह सारी बुराईयों की जड़ है। शराब और ईमान कभी एक जगह जमा नहीं हो सकते, अगर शराब है तो ईमान नहीं, अगर ईमान है तो शराब नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- ज़ानी जिस वक़्त ज़िना करता है तो मोमिन नहीं रहता, चोर जब चुराता होता

Maktub E Ashruf

है तो मोमिन नहीं रहता, शराबी जब शराब पीता होता है तो मोमिन नहीं होता।

नोटः यानी ये चीज़ें ईमान की शान के ख़िलाफ़ हैं और उस वक़्त उसके ईमान का नूर उसके पास नहीं होता, अगर ईमान का नूर उसके पास होता तो वह ज़रूर उससे फ़ायदा उठाकर ऐसी बुरी हरकतों से बाज़ रहता। यह बहुत ही सख़्त चेतावनी और तंबीह है, जिसका मक़सद यह है कि एक मोमिन अगर ऐसे आमाल में लिप्त हो तो उसको मोमिन कहलाने का हक़ नहीं, लिहाज़ा इन चीज़ों से सख़्त परहेज़ ज़रूरी है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

जब क़िब्ले के बदलने की आयत उतरी तो लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! वे लोग जो मर गये और बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते थे, उनका क्या होगा? तो 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम) उतरी कि उनकी इबादत ज़ाया नहीं होगी।

हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया- जिसने शराब पी अल्लाह तआ़ला चालीस दिन तक उससे नाराज़ रहता है, अगर वह मर जाए तो वह काफ़िर मरेगा और अगर तौबा करे तो अल्लाह तआ़ला तौबा क़बूल फ़रमा लेगा। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जब यह आयत उतरी कि शराब के हराम होने से पहले पीने वालों पर इल्ज़ाम नहीं लगाया जाएगा तो मुझसे कहा गया कि तुम पर भी कोई इल्ज़ाम नहीं है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जुए से बचो और चौसर, शतरंज से बचो, ये दोनों अ़जम (अ़रब से बाहर) का जुआ है।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला किसी क़द्र शिकार से तुम्हारा इम्तिहान करेगा जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँच सकेंगे, ताकि अल्लाह तआ़ला मालूम करें कि कौन शख़्स उस से बिन देखे डरता है। तो जो शख़्स इसके बाद हद से निकलेगा उसके वास्ते दर्दनाक सज़ा है। (94) ऐ ईमान वालो! (जंगली) शिकार को क़त्ल मत करो जबकि तुम एहराम की हालत में हो, और जो शख़्स तुममें से उसको जान-बूझकर क़त्ल करेगा तो उस पर सज़ा और जुर्माना वाजिब होगा, जो कि बराबर होगा उस जानवर के जिसको उसने क़त्ल किया है, जिसका फ़ैसला तुममें से दो मोतबर शख़्स कर दें (चाहे वह जुर्माना ख़ास चैपायों में से हो) शर्त यह है कि नियाज़ के तौर पर काबा तक पहुँचाई जाये चाहे कफ़्फ़ारा कि ग़रीबों को खाना दे दिया जाए, चाहे उसके बराबर रोज़े रख लिए जाएँ ताकि अपने किए की शामत का मज़ा चखे। जो गुज़र गया अल्लाह ने उसको माफ़ कर दिया, और जो शख़्स फिर ऐसी ही हरकत करेगा तो अल्लाह उससे इन्तिक़ाम लेंगे, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, इन्तिक़ाम ले सकते हैं। (95)	يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَىْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُۥٓ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُۥ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَهُۥ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِۦ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًۢا بَـٰلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّـٰرَةٌ طَعَامُ مَسَـٰكِينَ أَوْ عَدْلُ ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِۦ ۗ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝

Maktab-E-Ashraf

इम्तिहान या आज़माईश

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें आज़मा रहा है, शिकार की मनाही करके, चाहे कमज़ोर शिकार हो या छोटा हो, ताकि देखें कि एहराम की हालत में तुम उनका शिकार करने से बचते हो या नहीं। यहाँ तक कि लोग अगर चाहते तो अपने हाथों से उस शिकार को पकड़ सकते थे। अल्लाह तआ़ला ने उनके क़रीब होने से भी मनाही फ़रमा दी। मुजाहिद रह. कहते हैं कि छोटे शिकारों को और बच्चों को हाथों से भी पकड़ सकते थे और बड़ों को तीर से शिकार करके। मुक़ातिल बिन हय्यान कहते हैं कि हुदैबिया वाले उमरे में यह आयत उतरी कि जहाँ जंगली चौपाये परिन्दे और शिकार उनके ठिकानों पर टूट पड़ने लगे थे कि इससे पहले कभी नहीं देखे गये थे। चुनाँचे एहराम की हालत में उनको शिकार करने की मनाही की गई ताकि साबित और ज़ाहिर हो जाए कि खुले और छुपे कौन इस हुक्म को मानता है और कौन नहीं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَرِيْمٌ.

जो ख़ुदा से डरते हैं, ग़ैब पर ईमान रखते हैं उनके लिए मग़फ़िरत और अज्रे करीम है।

यहाँ अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि अब इसके बाद जो नाफ़रमानी करे उसके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है, क्योंकि उसने अल्लाह के हुक्म की मुख़ालफ़त की है। फिर फ़रमाया कि एहराम की हालत में शिकार न करो। यह हुक्म अपने मायनों के लिहाज़ से तो हलाल जानवर और उनके बच्चों पर भी मुश्तमिल है और जिनको खाना हलाल नहीं उन पर भी, लेकिन इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक जिन जानवरों का गोश्त नहीं खाया जाता उनका शिकार करना एहराम वाले के लिए जायज़ है। लेकिन जमहूर उलेमा तो ऐसे शिकार को भी जायज़ नहीं रखते और किसी को इस हुक्म से बाहर नहीं मानते।

एहराम में बाज़ जानवरों को मारने की इजाज़त

इसके अ़लावा जो बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- पाँच चीज़ें फ़ासिक़ हैं, एहराम में भी उनको क़त्ल किया जा सकता है, क्योंकि ये तकलीफ़ पहुँचाने वाले जानवर हैं। कौआ, चील, बिच्छू, चूहा और काटने वाला कुत्ता। इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- इन पाँच को क़त्ल करना मुहरिम (एहराम वाले) के लिए गुनाह नहीं। अय्यूब कहते हैं कि नाफ़े से पूछा गया कि साँप का क्या हुक्म है? तो नाफ़े ने कहा साँप को मारने में भी क्या हर्ज है। उलेमा का इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभदे) नहीं। इमाम मालिक और अहमद और दूसरे उलेमा ने भौंकने वाले कुत्ते के साथ भेड़िये और दरिन्दे शेर और चीते को भी शामिल रखा है, क्योंकि उनका नुक़सान पहुँचाना तो कुत्ते से भी ज़्यादा है। वल्लाहु आलम

ज़ैद बिन असलम और सुफ़ियान कहते हैं कि हर हमला करने वाले दरिन्दे का हुक्म कुत्ते के हुक्म में शामिल है, जिसकी ताईद इस हदीस होती है- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उतबा बिन अबी लहब पर बद्दुआ़ की थी तो कहा कि ऐ ख़ुदा! इस पर मुल्क शाम में अपना एक कुत्ता मुसल्लत फ़रमा दे। चुनाँचे ज़रक़ा के स्थान में उसको एक भेड़िये ने फाड़ खाया था। हाँ इनके अ़लावा अगर वह किसी और जानवर को क़त्ल करेगा तो फ़िदया देना पड़ेगा जैसे सोसमार (गोह) या लोमड़ी या कफ़तार (बिज्जू) वग़ैरह। इमाम मालिक रह. कहते हैं कि यही हुक्म इन पाँच जानवरों के बच्चों का भी या फाड़ने वाले जानवरों के

छोटे बच्चों का भी है। अगर मुहरिम क़त्ल करेगा तो फ़िदया देना पड़ेगा चाहे ऐसे जानवर को क़त्ल किया हो जिसका गोश्त नहीं खाया जाता हो। क्योंकि इसमें छोटे बड़े की कोई क़ैद नहीं है, और ग़ैर-माकूल (जिसका गोश्त न खाया जाता हो) जानवर पर भी सबब शामिल है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि एहराम वाला काटने वाले कुत्ते और भेड़िये को भी क़त्ल कर सकता है, क्योंकि भेड़िया भी बड़ा कुत्ता है। लेकिन इन दोनों के सिवा किसी और को क़त्ल करेगा तो फ़िदया देना पड़ेगा। हाँ कोई दूसरा दरिन्दा (फाड़ने वाला जानवर) हमला कर बैठे तो क़त्ल कर सकता है, फ़िदया अदा करना ज़रूरी नहीं। यही इमाम औज़ाई और हसन का क़ौल है। इमाम ज़ुफ़र फ़रमाते हैं कि फ़िदया देना पड़ेगा अगरचे हमला करने की वजह से ही मार डाला गया हो। बाज़ लोग कहते हैं कि कौए से मुराद वह कौआ है जिसके पेट और पीठ पर सफ़ेदी हो या सियाही न हो, जमहूर का मज़हब यह है कि कौए से हर आ़म कौआ मुराद है, क्योंकि लफ़्ज़ में कोई क़ैद (शर्त) नहीं। मालिक रह. फ़रमाते हैं कि कौआ जब हमला करे या तकलीफ़ पहुँचाए तो मुहरिम (एहराम वाला) सिर्फ़ उस वक़्त उसको क़त्ल कर सकता है, बिना वजह नहीं। और मुजाहिद और दूसरे लोग कहते हैं कि क़त्ल न करे बल्कि उसको उड़ा दे। हज़रत अ़ली रज़ि. से भी एक रिवायत ऐसी ही है। अबू सईद रह. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- साँप बिच्छू और चूहा इनको मुहरिम क़त्ल कर सकता है। अल्लाह तआ़ला का यह क़ौल है कि जो जान-बूझकर एहराम की हालत में शिकार करेगा उसको उस शिकार के जैसा ही दूसरा मवेशी फ़िदये में देना पड़ेगा। ताऊस रह. से रिवायत है कि यह हुक्म उस शख़्स से मुताल्लिक़ नहीं जिसने ग़लती से किसी जानवर को क़त्ल किया हो, बल्कि जान-बूझकर क़त्ल करने की क़ैद (शर्त) है, और अलफ़ाज़ के ज़ाहिर से भी यही मालूम होता है।

मुजाहिद रह. कहते हैं कि यहाँ 'जान-बूझकर' से मुराद यह है कि किसी ने अपनी एहराम की हालत को भूलकर शिकार के क़त्ल का इरादा किया हो। वरना एहराम की हालत याद रहने के बावजूद शिकार के क़त्ल का इरादा करे तो उसका गुनाह तो कफ़्फ़ारे की सज़ा से भी बहुत बड़ा और आगे का है। उसका तो एहराम ही बातिल हो जाता है। जमहूर इस बात के क़ायल हैं कि जान-बूझकर और भूलकर क़त्ल करने वाला दोनों कफ़्फ़ारा अदा करने में बराबर हैं। इमाम ज़ोहरी रह. कहते हैं कि क़ुरआन से तो दलालत होती है कि जान-बूझकर क़त्ल करने पर, लेकिन हदीस से भूलकर क़त्ल करने वाला भी इसी हुक्म में शामिल है।

मतलब यह हुआ कि क़ुरआन से साबित हुआ कि उसको कफ़्फ़ारा भी देना होगा और वह गुनाहगार भी है, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

"तो उसको अपने गुनाह की सज़ा चखनी पड़ेगी। लेकिन जो कर चुका सो माफ़ है, और अगर किसी ने फिर ऐसा किया तो अल्लाह तआ़ला उससे इन्तिक़ाम (बदला) लेगा।"

अल्लाह के नबी और आपके सहाबा के अहकाम से भी सुबूत मिलता है कि ग़लती से क़त्ल करने की सूरत में भी कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा जैसा कि जान-बूझकर क़त्ल करने की सूरत में क़ुरआन की हिदायत के मुताबिक़ देना पड़ता है। क्योंकि अगर शिकार को क़त्ल किया गया तो यह शिकार को ज़ाया और हलाक करना होगा, और जब जान-बूझकर हलाक करे तो तावान अदा करना पड़ता है, और ग़लती से ज़ाया और हलाक करने का भी यही हुक्म है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि जान-बूझकर शिकार करने वाला कफ़्फ़ारे के साथ गुनाहगार भी हुआ, लेकिन ग़लती से ऐसा करने वाला गुनाहगार नहीं हुआ।

Maktaba E Ashraf

फ़िक़्ही मतभेद

अल्लाह तआला के कौल "तो उस पर सज़ा वाजिब होगी जो कि बराबर होगी उस जानवर के जिसको उसने क़त्ल किया है" के बारे में मतभेद है कि उसके बराबर का क्या मतलब है। इमाम मालिक, शाफ़ई, अहमद और जमहूर के नज़दीक यह है कि शिकार किये हुए जानवर के जैसे जानवर का बदला वाजिब होगा, बशर्तेकि उस जैसा या उसके क़रीब कोई पालतू जानवर हो, ताकि वही दे दे, वरना उसकी क़ीमत दे दे। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह. का इसमें इख़्तिलाफ़ (राय अलग) है, वह कहते हैं कि शिकार के ज़रिये जो जानवर क़त्ल किया है वह पालतू जानवर के जैसा हो या ग़ैर-पालतू के, हर सूरत में उसका मिस्ल (यानी उसके जैसा) देने के बजाये क़ीमत ही देनी चाहिए। और उस शिकारी को इख़्तियार है कि चाहे उसकी क़ीमत सदक़ा कर दे या क़ुरबानी का कोई जानवर ख़रीद ले। लेकिन सही तो यह है कि सहाबा रज़ि. ने मिस्ल (यानी उस जैसा) देने का जो हुक्म लगाया है वह हमारे लिए ज़्यादा क़ाबिले इत्तिबा है। उन्होंने हुक्म लगाया कि शुतुरमुर्ग़ का शिकार किया था तो ऊँट कफ़्फ़ारे में दो, और जंगली गाय के शिकार में घरेलू गाय। और हिरण के शिकार में बकरी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ये फ़ैसले किताबुल- अहकाम में सब के सब बयान किये गये हैं। लेकिन जहाँ कोई शिकार किये गये जानवर के जैसा न हो, यानी ऐसा न हो कि किसी पालतू जानवर के जैसा हो, वहाँ इब्ने अ़ब्बास रज़ि. हुक्म लगाते हैं कि उसकी क़ीमत मक्का रवाना कर दी जाये। इमाम बैहक़ी इसको रिवायत करने वाले हैं।

अल्लाह के फ़रमान कि "उस कफ़्फ़ारे का फ़ैसला करने के लिए दो आ़दिल मुसलमान नामित किये जायें" जो यह फ़ैसला करें कि मिस्ली शिकार में मिस्ली जानवर दिया जाए या ग़ैर-मिस्ली में क़ीमत दी जाए। अगर उलेमा का इख़्तिलाफ़ है तो सिर्फ़ इस बारे में है कि उन दो फ़ैसला करने वालों में एक जज ख़ुद शिकारी भी बनाया जा सकता है या नहीं? एक क़ौल यह है कि नहीं बनाया जा सकता, इसलिए कि इस सूरत में अपना हुक्म अपने ही ऊपर नाफ़िज़ करना लाज़िम आएगा जिससे उस पर अपने साथ रियायत बरतने का इल्ज़ाम लगने का अन्देशा है। इमाम मालिक रह. का यही क़ौल है। दूसरा क़ौल यह है कि बनाया जा सकता है, इसलिए कि आयत बिल्कुल आ़म है इसमें कोई इस क़िस्म की क़ैद (शर्त) नहीं। यह इमाम शाफ़ई रह. और अहमद रह. का क़ौल है। पहले क़ौल की दलील यह है कि एक ही मामले के अन्दर हाकिम ख़ुद महकूम नहीं बनाया जा सकता।

इब्ने अबी हातिम की हदीस है कि एक देहाती हज़रत अबू बक्र रज़ि. के पास आया और कहा कि मैंने एहराम की हालत में एक शिकार कर लिया है। अब मुझ पर क्या जज़ा (बदला और तावान) है? आपने उबई बिन कअ़ब रज़ि. से जो पास ही बैठे हुए थे पूछा- कहो तुम क्या फ़ैसला करते हो? देहाती ने कहा कि मैं तो तुम्हारे पास आया हूँ तुम रसूलुल्लाह सल्ल. के ख़लीफ़ा हो, लेकिन तुम ख़ुद दूसरों से पूछते हो? हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने कहा तुम क्यों एतिराज़ करते हो? अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद कहा है कि दो आ़दिल (इन्साफ़ करने वाले) मुसलमान मिलकर कोई हुक्म लगाएँ। चुनाँचे मैंने अपने साथी से मश्विरा किया है, हम दोनों जिस बात पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हो जाएँगे तुझको अपना फ़ैसला सुना देंगे। यहाँ इसी बात का एहतिमाल था, चुनाँचे सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ने जब देखा कि देहाती जाहिल है और दो आ़दिल मुसलमानों के मसले से वाक़िफ़ नहीं तो नर्मी और मुलाईमत से उसे समझा दिया, क्योंकि जहल (अज्ञानता) की दवा तालीम (ज्ञान देना या हासिल करना) है। लेकिन एतिराज़ करने वाला अगर इल्म रखता हो तो जैसा कि इब्ने जरीर रह.

बयान करते हैं कि इब्ने जाबिर रज़ि. से रिवायत है कि हम एक बार हज के इरादे से निकल खड़े हुए और हम जब सुबह की नमाज़ पढ़ लेते तो अपनी सवारियों के पीछे-पीछे पैदल चलते और बातें करते रहते। एक दिन की सुबह ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि एक हिरण दिखाई दिया। हमारे एक साथी ने उसको पत्थर मारा वह निशाने पर पहुँचा और हिरण मर गया। यह शख़्स हिरण को मुर्दा छोड़कर सवार होकर चल दिया। हमने उस शख़्स पर सख़्त एतिराज़ किया और जब मक्का पहुँचे तो मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. के पास आया और उनसे सारा वाक़िआ बयान किया। उमर रज़ि. के साथ ही एक और साहिब बैठे हुए थे, गोरे चिट्टे चाँदी की तरह सफ़ेद, यह अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि. थे। उमर रज़ि. उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए कुछ बातें कीं फिर उस आदमी से पूछा क्या तूने जान-बूझकर उसको मारा या ग़लती से? उसने कहा पत्थर तो मैंने इरादा करके ही मारा था लेकिन उसको क़त्ल करने का इरादा नहीं था। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा इरादे और ग़लती दोनों के बीच तुझसे यह अ़मल सरज़द हुआ था, चुनाँचे एक बकरी लेकर उसको ज़िबह कर, उसका गोश्त सदक़ा कर दे और उसकी खाल घर के काम में ला। अब हम वहाँ से उठ खड़े हुए। मैंने अपने साथी से कहा ख़ुदा की शरीअ़त का इल्म बड़ी इज़्ज़त व अहमियत रखता है, जो कुछ तूने पूछा था अमीरुल्-मोमिनीन ख़ुद उससे वाक़िफ़ न थे, यहाँ तक कि अपने साथी से पूछा। अब तू माफ़ी के तौर पर अपनी ऊँटनी को ज़िबह कर दे, मुम्किन है कि इस तरह तेरे जुर्म की पूर्ती और भरपाई हो जाए।

हज़रत क़बीसा कहते हैं कि मुझे सूरः मायदा की दो आ़दिल (मोतबर) लोगों के फ़ैसला करने वाली आयत याद ही नहीं आई थी, मेरे इस मश्विरे की ख़बर हज़रत उमर को पहुँची, वह दुर्रा लेकर आ पहुँचे और मेरे साथी पर एक कोड़ा बरसाया और कहने लगे क्या तू हरम में क़त्ल करता है और फ़ैसला करने में बेवक़ूफ़ को फ़ैसल बनाता है? फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए। मैंने कहा ऐ अमीरुल-मोमिनीन अगर आपने मुझे मारा तो इस बेवजह और नामुनासिब मार को मैं माफ़ नहीं करूँगा। कहने लगे ऐ क़बीसा बिन जाबिर! तू नौजवान है, खुले दिल से ख़ूब बोलने वाला है, लेकिन अगर नौजवान में नौ आ़दतें भी अच्छी हों और सिर्फ़ एक बुरी हो तो वही एक सारी अच्छाईयों पर पानी फेर देती है। नौजवानी की चूक और ग़लतियों से बचकर रह।

इब्ने जरीर बजली कहते हैं कि एहराम की हालत में एक हिरण का मैंने शिकार कर लिया। हज़रत उमर रज़ि. से मैंने इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया अपने दो साथियों को लाओ ताकि वे दोनों तुम पर अपना फ़ैसला जारी करें। मैं अ़ब्दुर्रहमान और असद को ले आया। उन्होंने यह फ़ैसला सादिर किया कि मैं एक मोटा-ताज़ा बकरा फ़िदया दूँ। इब्ने जरीर कहते हैं कि अरबद ने एक हिरण को एहराम की हालत में रौंदकर क़त्ल कर दिया, फिर हज़रत उमर रज़ि. के पास फ़ैसला लेने के लिये आया तो उमर रज़ि. ने कहा- मेरे साथ फ़ैसले के लिए हकम (जज) तू ख़ुद बन जा। चुनाँचे दोनों ने एक पालतू बकरी कफ़्फ़ारे में क़रार दी जो घर का पानी और चारा खाकर ख़ूब मोटी-ताज़ी हो गई थी। फिर उमर रज़ि. ने यह "दो मोतबर शख़्सों" वाली आयत पढ़ी। यह वाक़िआ इस बात के जायज़ होने पर दलालत (इशारा) करता है कि क़ातिल ख़ुद दो फ़ैसला करने वालों में से एक हो सकता है, जैसा कि इमाम शाफ़ई के मानने वालों और इमाम अहमद का मज़हब है।

फिर इसमें भी उलेमा का इख़्तिलाफ़ (रायें अलग-अलग) है कि आने वाले ज़माने में भी जब कभी किसी मुहरिम से यह जुर्म सरज़द हो तो उसी वक़्त के दो फ़ैसला करने वाले होने चाहिएँ या सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के फ़ैसले ऐसे मसाईल के वक़्त जो सादिर हो चुके हैं उनकी रोशनी में फ़तवा दिया जा

सकता है। इसमें दो क़ौल हैं- इमाम अहमद और इमाम शाफ़ई रह. कहते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इस बारे में जो फ़ैसले दे दिये हैं उनही पर अमल किया जाए और इन दोनों ने इसी को शरई फ़ैसला क़रार दिया है, इससे अलग कोई राह इख़्तियार न की जाए और जिसमें सहाबा का कोई फ़ैसला मौजूद न हो तो फिर अपने ज़माने के दो मोतबर फ़ैसला करने वालों की तरफ़ रुजू करें। इमाम मालिक और इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि हुक्म अपने अपने ज़माने के हर-हर फ़र्द पर अलग-अलग लगेगा और अपने ज़माने ही के आदिल (फ़ैसला करने वाले मोतबर) क़रार पाएँगे, चाहे सहाबा का कोई हुक्म और फ़तवा मौजूद हो या न हो, क्योंकि अल्लाह पाक ने 'मिन्कुम' (तुम में से) का लफ़्ज़ फ़रमाया है और पहले ज़माने के सहाबा इस वक़्त तुम्हारी जमाअ़त के अफ़राद तो नहीं हैं।

अल्लाह तआ़ला के क़ौल "यह क़ुरबानी काबे तक पहुँचाई जाये, वहीं ज़िबह की जाये और हरम ही के मसाकीन पर उसका गोश्त तक़सीम किया जाये" इस बात में किसी का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं, सब सर्वसम्मति से यह राय रखते हैं। अल्लाह तआ़ला का क़ौल हैः

اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْعَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا...

यानी मुहरिम (एहराम वाला) अगर क़त्ल किये गये शिकार का मिस्ल (यानी उसके जैसा) न पाये या मक़्तूल शिकार इस क़िस्म का जानवर ही न हो कि घरेलू जानवर उस जैसे होते हों तो फिर जज़ा (बदले) और खाने व रोज़े के बारे में इख़्तियार है, और क़ुरआन पाक में 'औ' (अथवा) इख़्तियार ही के मायने में आया है, और यही क़ौल है मालिक और अबू हनीफ़ा, यूसुफ़ और मुहम्मद का, तथा इमाम शाफ़ई का भी एक क़ौल ऐसा ही है। इमाम अहमद रह. का भी मशहूर क़ौल यह है कि 'औ' (या और अथवा) का लफ़्ज़ इख़्तियार देने के मक़सद से लाया गया है। और दूसरा क़ौल यह है कि इख़्तियार के मक़सद से नहीं बल्कि तरतीब और सिलसिला बनाने के लिए है। और इसकी सूरत यह होगी कि क़ीमत के बराबर आकर ठहर जाए और क़त्ल किये गये शिकार की तलाफ़ी (भरपाई) हो जाए। यह मालिक और अबू हनीफ़ा और हम्माद और इब्राहीम के नज़दीक है। लेकिन शाफ़ई रह. कहते हैं कि वह क़ीमत बदल हो उस जानवर का, कि अगर मौजूद होता तो क्या क़ीमत होती। फिर उस रक़म से अनाज ख़रीदे और सदक़ा कर दे और हर मिस्कीन को एक मुद (यानी 56 तौले) ग़ल्ला दे। यह मसला इमाम शाफ़ई और मालिक और हिजाज के उलेमा के नज़दीक है। और अबू हनीफ़ा, अबू युसूफ़ और मुहम्मद रह. वग़ैरह कहते हैं कि हर मिस्कीन को दो मुद दिये जाएँ। अहमद कहते हैं कि गेहूँ हों तो एक मुद और दूसरा ग़ल्ला (अनाज) हो तो दो मुद। पस अगर यह न दे सके तो रोज़े रखे, यानी एक मिस्कीन को जितने दिन खाना खिलाया जाता है उतने दिन रोज़े रखे। दूसरों का क़ौल है कि हर साअ़ के बदले जो न दिया जा सका हो एक रोज़ा है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कअ़ब बिन अ़जरा को हुक्म दिया था कि एक फ़रक़ अनाज छह आदमियों में तक़सीम करे या तीन दिन के रोज़े रखे। एक फ़रक़ तीन साअ़ का होता है और साअ़ 225 तौले का होता है। अब इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि कहाँ खिलाए। शाफ़ई रह. कहते हैं कि हरम में खिलाए, अ़ता रह. का भी यही क़ौल है। मालिक कहते हैं कि उस जगह खिलाए जहाँ शिकार को क़त्ल किया था, वहीं कहीं क़रीब में। इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि इसकी कोई तख़्सीस नहीं, कहीं भी खिलाये। चाहे हरम हो या हरम के अ़लावा कोई और मक़ाम हो।

Maktab E Ashraf

इस मसले से संबन्धित पहले उलेमा और बुज़ुर्गों के अक़वाल

इस आयत से मुताल्लिक़ इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि मुहरिम (एहराम वाला) जब शिकार करे तो वैसा ही जानवर उस पर लाज़िम आता है, अगर कफ़्फ़ारे के लिए वैसा ही चौपाया (जानवर) न मिले तो उसकी क़ीमत देखी जाएगी, क़ीमत से फिर खाने का अन्दाज़ा लगाया जाएगा, फिर हर आधे साअ़ अनाज के बदले एक रोज़ा रखा जाएगा, अल्लाह तआ़ला ने कफ़्फ़ारा खाने और रोज़ों के ज़रिये क़रार दिया है। जब खाना पाया जाए तो उसी से कफ़्फ़ारा अदा किया जा सकेगा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि कफ़्फ़ारे का जानवर काबे को भेजा जाए या मिस्कीनों को खाना खिलाया जाए या उसी के बराबर रोज़े रखे जाएँ। जब मुहरिम ने शिकार को क़त्ल किया तो उसी के मिस्ल (जैसा और बराबर) चौपाया उस पर लाज़िम आया। अगर किसी ने हिरण या उसके मिस्ल (जैसे) जानवर को क़त्ल किया तो उस पर बकरी लाज़िम आएगी जो मक्का भेजकर ज़िबह की जाएगी। अगर यह न हो सके तो छह मिस्कीनों को खाना खिलाया जाएगा, अगर यह भी न हो सके तो तीन रोज़े रखे जाएँगे।

अगर किसी ने ऊँट या ऊँट के मिस्ल (जैसे और बराबर) जानवर को क़त्ल किया तो उस पर गाय वाजिब है। अगर यह न हो सके तो बीस मिस्कीनों को खाना खिलाये, अगर यह भी न हो सके तो बीस रोज़े रखे। और अगर शुतरमुर्ग़ या गोरख़र (जंगली गधे) वग़ैरह को मारे तो एक ऊँटनी उस पर वाजिब हो गई। अगर यह न पाये तो बीस मिस्कीनों को खिलाए वरना बीस दिन के रोज़े रखे। इब्ने जरीर ने भी यही कहा है, लेकिन इसमें यह और ज़्यादा किया है कि खाना हर एक को एक-एक मुद दिया जाए ताकि पेट भरकर मिले। अ़ता और मुजाहिद वग़ैरह ने कहा है कि खाना एक-एक मुद उस शख़्स के लिए है जो क़ुरबानी का जानवर काबे तक न पहुँचा सकता हो। सुद्दी का कहना है कि इस इख़्तियार में तरतीब का लिहाज़ रखा जाए। और इब्राहीम नख़ई वग़ैरह कहते हैं कि हर तरह उसको इख़्तियार है चाहे जो कफ़्फ़ारा पसन्द करे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं- "ताकि वह अपने करतूत की सज़ा पाये" यानी हमने कफ़्फ़ारा उस पर इसलिए वाजिब किया है कि हमारे हुक्म की जो उसने मुख़ालफ़त (ख़िलाफ़वर्ज़ी) की है उसकी सज़ा पा ले, लेकिन जाहिलीयत के ज़माने में जो कुछ हुआ वह उस शख़्स के लिए माफ़ है जिसने इस्लाम में आने के बाद अच्छे काम किये। फिर फ़रमायाः

"और जो शख़्स फिर ऐसी हरकत करेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे इन्तिक़ाम लेगा" यानी इस्लाम में आने के बाद और उसकी मनाही के बावजूद जिसने नाफ़रमानी की, अल्लाह उससे इन्तिक़ाम (बदला) लेगा और वह सरकशों (नाफ़रमानों) से इन्तिक़ाम लेने वाला है। लेकिन जाहिलीयत के ज़माने में जो कुछ हो गया वह माफ़ है। और इस सवाल का जवाब भी नफ़ी (इनकार) में है कि क्या इमाम (मुसलमान हाकिम) उसकी कोई सज़ा क़रार दे सकता है? यानी इमाम को सज़ा देने का हक़ नहीं है। यह गुनाह ख़ुदा और बन्दे के दरमियान है। हाँ उसको इमाम के सज़ा न देने के बावजूद फ़िदया तो ज़रूर ही देना पड़ेगा। इसको इब्ने जरीर ने रिवायत किया है।

इसका मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला कफ़्फ़ारे ही के ज़रिये इन्तिक़ाम (बदला) लेगा और इन्तिक़ाम की यही सूरत होगी। पहले और बाद के जमहूर उलेमा इस पर सहमत हैं कि मुहरिम (एहराम वाले) ने जब शिकार को क़त्ल कर दिया तो उस पर फ़िदया देना वाजिब हो गया और पहली, दूसरी या

Maktab E Ashraf

तीसरी ग़लती और भूल में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे कितनी ही बार हो। ग़लती जान-बूझकर हो या भूल से हुक्म में सब बराबर हैं। इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि मुहरिम से अगर भूल से शिकार के क़त्ल का अ़मल हुआ हो तो उस पर हर क़त्ल के वक़्त यह हुक्म सादिर होगा, लेकिन अगर वह जान-बूझकर क़त्ल करे तो पहली दफ़ा में तो यह सज़ा उस पर आ़यद (लागू) होगी लेकिन दूसरी बार में उससे कहा जाएगा कि ख़ुदा तुझसे इन्तिक़ाम ले जैसा कि ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने भी फ़रमा दिया है कि दोबारा करे तो अल्लाह तआ़ला इन्तिक़ाम लेगा। इमाम हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि एक एहराम वाले ने शिकार किया, उस पर फ़िदये की सज़ा आ़यद की गई। उसने दोबारा यह जुर्म किया तो आसमान से आग उतरी, बिजली गिरी और उसे जला दिया। यही मायने हैं इसके कि "अल्लाह तआ़ला उससे इन्तिक़ाम लेगा"। अल्लाह अपनी सल्तनत में ग़ालिब है, कोई उसको मग़लूब नहीं कर सकता। वह इन्तिक़ाम लेना चाहे तो कौन है कि रोके, सारी कायनात उसकी मख़्लूक़ है। हुक्म बस उसी का चलता है, सरकशों (नाफ़रमानों) को वह सज़ा ज़रूर देगा। उसकी सिफ़ते इन्तिक़ाम का यही तक़ाज़ा है।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا
لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ
الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ
لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ مَا عَلَى
الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝

तुम्हारे लिए दरिया का शिकार पकड़ना और उसका खाना हलाल किया गया है, तुम्हारे फ़ायदा उठाने के वास्ते और मुसाफ़िरों के वास्ते। और ख़ुश्की का शिकार पकड़ना तुम्हारे लिए हराम किया गया, जब तक कि तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह तआ़ला से डरो जिसके पास जमा किए जाओगे। (96) ख़ुदा तआ़ला ने काबे को जो कि अदब का मकान है लोगों के क़ायम रहने का सबब क़रार दे दिया, और इज़्ज़त वाले महीने को भी, और हरम में क़ुरबानी होने वाले जानवरों को भी और उन (जानवरों) को भी जिनके गले में पट्टे हों, यह इसलिए कि तुम इस बात का यक़ीन कर लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला तमाम आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखते हैं। और बेशक अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को ख़ूब जानते हैं। (97) तुम यक़ीन जान लो कि अल्लाह तआ़ला सज़ा भी सख़्त देने वाले हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े मग़फ़िरत वाले (और) रहमत वाले भी हैं। (98) रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पहुँचाना है। और अल्लाह सब जानते हैं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छुपाकर रखते हो। (99)

Maktab E Ashraf

ख़ास हालात में इजाज़त

तुम्हारे लिए समुद्र का ताज़ा शिकार हलाल है जो मछली सुखाकर सफ़र में खाने के लिये रख ली जाती है, वह भी तुम्हारे लिए और क़ाफ़िले वालों के लिये जायज़ है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि वह शिकार जो समुद्र से ज़िन्दा हासिल किया गया हो मुराद है, और लफ़्ज़ 'तआ़म' से वह मुराद है जिसको समुद्र ने मारकर किनारे पर फेंक दिया हो। अबू बक्र रज़ि. कहते हैं कि 'तआ़म' (खाने) से हर वह चीज़ मुराद है जो समुद्र में है। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने ख़ुतबा दिया तो कहा कि समुद्री शिकार तुम्हारे लिए हलाल है, और न शिकार किया हुआ बल्कि समुद्र का बाहर फेंका हुआ, वह भी तुम्हारे फ़ायदा उठाने और सफ़र में खाने के लिये तोशा बनाने की चीज़ है। इब्ने मुसैयब कहते हैं कि समुद्र ने तो ज़िन्दा फेंका हो लेकिन ख़ुश्की पर आकर मर गया हो वह तआ़म (खाना) है। अ़ब्दुर्रहमान ने सवाल किया कि समुद्र बहुत सी मुर्दा मछलियाँ किनारे पर लाकर डाल देता है, क्या हम खा सकते हैं? इब्ने उमर रज़ि. ने जवाब दिया कि न खाना। जब अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. घर वापस हुए तो क़ुरआन खोला और यह आयत देखी किः

طَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ.

यानी उसका खाना तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारे लिये और मुसाफ़िरों के लिये फ़ायदा उठाने की चीज़ है।

तो कहा जाओ और कह दो कि खा लिया करो। क्योंकि समुद्र की चीज़ को अल्लाह तआ़ला तआ़म (खाना और खाने की चीज़) कहता है। इब्ने जरीर भी यही कहते हैं कि 'तआ़म' से समुद्र की वे मुर्दा मछलियाँ ही मुराद हैं। हुज़ूर सल्ल. ने भी यही फ़रमाया है कि समुद्र की मौजों से मुर्दा आई हुई मछली तआ़म (खाना) है। हज़रत इक्रिमा रज़ि. कहते हैं कि जो लोग समुद्री मक़ामात पर रहते हैं वे तो ताज़ा ताज़ा शिकार कर लेते हैं और जो मर जाएँ उनको सुखाकर ज़ख़ीरा रखते हैं, या शिकार करके रख छोड़ते हैं, और यह मुसाफ़िरों और साहिली मक़ामात से दूर रहने वालों के लिए ग़िज़ा बनने का काम देता है। जमहूर ने मुर्दा मछली के हलाल होने पर इसी आयत से इस्तिदलाल किया (दलील पकड़ी) है। इमाम मालिक रह. ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने साहिल (समुद्री किनारे) की तरफ़ एक लश्कर भेजा, अबू उबैदा को उसका अमीर (सरदार) बनाया, ये तीन सौ आदमी थे, मैं भी शामिल था। हम रास्ते ही में थे कि रास्ते का खाना ख़त्म हो गया तो अबू उबैदा ने हुक्म दिया कि सारे लश्कर में सबका खाने पीने का सामान लाकर जमा करें। मेरे पास खजूरें थीं, हम उसमें से हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा खाते थे। आख़िर वह ज़ख़ीरा ख़त्म हुआ और खाने के लिए हम सबको सिर्फ़ एक-एक खजूर मिलती थी। हम लोग ख़ुद मरने के क़रीब हो गये लेकिन समुद्र तक आ पहुँचे थे। किनारे पर देखा कि एक मछली टीले के मानिंद चौड़ी चकली पड़ी हुई है, हमारे सारे लश्कर ने उसको तेरह दिन तक खाया। अबू उबैदा ने उस मछली की दो पसलियों को कमान की शक्ल में बाक़ी रखने का हुक्म दिया, उस कमान के नीचे से एक ऊँटनी सवार गुज़र गया और उसके ऊपरी हिस्से को छू न सका। जाबिर भी इसी तरह बयान करते हैं कि समुद्र के किनारे पर एक बुलन्द टीला मालूम हुआ, देखा तो वह एक दरियाई जानवर मरा पड़ा था जिसको अंबर कहते थे। अबू उबैदा रज़ि. ने कहा यह तो मुर्दा है, फिर कहा हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़ासिद हैं भूख से मजबूर हो गए हैं, ताज़ा-ताज़ा गोश्त है, ख़ूब खाओ। हम वहाँ एक महीना ठहरे रहे, हम तीन सौ आदमी थे, खा-खाकर ख़ूब मोटे हो गये। उसकी आँखों के ढेलों के अन्दर से

Maktaba Ashraf

हम मटके भर-भरकर रोग़न निकालते थे। इतने बड़े-बड़े टुकड़े काट लिए थे जैसे गाय। अबू उबैदा रज़ि. ने उसकी आँख के गड्ढे में तेरह आदमियों को बैठाया था। उसकी एक पसली लेकर कमान की सूरत में ज़मीन पर क़ायम की गई तो बड़े से बड़ा ऊँट उसके नीचे से निकल गया। ग़र्ज़ यह कि वह मछली इस क़द्र बड़ी थी।

फिर हमने उसका गोश्त सुखाकर रास्ते में खाने के लिये रख लिया। जब मदीना पहुँचे और नबी सल्ल. से इसका ज़िक्र किया तो फ़रमाया कि यह तुम्हारे लिए ख़ुदा का रिज़्क़ था। अगर तुम्हारे साथ कुछ है तो लाओ, हमें भी खिलाओ। हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास उसको तोहफ़े के तौर पर भेजा। आपने खाया। और एक रिवायत में है कि यह लश्कर नबी सल्ल. के साथ था जबकि यह मछली पाई गई थी। बाज़ कहते हैं कि नहीं! हज़रत साथ नहीं थे, वह दूसरा वाक़िआ है। बाज़ कहते हैं कि नहीं वाक़िआ एक ही है पहले वाक़िए में नबी करीम सल्ल. साथ थे फिर हुज़ूर सल्ल. ने जब दूसरा लश्कर भेजा तो उसके बाद अमीर अबू उबैदा रज़ि. थे और यह वाक़िआ उसी अबू उबैदा वाले लश्कर का था। वल्लाहु आलम।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया या रसूलल्लाह! हम समुद्र में सफ़र करते हैं और थोड़ा सा पानी साथ रखते हैं। अगर उससे वुज़ू कर लिया करें तो प्यासे रह जाएँगे, तो क्या हम अब समुद्र से वुज़ू कर सकते हैं? आपने फ़रमाया कि समुद्र का पानी पाक है और उसमें की मुर्दा मछली हलाल है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक जमाअ़त से भी यही रिवायत है, अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि हम नबी करीम सल्ल. के साथ हज या उमरे में थे तो एक टिड्डीदल लश्कर से हमें सामना हुआ। हम अपनी लकड़ी से उन्हें मारते थे, वे मरकर हमारे पास गिर पड़ते थे, हमने आपस में कहा कि अब क्या करें हम तो एहराम की हालत में हैं। चुनाँचे नबी करीम सल्ल. से हमने पूछा तो फ़रमाया कि पानी (दरिया और समुद्र) के शिकार की मनाही नहीं है।

नबी करीम सल्ल. ने जब टिड्डियों पर बददुआ़ की थी तो कहा था कि ऐ ख़ुदा! छोटी बड़ी सब टिड्डयों को हलाक कर दे। उनके अण्डों को ज़ाया करके उनकी नस्ल बढ़ने से रोक दे, ताकि ये हमारा ग़ल्ला और हमारी फसलें और हमारे बाग़ात व दरख़्त तबाह न करें, तो नबी करीम सल्ल. से हज़रत ख़ालिद रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! यह भी एक ख़ुदाई फ़ौज है आप इसकी नस्ल के ख़ात्मे की बददुआ़ क्यों फ़रमाते हैं? तो आपने फ़रमाया कि टिड्डी भी समुद्र की मछलियों की नस्ल से होती हैं। ज़ियाद बयान करते हैं कि मुझसे ख़ुद उस शख़्स ने बयान किया जिसने मछली से टिड्डी पैदा होते देखी है, यह हदीस सिर्फ़ इब्ने माजा ने बयान की है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने हरम में टिड्डी के शिकार करने की मनाही की है। और बाज़ फ़ुक़हा ने इस आयते करीमा से दलील पकड़ी है कि पानी के तमाम जानवर खाए जा सकते हैं और इस हुक्म से कोई चीज़ अलग नहीं है। बाज़ ने मेंढकों को अलग किया है और उसके सिवा बाक़ी को जायज़ रखा है।

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेंढकों को मारने की मनाही की है और फ़रमाया है कि उसकी आवाज़ ख़ुदा की तस्बीह है। दूसरों ने कहा है कि मछली खा ली जाए लेकिन मेंढक न खाएँ। इन दोनों के अ़लावा में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है- बाज़ कहते हैं कि ख़ुशकी के जिन जानवरों को खाया जाता है उनकी तरह के पानी के जो जानवर हैं वे खाए जाएँ और ख़ुशकी के जो जानवर नहीं खाये जाते पानी के भी उन जानवरों को न खाया जाए। ये सब/इख़्तिलाफ़ इमाम शाफ़ई रह. के मज़हब की बिना पर हैं, और अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि समुद्र के अन्दर जो मछली

Maktab E Ashraf

मर गई हो वह न खाई जाए जैसा कि खुश्की का मरा हुआ जानवर भी नहीं खाया जाता है। क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ.

यानी तुम पर मुर्दार का खाना हराम कर दिया गया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत है कि तुमने समुद्र से जो शिकार किया और वह ज़िन्दा था फिर मर गया, तो खाओ। और जिस मुर्दा मछली को मौजों (लहरों) ने बहाकर किनारे ला डाला हो तो न खाओ। जमहूर ने मालिकी, शाफ़ई और हंबली हज़रात से हदीसे अंबर के ज़रिये और इस हदीस से दलील पकड़ी है कि समुद्र का पानी पाक है और उसका मुर्दा हलाल है, इसलिए वे ऐसी मछली को भी जायज़ रखते हैं। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि हमारे लिए दो मुर्दा जानवर और ख़ून जायज़ हैं, दो मुर्दा जानवर तो मछली और टिड्डी हैं और दो ख़ून कलेजी और तिल्ली हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَادُمْتُمْ حُرُمًا.

यानी एहराम की हालत में तुमको शिकार करना हराम है।

अगर जान-बूझकर ऐसा करोगे तो गुनाहगार भी होगे और तावान भी देना पड़ेगा। और ग़लती से भूलकर ऐसा किया है तो तावान देने के बाद सज़ा उठ जाएगी, लेकिन उस शिकार का खाना हराम होगा, इसलिए कि वह उसके हक़ में मुर्दार के जैसा है, और इमाम शाफ़ई व मालिक रह. का एक क़ौल यह भी है कि एहराम वालों और ग़ैर-एहराम वालों सब के लिए उसका खाना हराम है। पस वह शिकारी अगर उसमें से कुछ खा ले तो क्या उस पर दोगुना फ़िदया लाज़िम आ जाएगा? इसमें उलेमा के दो क़ौल हैं- एक तो यह कि हाँ दोगुना फ़िदया लाज़िम आएगा। अ़ता रह. से रिवायत है कि अगर मुहरिम (एहराम वाला) शिकारी उसको ज़िबह करे और खा ले तो दो कफ़्फ़ारे लाज़िम आएँगे, उलेमा की एक जमाअ़त का मज़हब यही है। दूसरा क़ौल यह है कि उसके खाने पर दूसरा फ़िदया लाज़िम न आएगा। मालिक बिन अनस का यही मज़हब है।

अबू उमर इब्ने अ़ब्दुल-बर्र कहते हैं कि ज़ानी (बदकारी करने वाले) ने सज़ा के कोड़े लगने से पहले बार-बार सोहबत की तो उस पर एक ही हद (सज़ा) वाजिब होगी। अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि अपने शिकार का गोश्त खा लेने पर अपनी ग़िज़ा की क़ीमत देनी लाज़िम आएगी, इससे ज़्यादा नहीं। अबू सौर कहते हैं कि ऐसी सूरत में मुहरिम पर सिर्फ़ कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा और उस शिकार में से खाना उसके लिए हलाल है, लेकिन मैं मक्रूह समझता हूँ कि वह उसमें से खाए। क्योंकि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि एहराम की हालत में खुश्की का शिकार तुम पर हलाल है बशर्तेकि खुद तुमने उसका शिकार न किया हो और न तुम्हारे लिए शिकार किया गया हो। इस हदीस का बयान आगे आएगा लेकिन शिकारी के लिए उसका खाना जायज़ क़रार देना यह अ़जीब बात है। लेकिन ग़ैर शिकारी (यानी जिसने शिकार न किया हो) के लिए मुहरिम के शिकार के बारे में इख़्तिलाफ़ (राय का मतभेद) है और हमने पहले बयान कर दिया है कि जायज़ नहीं। लेकिन बाज़ लोग शिकारी को उसका खाना जायज़ कहते हैं और मुहरिम और ग़ैर-मुहरिम सबको बराबर क़रार देते हैं। जब ग़ैर-मुहरिम (यानी जो एहराम की हालत में न हो) शिकार करे और मुहरिम (जो एहराम की हालत में हो उस) को हदिया भेजे तो बाज़ लोग कहते हैं कि मुहरिम के लिए यह बिल्कुल

Maktab E Ashraf

जायज़ है, और इसमें कोई फ़र्क़ नहीं कि ख़ुद उसके लिए शिकार किया हो या न किया हो। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से मुहरिम के शिकार के बारे में पूछा गया कि क्या उसका खाना हराम है तो फ़तवा दिया कि हाँ खा सकता है, फिर उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से मुलाक़ात हुई, उन्हें इल्म हुआ तो कहा कि इसके ख़िलाफ़ अगर तुम फ़तवा देते तो मैं तुम्हें सज़ा देता, लेकिन दूसरे लोग पूरी तरह यह नाजायज़ समझते हैं।

इब्ने अ़ब्बास और इब्ने उमर मक्रूह समझते हैं, क्योंकि 'हुर्रि-म अ़लैकुम' (तुम पर हराम कर दिया गया) की आयत आ़म है। हज़रत अ़ली रज़ि. एहराम वाले के लिए "शिकार का गोश्त खाना" मक्रूह (बुरा और नापसन्दीदा) कहते हैं, और मालिक व शाफ़ई और अहमद वग़ैरह कहते हैं कि ग़ैर-मुहरिम ने अगर मुहरिम की ख़ातिर शिकार किया हो तो मुहरिम को उसका खाना अब जायज़ नहीं। सअ़ब बिन जुसामा ने नबी करीम सल्ल. को एक गोरख़र (जंगली गधा) हदिये में भेजा था, आपने वापस कर दिया था और जब आपने भेजने वाले के चेहरे पर कुछ रंज व ग़म के आसार महसूस किए तो फ़रमाया कि मैं तो सिर्फ़ मुहरिम (एहराम की हालत में) होने की वजह से नहीं खाता हूँ। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में अलग-अलग अलफ़ाज़ के साथ है। इसकी वजह यह थी कि नबी सल्ल. ने गुमान किया था कि यह सिर्फ़ आपकी ख़ातिर शिकार किया गया था, इसलिए वापस किया। और अगर कोई शिकार मुहरिम के वास्ते किया हुआ न हो तो मुहरिम के लिए उसका खाना जायज़ है, क्योंकि अबू क़तादा रज़ि. की हदीस में है कि उन्होंने एक गोरख़र (जंगली गधा) शिकार किया था और वह मुहरिम न थे और उनके साथी मुहरिम थे, तो वे उसके खाने से रुक गये और हुज़ूर सल्ल. से पूछा तो आपने फ़रमाया- क्या तुममें से किसी ने शिकारी को शिकार करने के लिए बतलाया था या उसके क़त्ल में मदद दी थी? साथियों ने कहा नहीं। फ़रमाया फिर तो खाओ, और ख़ुद आपने भी खाया।

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- ख़ुश्की का शिकार तुम्हारे लिए हलाल है बशर्तेकि ख़ुद तुमने एहराम की हालत में शिकार न किया हो, या तुम्हारे इशारे और मर्ज़ी से या तुम्हारे मक़सद से शिकार न किया गया हो। आ़मिर बिन रबीआ़ कहते हैं कि मैंने उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को जब वह अ़रज में थे और मुहरिम थे, और सर्दी का ज़माना था, देखा कि आपने अपना चेहरा लाल रंग की चादर से छुपा लिया था। फिर शिकार का गोश्त लाया गया तो आपने सहाबा से कहा कि तुम लोग खाओ मैं नहीं खाऊँगा, क्योंकि शिकार मेरी ख़ातिर किया गया है, तुम्हारी ख़ातिर नहीं किया गया है।

आप फ़रमा दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे तुझको नापाक की कसरत 'यानी ज़्यादा होना' ताज्जुब में डालती 'यानी अच्छी लगती' हो, तो अल्लाह तआ़ला से डरते रहो ऐ अ़क़्लमन्दो! ताकि तुम कामयाब हो जाओ। (100) ऐ ईमान वालो! ऐसी (फ़ुज़ूल) बातें मत पूछो कि अगर तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हारी नागवारी का सबब हो। और अगर तुम	قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ ع ١٣ ٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ

Maktab E Ashraf

إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ ۖ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ○ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ○	क़ुरआन के नाज़िल होने के ज़माने में (कारामद बातें) पूछो तो तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ, वे (गुज़रे हुए सवालात) अल्लाह ने माफ़ कर दिए और अल्लाह तआला बड़ी मग़फ़िरत वाले हैं, बड़े बरदाश्त करने वाले हैं। (101) ऐसी बातें तुमसे पहले और लोगों ने भी पूछी थीं, फिर उन बातों का हक़ पूरा न किया। (102)

अच्छी और बुरी चीज़ें बराबर नहीं हो सकतीं

अल्लाह तआला रसूले पाक से इरशाद फ़रमाता है कि ख़बीस (बुरा) और तय्यिब (पाक और अच्छा) दोनों बराबर नहीं हो सकते, अगरचे ख़बीस कितना ही अच्छा क्यों न मालूम हो। ऐ इनसान! थोड़ी सी हलाल चीज़ जो नाफ़े (फ़ायदा देने वाली) हो वह उस बहुत ज़्यादा हराम चीज़ से बेहतर है जो नुक़सानदेह है। जैसा कि हदीस में है कि कम चीज़ और किफ़ायत करने वाली चीज़ अच्छी है उस ज़्यादा चीज़ से जो ख़ुदा से ग़ाफ़िल बनाने वाली हो। सालबा इब्ने हातिब अन्सारी ने कहा या रसूलल्लाह! दुआ फ़रमाईये कि ख़ुदा मुझे बहुत सारा माल अ़ता फ़रमाये। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि थोड़ा माल जिसका तुम शुक्र अदा करो वह उस ज़्यादा चीज़ से अच्छा है जिसका शुक्रिया अदा न करो। पस ऐ सही अ़क्ल वालो! ख़ुदा से डरो, हराम से बचो, हलाल पर क़नाअ़त करो, शायद तुम दीन और दुनिया में फ़लाह (कामयाबी) पा सको।

फिर फ़रमाया ऐ ईमान वालो! ऐसे सवालात न करो कि अगर उनके जवाबात ज़ाहिर हो जाएँ तो तुम्हें सख़्त रंज और दुख पहुँचे। यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मोमिन बन्दों को अदब सिखाना है और बेफ़ायदा व नुक़सानदेह सवालात के पूछने से मनाही है, क्योंकि अगर ये बातें ज़ाहिर हो जाएँगी तो उन्हें सुनकर सख़्त नागवार होगा और रंज पहुँचेगा। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- कोई मुझे किसी की कोई ख़बर लाकर न पहुँचाया करे। मैं चाहता हूँ कि तुमसे सामना हो तो मेरा दिल तुम्हारी तरफ़ से बिल्कुल साफ़ रहे और किसी की तरफ़ से दिल में कोई ख़लिश (मैल और चुभन) पैदा होने न पाये। अनस बिन मालिक रज़ि. कहते हैं कि नबी सल्ल. ने ख़ुतबा दिया था कि ऐसा ख़ुतबा मैंने कभी नहीं सुना था। आपने फ़रमाया कि अगर तुम वह सब कुछ जानते होते जो मैं जानता हूँ तो बहुत थोड़ा हंसते और बहुत ज़्यादा रोते। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अपना मुँह ढककर रोने लगे। एक आदमी उठकर पूछने लगा कि हज़रत! मेरा बाप कौन था? कहा फ़ुलाँ था। चुनाँचे यह आयत उतरी किः

لَا تَسْئَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ.... الخ

यानी ऐसी फ़ुज़ूल बातें न पूछा करो कि अगर तुम पर वो ज़ाहिर कर दी जायें तो तुमको बुरा लगे।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि एक दिन बाज़ सहाबा ने आँ हज़रत सल्ल. से कुछ सवालात किए और इसरार के साथ किये तो आप मिम्बर पर आए और फ़रमाने लगे कि आज जो बात मुझसे पूछना चाहते हो पूछो मैं सब कुछ तुम्हारे हालात बयान करूँगा। सहाबा यह सुनकर काँप उठे कि कोई

नई बात ज़ाहिर होने वाली है, और मैं दाएँ-बाएँ जिधर भी देखता था सहाबा अपना मुँह कपड़े से ढाँपे रो रहे थे। एक आदमी उठा जिसको लोग उसके बाप के बारे में बदनाम करते थे। कहने लगा ऐ अल्लाह के नबी! मेरा बाप कौन था? आपने फ़रमाया हुज़ाफ़ा था। फिर उमर रज़ि. उठे और कहने लगे कि हमें कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं है, अल्लाह तआ़ला हमारा रब है, इस्लाम हमारा दीन है, मुहम्मद हमारे रसूल हैं, हम किसी फ़ितने के ज़ाहिर होने से ख़ुदा की पनाह माँगते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- आजकी तरह मैंने भी ख़ैर व शर (बुराई और भलाई) को ज़ाहिर नहीं देखा। जन्नत और दोज़ख़ इस तरह मेरे सामने शक्ल बनकर आयीं जैसे इस दीवार के पीछे स्थित हैं। इब्ने हुज़ाफ़ा के पूछने पर उम्मे अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा कहने लगी कि तुझसे ज़्यादा नालायक़ लड़का मैंने नहीं देखा, तुझे क्या मालूम कि जाहिलीयत के ज़माने में क्या-क्या हुआ करता था, अगर फ़र्ज़ करो मैं भी उस ज़माने में किसी गुनाह में मुब्तला हो जाती तो आज नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान पर लोगों के सामने तेरी बदौलत रुस्वा होना पड़ता। अ़ब्दुल्लाह कहने लगे कि अगर कोई हब्शी ग़ुलाम भी मेरा बाप क़रार पाता तो मैं अपने को उसी की तरफ़ मन्सूब करता।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाहर निकले तो ग़ज़बनाक (नाराज़गी और ग़ुस्से में) थे, चेहरा सुर्ख़ था, मिम्बर पर बैठ गए। एक आदमी उठकर पूछने लगा कि मेरा मर जाने वाला बाप कहाँ है? आपने फ़रमाया दोज़ख़ में है। दूसरे ने पूछा मेरा बाप कौन है? आपने फ़रमाया तेरा बाप हुज़ाफ़ा है। उमर रज़ि. खड़े हुए कहने लगे बस काफ़ी है हमारे लिए कि ख़ुदा हमारा रब है, इस्लाम हमारा दीन है और मुहम्मद हमारे रसूल हैं, क़ुरआन हमारा इमाम है। या रसूलल्लाह! हम जाहिलीयत और शिर्क के ज़माने से बहुत क़रीब हैं। ख़ुदा तआ़ला ही वाक़िफ़ है कि हमारे बाप-दादा कौन थे? यह सुनकर आपका ग़ुस्सा ठण्डा हो गया और यह आयत उतरी कि ऐसे सवालात न करो कि बात ज़ाहिर हो जाए तो तुम्हें रंज और दुख पहुँचे।

एक मुर्सल हदीस में है कि एक रोज़ जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ग़ुस्से में थे, उठकर फ़रमाने लगे कि पूछो मुझसे क्या पूछते हो? जो कुछ तुम पूछोगे बता दूँगा। यह सुनकर बनी सहम का एक क़ुरैशी उठा, जिसके बाप के बारे में ताना दिया जाता था, पूछने लगा हज़रत मेरा बाप कौन था? आपने उसको उसके बाप की तरफ़ मन्सूब किया। उमर रज़ि. उठे और कहा हज़रत हमारी ख़ता माफ़ कर दीजिए ख़ुदा आपको भी माफ़ फ़रमाए। आप बराबर यही दरख़्वास्त करते रहे यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. का ग़ुस्सा ठंडा हो गया। फ़रमाने लगे ज़ानिया (ज़िना करने वाली औ़रत) का लड़का बाप के बजाये माँ की तरफ़ मन्सूब किया जाएगा और ज़ानी (ज़िना करने वाले) पर पत्थर पड़ेंगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि लोग नबी करीम सल्ल. से मज़ाक़ और दिल्लगी के तौर पर भी पूछते थे कि मेरा बाप कौन है। कोई कहता कि मेरी गुमशुदा ऊँटनी कहाँ है? चुनाँचे सवालात से मनाही की आयत उतरी। हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी किः

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا.

यानी जिसको क़ुदरत (हिम्मत व गुंजाईश) हो उस पर हज करना फ़र्ज़ है। तो लोगों ने पूछा कि या रसूलल्लाह! हर साल? आप ख़ामोश हो गये। दोबारा पूछा क्या हर साल? आप फिर ख़ामोश हो गये। तीसरी बार फिर पूछा तो फ़रमाया कि अगर मैं हाँ कह दूँ तो हर साल तुम पर हज वाजिब हो जाएगा

Maktab E Ashraf

जिसकी तुम क़ुदरत न रखोगे, और अगर न अदा करोगे तो काफ़िर हो जाओगे। चुनाँचे फ़ालतू सवाल करने की मनाही की आयत उतरी। एक आदमी ने भी इसी तरह पूछा था कि क्या हर साल हज करें? आप चीख़ उठे कि इसे चुप करो और उस पर नाराज़ हो गये। थोड़ी देर तक ठहरे रहे फिर फ़रमाया किसने सवाल किया था? देहाती ने कहा मैंने। आपने फ़रमाया कमबख़्त अगर मैं हाँ कह देता तो हर साल हज के फ़र्ज़ होने से तुझे कौन बचा सकता था। यक़ीनन तुम लोग अदा न करते, तुमसे पहले की उम्मतें इसी तरह तो हलाक हुईं। अगर मैं तुम्हारे लिए सारी दुनिया और जो कुछ इसमें है सब भी हलाल कर दूँ और क़दम बराबर जगह हराम कर दूँ तो उसी की हिर्स तुम्हें पकड़ लेगी। इसी लिए तो अल्लाह तआ़ला ने कहा है कि अगर तुम्हारे सवाल का जवाब दे दिया जाए तो तुम पर बहुत भारी और नागवार हो जाएगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَاِنْ تَسْئَلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَلَكُمْ.

यानी क़ुरआन नाज़िल होते वक़्त अगर तुम कुछ पूछोगे जिसकी तुम्हें मनाही कर दी गई है तो यक़ीन रखो ख़ुदा तुम्हारे सवाल का जवाब देगा फिर क्या करोगे, और यह बात तो ख़ुदा पर आसान है। लेकिन जो गुज़र चुका वह ख़ुदा ने माफ़ कर दिया, अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर है हलीम है।

इसलिए हरगिज़ कोई नया सवाल बिला वजह न करो, वरना जवाब में तुम पर सख़्ती और तंगी हो जाएगी, और यह अपने हाथों मुसीबत मोल लेना है।

हदीस में है कि मुसलमानों का सबसे बड़ा मुजरिम वह है जिसके सवाल की वजह से एक ग़ैर-हराम चीज़ सिर्फ़ ज़्यादा वज़ाहत चाहने की वजह से हराम हो गई, और लोगों पर तंगी पैदा हो गई। हाँ क़ुरआन की कोई बात मुज्मल (मुख़्तसर और संक्षेप में) होने की वजह से समझ में न आती हो और तुम समझना चाहो तो पूछ लो, मैं बयान कर दूँगा, क्योंकि तुम हुक्म के पालन के लिए उसकी ज़रूरत रखते हो। अगर किताब में किसी बात का ज़िक्र न हो और तुमने वह काम नहीं किया तो तुम्हारे अ़मल की तुमसे पूछगछ नहीं, तो तुम भी किसी सवाल से मुताल्लिक़ चुप हो जाया करो जैसा कि सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मैंने जो बयान किया उसको उसी तरह रहने दो, ज़्यादा सवाल पूछने और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के हुक्म से इख़्तिलाफ़ करने (मतभेद और अलग रास्ता अपनाने) ही ने पहली क़ौमों को तबाह किया है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने फ़राईज़ मुतैयन क़रार दे दिये हैं उनको ज़ाया न होने दो, और अ़मल की हदें मुक़र्रर कर दी हैं उनसे आगे न बढ़ो, और जो बातें हराम की गई हैं उनके करने वाले न बनो। मैं बाज़ बातों से जान-बूझकर ख़ामोश हूँ यह तुम पर रहमत की बिना पर है। मैं भूल जाने के सबब ख़ामोश नहीं हुआ हूँ। इसलिए हरगिज़ सवालात न करो। फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन मसाईल का सवाल तुमसे पहले की क़ौमों ने किया था, जवाब दिया गया, सख़्ती लागू हो जाने की वजह से उन्होंने अ़मल नहीं किया और काफ़िर हो गये। क्योंकि उन्होंने हिदायत तलब करने के लिये सवाल नहीं किया था, बल्कि बैर और मज़ाक़ उड़ाने की बिना पर किया था। आपने फ़रमाया कि मैंने जो कुछ छोड़ दिया तुम भी छोड़ दो, और मैं जो हुक्म कर दूँ इख़्तियार करो। ईसाईयों ने जैसा सवाल किया था तुम ऐसा करने से बाज़ रहो। उन्होंने मायदा (दस्तरख़्वान) माँगा था लेकिन उसके बावजूद कुफ़्र किया, मायदा की क़द्र न की। पूछने के बजाये ख़ुद मेरे कहने का इन्तिज़ार करो। तुम्हारे पूछे बिना ही क़ुरआन ख़ुद तुम्हारे सवाल की वज़ाहत में नाज़िल हो जाएगा।

Maktab E Ashraf

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि 'बहीरा' और 'वसीला' और 'सायबा' और 'हाम' से मुताल्लिक़ सवालात करने की मनाही है, देखो "किसी चीज़ का सवाल न करो" के बाद ही यह ज़िक्र है किः

"अल्लाह तआ़ला ने न बहीरा को मशरू (जायज़) किया है, न सायबा को, न वसीला को और न हाम को।"

हज़रत इक्रिमा रज़ि. कहते हैं कि वे लोग मोजिज़ों के बारे में सवालात करते थे जिसकी मनाही की गई है। क़ुरैश नबी सल्ल. से बाग़ात और नहरें माँगते थे और कहते थे कि सफ़ा पहाड़ को हमारे लिए सोना बना दो वग़ैरह वग़ैरह। जैसा कि यहूद के मुतालबे थे कि ऐ मूसा (अ़लैहिस्सलाम) आसमान से हमारे लिए किताब उतार दो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وَمَامَنَعَنَآاَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ... الخ

जब कभी हमने उनके मुतालबे पर अपने मोजिज़े भेजे तो पहले गुज़रे लोगों ने उनको झुठला दिया। हमने क़ौमे समूद को अपनी रोशन दलील नाक़ा (ऊँटनी) दी, उन्होंने उसके साथ ज़ुल्म किया। हमारे मोजिज़े सिर्फ़ डराने के लिए आते हैं। वे क़समें खा-खाकर बयान करते हैं कि अगर उनके पास मोजिज़ा आए तो ज़रूर ईमान लाएँगे। ऐ नबी! कह दो कि मोजिज़े ख़ुदा के हाथ में हैं। तुम समझते नहीं अगर मोजिज़े आएँगे तो भी वे ईमान न लाएँगे। हमने उनके दिलों को उलट दिया है, आँखों पर पर्दा डाल दिया है, पहलों की तरह वे ईमान लाएँगे ही नहीं। हम उनकी सरकशियों (नाफ़रमानियों और गुनाहों) में उनको और भटका रहे हैं। अगर हम उन पर फ़रिश्ते भी नाज़िल कर दें, मुर्दे ज़िन्दा होकर उनसे बातें करने लगें और हर पहले गुज़री चीज़ ज़िन्दा होकर उनके सामने आ मौजूद हो तो भी ये ईमान नहीं लाएँगे। हाँ ख़ुदा जिसको चाहे वह ईमान इख़्तियार करे, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰـكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَـفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۖ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَـعْقِلُوْنَ ○ وَاِذَا قِيْـلَ لَهُـمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَـا وَجَـدْنَا عَـلَيْـهِ اٰبَـآءَنَا ۖ اَوَلَـوْ كَانَ اٰبَـآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ○	अल्लाह तआ़ला ने न बहीरा को मशरूअ़ "यानी जायज़ और मुक़र्रर" किया है और न सायबा को और न वसीला को और न हामी को, लेकिन जो लोग काफ़िर हैं वे अल्लाह तआ़ला पर झूठ लगाते हैं, और अक्सर (काफ़िर) उनमें के अ़क्ल नहीं रखते। (103) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआ़ला ने जो अहकाम नाज़िल फ़रमाए हैं उनकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रुजू करो, तो कहते हैं कि हमको वही काफ़ी है जिस पर हमने अपने बड़ों को देखा है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ समझ रखते हों और न हिदायत रखते हों! (104)

अपनी शरीअ़त ख़ुद बनाये हुए क़ानून

बहीरा वह है जिसका दूध नहीं दूहते थे और कहते थे कि यह बुतों के नाम है, कोई यह दूध नहीं

पीता था। **सायबा** वह जानवर जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था, उस पर न सामान लादा जाता था न सवारी की जाती थी। अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अ़मर बिन लुहय्यि ख़ुज़ाई को मैंने दोज़ख़ में पेट के बल घिसटते हुए देखा है, उसी ने सबसे पहले जानवरों को बुतों के नाम पर छोड़ने का तरीक़ा राईज किया। और **वसीला** वह ऊँटनी है जिससे पहली दफ़ा एक नर पैदा हो, फिर लगातार दो मादा पैदा हों। ऐसी ऊँटनी को भी बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। और **हाम** वह नर ऊँट है जिसकी नस्ल से कई बच्चे हो चुके हों और जब नस्ल बहुत बढ़ चुकी हो तो उससे न बोझ लादने का काम लिया जाता न सवारी का। बुतों के हवाले कर देते। ये सब अ़मर के ईजाद किये हुए थे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने जहन्नम में देखा कि एक आग दूसरी आग को खाए जा रही है, अ़मर उसमें घिसटता हुआ चल रहा है। उसी ने सबसे पहले "सायबा" की रस्म डाली।

बुत-परस्ती की बुनियाद डालने वाला

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्तम बिन जोन से फ़रमाते थे कि ऐ अक्तम! मैंने अ़मर बिन लुहय्यि बिन क़मआ़ को दोज़ख़ में देखा। तुमसे बढ़कर उसका हम-शक्ल दूसरा नहीं, न उससे बढ़कर तुम्हारा हम-शक्ल कोई और है, बिल्कुल तुम्हारे ही जैसा मालूम होता है। अक्तम ने कहा या रसूलल्लाह! क्या आपका गुमान है कि उसकी यह मुशाबहत (यानी उस जैसा होना) मेरे लिए घाटे और नुक़सान की बात होगी? आपने फ़रमाया नहीं! तुम मोमिन हो और वह काफ़िर। उसी ने सबसे पहले दीने इब्राहीम में ख़लल डाला। **बहीरा, सायबा** और **हाम** की बिदअ़तें राईज कीं। बुत-परस्ती करना, सायबा बनाना, यह अबू ख़ुज़ाआ़ अ़मर बिन आ़मिर ही ने किया है। मैंने उसे दोज़ख़ में देखा है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि दीने इब्राहीम में तग़य्युर (यानी बदलाव और उलट-फेर) डालना यह अ़मर बिन लुहय्यि का काम था, जो बनी कअ़ब के क़बीले का था। वह दोज़ख़ में है, उसकी बदबू दूसरे दोज़ख़ियों को सख़्त तकलीफ़ पहुँचाती है। मैं जानता हूँ कि **बहीरा** की बिदअ़त का यही मूजिद (ईजाद और शुरू करने वाला) है। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! वह कौन है? आपने फ़रमाया क़बीला बनी मुदलिज का एक आदमी था, उसकी दो ऊँटनियाँ थीं, उसने उन दोनों के कान काट दिये। पहले तो उनका दूध पीना हराम कर लिया, फिर चन्द रोज़ के बाद पीना शुरू कर दिया। वह दोज़ख़ में है। ये ऊँटनियाँ उसको अपने मुँह से काट रही हैं और पाँव से रौंद रही हैं। यही अ़मर बिन लुहय्यि बिन क़मआ़ है। ख़ुज़ाआ़ के सरदारों में से था। क़बीला जुरहुम के बाद काबे की ज़िम्मेदारी ख़िज़ाआ़ को मिली थी। दीने इब्राहीमी को सबसे पहले बदलने और उसमें ख़लल डालने वाला और हिजाज (सऊदी के इलाक़े) में बुत-परस्ती दाख़िल करने वाला, और लोगों को बुतों की पूजा और उनकी तरफ़ रुझान बनाने वाला, जानवरों और मवेशियों वग़ैरह के बारे में जाहिलीयत के ज़माने में सबसे पहले बिदअ़तों (हक़ मज़हब में नई ख़ुराफ़ात) को उसमें प्रचलित करने वाला, जिसका ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने सूरः अन्आ़म में फ़रमाया है:

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا.

यानी खेत से जो कुछ पैदावार हो या जानवरों से उनका सिर्फ़ एक हिस्सा ख़ुदा के नाम का समझते थे और बाक़ी बुतों के नाम का। **बहीरा** उस ऊँटनी को कहते हैं कि जब पाँच बच्चों को जन्म दे चुके और पाँचवाँ नर हो तो उसको ज़िबह करके सिर्फ़ मर्द उसका गोश्त खा लें, औरतों पर उसका गोश्त हराम समझते

Maktaba Ashraf

और वह मादा हो तो उसके कान काट देते और कहते कि इसका नाम **बहीरा** है। सुद्दी वग़ैरह ने भी इसी के क़रीब-क़रीब बयान किया है। मुजाहिद कहते हैं कि 'सायबा' उस बकरे को कहते हैं जिस पर **बहीरा** की तारीफ़ सादिक़ (फ़िट) आये। लेकिन छह मादा हो जाने के बाद सातवें हमल (गर्भ) में एक या दो नर हों तो उसको ज़िबह कर देते थे और सिर्फ़ मर्द ही उसको खा सकते थे, औरतों पर उसका गोश्त हराम होता था। और मुहम्मद बिन इस्हाक़ का क़ौल है कि **सायबा** वह ऊँटनी है कि जब लगातार दो मादा जन चुके तो वह बुत के नाम पर छोड़ दी जाती, उससे सवारी नहीं ली जाती, उसके बाल नहीं काटे जाते, न उसका दूध दूहा जाता, मगर मेहमान आ जाए तो उसको इस ऊँटनी का दूध पिलाया जा सकता था।

अबू रौक़ कहते हैं कि **सायबा** उस ऊँटनी और बकरी वग़ैरह को कहते थे कि जब आदमी किसी काम से निकले और वह काम पूरा हो गया तो अब उस जानवर को "सायबा' बना दिया जाता, और बुत के नाम पर चढ़ा दिया जाता। उसकी औलाद भी बुतों के नाम पर समझी जाती थी। सुद्दी कहते हैं कि कोई शख़्स जब किसी ग़र्ज़ से निकलता, या बीमारी से तन्दुरुस्ती पाता, या उसके माल व दौलत में असाधारण इज़ाफ़ा हो जाता तो अपना कुछ माल बुतों के नाम पर चढ़ा देता। और अगर ऐसे माल या मवेशी (जानवर) से कोई छेड़छाड़ करता तो उसे सख़्त सज़ा दी जाती।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि **वसीला** वह बकरी है कि जब सात बार बच्चा दे और सातवाँ अगर नर हो और मुर्दा पैदा हो तो उसको सिर्फ़ मर्द खाते थे औरतें नहीं खा सकती थीं, और सातवीं बार में मादा हो तो उसको ज़िन्दा रहने दिया जाता और अगर उस बार में नर और मादा दोनों पैदा हुए हों तो दोनों को ज़िन्दा छोड़ देते और कहते कि साथ वाली मादा ने नर को भी 'वसीला' बना दिया और अब वह भी हम पर हराम है। सईद बिन मुसैयब कहते हैं कि वसीला वह ऊँटनी है कि पहली बार और दूसरी बार मादा ही जने तो कहते हैं कि लगातार दो मादा पैदा हुईं। चुनाँचे दूसरी के कान काट देते और वह बुतों के नाम पर समझी जाती। मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि **वसीला** वह बकरी है कि पाँच बार में दस मादा बच्चे जने, हर गर्भ में दो-दो। उसको छोड़ दिया जाता, उसके बाद उसके जो भी औलाद होती चाहे नर हो या मादा, तो सिर्फ़ मर्द खाते औरतें न खातीं। और अगर मुर्दा पैदा होती तो फिर दोनों खाते। और किसी नर के दस बच्चे हो चुके हों तो उसको भी बुतों के नाम पर क़रार देते और छोड़ देते उसको 'हाम' कहते हैं। उस पर बोझ न लादते, न उसके बाल काटते, किसी के भी खेत और किसी के भी चश्मे (तालाब) से उस जानवर को खाने और पीने की इजाज़त होती, कोई न रोकता। मालिक इब्ने फ़ुज़ला कहते हैं कि मैं पुराने बोसीदा कपड़े पहने हुए था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क्या तुम्हारे पास कुछ माल है? मैंने कहा ऊँट, बकरे और घोड़े बहुत सारे हैं, बाँदी ग़ुलाम भी हैं। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुझे दौलत दी है तो तुझ पर दौलत के आसार ज़ाहिर होने चाहिएँ और क्या तुम्हारे ऊँटों के बच्चे सालिम कानों वाले पैदा होते हैं? मैंने कहा हाँ। लेकिन क्या ऊँट के बच्चे सालिम कानों के बग़ैर भी पैदा होते हैं? आपने फ़रमाया क्या उन बच्चों के उस्तरे से तुम कान काट दिया करते हो और कहते हो कि अब यह **बहीरा** हो गया, अब यह हम पर हराम है? मैंने कहा हम ऐसा करते भी हैं। आपने फ़रमाया हरगिज़ न करना। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें जो कुछ दिया है सब हलाल है कोई हराम नहीं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया है कि बहीरा, सायबा, वसीला, हाम की अल्लाह तआ़ला के पास कोई सनद नहीं। बहीरा के कान काट देते हो। औरतों में से तुम किसी को भी उस बहीरा से किसी हैसियत से भी फ़ायदा नहीं होने देते। सायबा को बुतों के नाम पर चढ़ाते हो। बकरी जब सातवाँ झोल दे तो उसके कान और सींग काटकर छोड़ देते हो।

Maktab E Ashraf

वह चाहे जिस खेत में चरे और चाहे जिस हौज़ से पानी पिये उसको रोका नहीं जाता, उसको वसीला कहते हो। हदीस में इन अलफ़ाज़ की यूँ तफ़सीर बयान की गई है:

وقوله تعالىٰ: وَلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ.

यानी ये काफ़िर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। अल्लाह तआला ने इन चीज़ों को मशरू नहीं क़रार दिया, न ये खुदा के पास निकटता का सबब हैं। यह मुश्रिकों का बोहतान बाँधना है। उन्होंने इसको शरअ़ बना लिया है और अल्लाह की निकटता का कारण समझते हैं, यह तो हासिल नहीं होगी बल्कि और उन पर वबाल पड़ेगा। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह की 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से आये हुए अहकाम) की तरफ़ और उसके रसूल की तरफ़ आओ तो कहते हैं कि हम अपने बाप दादा के तरीक़े पर ठीक हैं। क्या ये नहीं समझते कि उनके बाप दादा भी बातिल (ग़लत और ग़ैर-हक़ राह) पर हो सकते हैं। वे भी हक़ से नावाक़िफ़ और हिदायत से मेहरूम हो सकते हैं, फिर तुम उनकी पैरवी कैसे कर सकते हो? सच तो यह है कि जाहिल और गुमराह ही ऐसा कह सकते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝	ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह रहे तो उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सबको जाना है, फिर वह तुम सब को जतला देंगे जो-जो तुम सब किया करते थे। (105)

हिदायत और गुमराही

अल्लाह पाक अपने बन्दों को हुक्म देता है कि तुम अपनी ज़ात से ठीक रहो, नेकियों की कोशिश करते रहो, जिसने आप अपनी इस्लाह (सुधार) कर ली चाहे उसके पास व दूर की सारी दुनिया फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) में पड़ी हो, तुमको उसका कोई नुक़सान नहीं पहुँचता। जब बन्दा हलाल व हराम में मेरी इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) करे तो कोई कितना ही गुमराह क्यों न हो जाये इसको कोई नुक़सान नहीं। तुम सब खुदा की तरफ़ आने वाले हो, खुदा तुम्हें बता देगा कि तुम अच्छा करते थे या बुरा करते थे। जिसका अ़मल नेक होगा उसको अच्छी जज़ा (बदला) मिलेगी और जिसका बुरा अ़मल होगा उसको बुरी सज़ा मिलेगी।

इस आयत के मफ़हूम से यह दलील नहीं ली जा सकती कि 'अमर बिल-मारूफ़' (नेक कामों का हुक्म करना) और 'नही अ़निल-मुन्कर' (बुराईयों से रोकना और मना) करना ज़रूरी नहीं रहा। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने खड़े होकर खुदा की तारीफ़ व सना की, फिर कहा ऐ लोगो! तुम यह आयत पढ़ते हो लेकिन इसके मतलब व मायनों पर इसको नहीं रहने देते। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते थे कि अगर कोई गुनाह की बात देखे और फिर उसे ग़ैरत न आए और न गुस्सा आए तो क्या अ़जब है कि खुदा दोनों को अ़ज़ाब में समेट ले। ऐ लोगो! झूठ बोलने से बचो, झूठ इनसान को ईमान से हटा देता है। अबू उमैया शाबानी कहते हैं कि मैंने अबू सालबा खुशनी से इस आयत के बारे में पूछा कि:

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ... الخ

"ऐ ईमान वालो अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह रहे उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं।"

तो उन्होंने कहा कि ख़ुदा की कसम तुमने बहुत ही जानकार आदमी से पूछा। सुनो मैंने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस आयत के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया कि तुम अपनी-अपनी पगड़ी संभालने के बाद बेफ़िक्र होकर न बैठ रहना, नेक कामों का हुक्म और बुराईयों से रोकने का अ़मल बराबर किए जाओ, उस वक़्त तक कि लोग तंगदिल और तंग-हौसला हो जाएँ, ज़कात न दें, इच्छाओं की पैरवी करने लगें, दुनिया को आख़िरत पर तरजीह (वरीयता) देने लगें, हर शख़्स अपनी ही राय पर अकड़ने लगे, किसी समझाने वाले की कुछ न सुने। उस वक़्त अलग थलग हो जाओ, नाफ़रमानों और बदकारों को उनकी हालत पर छोड़ दो। तुम्हारे बाद ही ऐसा ज़माना आने वाला है कि उसमें दम साधकर बैठ रहने वाला ऐसी मुश्किलों में होगा गोया आग को हाथ में थामे हुए है। अपने आपको नेक अ़मल करने वाला गोया पचास आदमियों के नेक आमाल के बराबर अज्र पायेगा। कहा गया या रसूलल्लाह! क्या हमारे पचास आदमी या उस गिरोह के? आपने फ़रमाया नहीं बल्कि तुम्हारे पचास नेक आदमी। इब्ने मसऊद रज़ि. से किसी ने इसी आयत के बारे में पूछा तो कहा कि आज तो ख़ैर तुम्हारी बात मान भी ली जाती है, लेकिन क़रीब ही ऐसा ज़माना आने वाला है कि तुम ख़ैरख़्वाही (भलाई) की बात कहोगे और वे तुम्हारे साथ ऐसा ऐसा बर्ताव करने लगेंगे, उस वक़्त चुप-चाप देखे जाओ और कुछ न बोलो, वे गुमराह हो गए तो तुम पर कुछ आँच नहीं।

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. के पास लोग बैठे हुए थे कि दो आदमियों में कुछ झगड़ा हो गया, हर एक दूसरे की तरफ़ लड़ने के लिए उठ खड़ा हुआ। वहाँ मौजूद लोगों में से एक ने कहा कि मैं उठकर दोनों को समझा देता हूँ। मैं नेकी का हुक्म और बुराई से रोक देता हूँ, तो बराबर वाले ने कहा तुझे क्या पड़ी है, अपनी जगह बैठा रह। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ... الخ

"ऐ ईमान वालो अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह रहे उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं।"

तो इब्ने मसऊद रज़ि. ने सुनकर कहा इसको न रोको। इस आयत पर अ़मल का यह मौक़ा नहीं है, क़ुरआन जैसा उतरा है उतरा है। बाज़ आयतों के उतरने से पहले ही उनकी तावील का ज़माना गुज़र चुका, और बाज़ ऐसी आयतें हैं कि उनकी तावीलें रसूलुल्लाह सल्ल. के ज़माने में हो चुकीं, और बाज़ की तावीलें हुज़ूर सल्ल. के कुछ बाद वाक़े हुईं, बाज़ की तावीलें इस ज़माने के बाद और बाज़ की क़ियामत के दिन जबकि क़ियामत बरपा होने लगेगी और बाज़ की क़ियामत के दिन जब कि हिसाब व किताब हो रहा होगा। जब तक तुम्हारे दिल इकट्ठे हैं और तुम्हारे जज़्बात एक हैं तुममें फूट नहीं पड़ी है और एक दूसरे की बुराई के पीछे नहीं पड़े हो उस वक़्त तक 'अमर व नही' (यानी अच्छे कामों का हुक्म और बुरे कामों से रोकना) बराबर करते रहो। और जब दिल बिगड़ जाएँ, गिरोह-बन्दी हो जाए, एक दूसरे के साथ ख़ुदा वास्ते का बैर रखने लगे, उस वक़्त बिल्कुल सबसे अलग थलग रहो। इस आयत की यही तफ़सीर बयान की गई है। इब्ने जरीर ने इसको रिवायत किया है।

इब्ने उमर रज़ि. से कहा गया कि अब तो आप बैठ रहें तो अच्छा है। न अच्छाई का हुक्म करें और न

Maktab E Ashraf

Miftah E Ashraf

बुराई पर टोकें, क्योंकि अल्लाह तआला ने ऐसा ही हुक्म दे दिया है। इब्ने उमर रज़ि. ने फ़रमाया कि मुझे इसका हक़ नहीं पहुँचता, न मेरे साथियों को, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमा दिया है कि हाज़िर शख़्स सुनकर ग़ायब को पहुँचाए। हम हाज़िर के हुक्म में हैं और तुम ग़ायब के हुक्म में। यह आयत उन लोगों के हक़ में है जो हमारे बाद आने वाले हैं, कि अगर उन्हें कुछ कहा जाएगा तो क़बूल न करेंगे। इब्ने उमर रज़ि. के पास एक आदमी आया तेज़-मिज़ाज और तेज़-ज़बान और कहने लगा ऐ अ़ब्दुर्रहमान! छह आदमी हैं सब के सब क़ुरआन के बेहतरीन आ़लिम। सब ख़ैर वाले हैं कोई बुरा और शरीर नहीं, लेकिन एक दूसरे पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाता है। तो एक आदमी उठकर कहने लगा कि इससे बढ़कर नफ़्स की शरारत और बुराई और क्या होगी कि एक दूसरे को मुश्रिक कहे? उस आदमी ने कहा मैं तुमसे नहीं पूछ रहा हूँ मैं तो शैख़ से यानी इब्ने उमर से पूछ रहा हूँ। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से मसला पूछा कि ऐसे लोगों को क्या समझें? हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने कहा ख़ुदा तुम्हारा भला करे, क्या तुम यह चाहते हो कि मैं तुम्हें हुक्म दूँ कि जाओ उन्हें क़त्ल कर दो? तुमको तो चाहिए कि उन्हें नसीहत करो, इस बदगोई से रोको, अगर वे न मानें तो फिर तुम्हारा कोई गुनाह नहीं।

अबू माज़िन कहते हैं कि मैं हज़रत उस्मान रज़ि. के ज़माने में मदीना गया। वहाँ चन्द मुसलमान बैठे हुए थे, एक ने यह आयत पढ़ीः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ... الخ

"ऐ ईमान वालो अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह रहे उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं।"

तो इब्ने माज़िन ने कहा कि लोग इस आयत का मतलब अच्छी तरह समझते नहीं। ज़ुबैर बिन नज़ीर कहते हैं कि नबी पाक सल्ल. के सहाबा बैठे हुए थे, मैं भी मौजूद था और मैं सबसे कम-उम्र था। गुफ़्तगू "अमर बिल-मारूफ़ व नही अ़निल-मुन्कर" (अच्छे कामों का हुक्म करने और बुराईयों से रोकने) के बारे में चल रही थी। मैं बोल उठा क्या अल्लाह ने नहीं फ़रमाया हैः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ... الخ

"ऐ ईमान वालो अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह रहे उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं।"

तो सब के सब मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे तुम आयत का मतलब अच्छी तरह नहीं समझते। मैंने दिल में कहा काश मैं न बोलता। फिर वे अपनी बात में लग गये। जब मजलिस ख़त्म होने लगी तो कहा "तुम अभी बच्चे हो आयत का सही मतलब नहीं जानते, लेकिन क्या अ़जब है कि तुम ऐसा ज़माना भी पा लो, जब लोग तंगदिल हो जाएँ, नफ़्सानी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगें, हर शख़्स अपनी राय पर नाज़ करता हो, किसी की न सुनता हो" तो यह वही ज़माना है। हसन रह. ने कहा अल्लाह का शुक्र है कि पिछले ज़माने के मोमिनों में भी और मौजूदा मोमिनों में भी ऐसे लोग हैं कि उनके साथ ही मुनाफ़िक़ हैं, लेकिन वे उनके अ़मल को बुरा समझते हैं। कअ़ब कहते हैं कि यह ज़माना उस वक़्त आएगा जबकि दमिश्क़ (अ़रब का एक शहर) के कनीसा को गिराकर मस्जिद बना दिया जाएगा यानी तास्सुब बढ़ जाएगा। इस आयत का यह मतलब है।

Maktab E Ashraf

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا
حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ
اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ
غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ
فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ
تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ
فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ
ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ
شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ○ فَاِنْ
عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ
يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ
عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ
لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا
اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ○ ذٰلِكَ
اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى
وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ
اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ○ ع

ع ١٤ ٤

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में दो शख़्सों का वसी "यानी जिसको वसीयत की गई हो, वसीयत पर अ़मल करने वाला" होना मुनासिब है, जबकि तुममें से किसी को मौत आने लगे, जब वसीयत करने का वक़्त हो वे दो शख़्स ऐसे हों कि दीनदार हों और तुममें से हों या ग़ैर क़ौम के दो शख़्स हों। अगर तुम कहीं सफ़र में गए हो फिर तुम पर मौत का वाक़िआ़ पड़ जाए। अगर तुमको शुब्हा हो तो उन दोनों को बाद नमाज़ के रोक लो, फिर दोनों ख़ुदा की क़सम खाएँ कि हम इस क़सम के बदले कोई नफ़ा नहीं लेना चाहते अगरचे कोई रिश्तेदार भी होता, और अल्लाह की बात को हम छुपाकर न रखेंगे (वरना) हम इस हालत में सख़्त गुनाहगार होंगे। (106) फिर अगर इसकी इत्तिला हो कि वे दोनों (वसी) किसी गुनाह के करने वाले हुए हैं तो उन लोगों में से जिनके मुक़ाबले में गुनाह का काम हुआ था और दो शख़्स जो सबमें ज़्यादा क़रीब हैं, जहाँ वे दोनों खड़े हुए थे ये दोनों खड़े हों, फिर दोनों ख़ुदा की क़सम खाएँ कि यक़ीनन हमारी यह क़सम इन दोनों की उस क़सम से ज़्यादा सच्ची और दुरुस्त है और हम ज़रा भी हद से नहीं बढ़े, (वरना) हम इस हालत में सख़्त ज़ालिम होंगे (107) यह बहुत क़रीब ज़रिया है इस बात का कि वे लोग वाक़िए को ठीक तौर पर ज़ाहिर कर दें, या इस बात से डर जाएँ कि उनसे क़स्में लेने के बाद (वारिसों पर) क़स्में मुतवज्जह की जाएँगी। और अल्लाह तआ़ला से डरो और सुनो, और अल्लाह तआ़ला फ़ासिक़ लोगों की रहनुमाई न करेंगे। (108)

Maktab e Ashraf

वसीयत की अहमियत और उसके अहकाम

यह आयते करीमा एक हुक्मे अ़ज़ीज़ पर मुश्तमिल है, और यह भी कहा गया है कि यह मन्सूख़ है। आयत में वसीयत का बयान है। बताया गया है कि वसीयत करने वाला जब मौत के वक़्त वसीयत करे उसके क़बीले (ख़ानदान) के दो गवाह हों और दो गवाह उसके ख़ानदान के अ़लावा हों चाह वे अहले-किताब या ग़ैर-मुस्लिम हों।

तफ़सील यह है कि जब तुम सफ़र में हो और तुम्हें मौत आ जाए तो तुम मुसलमानों में से दो गवाहों और मुसलमान न हों तो ग़ैर-मुस्लिम ही सही। यहाँ इस बात का जवाज़ (जायज़ होना) निकलता है कि सफ़र में वसीयत के वक़्त जब मुसलमान मौजूद न हों तो ज़िम्मियों को गवाह बनाया जा सकता है। शुरैह कहते हैं कि सफ़र और वसीयत के मौक़े के अ़लावा यहूद व ईसाईयों की गवाही किसी और वक़्त जायज़ नहीं। तीनों इमामों ने मुसलमान पर ज़िम्मियों की गवाही जायज़ नहीं समझी और इमाम अबू हनीफ़ा रह. ज़िम्मी की गवाही ज़िम्मी पर जायज़ क़रार देते हैं। ज़ोहरी रह. कहते हैं कि सुन्नत तरीक़ा यही है कि काफ़िर की शहादत (गवाही) न सफ़र में जायज़ है न हज़र (वतन) में। शहादत का हक़ सिर्फ़ मुसलमान को ही है। इब्ने ज़ैद रह. कहते हैं कि यह आयत उस वक़्त उतरी जबकि एक आदमी मर गया और उस वक़्त वहाँ कोई मुसलमान न था। शुरू इस्लाम का ज़माना था, सब शहर दारुल-हरब (काफ़िरों के इलाक़े) थे, लोग काफ़िर थे, विरासत का कोई क़ानून न था, बल्कि मरने वाले का माल वसीयत के मुताबिक़ तक़सीम होता था। फिर वसीयत मन्सूख़ हो गई और विरासत फ़र्ज़ हो गई, और लोग क़ानूने विरासत पर अ़मल करने लगे। इब्ने जरीर रह. ने इसको रिवायत किया है। यह चीज़ ज़रा क़ाबिले ग़ौर है। वल्लाहु आलम

फिर इसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि "या वे ग़ैर क़ौम में से हों" से क्या मुराद है, कि दोनों वसी (जिसको वसीयत की गयी हो) होंगे या गवाह हों। इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि एक आदमी ने सफ़र किया हो, उसके साथ माल हो तो अगर मुसलमानों में से दो आदमी पाये तो अपना तर्का (छोड़ा हुआ माल) उनके सुपुर्द कर दे और दो मुसलमान गवाहों को भी इस पर गवाह बना ले। यह तो वसी बनाने की सूरत थी, और अगर 'ग़ैर क़ौम में से हों' से मुराद यह है कि ये दोनों गवाह हों और आयते करीमा का ज़ाहिर मज़मून यही है, पस अगर उन दोनों के साथ तीसरा वसी (जिसको वसीयत की गयी हो) मौजूद न हो तो उन दोनों गवाहों में वसी होने और गवाह होने की सलाहियत मौजूद होनी चाहिए। जैसा कि तमीम दारी और अ़दी बिन बदा के क़िस्से में बयान हुआ है, जिसका ज़िक्र इन्शा-अल्लाह आएगा।

इब्ने जरीर ने एक इश्काल (शुब्हा) पेश किया है कि जब ये दोनों गवाह हों तो गवाह पर तो क़सम नहीं हुआ करती, लेकिन यह एक मुस्तक़िल हुक्म समझा जाएगा, दूसरे तमाम अहकाम का क़ियास (अन्दाज़ा) उस पर न होगा। यह एक ख़ास शहादत (गवाही) है, और ख़ास मौक़े के लिए है। इसमें और बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो दूसरे अहकाम में नहीं। हाँ जब शक का कोई कारण और इशारा हो तो इस आयत के अहकाम के मुताबिक़ उन गवाहों पर क़सम है, उन दोनों गवाहों को नमाज़ के बाद रोक लो, यानी अ़सर की नमाज़ के बाद। और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि उन दोनों गवाहों की मज़हबी नमाज़ के बाद। मक़सद यह है कि ये दोनों गवाह नमाज़ के बाद जमा हों ताकि भारी मजमे के सामने यह गवाही अ़मल में आए।

अल्लाह का फ़रमान-

"अगर तुम्हें शक हो" कि वे ग़लत बयान करेंगे या ख़ियानत करेंगे तो ऐसी सूरत में उन्हें क़सम भी खिला दें कि इस फ़ानी दुनिया की थोड़ी सी कमाई हम झूठी क़सम के ज़रिये नहीं कमाएँगे। अगरचे हमारी क़सम से किसी हमारे रिश्तेदार को नुक़सान ही क्यों न पहुँचे, हम ख़ुदा की शहादत को नहीं छुपाएँगे। (शहादत 'गवाही' के मामले की अहमियत के सबब शहादत की निस्बत अल्लाह की तरफ़ की गई है) अगर हमने शहादत में रद्दोबदल और कमी-बेशी कर दी या उसको बिल्कुल ही छुपा डाला तो हम गुनाहगार होंगे।"

फिर अगर दोनों गवाहों या वसियों (जिनको वसीयत की है) के बारे में सही ख़बर से यह साबित हो जाए कि उन्होंने ख़ियानत की और मरने वाले का माल वारिसों को पहुँचाने में ग़बन किया तो जिनका हक़ मारा गया है उनमें से दो गवाह उनकी जगह उठ खड़े हों, और दोनों तर्के के हक़दारों में से सबसे नज़दीकी वारिस खड़े हों, और ये दोनों ख़ुदा की क़सम खाकर बयान करें कि हमारी शहादत (गवाही) इनकी शहादत से ज़्यादा सही है। इन दोनों ने ख़ियानत की है और इस इल्ज़ाम लगाने में हमने कोई ज़्यादती नहीं की है। अगर हमने झूठ इल्ज़ाम लगाया हो तो हम गुनाहगार हैं, अल्लाह हमें समझे।

यह वारिसों की तरफ़ से गोया क़सम है जैसा कि मक़्तूल (क़त्ल किये गये) के वारिस क़सम खाते हैं जबकि क़ातिल की जानिब से बेईमानी साबित हो रही हो, जैसा कि तक़सीम के बाब में अहकाम मुक़र्रर है, और हदीसे नबवी भी इसी तरह मौजूद है जिस पर यह आयते करीमा दलालत करती है। तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान होने के बाद इस आयत "जब तुम में से किसी को मौत आने लगे जब वसीयत का वक़्त हो....." के बारे में कहते हैं कि इस गुनाह से दूसरे सब लोग बरी हैं। लेकिन मैं और अ़दी बिन बदा इस जुर्म के मुजरिम हैं। ये दोनों ईसाई थे। इस्लाम से पहले मुल्क शाम (सीरिया) की तरफ़ आते-जाते थे। चुनाँचे तिजारत की ग़र्ज़ से शाम आए हुए थे, उनके पास बनी सहम का ग़ुलाम भी तिजारत के लिए आया हुआ था। उसका नाम बदील बिन अबी मरियम था। उसके साथ तिजारत की ग़र्ज़ से चाँदी का एक प्याला था जो मुल्क शाम से लाया था और यह उसके माले तिजारत में सबसे अहम चीज़ थी। बीमार हो गया तो इन दोनों को वसी बनाया और कहा कि मेरा तर्का (छोड़ा हुआ माल) मेरे घर वालों को पहुँचा दिया जाए। तमीम दारी कहते हैं कि जब वह मर गया तो वह प्याला हमने लेकर एक हज़ार दिर्हम में बेच दिया और आपस में हम दोनों ने रक़म बाँट ली, और बाक़ी माल उसके घर वालों को लाकर दे दिया। उन लोगों ने प्याले के बारे में पूछा, हमने कहा जो कुछ था हमने लाकर दे दिया, प्याले की हमको ख़बर नहीं। लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल. के मदीना तशरीफ़ लाने के बाद जब मैं मुसलमान हो गया तो मैं उन लोगों के पास आया और सही वाक़िआ सुनाया, और उन्हें पाँच सौ दिर्हम अपने हिस्से के दे दिए और कहा इतनी ही रक़म मेरे साथी के पास भी है, चुनाँचे वे लोग उसके पास पहुँचे तो नबी सल्ल. ने उन्हें हुक्म दिया कि उससे उसके मज़हब की बिना पर क़सम लें। उसने क़सम खा ली, चुनाँचे यह आयत उतरी। अब अ़मर बिन आ़स और एक दूसरे शख़्स उठे और क़सम खाई कि "बेशक हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़्यादा हक़ और सही है" चुनाँचे अ़दी से पाँच सौ दिर्हम ले लिए गए। और यह प्याला मक्का में पाया गया। ख़रीदारों ने कहा कि हमने इसको तमीम और अ़दी से ख़रीदा था। तो सहमी के वारिसों में से दो आदमी उठे और क़सम खाई कि हमारी क़सम इसकी क़सम से सच्ची है और यह प्याला हमारे साथी का है। उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी थी।

और बयान किया गया है कि यह हलफ़ अ़सर की नमाज़ के बाद लिया गया था। यह चीज़ इस बात

Maktab E Ashraf

पर दलालत करती है कि पहले बुज़ुर्गों में इस वाक़िए का सही होना और अ़वाम में मशहूर है। इसके सही होने की यह भी दलील है कि अबू जाफ़र बिन जरीर ने रिवायत की है कि एक मुसलमान की वफ़ात सफ़र की हालत में हो गई और वसी बनाने के लिए वहाँ कोई मुसलमान नहीं था, तो मरने वाले ने अहले किताब में से दो अफ़राद को गवाह बना लिया। अब ये दोनों अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. के पास कूफ़ा में आए और मरने वाले का तर्का (छोड़ा हुआ माल) और वसीयत पेश की तो अबू मूसा अश्अ़री ने कहा- ऐसा ही वाक़िआ तो नबी सल्ल. के पास पेश हुआ था और अब यह दूसरा है, चुनाँचे नमाज़े अ़सर के बाद उन दोनों को क़सम दी गई कि हमने न ख़ियानत की है, न झूठ कहा, न कुछ छुपाया और यह मरने वाले के तर्के और वसीयत के मुताबिक़ है। चुनाँचे उनकी शहादत (गवाही) सही मान ली गई और उसी शहादत पर अबू मूसा अश्अ़री ने फ़ैसला कर दिया।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में ऐसे ही वाक़िए से मुराद तमीम व अ़दी का क़िस्सा था। और कहा गया है कि तमीम दारी का वाक़िआ उनके इस्लाम क़बूल करने से पहले सन् 9 हिजरी का है और ज़ाहिर है कि अबू मूसा अश्अ़री वाला वाक़िआ दूसरा वाक़िआ था। इस आयत में हुक्म है कि मरने वाला मौत के वक़्त वसी बना दे और दो मुसलमान गवाह क़रार दे कि उसको क्या लेना और क्या देना है। यह तो वतन में मौजूद रहने का मसला था जो इस आयत की बिना पर थाः

يَـآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ.

यानी ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में दो शख़्सों का वसी होना मुनासिब है जबकि तुम में से किसी को मौत आने लगे, वे दो शख़्स ऐसे हों कि दीनदार हों और तुम में से हों।

और सफ़र के बारे में हैः

اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ.

जबकि कोई मुसलमान मौत के वक़्त मौजूद न हो तो यहूद व ईसाई या मजूसी (आग को पूजने वालों) में से दो आदमी ले लें और उन्हें वसीयत करके मीरास उनके सुपुर्द कर दें। अब अगर मरने वाले के परिजनों ने वसीयत को सही मान लिया तो ठीक वरना हाकिम के पास मुक़द्दिमा पेश होगा। अब अल्लाह तआ़ला का हुक्म है किः

تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْ م بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ.

यानी अगर तुम्हें उनकी सच्चाई पर शक हो तो नमाज़ के बाद उन्हें अल्लाह की क़सम दिलाओ। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मरने वाले के परिजनों ने इनकार किया था और उन दोनों गवाहों को डराया धमकाया तो अबू मूसा अश्अ़री ने उन दोनों को नमाज़े अ़सर के बाद क़सम दिलाई। मैंने कहा कि हमारी नमाज़ की उनके नज़दीक क्या वक़्अ़त हो सकती है? उन्हें तो उनकी नमाज़ के बाद क़सम दिलाई जाए। चुनाँचे अपने मज़हब की रू से नमाज़ पढ़ने के बाद उन्होंने क़समें खाईं कि हम थोड़े से माल के लिए अपनी क़समों को नहीं बेचेंगे अगरचे किसी रिश्तेदार की ख़ातिर ही क्यों न हो। हम ख़ुदा की शहादत को नहीं छुपाएँगे वरना हम गुनाहगार हैं। तुम्हारे साथी ने बस यही वसीयत की थी और यही उसका तर्का (छोड़ा हुआ माल) था। क़सम खाने से पहले इमाम ने उनसे कह दिया था कि अगर तुमने कुछ छुपाया या ख़ियानत की तो अपनी क़ौम में तुम रुस्वा हो जाओगे और फिर कभी तुम्हारी शहादत (गवाही) क़बूल

नहीं की जाएगी और तुम्हें सज़ा भी दी जाएगी तो यही एक सूरत ऐसी है कि गवाह अपनी गवाही के मुताबिक़ वाक़िआ रख सकते हैं और उन्हें ख़ौफ़ रहेगा कि कहीं ऐसा न हो कि इन मुसलमानों की दोबारा क़समों के बाद हमारी पहली क़समें रद्द कर दी जाएँ। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا.

यानी अगर मालूम हो जाए कि उन्होंने नाजायज़ तौर पर हक़ दबा लिया है तो उनके क़ायम-मक़ाम (उनकी जगह) और दो शख़्स खड़े हों जिनका हक़ मारा गया है, कि काफ़िरों की शहादत झूठी है और हम ज़्यादती नहीं कर रहे हैं। अब काफ़िरों की शहादत रद्द कर दी जाएगी और वारिसों की शहादत क़बूल कर ली जाएगी। इस आयत का तक़ाज़ा यही हुक्म है। अक्सर इमामों, ताबिईन और पहले बुज़ुर्गों और इमाम अहमद वग़ैरह का भी यही मज़हब है। और अल्लाह तआला के क़ौल "यह क़रीब ज़रिया है इस बात का कि वे लोग सही वाक़िए को ठीक तौर पर ज़ाहिर कर दें" का।

यानी इस हुक्म को शरीअ़त में इसी वजह से पसन्द किया गया है कि ज़िम्मी गवाहों को क़सम दिलाई जाए क्या अ़जब है कि वे लोग अल्लाह की क़सम खाते वक़्त उसकी ताज़ीम के लिए और रुस्वाई के ख़ौफ़ से कि वारिस लोग अगर अपनी क़समों से हमारी क़समों को रद्द कर दें तो फिर हमें सज़ा भी मिलेगी, सच बोलें। फिर फ़रमाया कि सच बोलो और ख़ुदा से डरो, उसकी बात सुनो, उसकी इताअ़त करो, वरना नाफ़रमानों और फ़ासिक़ों को तो अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ देता ही नहीं, और सही राह दिखाता ही नहीं।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ○	जिस दिन अल्लाह तआ़ला पैग़म्बरों को (मय उनकी उम्मतों के) जमा करेंगे, फिर इरशाद फ़रमाएँगे कि तुमको (उन उम्मतों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला था? वे अ़र्ज़ करेंगे कि (ज़ाहिरी जवाब तो हमें मालूम है, लेकिन उनके दिल की) हमको कुछ ख़बर नहीं, आप बेशक छुपी बातों के जानने वाले हैं। (109)

पैग़म्बरों की गवाही

इस आयत में बतलाया गया है कि क़ियामत के दिन पैग़म्बरों से अल्लाह तआ़ला किस तरह ख़िताब फ़रमायेगा कि जिन क़ौमों की तरफ़ तुमको भेजा गया उन्होंने तब्लीग़ की दावत को क़बूल भी किया या नहीं? चुनाँचे फ़रमाता है:

فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ.

कि हम उन क़ौमों से भी पूछेंगे और उनके पैग़म्बरों से भी पूछेंगे। फिर इरशाद होता है:

فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ. عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.

तुम्हारे ख़ुदा की क़सम कि हम उन सबसे पूछेंगे कि दुनिया में तुम्हारा अ़मल क्या था।
रसूलों का क़ौल होगा कि:

Maktab-E-Ashraf

Maktab E Ashraf

لَاعِلْمَ لَنَا.

यानी हमें तो कुछ ख़बर नहीं।

यह उस दिन की दहशत (घबराहट) की बिना पर होगा कि ख़ौफ़ के मारे उन्हें कुछ जवाब न बन पड़ेगा और कह देंगे कि हमें कुछ इल्म नहीं। उस दिन होश व हवास ठिकाने नहीं रहेंगे और फिर जब कुछ इत्मीनान की साँस लेंगे तो फिर अपनी क़ौम के बारे में हक़ीक़त व वास्तविकता के मुताबिक़ गवाही दे देंगे। लेकिन पहली दफ़ा तो यही उनका क़ौल होगा कि ऐ ख़ुदा! हमें क्या ख़बर तू आ़लिमे ग़ैब है, तेरे मुक़ाबले में हम क्या जान सकते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि अदब के लिहाज़ से यह बहुत अच्छा जवाब है कि तेरे इल्मे मुहीत (जो हर चीज़ को घेरे हुए है) के मुक़ाबले में हमारे इल्म की क्या हक़ीक़त है। हमारे इल्म की बुनियाद महज़ ज़ाहिर पर है और तेरा इल्म तो छुपी हुई बातों पर भी है, क्योंकि तू ग़ैब की बातों का भी जानने वाला है, तू जानता है जो कुछ उन्होंने जवाब दिया था। अब अगर मुनाफ़िक़ (दोग़ला) होने की बिना पर किसी का अ़मल या एतिक़ाद रहा हो तो हमें तो उसका इल्म नहीं, तू ही जानता है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ م اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ قف تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ج وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰةَ وَالْاِنْجِيْلَ ج وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا م بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ج وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ج وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ○ وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ

जब अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाएँगे कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! मेरा इनाम याद करो जो तुम पर और तुम्हारी माँ पर (हुआ है) जबकि मैंने तुमको रूहुल-क़ुदुस से ताईद दी। तुम आदमियों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी, और जबकि मैंने तुमको किताबें और समझ की बातें और तौरात और इन्जील तालीम कीं, और जबकि तुम मेरे हुक्म से गारे से एक शक्ल बनाते थे जैसे परिन्दे की शक्ल होती है, फिर तुम उसके अन्दर मेरे हुक्म से फूँक मार देते थे जिससे वह परिन्दा बन जाता था, और तुम मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे जन्म के अन्धे को और कोढ़ के बीमार को, और जबकि तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को निकालकर खड़ा कर लेते थे, और जबकि मैंने बनी इस्राईल को तुमसे (यानी तुम्हारे क़त्ल व हलाक करने से) बाज़ रखा जब तुम उनके पास दलीलें लेकर आए थे, फिर उनमें जो काफ़िर थे उन्होंने कहा था कि यह सिवाये खुले जादू के और कुछ भी नहीं। (110) और जबकि मैंने हवारियों को हुक्म दिया कि तुम मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ।

Maktab E Ashraf

وَبِرَسُوْلِىْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ○	उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए, आप गवाह रहिये कि हम पूरे फ़रमाँबरदार हैं। (111)

ईसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ और कुछ तफ़सीलात

यहाँ अल्लाह तआ़ला उन एहसानों का ज़िक्र फ़रमाता है जो ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम पर वारिद फ़रमाये कि ईसा अ़लैहिस्सलाम हमारे उन एहसानों को याद करो जो खुले मोजिज़ों और असाधारण चीज़ों से हमने तुम्हें नवाज़ा। तुम्हें बाप के बग़ैर सिर्फ़ माँ से पैदा किया, और तुम्हारी ज़ात को ख़ुद अपनी कामिल क़ुदरत की एक निशानी क़रार दिया और तुम्हारी माँ पर यह एहसान किया कि तुम्हें उसकी पाकदामनी की दलील बना दिया और जो गन्दा और बेहूदा इल्ज़ाम ये ज़ालिम और जाहिल लगाते थे उससे तुम्हारी माँ को बचाया। तुम्हें जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये मदद दी, तुम्हें बचपन और जवानी में भी नबी और अल्लाह का दाओ़ी बनाया कि तुम गहवारे में भी बोलने लगे और माँ की पाकदामनी की गवाही देने लगे और अपने बन्दा होने का एतिराफ़ किया। बचपन और जवानी में भी लोगों को तब्लीग़ की, बड़ी उम्र में बोलना तो कोई अ़जब नहीं लेकिन गहवारे (पालने) में तुम्हारा बोलना कैसा अ़जीब थ। तुम्हें किताब की तालीम की और तौरात को पढ़ना और लिखना सिखाया जो मूसा कलीमुल्लाह पर उतारी गई थी। हदीस में भी तौरात का लफ़्ज़ है और इससे मुराद है तौरात भी और हर दूसरी किताब भी।

तुम मिट्टी से परिन्दे के जैसी शक्ल बनाते थे और हमारे हुक्म से उसमें फूँक मारते तो वह एक ज़िन्दा परिन्द (पक्षी) बन जाता था और ख़ुदा के हुक्म से उड़ने लगता था। जैसा कि सूरः आले इमरान में तफ़सील से यह बयान गुज़र चुका है। तुम मुर्दों को बुलाते थे तो वे ख़ुदा के हुक्म और उसकी क़ुदरत से जीते जागते क़ब्रों से निकल आते।

ईसा अ़लैहिस्सलाम जब इरादा करते कि किसी मय्यित को ज़िन्दा करें तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ते। पहली रक्अ़त में सूरः मुल्क पूरी पढ़ते और दूसरी में सूरः सज्दा (पारः 21) पढ़ते, फिर ख़ुदा की तारीफ़ बयान करते। फिर ये सात अल्लाह के पाक नाम पढ़तेः

يَا قَدِيْمُ، يَا خَفِيُّ، يَا دَآئِمُ، يَافَرْدُ، يَاوَتْرُ، يَا اَحَدُ، يَا صَمَدُ.

या क़दीमु, या ख़फ़िय्यु, या दाईमु, या फ़र्दु, या वतरु, या अ-हदु, या स-मदु।

और अगर कोई सख़्त परेशानी पेश आ जाती तो ये सात नाम लेकर दुआ़ करतेः

يَـاحَـيُّ، يَـاقَيُّوْمُ، يَـآاَللّٰـهُ، يَـارَحْـمٰنُ، يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْـرَامِ، يَـانُوْرَالسَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَابَيْنَهُمَاوَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ يَارَبِّ.

या हय्यु या क़य्यूमु या अल्लाहु या रहमानु या ज़ल-जलालि वल-इक्रामि या नूरस्समावाति वल-अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल-अ़र्शिल् अ़ज़ीम, या रब्बि।

ये ज़बरदस्त असर वाले नाम हैं।

नोटः सूरतों और नामों को पढ़कर दुआ़ करने की जो रिवायतें बयान की हैं, मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. (पूर्व

Maktab E Ashraf

शैख़ुल-हदीस दारुल उलूम वक़्फ़ देवबन्द) की तहक़ीक़ के मुताबिक़ ये दोनों बातें किसी हदीस या रिवायत से साबित नहीं, न मालूम इब्ने कसीर ने किससे सुनकर इनको नक़ल किया है। देखिये तफ़सीर इब्ने कसीर उर्दू प्रकाशित देवबन्द।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

और मेरी उन नेमतों को याद करो कि जब तुम बनी इस्राईल के पास नुबुव्वत की दलीलें लेकर पहुँचे और उन्होंने तुम्हें झुठलाया, तुम पर इल्ज़ाम लगाया कि तुम जादूगर हो और तुम्हें क़त्ल करने और सूली देने की कोशिशें कीं। तो हमने तुम्हें उनसे बचा लिया। अपनी तरफ़ तुम्हें उठा लिया। उनकी बुराई से तुम्हें बचा लिया। यह चीज़ दलालत करती है कि यह एहसान ईसा अ़लैहिस्सलाम पर उनके उठा लिए जाने के बाद का है या यह कि क़ियामत के दिन वाक़े होने वाला है। लेकिन भविष्य को अतीत के लफ़्ज़ से ताबीर किया गया है। क्योंकि ख़ुदा के पास मुस्तक़बिल (आने वाला ज़माना) भी माज़ी (गुज़रे हुए ज़माने) ही की तरह यक़ीनी वाक़े होने वाली चीज़ है। यह ग़ैब के भेद हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वाक़िफ़ कराया है।

और जब हमने हवारियों को वही भेजी कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। यानी ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथी और मददगार बन जाओ। यहाँ 'वही' से मुराद दिल में एक बात डाल देना है, जैसा कि फ़रमाया है कि हमने मूसा की माँ की तरफ़ भी 'वही' भेजी थी कि मूसा को दूध पिलाओ। ऐसे इल्हाम (अल्लाह की तरफ़ से दिल में बात डाले जाने) को बिना किसी मतभेद के 'वही' (यानी अल्लाह की तरफ़ से उतरी हुई चीज़) कहा गया है। और फ़रमाया है कि हमने शहद की मक्खी की तरफ़ 'वही' भेजी कि पहाड़ों और दरख़्तों में अपना घर बनाओ और लोगों के महलों में। इसी तरह हवारियों को भी इल्हाम किया गया तो वे हुक्म बजा लाए। और यह भी मुम्किन है कि मुराद यह हो कि हमने तुम्हारे वास्ते से उन पर 'वही' भेजी और उन्हें अल्लाह पर ईमान लाने की तरफ़ बुलाया, तो उन्होंने क़बूल कर लिया और कहने लगे:

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ.

यानी ऐ पैग़म्बर गवाह रहो कि हम इस्लाम लाए।

(वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जबकि हवारियों ने अर्ज़ किया कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या आपके रब ऐसा कर सकते हैं कि हम पर आसमान से दस्तरख़्वान (यानी कुछ खाना) नाज़िल फ़रमा दें? आपने फ़रमाया ख़ुदा तआ़ला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (112) वे बोले, हम यह चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे दिलों को पूरा इत्मीनान हो जाए, और हमारा यह यक़ीन और बढ़ जाए कि आपने हमसे सच बोला है, और हम गवाही देने वालों में से हो	اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ط قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ○ قَالَ

Maktab E Ashraf

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ ع	जाएँ। (113) ईसा इब्ने मरियम ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार! हम पर आसमान से दस्तरख़्वान (यानी खाना) नाज़िल फ़रमाइए कि वह हमारे लिए यानी हममें जो अव्वल हैं और जो बाद में हैं सबके लिए ईद (यानी एक ख़ुशी की बात) हो जाए, और आपकी तरफ़ से एक निशान हो जाए, और आप हमको अ़ता फ़रमाईये कि आप सब अ़ता करने वालों से अच्छे हैं। (114) हक़ तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि मैं वह खाना तुम लोगों पर नाज़िल करने वाला हूँ, फिर जो शख़्स तुममें से हक़ न पहचानने का जुर्म करेगा तो मैं उसको ऐसी सज़ा दूँगा कि वह सज़ा दुनिया जहान वालों में से किसी को न दूँगा। (115)

ع ١٥ ٥

आसमानी दस्तरख़्वान

यहाँ मायदा (दस्तरख़्वान) का क़िस्सा बयान किया जा रहा है, इसी लिए इस सूरः का नाम मायदा रखा गया। इसमें भी अल्लाह पाक ने अपने बन्दे और रसूल हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर एहसान का इज़्हार फ़रमाया है। यानी मायदा के उतरने की दुआ़ क़बूल की गई है जो हज़रत ईसा का एक ज़बरदस्त मोजिज़ा (चमत्कार) और न कटने वाली दलील है। बाज़ इमामों ने बयान किया है कि यह क़िस्सा इन्जील में मज़कूर नहीं और मुसलमानों के सिवा ईसाई इससे वाक़िफ़ नहीं थे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन के ज़रिये उन्हें इत्तिला दी। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि जब ईसा की पैरवी करने और मानने वालों ने कहा कि ऐ ईसा! क्या तुम्हारे रब से यह हो सकता है कि आसमान से एक बना बनाया ख़्वाने नेमत नाज़िल फ़रमाए? यहाँ अक्सर क़ारियों ने यही लफ़्ज़ पढ़े हैं कि "क्या तुम्हारे रब से यह मुम्किन है" जबकि कुछ दूसरे क़ारी इस तरह पढ़ते हैं "क्या तुमसे यह मुम्किन है कि अपने रब से सवाल करो"। मायदा उस ख़्वान को कहते हैं जो खानों से भरा हुआ हो।

बाज़ का बयान है कि ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथियों ने अपनी हाजत और तंगदस्ती की वजह से यह सवाल किया था कि रोज़ाना एक ख़्वान उतरा करे जिसको हम खाएँ और इबादत के लिए क़ुव्वत हासिल करें। तो ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो ख़ुदा से डरो और ऐसा सवाल न करो, रिज़्क़ की तलब में अल्लाह पर भरोसा करो। कहीं ऐसा न हो कि यही चीज़ तुम्हारे लिए फ़ितना बन जाए। हवारियों ने कहा कि हम ग़िज़ा के मोहताज हो गए हैं, हमें खाने के लिए चाहिए और जब हम आसमान से उतरता हुआ मायदा (ख़्वान) देखेंगे तो हमको पूरा इत्मीनान हो जाएगा और तुम पर ईमान बढ़ जाएगा और तुम्हारे रसूल होने का कामिल यक़ीन हो जायेगा, और हम ख़ुद इसके गवाह बन जाएँगे कि यह अल्लाह की तरफ़ से एक निशानी है और ईसा की नुबुव्वत और सच्चाई की वाज़ेह दलील है। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम

ने दुआ माँगी कि "ऐ रब! आसमान से हम पर एक मायदा उतार, इस रोज़ की याद में हमारे अगले और पिछले लोग ईद मनाएँगे।

सुफ़ियान सौरी कहते हैं कि "ईद मनाने" से मुराद यह है कि हम उस रोज़ नमाज़ें पढ़ने लगेंगे। क़तादा रह. ने कहा है कि इससे मुराद यह है कि हम से बाद में आने वालों के लिए यह दिन एक यादगार दिन बन जाए। सलमान फ़ारसी रज़ि. कहते हैं- ताकि हम सबके लिए एक इबरत (सबक़) बन जाए और रिसालत की तस्दीक़ के लिए काफ़ी दलील हो सके।

और ऐ ख़ुदा हर बात पर तेरी क़ुदरत की और मेरी दुआ की क़बूलियत की दलील बन सके। ताकि लोग मेरी रिसालत की तस्दीक़ कर सकें। अपनी तरफ़ से बिना किसी परेशानी और थकन के उम्दा रिज़्क़ भेज। तू बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। अल्लाह तआला ने कहा "अच्छा मैं ख़्वान उतार दूँगा लेकिन अगर इस पर भी तुम्हारी क़ौम ने कुफ़्र किया और मुख़ालफ़त की तो मैं उसको ऐसा अ़ज़ाब दूँगा कि किसी ने ऐसा अ़ज़ाब न चखा होगा।" जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ اُدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ.

कि जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी तो फ़िरऔन वालों को जहन्नम से बहुत सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल होने के लिये कहा जायेगा।

और

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ.

यानी बेशक मुनाफ़िक़ लोग जहन्नम के सबसे निचले गढ़े में होंगे।

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने कहा है कि क़ियामत के दिन बहुत सख़्त अ़ज़ाब जिन पर होगा वे ये तीन हैं: 1. मुनाफ़िक़ लोग। 2. मायदा उतरने के बाद भी जिन्होंने कुफ़्र किया। 3. फ़िरऔन की उम्मत।

हवारियों के मायदा से मुताल्लिक़ रिवायतें

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से कहा कि क्या तुम तीस दिन तक रोज़े रखोगे, फिर ख़ुदा तआ़ला से मायदा के उतारने का सवाल करोगे ताकि वह तुम्हारी दरख़्वास्त क़बूल करे? क्योंकि अज्र उसी को मिलता है जिसने ख़ुद भी अ़मल किया हो। चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया, तीस दिन रोज़े रखे और फिर कहा कि ऐ ख़ैर की तालीम देने वाले ईसा! तुमने कहा था कि अ़मल करने वालों को उसका अज्र (बदला) ज़रूर मिलता है। तुमने हमें तीस दिन रोज़े रखने के लिए कहा और हमने ऐसा ही किया। तीस दिन हम किसी की नौकरी करते हैं तो वह हमको रोज़ी या तन्ख़्वाह देता है, तो अब क्या तुम्हारा ख़ुदा हम पर मायदा (दस्तरख़्वान) उतारेगा? हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा अगर तुम मोमिन हो तो ख़ुदा से डरो। हवारियों ने जवाब दिया कि हम अपने दिल का इत्मीनान चाहते हैं, ख़ुद भी यक़ीन करके दूसरों के सामने भी गवाह बनना चाहते हैं।

ग़र्ज़ यह कि आसमान से मायदा उतरा जिसमें सात मछलियाँ और सात रोटियाँ थीं, और उनके सामने आकर रुक गया, जिसे शुरू से लेकर आख़िर तक तमाम लोगों ने खाया। अ़म्मार बिन यासिर रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मायदा में रोटी और गोश्त था और हुक्म था कि इसमें ख़ियानत न करें और कल के लिए उठाकर न रखें। लेकिन लोगों ने ख़ियानत की और अपने लिए जमा कर रखा। ऐसे

लोगों की सूरतें मस्ख़ हो (बिगड़) गईं। बन्दर और सुअर बना दिये गये। और यह भी कहा गया है कि उसमें जन्नत के मेवे थे। कहते हैं कि अम्मार बिन यासिर ने नमाज़ पढ़ने के बाद अपने क़रीब खड़ी होने वाले बनी अ़जल के एक आदमी से कहा जानते हो बनी इस्राईल का मायदा कैसा था? लोग उसमें से खाते जाते थे और वह ख़त्म नहीं होता था, और कह दिया गया था कि अगर तुम इसमें ख़ियानत न करोगे और कल के लिए ज़ख़ीरा करना न चाहोगे तो यह तुम्हारे लिये पायदार (हमेशा) रहेगा, और अगर तुमने ज़ख़ीरा (स्टॉक) किया तो ऐसा अ़ज़ाब दिया जाएगा कि किसी को न दिया गया होगा। लेकिन पहले ही उन्होंने उसमें से छुपा रखा और ख़ियानत की। और ऐ अ़रब वालो! तुम भी ऊँटों और बकरों की दुमें मरोड़ते थे, यानी बहुत ही बदतर हालत में थे, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हीं में से एक रसूल पैदा किया। तुम उसका क़बीला, ख़ानदान और अख़्लाक़ व आ़दात जानते हो। उसने तुम्हें इत्तिला दे दी कि तुम अ़जम (अ़रब से बाहर वालों) पर भी ग़ालिब आने वाले हो और बड़े मालदार बनने वाले हो। ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरह तुम्हारे रसूल ने भी तुम्हें मना कर दिया है कि सोने चाँदी का ज़ख़ीरा न करो। ख़ुदा की क़सम कोई दिन नहीं जाता कि तुम अपना यह ख़ज़ाना बढ़ाते न रहते हो। देखो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत की तरह ख़ुदा तआ़ला कहीं तुम्हें हमेशा के दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला न कर दे।

इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि मायदा में सात मछलियाँ और सात रोटियाँ थीं। लोगों ने खाया और कल के लिये भी उठा रखा। चुनाँचे मायदा का आना बन्द हो गया। कहते हैं कि उसमें हर क़िस्म का ज़ायक़ा था और जन्नत के मेवे होते थे, हर दिन उतरता रहा, उसे चार हज़ार आदमी बैठकर खाते थे, और जब खा चुकते तो और उतना ही मौजूद होता। जौ की रोटियाँ होतीं, सब लोगों के खा लेने के बाद भी बच रहता। सईद बिन जुबैर रह. कहते हैं कि बकरे के गोश्त के सिवा हर चीज़ होती। हज़रत इक्रिमा कहते हैं कि चावल की रोटियाँ होती थीं। हज़रत वहब और सलमानुल्-ख़ैर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से मायदा का सवाल किया गया तो उन्हें बुरा मालूम हुआ और कहा कि ज़मीन से तुम्हें जो रिज़्क़ दिया गया है उसी पर क़नाअ़त (सब्र) करो और आसमान से रिज़्क़ नाज़िल होने का सवाल न करो। क्योंकि यह ख़ुदा तआ़ला का एक मोजिज़ा (करिश्मा) होगा। और समूद ने जिस तरह अपने नबी से सवाल किया था लेकिन सवाल पूरा होने के बावजूद कुफ़्र करने की वजह से हलाक हो गये थे, कहीं तुम्हारे साथ भी ऐसा ही न हो, लेकिन वे ज़िद करते रहे और जब हज़रत ईसा ने देखा कि ख़ुदा से दुआ़ किए बग़ैर चारा नहीं तो अपना जुब्बा उतार दिया और काले बालों का कुर्ता और जुब्बा पहन लिया, कम्बल ओढ़ लिया, वुज़ू और ग़ुस्ल करके इबादतगाह गये, देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। फिर क़िब्ला-रुख़ खड़े हो गये, अपने क़दम जोड़ लिये टख़्ना मिला लिया, उंगलियाँ सीधी रख लीं, सीधा हाथ बाएँ हाथ पर रखकर सीने पर बाँध लिया, सर झुका लिया और नज़रें नीची कर लीं, रुख़्सारों पर आँसू बहते हुए दाढ़ी पर से होते हुए ज़मीन पर गिर रहे थे और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ माँग रहे थे।

अब एक सुर्ख़ ख़्वान दो बादलों के दरमियान आसमान से उतरना शुरू हुआ। लोग उसे ऊपर से गिरता हुआ देख रहे थे और ख़ुश हो रहे थे, लेकिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदा के ख़ौफ़ से रो रहे थे। क्योंकि बारी तआ़ला ने ईमान लाने की शर्त के साथ ख़्वान को नाज़िल किया था कि अगर इसके बाद भी वे ईमान न लाएँगे तो बहुत सख़्त अ़ज़ाब उठाएँगे। वह ख़ुदा से माँग रहे थे और कह रहे थे, ऐ ख़ुदा! तू इसको रहमत बना और अ़ज़ाब न बना। कितनी अ़जीब बातें जो मैंने तुझसे माँगी थीं वे तूने मुझे अ़ता कीं, ऐ ख़ुदा हमें शाकिर बना, ऐ ख़ुदा इस मायदा के ग़ज़ब का सबब बनने से मैं पनाह माँगता हूँ इसको सलामती व

आफ़ियत बना और फ़ितना (आज़माईश) न बना।

वह दुआ माँग ही रहे थे कि ख़्वान उनके हवारियों के सामने आकर रुक गया। उसमें ऐसी खुशबू थी कि कभी ऐसी खुशबू सूँघने में न आई थी। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनके हवारी सज्दा-ए-शुक्र में गिर पड़े, क्योंकि ऐसी अ़ज़ीम निशानी और इबरतनाक चीज़ उन्होंने देखी जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। यहूद इस अजीब चीज़ को देख रहे थे और उनके दिल रंज व ग़म से भरे हुए थे। फिर वे आप ही आप बल खाते हुए चल दिये। अब ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनके साथी खुद उनके पास आए और ख़्वान पर रूमाल ढका हुआ था। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा इस पर से रूमाल कौन उठायेगा? हममें से जो अपने नफ़्स पर सबसे ज़्यादा मुत्मईन है और इम्तिहाने खुदावन्दी में सबसे ज़्यादा निडर है वह रूमाल हटाये ताकि हम खुदा के रिज़्क़ को देखें और उसका नाम लेकर खाने लगें। हवारियों ने कहा ऐ रूहुल्लाह! आपसे बढ़कर इसका हक़दार कौन है? यह सुनकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उठे, ताज़ा वुज़ू किया, मस्जिद में आये, नमाज़ पढ़ी, कुछ देर तक रोते रहे और खुदा से दुआ की कि मायदा को खोलने की इजाज़त दे और इस क़ौम के लिये बरकत व रिज़्क़ अ़ता फ़रमा।

अब ख़्वान के पास जाकर रूमाल हटाया। देखा कि उसमें एक बड़ी तली हुई मछली रखी है, जिसके पोस्त (छिलके और खाल) पर न फ़ुलूस है और न गोश्त में कोई काँटा है। रोग़न उसमें से बह रहा है, उसमें हर क़िस्म की सब्ज़ियाँ भी हैं सिवाये मूली के। उसके सर की तरफ़ सिरका है और दुम की तरफ़ नमक है, सब्ज़ियों के किनारों पर पाँच रोटियाँ हैं जिनमें एक पर रोग़ने ज़ैतून है और दूसरी पर खजूरें हैं और पाँच अनार हैं। हवारियों के सरदार शमऊन ने कहा- ऐ रूहुल्लाह! यह हमारी दुनिया का खाना है या जन्नत का खाना है? ईसा अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि क्या अब भी वक़्त नहीं आया कि जो कुछ अ़जीब और चमत्कारी चीज़ें देख रहे हो उससे इबरत (सबक़) लो और इन सवालात से बाज़ आओ? मुझे तो डर है कि यही निशानी कहीं तुम्हारे लिए अ़ज़ाब का सबब न बन जाए। शमऊन ने कहा नहीं! इस्राईल के खुदा की क़सम ऐ सच्ची माँ के बेटे मेरा मक़सद इससे कोई सवाल करना नहीं था। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि न यह दुनिया का खाना है और न जन्नत का खाना, यह तो अल्लाह तआ़ला ने अपनी क़ुदरते कामिला से आसमान ही में पैदा कर दिया है और वह सिर्फ़ 'कुन' (यानी हो जा) फ़रमा देता है और पलक झपकते में वह चीज़ पैदा हो जाती है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर खाओ और खाकर शुक्र अदा करो। अल्लाह तआ़ला और ज़्यादा अ़ता फ़रमायेगा। क्योंकि वही हर चीज़ का बनाने वाला, क़ादिर और शाकिर है।

हवारियों ने कहा ऐ रूहुल्लाह! हम चाहते हैं कि इस मोजिज़े (चमत्कार और करिश्मे) के अन्दर एक और मोजिज़ा हमें दिखाई दे। ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा सुब्हानल्लाह! क्या यह निशानी जो तुमने देखी है काफ़ी नहीं, कि इसी में फिर दूसरी निशानी का सवाल करते हो? फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने मछली से मुख़ातिब होकर फ़रमाया 'ऐ मछली! खुदा के हुक्म से ज़िन्दा हो जा'। चुनाँचे वह भुनी हुई मछली खुदा के हुक्म से ज़िन्दा हो गई और तरोताज़ा होकर तड़पने लगी। शेर की तरह मुँह फाड़ने लगी, उसकी आँखें घूमने और चमकने लगीं, उसके जिस्म पर खपल भी ज़ाहिर हो गये। यह देखकर लोग डर गये, ईसा अ़लैहिस्सलाम ने देखकर फ़रमाया कि तुम तो और एक निशानी माँग रहे थे और तुम्हें दिखाई गई तो डरने लगे? मुझे तो अन्देशा है कि तुम जो कुछ कर रहे हो यह तुम्हारे लिए अ़ज़ाब और फ़ितने का सबब होगा। अब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ मछली! खुदा के हुक्म से जैसी थी वैसी ही हो जा, चुनाँचे वह

पहले ही की तरह भुनी हुई बन गई। लोगों ने कहा ऐ ईसा! तुम पहले खाओ फिर हम खाएँगे। ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा ख़ुदा की पनाह! जिसने मुतालबा किया उसी को पहले खाना चाहिए।

जब हवारियों (हज़रत ईसा के साथियों) ने देखा कि ईसा नहीं खा रहे हैं तो डर गये कि मायदा का उतरना नाराज़गी का कारण है और इसके खाने में अन्देशा (कोई ख़तरा और डर) है, और रुक गए तो ईसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़क़ीरों, ग़रीबों और बीमारों को बुलाया और कहा खाओ, यह अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ रिज़्क़ है, और तुम्हारे नबी की तरफ़ से दावत है, और ख़ुदा का शुक्र अदा करो जिसने तुम्हें यह दिया यह तुम्हारे लिए मुबारक है और दूसरों के लिए अ़ज़ाब है।

नोटः ग़रीबों और फ़क़ीरों ने चूँकि मायदा उतरने का मुतालबा नहीं किया था इसलिये उनके लिये किसी तरह का कोई डर और पकड़ वाली बात न थी। हाँ जिन्होंने इस मोजिज़े को तलब किया वे अगर फिर भी ईमान न लायें तो उन पर हुज्जत पूरी हो जायेगी, फिर अगर नहीं मानेंगे तो अ़ज़ाब आने में क्या शुब्हा है। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

चुनाँचे वे सब अल्लाह का नाम लेकर खाने लगे, तेरह सौ मर्द और औ़रतों ने खाया और सब पेट भरकर उठे। फिर यह मायदा (ख़्वान) आसमान की तरफ़ चला और लोग देखते रह गये। हर फ़क़ीर खाकर ग़नी (मालदार) बन गया और मरीज़ तन्दुरुस्त हो गया। फिर यह हमेशा ग़नी और तन्दुरुस्त रहे और जिन हवारियों ने खाने से इनकार किया था वे सख़्त नादिम (पशेमान और शर्मिन्दा) रहे और मरते दम तक खाने की हसरत उनके दिलों में बाक़ी रही। और जब यह मायदा उतरा है तो हर तरफ़ से सारे बनी इस्राईल टूट पड़े, ग़रीब मालदार, छोटे बड़े, मरीज़ व तन्दुरुस्त खाने के लिए एक पर एक गिर रहे थे। अब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने सबकी बारी (नंबर) मुक़र्रर फ़रमा दी, एक दिन आकर जो खाते वे दूसरे दिन न आते। दरमियान में एक दिन छोड़कर आया करते। इस तरह चालीस दिन गुज़र गए। दिन भर खाने का सिलसिला जारी रहता। फिर मायदा अल्लाह के हुक्म से आसमान की तरफ़ चढ़ जाता, यहाँ तक कि लोग उसका साया ज़मीन पर देखते।

अल्लाह ने अपने नबी ईसा अ़लैहिस्सलाम को 'वही' (अपना पैग़ाम) भेजी कि मायदा में मेरा रिज़्क़ फ़क़ीर, यतीम और बीमारों के लिये है, मालदारों के लिए नहीं। मालदारों को यह बात बुरी लगी, बातें बनाने लगे, ख़ुद भी शक में पड़ गये और लोगों को भी शक में डालने लगे, और ग़लत बातें फैलाने लगे। शैतान ने उन पर क़ब्ज़ा कर लिया और अच्छे लोगों के दिलों में भी वस्वसे (बुरे ख़्यालात) डाले। चुनाँचे वे कहने लगे कि ऐ ईसा! सच-सच बताना कि यह ख़्वान क्या वाक़ई आसमान से उतरता है? क्योंकि हममें से अक्सर लोग शक में हैं। ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि मेरे ख़ुदा की क़सम! तुम हलाक हो गए। तुमने नबी से सवाल किया था कि ख़ुदा से मायदा की दुआ़ करे और जब उसने दुआ़ की और अल्लाह तआ़ला ने तुम पर अपनी रहमत और अपना रिज़्क़ उतारा और तुम्हें अपनी निशानी और इबरतें दिखाईं तो लगे तुम इनकार और शक करने। अब अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी (यहाँ मज़ाक़ उड़ाते हुए ख़ुशख़बरी कहा मुराद चैतावनी) सुन लो वह तुम्हें आ दबोचने वाला है। यह दूसरी बात है कि ख़ुदा ही तुम पर रहम फ़रमा दे।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ वही भेजी कि मैं इन झुठलाने वालों को नहीं छोड़ूँगा जो मायदा के उतरने के बाद कुफ़्र करे। इसके मुताल्लिक़ शर्त ही यह थी कि उसे ऐसा अ़ज़ाब दिया जाएगा कि अब तक न दिया गया हो। ये शक करने वाले जब अपने बिस्तरों पर सो गये तो सोते वक़्त अपनी अच्छी ख़ासी शक्ल व सूरत में थे लेकिन रात के आख़िरी हिस्से में अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सुअर बना दिया और ये घोड़ों के कचरे और गन्दगियों में फिरने लगे। यह सारी रिवायत बहुत अ़जीब व ग़रीब है।

Maktab E Ashraf

अबू हातिम में इसको जगह जगह से अलग अलग टुकड़े करके बयान किया है। मैंने इसको तरतीब से एक मज़मून की शक्ल में बयान कर दिया है। यह रिवायत तो दलालत करती है कि मायदा उतरा था और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ पर बनी इस्राईल को मिला था, क़ुरआने करीम के अलफ़ाज़ के ज़ाहिर से भी यही मालूम होता है। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने "मैं तुम पर उसको नाज़िल करने वाला हूँ" फ़रमाया है। लेकिन कहने वाले यह भी कहते हैं कि मायदा उतरा ही नहीं और अल्लाह तआ़ला ने इस बात को सिर्फ़ मिसाल के तौर पर बयान फ़रमाया है। और यह कि जब उन्हें अ़ज़ाब का डर बताया गया तो वे मायदा के मुतालबे से पीछे हट गये और कहा नहीं नहीं, और उनकी किताब इन्जील में मायदा का कहीं ज़िक्र ही नहीं है। अगर मायदा उतरा ही होता तो इन्जील में जगह जगह उसका ज़िक्र आता, और एक बार नहीं बार-बार इन्जील में उसका ज़िक्र होता, लेकिन जमहूर का यही ख़्याल है कि मायदा उतरा था।

इब्ने जरीर रह. ने इसी ख़्याल को इख़्तियार किया है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने "मुनज़्ज़िलुहा अ़लैकुम" (यानी उसको तुम पर उतारने वाला हूँ) फ़रमाया है। उसका वादा और वईद हक़ है और यह बात सही भी मालूम होती है। तारीख़ (इतिहास) लिखने वालों ने लिखा है कि मूसा बिन नज़ीर नायब बनू उमैया ने पश्चिमी इलाक़ों की फ़ुतूहात के वक़्त वहाँ मायदा पाया, जिसमें मोती जड़े हुए थे और तरह-तरह के हीरे-मोती जड़े थे। तो अमीरुल-मोमिनीन वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के पास भेज दिया गया। यह मायदा रास्ते ही में था कि वह मर गया। अब वह उसके भाई सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के पास भेजा गया, जो उसके बाद ख़लीफ़ा हुआ। लोगों ने उसके याक़ूत व जवाहिर वग़ैरह देखकर बहुत ताज्जुब किया, और कहा जाता है कि यह मायदा सुलैमान बिन दाऊद अ़लैहिस्सलाम का था। वल्लाहु आलम

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि क़ुरैश ने नबी सल्ल. से कहा था कि सफ़ा की पहाड़ी को हमारे लिए सोना बना दो तो हम तुम पर ईमान लाएँगे। आपने फ़रमाया- क्या ईमान ले आओगे? कहा हाँ। इतने में जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और कहा कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें सलाम कहता है और फ़रमाता है कि अगर तुम चाहो तो सुबह तक सफ़ा पहाड़ी सोना हो जाये, लेकिन अगर उसके बाद भी वे ईमान न लाएँगे तो बहुत बुरे अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा। और अगर तुम चाहो कि मैं उनकी तौबा क़बूल कर लूँ और उन पर रहमत करूँ तो ऐसा हो जायेगा। आपने फ़रमाया ऐ परवर्दिगार! तेरी तौबा और रहमत चाहिए।

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ
قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ
اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۤ بِحَقٍّ ۭ اِنْ كُنْتُ
قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَ
لَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जबकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि ख़ुदा के अ़लावा मुझको और मेरी माँ को भी दो माबूद क़रार दे लो? (ईसा अ़लैहिस्सलाम) अ़र्ज़ करेंगे कि (तौबा- तौबा मैं) आप (को शरीक से) पाक (समझता हूँ और) हैं, मुझको किसी तरह मुनासिब न था कि मैं ऐसी बात कहता जिस (के कहने) का मुझको कोई हक़ नहीं, अगर मैंने यह कहा होगा तो आपको इसका इल्म होगा, आप तो मेरे दिल के अन्दर की बात भी जानते हैं, और मैं आपके इल्म में

Maktab E Ashraf

الْغُيُوبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِىْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝	जो कुछ है उसको नहीं जानता, तमाम ग़ैबों के जानने वाले आप ही हैं। (116) मैंने तो उनसे और कुछ नहीं कहा मगर सिर्फ़ वही जो आपने मुझसे कहने को फ़रमाया था कि तुम अल्लाह की बन्दगी (इख़्तियार) करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, और मैं उन पर बा-ख़बर रहा जब तक उनमें रहा, फिर जब आपने मुझको उठा लिया तो आप उन पर मुत्तला रहे, और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। (117) अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं, और अगर आप इनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (118)

सवाल व जवाब का मुहासबा

अल्लाह पाक ईसा अ़लैहिस्सलाम से क़ियामत के दिन उन लोगों की मौजूदगी में ख़िताब फ़रमा रहे हैं जिन्होंने ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी माँ को ख़ुदा बना रखा था। यह ईसाईयों को धमकी व डाँट है। हज़रत क़तादा रह. ने इस पर अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल से इस्तिदलाल किया है किः

هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ.

यानी यह वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई का सिला मिलेगा।

सुद्दी कहते हैं कि यह ख़िताब और जवाब दुनिया ही में है। इब्ने जरीर इसकी तस्दीक़ करते हैं कि यह उस वाक़िए से मुताल्लिक़ है जबकि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान पर उठाये गये थे और इब्ने जरीर ने इस पर दो तरह से इस्तिदलाल किया (दलील पकड़ी) है, एक तो यह कि यह कलाम माज़ी (गुज़रे हुए ज़माने के) लफ़्ज़ यानी 'क़ाल' (उसने कहा) के साथ है, दूसरे यह कि क़ुरआन में हैः

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ.

"कि अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं और अगर आप माफ़ फ़रमा दें" यानी कलाम शर्तिया है और बात दुनिया ही में हुई होगी। जभी तो अ़ज़ाब या मग़फ़िरत की शर्त आख़िरत के लिए उठा रखी गई। लेकिन ये दोनों दलीलें ग़ौर-तलब हैं इसलिए कि लफ़्ज़ 'माज़ी' (यानी किसी काम के गुज़रे ज़माने में होने को ज़ाहिर करने वाला लफ़्ज़) हो तो क्या हुआ, क़ियामत से मुताल्लिक़ अक्सर बातें लफ़्ज़ माज़ी ही से बयान की गयी हैं, ताकि उसके ज़ाहिर होने और सुबूत पर काफ़ी दलील बन सके। रहा 'इन् तुअ़ज़्ज़िब्हुम' का शर्तिया कलाम सो इससे ईसा अ़लैहिस्सलाम का उन गुनाहगारों से बेज़ारी (अपना कोई ताल्लुक़ न होना) ज़ाहिर करना है और ख़ुदा की मर्ज़ी का उनमें नाफ़िज़ होना ज़ाहिर किया गया है, और शर्त पर किसी चीज़ का निर्भर और आधारित होना उसके वाक़े होने के लिए मुक़्तज़ी नहीं हो सकता। क़ुरआनी आयतों में इसकी बहुत सी नज़ीरें मौजूद हैं। हज़रत क़तादा का जो बयान है वह ज़्यादा साफ़ है कि यह

क़ियामत के दिन की गुफ़्तगू है, ताकि क़ियामत के दिन सब के सामने नसारा (ईसाईयों) की पोल खुल जाए और उन पर सख़्ती और डाँट-डपट पड़ सके।

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क़ियामत के दिन अम्बिया और उनकी उम्मतें बुलाई जाएँगी। फिर ईसा अ़लैहिस्सलाम तलब किये जाएँगे उन पर एहसान का इज़हार फ़रमाया जायेगा, वह इक़रार फ़रमायेंगे। फिर अल्लाह पाक उनसे सवाल बाला फ़रमायेगा तो वह इनकार करेंगे कि मैंने अपनी उम्मत से अपनी परस्तिश (इबादत और पूजा) के लिये नहीं कहा था। अब ईसाई लोग बुलाये जाएँगे, उनसे सवाल होगा, वे कहेंगे कि हाँ ईसा ने हमें ऐसा हुक्म दिया था। यह सुनकर ख़ौफ़ के मारे ईसा अ़लैहिस्सलाम के सर और जिस्म के बाल खड़े हो जायेंगे। फ़रिश्ते उनके बालों को थाम लेंगे और ये ईसाई लोग अल्लाह के सामने एक हज़ार साल तक पाँव जोड़े बैठे रहेंगे यहाँ तक कि उन पर हुज्जत क़ायम हो जायेगी और असलियत उनके सामने आ जायेगी, जो इस बात का सुबूत होगी कि हक़ कहने की सज़ा में उनको सूली दिये जाने से डराया गया है। फिर ये लोग दोज़ख़ की तरफ़ लेजाये जाएँगे। हक़ तआ़ला ख़ुद फ़रमाते हैं कि ईसा इसके जवाब में ये कहेंगे।

سُبْحَانَكَ مَايَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَالَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ.

अल्लाह के इस सवाल के जवाब में कितने अच्छे अन्दाज़ में अपनी बात कहने की तौफ़ीक़ इनायत हुई है। ईसा अ़लैहिस्सलाम के दिल में कैसी अच्छी दलील डाली गई है, कि ऐ ख़ुदा! जिस बात का मुझे कोई हक़ नहीं आख़िर मैं ऐसी बात कैसे कहता। फ़र्ज़ कीजिए कि अगर मैंने ऐसा कहा भी होगा तो तू ज़रूर जानता होगा, क्योंकि तुझ पर तो कोई बात छुपी हुई नहीं। तू मेरे दिल की बात जानता है, लेकिन मैं तेरे इरादे को नहीं जान सकता, जो कुछ तूने मुझे हुक्म दिया था मैंने उससे एक हर्फ़ ज़्यादा नहीं कहा। मैंने तो यही कहा था कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। मैं जब तक इनमें रहा इनके आमाल का निगराँ रहा, और जब तूने मुझे उठा लिया तो अब तू उनका निगराँ हो गया। और तू तो हर बात का निगराँ (देखने और निगरानी करने वाला) है।

क़ियामत के दिन इनसान के अहवाल

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें ख़ुतबा देते हुए फ़रमाया कि ऐ लोगो! क़ियामत के दिन तुम नंगे और ग़ैर-मख़्तून (यानी बिना ख़तना हुए) उठाए जाओगे जैसा कि पैदाईश के वक़्त थे। सबसे पहले इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को लिबास पहनाया जायेगा। अब मेरी उम्मत के चन्द लोग लाये जाएँगे जिन्हें दोज़ख़ की निशानी के तौर पर बाईं तरफ़ रखा जायेगा। तो मैं कहूँगा कि यह तो मेरी उम्मत है। कहा जाएगा कि तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाद तुम्हारी सुन्नत छोड़कर क्या-क्या बिदअ़तें इन लोगों ने जारी रखीं। तो मैं एक नेक बन्दे की तरह यही कहूँगा जो ईसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा था। कहा जायेगा कि तुम्हारे बाद ये लोग मुर्तद हो गये (यानी दीन इस्लाम से फिर गये) थे और बिदअ़ती (दीन इस्लाम की सही राह छोड़कर उसमें नई-नई ग़ैर-हक़ बातें निकालने वाले) हो गये थे।

यह जो फ़रमाया कि "आप अगर इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं....." यह कलाम अल्लाह की मशीयत और चाहत का प्रतीक है कि जो चाहे करे। वह सबसे पूछ सकता है लेकिन उससे कोई नहीं पूछ सकता। तथा यह कलाम ईसाईयों से बेज़ारी पर भी मुश्तमिल है, जिन्होंने ईसा अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा का

शरीक और बेटा और मरियम अ़लैहिस्सलाम को बीवी क़रार दिया था (अल्लाह की पनाह)। इस आयत की बड़ी शान है, हदीस में है कि एक रात नबी सल्ल. सुबह तक इसी आयत को नमाज़ में पढ़ते रहे।

Mahtab E Ashraf

रहमत व मग़फ़िरत

हज़रत अबूज़र रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक रात इसी आयत को पढ़ते रहे यहाँ तक कि रुकूअ़ और सज्दे में भी यही आयत पढ़ी। सुबह को जब इसकी वजह मैंने पूछी तो आपने फ़रमाया- रब तआ़ला से उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये सवाल करता रहा। चुनाँचे शिर्क के सिवा सबको बख़्शने का वादा उसने फ़रमाया। जर्रा बिन्ते दजाजा से रिवायत है कि हज़रत अबूज़र कह रहे थे कि नबी सल्ल. ने इशा की नमाज़ पढ़ाई तो उसके बाद लोग अपनी अलग-अलग नमाज़ें पढ़ने लगे। अब हुज़ूर सल्ल. अपने मस्कन (ठिकाने) पर जा बैठे और जब देखा कि लोग अपने घर चले गये हैं तो मुसल्ले पर आकर नमाज़ में मशग़ूल हो गये। अब मैं भी आ गया और आपके पीछे नमाज़ पढ़ने लगा। आपने दाहिनी तरफ़ हो जाने का इशारा किया। मैं दाहिनी तरफ़ हो गया। फिर इब्ने मसऊद आये तो हमारे पीछे खड़े हो गये तो उन्हें बाईं तरफ़ हो जाने का इशारा किया। अब हम तीनों अपनी अलग-अलग नमाज़ें पढ़ने लगे, लेकिन आपने नमाज़ में एक ही आयत जो शुरू की तो उसी को पढ़ते-पढ़ते सुबह कर दी। मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद से कहा कि रात भर एक ही आयत पढ़ने का सबब हुज़ूर सल्ल. से पूछें, उन्होंने कहा नहीं, जब तक आप ख़ुद ही बयान नहीं फ़रमायें मैं तो नहीं पूछूँगा।

अब मैंने हिम्मत करके दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान! सारा क़ुरआन आपके सीने में है, लेकिन आप क़ुरआन की सिर्फ़ एक आयत ही पढ़ रहे थे, अगर हम में से कोई ऐसा करता तो हम उस पर एतिराज़ कर बैठते। आपने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा से उम्मत के लिए दुआ़ कर रहा था, मैंने पूछा कि फिर ख़ुदा से क्या जवाब मिला? फ़रमाया कि जिस बात का मुझसे वादा किया गया है अगर उसको तुम लोग सुन पाओ तो अक्सर तो नमाज़ पढ़ना ही छोड़ दोगे, और ख़ुदा की रहमत का बहाना ले लोगे। मैंने कहा लोगों को क्या इसकी ख़ुशख़बरी न पहुँचा दूँ? फ़रमाया पहुँचा दो। मैं कुछ दूर ही चला था कि उमर रज़ि. कहने लगे या रसूलल्लाह! अगर लोगों को यह बात पहुँचा दी जाएगी तो इबादत ही छोड़ बैठेंगे, आपने मुझे वापस बुला लिया और वह यह आयत थीः

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْلَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُالْحَكِيْمُ٥

कि अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं और अगर आप माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त हैं हिक्मत वाले हैं।

यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का क़ौल है, जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तिलावत फ़रमा रहे थे। आपने हाथ उठाये और फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ اُمَّتِیْ.

ऐ मेरे रब मेरी उम्मत।

और बहुत ज़्यादा रो रहे थे। अल्लाह तआ़ला ने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को भेजा, हज़रत जिब्राईल ने रोने की वजह पूछी तो आपने जो जवाब देना था जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को दिया, तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ जिब्राईल! मुहम्मद से जाकर कहो कि हम तुम्हारी उम्मत के बारे में तुम्हें राज़ी करेंगे, और दिल

Maktabah Ashraf

न दुखाएँगे। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. एक दिन देर से तशरीफ़ लाये और फिर सज्दे में गिर पड़े, और इतनी देर की कि गोया रूह ही परवाज़ हो गई हो (यानी बहुत लम्बा सज्दा किया)। फिर आपने जब सर उठाया तो फ़रमाया- मेरे रब ने उम्मत के बारे में मुझसे मश्विरा किया था (यह आपके सम्मान के लिये था वरना अल्लाह तआ़ला किसी से पूछने या मश्विरे के मोहताज नहीं) कि उनके साथ क्या किया जाए? मैंने कहा ऐ मेरे रब! ये तो तेरे ही बन्दे हैं, तेरी ही मख़्लूक़ हैं। दूसरी बार पूछा फिर भी मैंने यही कहा तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- ऐ मुहम्मद! मैं उम्मत के बारे में तुमको रुस्वा न करूँगा और मुझसे कहा कि मेरे साथ सत्तर हज़ार उम्मती जाएँगे और हर एक ऐसे उम्मती के साथ और सत्तर हज़ार उम्मती होंगे कि ये सब बग़ैर हिसाब दाख़िले जन्नत किए जाएँगे। फिर फ़रमाया कि माँगो तुमको दिया जायेगा तो मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से कहा- क्या अल्लाह पाक मेरे सवाल को पूरा करना चाहता है? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा हाँ, अल्लाह तआ़ला ने मुझे आपके पास इसी ग़र्ज़ से भेजा है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने मुझे सब कुछ अ़ता कर दिया। मैं इस पर ग़ुरूर नहीं करता और ख़ुदा तआ़ला ने मेरे अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये हैं और मैं ज़मीन पर ज़िन्दा व तन्दुरुस्त चल रहा हूँ और मुझे यह ख़ुसूसियत बख़्शी कि मेरी उम्मत क़हत (अकाल और भुखमरी) से न मरेगी, और मग़लूब न होगी।

अल्लाह तआ़ला ने मुझे कौसर इनायत फ़रमाया है, यह जन्नत की एक नहर का नाम है, जो मेरे हौज़ में बहती आयेगी। और मुझे इज़्ज़त, नुसरत और रौब व दबदबे की ख़ुसूसियत अ़ता फ़रमाई है, जो मेरी उम्मत के सामने लोगों पर एक महीने भर की दूरी से असर डालती है। मैं जन्नत में सब अम्बिया से पहले दाख़िल हूँगा और मेरी उम्मत के लिए माले-ग़नीमत (दीन की जंग में दुश्मनों से हाथ आया हुआ माल) बिल्कुल हलाल फ़रमा दिया है, और अक्सर ऐसी चीज़ें हलाल कर दी हैं जो मुझसे पहले की उम्मतों पर हलाल नहीं थीं, और मज़हबी हैसियत से मेरे दीन में कोई सख़्ती रवा नहीं रखी।

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ
صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ ع ١٦ ٦

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाएँगे कि यह वह दिन है कि जो लोग सच्चे थे उनका सच्चा होना उनके काम आएगा, उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा को रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और ख़ुश और वे अल्लाह तआ़ला से राज़ी और ख़ुश हैं, यह बड़ी भारी कामयाबी है।(119) अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों की और ज़मीन की, और उन चीज़ों की जो उनमें मौजूद हैं, और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं। (120)

सच्चाई को पसन्द करना और उसके परिणाम

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे ईसा अ़लैहिस्सलाम की बात का जवाब देते हुए जबकि उन्होंने बेदीन झूठे ईसाईयों से अपनी बेज़ारी (बेताल्लुक़ी) ज़ाहिर की थी फ़रमाता है किः

هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ.

Maktab E Ashraf

यानी आजका दिन अल्लाह को मानने वालों को उनके तौहीद के ज़रिये नफ़ा पहुँचने का दिन है। कि बहती नहरों वाली जन्नतों में होंगे, न वहाँ से निकाले जाएँगे न दम भर के लिये जन्नत को छोड़ेंगे। आपने फ़रमाया कि उस दिन रब्बे करीम सामने होगा और फ़रमायेगा माँगो मैं देने पर आमादा हूँ। लोग उसकी रज़ामन्दी माँगेंगे तो फ़रमायेगा मेरी रज़ामन्दी ही ने तुम्हें मेरे घर उतार दिया है, माँगो क्या माँगते हो? लोग फिर उसकी रज़ामन्दी माँगेंगे (यानी ऐ अल्लाह तू हमसे राज़ी हो जा और राज़ी ही रहना)। फ़रमायेगा कि गवाह रहो कि मैं तुमसे राज़ी हूँ। फ़रमाता है:

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ.

यानी यह ज़बरदस्त कामयाबी है।

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُوْنَ.

अ़मल करने वालों को ऐसा ही अ़मल करना चाहिए।

وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ.

और इसी की कोशिश लोगों को करनी चाहिए।

वह सारी चीज़ों का ख़ालिक़ है, हर चीज़ पर क़ाबिज़ और क़ादिर है, सब उसके ग़लबे और क़ुदरत के तहत हैं, उसका न कोई नज़ीर (सानी, उसके जैसा) है न उसके बराबर, न मददगार, उसके न बाप है न लड़का है न बीवी, उसके सिवा कोई दूसरा ख़ुदा नहीं।

सूरः अन्आ़म

सूरः अन्आ़म मक्की है। इसमें 165 आयतें और 20 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूरः अन्आ़म मक्का में एक ही रात के अन्दर एक ही बार में नाज़िल हो गई, इसको सत्तर हज़ार फ़रिश्ते लेकर हाज़िर हुए थे और तस्बीह पढ़ते जा रहे थे। अस्मा बिन्ते यज़ीद कहती हैं कि नबी करीम सल्ल. ऊँटनी पर सवार थे और सूरः अन्आ़म उतर रही थी, मैं नबी सल्ल. की ऊँटनी की बाग थामे हुए थी, वही के बोझ से ऊँटनी ऐसी दब गई थी कि गोया उसकी हड्डियाँ टूट ही जायेंगी। फ़रिश्ते ज़मीन व आसमान को घेरे हुए थे। सूरः अन्आ़म उतरने के बाद हुज़ूर सल्ल. तस्बीह पढ़ने लगे और फ़रमाया- इस सूरः के साथ चलते हुए फ़रिश्ते आसमान के किनारों तक को घेरे हुए थे। फ़रिश्तों की "सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम" की गूँज से ज़मीन व आसमान में हंगामा था। हुज़ूर सल्ल. भी यही तस्बीह पढ़ रहे थे। आप सल्ल. ने फ़रमाया कि सूरः अन्आ़म पूरी एक ही दफ़ा में नाज़िल हुई है, और सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की तस्बीह व तहमीद की गूंज के साथ उतरी है।

Maktab E Ashraf

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۵ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ○ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّی عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ○ وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ○	तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरियों को और नूर को बनाया फिर भी काफ़िर लोग दूसरों को अपने रब के बराबर क़रार देते हैं। (1) वह ऐसा है जिसने तुमको मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुक़र्रर किया, और दूसरा मुक़र्ररा वक़्त ख़ास उसी के (यानी अल्लाह ही के) नज़दीक है, फिर भी तुम शक रखते हो। (2) और वही है अल्लाह (माबूद बरहक़) आसमानों में भी और ज़मीन में भी, वह तुम्हारे छुपे हालात को भी और ज़ाहिरी हालात को भी जानते हैं, और तुम जो कुछ अ़मल करते हो उसको जानते हैं। (3)

ख़ुदा एक है और वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है

अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ाते पाक की तारीफ़ बयान फ़रमाता है कि उसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया, गोया कि बन्दों को तारीफ़ करना सिखला रहा है। दिन में नूर और रात में अंधेरे को अपने बन्दों के लिये एक फ़ायदे और नफ़े की चीज़ क़रार देता है। यहाँ लफ़्ज़े नूर को वाहिद (एक वचन में) लाया गया है और अंधेरों को जमा (बहुवचन) लाया गया है, क्योंकि बेहतर और सम्मानित चीज़ को वाहिद (एक वचन) लाते हैं जैसा कि अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

عَنِ الْیَمِیْنِ وَالشَّمَآئِلِ.

यहाँ "यमीन" (दायाँ) एक वचन है, और "शमाईल" (बायाँ) बहु वचन।

और

اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ.

इसमें अल्लाह अपने रास्ते को लफ़्ज़ "सबील" (यानी एक रास्ता) कहकर वाहिद (एक वचन) लाया है, और ग़लत रास्तों को "सुबुल" कहकर जमा (बहु वचन) लाया है।

ग़र्ज़ यह कि बावजूद इसके कि बाज़ बन्दे कुफ़्र करते हैं और उसके लिये शरीक क़रार देते हैं, उसके बीवी और बच्चे बताते हैं, ख़ुदा तआ़ला इन बातों से पाक है। फिर फ़रमाता है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, यानी तुम्हारे बाप आदम अ़लैहिस्सलाम मिट्टी से बनाये गए थे और मिट्टी ही ने उनके गोश्त पोस्त की शक्ल इख़्तियार की, फिर उन ही से लोग पैदा होकर पूरब व पश्चिम में फैल गये। फिर आदम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी उम्र पूरी की और अपने तयशुदा मुक़र्ररा वक़्त तक आन पहुँचे, पहले लफ़्ज़ 'अजल' से हसन रह. के नज़दीक मरने तक की ज़िन्दगी का वक़्त मुराद है, और दूसरे लफ़्ज़ 'अजल' से मरने के बाद दोबारा ज़िन्दगी तक का वक़्त मुराद है। अजल ख़ास इनसान की जारी उम्र है, और "आ़म अजल" से

Maktab E Ashraf

मुराद सारी दुनिया की उम्र है, यानी दुनिया के ख़त्म होने और ज़वाल पैदा होने तक और दारे आख़िरत का वक़्त आने तक।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. और मुजाहिद रह. कहते हैं कि पहली अजल से मुराद मुद्दते दुनिया है, और अजले मुसम्मा से मुराद मौत के वक़्त तक की इनसान की उम्र है, गोया कि ख़ुदा के इस क़ौल से ली गयी है:

وَهُوَالَّذِىْ يَتَوَفّٰكُمْ...... الخ

यानी वह रात में तुमको मार देता है और दिन में तुम जो कुछ करते हो उसे जानता है, और रात में तो तुम कुछ कर ही नहीं सकते, यानी नींद में होते हो, जो रूह के क़ब्ज़ होने की शक्ल है, और फिर जागते हो तो अपने साथियों के पास गोया वापस आ जाते हो।

और उसके क़ौल "अिन्दहू" के मायने यह हैं कि उस वक़्त को सिवाये उसके और कोई नहीं जानता, जैसा कि एक जगह फ़रमाया है कि उसका इल्म ख़ुदा ही को है, उसका वक़्त ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं जानता। और इसी तरह अल्लाह तआ़ला का यह क़ौल है कि ऐ नबी! तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आयेगी? सो तुम्हें उसकी क्या ख़बर, उसका इल्म तो ख़ुदा ही को है। फिर आने वाली आयत में इरशाद होता है कि तुम क़ियामत के बारे में शक करते हो, वही आसमानों और ज़मीनों का ख़ुदा तुम्हारी छुपी बातों को भी जानता है और खुली बातों को भी, और तुम जो कुछ करते हो उससे अच्छी तरह वाक़िफ़ है। इस आयत के मुफ़स्सिरीन (व्याख्यापकों) ने पहले फ़िर्क़ा जहमिया के क़ौल से इनकार पर सहमति जताई है, और फिर इस आयत की तफ़सीर से मुताल्लिक़ उनका इख़्तिलाफ़ (मतभेद) भी जहमिया का यह क़ौल है कि यह आयत इस बात की हामिल है कि अल्लाह तआ़ला हर जगह बज़ाते ख़ुद मौजूद है, यानी इस अ़क़ीदे से यह बात सामने आती है कि हर चीज़ के अन्दर बज़ाते ख़ुद ख़ुदा तआ़ला मौजूद है। सही क़ौल यह है कि आसमानों और ज़मानों में ख़ुदा ही को माना जाता है, और उसकी इबादत की जाती है, और आसमानों में जो फ़रिश्ते और ज़मीन पर जो इनसान हैं सब उसी का इक़रार करते हैं, उसको अल्लाह कहकर पुकारते हैं। लेकिन इनसान और जिन्नात में के काफ़िर उससे नहीं डरते। और यही आयत अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल पर मुन्तबिक़ (पूरी तरह फ़िट) होती है कि वही आसमानों का और ज़मीनों का ख़ुदा है। मतलब यह कि जो आसमानों में है उनका ख़ुदा और जो ज़मीन पर हैं उनका ख़ुदा, न यह कि जो आसमानों और ज़मीनों में है वही ख़ुदा है, इसी बिना पर हुक्म है कि वह तुम्हारे छुपे को भी जानता है और तुम्हारे खुले को भी। दूसरा क़ौल यह है कि इससे मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला वह है जो ज़मीन व आसमान में हर ढकी छुपी बात को जानता है और उसका क़ौलः

يَعْلَمُ مَافِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ

यानी जो कुछ आसमानों व ज़मीन में है सबको जानता है, से मुताल्लिक़ है। चुनाँचे इसका पूरा मतलब यह होगा कि वही अल्लाह है जो ज़मीन व आसमान में तुम्हारी हर बात को जानता है और तुम जो कुछ करते हो उसका इल्म रखता है। और तीसरा क़ौल यह है कि अल्लाह वह है जो ज़मीन व आसमान की हर खुली ढकी चीज़ को जानता है और यही इब्ने जरीर रह. का मस्लक है। फिर आख़िर में इरशाद होता है कि वह तुम्हारे आमाल को जानता है।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا
كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ○ فَقَدْ كَذَّبُوْا
بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ
اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ○ اَلَمْ
يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ
مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ
وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّ
جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ
بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ○

और उनके पास कोई निशानी भी उनके रब की निशानियों में से नहीं आती, मगर वे उससे मुँह ही मोड़ लेते हैं। (4) सो उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बतलाया जबकि वह उनके पास पहुँची। सो जल्दी ही उनको ख़बर मिल जायेगी उस चीज़ की जिस के साथ ये लोग मज़ाक़-ठट्ठा किया करते थे। (5) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उनसे पहले कितनी जमाअ़तों को हलाक कर चुके हैं, जिनको हमने ज़मीन (यानी दुनिया) में ऐसी क़ुव्वत दी थी कि तुमको वह क़ुव्वत नहीं दी, और हमने उन पर ख़ूब बारिशें बरसाईं, और हमने उनके नीचे से नहरें जारी कीं, फिर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला, और उनके बाद दूसरी जमाअ़तों को पैदा कर दिया। (6)

अल्लाह की निशानियों का इनकार और मुँह मोड़ना

दुश्मनी और बैर रखने वाले मुश्रिकों के बारे में अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि जब कभी ख़ुदा की कोई आयत (निशानी) उनके पास आती है, यानी कोई मोजिज़ा या ख़ुदा तआ़ला के एक होने पर कोई स्पष्ट दलील या रसूल की सच्चाई की कोई निशानी, तो ये लोग उससे मुँह फेर लेते (यानी बेतवज्जोही बरतते) हैं और उसकी परवाह तक नहीं करते, और जब हक़ बात उनके पास आई तो उसका इनकार करने लगे। इसके बारे में उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा। यह बात उनके लिये सख़्त डाँट और धमकी है, क्योंकि उन्होंने हक़ को झुठला दिया। अब झुठलाने का नतीजा उन्हें देखना ज़रूरी है। अल्लाह तआ़ला उन्हें समझा रहा है और डरा रहा है कि पहले लोगों ने भी जो उनसे ज़्यादा ताक़त वाले, मज़बूत और भारी संख्या रखने वाले थे, और माल-दौलत और औलाद भी ज़्यादा रखते थे, दौलत व हुकूमत भी हासिल थी, फिर भी उन्हें ऐसा अ़ज़ाब पहुँचा था। उसी क़िस्म के अ़ज़ाब से तुम्हें भी साबक़ा पड़ सकता है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर दिया है, जो दुनिया में बड़ी क़ुव्वत रखते थे कि ऐसे माल व औलाद, मज़बूत मकानात और ऐसी शान व शौकत तुम्हें नसीब ही नहीं। आसमान से हम उनके लिए पानी बरसाते थे, कभी उन्हें क़हत (अकाल और सूखे) से साबक़ा नहीं पड़ा, हमने बाग़ात और चश्मे और नहरें दे रखी थीं, और इससे मक़सद केवल उन्हें ढील देना था। फिर उन्हें उनके गुनाहों और नाफ़रमानियों के सबब हलाक कर दिया और उनकी जगह पर दूसरी क़ौमें आबाद कीं। पहले लोग तो जाने वाले दिन की तरह चले गये लेकिन उनके बाद के लोगों ने भी पहले लोगों की तरह अ़मल किया, और

पहले लोगों की तरह वे भी हलाक होकर रह गये। चुनाँचे ऐ लोगो! इस बात से डरो कि तुम्हें भी कहीं ऐसे ही हालात से साबका (वास्ता) न पड़े। तुम को हलाक करना ख़ुदा के लिए उनसे ज़्यादा अहम काम तो नहीं। तुम्हारा रसूल जिसको तुम झुठला रहे हो, यह तो उनके रसूलों से भी ज़्यादा बड़ाई और सम्मान वाला है, इसलिए अगर उसकी ख़ास तौर पर इताअ़त (बात मानना और पैरवी) न की गयी तो तुम सज़ा के ज़्यादा हक़दार हो।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۗ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ ع

और अगर हम कागज़ पर लिखी हुई कोई तहरीर आप पर नाज़िल फ़रमाते फिर उसको ये लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी ये काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं, मगर खुला जादू है। (7) और ये लोग यूँ कहते हैं कि उनके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया? और अगर हम कोई फ़रिश्ता भेज देते तो सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो जाता, फिर उनको ज़रा भी मोहलत न दी जाती। (8) और अगर हम उसको फ़रिश्ता तजवीज़ करते तो हम उसको आदमी ही बनाते, और हमारे इस फ़ेल से फिर उनपर वही इश्काल होता जो इश्काल अब कर रहे हैं। (9) और वाक़ई आपसे पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उनका भी हँसी और मज़ाक़ उड़ाया गया है फिर जिन लोगों ने उनसे हँसी-मज़ाक़ किया था उनको उस अ़ज़ाब ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)

आप फ़रमा दीजिए कि ज़रा ज़मीन में चलो-फिरो, फिर देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ। (11)

ईमान की कोई उम्मीद नहीं

मुश्रिकों की दुश्मनी व मुख़ालफ़त और ज़िद व हठधर्मी की ख़बर देते हुए अल्लाह पाक फ़रमाता है कि अगर हम तुम पर कोई ऐसी किताब भी नाज़िल करते जो कागज़ों में लिखी हुई होती, जिसको वे हाथ से भी छू सकते, उसको आसमान से उतरती देख सकते, तो फिर भी ये काफ़िर यही कहते कि यह तो खुला जादू है, जैसा कि ज़ाहिरी तौर पर महसूस की जाने वाली चीज़ों के अन्दर भी उनकी ख़राबी-पसन्द तबीयत का रुझान यह है कि अगर हम उन पर आसमान का एक दरवाज़ा खोल दें जिसमें ऊपर चढ़ने भी लगें तो यही कहेंगे कि हमारी आँखें बन्ध गई हैं और उन पर नज़र-बन्दी हो गई है। या जैसा कि फ़रमाया- अगर

आसमान के टुकड़े भी गिरते हुए देखें तो कहेंगे कि बादल के टुकड़े हैं, और फिर उनका कहना यह भी है कि रसूल के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं रहता? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर ऐसा हो तो फिर तो बात ख़त्म है, वे फ़रिश्ते को देखने के बाद भी वही जादू की रट लगायेंगे। उन्हें इस वक़्त की तरह सही राह पर आने की मोहलत दी ही नहीं जायेगी, फ़ौरन अ़ज़ाबे इलाही आ पहुँचेगा।

और फ़रमाया कि जिस दिन वे फ़रिश्तों को देख ही लेंगे तो फिर मुजरिमों के लिए कोई अच्छी ख़बर है ही नहीं। फिर उपर्युक्त आयत में इरशाद है कि अगर हम इनसानी रसूल के साथ किसी फ़रिश्ते को भी नाज़िल करते तो वह भी इनसान ही की शक्ल व सूरत में उनके सामने आता, ताकि वे लोग उससे बातचीत कर सकें, या उससे कोई फ़ायदा उठा सकें, और जब यूँ होता तो इस बात में वे फिर शक में पड़ जाते, जैसे इनसानी रसूल के बारे में शक कर रहे हैं, फ़रिश्ते के इनसानी सूरत में होने के बारे भी यही शक उन्हें जकड़े रहता, क्योंकि वह भी आख़िर बशर (इनसान) ही की सूरत रखता। जैसा कि एक जगह फ़रमाया है कि आसमान से तो हम फ़रिश्ता उस वक़्त उतारते जबकि ज़मीन पर फ़रिश्ते चलते फिरते होते, और जब ऐसा नहीं तो फिर आसमान से भी क्यों उतारा जाएगा।

यह तो ख़ुदा तआला की रहमत है कि जब मख़्लूक़ की तरफ़ वह कोई रसूल भेजता है तो उन्हीं में से भेजता है ताकि एक दूसरे से बात कर सकें और उस रसूल से फ़ायदा उठाना उन लोगों के लिए मुम्किन हो, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मोमिनों पर ख़ुदा का यह एहसान है कि उनका रसूल उन्हीं में से एक आदमी होता है, जो उन पर ख़ुदा की आयतें पेश करता है और उनको पाक बनाता है, वरना वे फ़रिश्ते की तरफ़ तो उसके नूर की वजह से नज़र भी नहीं डाल सकते और बात फिर भी उन पर संदिग्ध ही रह जाती। और ऐ नबी! पहले नबियों के साथ भी तो इसी क़िस्म का मज़ाक़ किया गया था, चुनाँचे इस मज़ाक़ व ठट्ठा उड़ाने के सबब ये क़ौमें हलाक हो गईं।

इस आयत के ज़रिये नबी करीम सल्ल. को तसल्ली दी गयी है कि अगर तुमको किसी ने झुठलाया तो उसकी परवाह न करो, फिर मोमिनों को अपनी मदद और अच्छा अन्जाम होने की ख़ुशख़बरी दी गयी और आख़िर में यह भी फ़रमाया गया कि दुनिया में चल-फिरकर तो देखो कि पिछले ज़माने में जिन लोगों ने पैग़म्बरों को झुठलाया उनकी बस्तियों के कैसे खंडर पड़े हैं और दुनिया में उन्हें कैसे अ़ज़ाब दिया गया, और फिर आख़िरत में उसके अ़लावा अ़ज़ाब दिया जायेगा। और फिर रसूलों और मोमिनों को हमने कैसा बचा लिया था।

आप कहिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है, यह सब किसकी मिल्क है? आप कह दीजिए कि सब अल्लाह ही की मिल्क है, उसने (यानी अल्लाह तआला ने) मेहरबानी फ़रमाना अपने ऊपर लाज़िम फ़रमा लिया है। तुमको ख़ुदा तआला क़ियामत के दिन जमा करेंगे इसमें कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने को ज़ाया कर दिया है सो वे ईमान न लाएँगे। (12) और उसी की (यानी अल्लाह ही की	قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ

Maktab E Ashraf

وَالنَّهَارِ ط وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ
أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ط قُلْ إِنِّيٓ
أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنِّيٓ
أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ۝ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ
رَحِمَهُ ط وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝

मिल्क) है सब जो कुछ रात और दिन में रहते हैं, और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला। (13) आप कहिए कि क्या अल्लाह के सिवा जो कि आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले हैं और जो कि खाने को देते हैं और उनको कोई खाने को नही देता, किसी को माबूद क़रार दूँ? आप फ़रमा दीजिए कि मुझको यह हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं इस्लाम क़बूल करूँ, और तुम मुश्रिकों में से हरगिज़ न होना। (14) आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15) जिस शख़्स से उस दिन वह अज़ाब हटाया जाएगा तो उस पर अल्लाह तआला ने बड़ा रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

अल्लाह के एक होने, उसकी रहमत और आख़िरत के दिन का ज़िक्र

ख़बर दी जा रही है कि अल्लाह पाक आसमानों और ज़मीन का मालिक है, और उसने अपनी ज़ाते पाक पर रहमत वाजिब क़रार दे ली है। नबी पाक सल्ल. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जब मख़्लूक़ को पैदा किया तो लौहे महफ़ूज़ में लिख दिया कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी। इरशाद है कि यक़ीनन वह क़ियामत के दिन तुम सब को जमा करेगा। यहाँ गोया क़सम खाकर बयान किया गया है कि तयशुदा दिन पर वह अपने सारे बन्दों को जमा करेगा, मोमिनों (ईमान वालों) को तो इसमें शक नहीं, लेकिन काफ़िर (अल्लाह के इनकारी) शक में पड़े हुए हैं। हुज़ूर सल्ल. से सवाल किया गया कि क्या वहाँ चश्मे भी हैं? आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वहाँ चश्मे हैं। अल्लाह तआला के नेक बन्दे अम्बिया के अपने-अपने हौज़ों पर आयेंगे, अल्लाह पाक सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को भेजेगा जिनके हाथों में आग के डण्डे होंगे और अम्बिया के हौज़ों पर आने वाले काफ़िरों को वहाँ से हाँक देंगे। यह हदीस ग़रीब है और तिर्मिज़ी में है। आपने फ़रमाया कि हर नबी का एक हौज़ होगा और मुझे उम्मीद है कि मेरे हौज़ पर सबसे ज़्यादा मजमा होगा। अल्लाह फ़रमाता है कि वे लोग जो आख़िरत के लिहाज़ से घाटे में हैं, वही हैं जो ईमान नहीं लाये हैं, और उस आख़िरत के दिन से डरते नहीं। फिर फ़रमाया जो मख़्लूक़ भी दिन में बस्ती है या रात में, सब उसके इख़्तियार में है, और उसी के इन्तिज़ाम के तहत (अधीन) है, वह बन्दों की बातों को सुनता है और उनके हर तरह के आमाल और हरकतों को और दिलों के भेदों को जानता है। फिर अपने रसूल से जिसको सबसे बड़ी तौहीद और बेहतरीन शरीअ़त इनायत फ़रमाई, फ़रमाता है कि लोगों को सीधे रास्ते की

Maktab E Ashraf

Mahtab E Ashraf

तरफ़ बुलाओ और कह दो कि आसमानों और ज़मीन में क्या ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे को वली बनाऊँ? जैसा कि फ़रमाया कि कह दो ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे हुक्म देते हो कि ख़ुदा के सिवा किसी और को पूजूँ? मतलब यह है कि वह ज़मीन व आसमानों का बनाने वाला है, बग़ैर किसी नमूने के उसने ज़मीन व आसमान को पैदा किया है, उसको छोड़कर और किसी को क्यों पूजूँ। वह सबको खिलाता है, उसको नहीं खिलाया जाता, हालाँकि वह बन्दों का हाजत-मन्द (मोहताज) नहीं कि उनसे उसकी कोई ग़र्ज़ जुड़ी हो, जैसा कि फ़रमाया कि इनसान व जिन्नात को मैंने सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि क़ुबा के एक अन्सारी सहाबी ने नबी करीम सल्ल. की दावत की, हम सब भी गये। आप जब खाने से फ़ारिग़ हो चुके फ़रमाया कि ख़ुदा का शुक्र है जो खिलाता है और ख़ुद कुछ नहीं खाता। हम पर एहसान फ़रमाता है, हमें खाना खिलाया, पानी पिलाया, हमारे नंगे जिस्म पर लिबास पहनाया, हम ख़ुदा को नहीं छोड़ सकते, नेमतों की नाशुक्री नहीं कर सकते, न उससे बेनियाज़ (बेपरवाह) हो सकते हैं। उसने गुमराही से बचाया, दिल के अंधेपन से दूर रखा (यानी हमें चीज़ों की हक़ीक़त में ग़ौर करके उनके ख़ालिक़ को पहचानने की तौफ़ीक़ दी), सारी मख़्लूक़ात पर हमें फ़ज़ीलत इनायत फ़रमाई।

कह दो ऐ नबी! कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सबसे पहला मुसलमान बनूँ और शिर्क न करूँ। अगर मैं ख़ुदा की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है, क़ियामत के दिन जिस पर से अ़ज़ाब हट गया उस पर बड़ी रहमत हुई, और यह बहुत बड़ी कामयाबी है, जैसा कि फ़रमाया कि जो दोज़ख़ से दूर रखा गया और जन्नत में भेजा गया वह बड़ा ही कामयाब शख़्स है।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ○ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ○ قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ بَيْنِیْ وَبَيْنَكُمْ ۚ وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ	और अगर अल्लाह तआ़ला तुझको कोई तकलीफ़ पहुँचा दें तो उसका दूर करने वाला सिवाये अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं। और अगर तुझको वह (यानी अल्लाह तआ़ला) कोई नफ़ा पहुँचा दें तो वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाले हैं। (17) और वही अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब (व बरतर) हैं, और वही बड़ी हिक्मत वाले (और) पूरी ख़बर रखने वाले हैं। (18) आप कहिए कि गवाही देने के लिए सबसे बढ़कर चीज़ कौन है? आप कहिए कि मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह तआ़ला गवाह है, और मेरे पास यह क़ुरआन बतौर 'वही' के भेजा गया है ताकि मैं इस क़ुरआन के ज़रिये से तुमको और जिस-जिसको यह क़ुरआन पहुँचे उन सबको डराऊँ, क्या तुम सब सचमुच यही गवाही दोगे कि अल्लाह तआ़ला के साथ कुछ और माबूद भी हैं? आप कह दीजिए कि मैं तो

Maktaba e Ashraf

بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

ع ۸

गवाही नहीं देता, आप कह दीजिए कि बस वह तो एक ही माबूद है, और बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। (19) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे लोग इस (रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को ज़ाया कर लिया है, सो वे ईमान न लाएँगे। (20)

और उससे ज़्यादा और कौन बेइन्साफ़ (ज़ालिम) होगा जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ बोहतान बाँधे या अल्लाह तआ़ला की आयतों को झूठा बतलाये, ऐसे बेइन्साफ़ों को छुटकारा न मिलेगा। (21)

मुश्किलों को दूर करने वाला ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं

अल्लाह तआ़ला ख़बर दे रहा है कि नफ़े नुक़सान का मालिक वही है, वह अपनी मख़्लूक़ात में जैसा चाहे तसर्रुफ़ करे, उसकी हिक्मत को न कोई पीछे डालने वाला है न उसके फ़ैसले को कोई रोकने वाला है। अगर वह नुक़सान को रोक दे तो कोई जारी करने वाला नहीं, और ख़ैर को जारी कर दे तो कोई रोकने वाला नहीं। जैसा कि फ़रमायाः

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ... الخ.

यानी ख़ुदा जिसे जो रहमत देना चाहे उसे कोई रोक नहीं सकता। नबी करीम सल्ल. फ़रमाते थेः

اللّٰهم لا مانع لما اعطيت ولا معطى لما منعت ولا ينفع ذاالجد منك الجد.

कि अगर अल्लाह किसी को कोई चीज़ दे तो कोई रोकने वाला नहीं और अगर किसी से कोई चीज़ रोक ले तो उसको कोई देने वाला नहीं, कोई चीज़ नफ़ा बख़्श नहीं जब तक अल्लाह का हुक्म न हो।

इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ.

यानी वह ख़ुदा वह है जिसके लिए लोगों के सर झुक गये हैं, हर चीज़ पर वह ग़ालिब है, उसकी अ़ज़मत व बड़ाई और बुलन्दी व रुतबे के सामने सब पस्त हैं, उसका हर फ़ेल हिक्मत से भरा है, वह चीज़ों की जगह से बा-ख़बर है। अगर वह कुछ देता है तो मुस्तहिक़ को ही देता है और अगर रोक देता है तो ग़ैर-मुस्तहिक़ (यानी जो हक़दार नहीं) से रोक देता है। फिर फ़रमाता है सबसे बड़ी शहादत किसकी शहादत (गवाही) है? फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाता है- कह दो कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच गवाह की हैसियत में है और यह क़ुरआन मेरी तरफ़ नाज़िल किया गया है, ताकि मैं तुम्हें डराऊँ, और उसे भी जिस तक यह क़ुरआन पहुँचे, जैसा कि फ़रमायाः

Maktab E Ashraf

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ.

यानी उन लोगों में से जो कुफ़्र इख़्तियार करेगा तो दोज़ख़ उसका ठिकाना है (यानी उसके लिये हमारा फ़ैसला यही है) और जिस तक क़ुरआन पहुँच जाए तो गोया उसने नबी सल्ल. से मुलाक़ात कर ली। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जिस तक मेरा क़ुरआन पहुँचा गोया मैंने ख़ुद उसे तब्लीग़ कर दी। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआला की आयतें दूसरों तक पहुँचाओ।

जिसको किताबुल्लाह की कोई आयत पहुँच गई तो ख़ुदा का उसको हुक्म पहुँच गया। रबीअ़ बिन अनस ने कहा है कि रसूल के पैरोकार पर लाज़िम है कि इस तरह इस्लाम की दावत दे जिस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम देते थे, और इस तरह डराये जैसे हज़रत डराते थे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى. قُلْ لَّآ اَشْهَدُ.

यानी ऐ मुश्रिको! क्या वाक़ई तुम गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ और दूसरे ख़ुदा भी हैं? कह दो कि ऐसी गवाही तो मैं नहीं दे सकता।

जैसे कि फ़रमायाः

فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ.

अगर वे गवाही देंगे भी तो ऐ नबी तुम ऐसी गवाही न देना।

قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ.

आप कह दीजिये कि वह अल्लाह एक है, मैं तो उस चीज़ से बरी हूँ जो तुम शिर्क करते हो। यानी मैं तुम्हारा हम-ख़्याल नहीं।

फिर अहले किताब (जो आसमानी किताब रखते थे यानी यहूदी व ईसाईयों) के बारे में इरशाद है कि ये क़ुरआन को ऐसे अच्छे तरीक़े पर जानते हैं जैसा कि वे अपनी औलाद को जानते हैं, क्योंकि उनकी किताबों में पहले आये तमाम रसूलों के बारे में लिखा हुआ है कि ये सारे पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. के वजूद की वजह से आये हैं। वे मुहम्मद सल्ल. की हर सिफ़त, उनके वतन, हिजरत, उनकी उम्मत की ख़ूबियाँ, ग़र्ज़ यह कि अपनी किताबों में इन सारी बातों का ज़िक्र पाते हैं। इसी लिए फ़रमाया किः

اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ.

यानी जिन लोगों ने अपनी ज़ातों को नुक़सान पहुँचा लिया वही हैं कि ईमान नहीं लाते, हालाँकि बात बिल्कुल स्पष्ट है। अम्बिया ने आपकी बशारतें (ख़ुशख़बरी) दी हैं और पुराने ज़माने से आपकी पैग़म्बरी और आपके वजूद की भविष्यवाणी करते चले आए हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ...

यानी उस शख़्स से बढ़कर कोई ज़ालिम नहीं जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बाँधे कि अल्लाह ने उसे पैग़म्बर बनाकर भेजा है, और फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों और दलीलों व हुज्जतों को झुठला दे।

Maktab E Ashraf

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ.

ये झूठ बोहतान बाँधने वाले और झुठलाने वाले कभी फ़लाह नहीं पायेंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝

और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन हम उन तमाम मख़्लूक़ों को जमा करेंगे, फिर हम मुश्रिकों से (वास्ते से या बिला वास्ता सज़ा और झिड़की के तौर पर) कहेंगे कि (बतलाओ) तुम्हारे वे शुरका जिनके माबूद होने का तुम दावा करते थे कहाँ गये? (22) फिर उनके शिर्क का अंजाम इसके सिवा कुछ भी न होगा कि वे यूँ कहेंगे कि अल्लाह की क़सम, अपने परवर्दिगार की, हम मुश्रिक न थे। (23) ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर, और जिन चीज़ों को तराशा करते थे वे सब उनसे ग़ायब हो गईं। (24) और उनमें बाज़े ऐसे हैं कि आपकी तरफ़ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, इससे कि वे उसको समझें और उनके कानों में डाट दे रखी है, और अगर वे लोग तमाम दलीलों को देख लें, उन पर भी ईमान न लाएँ, यहाँ तक कि जब ये लोग आपके पास आते हैं तो आपसे ख़्वाह-मख़्वाह झगड़ते हैं। ये लोग जो काफ़िर हैं यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बाते हैं जो पहलों से चली आ रही हैं। (25) और ये लोग उससे औरों को भी रोकते हैं और ख़ुद भी उससे दूर रहते हैं, और ये लोग अपने ही को तबाह कर रहे हैं और कुछ ख़बर नहीं रखते। (26)

क़ियामत के दिन सवाल व जवाब और आमाल का हिसाब

हम जब क़ियामत के दिन इन सब को जमा करेंगे तो उन बुतों के बारे में उनसे पूछेंगे जिन्हें ये ख़ुदा को छोड़कर पूजते रहते थे, कि तुम्हारे वे बुत कहाँ गये जिन्हें तुम ख़ुदा का साझी क़रार देते थे। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ.

Maktab E Ashraf

यानी उनका उज़्र और बहाना यही होगा कि अल्लाह की क़सम हम तो मुश्रिक (अल्लाह के साथ किसी और को शरीक करने वाले) नहीं थे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि उनके पास एक आदमी आया और कहा- ऐ इब्ने अ़ब्बास! आपने सुना है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ.

यानी वे कहेंगे कि अल्लाह की क़सम हम तो मुश्रिक (अल्लाह के साथ किसी और को शरीक करने वाले) नहीं थे।

लेकिन यह कैसे होगा? इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया कि जब ये मुश्रिक लोग देखेंगे कि नमाज़ियों के सिवा कोई जन्नत में दाख़िल नहीं हो रहा है तो आपस में कहेंगे कि आओ हम शिर्क का इनकार कर दें। चुनाँचे वे अपने मुश्रिक होने का इनकार करेंगे, तो अल्लाह तआ़ला उनकी ज़बानों पर मुहर लगा देगा, फिर उनके हाथ-पाँव ख़ुद ही गवाही देने लगेंगे और कोई बात छुपा न सकेंगे। ऐ शख़्स! अब तो कोई शक तुम्हारे दिल में बाक़ी नहीं रहा? क़ुरआन में कोई ऐसी बात बाक़ी नहीं रह गई है जो खोलकर बयान न की गयी हो, लेकिन तुम नहीं समझ सकते, और उसकी तावील व तौजीह (यानी उसका सही मतलब व मफ़हूम वाज़ेह) नहीं कर सकते। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा कि यह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी, लेकिन यहाँ शुब्हा यह होता है कि यह आयत तो मक्का में उतरी है और मक्का में मुनाफ़िक़ लोग कहाँ थे? यह तो इस्लाम के मक़बूले आ़म होने के बाद मदीने में उनका गिरोह पैदा हुआ। मुनाफ़िक़ों के बारे में जो आयत उतरी है वह आयते मुजादला है यानी:

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ.

यानी जिस दिन अल्लाह उनको क़ियामत में जमा करेगा वे ख़ुदा की क़सम खा-खाकर बयान करेंगे।

और इसी तरह उन लोगों के बारे में फ़रमाया है कि:

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ.

यानी देखो तो उन्होंने जान-बूझकर कैसी झूठ बात कही, और जिन बुतों को वे पूजते थे वे कैसे उनसे फिर गये।

इसके बाद इरशाद होता है कि उनमें से बाज़ तुम्हारी तरफ़ कान लगाकर सुनते हैं, हालाँकि हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं ताकि वे समझ न सकें, और उनके कानों को बहरा कर दिया है, और चाहे वे ख़ुदा की कैसी ही निशानी पायें ईमान नहीं लाते। वे अगरचे 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ हुक्म) सुनते हैं लेकिन इससे उनको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने एक और स्थान पर फ़रमाया कि उनकी मिसाल चौपायों (पशुओं और जानवरों) जैसी है जो अपने चरवाहे की आवाज़ को सुनते हैं, लेकिन मतलब ख़ाक नहीं समझते।

फिर जिस आयत का ज़िक्र चल रहा है उसमें फ़रमाता है कि वे खुली निशानियाँ और दलीलें देखते हैं लेकिन उन्हें न अ़क़्ल है न इन्साफ़ से काम लेते हैं, फिर क्या ईमान लायेंगे। अगर उनमें कुछ भी भलाई की सलाहियत होती तो अल्लाह तआ़ला उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो झगड़ा करने लगते हैं और बातिल (नाहक़ और ग़लत) बात पेश करके हक़ के अन्दर बहस व मुबाहसा शुरू कर

Maktab E Ashraf

देते हैं, कि जो कुछ तुम 'वही' (अल्लाह के पैग़ाम) के नाम से पेश कर रहे हो, यह तो पहले लोगों की किताबों से नक़ल किया गया है। वे नबी सल्ल. के पास आने से लोगों को रोकते हैं और ख़ुद भी उनसे दूर रहते हैं।

'यन्हौ-न' (रोकने) की तफ़सीर में दो क़ौल हैं- एक तो यह कि हक़ की पैरवी और रसूल की तस्दीक़ और क़ुरआन का हुक्म मानने से लोगों को रोकते हैं और ख़ुद भी इनसे दूर रहते हैं। गोया दो बुरे काम करते हैं, न ख़ुद फ़ायदा उठाते हैं न दूसरों को फ़ायदा उठाने देते हैं। और दूसरा क़ौल यह है कि 'रोकने' से मुराद यह है कि ये लोग नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचाने की कोशिश करते थे, तो अबू तालिब उन्हें रोकते थे, उन्हीं से मुताल्लिक़ यह आयत उतरी। सईद बिन हिलाल कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. के दस चचा थे, बज़ाहिर आपके बड़े हमदर्द, लेकिन हक़ीक़त में आपके ख़िलाफ़, ये सब नबी सल्ल. के क़त्ल करने से लोगों को रोकते थे लेकिन अफ़सोस कि ईमान की बरकत हासिल करने से ख़ुद मेहरूम रह जाते थे। इरशाद होता है कि वे ग़ैर-महसूस तौर पर अपने नफ़्सों (जानों) को हलाक कर रहे हैं, वे इस बात को नहीं समझते कि अपनी ही ज़ात को नुक़सान व घाटा पहुँचा रहे हैं।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَ
نَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ○ بَلْ بَدَا لَهُمْ
مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا
لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ○
وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ○ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى
رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى
وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُوْنَ ○ع ع ٣ ١٠ ٩

और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि ये दोज़ख़ के पास खड़े किये जाएँगे तो कहेंगे: क्या अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जाएँ, और (अगर ऐसा हो जाए तो) हम अपने परवर्दिगार की आयतों को झूठा न बताएँ और हम ईमान वालों में से हो जाएँ। (27) बल्कि जिस चीज़ को इससे पहले दबाया करते थे वह उनके सामने आ गई है। और अगर ये लोग फिर वापस भी भेज दिए जाएँ तब भी यह वही काम करें जिससे उनको मना किया गया था, और यक़ीनन ये लोग बिल्कुल झूठे हैं। (28) और ये कहते हैं कि जीना और कहीं नहीं सिर्फ़ यही फ़िलहाल का जीना है, और हम ज़िन्दा न किए जाएँगे। (29) और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किये जायेंगे और अल्लाह पाक फ़रमायेगा कि क्या यह चीज़ हक़ नहीं है? (यानी दोबारा ज़िन्दा, क़ियामत) वे कहेंगे बेशक क़सम अपने रब की! अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तो अब अपने कुफ़्र के बदले अ़ज़ाब चखो। (30)

क़ियामत और काफ़िरों के हालात

अल्लाह पाक काफ़िरों का हाल बयान फ़रमाता है कि जब वे क़ियामत के दिन आग के सामने खड़े

किये जायेंगे और उसके तौक़ और बेड़ियों को देखेंगे तो कहने लगेंगे कि काश हम फिर दुनिया में वापस किये जायें, अबकी बार हम नेक अ़मल करेंगे और ख़ुदा तआ़ला की आयात (निशानियों और दलीलों) को न झुठलायेंगे, ईमान लायेंगे। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि नहीं बल्कि यह बात है कि कुफ़्र, झुठलाने और दुश्मनी व बैर की जो बातें इन्होंने अपने दिलों में छुपा रखी थीं वे अब ज़ाहिर हो गई हैं, अगरचे दुनिया या आख़िरत में इसका इन्होंने इनकार किया है जैसा कि अभी-अभी अल्लाह पाक ने फ़रमाया है कि उनकी हुज्जत सिर्फ़ यह है कि हम मुश्रिक नहीं थे। देखो इन्होंने कैसी झूठी बातें बनाईं और यह भी संभावना है कि इन पर अब यह ज़ाहिर हो गया है कि दुनिया में रसूल की सदाक़त (सच्चाई और हक़ पर होना) जानने के बावजूद वे जो ईमान नहीं लाये थे इस वक़्त यही बहस का मुद्दा है, यानी जानकर भी ईमान न लाना। यह चीज़ यहाँ आकर ज़ाहिर हो गई है, दुनिया में यह राज़ न खुल सका था, जैसा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔ़न से कहा था कि ऐ फ़िरऔ़न! तू अच्छी तरह जानता है कि इसको ख़ुदा ही ने नाज़िल फ़रमाया है। और अल्लाह पाक ने भी फ़िरऔ़न और क़ौमे फ़िरऔ़न के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि अगरचे उन्होंने इनकार कर दिया लेकिन उनके दिल यक़ीन रखते थे कि यह हमारी तरफ़ से ज़ुल्म व ज़्यादती है।

और यह भी है कि इससे मुराद वे मुनाफ़िक़ हों जो लोगों के सामने तो ईमान लाते थे लेकिन बातिन (दिल) में काफ़िर होते। यह काफ़िरों के उस कलाम की ख़बर दी जा रही है जो वे क़ियामत के दिन करेंगे, इसमें कोई हर्ज नहीं कि यह सूरः मक्की है और निफ़ाक़ (दोग़लापन यानी ज़ाहिर में इस्लाम और दिल में कुफ़्र) तो मदीने वालों में था, या उसके आस-पास के देहातियों में। फिर मक्की सूरः में मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र कैसे आ सकता है? क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने मक्की सूरतों में भी निफ़ाक़ का ज़िक्र फ़रमाया है और वह सूरः अन्कबूत है। फ़रमाता है:

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ.

यानी अल्लाह ईमान वालों को भी जानता है और मुनाफ़िक़ों को भी। इसी बिना पर कहा गया कि मुनाफ़िक़ लोग जब आख़िरत के जहान में अ़ज़ाब देख लेंगे तो कुफ़्र व निफ़ाक़ को छुपाने के बाद उन पर यह बात ज़ाहिर हो जायेगी कि हमारा ईमान ज़ाहिरी ईमान था। चुनाँचे यह जो फ़रमाया कि वे छुपाते थे, अब ज़ाहिर हो गया। सो इसका मतलब यह है कि वे दुनिया की तरफ़ जो वापसी चाहते हैं वे ईमान के साथ दिलचस्पी व मुहब्बत की बिना पर नहीं बल्कि जो अ़ज़ाब क़ियामत के दिन उन्होंने देख लिया है उससे डर गये हैं, कि अब अपने कुफ़्र की सज़ा मिलेगी, इसलिये दोज़ख़ से बचने के लिये दुनिया की तरफ़ वापसी चाहते हैं। और अगर वे दुनिया में भेजे भी जायेंगे तो ज़रूर फिर कुफ़्र ही करने लगेंगे। (क्योंकि इससे पहले भी दुनिया में बहुत सी बार वादा किया कि अगर ऐसा हो जाये तो हम ईमान ले आयेंगे मगर फिर न लाये) और उनका यह कहना कि इस बार नहीं झुठलायेंगे और ईमान वाले रहेंगे, सब ग़लत है। वे तो कहते हैं कि जो कुछ है सिर्फ़ यही ज़िन्दगी है, कौन दोबारा उठाया जाता है। काश तुम देख सकते कि वे अपने रब के सामने कैसे मायूस होकर खड़े हुए हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि क्यों यह क़ियामत का दिन हक़ (सच) है या नहीं? वे कहेंगे हाँ ऐ ख़ुदा तेरी क़सम सच है। हुक्म होगा कि फिर तो अपने कुफ़्र का मज़ा चखो, क्या यह जादू है या यह कि तुम्हीं को समझ व अ़क़्ल न थी?

Maktab E Ashraf

बेशक घाटे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह तआ़ला से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुक़र्ररा वक़्त उन पर अचानक आ पहुँचेगा तो कहने लगेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी कोताही पर जो इसके बारे में हुई! और हालत उनकी यह होगी कि वे अपने बोझ अपनी कमर पर लादे होंगे। ख़ूब सुन लो कि बुरी होगी वह चीज़ जिसको वे लादेंगे। (31) और दुनियावी ज़िन्दगानी तो कुछ भी नहीं सिवाय खेल-कूद सैर-तमाशे और तफ़रीह के, और पिछला घर मुत्तक़ियों के लिए बेहतर है, क्या तुम सोचते समझते नहीं हो! (32)	قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ○ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ○

झुठलाना और घाटा उठाना

जो काफ़िर लोग ख़ुदा तआ़ला से मुलाक़ात का इनकार करते थे उनकी नामुरादी और मायूसी का ज़िक्र हो रहा है कि जब अचानक क़ियामत आ पहुँचेगी तो अपने बुरे कामों पर उन्हें कैसे शर्मिन्दगी और पछतावा होगा और कहेंगे कि अफ़सोस हमने ख़िलाफ़े हक़ कैसी ज़्यादतियाँ की थीं। वे अपनी पीठों पर अपने गुनाहों का बोझ उठाये होंगे, अफ़सोस कि वे कैसा बुरा वज़न उठाये हुए हैं।

क़तादा रह. 'बोझ उठाने' को 'आमाल' क़रार देते थे। अबू मरज़ूक़ रह. से रिवायत है कि जब काफ़िर या फ़ाजिर (बदकार व गुनाहगार) क़ब्र से उठेंगे तो एक बहुत ही बद-शक्ल चीज़ उनका स्वागत करेगी, वह काफ़िर शख़्स पूछेगा तू कौन है? वह शक्ल कहेगी तू मुझे नहीं पहचानता? मैं तेरे बुरे आमाल की शक्ल हूँ जो तू दुनिया में करता रहता था। दुनिया में बहुत दिनों तू मुझ पर सवार रहा, अब मैं तुझ पर सवार हूँगा। चुनाँचे इरशाद होता है किः

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ.

और हालत यह होगी कि एक बोझ वे अपनी पीठों पर लादे होंगे।

सुद्दी रह. से रिवायत है कि जब कोई गुनाहगार क़ब्र में दाख़िल होता है तो उसके पास एक बहुत ही बुरी शक्ल वाली सूरत आती है, काला रंग, बदबूदार मेले कपड़े, उसके साथ क़ब्र में रह जाता है। वह उसको देखकर कहता है क्या ही बुरा चेहरा है। वह कहेगा- तेरे बुरे आमाल का मैं अ़क्स (परछाई) हूँ। ऐसे ही थे तेरे आमाल और ऐसे ही बदबूदार थे तेरे काम। वह कहेगा तू है कौन? वह कहेगा मैं तेरा अ़मल हूँ। फिर वह क़ियामत तक उसके साथ क़ब्र में रहेगा। क़ियामत में वह उसे कहेगा कि लज़्ज़त व शहवत (यानी मौज मस्ती और ऐश) की शक्ल में तुझको मैं दुनिया में उठाये हुए था, आज के दिन तू मुझे उठायेगा। चुनाँचे उसके आमाल की वह सूरत उसकी पीठ पर सवार होकर उसको दोज़ख़ की तरफ़ ले जायेगी, यही इस आयत की वज़ाहत (तफ़सीर) है। इरशाद है कि अक्सर दुनिया की ज़िन्दगी खेल-तमाशा और बेकार है, और

Maktab e Ashraf

मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के लिये तो आख़िरत का घर ही असल है।

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِىْ يَقُوْلُوْنَ
فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ○ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ
رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا
وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ
لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى
الْمُرْسَلِيْنَ ○ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ
اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِىَ نَفَقًا
فِى الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ
فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ
عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ○
اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ۭ
وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ○

النصف

हम ख़ूब जानते हैं कि आपको उनकी बातें ग़मगीन करती हैं। सो ये लोग आपको झूठा नहीं कहते, लेकिन ये ज़ालिम तो अल्लाह तआला की आयतों का इनकार करते हैं। (33) और बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले हुए हैं उनको भी झुठलाया जा चुका है, सो उन्होंने उस पर सब्र ही किया कि उनको झुठलाया गया,
और उनको तकलीफ़ें पहुँचाई गईं, यहाँ तक कि हमारी मदद उनको पहुँची, और अल्लाह तआला की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और आप के पास बाज़ पैग़म्बरों के बाज़ क़िस्से पहुँच चुके हैं। (34) और अगर आपको उनका मुँह मोड़ना नागवार गुज़रता है तो अगर आपको यह ताक़त है कि ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूँढ लो, फिर कोई मोजिज़ा ले आओ (तो ऐसा करो), और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो उन सब को सही रास्ते पर जमा कर देता, सो आप नादानों में से न होइए। (35) वही लोग क़बूल करते हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह तआला ज़िन्दा करके उठाएँगे फिर वे सब अल्लाह ही की तरफ़ लाए जाएँगे। (36)

नबी अ़लैहिस्सलाम को तसल्ली व दिलासा

क़ौम के झुठलाने और मुख़ालफ़त पर अल्लाह तआला अपने नबी सल्ल. को तसल्ली देता है कि हमको उनके झुठलाने और तुम्हारे रंज व मलाल का इल्म है। जैसा कि एक जगह फ़रमाया- हमें उनकी हरकत ख़ूब मालूम है तुम मलाल न करो। और फ़रमाया कि क्या अगर वे ईमान न लाये तो आप उनके पीछे अपनी जान घुला डालेंगे? कहाँ तक उन पर हसरत व अफ़सोस करेंगे? फिर इरशाद होता है कि वे दर हक़ीक़त तुमको झुठला नहीं रहे हैं बल्कि हक़ से दुश्मनी के सबब अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हैं। इसी के बारे में हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि अबू जहल ने नबी सल्ल. से कहा- हम तुम्हें तो नहीं झुठलाते बल्कि तुम जो दीन पेश करते हो उसको झुठलाते हैं। चुनाँचे अल्लाह तआला ने इस आयत को उतारा।

अबू यज़ीद मदनी रह. से रिवायत है कि नबी सल्ल. और अबू जहल की मुलाक़ात हुई। अबू जहल ने मुसाफ़ा किया तो उसके एक साथी ने कहा क्या तुम इस शख़्स से मुसाफ़ा करते हो? अबू जहल ने कहा-

Maktab E Ashraf

ख़ुदा की क़सम मैं जानता हूँ कि यक़ीनन यह नबी है, लेकिन क्या कभी अब तक हम अ़ब्दे मुनाफ़ (यानी अ़ब्दे मुनाफ़ की औलाद और नस्ल) से दबकर रहे हैं।

क़ुरआन की तासीर

अबू जहल के क़िस्से के बारे में कहा गया है कि वह रात में छुपकर हुज़ूर सल्ल. की क़िराअत (क़ुरआन को पढ़ना) सुनने के लिये आया। इसी तरह अबू सुफ़ियान बिन सख़र और अख़्नस बिन शुरैक़ भी, एक की दूसरे को ख़बर न थी, सुबह तक तीनों छुपकर क़ुरआन सुनते रहे। दिन का उजाला होने लगा तो वापसी में एक जगह पर तीनों की मुलाक़ात हो गई। हर एक ने दूसरे से कहा कि तुम कैसे आये थे? अब सबने आपस में यह मुआ़हिदा किया कि हमको क़ुरआन सुनने के लिए नहीं आना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि हमें देखकर क़ुरैश के नौजवान भी आने लगें और फ़ितने (आज़माईश) में पड़ जायें।

जब दूसरी रात आई तो हर एक ने यही गुमान किया कि वे दोनों नहीं आये होंगे, चलो क़ुरआन सुन लें। ग़र्ज़ यह कि सुबह के क़रीब फिर तीनों का मिलन हुआ और मुआ़हिदे के ख़िलाफ़ करने पर एक दूसरे को मलामत करने लगे और दोबारा मुआ़हिदा कर लिया कि अब न आयेंगे। जब तीसरी रात आई तो फिर तीनों हुज़ूर की मजलिस में गये, फिर सुबह के वक़्त मुआ़हिदा कर लिया कि आईन्दा तो हरगिज़ न आयेंगे। अब अख़्नस बिन शुरैक़ अबू सुफ़ियान बिन हरब के पास आया और कहने लगा ऐ अबू हन्ज़ला! तुम्हारी क्या राय है, तुमने मुहम्मद से जो क़ुरआन सुना उसके बारे में क्या कहते हो? अबू सुफ़ियान कहने लगा ऐ अबू सालबा! ख़ुदा की क़सम मैंने जो बातें सुनीं उनको ख़ूब पहचानता हूँ और उसका जो मतलब है उसको भी जानता हूँ लेकिन बाज़ बातें ऐसी सुनी हैं जिनका मक़सद और मायने न समझ सका। अख़्नस ने कहा ख़ुदा की क़सम यही मेरी हालत है। फिर अख़्नस वहाँ से चलकर अबू जहल के पास आया और कहने लगा ऐ अबुल-हिकम! मुहम्मद से जो कुछ सुना तुम्हारी इस बात में क्या राय है, और तुमने क्या सुना? अबू जहल ने कहा कि हम और बनू अ़ब्दे मुनाफ़ बुलन्द रुतबा और वर्चस्व हासिल करने में हमेशा एक दूसरे का मुक़ाबला करते रहे हैं, उन्होंने दावतें कीं तो हमने भी कीं, उन्होंने दान और भलाई के काम किये तो हमने भी किये, यहाँ तक कि हम तो पाँव जोड़े बैठे रहे और वे कहने लगे कि हमारे पास ख़ुदा का एक पैग़म्बर है, उस पर आसमान से 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) उतरती है, तो अब हम यह बात कहाँ से लायें। ख़ुदा की क़सम हम उस पर ईमान नहीं लायेंगे, और उसकी पैग़म्बरी की तस्दीक़ नहीं करेंगे (यानी उसको नहीं मानेंगे) और ख़ुद पर उसकी बरतरी न मानेंगे।

अख़्नस यह सुनकर चला गया और इस आयत के बारे में कि वे तुम्हें नहीं झुठलाते अल्लाह की निशानियों को झुठलाते हैं, सुद्दी कहते हैं कि बदर (की लड़ाई) के दिन अख़्नस इब्ने शुरैक़ ने बनी ज़ोहरा से कहा कि मुहम्मद तुम्हारा भांजा है, तुम इस बात के ज़्यादा हक़दार हो कि अपने भांजे की तरफ़ से मुदाफ़िअ़त करो, अगर दर हक़ीक़त वह नबी है तो आज बदर के दिन में तुमको उससे लड़ना नहीं चाहिए। और अगर वह झूठा है तो अपने भांजे से रुक जाने के भी तुम्हीं ज़्यादा हक़दार हो, कि उस पर हमला न करो और लड़ाई से अलग रहो। अच्छा ठहरो मैं अबुल-हिकम से मिल लूँ। अगर वह मुहम्मद पर ग़ालिब आ जाये तो तुम किसी नुक़सान के बग़ैर अपने वतन वापस होगे, और अगर इस जंग में मुहम्मद ग़ालिब आ गये तो तुमने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ जंग की ही नहीं थी, इसलिये जंग में शरीक होने से रुक ही क्यों नहीं जाते। उसी दिन से उसका नाम अख़्नस हो गया, हालाँकि उसका नाम उबई था। अब अख़्नस और अबू

जहल दोनों एक साथ जमा हुए। अख़्नस ने पूछा ऐ अबुल-हिकम (यानी अबू जहल) भला मुझे बताओ कि मुहम्मद सच्चे हैं या झूठे? यहाँ मेरे और तुम्हारे सिवा कोई और क़ुरैश वालों में से नहीं जो हमारी बात सुन सके। अबू जहल ने कहा कमबख़्त ख़ुदा की क़सम मुहम्मद सच्चा है, कभी मुहम्मद ने झूठ नहीं कहा, लेकिन बात यह है कि जब बनू क़ुसई (यानी नबी पाक के ख़ानदान वाले) ही झण्डा वाहक भी हों, हज के दिनों में हाजियों को पाने पिलाने की ख़िदमत और काबा शरीफ़ की चाबी अपने पास रखने का भी हक़ उन्हीं को हासिल हो, फिर नुबुव्वत भी उनकी सब मान लें तो फिर बक़ीया क़ुरैश के लिये रह क्या गया। इसी बिना पर अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि वे तुमको नहीं झुठलाते बल्कि अल्लाह की निशानियों को झुठलाते हैं और मुहम्मद भी तो अल्लाह की एक निशानी हैं।

और यह क़ौल कि तुमसे पहले रसूलों को भी झुठलाया जा चुका है, उन्होंने सब्र किया, उन्हें तकलीफ़ें पहुँचाई गईं यहाँ तक कि उन्हें हमारी मदद आ पहुँची।

इस आयत में नबी सल्ल. को तसल्ली दी गई है और उनसे नुसरत (मदद) का वादा किया गया है जैसा कि दूसरे नबियों की मदद की गई थी। यहाँ तक कि क़ौम के झुठलाने और उनसे बेहद तकलीफ़ पहुँचने के बाद वादा किया गया कि अन्जाम कार कामयाब तुम होगे। चुनाँचे दुनिया में भी उनके लिए ख़ुदा की तरफ़ से नुसरत (मदद) आ गई, जैसा कि आख़िरत की नुसरत हासिल हो ही चुकी है। इसलिए फ़रमाया कि अल्लाह की बात नहीं बदलती। और नुसरत का जो वादा किया गया है वह ज़रूर पूरा किया जायेगा। जैसा कि फ़रमाया-

"पैग़म्बरों के वाक़िआत तो तुम्हें बताये ही जा चुके हैं और उनकी तारीख़ (हालात और इतिहास) में तुम्हारे लिये अच्छा नमूना है।" फिर इरशाद होता हैः

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ.

यानी अगर तुम पर उनका मुँह मोड़ लेना (यानी बेतवज्जोही बरतना) भारी और तकलीफ़देह गुज़रता हो तो इसका इलाज कर ही क्या सकते हो, ज़मीन में सुरंग लगाओ और वहाँ से ख़ुदा की निशानी निकाल लाओ, या आसमान पर सीढ़ी लगाकर चढ़ो और उधर से कोई निशानी ढूँढ निकालो, और लाकर पेश करो। अगर हो सकता हो तो ऐसा भी कर देखो, ये कभी ईमान लायेंगे ही नहीं। अगर ख़ुदा को इनका ईमान लाना मन्ज़ूर ही होता तो इन्हें हिदायत पर लाकर जमा करता। इसलिये बात को समझो, ख़्वाह- मख़्वाह का रंज न करो, बेसमझ न बनो। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وَلَوْشَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا.

और अगर ख़ुदा चाहता तो ज़मीन के सब ही बाशिन्दे ईमान लाये हुये होते।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से 'अगर ख़ुदा चाहता' वाली आयत के बारे में मज़कूर है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह कोशिश रहती थी कि सब ही लोग ईमान लायें और हिदायत की पैरवी करने लगें। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी कि ईमान तो वही लाता है जिसके लिये यह सआ़दत (नेकबख़्ती) मुक़र्रर हो चुकी है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ.

यानी ऐ मुहम्मद सल्ल.! तुम्हारी दावत पर लब्बैक तो वे लोग कहेंगे जो तुम्हारी बात को सुनते और

Maktab E Ashraf

समझते हैं। और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ.

यानी इन मुर्दों को खुदा दोबारा उठायेगा फिर वे उसकी तरफ़ लौटाये जायेंगे।

'मुर्दों' से काफ़िर लोग मुराद हैं। क्योंकि उनके दिल मुर्दा हैं, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने उनको ज़िन्दगी की हालत में भी मुर्दों के नाम से याद किया है, और उनको मुर्दा जिस्मों से तश्बीह दी, ये उनकी रुस्वाई और ज़िल्लत बयान करने के लिये था।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

और ये लोग कहते हैं कि उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई मोजिज़ा क्यों नाज़िल नहीं किया गया, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआ़ला को बेशक इसपर पूरी कुदरत है कि वह मोजिज़ा नाज़िल फ़रमाएँ, लेकिन उनमें अक्सर बेख़बर हैं। (37) और जितने क़िस्म के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हैं और जितने क़िस्म के परिन्दे (जानवर) हैं कि अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ते हैं उनमें कोई क़िस्म ऐसी नहीं जो कि तुम्हारी ही तरह के गिरोह न हों,2 हमने दफ़्तर (लौहे महफ़ूज़) में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (सब कुछ लिख लिया है)। फिर सब अपने परवर्दिगार के पास जमा किए जाएँगे। (38) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं वे तो बहरे और गूँगे हो रहे हैं, तरह-तरह की अंधेरियों में हैं,3 अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे बेराह कर दें और जिसको चाहें सीधी राह पर लगा दें। (39)

अल्लाह की निशानियों के मज़ाहिर

मुश्रिकों के बारे में इरशाद होता है कि वे कहते थे- हम जिस तरह चाहते हैं ऐसी कोई निशानी या इनसानी आ़दत से ऊपर की बात खुदा की तरफ़ से तुम पर क्यों नहीं उतरती, जैसे ज़मीन में चश्मों का जारी होना और इसी तरह की दूसरी निशानियाँ। इरशाद होता है कि कह दो कि अल्लाह तो इस बात पर क़ादिर है लेकिन उसकी हिक्मत इस बात में विलम्ब को चाहती है, इसलिये कि अगर उनकी मंशा के मुताबिक़ निशानी अल्लाह तआ़ला नाज़िल फ़रमा देगा और फिर भी वे ईमान न लायेंगे तो खुद ही अ़ज़ाब उन पर नाज़िल हो जायेगा, मौत तक भी मोहलत न मिलेगी, जैसा कि पहली उम्मतों के साथ हुआ। खुद क़ौमे समूद की मिसाल तुम्हारे सामने है। हम तो जो चाहे निशानी भी दिखा सकते हैं और जो चाहें अ़ज़ाब भी कर सकते हैं। और फिर फ़रमाया:

Maktab E Ashraf

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ..... الخ

चरने चुगने वाले जानवर, उड़ने वाले परिन्द भी तुम्हारी तरह क़िस्म-क़िस्म के हैं।

हज़रत मुजाहिद कहते हैं कि इन जानवरों की कई क़िस्में हैं जिनके नाम मशहूर हैं। क़तादा रह. कहते हैं 'परिन्दे' एक उम्मत है, इनसान व जिन्नात भी एक-एक उम्मत हैं और ये उम्मतें तुम्हारे ही जैसी मख़्लूके खुदा हैं।

مَافَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ.... الخ

यानी सब का इल्म ख़ुदा को है, किसी को रिज़्क़ देना वह भूलता नहीं, चाहे वे ख़ुशकी के हों या पानी के हों। जैसा कि इरशाद है:

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا..... الخ

यानी वह उनके नामों, गिनती और ठहरने की जगहों को जानता है, यहाँ तक कि उनकी तमाम गतिविधियों तक की जानकारी रखे हुए है। और फ़रमायाः

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا..... الخ

बहुत से जानदार हैं जिनकी रोज़ी तेरे ज़िम्मे नहीं, उन्हें और तुम सबको अल्लाह ही रिज़्क़ देता है।

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि. के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में एक साल टिड्डीदल नहीं आया, आपने पूछा तो कुछ मालूम न हुआ। आपको चूँकि यह बात दिल को लगी हुई थी इसलिये इराक़ और शाम (सीरिया) वग़ैरह की तरफ़ लोगों को भेजकर दरियाफ़्त कराया कि क्या वहाँ कोई टिड्डीदल आया है? तो यमन की तरफ़ से आदमी ने चन्द टिड्डियाँ निकाल कर सामने रख दीं। हज़रत उमर रज़ि. ने उन्हें देखकर तीन बार अल्लाहु अक्बर कहा और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि अल्लाह तआ़ला ने हज़ार मख़्लूक़ पैदा की हैं जिनमें से छह सौ समुद्री हैं और चार सौ ख़ुश्की में हैं, सबसे पहले अल्लाह तआ़ला इस टिड्डी वाली मख़्लूक़ को हलाक करेगा, फिर एक के बाद एक मख़्लूक़ात की हलाकत का सिलसिला क़ायम हो जाएगा, जैसे मनके के दाने टूट जाते हैं:

ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ.

यानी इन सारी उम्मतों को फिर मौत आ जायेगी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने फ़रमाया कि जानवरों की मौत की तरह उनका हश्र होता है, इस बारे में एक दूसरा क़ौल यह है कि ये जानवर भी क़ियामत के दिन दोबारा उठाये जायेंगे। चुनाँचे फ़रमायाः

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ.

यानी वहशी जानवर भी मेहशर में आयेंगे।

अबूज़र रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर ने दो बकरियों को देखा कि एक दूसरे को सींग मार रही हैं, तो कहा ऐ अबूज़र क्या जानते हो कि ये कैसे लड़ रही हैं? आपने फ़रमाया- अल्लाह इनमें से ज़ालिम को जानता है और क़ियामत में इनका भी फ़ैसला करेगा। अबूज़र कहते हैं कि नबी सल्ल. ने हमें उड़ते हुए परिन्दे तक के बारे में इल्म दिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया है कि बिना सींग की बकरी क़ियामत के दिन सींग वाली बकरी से इन्तिक़ाम (बदला) लेगी।

Maktab_E_Ashraf

"तुम्हारी तरह के गिरोह" के बारे में अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला पशु पक्षियों और हर तरह के जानवरों को पैदा करेगा, हर एक दूसरे से अपना बदला लेंगे। फिर फ़रमायेगा कि तुम सब मिट्टी हो जाओ। चुनाँचे काफ़िर भी उस वक़्त यह कहने लगेंगे "काश हम भी मिट्टी हो जाते"।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ.

यानी जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है वे अपने जहल और बेसमझी की वजह से बहरे और गूँगे की तरह हैं, और फिर अंधेरों में हैं कि कुछ देख भी नहीं सकते। अब ऐसे लोग ठीक रास्ते पर चल सकें तो क्योंकर। जैसा कि अल्लाह तआ़ला सूरः ब-क़रह में फ़रमाता है कि उनकी मिसाल उस शख़्स के जैसी है जो आग रोशन करे तो आस-पास की चीज़ें उसको नज़र आ जायें, जिस वक़्त आग बुझ जाये वे तारीकी (अंधेरे) में रह जायें, और वे कुछ न देख सकें। और इसी लिये फ़रमायाः

مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

वह (यानी अल्लाह तआ़ला) जिनको चाहे गुमराह होने दे और जिनको चाहे सीधे रास्ते पर रखे। वह अपनी मख़्लूक़ पर अपनी मंशा और मर्ज़ी के मुताबिक़ तसर्रुफ़ करता (इख़्तियार इस्तेमाल करता) है।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ○ ع ١٠ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ○ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓى اِذَا

आप कहिए कि अपना हाल तो बतलाओ कि अगर तुम पर ख़ुदा का कोई अ़ज़ाब आ पड़े या तुम पर क़ियामत ही आ पहुँचे तो क्या ख़ुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो? (40) बल्कि ख़ास उसी को पुकारने लगो, फिर जिसके लिए तुम पुकारो, अगर वह चाहे तो उसको हटा भी दे, और जिन-जिन को तुम शरीक ठहराते हो उन सबको भूल जाओ। (41)

और हमने और "यानी दूसरी" उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आपसे पहले हो चुकी हैं पैग़म्बर भेजे थे, सो हमने उनको तंगदस्ती और बीमारी से पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाएँ। (42) सो जब उनको हमारी सज़ा पहुँची थी वे ढीले क्यों न पड़े? लेकिन उनके दिल तो सख़्त रहे और शैतान उनके आमाल को उनके ख़्याल में सँवार करके दिखलाता रहा। (43) फिर जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिनकी उनको नसीहत की जाती थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उनको मिली थीं वे ख़ूब इतरा

Maktab E Ashraf

فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ○ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○	गए तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया, फिर तो वे बिलकुल भौचक्के रह गए। (44) फिर ज़ालिम लोगों की जड़ कट गई और अल्लाह का शुक्र है जो तमाम जहानों का रब है। (45)

क़ादिर व तवाना

अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ में हर तरह तसर्रुफ़ (इख़्तियार इस्तेमाल) करने की क़ुदरत रखता है, न कोई उसका हुक्म बदल सकता है, न उसकी हिक्मत को पीछे डाल सकता है। उससे माँगा जाये तो अगर वह चाहे तो क़बूल कर लेता है। फ़रमाता है कि क्या तुम नहीं जानते कि अचानक क़ियामत आ जाये या एक दम से ख़ुदा का अ़ज़ाब आ दबाये तो तुम उसके सिवा किसी को नहीं पुकारते, क्योंकि जानते हो कि उस अ़ज़ाब को ख़ुदा के सिवा कोई नहीं लौटा सकता। अगर तुम ग़ैरुल्लाह को ख़ुदा बनाने में सच्चे हो तो तजुर्बा करके देखो, बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर अगर वह चाहेगा तो यह अ़ज़ाब हटायेगा। ऐसे वक़्त तुम अपने शरीकों और बुतों सबको भूल जाते हो।

समुद्र में होने की हालत में जब किसी मुश्किल में फंसते हो तो ख़ुदा के सिवा तमाम शरीकों को भूल जाते हो, तुमसे पहले की उम्मतों की तरफ़ भी हमने पैग़म्बरों को भेजा। और जब उन्होंने उनको झुठलाया तो हमने फ़क़्र व तंगी के अ़ज़ाब में जकड़ लिया और बीमारियों व ग़मों में मुब्तला कर दिया। ताकि वे ख़ुदा ही को पुकारें और उसके सामने झुकें और रुजू हों। फिर जब हम उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करते हैं तो वे असर क्यों नहीं लेते। यह बात है कि उनके दिल पत्थर के हो गये हैं, असर ही नहीं होता। शैतान ने उनके शिर्क और दुश्मनी के आमाल को उनकी निगाहों के सामने अच्छा बनाकर पेश किया है। पस जब वे हमारी तंबीह (डाँट और चेतावनी) को भी भूल जाते हैं और ईमान को पीठ पीछे डाल देते हैं तो हम पूरे रिज़्क़ के दरवाज़े उन पर खोल देते हैं (यानी उनको ख़ूब माल व दौलत देते हैं) ताकि वे और ढील में पड़ जायें। ख़ुदा की सियासत से ख़ुदा ही की पनाह।

और जब वे दुनिया में माल व दौलत और ऐश व आराम की चीज़ों पर फूले नहीं समाते और अपने माल व औलाद और रिज़्क़ में हमसे ग़ाफ़िल हो जाते हैं तो एक दम से उन पर अ़ज़ाब आ जाता है, या मौत आ जाती है। ऐसी नौबत आने पर वे हर ख़ैर से मायूस हो जाते हैं।

हसन बसरी रह. कहते हैं कि जिस पर रिज़्क़ वसी होता है (यानी दौलत ख़ूब आने लगती है) वह इस बात पर ग़ौर ही नहीं करता कि यह भी ख़ुदा की एक सियासत है, और जिसको तंगहाली आती है वह भी ग़ौर नहीं करता कि उसकी आज़माईश की गई है, और मोहलत दी गई है। रब की क़सम जब गुनाहगारों को पकड़ना मक़सूद होता है तो दुनिया में उन्हें ख़ूब तरक़्क़ी दी जाती है। क़तादा रह. कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने किसी क़ौम को उस वक़्त तक नहीं पकड़ा जब तक कि वह अपनी नेमत में बदमस्त नहीं हो गई। धोखा न खाओ, फ़ासिक़ और गुनाहगार लोग ही धोखा खाते हैं।

"उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये" से मुराद दुनियावी राहत व फ़राख़ी की ज़िन्दगी है। इब्ने आ़मिर से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब तुम किसी को देखो कि उसके

Maktab e Ashraf

गुनाहों और नाफ़रमानी के बावजूद दुनियावी ऐश व आराम अल्लाह ने उसे दे रखा है तो यक़ीन कर लो कि यह ख़ुदा की ढील का वक़्त गुज़ार रहा है, फिर आपने यही आयत पढ़ी कि जब वे हमें भूल जाते हैं तो हम उन्हें हर तरह का ऐश व आराम बख़्शते हैं, और जब वे उस पर मग़रूर हो जाते (यानी इतराने लगते) हैं और फिर हमारी गिरफ़्त में आ जाते हैं तो हर तरह से मायूस हो जाते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि जब अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम को बाक़ी रखना और तरक़्क़ी देना चाहता है तो उसको पाकदामनी और दरमियानी चाल बख़्शता है, और जिस क़ौम से अपना रिश्ता तोड़ लेता है तो उस पर दुनिया के दरवाज़े खोल देता है और ख़ियानत की सिफ़त उसके अन्दर पैदा हो जाती है, और जब वे इतराहट का शिकार हो जाते हैं तो अचानक उन्हें पकड़ लेता है। अब वे मायूस बैठे रहते हैं और उस क़ौम का नाम व निशान मिट जाता है। तारीफ़ की हक़दार ख़ुदा ही की पाक ज़ात है।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝

आप कहिए कि यह बतलाओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सुनने और देखने की क़ुव्वत बिल्कुल ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह तआ़ला के सिवा और कौन माबूद है कि ये तुमको फिर से दे दे? आप देखिए तो हम किस तरह दलीलों को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से पेश कर रहे हैं, फिर (भी) ये मुँह मोड़ते हैं। (46) आप कहिये कि यह बतलाओ अगर तुमपर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आ पड़े चाहे बेख़बरी में या ख़बरदारी में तो क्या सिवाय ज़ालिम लोगों के और भी कोई हलाक कियाजायेगा। (47) और हम पैग़म्बरों को सिर्फ़ इस वास्ते भेजा करते हैं कि वे ख़ुशख़बरी दें और डराएँ, फिर जो शख़्स ईमान ले आए और दुरुस्ती कर ले, सो उन लोगों को कोई अन्देशा नहीं और न वे ग़मज़दा होंगे। (48) और जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाएँ उनको अ़ज़ाब लगता है, इस वजह से कि वे दायरे (हद) से निकलते हैं। (49)

काफ़िरों को धमकी व डाँट

अल्लाह तआ़ला रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इरशाद फ़रमाता है कि झुठलाने वालों से कहो कि कुछ ख़बर है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी समाअ़त (सुनने की ताक़त) व बसारत (देखने की

Maktab E Ashraf

ताक़त) को अगर छीन ले जो तुम्हें दे रखी थी तो फिर तुम्हारा क्या हाल होगा। जैसा कि फ़रमायाः

هُوَالَّذِىْ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ... الخ

कि अल्लाह वह है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आँख कान बनाये यानी सुनने देखने की क़ुव्वत बख़्शी।

और यह भी मुम्किन है कि यह मुराद हो कि समाअ़त व बसारत (सुनने और देखने की ताक़त) के होते हुए शरीअ़त के मुताबिक़ उनसे फ़ायदा उठाने से मेहरूम कर दे, और हक़ बात के लाभान्वित होने से वे अंधे और बहरे हो जायें। और यही मतलब थाः

وَخَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ.

का। कि तुम्हारे दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है। जैसा कि फ़रमायाः

اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ.

और फ़रमायाः

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ.

यानी अगर वह तुम्हारे दिलों पर भी मुहर लगा दे तो ख़ुदा के सिवा कौन है जो उस मुहर को तोड़ सकेगा? इसी लिए फ़रमाया कि ज़रा ग़ौर करो कि हम अपनी बातें किस क़द्र वज़ाहत से (यानी खोलकर) बयान कर देते हैं, जो इस बात की दलील होती हैं कि ख़ुदा के सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं, और जितने माबूद तुमने बना रखे हैं सब बातिल (झूठे और ग़लत) हैं। इस वाज़ेह चीज़ के बाद भी वे हक़ की पैरवी से लोगों को रोकते हैं और ख़ुद भी रुकते हैं। कुछ जानते हो कि अगर ख़ुदा का अ़ज़ाब तुम्हें आ पहुँचे कि उसका तुम्हें वहम व गुमान भी न हो, या देखते दिखाते सामने आ जाये तो क्या इस गुमराह क़ौम के सिवा और कोई हलाक होगा। क्योंकि ये लोग अल्लाह के साथ शिर्क के सबब ख़ुदा के घेरे और पकड़ में हैं, लेकिन वे निजात पायेंगे जो एक ख़ुदा (यानी अल्लाह तआ़ला) की इबादत करते हैं। उन पर न यह ख़ौफ़ है न ग़म। जैसा कि फ़रमायाः

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ... الخ

जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को शिर्क से ख़राब न किया, उनके लिये अमन व अमान है और वे सही राह पर हैं।

फिर इरशाद होता है कि हम पैग़म्बरों को तो जन्नत की ख़ुशख़बरी और दोज़ख़ से डराने के लिए भेजते हैं। वे नेक मोमिन बन्दों को ख़ुशख़बरी देते हैं तो कुफ़्र व गुनाह करने वालों को तंबीह भी करते हैं, इसी लिये फ़रमाया कि जो दिल से ईमान लाये और नबी की इत्तिबा में नेक अ़मल करे तो उस पर आईन्दा के लिये कोई ख़ौफ़ नहीं, और पिछली ज़िन्दगी के बारे में उन्हें कोई हसरत और रंज नहीं, क्योंकि उनके पिछलों का अल्लाह वली है। फिर फ़रमाया कि जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है उन्हें अपने कुफ़्र व बदकारी के सबब अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि वे अल्लाह के हुक्म किये हुए कामों से आज़ाद बन गये हैं और उसके मना किये हुए कामों और हराम कामों में लगे हैं, और अल्लाह की हदों को तोड़ने में लगे हैं।

Maktab E Ashraf

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِىٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِىِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَىْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

ع ٥ / ١١

आप कह दीजिए कि न तो मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास ख़ुदा तआ़ला के ख़ज़ाने हैं और न मैं तमाम ग़ैबों को जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ उसकी इत्तिबा कर लेता हूँ जो मेरे पास 'वही' आती है। आप कहिए कि अन्धा और देखने वाला कहीं बराबर हो सकता है? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और ऐसे लोगों को डराईये जो इस बात से अन्देशा रखते हैं कि अपने रब के पास ऐसी हालत से जमा किए जाएँगे कि ग़ैरुल्लाह में से न कोई उनका मददगार होगा और न कोई शफ़ाअ़त करने वाला होगा। इस उम्मीद पर कि वे डर जाएँ। (51) और उन लोगों को न निकालिये जो सुबह व शाम अपने परवर्दिगार की इबादत करते हैं, जिससे ख़ास उसकी रज़ामन्दी का इरादा रखते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आपसे मुताल्लिक़ और आपका हिसाब ज़रा भी उनसे मुताल्लिक़ नहीं कि आप उनको निकाल दें, वरना आप नामुनासिब काम करने वालों में हो जाएँगे। (52) और इसी तरीक़े पर हमने एक को दूसरे से आज़माईश में डाल रखा है ताकि लोग कहा करें कि क्या ये लोग हैं कि हम सबमें से इन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया है? क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह तआ़ला हक़ पहचानने वालों को ख़ूब जानता है। (53) और ये लोग जब आपके पास आएँ जो कि हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो यूँ कह दीजिए कि तुम पर सलामती है, तुम्हारे रब ने मेहरबानी फ़रमाना अपने ज़िम्मे मुक़र्रर कर लिया है कि जो शख़्स तुम में से कोई बुरा काम कर बैठे नादानी से फिर वह उसके बाद तौबा कर ले और सुधार रखे तो (अल्लाह की यह शान है कि) वह बड़े माफ़ करने वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (54)

Maktaba Ashraf

हुज़ूर सल्ल. ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि ऐ रसूल! तुम उनसे कह दो कि मैं इसका दावा ही कब करता हूँ कि मेरे पास अल्लाह तआला के ख़ज़ाने गड़े पड़े हैं। और न मुझे इसका दावा है कि मैं ग़ैब की बातें जानता हूँ। ग़ैब का इल्म तो सिर्फ़ ख़ुदा को है, मुझे उसमें से सिर्फ़ उसी क़द्र मालूम है जितना कि अल्लाह ने मालूम करा दिया। और न मैं कोई फ़रिश्ता हूँ। मैं तो एक बशर हूँ। सिर्फ़ बात यह है कि मेरी तरफ़ अल्लाह तआला की 'वही' आती है, मुझे उसने इसका शर्फ़ (सम्मान और गौरव) बख़्शा है और एहसान फ़रमाया है, इसी लिये मैं 'वही' (अल्लाह के पैग़ाम) के सिवा और किसी चीज़ की पैरवी नहीं करता, और वही की सीमाओं से बालिश्त भर भी बाहर नहीं होता।

और कह दो कि क्या अंधा और बीना (आँखों वाला) दोनों बराबर हो सकते हैं? यानी हक़ की पैरवी करने वाले और उससे गुमराह होने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं? क्या तुम इस पर ग़ौर नहीं करते? जैसा कि फ़रमाया- क्या वह शख़्स जो नहीं जानता है जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे रब की जानिब से नाज़िल हुआ है, हक़ है, इस बात के जानने वाले के जैसा हो सकता है? फिर इरशाद होता है कि ऐ मुहम्मद! इस क़ुरआन के ज़रिये तुम उन लोगों को डराओ जिन्हें इस बात का अन्देशा है कि ख़ुदा का सामना करना पड़ेगा। इस बात का ख़ौफ़ (डरावा) दिलाओ कि ख़ुदा के सिवा न कोई वली है न कोई शफ़ी काम देगा। वे लोग जो ख़ुदा तआला के ख़ौफ़ से डरते हैं और हिसाब के दिन का अन्देशा रखते हैं, जिन्हें ख़ौफ़ है कि ख़ुदा के सामने खड़ा होना पड़ेगा, उस दिन उनके लिये न कोई वली है, न कोई शफ़ी, कि शफ़ाअ़त करके उन्हें अ़ज़ाब से छुटकारा दिलाये। उन्हें उस दिन से डराओ जिस दिन ख़ुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं। शायद कि वे ख़ुदा से डरें और इस दुनिया में ऐसे अ़मल करें जो उन्हें क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से निजात दें, और अगर सवाब मिले तो दोगुना मिले। इरशाद होता है कि जो लोग सुबह व शाम ख़ुदा का ज़िक्र करते रहते हैं और इख़्लास रखते हैं ऐसे लोगों को अपने पास से न हटाना, बल्कि अपने ख़ास दोस्तों और संगतियों में उन्हें क़रार देना।

जैसा कि फ़रमायाः

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ.... الخ.

यानी अपने आपको ऐसे लोगों से जोड़े रखिये जो अपने रब से लौ लगाये रखते हैं। जैसा कि फ़रमायाः

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ.

और तुम्हारा रब फ़रमाता है कि मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार सुनूँगा।

इरशाद होता है कि वे लोग यह अ़मल ख़ालिस अल्लाह के लिये करते हैं। और इरशाद होता है कि न उनका हिसाब तुमसे लिया जायेगा और न तुम्हारा हिसाब उनसे लिया जायेगा। जैसा कि नूह अ़लैहिस्सलाम का क़ौल उन लोगों के जवाब में जिन्होंने कहा था- क्या हम तुम पर ईमान लायें हालाँकि तुम्हारी पैरवी तो घटिया दर्जे के लोग करते हैं? तो नूह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मुझे तो इल्म नहीं कि वे क्या करते हैं, अगर तुम्हारे पास अ़क़्ल है तो इस बात को भी समझो कि उनकी बात को ख़ुदा जानता है, वही उनका मुहासिब (हिसाब लेने वाला) है। और ऐ नबी सल्ल.! अगर तुम उनको अपने पास से हटा दोगे तो ज़ालिमों में से समझे जाओगे।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि क़ुरैश की जमाअ़त नबी सल्ल. के पास आई। वहाँ हज़रत ख़ब्बाब, हज़रत सुहैब, हज़रत बिलाल और अ़म्मार रज़ियल्लाहु अ़न्हुम बैठे थे। उन इज़्ज़तदार लोगों ने कहा कि ऐ मुहम्मद! क्या तुमको क़ौम के ये लोग पसन्द हैं? क्या यही वे लोग हैं कि हमें छोड़कर अल्लाह तआ़ला ने इन पर एहसान किया है? अब हम इनके गिरोह में मिलकर तुम्हारे ताबे कैसे बन सकते हैं? तुम इन्हें अपने पास से हटाओ तो फिर हम तुम्हारी पैरवी करें। तो यह आयत उतरी थी। इस मौक़े पर अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि इस तरह हमने कुछ को कुछ के ज़रिये फ़ितने व आज़माईश में डाला। नबी सल्ल. के गिर्द इन कमज़ोर मोमिनों को देखकर उन लोगों ने इनकी तौहीन की थी। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. से तन्हाई में कहा कि हम आपके साथ मजलिस में शरीक रहना चाहते हैं। ये देहाती अ़रब अपने पर हमारी फ़ज़ीलत से वाक़िफ़ हैं। अ़रब के वफ़्द (मण्डल) आपके पास आते रहते हैं, हमें शर्म आती है कि वे लोग हमें इन घटिया दर्जे के लोगों के साथ देखें। हम जब आपके पास आयें तो आप उन्हें अपने पास से उठा दीजिये। और हम जब आपके पास से उठ जायें तो चाहे फिर अपने पास बैठा लीजिये। आपने फ़रमाया, अच्छा। तो उन लोगों ने कहा कि इसका लिखित में मुआ़हिदा होना चाहिए। चुनाँचे आपने काग़ज़ मंगवाया और हज़रत अ़ली रज़ि. को बुलवाया ताकि लिखें। ये कमज़ोर ग़रीब मोमिन हज़रात एक कोने में बैठे हुए थे और यह आयत उतरी कि इन्हें अपने पास से न हटाना, ये ख़ुदा को याद करते हैं। तो नबी सल्ल. ने काग़ज़ अ़ली रज़ि. से लेकर फेंक दिया और उन लोगों को अपने नज़दीक बुला लिया। यह हदीस ग़रीब है, क्योंकि यह आयत मक्की है और अक़रा बिन हाबिस और उयैना हिजरत के बाद ईमान लाये थे।

सअ़द कहते हैं कि यह आयत नबी करीम सल्ल. के छह सहाबा के बारे में उतरी है, जिनमें से इब्ने मसऊद रज़ि. भी हैं। हम नबी सल्ल. के पास पहुचँने में एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहते थे। आप हमको क़रीब बैठा लेते थे। क़ुरैश कहते थे कि हमें छोड़कर आप इन्हें अपने से ज़्यादा क़रीब करते हैं। इरशाद होता है कि हमने आज़मा लिया कि कौन इनमें कैसा है। इस इम्तिहान का नतीजा यह था कि क़ुरैश के काफ़िर कहते थे कि क्या यही लोग हैं कि हम पर एहसान करने के बजाये अल्लाह ने इन पर एहसान किया है? बात यह थी कि नबी करीम सल्ल. के तब्लीग़ के शुरू के ज़माने में अधिकतर हिस्सा उन मर्दों औरतों और ग़ुलामों का था जो कमज़ोर और निचले दर्जे के लोग थे। अमीरों और सरदारों में से बहुत कम ईमान लाये थे, जैसा कि क़ौमे नूह ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से कहा था कि हम तो देखते हैं कि तुम्हारी पैरवी निचले और घटिया दर्जे के लोग ही करते हैं। कोई नुमायाँ और इज़्ज़त व रुतबे वाला आदमी नहीं करता। और इसी तरह हिरक़्ले रोम ने अबू सुफ़ियान से पूछा था कि क्या क़ौम के बड़े लोग उनकी पैरवी करते हैं या ग़रीब लोग? अबू सुफ़ियान ने कहा था कि कमज़ोर और ग़रीब लोग ज़्यादा करते हैं। तो हिरक़्ल ने कहा था कि अम्बिया की पैरवी पहले ऐसे ही लोगों ने की है।

मतलब यह है कि क़ुरैश के मुश्रिक उन कमज़ोर और ग़रीब मोमिनों का मज़ाक़ उड़ाते थे और अगर बस में होता तो उन्हें तकलीफ़ पहुँचाते थे कि आख़िर ख़ुदा ने ख़ैर की तरफ़ उन लोगों की रहनुमाई क्यों की? जिस बात की तरफ़ उन लोगों ने पहल की है अगर वह ख़ैर है तो ख़ुदा ने हमें क्यों छोड़ दिया। और कहते थे कि अगर इसके तस्लीम करने (मानने) में ताख़ीर (देरी) हो तो ये हमसे आगे बढ़ते ही नहीं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जब उन पर हमारी वाज़ेह (स्पष्ट) आयतें तिलावत की जाती हैं तो ये काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि बताओ दोनों में अच्छा कौन रहा और शरीफ़ इज़्ज़तदार और दौलतमन्द कौन है? इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने उनसे पहले ऐसी कितनी क़ौमों को हलाक कर

Maktab E Ashraf

दिया जो बड़े रुतबे और सम्मान वाले और इज़्ज़त व शान रखते थे।

और जिन लोगों ने यह कहा था कि अल्लाह तआ़ला ने हम पर उनको क्यों तर्जीह (वरीयता) दी? इसके जवाब में इरशाद होता है कि क्या अल्लाह तआ़ला सच्चे शुक्रगुज़ारों, नेक-दिल और अच्छे किरदार वाले लोगों को नहीं जानता? अल्लाह तआ़ला उन ही लोगों को तौफ़ीक़ देता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला नेक काम करने वालों के साथ होता है। सही हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों और रंगों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आमाल को देखता है। हज़रत इक्रिमा से इस आयत के बारे में है कि इबरत दिलाओ उनको जिन्हें ख़ुदा के सामने आने का अन्देशा था।

यह रिवायत है कि बनी अ़ब्दे मुनाफ़ के चन्द काफ़िर इज़्ज़तदार और रुतबे वाले लोग अबू तालिब के पास आकर कहने लगे कि ऐ अबू तालिब! काश तुम्हारा भतीजा मुहम्मद हमारे ग़ुलामों और ख़ादिमों को अपने पास से हटा देता, क्योंकि वे हमारे ग़ुलाम और ख़ादिम हैं। और यह बात हमें बहुत भारी और तकलीफ़देह गुज़रती है। ऐसी सूरत में हम मुहम्मद की इताअ़त करेंगे और उनकी पैरवी और तस्दीक़ करेंगे। अबू तालिब नबी सल्ल. के पास आये और इसका ज़िक्र किया। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहने लगे- अच्छा ऐसा भी करके देखिये, मालूम हो जायेगा कि उनका क्या इरादा है, और उसके बाद वे क्या करेंगे? तो यह आयत उतरी। यहाँ तक कि फ़रमाया क्या अल्लाह तआ़ला अपने शुक्रगुज़ार बन्दों को नहीं जानता? शुक्रगुज़ार बन्दों से ये लोग मुराद हैं- बिलाल, अ़म्मार बिन यासिर, सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा, सबीहा उसैद के आज़ाद किये हुए और इब्ने मसऊद के हलीफ़, मिक़दाद बिन अ़मर, मसऊद इब्नुल-क़ारी, वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह हन्ज़ली, अ़मर बिन अ़ब्दे अ़मर, ज़ुश्शिमालैन, मुर्सद बिन अबी मुर्सद, अबू मिरस ग़नवी जो हमज़ा बिन अ़ब्दुल-मुतल्लिब के हलीफ़ (साथी और दोस्त) थे। (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और यह आयत क़ुरैश के सरदारों और उनके हलीफ़ों (साथियों और हमनवाओं) के बारे में उतरी थी।

जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत उमर रज़ि. उठे नबी सल्ल. के पास आये और अपने ग़लत मश्विरे की माज़िरत करने (यानी उस पर अफ़सोस करने) लगे। चुनाँचे इरशादे बारी होता है कि जब हमारी आयतों पर ईमान लाने वाले तुम्हारे पास आते हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो। यानी उन्हें सलाम कहकर उनकी इज़्ज़त बढ़ाओ और अल्लाह तआ़ला की बेइन्तिहा रहमत की ख़ुशख़बरी दो। और इसी लिये फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी ज़ाते पाक पर रहमत को वाजिब क़रार दे लिया है। और जो तुम में से भूल में और न जानते हुए कोई गुनाह कर बैठे और फिर उसके बाद तौबा करे और फिर हमेशा के लिए गुनाहों से बाज़ रहे और इरादा कर ले कि फिर ऐसा न करूँगा तो ख़ुदा ग़फ़ूर (माफ़ करने वाला) और रहीम (रहम करने वाला) है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ पर अपनी तक़दीर (यानी पहले से अपने ज़रिये हर चीज़ का एक अन्दाज़ा) क़ायम की तो अ़र्श पर जो उसकी किताब लौहे महफ़ूज़ है, उसमें लिख दिया कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि जब मख़्लूक़ के बारे में हुक्म को लागू करने से अल्लाह तआ़ला फ़ारिग़ होगा तो तख़्ते अ़र्श से किताब निकालेगा जिसमें लिखा होगा कि मैं अर्रहमुर्राहिमीन (तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला) हूँ। फिर अपनी एक या दो मुट्ठी भर मख़्लूक़ को दोज़ख़ से निकालेगा, जिन्होंने कुछ ख़ैर के काम न किये होंगे और उनकी आँखों के दरमियान माथे पर लिखा होगा "उ-नक़ाउल्लाहि" यानी ये अल्लाह के आज़ाद किये हुए हैं।

Maktab E Ashraf

हज़रत सलमान ने अल्लाह तआला के क़ौल-

كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ.

यानी अल्लाह ने अपनी ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया है। के बारे में लिखा है कि हम तौरात में यह लिखा हुआ पाते हैं कि अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया और अपनी सौ रहमतें पैदा कीं, और ये मख़्लूक़ के पैदा करने से पहले ही पैदा कीं। फिर मख़्लूक़ को पैदा करके उनमें से एक रहमत मख़्लूक़ के दरमियान तक़सीम की (बाँटी) और अपने पास निन्नावे हिस्से रहमत के रख लिये। उसी एक रहमत की बरकत से लोग आपस में रहमत व मुहब्बत बरतते हैं। एक दूसरे पर एहसान करने में मेल-मिलाप रखते हैं, ऊँटनी, गाय और बकरी उसी रहमत में से हिस्सा लेकर अपने बच्चों के साथ मुहब्बत करती हैं, और समुद्र में दो साँप आपस में एक दूसरे के साथ रहते हैं, और क़ियामत के दिन अल्लाह पाक इन सब रहमतों को और अपने पास की रहमत, सब गुनाहगारों पर नाज़िल फ़रमायेगा। इस मज़मून में बहुत सी हदीसें बयान हुई हैं। चुनाँचे मुआज़ बिन जबल रज़ि. से रिवायत है कि क्या तुम जानते हो कि बन्दों पर अल्लाह तआला का क्या हक़ है? हक़ यह है कि वे उसी की इबादत करें और किसी को उसका शरीक (साझी और हिस्सेदार) न बनायें। फिर पूछा कि बन्दों का हक़ अल्लाह पर क्या है? फिर कहा यह है कि ख़ुदा उनको माफ़ कर दे और अज़ाब में मुब्तला न करे।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ
سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ
اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قُلْ
لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ
اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّىْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ
رَّبِّىْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ۭ مَا عِنْدِىْ مَا
تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ
يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ۝ قُلْ لَّوْ
اَنَّ عِنْدِىْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِىَ
الْاَمْرُ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

ع ٦ / ١٢

और इसी तरह हम आयतों की तफ़सील करते रहते हैं और ताकि मुजरिमों का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दीजिए कि मुझे इससे मना किया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिनकी तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो। आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे ख़्यालात की पैरवी न करूँगा, क्योंकि इस हालत में तो मैं बेराह हो जाऊँगा और राह पर चलने वालों में न रहूँगा। (56) आप कह दीजिए कि मेरे पास तो मेरे रब की तरफ़ से एक दलील है, और तुम उसको झुठलाते हो। जिस चीज़ का तुम तक़ाज़ा कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। हुक्म किसी का नहीं सिवाय अल्लाह तआला के, वह (यानी अल्लाह तआला) हक़ बात को बतला देता है और सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला वही है। (57) आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह चीज़ होती जिसका तुम तक़ाज़ा कर रहे हो तो मेरा और तुम्हारा आपसी क़िस्से का फ़ैसला हो चुका होता, और ज़ालिमों को अल्लाह तआला

Maktab E Ashraf

لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَّرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمٰتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى كِتٰبٍ مُّبِينٍ ٥	ख़ूब जानता है। (58) और उसी के (यानी अल्लाह तआ़ला के) पास हैं ख़ज़ाने तमाम छुपी चीज़ों के, उनको कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह तआ़ला के, और वह तमाम चीज़ों को जानता है जो कुछ ख़ुश्की में हैं और जो कुछ दरियाओं में हैं, और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसको भी जानता है, और कोई दाना ज़मीन के अंधेरे वाले हिस्सों में नहीं पड़ता, और न कोई तर और ख़ुश्क चीज़ गिरती है मगर ये सब किताबे-मुबीन में हैं। (59)

नबी अपनी मर्ज़ी से अ़ज़ाब नहीं ला सकता

इरशाद होता है कि जिस तरह हमने पहले ज़िक्र हुए बयानों में दलीलों और हुज्जतों के ज़रिये रुश्द व हिदायत (यानी सही रास्ता और कामयाबी की राह) वग़ैरह को वाज़ेह कर दिया, उसी तरह वे आयतें जिनकी वज़ाहत और तफ़सील मुख़ातब के लिये ज़रूरी है उनको तफ़सील से बयान करते हैं। और इसलिये भी कि मुजरिम लोगों का रास्ता खुलकर सामने आ जाये। ऐ नबी! कह दो कि जो 'वही' अल्लाह तआ़ला ने मेरी तरफ़ भेजी है मैं उसी पर अपने दिली इत्मीनान के साथ क़ायम हूँ। और तुमने तो हक़ को झुठला दिया है। तुम जिस अ़ज़ाब की जल्दी कर रहे हो वह मेरे बस की बात नहीं। हुक्म तो सिर्फ़ ख़ुदा का चलता है। अगर वह जल्द तुम पर अ़ज़ाब लाना चाहे तो फ़ौरन ही आ जाये, और वह देर करना चाहे और अपनी विशाल हिक्मत से तुम्हें मोहलत दे तो उसका इख़्तियार है। इसी लिये फ़रमाया कि वह हक़ तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाता है और वह अहकाम व मामलों का फ़ैसला करने में और बन्दों के दरमियान कोई हुक्म नाफ़िज़ करने में हक़ पर होता है। तुम कह दो कि अगर तुम पर अ़ज़ाब जल्दी लाना मेरी इख़्तियारी बात होती तो तुम जिस अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ (पात्र और हक़दार) हो मैं तो उसको तुम पर फ़ौरन ही नाज़िल कर देता। और अल्लाह तो ज़ुल्म करने वालों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

अगर यह कहा जाये कि इस आयत में और उस हदीस में जो बुख़ारी व मुस्लिम से साबित है, आपस में क्या जोड़ व मुवाफ़क़त है? यानी वह हदीस जो हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा- या रसूलल्लाह! क्या उहुद के दिन से भी कोई सख़्त दिन आप पर गुज़रा? तो आपने फ़रमाया कि आ़यशा तुम्हारी इस क़ौम से जो बहुत ज़्यादा तकलीफ़ मुझे पहुँची वह अ़क़बा के दिन पहुँची, जबकि मैंने इब्ने अ़ब्दे यालैल पर अपने को पेश किया, तो मेरी दावत उसने मन्ज़ूर नहीं की। मैं बहुत ही ग़मगीन होकर चल खड़ा हुआ। क़रने सआ़लिब के स्थान में आकर मेरे हवास ठीक हुए और मैंने सर उठाया तो देखा कि एक बादल मेरे ऊपर छाया हुआ है, उसमें जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम दिखाई दे रहे हैं और मुझसे कह रहे हैं कि या मुहम्मद! तुम्हारी क़ौम ने जो तुमसे कहा अल्लाह तआ़ला ने सुन लिया। पहाड़ों पर मुसल्लत फ़रिश्ते को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तरफ़ भेज दिया है ताकि तुम जो चाहो उसको हुक्म दो।

पहाड़ों के फ़रिश्ते ने भी आवाज़ दी, सलाम अ़र्ज़ किया और कहा कि अल्लाह ने मुझे आपकी तरफ़ इसलिये भेजा है कि अगर आप हुक्म दें तो ये दोनों पहाड़ आपकी क़ौम पर गिरा दूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

Maktaba Ashraf

अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मैं उम्मीद रखता हूँ कि खुदा इन्हीं काफ़िरों की नस्ल से ऐसे लोग भी पैदा कर दे जो मोमिन निकलें और किसी को खुदा का शरीक न ठहरायें। यह (हदीस की किताब) 'मुस्लिम' के लफ़्ज़ हैं, कि उन पर फ़रिश्तों ने अपना अ़ज़ाब पेश किया तो नबी करीम सल्ल. ने उसको मोहलत देने को कहा और अ़ज़ाब में विलम्ब (देरी) की ख़्वाहिश की, ताकि उनकी नस्ल से मोमिन पैदा हो सकें।

अब यह शुब्हा होता है कि इस हदीस और ऊपर गुज़रे अल्लाह के क़ौल में मुताबक़त किस तरह होगी। पहले गुज़रा क़ौल यह है कि जो अ़ज़ाब तुम माँगते हो अगर वह मेरे क़ब्ज़े में होता तो हमारा तुम्हारा फ़ैसला इसी वक़्त हो जाता, और मैं इसी वक़्त तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल कर देता। और यहाँ एक चीज़ अपनी पहुँच और क़ब्ज़े में होने के बावजूद हुज़ूर सल्ल. अ़ज़ाब नाज़िल नहीं फ़रमा रहे हैं। यह शुब्हा यूँ दूर हो सकता है कि आयते पाक तो दलालत करती है इस बात पर कि जिस अ़ज़ाब को वे तलब कर रहे थे वह आ जाता, और हदीस में यह ज़िक्र नहीं कि उन्होंने अ़ज़ाब तलब किया था, बल्कि फ़रिश्ते ने अपनी तरफ़ से अ़ज़ाब की पेशकश की थी, कि अगर आप चाहें तो मक्के के उत्तरी व दक्षिणी जो दो पहाड़ हैं, जो इस शहर को घेरे हुए हैं, उन पर गिरा दूँ? लेकिन हुज़ूर सल्ल. ने नर्मी करके और ताख़ीर से काम लेने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की।

आ़लिमुल-ग़ैब

फिर अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि ग़ैब की बातें खुदा के सिवा कोई नहीं जानता। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि ग़ैब की बातें पाँच हैं-

1. यह कि क़ियामत का वक़्त खुदा तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता।
2. यह कि पानी का बरसना।
3. यह कि हमल (गर्भ) में लड़का है या लड़की (और उसकी तक़दीर, उम्र, ज़िन्दगी, रोज़ी क्या है)।
4. यह कि कल कोई शख़्स क्या करने वाला है।
5. यह कि कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस मक़ाम पर मरेगा।

अल्लाह ही इन बातों से वाक़िफ़ है। हदीसे उमर में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम एक बार एक देहाती की शक्ल व सूरत में आपके पास आये और ईमान व इस्लाम और एहसान के बारे में आपसे सवालात किये। नबी सल्ल. ने जवाब के अन्तर्गत फ़रमाया था कि पाँच चीज़ों का इल्म खुदा के सिवा किसी को नहीं। फिर यह आयत तिलावत कीः

إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ...... الخ.

यानी क़ियामत, माँ के गर्भ, अपनी मौत के स्थान, आने वाले कल और बादल में क्या है इसके बारे में अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। इसी तरह अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ.

यानी अल्लाह का इल्म खुश्की व तरी की तमाम मौजूद चीज़ों को अपने अन्दर घेरे हुए है। ज़मीन और आसमान का कोई ज़र्रा उससे छुपा नहीं। शायर सरसरी ने क्या ख़ूब कहाः

فلايخفى عليه الدراما   تراءى للنواظر اوتوارى

यानी खुदा तआ़ला से कोई ज़र्रा भी ओझल और छुपा नहीं रह सकता, चाहे देखने वालों से कोई चीज़

Maktab E Ashraf

खुली रहे या ढकी रहे। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا.

कि अगर कोई पत्ता भी गिरता है तो अल्लाह तआ़ला को उसका भी इल्म है। जब वह बेजान चीज़ों तक की हरकत को जानता है तो फिर जानदार और ख़ुसूसन जिन्नात व इनसानों की हरकतों व आमाल को कैसे न जानेगा, जबकि वे मुकल्लफ़ (शरीअ़त के अहकाम के पाबन्द) भी हैं। जैसा कि फ़रमायाः

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ.

यानी आँखों की हरकतों (इशारे या कोई ख़ियानत) और दिलों की छुपी बातों तक से वह वाक़िफ़ है।

ख़ुश्की व तरी के हर शजर (पेड़-पौधे) पर एक फ़रिश्ता मुसल्लत है, जो पत्तों के गिरने तक की याद्दाश्त रखता है। किताब लौहे महफ़ूज़ में हर सूखी-गीली, हर सीधी-टेढी बात और ज़मीन की अंधेरियों के अन्दर का एक-एक ज़र्रा तक लिखा हुआ है। हर पेड़ पर सूई के नाके पर भी फ़रिश्ता मुक़र्रर है, यानी लिखता है कि कब यह तरोताज़ा हुआ, कब सूख गया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा कि अल्लाह ने दवात को पैदा किया और तख़्तियों को पैदा किया, और दुनिया में तमाम होने वाले उमूर (बातें और वाक़िआ़त) दर्ज किये, कि कैसी मख़्लूक़ पैदा होगी, रिज़्क़ उसको हलाल मिलेगा या हराम, अ़मल उसका नेक होगा या बुरा। हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ि. से रिवायत है कि तीसरी ज़मीन से नीचे और चौथी ज़मीन के ऊपर के जिन्नों ने तुम्हारे लिये ज़ाहिर होना चाहा लेकिन उनका नूर और रोशनी किसी ज़ाविये (एंगल) से भी तुम्हें दिखाई न दे सकी। यह अल्लाह तआ़ला की ख़्वातीम हैं कि हर ख़ातम पर फ़रिश्ता है। अल्लाह तआ़ला हर रोज़ एक फ़रिश्ते को भेजकर कहता है कि जो ख़ातम तेरे हवाले है उसकी हिफ़ाज़त कर।

وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا
جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى
اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ وَهُوَ الْقَاهِرُ ع ۵ ۱۳
فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۭ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ
رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ○ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى
اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۭ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۣ
وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ○

और वह ऐसा है कि रात में तुम्हारी रूह को एक तरह से क़ब्ज़ कर देता है, और जो कुछ दिन में करते हो उसको जानता है। फिर तुमको जगा उठाता है ताकि मुक़र्ररा मीयाद "यानी निश्चित समय" पूरी कर दी जाए। फिर उसी की तरफ़ तुमको जाना है, फिर तुमको बतला देगा जो कुछ तुम किया करते थे। (60)

और वही अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब हैं (बरतर हैं) और तुम पर निगरानी रखने वाले भेजते हैं, यहाँ तक कि जब तुममें किसी को मौत आ पहुँचती है, उसकी रूह हमारे भेजे हुए क़ब्ज़ कर लेते हैं, और वे ज़रा भी कोताही नहीं करते। (61) फिर सब अपने हक़ीक़ी मालिक अल्लाह के पास लाए जाएँगे। ख़ूब सुन लो कि फ़ैसला उसी का (यानी अल्लाह ही का) होगा, और वह बहुत जल्द हिसाब ले लेगा। (62)

Maktab E Ashraf

वही पैदा करता है और वही मारता है

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि वह अपने बन्दों को रात के वक़्त सोने की हालत में वफ़ात देता (यानी तुम्हारी रूह को क़ब्ज़ करता) है, और यह छोटी वफ़ात है जैसा कि फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने कहा ऐ ईसा! मैं तुम्हें वफ़ात देने वाला हूँ और अपनी तरफ़ तुम्हें उठा लेने वाला हूँ। और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मौत के वक़्त नफ़्सों (जानों) को वफ़ात दे देता है और जो सोने की हालत में मर नहीं जाते वे ऐसे नुफ़ूस होते हैं कि उन पर तारी होने वाली मौत रोक दी जाती है और उन पर दूसरी मौत भेजी जाती है, यानी नींद। और यह मुक़र्ररा मौत तक होता रहता है।

इस आयत में दो वफ़ातों (मौतों) का ज़िक्र किया गया है। एक छोटी मौत और दूसरी बड़ी मौत। फिर इरशाद फ़रमाता है कि वह रात के वक़्त तुमको वफ़ात देता है। तुम कारोबार से रुक जाते हो, लेकिन दिन में तुम अपने काम में लगे रहते हो, वह तुम्हारे दिनभर के आमाल को जानता है। यह जुमला चल रहे बयान से हटकर है जो इस बात पर दलालत करता है कि अल्लाह तआ़ला का इल्म अपनी मख़्लूक़ को कैसे घेरे हुए है। रात के वक़्त सुकून (ठहरने और आराम की हालत) में और दिन में हरकत (काम में लगे रहने की हालत) में। जैसा कि फ़रमायाः

سَوَآءٌ مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ م بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ م بِالنَّهَارِ.

यानी छुपा व खुला, रात का या दिन का सब बातों का उसे इल्म है। और फ़रमायाः

وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ..... الخ

यानी यह अल्लाह तआ़ला की रहमत है कि तुम्हारे लिये दिन और रात बनाये, कि रात में सुकून हासिल करो और दिन में कमाओ खाओ।

और फ़रमाया कि हमने रात को तुम्हारे लिये लिबास बनाया और दिन को रोज़ी कमाने का वक़्त। इसी लिये इस आयत में फ़रमाता है कि रात को वह तुमको मार देता है और दिन में जो आमाल तुमने कर रखे हैं उन्हें जानता है। फिर इस ज़ाहिरी मौत के बाद दिन के वक़्त फिर तुम्हें जीता जागता उठाता है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि हर इनसान के साथ एक फ़रिश्ता होता है, जब वह सो जाये तो उसके नफ़्स (रूह) को ले लेता है और ख़ुदा के पास ले जाता है। अगर अल्लाह तआ़ला फ़रमायें कि रोक रख तो रोक लेता है, वरना फिर उसके जिस्म में वापस कर देता है। रात को वफ़ात देने का यही मतलब है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى.

यानी हर शख़्स का मुक़र्ररा वक़्त पूरा हो जाने पर उसकी जान ख़ुदा तआ़ला के पास पहुँचा दी जाती है। अल्लाह पाक उसको बतला देता है कि तू क्या अ़मल करता था। और फिर उसका बदला देता है, ख़ैर हो तो ख़ैर का बदला, बुरा है तो बुरा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ.

यानी वह हर चीज़ पर ग़ालिब है और हर चीज़ उसके सामने झुकी हुई है। उसने इनसान पर फ़रिश्ते मुक़र्रर कर रखे हैं जो उसकी हर आन हिफ़ाज़त करते हैं। जैसे फ़रमाया कि इनसान के आगे पीछे फ़रिश्ते

Maktab E Ashraf

होते हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते रहते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ.

बेशक तुम्हारे ऊपर हिफ़ाज़त करने वाले मुक़र्रर हैं। और फ़रमाया:

اِذْيَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ..... الخ

और फ़रमाया कि जब तुममें से किसी को मौत आ जाती है तो हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मलकुल-मौत (मौत के फ़रिश्ते) के कई फ़रिश्ते मददगार हैं जो जिस्म से रूह खींचते हैं, और जब हलक़ तक वह रूह आ पहुँचती है तो मलकुल-मौत क़ब्ज़ कर लेते हैं और इसका ज़िक्र आगे "युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी-न आमनू बिलक़ौलिस्साबिति" वाली आयत में आयेगा। फिर फ़रमाया:

وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ.

यानी वे वफ़ात पाई हुई रूह की हिफ़ाज़त में कोई कमी नहीं करते। फिर उसको वहाँ पहुँचा देते हैं जहाँ ख़ुदा की मर्ज़ी होती है। अगर वह नेक हो तो 'इल्लिय्यीन' (नेक रूहों के ठिकाने) में जगह दी जाती है और अगर बुरा और गुनाहगार हो तो 'सिज्जीन' (बुरे और काफ़िरों) में। जो दोज़ख़ का तबक़ा है। ख़ुदा की पनाह! फिर ये फ़रिश्ते उन रूहों को अपने मौला-ए-करीम की तरफ़ फैर देते हैं।

यहाँ हम एक हदीस ज़िक्र करते हैं जिसको हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने रिवायत किया है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मरने वाले के पास फ़रिश्ते आते हैं, अगर वह नेक आदमी हो तो कहते हैं कि-

"आ जा ऐ पाक नफ़्स! तू पाक जिस्म में था, दुनिया से महमूद (तारीफ़ की हालत में) वापस आ, तुझको जन्नत के उम्दा दर्जों की ख़ुशख़बरी है। ख़ुदा तुझसे नाराज़ नहीं।"

जब ये बराबर इस बात को कहते रहते हैं तो रूह जिस्म से निकल आती है। वे उसे लेकर आसमान तक पहुँचते हैं, जहाँ अल्लाह पाक है। और अगर वह जान बदकार की है तो कहते हैं कि-

"ऐ ख़बीस जिस्म में रहने वाली ख़बीस जान! निकल ज़लील बनकर, तुझे जहन्नम के खोलते हुए और बदबूदार पीप लहू की ख़ुशख़बरी है, और तेरे लिये उसी पीप और गर्म पानी की तरह और दूसरे अ़ज़ाब भी हैं।"

बार-बार कहने के बाद जब वह निकलती है तो उसे लेकर आसमान पर चढ़ते हैं, दरवाज़ा खुल जाता है पूछा जाता है कौन है? कहा जाता है कि फ़ुलाँ! तो फ़रिश्ते कहते हैं लानत तुझ पर ऐ ख़बीस नफ़्स! तेरे लिये आसमान का दरवाज़ा नहीं खुलेगा। फिर वह जान अपनी क़ब्र की तरफ़ वापस कर दी जाती है। यह हदीस ग़रीब है और हो सकता है इससे यह मुराद हो कि 'सुम्म रुद्दू' यानी सारी मख़्लूक़ात को क़ियामत के दिन ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ लौटाया जायेगा और अल्लाह पाक इन्साफ़ के साथ उन पर अपना हुक्म सादिर फ़रमायेगा। जैसा कि फ़रमाया:

اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ.

यानी पहले और बाद के तमाम ही एक मुक़र्ररा दिन (यानी क़ियामत) में सब जमा किये जायेंगे। और फिर आया है:

وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا.

हम सबको उठायेंगे और अल्लाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। वह मौला-ए-हक़ है, हुक्म सिर्फ़ उसी का चलता है, वह बहुत जल्द सब का हिसाब लेगा।

Maktaba E Ashraf

قُلْ مَنْ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ○ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ○ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ۚ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ○

आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको ख़ुश्की और दरिया की अंधेरियों से उस हालत में निजात देता है कि तुम उसको पुकारते हो आजिज़ी ज़ाहिर करके और चुपके-चुपके, कि अगर आप हमको इनसे निजात दे दें तो हम ज़रूर हक़ पहचानने वालों में से हो जाएँगे। (63) आप कह दीजिये कि ख़ुदा तआला ही तुमको उनसे निजात देता है, और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो। (64) आप कहिए कि इस पर भी वही क़ादिर है कि तुम पर कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे, या तुम्हारे पाँव तले से, या कि तुमको गिरोह-गिरोह करके सबको भिड़ा दे, और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई चखा दे। आप देखिए तो सही हम किस तरह से विभिन्न पहलुओं से दलीलें बयान करते हैं, शायद वे समझ जाएँ। (65)

मुसीबतों से निजात देने वाला

अल्लाह अपने बन्दों पर एहसान का ज़िक्र फ़रमा रहा है कि हमने ख़ुश्की व तरी की अंधेरियों से इन परेशान-हालों को कैसे निजात दी। जबकि ख़ुश्की की मुश्किलों और समुद्री भंवरों में फंस गये थे। जहाँ मुख़ालिफ़ हवायें चल रही थीं और उस वक़्त वे सिर्फ़ ख़ुदा तआला ही से दुआ माँग रहे थे। जैसा कि एक जगह फ़रमाया कि जब तुम्हें समुद्र में किसी मुसीबत से साबक़ा पड़ता है तो उस वक़्त इन सारे शरीकों (यानी ख़ुदा के अलावा जिन्हें तुम पूजते और उसका शरीक बनाते हो) को भूल जाते हो, कोई बुत याद नहीं रहता, और याद आता है तो सिर्फ़ ख़ुदा। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारा ख़ुदा वही ख़ुदा तो है जो ख़ुश्की व तरी में तुम्हें ले चलता है और जब जहाज़ अच्छी और मुवाफ़िक़ हवा के साथ चलते हैं तो बड़े ख़ुश रहते हैं। और जब मुख़ालिफ़ हवायें चलती हैं और हर तरफ़ से मौजें टकराती हैं और यक़ीन हो जाता है कि अब तो मौत से घिर गये, तो बड़े ख़ुलूस (नेक नीयती) से ख़ुदा को पुकारते हैं कि ऐ ख़ुदा! अगर तू इस मुसीबत से हमें निजात बख़्शेगा तो हम बहुत शुक्रगुज़ार बन्दे बनेंगे।

इरशाद होता है कि ग़ौर तो करो कि ख़ुश्की व पानी की अंधेरियों में तुम्हें सीधे रास्ते पर कौन चलाता है? और अच्छी व मुवाफ़िक़ हवाओं को अपनी रहमत से कौन भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और

खुदा भी है जिसे तुमने शरीक बना लिया हो? और यह आयते करीमा कि ख़ुशकी व तरी (पानी, समुद्र वग़ैरह) की अंधेरियों से कौन निजात देता है जिसको तुम खुले और छुपे पुकारते हो कि अगर तू हमें निजात दे तो हम शुक्रगुज़ार बनेंगे। कह दो कि अल्लाह ही ने तुम्हें उससे और हर दर्द व मुसीबत से निजात बख़्शी है। लेकिन तुम फिर भी ख़ुशहाली में बुतों को उसका शरीक बनाते हो। ख़ुदा इस पर क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाये। जैसा कि एक जगह फ़रमाया कि तुम्हारा रब ही जहाज़ों को समुद्र में चलाता है ताकि तुम दौलत कमाओ। वह तुम पर रहीम व करीम है। और जब तुम्हें कोई तकलीफ़ आ पहुँचती है तो अपने सब बुतों को भूल जाते हो और ख़ुदा ही याद रह जाता है। और जब समुद्र के ख़तरों से बचाकर ख़ुशकी पर ला खड़ा करता है तो ख़ुदा से मुँह मोड़ लेते हो। इनसान बड़ा ही नाशुक्रा है। ख़ुशकी पर आने के बाद क्या तुम महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो गये? वह चाहे तो पानी में डुबोने की तरह, क्या ज़मीन के अन्दर भी तुम्हें नहीं धंसा सकता? या तुम पर आसमान से पथराव हो जाये और फिर कोई तुम्हारा मददगार न हो? वह तुम्हें फिर समुद्र का सफ़र कराके और मुख़ालिफ़ (विपरीत दिशा की) हवा को भेजकर तुम्हें ग़र्क़ कर सकता है। ख़ुदा तआ़ला क़ादिर है कि चाहे तो तुम्हारे सर के ऊपर या तुम्हारे पैरों तले ही से तुम पर अ़ज़ाब भेज दे। यह मुश्रिकों से ख़िताब था। मुजाहिद (रहमतुल्लाह अ़लैहि) कहते हैं यह तंबीह उम्मते मुहम्मदिया के लिये है।

हम यहाँ चन्द हदीसें ज़िक्र करेंगे जो इसी से मुताल्लिक़ हैं। भरोसा ख़ुदा ही पर है।

इमाम बुख़ारी रह. ने इस उपरोक्त आयत के बारे में फ़रमाया कि "यल्बि-सकुम्" यानी तुम फ़िर्क़े बन-बनकर आपसी फूट का शिकार हो जाओ और एक दूसरे से लड़ बैठो, यानी अल्लाह चाहे तो ऐसे अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा सकता है। जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी यानी "तुम्हारे ऊपर से कोई अ़ज़ाब भेज दे....." वाली तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ऐ अल्लाह तेरी पनाह। और जब यह उतरी "या तुम्हारे पाँव के नीचे से भेज दे" उस वक़्त भी फ़रमाया- या अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ। और जब "या कि तुम गिरोह-गिरोह यानी फूट का शिकार हो जाओ और तुमको आपस में भिड़ा दे" सुना तो फ़रमाया यह ज़रा कुछ आसान है।

हज़रत जाबिर रज़ि. से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी कि "क़ुल् हुवल् क़ादिरु...." यानी वह इस पर क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अ़ज़ाब भेज दे, तो आपने फ़रमाया- मैं इससे अल्लाह की पनाह माँगता हूँ। फिर यह सुनकर "या वह तुम्हारे नीचे से तुम पर अ़ज़ाब भेज दे" फ़रमाया मैं इससे अल्लाह की पनाह माँगता हूँ। फिर "या वह तुमको जमाअ़तों और गिरोहों में बाँट दे और तुम एक दूसरे से लड़ बैठो" सुनकर फ़रमाया- यह ज़्यादा आसान और हल्की बात है। अगर इस पर भी आप पनाह माँगते तो माँग सकते थे। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. से भी रिवायत है कि इस आयत को सुनकर आपने फ़रमाया- यह बात होकर रहेगी और अभी तक हुई नहीं।

एक हदीस सअ़द इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ि. से रिवायत है कि हम नबी करीम सल्ल. के साथ चले और मस्जिदे बनी मुआ़विया में आये। वहाँ आपने दो रकअ़तें पढ़ीं, हमने भी आपके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर आप देर तक अल्लाह तआ़ला से मुनाजात और दुआ़ में मशग़ूल रहे। फिर फ़रमाने लगे कि मैंने तीन बातों की ख़ुदा से दरख़्वास्त की थी, कि मेरी उम्मत फ़िरऔनियों की तरह ग़र्क़ होकर तबाह न हो, और क़हत (अकाल और भुखमरी) से हलाक न हो, और उनके गिरोहों के अन्दर जंग बरपा न हो। पहली दो बातें तो मन्ज़ूर कर ली गईं और तीसरी नामन्ज़ूर हो गई। हज़रत जाबिर से रिवायत है कि हमारे पास अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि.

Maktab E Ashraf

मक़ामे बनी मुआ़विया में आये जो अन्सार का एक गाँव है और कहा क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी इस मस्जिद में नबी सल्ल. ने कहाँ नमाज़ पढ़ी थी? मैंने कहा हाँ और एक कोने की तरफ़ इशारा किया। फिर पूछा वहाँ आपने किन तीन बातों की दुआ़ की थी? मैंने कहा हाँ आपने दुआ़ की थी, कोई दुश्मन मेरी उम्मत पर ग़ालिब न आये, और अकाल उन्हें हलाक न करे तो ये दोनों बातें मन्ज़ूर कर ली गईं। और यह भी दुआ़ की थी कि उनकी आपस में जंग न हो, तो यह दुआ़ क़बूल न हुई। तो अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने कहा तुमने ठीक कहा। चुनाँन्चे क़ियामत तक मुसलमानों की आपस में जंगें होती रहेंगी। (अल्लाह ही को मालूम है कि इस दुआ़ के क़बूल न करने में क्या-क्या हिक्मतें छुपी हुई हैं)। यह हदीस हदीस की छह मशहूर बड़ी किताबों में दर्ज नहीं है, लेकिन इसकी सनद उम्दा है।

हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि. से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आया तो मुझको बताया गया कि रसूलुल्लाह सल्ल. अभी चले गये हैं, जहाँ जाना था, कहा कि अभी से चले गये यहाँ तक कि मैंने आपको एक जगह नमाज़ पढ़ते देखा, मैं भी आपके साथ नमाज़ पढ़ने खड़ा हो गया। आपने बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद मैंने कहा या रसूलल्लाह! आपने बड़ी लम्बी नमाज़ पढ़ी? आपने फ़रमाया मैं ख़ौफ़ व रग़बत की नमाज़ पढ़ रहा था। फिर आपने इन्हीं तीन दुआ़ओं का ज़िक्र फ़रमाया।

ख़ब्बाब बिन अरत रज़ि. मौला बनी ज़ोहरा से रिवायत है जो बदर में नबी सल्ल. के साथ हाज़िर थे। कहते हैं कि एक दिन मैं तमाम रात नबी सल्ल. के साथ नमाज़ पढ़ता रहा यहाँ तक कि जब आपने नमाज़ पढ़कर सलाम फेरा तो मैंने अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! आज आपने ऐसी नमाज़ पढ़ी कि मैंने कभी नहीं देखा था, तो आपने फ़रमाया हाँ यह उम्मीद व तमन्ना की नमाज़ थी, जिसके बाद मैंने ख़ुदा से तीन बातों की दरख़्वास्त की। ऐ नाफ़े बिन ख़ालिद ख़ुज़ाई! क्या यह हदीस तुमने रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बान से सुनी है? तो कहा हाँ मैंने उन लोगों से सुना जिन्होनें ख़ुद नबी सल्ल. की ज़बान से सुना था। शद्दाद बिन औस रह. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया- मेरे लिये ज़मीन के पूरब व पश्चिम क़रीब कर दिये गये और यह कि मेरी उम्मत इन सब पर मालिक हो जायेगी। और मुझे दोनों ख़ज़ाने दिये गये हैं, सफ़ेद ख़ज़ाना भी और सुर्ख़ ख़ज़ाना भी। और मैंने सवाल किया था कि इसके साथ ऐ ख़ुदाया! यह भी हो कि मेरी उम्मत क़हत (अकाल और सूखे) से न मरे, और न कोई दुश्मन उन पर ऐसा मुसल्लत हो कि वह उनको बिल्कुल हलाक कर डाले, और उनमें गिरोह-बन्दी न हो जाये कि एक दूसरे से जंग करने लगें। तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद! मैंने जो तक़दीर क़ायम कर दी वह होकर रहेगी। मैंने तुम्हारी दो बातें तो मन्ज़ूर कर लीं लेकिन तुम्हारी उम्मत के कुछ लोग कुछ को हलाक करेंगे या क़ैद किया करेंगे।

और नबी सल्ल. ने फ़रमाया कि मुझे अगर अपनी उम्मत पर ख़ौफ़ है तो गुमराह इमामों और सरदारों का है। जब एक बार मेरी उम्मत में तलवार चल पड़ेगी तो फिर न रुकेगी, क़ियामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा। नाफ़े बिन ख़ालिद ख़िज़ाई ने अपने बाप से रिवायत की है जो कि नबी पाक के सहाबा में से थे और पेड़ के नीचे जो बैअ़ते-रिज़्वान हुई थी उसमें हाज़िर थे, कि एक दिन नबी सल्ल. ने नमाज़ पढ़ी, लोग आपको घेरे हुए थे। आपने हल्की नमाज़ पढ़ी लेकिन रुकूअ़ व सज्दे कामिल किये। लेकिन अत्तहिय्यात में बहुत देर तक बैठे यहाँ तक कि हममें से कुछ लोग एक दूसरे को इशारा करने लगे कि शायद हुज़ूर पर 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) उतर रही है, तो हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- नहीं! मैं रग़बत व हैबत की नमाज़ पढ़ रहा था। फिर इन तीन दुआ़ओं की पूरी हदीस दर्ज है। वह यह हदीस सुना चुके तो मैंने कहा क्या तुम्हारे बाप ने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है? कहा हाँ, उन्होंने कहा कि मैंने हुज़ूर सल्ल. की

ज़बान से सुना है और अपनी इन दस उंगलियों के बराबर दस बार। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैंने ख़ुदा से दुआ़ की थी कि मेरी उम्मत को चार चीज़ों से दूर रख। चुनाँचे दो बातों से अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत को महफ़ूज़ रखा और दो से नहीं रखा।

मैंने दुआ़ की थी कि मेरी उम्मत पर आसमान से पथराव न हो, और फ़िरऔ़न वालों की तरह वे डूबकर न मरें, और उनमें आपस में फूट न पड़े, और यह कि वे एक दूसरे से जंग न करें। तो अल्लाह तआ़ला ने पथराव न होने और डूबने से महफ़ूज़ रहने की दुआ़यें तो क़बूल कर लीं लेकिन आपस में गिरोह-बन्दी और फूट तथा जंग व क़िताल बाक़ी रहा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जब यह आयत उतरी "क़ुल् हुवल् क़ादिरु......." तो नबी सल्ल. उठे, वुज़ू किया और दुआ़ माँगने लगे कि ऐ ख़ुदा! मेरी उम्मत पर ऊपर और नीचे से अ़ज़ाब नाज़िल न फ़रमा, और उनमें गिरोह-बन्दी और जंग न हो, तो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और कहा ऐ मुहम्मद! अल्लाह ने तुम्हारी उम्मत को आसमान के अ़ज़ाब और पाँव के नीचे से अ़ज़ाब उबलने से महफ़ूज़ कर दिया है। इसके बाद और कई हदीसें इसी तरह की और इसी मज़मून की दर्ज हैं जिनका बार-बार ज़िक्र तर्जुमा व तफ़सीर पढ़ने वाले के लिये ग़ैर-ज़रूरी है।

आसमानी अ़ज़ाब से पथराव मुराद है और पाँव तले के अ़ज़ाब से ज़मीन में धंस जाना मुराद है। ये चार चीज़ें थीं जिनमें से दो नबी सल्ल. की वफ़ात से पच्चीस बरस बाद ही ज़ाहिर होने लगीं। यानी आपस में मतभेद और गिरोह-बन्दी और मुसलमानों की दो पार्टियों में जंग व झगड़े। ज़मीन में धंसने और आसमान से पत्थर बरस कर हलाक होने से उम्मते मुहम्मदिया महफ़ूज़ व मामून रखी गई। इस आयत के बारे में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. मस्जिद में या मिम्बर पर चीख़-चीख़कर फ़रमाते थे कि ऐ लोगो! तुम पर अल्लाह की आयत उतर चुकी है, अगर अ़ज़ाब आसमान से आयेगा तो कोई नहीं बचेगा, और अगर पाँव तले से आयेगा तो तुम ज़मीन में धंसकर हलाक हो जाओगे। अगर जमाअ़तों (पार्टियों और गिरोहों) में बंट जाओगे और आपस में जंग छिड़ जायेगी तो यह सबसे बदतर बात होगी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते थे कि इस आयत में "ऊपर से अ़ज़ाब आने" से मुराद बुरे पेशवा और रहनुमा लोग हैं और "नीचे की तरफ़ से अ़ज़ाब आने" से बुरे ख़ादिम और बुरे पीर मुराद हैं। या यह कि अमीर और ग़रीब लोग मुराद हैं। इब्ने जरीर कहते हैं कि अगरचे यह क़ौल भी लिया जा सकता है लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा सही है। इब्ने जरीर फ़रमाते हैं कि इसके सही होने की गवाही ख़ुदा पाक का यह क़ौल देता है:

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ...... الخ

यानी क्या तुम इससे महफ़ूज़ (सुरक्षित और निडर) हो कि ख़ुदा तुम्हें ज़मीन में धंसा दे और वह भड़कने लगे या उबलने लगे, या इस बात से महफ़ूज़ हो कि आसमान से पहले की क़ौमों की तरह पत्थर बरसाये। जल्द ही तुम जान लोगे कि मेरा अन्देशा कितना सही था।

और हदीस में है कि यह आसमान से पत्थर बरसना, ज़मीन में धंसना और सूरतों का बदल और बिगड़ जाना, यह सब इस उम्मत में होगा, और ये क़ियामत की निशानियों में से हैं। क़ियामत से पहले इन निशानियों का ज़हूर होगा। इन्शा-अल्लाह तआ़ला इसका ज़िक्र अपने मौक़े पर आयेगा।

"गिरोह बन्दी का शिकार होने" से मुराद विभिन्न फ़िर्क़ों और ग्रुपों में बंटना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों में बंट जायेगी, एक फ़िर्क़े को छोड़कर बाक़ी सब दोज़ख़ी और जहन्नमी होंगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा कि कुछ को कुछ पर अ़ज़ाब व क़त्ल के साथ

Maktab E Ashraf

मुसल्लत किया जायेगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद हैः

اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ......

देखो कि हम किस तरह वज़ाहत व तफ़सीर के साथ बार-बार बयान करते जाते हैं ताकि तुम अल्लाह की आयतों (निशानियों) और उसके दलाईल पर ग़ौर करो और समझो। ज़ैद बिन असलम कहते हैं कि जब यह आयत "क़ुल् हुवल् क़ादिरु......." उतरी तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि मेरे बाद काफ़िर न हो जाना, कि आपस में तलवार लेकर एक दूसरे की गर्दनें काटने लगो। लोगों ने कहा हम तो गवाही देते हैं कि ख़ुदा एक है और आप अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ। तो किसी ने कहा कि ऐसा कभी न होगा कि हममें का एक दूसरे को क़त्ल करने लगे, जबकि हम सही मायने में मुसलमान हों। चुनाँचे यह आयत उतरी, इरशाद होता है किः

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ...... الخ

यानी तुम्हारी क़ौम 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से आये हुए अहकाम) को झुठलायेगी, हालाँकि वह हक़ है। तुम कह दो कि मैं तुम्हारा कोई ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं, हर बात का एक वक़्त मुक़र्रर है। जल्द ही तुमको हक़ीक़त का पता चल जायेगा।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ o لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ o وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ o وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ o

और आपकी क़ौम उसको झुठलाती है हालाँकि वह यक़ीनी है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर तैनात नहीं किया गया हूँ। (66) हर ख़बर के ज़ाहिर होने का एक वक़्त है, और जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा (कि यह अ़ज़ाब आया)। (67) और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में ऐब ढूँढ रहे हैं तो उन लोगों से किनारा करने वाला हो जा, यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ। और अगर तुझको शैतान भुला दे तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के पास मत बैठ। (68) और जो लोग एहतियात रखते हैं उन पर उनकी पूछताछ का कोई असर न पहुँचेगा। लेकिन उनके ज़िम्मे नसीहत कर देना है शायद कि वे भी एहतियात करने लगें। (69)

इस्लाम के मुख़ालिफ़ों का बायकाट ज़रूरी है

तुम्हारी क़ौम क़ुरैश ने क़ुरआन को झुठलाया हालाँकि इसके सिवा कोई दूसरी चीज़ हक़ नहीं। तुम कह दो कि मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ। जैसा कि फ़रमाया कह दो (ऐ मुहम्मद सल्ल.) कि यह तुम्हारे रब की

तरफ़ से हक़ है जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे न माने। यानी मेरा फ़रीज़ा तो सिर्फ़ तब्लीग़ कर देना है, और तुम्हारा काम सुनना और इताअ़त करना है। जो मेरी इताअ़त (बात माने और फ़रमाँबरदारी) करेगा वह दीन व दुनिया में कामयाब रहेगा और जो मुख़ालफ़त करेगा वह दोनों जगह में बदबख़्त रहेगा। इसी लिये इरशाद फ़रमाया कि हर बात के लिये एक निर्धारित वक़्त है और हर ख़बर के लिये एक ज़ाहिर होने का मौक़ा, अगरचे कुछ समय के बाद सही, जैसा कि फ़रमाया कि कुछ समय के बाद तुम्हें इसका पता चल जायेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَاِذَارَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَافَاَعْرِضْ عَنْهُمْ...... الخ

यानी जब तुम उन काफ़िरों को देखो कि झुठलाने और मज़ाक़ उड़ाने के साथ हमारी आयतों में बहस कर रहे हैं तो उनसे मुँह फेर लो, यहाँ तक कि वे कोई दूसरी बात करने लगें। और अगर तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आ जाने के बाद उन ज़ालिम लोगों के साथ मिल न बैठना। मुराद यह है कि उम्मत का हर-हर फ़र्द उन झुठलाने वालों के साथ न बैठे जो अल्लाह की आयतों के मायनों को बदल देते हैं और उसके सही और ज़ाहिरी मतलब पर उसको क़ायम नहीं रखते। इसी लिये हदीस में है कि मेरी उम्मत के लिये क़ाबिले माफ़ी क़रार दिया गया है ख़ता और भूल से कोई काम करना, या मजबूर होकर करना, और इसी चीज़ की तरफ़ अल्लाह के इस पाक क़ौल में इरशाद है कि किताब में तुमको बतला दिया गया है कि जब तुम मालूम करो कि अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र और मज़ाक़-ठट्ठा किया जा रहा है तो उनके पास से उठ जाओ, यहाँ तक कि उनका बात करने का विषय बदल जाये, वरना तुम भी मज़ाक़ उड़ाने वालों में समझे जाओगे और उन्हीं के बराबर हो जाओगे। और अल्लाह तआ़ला का क़ौलः

مَاعَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ.

यानी जब तुम उनके पास से हट गये और उनके पास बैठने वाले न रहे तो तुमने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर ली। और उनके साथ गुनाह में शामिल होने से महफ़ूज़ हो गये।

सईद बिन जुबैर रज़ि. ने इसका यह मतलब बयान किया है कि अगर वे काफ़िर लोग आयतों के अपमान की कोशिश में लगे हैं तो अब तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं जबकि तुमने उनसे ख़ुद को दूर और बेताल्लुक़ कर लिया हो। और दूसरे उलेमा इसका यह मतलब बताते हैं कि अगर तुम लोग उन नालायक़ों के साथ बैठो भी तो उनके मज़ाक़ उड़ाने की ज़िम्मेदारी तुम पर आ़यद नहीं। और गुमान किया है कि यह आयत एक दूसरी आयत से मन्सूख़ है, और वह आयत यह है कि:

اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ.

यानी ऐसी सूरत में तुम भी उन जैसे हो गये।

यह सारी वज़ाहत आयत "व मा अ़लल्लज़ी-न..." से सम्बन्धित थी। यह मुजाहिद, सुद्दी और इब्ने जुरैज का क़ौल था। उनके इस क़ौल की बिना अल्लाह के इस पाक क़ौल पर है:

وَلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ.

जिसका मतलब यह हुआ कि लेकिन हमने उनको ऐसी सूरत में उनसे मुँह फेर लेने (यानी उनसे बेताल्लुक़ हो जाने) का हुक्म दिया है ताकि उन्हें तंबीह और नसीहत हो जाये, शायद कि आईन्दा को वे इससे एहतियात रखें और फिर ऐसा न करें।

Mehtab E Ashraf

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ ۢبِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ࣖ	और ऐसे लोगों से बिल्कुल अलग रह जिन्होंने अपने दीन को लह्व-व-लअिब "यानी खेल-तमाशा" बना रखा है, और दुनियावी ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है। और इस क़ुरआन के ज़रिये से नसीहत भी करता रह ताकि कोई शख़्स अपने किरदार के सबब इस तरह न फंस जाये कि अल्लाह के अ़लावा कोई न उसका मददगार हो न सिफ़ारिश करने वाला, और (यह कैफ़ियत हो कि) अगर दुनिया भर का मुआ़वज़ा भी दे डाले तब भी उससे न लिया जाये। ये ऐसे ही हैं कि अपने किरदार के सबब फंस गये उनके पीने के लिये बहुत तेज़ (खोलता हुआ) पानी होगा और दर्दनाक सज़ा होगी अपने कुफ़्र के सबब से। (70)

ع ٨ ١٤

काफ़िरों और ख़ुदा के इनकारियों से ताल्लुक़ व दोस्ती ख़त्म करना

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि उन लोगों को छोड़ दो जिन्होंने दीन को एक खिलौना बना रखा है, क्योंकि वे बड़े अ़ज़ाब की तरफ़ जा रहे हैं। इसी लिये फ़रमाया कि उन्हें इस क़ुरआन के ज़रिये नसीहत व इबरत दिलाओ, अल्लाह के अ़ज़ाब से उन्हें डराओ, ताकि वे अपने आमाल की वजह से हलाक न कर दिये जायें। ज़ह्हाक रह. 'तुब्स-ल' को 'तुस्ल-म' के मायने में लेते हैं यानी सौंप दिये जायें। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं- ताकि रुस्वा न हो जायें। क़तादा रह. कहते हैं ताकि रोक न रखे जायें। और मर्वा इब्ने ज़ैद पकड़ के मायने में लेते हैं। ये तमाम अक़वाल व इबारतें तक़रीबन एक ही मायने में हैं। हासिल यह है कि हलाकत के लिए छोड़ देना और ख़ैर से रोक लेना और मतलब के हासिल करने से रुक रहना। जैसा कि फ़रमायाः

كُلُّ نَفْسٍ ۢبِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ...... الخ

हर शख़्स अपने आमाल में रुका हुआ है सिवाये दाहिने हाथ वाले के। (यानी हर आदमी अपने आमाल के हिसाब से बदला पायेगा, हाँ जिन लोगों को उनके जन्नती होने का परवाना अर्थात् आमाल नामा दाहिने हाथ में दे दिया जायेगा वे बेख़ौफ़ होंगे)।

और फ़रमायाः

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ.

यानी न उनका कोई वली होगा न शफ़ाअ़त करने वाला। जैसा कि एक और जगह फ़रमायाः

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ.... الخ

Maktaba Ashraf

इससे पहले कि वह दिन आ जाये जिसमें न सौदेबाज़ी है, न दोस्ती व मुहब्बत, न सिफ़ारिश और शफ़ाअ़त। काफ़िर ही पूरे ज़ालिम हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا.

यानी अपने गुनाह के बदले में वे अपनी सारी दुनिया जहान भी फ़िदये या बदले में दे डालें तो न क़बूल होगी। जैसा कि फ़रमायाः

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ... الخ

जो लोग कुफ़्र पर रहे और कुफ़्र ही पर मरे वे अगर ज़मीन भर सोना भी दे डालें तो नामुम्किन है कि क़बूल करके उनको छुटकारा हासिल हो जाये। पस फ़रमाया "ये ऐसे ही लोग हैं जो अपने आमाल व किरदार के सबब फंस गये....."।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ص لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ط قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ط وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ط وَهُوَ الَّذِىْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ط وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۵ قَوْلُهُ الْحَقُّ ط وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ط عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ط وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें कि वह हमको न नफ़ा पहुँचाये और न हम को नुक़सान पहुँचाए? और क्या हम इसके बाद उल्टे फिर जाएँ कि हमको ख़ुदा तआ़ला ने हिदायत कर दी है? जैसे कोई शख़्स हो कि उसको शैतानों ने कहीं जंगल में बेराह कर दिया हो और वह भटकता फिरता हो, उसके कुछ साथी भी हों कि वे उसको ठीक रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ। आप कह दीजिए कि यक़ीनी बात है कि सही रास्ता वह ख़ास अल्लाह ही का रास्ता है, और हमको यह हुक्म हुआ है कि हम परवर्दिगारे आ़लम के पूरे फ़रमाँबर्दार हो जाएँ। (71) और यह कि नमाज़ की पाबन्दी करो और उससे डरो, और वही है जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। (72) और वही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को बाक़ायदा पैदा किया, और जिस वक़्त वह (यानी अल्लाह तआ़ला) इतना कह देगा कि (हश्र) तो हो जा, बस वह हो जाएगा। (73) उसका कहना असरदार है, और जबकि सूर में फूँक मारी जाएगी सारी हुकूमत ख़ास उसी की होगी, वह छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, वही है बड़ी हिक्मत वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला। (74)

Maktab e Ashraf

बुतपरस्ती में न दीन का नफ़ा है न दुनिया का

मुश्रिकों ने मुसलमानों से कहा था कि दीने मुहम्मद को छोड़ दो, अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि कह दो क्या मैं ख़ुदा को छोड़कर इन बुतों की पूजा करूँ जो न कोई फ़ायदा दे सकते हैं, न नुक़सान। और क्या कुफ़्र इख़्तियार करके हम उल्टे पैर फिर जायें? हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने हमें रोशनी दे दी है। अगर मआ़ज़ल्लाह हम कुफ़्र इख़्तियार कर लें तो फिर हमारी ऐसी मिसाल हो जायेगी जैसे किसी को शैतान ने भटका दिया हो, यानी हमारा ईमान लाने के बाद कुफ़्र इख़्तियार करना ऐसा है जैसे कोई शख़्स सफ़र कर रहा हो और रास्ता भूल गया हो, और शैतानों ने उसे भटका दिया हो, और उसके साथी सीधी राह पर हों और उसको बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ, हम सीधे रास्ते पर हैं, और वह इनकार कर रहा हो। यह वह शख़्स है जो नबी को अच्छी तरह जानने के बावजूद गुमराहों की पैरवी करके काफ़िर हो जाये और नबी सल्ल. उसको सीधी राह पर बुला रहे हों। यह रास्ता इस्लाम का रास्ता है।

"क़ुल् अनद्‌ऊ़....." इसमें बुत और बुतपरस्तों की मिसाल बयान की गई है और उन लोगों की जो हिदायते ख़ुदावन्दी की तरफ़ बुलाते हैं। जैसे कोई रास्ते से भटक गया हो और कोई पुकारने वाला उसे पुकारता हो कि ऐ फ़ुलाँ! तू रास्ते की तरफ़ आ, और उसके दूसरे हमसफ़र बुला रहे हों कि भटको नहीं, हमारी तरफ़ सीधे रास्ते पर आओ।

पस अगर वह पहले दाअ़ी (दावत देने वाले) की सुन ले तो वह उसको लेजाकर हलाकत के गड्ढे में डाल देगा और अगर दूसरे लोगों की बात सुनेगा तो वे उसको सीधी राह पर लगा देंगे। पहला बुलाने वाला जंगल के शैतानों में से है। यह मिसाल है उस शख़्स की जो ख़ुदा से हटकर बुतों की परस्तिश (पूजा) शुरू कर दे और वह उसी में बेहतरी समझे, और जब उसको मौत आ जाये तो शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। ये राह से भटकाने वाले शैतान होते हैं जो उसको उसके बाप-दादा के नाम लेकर और उसका नाम लेकर बुलाते हैं, तो वह उनकी पैरवी करने लगता है और वह इसी में मस्लेहत (अपनी बेहतराई) समझता है।

अब शयातीन उसको हलाकत (तबाही और बरबादी) में डाल देते हैं, उसे खा जाते हैं या भूखा प्यासा जंगल में भटकाते रहते हैं, ताकि हलाक हो जाये। यहाँ 'हैरान' से मुराद परेशान भटकते हुए फिरना है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जो अल्लाह की हिदायत को क़बूल नहीं करता वह शैतान की इताअ़त करने (बात मानने) वाला और गुनाह करने वाला शख़्स मुराद है। उसके साथी हालाँकि उसको हिदायत (सही रास्ते) की तरफ़ दावत देते रहते हैं। अल्लाह कहता है कि यह शैतान का भटकाया हुआ वह है जिसके वली और दोस्त इनसान हैं। हिदायत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ले जाने वाली सही राह है और गुमराही वह है कि जिसकी तरफ़ शैतान बुलाता है। इसको इब्ने जरीर रह. ने रिवायत किया है। फिर कहा कि यह इसका सबब है कि उसके साथी उसको गुमराही की तरफ़ बुला रहे हैं और गुमान करते हैं कि यही सही राह है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि इब्ने जरीर की यह राय आयत के ज़ाहिरी मतलब के ख़िलाफ़ है इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि उसके हम-सफ़र साथी उसको हिदायत (सही रास्ते) की तरफ़ बुलाते हैं। पस यह जायज़ नहीं कि उसको गुमराही क़रार दिया जाये। हालाँकि ख़ुदा ने तो ख़बर दी है कि वह हिदायत (सही रास्ता) है और यह बात तो वही है जो इब्ने जरीर ने कहा कि इबारत के आगे पीछे के हिस्से से मालूम होता है हैरानी व जहालत और गुमराही की हालत में उसके साथी उसी राह पर चल रहे हैं, तो उन्होंने उसको अपनी ही राह पर चलाया और अपने उसी रास्ते पर आने के लिये कहा जिसको अल्लाह तआ़ला ने मिसाल के तौर पर फ़रमाया। अब कलाम का ख़ुलासा यह हुआ कि वह उनके बुलाने पर इनकार

Maktab E Ashraf

करता है और उनकी तरफ़ तवज्जोह नहीं करता, और अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो उसको हिदायत नहीं फ़रमाता और उसको सीधी राह पर न लगा देता। इसी लिये फ़रमाया किः

هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى.

यानी सही रास्ता तो अल्लाह ही का रास्ता है।

जैसा कि फ़रमाया कि जिसको अल्लाह हिदायत करे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता। और फ़रमाया कि उनके राह पर आने के कितने ही उम्मीदवार और लालची क्यों न हों। अल्लाह जिसको गुमराह कर दे उसको कौन राह पर लायेगा और न उन लोगों का कोई मददगार है। फिर इरशाद होता है किः

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

यानी हमें हुक्म है कि ख़ुलूस से उसकी इबादत करें और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ें और ख़ुदा से डरें और हर हाल में परहेज़गार बने रहें। और उसी की तरफ़ सब क़ियामत में उठाये जायेंगे। उसी ने आसमानों और ज़मीनों को एतिदाल के साथ पैदा किया, वह इनका मालिक और इन्तिज़ाम करने वाला है। वह क़ियामत के दिन सिर्फ़ "कुन" (यानी हो जा) कहेगा और पलक झपकते में सब चीज़ें अपने आप दोबारा वजूद में आ जायेंगी।

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ.

यानी जिस दिन सूर में फूँक मारी जायेगी।

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने "सूर" के बारे में मतभेद किया है। बाज़ ने कहा कि 'सूर' जमा (बहुवचन) है "सूरत" की। इब्ने जरीर कहते हैं कि जिस तरह "सूर" शहर की फ़सील और चारदीवारी को कहते हैं और यह "सूरत" की जमा (बहुवचन) है। और ज़्यादा सही बात यह है कि "सूर" से मुराद वह क़र्न (सींग) है जिसके अन्दर इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम फूँक मारेंगे। इब्ने जरीर कहते हैं कि सही वही है जिस पर हदीसे नबवी से रोशनी पड़ती है। यानी हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि इस्राफ़ील सूर को मुँह में लगाये हुए हैं, सर झुकाये हुए हैं, और प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब सूर फूँकने का हुक्म सादिर होता है। एक देहाती ने भी हुज़ूर सल्ल. से पूछा था कि सूर क्या चीज़ है? तो आपने फ़रमाया था कि क़र्न (एक सींग) जिसमें फूँक कर बजाते हैं। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक वक़्त सहाबा के पास बैठे हुए थे कि आपने फ़रमाया- अल्लाह पाक जब आसमानों और ज़मीन के पैदा करने से फ़ारिग़ हुए तो सूर को पैदा किया और इस्राफ़ील को दिया, जिसको वह अपने मुँह से लगाये हुए हैं। आँखें अ़र्श की तरफ़ लगी हुई हैं, इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब सूर फूँकने का हुक्म होता है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! सूर क्या है? इरशाद फ़रमाया कि वह क़र्न (एक सींग) है। पूछा कि वह कैसा है? कहा बहुत बड़ा। ख़ुदा की क़सम जिसने मुझे भेजा उसकी चौड़ाई इतनी है जितनी आसमानों और ज़मीन के बीच का हिस्सा, उसमें तीन दफ़ा फूँका जायेगा। पहली फूँक घबराहट और परेशानी पैदा करने वाली होगी, दूसरी सब को बेहोश कर देने वाली और तीसरी ख़ुदा के सामने जमा होने की। अल्लाह पाक पहली फूँक का हुक्म देगा उससे सारी दुनिया जहान के लोग घबरा उठेंगे मगर जिसको ख़ुदा मज़बूत व स्थिर रखे। जब तक दूसरा हुक्म न होगा सूर फूँका जाता रहेगा रुकेगा नहीं। जैसा कि फ़रमायाः

Maktab E Ashraf

وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ.

यानी वह एक ज़बरदस्त चीख़ और बहुत ही बुलन्द आवाज़ होगी, पहाड़ बादल की तरह उड़ रहे होंगे, और ज़मीन काँपने लगेगी, जैसे समुद्र में टूटी हुई कश्ती, जिसको मौजें हर तरफ़ ढकेलती रहती हैं, जैसे किसी क़िन्दील (चिराग़ और लालटेन) को जो छत में लटकी हुई हो, हवा हरकत देती रहती है। फ़रमाता है:

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ.... الخ

उस दिन कपकपा देने वाला सूर फूँका होगा और उसके बाद फिर दूसरी बार फूँका जायेगा। उस दिन सब बेइन्तिहा डरे हुए होंगे। लोग गिर पड़ेंगे, माँयें दूध पीते बच्चों को भूल जायेंगी, गर्भवती औरतों के गर्भ गिर जायेंगे, जवानों पर ख़ौफ़ के मारे बुढ़ापा ज़ाहिर हो जायेगा, शयातीन जान बचाने के ख़्याल से ज़मीन के किनारों तक भाग जायेंगे, लेकिन फ़रिश्ते उन्हें मार-मारकर वापस लायेंगे। एक दूसरे को पुकारता रहेगा लेकिन कोई किसी को पनाह न दे सकेगा सिवाये ख़ुदा के।

लोग इसी घबराहट के आलम में होंगे कि ज़मीन हर तरफ़ से फटने लगेगी। ऐसा बड़ा मामला ज़ाहिर होगा कि उस जैसा कभी न देखा गया, और ऐसी दहशत व तकलीफ़ और घबराहट बैठेगी कि ख़ुदा ही जानता है। फिर लोग आसमान की तरफ़ देखेंगे तो उसके पुर्ज़े उड़ रहे होंगे, सितारे टूट रहे होंगे, सूरज और चाँद सियाह पड़ जायेंगे। नबी सल्ल. ने फ़रमाया लेकिन मुर्दों को इसकी ख़बर न होगी। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला जब फ़रमायेगाः

فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ.

कि ज़मीन व आसमान में जो कोई है सब पर दहशत व घबराहट तारी होगी मगर जिसे अल्लाह चाहे। तो अल्लाह तआ़ला किसको इस हालत से अलग रखेगा? आपने फ़रमाया वे शहीद लोग हैं। घबराहट व दहशत तो ज़िन्दों को हुआ करती है और वे ज़िन्दा तो हैं लेकिन ख़ुदा के पास हैं, ख़ुदा उन्हें रिज़्क़ देता है। अल्लाह ने उस दिन की घबराहट और दहशत से उन्हें महफ़ूज़ रखा है, क्योंकि वह तो अल्लाह का अ़ज़ाब है और अ़ज़ाब तो मख़लूक़ में जो बुरे लोग हों उन पर उतरता है। इसी चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने इस आयत "यौ-म तज़्हलु कुल्लु मुरज़िअ़तिन्......." वाली आयत में बयान फ़रमाया कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे से ग़ाफ़िल हो जायेगी, हर गर्भवती का गर्भ गिर जायेगा, जब तक ख़ुदा चाहे वे इस अ़ज़ाब में मुब्तला रहेंगे। लम्बे समय तक यह कैफ़ियत रहेगी।

फिर अल्लाह पाक बेहोशी लाने वाले सूर का हुक्म इस्राफ़ील को देगा। इसलिये सब आसमान वाले और ज़मीन वाले बेहोश हो जायेंगे। लेकिन जिसको ख़ुदा चाहे वह होश में रहेगा। मलकुल-मौत ख़ुदा के पास आयेंगे और कहेंगे- ऐ ख़ुदा सब मर गये। अल्लाह तआ़ला तो जानता है मगर पूछेगा बाक़ी कौन है? वह अ़र्ज़ करेंगे तू बाक़ी है, तुझे कभी मौत आने वाली नहीं, और अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्ते भी हैं, जिब्राईल व मीकाईल भी बाक़ी हैं और मैं भी। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमायेगा जिब्राईल व मीकाईल को भी मर जाना चाहिये, तो अ़र्श बोल उठेगा या रब! जिब्राईल व मीकाईल भी मर जायेंगे? ख़ुदा तआ़ला फ़रमायेगा ज़बान न खोलना, अ़र्श के नीचे जितने हैं सबको मर जाना है। मलकुल-मौत फिर ख़ुदा से सवाल करेंगे, या रब! जिब्राईल व मीकाईल भी मर गये। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अब कौन बाक़ी है? वह कहेंगे तू बाक़ी है, तुझे तो मौत आयेगी नहीं। अब मैं और अ़र्श उठाने वाले बाक़ी हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अ़र्श

उठाने वालों को भी मर जाना चाहिए। वे भी मर जायेंगे। अल्लाह तआ़ला दरियाफ़्त फ़रमायेगा- अब कौन बाक़ी है? इज़राईल कहेंगे तू न मरने वाला, और मैं। अल्लाह तआ़ला अ़र्श को हुक्म देगा इस्राफ़ील से सूर ले लो और इस्राफ़ील से कहेगा कि तुम भी मेरी मख़्लूक़ हो, तुम भी मर जाओ। वह उसी वक़्त मर जायेंगे और ख़ुदा-ए-वाहिद के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा तो आसमान व ज़मीन लपेट दिये जायेंगे जैसे कि तूमार लपेट दिया जाता है। तीन दफ़ा उसको खोला और लपेटा जायेगा। फिर फ़रमायेगा मैं जब्बार हूँ, मैं जब्बार हूँ, मैं जब्बार हूँ। फिर तीन बार आवाज़ देगा क्या आजके दिन है किसी की बादशाहत? कौन जवाब देता! फिर ख़ुद ही फ़रमायेगा बादशाहत अल्लाह वाहिदुल-क़ह्हार की है।

फिर दूसरे ज़मीन व आसमान पैदा करेगा, उन्हें फैला देगा और लम्बा कर देगा, जिसमें कोई टेढ़ और नुक़्स (ऐब और कमी) बाक़ी न रहेगा। फिर मख़्लूक़ को अल्लाह तआ़ला की एक ज़बरदस्त आवाज़ होगी तो नये सिरे से नयी पैदा हुई ज़मीन में सब पहले की तरह हो जायेंगे, जो ज़मीन के अन्दर है वह अन्दर और जो ज़मीन के बाहर है वह बाहर। फिर अपने अ़र्श के नीचे से अल्लाह तआ़ला पानी नाज़िल फ़रमायेगा, आसमान को हुक्म देगा कि बरस। चालीस दिन तक पानी बरसेगा यहाँ तक कि पानी उन पर बारह गज़ बुलन्द हो जायेगा, फिर जिस्मों को हुक्म देगा तो वे ज़मीन में से ऐसे निकलने लगेंगे जैसे पेड़-पौधे और सब्ज़ियाँ उग आती हैं।

जब तमाम जिस्म और शरीर पहले की तरह मुकम्मल हो जायेंगे तो पहले अ़र्श के तमाम फ़रिश्ते ज़िन्दा किये जायेंगे। अल्लाह तआ़ला इस्राफ़ील को हुक्म देगा कि सूर लो वह ले लेंगे, फिर अल्लाह तआ़ला अपने हुक्म से जिब्राईल और मीकाईल अ़लैहिमस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमायेगा, फिर रूहें बुलाई जायेंगी, मुसलमानों की रूहें नूर की तरह चमकती हुई होंगी और काफ़िरों की रूहें तारीक (सियाह और बेनूर) रहेंगी। उन सबको लेकर सूर में डाल दिया जायेगा। इस्राफ़ील को हुक्म होगा कि रूहों के निकालने को फूँक मारी जाये। चुनाँचे ज़िन्दगी की फूँक फूँकी जायेगी तो रूहें ऐसी उछल पड़ेंगी जैसे शहद की मक्खियाँ कि ज़मीन व आसमान उनसे भर जायेगा। अब हुक्मे बारी होगा कि रूहें अपने जिस्मों में दाख़िल हो जायें, तो दुनिया की सारी रूहें अपने अपने जिस्मों में दाख़िल होने लगेंगी और नथनों के रास्ते से जिस्मों में आयेंगी जैसे ज़हर किसी साँप के काटे के जिस्म में फैलता चला जाता है।

फिर ज़मीन फटने लगेगी और लोग उठ-उठकर अपने रब की तरफ़ रुख़ करने लगेंगे और सबसे पहले मेरी क़ब्र खुलेगी। ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ सब जायेंगे। काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो बड़ा सख़्त मालूम होता है। लोग नंगे जिस्म और बिना ख़तना हुए होंगे, एक ही जगह खड़े होंगे। सत्तर बरस यही आ़लम रहेगा कि ख़ुदा तआ़ला न उन्हें देखेगा न कोई फ़ैसला करेगा। लोग रोने लगेंगे और आह व फ़रियाद करने लगेंगे। आँसू ख़त्म हो जायेंगे तो ख़ून आँखों से बहने लगेगा। लोग अपने पसीने में डूब जायेंगे। ठोड़ियों तक पसीना पहुँचा हुआ होगा, लोग कहेंगे ख़ुदा के पास किसी को शफ़ाअ़त के लिये जाना चाहिये ताकि वह कोई फ़ैसला कर दे। अब आपस में कहने लगेंगे कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के सिवा ऐसा कौन हो सकता है जो ज़बान खोल सके। अल्लाह ने उन्हें अपने हाथ से बनाया, अपनी रूह उनके अन्दर फूँकी और सबसे पहले उनसे बात की, चुनाँचे लोग आदम अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे और उनके आगे अपना मक़सद पेश करेंगे। वह सिफ़ारिश से इनकार कर देंगे और कहेंगे मैं इस क़ाबिल नहीं। फिर होते-होते एक-एक नबी के पास आयेंगे जिसके पास भी आयेंगे वह नबी इनकार कर देगा। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि फिर मेरे पास आयेंगे, मैं जाऊँगा और अ़र्श के सामने सज्दे में गिर पड़ूँगा। अब अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ते को भेजेगा

और वह मेरा बाज़ू पकड़कर उठायेगा। अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमायेगा तुम क्या कहना चाहते हो? मैं अ़र्ज़ करूँगा या रब! तूने मुझे शफ़ाअ़त का हक़ देने का वादा फ़रमाया है, चुनाँचे यह हक़ मुझे अ़ता फ़रमा और लोगों के बीच फ़ैसला फ़रमा दे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अच्छा तुम शफ़ाअ़त कर सकते हो, और मैं इनसानों के बीच अपने फ़ैसले नाफ़िज़ करूँगा।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि फिर मैं वापस आकर लोगों के साथ खड़ा हो जाऊँगा हम सब लोग खड़े ही होंगे कि आसमान से एक ज़ोर की आवाज़ होगी कि हम घबरा उठेंगे। ज़मीन में मौजूद इनसानों व जिन्नात से दोगुनी तादाद में आसमान से फ़रिश्ते नाज़िल होंगे, वे ज़मीन से बहुत क़रीब हो जायेंगे। ज़मीन उनके नूर से चमक उठेगी, वे सफ़बन्दी कर (यानी क़तार बाँध) लेंगे। हम उनसे पूछेंगे- क्या ख़ुदा पाक तुम्हारे अन्दर है? वे कहेंगे नहीं। वह आने वाला है। फ़रिश्ते आसमान से दोबारा इतनी तादाद में उतरेंगे कि उतरे हुए फ़रिश्तों से दोगुनी तादाद में और इनसानों व जिन्नात से भी दोगुनी तादाद में होंगे, उनके नूर से ज़मीन चमक उठेगी। वे क़रीने (सलीक़े और अदब) से खड़े हो जायेंगे। हम पूछेंगे क्या ख़ुदा पाक तुम्हारे अन्दर है? वे कहेंगे नहीं, वह आने ही वाला है। फिर तीसरी बार उससे भी दोगुनी तादाद में फ़रिश्ते उतरेंगे। अब ख़ुदा-ए-जब्बार बादल का छतर लगाये आठ फ़रिश्तों से अपना तख़्त उठवाये तशरीफ़ फ़रमा होगा। हालाँकि इस वक़्त तो उसका तख़्त चार फ़रिश्ते उठाये रहते हैं, उनके क़दम आख़िरी नीचे वाली ज़मीन की तह में हैं, ज़मीन व आसमान उनके जिस्म के आधे हिस्से के बराबर हैं, उनके कन्धों पर अ़र्शे ख़ुदावन्दी है। उनकी ज़बानों पर अल्लाह की पाकी और तारीफ़ रहेगी। वे कह रहे होंगे:

सुब्हा-न ज़िल-अ़र्शि वल्‌ज-बरूति, सुब्हा-न ज़िल्मुल्कि वल्‌म-लकूति सुब्हानल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु सुब्हानल्लज़ी युमीतुल् ख़लाई-क़ व ला यमूतु सुब्बूहुन् क़ुद्दूसुन् क़ुद्दूसुन् क़ुद्दूसुन् सुब्हा-न रब्बुनल् अअ्ला रब्बुल् मलाइ-कति वर्रूहि। सुब्हा-न रब्बुनल् अअ्लल्लज़ी युमीतुल् ख़लाइ-क़ व ला यमूतु।

फिर अल्लाह तआ़ला अपनी कुर्सी पर अपनी शायाने शान बैठेगा। एक आवाज़ होगी- ऐ जिन्नात व इनसानों के गिरोह! मैंने जब से तुम्हें पैदा किया है आज तक ख़ामोश था, तुम्हारी बातें सुनता रहा, तुम्हारे आमाल देखता रहा, अब तुम ख़ामोश रहो, तुम्हारे आमाल के सहीफ़े (रजिस्टर) तुमको पढ़कर सुनाये जायेंगे। अगर वे अच्छे साबित हुए तो ख़ुदा का शुक्र अदा करो, और अगर ख़राब निकले तो अपने आपको मलामत करो यानी कोसो। फिर अल्लाह तआ़ला जहन्नम को हुक्म देगा तो उसमें से एक काली सियाह चमकदार सूरत ज़ाहिर होगी। अब अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ इनसानो! क्या मैंने हुक्म नहीं दे रखा था कि शैतान को न पूजना, कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। तुम मेरी ही इबादत करना कि यही सीधा और सही रास्ता है। इस शैतान ने बहुतों को गुमराह किया है। क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते थे। यह वह जहन्नम है जिसका तुमसे वादा किया गया था, और जिसको तुम झुठलाते थे। अब ऐ मुजरिमो! नेक लोगों से अलग हो जाओ। अल्लाह तआ़ला अब उम्मतों को अलग-अलग कर देगा।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि ऐ नबी! तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे। हर उम्मत (जमाअ़त और गिरोह) के पास उसका नामा आमाल होगा और आज अपने किये का बदला पायेंगे। अब अल्लाह पाक अपनी मख़्लूक़ के बीच फ़ैसला शुरू कर देगा, लेकिन जिन्नात व इनसानों का अभी नहीं।

अब जंगली और पालतू जानवरों और पशु-पक्षियों के बीच फ़ैसले फ़रमायेगा यहाँ तक कि एक ज़ालिम और सींग वाली बकरी के ज़ुल्म का बदला भी दूसरी बकरी से दिलवायेगा। जब इन्साफ़ दिलवाने से कोई जानवर भी बाक़ी न रहेगा तो उन जानवरों से कहेगा कि मिट्टी हो जाओ, तो काफ़िर कहने लगेंगे कि काश

Maktab E Ashraf

हम भी इस अ़ज़ाब से बचने के लिये मिट्टी हो जायें।

ग़र्ज़ यह कि अब बन्दों के दरमियान झगड़ों और मुक़द्दमों का फ़ैसला होगा। सबसे पहले क़त्ल व ख़ून के मुक़द्दमे पेश होंगे। अब हर वह मक़्तूल (क़त्ल किया जाने वाला) आयेगा जिसको ख़ुदा की राह में क़त्ल करने वाले ने क़त्ल किया होगा। अल्लाह तआ़ला क़ातिल को हुक्म देगा, वह शहीद का सर उठायेगा, वह सर अ़र्ज़ करेगा कि ऐ ख़ुदा! इससे पूछ कि इसने मुझे क्यों क़त्ल किया था? अल्लाह तआ़ला उससे पूछेगा (हालाँकि वह ख़ुद जानता है) कि क्यों क़त्ल किया था। वह ग़ाज़ी (अल्लाह के रास्ते का शहीद) कहेगा कि ऐ ख़ुदा! तेरी इ़ज़्ज़त और तेरे नाम की ख़ातिर। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तू सच कहता है और उसका चेहरा सूरज की रोशनी की तरह चमकने लगेगा। फ़रिश्ते उसको जन्नत की तरफ़ ले जायेंगे। इसी तरह दूसरे मक़्तूल भी अपनी आँतें सर पर लिये आयेंगे, अल्लाह उनके क़ातिलों से भी पूछेगा कि क्यों क़त्ल किया था? उनको कहना पड़ेगा कि अपनी शोहरत व नाम की ख़ातिर। तो फ़रमायेगा तू हलाक हो जाये। ग़र्ज़ हर मक़्तूल का मुक़द्दिमा पेश होगा और इन्साफ़ होगा और हर ज़ुल्म का बदला ज़ालिम से लिया जायेगा। जिस ज़ालिम को ख़ुदा चाहे अ़ज़ाब देगा और जिस पर चाहे वह अपनी रहमत नाज़िल फ़रमायेगा।

फिर सारी मख़्लूक़ का इन्साफ़ होगा। कोई मज़लूम ऐसा न बचेगा कि ज़ालिम से बदला न दिलाया गया हो, यहाँ तक कि जो दूध में पानी मिलाकर बेचता है और कहता है कि ख़ालिस है, उसको भी सज़ा दी जायेगी, और ख़रीदने वाले को उसकी नेकियाँ दे दी जायेंगी। इससे भी जब फ़राग़त हो जायेगी तो एक आवाज़ देने वाला ऐलान करेगा और सारी मख़्लूक़ सुनेगी, कि हर गिरोह को चाहिये कि अपने-अपने ख़ुदाओं की तरफ़ हो जाये और अपने माबूदों (जिनको वह पूजता था) का दामन पकड़ ले। अब कोई बुत-परस्त (बुतों का पुजारी) ऐसा न होगा जिसके बुत उसके सामने ज़लील पड़े हुए न हों।

एक फ़रिश्ता उस दिन हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम (नबी) की शक्ल में आयेगा और एक फ़रिश्ते को ईसा बिन मरियम अ़लैहिमस्सलाम की सूरत दी जायेगी। चुनाँचे यहूद तो उज़ैर के पीछे हो जायेंगे और ईसा के पीछे ईसाई हो जायेंगे। फिर उनके ये फ़र्ज़ी माबूद उनको दोज़ख़ की तरफ़ ले जायेंगे और वह कहेगा कि अगर ये इनके ख़ुदा होते तो अपने मानने वालों को दोज़ख़ की तरफ़ न ले जाते। अब ये सब दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे।

अब जबकि सिर्फ़ मोमिन हज़रात बाक़ी रह जायेंगे जिनमें मुनाफ़िक़ भी शामिल रहेंगे, अल्लाह तआ़ला उनके पास आयेगा (यह आना उसकी शान के मुताबिक़ होगा, इसकी कोई कैफ़ियत बयान करना इनसान के बस से बाहर है, इसकी हैयत व शक्ल क्या होगी वही ख़ूब जानता है) और फ़रमायेगा ऐ लोगो! सब अपने अपने ख़ुदाओं से जा मिले हैं तुम भी जिनकी इबादत करते थे उनसे जा मिलो। ये सब मोमिन लोग जिनमें मुनाफ़िक़ भी शामिल होंगे, कहेंगे कि ख़ुदा की क़सम हमारा ख़ुदा तो तू था, तेरे सिवा हम किसी और को नहीं मानते थे। अब अल्लाह तआ़ला उनके पास से हट जायेगा। फिर अपनी असली शान में आयेगा, उनके पास रुकेगा जब तक कि चाहे। फिर सामने आयेगा और इरशाद फ़रमायेगा- ऐ लोगो! सब अपने अपने ख़ुदाओं से जा मिले हैं, तुम भी अपने माबूदों से जा मिलो। वे कहेंगे ख़ुदा की क़सम तेरे सिवा हमारा तो कोई ख़ुदा नहीं, हम तेरे सिवा किसी को नहीं पूजते थे।

पिंडली का जलवा दिखाना

अब ख़ुदा तआ़ला अपनी पिंडली खोल देगा। उसकी अ़ज़मत से उन पर यह बात रोशन हो जायेगी कि

उनका ख़ुदा यही है, फिर सबके सब सज्दे में सर के बल गिर पड़ेंगे, लेकिन जो मुनाफ़िक़ होंगे वे पीठ के बल गिरेंगे, सज्दे के लिये झुक न सकेंगे। उनकी पुश्त गाय की पीठ की तरह सीधी रहेगी।

अब अल्लाह हुक्म देगा कि इन्हें उठा ले जाओ। फिर उन लोगों के सामने जहन्नम का पुलसिरात आयेगा जो किसी ख़न्जर या तलवार की धार से भी ज़्यादा तेज़ होगा और जगह-जगह आँकड़े और काँटे और बड़ी फिसलती हुई और ख़तरनाक जगह होगी, उसके नीचे और एक बहुत गहरा फिसलवाँ पुल भी होगा। नेक लोग ऐसे गुज़र जायेंगे जैसे आँख झपक जाती है, या बिजली चमक जाती है, या तेज़ चलने वाली हवा की तरह, या तेज़ रफ़्तार घोड़े या तेज़ सवारी, या तेज़ दौड़ने वाले आदमी की तरह, कि बाज़ तो पूरी तरह महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहेंगे और निजात पा जायेंगे, बाज़ ज़ख़्मी होकर और बाज़ कट-कटकर जहन्नम में गिर जायेंगे। और फिर जब जन्नत वाले जन्नत की तरफ़ भेजे जाने लगेंगे तो कहेंगे अब हमारी शफ़ाअ़त ख़ुदा के पास कौन करेगा।

गुनाहगारों के शफ़ी

चुनाँचे वे आदम अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे और शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे। वह अपने गुनाह का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि मैं इसका अहल (पात्र) नहीं। तुम नूह के पास चले जाओ, वह ख़ुदा का सबसे पहला रसूल कहा जाता है। लोग हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास आयेंगे वह भी अपनी ख़ता का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे मैं तो अहल नहीं। वह कहेंगे कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ कि अल्लाह ने उन्हें अपना ख़लील (दोस्त) कहा है। वह भी अपनी ख़ताओं का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि मूसा के पास जाओ कि ख़ुदा ने उनसे बातें की हैं और उन पर तौरात जैसी किताब सबसे पहले उतारी है। वे मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आकर दरख़्वास्त करेंगे तो वह भी अपने क़त्ल के गुनाह का ज़िक्र करके कहेंगे- मैं भी इसका अहल नहीं। तुम रूहुल्लाह (हज़रत ईसा) के पास जाओ वह अल्लाह की रूह और उसका कलिमा हैं। ईसा भी यही कहेंगे कि नहीं! मैं इस क़ाबिल नहीं, तुम मुहम्मद (सल्ल.) ही के पास पहुँचो।

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि अब लोग मेरे पास आयेंगे और ख़ुदा ने मुझे तीन शफ़ाअ़तों का हक़ दिया और वादा फ़रमाया है। मैं जन्नत की तरफ़ चलूँगा, दरवाज़े की कुन्डी को खटखटाऊँगा, जन्नत का दरवाज़ा खुलेगा, मुझे ख़ुश-आमदीद कहा जायेगा, मैं जन्नत में दाख़िल होकर ख़ुदा की तरफ़ नज़र उठाऊँगा सज्दे में गिर पड़ूँगा। अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी ऐसी तारीफ़ व बुज़ुर्गी बयान करने की इजाज़त देगा कि किसी को ऐसी तहमीद (तारीफ़) नहीं सिखाई थी। फिर फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद! सर उठाओ क्या शफ़ाअ़त करते हो? तुम्हारी शफ़ाअ़त सुनी जायेगी। तुम्हारा सवाल पूरा किया जायेगा। मैं अपना सर उठाऊँगा तो अल्लाह पूछेगा क्या कहना चाहते हो? मैं कहूँगा या रब! तूने मुझे शफ़ाअ़त का हक़ दिया है, जन्नत वालों के बारे में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कि वे जन्नत में दाख़िल हो सकें। अल्लाह फ़रमायेगा अच्छा मैंने इजाज़त दी। ये लोग जन्नत में दाख़िल हो सकते हैं।

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते थे कि ख़ुदा की क़सम! तुम जन्नत के अन्दर अपने ठिकानों और जोड़ों (बीवियों और शौहरों) को उससे जल्द पहचान लोगे जितना कि दुनिया में पहचानते हो। हर आदमी को बहत्तर बीवियाँ मिलेंगी, दो इनसानों में से और सत्तर हूरों में से। उन दो को उन सत्तर हूरों पर फ़ज़ीलत (बड़ाई) हासिल रहेगी। क्योंकि दुनिया में उन नेक औ़रतों ने ख़ुदा की बड़ी-बड़ी इबादत की थी, वह एक के पास आयेगा तो वह एक याक़ूत (क़ीमती मोती) के मकान में मोतियों से सजी सोने के तख़्त पर बैठी होगी,

जो सुन्दुस और इस्तबरक़ (जन्नत के लिबास) के सत्तर जन्नती जोड़े पहने होगी। वह उसके कंधे पर हाथ रखेगा तो अपने हाथ का अक्स उसके सीने के पार उसके कपड़ों, जिस्म और गोश्त के पार होता हुआ दूसरी तरफ़ दिखाई देगा, जिस्म इस क़द्र स्वच्छ होगा कि पिंडली का गूदा नज़र आता होगा। गोया तुम याक़ूत की छड़ी को देख रहे हो। उसका दिल इसके लिये आईना बना होगा और इसका दिल उसके लिये, न यह उससे थकेगा न वह इससे थकेगी (यानी एक साथ रहते हुए एक दूसरे से ऊबेंगे नहीं, न ही एक दूसरे की सोहबत से एक दूसरे का जी भरेगा)। वह जब कभी उस औरत के पास आयेगा उसको बाकिरा (कुँवारी) पायेगा। न यह उसकी ख़स्तगी की शिकायत करेगा न वह इसकी कमज़ोरी की शिकायत करेगी। ऐसे में आवाज़ आयेगी कि हमें इल्म है कि तुममें से किसी का जी भरेगा नहीं। लेकिन तेरी दूसरी बीवियाँ भी तो हैं, चुनाँचे वह बारी बारी उनके पास आयेगा और जिस किसी के पास वह आयेगा वह कहेगी कि ख़ुदा की क़सम! जन्नत में तुझसे ज़्यादा अच्छा और ख़ूबसूरत कोई नहीं, और न मुझे तुझसे ज़्यादा कोई महबूब और प्यारा है।

लेकिन जब दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में डाले जायेंगे तो आग किसी के क़दमों तक होगी और किसी की आधी पिंडली तक, और किसी के घुटनों तक और कमर तक, और चेहरे को छोड़कर किसी के पूरे जिस्म तक, क्योंकि चेहरे पर आग हराम कर दी गई है। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया मैं अल्लाह तआ़ला से कहूँगा कि या रब! मेरी उम्मत के दोज़ख़ वालों के बारे में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा। तो फ़रमायेगा कि निकाल लो दोज़ख़ से जिन अपने उम्मतियों को तुम जानते हो। चुनाँचे कोई उम्मती बाक़ी बचा न रहेगा। फिर शफ़ाअ़ते आ़म की इजाज़त मिलेगी। चुनाँचे हर नबी और हर शहीद अपनी अपनी शफ़ाअ़तें पेश करेंगे। अब अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि जिसके दिल में दीनार के वज़न के बराबर भी ईमान हो उसको दोज़ख़ से निकाल लो। फिर फ़रमायेगा अगर दो तिहाई दीनार के बराबर भी हो, अगर एक तिहाई दीनार के बराबर भी हो, अगर चौथाई दीनार के बराबर भी हो, फिर क़ीरात बराबर भी फिर राई के बराबर भी अगर हो।

चुनाँचे सब दोज़ख़ से निकाल लिये जायेंगे। फिर वे भी जिन्होंने ख़ुदा के लिये कोई भी ख़ैर का काम किया हो। अब कोई बाक़ी न रहेगा जो क़ाबिले शफ़ाअ़त हो, यहाँ तक कि ख़ुदा तआ़ला की इस आ़म रहमत को देखकर इब्लीस (शैतान) को भी उम्मीद और आरज़ू होगी कि कोई उसकी भी शफ़ाअ़त करे। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अब एक मैं बाक़ी रह गया हूँ मैं तो सब रहम करने वालों में बड़ा रहम करने वाला हूँ। चुनाँचे बारी तआ़ला जहन्नम में अपना हाथ डालेगा (अपनी शान के मुताबिक़ जैसी कि उसकी शान है, इस बात पर सिर्फ़ ईमान लाना चाहिये कैफ़ियत के बारे में ज़्यादा ग़ौर नहीं करना चाहिये) और ऐसे बेशुमार दोज़ख़ियों को निकाल लेगा जो जलकर कोयलों की तरह हो गये होंगे, उन्हें जन्नत की एक नहर में जिसको "नहरे ह-यवान" कहते हैं डाला जायेगा। वह नये सिरे से ऐसे तरोताज़ा होकर सब्ज़ियों की तरह उग आयेंगे और ज़र्रात की तरह फैले होंगे, उनकी पेशानियों पर लिखा हुआ होगा "ख़ुदा के आज़ाद किये हुए जहन्नमी" इस तहरीर से जन्नत वाले उनसे परिचित हो जायेंगे कि उन्होंने कुछ नेक काम किये थे। एक अ़र्से तक जन्नत में वे इसी तरह रहेंगे, फिर ख़ुदा से दरख़्वास्त करेंगे कि या रब! यह तहरीर मिटा दे, चुनाँचे वह मिटा दी जायेगी।

यह मशहूर और काफ़ी लम्बी हदीस है और बहुत ग़रीब भी, और विभिन्न हदीसों में अलग-अलग तौर पर इसके टुकड़े बयान हुए हैं। बाज़ बातें इसमें ऐसी हैं जिससे इसकी हैसियत मुतास्सिर होती है। इस्माईल इब्ने राफ़ेअ़ क़ाज़ी-ए-मदीना इसकी रिवायत में मुन्फ़रिद (अकेले) हैं, इस रिवायत के सही होने में मतभेद हैं।

बाज़ ने इसको मोतबर क़रार दिया है और बाज़ ने कमज़ोर क़रार दिया है। बाज़ ने इनकार किया है। जैसे अहमद बिन हंबल, अबू हातिम राज़ी, उमर बिन अ़ली फ़ल्लास, बाज़ ने मतरूक (छोड़ा हुआ) कहा है। इब्ने अ़दी कहते हैं कि यह सारी हदीस क़ाबिले ग़ौर है और इसके सब रावी (बयान करने वाले) कमज़ोर हैं। मैं कहता हूँ कि इसकी सनद में कई तरह से मतभेद है। मैंने इसको अलग एक हिस्से में बयान कर दिया है। इसके मज़मून की इबारत भी अ़जीब है। कई हदीसें मिलाकर एक इबारत बना ली गयी है और उसको एक ही इबारत और मज़मून क़रार दे लिया गया है। इसी लिये यह क़ाबिले इनकार हो गई है। मैंने अपने उस्ताद हाफ़िज़ अबुल-हुज्जाज मुज़्ज़ी से सुना है कि यह वलीद बिन मुस्लिम की तैयार की हुई है जिसको उसने जमा कर रखा है। गोया कि ये अलग-अलग हदीसों के टुकड़े हैं। वल्लाहु आलम

MaktabE Ashraf

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيْمُ لِأَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ
اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ
مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ
مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ
رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ
لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ
يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّآلِّيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ
هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اِنِّيْ
وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ۚ

और (वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से फ़रमाया कि क्या तू बुतों को माबूद क़रार देता है? बेशक मैं तुझको और तेरी सारी क़ौम को खुली ग़लती में देखता हूँ। (75) और हमने ऐसे ही तौर पर इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की मख़्लूक़ात दिखलाईं (ताकि वे आ़रिफ़ हो जाएँ) और ताकि कामिल यक़ीन करने वालों में से हो जाएँ। (76) फिर जब उनपर रात का अंधेरा छा गया तो उन्होंने एक सितारा देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमाया कि मैं छुप जाने वालों से मुहब्बत नहीं रखता। (77) फिर जब चाँद को चमकता हुआ देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है, सो जब वह छुप गया तो आपने फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझको हिदायत न करता रहे तो मैं गुमराह लोगों में शामिल हो जाऊँ (78) फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा तो आपने फ़रमाया कि यह मेरा रब है, यह तो सबसे बड़ा है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमायाः ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। (79) मैं यक्सू होकर अपना रुख़ उसकी तरफ़ करता हूँ जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। (80)

Maktab E Ashraf

दावते इस्लाम

और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दावते तौहीद

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाप का नाम आज़र नहीं था बल्कि तारिख़ था। आयत में आज़र से मुराद "बुत" है। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाप का नाम तो तारिख़, माँ का नाम शानी और बीवी का नाम सारा था, और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की माँ का नाम जो इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की कनीज़ थीं हाजरा था। नसब के माहिर उलेमा में से अक्सर का यही क़ौल है। आज़र नाम था एक बुत का। चूँकि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के वालिद उस बुत के ख़ादिम और पुजारी थे इसलिये यही नाम उन पर ग़ालिब आ गया था। वल्लाहु आलम

इब्ने जरीर वग़ैरह कहते हैं कि बात करने का यह अन्दाज़ उन लोगों की गुफ़्तगू में एक ऐब की बात और नामुनासिब कलाम समझा जाता था, इस लफ़्ज़ आज़र के मायने हैं टेढ़ा, लेकिन किसी ने इसकी रिवायत को पेश नहीं किया और न किसी ने इसको मन्सूब किया है। इब्ने अबी हातिम कहते हैं कि मोतमर बिन सुलैमान ने बयान किया है कि मैंने अपने बाप से सुना कि वह आज़र के मायने 'आवज' यानी टेढ़ा बताते थे और यह एक सख़्त कलिमा है जिसको इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा। इब्ने जरीर कहते हैं कि दुरुस्त तो यह है कि उनके बाप का नाम आज़र था, फिर नसब जानने वालों का एतिराज़ पेश करके कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाप का नाम तारिख़ था। फिर कहते हैं कि मुम्किन है दो नाम हों जैसा कि अक्सर लोगों के हुए हैं, या एक नाम लक़ब और उर्फ़ के तौर पर हो। यह एक बेहतरीन तौजीह हो सकती है। बाक़ी असल इल्म तो अल्लाह ही को है।

ऊपर बयान हुई आयतों की तफ़सील यह है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बाप को नसीहत की। बुतों के पूजने पर उनकी मुख़ालफ़त की, उन्हें इससे रोका, लेकिन उनके बाप बाज़ न आये। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि तुमने बुत को ख़ुदा बना लिया? मैं तो तुमको और तुम्हारे मस्लक पर चलने वालों को बड़ी गुमराही में पाता हूँ। इससे भटकते रहोगे बल्कि हैरत और जहल में रहोगे। उनको जहालत व गुमराही में क़रार देना हर सही अ़क्ल रखने वाले के लिये एक स्पष्ट दलील है। अल्लाह का इरशाद है कि क़ुरआने हकीम में इब्राहीम का ज़िक्र देखो, वह सिद्दीक़ और नबी थे। अपने बाप से उन्होंने कहा था कि "ऐ बाप! उसकी इबादत न करो जो न सुनता है न देखता है और न तुम्हारा कोई काम निकालता है। ऐ बाप! ख़ुदा की तरफ़ से मुझे वह इल्म हासिल हुआ है जो तुम्हें नहीं हुआ। इसलिये मेरी बात सुनो मैं तुम्हें बिल्कुल सीधा रास्ता बताऊँगा। ऐ बाप! शैतान की इबादत न करो (यानी उसके कहने पर न चलो), शैतान ख़ुदा का दुश्मन है। ऐ बाप! सख़्त ख़तरा है कि तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल हो जाये और तुम शैतान के दोस्त क़रार पाओ।

आज़र ने जवाब दिया ऐ इब्राहीम! क्या तुम मेरे ख़ुदाओं से मुँह मोड़ते हो? अगर तुम इस रविश से बाज़ न आओगे तो मैं तुम्हें संगसार कर (यानी तुम पर पत्थर बरसा) दूँगा और तुम्हें बिल्कुल छोड़ दूँगा। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा फिर मेरा आपको सलाम है, मैं ख़ुदा से तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करूँगा। मेरा ख़ुदा बड़ा ही मेहरबान है, लेकिन मैं तुमको भी छोड़ता हूँ और तुम्हारे झूठे माबूदों को भी। मैं तो ख़ुदा ही से अपना राब्ता (ताल्लुक़) जोड़ूँगा। मुम्किन है कि ख़ुदा मेरी दुआ़ में मुझे नाकाम न रखे।

Maktab E Ashraf

चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पूरी उम्र अपने बाप के लिये इस्तिग़फ़ार (माफ़ी और निजात की दुआ) करते रहे और जब बाप शिर्क पर ही मर गया और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को मालूम हो गया कि शिर्क के लिये इस्तिग़फ़ार काम नहीं देता तो इस्तिग़फ़ार करना छोड़ दिया। जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि इब्राहीम का इस्तिग़फ़ार तो अपने बाप के लिये सिर्फ़ इस वजह से था कि उसने बाप से वादा कर लिया था। लेकिन जब इब्राहीम को मालूम हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उससे बेज़ारी ज़ाहिर की। बेशक हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बड़े ख़ुदा-परस्त और हलीम (बुर्दबार) थे।

सही हदीस में आया है कि क़ियामत के दिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे तो आज़र उनसे कहेगा- ऐ बेटे! आज मैं तुम्हारी नाफ़रमानी नहीं करूँगा। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने रब से अ़र्ज़ करेंगे ऐ रब! क्या तूने मुझसे वादा नहीं फ़रमाया था कि मुझे क़ियामत के दिन ज़लील न करेगा। और आज मेरे लिये इससे बड़ी कौनसी रुस्वाई हो सकती है कि मेरा बाप इस हाल में है। इरशाद फ़रमाया जायेगा कि ऐ इब्राहीम! तुम अपने पीछे देखो तो वह अपने बाप को देखने के बजाये एक बिज्जू को देखेंगे जो कीचड़ में लुथड़ा हुआ है, और उसकी टाँगें पकड़कर दोज़ख़ की तरफ़ घसीटते हुए ले जाया जा रहा है।

चुनाँचे अल्लाह पाक फ़रमाता है कि हम इस तरह इब्राहीम पर आसमान व ज़मीन के मलकूत (मख़्लूक़ात) को पेश कर देते हैं और उसकी नज़र में यह दलील क़ायम कर देते हैं कि किस तरह अल्लाह की वहदानियत (एक होने) पर ज़मीन व आसमान के बनाने और पैदाईश की बुनियाद है, जिससे यह दलील ली जा सकती है कि ख़ुदा के सिवा कोई और रब नहीं। ऐसी दलालत फ़िन्नज़र (यानी खुली आँखों अपनी क़ुदरत की निशानियाँ) को मलकूत कहते हैं। क्योंकि दलालत फ़िन्नज़र सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ही को हासिल रही, जैसा कि फ़रमायाः

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ.

और दूसरी जगह हैः

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ... الخ

यानी लोगों को आसमान व ज़मीन की मख़्लूक़ात पर इबरत की नज़र करनी चाहिये। उन्हें अपने आगे पीछे ज़मीन व आसमान को देखना चाहिये कि अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें, और अगर चाहें तो आसमान से कोई टुकड़ा उन पर गिरा दें। दिलचस्पी लेने वालों और रुजू करने वालों के लिये इसमें निशानियाँ हैं।

लेकिन 'मलकूत' के बारे में इब्ने जरीर वग़ैरह ने बयान किया है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की निगाहों के सामने आसमान फट गये थे और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आसमान की सब चीज़ों को देख रहे थे। यहाँ तक कि उनकी नज़र अ़र्श तक पहुँची और सातों ज़मीन उनके लिये खुल गई और वह ज़मीन के अन्दर की चीज़ें देखने लगे। बाज़ ने इस मज़मून का भी इज़ाफ़ा किया है कि वह लोगों के गुनाह और नाफ़रमानियों को देखने लगे थे और उन गुनाहगारों पर बद्दुआ़ करने लगे थे, तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नहीं! ऐ इब्राहीम! मैं तुमसे ज़्यादा अपने बन्दों पर करीम हूँ। क्या अ़जब कि बाद को वे तौबा कर लें और रुजू कर लें।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इस आयत के बारे में कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अपनी क़ुदरत से आसमान व ज़मीन की छुपी हुई और ज़ाहिर सारी चीज़ें दिखला दीं, उनसे कुछ भी न

छुपाया। और जब वह गुनाहगारों पर लानत कर रहे थे तो फ़रमाया कि ऐसा नहीं, और उनकी बद्दुआ़ को रद्द कर दिया। फिर वे पहले ही की तरह हो गये, इसलिये हो सकता है कि उनकी निगाहों पर से पर्दा हट गया हो और छुपी हुई चीज़ें उन पर ज़ाहिर हो गयी हों। और यह भी हो सकता है कि इन सब चीज़ों को दिल की आँखों से देखा हो। चुनाँचे ख़ुदा की ज़ाहिरी हिक्मत और क़तई दलालत को मालूम कर लिया हो। जैसा कि इमाम अहमद और इमाम तिर्मिज़ी से रिवायत है कि ख़्वाब (सपने) की हालत में ख़ुदा एक बेहतरीन शक्ल में मेरे पास आया और फ़रमाने लगा ऐ मुहम्मद! मला-ए-आला (आसमान में एक मक़ाम है जहाँ पहले फ़ैसले नाज़िल होते हैं उसके बाद दुनिया में उनका ज़हूर होता है) में क्या बहस हो रही है? मैंने कहा या रब! मैं नहीं जानता। उसने अपना हाथ मेरे दोनों कन्धों के बीच रख दिया, उसकी उंगलियों की ठंडक मैं अपने सीने में पाने लगा। अब हर चीज़ मुझ पर खुल गई और मैं सब कुछ देखने लगा।

आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने उस पर मलकूत (यानी बहुत सी छुपी चीज़ें और मख़्लूक़) को ज़ाहिर कर दिया कि वह देख ले और यक़ीन भी कर ले। फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब अंधेरी रात हो गई तो इब्राहीम ने सितारे को देखा तो कहा यह मेरा रब होगा, लेकिन जब वह ग़ायब हो गया तो कहा कि डूब जाने वालों को तो मैं पसन्द नहीं करता, न ग़ायब हो जाने वाली चीज़ ख़ुदा हो सकती है।

क़तादा रह. कहते हैं कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने जान लिया कि ख़ुदा वह होना चाहिये जो ज़ायल (ख़त्म) न हो। फिर जब रोशन चाँद को देखा तो कहा यह मेरा ख़ुदा होगा, वह भी डूब गया तो कहा यह भी ख़ुदा नहीं। अगर सच्चा ख़ुदा मेरी रहनुमाई न करे तो मैं गुमराह हो जाऊँगा। फिर जब सूरज को रोशन व चमकता देखा तो कहा यह रोशन है और सबसे बड़ा है, लेकिन वह भी डूब गया तो कहने लगे ऐ क़ौम! मैं तो अलग और बेताल्लुक़ होता हूँ तुम्हारी इन चीज़ों से जिनकी तुम पूजा और इबादत करते हो। अब मैंने अपना रुख़ कर लिया उस ज़ात की तरफ़ जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है। अब मैं बिल्कुल उसका हूँ और मुश्रिकों में से नहीं हो सकता, और अपनी इबादत व पूजा उसी के लिये ख़ास करता हूँ जिसने आसमान व ज़मीन को पैदा किया है, हालाँकि उसकी कोई नज़ीर पैदा करने के वक़्त उसके सामने न होगी। इसी तरह मैं शिर्क से तौहीद की तरफ़ आता हूँ।

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने इस मक़ाम में मतभेद किया है कि क्या यह ग़ौर व फ़िक्र (चिंतन) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का अपने लिये है या क़ौम से मुनाज़रे (यानी बहस करने और सही राह पर लाने) का मक़ाम है, और वे क़ौम को माबूदे हक़ीक़ी की तरफ़ खींचकर लाने के लिये इस तरह के सवाल कर रहे हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसको इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का मक़ामे ग़ौर व फ़िक्र क़रार देते हैं (यानी ख़ुद उन्होंने अपने ख़ुदा को तलाशने और पहचानने में इस तरह सोच विचार किया)। इस क़ौल से दलील पकड़ते हुए कि "मेरा रब ही मुझे हिदायत न फ़रमाये तो मैं गुमराह हो जाऊँ"।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने यह उस वक़्त कहा था जबकि वह पहली बार उस ग़ार (गुफ़ा) से बाहर निकले जिसमें कि उनकी माँ ने उन्हें जन्म दिया था। क्योंकि नमरूद बिन किनआ़न के ख़ौफ़ से पैदाईश के वक़्त वह ग़ार में घुस गई थीं। नमरूद से ज्योतिषियों ने कहा था कि एक बच्चा पैदा होने वाला है जिसके हाथों तुम्हारा मुल्क तबाह व बरबाद होगा। तो उसने हुक्म दे रखा था कि इस साल जितने लड़के पैदा हों सब क़त्ल कर दिये जायें। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की माँ जब हामिला

Maktab E Ashraf

(गर्भवती) हुईं और बच्चे की पैदाईश का वक़्त क़रीब आया तो वह शहर के बाहर एक ग़ार (गुफ़ा) में चली गईं और लड़के को वहीं छोड़कर चली आईं। इस सिलसिले में वह बहुत सी अ़जीब व ग़रीब और चमत्कारिक चीज़ों का ज़िक्र करते हैं, जैसा कि इसी बुनियाद पर पहले और बाद के ज़माने के मुफ़स्सिरीन ने भी उन बातों को ज़िक्र किया है।

कायनात में इबरत की निगाह डालना

लेकिन सच तो यह है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का अपनी क़ौम से यह बयान एक मुनाज़रे और बहस की हैसियत से है। इस अ़क़ीदे को बातिल (झूठा और ग़लत ज़ाहिर) करने के लिये कि तुम जो बुतों और मूर्तियों व तस्वीरों को पूजते हो ये सब बेहक़ीक़त हैं। चुनाँचे पहले मक़ाम में वह बुतों की इबादत से मुताल्लिक़ अपने बाप की ख़ता ज़ाहिर करते हैं, ये बुत उन्होंने फ़रिश्तों की शक्ल में बना रखे थे, ताकि ये पुतले ख़ुदा-ए-अ़ज़ीम के सामने उनकी शफ़ाअ़त करें, हालाँकि ये बुत ख़ुद उनकी अपनी नज़रों में भी हक़ीर और बेमानी थे। लेकिन वे गोया फ़रिश्तों की इबादत करके यह चाहते थे कि वे रिज़्क़ और दूसरी ज़रूरतों के मुताल्लिक़ ख़ुदा के पास उनकी सिफ़ारिश किया करें। चुनाँचे इस मक़ाम में उनकी ख़ता और गुमराही ज़ाहिर की गई है। ये शक्लों की मूर्तियाँ सात सितारों की थीं, यानी चाँद, अ़तारद, ज़ोहरा, सूरज, मिर्रीख़, मुश्तरी, ज़ोहल।' सबसे ज़्यादा चमकदार सितारा सूरज है, फिर चाँद है, फिर सब सितारों में सबसे रोशन ज़ोहरा है। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने सबसे पहले इसी सितारे ज़ोहरा को लिया और क़ौम को बताया कि माबूद और ख़ुदा बनने की इन सितारों में सलाहियत नहीं, ये ख़ुद पाबन्द हैं, इनकी रफ़्तार पहले से तयशुदा है, ये दायें या बायें ज़रा भी अपने इख़्तियार से नहीं झुक सकते, ये तो आसमानी जिस्म (अंग) हैं। जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने रोशन बनाकर पैदा किया है और इसमें उसकी बड़ी हिक्मत छुपी है। ये पूरब से निकलते हैं फिर पूरब व पश्चिम के बीच का रास्ता तय करते हैं, फिर निगाहों से ग़ायब हो जाते हैं। दूसरी रात फिर ज़ाहिर होते हैं, ऐसी चीज़ें जो अपनी हमेशा की आ़दत की पाबन्द हों ख़ुदा कैसे बन सकती हैं?

फिर वह चाँद की तरफ़ आते हैं और ज़ोहरा के बारे में जो बयान किया था वही बयान करते हैं। फिर सूरज का ज़िक्र करते हैं और इन तीन आसमानी जिस्मों (चीज़ों) से जब माबूद होने की नफ़ी और इनकार फ़रमाते हैं जो आसमानी जिस्म में सबसे ज़्यादा रोशन थे और न कटने वाली दलील से अपना दावा साबित कर चुकते हैं तो कहते हैं कि ऐ क़ौम! मैं तो उन चीज़ों से बरी हूँ जिनको तुम ख़ुदा का शरीक ठहराते हो। अगर ये ख़ुदा हैं तो इन सबको मददगार बनाकर तुम मेरी मुख़ालफ़त करो और ज़रा भी मेरे साथ रियायत न करो, मैं तो ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले का हो चुका। मैं तुम्हारी तरह शिर्क न करूँगा। मैं तो इन चीज़ों के ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाले) को पूजूँगा जो इनका मुख़तार है, संभालने और इन्तिज़ाम करने वाला है, हर चीज़ उसी के ताबे है, जैसा कि फ़रमाया- तुम्हारा रब सिर्फ़ वही है जिसने छह दिन में आसमान व ज़मीन को पैदा किया है, फिर अ़र्श पर ग़ालिब हो गया। रात को दिन से और दिन को रात से ढाँपता है कि एक दूसरे के पीछे आ-जा रहे हैं। सूरज, चाँद और तारे सब उसी के फ़रमान के ताबे हैं। हर चीज़ का वजूद उसी के हुक्म से हुआ और वही सबका मालिक है, वह रब्बुल-आ़लमीन है "बड़ी बरकतों वाला।"

Maktab E Ashraf

चुनाँचे यह कैसे जायज़ हो सकता है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उन मक़ामात पर ग़ौर करें और शिर्क के ख़्यालात में पहले मुब्तला हो जाएँ। हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उनके हक़ में फ़रमा दिया है कि हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत बख़्श रखी है। हम उसको ख़ूब जानते हैं। वह ख़ुद अपने बाप और क़ौम से कहते थे कि ये क्या मूर्तियाँ हैं जिनकी तुम पूजा करते हो। और फ़रमाया कि इब्राहीम सबसे एक तरफ़ (किनारे और बेताल्लुक़) होकर ख़ुदा की इबादत करने वाला और बहुत मुख़्लिस बन्दा है। उसने कभी शिर्क नहीं किया, वह ख़ुदा की नेमतों पर शुक्रगुज़ार है। अल्लाह ने उसको अपना मक़बूल बन्दा बनाया है और उसको सीधे रास्ते की हिदायत फ़रमाई है। और दुनिया में भी उसको ख़ूबियाँ और नेकियाँ अ़ता फ़रमाईं और आख़िरत में भी वह नेक लोगों में से है।

फिर हम तुम्हारी तरफ़ ऐ नबी! 'वही' (अल्लाह का पैग़ाम) भेजते हैं कि इब्राहीम की मिल्लत (यानी तरीक़े) की पैरवी करो, वह हनीफ़ (यानी तमाम झूठे मज़हबों को छोड़कर सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करने वाला) था, मुश्रिक नहीं था। और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- कह दो ऐ नबी! कि मेरे रब ने सीधे और सही रास्ते की मुझे हिदायत फ़रमाई है जिस पर कि इब्राहीम क़ायम थे। और वह मुश्रिकों में से नहीं थे।

सही हदीस से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- हर पैदा होने वाला बच्चा सही फ़ितरत पर पैदा होता है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि अल्लाह ने अपने बन्दों को हनीफ़ (सही रास्ते पर चलने वाला) पैदा किया है, यानी ख़ुदा ही का होकर रहने वाला। और फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की फ़ितरत वह है जिस पर कि इनसान की पैदाईश हुई, और जो चीज़ जैसी पैदा कर दी गई उसमें तब्दीली नहीं हो सकती। और फ़रमायाः

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْ م بَنِىٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى.

जिसके मायने एक क़ौल की रू से यही हैं। जैसे किः

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا.

के हैं, जिसका बयान आगे आयेगा। यानी यह कि लोगों को अल्लाह तआ़ला ने अपनी फ़ितरत पर पैदा किया है, अल्लाह की तख़्लीक़ (पैदाईश और बनाने) में तब्दीली नहीं। जब यह ख़ुदा परस्ती की फ़ितरत और अपनी बन्दगी का एतिराफ़ तमाम ही मख़्लूक़ के बारे में है तो इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के बारे में कैसे न हो? और वह ख़ुदा को पहचानने में इतने चिंतित, परेशान और शक में कैसे हो सकते हैं? वह तो सही फ़ितरत के लिहाज़ से बेहतरीन हस्ती थे। बल्कि निसंदेह यही बात सही है कि वह इस मक़ाम में अपनी क़ौम से मुनाज़रा और मुबाहसा फ़रमा रहे हैं और जिस शिर्क में वे लोग मुब्तला थे उनके ख़्यालात को दलील और तर्क के ज़रिये रद्द कर रहे हैं। यह बात नहीं कि वे ख़ुद ही शक व दुविधा में हैं।

وَحَاجَّهٗ قَوْمُهٗ ط قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّىْ فِى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ط وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّىْ شَيْئًا ط وَسِعَ رَبِّىْ كُلَّ

और उनसे उनकी क़ौम ने हुज्जत करना शुरू की। फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे हुज्जत करते हो, हालाँकि उसने मुझको तरीक़ा बतला दिया है, और मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक बनाते हो नहीं डरता, लेकिन हाँ अगर

شَيْءٍ عِلْمًا ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ○ وَكَيْفَ
اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ
اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَالَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ
سُلْطٰنًا ۗ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ
يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ
الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ○ع وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ ع ۹ ۱۵
اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ۗ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ
مَّنْ نَّشَآءُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ○

मेरा परवर्दिगार ही कोई मामला चाहे, मेरा परवर्दिगार हर चीज़ को अपने इल्म में घेरे हुए है। क्या तुम फिर ख़्याल नहीं करते? (81) और मैं उन चीज़ों से कैसे डरूँ जिनको तुमने शरीक बनाया है, हालाँकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह तआ़ला के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराया है जिन पर अल्लाह तआ़ला ने कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई, सो उन दो जमाअ़तों में से अमन का ज़्यादा हक़दार कौन है? अगर तुम ख़बर रखते हो। (82) जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क के साथ नहीं मिलाते ऐसों ही के लिए अमन है, और वही राह पर (चल रहे) हैं। (83)
और यह हमारी हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसको चाहते हैं रुतबों में बढ़ा देते हैं, बेशक आपका रब बड़ा हिक्मत वाला, बड़ा इल्म वाला है। (84)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का बातिल-परस्तों से मुनाज़रा

अल्लाह पाक इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र फ़रमाता है कि जब आप तौहीद से मुताल्लिक़ अपनी क़ौम से मुनाज़रा कर रहे थे और आप अपनी क़ौम से फ़रमा रहे थे कि क्या तुम ख़ुदा के बारे में मुझसे झगड़ रहे हो? वह तो वाहिद व यक्ता है, वह मुझे हक़ की तरफ़ रहनुमाई व हिदायत फ़रमा चुका है और मैं उसके एक होने और बेमिस्ल होने पर दलीलें रखता हूँ। फिर तुम्हारे बुरे अक़्वाल और ग़लत शुब्हात की तरफ़ कैसे तवज्जोह दे सकता हूँ। तुम्हारे क़ौल के ग़लत और झूठा होने पर मेरे पास दलील है, तुम्हारे ये ख़ुद बनाये हुए बुत तो किसी बात पर असर-अन्दाज़ नहीं, वे कुछ नहीं कर सकते। मैं न इनसे डरता हूँ न ज़र्रा भर इनकी परवाह करता हूँ। अगर ये बुत मेरा कुछ बिगाड़ सकते हैं तो बिगाड़ लें, बल्कि मुझे संभलने के लिये ज़र्रा भर मोहलत भी न दें। फ़रमायाः

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّىْ شَيْئًا.

हाँ ख़ुदा ही अगर कुछ बिगाड़ना चाहता है तो बिगाड़ सकता है, तमाम चीज़ें उसके इल्म के घेरे में हैं, कोई चीज़ उससे छुपी नहीं। मैं जो कुछ बयान करता हूँ तुम इससे कुछ भी इबरत नहीं लेते ताकि इनकी इबादत से बाज़ आओ।

विरोध करने और अपनी बात की दलील पेश करने का यह अन्दाज़ ऐसा ही है जैसे हूद अ़लैहिस्सलाम

Maktab E Ashraf

ने अपनी क़ौम के सामने दलील पेश की थी। और उस क़ौमे आ़द का क़िस्सा क़ुरआन में मौजूद है कि:

قَالُوْا يَاهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ.... الخ

यानी ऐ हूद तुमने कोई मोजिज़ा (अल्लाह की तरफ़ से दी हुई निशानी और चमत्कार) तो पेश नहीं किया। सिर्फ़ तुम्हारे कहने से क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ देंगे? हम तुम पर ईमान नहीं लाने वाले, हम तो यही समझते हैं कि तुम पर हमारे ख़ुदाओं की लानत बरसी है। हूद अ़लैहिस्सलाम ने कहा मैं ख़ुदा को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं ख़ुदा से नहीं बल्कि ख़ुदा के साथ तुम दूसरे ख़ुदाओं को जो शरीक करते हो उनसे बरी हूँ। अब तुम और तुम्हारे बुत सब मिलकर ख़ूब मेरी बुराई चाहो, न कोई कसर उठा रखो, न मुझे मोहलत दो। मेरा तवक्कुल (भरोसा) तो मेरे रब पर है, जो तुम्हारा भी रब है। वह तो हर जानदार को अपने पास पकड़ बुलायेगा। फिर इस आयत में फ़रमाता है कि मैं आख़िर तुम्हारे इन झूठे ख़ुदाओं से क्यों डरूँ? जब तुम ख़ुद इस बात से नहीं डरते हो जो दूसरों को शरीके ख़ुदा ठहरा रहे हो। जिसकी तुम्हारे पास कोई दलील ही नहीं है। जैसे कि एक जगह फ़रमाया:

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ.... الخ.

यानी क्या इनके कोई शरीक हैं अगर हैं तो उनको ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

और फ़रमाया:

اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ.... الخ

क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने ख़ुद ही ठहरा लिया है, उनके माबूद होने की ख़ुदा तआ़ला ने कोई दलील नहीं भेजी।

फिर इरशाद होता है, पस तुम ही बताओ कि तुम्हारी और मेरी जमाअ़त में से हक़ पर कौन है? क्या वह ख़ुदा जो सब कुछ कर सकता है या वह जो ज़र्रा भर नफ़े व नुक़सान का मालिक नहीं। फिर फ़रमाता है कि जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को ज़ुल्म के साथ दाग़दार नहीं किया (यानी ईमान लाकर फिर शिर्क में मुलव्वस नहीं हुआ), अमन व इत्मीनान तो उन्हीं का हक़ है और वही हिदायत पाने वाले हैं। उन्होंने अपनी इबादत शिर्क की मामूली गर्द से भी पाक रखी थी। दुनिया व आख़िरत पर उन्हीं का क़ब्ज़ा है। बुख़ारी में अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि जब आयत:

وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ.

यानी जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को ज़ुल्म से गन्दा नहीं करते।

नाज़िल हुई तो सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह! कौन है जिसने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म न किया हो? तो आयत नाज़िल हुई:

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ.

यानी बड़ा ज़ुल्म जो है वह शिर्क है।

जब उपरोक्त आयत नाज़िल हुई और लोगों को ग़लत-फ़हमी हुई तो आपने फ़रमाया कि तुम जैसा समझते हो ऐसा नहीं। क्या तुमने नहीं सुना कि अल्लाह के नेक बन्दे यानी लुक़मान हकीम ने कहा था कि:

يَابُنَيَّ لَاتُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ.

Maktab E Ashraf

कि ऐ बेटे अल्लाह के साथ शिर्क मत करना क्योंकि शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

मतलब यह था कि यहाँ ज़ुल्म से मुराद शिर्क है।

अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जबः

إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ

(कि शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है) आयत उतरी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मुझसे कहा गया है कि तुम उन्हीं ईमानदार लोगों में से हो।

ईमान और उसके तक़ाज़े

जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि एक बार हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ चले और जब मदीने से बाहर हुए तो एक सवार हमारी तरफ़ आता हुआ दिखाई दिया। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- यह सवार तुम्हीं से मिलने आ रहा है। जब वह हम तक पहुँचा तो हमें सलाम किया। हुज़ूर सल्ल. ने पूछा कहाँ से आ रहे हो? उसने कहा अपने घर वालों और अपने क़बीले वालों के पास से। फिर आपने कहा कहाँ जाओगे? कहा रसूलुल्लाह सल्ल. से मिलना चाहता हूँ। आपने फ़रमाया कहो मैं ही अल्लाह का रसूल हूँ। उसने कहा या रसूलल्लाह! मुझे ईमान की तालीम दीजिये। आपने फ़रमाया कहो कि ख़ुदा तआ़ला के सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं। और यह कि मुहम्मद ख़ुदा के रसूल हैं। और नमाज़ पढ़ा करो, ज़कात दिया करो, रमज़ान के रोज़े रखो और हज करो। उसने कहा मुझे इन सब बातों का इक़रार है। फिर जब रवाना हो चुका तो उसके ऊँट का पाँव जंगली चूहे के एक सूराख़ में फंस गया और ऊँट गिर पड़ा, उसके साथ ही यह सवार भी गिर पड़ा और उसका सर फट गया, गर्दन टूट गई। आपने फ़रमाया मुझ पर इसकी देखभाल और ख़बरगीरी ज़रूरी है, साथ ही अ़म्मार बिन यासिर और हज़रत हुज़ैफ़ा ने दौड़कर उसे उठाया फिर कहने लगे या रसूलल्लाह सल्ल.! यह तो मर चुका। आप दूसरी तरफ़ पलट गए। फिर फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि मैंने इसकी तरफ़ से रुख़ क्यों पलटा? मैंने दो फ़रिश्तों को देखा था कि जन्नत के फल इसके मुँह में दे रहे हैं, जिससे मैं समझ गया कि वह भूखा मरा है। फिर रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि यह उन लोगों में था जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि वे अपने ईमान के साथ ज़ुल्म यानी शिर्क को शामिल नहीं करते। फिर फ़रमाया अपने भाई का इन्तिज़ाम करो। चुनाँचे हमने उसको ग़ुस्ल दिया, कफ़न पहनाया, ख़ुशबू मली और जब क़ब्र की तरफ़ ले जाने लगे तो हुज़ूर सल्ल. तशरीफ़ लाए, फिर क़ब्र के किनारे पर बैठ गए और फ़रमाया कि बग़ली क़ब्र बनाओ, खुली न रखो। हमारी क़ब्रें बग़ली होती हैं और खुली क़ब्रें दूसरों की (उस वक़्त मदीने में बग़ली क़ब्रें सिर्फ़ मुसलमान ही खोदते थे, इसलिये ऐसा फ़रमाया), और यह उन लोगों में से था जो बहुत ही थोड़ा अ़मल करके बड़ा अज्र हासिल कर लेते हैं।

इस वाक़िए को तफ़सील के साथ इब्ने अ़ब्बास रज़ि. यूँ बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ चल रहे थे कि एक देहाती सामने से आया और कहने लगा या रसूलल्लाह! क़सम है उसकी जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है कि मैं अपने वतन, अपनी औलाद और अपने माल को छोड़कर आ रहा हूँ ताकि आपके ज़रिये हिदायत (सही रास्ते की रहनुमाई) हासिल करूँ और इस तरह आप तक पहुँचा हूँ कि ज़मीन की घास पात राह में खाता हुआ आया। अब मुझे दीन सिखाईए। आपने उसको दीन सिखाया, उसने क़बूल किया। हम उसके चारों तरफ़ जमा हो गये, वह जाने लगा तो उसके ऊँट का पाँव जंगली चूहे के बिल में फंस गया, वह गिर पड़ा और झटका लगने से उसकी गर्दन टूट गई। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया ख़ुदा

Maktab E Ashraf

की क़सम! उसने सच कहा था कि अपने वतन और बाल बच्चों को छोड़कर वह मुझसे सिर्फ़ हिदायत और दीन हासिल करने के लिए आया था। उसने दीनी तालीमात हासिल कर लीं। मुझे मालूम हुआ कि उसने सफ़र के दिन ज़मीन की जड़ी बूटी खाकर गुज़ारे थे। उसने अ़मल किया थोड़ा और अज्र पाया बहुत। क्या तुमने उन लोगों के बारे में सुना है जिन्होंने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म व शिर्क को शामिल नहीं किया? यही लोग अमन और दिली इत्मीनान के हक़दार हैं। यही असली हिदायत पाये हुए हैं। यह उन्हीं में से था।

अ़ब्दुल्लाह सन्जरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसको दिया गया और उसने शुक्र किया और जिसको न दिया गया और उसने सब्र किया, और जिसने ज़ुल्म किया फिर मग़फ़िरत तलब की, और जिस पर ज़ुल्म हुआ और उसने बख़्श दिया। इतना कहकर आप ख़ामोश हो गए तो लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! उसको क्या मिलेगा? आपने फ़रमाया यही लोग ख़ुदा की तरफ़ से अमन के अन्दर आ गए (यानी उनको आख़िरत में किसी तरह का रंज व मलाल न होगा)। हिदायत पाने वाले यही हैं।

अल्लाह तआ़ला के क़ौल "व तिल्-क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अ़ला क़ौमिही....." यानी हमने इब्राहीम को अपनी क़ौम से मुनाज़रा करना और दलीलें लाना सिखाया, कि बारे में मुजाहिद वग़ैरह ने इस आयत से अल्लाह तआ़ला की ज़िक्र की हुई निम्नलिखित दलीलें मुराद ली हैं। यानी यह हुज्जते इब्राहीमी कि मैं तुम्हारे माबूदों से क्यों डरूँ जबकि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करने से नहीं डरते, जिसकी कोई सनद और दलील नहीं। अब तुम ख़ुद ही जान लो कि दोनों में से किसने अपनी ज़्यादा हिफ़ाज़त की है। अल्लाह ने इसको अमन व हिदायत का नाम दिया है। फिर फ़रमाया "जो ईमान लाये और अपने ईमान को ज़ुल्म से पाक रखा" फिर उसके बाद फ़रमाया "वह हमारी हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी......"। और फिर फ़रमायाः

إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ.

यानी वह अपने अक़वाल (कही हुई बातों) में हकीम (हिक्मत वाला) है और अपने अफ़आ़ल (कामों) में अ़लीम (सब कुछ जानने वाला) है। यानी जिसको चाहे हिदायत करे और जिसको चाहे गुमराह होने दे। जैसा कि फ़रमायाः

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَةُ رَبِّكَ.... الخ

यानी जिनकी क़िस्मत में अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला साबित और तय हो चुका है वे ईमान नहीं लाएँगे। चाहे कैसी ही निशानी उन्हें क्यों न दिखाई जाए जब तक कि अल्लाह के अ़ज़ाब से उन्हें साबक़ा न पड़े।

और हमने उनको (एक बेटा) इसहाक़ और (एक पोता) याक़ूब दिया, हर एक को (हक़ रास्ते की) हमने हिदायत की, और (इब्राहीम से) पहले ज़माने में हमने नूह को हिदायत की, और उन (इब्राहीम) की औलाद में से दाऊद को और सुलैमान को और अय्यूब को और यूसुफ़ को और मूसा को और हारून को (हक़ रास्ते की	وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمٰنَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسٰى وَهٰرُونَ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي

Maktab E Ashraf

الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى
وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَ
اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَ
كُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمِنْ
اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَ
اجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ
يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ
اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى
لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ع ١٠ ع ٨ ١٦

हिदायत की), और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला दिया करते हैं। (85) और ज़करिया को और यह्या को और ईसा को और इलियास को, और ये सब (हज़रात) पूरे शायस्ता "यानी तहज़ीब और अख़्लाक़ व मुरव्वत वाले नेक" लोगों में थे। (86) और फिर इस्माईल को और यसअ़ को और यूनुस को और लूत को, और (इनमें से) हर एक को (उन ज़मानों के) तमाम जहान वालों पर हमने (नुबुव्वत से) फ़ज़ीलत दी (87) और साथ ही उनके कुछ बाप-दादों को और कुछ औलाद को और कुछ भाईयों को, और हमने उन (सब) को मक़बूल बनाया और हमने उन सबको सही रास्ते की हिदायत की। (88) अल्लाह की हिदायत वह यही (दीन) है, अपने बन्दों में से जिसको चाहे इसकी हिदायत करता है, और अगर (थोड़ी देर को मान लें कि) ये हज़रात भी शिर्क करते तो जो कुछ ये (आमाल किया) करते थे उनसे सब बेकार हो जाते। (89) ये ऐसे थे कि हमने उन (सब) को (आसमानी) किताब और हिक्मत (के उलूम) और नुबुव्वत अ़ता की थी, सो अगर ये लोग नुबुव्वत का इनकार करें तो हमने उसके लिए बहुत-से ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं जो उसके इनकारी नहीं हैं। (90) ये (हज़रात) ऐसे थे जिनको अल्लाह तआ़ला ने (सब्र की) हिदायत की थी, सो आप भी उन्हीं के तरीक़े पर चलिए। आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (क़ुरआन की तब्लीग़) पर कोई मुआ़वज़ा नहीं चाहता, यह क़ुरआन तो तमाम जहान वालों के वास्ते सिर्फ़ एक नसीहत है। (91)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर करम व इनायत

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि हमने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को इस्हाक़ जैसा बेटा बख़्शा, हालाँकि बुढ़ापे के सबब वह और उसकी बीवी सारा औलाद से मायूस हो चुके थे। फ़रिश्ते उनके पास आये, यही क़ौमे लूत

Maktab E Ashraf

की तरफ़ भी जा रहे थे। फ़रिश्तों ने मियाँ-बीवी को इस्हाक़ की पैदाईश की ख़ुशख़बरी दी, बीवी हैरान होकर रह गईं और कहा हाय! अब मेरे बच्चा होगा? मैं बुढ़िया और मेरा शौहर इतना ज़्यादा बूढ़ा, यह कैसी अ़जीब बात है? फ़रिश्तों ने कहा ऐ बीबी! क्या ख़ुदा की क़ुदरत पर ताज्जुब करती हो? ऐ घर वालो! ख़ुदा की रहमत और बरकतें तुम पर हैं। चुनाँचे फ़रिश्तों ने उन्हें यह भी ख़ुशख़बरी दी कि वह नबी होगा और उसकी नस्ल बढ़ेगी। यानी फ़रमायाः

وَبَشَّرْنَاهُ بِاسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ.

और यह बड़ी बशारत (ख़ुशख़बरी) और बड़ी नेमत है। चुनाँचे फ़रमायाः

فَبَشَّرْنَاهَا بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحَاقَ يَعْقُوْبَ.

यानी उस पैदा होने वाले इस्हाक़ को तुम्हारी ज़िन्दगी ही में लड़का होगा और तुम्हारी आँखें जैसे बेटे से ठंडी होंगी, पोते से भी ठंडी होंगी। क्योंकि नस्ल को बाक़ी रखने के लिए पोते की विलादत (जन्म) से ख़ुशी और भी ज़्यादा होती है। बूढ़े और बुढ़िया की औलाद में जब शक हो सकता है कि कमज़ोरी और बुढ़ापे की वजह से उनके बच्चा नहीं हो सकता तो बेटे और फिर पोते जिसका नाम याक़ूब होगा, उसकी ख़ुशी कैसे न होगी। याक़ूब के मायने ही हैं बाद में और पीछे आने वाले के, यानी इस्हाक़ के बाद उसके पीछे आने वाला। यह सिला है इब्राहीम का जिसने अपने वतन और क़ौम को छोड़ा, उनके शहरों से हिजरत करके इबादते इलाही की ख़ातिर दूर-दराज़ चल दिया। इसकी जज़ा यह कि उनकी सुल्बी औलाद नेक थीं ताकि उनसे उनकी आँखें ठंडी हों। जैसा कि फ़रमाया- जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम और उनके माबूदों को छोड़ा तो हमने उनको इस्हाक़ व याक़ूब (अ़लैहिमस्सलाम) अ़ता किए और दोनों को नबी बनाया, और यहाँ फ़रमायाः

وَوَهَبْنَا لَهٗ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ كُلًّا هَدَيْنَا.

कि हमने उनको एक बेटा इस्हाक़ और एक पोता याक़ूब दिया और हर एक को सही रास्ता दिखाया।
और फिर फ़रमायाः

وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ.

यानी उससे पहले हम नूह की सही राह की तरफ़ रहनुमाई कर चुके थे और हमने इब्राहीम को नेक नस्ल अ़ता फ़रमाई। और इस्हाक़ और याक़ूब इन दोनों को बहुत सी ख़ुसूसियतें हासिल हैं। लेकिन नूह कि जब अल्लाह तआ़ला ने सारे ज़मीन वालों को ग़र्क़ कर दिया सिवाये उनके जो नूह पर ईमान ला चुके थे और उनके साथ कश्ती में बैठ चुके थे, ये बाक़ी लोग नूह की औलाद व नस्ल थे और सारी दुनिया के लोग उनकी औलाद व नस्ल हैं। और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कि उनके बाद कोई नबी नहीं हुआ सिवाये उन अफ़राद के जो उनकी नस्ल में थे, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ.

कि हमने किताब व नुबुव्वत को उनकी नस्ल में रखा।
और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرَاهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ.

Maktab E Ashraf

और भेजा हमने नूह और इब्राहीम को और जारी किया उनकी नस्ल में नुबुव्वत व रिसालत को।

और यह भी फ़रमाया कि नबियों में से ये भी हैं जिन पर अल्लाह का इनाम हुआ आदम की औलाद में से, और जिन्हें हमने नूह के साथ कश्ती में ले लिया था, और इब्राहीम व इस्राईल की औलाद में से और जिन्हें हमने हिदायत की थी और पसन्द कर लिया था। उनके सामने जब अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं तो रोते और गिड़गिड़ाते हुए सज्दे में गिर जाते हैं।

इस आयते करीमा में 'व मिन ज़ुर्रिय्यतिही' (और उनकी नस्ल व औलाद) से मतलब यह है कि हमने उसकी नस्ल को भी हिदायत दी, यानी दाऊद अ़लैहिस्सलाम और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को भी, लेकिन अगर 'ज़ुर्रियत' से मुराद नूह अ़लैहिस्सलाम हों, क्योंकि नूह का लफ़्ज़ ही क़रीब है तो यह बात तो साफ़ है कोई इश्काल (शक व शुब्हा) नहीं। इब्ने जरीर ने भी इसी को इख़्तियार किया है। लेकिन अगर इससे मुराद इब्राहीम की नस्ल हो क्योंकि ऊपर के मज़मून से ऐसा ही मालूम होता है, तो यह भी ठीक है, लेकिन इश्काल यह है कि इब्राहीम की औलाद के सिलसिले में लूत का लफ़्ज़ भी आया और लूत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से नहीं हैं बल्कि उनके भाई हारून बिन आज़र के बेटे हैं। लेकिन हो सकता है कि अधिकता का एतिबार करते हुए उनकी नस्ल ही के अन्तर्गत ज़िक्र कर दिया गया हो। जैसा कि अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल में भी है:

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ.

यानी क्या तुम उस वक़्त वहाँ मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का वक़्त आया और उन्होंने अपने बेटों और पोतों वग़ैरह से कहा.....।

यहाँ याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के बाप-दादा के सिलसिले में इस्माईल का भी नाम आ गया है, हालाँकि इस्माईल तो उनके चचा थे। यह सिलसिला-ए-कलाम में ग़ल्बे व अधिकता की बिना पर हुआ।

इसी तरह की दूसरी आयत है:

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ. اِلَّآ اِبْلِيْسَ.

यानी तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने न किया।

जहाँ फ़रिश्तों को सज्दे का हुक्म दिया गया और मुख़ालफ़त की मज़म्मत (बुराई और निंदा) की गई वहाँ इब्लीस को ग़ल्बे की वजह से फ़रिश्तों में शामिल क़रार देकर फिर उनसे अलग किया गया। क्योंकि वह फ़रिश्तों के साथ मुशाबहत रखता (यानी बहुत सारी बातों में उन जैसा) था, वरना हक़ीक़त में फ़रिश्ता नहीं था, जिन्नात में से था। उसकी तबीयत आग थी और फ़रिश्तों की तबीयत नूर थी। और इसलिए कि ईसा अ़लैहिस्सलाम को ज़ुर्रियते इब्राहीम या नूह (नूह या इब्राहीम की नस्ल) के सिलसिले में लाया गया है, गोया उन्हें भी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल में कहा गया। इस दलील की बिना पर कि बेटी की औलाद भी आदमी की नस्ल ही में समझी जाती है।

अब अगर ईसा को इब्राहीम से कोई ताल्लुक़ है तो सिर्फ़ इस बिना पर कि उनकी माँ मरियम अ़लैहस्सलाम इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से थीं, वरना हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के तो बाप थे ही नहीं। कहते हैं कि हज्जाज ने यहया बिन यामर से कहा- मैंने सुना है तुम कहते हो कि हसन और हुसैन ज़ुर्रियते नबी (यानी नबी पाक की नस्ल) में से हैं? हालाँकि वह अ़ली रज़ि. और अबू तालिब की ज़ुर्रियत से

Maktab E Ashraf

हैं और फिर यह दावा करते हो कि इसका सुबूत क़ुरआन से है? मैंने क़ुरआन को शुरू से आख़िर तक पढ़ा, कहीं इसको न पाया, तो इब्ने यामर ने कहा कि क्या तुमने सूरः अन्आम में नहीं पढ़ा किः

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمَانَ.

कि उसकी नस्ल से हैं दाऊद व सुलैमान..... यहाँ तक कि वह यहया और ईसा अ़लैहिमस्सलाम तक पढ़ते चले गये। कहा कि हाँ पढ़ा है। कहा कि ईसा अ़लैहिस्सलाम को इब्राहीम की नस्ल में बताया गया है हालाँकि वह बाप नहीं रखते थे। सिर्फ़ बेटी के ताल्लुक़ से ज़ुर्रियत (नस्ल) में क़रार दिया गया। तो फिर बेटी के ताल्लुक़ से हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) नबी पाक की नस्ल में क्यों न हों? हज्जाज ने कहा तुम ठीक कहते हो।

इसलिए जब कोई आदमी अपनी ज़ुर्रियत (नस्ल और ख़ानदान) के नाम पर वसीयत करता है या वक़्फ़ या हिबा करता है तो उस ज़ुर्रियत में उसकी लड़कियाँ भी दाख़िल समझी जाती हैं। लेकिन जब वह अपने बेटों के नाम से देता है, या वक़्फ़ करता है तो ख़ास उसके असली बेटे ही मुस्तहिक़ होते हैं या पोते। और कुछ दूसरे लोगों ने तो कहा है कि इसमें बेटी की औलाद भी दाख़िल है, क्योंकि सही बुख़ारी की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुसैन बिन अ़ली के बारे में फ़रमाया- मेरा यह बेटा सैयद है और अल्लाह इसके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े फ़िर्क़ों में सुलह करा देगा और जंग का फ़ितना दब जाएगा। चुनाँचे हसन को इब्न (बेटे) के लफ़्ज़ से ताबीर किया जो इशारा करता है कि वह औलाद में दाख़िल समझे जा सकते हैं। और अल्लाह का जो क़ौल है "व मिन् आबाइहिम व ज़ुर्रिय्यतिहिम व इख़्वानिहिम" यहाँ उनकी नस्ल और नसब दोनों का ज़िक्र है और हिदायत और अल्लाह के यहाँ मक़बूलियत उन सब पर शामिल है। इसी लिए फ़रमायाः

وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

यानी हमने उनको चुन लिया और सीधे रास्ते की हिदायत की। फिर फ़रमायाः

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ.

यानी यह बात उनको अल्लाह की तौफ़ीक़ और उसकी हिदायत के सबब हासिल हुई है।

وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.

यानी अगर वे शिर्क करेंगे तो उनके सारे नेक आमाल सल्ब कर लिए (यानी उनसे छीन लिये और अलग कर दिये) जाएँगे। यहाँ यह बताना मक़सूद है कि शिर्क किस क़द्र सख़्त है और उसकी बुराई कितनी ज़बरदस्त है। जैसा कि फ़रमायाः

وَلَقَدْ اُوْحِىَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ .... الخ

इस जुमले में चूँकि शर्त के साथ एक बात का ज़िक्र किया गया है कि "अगर आप शिर्क करेंगे तो आपके तमाम आमाल अकारत कर दिये जायेंगे" और शर्त के लिए यह ज़रूरी नहीं कि वह वाक़े ही हो। जैसे कि फ़रमायाः

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا..... الخ

Maktab E Ashraf

यानी अगर ख़ुदा की औलाद हो तो मैं सबसे पहले मानने वाला बन जाऊँ। और फ़रमायाः

وَلَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا.... الخ

यानी अगर खेल-तमाशा बनाना ही चाहते हो तो अपने पास से ही बना लेते। और फ़रमायाः

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا... الخ

यानी अगर अल्लाह तआ़ला औलाद ही का इरादा करता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता। लेकिन वह इससे पाक है, अकेला और ग़ालिब है।

(मतलब यह है कि जो चीज़ शर्त के साथ बयान की जाये, कि अगर ऐसा हो जाये तो ऐसा होगा, ज़रूरी नहीं कि उस चीज़ का वजूद भी हो,*जैसे नबी से शिर्क का ज़हूर या अल्लाह की औलाद का वजूद। इसी को बयान किया है कि अगर किसी ऐसी चीज़ की निस्बत किसी नबी की तरफ़ शर्त के साथ की जाये कि अगर आप ऐसा करेंगे तो ऐसा हो जायेगा, इसका मतलब यह नहीं कि वह काम उस नबी ने किया या वह ऐसा करने जा रहा था तब उसको यह तंबीह की गयी, नहीं! बल्कि यह एक कलाम का अन्दाज़ है और दूसरे लोगों को होशियार करना है कि यह फ़ेल ऐसा है कि अगर कोई अल्लाह का नबी भी इसको करेगा तो उसको भी छूट नहीं दी जायेगी। जिससे ख़िताब किया जा रहा है उसकी तरफ़ से ज़र्रा बराबर भी दिल में मैल लाना जायज़ नहीं।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

इस आयत में (जिसका बयान चल रहा है) इरशाद है कि इन्हीं लोगों को हमने किताब और हिक्मत और नुबुव्वत दी और अपने बन्दों को उनके सबब नेमत व करम से नवाज़ा। पस अगर वे नुबुव्वत का इनकार करें तो उन मक्का वालों और क़ुरैश पर हम ऐसे लोगों को मुसल्लत कर देंगे जो इनकार नहीं करेंगे और हमारे शुक्रगुज़ार बन्दे होंगे। अब चाहे वे क़ुरैश के अ़लावा और अ़रब से बाहर के लोग हों या अहले किताब (यहूदी व ईसाई) हों। उन पर हम मुहाजिरीन व अन्सार को मुसल्लत कर देंगे। वे हमारी किसी बात का इनकार नहीं करते और न कोई बात रद्द करते हैं। बल्कि क़ुरआन की सब बातों पर चाहे वे आयतें मोहकम हों या मुतशाबह हों, ईमान रखते हैं। फिर अपने रसूल से मुख़ातिब होकर फ़रमाते हैं कि वे उक्त अम्बिया और उनके बाप-दादा, भाई और नस्ल व ख़ानदान ऐसे लोग हैं जिनको अल्लाह पाक ने हिदायत फ़रमाई है। तो अब तुम उन्हीं की इक़्तिदा (पैरवी) और इत्तिबा करो। जब रसूल के लिए यह हुक्म है तो उनकी उम्मत तो बहरहाल उनके ताबे है (यानी वे भी इस हुक्म में आ गये)।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से सवाल किया गया कि क्या सूरः (सॉद) में सज्दा है? तो फ़रमाया हाँ। फिर यह आयत तिलावत फ़रमाईः

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ....فَبِهُدٰهُمُ اقْتَدِهْ.

फिर कहा कि वह इन्हीं के गिरोह (जमाअ़त) में से है। और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا.

यानी मैं तुमसे अपना कोई तब्लीग़ का हक़ नहीं माँगता, मुझे कुछ नहीं चाहिएः

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ.

यह तो दुनिया जहान वालों के लिए नसीहत है, ताकि गुमराही से बचें और हिदायत हासिल कर लें।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝

और उन लोगों ने अल्लाह तआला की जैसी क़द्र पहचानना वाजिब थी वैसी क़द्र न पहचानी, जबकि यूँ कह दिया कि अल्लाह ने किसी इनसान पर कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की। आप कहिए कि वह किताब किसने नाज़िल की है जिसको मूसा लाए थे? (जिसकी यह कैफ़ियत है) कि वह नूर है और लोगों के लिए हिदायत है, जिसको तुमने अलग-अलग पन्नों में रख छोड़ा है, जिनको ज़ाहिर कर देते हो और बहुत-सी बातों को छुपाते हो। और तुमको बहुत-सी ऐसी बातें तालीम की गईं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बड़े। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया है फिर उन को उनके मश्ग़ले में बेहूदगी के साथ लगा रहने दीजिए। (92) और यह भी ऐसी ही किताब है जिसको हमने नाज़िल किया है, जो बड़ी बरकत वाली है, अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है, और ताकि आप मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डराएँ, और जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं ऐसे लोग इस पर ईमान ले आते हैं और वे अपनी नमाज़ की पूरी पाबन्दी करते हैं। (93)

अल्लाह के रसूल और उसकी किताबों का इनकार करने वालों से ख़िताब

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जब उन्होंने रसूल की तकज़ीब की (यानी झुठलाया) तो ख़ुदा की बड़ाई का हक़ अदा नहीं किया। अ़ब्दुल्लाह इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई है और यह भी कहा गया है कि यहूद के बारे में है या यह कि उन्हीं के एक शख़्स फ़ख़्ख़ास के बारे में है, या मालिक बिन सैफ़ के बारे में। इन ना-समझों का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने किसी इनसान पर किताब नहीं उतारी। इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में पहली बात ज़्यादा सही है इसलिए कि यह आयत मक्की है और यहूद तो इस बात के क़ायल न थे कि इनसान पर कोई किताब नहीं उतरी, क्योंकि वे तौरात के उतरने के क़ायल हैं, और नबी पाक के वतन वाले क़ुरैश और अ़रब के लोग मुहम्मद सल्ल. के इनकारी और झुठलाने वाले थे, इस हुज्जत में कि आप बशर (इनसान) हैं और बशर पर किताब नहीं उतरती, जैसा कि फ़रमायाः

Maktab E Ashraf

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ.

यानी लोगों को ताज्जुब क्यों है अगर हम उन्हीं में से किसी पर 'वही' (अपना पैग़ाम) भेजें कि लोगों को कुफ़्र से डराओ। और इरशाद है:

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى... الخ

यानी जब उनके पास हिदायत (सही राह की जानकारी) पहुँची तो ईमान लाने से जो चीज़ माने (रुकावट) थी, वह उनका यह क़ौल था कि क्या ख़ुदा ने किसी बशर को रसूल बनाकर भेजा है? तो ऐ नबी! कह दो कि फ़रिश्ते अगर ज़मीन पर चलते-फिरते तो हम भी आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजते।

अब यहाँ अल्लाह पाक फ़रमाता है कि उन्होंने अल्लाह की क़द्र जैसा कि चाहिए थी नहीं पहचानी। यानी कह दिया कि अल्लाह तआ़ला ने किसी बशर (इनसान) पर कुछ नाज़िल नहीं किया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि कह दो कि किसने किताब उतारी थी मूसा पर जो लोगों पर नूर और हिदायत साबित हुई। मूसा की पेश की हुई किताब तौरात किसकी नाज़िल की हुई थी? सब जानते हैं कि मूसा बिन इमरान की किताब ख़ुदा की नाज़िल की हुई थी, जिससे लोग अपनी मुश्किलों को हल करते और रहनुमाई पाते थे और जब किसी बात में शक व शुब्हे में पड़ जाते उसके ज़रिये सीधी राह को ढूँढ लेते थे। फिर फ़रमाया कि तुम तौरात को पन्ने-पन्ने बनाकर लिखते हो लेकिन उसमें लिखते हुए तहरीफ़ व तब्दील (यानी मज़मून में कमी-ज़्यादती या रद्दोबदल) भी अपनी तरफ़ से करते जाते हो, और कहते यह हो कि यह भी ख़ुदा की आयत है, इसी लिए फ़रमाया कि कुछ तो हक़ीक़ी (वास्तविक) आयतों को ज़ाहिर कर देते हो और अक्सर को छुपा देते हो। और अल्लाह तआ़ला का क़ौल कि तुमने वह कुछ जान लिया जिसको न तुम जानते थे न तुम्हारे बड़े और पुर्खे, यानी उसने उतारा इस क़ुरआन को जिसने तुम्हारी सारी पिछली ख़बरें बता दीं और होने वाली बातों की पेशगोई (भविष्यवाणी) कर दी। जिसको न तुम जानते थे, न तुम्हारे बाप-दादा।

क़तादा रह. कहते हैं कि इससे मुराद अ़रब के मुश्रिक लोग हैं। और मुजाहिद कहते हैं कि मुसलमान मुराद हैं। अब अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि इस सवाल के जवाब में तुम आप ही जवाब दे दो कि ख़ुदा ही ने नाज़िल फ़रमाया है। और वह जिसको इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा है वह इस कलिमे की तफ़सीर में मुतैयन है। ऐसा नहीं जैसा कि बाज़ बाद के उलेमा ने कहा कि 'क़ुलिल्लाह' के मायने यह हैं कि तुम्हारा यह ख़िताब उनके लिए नहीं है सिवाये इसके कि यह कलिमा सिर्फ़ एक कलिमा यानी लफ़्ज़े अल्लाह है और इससे यह लाज़िम आएगा कि एक अकेला कलिमा भी जुमला (वाक्य) हो सकता है, जो ग़ैर-मुरक्कब हो। लेकिन अकेले कलिमे का वाक्य की सूरत में लाना लुग़ते अ़रब में ग़ैर-मुफ़ीद समझा गया है और उस पर बोलने वाला ख़ामोश नहीं हो सकता। और अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि उन्हें गुमराही और जहल (अज्ञानता) में भटकने दो यहाँ तक कि मौत के सबब उनकी आँखें खुल जाएँ और आख़िरकार वे ख़ुदा को जान लें।

और अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि यह क़ुरआन मुबारक है और तौरात व इन्जील की तस्दीक़ करने (उनको सच्ची और अल्लाह की तरफ़ से आई किताब बताने) वाला है, और ताकि तुम इसके ज़रिये मक्का और उसके आस-पास रहने वाले अ़रब के क़बीलों को और अ़रब व ग़ैर-अ़रब के इनसानों को कुफ़्र व शिर्क

Makeeb E Ashraf

के बुरे नतीजे से डराओ। जैसा कि एक दूसरी आयत में फ़रमायाः

قُلْ يٰٓاَيُّهَاالنَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ جَمِيْعًا.

यानी कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सारे इनसानों की तरफ़ ख़ुदा का रसूल बनकर आया हूँ ताकि तंबीह कर सकूँ और उन्हें भी जिन तक मेरा पैग़ाम पहुँचे (यानी मेरे बाद यह दावत उन तक पहुँचे)। और फ़रमाया कि जो लोग कुफ़्र करेंगे उनके लिए दोज़ख़ का वादा है। और फ़रमायाः

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا.

मुबारक है वह ज़ात जिसने क़ुरआन को नाज़िल फ़रमाया अपने रसूल पर ताकि सारी दुनिया जहान के लिए वह डराने वाला बने। और फ़रमायाः

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ. وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ.

यानी अहले किताब (जिन पर आसमानी किताब उतरी अर्थात् यहूदी व ईसाई) और अनपढ़ सब ही लोगों से कह दो कि अब भी तुम ईमान लाओगे या नहीं? अगर वे इस्लाम लाएँगे तो हिदायत पा लेंगे और अगर मुँह मोड़ेंगे और बात नहीं मानेंगे तो करने दो तुम्हारा काम बात को सिर्फ़ उन तक पहुँचा देना था। अपने बन्दों से ख़ुदा ख़ूब वाक़िफ़ है।

और बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे पाँच चीज़ें बख़्शी गई हैं जो मुझसे पहले अम्बिया में से किसी को नहीं दी गईं। उन्हीं में से एक यह है कि हर नबी ख़ास अपनी ही क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था और मैं सारी दुनिया जहान के लोगों की तरफ़ भेजा गया हूँ। और इसी लिए फ़रमायाः

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ.

यानी हर वह शख़्स जो अल्लाह पर ईमान लाए और आख़िरत के दिन पर, वह इस मुबारक किताब पर भी ईमान लाएगा जो हमने तुम पर उतारी है। और वे मोमिन लोग ऐसे हैं कि पाबन्दी से अपनी नमाज़ अदा करते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने-अपने वक़्तों में अदा करने के लिए उन पर फ़र्ज़ कर दी हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْقَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَیْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَوْ تَرٰٓی اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ	और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ तोहमत लगाए, या यूँ कहे कि मुझ पर 'वही' आती है, हालाँकि उसके पास किसी भी बात की 'वही' नहीं आई। और जो शख़्स (यूँ) कहे कि जैसा कलाम अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल किया है इसी तरह का मैं भी लाता हूँ। और अगर आप उस वक़्त देखें जबकि ये ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा

Maktab E Ashraf

أَخْرِجُوٓا أَنفُسَكُمْ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ ءَايَٰتِهِۦ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَٰدَىٰ كَمَا خَلَقْنَٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَٰٓؤُا ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ ع 17

रहे होंगेः हाँ अपनी जानें निकालो, आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस सबब से कि तुम अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे झूठी बातें बकते थे, और तुम उसकी (यानी अल्लाह पाक की) आयतों से घमंड करते थे। (94) और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए, जिस तरह हमने तुमको पहली बार में पैदा किया था और जो कुछ हमने तुमको दिया था उसको अपने पीछे ही छोड़ आए, और हम तो तुम्हारे साथ तुम्हारे उन शफ़ाअ़त करने वालों को नहीं देखते जिनके बारे में तुम दावे रखते थे कि वे तुम्हारे मामले में शरीक हैं। वाक़ई तुम्हारा आपस में तो ताल्लुक़ ख़त्म हो गया, और वह तुम्हारा दावा सब तुमसे गया-गुज़रा हुआ। (95)

ख़ुदा पर बोहतान सबसे बड़ा ज़ुल्म है

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि अल्लाह पर झूठ बाँधने वाले से बढ़कर और कौन ज़ालिम होगा कि वह उसके लिए शरीक और साझी क़रार देता है, या उसके औलाद क़रार देता है, या यह दावा करता है कि अल्लाह तआ़ला ने उसको रसूल बनाकर भेजा है, हालाँकि अल्लाह ने नहीं भेजा। और इसी लिए फ़रमाया कि "वह कहता है कि मुझ पर भी 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम) भेजी गई है हालाँकि नहीं भेजी गई।"

हज़रत इक्रिमा और क़तादा रह. कहते हैं कि यह आयत मुसैलमा कज़्ज़ाब (इस्लाम के शुरूआ़ती दौर ही में नुबुव्वत का झूठा दावा करने वाले एक शख़्स) के बारे में उतरी है। और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो कहता है कि मैं भी ऐसा क़ुरआन नाज़िल कर सकता हूँ जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल किया है। यानी अल्लाह तआ़ला की 'वही' के साथ मुक़ाबला करता है। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया कि "जब उनको हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, लेकिन अगर हम चाहें तो ऐसा ही हम भी कह सकते हैं" इस आयत में इरशाद है कि काश तुम उन ज़ालिमों को मौत की सख़्तियों और जान निकलने की तकलीफ़ के आ़लम में देखते। जबकि फ़रिश्ते मारने के लिए हाथ उठा रहे हों। जैसा कि फ़रमायाः

لَئِنْۢ بَسَطتَّ إِلَيَّ يَدَكَ.

यानी मुझे क़त्ल करने के लिये अगर तू अपना हाथ उठाये भी (यह हाबील व क़ाबील के क़िस्से में है) और फ़रमायाः

يَبْسُطُوٓا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوٓءِ.

Maktaba E Ashraf

वे अपने हाथ अपनी ज़ुबानें तुम्हारी तरफ़ करके दराज़ (लम्बा) करते हैं ताकि तुम्हें तकलीफ़ पहुँचायें और बुरा भला कहें।

ज़ह्हाक व अबू सालेह कहते हैं कि अ़ज़ाब के लिए हाथ उठाना मुराद है। जैसा कि फ़रमाया "काश तुम देखते कि मरने वाले काफ़िरों को फ़रिश्ते उनके चेहरों और पीठों पर मौत के वक़्त मार रहे हैं। और इसी लिए फ़रमायाः

وَالْمَلَآئِكَةُ بَاسِطُوٓا اَيْدِيْهِمْ.

ताकि उनके जिस्मों से उनकी रूहें निकालें। वे फ़रिश्ते उन काफ़िरों से कहेंगे कि अपनी रूहों को बाहर निकालो। काफ़िरों का जब मौत का वक़्त क़रीब आएगा तो फ़रिश्ते उनको ख़बर कर देंगे, दुनिया से निकलने और अ़ज़ाब की। बेड़ियों, दोज़ख़ और हमीम (खोलते पानी) की। और रहमान के ग़ुस्से की, तो उनकी रूह जिस्म में हैरान व परेशान हो जाएगी, निकलने से इनकार करेगी तो फ़रिश्ते उनको मारने लगेंगे यहाँ तक कि रूहें निकल जाएँगी। फ़रिश्ते कहेंगे कि अपनी रूहें निकाल फैंको, आज तुम्हें बड़ा ज़लील अ़ज़ाब दिया जाएगा, इस जुर्म में कि तुम ख़ुदा पर बोहतान बाँधा करते थे। मोमिन और काफ़िर के मौत के वक़्त से मुताल्लिक़ बहुत सी हदीसें बयान हुई हैं। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी में क़ौले साबित (ईमान यानी कलिमा-ए-तय्यिबा) के ज़रिये साबित व क़ायम रखा है।

इब्ने मरदूया ने यहाँ एक बहुत लम्बी हदीस ग़रीब सनद से ज़िक्र की है, जो इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरवी बताई गई है। इरशादे बारी है- तुम हमारे पास इस तरह लाये जाओगे जैसे हमने कभी तुम्हें अकेले-अकेले पैदा किया था। और यह बात उनसे आख़िरत में फ़रमाई जाएगी जैसा कि फ़रमाया कि वे अपने रब के सामने क़तार बाँधकर पेश किये जाएँगे और उसी हालत में आओगे जैसा कि पहले पैदाईश के वक़्त थे, यानी जैसे पैदा किया था वैसे ही उठाये जाएँगे। और तुम इस बात का इनकार करते थे और इस क़ियामत के दिन को नामुम्किन और बहुत दूर की बात समझते थे। और फ़रमाया कि दुनिया में तुमने जो माल व मता जमा कर रखा था उसको अपने पीछे छोड़ आओगे। सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इनसान कहता है कि मेरा माल मेरा माल है। लेकिन तेरा माल तो सिर्फ़ उतना ही था जितना कि तूने खाया और फ़ना कर दिया, पहना और पुराना कर दिया, या दूसरों को दिया और गोया बाक़ी रख लिया। इसके अ़लावा तेरी सारी दौलत दूसरों के लिए है। अल्लाह पाक इनसान से पूछेगा कहाँ जमा कर रखा है? तो कहेगा ऐ रब! जमा किया और बढ़ाकर वहीं छोड़कर आया। फिर फ़रमायेगा कि इस दिन के लिए क्या आगे भेजा? वह कहेगा कि कुछ भी नहीं भेजा। फिर फ़रमाएगा कि तेरे वे सिफ़ारिशी कहाँ हैं जिनको तू समझता था कि वे मेरे साथ शरीक हैं, अब वे क्यों शफ़ाअ़त नहीं करते? यह उसको मलामत की जा रही और फटकार लगायी जा रही है, क्योंकि वह दुनिया में बुतों व देवताओं को पूजता था और यह समझता था कि वे उसकी दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी में फ़ायदा बख़्शेंगे। क़ियामत के दिन सारे ताल्लुक़ टूट जाएँगे, गुमराही ख़त्म हो जाएगी, बुतों का राज जाता रहेगा और अल्लाह तआ़ला इनसानों से ख़िताब करेगा कि तुम्हारे वे बुत अब कहाँ हैं जिन्हें तुम मेरे शरीक और साझी क़रार देते थे और उनसे कहा जाएगा कि अब तुम्हारे वे झूठे माबूद कहाँ हैं? क्या वे तुम्हारी इस वक़्त कोई मदद कर सकते हैं? या तुम उनकी मदद हासिल कर सकते हो? और इसी लिये फ़रमाया कि तुम्हारे साथ अब वे शरीक नहीं दिखाई दे रहे हैं? जिन्हें तुम मेरे पास सिफ़ारिशी समझते थे। और उन्हें भी हक़दार समझते थे, कि उनकी इबादत की जाये। फिर फ़रमाया कि तुम्हारे आपस के ताल्लुक़ात अब सब कट गये और ख़त्म हो चुके हैं। मतलब यह

Maktab E Ashraf

कि आपसी ताल्लुक़ात व नसब कोई काम न देंगे और बुतों व झूठे माबूदों से से तुमने जो उम्मीदें क़ायम कर रखी थीं वे सब जाती रहेंगी। जैसा कि फ़रमाया-

उस वक़्त ये झूठे माबूद अपने पैरोकारों से बेज़ारी (नफ़रत व बेताल्लुक़ी) ज़ाहिर करेंगे, अ़ज़ाब को अपनी आँखों से देख लेंगे (और उनके आपसी ख़ानदानी ताल्लुक़ात टूट जाएँगे) और उनके पैरोकार और मानने वाले कहेंगे कि काश हम फिर दुनिया में भेजे जाएँ ताकि जिस तरह इन माबूदों ने हमसे बेज़ारी (नफ़रत और कोई ताल्लुक़ न होना) ज़ाहिर की है हम भी इनसे बेज़ार रहें। देखो अल्लाह पाक किस तरह उनके आमाल उन पर हसरत (अफ़सोस और पछतावा) बनाकर पेश करता है। अब ये आग से निकल नहीं सकते।

और फ़रमाया जब सूर फूँक दिया जायेगा तो आपस में यारी-रिश्तेदारी कुछ बाक़ी न रहेगी, न कोई बाप न कोई बेटा और न कोई एक दूसरे की ख़बर ही लेगा। और फ़रमाया तुम जो दुनिया में उनकी परस्तिश (पूजा और इबादत) करते थे तो सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी में मुहब्बत और लगाव की ख़ातिर, फिर क़ियामत के दिन एक दूसरे का इनकार कर बैठेगा और आपस में लानत-मलामत करने लगेंगे। तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और कोई तुम्हारी मदद को न उठेगा। और फ़रमाया अपने शरीकों को (यानी जिन्हें तुम खुदा की खुदाई में शरीक समझते थे) बुलाओ, उन्हें पुकारेंगे लेकिन उनकी तरफ़ से कोई जवाब न पायेंगे। और फ़रमाया कि जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे तो मुश्रिकों से हम कहेंगे........ । इससे मुताल्लिक़ क़ुरआन में बहुत सी आयतें मौजूद हैं।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ○ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ○ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ○

बेशक अल्लाह तआ़ला फाड़ने वाला है दाने और गुठलियों को, वह जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़) से निकाल लाता है (जैसे नुत्फ़े से आदमी पैदा करता है) और वह बेजान (चीज़) को जानदार (चीज़) से निकालने वाला है (जैसे आदमी के बदन से नुत्फ़े को पैदा करता है), अल्लाह ही है (जिस की ऐसी क़ुदरत है)। सो तुम कहाँ उल्टे जा रहे हो? (96) वह सुबह का निकालने वाला है, और उसने रात को राहत की चीज़ बनाई है, और सूरज और चाँद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है। यह ठहराई हुई बात है ऐसी ज़ात की जो कि क़ादिर है, बड़े इल्म वाला है। (97) और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिये से ख़ुश्की और दरिया के अंधेरों में रास्ता मालूम कर सको, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं। (98)

ख़ुदा पूरी तरह हर चीज़ पर क़ादिर है

अल्लाह पाक ख़बर देता है कि ज़मीन में बोये हुए दाने को वह ऊपर लाकर चीर देता है और उसमें से विभिन्न क़िस्म की सब्ज़ियाँ और उगने वाली चीज़ें पैदा हो जाती हैं। जिनके रंग अलग, शक्लें अलग और ज़ायके अलग। और इसी "दाने और गुठलियों को फाड़ने वाले" की तफ़सीर में फ़रमाया कि वह एक बेजान चीज़ के अन्दर से एक जानदार चीज़ यानी नबातात (सब्ज़ियाँ) पैदा करता है, और जानदार के अन्दर से बेजान चीज़ निकालता है। जैसे बीज और दाने जो कि बेजान चीज़ें हैं, जो जानदार पौधे के अन्दर पैदा होते हैं, जैसा कि फ़रमाया समझने के लिए यह भी एक नुक्ता है कि ज़मीन तो होती है ख़ुश्क और मुर्दा लेकिन पानी बरसाकर हम उसे फिर ज़िन्दा कर देते हैं और उससे अनाज और ग़ल्ला पैदा करते हैं जिसे तुम खाते हो।

कोई कहता है कि बेजान अंडे से जानदार मुर्ग़ी का पैदा करना मुराद है, या इसके उलट यानी मुर्ग़ी से अंडा। कोई कहता है कि फ़ाजिर (गुनाहगार और बदकार आदमी) से नेक औलाद और नेक आदमी से बदकार और गुनाहगार औलाद मुराद है। क्योंकि नेक आदमी ज़िन्दा की तरह है और बद मुर्दे की तरह है। इसके सिवा और बहुत से उमूर (बातें और चीज़ें) मुराद हो सकते हैं। फ़रमाया है कि इन सबका फ़ाअ़िल (करने वाला) अल्लाह तआ़ला है तो फिर तुम किधर भटके जा रहे हो। हक़ से मुँह मोड़ते हो, ग़ैर-ख़ुदा की इबादत और पूजा करते हो। वह रोशनी और अंधेरे को पैदा करने वाला है। जैसा कि इस सूरः के शुरू में फ़रमाया कि उसी ने अंधेरे और रोशनी को बनाया, यानी दिन की रोशनी में अन्दर से रात का अंधेरा निकाला। फिर रात के अन्दर से दिन निकाला। जिसने सारे जहान को रोशन कर दिया, रात ख़त्म हो गई, अंधेरा जाता रहा, दिन चमक उठा। जैसा कि फ़रमाया- रात दिन को ढाँक देती है।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला एक दूसरे की मुख़ालिफ़ (परस्पर विरोधी) चीज़ों के पैदा करने पर अपनी क़ुदरते कामिला बयान फ़रमाता है, इसी लिए फ़रमाया कि रात के अन्दर से दिन को चीरकर निकालने वाला है और इसी तरह इसके उलट। और रात को तारीक (अंधेरे वाली) और सुकून का वक़्त बनाया, ताकि सारी चीज़ें उसमें सुकून, चैन और राहत ले सकें। जैसा कि फ़रमाया- क़सम है दिन की रोशनी की और क़सम है रात की जो बहुत तारीक (अंधेरी) हो जाती है। और क़सम है रात की जो गहरे अंधेरे वाली बन जाती है, और दिन की क़सम है जो ख़ूब रोशन हो जाता है। और फ़रमाया क़सम है दिन की जब उसकी रोशनी ख़ूब फूट पड़ती है और रात की जो सारी दुनिया को घेर लेती है।

सुहैब रूमी की बीवी उनके रातों को बहुत ज़्यादा जागने की शिकायत करते हुए कहती हैं कि अल्लाह तआ़ला ने सबके लिए रात को सुकून का वक़्त बनाया लेकिन सुहैब के लिए नहीं। क्योंकि सुहैब को जब जन्नत याद आती है तो उसके शौक़ में रात-रातभर नहीं सोते और इबादत करते रहते हैं। और जब दोज़ख़ याद आती है तो फिर उनकी नींद ही उड़ जाती है। इब्ने अबी हातिम ने इसको रिवायत किया है। और फ़रमाया कि सूरज और चाँद अपने-अपने नियम और हिसाब से चलते रहते हैं, उनके क़ानूने रफ़्तार में ज़र्रा भर तब्दीली नहीं होती, न इधर उधर भटकते हैं, बल्कि हर एक की मन्ज़िल मुक़र्रर है। सर्दियों और गर्मियों में अपने-अपने उसूल और नियम के मुताबिक़ चलते रहते हैं और उसी क़ानून और नियम से दिन और रात घटते और बढ़ते रहते हैं। जैसा कि फ़रमाया- उसी ख़ुदा ने सूरज को बहुत ज़्यादा रोशन बनाया और चाँद को ठंडी रोशनी दी और उसके घटने बढ़ने की मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं। और फ़रमाया कि न सूरज चाँद से

Maktaba E Ashraf

टकराता है और न उससे आगे बढ़ जाता है, कि रात को भी ज़ाहिर होने लगे। और न रात दिन को आ पकड़ती है, हर सय्यारा (गर्दिश करने वाला) अपने अपने मदार (दायरे) और अपनी हद-बन्दियों (तयशुदा सीमाओं) के अन्दर गर्दिश में है।

और फ़रमाया कि सूरज व चाँद और सब सितारे अल्लाह के हुक्म ही के ताबे और हुक्म के पाबन्द हैं। और फ़रमाया कि यह खुदा तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ क़ानून है कि कोई उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं कर सकता, कोई चीज़ उसके इल्म से हट नहीं सकती, चाहे ज़मीन व आसमान का कोई ज़र्रा ही क्यों न हो। जहाँ कहीं अल्लाह तआ़ला ने दिन रात और चाँद सूरज के पैदा करने का ज़िक्र फ़रमाया है तो कलाम को अ़ज़ीज़ (ग़ालिब) व अ़लीम (सब कुछ जानने वाले) ही के अलफ़ाज़ पर ख़त्म फ़रमाया है, जैसा कि यहाँ भी है। और जैसा कि फ़रमाया- उनके समझने के लिए यह भी एक नुक्ता है कि रात जिसके अन्दर से हम दिन निकालते हैं वह उनके लिए कैसी तारीक (अंधेरी) रहती है और सूरज भी अपने ही तयशुदा ठिकाने और दायरे पर हरकत कर रहा है और अपने ठिकाने की तरफ़ जा रहा है। यह खुदा-ए-अ़ज़ीज़ व अ़लीम का मुक़र्रर किया हुआ मेयार है। जब अल्लाह पाक ने सूरः हा-मीम सज्दा के शुरू में आसमानों और ज़मीन के पैदा करने का ज़िक्र फ़रमाया तो इरशाद होता है कि हमने इस आसमान को चिराग़ों से सजा रखा है और यही चिराग़ दुनिया की हिफ़ाज़त का काम देते हैं। यह अ़ज़ीज़ व अ़लीम (यानी ताक़तवर, ग़ालिब और सब कुछ जानने वाले अल्लाह) की तक़दीर और अन्दाज़ा है। और फ़रमाया कि उसने तुम्हारे लिए सितारे बना रखे हैं ताकि जब तुम ख़ुशकी व समुद्र की तारीकियों (अंधेरियों) में हो तो उनसे रोशनी हासिल करो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ये सितारे एक तो आसमान की ज़ीनत (सजावट) हैं और दूसरे यह कि शयातीन को इन्हीं के ज़रिये भगाया जाता है, और तीसरे यह कि इनसे ख़ुशकी व समुद्र वग़ैरह के अंधेरों में रास्ते का अन्दाज़ा लगाया जाता और उसको पहचाना जाता है।

बाज़ पुराने उलेमा ने कहा है कि सितारों का मक़सद सिर्फ़ यही तीन चीज़ें हैं, इससे ज़्यादा और कोई मक़सद अगर उनका कोई समझे तो उसने ख़ता (ग़लती) की, खुदा की आयात (निशानियों) पर इज़ाफ़ा किया। फिर फ़रमाया कि हमने अपनी आयतें बहुत तफ़सील और वज़ाहत से बयान की हैं, ताकि लोग कुछ अ़क़्ल पकड़ें (यानी समझ से काम लें) और हक़ को पहचान कर बातिल (ग़लत रास्ते) से बचें।

और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम (सब) को (मूल रूप से) एक शख़्स से पैदा किया, फिर एक जगह ज़्यादा रहने की है और एक जगह थोड़ा रहने की है, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं। (99) और वह ऐसा है जिसने आसमानों से पानी बरसाया, फिर हमने उसके ज़रिये से हर क़िस्म के पेड़-पोधों को निकाला, फिर हमने उससे हरी डाली निकाली कि उससे हम ऊपर-तले चढ़े हुए	وَهُوَ الَّذِیْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا

قِنْـوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَـابٍ وَّالـزَّيْتُـوْنَ وَالـرُّمَّـانَ مُشْتَبِهًـا وَّغَيْـرَ مُتَشَـابِهٍ ط اُنْظُـرُوْٓا اِلٰـى ثَـمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَـنْـعِهٖ ط اِنَّ فِـىْ ذٰلِكُـمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ○	दाने निकालते हैं, और खजूर के दरख़्तों से यानी उनके गुफ्फे में से गुच्छे निकलते हैं, जो (बोझ के मारे) नीचे को लटक जाते हैं, और उसी पानी से हमने अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार के दरख़्त पैदा किए जो कि एक-दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं और एक-दूसरे से मिलते-जुलते नहीं होते। ज़रा हर एक के फल को तो देखो जब वह फलता है, और (फिर) उसके पकने को देखो, उनमें (भी तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो ईमान (लाने की फ़िक्र) रखते हैं। (100)

तरह-तरह की मख़्लूक़ात

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि उसी ने तुमको रूह यानी आदम से पैदा किया। जैसा कि फ़रमाया ऐ लोगो! उस ख़ुदा से डरो जिसने आदम को बनाया और उससे उसकी बीवी को, और फिर उन दोनों से बेइन्तिहा मर्द व औरतें पैदा कीं। और फ़रमाया कि फिर तुम क़रार पकड़ते हो। लेकिन तुम्हें यहाँ भी हमेशा नहीं रहना है। इस जुमले के मायनों में मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) के इख़्तिलाफ़ात हैं। इब्ने मसऊद और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह कहते हैं कि 'मुस्तक़र' (कुछ वक़्त के लिये ठिकाना और क़रार पकड़ने) से मुराद माँ का गर्भ है, और 'मुस्तौदअ़' (लम्बे समय तक रहने की जगह) से मुराद बाप की पीठ है। और बाज़ कहते हैं कि 'मुस्तक़र' से मुराद दुनिया में ठहरना है और 'मसतौदअ़' से मुराद मौत के बाद आख़िरत की ज़िन्दगी। सईद बिन जुबैर कहते हैं कि "ज़मीन में ठहरना" और "आख़िरत में रहना" मुराद है। हसन बसरी कहते हैं कि मरने पर जो अ़मल रुक गये यह 'मुस्तक़र' (यानी ठहराव) है और 'मुस्तौदअ़' आख़िरत का घर है। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा दुरुस्त है। हम समझने वालों के लिए बात को किस क़द्र वाज़ेह (स्पष्ट) करके बयान करते हैं।

फिर फ़रमाया उसी ने आसमान से पानी बरसाया जो मुबारक (बरकत और ख़ैर वाला) है और बन्दों के लिए रिज़्क़ मुहैया करता है, मख़्लूक़ की मदद करता है। उसी से हम हर क़िस्म की सब्ज़ियाँ उगाते हैं। जैसा कि फ़रमाया कि पानी ही से हर चीज़ ज़िन्दगी पाती है, इसी से खेती और हरे-भरे दरख़्त उगते हैं। उन्हीं दरख़्तों में फिर दाने और फल पैदा होते हैं, हम उन्हीं के अन्दर से ऐसे दाने निकालते हैं जो एक दूसरे से जुड़े होते हैं जिन्हें ख़ोशे और गुच्छे कहते हैं। खजूर के दरख़्त में ख़ोशेदार (गुच्छेदार) डालियाँ होती हैं।

फिर फ़रमाया कि अंगूर के बाग़ात हम ज़मीन पर पैदा करते हैं, यहाँ खजूर और अंगूर का ज़िक्र फ़रमाया क्योंकि यही दोनों हिजाज (सऊदी के इलाक़े) के बेहतरीन फल समझे जाते हैं। बल्कि सारी दुनिया के बेहतरीन फल हैं। अल्लाह पाक अपने एहसान का ज़िक्र फ़रमाता है कि इन खजूरों और अंगूर के फलों से तुम शराब बनाते हो और अच्छी ग़िज़ा अपने लिए तैयार करते हो। यह आयत शराब के हराम होने से पहले की है। और फ़रमाया कि ज़मीन में हमने खजूर और अंगूर के बाग़ात बनाए। और फ़रमाया ज़ैतून और अनार के भी बाग़ात जो पत्तों और शक्ल के लिहाज़ से एक दूसरे से मिलते-जुलते और क़रीब हैं,

Maktab E Ashraf

लेकिन फल और ज़ायक़े के लिहाज़ से बिल्कुल अलग और भिन्न हैं। फिर फ़रमाया कि जब वह पक जाए तो उसके फल की तरफ़ देखो। यानी ख़ुदा की क़ुदरत का अन्दाज़ा लगाओ कि किस तरह उनको अदम से वजूद में लाया हालाँकि फल बनने से पहले यह भी जलाने के क़ाबिल लकड़ी थी। फिर यही लकड़ी खजूर और अंगूर और दूसरे मेवे बन गई। जैसा कि फ़रमाया कि ज़मीन पर घने पेड़ और अंगूर और खेती के बाग़ात में जो गुच्छेदार भी हैं और बिना गुच्छे वाले भी, सबको पानी एक ही क़िस्म का मिलता है, लेकिन खाने में एक बहुत अफ़ज़ल (बेहतर और अच्छा) होता है दूसरे से। इसी लिए यहाँ फ़रमाया कि ऐ लोगो! इसमें ख़ुदा की क़ुदरत व हिक्मत की कामिल निशानियाँ और इशारे हैं। इसको ईमान वाले लोग ही समझते हैं, और ख़ुदा व रसूल की तस्दीक़ करते हैं।

और उन लोगों ने शैतानों को अल्लाह का शरीक क़रार दे रखा है, हालाँकि उन लोगों को ख़ुदा तआ़ला ने पैदा किया है। और उन लोगों ने अल्लाह तआ़ला के हक़ में बेटे और बेटियाँ बिना सनद तराश रखी हैं, वह उन बातों से पाक और बरतर है जिनको ये लोग बयान करते हैं। (101)	وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ط سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ ع ١٢ ع ١٨

अब भी ख़ुदा के शरीक ठहराते हो?

यहाँ मुश्रिकों का रद्द है जो इबादत में ख़ुदा के साथ ग़ैर को शरीक करते हैं और शैतान की पूजा करने लगते हैं। अगर यह कहा जाये कि वे तो बुतों की पूजा करने लगे फिर शैतान की पूजा का क्या मतलब? तो जवाब यह है कि ये बुतों की पूजा भी करते थे तो शैतान के बहकाने और उसकी इताअ़त करने (बात मानने) की बिना पर, जैसा कि फ़रमाया- वे ख़ुदा को छोड़कर औ़रतों की पूजा करने लगे (यानी फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहकर उन फ़रिश्तों को पूजने लगे) वे तो केवल शैतान सरकश की इबादत करते हैं। जिसने कहा था कि ऐ ख़ुदा! मैं तेरे अक्सर बन्दों को गुमराह करूँगा, उन्हें उम्मीद दिलाऊँगा, मैं उन्हें हुक्म दूँगा और वे मवेशियों (जानवरों) के कान काट दिया करेंगे। मैं उन्हें ऐसा ही हुक्म करूँगा ताकि वे तेरी बनाई हुई सूरत को बिगाड़ दें। और जिसने ख़ुदा को छोड़कर शैतान को अपना वली और सरपरस्त बना लिया वह बहुत खुले घाटे में रहा। वह इन मुश्रिकों से बड़े अच्छे और लुभावने वादे करता है, दूरगामी तमन्नायें उनमें पैदा करता है और उसके सारे वादे फ़रेब होते हैं, जैसा कि फ़रमाया कि क्या तुम शैतान और उसकी ज़ुर्रियत (मानने वालों और नस्ल) को अपनाते हो? हालाँकि तुमको मेरा दामन पकड़ना चाहिए था। और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बाप से कहा था कि ऐ बाप! क्या तुम शैतान की इबादत करते हो? शैतान तो रहमान का नाफ़रमान है। और जैसा कि फ़रमाया ऐ इनसान! क्या मैंने तुम्हें नहीं बता दिया था कि शैतान की इबादत न करना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है, तुम मेरी ही इबादत करो, यही सीधा और सही रास्ता है।

और फ़रिश्ते क़ियामत के दिन कहेंगे तू पाक है तू हमारा वली है, ये मुश्रिक लोग अगरचे हमें बनातुल्लाह (अल्लाह की बेटियाँ) कहकर पूजते रहे लेकिन हमें इनसे कोई ताल्लुक़ नहीं। ये तो दर असल

Maktab-e-Ashraf

शैतान की इत्तिबा करते थे, इसी लिए यहाँ इस आयत में फ़रमाया कि इन मुश्रिकों ने शैतान को ख़ुदा का शरीक (साझी) बना दिया, हालाँकि उनको भी अल्लाह वाहिद ने पैदा किया है। पस वे ख़ुदा के साथ ख़ुदा की मख़्लूक़ को भी कैसे पूजते हैं? जैसे कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा था- क्या तुम उन्हीं चीज़ों को पूजने लगे हो जिनको ख़ुद अपने हाथों से बनाया? हालाँकि तुमको भी और तुम्हारी इन बनाई हुई चीज़ों को भी अल्लाह ही ने पैदा किया है। इसलिए चाहिए कि तुम इबादत के मामले में ख़ालिस एक अल्लाह के होकर रहो, किसी को उसका शरीक न बनाओ।

फिर फ़रमाया कि उन्होंने बेसमझी से ख़ुदा के लिए बेटे और बेटियाँ बना डालीं। यहाँ इस बात का ज़िक्र किया जा रहा है वे अल्लाह की सिफ़ात में गुमराह हो रहे हैं। वे ख़ुदा के लिए बेटा क़रार देते हैं। जैसे यहूद कहते हैं कि उज़ैर ख़ुदा के बेटे हैं, हालाँकि वह पैग़म्बर हैं। और ईसाई हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा कहते हैं, और अ़रब के मुश्रिक लोग फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते थे। ये ज़ालिम जिस बात का दावा करते हैं ख़ुदा उससे पाक और बरी है। यह बात उन्होंने ख़ुद अपने आप गढ़ ली है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं- उन्होंने अटकल लगाई। सूफ़ी कहते हैं उन्होंने क़रार दिया। मुजाहिद कहते हैं उन्होंने झूठी बात बनाई। मतलब यह है कि वे जिन्न को इबादत में शरीक करते हैं हालाँकि ख़ुदा-ए-वाहिद ही ने उन्हें बिना किसी दूसरे की शिर्कत (मदद और सहयोग) के पैदा किया है। वे हक़ीक़त से वाक़फ़ियत के बग़ैर ऐसा कहते हैं। अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत से जाहिल हैं, जो अल्लाह है उसके बेटा बेटी बीवी कैसे हो सकते हैं। इसी लिए फ़रमाया कि वह पाक है, उनकी बकवास और बेहूदा बातों से कहीं ऊँचा है।

वह आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है, उसके (यानी अल्लाह तआ़ला के) औलाद कहाँ हो सकती है? हालाँकि उसकी कोई बीवी तो है नहीं, और अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ को पैदा किया और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (102)	بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

बुलन्द रुतबे वाला पाक ख़ुदा

वह ज़मीन व आसमान का बनाने वाला है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, कोई मिसाल ज़मीन व आसमान की उसके सामने नहीं थी। चुनाँचे बिदअ़त को बिदअ़त इसी लिए कहते हैं कि पहले के उलेमा और बुज़ुर्गों में उसकी कोई नज़ीर नहीं होती है। लोग किसी अ़मल को अपनी तरफ़ से ईजाद करके उसको अपने गुमान के मुताबिक़ सवाब का काम समझने लगते हैं। उसका बेटा कैसे होता उसके तो बीवी ही नहीं, और बेटा तो उन दो चीज़ों से मिलकर पैदा होगा जिनमें आपस में मुनासबत हो, वे एक जैसी हों, और अल्लाह तआ़ला के बराबर और उसके जैसी तो कोई चीज़ भी नहीं। जैसा कि फ़रमाया- वे कहते हैं कि रहमान ने अपना एक बेटा बना लिया है, यह बड़ी झूठ बात है। उसी ने हर चीज़ पैदा की, फिर उसी की मख़्लूक़ उसकी बीवी कैसे होगी? उसकी कोई नज़ीर नहीं, फिर उसका बेटा उसकी नज़ीर बनकर कैसे आ सकता है? ख़ुदा की ज़ात इससे पाक है।

Maktab-E-Ashraf

यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, तो तुम उसकी इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ है। (103) उसको तो किसी की निगाह नहीं घेर सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है, और वही बड़ा बारीक देखने वाला, ख़बर रखने वाला है। (104)	ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ز وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝

हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला ख़ुदा

यही तुम्हारा रब है, जिसने हर चीज़ पैदा की है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं। वही हर चीज़ का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है। पस तुम उसी की इबादत करो, और उसके एक व बेमिस्ल होने का इक़रार करो। उसका न कोई लड़का है न कोई बाप, न बीवी, न कोई उसके जैसा और नज़ीर। वह हर चीज़ का निगराँ व मुहाफ़िज़ है। हर चीज़ का इन्तिज़ाम करने वाला है, वही रिज़्क़ देता है, रात और दिन उसी ने बनाए हैं, उसको निगाहें नहीं पा सकतीं।

इस मसले में पहले उलेमा और इमामों के कई अक़वाल हैं- एक तो यह कि अगरचे आँखें उसको आख़िरत में देख सकेंगी लेकिन दुनिया में नहीं देख सकतीं। नबी करीम सल्ल. की हदीसों से तवातुर के साथ यही साबित है, जैसा कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से नक़ल किया गया है कि जिसने यह गुमान किया कि नबी सल्ल. ने ख़ुदा को देखा था वह झूठा है। फिर आपने यही आयत पढ़ी। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इसके विपरीत और उलट नक़ल किया गया है, उन्होंने अल्लाह तआ़ला को देखने को मुतलक़ रखा है (यानी आख़िरत के साथ ख़ास नहीं किया) और उनसे यह भी मरवी है कि आप सल्ल. ने अपने दिल की आँखों से ख़ुदा तआ़ला को दो बार देखा है। यह मसला सूरः नज्म के शुरू में इन्शा-अल्लाह बयान किया जाएगा।

इब्ने उयैना कहते हैं कि दुनिया में निगाहें उसको नहीं देखेंगी। और दूसरों ने कहा कि इसका मतलब यह है कि आँख भरकर उसको नहीं देख सकते, इससे तख़्सीस होती है उस दीदार की जो मोमिनों को आख़िरत में हासिल होगा (यानी वे आख़िरत में अल्लाह तआ़ला को आँख भरकर देखेंगे)। और मोतज़िला (यह एक फ़िर्क़ा है) ने अपनी समझ के हिसाब से इसका जो मतलब समझा वह यह है कि न दुनिया में ख़ुदा को देख सकते हैं न आख़िरत में। यह अ़क़ीदा अहले सुन्नत वल-जमाअ़त के ख़िलाफ़ है, जो नादानी और नासमझी से भरा है। क्योंकि अल्लाह तआ़ला के क़ौल से यह बात साबित होती है। यानी अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ईमान वालों के चेहरे उस दिन तरोताज़ा और खिले रहेंगे और अपने रब की तरफ़ वे नज़रें उठाये हुए होंगे। और काफ़िरों के बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि वे अपने रब के देखने से हिजाब (आड़) में होंगे, यानी वे रब को नहीं देख सकेंगे।

इससे यह बरत समझ में आती है कि मोमिनों के लिए अल्लाह के दीदार में हिजाब (बीच की कोई रुकावट) नहीं होगा, और मुतवातिर हदीसों से भी साबित है कि मोमिन हज़रात आख़िरत के घर में ख़ुदा को

जन्नत में देखेंगे। खुदा अपने फ़ज़्ल से तमाम मुसलमानों को यह सआ़दत नसीब फ़रमाए आमीन। और यह भी कहा गया कि मुराद यह है कि अ़क़्लें इदराक नहीं कर सकेंगी (यानी उसको पा नहीं सकेंगी) और ऐसा ख़्याल बहुत अ़जीब है, और आयत के ज़ाहिरी मतलब के ख़िलाफ़ है, जिसका मतलब यह हुआ कि इदराक के मायने दीदार के हैं। वल्लाहु आलम

और कुछ दूसरे हज़रात का यह ख़्याल है कि अल्लाह के दीदार को साबित मानने में इदराक (यानी उसको अपनी नज़र के घेर में लाने) का इनकार की मुख़ालफ़त नहीं। इसलिए कि इदराक दीदार से ज़्यादा ख़ास है, और ख़ास की नफ़ी (इनकार करने) से आ़म की नफ़ी नहीं होती। अब जिस इदराक की यहाँ नफ़ी (इनकार) की गई है यह इदराक किस क़िस्म का है इसमें कई क़ौल हैं, जैसे हक़ीक़त को जानने वाला तो सिवाये खुदा के और कोई नहीं हो सकता, अगरचे मोमिन को अल्लाह का दीदार होगा, लेकिन हक़ीक़त और ही चीज़ है। चाँद को सब देखते हैं लेकिन उसकी हक़ीक़त और ज़ात तक किसी की रसाई नहीं हो सकती। पस खुदा तआ़ला तो बेमिस्ल है। इब्ने उलय्या कहते हैं कि न देखना मख़्सूस है दुनिया के अन्दर, यानी दुनिया में अपनी आँखों से कोई नहीं देख सकता। बाज़ कहते हैं कि इदराक देखने से ज़्यादा ख़ास है, क्योंकि इदराक इहाते में की (निगाह या इल्म के घेरे में ली) हुई को कहते हैं और किसी चीज़ का इहाते में न आना इससे यह लाज़िम नहीं आता कि उसको देखा भी न जा सके। जैसे सारे इल्म का इहाता न होने से यह लाज़िम नहीं आता कि इल्म बिल्कुल ही हासिल नहीं किया जा सकता। इनसान को इहाता-ए-इल्म का हासिल न होना इस आयत से साबित है किः

لَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا.

यानी कोई उसको अपने इल्म के इहाते और घेरे में नहीं ले सकता।

और सही मुस्लिम में है कि "ऐ अल्लाह! मैं तेरी तारीफ़ का इहाता नहीं कर सकता" इसका यह मतलब तो नहीं हो सकता कि तारीफ़ किसी भी दर्जे नहीं कर सकता। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि किसी की निगाह खुदा को घेर नहीं सकती। इक्रिमा से कहा गया कि "उसको तो किसी की निगाह अपने घेरे में नहीं ले सकती" का क्या मतलब है? आपने फ़रमाया क्या तुम आसमान को नहीं देख सकते? कहा हाँ देख सकता हूँ। कहा क्या पूरा आसमान एक ही बार में देखते हो? ग़र्ज़ यह कि उसकी शान इससे कहीं ऊपर है कि उस पर निगाहें पड़ सकें। अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि मोमिनों के चेहरे इस क़द्र तरोताज़ा होंगे और वे अपने रब को देखेंगे, लेकिन उसकी अ़ज़मत (बड़ाई और शान) की वजह से नज़रें उस पर मुहीत न हो सकेंगी (यानी अपनी नज़र के घेरे में न ले सकेंगी)।

इस आयत की तफ़सीर में हदीस आई है कि अगर तमाम जिन्नात व इनसान और शयातीन व फ़रिश्ते जब से पैदा किए गए हैं सबकी एक सफ़ (लाईन और क़तार) बनाई जाए तो भी उसका इहाता न हो सके। यह हदीस बहुत ग़रीब है और "सिहाहे सित्ता" (हदीस की छह बड़ी किताबों) में कहीं भी नहीं है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि नबी सल्ल. ने अपने रब को देखा था। जब कहा गया कि क्या अल्लाह ने नहीं कहा किः

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ.

कि किसी की निगाह उसको अपने इहाते में नहीं ले सकती।

Maktab E Ashraf

तो कहा आप भी तो ख़ुदा का एक नूर ही हैं। लेकिन इस आयत का मतलब यह है कि अगर वह अपने नूर के जलवों के साथ पूरी तरह तजल्ली करे तो आँखें उसको नहीं देख सकतीं। और बाज़ यह बयान करते हैं कि कोई चीज़ उसके सामने क़ायम नहीं रह सकती।

अल्लाह तआ़ला न सोता है न सोना उसकी शान के लायक़ है, वह तराज़ू क़ायम किये हुए है। दिन के आमाल रात होने से पहले और रात के आमाल दिन होने से पहले उसके सामने पेश हो जाते हैं। उसका हिजाब (पर्दा और आड़) नूर है। अगर वह उठ जाए तो उसकी तजल्ली सारी दुनिया को जला डालेगी। मुक़द्दस किताबों में है कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा- ऐ मूसा! कोई ज़िन्दा मेरी तजल्ली पाकर ज़िन्दा नहीं रह सकता है, और कोई सूखी चीज़ बग़ैर फ़ना के नहीं रह सकती। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- "जब ख़ुदा ने पहाड़ पर तजल्ली की तो वह टूट-फूटकर और जलकर रह गया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े और जब होश में आये तो कहा:

سُبْحَانَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَااَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ.

बेशक आपकी ज़ात पाक और बुलन्द है, मैं आपकी बारगाह में तौबा करता हूँ और सबसे पहले मैं इस पर यक़ीन करता हूँ।

'इदराक' ख़ास क़ियामत के दिन में अल्लाह के दीदार की नफ़ी (इनकार) नहीं करता है, वह मोमिन बन्दों पर अपनी तजल्ली फ़रमायेगा, उसकी तजल्ली और जलाल व अ़ज़मत उसकी मंशा के मुताबिक़ होगी, निगाहें उसको पूरी तरह महसूस नहीं कर सकतीं। इसलिए उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आख़िरत में अल्लाह के दीदार की क़ायल हैं और दुनिया में दीदारे इलाही की नफ़ी (इनकार) करती हैं। उन्होंने भी इसी आयत से दलील पकड़ी है। पस जिस बात की नफ़ी इदराक से की गयी है उसके मायने भी यही हैं कि उसकी अ़ज़मत व जलाल का इदराक (हक़ीक़त को पाना) मुम्किन नहीं। यह बात कैसे मुम्किन है कि किसी बशर (इनसान) या फ़रिश्ते से यह हो सके। फिर इरशाद होता है कि:

هُوَيُدْرِكُ الْاَبْصَارَ.

यानी वह लोगों के निगाहों का इदराक और इहाता कर सकता है। क्योंकि उसी ने इनसान की निगाहों को पैदा किया है, फिर वह कैसे इहाता न कर सके। इरशाद है कि क्या वह अपनी पैदा की हुई चीज़ को नहीं जानेगा। वह लतीफ़ व ख़बीर है। और कभी लफ़्ज़ 'अबसार' (निगाहों) से देखने वाले मुराद होते हैं, यानी देखने वाले उसको नहीं देख सकते। वह लतीफ़ है यानी किसी बात को मालूम करने में बहुत बारीक-बीं है और हर चीज़ की असल से बाख़बर है। वल्लाहु आलम। जैसे कि लुक़मान अपने बेटे को नसीहत करते वक़्त कहते हैं:

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآاِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ.. الخ

यानी ऐ मेरे बच्चे अगर कोई भलाई या बुराई राई के दाने के बराबर भी हो चाहे पत्थर में हो या आसमानों में या ज़मीन में, अल्लाह तआ़ला उसे ले आयेगा, अल्लाह तआ़ला अत्यंत बारीकी से देखने और ख़बर रखने वाला है।

Maktab E Ashraf

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ
اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَآ
اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ۝

अब बिला शुब्हा तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ देखने के ज़राए "यानी साधन" पहुँच चुके हैं, सो जो शख़्स देख लेगा वह अपना फ़ायदा करेगा, और जो शख़्स अंधा रहेगा वह अपना नुक़सान करेगा, और मैं तुम्हारा निगराँ नहीं हूँ। (105) और हम इस तौर पर दलीलों को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं (ताकि आप सब को पहुँचा दें) और ताकि ये यूँ कहें कि आपने किसी से पढ़ लिया है, और ताकि हम उसको समझदारों के लिए ख़ूब ज़ाहिर कर दें। (106)

हक़ की दलीलें वाज़ेह हो चुकीं

"बसाइर" यानी दलाईल और निशानियाँ जो क़ुरआन में हैं और जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पेश की हैं। पस जिसने समझ और अ़क़्ल से काम लिया उसकी ज़ात को फ़ायदा पहुँचा। जैसे फ़रमाया- जो हिदायत हासिल करेगा वह अपनी ज़ात के लिए करेगा और जो भटक जाएगा उसका नुक़सान और घाटा उसी पर रहेगा। इसी तरह फ़रमाता है कि जो अंधा बनेगा उसका नुक़सान उसी को पहुँचेगा। जैसे फ़रमाया कि आँखे अंधी नहीं होतीं बल्कि दिल अंधे होते हैं, और मैं तुम पर कुछ निगराँ और पहरेदार तो हूँ नहीं, बल्कि मैं तो सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ (बात और पैग़ाम को पहुँचाने वाला) हूँ। हिदायत तो ख़ुदा करता है जिसको चाहे, और गुमराह होने देता है जिसको चाहे। और इस तरह हम आयात को तफ़सील से बयान करते जाते हैं, जैसा कि इस सूरः में तौहीद का बयान पेश किया गया है। और इस बिना पर भी कि मुश्रिक और काफ़िर कहते हैं कि ऐ मुहम्मद! ये बातें तुमने पहले किताब वालों (यानी यहूदी व ईसाई लोगों) से नक़ल कर ली हैं, और इन्हें सीखकर बयान कर रहे हो।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि लफ़्ज़ 'दरस्-त' के मायने तिलावत करने के हैं, और उनका यह कहना दुश्मनी, मुख़ालफ़त और झगड़ा करने की नीयत से है, जैसे इन काफ़िरों के झुठलाने और बैर की ख़ुदा ने यूँ ख़बर दी है कि काफ़िर कहते हैं कि ये तो बनाया हुआ झूठ है और दूसरों ने भी इस किताब (क़ुरआन) के बनाने में मदद दी है, यह बड़े ही ज़ुल्म और झूठ की बात है। वे कहते हैं यह तो पहले के लोगों के मलफ़ूज़ात (कही हुई बातें) और मक्तूबात (लिखी हुई चीज़ें) हैं, जिसको इन्होंने भी लिख लिया है। और उन काफ़िरों के झुठलाने और गुमान के बारे में फ़रमाता है कि उसने फ़िक्र किया सोचा, अन्दाज़ा लगाया, कमबख़्त हलाक हो जाए कैसा ग़लत अन्दाज़ा लगाया। फिर सोचा, मुँह बिगाड़ा, घमंड किया और कहने लगा कि यह तो एक जादू है, यह ख़ुदा का नहीं बशर (इनसान) का कलाम है।

और फ़रमाया कि हम ऐसे लोगों के लिए भी वज़ाहत से बात बोलते हैं जो हक़ को जान लेने के बाद उसकी इत्तिबा (पैरवी) करते हैं। बातिल (झूठ और ग़ैर-हक़) से बचते हैं, काफ़िरों की गुमराही और मोमिनों की तस्दीक़ में ख़ुदा की हिक्मत व मस्लेहत है। जैसा कि फ़रमाया- ग़लत ताबीर करने वाले (यानी जो आयतों का ग़लत मतलब निकालें वे) क़ुरआन से गुमराह भी होते हैं और हिदायत भी पाते हैं। और फ़रमाया

Maktab E Ashraf

कि जिनके दिल में रोग है और जिनके दिल पत्थर के हैं, शैतान उनके दिल में डालता है और यह चीज़ उनके लिए ख़ुदा की तरफ़ से आज़माईश (इम्तिहान) बन जाती है, और अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को सीधे रास्ते की राह बताता है। और फ़रमाया कि हमने दोज़ख़ पर फ़रिश्ते मुक़र्रर कर रखे हैं और अब उनकी मुक़र्रर की हुई तादाद कुफ़्र करने वालों के लिए फ़ितना (आज़माईश) है, लेकिन इसी से अहले किताब (यहूदी व ईसाई) और ईमान वालों का ईमान बढ़ता है। अहले किताब और मोमिन लोग इसमें शक नहीं करते (क्योंकि अहले किताब भी अपनी किताबों में इस निर्धारित संख्या का ज़िक्र पाते हैं) लेकिन काफ़िर और बीमार दिल वाले लोग बोल उठते हैं कि यह बात पेश करने की ख़ुदा को ज़रूरत ही क्या थी। इसी तरह बहुत से लोग गुमराह होते हैं और बहुत से हिदायत पाते हैं।

अल्लाह तआ़ला के लश्कर को उसके सिवा कौन जानता है। और फ़रमाया कि कह दो यह क़ुरआन मोमिनों के लिए हिदायत व शिफ़ा है और काफ़िरों के कानों में डॉट लगे हुए हैं और वे अंधे हैं। क़ुरआन का मुत्तक़ी लोगों (अल्लाह से डरने वालों और परहेज़गारों) के लिए हिदायत होना और हिदायत व गुमराही का उसके मंशा पर मौक़ूफ़ (निर्भर) होना, इस विषय पर बहुत सी आयतें हैं इसी लिए यहाँ फ़रमाया कि हम आयतें कैसे-कैसे बार-बार बयान करते हैं, लेकिन काफ़िर यही कहते हैं कि तुम तो ये आयतें कहीं से लिखवा लाये हो।

आप ख़ुद इस रास्ते पर चलते रहिए जिसकी वही आपके रब की तरफ़ से आपके पास आई है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मुश्रिकों की तरफ़ ख़्याल न कीजिए। (107) और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो ये शिर्क न करते और हमने आपको उनका निगराँ नहीं बनाया और न आप उनपर मुख़्तार हैं। (108)	اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ○ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ○

मुश्रिकों को ज़्यादा मुँह न लगाईये

अल्लाह पाक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को और उनकी उम्मत को हुक्म देता है कि तुम 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से उतरे हुए अहकाम) ही की पैरवी करो और उसी पर अ़मल करो, क्योंकि यही हक़ है और इसमें कोई मिलावट नहीं है। और मुश्रिकों से अलग ही रहो, उनसे दरगुज़र करो (यानी उनकी ग़लतियों पर ध्यान न दो), उनके तकलीफ़ देने को बरदाश्त कर लो, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें उन दुश्मनों पर फ़तह और कामयाबी अ़ता फ़रमाये। और जान लो कि उनकी गुमराही में ख़ुदा की हिक्मत है। अगर ख़ुदा चाहता तो सारी दुनिया ही को हिदायत पाये हुए कर देता, सब फ़तह पर सहमत हो जाते और शिर्क करने वाले शिर्क करते ही नहीं। इसमें अल्लाह तआ़ला की ख़ास हिक्मत है, वह जो करता है उस पर एतिराज़ नहीं किया जा सकता। हाँ वह सबसे पूछने का हक़ रखता है। हमने तुम्हें उनका ज़िम्मेदार नहीं बनाया है, उनके जी में जो आए कहें और करें। तुम उन पर निगराँ नहीं हो। न तुम उनको रिज़्क़ देते हो, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ तब्लीग़ करना (यानी बात और हुक्म का पहुँचा देना) है। जैसा कि फ़रमाया कि उनको नसीहत कर दो, तुम सिर्फ़ नसीहत व ख़ैरख़्वाही करने वाले हो, तुम उनके लिए ख़ुदाई फ़ौजदार नहीं।

Maktab E Ashraf

और फ़रमाया कि तब्लीग़ तुम्हारा काम और बाज़पुर्स (पूछगछ और हिसाब लेना) हमारा काम है।

وَلَاتَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○	और उनको गाली मत दो जिनकी ये लोग ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हैं, (यानी उनके माबूदों को क्योंकि) फिर वे जहालत की वजह से हद से गुज़रकर अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, हमने इसी तरह हर तरीक़े वालों को उनका अमल पसन्दीदा बना रखा है, फिर अपने रब ही के पास उनको जाना है, सो वह उनको बतला देगा जो कुछ भी वे किया करते थे। (109)

मुश्रिकों के माबूदों को बुरा-भला मत कहो

अल्लाह पाक रसूलुल्लाह सल्ल. और मोमिनों को मना फ़रमा रहे हैं कि मुश्रिकों के ख़ुदाओं को गालियाँ न दो, और बुरा भला न कहो। अगरचे इसमें एक तरह की मस्लेहत सही, लेकिन ख़राबियाँ उससे बढ़कर पैदा होती हैं। यानी फिर मुक़ाबला करते हुए वे भी मुसलमानों के ख़ुदा को गालियाँ देंगे। मुश्रिक लोग कहते थे कि ऐ मुहम्मद! हमारे बुतों को गाली देने से तुम्हें बाज़ रहना चाहिए वरना हम भी तुम्हारे रब की शान में गुस्ताख़ी करेंगे। चुनाँचे अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया। क़तादा रह. से मरवी है कि मुसलमान काफ़िरों के बुतों को गाली देते थे, पस काफ़िर लोग भी बग़ैर हक़ीक़त को समझे दुश्मनी व बैर से अल्लाह को भी बुरा भला कहने लगे। जब अबू तालिब मौत के बिस्तर पर थे तो क़ुरैश ने मश्विरा किया कि अबू तालिब के पास चलें और उनसे कहें कि अपने भतीजे को रोक दो, हमें शर्म की बात मालूम होती है कि अबू तालिब के मरने के बाद मुहम्मद को क़त्ल कर दें। अ़रब कहेंगे कि अबू तालिब की ज़िन्दगी में तो कुछ न चली, अब जबकि वह मर गये तो बुज़दिलों ने क़त्ल किया है। चुनाँचे अबू जहल, अबू सुफ़ियान, अ़मर बिन आ़स और कई शख़्स एक जमाअ़त की शक्ल में आये और मुत्तलिब नाम के शख़्स को इजाज़त हासिल करने के लिए भेजा तो अबू तालिब ने बुला लिया। वे कहने लगे ऐ अबू तालिब! तुम हमारे बड़े और हमारे सरदार हो, मुहम्मद ने हमें तकलीफ़ पहुँचाई है और हमारे ख़ुदाओं को तकलीफ़ दी है। हम चाहते हैं कि तुम उन्हें बुलाकर रोक दो ताकि वह हमारे ख़ुदाओं का नाम ही न लें वरना हम भी उसको और उसके ख़ुदा को छोड़ देंगे। तो आपने नबी सल्ल. को बुलाया और कहा कि यह तुम्हारी ही क़ौम है और तुम्हारे ही चचा की औलाद है। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया चचा क्या बात है और ये लोग क्या चाहते हैं? वे कहने लगे हमारा मक़सद यह है कि तुम हमसे और हमारे ख़ुदाओं से कोई ताल्लुक़ न रखो, और हम भी तुमसे और तुम्हारे ख़ुदा से कोई वास्ता न रखेंगे। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क्या मैं तुमको एक ऐसी बात बतलाऊँ कि अगर तुमने उसको अपना लिया तो अ़रब और अ़जम (अ़रब और अ़रब से बाहर की दुनिया) के मालिक हो जाओगे और सब मुल्कों से तुम्हारे पास ख़िराज (टैक्स) की दौलत आने लगेगी। अबू जहल ने कहा कि तुम्हारी ऐसी एक बात नहीं दस बातें क़बूल कर लेंगे, बताओ वह क्या है? आपने फ़रमाया कह दो - ला इला-ह इल्लल्लाहु। तो उन्होंने इनकार कर दिया, मुँह बना लिया। अबू तालिब कहने लगे ऐ भतीजे! इसके सिवा और दूसरी बात बताओ, तुम्हारी क़ौम इस कलिमे से तो और भड़कती है। आपने फ़रमाया चचा मुझे

Maktab-E-Ashraf

क्या हक़ है कि इसके सिवा कोई और बात बोलूँ। अगर सूरज को भी लाकर वे मेरे हाथ में रख दें तो मैं इसके सिवा कुछ नहीं कह सकता। मतलब यह था कि इनको मायूस कर दें, चुनाँचे वे गुस्से में भर गये और कहने लगे हमारे ख़ुदाओं को बुरा-भला कहने से रुक जाओ वरना हम तुम्हें और तुम्हारे ख़ुदा को भी गालियाँ देंगे। इसी लिए फ़रमाया गया कि वे दुश्मनी की बिना पर बग़ैर समझे ख़ुदा को बुरा-भला कहने लगेंगे।

यह वह सूरत है जहाँ मस्लेहत को भी इसलिए नज़र-अन्दाज़ (अनदेखा) कर दिया जाता है कि उसके मुक़ाबले में फ़साद (झगड़ा और ख़राबी) बढ़ जाएगा। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया जो अपने वालिदैन (माँ-बाप) को गालियाँ दे वह बड़ा मलऊन है। कहा गया या रसूलल्लाह! कोई अपने माँ-बाप को कैसे गालियाँ देगा? फ़रमाया कि ये उसके माँ बाप को गालियाँ देता है और इसके जवाब में दूसरा इसके माँ-बाप को गाली देता है तो गोया कि इसी पहले शख़्स ने अपने माँ-बाप को गालियाँ दीं। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि हम हर उम्मत की नज़र में उसका अ़मल बेहतर करके दिखाते हैं, जैसा कि यह क़ौम बुतों की मुहब्बत ही को पसन्द करती है। चुनाँचे पिछली उम्मतें भी गुमराही पर थीं और उसी को अपना अच्छा और बेहतरीन अ़मल समझती थीं। अल्लाह जो चाहता है इख़्तियार करता है, उसी में बड़ी हिक्मत होती है। फिर उन लोगों का लौटना ख़ुदा ही की तरफ़ होगा। उसी वक़्त उन्हें अपने एतिक़ादों और मान्यताओं की अच्छाई या बुराई मालूम हो जाएगी। अगर अ़मल नेक हो तो नेक बदला, और बुरा हो तो बुरा बदला मिलेगा।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ○ ع ١٣ ١٩

और उन (इनकार करने वाले) लोगों ने अपनी क़स्मों में बड़ा ज़ोर लगाकर अल्लाह की क़सम खाई कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रूर ही उस पर ईमान ले आएँगे। आप (जवाब में) कह दीजिए कि निशानियाँ सब ख़ुदा तआ़ला के क़ब्ज़े में हैं, और तुमको इसकी क्या ख़बर (बल्कि हमको ख़बर है) कि वे निशानियाँ जिस वक़्त आ जाएँगी, ये लोग जब भी ईमान न लाएँगे। (110) और हम भी उनके दिलों और निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग उस पर पहली बार ईमान नहीं लाए और हम उनको उनकी सरकशी में हैरान रहने देंगे। (111)

मुश्रिकों का अपने आपको धोखा देना

मुश्रिक लोग अल्लाह की क़स्में खा-खाकर बयान करते हैं कि अगर उन्हें कोई मोजिज़ा (असाधारण चीज़ और चमत्कार) दिखा दी जाए तो वे ईमान ले आएँगे। तो ऐ नबी! कह दो कि मोजिज़े तो ख़ुदा तआ़ला के पास हैं, अगर वह चाहे तो मोजिज़े दिखा दे और न चाहे तो न दिखाए। क़ुरैश ने हुज़ूर सल्ल. से कहा कि ऐ मुहम्मद! तुम्हीं ने हमें बतलाया है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़सा (अपनी लाठी) पत्थर पर मारा था तो बारह चश्मे फूट पड़े थे और ईसा अ़लैहिस्सलाम मुर्दे को ज़िन्दा करते थे, और क़ौमे समूद को ऊँटनी

का मोजिज़ा मिला था। अगर तुम भी कोई ऐसा ही मोजिज़ा (चमत्कार और अ़जीब चीज़) पेश करो तो हम तुम्हारी तस्दीक़ करेंगे। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया तुमको क्या मोजिज़ा चाहिए? कहा कि इस सफ़ा की पहाड़ी को हमारे लिए सोने की बना दो। आपने फ़रमाया- अगर ऐसा हो जाए तो क्या तुम तौहीद की तस्दीक़ करोगे (यानी अल्लाह को एक मानोगे)? काफ़िरों ने कहा हाँ हम सब तुम पर ईमान लाएँगे। आप उठे और ख़ुदा से दुआ़ माँगने लगे। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आए और कहा अगर आप चाहते हैं तो सफ़ा पहाड़ी सोने की बन जाएगी, लेकिन अगर इस पर भी वे ईमान न लाएँगे तो फ़ौरी तौर पर उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा, और अगर आपकी मर्ज़ी हो तो ये लोग यूँ ही बिना अ़ज़ाब के छोड़ दिए जाएँगे, ताकि बाद को उनमें से कुछ ईमान भी ले आएँ और तौबा कर लें। चुनाँचे अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि वे क़समें खा-खाकर बयान करते हैं लेकिन बात यह है कि उनमें से अक्सर लोग नादान हैं। और फ़रमाया कि हमें मोजिज़े भेजने से सिर्फ़ यह बात रोकती है कि उनके पहलों ने भी मोजिज़े देखने के बावजूद इनकार कर दिया था और ये भी इनकार कर देंगे तो फ़ौरी अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाएँगे। और जो मोहलत इनको हासिल हुई है वह भी जाती रहेगी, तुम्हें क्या ख़बर वे तो मोजिज़े देखकर भी ईमान नहीं लाएँगे।

और कहा गया है कि यहाँ मुश्रिकों को मुख़ातब बनाया (संबोधित किया) गया है, गोया कि अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमाता है कि क्या ये ईमान वाली बात जो क़समें खाकर बयान की जाती है, तुम हक़ीक़त में इसको सच समझते हो। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ऐ मोमिनो! तुम्हारे पास इसका क्या सुबूत है कि ये अपनी मतलूबा निशानी और मोजिज़े पाकर ईमान ज़रूर ले आएँगे।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَالَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ.

उनके इनकार और कुफ़्र की वजह से उनके दिल और उनकी निगाहें हमने फेर दी हैं। अब ये किसी बात पर जमने वाले नहीं। ईमान में और उनमें पर्दा पड़ गया है। ये दुनिया जहान की निशानियाँ देख लेंगे लेकिन ईमान नहीं लाएँगे। जैसा कि पहली बार उनके और उनके ईमान के बीच पर्दे आड़ और बाधा हो गए थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है, उनके कहने से पहले ही कि ये क्या कहने वाले हैं, और अ़मल करने से पहले ही इत्तिला दे दी कि क्या अ़मल करेंगे। और फ़रमाया कि वाक़िफ़कार (जानने वाले) के जैसी कोई तुम्हें पक्की बात नहीं बता सकता, इनसान कहेगा कि हाय अफ़सोस! जो ज़्यादती और जो गुनाह मैंने किये हैं, यहाँ तक कि फ़रमाया- वे कहेंगे कि काश हमें दुनिया की ज़िन्दगी का एक और मौक़ा मिलता तो हम नेकी करने वालों में से होते। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर वे दुनिया में फिर वापस किए जाएँ तो भी हिदायत पर न चलेंगे और फ़रमाया कि अगर दुनिया में लौटाये गये तो फिर बुराईयों और नाफ़रमानियों में मशग़ूल होंगे। वे झूठ कह रहे हैं कि नेक बनेंगे, दोबारा दुनिया में जाने के बाद भी पहले वाली ज़िन्दगी की तरह ईमान नहीं लाएँगे, क्योंकि इस वक़्त की तरह उस वक़्त भी हम इनके दिल और इनकी आँखों को फेर देंगे, और फिर भी उनके और संभावित हिदायत के बीच पर्दा रोक हीं बना रहेगा और हम इन्हें इनकी सरकशियों (नाफ़रमानियों और ग़लत रास्ते पर चलने) में भटकने के लिए छोड़ देंगे।

अल्लाह का शुक्र है कि सातवें पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर आठ

और अगर हम उनके पास फ़रिश्तों को भेज देते और उनसे मुर्दे बातें करने लगते और हम (ग़ैब में) मौजूद तमाम चीज़ों को उनके पास उनकी आँखों के सामने लाकर जमा कर देते तब भी ये लोग ईमान न लाते, हाँ अगर ख़ुदा ही चाहे (तो और बात है), लेकिन उनमें से अक्सर लोग जहालत की बातें करते हैं। (112)	وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَىْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ○

मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों के लिये हुज्जत का पूरा होना भी कारामद नहीं है

ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है कि अगर हम उनके उस सवाल को जो वे क़समें खाकर करते हैं कि "अगर हमने मोजिज़े देख लिए तो हम ज़रूर ईमान ले आएँगे" क़बूल भी कर लें और फ़रिश्तों को भेज दें कि वे अल्लाह की तरफ़ से रसूल होकर उनके पास जाएँ और अम्बिया व रसूलों के (नुबुव्वत में) सच्चे होने की ख़बर और गवाही भी दें तब भी वे काफ़िर लोग ईमान नहीं लाएँगे। ये सब झूठ कहते हैं और ईमान क़बूल न करने के लिए हीले-बहाने बनाते हैं जैसे कि पहले भी बनाते रहे हैं कि "हम तुम पर उस वक़्त तक ईमान नहीं लाएँगे जब तक कि तुम (हमें अ़जीब व ग़रीब बातें न दिखलाओ यानी) या तो ज़मीन से कोई चश्मा जारी करके दिखाओ, या तुम्हारा खजूरों अंगूरों वग़ैरह जैसे फलों का कोई बाग़ हो, जिसमें ख़ूब नहरें बहती हों, या अपने दावे के मुताबिक़ हम पर आसमान के टुकड़े ला गिराओ, या ख़ुदा और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आओ, या तुम्हारा सोने चाँदी का कोई घर हो, या हमारे सामने आसमान पर चढ़कर कोई किताब लाओ"।

कभी यूँ कहने लगते हैं कि "जब तक हमको भी ऐसी ही चीज़ न दी जाए जो कि अल्लाह के रसूलों को दी जाती है (यानी पहले नबियों जैसे मोजिज़े या आसमानी किताब का एक ही बार में उतरना) हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएँगे" और कभी यूँ बहाने बनाते हैं कि "हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं आते, या हम अपने रब को अपनी आँखों से क्यों नहीं देखते" ये लोग दर असल अपने दिलों में अपने आपको बड़ा समझ रहे हैं और (इसी बिना पर) बड़े सरकश (नाफ़रमान) हो रहे हैं, और इनकी ईमान लाने की नीयत नहीं है। अगर मुर्दे भी क़ब्रों से निकल कर यह कह दें कि जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लाये हैं वह सब कुछ सच और हक़ है, बल्कि मुर्दे तो क्या अगर कायनात (दुनिया जहान) की हर चीज़ उनके सामने आ खड़ी हो और इस बात की गवाही दे दे तब भी ये लोग ख़ुदा की मर्ज़ी के बग़ैर ईमान नहीं लाएँगे। क्योंकि हिदायत (देना या न देना) ख़ुदा के हाथ में है, न कि उनके बस में। वह जिसको चाहता है हिदायत पर चला देता है, उससे कौन पूछ सकता है कि यह क्या किया? वही इल्म व हिक्मत वाला, हर चीज़ का मालिक, ताक़त और क़हर व ग़लबे वाला है।

मुजाहिद रह. के नज़दीक इसके मायने यह हैं कि अगर सब उम्मतें उनके सामने एक के बाद एक पेश

Mehtab E Ashraf

की जाएँ और वे सब बतलाएँ कि हाँ रसूल सच्चे हैं, तब भी वे न मानेंगे। और यह आयत इस आयत की तरह है:

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ..... الخ

यानी लोगों के बारे में ख़ुदा का अ़ज़ाब का जो हुक्म क़रार पा चुका है, वे ईमान नहीं लाएँगे जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब (यानी जहन्नम) न देख लें, चाहे उनके पास हर तरह की निशानी क्यों न आ जाए।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ط وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ○ وَلِتَصْغٰى اِلَيْهِ اَفْئِدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ○

और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बहुत-से शैतान पैदा किए, कुछ आदमी और कुछ जिन्न, जिनमें से बाज़े दूसरे बाज़ों को चिकनी-चुपड़ी बातों का वस्वसा डालते रहते थे ताकि उनको धोखे में डाल दें। और अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो ये ऐसे काम न कर सकते, सो उन लोगों को और जो कुछ ये बोहतान लगा रहे हैं उसको आप रहने दीजिए। (113) और ताकि उसकी तरफ़ उन लोगों के दिल माईल हो जाएँ जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते, और ताकि उसको पसन्द कर लें और ताकि उन उमूर के करने वाले हो जाएँ जिनको वे करते थे। (114)

दीन के दुश्मन हर उम्मत में हुए हैं

इरशाद होता है कि ऐ नबी! आप तंगदिल और ग़मगीन न हों जिस तरह आपके ज़माने के ये काफ़िर लोग आपसे दुश्मनी रखते हैं इसी तरह हर नबी के ज़माने के कुफ़्फ़ार अपने-अपने नबियों के साथ दुश्मनी करते रहे। जैसा कि एक और आयत में तसल्ली देते हुए फ़रमायाः

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ...... الخ

तुझसे पहले के पैग़म्बरों को भी झुठलाया गया, उन्हें भी तकलीफ़ें पहुँचाई गईं, जिस पर उन्होंने सब्र किया। एक और आयत में कहा गया है कि तुझसे भी वही कहा जाता है जो तुझसे पहले नबियों को कहा गया था। तेरा रब बड़ी मग़फ़िरत वाला है और साथ ही दर्दनाक अ़ज़ाब करने वाला भी है। एक और आयत में है:

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ.

हमने गुनाहगारों को हर नबी के दुश्मन बना दिये हैं। यही बात वरक़ा बिन नोफ़ल ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कही थी कि आप जैसी चीज़ जो भी लेकर आया, उससे अ़दावत (दुश्मनी) की गई। नबियों के दुश्मन शरारती इनसान भी होते हैं और जिन्नात भी।

हज़रत अबूज़र रज़ि. एक दिन नमाज़ पढ़ रहे थे तो नबी करीम सल्ल. ने उनसे फ़रमाया- क्या तुमने

Maktab E Ashraf

इनसानों और जिन्नात के शैतानों से ख़ुदा की पनाह माँग ली? उन्होंने पूछा क्या इनसानों में भी शैतान हैं? आपने फ़रमाया हाँ! यह हदीस मुन्क़ता है। एक और रिवायत में है कि मैं हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस मजलिस में आप देर तक तशरीफ़ फ़रमा रहे। मुझसे फ़रमाने लगे अबूज़र! तुमने नमाज़ पढ़ ली? मैंने कहा या रसूलल्लाह नहीं पढ़ी, आपने फ़रमाया उठो और दो रक्अ़त अदा कर लो। जब मैं फ़ारिग़ होकर आया तो फ़रमाने लगे क्या तुमने इनसानों और जिन्नात के शैतानों से ख़ुदा की पनाह माँगी थी? मैंने कहा नहीं। क्या इनसानों में भी शैतान हैं? आपने फ़रमाया हाँ! और वे जिन्नों के शयातीन से भी ज़्यादा शरीर हैं। इस हदीस की सनद में इन्क़िता भी है। एक मुत्तसिल काफ़ी लम्बी रिवायत मुस्नद अहमद में है, उसमें यह भी है कि यह वाक़िआ़ मस्जिद का है। एक और रिवायत में हुज़ूर सल्ल. का इस फ़रमान के बाद यह पढ़ना भी नक़ल किया गया है किः

شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِىْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا. وَلَوْشَآءَ رَبُّكَ مَافَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ.

शयातीनिल् इन्सि वल-जिन्नि यूही बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् ज़ुख़्रुफ़ल् क़ौलि ग़ुरूरा। व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़रहुम् व मा यफ़्तरून।

ग़र्ज़ कि यह हदीस बहुत-सी सनदों से नक़ल की गयी है, जिससे यह सेहत व मज़बूती के दर्जे को पहुँच जाती है। वल्लाहु आलम। हज़रत इक्रिमा रह. से रिवायत है कि इनसानों में शैतान नहीं जिन्नात के शैतान एक दूसरे से काना-फूसी करते हैं। आपसे यह भी मरवी है कि इनसानों के शैतान जो इनसानों को गुमराह करते हैं और जिन्नों के शैतान जो जिन्नों को गुमराह करते हैं, जब आपस में मिलते हैं तो एक दूसरे से अपनी कारगुज़ारी बयान करते हैं कि मैंने फ़ुलाँ को इस तरह बहकाया तो फ़ुलाँ को इस तरह बहकाया। एक दूसरे को गुमराही के तरीक़े बतलाते हैं। इससे इमाम इब्ने जरीर रह. यह समझते हैं कि शैतान तो जिन्नों में से ही होते हैं लेकिन बाज़ इनसानों पर लगे हुए होते हैं और बाज़ जिन्नात पर। यह मतलब इक्रिमा रह. के क़ौल से तो ज़ाहिर है, हाँ सुद्दी रह. का क़ौल स्पष्ट नहीं है, एक क़ौल में इक्रिमा और सुद्दी दोनों से यह मरवी है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- जिन्नात के शयातीन हैं जो उन्हें बहकाते हैं, जैसे इनसानों के शयातीन जो इनसानों को बहकाते हैं। और एक दूसरे से मिलकर कहते हैं कि हमने उसे इस तरह बहकाया। सही वही है जो हज़रत अबूज़र रज़ि. वाली हदीस में ऊपर गुज़रा। अ़रबी भाषा में हर सरकश शरीर (नाफ़रमानी और शरारत करने वाले) को शैतान कहते हैं। मुस्लिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्ल. ने सियाह रंग के कुत्ते को शैतान फ़रमाया है, तो इसके मायने यह हुए कि वह कुत्तों में शैतान है। वल्लाहु आलम

मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जिन्नात में के काफ़िर इनसानों के काफ़िरों के कानों में सूर फूँकते रहते हैं। इक्रिमा रह. फ़रमाते हैं कि मैं मुख़्तार बिन अबी अ़बीद के पास गया, उसने मेरा बड़ा सम्मान किया, अपने यहाँ मेहमान बनाकर ठहराया, रात को भी शायद अपने यहाँ सुलाता लेकिन मुझसे उसने कहा कि जाओ लोगों को कुछ सुनाओ। मैं जाकर बैठा ही था कि एक शख़्स ने मुझसे पूछा आप 'वही' (अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होने वाले उसके पैग़ाम) के बारे में क्या फ़रमाते हैं? मैंने कहा 'वही' की दो क़िस्में हैं:

एक अल्लाह की तरफ़ से है जिसेः

بِمَآاَوْحَيْنَآاِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ.

यानी हमने जो यह क़ुरआन आपके पास भेजा है।

Maktab E Ashraf

और दूसरी 'वही' शैतान की तरफ़ से है जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ.. الخ

कि कुछ जिन्नात और इनसानों में के शैतान आपस में एक दूसरे को चिकनी-चुपड़ी बातों का वस्वसा डालते हैं।

इतना सुनते ही लोग मेरे ऊपर पिल पड़े। क़रीब था कि पकड़कर मार-पीट शुरू कर दें, मैंने कहा अरे यह तुम मेरे साथ क्या करने लगे? मैंने तो तुम्हारे सवाल का जवाब दिया और मैं तुम्हारा मेहमान हूँ। चुनाँचे उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मुख़्तार मलऊन लोगों से कहता था कि मेरे पास 'वही' आती है, उसकी बहन हज़रत सफ़िया हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के घर में थीं और बड़ी दीनदार थीं, जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. को मुख़्तार का यह क़ौल मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया वह ठीक कहता है, क़ुरआन में है:

وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ..... الخ

यानी शैतान भी अपने दोस्तों की तरफ़ 'वही' (अपनी बात और पैग़ाम) ले जाते हैं।

ग़र्ज़ कि ऐसे घमंडी सरकश जिन्नात व इनसान आपस में एक दूसरे को धोखेबाज़ी की बातें सिखाते हैं। यह भी अल्लाह तआ़ला की तय की हुई तक़दीर और मशीयत है, वह उनकी वजह से अपने नबियों की बहादुरी और अपने मिशन पर जमाव अपने बन्दों को दिखा देता है। तू उनकी दुश्मनी व बैर का ख़्याल न कर, उनका झूठ तुझको कुछ भी नुक़सान न पहुँचा सकेगा। तू ख़ुदा पर भरोसा रख, उसी पर तवक्कुल कर और अपने काम उसे सौंपकर बेफ़िक्र हो जा, वह तुझे काफ़ी है और वही तेरा मददगार है। ये लोग जो इस तरह की ख़ुराफ़ात करते हैं यह महज़ इसलिए कि बेईमानों के दिल उनकी निगाहें और उनके कान उनकी तरफ़ झुक जाएँ वे ऐसी बातों को पसन्द करें, इससे ख़ुश हो जाएँ। पस इनकी बातें वही करते हैं जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं होता। ऐसे लोग जहन्नम का ईंधन बनने वाले हैं। बहके हुए (यानी गुमराह) लोग ही इन ग़लत और चिकनी चुपड़ी बातों में फँस जाते हैं, वे फिर वह करते हैं जो उनके क़ाबिल है।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

तो क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और फ़ैसला करने वाले को तलाश करूँ? हालाँकि वह ऐसा है कि उसने एक कामिल किताब तुम्हारे पास भेज दी है। उसकी हालत यह है कि उसके मज़ामीन ख़ूब साफ़-साफ़ बयान किये गये हैं, और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इस बात को यक़ीन के साथ जानते हैं कि यह (क़ुरआन) आपके रब की तरफ़ से हक़ के साथ भेजा गया है सो आप शुब्हा करने वालों में न हों। (115) और आपके रब का कलाम हक़ीक़त और एतिदाल के एतिबार से कामिल है, उसके कलाम का कोई बदलने वाला नहीं, और वे ख़ूब सुन रहे हैं, ख़ूब जान रहे हैं। (116)

Maktab E Ashraf

मोमिन ख़ुदा के ग़ैर को ख़ुदा नहीं बना सकता

हुक्म होता है कि मुश्रिक अल्लाह के सिवा दूसरों की परस्तिश (पूजा और इबादत) कर रहे हैं। उनसे कह दीजिए कि क्या हम तुम में फ़ैसला करने वाला सिवाये अल्लाह तआ़ला के किसी और को तलाश करूँ? उसी ने तो साफ़ खुले फ़ैसले करने वाली किताब नाज़िल फ़रमा दी है। यहूद व नसारा जो आसमानी किताब रखते हैं और जिनके पास पहले नबियों की ख़ुशख़बरियाँ हैं, वे अच्छी तरह जानते हैं कि यह क़ुरआने करीम ख़ुदा की तरफ़ से हक़ के साथ उतारा हुआ है, तुझे शक्की लोगों में न मिलना चाहिए। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ.... الخ

यानी हमने जो कुछ 'वही' (अपना पैग़ाम) तेरी तरफ़ उतारी है अगर तुझे उसमें शक हो तो जो लोग पहली किताबें पढ़ते हैं तू उनसे पूछ ले, यक़ीन मान कि तेरे रब की तरफ़ से तेरी तरफ़ हक़ उतर चुका है। पस तू शक करने वालों में न हो। यह शर्त है और शर्त का वाक़े होना (यानी पाया जाना) कुछ ज़रूरी नहीं, इसलिए रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- न मैं शक करूँ न किसी से सवाल करूँ। तेरे रब की बातें पूरी हैं सच्चाई में, जो कुछ कहा गया, और इन्साफ़ में जो कुछ हुक्म दिया गया। वे सच्ची हैं ख़बरों में और इन्साफ़ पर आधारित हैं अहकाम में। जो ख़बरें उसने बयान कर दी हैं वे निःसन्देह दुरुस्त हैं और जो हुक्म फ़रमाया है वह सरासर अ़दल व इन्साफ़ है। और जिस चीज़ से रोका है वह पूरी तरह बातिल (हक़ के ख़िलाफ़ और झूठ) है, क्योंकि वह जिस चीज़ से रोकता है वह बुराई वाली ही होती है। जैसे फ़रमाया है:

يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ.

वह उन्हें भली बातों का हुक्म देता है और बुरी बातों से रोकता है.......।

कोई नहीं जो उसके फ़रमान को बदल सके, उसके हुक्म अटल हैं, अटल दुनिया में क्या और आख़िरत में क्या। उसका कोई हुक्म टल नहीं सकता। उसका पीछा कोई नहीं कर सकता, वह अपने बन्दों की बातें सुनता है और उनकी हर हरकत व गतिविधि को अच्छी तरह जानता है। हर आ़मिल (अ़मल करने वाले) को उसके बुरे-भले अ़मल का बदला वह ज़रूर देगा।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ○ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ○

और दुनिया में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर आप उनका कहना मानने लगें तो वे आपको अल्लाह की राह से बेराह कर दें, वे सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चलते हैं और बिल्कुल ख़्याली बातें करते हैं। (117) यक़ीनन आपका रब उसको ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बेराह हो जाता है, और वह उनको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह पर चलते हैं (118)

Maktab E Ashraf

यह गुमराही है

अल्लाह तआ़ला ख़बर देता है कि अक्सर लोग दुनिया में गुमराह करने वाले होते हैं। जैसे फ़रमान है:

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ.

यानी इनसे पहले के बहुत से लोग गुमराह हो गये।

एक और जगह है:

وَمَآ أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ.

अगरचे तू इसकी हिर्स व तमन्ना करे लेकिन अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

फिर ये लोग अपनी गुमराही में भी किसी यक़ीन पर नहीं सिर्फ़ झूठे और ग़लत गुमान और बेकार अटकलें हैं और अन्दाज़े से बातें बना लेते हैं, फिर उनके पीछे हो लेते हैं, ख़्यालात के पैरो हैं, अंधविश्वास में घिरे हुए हैं। यह सब अल्लाह की मशीयत है, वह गुमराहों को भी जानता है और उन पर गुमराहियाँ आसान कर देता है, और वह राह पाने वाले लोगों से भी अच्छी तरह वाक़िफ़ है और उनके लिए हिदायत आसान कर देता है। हर शख़्स पर वही काम आसान होते हैं जिनके लिए वह पैदा किया गया है।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيٰتِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝	सो जिस जानवर पर अल्लाह का नाम लिया जाए उसमें से खाओ अगर तुम उसके अहकाम पर ईमान रखते हो। (119) और तुमको कौनसी चीज़ इसका सबब हो सकती है कि तुम ऐसे जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उन सब जानवरों की तफ़सील बतला दी है जिनको तुम पर हराम किया है, मगर जब तुमको सख़्त ज़रूरत पड़ जाए तो वे भी हलाल हैं, और यह यक़ीनी बात है कि बहुत-से आदमी अपने ग़लत ख़्यालात से बिना किसी सनद के गुमराह करते हैं। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आपका रब हद से निकल जाने वालों को ख़ूब जानता है। (120)

हर चीज़ के हराम व हलाल होने में अल्लाह का फ़ैसला नाफ़िज़ है

हुक्म बयान हो रहा है कि जिस जानवर को अल्लाह का नाम लेकर ज़िबह किया जाए उसे खा लिया करो। इससे मालूम होता है कि जिस जानवर के ज़िबह करने के वक़्त नामे ख़ुदा न लिया गया हो उसका

Maktab E Ashraf

खाना जायज़ और दुरुस्त नहीं। जैसे मुश्रिक लोग अपने आप मरे हुए मुर्दार जानवर और बुतों और थानों पर ज़िबह किया जाने वाला जानवर खा लिया करते थे। कोई वजह नहीं कि जिन हलाल जानवरों को शरीअ़त के हुक्म के मुताबिक़ ज़िबह किया जाए उनके खाने में हर्ज समझा जाए। ख़ास तौर पर उस वक़्त कि हर हराम जानवर का बयान खोल-खोलकर कर दिया गया है। 'फ़स्स-ल' की दूसरी क़िराअत "फ़-स-ल" है, वे हराम जानवर खाने मना और वर्जित हैं सिवाये मजबूरी और सख़्त बेबसी के, कि उस वक़्त जो मिल जाए उसके खा लेने की इजाज़त है। फिर काफ़िरों की ज़्यादती (हद से आगे बढ़ना) बयान हो रही है कि वे मुर्दार जानवर को और उन जानवरों को जिन पर ख़ुदा के सिवा दूसरों के नाम लिए गए हों हलाल जानते थे, ये लोग बिना इल्म के सिर्फ़ अपनी इच्छा की पूर्ती के तौर पर दूसरों को सही और हक़ रास्ते से हटा रहे हैं, ऐसों के बोहतान बाँधने, झूठ बोलने और शरीअ़त की हदों से निकलने को ख़ुदा अच्छी तरह जानता है।

और तुम ज़ाहिरी गुनाह को भी छोड़ो और बातिनी गुनाह को भी (छोड़ो), इसमें शुब्हा नहीं कि जो लोग गुनाह कर रहे हैं उनको उनके किये की जल्द ही सज़ा मिलेगी। (121)	وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ○

गुनाह छोड़ दो

ज़ाहिरी और बातिनी (अन्दर व बाहर के या यूँ कहें कि जिस्मानी अंगों और दिल व दिमाग़ के) गुनाहों को छोड़ दो। छोटे बड़े, खुले और छुपे गुनाह को छोड़ दो। न खुली बदकार औरतों के यहाँ जाओ न चोरी छुपे बदकारियाँ करो। खुल्लम खुल्ला उन औरतों से निकाह न करो जो तुम पर हराम कर दी गई हैं। ग़र्ज़ हर गुनाह से दूर रहो, क्योंकि हर बदकारी का बुरा बदला है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल हुआ कि गुनाह किसे कहते हैं? आपने फ़रमाया जो तेरे दिल में खटके और तू चाहे कि किसी को उसकी ख़बर न हो जाए।

और उन (जानवरों) में से मत खाओ जिन पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और यह नाफ़रमानी (की बात) है, और यक़ीनन शयातीन अपने दोस्तों को तालीम कर रहे हैं, ताकि ये तुमसे (बेकार) झगड़ा करें। और अगर (ख़ुदा न करे) तुम उन लोगों की इताअ़त करने लगो तो यक़ीनन तुम मुश्रिक हो जाओ। (122)	وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ○ ع ١٤

यह हराम है

यही आयत है जिससे बाज़ उलेमा ने यह समझा है कि अगरचे किसी मुसलमान ने ही ज़िबह किया हो

Maktab E Ashraf

लेकिन अगर ज़िबह करते वक़्त नामे ख़ुदा नहीं लिया तो उस ज़बीहा (ज़िबह किये हुए जानवर) का खाना हराम है। इस बारे में उलेमा के तीन क़ौल हैं- एक तो वही जिसका ज़िक्र हुआ, चाहे जान-बूझकर नामे ख़ुदा न लिया हो या भूलकर। इसकी दलील यह आयत है:

فَكُلُوا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ.

यानी जिस शिकार को तुम्हारे शिकारी कुत्ते रोक रखें, तुम उसे खा लो और अल्लाह का नाम उस पर लो।

इस आयत में इसी की ताकीद की और फ़रमाया कि यह खुली नाफ़रमानी है। यानी उसका खाना या ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़िबह करना। हदीसों में भी शिकार के और ज़बीहे (ज़िबह किये हुए जानवर) के बारे में हुक्म आया है, आप फ़रमाते हैं- जब तू अपने सधाये हुए कुत्ते को अल्लाह का नाम लेकर छोड़े, जिस जानवर को वह तेरे लिए पकड़कर रोक ले तू उसे खा ले। और हदीस में है जो चीज़ ख़ून को बहा दे और ख़ुदा का नाम भी उस पर लिया गया हो, उसे खा लिया करो। जिन्नात से हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था- तुम्हारे लिए हर वह हड्डी है जिस पर नामे ख़ुदा लिया जाए।

ईद की क़ुरबानी के बारे में आपका इरशाद नक़ल किया गया है कि जिसने नमाज़े ईद पढ़ने से पहले ज़िबह कर लिया वह उसके बदले दूसरा जानवर ज़िबह करे। जिसने क़ुरबानी नहीं की वह हमारे साथ ईद की नमाज़ न पढ़े। फिर ख़ुदा का नाम लेकर अपने क़ुरबानी के जानवर को ज़िबह करे। चन्द लोगों ने नबी करीम सल्ल. से पूछा कि बाज़ नौमुस्लिम हमें गोश्त देते हैं। क्या ख़बर उन्होंने उन जानवरों के ज़िबह करने के वक़्त अल्लाह का नाम भी लिया या नहीं? आपने फ़रमाया उस पर ख़ुदा का नाम लो और खा लो।

ग़र्ज़ यह कि इस हदीस से इस मज़हब की ताईद होती है, क्योंकि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी समझा कि बिस्मिल्लाह पढ़ना ज़रूरी है, और ये लोग इस्लामी अहकाम से सही तौर से वाक़िफ़ नहीं, अभी अभी मुसलमान हुए हैं। क्या ख़बर ख़ुदा का नाम लेते भी हैं या नहीं, तो हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें और ज़्यादा एहतियात करने का हुक्म फ़रमाया कि तुम ख़ुद नामे ख़ुदा ले लो, ताकि अगर कहीं उन्होंने न भी लिया तो यह उसका बदल हो जाए। वरना हर मुसलमान पर ज़ाहिरी तौर पर तो नेक गुमान ही रखा जायेगा।

दूसरा क़ौल इस मसले में यह है कि ज़िबह के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना शर्त नहीं, बल्कि मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है, तो अगर छूट जाए चाहे वह भूलकर हो या जान-बूझकर, कोई हर्ज नहीं। इस आयत में जो फ़रमाया गया है कि यह फ़िस्क़ (गुनाह और बुरी बात) है, इसका मतलब लोग यह लेते हैं इससे मुराद ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अ़लावा किसी और) के लिए ज़िबह किया हुआ जानवर है। जैसे एक दूसरी आयत में है:

اَوْفِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ.

यानी नाफ़रमानी के तौर अल्लाह के अ़लावा किसी और के नाम पर ज़िबह किया गया हो।

अ़ता रह. के बक़ौल उन जानवरों से रोका गया है जिन्हें काफ़िर लोग अपने माबूदों के नाम से ज़िबह करते थे और मजूसियों (आग को पूजने वालों) के ज़बीहे से भी मनाही कर दी गई है। इसका जवाब बाद के कुछ उलेमा ने यह भी दिया है कि यह नाफ़रमानी और बेहुक्मी में उसी वक़्त शामिल होगा जब उसे ग़ैरुल्लाह के नाम का मान लें। लेकिन मेरे नज़दीक उनकी यह बात कमज़ोर है। वल्लाहु आलम

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि इससे मुराद मुर्दार जानवर है, जो अपनी मौत आप मर गया

हो। इस मज़हब की ताईद अबू दाऊद की एक मुर्सल हदीस से भी हो सकती है, जिसमें हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि मुसलमान का ज़बीहा (ज़िबह किया हुआ) हलाल है, उसने ख़ुदा का नाम लिया हो या न लिया हो। क्योंकि अगर वह लेता तो ख़ुदा का नाम ही लेता। इसकी ताईद दारे क़ुतनी की इस रिवायत से होती है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. ने फ़रमाया- जब मुसलमान ज़िबह करे और अल्लाह का नाम न ज़िक्र करे तो खा लिया करो, क्योंकि मुसलमान अल्लाह के नामों में से एक नाम है। इसी मज़हब की दलील में वह हदीस भी पेश हो सकती है जो पहले बयान हो चुकी है कि नौमुस्लिमों के ज़बीहे के खाने की जिसमें दोनों एहतिमाल (शुब्हे) थे, आपने इजाज़त दी। तो अगर बिस्मिल्लाह का कहना शर्त और लाज़िम होता तो हुज़ूर सल्ल. तहक़ीक़ (छानबीन और जानकारी हासिल) करने का हुक्म देते।

तीसरा क़ौल यह है कि अगर बिस्मिल्लाह का कहना ज़िबह के वक़्त भूल गया है तो ज़बीहा (ज़िबह किया हुआ जानवर) हलाल है, और अगर जान-बूझकर नहीं कही तो हलाल नहीं। हिदाया में लिखा है कि इमाम शाफ़ई रह. से पहले इस बात पर इजमा था (यानी तमाम इमामों की एक राय थी) कि जिस ज़बीहे पर जान-बूझकर बिस्मिल्लाह न कही जाए वह हराम है, इसलिए इमाम अबू यूसुफ़ और दूसरे बुज़ुर्गों ने कहा है कि अगर कोई हाकिम उसे बेचने का हुक्म भी दे तो वह हुक्म जारी नहीं हो सकता, क्योंकि यह हुक्म इजमा के ख़िलाफ़ है। लेकिन किताब हिदाया के लेखक का क़ौल सही नहीं है।

(हिदाया के लेखक ख़ुद बहुत बड़े आ़लिम और मुहक़्क़िक़ हैं उन्हें अपनी राय रखने का हक़ है जिसकी उनके पास दलीलें हैं, इब्ने कसीर को अपनी राय रखने का हक़ है। दोनों ही इस्लामिक विद्वान हैं।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी)

इमाम शाफ़ई से पहले भी बहुत से इमाम इसके ख़िलाफ़ थे। चुनाँचे ऊपर जो दूसरा मज़हब बयान हुआ है कि बिस्मिल्लाह पढ़ना शर्त नहीं बल्कि यह मुस्तहब है, यह इमाम शाफ़ई रह. का, उनके सब साथियों का और एक रिवायत में इमाम अहमद, इमाम मालिक और अश्हब बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. का मज़हब है, और यही बयान किया गया है हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत अ़ता बिन अबी रबाह से। फिर इजमा (यानी तमाम इमामों और उलेमा के एक राय होने) का दावा करना कैसे दुरुस्त हो सकता है। वल्लाहु आलम।

इमाम जाफ़र बिन जरीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जिन लोगों ने ज़िबह के वक़्त बिस्मिल्लाह न कहे जाने पर भी ज़बीहा हराम कहा है, उन्होंने दूसरे और दलाईल के ख़िलाफ़ करने के साथ-साथ उस हदीस के भी ख़िलाफ़ किया है जो साबित है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मुस्लिम को उसका नाम ही काफ़ी है। अगर वह ज़िबह के वक़्त अल्लाह का नाम ज़िक्र करना भूल गया तो अल्लाह का नाम ले और खा ले। यह हदीस बैहक़ी में है, लेकिन इसका मरफ़ूअ़ रिवायत करना ग़लती है, और यह ग़लती मअ़क़ल बिन उबैदुल्लाह बिन ख़रन्दी की है। हैं तो यह मुस्लिम शरीफ़ के रावियों में से मगर सईद बिन मन्सूर और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैरी इसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. से मौक़ूफ़ रिवायत करते हैं, बक़ौल इमाम बैहक़ी रह. यह रिवायत सबसे ज़्यादा सही है। शअ़बी और मुहम्मद बिन सीरीन उस जानवर का खाना मक्रूह जानते थे जिस पर ख़ुदा का नाम न लिया गया हो, चाहे भूल से ही रह गया हो। ज़ाहिर है कि पहले उलेमा के यहाँ मक्रूह होने का मतलब हराम होना था। वल्लाहु आलम

यहाँ यह याद रहे कि इमाम इब्ने जरीर रह. का क़ायदा यह है कि वह उन दो एक क़ौलों को कोई अहम नहीं समझते जो जमहूर के मुख़ालिफ़ हों और ऐसी सूरत में इजमा (यानी सबकी सहमति) शुमार करते हैं। इमाम हसन बसरी रह. से एक शख़्स ने मसला पूछा कि मेरे पास बहुत से पर ज़िबह शुदा आए हैं,

उनमें से बाज़ के ज़िबह के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी गई है और बाज़ पर भूल से रह गई है, और सब एक जगह मिल गये हैं (यानी पता नहीं कि कौनसा बिस्मिल्लाह वाला है और कौनसा बग़ैर बिस्मिल्लाह वाला) आपने फ़तवा दिया कि सब खा लो। फिर मुहम्मद इब्ने सीरीन रह. से यही सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया जिन पर अल्लाह के नाम का ज़िक्र नहीं किया गया उन्हें न खाओ। इस तीसरे मज़हब की दलील में यह हदीस भी पेश की जाती है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत की ख़ता को, भूल को और जिस काम पर ज़ोर ज़बरदस्ती की जाए उसको माफ़ कर दिया है, लेकिन यह विचारनीय बात है।

एक हदीस में है कि एक शख़्स नबी सल्ल. के पास आया और कहा कि या रसूलल्लाह! बताईये तो अगर हम में से कोई शख़्स ज़िबह करे और बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए? आप सल्ल. ने फ़रमाया अल्लाह का नाम हर मुसलमान के दिल में है (यानी वह हलाल है)। लेकिन इसकी सनद बहुत कमज़ोर है। मरवान बिन सालिम अबू अ़ब्दुल्लाह शामी इस हदीस का रावी है और उस पर बहुत से इमामों ने जिरह की है। वल्लाहु आलम। मैंने इस मसले पर एक मुस्तक़िल किताब लिखी है, उसमें तमाम मज़हबों और उनके दलाईल वग़ैरह की तफ़सील है, और पूरी बहस की है।

आ़म अहले इल्म तो कहते हैं कि इस आयत का कोई हिस्सा मन्सूख़ नहीं, लेकिन बाज़ हज़रात कहते हैं कि इसमें से अहले किताब के ज़बीहे को अलग कर लिया गया है और उसका ज़िबह किया हुआ हमारे लिए हलाल है। तो अगरचे वे अपनी इस्तिलाह में इसे नस्ख़ से ताबीर करें लेकिन दर असल यह एक मख़्सूस सूरत है। फिर फ़रमाया कि शैतान अपने दोस्तों की तरफ़ 'वही' करते (यानी उनके दिल में बात डालते) हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से जब कहा गया कि मुख़्तार कहता है कि उसके पास 'वही' आती है, तो आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाकर कहा कि वह ठीक कहता है, शैतान भी अपने दोस्तों की तरफ़ 'वही' करते हैं। एक और रिवायत में है कि उस वक़्त मुख़्तार हज को आया हुआ था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के इस जवाब से कि वह सच्चा है, उस शख़्स को ताज्जुब हुआ, उस वक़्त आपने तफ़सील बयान फ़रमाई कि एक तो ख़ुदा की 'वही' है जो नबी करीम सल्ल. की तरफ़ आई और एक शैतानी वही है जो शैतान के दोस्तों की तरफ़ आती है। शैतानी वस्वसों को लेकर लश्करे शैतान अल्लाह वालों से झगड़ते हैं, चुनाँचे यहूदियों ने नबी करीम सल्ल. से कहा कि यह क्या अंधेरा है कि हम अपने हाथ से मारा हुआ जानवर तो खा लें और जिसे ख़ुदा मार दे यानी अपनी मौत आप मर जाए उसे न खाएँ? इस पर यह आयत उतरी और बयान फ़रमाया कि हलाल होने की वजह अल्लाह के नाम का ज़िक्र है, लेकिन यह क़िस्सा ग़ौर व फ़िक्र के क़ाबिल है। अव्वलन इस वजह से कि यहूदी अपने आप मरे हुए जानवर का खाना हलाल नहीं जानते थे। दूसरे इस वजह से भी कि यहूदी तो मदीने में थे और ये पूरी सूरत मक्का में उतरी है। तीसरे यह कि यह हदीस तिर्मिज़ी शरीफ़ में नक़ल तो की गयी है लेकिन मुर्सल तबरानी में है कि इस हुक्म के नाज़िल होने के बाद कि जिस पर नामे ख़ुदा लिया गया हो उसे खा लो और जिस पर नामे ख़ुदा न लिया गया हो उसे न खाओ, तो फ़ारस वालों ने क़ुरैशियों से कहलवा भेजा कि नबी करीम सल्ल. से वे झगड़ें और कहें कि जिसे तुम अपनी छुरी से ज़िबह कर दो वह तो हलाल और जिसे अल्लाह तआ़ला सोने की छुरी से ख़ुद ज़िबह करे वह हराम? यानी अपने आप मरा हुआ जानवर। इस पर यह आयत उतरी।

पस शयातीन से मुराद फ़ारस के लोग हैं, और उनके दोस्त क़ुरैश वाले हैं। और भी इस तरह की बहुत सी रिवायतें हैं जो विभिन्न सनदों से नक़ल की गयी हैं, और किसी में भी यहूद का ज़िक्र नहीं। पस सही

Maktab-E-Ashraf

यही है क्योंकि यह आयत मक्की है और यहूद मदीने में थे, और इसलिए भी कि यहूद ख़ुद मुर्दार खाने वाले न थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं जिसे तुमने ज़िबह किया यह तो वह है जिस पर नामे ख़ुदा लिया गया और जो अपने आप मर गया वह वह है जिस पर नामे ख़ुदा नहीं लिया गया। क़ुरैश के मुश्रिक लोग फ़ारसियों से पत्राचार कर रहे थे और रोमियों के ख़िलाफ़ उन्हें मश्विरे और इमदाद पहुँचाते थे, और फ़ारस के लोग क़ुरैशियों से पत्राचार रखते थे और नबी पाक सल्ल. के ख़िलाफ़ उन्हें उकसाते और उनकी इमदाद करते थे। इसी में उन्होंने मुश्रिकों की तरफ़ यह एतिराज़ भी लिख भेजा था और मुश्रिकों ने सहाबा से यही एतिराज़ किया और बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दिल में भी यह बात खटकी, इस पर यह आयत उतरी। फिर फ़रमाया अगर तुमने उनकी ताबेदारी की तो तुम मुश्रिक हो जाओगे कि तुमने ख़ुदा की शरीअ़त और फ़रमाने क़ुरआन के ख़िलाफ़ दूसरे की बात मान ली है, और यही शिर्क है कि ख़ुदा के क़ौल के मुक़ाबले में दूसरे का क़ौल मान लिया जाए। चुनाँचे क़ुरआने करीम में है:

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ.

यानी उन्होंने अपने आ़लिमों और दीनी बुज़ुर्गों को ख़ुदा बना लिया है।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि जब हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि हुज़ूर! इन्होंने उनकी इबादत कभी नहीं की, तो आपने फ़रमाया- उन्होंने हराम को हलाल किया और हलाल को हराम कहा, और इन्होंने उनका कहना माना, यही इबादत है।

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝	ऐसा शख़्स जो कि पहले मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा बना दिया, और हमने उसको एक ऐसा नूर दे दिया कि वह उसको लिए हुए आदमियों में चलता फिरता है, क्या उस शख़्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत यह है कि वह अंधेरियों में है, उनसे निकलने ही नहीं पाता, इसी तरह काफ़िरों को उनके आमाल अच्छे मालूम हुआ करते हैं। (123)

मोमिन और काफ़िर की मिसाल

मोमिन और काफ़िर की मिसाल बयान हो रही है कि एक तो वह जो पहले मुर्दा था यानी कुफ़्र व गुमराही की हालत में हैरान व परेशान था, अल्लाह ने उसे ज़िन्दा किया, ईमान व हिदायत बख़्शी, रसूल की पैरवी और इत्तिबा का चस्का दिया, क़ुरआन जैसा नूर अ़ता फ़रमाया। जिसके रोशन अहकाम की रोशनी में वह अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता है। इस्लाम की नूरानियत उसके दिल में रच गई है। दूसरा वह जो जहालत व गुमराही की अंधेरियों में घिरा हुआ है। जो उसमें से निकलने की कोई राह नहीं पाता। क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? इसी तरह मुस्लिम और काफ़िर में भी फ़र्क़ है। नूर व अंधेरे और ईमान व कुफ़्र का फ़र्क़ ज़ाहिर है। एक और आयत में है:

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا.......

Maktab E Ashraf

ईमान वालों का वली (दोस्त) अल्लाह तआला है, वह उन्हें अंधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ लाता है। और काफ़िरों के वली तागूत (शैतान) हैं, जो उन्हें नूर से हटाकर अंधेरों में ले जाते हैं। ये हमेशा जहन्नम में रहेंगे। एक और आयत है:

اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖ....

यानी झुके हुए क़द वाला (टेढ़ी राह चलने वाला) और सीधे क़द वाला (सीधी राह पर चलने वाला) क्या बराबर हैं?

एक और आयत में है कि इन दोनों फ़िर्क़ों की मिसाल अंधे बहरे और सुनते देखते की तरह है, कि दोनों में फ़र्क़ अच्छी तरह ज़ाहिर है। अफ़सोस फिर भी तुम इबरत (सीख) हासिल नहीं करते। एक और जगह फ़रमान है- अंधा और देखने वाला, अंधेरियाँ और रोशनी, साया और धूप, ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं। अल्लाह जिसे चाहे सुना दे, लेकिन तू क़ब्र वालों को सुना नहीं सकता, तू सिर्फ़ आगाह कर देने वाला है। और भी आयतें इस मज़मून की बहुत सी हैं। इस सूरः के शुरू में ज़ुलुमात (अंधेरियों) और नूर का ज़िक्र था, इसी मुनासबत से यहाँ भी मोमिन और काफ़िर की यह मिसाल बयान फ़रमाई गई।

बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद दो ख़ास शख़्स हैं, जैसे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. कि यह पहले गुमराह थे, अल्लाह ने इन्हें इस्लाम की ज़िन्दगी बख़्शी, और इन्हें नूर अ़ता फ़रमाया जिसे लेकर लोगों में चलते फिरते हैं। और कहा गया है कि इससे मुराद हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ि. हैं। और अंधेरियों में जो फंसा हुआ है उससे मुराद अबू जहल है। सही यही है कि यह आयत आ़म है, हर मोमिन और काफ़िर की मिसाल है। काफ़िरों की निगाह में उनकी अपनी जहालत व गुमराही इसी तरह अच्छी और ख़ुशनुमा बनाकर दिखाई जाती है, यह भी ख़ुदा तआ़ला की तक़दीर और तयशुदा बात है, कि वे अपनी बुराईयों को अच्छाईयाँ समझते हैं।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ को अंधेरे में पैदा करके फिर अपना नूर उन पर डाला, जिसे उस नूर का हिस्सा मिला उसने दुनिया में आकर राह पाई और जो वहाँ मेहरूम रहा वह यहाँ भी बहका हुआ (गुमराह) ही रहा। जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि ख़ुदा अपने बन्दों को अंधेरों से उजाले की तरफ़ ले जाता है और जैसे फ़रमान है अंधा और देखने वाला और अंधेरा और रोशनी बराबर नहीं।

और इसी तरह हमने हर बस्ती में वहाँ के रईसों 'यानी बड़े लोगों और सरदारों' ही को जुर्मों का करने वाला बनाया ताकि वे लोग वहाँ शरारतें किया करें, और वे लोग अपने ही साथ शरारत कर रहे हैं और उनको ज़रा ख़बर नहीं। (124) और जब उनको कोई आयत पहुँचती है तो यूँ कहते हैं कि हम हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक कि हमको भी ऐसी ही चीज़ (न) दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी जाती है।	وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۭ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاِذَا جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ

يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ۝	उस मौके को तो ख़ुदा ही ख़ूब जानता है जहाँ अपना पैग़ाम भेजता है, जल्द ही उन लोगों को जिन्होंने यह जुर्म किया है ख़ुदा के पास पहुँचकर ज़िल्लत पहुँचेगी, और उनकी शरारतों के मुकाबले में सख़्त सज़ा। (125)

नाफ़रमानी करने वाले सचेत हो जाएँ

इन आयतों में भी अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. की तसल्ली फ़रमाता है और साथ ही काफ़िरों को होशियार करता है। फ़रमाता है कि जैसे आपकी इस बस्ती में काफ़िरों के सरदार मौजूद हैं जो दूसरों को भी सच्चे दीन से रोकते हैं, इसी तरह हर पैग़म्बर के ज़माने में उसकी बस्ती में कुफ़्र के सुतून, गढ़ और केन्द्र रहे हैं, लेकिन आख़िरकार वे ग़ारत और तबाह होते हैं और नतीजा हमेशा नबियों का ही अच्छा रहता है। जैसे फ़रमाया कि हर नबी के दुश्मन उनके ज़माने के गुनाहगार रहे। और एक आयत में है कि हम जब किसी बस्ती को तबाह करना चाहते हैं तो वहाँ के रईसों (सरदारों और बड़े लोगों) को किसी ऐसी चीज़ का मुकल्लफ़ करते हैं जिसमें वे खुल्लम-खुल्ला हमारी नाफ़रमानी करते हैं.....। पस इताअ़त से गुरेज़ करने पर अ़ज़ाबों में घिर जाते हैं, वहाँ के शरीर लोग तरक़्क़ी पर आ जाते हैं, फिर बस्ती हलाक होती है और क़िस्मत का अनमिट लिखा सामने आ जाता है। चुनाँचे और आयतों में है कि जहाँ कहीं कोई पैग़म्बर आया वहाँ के सरदारों और बड़े लोगों ने झट से कह दिया कि हम तुम्हारी रिसालत के मुन्किर हैं, माल में औलाद में हम तुमसे ज़्यादा हैं, और हम इसे भी नहीं मानते कि हमें सज़ा हो।

एक और आयत में है कि हमने जिस बस्ती में जिस रसूल को भेजा वहाँ के बड़े लोगों ने जवाब दिया कि हमने तो जिस तरीक़े पर अपने बड़ों को पाया है हम तो उसी पर चलेंगे। 'मक्र' से मुराद गुमराही की तरफ़ बुलाना और अपनी मीठी-मीठी बातों में लोगों को फंसाना है। जैसे क़ौमे नूह के बारे में है:

وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا.

क़ियामत के दिन भी जबकि ये ज़ालिम लोग ख़ुदा के सामने खड़े होंगे एक दूसरे को इल्ज़ाम देंगे, छोटे लोग बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम मुसलमान हो जाते, और वे भी जवाब देंगे कि क्या हमने तुम्हें हिदायत (सही रास्ते) से रोका था? नहीं! बल्कि तुम ख़ुद गुनाहगार थे। ये कहेंगे तुम्हारे दिन रात के फ़ितना उठाने और कुफ़्र व शिर्क की दावत ने हमें खो दिया......। मक्र (शरारत) के मायने हज़रत सुफ़ियान रह. ने हर जगह अ़मल के किये हैं। फिर फ़रमाता है कि उनके मक्र का वबाल उन्हीं पर पड़ेगा, लेकिन उन्हें इसका शऊर (समझ) नहीं। जिन लोगों को उन्होंने बहकाया उनका वबाल भी उन्हीं के काँधे पर होगा, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ.

यानी अपने बोझ के साथ उनके बोझ भी ढोएँगे जिनको बेइल्मी के साथ उन्होंने बहकाया था।

जब कोई निशानी और दलील देखते हैं तो कह देते हैं कि कुछ भी हो जब तक ख़ुदा का पैग़ाम फ़रिश्ते के द्वारा ख़ुद हमें न आए हम तो यक़ीन करने वाले नहीं। कहा करते थे कि हम पर फ़रिश्ते क्यों

Maktab E Ashraf

नाज़िल नहीं होते? ख़ुदा हमें अपना दीदार क्यों नहीं दिखाता? हालाँकि रिसालत (यानी नबी और रसूल बनने) के असल हक़दार को ख़ुदा बेहतर तरीक़े पर जानता है। उनका एक एतिराज़ यह भी था कि इन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े रईस (सरदार) पर यह क़ुरआन क्यों न उतरा? जिसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- क्या तेरे रब की रहमत के तक़सीम करने वाले वही हैं? पस मक्के या ताईफ़ के किसी रईस (सरदार) पर क़ुरआन के नाज़िल न होने से वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अपमान का इरादा करते थे और यह सिर्फ़ ज़िद और तकब्बुर की बिना पर था, जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि तुझे देखते ही ये लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं और कहते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों का ज़िक्र किया करता है? ये लोग रहमान (यानी अल्लाह) के ज़िक्र के मुन्किर हैं। कहा करते थे कि अच्छा यही हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपना रसूल बनाया? नतीजा यह हुआ कि उन मस्ख़रों (मज़ाक़ उड़ाने वालों) का मस्ख़रापन उन्हीं पर उल्टा पड़ा। वे यह मानने पर मजबूर थे कि आप सल्ल. सबसे बेहतर नसब और ख़ानदान वाले हैं, आप सच्चे और अमीन हैं, यहाँ तक कि नुबुव्वत से पहले क़ौम की तरफ़ से आप सल्ल. को अमीन का ख़िताब मिला था। अबू सुफ़ियान जैसे उन काफ़िर क़ुरैशियों के सरदार ने भी दरबारे हिरक़्ल में हिरक़्ल के सवाल पर हुज़ूर सल्ल. के आ़ला नसब होने और सच्चे होने की शहादत दी थी, जिससे रोम के बादशाह ने हुज़ूर की पाकीज़गी, सच्चाई और नुबुव्वत वग़ैरह को मान लिया था।

मुस्नद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से इस्माईल को पसन्द फ़रमाया। इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से बनू किनाना को पसन्द फ़रमाया। बनू किनाना में से क़ुरैश को, क़ुरैश में से बनू हाशिम को और बनू हाशिम में से मुझे। फ़रमान है कि एक के बाद एक ज़मानों में से मैं सबसे बेहतर ज़माने का पैग़म्बर बनाया गया।

एक बार जबकि आपको लोगों की कही हुई कुछ बातें पहुँचीं तो आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और लोगों से पूछा मैं कौन हूँ? उन्होंने कहा आप अल्लाह के रसूल हैं। फ़रमाया मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब हूँ। अल्लाह तआ़ला ने अपनी तमाम मख़्लूक़ में मुझे बेहतर बनाया है, मख़्लूक़ को जब दो हिस्सों में बाँटा तो मुझे उन दोनों में जो बेहतर हिस्सा था उसमें किया। फिर क़बीलों के मुझे सबसे बेहतर क़बीले में किया, फिर जब ख़ानदान की तक़सीम की तो मुझे सबसे अच्छे घराने में बनाया, पस मैं घराने के एतिबार से और ज़ात के एतिबार से तुमसे बेहतर हूँ। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हो।

हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने एक बार आपसे फ़रमाया- मैंने पूरे पूरब व पश्चिम (यानी सारी दुनिया) को टटोल लिया, लेकिन आपसे ज़्यादा अफ़ज़ल (बेहतर और बड़े रुतबे वाला) किसी को नहीं पाया। (हाकिम, बैहक़ी)

मुस्नद अहमद में है कि अल्लाह ने आपस में बन्दों के दिलों को देखा और सबसे बेहतर दिल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाया। फिर मख़्लूक़ के दिलों पर निगाह डाली तो सबसे बेहतर दिल रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा के पाये, पस हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपना ख़ास चुना हुआ मक़बूल रसूल बनाया और रसूले करीम के सहाबा आपके वज़ीर बनाये गये, जो आपके दीन के दुश्मनों के दुश्मन हैं। पस ये मुसलमान जिस चीज़ को बेहतर समझें वह अल्लाह के नज़दीक भी बेहतर है, और जिसे ये बुरा समझें वह अल्लाह के नज़दीक भी बुरी है।

एक बाहर के शख़्स ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि. को मस्जिद के दरवाज़े से आता हुआ

Maktab E Ashraf

देखकर मरऊब होकर लोगों से पूछा- यह कौन बुज़ुर्ग हैं? लोगों ने कहा यह रसूले करीम सल्ल. के चचा के लड़के हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास हैं, तो उसके मुँह से बेसाख़्ता यह आयत निकली कि नुबुव्वत के अहल (हक़दार और पात्र) को ख़ुदा ही अच्छी तरह जानता है।

फिर फ़रमाता है कि जो लोग इस अ़ज़ीमुश्शान पैग़म्बर की पैग़म्बरी में शक व शुब्हा कर रहे हैं, इताअ़त (उसकी बात मानने) से मुँह फेर रहे हैं। उन्हें ख़ुदा के सामने क़ियामत के दिन बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ेगी। उनके तकब्बुर और नाफ़रमानी की बिना पर उन्हें हमेशा का अ़ज़ाब होगा। जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि जो लोग मेरी इबादत से जी चुराते हैं वे ज़लील व ख़्वार होकर जहन्नम में जाएँगे, उन्हें उनके मक्र (शरारत और फ़रेब) की सज़ा और सख़्त सज़ा होगी, चूँकि मक्कारों की चालें ख़ुफ़िया और हल्की होती हैं, उसके बदले में अ़ज़ाब ऐलानिया और सख़्त होंगे। यह अल्लाह का ज़ुल्म नहीं बल्कि उनका पूरा बदला है। उस दिन सारी छुपी अ़य्यारियाँ (मक्कारियाँ और साज़िशें) भी खुल जाएँगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि हर बद-अ़हद (वादा और अ़हद तोड़ने वाले) की रानों के पास क़ियामत के दिन एक झंडा लहराता होगा और ऐलान होता होगा कि यह फ़ुलाँ पुत्र फ़ुलाँ की ग़द्दारी है। पस इस दुनिया की पोशीदगी (छुपी हुई बात) इस तरह क़ियामत के दिन ज़ाहिर होगी। अल्लाह हमें बचाये।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ۭ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○	सो जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला रास्ते पर डालना चाहते हैं उसके सीने को इस्लाम के लिए खोल देते हैं, और जिसको बेराह रखना चाहते हैं उसके सीने को तंग, बहुत तंग कर देते हैं, जैसे कोई आसमान में चढ़ता हो, इसी तरह अल्लाह ईमान न लाने वालों पर फटकार डालता है। (126)

हिदायत और गुमराही ख़ुदा के इरादे पर मौक़ूफ़ है

ख़ुदा का इरादा जिसे हिदायत करने का होता है उस पर नेकी के रास्ते आसान हो जाते हैं। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ..... الخ

यानी अल्लाह उनके सीने इस्लाम की तरफ़ खोल देता है और उन्हें अपना नूर अ़ता फ़रमाता है। एक और आयत में फ़रमाया:

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ..... الخ

अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में ईमान की मुहब्बत डाल दी और उसे तुम्हारे दिलों में ज़ीनतदार (यानी अच्छा

Maktab E Ashraf

लगने वाला) बना दिया। और कुफ़्र, फ़िस्क़ (बुराई) और नाफ़रमानी की तुम्हारे दिलों में कराहत (नफ़रत और दिल से बुरा समझना) डाल दी। यही लोग सही राह पाने वाले और नेकबख़्त हैं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं उसका दिल ईमान व तौहीद की तरफ़ खुल जाता है। हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि सबसे ज़्यादा दाना (अ़क़्लमन्द) कौनसा मोमिन है? फ़रमाया सबसे ज़्यादा मौत को याद रखने वाला और सबसे ज़्यादा मौत के बाद की ज़िन्दगी के लिए तैयारियाँ करने वाला। हुज़ूर सल्ल. से इस आयत के बारे में सवाल हुआ तो फ़रमाया कि उसके दिल में एक नूर डाल दिया जाता है जिससे उसका सीना खुल जाता है। लोगों ने उसकी निशानी मालूम की तो फ़रमाया- जन्नत की तरफ़ झुकना और उसकी जानिब रग़बत व दिलचस्पी रखना, और दुनिया से जो धोखे की जगह है, भागना और अलग होना। और मौत के आने से पहले उसके लिए तैयारियाँ करना।

एक बार आबादी से अलग-थलग रहने वाले एक बुज़ुर्ग से हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने "हरजन्" (यानी सीने के तंग होने) के बारे में पूछा तो उसने कहा यह एक दरख़्त होता है जिसके पास न तो चरवाहे जाते हैं, न जानवर न पशु। आपने फ़रमाया सच है ऐसा ही मुनाफ़िक़ का दिल होता है कि उसमें भलाई जगह नहीं पाती। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि इस्लाम बावजूद आसान और कुशादा (स्पष्ट और खुला) होने के उसे सख़्त और तंग मालूम होता है। ख़ुद क़ुरआन में है:

وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ.

ख़ुदा ने तुम्हारे दीन में कोई तंगी नहीं रखी।

लेकिन मुनाफ़िक़ का शक्की दिल इस नेमत से मेहरूम रहता है। उसके लिए "ला इला-ह इल्लल्लाहु" का इक़रार एक मुसीबत है। जैसे किसी पर आसमान के लिए चढ़ना मुश्किल हो। जैसे वह उसके बस की बात नहीं, इसी तरह तौहीद व ईमान भी उसके क़ब्ज़े से बाहर हैं। पस मुर्दा दिल वाले कभी भी इस्लाम क़बूल नहीं करते। इसी तरह अल्लाह तआ़ला बेईमानों पर शैतान मुक़र्रर कर देता है जो उन्हें बहकाते रहते हैं और ख़ैर (भलाई और सही राह) से उनके दिल को फेरा करते हैं, नहूसतें उन पर बरसती रहती हैं और अ़ज़ाब उन पर उतरते रहते हैं।

और यही आपके रब का सीधा रास्ता है। हमने नसीहत हासिल करने वालों के वास्ते इन आयतों को साफ़-साफ़ बयान कर दिया। (127) उन लोगों के वास्ते उनके रब के पास सलामती का घर है, और वह (यानी अल्लाह तआ़ला) उनसे उनके आमाल की वजह से मुहब्बत रखता है। (128)	وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

इस्लाम ही सीधा रास्ता है

गुमराहों का तरीक़ा बयान फ़रमाकर अपने इस दीने हक़ के बारे में फ़रमाता है कि सीधी और साफ़

राह जो ख़ुदा की तरफ़ पहुँचा दे, यही है। पस शरीअ़ते मुहम्मदी कलामे बारी ही सीधा रास्ता है। चुनाँचे हदीस में भी क़ुरआने करीम की सिफ़त में कहा गया है कि ख़ुदा की सीधी राह, ख़ुदा की मज़बूत रस्सी और हिक्मत वाला यही ज़िक्र है (देखें तिर्मिज़ी शरीफ़, मुस्नद अहमद वग़ैरह)। जिन्हें ख़ुदा की जानिब से अ़क़्ल व समझ, इल्म व अ़मल दिया गया है उनके सामने तो वज़ाहत के साथ ख़ुदा की आयतें आ चुकीं। उन ईमान वालों के लिए ख़ुदा के यहाँ जन्नत है। जैसे ये सलामती की राह यहाँ चले वैसे ही क़ियामत के दिन सलामती का घर इन्हें मिलेगा। वही सलामतियों का मालिक अल्लाह तआ़ला ही उनका कारसाज़ और वली है। हाफ़िज़ व मददगार, ताईद करने वाला और मौला उनका वही है, उनके नेक आमाल का बदला यह पाक घर होगा जहाँ हमेशगी है, और पूरी तरह राहत व इत्मीनान, सुरूर और ख़ुशी ही ख़ुशी है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِاسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَاشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ○	और जिस दिन अल्लाह तआ़ला तमाम मख़्लूक़ों को जमा करेंगे (और कहेंगे) ऐ जिन्नात की जमाअ़त! तुमने इनसानों (को गुमराह करने) में बड़ा हिस्सा लिया। जो इनसान उनके साथ ताल्लुक़ रखने वाले थे वे (इक़रार के तौर पर) कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हममें एक ने दूसरे से फ़ायदा हासिल किया था, और हम अपनी इस मुक़र्ररा मीयाद "यानी निश्चित समय" तक आ पहुँचे जो आपने हमारे लिए मुअ़य्यन "यानी निर्धारित" फ़रमाई थी (यानी क़ियामत)। वह (यानी अल्लाह तआ़ला सारे काफ़िर जिन्न और काफ़िर इनसानों से) फ़रमाएँगे कि तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है, जिसमें हमेशा-हमेशा को रहोगे। हाँ अगर ख़ुदा ही को मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है)। बेशक आपका रब बड़ा हिक्मत वाला, बड़ा इल्म वाला है। (129)

गुमराही जहन्नम का एक रास्ता है

वह दिन क़रीब है जबकि अल्लाह तआ़ला उन सबको जमा (इकट्ठा) करेगा। जिन्नात, इनसान, आ़बिद, माबूद सब एक मैदान में खड़े होंगे। उस वक़्त जिन्नात से इरशाद होगा कि तुमने इनसानों को ख़ूब बहकाया और ग़लत राह पर डाला। इनसानों को याद दिलाया जाएगा कि मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था कि शैतान की न मानना, वह तुम्हारा दुश्मन है, मेरी ही इबादत करते रहना, यही सीधी राह है, लेकिन तुमने समझ से काम न लिया और शैतानी धोखे में आ गए। उस वक़्त जिन्नात के दोस्त इनसान जवाब देंगे कि हाँ इन्होंने हुक्म दिया और हमने अ़मल किया, दुनिया में एक दूसरे के साथ रहे और फ़ायदा हासिल करते रहे। जाहिलीयत (इस्लाम आने से पहले) के ज़माने में जो मुसाफ़िर कहीं उतरता तो कहता कि मैं इस वादी के बड़े जिन्न की पनाह में आता हूँ। इनसानों को जिन्नात से यही फ़ायदा पहुँचता था कि वे अपने आपको

उनका सरदार समझने लगे थे। मौत के वक़्त तक यही हालत रही, उस वक़्त जवाब मिलेगा कि अच्छा अब तुम साथ ही जहन्नम में जाओ, वहीं हमेशा पड़े रहना। ऊपर तर्जुमे में जो यह आया है कि "अगर ख़ुदा ही को मन्ज़ूर हो" तो इससे बाज़ ने दुनिया की मुद्दत और बाज़ ने मरने के बाद से क़ियामत तक के ज़माने (यानी बरज़ख़) को मुराद लिया है। इसका पूरा बयान सूरः हूद की आयतः

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَاشَآءَ رَبُّكَ..... الخ

की तफ़सीर में आएगा। इस आयत से मालूम हो रहा है कि कोई किसी के लिए जन्नत या दोज़ख़ का फ़ैसला नहीं कर सकता, सब अल्लाह की मर्ज़ी व चाहत पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है।

और इसी तरह हम बाज़ कुफ़्फ़ार को बाज़ के क़रीब रखेंगे उनके आमाल के सबब। (130)	وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۟ ع ١٥

बुरे अ़मल वाले एक दूसरे के अन्जाम में शरीक

लोगों की दोस्तियाँ आमाल पर होती हैं। मोमिन का दिल मोमिन से ही लगता है अगरचे वह कहीं का हो और कैसा ही हो, और काफ़िर भी एक ही हैं अगरचे वे विभिन्न मुल्कों और विभिन्न ज़ात-पात के हों। ईमान तमन्नाओं और ज़ाहिरी दिखावे का नाम नहीं (यानी अ़मल ज़रूरी है, बिना अ़मल के सिर्फ़ तमन्ना करने से काम नहीं चलेगा)।

इस मतलब के अ़लावा इस आयत का एक मतलब यह भी है कि इसी तरह एक के बाद एक तमाम काफ़िर लोग जहन्नम में झोंक दिए जाएँगे। मालिक बिन दीनार रह. कहते हैं कि मैंने ज़बूर में पढ़ा है, ख़ुदा फ़रमाता है- मैं मुनाफ़िक़ों से इन्तिक़ाम मुनाफ़िक़ों के साथ ही लूँगा। फिर सबसे ही इन्तिक़ाम लूँगा। इसकी तस्दीक़ (ताईद व पुष्टि) क़ुरआन की उपरोक्त आयत से भी होती है कि हम वली (दोस्त और सरपरस्त) बनाएँगे बाज़ ज़ालिमों को बाज़ का, यानी ज़ालिम जिन्नात और ज़ालिम इनसान। फिर आपने आयतः

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ.

की तिलावत की और फ़रमाया कि हम सरकश (नाफ़रमान) जिन्नों को सरकश इनसानों पर मुसल्लत कर देंगे। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है- जो ज़ालिम की मदद करेगा अल्लाह तआ़ला उसी को उस पर मुसल्लत कर देगा। किसी शायर का क़ौल है:

وَمَامِنْ يَّدٍ اِلَّا يَدُ اللّٰهِ فَوْقَهَا ☆ وَمَا ظَالِمٌ اِلَّا سَيُبْلٰى بِظَالِمٍ

यानी हर हाथ पर हर ताक़त पर अल्लाह का हाथ और अल्लाह की ताक़त है, और हर ज़ालिम दूसरे ज़ालिम के पंजे में फंसने वाला है।

मतलब इस आयत का यह है कि जिस तरह हमने उन नुक़सान और घाटा उठाने वाले लोगों के दोस्त उनके बहकाने वाले जिन्नों को बना दिया, इसी तरह ज़ालिमों में बाज़ को बाज़ (यानी एक दूसरे) का वली (दोस्त और साथी) बना देते हैं, और बाज़ के ज़रिये बाज़ हलाक होते हैं, और हम उनके ज़ुल्म व नाफ़रमानी और बग़ावत का बदला उन्हीं में से कुछ के ज़रिये कुछ को दिला देते हैं।

Maktab_E_Ashraf

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝	ऐ जिन्नात और इनसानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम्ही में से पैग़म्बर नहीं आए थे? जो तुमसे मेरे अहकाम बयान किया करते थे, और तुमको इस आज के दिन की ख़बर दिया करते थे। वे सब अर्ज़ करेंगे कि हम अपने ऊपर (जुर्म का) इक़रार करते हैं। और उनको दुनियावी ज़िन्दगी ने भूल में डाल रखा है, और ये लोग इक़रार करेंगे कि वे काफ़िर थे। (131)

दुनिया की ज़िन्दगी एक धोखा है

यह एक और मलामत और फटकार है जो क़ियामत के दिन ख़ुदा की तरफ़ से इनसानों और जिन्नों को होगी। उनसे सवाल होगा कि क्या तुम में से ही तुम्हारे पास मेरे भेजे हुए पैग़म्बर नहीं आए थे? यह याद रहे कि रसूल तमाम के तमाम इनसान ही थे, कोई जिन्न रसूल नहीं हुआ। पहले और बाद के तमाम इमामों और उलेमा का मज़हब यही है। जिन्नात में नेक लोग थे और जिन्नों को नेकी की तालीम करते थे, बदी से रोकते थे, लेकिन रसूल सिर्फ़ इनसानों में से ही आते रहे। ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम से एक रिवायत है कि जिन्नात में भी रसूल होते हैं और दलील उनकी एक तो यह आयत है, सो यह तो कोई दलील नहीं, इसलिए कि इसमें इस बात की कोई वज़ाहत नहीं, और यह आयत तो बिल्कुल वैसी ही है जैसेः

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ..... يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ.... الخ

तक की आयतें। साफ़ ज़ाहिर है कि मोती मरजान सिर्फ़ खारी पानी के समुद्रों में निकलते हैं, मीठे पानी से नहीं निकलते। लेकिन इन आयतों में दोनों क़िस्म के समुद्रों में से मोतियों का निकलना पाया जाता है, तो मुराद यही है कि समुद्रों में से (यानी खारी या मीठा मुराद नहीं बस समुद्र मुराद है)। इसी तरह इस आयत में मुराद जिन्नों इनसानों की जिन्स (प्रजाति और मजमूए) में से है, न कि उन दोनों में से, हर एक में से। और रसूलों के सिर्फ़ इनसान ही होने की दलीलः

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ......بَعْدَ الرُّسُلِ...الخ

तक की आयतें औरः

وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ......

हैं। (सूरः निसा आयत 163-165)

पस साबित होता है कि अल्लाह के दोस्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद नुबुव्वत आप ही की औलाद में सीमित रही। और यह भी ज़ाहिर है कि इस बात का क़ायल एक भी नहीं कि आपसे पहले नबी जिन्न होते थे और फिर उनसे नुबुव्वत छीन ली गई। और यह आयत इससे भी स्पष्ट है। फ़रमायाः

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ.

Maktab E Ashraf

यानी तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में आते-जाते थे।

एक और आयत में है और उसने यह मसला बिल्कुल साफ़ कर दिया है। फ़रमाता है:

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى.

यानी तुझसे पहले हमने मर्दों को ही भेजा है जो शहरों के ही थे, जिनकी तरफ़ हमने अपनी 'वही' (ख़ुदा का पैग़ाम) नाज़िल फ़रमाई थी। चुनाँचे जिन्नात का यही क़ौल क़ुरआन में मौजूद है:

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ ....الخ

जबकि हमने जिन्नों की एक जमाअ़त को तेरी तरफ़ भेजा जो क़ुरआन सुनते रहे। जब सुन चुके तो वापस अपनी क़ौम के पास गए और उन्हें आगाह करते हुए कहने लगे कि हमने मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद की आसमान से उतरी हुई किताब सुनी, जो अपने से पहले की किताबों की तस्दीक़ करती (यानी उनको सच्चा कहती) है और हक़ रास्ता दिखाती है, और सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है। पस तुम सब अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाले की मानो और उस पर ईमान लाओ ताकि ख़ुदा तुम्हारे गुनाहों को बख़्शे और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाबों से बचा ले। ख़ुदा की तरफ़ से जो पुकारने वाला है उसकी न मानने वाले ख़ुदा को आ़जिज़ नहीं कर सकते, न उसके सिवा अपना कोई और कारसाज़ (काम बनाने वाला) और वली पा सकते हैं। बल्कि ऐसे लोग खुली गुमराही में हैं।

तिर्मिज़ी वग़ैरह की हदीस में है कि उस मौक़े पर जिन्नात को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सूरः रहमान पढ़कर सुनाई थी, जिसमें एक आयतः

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَا الثَّقَلٰنِ .....

है। यानी ऐ जिन्नो व इनसानो! हम सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ ही पूरी तवज्जोह करने के लिए जल्द ही फ़ारिग़ होंगे, फिर तुम अपने रब की किस-किस नेमत को झुठलाओगे?

ग़र्ज़ यह कि इनसानों और जिन्नों को इस आयत में नबियों के उनमें से भेजने में बतौर ख़िताब के शामिल कर लिया है, वरना रसूल सब इनसान ही होते हैं। नबियों का काम यही रहा कि वे ख़ुदा की आयतें सुनाएँ और क़ियामत के दिन से डराएँ। इस सवाल के जवाब में सब कहेंगे कि हाँ हमें इक़रार है तेरे पैग़म्बर हमारे पास आए और तेरा कलाम भी पहुँचाया, इस दिन से भी सचेत कर दिया था। फिर अल्लाह पाक फ़रमाता है कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में गुज़ारी, रसूलों को झुठलाते रहे, मोजिज़ों की मुख़ालफ़त करते रहे, दुनिया की चमक-दमक पर रीझ गये, इच्छा-परस्ती में पड़े रहे, क़ियामत के दिन अपनी ज़बानों से अपने कुफ़्र का इक़रार करने लगे, कि हाँ बेशक हमने नबियों की बात नहीं मानी।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ○ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ○	**यह इस वजह से है कि आपका रब किसी बस्ती वालों को कुफ़्र के सबब ऐसी हालत में हलाक नहीं करता कि उस बस्ती के रहने वाले बेख़बर हों। (132) और हर एक के लिए दर्जे हैं उनके आमाल के सबब, और आपका रब उनके आमाल से बेख़बर नहीं है। (133)**

Maktab E Ashraf

आमाल का हिसाब-किताब ज़रूरी है

जिन्नात और इनसानों की तरफ़ रसूल भेजकर किताबें नाज़िल फ़रमाकर उनके उज़्र ख़त्म कर दिये इसलिए कि यह ख़ुदा का तरीक़ा और आदत नहीं कि लोगों को अपनी मंशा मालूम कराये बग़ैर अपने अ़ज़ाब में पकड़े, और बग़ैर अपना पैग़ाम पहुँचाए बिना वजह ज़ुल्म के साथ हलाक करे। फ़रमाता है:

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ.

यानी कोई बस्ती ऐसी नहीं जहाँ कोई आगाह करने वाला न आया हो।

एक और आयत में है- हमने हर उम्मत में रसूल भेजा कि ऐ लोगो! अल्लाह ही की इबादत करो और उसके सिवा हर एक की इबादत से बचो। एक और जगह है- हम रसूलों को भेजने से पहले अ़ज़ाब नहीं किया करते। सूरः मुल्क में है- जब जहन्नम में कोई जमाअ़त जाएगी तो वहाँ के दारोग़ा उनसे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास आगाह करने (सही बात और सीधा रास्ता बताने) वाले नहीं आए थे? वे कहेंगे कि आए थे। और भी इस मज़मून की बहुत सी आयतें हैं।

इस आयत के पहले जुमले के एक मायने इमाम इब्ने जरीर रह. ने और भी बयान किये हैं, और वास्तव में वह मायने बहुत दुरुस्त हैं। इमाम साहिब ने भी इसी को तरजीह दी है, यानी यह कि किसी बस्ती वालों के ज़ुल्म और गुनाहों की वजह से अल्लाह तआ़ला उन्हें उसी वक़्त हलाक नहीं करता जब तक नबियों को भेजकर उन्हें ग़फ़लत से जगा न दे। हर आ़मिल (अ़मल करने वाला) अपने अ़मल के बाद बदले का मुस्तहिक़ है, नेक नेकी का, बद बदी का। चाहे इनसान हो चाहे जिन्न हो। बदकारों के जहन्नम में दर्जे उनकी बदकारी के मुताबिक़ मुक़र्रर हैं, जो लोग ख़ुद भी कुफ़्र करते हैं और दूसरों को भी ख़ुदा की राह से रोकते हैं उन्हें अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब होंगे, और उनके फ़साद (बुराई और बिगाड़ फैलाने) का बदला मिलेगा। हर आ़मिल का अ़मल अल्लाह पर ज़ाहिर है, ताकि क़ियामत के दिन हर शख़्स को उसके किए हुए का बदला मिल जाए।

और आपका रब बिल्कुल ग़नी है, रहमत वाला है, अगर वह चाहे तो तुम सब को उठा ले और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह आबाद कर दे, जैसा कि तुमको एक-दूसरी क़ौम की नस्ल से पैदा किया है। (134) जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह बेशक आने वाली चीज़ है, और तुम आ़जिज़ नहीं कर सकते। (135) आप यह फ़रमा दीजिए कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी हालत पर अ़मल करते रहो, मैं भी अ़मल कर रहा हूँ। सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हो जाता है कि (उस जहान	وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۗ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ ۢبَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ○ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ○ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ

Maktab E Ashraf

تَعْلَمُوْنَ لا مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ط اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ○	का) अन्जामकार किसके लिए नफ़ा देने वाला होगा। यह यक़ीनी बात है कि हक़-तल्फ़ी करने वालों को कभी फ़लाह "यानी कामयाबी" न होगी। (136)

वह हर चीज़ पर क़ादिर है

अल्लाह तआ़ला अपनी तमाम मख़्लूक़ से बेनियाज़ (बेपरवाह, यानी किसी चीज़ में किसी का ज़रूरतमन्द नहीं) है। उसे किसी की ज़रूरत नहीं, उसे किसी से कोई फ़ायदा नहीं, वह किसी का मोहताज नहीं, सारी मख़्लूक़ हर हाल में उसकी मोहताज है। वह बड़ी ही नर्मी और मेहरबानी वाला है, रहम व करम उसकी विषेश सिफ़तें हैं। जैसे अल्लाह का फ़रमान हैः

اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ.

ख़ुदा अपने बन्दों के साथ मेहरबानी और लुत्फ़ से पेश आने वाला है। तुम जो उसकी मुख़ालफ़त कर रहे हो तो याद रखो कि वह चाहे तो तुम्हें एक आन (क्षण और लम्हे) में ग़ारत कर सकता है, और तुम्हारे बाद ऐसे लोगों को बसा सकता है जो उसकी इताअ़त (हुक्मों का पालन) करें। यह उसकी क़ुदरत में है। तुम देख लो उसने आख़िर औरों का क़ायम-मक़ाम (उत्तराधिकारी) तुम्हें भी बनाया है। एक ज़माने और दौर के बाद दूसरा ज़माना और दौर वही लाता है। एक को मार डालता है दूसरे को पैदा करता है। लाने लेजाने पर उसे पूरी क़ुदरत हासिल है।

जैसे दूसरी जगह फ़रमाता है- अगर वह चाहे तो ऐ लोगो! तुम सब को फ़ना कर दे और दूसरों को ले आए। (यानी तुम्हारी जगह कोई और क़ौम पैदा कर दे) वह इस पर क़ादिर है। फ़रमाता हैः

يَآاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ....

लोगो! तुम सब के सब मोहताज हो और अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ और तारीफ़ों वाला है। अगर वह चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे, और नई मख़्लूक़ ले आए। अल्लाह के लिए यह कोई मुश्किल बात नहीं। एक जगह इरशाद हैः

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ.

अल्लाह ग़नी है और तुम सब फ़क़ीर हो।

फ़रमाता है अगर तुमने अल्लाह से मुँह मोड़ा तो वह तुम्हें हटाकर दूसरी क़ौम लाएगा जो तुम जैसे न होंगे। ज़ुर्रियत (नस्ल) से मुराद असल व नसल है। ऐ नबी सल्ल. आप इनसे कह दीजिए कि क़ियामत जन्नत, दोज़ख़ वग़ैरह के जो वादे तुमसे किए जा रहे हैं वे यक़ीनन सच्चे हैं, और यह सब कुछ होने वाला है। तुम ख़ुदा को आ़जिज़ नहीं कर सकते, वह तुम्हारे लौटाने (यानी मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा करने) पर क़ादिर है। तुम गल-सड़कर मिट्टी हो जाओगे फिर तुम्हें नई पैदाईश में पैदा करेगा, उसके लिये कोई काम मुश्किल नहीं। हुज़ूर सल्ल. को फ़रमाते हैं कि ऐ नबी! अगर तुम में अ़क़्ल है तो अपने आपको मुर्दों में

Maktab E Ashraf

गिनो, अल्लाह तआ़ला की फ़रमाई हुए सब बातें यक़ीनन होने वाली हैं, कोई नहीं जो ख़ुदा के इरादे में उसे पस्त कर दे, उसकी मशीयत (मर्ज़ी और चाहत) को न होने दे। लोगो! तुम जो करना चाहो करो, मैं अपने तरीक़े पर क़ायम हूँ। अभी जल्दी ही मालूम हो जाएगा कि हिदायत (सही रास्ते) पर कौन था और गुमराही पर कौन था। कौन नेक अन्जाम वाला होता है और कौन घुटनों में सर डालकर रोता है। जैसे फ़रमाया- बेईमानों (यानी काफ़िरों) से कह दो कि तुम अपने धंधे में लगे रहो मैं भी अपने काम में लगा हुआ हूँ। तुम इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार में हैं, मालूम हो जाएगा कि अन्जाम के लिहाज़ से कौन अच्छा रहा। याद रखो ख़ुदा ने जो वादे अपने रसूल से किए हैं सब यक़ीनी हैं।

चुनाँचे दुनिया ने देख लिया कि वह नबी सल्ल. जिसका सारा जहान मुख़ालिफ़ था, जिसका नाम लेना दूभर था, जो अकेला व तन्हा था, जो वतन से निकाल दिया गया था, जिसकी दुश्मनी हर एक करता था, ख़ुदा ने उसे ग़लबा दिया, लाखों दिलों पर उसकी हुकूमत हो गई, उसकी ज़िन्दगी ही में अ़रब के तमाम इलाक़े का वह तन्हा मालिक बन गया। यमन और बेहरीन पर भी उसके सामने उसका झंडा लहराने लगा, फिर उसके जानशीनियों (उत्तराधिकारियों) ने दुनिया को खंगाल डाला, बड़ी-बड़ी हुकूमतों को ख़त्म कर दिया, जहाँ गए छा गये, जिधर रुख़ किया फ़तह हासिल की, यही अल्लाह का वादा था कि मैं और मेरा रसूल ग़ालिब आएँगे। मुझसे ज़्यादा क़ुव्वत व इज़्ज़त किसी की नहीं। फ़रमा दिया था कि हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की मदद फ़रमाएँगे, दुनिया में भी आख़िरत में भी.....।

रसूलों की तरफ़ उसने 'वही' (अपना पैग़ाम) भेजी थी कि हम ज़ालिमों को बरबाद कर देंगे और उनके बाद ज़मीनों के सरताज तुम्हें बना देंगे, क्योंकि तुम मुझसे और मेरे इरशाद से डरने वाले हो। वह पहले ही फ़रमा चुका था कि तुममें से ईमान वालों और नेक काम करने वालों को ज़मीन का सुल्तान (हाकिम) बना दूँगा जैसा कि पहले से यह दस्तूर चला आया है, ऐसे लोगों को अल्लाह तआ़ला उनके दीन में मज़बूती, फ़राख़ी और वुस्अ़त देगा, जिस दीन से वह ख़ुश है और उनके ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा कि वे मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे.....। अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत से अपना यह वादा पूरा फ़रमा दिया। तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

और (अल्लाह तआ़ला ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं, उन लोगों ने उनमें से कुछ हिस्सा अल्लाह का मुक़र्रर किया और अपने गुमान के मुताबिक़ कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे माबूदों का है। फिर जो चीज़ उनके माबूदों की होती है वह तो अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुँचती और जो चीज़ अल्लाह की होती है वह उनके माबूदों की तरफ़ पहुँच जाती है, उन्होंने क्या बुरी तजवीज़ निकाल रखी है। (137)

Maktab E Ashraf

यह क्या इन्साफ़ है?

मुश्रिकों के एक तो कुफ़्र व शिर्क के उस नये तरीक़े की ईजाद का बयान हो रहा है कि सब चीज़ें पैदा की हुई तो हमारी, फिर ये उसमें से कुछ हिस्सा तो हमारे नाम का ठहराते हैं और कुछ हिस्सा अपने गढ़े हुए माबूदों का, जिन्हें वे हमारा शरीक बनाए हुए हैं। इसी के साथ यह भी करते थे कि ख़ुदा के नाम का ठहराया हुआ बुतों के नाम वाले से मिल गया तो वह बुतों का हो गया, लेकिन अगर बुतों के ठहराये हुए में से कुछ ख़ुदा के नाम वाले में मिल गया तो उसे झट से निकाल लेते हैं। (अ़रब के मुश्रिक लोग जब फ़सल वग़ैरह काटकर ग़ल्ला जमा करते तो एक हिस्सा तो ख़ुदा का लगाते और एक बुतों का, अगर हिस्सा लगाते हुए ख़ुदा के हिस्से में से कुछ बुतों के हिस्से में गिर जाता तो उसको फ़ौरन निकाल लेते, लेकिन अगर बुतों के हिस्से में ख़ुदा का कुछ गिर जाता तो उसको रहने देते और कहते कि ख़ुदा को क्या ज़रूरत है। इस पर ख़ुदा तआ़ला अपनी नाराज़गी का इज़्हार फ़रमा रहे हैं)।

कोई ज़बीहा (ज़िबह किया हुआ जानवर) अगर अल्लाह के नाम का करें भी तो उस पर अपने झूठे माबूदों का नाम लेते हैं और अगर कोई ज़बीहा अपने माबूदों के नाम का करें तो भूलकर भी उस पर नामे ख़ुदा नहीं लेते, यह कैसा बुरा बटवारा है। अव्वल तो यह तक़सीम ही बेवक़ूफ़ी की निशानी है कि सब चीज़ें ख़ुदा की पैदा की हुईं उसी की मिल्कियत हैं फिर उनमें से दूसरे के नाम की किसी चीज़ को करने वाला कौन? जो ख़ुदा ला-शरीक (यानी उसका कोई शरीक और साझी नहीं) है, उसके शरीक ठहराने का उन्हें क्या हक़ है? फिर इस ज़ुल्म को देखो कि ख़ुदा के हिस्से में से बुतों को तो पहुँच जाए और बुतों के हिस्से में से ख़ुदा को न पहुँच सके। ये कैसे बुरे उसूल हैं। ऐसी ही ग़लती यह भी थी कि ख़ुदा के लिए लड़कियाँ और अपने लिए लड़के, और उसके बन्दों को उसका हिस्सा और अंश क़रार देकर अपने को कुफ़्र में मुलव्वस करते थे। इतना नहीं सोचते थे कि यह कैसे मुम्किन है कि लड़के तो हमारे हों और जिन लड़कियों से तुम जलो वे ख़ुदा की हों? कैसी बुरी तक़सीम है।

और इसी तरह बहुत-से मुश्रिकों के ख़्याल में उनके माबूदों ने अपनी औलाद के क़त्ल करने को अच्छा और पसन्दीदा बना रखा है ताकि वे उनको बरबाद करें और ताकि उनके तरीक़े को गड़-मड़ कर दें। और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो ये ऐसा काम न करते। तो आप उनको और जो कुछ ये ग़लत बातें बना रहे हैं, यूँ ही रहने दीजिए। (138)	وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝

औलाद को क़त्ल करना शैतानी वस्वसा था

जैसे शैतानों ने उन्हें इस राह पर लगा दिया है कि वे ख़ुदा के लिये ख़ैरात करें तो अपने बुज़ुर्गों के नाम का भी हिस्सा निकालें, इसी तरह उन्हें शैतान ने इस राह पर लगा रखा है कि वे अपनी औलाद को बेवजह क़त्ल करें। कोई इस वजह से कि हम उसे खिलाएँगे कहाँ से? कोई इस वजह से कि इन बेटियों की बिना पर हम किसी के ससुर बनेंगे, वग़ैरह। इस शैतानी हरकत का नतीजा हलाकत और दीन की उलझन है

Maktaba Ashraf

यहाँ तक कि यह बदतरीन तरीक़ा उनमें फैल गया था कि लड़की के होने की ख़बर उनके चेहरे सियाह कर देती थी, उनके मुँह से यह निकलता न था कि मेरे यहाँ लड़की हुई। क़ुरआन ने फ़रमाया कि उन बेगुनाह ज़िन्दा दफ़्न की हुई बच्चियों से क़ियामत के दिन सवाल होगा कि वे किस गुनाह पर क़त्ल कर दी गईं? पस यह सब वस्वसे शैतानी थे। लेकिन यह याद रहे कि रब का इरादा और इख़्तियार इससे अलग न था, अगर वह न चाहता तो मुश्रिक ऐसा न कर सकते, लेकिन इसमें भी उसकी हिक्मत है, उससे कोई पूछने और सवाल करने वाला नहीं, और उसकी पूछगछ और सवाल से कोई बच नहीं सकता। पस ऐ नबी! तू उनसे और उनके इस बोहतान से ख़ुद को अलग रख, ख़ुदा ख़ुद उनसे निपट लेगा।

और वे अपने (बातिल) ख़्याल पर यह भी कहते हैं कि ये (मख़्सूस) मवेशी हैं और (मख़्सूस) खेत हैं, जिनका इस्तेमाल हर शख़्स को जायज़ नहीं, उनको कोई नहीं खा सकता सिवाय उनके जिनको हम चाहें, और कहते हैं कि ये (मख़्सूस) मवेशी हैं जिन पर सवारी या बोझ लादने का काम हराम कर दिया गया है, और (मख़्सूस) मवेशी हैं जिन पर ये लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते, (ये सब बातें) सिर्फ़ अल्लाह पर बोहतान बाँधने के तौर पर (कहते) हैं। अभी अल्लाह तआ़ला उनको उनके बोहतान बाँधने की सज़ा दिए देता है (139)	وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ○

मनमानी कार्रवाईयाँ

'हिज्र' के मायने हराम के हैं। ये तरीक़े शैतानी थे, कोई ख़ुदा का रास्ता न था। अपने माबूदों के नाम ये चीज़ें कर देते थे, फिर जिसे चाहते खिलाते। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ..... الخ

यानी बतलाओ तो यह ख़ुदा के दिए हुए रिज़्क़ में से तुम जो अपने तौर पर हलाल हराम मुक़र्रर कर लेते हो, इसका हुक्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया है या तुमने अपनी मर्ज़ी से गढ़ लिया है? दूसरी आयत में साफ़ फ़रमाया:

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ...... الخ

यानी यह काफ़िरों की नादानी, तोहमत और झूठ है। 'बहीरा' 'साइबा' और 'हाम' नाम रखकर इन जानवरों को अपने झूठे माबूदों के नाम पर छोड़ देते थे। फिर उनसे सवारी नहीं लेते थे। जब उनके बच्चे होते थे तो उनको ज़िबह करते थे। हज के लिए भी उन जानवरों पर सवारी करना हराम जानते थे। न किसी काम में उनको लगाते थे, न उनका दूध निकालते थे। फिर इन कामों को शरई काम क़रार देते थे और ख़ुदा का फ़रमान जानते थे। अल्लाह उन्हें उनके करतूत का और बोहतान बाँधने का बदला देगा।

Maktab-E-Ashraf

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝

और वे (यूँ भी) कहते हैं कि जो चीज़ उन मवेशियों के पेट में (से निकलती) है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर वह (पेट का निकला हुआ बच्चा) मुर्दा है तो उस (से नफ़ा उठाने के जायज़ होने) में (मर्द व औरत) सब बराबर हैं, अभी अल्लाह तआला उनको उनकी ग़लत-बयानी की सज़ा दिये देता है। बेशक वह बड़ा हिक्मत वाला है बड़ा इल्म वाला है। (140)

यह भी ग़लत है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जाहिलीयत (इस्लाम ज़ाहिर होने से पहले के ज़माने) में यह भी रिवाज था कि जिन चौपायों को वे अपने झूठे माबूदों के नाम पर छोड़ देते थे उनका दूध सिर्फ़ मर्द पीते थे। जब उनके बच्चा होता तो अगर नर होता तो सिर्फ़ मर्द ही खाते, अगर मादा होता तो उसे ज़िबह ही न करते, और अगर पेट ही से मुर्दा बच्चा निकलता तो मर्द औरत सब ही खाते। अल्लाह ने इस फ़ेल से भी रोका। इमाम शअ़बी रह. का क़ौल है कि बहीरा का दूध सिर्फ़ मर्द पीते और अगर वह मर जाता तो गोश्त मर्द व औरत सब खाते। उनकी इन झूठी बातों का बदला ख़ुदा उन्हें देगा, क्योंकि यह सब उनका झूठ बोहतान ख़ुदा पर बाँधा हुआ था। कामयाबी व निजात इसी लिए उनसे दूर कर दी गई थी, ये अपनी मर्ज़ी से किसी को हलाल किसी को हराम कर लेते हैं, कि यह ख़ुदा के हुक्म से है, फिर उसे ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब कर देते हैं। अल्लाह जैसे हकीम का कोई फ़ेल कोई क़ौल कोई हुक्म कोई तक़दीर बिना हिक्मत के नहीं होती, वह अपने बन्दों के ख़ैर व शर (भले और बुरे) को ख़ूब अच्छी तरह जानने वाला है, और उन्हें बदले देने वाला है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۚ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ ع

वाक़ई वे लोग ख़राबी में पड़ गये जिन्होंने अपनी औलाद को महज़ बेवक़ूफ़ी की वजह से बिला किसी सनद के क़त्ल कर डाला और जो (हलाल) चीज़ें उनको अल्लाह तआला ने खाने-पीने को दी थीं उनको हराम कर लिया महज़ अल्लाह पर तोहमत बाँधने के तौर पर, बेशक ये लोग गुमराही में पड़ गये और कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए। (141)

الربع ١٦ ع ٣

औलाद का क़त्ल करना बड़ा ज़ुल्म था

औलाद के क़ातिल ख़ुदा के हलाल को हराम करने वाले, दोनों जहान की बरबादी अपने ऊपर लेने

वाले हैं। दुनिया का घाटा तो ज़ाहिर है कि उनके ये दोनों काम ख़ुद उन्हें नुक़सान पहुँचाने वाले हैं, बिना औलाद ये हो जाएँगे, माल का एक हिस्सा उनका तबाह हो जाएगा। रहा आख़िरत का नुक़सान सो चूँकि ये अल्लाह पर बोहतान बाँधते हैं, झूठे हैं, वहाँ का सबसे बुरा ठिकाना उन्हें मिलेगा।

अल्लाह की नाराज़गी और गुस्से का ये शिकार होंगे, जैसे अल्लाह का फ़रमान है कि ख़ुदा पर झूठ बाँधने वाले निजात से मेहरूम, कामयाबी से दूर हैं। ये दुनिया में अगरचे कुछ मामूली सा फ़ायदा उठा लें लेकिन आख़िरकार तो हमारे बस में आएँगे। फिर तो हम उन्हें बहुत सख़्त अ़ज़ाब चखाएँगे, क्योंकि ये काफ़िर थे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि अगर तू इस्लाम से पहले की अ़रबों की बुरी आ़दतें और ख़स्लतें मालूम करना चाहे तो सूरः अन्आ़म की "क़द ख़सिरल्लज़ी-न" वाली आयत पढ़। (बुख़ारी, मनाक़िबे क़ुरैश)

وَهُوَ الَّذِىٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

और वही (अल्लाह पाक) है जिसने बाग़ पैदा किये, वे भी जो टट्टियों "यानी बाँस या सरकन्डों के बने हुए छप्पर व झोंपड़ी" पर चढ़ाए जाते हैं, (जैसे अंगूर) और वे भी जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर के पेड़ और खेती जिनमें खाने की चीज़ें मुख़्तलिफ़ तौर की होती हैं, और आपस में ज़ैतून और अनार (यानी अनार-अनार आपस में और ज़ैतून-ज़ैतून आपस में) एक-दूसरे के जैसे भी होते हैं और (कभी) एक-दूसरे के जैसे नहीं होते, उन सबकी पैदावार खाओ जब वह निकल आए, और उसमें (शरीअ़त की रू से) जो हक़ वाजिब है वह उसके काटने (और तोड़ने) के दिन (ग़रीबों को) दिया करो। और हद से मत गुज़रो, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को ना-पसन्द करते हैं। (142) और मवेशियों में ऊँचे क़द के और छोटे क़द के, जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने तुमको दिया है खाओ, और शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (143)

अल्लाह तआ़ला की कुछ खुली निशानियाँ

हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह तआ़ला ही है, खेतियाँ, फल, चौपाये (जानवर, पशु) सब उसी के पैदा किए हुए हैं। काफ़िरों को कोई हक़ नहीं कि हराम हलाल की तक़सीम अपनी तरफ़ से कर दें। पेड़-पौधे कुछ तो बेल वाले हैं जैसे अंगूर वग़ैरह कि वे सुरक्षित होते हैं, कुछ खड़े पेड़ होते हैं जो जंगलों और

Maktaba Ashraf

पहाड़ों पर खड़े हुए हैं। देखने में एक दूसरे से मिलते-जुलते, फलों के ज़ायक़े के लिहाज़ से अलग अलग। अंगूर, खजूर ये दरख़्त तुम्हें दिये हैं कि तुम खाओ, मज़े उठाओ, लुत्फ़ पाओ, उसका हक़ उसके कटने और नाप-तौल होने के दिन ही दो। यानी फ़र्ज़ ज़कात जो उसमें मुक़र्रर हो वह अदा कर दो, पहले कुछ नहीं देते थे, शरीअ़त ने दसवाँ हिस्सा मुक़र्रर किया। और वैसे भी मिस्कीनों और भूखों का ख़्याल रखना चाहिए। चुनाँचे मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. ने हुक्म सादिर फ़रमाया था कि जिसकी खजूरें दस वसक़ से ज़्यादा हों वह चन्द ख़ोशे (गुच्छे) मस्जिद में लाकर लटका दे ताकि मिस्कीन खा लिया करें। यह भी मुराद है कि ज़कात के अ़लावा और कुछ सुलूक (यानी लोगों और ज़रूरतमन्दों को देना दिलाना) भी अपनी खेती-बाड़ी और बाग़ात के फलों से अल्लाह के बन्दों के साथ करते रहें, जैसे फल तोड़ने और खेत काटने के वक़्त उमूमन ग़रीब और मिस्कीन लोग पहुँच जाया करते हैं, उन्हें कुछ दे दिया करो। बालें पक गई हों, फल गदरा गए हों और कोई ज़रूरतमन्द शख़्स निकल आए तो ख़ातिर तवाज़ो करो। जिस दिन काटो कुछ छोड़ दो, ताकि मिस्कीनों के काम आये। उनके जानवरों का चारा हो, ज़कात से पहले भी हक़दारों को कुछ देते रहा करो।

पहले तो ऐसा करना वाजिब था लेकिन ज़कात के फ़र्ज़ होने के बाद बतौर नफ़िल रह गया। ज़कात उसमें उश्र (दसवाँ) या उश्र का आधा (बीसवाँ हिस्सा) मुक़र्रर कर दी गई, लेकिन इससे यह न समझा जाये कि यह हुक्म ख़त्म हो चुका। पहले कुछ देना था फिर मिक़्दार मुक़र्रर कर दी गई। ज़कात की मिक़्दार (मात्रा) सन् 2 हिजरी में मुक़र्रर हुई। वल्लाहु आलम

खेती काटते वक़्त और फल उतारते वक़्त सदक़ा न देने वालों की अल्लाह तआ़ला ने मज़म्मत (बुराई) बयान फ़रमाई। सूरः क़लम में उनका हिस्सा बयान फ़रमा दिया कि उन बाग़ वालों ने क़समें खाकर कहा कि सुबह होते ही आज इसके फल हम उतारेंगे, इस पर उन्होंने इन्शा-अल्लाह भी नहीं कहा। ये अभी रात को बेख़बरी की नींद में ही थे कि वहाँ आफ़ते नागहानी (आपदा) आ गई और सारा बाग़ ऐसा हो गया कि गोया फल तोड़ लिया गया है, बल्कि जलाकर राख कर दिया गया है। ये सुबह उठकर एक दूसरे को जगा कर छुपे तौर पर चुप-चाप चले कि ऐसा न हो आ़दत के मुताबिक़ फ़क़ीर मिस्कीन जमा हो जाएँ और उन्हें कुछ देना पड़े। यही सोचते हुए कि अभी फल तोड़ लाएँगे, बड़े एहतिमाम के साथ सुबह सवेरे ही वहाँ पहुँचे तो देखते क्या हैं कि सारा बाग़ मिट्टी का ढेर बना हुआ है। पहले तो कहने लगे कि भई हम रास्ता भूल गए किसी और जगह आ गए हैं, हमारा बाग़ तो शाम तक लहलहा रहा (यानी हरा-भरा) था। फिर कहने लगे नहीं! बाग़ तो यही है, हमारी क़िस्मत फूट गई, हम मेहरूम हो गये। उस वक़्त उनमें जो समझदार शख़्स था कहने लगा देखो! मैं तुमसे न कहता था कि ख़ुदा का शुक्र अदा करो, उसकी पाकीज़गी बयान करो, तो सब के सब कहने लगे हमारा रब पाक है, यक़ीनन हमने ज़ुल्म किया। फिर एक दूसरे को मलामत करने (बुरा-भला कहने) लगे कि हाय हमारी बदबख़्ती कि हम नाफ़रमान और हद से गुज़र जाने वाले बन गये थे। हमें अब भी ख़ुदा से उम्मीद है कि वह हमें इससे बेहतर अ़ता फ़रमाये। हम अब सिर्फ़ अपने रब की तरफ़ रग़बत और चाव रखते हैं। नाशुक्री करने और अकेले ख़ुद ही खाने को पसन्द करने वालों पर इसी तरह हमारे अ़ज़ाब आया करते हैं, और भी आख़िरत के बड़े-बड़े अ़ज़ाब बाक़ी हैं, लेकिन अफ़सोस कि ये समझ-बूझ और इल्म व अ़क़्ल से काम ही नहीं लेते।

यहाँ इस आयत में सदक़ा देने का हुक्म फ़रमाकर आख़िर में फ़रमाया कि फ़ुज़ूलख़र्ची से बचो, फ़ुज़ूल

Maktab-E-Ashraf

ख़र्ची करने वाला ख़ुदा का दोस्त नहीं। दस्तूर से ज़्यादा न लुटाओ, दिखावे और इतराने के तौर पर अपना माल बरबाद न करो। हज़रत साबित बिन कैस बिन शिमास रज़ि. ने अपने खजूरों के बाग़ से खजूरें उतारीं और अहद कर लिया कि आज जो सवाल करेगा मैं उसे दूँगा। लोग टूट पड़े, शाम को उनके पास एक खजूर भी न रही, इस पर यह आयत उतरी। हर चीज़ पर फ़ुज़ूलख़र्ची मना है, ख़ुदा के हुक्म से आगे बढ़ जाने का नाम फ़ुज़ूलख़र्ची है, चाहे वह किसी बारे में हो, अपना सारा ही माल लुटाकर फ़क़ीर होकर दूसरों पर अपना बोझ डाल देना भी फ़ुज़ूलख़र्ची और मना है।

यह भी मतलब है कि सदक़ा न रोको, जिससे ख़ुदा के नाफ़रमान बन जाओ, यह भी हद से आगे बढ़ना है। अगरचे ये सब मतलब इस आयत के हैं लेकिन अलफ़ाज़ के ज़ाहिर से यह मालूम होता है कि पहले खाने का ज़िक्र है, तो फ़ुज़ूलख़र्ची अपने खाने पीने में करने की यहाँ मनाही है, क्योंकि इससे अक़्ल और बदन में नुक़सान पहुँचता है। क़ुरआन की एक और आयत में है:

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا......

खाओ, पियो और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो (यानी हद से आगे न बढ़ो)।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि खाओ, पियो, पहनो, ओढ़ो लेकिन फ़ुज़ूलख़र्ची और तकब्बुर से बचो। वल्लाहु आलम। उसी ख़ुदा ने तुम्हारे लिए चौपाये (पशु और मवेशी) पैदा किए हैं। उनमें से बाज़ तो बोझ ढोने वाले हैं जैसे ऊँट, ख़च्चर, घोड़े, गधे वग़ैरह, और बाज़ छोटे क़द के हैं जैसे बकरी वग़ैरह। उन्हें फ़र्श इसलिए कहा गया कि ये क़द-काठी में पस्त (छोटे और ज़मीन के क़रीब) होते हैं, ज़मीन से मिले रहते हैं। यह भी कहा गया है कि "हमूलतुन्" से मुराद सवारी के जानवर और "फ़र्शन्" से मुराद जिनका दूध पिया जाता है, और उनका गोश्त खाया जाता है। जो सवारी के क़ाबिल नहीं, उनके बालों से लिहाफ़ और बिछौने तैयार होते हैं। यह क़ौल हज़रत सुद्दी रह. का है, और बहुत मुनासिब है। ख़ुद क़ुरआन फ़रमाता है सूरः रहमान में मौजूद है कि क्या उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि हमने उनके लिए चौपाये (पशु) पैदा कर दिए हैं जो हमारे ही पैदा किए हुए हैं, और अब ये उनके मालिक बने बैठे हैं। हमने ही तो उन्हें इनके बस में कर दिया है कि बाज़ पर ये सवारियाँ ले रहे हैं और बाज़ को ये खाने के काम में लाते हैं।

एक और आयत में है:

وَإِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً....... الخ

मतलब यह है कि हम तुम्हें उन चौपायों (पशुओं और मवेशियों) का दूध पिलाते हैं, और उनके बाल ऊन वग़ैरह से तुम्हारे ओढ़ने बिछाने और तरह-तरह के फ़ायदे उठाने की चीज़ें बनाते हैं।

एक और जगह है- अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाये जानवर पैदा किए हैं ताकि तुम उन पर सवारियाँ लो, उन्हें खाओ और भी फ़ायदे उठाओ। उन पर अपने सफ़र तय करके अपने काम पूरे करो। उसी ने तुम्हारी सवारी के लिए कश्तियाँ बना दीं, वह तुम्हें अपनी बेशुमार निशानियाँ दिखा रहा है। बतलाओ तुम किस-किस निशानी का इनकार करोगे?

फिर फ़रमाता है कि ख़ुदा की रोज़ी खाओ, फल अनाज गोश्त वग़ैरह। शैतानी राह पर न चलो, उसकी ताबेदारी न करो, जैसे मुश्रिकों ने ख़ुदा की चीज़ों में अपने आप हलाल हराम की तक़सीम (बटवारा) कर दी, तुम यह करके शैतान के साथी न बनो, वह तुम्हारा दुश्मन है, उसे दोस्त न समझो। वह तो अपने साथ तुम्हें भी ख़ुदा तआला के अ़ज़ाब में फंसाना चाहता है। देखो कहीं उसके बहकाने में न आ जाना, उसी ने तुम्हारे

Maktab E Ashraf

बाप आदम को जन्नत से निकलवाया, इस दुश्मन को भूले से भी अपना दोस्त न समझो, उसकी नस्ल और उसकी पैरवी करने वालों से बचो। याद रखो ज़ालिमों को बड़ा-बुरा बदला मिलेगा। और भी आयतें इस मज़मून की अल्लाह के कलामे पाक में बहुत सी हैं।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّــُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ع 17

(और ये मवेशी) आठ नर व मादा (पैदा किए) यानी भेड़ (और दुंबा) में दो क़िस्म (नर व मादा) और बकरी में दो क़िस्म (नर व मादा)। आप (उनसे) कहिए कि क्या अल्लाह तआ़ला ने दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हैं? तुम मुझको किसी दलील से तो बतलाओ, अगर तुम सच्चे हो। (144) और ऊँट में दो क़िस्म और गाय (भैंस) में दो क़िस्म। आप कहिए कि क्या अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हों? क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने इस (हराम व हलाल होने) का हुक्म दिया? तो उससे ज़्यादा (और) कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआ़ला पर बिला दलील झूठ तोहमत लगाए? ताकि लोगों को गुमराह करे। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ज़ालिम लोगों को (आख़िरत में जन्नत का) रास्ता न दिखलाएँगे। (145)

जाहिलीयत के कुछ रिवाज और रस्में

इस्लाम से पहले के अ़रब वालों की हालत बयान हो रही है कि उन्होंने चौपाये जानवरों की तक़सीम करके अपने तौर पर बहुत से हलाल बनाए थे और बहुत से हराम कर लिए थे। जैसे 'बहीरा' 'सायबा' 'वसीला' और 'हाम' वग़ैरह। इसी तरह खेत और बाग़ात में भी तक़सीम कर दी थी, तो अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है कि सब का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) अल्लाह है। खेत हों, बाग़ात हों, चौपाये (मवेशी और पशु) हों, फिर उन चौपायों की क़िस्में बयान फ़रमाईं- भेड़ भेड़ा, बकरी बकरा, ऊँट ऊँटनी, गाय बैल अल्लाह ने ये सब चीज़ें तुम्हारे खाने पीने को, सवारियाँ लेने को और दूसरे क़िस्म के फ़ायदों को पैदा की हैं। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَاَنْزَلَ مِنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ.... الخ

Maktab E Ashraf

इसलिए तुम्हारे लिए आठ क़िस्म के मवेशी पैदा किए हैं।

बच्चों का ज़िक्र इसलिए किया कि उन्हें भी कभी वे मर्दों के लिए ख़ास करके औरतों पर हराम क़रार देते थे। फिर उनसे ही सवाल होता है कि आख़िर इस हुर्मत (हराम होने) की कोई दलील, कोई कैफ़ियत, कोई वजह तो पेश करो? चार क़िस्म के जानवर मादा और नर मिलाकर आठ क़िस्म के हो गये, इसको ख़ुदा ने हलाल किया है, क्या तुम अपनी देखी सुनी कह रहे हो? ख़ुदा के इस फ़रमान के वक़्त तुम मौजूद थे? क्यों झूठ बोलकर बोहतान बाँधकर बेइल्मी के साथ बातें बनाकर ख़ुदा की मख़्लूक़ की गुमराही का बोझ अपने ऊपर लादकर सबसे बढ़कर ज़ालिम बन रहे हो? अगर यह हाल रहा तो अल्लाह के दस्तूर व क़ानून के मुताबिक़ अल्लाह की हिदायत से मेहरूम हो जाओगे। सबसे पहले यह नापाक रस्म अ़मर बिन हय्यि बिन क़मआ़ ख़बीस ने निकाली थी। उसने अम्बिया के दीन को शुरू शुरू में बदला और ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर छोड़े, जैसा कि सही हदीस में आ चुका है।

आप कह दीजिए कि जो कुछ अहकाम 'वही' के ज़रिये से मेरे पास आए हैं उनमें तो मैं किसी खाने वाले के लिए कोई हराम (ग़िज़ा) नहीं पाता जो उसको खाये, मगर यह कि वह मुर्दार (जानवर) हो, या बहता हुआ ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो क्योंकि वह बिल्कुल नापाक है, या जो (जानवर) शिर्क का ज़रिया हो कि अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख़्स बेक़रार और मजबूर हो जाए, शर्त यह है कि न तो मज़े का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो तो वाक़ई आपका रब माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (146)	قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

शरीअ़त की रोशनी

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे और नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म देता है कि आप उन काफ़िरों से जो अल्लाह के हलाल को अपनी तरफ़ से हराम करते हैं, फ़रमा दें कि अल्लाह की जो 'वही' मेरे पास आई है, उसमें तो हराम सिर्फ़ उन चीज़ों को किया गया है जो मैं तुम्हें सुनाता हूँ। उसमें वे चीज़ें हुर्मत वाली नहीं जिनकी हुर्मत (हराम होने) का रिवाज तुम दे रहे हो। किसी खाने वाले पर हैवानों में से सिवाये उन जानवरों के जो बयान हुए और हराम नहीं। पस आयत के मफ़हूम (मतलब और मायने) को वाज़ेह करने वाली इसके बाद की सूरः मायदा की आयतें और दूसरी हदीसें जिनमें हुर्मत का बयान है, वे होंगी। बाज़ लोग नस्ख़ भी कहते हैं और अक्सर बाद के उलेमा इसे नस्ख़ नहीं कहते, क्योंकि इसमें तो असली मुबाह (जायज़ और दुरुस्त) को उठा देना है। वल्लाहु आलम

Maktaba Ashraf

ख़ून वह हराम है जो ज़िबह के वक़्त बह जाता है, रगों और गोश्त में जो ख़ून मिला हुआ हो वह हराम नहीं। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा गधों और दरिन्दों का गोश्त और हंडिया के ऊपर जो ख़ून तैर जाये उसमें कोई हराम नहीं जानती थीं। अ़मर बिन दीनार ने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से सवाल किया कि लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जंगे ख़ैबर के मौक़े पर पालतू गधों का खाना हराम कर दिया है? आपने फ़रमाया हाँ! हकम बिन अ़मर तो रसूलुल्लाह सल्ल. से यही रिवायत करते हैं, लेकिन यह यानी इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसका इनकार करते हैं, और आयतः

قُلْ لَّآ اَجِدُ...... الخ

तिलावत करते हैं (यानी जिस आयत की यह तफ़सीर चल रही है)। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का फ़रमान है कि इस्लाम से पहले के लोग बाज़ चीज़ें खाते थे बाज़ को तबीयत के न मानने और बुरा समझने की वजह से छोड़ देते थे। अल्लाह ने अपने नबी को भेजा, अपनी किताब उतारी, हलाल हराम की तफ़सील बयान कर दी, पस जिसे हलाल कर दिया वह हलाल है और जिसे हराम कर दिया वह हराम है, और जिससे ख़ामोश रहे वह माफ़ है। फिर आपने इसी आयतः

قُلْ لَّآ اَجِدُ...... الخ

की तिलावत की। हज़रत सौदा बिन्ते ज़मआ की बकरी मर गई। जब हुज़ूर सल्ल. से ज़िक्र हुआ तो आपने फ़रमाया- तुमने उसकी खाल क्यों न उतारी? वह बोलीं क्या मुर्दा बकरी की खाल उतार लेनी जायज़ है? आपने यही आयत तिलावत फ़रमाकर फ़रमाया कि उसका सिर्फ़ खाना हराम है, लेकिन तुम उसे दबाग़त देकर (यानी खाल को नमक वग़ैरह लगाकर तैयार करके और सुखाकर) फ़ायदा उठा सकते हो। चुनाँचे उन्होंने आदमी भेजकर खाल उतरवा ली और उसकी मश्क बनवाई जो उनके पास मुद्दतों रही और काम आयी। (बुख़ारी वग़ैरह)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से क़ुन्फ़ुद (यानी ख़ार-पुश्त जिसे उर्दू में साही भी कहते हैं) के खाने के बारे में सवाल हुआ तो आपने यही आयत पढ़ी। इस पर एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से सुना है कि एक बार इसका ज़िक्र हुज़ूर सल्ल. के सामने आया था तो आपने फ़रमाया वह ख़बीसों में से एक ख़बीस है। इसे सुनकर हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने फ़रमाया अगर आप सल्ल. ने यह फ़रमाया है तो यक़ीनन वह वैसी ही है जैसी आपने इरशाद फ़रमायी। (अबू दाऊद वग़ैरह)

फिर फ़रमाया जो शख़्स इन हराम चीज़ों की तरफ़ मजबूर और बेक़रार हो जाए लेकिन वह बाग़ी और हद से निकलने वाला न हो (यानी मज़ा लेने या पेट भरने के लिये न खाये बल्कि ज़िन्दगी बचाने के लिये उसके खाने के सिवा कोई चारा न हो) तो उसे उसका खा लेना जायज़ है। ख़ुदा उसे बख़्श देगा, क्योंकि वह माफ़ करने वाला और रहीम है। इसकी पूरी तफ़सीर सूरः ब-क़रह में गुज़र चुकी है। यहाँ तो मुश्रिकों के इस फ़ेल की तरदीद (नकारना) मन्ज़ूर है जो उन्होंने ख़ुदा के हलाल को हराम कर दिया था, तो बतला दिया गया कि ये चीज़ें तुम पर हराम हैं, इसके अ़लावा हराम नहीं। अगर ख़ुदा की तरफ़ से वे भी हराम होतीं तो उनका ज़िक्र भी आ जाता। फिर तुम अपनी तरफ़ से हलाल हराम क्यों करते हो? इस बिना पर फिर और चीज़ों की हुर्मत बाक़ी नहीं रहती, जैसे घरों के पालतू गधों की मनाही और दरिन्दों (फाड़ खाने वाले जानवरों) के गोश्त की, और जंगल वाले परिन्दों की, जैसे कि उलेमा का मशहूर मज़हब है (यह याद रहे कि उनकी हुर्मत क़तई है, क्योंकि सही हदीसों से साबित है और क़ुरआन ने हदीस का मानना भी फ़र्ज़

Maktab E Ashraf

किया है)।

और यहूद पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए थे, और गाय और बकरी (के अंगों) में से उन दोनों की चर्बियाँ उनपर हमने हराम कर दी थीं, मगर वह जो उनकी पुश्त पर या अंतड़ियों में लगी हो, या जो हड्डी से मिली हो। उनकी शरारत के सबब हमने उनको यह सज़ा दी थी, और हम यक़ीनन सच्चे हैं। (147)	وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۭ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۡ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ○

यहूद पर कुछ चीज़ें हराम की गई थीं

नाख़ुन वाले जानवर चौपायों और परिन्दों में से वे जिनकी उंगलियाँ खुली हुई न हों जैसे ऊँट, शुतर-मुर्ग़, बत्तख़ वग़ैरह। सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि जो खुली उंगलियों वाला न हो। एक रिवायत में उनसे नक़ल किया गया है कि हर एक अलग-अलग उंगलियों वाला। उन्हीं में से मुर्ग़ है। क़तादा रह. का क़ौल है जैसे ऊँट, शुतर-मुर्ग़ और बहुत से परिन्दे और मछलियाँ और बत्तख़ और उस जैसे जानवर जिनकी उंगलियाँ अलग-अलग नहीं, उनका खाना यहूदियों पर हराम था। इसी तरह गाय बकरी की चर्बी भी उन पर हराम थी। यहूद का मक़ूला (कहना) था कि इस्राईल ने इसे हराम कर ली थी इसलिए हम भी इसे हराम कहते हैं। हाँ जो चर्बी पीठ के साथ लगी हुई हो और अंतड़ियों के साथ और ओझड़ी के साथ हड्डी के साथ हो, वह उन पर हलाल थी। यह भी उनके ज़ुल्म, तकब्बुर और अल्लाह की नाफ़रमानी का बदला व अन्जाम था। जैसा कि फ़रमायाः

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا......

यहूदियों के ज़ुल्म व सितम और ख़ुदा की राह से रोकने की वजह से हमने उन पर कुछ पाकीज़ा चीज़ें भी हराम कर दी थीं और ऐसा करने में हम आदिल (इन्साफ़ करने वाले) ही थे। और जैसी ख़बर हमने तुझे ऐ नबी दी है वही सच और हक़ है। यहूदियों का यह कहना कि हज़रत इस्राईल (यानी हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम) ने इसे हराम किया था, इसलिये हम भी हराम करते हैं, सही नहीं।

अहकाम में मामूली-सा फेर-बदल भी अज़ाबे इलाही को ले आता है

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मालूम हुआ कि समुरा ने शराब बेची है तो आपने फ़रमाया- अल्लाह उसे ग़ारत करे, क्या यह नहीं जानता कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला ने यहूदियों पर लानत की कि उन पर चर्बी हराम हुई तो उन्होंने उसे पिघलाकर फिर बेच दिया। हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने मक्का की फ़तह वाले साल फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने और उसके रसूल ने

शराब की, मुर्दार की, सुअर की, और बुतों की ख़रीद व फ़रोख़्त हराम फ़रमाई है। आपसे पूछा गया कि मुर्दार की चर्बियों के बारे में फ़रमाईये, उससे चमड़े रंगे जाते हैं और कश्तियों पर चढ़ाया जाता है, और चिराग़ में जलाया जाता है। आपने फ़रमाया वह भी हराम है। फिर इसके साथ ही आपने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला यहूदियों को ग़ारत करे जब उन पर चर्बी हराम हुई तो उन्होंने उसे पिघलाकर बेचा और उसकी क़ीमत खाई। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक बार आप ख़ाना-ए-काबा में मक़ामे इब्राहीम के पीछे बैठे हुए थे, आसमान की तरफ़ नज़र उठाई और तीन बार यहूदियों पर लानत फ़रमाई और फ़रमाया- अल्लाह ने उन पर चर्बी हराम की तो उन्होंने उसे बेचकर उसकी क़ीमत खा ली। अल्लाह तआला जिन पर जो चीज़ हराम करता है उस चीज़ की क़ीमत को भी उन पर हराम फ़रमा देता है। एक बार आप मस्जिदे हराम में हतीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर बैठे हुए थे, आसमान की तरफ़ देखकर हंसे और यही फ़रमाया। (अबू दाऊद, इब्ने मरदूया, मुस्नद अहमद)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह रसूले ख़ुदा सल्ल. की बीमारी के ज़माने में आपकी मिज़ाज-पुर्सी के लिए गये। उस वक़्त आप अ़दन की चादर ओढ़े हुए लेटे थे। आपने चेहरे से चादर हटाकर फ़रमाया- अल्लाह यहूदियों पर लानत करे कि बकरियों की चर्बी को हराम मानते हुए उसकी क़ीमत खाते हैं। अबू दाऊद में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मरफ़ूअ़न नक़ल किया गया है कि अल्लाह जब किसी क़ौम पर किसी चीज़ का खाना हराम करता है तो उसकी क़ीमत भी हराम फ़रमा देता है।

फिर अगर ये आपको झूठा कहें तो आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारा रब बड़ी विशाल रहमत वाला है, और उसका अ़ज़ाब मुजरिम लोगों से न टलेगा। (148)	فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْرَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ۝

मुजरिम लोग अपने बुरे अन्जाम को पहुँचेंगे

अब भी अगर तेरे मुख़ालिफ़ यहूदी और मुश्रिक वग़ैरह तुझे झूठा बतलाएँ तो भी उन्हें मेरी रहमत से मायूस न कर, बल्कि उन्हें अल्लाह की रहमत की वुस्अ़त याद दिला, ताकि उन्हें ख़ुदा की रज़ा ढूँढ़ने की तब्लीग़ हो जाए। साथ ही उन्हें ख़ुदा के अटल अ़ज़ाबों से बचने की तरफ़ भी मुतवज्जह कर। पस शौक़ दिलाने, डराने, उम्मीद डर दोनों ही एक साथ सुना दे। क़ुरआने करीम में उम्मीद के साथ ख़ौफ़ अक्सर बयान होता है। इसी सूरः के आख़िर में फ़रमाया- तेरा रब जल्द अ़ज़ाब करने वाला है और ग़फ़ूर व रहीम (यानी माफ़ करने वाला और रहम करने वाला) भी है। एक और आयत में है:

اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْمَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ..... الخ

तेरा रब लोगों के गुनाहों पर उन्हें बख़्शने वाला है, और वह बहुत सख़्त अ़ज़ाब करने वाला है।

एक और आयत में इरशाद है- मेरे बन्दों को मेरे ग़फ़ूर व रहीम होने की और मेरे अ़ज़ाब के बड़े ही दर्दनाक होने की ख़बर पहुँचा दे। एक और जगह है- वह गुनाहों का बख़्शने वाला और तौबा का क़बूल करने वाला है। और कुछ आयतों में है- तेरे रब की पकड़ बड़ी भारी और बहुत ही सख़्त है। वही पहली बार में पैदा करता है और वही दोबारा लौटायेगा। वह ग़फ़ूर (मग़फ़िरत करने वाला) है, वदूद (दोस्ती और मुहब्बत करने वाला) है, बख़्शिश करने वाला है, मेहरबान और मुहब्बत करने वाला है। और भी इस मज़मून

Mehtab E Ashraf

की बहुत सी आयतें हैं।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْشَآءَ اللّٰهُ مَآ
اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ
كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى
ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ
فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ۝ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ
الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ قُلْ
هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ
اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ
مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝ ع ١٨ ع ٦ ٥

ये मुशिरक यूँ कहने को हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम किसी चीज़ को हराम कह सकते। इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अ़ज़ाब का मज़ा चखा। आप कहिए कि क्या तुम्हारे पास कोई दलील है? तो उसको हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम लोग सिर्फ़ ख़्याली बातों पर चलते हो, और तुम बिल्कुल अटकल से बातें बनाते हो। (149) आप कहिए कि पस पूरी हुज्जत अल्लाह ही की रही, फिर अगर वह चाहता तो तुम सबको राह पर ले आता। (150) आप कहिए कि अपने गवाहों को लाओ जो इस बात पर (बाक़ायदा) गवाही दें कि अल्लाह तआ़ला ने इन (ज़िक्र की हुई चीज़ों) को हराम कर दिया है, फिर अगर वे गवाही दे दें तो आप उस गवाही को न सुनें और (ऐ मुख़ातब!) ऐसे लोगों के बातिल ख़्यालात की पैरवी मत करना जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और वे अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं। (151)

यह दलील बेकार है

मुश्रिक लोग दलील पेश किया करते थे कि हमारे शिर्क का, हलाल को हराम करने का हाल तो अल्लाह को मालूम ही है, और यह भी ज़ाहिर है कि वह अगर है तो इसके बदलने पर भी क़ादिर है, इस तरह कि हमारे दिल में ईमान डाल दे, या कुफ़्र के कामों की हमें क़ुदरत (ताक़त व हिम्मत) ही न दे, फिर भी जो वह हमारी इस रविश (तरीक़े और चलन) को नहीं बदलता तो ज़ाहिर है कि वह हमारे इन कामों से ख़ुश है। वह अगर चाहता तो हम क्या हमारे बुज़ुर्ग (बड़े और पुर्खे) भी शिर्क न करते। जैसे उनका यह क़ौल आयत "लौ शाअर्रहमानु......" में और सूरः नहल में है।

अल्लाह फ़रमाता है- इस शुब्हे ने उनसे पहले वालों को तबाह कर दिया है, अगर यह बात सच होती

तो उनके अगले बाप-दादाओं पर हमारे अ़ज़ाब क्यों आते? रसूलों की न मानने और शिर्क व कुफ़ से न हटने की वजह से वे ज़मीन पर से ज़िल्लत के साथ हटा दिए जाते? अच्छा तुम्हारे पास ख़ुदा की रज़ामन्दी का कोई सुबूत और प्रमाण पत्र हो तो पेश करो। हम तो देखते हैं कि तुम वहम-परस्त (अंधविश्वासी) हो, बुरे अ़क़ीदों पर जमे हुए हो और अटकल-पच्चू बातें ख़ुदा के ज़िम्मे गढ़ लेते हो।

उन्होंने यह भी कहा था- तुम भी कहते हो कि हम उन माबूदों की इबादत इसलिए करते हैं कि ये हमें ख़ुदा से मिला दें, हालाँकि वे न मिलाने वाले हैं, न इसकी उन्हें क़ुदरत है। उनसे तो ख़ुदा ने समझ-बूझ छीन रखी है। हिदायत्त व गुमराही की तक़सीम में भी ख़ुदा की हिक्मत और उसकी हुज्जत है। सब काम उसके इरादे से हो रहे हैं। वह मोमिनों को पसन्द फ़रमाता है और काफ़िरों से नाराज़ है। फ़रमायाः

وَلَوْشَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى.....

यानी अगर ख़ुदा चाहता तो उन सब को सही और हक़ रास्ते पर जमा कर देता।

एक और आयत में है- अगर तेरे रब की ख़्वाहिश होती तो दुनिया के सब लोग मोमिन बन जाते। एक और जगह है- अगर तेरा रब चाहता तो सब लोगों को एक ही उम्मत कर देता, ये तो मतभेदों और आपस के झगड़ों से हटेंगे नहीं सिवाये उन लोगों के जिन पर तेरा रब रहम कर दे, बल्कि उन्हें अल्लाह ने इसी लिए पैदा किया है। तेरे रब की यह बात हक़ है कि मैं जिन्नात और इनसानों से जहन्नम को पुर कर दूँगा। हक़ीक़त भी यही है कि नाफ़रमानों की कोई हुज्जत ख़ुदा के ज़िम्मे नहीं, बल्कि ख़ुदा की हुज्जत बन्दों पर है। यह जो तुमने ख़्वाह-मख़्वाह अपनी तरफ़ से जानवरों को हराम कर रखा है, उनकी हुर्मत (हराम होने) पर किसी की गवाही तो पेश कर दो। अगर ये ऐसी गवाही वाले लाएँ तो इन झूठे लोगों की हाँ में हाँ न मिलाने लगना। अल्लाह के कलाम और क़ियामत के इन इनकारियों और पूरे मुश्रिकों की बातों में कहीं तुम न आ जाना।

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ○	आप (उनसे) कहिए कि आओ मैं तुमको वे चीज़ें पढ़कर सुनाऊँ जिनको तुम्हारे रब ने तुम पर हराम फ़रमाया है, वे ये कि 1. अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठहराओ, 2. और माँ-बाप के साथ एहसान किया करो, 3. और अपनी औलाद को बदहाली और तंगी के सबब क़त्ल मत किया करो, हम तुमको और उनको (तयशुदा) रिज़्क़ देंगे, 4. और बेहयाई के जितने तरीक़े हैं उनके पास भी मत जाओ, चाहे वे एलानिया हों या छुपे तौर पर हों, 5. और जिसका ख़ून करना अल्लाह तआ़ला ने हराम कर दिया है उसको क़त्ल मत करो मगर हक़ पर, इसका तुमको ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (152)

Mahtab E Ashraf

ये अहकाम हैं

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल. की उस वसीयत को देखना चाहता हो जो आपकी आख़िरी वसीयत थी तो वह इन आयतों को "तत्तक़ून" तक (यानी सूरः अन्आम की आयत 151-153) पढ़े। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- सूरः अन्आम में मोहकम आयतें हैं, फिर यही आयतें आपने तिलावत फ़रमाईं। एक बार हुज़ूर सल्ल. ने अपने सहाबा से फ़रमाया- तुम में से कौन शख़्स है जो मेरे हाथ पर इन तीन बातों की बैअ़त करे? फिर आपने यही आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया जो इसे पूरा करेगा वह अल्लाह से अज्र पायेगा और जो किसी बात को पूरा न करेगा तो या तो दुनिया में ही सज़ा दे दी जाएगी या न दी जाए तो फिर उसका मामला क़ियामत पर है। अगर अल्लाह चाहे तो उसे बख़्श दे और अगर चाहे तो सज़ा दे। (मुस्नदे हाकिम)

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करने की बैअ़त तुम लोग मेरे हाथ पर करो। इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि उन मुश्रिकों को जो औलाद के क़ातिल हैं, ख़ुदा के रिज़्क़ में से कुछ चीज़ों को अपनी तरफ़ से हलाल और कुछ को हराम कहते हैं, ख़ुदा के साथ दूसरों को पूजते हैं, कह दीजिए कि जो चीज़ें ख़ुदा की हराम की हुई हैं उन्हें मुझसे सुन लो, मैं 'वही' (यानी अल्लाह की तरफ़ से आये पैग़ाम) के ज़रिये बयान करता हूँ तुम्हारी तरह नफ़्स की इच्छा, अंधविश्वास और अटकल व गुमान की बिना पर नहीं कहता। सबसे पहली बात तो यह है जिसकी वह तुम्हें वसीयत करता है कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करना। यह कलामे अ़रब में होता है कि एक जुमले को ग़ायब कर दिया, फिर दूसरा जुमला ऐसा कह दिया जिससे ग़ायब किया और बीच में से हटाया हुआ जुमला मालूम हो जाए।

हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मेरे पास जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आए और यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि आपकी उम्मत में से जो शख़्स ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करे वह जन्नत में दाख़िल होगा। तो मैंने कहा अगरचे उसने ज़िना किया हो या उसने चोरी की हो? आपने फ़रमाया हाँ अगरचे उसने ज़िना और चोरी की हो। मैंने फिर यही सवाल किया मुझे फिर यही जवाब मिला। फिर भी मैंने यह बात पूछी। अब के जवाब दिया कि बल्कि शराब भी पी हो।

कुछ रिवायतों में है कि हुज़ूर सल्ल. से मुवह्हिद (यानी जो अल्लाह को एक मानता हो, तौहीद का मामूली सा हिस्सा भी उसके दिल में हो) का दाख़िले जन्नत होना सुनकर हज़रत अबूज़र रज़ि. ने यह सवाल किया था और आपने यह जवाब दिया था। और आख़िरी बार फ़रमाया था अगरचे अबूज़र की नाक मिट्टी में भर जाये। चुनाँचे हदीस को बयान करने वाले जब इसे बयान फ़रमाते तो यही लफ़्ज़ दोहरा देते। सुनन में नक़ल किया गया है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- ऐ आदम के बेटे! जब तक मुझसे दुआ़ करता रहेगा और मेरी ज़ात से उम्मीद रखेगा मैं भी तेरी ख़ताओं को माफ़ फ़रमाता रहूँगा, चाहे कैसी ही हों, कोई परवाह न करूँगा। तू अगर मेरे पास ज़मीन भरकर ख़ताएँ लाएगा तो मैं तेरे पास उतनी ही मग़फ़िरत और बख़्शिश लेकर आऊँगा, शर्त यह है कि तू मेरे साथ किसी को शरीक न करता हो। तूने अगरचे ख़ताएँ की हों यहाँ तक कि वे आसमान तक पहुँच गई हों फिर तू मुझसे इस्तिग़फ़ार करे (यानी अपनी ख़ताओं और गुनाहों की माफ़ी चाहे) तो मैं तुझको बख़्श दूँगा। इस हदीस की शहादत (ताईद) में यह आयत आ सकती है:

Maktab E Ashraf

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ.....

यानी मुश्रिक (अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने वाले) को तो ख़ुदा बिल्कुल न बख़्शेगा, बाक़ी गुनाहगार ख़ुदा की मशीयत (मर्ज़ी और चाहत) पर हैं, जिसे चाहे बख़्श दे।

मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो तौहीद (यानी अल्लाह को एक मानने) पर मरे वह जन्नती है। इस बारे में आयतें और हदीसें बहुत सी हैं। इब्ने मरदूया में है कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करो अगरचे तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँ या तुम्हें सूली चढ़ा दिया जाए या तुम्हें जला दिया जाए। (यानी एक मुसलमान की शान तो यही होनी चाहिये, मगर इस्लामी शरीअ़त ने हर जगह अपने मानने वाले की रियायत रखी है, चुनाँचे अगर कभी ऐसे हालात आ जायें तो ज़बान से किसी ऐसे कलिमे का कह देना जायज़ है जिससे जान बचती हो मगर दिल हर हाल में तौहीद व ईमान पर क़ायम रहे)।

इब्ने अबी हातिम में है कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल. ने सात बातों का हुक्म दिया- अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना अगरचे तुम जला दिए जाओ या काट दिए जाओ या सूली पर लटका दिए जाओ। इस आयत में तौहीद का हुक्म देकर फिर माँ-बाप के साथ एहसान (अच्छा सुलूक) करने का हुक्म हुआ। क़ुरआने करीम में अक्सर ये दोनों हुक्म एक साथ ही बयान हुए हैं जैसे:

اَنِ اشْكُرْلِىْ وَلِوَالِدَيْكَ..... الخ

इस आयत में मुश्रिक माँ-बाप के साथ भी ज़रूरत के मुताबिक़ अच्छा सुलूक करने का हुक्म हुआ है। और:

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ.....الخ

में भी दोनों हुक्म एक साथ बयान हुए हैं। और भी बहुत सी आयतें हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में है, इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मालूम किया कि कौनसा अ़मल अफ़ज़ल (बेहतर और अच्छा) है? आपने फ़रमाया नमाज़ को वक़्त पर पढ़ना। मैंने पूछा फिर? फ़रमाया माँ बाप के साथ नेकी करना। मैंने पूछा फिर? फ़रमाया ख़ुदा की राह में जिहाद करना। मैं अगर और भी दरियाफ़्त करता हुज़ूर सल्ल. बता देते।

इब्ने मरदूया में उबादा बिन सामित और अबू दाऊद से रिवायत है कि मुझे मेरे दोस्त रसूलुल्लाह सल्ल. ने वसीयत की कि अपने वालिदैन (माँ-बाप) की फ़रमाँबरदारी कर अगरचे वे तुझे हुक्म दें कि उनके लिए तू सारी दुनिया से अलग हो जा, तो भी मान ले। इसकी सनद कमज़ोर है। बाप-दादाओं की वसीयत करके औलाद और औलाद की औलाद के बारे में वसीयत फ़रमाई कि उन्हें क़त्ल न कर दो, जैसे कि शयातीन ने इस काम को तुम्हें सिखा रखा है। लड़कियों को तो वे लोग शर्म की वजह से मार डालते थे और बाज़ लड़कों को भी इस वजह से कि उनके खाने को कहाँ से लाएँगे, मार डालते थे। इब्ने मसऊद रज़ि. ने एक बार हुज़ूर सल्ल. से मालूम किया कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है? आपने फ़रमाया ख़ुदा के साथ किसी को शरीक करना, हालाँकि उसी ने पैदा किया है। पूछा फिर कौनसा गुनाह है? फ़रमाया अपनी औलाद को इस ख़ौफ़ से क़त्ल करना कि यह मेरे साथ खाएगा। पूछा फिर कौनसा है? फ़रमाया अपने पड़ोस की औरत से बदकारी (ज़िना) करना। फिर हुज़ूर सल्ल. ने आयतः

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ.....

की तिलावत फ़रमाई। एक और आयत में है:

وَلَاتَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ خَشْيَةِ اِمْلَاقٍ...

यानी अपनी औलाद को फ़क़ीरी के ख़ौफ़ से क़त्ल न करो।

इसी लिए इसके बाद ही फ़रमाया कि हम उन्हें रोज़ी देते हैं और तुम्हारी रोज़ी भी हमारे ज़िम्मे है। यहाँ चूँकि फ़रमाया था कि गुर्बत की वजह से औलाद का गला न घोंटो तो साथ ही फ़रमाया तुम्हें रोज़ी हम देंगे और उन्हें भी हम ही दे रहे हैं। फिर फ़रमाया किसी छुपी खुली बुराई के पास भी न फटको। जैसे एक और आयत में है:

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّىَ الْفَوَاحِشَ مَاظَهَرَ مِنْهَا وَمَابَطَنَ.... الخ

यानी तमाम ज़ाहिरी व अन्दरूनी बुराईयाँ, गुनाह, ज़ुल्म व ज़्यादती, शिर्क व कुफ़्र और झूठ बोहतान सब कुछ अल्लाह ने हराम कर दिया है। इसकी पूरी तफ़सील आयतः

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ....

की तफ़सीर (यानी सूरः अन्आम की आयत नम्बर 120) में गुज़र चुकी है। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि ख़ुदा से ज़्यादा ग़ैरत वाला कोई नहीं, इसी वजह से तमाम बेहयाईयाँ अल्लाह ने हराम कर दी हैं, चाहे वे खुली हों चाहे वे पोशीदा हों। सअ़द बिन उबादा रज़ि. ने कहा कि अगर मैं किसी को अपनी बीवी के साथ देख लूँ तो मैं एक ही वार में उसका फ़ैसला कर दूँ। जब हुज़ूर सल्ल. के सामने उनकी यह बात ज़िक्र की गई तो फ़रमाया क्या तुम सअ़द की ग़ैरत पर ताज्जुब कर रहे हो? वल्लाह मैं उससे ज़्यादा ग़ैरत वाला हूँ और मेरा रब मुझसे ज़्यादा ग़ैरत वाला है। इसी वजह से तमाम गन्दे और अश्लील काम छुपे खुले उसने हराम कर दिये हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक बार हुज़ूर सल्ल. से कहा गया कि हम ग़ैरत वाले लोग हैं। आपने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं भी ग़ैरत वाला हूँ और अल्लाह मुझसे ज़्यादा ग़ैरत वाला है। यह ग़ैरत ही है जो उसने तमाम बुरी बातों को हराम क़रार दे दिया है। इस हदीस की सनद तिर्मिज़ी की शर्त पर है। इसी से तिर्मिज़ी में यह हदीस है कि मेरी उम्मत की उम्रें साठ-सत्तर के बीच हैं, इसके बाद किसी के नाहक़ क़त्ल की हुर्मत को बयान फ़रमाया, अगरचे वह भी बुराई में दाख़िल है लेकिन उसकी अहमियत की वजह से उसे अलग बयान फ़रमा दिया।

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो मुसलमान ख़ुदा की तौहीद (यानी अल्लाह के एक होने) और मेरी रिसालत का इक़रारी हुआ उसे क़त्ल करना सिवाय इन तीन बातों में से एक के जायज़ नहीं, या तो शादीशुदा होकर ज़िना करे, या किसी को क़त्ल कर दे, या दीन को छोड़ दे और जमाअ़त से अलग हो जाए। मुस्लिम शरीफ़ में है- उसकी क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, किसी मुसलमान का ख़ून हलाल नहीं सिवाय इसके या तो शादीशुदा होकर वह ज़िना करे, या किसी को क़त्ल कर दे, या दीन को छोड़ दे। अबू दाऊद और नसाई में तीसरा शख़्स वह बयान किया गया है जो इस्लाम से निकल जाए और ख़ुदा रसूल से जंग करने लगे, उसे क़त्ल कर दिया जायगा या सूली पर चढ़ा दिया जाएगा या मुसलमानों के मुल्क से निकाल दिया जाएगा।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस वक़्त जबकि बाग़ी आपको घेरे में लिये हुए थे, फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है किसी मुसलमान का ख़ून सिवाये इन तीन सूरतों के हलाल नहीं। इस्लाम के बाद काफ़िर हो जाना, शादी के बाद ज़िना करना, बग़ैर किसी बदले के किसी

को क़त्ल कर देना। ख़ुदा की क़सम न तो मैंने जाहिलीयत (यानी इस्लाम से पहले ज़माने) में ज़िना किया, न इस्लाम लाने के बाद, और न इस्लाम लाने के बाद कभी मैंने किसी और दीन की तमन्ना की और न मैंने किसी को बिना वजह क़त्ल किया। फिर तुम मेरा ख़ून बहाने के पीछे क्यों पड़े हो?

हरबी (यानी मुसलमानों के साथ लड़ने वाले) काफ़िरों में से जो अमन तलब करे और मुसलमानों के मुआ़हिदे में आ जाए उसके क़त्ल करने वाले के हक़ में बहुत वईद (सज़ा की धमकी) आई है, और उसका क़त्ल करना भी शरीअ़त में हराम है। बुख़ारी में है कि मुआ़हिद (यानी जिसे अमान देने का अ़हद कर लिया गया हो) का क़ातिल जन्नत की ख़ुशबू भी न पायेगा हालाँकि उसकी ख़ुशबू चालीस साल के रास्ते तक पहुँच जाती है।

एक और रिवायत में है कि उसने ख़ुदा का ज़िम्मा तोड़ा। उसमें है कि पचास बरस के रास्ते के फ़ासले से ही जन्नत की ख़ुशबू पहुँच जाती है। फिर फ़रमाता है कि ये हैं ख़ुदा की वसीयतें और उसके अहकाम, ताकि तुम ख़ुदा के दीन को, उसके हुक्मों को और उसकी मना की हुई बातों को समझ लो।

6. और यतीम के माल के पास मत जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो कि अच्छा और पसन्दीदा है, यहाँ तक कि वह अपने बालिग़ होने की उम्र को पहुँच जाए, 7. और नाप-तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ के साथ, हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते, 8. और जब तुम बात किया करो तो इन्साफ़ रखा करो, चाहे वह शख़्स रिश्तेदार ही हो, 9. और अल्लाह तआ़ला से जो अ़हद किया करो उसको पूरा किया करो। इन (सब) का तुमको अल्लाह तआ़ला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो (और अ़मल करो)। (153)	وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۗ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ○

यतीम का माल खाना सख़्त गुनाह है

अबू दाऊद वग़ैरह में है कि जब आयत "व ला तक़रबू" और आयतः

اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا.

नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबा ने यतीमों का खाना-पीना अपने खाने-पीने से बिल्कुल अलग कर दिया। इसमें अ़लावा उन लोगों के नुक़सान और मेहनत के यतीमों का नुक़सान भी होने लगा कि अगर बच रहा है तो या तो बासी खाएँ या सड़कर ख़राब हो। जब हुज़ूर सल्ल. से इसका ज़िक्र हुआ तो आयतः

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى..... الخ

नाज़िल हुई। कि उनके लिए ख़ैरख़्वाही करो, उनका खाना-पीना साथ रखने में कोई हर्ज नहीं, वे तुम्हारे

Maktab E Ashraf

भाई हैं। इसे पढ़कर सुनकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उनका खाना-पीना अपने साथ मिला लिया। यह हुक्म उनके बालिग़ होने तक का है, अगरचे बाज़ों ने तीस साल बाज़ ने चालीस साल और बाज़ ने साठ साल कहे हैं। लेकिन ये सब क़ौल यहाँ मुनासिब नहीं। वल्लाहु आलम

फिर हुक्म फ़रमाया कि लेन-देन में नाप-तौल में कमी-बेशी न करो, उनके लिए तबाही है जो लेते वक़्त पूरा लें और देते वक़्त कम दें। (जैसे बाज़े दुकानदार होते हैं कि ख़ुद कोई सामान ख़रीदेंगे तो पूरा लेंगे और अपना सामान बेचेंगे तो कम देंगे)। उन उम्मतों को ख़ुदा ने ग़ारत कर दिया जिनमें यह बुरी ख़स्लत थी। तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नापने और तौलने वालों से फ़रमाया- तुम एक ही चीज़ के वाली बनाये गये हो, जिसकी सही निगरानी न रखने वाले तबाह हो गए।

फिर फ़रमाता है कि किसी पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ हम नहीं लादते। यानी अगर किसी शख़्स ने अपनी ताक़त-भर कोशिश कर ली, दूसरे का हक़ दे दिया, अपने हक़ से ज़्यादा न लिया, फिर भी अनजाने में ग़लती से कोई बात रह गई तो ख़ुदा के पास उसकी पकड़ नहीं। एक रिवायत में है कि आपने आयत के ये दोनों जुमले तिलावत करके फ़रमाया कि जिसने सही तरीक़े से पूरा नापा तौला फिर भी वास्तव में कोई कमी या ज़्यादती भूल-चूक से हो गयी तो उसकी पकड़ न होगी। यह हदीस मुर्सल और ग़रीब है। फिर फ़रमाता है कि बात इन्साफ़ की कहा करो, अगरचे रिश्तेदार के मामले में ही कुछ कहना पड़े। जैसे फ़रमायाः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ....

कि ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिये पूरी पाबन्दी करने वाले, इन्साफ़ के साथ गवाही देने वाले रहो।

और सूरः निसा में भी यही हुक्म दिया कि हर शख़्स को किसी भी हाल में सच्चाई और इन्साफ़ नहीं छोड़ना चाहिए। झूठी गवाही और ग़लत फ़ैसले से बचना चाहिए। अल्लाह तआ़ला के अ़हद को पूरा करो। उसके अहकाम को बजा लाओ। उसकी मना की हुई चीज़ों से अलग रहो, उसकी किताब उसके रसूल की सुन्नत पर चलते रहो, यही उसके अ़हद को पूरा करना है। इन्हीं चीज़ों के लिये ख़ुदा का ताकीदी हुक्म है, यही फ़रमान तुम्हारे वअ़ज़ व नसीहत का ज़रिया हैं, ताकि तुम जो इससे निकम्मे बल्कि बुरे कामों में थे अब उनसे छूट जाओ।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِىْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ○	और यह कि यह दीन मेरा रास्ता है, जो कि सीधा है, सो इस राह पर चलो और दूसरी राहों पर मत चलो कि वे (राहें) तुमको उसकी (यानी अल्लाह की) राह से जुदा कर देंगी। इसका तुमको अल्लाह तआ़ला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम (इस राह के ख़िलाफ़ करने से) एहतियात रखो। (154)

सीधा रास्ता

यह और इस जैसी दूसरी आयतों की तफ़सीर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल तो यह है कि

Maktab E Ashraf

अल्लाह तआ़ला मोमिनों को जमाअ़त-बन्दी (यानी संगठन और एकता) का हुक्म देता है और आपस के विवादों, झगड़ों और बिखराव से रोकता है। इसलिए कि पहले ज़माने के लोग ख़ुदा के दीन में फूट डालने से ही तबाह हुए थे। मुस्नद में है कि अल्लाह के नबी सल्ल. ने एक सीधी लकीर खींची और फ़रमाया- ख़ुदा की सीधी राह यही है, फिर उसके दाएँ बाएँ और लकीरें खींचकर फ़रमाया- इन तमाम राहों पर शैतान है जो अपनी तरफ़ बुला रहा है। फिर आपने इस आयत का शुरू का हिस्सा तिलावत फ़रमाया। इसी हदीस की शाहिद (ताईद करने वाली) वह हदीस है जो मुस्नद वग़ैरह में हज़रत जाबिर रज़ि. से रिवायत है कि हम नबी सल्ल. के पास बैठे हुए थे कि आपने अपने सामने एक सीधी लम्बी लकीर खींची और फ़रमाया यह राहे ख़ुदा है, फिर उसके दाएँ बाएँ दो लकीरें खींचीं और फ़रमाया ये शैतानी राहें हैं। और बीच की लकीर पर उंगली रखकर इस आयत की तिलावत फ़रमाई।

इब्ने माजा और बज़्ज़ार में भी यह हदीस है। इब्ने मसऊद से किसी ने पूछा "सिराते मुस्तक़ीम" (सीधा रास्ता) क्या है? आपने फ़रमाया जिस पर हमने अपनी नबी सल्ल. को छोड़ा उसी का दूसरा सिरा जन्नत से जा मिलता है। उसके दाएँ बाएँ बहुत सी राहें हैं जिन पर लोग चल रहे हैं और दूसरों को भी अपनी तरफ़ बुला रहे हैं। जो उन राहों में से किसी राह पर हो लिया वह जहन्नम में पहुँचा। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने सिराते मुस्तक़ीम की मिसाल बयान फ़रमाई। इस रास्ते के दोनों तरफ़ दो दीवारें हैं जिनमें बहुत से दरवाज़े हैं और सब चोपट खुले पड़े हैं, और उन पर पर्दे लटके हुए हैं, उस सीधी राह के सिरे पर एक पुकारने वाला है जो कहता है कि लोगो! तुम सब सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) पर आ जाओ, बिखरो मत। बीच राह के भी एक शख़्स है जब कोई शख़्स उन दरवाज़ों में से किसी को खोलना चाहता है तो वह कहता है कि हाय अफ़सोस! इसे न खोलो, खोलोगे तो इस रास्ते से दरिया पड़ेगा। पस सीधी राह इस्लाम है, दोनों दीवारें ख़ुदाई हदें और सीमायें हैं, खुले हुए दरवाज़े अल्लाह की हराम की हुई चीज़ें हैं, सिरे का शख़्स अल्लाह की किताब है, ऊपर से पुकारने वाला ख़ुदा की तरफ़ से नसीहत करने वाला है जो हर मोमिन के दिल में है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

इस नुक्ते को न भूलना चाहिए कि अपनी राह के लिए "सबीले वाहिद" (एक रास्ते) का लफ़्ज़ बोला गया और गुमराही की राहों के लिए "सुबुल" (बहुत से रास्तों) बहुवचन का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया इसलिए कि हक़ रास्ता एक ही होता है और बातिल के (ग़लत और झूठे) बहुत से तरीक़े हुआ करते हैं। जैसे आयत "अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी आमनू......" (सूरः ब-क़रह आयत 257) में "ज़ुलुमात" (अंधेरों) को बहुवचन के लफ़्ज़ से और "नूर" को वाहिद (एक वचन) के लफ़्ज़ से ज़िक्र किया गया है।

हुज़ूर सल्ल. ने एक बार "क़ुल तआ़लौ से तीन आयतों" तक (सूरः अन्आ़म आयत 151-153) तिलावत करके फ़रमाया- तुम में से कौन-कौन इन बातों पर मुझसे बैअ़त करता है? फिर फ़रमाया जिसने इस बैअ़त को पूरा किया उसका अज्र ख़ुदा के ज़िम्मे है, और जिसने इनमें से किसी बात को तोड़ दिया उसकी दो सूरतें हैं या तो दुनिया में ही इसकी सज़ा उसे मिल जाए या ख़ुदा तआ़ला आख़िरत तक उसे मोहलत दे, फिर रब की चाहत व मंशा पर है, अगर चाहे तो सज़ा दे और चाहे तो माफ़ कर दे।

Maktab E Ashraf

फिर हमने मूसा को किताब दी थी, जिससे अमल करने वालों पर अच्छी तरह नेमत पूरी हो और सब अहकाम की तफ़सील हो जाए, और रहनुमाई हो और रहमत हो, ताकि वे लोग अपने रब की मुलाक़ात होने पर यक़ीन लाएँ। (155) और यह (क़ुरआन मजीद) एक किताब है जिसको हमने भेजा, बड़ी ख़ैर व बरकत वाली, सो इसका इत्तिबा करो और डरो, ताकि तुम पर रहमत हो। (156)	ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝ع وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝لا

ع ١٩

मुबारक किताब

इमाम इब्ने जरीर ने तो लफ़्ज़ "सुम्म" को तरतीब के लिए माना है, यानी उनसे कह दीजिए। लेकिन हमारा ख़्याल है कि अगर सुम्म को तरतीब के लिए मानकर ख़बर का ख़बर पर अत्फ़ कर दें तो क्या हर्ज है? ऐसा होता है और शे'रों में मौजूद है। चूँकि क़ुरआने करीम की तारीफ़ "व अन्-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमा..." में गुज़री थी, इससे उस पर अत्फ़ डालकर तौरात की तारीफ़ बयान कर दी जैसा कि और भी बहुत सी आयतों में है। चुनाँचे अल्लाह का फ़रमान हैः

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً وَّهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا.

यानी इससे पहले तौरात इमाम व रहमत थी, और अब यह अ़रबी क़ुरआन तस्दीक़ करने वाला है। इस सूरः के शुरू (आयत नम्बर 91) में हैः

قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ..... الخ

इस आयत में भी तौरात के बयान के बाद इस क़ुरआन का बयान है। काफ़िरों का हाल बयान करते हुए फ़रमाया गया हैः

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا..... الخ

कि जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ आ पहुँचा तो कहने लगे कि इसे उस जैसा क्यों न मिला जो मूसा को मिला था। जिसके जवाब में फ़रमाया गया कि क्या उन्होंने मूसा अ़लैहिस्सलाम की उस किताब के साथ कुफ़्र नहीं किया था? क्या साफ़ तौर से नहीं कहा था कि ये दोनों जादूगर हैं। और हम तो हर एक के इनकारी हैं।

जिन्नात का क़ौल बयान हुआ कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा- हमने वह किताब सुनी है जो मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद उतरी है। जो पहली किताबों को सच्चा कहती है, और सही राह की हिदायत करती है। वह किताब पूरी, जामे और कामिल थी। शरीअ़त की जिन बातों की उस वक़्त ज़रूरत थी सब उसमें मौजूद थीं। यह एहसान था नेक काम करने वालें की नेकियों के बदले का। जैसा कि फ़रमाया है- एहसान का बदला एहसान ही है। और जैसे फ़रमान है- इब्राहीम ने जब हमारे अहकाम की तामील कर दी तो हमने उसको लोगों का इमाम बना दिया (यानी अम्बिया उनकी नस्ल से पैदा हुए। ख़लीलुल्लाह का उनको ख़िताब

मिला और आज हर शख़्स उनकी शरीअ़त पर अ़मल करने को अपने लिए फ़ख़्र समझता है, अगरचे उनके सच्चे पैरो सिर्फ़ मुसलमान ही हैं और बाक़ी सब झूठे दावेदार)।

और जैसे इरशाद है कि बनी इस्राईलियों को हमने उनका इमाम बना दिया, जबकि उन्होंने सब्र किया और हमारी आयतों पर यक़ीन रखा। ग़र्ज़ यह भी ख़ुदा का फ़ज़्ल था और नेक लोगों को नेकियों का बदला। एहसान करने वालों पर ख़ुदा भी एहसान पूरा करता है, यहाँ भी और वहाँ भी।

आयत के इस जुमले का एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर अल्लाह के एहसान को तमाम और पूरा करने के लिए किताबे ख़ुदा उन पर नाज़िल हुई। इन दोनों मतलबों में कोई टकराव नहीं। फिर तौरात की तारीफ़ बयान फ़रमाई कि उसमें हर हुक्म तफ़सील के साथ है और वह हिदायत व रहमत है, ताकि लोग क़ियामत के दिन अपने रब से मिलने का यक़ीन कर लें। फिर क़ुरआने करीम की इत्तिबा (पैरवी) की रग़बत दिलाता है, उसमें ग़ौर व फ़िक्र की दावत देता है, उस पर अ़मल करने की हिदायत फ़रमाता है और उसकी तरफ़ लोगों को बुलाने का हुक्म देता है। बरकत से उसका वस्फ़ (ख़ूबी) बयान फ़रमाता है कि जो भी उस पर अ़मल करने वाला हो जाए वह दोनों जहान की बरकतें हासिल करेगा। इसलिए कि यह ख़ुदा की तरफ़ से मज़बूत रस्सी है।

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى
طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ
دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ
فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى
وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ
يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا
كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝

कभी तुम लोग यूँ कहने लगते कि किताब तो सिर्फ़ हमसे पहले जो दो फ़िर्क़े थे उनपर नाज़िल हुई थी और हम उनके पढ़ने- पढ़ाने से बिल्कुल बेख़बर थे। (157) या यूँ कहते कि अगर हम पर कोई किताब नाज़िल होती तो हम उनसे भी ज़्यादा राह पर होते। सो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से एक वाज़ेह किताब और रहनुमाई का ज़रिया और रहमत आ चुकी है, सो उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो हमारी इन आयतों को झूठा बतलाए और इससे रोके? हम अभी उन लोगों को जो कि हमारी आयतों से रोकते हैं उनके इस रोकने के सबब सख़्त सज़ा देंगे। (158)

क़ुरआन का नाज़िल होना दर हक़ीक़त हुज्जत का पूरा होना है

फ़रमाता है कि इस आख़िरी किताब ने तुम्हारे तमाम उज़्र (बहाने) काट दिए। जैसा कि फ़रमायाः

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ.... الخ

यानी अगर उन्हें उनके बुरे आमाल की वजह से कोई मुसीबत पहुँचती तो कह देते कि तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरे फ़रमान को मानते.....। दो जमाअ़तों से मुराद यहूदी व ईसाई हैं।

Mahtab E Ashraf

Maktab E Ashraf

तो अगर यह अ़रबी ज़बान का क़ुरआन न उतरता तो वे यह उज़्र कर देते कि हम पर तो हमारी ज़बान (भाषा) में कोई किताब नहीं उतरी, हम ख़ुदा के फ़रमान से बिल्कुल ग़ाफ़िल रहे, फिर हमें सज़ा क्यों हो? यह उज़्र (बहाना) बाक़ी न रहा, न यह कि अगर हम पर आसमानी किताब आती तो हम तो पहले लोगों से आगे निकल जाते और ख़ूब नेकियाँ करते। जैसे अल्लाह का फ़रमान हैः

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ.... الخ

यानी ज़ोर देकर क़समें खा-खाकर बातें बनाते थे कि हममें अगर कोई नबी आ जाए तो हम हिदायत को मान लें। अल्लाह फ़रमाता है, अब तो तुम्हारे पास रब की तरफ़ से हिदायत व रहमत भरा क़ुरआन अ़रबी पैग़म्बर की भाषा में आ चुका, जिसमें हलाल व हराम का अच्छी तरह बयान है, और दिलों की हिदायत की काफ़ी नूरानियत है, और रब की तरफ़ से ईमान वालों के लिए सरासर रहमत व करम है। अब तुम ही बताओ कि जिसके पास ख़ुदा की आयतें आ जाएँ और वह उन्हें झुठलाये, उनसे फ़ायदा न उठाये न अ़मल करे न यक़ीन लाये, न नेकी करे, न बुरे अ़मल छोड़े, न ख़ुद माने न औरों को मानने दे, उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है। इसी सूरः के शुरू में फ़रमाया हैः

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ....

ख़ुद इससे रुककर औरों को भी रोकते हैं। दर असल अपने ही को हलाकत में डालते हैं।

जैसे अल्लाह का फ़रमान हैः

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ...... الخ

यानी जो लोग कुफ़्र करते हैं और राहे ख़ुदा से रोकते हैं उन्हें हम अ़ज़ाब बढ़ाते रहेंगे। पस ये वे लोग हैं जो न मानते थे, न अ़मल करते थे। जैसे फ़रमायाः

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى. وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى.

यानी न तो माना न नमाज़ पढ़ी, बल्कि न मानकर मुँह फेर लिया।

इन दोनों तफ़सीरों में पहली बहुत अच्छी है, यानी ख़ुद भी इनकार किया और दूसरों को भी इनकार पर तैयार किया।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ○	ये लोग सिर्फ़ इस बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ या उनके पास आपका रब आए या आपके रब की कोई बड़ी निशानी आए। जिस दिन आपके रब की यह बड़ी निशानी आ पहुँचेगी, किसी ऐसे शख़्स का ईमान उसके काम न आएगा जो पहले से ईमान नहीं रखता, या उसने अपने ईमान में कोई नेक अ़मल न किया हो, आप फ़रमा दीजिए कि तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं। (159)

Maktab E Ashraf

अब किस बात का इन्तिज़ार कर रहे हैं?

अल्लाह तआला काफ़िरों को, पैग़म्बरों के मुख़ालिफ़ों को, अपनी आयतों के झुठलाने वालों और अपनी राह से रोकने वालों को डरा रहा है कि क्या उन्हें क़ियामत का इन्तिज़ार है? जबकि फ़रिश्ते भी आएँगे और ख़ुद ख़ुदा-ए-क़ह्हार भी। या इन्हें क़ियामत की बड़ी-बड़ी निशानियों के ज़ाहिर होने का इन्तिज़ार है? वह भी वक़्त होगा जब ईमान भी बेफ़ायदा और तौबा बेकार। बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़सीर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- क़ियामत क़ायम न होगी जब तक सूरज पश्चिम से न निकले। जब यह निशानी ज़ाहिर हो जाएगी तो ज़मीन पर जितने लोग होंगे सब ईमान लाएँगे लेकिन उस वक़्त का ईमान बिल्कुल बेफ़ायदा है। फिर आपने यही आयत पढ़ी। एक हदीस में है कि जब क़ियामत की तीन निशानियाँ ज़ाहिर हो जाएँ तो बेईमानों को उनका ईमान या ख़ैर से रुके हुए लोगों को उनकी उसके बाद की नेकी या तौबा कुछ फ़ायदेमन्द न होगी। सूरज का पश्चिम से निकलना, दज्जाल का आना, 'दाब्बतुल् अर्ज़' का ज़ाहिर होना। एक और रिवायत में इसके साथ ही एक धुएँ के आने का भी बयान है। एक और हदीस में है कि सूरज के पश्चिम से निकलने से पहले जो तौबा करे उसकी तौबा मक़बूल है।

हज़रत अबूज़र रज़ि. से एक बार रसूलुल्लाह सल्ल. ने पूछा जानते हो यह सूरज ग़ुरूब होकर कहाँ जाता है? जवाब दिया कि नहीं। फ़रमाया अ़र्श के क़रीब जाकर सज्दे में गिर पड़ता है और ठहरा रहता है, यहाँ तक कि इसे इजाज़त मिले और कहा जाए कि लौट जा। क़रीब है कि एक दिन इससे कह दिया जाए कि जहाँ से आया है वहाँ लौट जा। यही वह वक़्त होगा कि ईमान बेनफ़ा हो जायेगा। एक बार लोग क़ियामत की निशानियों का ज़िक्र कर रहे थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी तशरीफ़ ले आए और फ़रमाने लगे- क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि तुम दस निशानियाँ न देख लो-

1. सूरज का पश्चिम से निकलना। 2. और धुआँ। 3. और 'दाब्बतुल-अर्ज़'। 4. और याजूज माजूज का आना। 5. और ईसा बिन मरियम का आना। 6. और दज्जाल का निकलना और तीन जगह ज़मीन का धंस जाना। 7. पूरब में। 8. पश्चिम में। 9 और अ़रब के इलाक़े में। 10. और अ़दन से एक ज़बरदस्त आग का निकलना जो लोगों को हाँक ले जाएगी; रात दिन उनके पीछे ही पीछे रहेगी (यानी लोगों के पीछे रहेगी और उनको हंकायेगी, अब चाहे यह अ़ज़ाब की वजह से हो, या यह कि यह आग सब जगह फैल जाये। और कुछ किताबों में है कि यह सबको अ़रफ़ात के मैदान में जमा कर देगी)। (मुस्लिम वग़ैरह)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि सूरज के मग़रिब (पश्चिम) से निकलने की पहचान क्या है? आपने फ़रमाया वह रात बहुत लम्बी हो जाएगी, दो रातों के बराबर, लोग नियमित तौर पर अपने काम-काज में होंगे और तहज्जुद पढ़ने में भी। सितारे अपनी जगह ठहरे हुए होंगे। फिर लोग सो जाएँगे फिर उठेंगे काम में लगेंगे, फिर सोएँगे फिर उठेंगे, लेकिन देखेंगे कि न सितारे हटे हैं न सूरज निकला है, करवटें दुखने लगेंगी लेकिन सुबह न होगी। अब तो घबरा जाएँगे और दहशत में हो जाएँगे। मुन्तज़िर होंगे कि कब सूरज निकले, पूरब की तरफ़ नज़रें जमाए हुए होंगे कि अचानक पश्चिम की तरफ़ से सूरज निकल आएगा। उस वक़्त तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग मुसलमान हो जाएँगे लेकिन उस वक़्त का ईमान बिल्कुल बेफ़ायदा होगा। (इब्ने मरदूया)

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस आयत के इस जुमले को तिलावत फ़रमाकर इसकी तफ़सीर में सूरज का पश्चिम से निकलना भी ज़िक्र है। एक रिवायत है कि सबसे पहली निशानी यही

होगी। एक और हदीस में है कि अल्लाह तआला ने पश्चिम की तरफ़ एक बड़ा दरवाज़ा खोल रखा है जिसकी चौड़ाई सत्तर साल की है। यह तौबा का दरवाज़ा है, यह बन्द न होगा, जब तक कि सूरज पश्चिम से न निकले। एक और हदीस में है कि लोगों पर एक रात आएगी जो तीन रातों के बराबर होगी। उसे तहज्जुद पढ़ने वाले जान जाएँगे, ये खड़े होंगे अपने मामूल के मुताबिक़ तहज्जुद पढ़ेंगे, फिर सो जाएँगे, फिर उठेंगे अपना मामूल (रोज़मर्रा के काम) अदा करके फिर लेटेंगे तो रात की इस लम्बाई से घबराकर चीख़ पुकार शुरू कर देंगे और दौड़े-भागे मस्जिदों की तरफ़ जाएँगे, अचानक देखेंगे कि सूरज निकल गया यहाँ तक कि आसमान के बीच में पहुँचकर फिर लौट जाएगा, उसके बाद फिर अपने निकलने की जगह (यानी नियम के अनुसार पूरब) से निकलेगा। यही वह वक़्त है जिस वक़्त ईमान लाना फ़ायदेमन्द नहीं।

एक और रिवायत में है कि तीन मुसलमान शख़्स मरवान के पास बैठे हुए थे। मरवान उनसे कह रहे थे कि सबसे पहली निशानी दज्जाल का निकलना है। यह सुनकर ये लोग हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर के पास गये और यह बयान किया। आपने फ़रमाया उसने कुछ नहीं कहा। मुझे हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान ख़ूब अच्छी तरह याद है कि सबसे पहली निशानी सूरज का पश्चिम से निकलना है। और 'दाब्बतुल्-अर्ज़'' का दिन चढ़े ज़ाहिर होना है। इन दोनों में से जो पहले हो उसी के बाद दूसरी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह किताब पढ़ते जाते थे, फ़रमाया मेरा ख़्याल है कि पहले सूरज की निशानी ज़ाहिर होगी, वह ग़ुरूब होते ही अ़र्श के नीचे जाता है और सज्दा करके इजाज़त माँगता है, इजाज़त मिल जाती है। जब मन्ज़ूरे ख़ुदा उसे मग़रिब (पश्चिम) से ही निकलना होगा तो उसके बार-बार के इजाज़त माँगने पर भी जवाब नहीं मिलेगा।

रात का वक़्त ख़त्म होने के क़रीब होगा और यह समझ लेगा कि अब अगर इजाज़त मिली भी तो पूरब में नहीं पहुँच सकता, तो कहेगा कि ख़ुदाया! दुनिया को सख़्त तकलीफ़ होगी। उससे कहा जाएगा यहीं से निकल। चुनाँचे वह मग़रिब (पश्चिम) से ही निकल आएगा। फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। तबरानी में है कि जब सूरज मग़रिब से निकलेगा तो इब्लीस (शैतान) सज्दे में गिर पड़ेगा और ज़ोर-ज़ोर से कहेगा इलाही! मुझे हुक्म कर मैं मानूँगा, जिसे तू फ़रमाये मैं सज्दा करने के लिए तैयार हूँ। उसकी ज़ुर्रियत (यानी उसकी नस्ल और उसके मातहत शयातीन) उसके पास जमा हो जायेगी और कहेगी यह हाय वाय कैसी है? वह कहेगा मुझे यहीं तक ढील दी गई थी, अब वह आख़िरी वक़्त आ गया। फिर सफ़ा की पहाड़ी के ग़ार (गुफ़ा) से दाब्बतुल-अर्ज़ निकलेगा, उसका पहला क़दम अन्ताकिया में पड़ेगा, वह इब्लीस के पास पहुँचेगा और उसे थप्पड़ मारेगा। यह हदीस बहुत ही ग़रीब है। इसकी सनद बिल्कुल कमज़ोर है, मुम्किन है कि यह उन किताबों में से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने ली हो जिनके दो थैले उन्हें यरमूक की लड़ाई वाले दिन मिले थे। इसका फ़रमाने रसूल होना बहुत मुन्कर (यानी यह साबित नहीं) है। वल्लाहु आलम

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- हिजरत का सिलसिला ख़त्म न होगा जब तक कि दुश्मन मुसलमानों से लड़ते और मुक़ाबला करते रहेंगे। हिजरत की दो क़िस्में हैं- एक तो गुनाहों को छोड़ना, दूसरे ख़ुदा और उसके रसूल के पास वतन छोड़कर जाना। यह भी बाक़ी रहेगी जब तक कि तौबा क़बूल होती है, और तौबा क़बूल होती रहेगी जब तक सूरज मग़रिब (पश्चिम) से न निकले। सूरज के मग़रिब से निकलते ही फिर जो कुछ जिस दिल में है उसी पर मुहर लग जाएगी। (यानी ईमान है तो वह ईमान पर रहेगा और काफ़िर है तो काफ़िर रहेगा, क्योंकि उसके बाद न तौबा क़बूल होगी और न ईमान लाना फ़ायदा देगा) और आमाल बेफ़ायदा हो जाएँगे। इब्ने मसऊद रज़ि. का फ़रमान है कि बहुत से निशानात गुज़र चुके सिर्फ़ चार बाक़ी रह गए हैं-

Maktab-E-Ashraf

सूरज का पश्चिम से निकलना, दज्जाल, दाब्बतुल-अर्ज़ और याजूज माजूज का आना। जिस अ़लामत (निशानी) के साथ आमाल ख़त्म हो जाएँगे वह पश्चिम की तरफ़ से सूरज का निकलना है। एक लम्बी मरफ़ूअ़ ग़रीब मुन्कर हदीस में है कि उस दिन सूरज चाँद मिले-जुले तुलू होंगे, आधे आसमान से वापस चले जाएँगे। फिर अपनी आ़दत के अनुसार हो जाएँगे। इस हदीस का तो मरफ़ूअ़ होने का दावा इस हदीस के मौज़ू (बेअसल) होने का सुबूत है। इब्ने अ़ब्बास या वहब बिन मुनब्बेह रह. पर मौक़ूफ़ होने की हैसियत से मुम्किन है मौज़ू (बेअसल और गढ़ी हुई होने) के दर्जे से निकल जाए। वल्लाहु आलम

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं- क़ियामत की पहली निशानी के साथ ही आमाल का ख़ात्मा है। उस दिन किसी काफ़िर का मुसलमान होना बेफ़ायदा होगा, हाँ मोमिन जो उससे पहले नेक आमाल वाला होगा वह बेहतरी में रहेगा। और जो नेक अ़मल वाला न होगा उसकी तौबा भी उस वक़्त मक़बूल न होगी। जैसे कि पहली हदीसें गुज़र चुकीं। बुरे लोगों के नेक आमाल भी इस बड़ी निशानी को देखने के बाद कुछ काम न आएँगे।

फिर काफ़िरों को वईद (डाँट और धमकी) दी जाती है कि अच्छा तुम इन्तिज़ार में रहना, ताकि तौबा के और ईमान के क़बूल न होने का वक़्त आ जाए और क़ियामत के ज़बरदस्त आसार (निशानियाँ) ज़ाहिर हो जाएँ। जैसे एक और आयत में है:

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ..... الخ

इनको क़ियामत के अचानक ही आ जाने का इन्तिज़ार है, उसकी भी निशानियाँ ज़ाहिर हो चुकी हैं, उसके आ चुकने के बाद नसीहत का वक़्त कहाँ?

एक और आयत में है:

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا..... الخ

हमारे अ़ज़ाबों को देख लेने के बाद का ईमान और शिर्क से इनकार बेकार और बेफ़ायदा है...।

बेशक जिन लोगों ने अपने दीन को जुदा-जुदा कर दिया और गिरोह-गिरोह बन गए, आपका उनसे कोई ताल्लुक़ नहीं, बस उनका मामला अल्लाह तआ़ला के हवाले है, फिर वह उनको उनका किया हुआ जतला देंगे। (160)	اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۭ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ○

ख़ुदा तआ़ला से अलग हो जाने वालों का बयान

कहते हैं कि यह आयत यहूद व ईसाईयों के बारे में उतरी है। ये लोग हुज़ूर सल्ल. की नुबुव्वत से पहले सख़्त मतभेदों और झगड़ों में थे, जिनकी ख़बर यहाँ दी जा रही है। एक हदीस में है कि "शैउन्" (यानी उनसे आपका कोई ताल्लुक़ नहीं) तक इस आयत की तिलावत फ़रमाकर नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया वे भी मुझसे कोई मेल नहीं रखते। ये उस उम्मत के बिदअ़ती, शक व शुब्हे वाले और गुमराह लोग हैं। इसकी सनद सही नहीं, यानी यह मुम्किन है कि यह हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का क़ौल हो।

अबू उमामा रज़ि. फ़रमाते हैं- इससे मुराद ख़ारजी हैं (यह एक फ़िर्क़ा है)। यह भी मरफ़ूअ़न मरवी है लेकिन सही नहीं। एक ग़रीब हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मुराद इससे बिदअ़ती लोग हैं। इसका भी मरफ़ूअ़ होना सही नहीं। बात यह है कि आयत आ़म है जो भी ख़ुदा व रसूल के दीन की मुख़ालफ़त करे और उसमें अपनी तरफ़ से बातें मिलाये (अल्लाह और उसके रसूल पर झूठ और बोहतान बाँधे), गुमराही की और ख़्वाहिश-परस्ती की पैरवी करे, नया दीन इख़्तियार करे, नया मज़हब क़बूल करे, वह इस वईद (धमकी और डाँट) में दाख़िल है। क्योंकि हुज़ूर सल्ल. जिस हक़ को लेकर आए हैं वह एक ही है, कई नहीं। अल्लाह ने अपने रसूल को गुटबन्दी से बचाया है और आपके दीन को भी इस लानत से महफ़ूज़ रखा है। इसी मज़मून की दूसरी आयत "श-र-अ़ लकुम् मिनद्दीनि...." है।

एक हदीस में है कि हम अम्बिया की जमाअ़त अ़ल्लाती (यानी बाप शरीक) भाई हैं। हम सब का दीन एक ही है। पस सिराते मुस्तक़ीम और अल्लाह के पसन्दीदा दीन की तौहीद और रसूलों की इत्तिबा है, इसके ख़िलाफ़ जो हो गुमराही, जहालत, अपनी इच्छा की राय और बद्दीनी है और रसूलुल्लाह सल्ल. उससे बेज़ार हैं। उनका मामला अल्लाह के सुपुर्द है। वही उन्हें उनके आमाल से आगाह करेगा। जैसे एक और आयत में है कि मोमिनों में, यहूदियों में, साबियों में, ईसाईयों में, मजूसियों (आग को पूजने वालों) में, मुश्रिकों में अल्लाह ख़ुद कियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। उसके बाद अपने एहसान, हुक्म और अ़दल (इन्साफ़) का बयान फ़रमाता है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ○	जो शख़्स नेक काम करेगा तो उसको उसके दस हिस्से (मिलेंगे) और जो शख़्स बुरा काम करेगा सो उसको उसके बराबर ही सज़ा मिलेगी, और उन लोगों पर ज़ुल्म न होगा। (161)

अच्छाई पर अज्र व सवाब बढ़ जाता है

एक और आयत में संक्षेप में यह आया है "फ़-लहू ख़ैरुम् मिन्हा" कि जो नेकी लाए उसके लिये उससे बेहतर बदला है। इसी आयत के मुताबिक़ बहुत सी हदीसें भी हैं। एक हदीस में है कि तुम्हारा रब तआ़ला बहुत बड़ा रहीम है, नेकी के सिर्फ़ इरादे पर सवाब नेकी करने का अ़ता फ़रमा देता है, और एक नेकी करने पर दस से साठ तक सवाब बढ़ा देता है, और भी बहुत ज़्यादा और बहुत ज़्यादा। अगर बुराई का इरादा हुआ, फिर न की तो भी नेकी मिलती है, और अगर उस बुराई को कर गुज़रा तो एक ही बुराई लिखी जाती है। और बहुत मुम्किन है कि ख़ुदा माफ़ ही कर दे और बिल्कुल ही मिटा दे। सच तो यह है कि जो हलाक और बरबाद होना ठान लेते हैं अल्लाह के यहाँ हलाक होते हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम, नसाई वग़ैरह)

एक हदीसे क़ुदसी में है- नेकी करने वाले को दस गुना सवाब है और फिर भी मैं ज़्यादा कर देता हूँ। और बुराई करने वाले को एक अ़ज़ाब है, और मैं माफ़ भी कर देता हूँ। ज़मीन भरकर जो शख़्स ख़ताएँ ले आए अगर उसने मेरे साथ किसी को शरीक न किया हो तो मैं उतनी ही रहमत से उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूँ। जो मेरी तरफ़ बालिश्त भर आए मैं उसकी तरफ़ एक हाथ जाता हूँ और जो एक हाथ आए मैं उसकी तरफ़ दो हाथ जाता हूँ और जो मेरी तरफ़ चलता हुआ आए मैं उसकी तरफ़ दौड़ता हुआ जाता हूँ।

Maktaba Ashraf

(मुस्लिम मुस्नद वग़ैरह)

इससे पहले गुज़री हुई हदीस की तरह एक और हदीस भी है। इसमें यह जो फ़रमाया है कि बुराई का इरादा करके फिर उसे छोड़ देने वाले को भी नेकी मिलती है। इससे मुराद वह शख़्स है जो अल्लाह के डर से छोड़ दे। चुनाँचे बाज़ रिवायत में यह खुलासा आ भी चुका है। दूसरी सूरत छोड़ देने की यह है कि उसे याद ही न आए भूल जाये, तो उसे न सवाब है न अ़ज़ाब, क्योंकि उसने ख़ुदा से डरकर नेक-नीयती से उसे नहीं छोड़ा। और अगर नीयत के बाद उसने कोशिश भी की, उसे पूरी तरह करना भी चाहा लेकिन आ़जिज़ हो गया कि न कर सका, मौक़ा ही न मिला, असबाब ही न बने, थककर बैठ रहा तो ऐसे शख़्स को उस बुराई के करने के बराबर ही गुनाह होता है। चुनाँचे हदीस में है- जब दो मुसलमान तलवारें लेकर एक दूसरे से जंग करें तो जो मार डाले और जो मार डाला जाये दोनों जहन्नमी हैं। लोगों ने कहा मार डालने वाला तो ख़ैर! लेकिन जो मार डाला गया वह जहन्नम में क्यों जाएगा? आपने फ़रमाया इसलिए कि वह भी मार डालने का आरज़ूमन्द (इच्छुक) था।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- नेकी के केवल इरादे पर नेकी लिख ली जाती है और अ़मल में लाने के बाद दस नेकियाँ लिखी जाती हैं। बुराई के सिर्फ़ इरादे को लिखा नहीं जाता, अगर अ़मल करे तो एक ही गुनाह लिखा जाता है। और अगर इरादा करके छोड़ दे तो नेकी लिखी जाती है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- उसने इस गुनाह के काम को मेरे ख़ौफ़ से छोड़ दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि लोगों की चार क़िस्में हैं और आमाल की छह क़िस्में हैं। बाज़ लोग तो वे हैं जिन्हें दुनिया और आख़िरत में वुस्अ़त कुशादगी दी जाती है। बाज़ वे हैं जिन पर दुनिया में कुशादगी (आसानी और आराम) होती है और आख़िरत में तंगी। बाज़ वे हैं जिन पर दुनिया में तंगी रहती है लेकिन आख़िरत में उन्हें कुशादगी मिलेगी। बाज़ वे हैं जो दोनों जहान में बदबख़्त रहते हैं, यहाँ भी बुरे वहाँ भी बेआबरू।

आमाल की छह क़िस्में ये हैं- दो क़िस्में तो वाजिब कर देने वाली, एक बराबर का, एक दस गुना और एक सात गुना वाजिब कर देने वाली। दो चीज़ें ये हैं- जो शख़्स इस्लाम व ईमान पर मरे और उसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया हो उसके लिए जन्नत वाजिब है। और जो कुफ़्र पर मरे उसके लिए जहन्नम वाजिब है। और जो नेकी का इरादा करे अगरचे की न हो, उसे एक नेकी मिलती है। इसलिए कि ख़ुदा जानता है कि उसके दिल ने उसे समझा उसकी तमन्ना की, और जो शख़्स बुराई का इरादा करे उसके ज़िम्मे गुनाह नहीं लिखा जाता, और जो कर गुज़रे उसे एक ही गुनाह होता है, और वह बढ़ता नहीं है, और जो नेकी का काम करे उसे दस नेकियाँ मिलती हैं, और जो राहे ख़ुदा में ख़र्च करे सात सौ गुना मिलता है। (तिर्मिज़ी)

फ़रमान है कि जुमे में आने वाले लोग तीन तरह के हैं- एक वह जो वहाँ लग़्व (बेहूदा और बेकार की हरकत) करता है उसके हिस्से में तो वही लग़्व आता है। एक दुआ़ करता है उसे अगर ख़ुदा चाहे दे, चाहे न दे। तीसरा वह जो ख़ामोशी के साथ ख़ुतबे में बैठता है, किसी मुसलमान की गर्दन फलाँग कर मस्जिद में आगे नहीं बढ़ता, न किसी को तकलीफ़ देता है, उसका जुमा अगले जुमे तक के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है, बल्कि और तीन दिन के गुनाहों का भी। इसलिए कि अल्लाह के वादे में है:

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا.

जो नेकी करे उसे दस गुना अज्र (बदला और सवाब) मिलता है।

Mahtab Ashraf

तबरानी में है कि जुमे से जुमे तक बल्कि और तीन दिन तक कफ़्फ़ारा है। इसलिए कि ख़ुदा का फ़रमान है कि नेकी करने वाले को उस जैसी दस नेकियों का सवाब मिलता है। फ़रमाते हैं जो शख़्स हर महीने में तीन रोज़े रखे उसे साल भर के रोज़ों का यानी तमाम उम्र रोज़े रखने का सवाब मिलता है। इसकी तस्दीक़ अल्लाह की किताब में मौजूद है कि एक नेकी का अज्र दस नेकियों के बराबर है, एक दिन के रोज़े का सवाब दस दिन के रोज़ों के बराबर मिलता है। (तिर्मिज़ी)

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और पुराने बुज़ुर्गों की एक जमाअ़त से मन्क़ूल है कि इस आयत में 'हसना' (नेकी और भलाई) से मुराद कलिमा-ए-तौहीद है, और 'सय्यिआ' (बुराई और बद-अ़मली) से मुराद शिर्क है। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी यह है, लेकिन उसकी कोई सही सनद मेरी नज़र से नहीं गुज़री। इस आयत की तफ़सीर में और भी बहुत सी हदीसें और उलेमा व बुज़ुर्गों के अक़वाल हैं, लेकिन इन्शा-अल्लाह ये भी काफ़ी हैं।

قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْٓ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۚ دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ○ قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○ لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ ○

आप कह दीजिए कि मुझको मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बतला दिया है, कि वह एक मज़बूत दीन है, जो इब्राहीम का तरीक़ा है, जिसमें ज़रा भी टेढ़पन नहीं, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (162) आप फ़रमा दीजिए कि यक़ीनन मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना यह सब ख़ालिस अल्लाह तआ़ला ही का है जो सारे जहान का मालिक है। (163) उसका कोई शरीक नहीं, और मुझको इसी का हुक्म हुआ है, और मैं सब मानने वालों से पहला हूँ। (164)

ख़ुदा की नेमतों का ऐलान हुज़ूर सल्ल. की ज़बान से

तमाम रसूलों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुक्म हो रहा है कि आप पर ख़ुदा की जो नेमत है उसका ऐलान कर दें कि उस रब ने आपको सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) दिखा दी है, जिसमें कोई टेढ़ या कमी नहीं। वह साबित, सालिम, सीधी और सुथरी राह है। इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत (तरीक़ा) है जो मुश्रिकों में से न थे। इस दीन से वही हटता है जो बिल्कुल ही बेवक़ूफ़ हो। एक और आयत में है कि ख़ुदा की राह में पूरा जिहाद करो, वही ख़ुदा है जिसने तुम्हें चुना और वाज़ेह दीन अ़ता फ़रमाया जो तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन है। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के सच्चे फ़रमाँबरदार थे, मुश्रिक न थे, अल्लाह की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे। ख़ुदा के पसन्दीदा थे। सीधी राह की हिदायत पाये हुए थे। दुनिया में भी हमने उन्हें भलाई दी थी और मैदाने क़ियामत में भी वह नेक सालेह लोगों में होंगे। फिर हमने तेरी तरफ़ 'वही' (अपना पैग़ाम) भेजी कि इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत (तरीक़े और राह) की पैरवी करो कि वह मुश्रिकों में न था।

यह याद रहे कि हुज़ूर सल्ल. को आपकी मिल्लत (तरीक़े और दीन) की पैरवी का हुक्म होने से यह

Maktab-e-Ashraf

लाज़िम नहीं आता कि हज़रत इब्राहीम आपसे अफ़ज़ल हों, इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आने से वह तरीक़ा पूरा हुआ और यह दीन आप ही के हाथों कमाल को पहुँचा। इसी लिए हदीस में है कि मैं नबियों का ख़त्म करने वाला हूँ और आदम की तमाम औलाद का मुतलक़ तौर पर सरदार हूँ और मक़ामे महमूद वाला हूँ। जिसकी तरफ़ सारी मख़्लूक़ को रग़बत (चाव और दिलचस्पी) होगी, यहाँ तक कि हज़रत इब्राहीम को भी। इब्ने मरदूया में है कि हुज़ूर सल्ल. सुबह के वक़्त फ़रमाया करते थेः

أَصْبَحْنَا عَلَى مِلَّةِ الْإِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَدِيْنِ نَبِيِّنَا وَمِلَّةِ إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

यानी हमने मिल्लते इस्लाम पर, कलिमा-ए-इख़्लास पर, हमारे नबी के दीन पर और मिल्लते इब्राहीम हनीफ़ पर सुबह की है, जो मुश्रिक न थे।

हुज़ूर सल्ल. से सवाल हुआ कि सबसे ज़्यादा महबूब दीन अल्लाह के नज़दीक कौनसा है? आपने फ़रमाया वह जो यक्सूई और आसानी वाला है। मुस्नद की हदीस में है कि जिस दिन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूर सल्ल. के मोंढ़ों पर मुँह रखकर हब्शियों के जंगी कर्तब देखे थे, उस दिन आपने यह भी फ़रमाया था कि यह इसलिए कि यहूद जान लें कि हमारे दीन में कुशादगी है (यानी ख़्वाह-मख़्वाह की पाबन्दी और तंगी नहीं है)। और मैं आसान दीन देकर भेजा गया हूँ। और हुक्म होता है कि आप मुश्रिकों से अपना मुख़ालिफ़ होना भी बयान फ़रमा दें, वे ख़ुदा के सिवा दूसरों की इबादत करते हैं, दूसरों के नाम पर ज़बीहा करते हैं, मैं सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ उसी के नाम पर ज़बीहा (जानवर ज़िबह) करता हूँ। चुनाँचे बक़र-ईद के दिन हुज़ूर सल्ल. ने जब दो भेड़े ज़िबह किए तो "इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य ...." के बाद यही आयत पढ़ी। आप ही इस उम्मत में सबसे पहले मुस्लिम थे, इसलिए कि यूँ तो हर नबी और उनके मानने वाली उम्मत मुस्लिम ही थी, सब की दावत इस्लाम ही की थी, सब ख़ुदा की ख़ालिस इबादत करते रहे। जैसे फ़रमान हैः

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا نُوْحِيٓ إِلَيْهِ أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدُوْنِ.

यानी तुझसे पहले भी जितने रसूल हमने भेजे सब पर यह बात स्पष्ट कर दी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, तुम सब मेरी ही इबादत करो।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का फ़रमान क़ुरआन में मौजूद है कि आपने अपनी क़ौम से फ़रमाया- मैं तुमसे कोई उजरत तलब नहीं करता, मेरा अज्र (बदला और सवाब) मेरे रब के ज़िम्मे है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुसलमानों में रहूँ। एक और आयत में हैः

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ إِبْرٰهٖمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ. الخ

इब्राहीमी तरीक़े से वही हटता है जिसकी आँखें ही फूट गई हों। वह दुनिया में भी ख़ुदा का मक़बूल बन्दा था और आख़िरत में भी नेक लोगों में से है। उसे जब उसके रब ने फ़रमाया तू ताबेदार बन जा, उसने जवाब दिया कि मैं रब्बुल-आ़लमीन का फ़रमाँबरदार हूँ। इसी की वसीयत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को की थी और याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को कि ऐ मेरे बच्चो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस दीन को पसन्द फ़रमा लिया है पस तुम इस्लाम ही पर मरना।

हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम की आख़िरी दुआ़ में है- ख़ुदाया तूने मुझे मुल्क अ़ता फ़रमाया, ख़्वाब की

ताबीर सिखाई, आसमान व ज़मीन का पहले-पहल पैदा करने वाला तू ही है (यानी बिना किसी नमूने के तूने इसे पैदा किया)। तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा वली है, मुझे इस्लाम की हालत में मौत देना और नेक लोगों में मिला देना। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था- मेरे भाईयो! अगर तुम ईमान वाले हो, अगर तुम मुस्लिम हो तो तुम्हें अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। सबने जवाब दिया कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल रखा है। ऐ अल्लाह! हमें ज़ालिमों के लिए फ़ितना न बना (यानी हम उनके ज़ुल्मों का शिकार और निशाना न हों), और हमें अपनी रहमत के साथ काफ़िरों से बचा ले।

एक और आयत में अल्लाह का फ़रमान है:

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ .... الخ

हमने तौरात उतारी जिसमें हिदायत व नूर है, जिसके मुताबिक़ वे अम्बिया हुक्म करते हैं जो मुस्लिम हैं, यहूदियों को भी और रब्बानियों को भी और यहूद के मज़हबी पेशवाओं को भी...। और फ़रमान है:

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِىْ .... الخ

मैंने हवारियों (ईसा अ़लैहिस्सलाम के शागिर्दों और ख़ादिमों) की तरफ़ 'वही' की कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। सबने कहा हमने ईमान क़बूल किया, हमारे मुसलमान होने पर तुम गवाह रहो।

ये आयतें साफ़ बतला रही हैं कि अल्लाह ने अपने नबियों को इस्लाम के साथ ही भेजा है। हाँ यह और बात है कि मख़्सूस शरीअ़तें जो उनके लिये हर तरह मुनासिब थीं, दी गई थीं। ज़माने और हालात के एतिबार से अहकाम बदलते रहे, यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. का दीन आने पर पहले दीन मन्सूख़ हो गये। न मन्सूख़ होने वाला, न बदलने वाला, हमेशा रहने वाला दीन इस्लाम आपको मिला, जिस पर एक जमाअ़त क़ियामत तक क़ायम रहेगी और इस पाक दीन का झंडा हमेशा-हमेशा लहराता रहेगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है कि हम अम्बिया की जमाअ़त आपस में अ़ल्लाती भाई (बाप शरीक भाई) हैं, हम सब का दीन एक ही है। भाईयों की एक क़िस्म तो 'अ़ल्लाती' होती है जिनका बाप एक हो माँयें अलग अलग हों, एक क़िस्म 'अख़्याफ़ी' जिनकी माँ एक हो बाप अलग-अलग हों, और एक 'ऐनी' भाई हैं, जिनका बाप भी एक हो और माँ भी एक हो। पस तमाम अम्बिया का दीन एक ही है, यानी अल्लाह वह्दहू ला शरीक की इबादत, और अहकाम के एतिबार से शरीअ़तें अलग अलग हैं। इसलिए उन्हें अ़ल्लाती भाई फ़रमाया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तकबीरे-ऊला के बाद नमाज़ में "इन्नी वज्जह्तु...." वाली आयत, उसके बाद यह आयत जिसका बयान चल रहा है, और फिर यह पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْمَلِكُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ رَبِّىْ وَاَنَا عَبْدُكَ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ جَمِيْعًا لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ وَاهْدِنِىْ لِاَحْسَنِ الْاَخْلَاقِ لَا يَهْدِىْ لِاَحْسَنِهَآ اِلَّآ اَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّىْ سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّىْ سَيِّئَهَآ اِلَّآ اَنْتَ. تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ.

अल्लाहुम्-म अन्तल् मलिकु ला इला-ह इल्ला अन्-त रब्बी व अना अ़ब्दु-क ज़लमतु नफ़्सी वअ़्तरफ़्तु बिज़म्बी फ़ग़्फ़िर् ली ज़ुनूबी जमीअ़न् ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त वह्दिनी लि-अह्सनिल् अख़्लाक़ि ला

यह्दी लि-अह्सनिहा इल्ला अन्-त वस्रिफ़् अ़न्नी सय्यिअुहा ला यस्रिफ़ु अ़न्नी सय्यिअुहा इल्ला अन्-त तबारक्-त व तआ़लै-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क।

यह हदीस लम्बी है इसके बाद हदीस के बयान करने वाले ने रुकूअ़ व सज्दे और अत्तहिय्यात की दुआ़ओं का ज़िक्र किया है। (मुस्लिम शरीफ़)

Maktab E Ashraf

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۭ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ○	आप फ़रमा दीजिए कि क्या मैं ख़ुदा तआ़ला के सिवा किसी और को रब बनाने के लिए तलाश करूँ हालाँकि वह हर चीज़ का मालिक है। और जो शख़्स भी कोई अ़मल करता है वह उसी पर रहता है, और कोई दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम सबको अपने रब के पास जाना होगा, फिर वह तुमको जतला देंगे जिस-जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (165)

हर शख़्स अपने किये का ज़िम्मेदार है

काफ़िरों को न तो इबादत का ख़ुलूस (नेक नीयती) नसीब है, न अल्लाह पर सच्चा तवक्कुल मयस्सर है। उनसे कह दो कि क्या मैं भी तुम्हारी तरह अपने और सब के सच्चे माबूद को छोड़कर झूठे माबूद बना लूँ? मेरी परवरिश करने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बचाने वाला, मेरे काम बनाने वाला, मेरी बिगड़ी को संवारने वाला तो अल्लाह ही है, फिर मैं दूसरे का सहारा क्यों लूँ? मालिक व ख़ालिक़ को छोड़कर बेबस और मोहताज के पास क्यों जाऊँ? गोया इस आयत में अल्लाह पर तवक्कुल और इबादते ख़ुदा का हुक्म होता है। ये दोनों चीज़ें उमूमन एक साथ बयान हुआ करती हैं जैसेः

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ.

"इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन" में। और

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ.

"फ़अ़बुदहु व त-वक्कल् अ़लैहि" में। और

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا.

"क़ुल् हुवर्रहमानु आमन्ना बिही व अ़लैहि तवक्कलना" में। और

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا.

'रब्बुल् मश्रिक़ि वल्-मग़रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तख़िज़्हु वकीला' में, और दूसरी आयतों में भी।

फिर क़ियामत के दिन की ख़बर देता है कि हर शख़्स को उसके आमाल का बदला अ़दल व इन्साफ़ से मिलेगा। नेकों को जज़ा (अच्छा बदला) और बुरों को सज़ा (बुरा बदला)। एक के गुनाह दूसरे पर नहीं जाएँगे। कोई दूसरे की रिश्तेदारी और ताल्लुक़ के बदले में पकड़ा न जाएगा। उस दिन ज़ुल्म न होगा, न

Maktab E Ashraf

किसी के गुनाह बढ़ाये जाएँगे, न किसी की नेकी घटाई जाएगी, अपनी-अपनी करनी अपनी-अपनी भरनी। हाँ जिनके दाएँ हाथ में आमाल-नामे हैं उनके नेक आमाल की बरकत उनकी औलाद को भी पहुँचेगी। जैसे फ़रमायाः

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ.....الخ

यानी जो ईमान लाये और उनकी औलाद ने भी उनके ईमान में उनकी ताबेदारी की, हम उनकी औलाद को भी उनके बुलन्द दर्जे में पहुँचा दें अगरचे उनके आमाल उस दर्जे के न हों।

लेकिन चूँकि असल ईमान में शिर्कत है इसलिए दर्जों में भी बढ़ा देंगे और ये दर्जे माँ-बाप के दर्जे घटाकर न बढ़ेंगे बल्कि यह अल्लाह का फ़ज़्ल व करम होगा। हाँ बुरे लोग अपनी बद-आमाली के झगड़े में घिरे हुए होंगे, तुम भी अ़मल कर रहे हो हम भी कर रहे हैं। ख़ुदा के यहाँ सबको जाना है, वहाँ आमाल का हिसाब होना है। फिर मालूम हो जाएगा कि इस इख़्तिलाफ़ (झगड़े और विवाद) में हक़ और अल्लाह की रज़ा किसके साथ थी। हमारे आमाल से तुम और तुम्हारे आमाल से हम ख़ुदा के यहाँ पूछे न जाएँगे। क़ियामत के दिन ख़ुदा के यहाँ सच्चे फ़ैसले होंगे और वह सब कुछ जानने वाला ख़ुदा हमारे दरमियान सच्चे फ़ैसले फ़रमा देगा।

और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाया और एक का दूसरे पर रुतबा बढ़ाया ताकि (ज़ाहिरन) तुमको उन चीज़ों में आज़माये जो तुमको दी हैं, यक़ीनन आपका रब जल्द सज़ा देने वाला है, और बेशक वह बड़ी मग़फ़िरत करने वाला, बड़ी मेहरबानी करने वाला है। (166)	وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَآ ءَاتَىٰكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُۥ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

النصف ٢٠ ع ١١

ज़मीन की ख़िलाफ़त

उस ख़ुदा ने तुम्हें ज़मीन के आबाद करने वाले बनाये हैं। एक के बाद एक आते रहते हैं, ऐसा नहीं किया कि ज़मीन पर फ़रिश्ते बसते हों। अल्लाह का फ़रमान हैः

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ.....الخ

मुम्किन है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को ग़ारत कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाकर देख ले कि तुम कैसे आमाल करते हो! उसने तुम्हारे बीच विभिन्न दर्जे रखे हैं, कोई अमीर है कोई ग़रीब है, कोई अच्छे अख़्लाक़ वाला है कोई बद-अख़्लाक़ है, कोई ख़ूबसूरत है कोई बदसूरत है। यह भी उसकी हिक्मत है, उसी ने रोज़ियाँ तक़सीम की हैं। एक को एक के मातहत कर दिया है। अल्लाह का फ़रमान हैः

انْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ...الخ

देख ले कि हमने उनमें से एक को एक पर कैसे फ़ज़ीलत दी है।

इससे इरादा यह है कि आज़माईश व इम्तिहान हो जाये। अमीर आदमियों का शुक्र फ़क़ीरों का सब्र

Maktab E Ashraf

मालूम हो जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं दुनिया मीठी और सब्ज़ रंग की है, अल्लाह तुम्हें इसमें ख़लीफ़ा बनाकर देख रहा है कि तुम कैसे आमाल करते हो। पस तुम्हें दुनिया से होशियार रहना चाहिए। और औ़रतों के बारे में बहुत एहतियात से रहना चाहिए (यानी उनके हुक़ूक़ और अपने वक़ार के लिहाज़ के साथ रहना चाहिये)। बनी इस्राईल का पहला फ़ितना औ़रतों के बारे में था।

आयत के आख़िर में जबकि सूरः भी ख़त्म होने जा रही है अपने दोनों वस्फ़ बयान फ़रमाये- अ़ज़ाब का भी और सवाब का भी, पकड़ का भी और बख़्शिश का भी। अपने नाफ़रमानों पर नाराज़गी का और अपने फ़रमाँबरदारों पर रज़ामन्दी का। उमूमन क़ुरआन करीम में ये दोनों सिफ़तें एक साथ ही बयान फ़रमाई जाती हैं। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ.

एक और आयत में है:

نَبِّئْ عِبَادِىْٓ اَنِّىْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. وَاَنَّ عَذَابِىْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ.

यानी तेरा रब अपने बन्दों के गुनाह बख़्शने वाला भी है और सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब वाला भी है। पस इन आयतों में उम्मीद व रग़बत और हैबत दोनों हैं। जन्नत और अपने फ़ज़्ल का लालच भी दिलाता है, और आग और अ़ज़ाब से धमकाता भी है। कभी कभी इन दोनों वस्फ़ को अलग-अलग बयान फ़रमाता है ताकि अ़ज़ाब से बचने और नेमतों के हासिल करने का ख़्याल पैदा हो। अल्लाह तआ़ला हमें अपने हुक्मों की पाबन्दी और अपनी नाराज़गी के कामों से नफ़रत नसीब फ़रमाए और हमें कामिल यक़ीन अ़ता फ़रमाये कि हम उसके कलाम पर ईमान व यक़ीन रखें। वह क़रीब है, पुकार को सुनने वाला है, वह दुआ़ओं का सुनने वाला है, वह जव्वाद व करीम और वह्हाब है। आमीन

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- अगर मोमिन सही तौर पर ख़ुदा के अ़ज़ाब से वाक़िफ़ हो जाए तो उसकी जन्नत की तमन्ना व हिर्स किसी को न रहे, और अगर काफ़िर अल्लाह की रहमत से पूरी तरह वाक़िफ़ हो जाए तो किसी को भी जन्नत से मायूसी न हो। अल्लाह ने सौ रहमतें बनाई हैं जिनमें से सिर्फ़ एक को बन्दों के दरमियान रखा है, उसी से एक दूसरे पर रहम व मेहरबानी करता है, बाक़ी निन्नानवे तो सिर्फ़ अल्लाह ही के पास हैं। यह हदीस तिर्मिज़ी और मुस्लिम शरीफ़ में भी है। एक और रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा करने के वक़्त एक तहरीर लिखी जो उसके पास अ़र्श पर है, कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- अल्लाह तआ़ला ने रहमत के सौ हिस्से किए हैं जिनमें से निन्नानवे तो अपने पास रखे और एक हिस्सा ज़मीन पर नाज़िल फ़रमाया, उसी हिस्से की वजह से मख़्लूक़ को एक दूसरे पर शफ़क़त व करम है, यहाँ तक कि जानवर भी अपने बच्चे पर से अपना पाँव रहम खाकर उठा लेता है, कि कहीं उसे तकलीफ़ न हो।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से सूरः अन्आ़म की तफ़सीर ख़त्म हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः आराफ़

सूरः आराफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 206 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

الٓمّٓصٓ ○ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ○ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ○	अलिफ़-लाम-मीम-सॉद। (1) यह एक किताब है, जो आपके पास इसलिए भेजी गई है कि आप इसके ज़रिये से डराएँ, सो आप के दिल में इससे बिल्कुल तंगी न होनी चाहिए, और यह नसीहत है ईमान वालों के लिए। (2) तुम लोग इसका इत्तिबा करो, जो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से आई है, और ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर दूसरे रफ़ीक़ों की इत्तिबा मत करो, तुम लोग बहुत ही कम नसीहत मानते हो। (3)

एक किताब जिसकी इत्तिबा वाजिब है

इस सूरः के शुरू में जो हुरूफ़ हैं उनके बारे में जो कुछ बयान हमें करना था उसे तफ़सील के साथ सूरः ब-क़रह की तफ़सीर के शुरू में मय उलेमा के मतभेद के हम लिख आए हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इसके मायने मन्क़ूल हैं कि इससे मुरादः

اَنَا اللّٰهُ اُفَصِّلُ.

है। "यानी मैं अल्लाह हूँ मैं तफ़सील से बयान फ़रमा रहा हूँ"।

सईद बिन जुबैर रह. से भी यही रिवायत है कि यह किताब क़ुरआने करीम तेरी जानिब तेरे रब की तरफ़ से नाज़िल की गयी है, तू इसमें कोई शक न करना, दिल-तंग न होना। इसके पहुँचाने में किसी से न डरना, न किसी का लिहाज़ करना, बल्कि पहले गुज़रे बहादुर और हौसले वाले पैग़म्बरों की तरह सब्र व संयम के साथ अल्लाह के कलाम की तब्लीग़ उसकी मख़्लूक़ में करना। यह इसलिये उतारी गयी है कि तू काफ़िरों को होशियार और सचेत कर दे। यह क़ुरआन मोमिनों के लिए सीख व इबरत और वअ़ज़ व नसीहत है।

इसके बाद तमाम दुनिया को हुक्म होता है कि इस नबी-ए-उम्मी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैरवी करो, इसके क़दम से क़दम मिलाकर चलो। यह तुम्हारे रब का भेजा हुआ है। कलामे ख़ुदा तुम्हारे पास लाया है। वह ख़ुदा तुम सबका ख़ालिक़ व मालिक है। वह तमाम जानदारों का रब है। ख़बरदार! हरगिज़-हरगिज़ नबी से हटकर दूसरों की ताबेदारी में न लगना, वरना नाफ़रमानी और हुक्म न मानने की

Maktab E Ashraf

सज़ा होगी। अफ़सोस तुम बहुत ही कम नसीहत हासिल करते हो। जैसे एक और जगह फ़रमान है- अगरचे तुम चाहो लेकिन अक्सर लोग अपनी बेईमानी (यानी कुफ़्र) पर अड़े रहेंगे। एक और आयत में है:

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

यानी अगर तू इनसानों की कसरत (अधिकता) की तरफ़ झुक जाएगा तो वे तुझे ग़लत राह पर डालने की कोशिश करेंगे।

सूरः यूसुफ़ में फ़रमान है कि अक्सर लोग ख़ुदा को मानते हुए भी शिर्क से बाज़ नहीं रहते।

और बहुत-सी बस्तियों को हमने तबाह कर दिया, और उन पर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त पहुँचा, या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम में थे। (4) तो जिस वक़्त उन पर हमारा अ़ज़ाब आया उस वक़्त उनके मुँह से सिवाय इसके और कोई बात न निकली थी कि वाक़ई हम ज़ालिम थे। (5) फिर हम उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे जिनके पास पैग़म्बर भेजे गए थे, और हम पैग़म्बरों से ज़रूर पूछेंगे। (6) फिर हम चूँकि पूरी ख़बर रखते हैं, उनके सामने बयान कर देंगे, और हम कुछ बेख़बर न थे। (7)	وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْهُمْ قَآئِلُوْنَ ○ فَمَا كَانَ دَعْوٰهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ○ فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ○ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ○

इनकार और फिर ख़ुदा का अ़ज़ाब

उन लोगों को जो हमारे रसूलों की मुख़ालफ़त करते थे, उन्हें झुठलाते थे, तुमसे पहले हम हलाक कर चुके हैं। दुनिया और आख़िरत की ज़िल्लत उन पर पड़ी। जैसे फ़रमान है- तुझसे पहले रसूलों से भी मज़ाक़ किया गया, लेकिन नतीजा यह हुआ कि मज़ाक़ करने वालों को उनके मज़ाक़ ने बरबाद कर दिया। एक और आयत में है कि बहुत सी ज़ालिम बस्तियों को हमने ग़ारत कर दिया, जो अब तक उल्टी पड़ी हैं। एक और जगह इरशाद है- बहुत से इतराते हुए लोगों के शहर हमने वीरान कर दिये, देख लो कि अब तक उनके खंडर तुम्हारे सामने हैं, जो बहुत कम आबाद हुए हैं। वास्तव में वारिस व मालिक हम ही हैं। ऐसे ज़ालिमों के पास हमारा अ़ज़ाब अचानक आ गया और वे अपनी ग़फ़लतों और अ़य्याशियों में मशग़ूल थे, कहीं दोपहर के आराम के वक़्त, कहीं रात के सोने के वक़्त। चुनाँचे एक आयत में है:

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ○ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ○

यानी लोग इससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि उनके सोते हुए रातों के वक़्त हमारा अ़ज़ाब आ जाये, या उन्हें डर नहीं कि दोपहर को उनके आराम के वक़्त उन पर हमारा अ़ज़ाब आ जाए।

एक और आयत में है कि क्या मक्कारियों से हमारी नाफ़रमानियाँ करने वाले इस बात से निडर हो गये हैं कि ख़ुदा उन्हें ज़मीन में धंसा दे? या उनके पास अ़ज़ाबे इलाही इस तरह आ जाए कि उन्हें पता भी

Maktab E Ashraf

न चले। या ख़ुदा उन्हें उनकी बेख़बरी की आराम की घड़ियों में ही पकड़ ले। कोई नहीं जो ख़ुदा को आजिज़ कर सके। बहुत मुम्किन है कि ख़ुदा उन्हें ख़ौफ़ज़दा बना दे और अपनी गिरफ़्त में ले ले। यह तो रब की रहमत व मेहरबानी है जो गुनाहगार ज़मीन पर चलते फिरते हैं। अज़ाबे ख़ुदा आ जाने के बाद तो ये ख़ुद अपनी ज़बानों से अपने गुनाहों का इक़रार कर लेंगे लेकिन उस वक़्त क्या लाभ? इसी मज़मून को आयत "व कम् क़समूना...." में बयान फ़रमाया है। एक हदीस में आया है कि जब तक ख़ुदा तआ़ला बन्दों के उज़्र (बहाने) ख़त्म नहीं कर देता उन्हें अ़ज़ाब नहीं करता। अ़ब्दुल-मलिक से जब यह हदीस उनके शागिर्दों ने सुनी तो मालूम किया इसकी क्या सूरत है? तो आपने यही आयतः

فَمَا كَانَ دَعْوٰهُمْ..... الخ

पढ़कर सुनाई। फिर फ़रमाया उम्मतों से उनके रसूलों से क़ियामत के दिन सवाल होगा। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ.

यानी उस दिन आवाज़ दी जायेगी और मालूम किया जायेगा कि तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया। (अल्लाह की यह कार्रवाई क़ानून और ज़ाबते को पूरा करने के लिये होगी वरना अल्लाह तो सब कुछ जानते हैं)।

इस आयत में उम्मतों से सवाल किया जाना बयान किया गया है। एक और आयत में है:

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ..... الخ

रसूलों को क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला जमा करेगा और उनसे पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला? वे कहेंगे कि हमें कोई इल्म नहीं, ग़ैब का जानने वाला तू ही है। पस उम्मत से रसूलों को स्वीकार करने के बारे में और रसूलों से तब्लीग़ के बारे में क़ियामत के दिन सवाल होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- तुम में से हर एक इख़्तियार वाला (यानी निगराँ और ज़िम्मेदार) है और अपने अधीन (मातहत) लोगों के बारे में उससे सवाल किया जाने वाला है। बादशाह से उसकी प्रजा का, हर आदमी से उसके घर वालों और बाल-बच्चों का, हर औ़रत से उसके शौहर के घर का, हर ग़ुलाम से उसके आक़ा के माल का सवाल होगा। हदीस को बयान करने वाले हज़रत ताऊस रह. ने इस हदीस को बयान फ़रमाकर फिर इसी आयत की तिलावत की। इस इज़ाफ़े के बग़ैर यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी मौजूद है, और यह इज़ाफ़ा इब्ने मरदूया ने नक़ल किया है।

क़ियामत के दिन नामा-ए-आमाल रखे जाएँगे और सारे आमाल ज़ाहिर हो जाएँगे। ख़ुदा तआ़ला हर शख़्स को उसके आमाल की ख़बर देगा, किसी के अ़मल के वक़्त ख़ुदा ग़ायब न था। हर-हर छोटे बड़े, छुपे खुले अ़मल की ख़ुदा की तरफ़ से ख़बर दी जाएगी। ख़ुदा हर शख़्स के आमाल से ख़बरदार है, उस पर पोशीदा नहीं, न वह किसी चीज़ से ग़ाफ़िल है, आँखों की ख़ियानत (यानी इशारे और मामूली से मामूली हरकत) से, सीनों की छुपी हुई बातों से वह वाक़िफ़ है। हर पत्ते के झड़ने का उसे इल्म है। ज़मीन की अँधेरियों में जो दाना होता है उसे भी वह जानता है। हर सूखी व गीली चीज़ उसके पास की खुली किताब में मौजूद है।

Maktab E Ashraf

और उस दिन वज़न भी किया जाएगा, फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा सो ऐसे लोग कामयाब होंगे। (8) और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया, इस वजह से कि वे हमारी आयतों की हक़-तल्फ़ी करते थे। (9)	وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ نِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهُ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ○

आमाल का तौला जाना

क़ियामत के दिन नेकी बदी इन्साफ़ और अ़दल के साथ तौली जाएँगी। अल्लाह तआ़ला किसी पर ज़ुल्म न करेगा। जैसा कि फ़रमायाः

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ.....

क़ियामत के दिन हम अ़दल की तराज़ू रखेंगे, किसी पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा। राई के दाने के बराबर भी अ़मल होगा तो हम उसे ले आएँगे और हम हिसाब लेने में काफ़ी हैं।

एक और आयत में है, अल्लाह तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता। वह नेकी को बढ़ाता है और अपने पास से बड़ा बदला अ़ता फ़रमाता है। सूरः क़ारिआ़ में फ़रमाया- जिसका नेकियों का पलड़ा भारी हो गया उसे ऐश व आराम की ज़िन्दगी मिली और जिसका नेकियों का पलड़ा हल्का रह गया उसका ठिकाना हाविया है जो नाम है भड़कती हुई आग के भण्डार का। एक और आयत में हैः

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ.

यानी जब सूर फूँक दिया जाएगा और नाते और नसब हसब टूट जाएँगे, कोई किसी का हाल पूछने वाला न होगा। नेक आमाल अगर तौल में बढ़ गए तो कामयाबी पा ली, वरना ख़सारे (घाटे) के साथ जहन्नम में दाख़िल हुए।

एक वज़ाहत

कोई तो कहता है कि ख़ुद आमाल तौले जाएँगे, कोई कहता है कि नामा-ए-आमाल तौले जाएँगे, कोई कहता है कि ख़ुद अ़मल करने वाले तौले जाएँगे। इन तीनों क़ौलों को इस तरह जमा करना भी मुम्किन है कि हम कहें ये सब सही हैं, कभी आमाल तौले जाएँगे, कभी नामा-ए-आमाल, कभी ख़ुद आमाल करने वाले। वल्लाहु आलम

इन तीनों बातों की दलीलें भी मौजूद हैं। पहले क़ौल का मतलब यह है कि आमाल अगरचे एक बिना जिस्म वाली चीज़ हैं लेकिन क़ियामत के दिन ख़ुदा तआ़ला उन्हें जिस्म अ़ता फ़रमायेगा जैसा कि सही हदीस में है- सूरः ब-क़रह और सूरः आले इमरान क़ियामत के दिन दो सायबानों की या दो बादल की या पर फैलाये परिन्दों के दो झुंडों की सूरत में आएँगी। एक और हदीस में है कि क़ुरआन अपने क़ारी (पढ़ने वाले) और आ़मिल (अ़मल करने वाले) के पास एक अच्छी शक्ल वाले नूरानी चेहरे के मालिक नौजवान की सूरत में आएगा। यह उसे देखकर पूछेगा तू कौन है? वह कहेगा कि मैं क़ुरआन हूँ जो तुझे रातों की नींद नहीं

करने देता था, और दिनों में पानी पीने से रोकता था। हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु वाली हदीस में जिसमें कब्र के सवाल जवाब का ज़िक्र है, उसमें यह भी है कि मोमिन के पास एक नौजवान ख़ूबसूरत अच्छी शक्ल वाला आयेगा, यह उससे पूछेगा तू कौन है? वह जवाब देगा मैं तेरा नेक अ़मल हूँ और काफ़िर व मुनाफ़िक़ के पास इसके उलट (यानी बुरी शक्ल वाले) शख़्स के आने का बयान है। यह तो थीं पहले क़ौल की दलीलें।

दूसरे क़ौल की दलीलें ये हैं- एक हदीस में है कि एक शख़्स के सामने उसके गुनाहों के निन्नानवे दफ़्तर फैलाये जाएँगे, जिनमें से हर एक इतना बड़ा होगा जितनी दूर तक नज़र पहुँचे। फिर एक पर्चा नेकी का लाया जाएगा जिसमें "ला इला-ह इल्लल्लाहु" होगा। यह कहेगा ख़ुदाया! यह इतना सा पर्चा इन दफ़्तरों के मुक़ाबले में क्या हैसियत रखता है? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे तू इससे बेख़तर रह कि तुझ पर ज़ुल्म किया जाए। अब वह पर्चा उन दफ़्तरों के मुक़ाबले में नेकी के पलड़े में रखा जाएगा तो वे सब दफ़्तर ऊँचे हो जाएँगे और यह सबसे वज़न दार और भारी हो जायेगा। (तिर्मिज़ी)

तीसरा क़ौल भी दलील रखता है। हदीस में है कि एक बहुत मोटा ताज़ा गुनाहगार इनसान ख़ुदा के सामने लाया जाएगा, लेकिन एक मच्छर के पर के बराबर भी वज़न ख़ुदा के पास उसका न होगा। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا.

कि हम क़ियामत के दिन उनके लिए कोई वज़न क़ायम न करेंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ में जो हदीसें हैं उनमें है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- उनकी पतली पिन्डलियों पर मत जाना, ख़ुदा की क़सम अल्लाह के नज़दीक यह उहुद पहाड़ से भी ज़्यादा वज़न दार हैं।

और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने के लिए जगह दी और हमने उसमें तुम्हारे लिए ज़िन्दगानी का सामान पैदा किया, तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो। (10)	وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۟ ع

नेमत की नाशुक्री

अल्लाह तआ़ला अपना एहसान बयान फ़रमा रहा है कि उसने ज़मीन अपने बन्दों के रहने सहने को बना दी, उसमें मज़बूत पहाड़ गाड़ दिये ताकि हिले-जुले नहीं। उसमें पानी के चश्मे जारी कर दिये, उसमें मन्ज़िलें और घर बनाने की ताक़त इनसान को अ़ता फ़रमाई। और बहुत सी नफ़े की चीज़ें उसके लिए रख दीं। बादल मुक़र्रर करके उनमें से पानी बरसाकर उनके लिए खेत और बाग़ात मुक़र्रर कर दिये, रोज़ी की तलाश के ज़रिये साधन जमा कर दिये, तिजारत और कमाई के ढंग सिखा दिये, बावजूद इसके अक्सर लोग पूरी शुक्रगुज़ारी नहीं करते। एक और आयत में फ़रमान हैः

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا. اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ.

यानी अगर तुम ख़ुदा की नेमतों को गिनने बैठो तो यह भी तुम्हारे बस की बात नहीं, लेकिन इनसान

बड़ा ही ना-इन्साफ़ और नाशुक्रा है।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ○	और हमने तुमको पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। (11)

इनसान पर किया गया एक और इनाम

इनसान के शर्फ़ (सम्मान और गौरव) को इस तरह बयान फ़रमाता है कि तुम्हारे बाप आदम को मैंने बनाया। और शैतान की दुश्मनी को बयान फ़रमा रहा है कि उसने तुम्हारे बाप आदम से हसद (जलना) किया, हमारे फ़रमान से सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर उसने हुक्म न माना। पस तुम्हें चाहिए कि दुश्मन को दुश्मन समझो और उसके दाव-घात से होशियार रहो। इसी वाक़िए का ज़िक्र आयतः

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ خَالِقٌ ۢ بَشَرًا..... الخ

में (सूरः हिज्र आयत 28 में) भी है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को परवर्दिगार ने अपने हाथ से मिट्टी से बनाया। इनसानी सूरत अ़ता फ़रमाई। फिर अपने पास की रूह फूँकी। फिर अपनी शान की बड़ाई मनवाने के लिए फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि उनके सामने झुक जाओ। सब ने सुनते ही इताअ़त कर ली लेकिन इब्लीस (शैतान) न माना। इस वाक़िए को सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में हम लिख आए हैं। इस आयत का भी यही मतलब है और इसी को इमाम इब्ने जरीर रह. ने भी पसन्द फ़रमाया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि इनसान अपने बाप की पीठ में पैदा किया जाता है और अपनी माँ के पेट (गर्भ) में सूरत दिया जाता है। और बाज़ पहले उलेमा ने भी लिखा है कि इस आयत में मुराद औलादे आदम (यानी इनसान) हैं। इमाम ज़ह्हाक का क़ौल है कि आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया, फिर उनकी औलाद की सूरत बनाई, लेकिन यह सब अक़वाल ग़ौर-तलब हैं, क्योंकि आयत में इसके बाद ही फ़रिश्तों के सज्दे का ज़िक्र किया है और ज़ाहिर है कि सज्दा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के लिए ही हुआ था। जमा (बहुवचन) के सीग़े (कलिमे) से इसका बयान इसलिए हुआ कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तमाम इनसानों के बाप हैं। इसी की नज़ीर आयतः

فَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ.... الخ

है। कि ख़िताब उन बनी इस्राईल से है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में मौजूद थे। और दर असल बादल का साया उनसे पहलों पर हुआ था जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में थे, न कि उन पर। लेकिन चूँकि उनके बड़ों और बुज़ुर्गों पर साया करना वह एहसान था कि उनको भी उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए था, इसलिए उन्हीं को ख़िताब करके अपनी वह नेमत याद दिलाई। यहाँ यह रोशन है और इसके बिल्कुल विपरीत (उलट मज़मून वाली) आयतः

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ..... الخ

है। कि मुराद आदम अ़लैहिस्सलाम हैं, क्योंकि सिर्फ़ वही मिट्टी से बनाये गये, उनकी तमाम औलाद नुत्फ़े (वीर्य के क़तरे) से पैदा हुई। और यही सही है, क्योंकि मुराद इनसान की जिन्स है, न कि कोई ख़ास शख़्स। वल्लाहु आलम

Maktaba E Ashraf

(अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया, तू जो सज्दा नहीं करता, तुझको इससे कौनसी बात रुकावट है, जबकि मैं तुझको हुक्म दे चुका। कहने लगा, मैं इससे बेहतर हूँ, आपने मुझ को आग से पैदा किया है और इसको आपने मिट्टी से पैदा किया। (12)	قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ط قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ج خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ○

शैतान का ग़ुरूर व घमंड

जब अल्लाह तआ़ला ने शैतान से फ़रमाया- तुझे किस चीज़ ने बेबस, मोहताज और मजबूर कर दिया कि तू सज्दा न करे? तो शैतान ने जो वजह बताई सच तो यह है कि वह अपने गुनाह से भी ज़्यादा बुरी थी। गोया वह इताअ़त से इसलिए बाज़ रहता है कि उसके नज़दीक बड़े दर्जे वाले को कम दर्जे वाले और एक आला को अदना के सामने सज्दा किए जाने का हुक्म ही नहीं दिया जा सकता। वह मलऊन कह रहा है कि मैं इससे बेहतर हूँ फिर मुझे इसके सामने झुकने का हुक्म क्यों हो रहा है? फिर अपने बेहतर होने के सुबूत में कहता है कि मैं आग से बना, यह मिट्टी से। शैतान मलऊन असल तत्व को देखता है और उस फ़ज़ीलत को भूल जाता है कि मिट्टी वाले को अल्लाह ने अपने हाथ से बनाया है और उसके अन्दर अपनी रूह फूँकी है। पस इस वजह से कि उसने फ़रमाने ख़ुदावन्दी के होते हुए फ़ासिद ख़्याल से काम लिया और सज्दे से रुक गया। ख़ुदा की रहमतों से दूर डाल दिया गया और तमाम नेमतों से मेहरूम रह गया। उस मलऊन ने अपने क़ियास (अन्दाज़े और ख़्याल) और अपने दावे में भी ग़लती की, मिट्टी की सिफ़त है नर्म होना, मशक़्क़त उठाने वाली होना, दूसरे का बोझ सहारना, चीज़ों को उगाना, बढ़ाना परवरिश करना, सुधार करना वग़ैरह। और आग की सिफ़त है जल्दी करना, जला देना, बेचैनी फैलाना, फूँक देना। इसलिए इब्लीस अपने गुनाह पर अड़ गया और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने अपने गुनाह की माज़िरत की, उससे तौबा की और ख़ुदा की तरफ़ रुजू किया। रब के अहकाम को तस्लीम किया, अपने गुनाह का इक़रार किया, रब से माफ़ी चाही, बख़्शिश के तालिब हुए।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- फ़रिश्ते नूर से पैदा किए गए हैं, शैतान आग के शोले से और इनसान उस चीज़ से जो तुम्हारे सामने बयान कर दी गई है यानी मिट्टी से। (मुस्लिम)

एक और रिवायत में है- फ़रिश्ते अ़र्श के नूर से, जिन्नात आग से और इनसान को मिट्टी से पैदा किया गया। एक ग़ैर-सही हदीस में यह और इज़ाफ़ा भी है कि हूरे-ऐन ज़ाफ़रान से बनाई गई हैं। हज़रत हसन रह. फ़रमाते हैं- शैतान ने यह क़ियास (अन्दाज़ा और ख़्याल) किया और यही पहला शख़्स है जिसने क़ियास का दरवाज़ा खोला। इसकी सनद सही है। हज़रत इमाम इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि सबसे पहला क़ियास करने वाला इब्लीस (शैतान) है। याद रखो सूरज चाँद की पूजा भी क़ियास की बदौलत शुरू

Maktab E Ashraf

हुई है, इसकी सनदें भी सही हैं।

(अल्लाह पाक ने) फ़रमाया, तू आसमान से उतर, तुझको कोई हक़ हासिल नहीं कि तू इसमें (यानी आसमान में रहकर) तकब्बुर करे, सो तू निकल, बेशक तू ज़लीलों में शुमार होने लगा। (13) वह कहने लगा कि मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दीजिये। (14) (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि तुझको मोहलत दी गई। (15)	قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ٥ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ٥ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ٥

शैतान का तकब्बुर और उस पर हमेशा की लानत

इब्लीस (शैतान) को उसी वक़्त हुक्म मिला कि मेरी नाफ़रमानी और मेरा हुक्म न मानने के सबब अब तू यहाँ जन्नत में नहीं रह सकता, यहाँ से उतर जा, क्योंकि यह जगह तकब्बुर करने की नहीं। बाज़ों ने कहा कि यहाँ रुतबा मुराद है, यानी जिन मलकूते आला में तू है उस मर्तबे में कोई सरकश नहीं रह सकता है। जा यहाँ से चला जा, तू अपनी सरकशी के बदले ज़लील व ख़्वार हस्तियों में शामिल कर दिया गया है। तेरी ज़िद और हट की यही सज़ा है। अब शैतान घबराया और ख़ुदा से मोहलत माँगने लगा कि मुझे क़ियामत तक की ढील दी जाए। चूँकि अल्लाह तआ़ला की इसमें मस्लेहतें और हिक्मतें थीं, भले बुरों को दुनिया में ज़ाहिर करना था, और अपनी हुज्जत पूरी करनी थी, इस मलऊन की इस दरख़्वास्त को मन्ज़ूर फ़रमा लिया गया। उस हाकिम पर किसी की हुकूमत नहीं, उसके सामने बोलने की किसी को मजाल नहीं, जो उसके इरादे को टाल सके। कोई नहीं जो उसके हुक्म को बदल सके, वह बहुत तेज़ी से हिसाब लेने वाला है।

वह कहने लगा इस सबब से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं क़सम खाता हूँ कि मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूँगा। (16) फिर उनपर हमला करूँगा, उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी, और उनकी दाहिनी तरफ़ से भी और उनकी बाईं तरफ़ से भी, और आप उनमें ज़्यादातर को एहसान मानने वाला न पाईयेगा। (17)	قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ ۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ط وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ٥

शैतान मलऊन की जुर्रत व हिम्मत

इब्लीस ने जब अल्लाह से अ़हद ले लिया तो अब बढ़-बढ़कर बातें बनाने लगा कि जैसे तूने मेरी राह मारी (शैतानी देखिये कि अपनी गुमराही को ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब करता है) मैं भी आदम की औलाद की राह मारूँगा (यानी उन्हें रास्ते से गुमराह करूँगा), और हक़ के और निजात के तेरे सीधे रास्ते से उन्हें

रोकूँगा और बहका-बहकाकर तेरी तौहीद से और तेरी इबादत से हटा दूँगा।

बाज़ 'नहवी' कहते हैं कि "फ़-बिमा" में 'ब' क़सम के लिए है यानी मुझे क़सम है, इस मेरी बरबादी के मुक़ाबले में उसकी औलाद को बरबाद करके रहूँगा। औन बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि मैं मक्का के रास्ते पर बैठ जाऊँगा। लेकिन सही यही है कि नेकी के हर रास्ते पर। चुनाँचे मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि शैतान आदम की औलाद की तमाम राहों पर बैठता है, वह इस्लाम की राह की रुकावट के लिए बैठकर इस्लाम लाने वाले के दिल में वस्वसे पैदा करता है कि अपने और अपने बाप-दादाओं के दीन को क्यों छोड़ता है, ख़ुदा को अगर बेहतरी मन्ज़ूर होती है तो वह उसकी बातों में नहीं आता और इस्लाम क़बूल कर लेता है। हिजरत की राह मारने के लिए बैठता है और कहता है कि अपने वतन को छोड़ता है? अपनी ज़मीन व आसमान से अलग होता है? ग़ैर इलाक़े में बेसहारा ज़िन्दगी इख़्तियार करता है? लेकिन मुसलमान उसके बहकाने में नहीं आता और हिजरत कर गुज़रता है।

फिर जिहाद से रोकने के लिए आता है। जिहाद माल से भी है और जान से भी है। उससे कहता है कि तू क्यों जिहाद में जाता है? वहाँ क़त्ल कर दिया जाएगा, फिर तेरी बीवी दूसरे के निकाह में चली जाएगी, तेरा माल औरों के क़ब्ज़े में चला जाएगा। लेकिन मुसलमान उसकी नहीं मानता और जिहाद में क़दम रख देता है। पस ऐसे लोगों का ख़ुदा पर हक़ है कि वह उन्हें जन्नत में ले जाए अगरचे वे जानवर से ही गिरकर मर जाएँ (यानी जिहाद में चाहे दुश्मन की तलवार से भी न मारा जाये बल्कि घोड़े ही से गिरकर मर जाये)।

इस दूसरी आयत की तफ़सीर में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि आगे से आने का मतलब आख़िरत के मामले में शक व शुब्हा दिल में पैदा करना है। दूसरे जुमले का मतलब यह है कि दुनिया की रग़बतें दिलाऊँगा। दाईं तरफ़ से आना दीन के मामले में शक में डालना है। बाईं तरफ़ से आना गुनाहों को लज़ीज़ (अच्छा और मज़ेदार) बनाना है। शैतान का यही काम है।

एक और रिवायत में है कि शैतान कहता है कि मैं उनकी दुनिया आख़िरत, नेकियाँ भलाईयाँ सब तबाह कर देने की कोशिश में रहूँगा और बुराईयों की तरफ़ उनकी रहबरी करूँगा। वह सामने से आकर कहता है कि जन्नत दोज़ख़ क़ियामत कोई चीज़ नहीं। वह पुश्त की जानिब से आकर कहता है कि देख दुनिया किस क़द्र लुभावनी और अच्छी है। वह दाईं तरफ़ से आकर कहता है कि ख़बरदार नेकी की राह बहुत कठिन है। वह बाईं तरफ़ से आकर कहता है देख गुनाह किस क़द्र मज़ेदार हैं। पस हर तरफ़ से आकर हर तरह बहकाता है। हाँ यह ख़ुदा का करम है कि वह ऊपर की तरफ़ से नहीं आ सकता। ख़ुदा के और बन्दे के दरमियान रोक और बाधा होकर ख़ुदा की रहमत को रोक नहीं सकता। पस सामने यानी दुनिया और पीछे यानी आख़िरत और दाएँ यानी इस तरह कि देखें और बाएँ यानी इस तरह कि न देख सकें, ये अक़वाल सब ठीक हैं।

इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- मतलब यह है कि तमाम ख़ैर के कामों से रोकता है और शर (बुराई) के तमाम काम सुझाता है। ऊपर की दिशा का नाम आयत में नहीं। वह दिशा रहमते ख़ुदा के आने के लिए ख़ाली है, और वहाँ शैतान की रुकावट नहीं। वह कहता है कि अधिकतर इनसानों को तू शाकिर (शुक्र करने वाला) नहीं पायेगा। इब्लीस का अगरचे यह वहम ही वहम था लेकिन निकला हक़ीक़त के मुताबिक़। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ.....

यानी इब्लीस (शैतान) ने अपना गुमान पूरा कर दिखाया सिवाय मोमिनों की पाकबाज़ जमाअ़तों के और लोग उसके ताबेदार बन गये, हालाँकि शैतान की कुछ हुकूमत तो उन पर न थी, मगर हाँ हम सही तौर से ईमान रखने वालों को और शक्की लोगों को अलग-अलग कर देना चाहते थे। तेरा रब हर चीज़ का हाफ़िज़ है।

मुस्नद बज़्ज़ार की एक हसन हदीस में हर तरफ़ से पनाह माँगने की दुआ़ आई है। अलफ़ाज़ ये हैं:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ. اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَاٰمِنْ رَوْعَاتِيْ وَاحْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ وَعَنْ يَّمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ وَمِنْ فَوْقِيْ وَاَعُوْذُبِكَ اَللّٰهُمَّ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्-व वल-आ़फ़िय-त फ़ी दीनी व दुनिया-य व अहली व माली। अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती व आमिन् रौआ़ती वह्फ़िज़्नी मिम्बैनि य-दय्-य व मिन् ख़ल्फ़ी व अ़ंय्यमीनी व अ़न् शिमाली व मिन् फ़ौक़ी व अऊ़ज़ु बि-क अन् अग़्ता-ल मिन् तह्ती।

मुस्नद अहमद में है- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर सुबह व शाम इस दुआ़ को पढ़ते थेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدِّيْنِ وَالْاٰخِرَةِ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल् आ़फ़िय-त फ़िद्दीनि वल् आख़िरति।

इसके बाद की दुआ़ में कुछ फ़र्क़ से तक़रीबन वही अलफ़ाज़ हैं जो ऊपर लिखे गये हैं।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ○	(अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया कि यहाँ से ज़लील व ख़्वार होकर निकल, जो शख़्स उनमें से तेरा कहना मानेगा मैं ज़रूर तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा। (18)

इबरत-अंगेज़ अन्जाम

उस पर ख़ुदा की लानत होती है, रहमत से दूर कर दिया जाता है, मलऊन क़रार देकर उतार दिया जाता है। यह ज़लील होकर ख़ुदा के ग़ज़ब में मुब्तला होकर नीचे उतार दिया गया। ख़ुदा की लानत उस पर नाज़िल हुई और निकाल दिया गया, और फ़रमाया गया कि तू और तेरे मानने वाले सब के सब जहन्नम का ईंधन है। जैसे एक और आयत में है:

فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ..... الخ

तुम्हारी सब की सज़ा जहन्नम है....।

तू जिस तरह चाहे उन्हें बहका ले, लेकिन इससे मायूस हो जा कि मेरे ख़ास बन्दे तेरे वस्वसों में आ जाएँ। उनका वाली मैं ख़ुद हूँ।

Maktab e Ashraf

وَيٰٓـاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ○ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ○ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ○	और (हमने हुक्म दिया कि) ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से चाहो दोनों आदमी खाओ और उस पेड़ के पास मत जाओ, कभी उन लोगों की गिनती में आ जाओ जिनसे नामुनासिब काम हो जाया करता है। (19) फिर शैतान ने उन दोनों के दिलों में वस्वसा डाला, ताकि उनका पर्दे का बदन जो एक- दूसरे से छुपा हुआ था दोनों के सामने बेपर्दा कर दे, और कहने लगा कि तुम्हारे रब ने तुम दोनों को इस पेड़ से और किसी सबब से मना नहीं फ़रमाया, मगर सिर्फ़ इस वजह से कि तुम दोनों कहीं फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में से हो जाओ। (20) और उन दोनों के सामने क़सम खाई कि यक़ीन जानिए मैं आप दोनों का ख़ैरख़्वाह "यानी तुम दोनों का भला चाहने वाला" हूँ। (21)

शैतान की गुमराह करने वाली कोशिशें

इब्लीस (शैतान) को निकाल कर हज़रत आदम व हव्वा को जन्नत में पहुँचा दिया गया और सिवाय एक दरख़्त के उन्हें सारी चीज़ें खाने की इजाज़त व छूट दे दी गई। इसका तफ़सीली बयान सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में गुज़र चुका है। शैतान को इससे बड़ा ही हसद हुआ, उनकी नेमतों को देखकर कमबख़्त जल गया और ठान ली कि जिस तरह भी हो सके इन्हें बहकाकर ख़ुदा के ख़िलाफ़ करा दूँ। चुनाँचे झूठा बोहतान बाँधकर उनसे कहने लगा कि देखो यह दरख़्त वह है जिसके खाने से तुम फ़रिश्ते बन जाओगे और हमेशा की ज़िन्दगी इसी जन्नत में पाओगे। जैसे एक दूसरी आयत में है कि इब्लीस ने कहा- मैं तुम्हें एक दरख़्त का पता देता हूँ जिससे तुम्हें बक़ा और हमेशगी वाला मुल्क मिल जाएगा। यहाँ उनसे कहा तुम्हें इस दरख़्त से सिर्फ़ इसलिए रोका गया है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ। जैसा कि फ़रमायाः

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا

मतलब यह है कि अल्लाह तुम्हें बता रहा है कहीं तुम गुमराह न हो जाओ।

फिर अपना एतिबार बैठाने के लिए क़समें खाने लगा कि देखो मेरी बात को सच्ची मानो, मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह (भला चाहने वाला) हूँ। तुमसे पहले से ही यहाँ रहता हूँ। हर एक चीज़ की ख़ासियतों से वाक़िफ़ हूँ। तुम इसे खा लो बस फिर यहीं रहेगो बल्कि फ़रिश्ते बन जाओगे।

Maktab E Ashraf

इस क़सम की वजह से उस ख़बीस के बहकाने में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम आ गये। सच है, मोमिन उस वक़्त धोखा खा जाता है जब कोई नापाक इनसान ख़ुदा को बीच में देता है। चुनाँचे पहले उलेमा का क़ौल है कि हम ख़ुदा के नाम के बाद अपने हथियार डाल दिया करते हैं।

فَدَلّٰهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ
لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا
مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۗ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ
اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ
اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا
ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا
وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

सो उन दोनों को फ़रेब से नीचे ले आया, पस उन दोनों ने जब पेड़ को चखा तो दोनों के पर्दे का बदन एक-दूसरे के सामने बेपर्दा हो गया, और दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और उनके रब ने उनको पुकारा, क्या मैं तुम दोनों को इस पेड़ से मना न कर चुका था, और यह न कह चुका था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? (22) दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपना बड़ा नुक़सान किया, और अगर आप हमारी मग़फ़िरत न करेंगे और हम पर रहम न करेंगे तो वाक़ई हमारा बड़ा नुक़सान हो जाएगा। (23)

प्रतिबन्धित पेड़ का इस्तेमाल, उसके असरात और हज़रत आदम का अल्लाह की तरफ़ रुजू व ख़ता का इक़रार

उबई इब्ने कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं- हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का क़द खजूर के पेड़ की तरह बहुत लम्बा था और सर पर बहुत लम्बे-लम्बे बाल थे। दरख़्त (यानी गेहूँ) खाने से पहले उन्हें अपनी शर्मगाह का इल्म भी न था, नज़र ही न पड़ी थी, लेकिन इस ख़ता के होते ही वह ज़ाहिर हो गई। भागने लगे तो बाल एक दरख़्त में उलझ गए। कहने लगे कि ऐ दरख़्त! मुझे छोड़ दे, दरख़्त से जवाब मिला कि नामुम्किन है। उसी वक़्त ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से आवाज़ आई ऐ आदम! मुझसे भाग रहा है? कहने लगे या ख़ुदा! शर्मिन्दगी है, शर्मसार हूँ। अगरचे यह रिवायत में नक़ल किया गया है लेकिन सही यही है कि मौक़ूफ़ है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- दरख़्ते सुंबुल खा लिया और छुपाने की चीज़ ज़ाहिर हो गई। जन्नत के पत्तों से छुपाने लगे। एक को एक पर चिपकाने लगे। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम मारे ग़ैरत के इधर-उधर भागने लगे, लेकिन एक दरख़्त के साथ उलझकर रह गये। अल्लाह तआ़ला ने आवाज़ दी कि आदम मुझसे भाग रहा है? आपने फ़रमाया नहीं! ख़ुदाया मगर शर्माता हूँ। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया आदम! जो कुछ मैंने तुझे दे रखा था क्या वह तुझे काफ़ी न था? आपने जवाब दिया बेशक काफ़ी था, लेकिन ख़ुदाया मुझे यह इल्म न था कि कोई तेरा नाम लेकर तेरी क़सम खाकर झूठ कहेगा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, अब तो मेरी नाफ़रमानी का ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ेगा और तकलीफ़ें उठानी होंगी। चुनाँचे जन्नत से दोनों को उतार दिया गया। जन्नत की कुशादगी के बाद यह तंगी उन पर बहुत भारी गुज़री।

खाने पीने को तरस गये। फिर उन्हें लोहे की कारीगरी सिखाई गई, खेती का काम बताया गया, आपने ज़मीन साफ़ की, दाने बोये, वे आगे बढ़े, बालें निकलीं, दाने पके, फिर तोड़े गये, फिर पीसे गये, फिर आटा गूँधा, फिर रोटी तैयार हुई, फिर खाई। तब जाकर भूख की तकलीफ़ से निजात पाई।

अन्जीर के पत्तों से अपना आगा पीछा छुपाते फिरते थे, जो कपड़े जैसे थे। वे नूरानी पर्दे जिनसे एक दूसरे पर बदन के अंग छुपे हुए थे, नाफ़रमानी होते ही हट गए और वे नज़र आने लगे। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम उसी वक़्त ख़ुदा की तरफ़ रुजू करने लगे, तौबा इस्तिग़फ़ार की तरफ़ झुक पड़े, शैतान के उलट कि उसने सज़ा का नाम सुनते ही अपने इब्लीसी हथियार यानी हमेशा की ज़िन्दगी वग़ैरह तलब की, ख़ुदा ने दोनों की दुआ़ सुनी और दोनों की माँगी हुई चीज़ें इनायत फ़रमाईं।

रिवायत में है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने जब दरख़्त खाया उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- इस दरख़्त से मैंने तुम्हें रोक दिया था, फिर तुमने इसे क्यों खाया? कहने लगे हव्वा ने मुझे इसकी रग़बत दिलाई। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया उनकी सज़ा यह है कि हमल (गर्भ) की हालत में भी तकलीफ़ में रहेंगी, बच्चा होने के वक़्त भी तकलीफ़ उठाएँगी। यह सुनते ही हज़रत हव्वा ने रोना-पीटना शुरू किया। हुक्म हुआ कि यही तुझ पर और तेरी औलाद पर लिख दिया गया है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुज़ूर में अ़र्ज़ की और ख़ुदा ने उन्हें दुआ़ सिखाई जो दुआ़ उन्होंने की और क़बूल हुई। क़सूर माफ़ फ़रमा दिया गया। फ़ल्हम्दु लिल्लाह

(अल्लाह ने) फ़रमाया कि नीचे ऐसी हालत में जाओ कि तुम आपस में बाज़े दूसरे बाज़ों 'यानी एक-दूसरे' के दुश्मन रहोगे। और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में रहने की जगह है और फ़ायदा हासिल करना एक वक़्त तक। (24) (और) फ़रमाया कि तुमको वहाँ ही ज़िन्दगी बसर करनी है और वहाँ ही मरना है, और उसी में से फिर पैदा होना है। (25)	قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ○ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ○

ع ۲/۱۵/۹

अल्लाह के अहकाम और उनका निफ़ाज़

बाज़ कहते हैं यह ख़िताब आदम अ़लैहिस्सलाम को, हज़रत हव्वा को, शैतान मलऊन को और साँप को है। बाज़ साँप का ज़िक्र नहीं करते। यह ज़ाहिर है कि असल मक़सद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं और शैतान मलऊन, जैसा कि सूरः तॉ-हा में है:

اِهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا.

कि दोनों के दोनों इस रहमत की जगह से उतरो।

हव्वा हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के ताबे थीं और साँप का ज़िक्र (अगर यह रिवायत सही हो तो वह) इब्लीस के हुक्म में आ गया। मुफ़स्सिरीन ने बहुत से अक़वाल ज़िक्र किए हैं कि आदम कहाँ उतरे, शैतान कहाँ फेंका गया वग़ैरह। लेकिन ये सब रिवायतें इस्राईली हैं और उनकी सेहत (सही और मोतबर होने) का

इल्म अल्लाह ही को है। और यह भी ज़ाहिर है कि उस जगह के जान लेने से कोई दीनी फ़ायदा नहीं, अगर होता तो इसका बयान क़ुरआने करीम में या हदीस में ज़रूर होता, कह दिया गया कि अब तुम्हारे क़रार (रहने और ठिकाने) की जगह ज़मीन है। वहीं तुम अपनी मुक़र्ररा ज़िन्दगी के दिन पूरे करोगे जैसा कि हमारी पहली किताब लौहे महफ़ूज़ में पहले ही से लिखा हुआ मौजूद है। उसी ज़मीन पर जियोगे और मरने के बाद भी उसी में दबाये जाओगे, फिर हश्र के दिन उसी में से दोबारा उठाये जाओगे। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى.

यानी इसी से हमने तुमको पैदा किया, और मौत के बाद इसी में लौटाये जाओगे और फिर दोबारा इसी से हम तुमको निकालेंगे।

पस औलादे आदम के जीने की जगह भी यही, मरने की जगह भी यही, क़ब्रें भी इसी में और क़ियामत के दिन उठेंगे भी इसी से। फिर आमाल के बदले दिये जाएँगे।

ऐ आदम की औलाद! हमने तुम्हारे लिए लिबास पैदा किया जो कि तुम्हारे पर्दे वाले बदन को भी छुपाता है और ज़ीनत का सबब भी है, और तक़्वे का लिबास यह उससे बढ़ कर है, यह अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है ताकि ये लोग याद रखें। (26)	يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ○

परहेज़गारी का लिबास

यहाँ अल्लाह तआ़ला अपना एहसान बयान फ़रमाता है कि उसने लिबास उतारा और 'रीश' भी। लिबास तो वह है जिससे इनसान अपना सतर छुपाये (यानी बदन के वे हिस्से ढाँके जो किसी के सामने खुलने न चाहियें) और 'रीश' वह है जो बतौर ज़ीनत, रौनक़ और जमाल (यानी बनाव-सिंघार और ख़ूबसूरती) के लिये पहना जाये। अव्वल तो ज़िन्दगी की ज़रूरत है और दूसरा ज़्यादा है। रीश के मायने बाल के भी हैं और ज़ाहिरी पोशाक के भी हैं और ख़ूबसूरती के लिये पहने गये लिबास के भी हैं।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नया कुर्ता पहनते हुए जबकि गले तक वह पहन लिया तो फ़रमायाः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ مَا اُوَارِيْ بِهٖ عَوْرَتِيْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ حَيَاتِيْ.

कि तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे लिबास पहनाया जिसके ज़रिये मैं अपने बदन के पोशीदा हिस्सों को ढाँकता हूँ और अपनी ज़िन्दगी में सजता-संवरता भी हूँ।

फिर फ़रमाने लगे मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सुना है- फ़रमाते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है, जो शख़्स नया कपड़ा पहने और उसके गले तक पहुँचते ही यह दुआ़ पढ़े, फिर पुराना कपड़ा अल्लाह की राह में दे दे, तो वह अल्लाह के ज़िम्मे में, अल्लाह की पनाह में

Maktab E Ashraf

और अल्लाह की हिफ़ाज़त में आ जाता है। ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी।

(तिर्मिज़ी इब्ने माजा वग़ैरह)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अ़ली रज़ि. ने एक नौजवान से एक कुर्ता तीन दिर्हम में ख़रीदा और उसे पहना, जो पहुँचों और घुटनों तक पहुँचा और पहनते वक़्त आपने यह दुआ़ पढ़ीः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ رَزَقَنِیْ مِنَ الرِّيَاشِ مَآاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِی النَّاسِ وَاُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ.

यानी तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे यह लिबास अ़ता किया जिससे मैं अपने सतर को छुपाता और लोगों की नज़रों में अच्छा मक़ाम पाता हूँ।

यह दुआ़ सुनकर आपसे किसी ने पूछा कि क्या आपने इसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है? कि आप इसे कपड़ा पहनते वक़्त पढ़ते थे, या आप अपनी तरफ़ से इसे पढ़ रहे हैं? फ़रमाया मैंने इसे हुज़ूर सल्ल. से सुना है।

हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं कि इससे मुराद क़ियामत के दिन परहेज़गारों को जो लिबास अ़ता होगा वह है। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि लिबासे तक़वा ईमान है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि इससे मुराद नेक आमाल हैं। उरवा रह. कहते हैं मुराद इससे अल्लाह की मर्ज़ी व मशीयत है। अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि ख़ुदा के डर से अपनी सतर-पोशी करना परहेज़गारी का लिबास है। ये तमाम अक़वाल आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि मुराद यह सब कुछ है, और आपस में एक दूसरे के क़रीब क़रीब हैं।

एक कमज़ोर सनद वाली रिवायत में हज़रत हसन से नक़ल किया गया है कि मैंने हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मिम्बरे नबवी पर खुली घुन्डियों का कुर्ता पहने हुए खड़ा देखा, उस वक़्त आप कुत्तों को मार डालने का और कबूतर-बाज़ी की मनाही का हुक्म दे रहे थे। फिर आपने फ़रमाया लोगो! अल्लाह से डरो, ख़ुसूसन अपनी निजी और ज़ाती ज़िन्दगी में (यानी छुपे तौर पर) और चुपके-चुपके काना-फूसी करने में, मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, आप क़सम खाकर बयान फ़रमाते थे कि जो शख़्स किसी काम को चाहे जितना छुपकर करे अल्लाह तआ़ला उसको ज़ाहिर कर देगा, अगर नेक है तो नेक और बद है तो बद (लेकिन अल्लाह तआ़ला 'सत्तारुल-उयूब' भी है, मगर जो बन्दा गुनाहों का आ़दी हो जाये और अल्लाह के हुज़ूर तौबा न करे तो फिर रुस्वाई उसका मुक़द्दर बनती ही है)।

फिर आपने इसी आयत की तिलावत की और फ़रमाया- इससे मुराद अच्छी आ़दात व अख़्लाक़ हैं। हाँ सही हदीस में सिर्फ़ इतना ही नक़ल किया गया है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जुमे के दिन मिम्बर पर कुत्तों के क़त्ल करने और कबूतरों के ज़िबह करने का हुक्म दिया।

ऐ आदम की औलाद! शैतान तुमको किसी ख़राबी में न डाल दे, जैसा कि उसने तुम्हारे दादा-दादी को जन्नत से बाहर करा दिया, (ऐसी हालत से) कि उनका लिबास भी उनसे उतरवा दिया, ताकि उनको उनके पर्दे का बदन दिखाई देने लगे। वह और उसका लश्कर तुमको ऐसे	يٰبَنِیْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ

هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ أَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝	तौर पर देखता है कि तुम उनको नहीं देखते हो, हम शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते। (27)

Maktab E Ashraf

शैतानी बहकावे और फ़रेब से हिफ़ाज़त का एहतिमाम

तमाम इनसानों को अल्लाह तबारक व तआ़ला सचेत और आगाह कर रहा है कि देखो इब्लीस की मक्कारियों से बचते रहना, वह तुम्हारा बड़ा ही दुश्मन है। देखो उसी ने तुम्हारे बाप को ख़ुशियों और ऐश व आराम की जगह (यानी जन्नत) से निकाला और इस मुसीबत के क़ैदख़ाने में डाला। उनका पर्दा चाक किया। पस तुम्हें उसके हथकन्डों से बचना चाहिए। जैसा कि फ़रमाया है:

أَفَتَتَّخِذُوْنَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا.

यानी क्या तुम इब्लीस (शैतान) और उसकी क़ौम को अपना दोस्त बनाते हो? हालाँकि वह तो तुम्हारा दुश्मन है। ज़ालिमों का बहुत ही बुरा बदला है।

وَإِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَآءَنَا وَاللّٰهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۗ أَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ أَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَأَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۗ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝ فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝	और वे लोग जब कोई फ़ुहश "यानी ग़लत और बेहूदा" काम करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह तआ़ला ने हमको यही बतलाया है। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला फ़ुहश "यानी बुरी और बेहूदा" बात की तालीम नहीं देता, क्या ख़ुदा के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी तुम सनद नहीं रखते। (28) आप कह दीजिए कि मेरे रब ने हुक्म दिया है इन्साफ़ करने का, और यह कि तुम हर सज्दे के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखा करो, और उसकी (अल्लाह की) इबादत इस तौर पर करो कि उस इबादत को ख़ालिस अल्लाह ही के वास्ते रखा करो, जिस तरह तुमको अल्लाह तआ़ला ने शुरू में पैदा किया था उसी तरह फिर तुम दोबारा पैदा होगे। (29) बाज़ लोगों को तो अल्लाह ने हिदायत की है और बाज़ पर गुमराही साबित हो चुकी है। उन लोगों ने अल्लाह तआ़ला को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया, और ख़्याल रखते हैं कि वे राह पर हैं। (30)

Maktab E Ashraf

बुराईयों को अल्लाह की तरफ़ मन्सूब करना गुस्ताख़ी है

मश्रिक लोग नंगे होकर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते थे और कहते थे कि जैसे हम पैदा हुए उसी हालत में तवाफ़ करेंगे। औरतें भी आगे कोई चमड़े का टुकड़ा या कोई और चीज़ रख लेती थीं और कहती थीं:

اَلْيَوْمَ يَبْدُوْ بَعْضُهٗ اَوْ كُلُّهٗ..........وَمَا بَدَا مِنْهُ فَلَآ اُحِلُّهٗ.

आजकल इसका थोड़ा सा या पूरा हिस्सा ज़ाहिर हो जायेगा और जितना भी ज़ाहिर हो मैं उसे इसके लिए जायज़ नहीं रखती। इस पर आयतः

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا...... الخ

और वे लोग जब कोई गन्दा और बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं...........।

नाज़िल हुई। यह दस्तूर था कि क़ुरैश के अ़लावा अ़रब के तमाम लोग बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ अपने पहने हुए कपड़ों पर नहीं करते थे। वे समझते थे कि ये कपड़े जिन्हें पहनकर ख़ुदा की नाफ़रमानियाँ की हैं इस क़ाबिल नहीं रहे कि इन्हें पहने हुए तवाफ़ कर सकें। हाँ क़ुरैश जो अपने आपको हुमस कहते थे अपने कपड़ों में ही तवाफ़ करते थे, और जिन लोगों को क़ुरैश कपड़े बतौर उधार दें वे भी उनके कपड़े पहनकर तवाफ़ कर सकते थे। या वह शख़्स कपड़े पहने तवाफ़ कर सकता था जिसके पास नये कपड़े हों, फिर तवाफ़ के बाद उन्हें उतार डालता था। अब ये किसी की मिल्कियत नहीं होते थे। पस जिसके पास नया कपड़ा न हो और हुमस भी उसे कपड़ा न दे तो उसे ज़रूरी था कि वह नंगा होकर तवाफ़ करे, चाहे औरत हो चाहे मर्द। औरत अपने आगे के अंग (यानी शर्मगाह) पर कुछ मामूली सी कोई चीज़ रख लेती और वह कहती जिसका बयान ऊपर गुज़र चुका। लेकिन उमूमन औरतें रात के वक़्त तवाफ़ करतीं, यह बिदअ़त उन्होंने अपनी तरफ़ से ख़ुद गढ़ ली थी, और सनद सिवाय बाप-दादों के इस फ़ेल के और उनके पास कुछ न थी, लेकिन अपनी ख़ुश-फ़हमी और नेक गुमान से कह देते थे कि ख़ुदा का भी यही हुक्म है क्योंकि उनका ख़्याल था कि अगर यह ख़ुदा का फ़रमाया हुआ न होता तो हमारे बुज़ुर्ग इस तरह न करते। इसलिए हुक्म हुआ कि ऐ नबी! आप उनसे कह दीजिए कि ख़ुदा तआ़ला बेहयाई के कामों का हुक्म नहीं करता। एक तो बुरा काम करते हो, दूसरे हक़ीक़त के ख़िलाफ़ उसकी निस्बत ख़ुदा की तरफ़ करते हो, यह बहुत बड़ी जुर्रत और निडरता है। कह दो कि रब्बुल-आ़लमीन का हुक्म तो अ़दल व इन्साफ़ का है, सही राह पर चलने और दियानतदारी का है, बुराईयों और गन्दे कामों के छोड़ने का है, इबादतें ठीक तौर पर बजा लाने का है, और इसका कि लोग उस तरीक़े पर हों जो तरीक़ा ख़ुदा के सच्चे रसूलों का है, जिनकी सच्चाई उनके ज़बरदस्त मोजिज़ों से ख़ुदा ने साबित कर दी है। उनकी लाई हुई शरीअ़त पर इख़्लास के साथ अ़मल करना, जब तक इख़्लास और पैग़म्बर की ताबेदारी किसी काम में न हो ख़ुदा के यहाँ वह मक़बूल नहीं होता। उसने जिस तरह तुम्हें शुरू में पैदा किया है उसी तरह दोबारा भी लौटायेगा, दुनिया में भी उसी ने पैदा किया, आख़िरत के दिन भी वही क़ब्रों से दोबारा पैदा करेगा। पहले तुम कुछ न थे उसने तुम्हें बनाया और मरने के बाद फिर भी वह तुम्हें ज़िन्दा कर देगा। जैसे उसने शुरू में तुम्हारी इब्तिदा की थी उसी तरह फिर से तुमको दोबारा ज़िन्दा करेगा। चुनाँचे हदीस में भी है- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने एक वअ़ज़ (दीनी बयान और नसीहत) में फ़रमाया, लोगो! तुम अल्लाह के सामने नंगे पैरों, नंगे

बदनों, बिना ख़तना जमा किये जाओगे। वह फ़रमाता है कि जैसे हमने तुम्हें पहली बार में पैदा किया था, फिर उसी को दोहरायेंगे। यह हमारा वादा है और हम इसे करके ही रहने वाले हैं। यह रिवायत बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। यह मायने भी किये गये हैं कि जैसे हमने लिख दिया है वैसे ही तुम होओगे।

एक रिवायत में है- जैसे तुम्हारे आमाल थे वैसे ही तुम होओगे। यह भी मायने हैं कि जिसकी क़िस्मत में बदबख़्ती लिख दी गई है वह बदबख़्ती और बद-आमाली की तरफ़ ही लौटेगा अगरचे दरमियान में नेक हो गया हो, और जिसकी तक़दीर में शुरू से ही नेकी और सआ़दत (नेकबख़्ती) लिख दी गई है वह परिणाम स्वरूप नेक ही होगा, अगरचे उससे किसी वक़्त बुराई के आमाल भी सरज़द हो जाएँ। जैसे कि फ़िरऔ़न के ज़माने के जादूगर, कि सारी उम्र बुरे आमाल और कुफ़्र में कटी लेकिन आख़िरी वक़्त मुसलमान और अल्लाह के दोस्त होकर मरे। यह भी मायने हैं कि ख़ुदा तुम में से हर एक को हिदायत पर या गुमराही पर पैदा कर चुका है, ऐसे ही होकर तुम माँ के पेट से निकलोगे, यह भी मतलब है कि अल्लाह तआ़ला ने इब्ने आदम (इनसान) की पैदाईश की मोमिन व काफ़िर होने की हालत में, जैसा कि फ़रमान है:

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ.

फिर उन्हें इसी तरह क़ियामत के दिन लौटायेगा, यानी मोमिन व काफ़िर के गिरोहों में।

इसी क़ौल की ताईद सही बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीस से भी होती है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- उसकी क़सम जिसके सिवा और कोई माबूद नहीं कि तुम में से एक शख़्स जन्नतियों के आमाल करता है यहाँ तक उसके और जन्नत के बीच सिर्फ़ एक बालिश्त का या हाथ भर का फ़र्क़ रह जाता है, फिर उस पर लिखा हुआ आगे आ जाता है और दोज़ख़ियों के आमाल शुरू कर देता है और उसी में दाख़िल हो जाता है। और कोई जहन्नमियों के आमाल करने लगता है, यहाँ तक कि जहन्नम से एक हाथ या एक बालिश्त दूर रह जाता है कि तक़दीर का लिखा आगे आ जाता है और वह जन्नतियों के आमाल करने लगता है, और जन्नत में दाख़िल हो जाता है।

दूसरी रिवायत भी इसी तरह की है, उसमें यह भी है कि वे काम लोगों की नज़र में जहन्नम और जन्नत के होते हैं, आमाल का दारोमदार ख़ात्मे पर है। एक और हदीस में है कि हर नफ़्स उसी पर उठाया जाएगा जिस पर था। (मुस्लिम) एक और रिवायत में है कि जिस पर मरा। अगर आयत से मुराद यही ली जाए तो इसमें इसके बाद के फ़रमान "फ़-अक़िम् वज्ह-क" में और सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीस कि "हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा किया जाता है, फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी (आतिश परस्त) बना देते हैं" और सही मुस्लिम की हदीस जिसमें अल्लाह का फ़रमान है कि "मैंने अपने बन्दों को सही फ़ितरत पर पैदा किया, फिर शैतान ने उन्हें उनके दीन से बहका दिया" में मुवाफ़क़त और ताल-मेल की वजह होनी चाहिए और वह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मोमिन व काफ़िर होने के लिए पैदा किया है, दूसरे हाल में, अगरचे पहले हाल में तमाम मख़्लूक़ को अपनी मारिफ़त व तौहीद (यानी अल्लाह के एक होने और उसको अपना माबूद जानने) पर पैदा किया था, कि उसके सिवा कोई माबूदे बरहक़ नहीं, जैसा कि उसने उनसे 'मीसाक़ के दिन' में अ़हद भी लिया था। और उसी वादे को उनकी फ़ितरत और घुट्टी में रख दिया था, बावजूद इसके उसने यह भी लिख दिया था कि उनमें से बाज़ शक़ी और बदबख़्त होंगे जैसे अल्लाह का फ़रमान है "उसी ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से बाज़ काफ़िर हैं और बाज़ मोमिन।

Maktab E Ashraf

एक और हदीस में है कि हर शख़्स सुबह करता है, फिर अपने नफ़्स की ख़रीद व फ़रोख़्त करता है। कुछ हैं जो उसे आज़ाद करा लेते हैं और कुछ हैं जो उसे हलाक कर बैठते हैं। अल्लाह की तय की हुई तक़दीर ख़ुदा की मख़्लूक़ में जारी है, उसी ने मुक़द्दर किया है, उसी ने हिदायत की, उसी ने हर एक को उसकी पैदाइश दी, फिर रहनुमाई की। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जो लोग सआ़दत वालों (नेकबख़्तों) में से हैं उन पर नेकियों के काम आसान होंगे, और जो शक़ावत (बदबख़्ती) वाले हैं उन पर बदियाँ (बुरे आमाल और बुराईयाँ) आसान होंगी। चुनाँचे क़ुरआने करीम में है कि उस जमाअ़त ने राह पाई और एक जमाअ़त पर गुमराही साबित हो चुकी है। फिर इसकी वजह बयान फ़रमाई कि उन्होंने ख़ुदा को छोड़कर शैतानों को दोस्त बना लिया है।

इस आयत से उस मज़हब की तरदीद (खण्डन) होती है जो यह ख़्याल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स को किसी गुनाह और नाफ़रमानी के अ़मल पर या गुमराही के अ़क़ीदे पर अ़ज़ाब नहीं करता, यहाँ तक कि उसके पास सही चीज़ आ जाए और फिर वह अपनी बुराई पर ज़िद और हठधर्मी से जमा रहे, क्योंकि अगर यह मज़हब सही होता तो जो लोग गुमराह हैं लेकिन अपने आपको हिदायत (सही राह) पर समझते हैं और जो वाक़ई हिदायत पर हैं उनमें कोई फ़र्क़ नहीं होना चाहिए था। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों में फ़र्क़ किया, इनके नाम में भी और इनके अहकाम में भी। आयत आपके सामने मौजूद है ख़ुद ही पढ़ लीजिए।

ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो, और (ख़ूब) खाओ और पियो और हद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला हद से निकल जाने वालों को पसन्द नहीं करते। (31)	يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝

ع ٣ ٦ ١٠

मस्जिदों के लिए एहतिमाम

इस आयत में मुश्रिकों का रद्द है वे नंगे होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ करते थे, जैसा कि पहले गुज़रा। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि ये नंगे मर्द दिन में तवाफ़ करते थे और नंगी औ़रतें रात में। उस वक़्त औ़रतें कहा करती थीं कि आज उसके ख़ास जिस्म (यानी शर्मगाह) का पूरा या कुछ हिस्सा अगरचे ज़ाहिर हो लेकिन किसी को वह इसका देखना जायज़ नहीं करती। पस इसके ख़िलाफ़ मुसलमानों को हुक्म होता है कि अपना लिबास पहनकर मस्जिदों में जाओ, अल्लाह तआ़ला ज़ीनत (अच्छा लिबास पहनने और ज़रूरत के मुताबिक़ सजने संवरने) का हुक्म देता है, और मुराद ज़ीनत से लिबास है और लिबास वह है जो मख़्सूस हिस्सों को छुपा ले, और जो उसके अ़लावा हो जैसे अच्छा कपड़ा वग़ैरह।

एक हदीस में है कि यह आयत जूतियों समेत नमाज़ पढ़ने के बारे में नाज़िल हुई है, लेकिन यह विचारनीय है और इसके सही होने में भी कलाम है। वल्लाहु आलम

यह आयत और जो कुछ इसके बारे में हदीस में नक़ल हुआ है, इससे नमाज़ के वक़्त में ज़ीनत करना (ख़ुद को साफ़-सुथरा करना और अच्छा लिबास पहनना) मुस्तहब साबित होता है, ख़ुसूसन जुमे के दिन और ईद के दिन, और ख़ुशबू लगाना भी मस्नून तरीक़ा है। इसलिए कि वह ज़ीनत में से ही है, और मिस्वाक

Mahtab E Ashraf

करना भी, क्योंकि वह भी ज़ीनत को पूरा करने में दाख़िल है। यह भी याद रहे कि सबसे अफ़ज़ल लिबास सफ़ेद कपड़ा है, जैसा कि मुस्नद अहमद की सही हदीस में है- हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि सफ़ेद कपड़े पहनो, वह तुम्हारे तमाम कपड़ों से अफ़ज़ल है, और उसी में मुर्दों को कफ़न दो, सब सुर्मों में बेहतर सुर्मा 'अस्मद' है, वह निगाह को तेज़ करता है और बालों को उगाता है।

सुनन की एक और हदीस में है कि सफ़ेद कपड़ों को ज़रूरी जानो और उन्हें पहनो, बहुत अच्छे और बहुत पाक साफ़ हैं। उन्हीं में अपने मुर्दों को कफ़न दो। तबरानी में है कि हज़रत तमीम दारी रज़ि. ने एक चादर एक हज़ार में ख़रीदी थी, नमाज़ों के वक़्त उसे पहन लिया करते थे।

इसके बाद की आधी आयत में अल्लाह ने तमाम तिब और हिक्मत जमा कर दी, इरशाद है- खाओ पियो लेकिन हद से आगे न बढ़ो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है- खाओ पियो लेकिन दो बातों से बचो- फ़ुज़ूलख़र्ची से और तकब्बुर से। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है- खाओ पियो पहनो ओढ़ो, लेकिन सदक़ा भी करते रहो और तकब्बुर और फ़ुज़ूलख़र्ची से बचते रहो। अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाता है कि अपनी नेमत का असर अपने बन्दे के जिस्म पर देखे।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं खाओ और पहनो और सदक़ा करो और फ़ुज़ूलख़र्ची व तकब्बुर से बचो। और फ़रमाते हैं- इनसान अपने पेट से ज़्यादा बुरा कोई बरतन नहीं भरता, इनसान को चन्द लुक़्मे जिससे उसकी पीठ सीधी रहे काफ़ी हैं। अगर यह काफ़ी न हो तो ज़्यादा से ज़्यादा अपने पेट के तीन हिस्से कर ले, एक खाने के लिये, एक पानी के लिये, एक साँस के लिए। फ़रमाते हैं यह भी इस्राफ़ (हद से आगे बढ़ने) में से है कि जो तू चाहे खाए लेकिन यह हदीस ग़रीब है।

मुश्रिक लोग जहाँ नंगे होकर तवाफ़ करते थे वहाँ हज के ज़माने में चर्बी को भी अपने ऊपर हराम जानते थे, तो ख़ुदा ने दोनों बातों के ख़िलाफ़ हुक्म नाज़िल फ़रमाया। यह भी इस्राफ़ (हद से आगे बढ़ना) है कि ख़ुदा के हलाल किये हुए खाने को हराम कर दिया जाए। ख़ुदा की दी हुई हलाल रोज़ी बेशक इनसान खाए पिये, हराम चीज़ का खाना भी इस्राफ़ है। हराम हलाल की ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हदों से गुज़र न जाओ, न हराम को हलाल करो, न हलाल को हराम करो। हर एक हुक्म को उसी जगह पर रखो वरना तुम हद से बढ़ने वाले और अल्लाह के दुश्मन बन जाओगे।

आप फ़रमाईए कि अल्लाह तआ़ला के पैदा किए हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने- पीने की हलाल चीज़ों को किस शख़्स ने हराम किया है? आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनियावी ज़िन्दगानी में ख़ालिस ईमान वालों ही के लिए हैं, हम इसी तरह समझदारों के वास्ते तमाम आयतों को साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। (32)	قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللّٰهِ الَّتِىٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○

Maktab E Ashraf

शरीअ़त में उलट-फेर का किसी को हक़ नहीं

खाने पहनने ओढ़ने की इन बाज़ चीज़ों को बग़ैर ख़ुदा के फ़रमाए हराम कर लेने वालों की तरदीद हो रही है, और उन्हें उनके इस फ़ेल से रोका जा रहा है। ये सब चीज़ें अल्लाह पर ईमान रखने वालों और उसकी इबादत करने वालों के लिए ही तैयार हुई हैं अगरचे दुनिया में उनके साथ और लोग भी शरीक हैं, लेकिन फिर क़ियामत के दिन ये अलग कर दिए जाएँगे और सिर्फ़ मोमिन ही ख़ुदा की नेमतों से नवाज़े जाएँगे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. रावी हैं कि मुश्रिक नंगे होकर ख़ुदा के घर का तवाफ़ करते थे, सीटियाँ और तालियाँ बजाते थे। पस ये आयतें उतरीं।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْیَ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَالَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَی اللّٰهِ مَا لَاتَعْلَمُوْنَ○	आप फ़रमाईये कि अलबत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम फ़ुहश "यानी गन्दी और बेहूदा" बातों को, उनमें जो खुले तौर पर हों वे भी, और उनमें जो छुपे तौर पर हों वे भी, और वह हर गुनाह की बात को और नाहक़ किसी पर ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ जिसकी अल्लाह पाक ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमाई। और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो जिसकी तुम सनद न रखो। (33)

बुराईयों को छोड़ने का हुक्म

बुख़ारी व मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- ख़ुदा से ज़्यादा ग़ैरत वाला कोई नहीं। सूरः अन्आ़म में छुपी खुली बेहयाई के मुताल्लिक़ पूरी तफ़सीर गुज़र चुकी है। और ख़ुदा तआ़ला ने हर गुनाह को हराम कर दिया है, और बिना वजह ज़ुल्म व ज़्यादती को सरकशी और ग़ुरूर को भी उसने हराम किया है। पस 'इस्म' से मुराद हर वह गुनाह है जो इनसान ख़ुद करे और 'बग़्य' से मुराद वह गुनाह है जिसमें दूसरे का नुक़सान करे या उसकी हक़-तल्फ़ी करे। इसी तरह रब की इबादत में किसी को शरीक करना भी हराम है, और ज़ाते ख़ुदा पर बोहतान बाँधना भी। जैसे उसकी औलाद बतलाना वग़ैरह, जो हक़ीक़त के ख़िलाफ़ महज़ जहालत की बातें हैं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान हैः

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ..... الخ

बुतों की नजासत (गन्दगी और नापाकी) से बचो......।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا یَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا یَسْتَقْدِمُوْنَ○	और हर गिरोह के लिए एक मुक़र्ररा मीयाद है, सो जिस वक़्त उनकी मुक़र्ररा मीयाद आ जाएगी उस वक़्त एक घड़ी न पीछे हट सकेंगे

Maktab E Ashraf

और न आगे बढ़ सकेंगे। (34) ऐ आदम की औलाद! अगर तुम्हारे पास पैग़म्बर आएँ जो तुम्ही में से होंगे, जो मेरे अहकाम तुम पर बयान करेंगे, सो जो शख़्स परहेज़ रखे और दुरुस्ती करे, सो उन लोगों पर न कुछ अन्देशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (35) और जो लोग हमारे इन अहकाम को झूठा बतलाएँगे और इनसे तकब्बुर करेंगे, वे लोग दोज़ख़ वाले होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (36)	يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِىْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

मौत टल सकती है लेकिन वक़्त नहीं टल सकता

हर ज़माने और हर ज़माने वालों के लिए ख़ुदा की तरफ़ से आख़िरी मुद्दत मुक़र्रर है जो किसी तरह टल नहीं सकती। नामुम्किन है कि उससे एक मिनट की ताख़ीर (देरी) हो या एक लम्हे की जल्दी हो। इनसानों को डराता है कि वह जब रसूलों से डराना और रग़बत दिलाना सुनें तो बदकारियों को छोड़ दें और ख़ुदा की इताअ़त (हुक्म मानने) की तरफ़ झुक जाएँ। जब वे यह करेंगे तो वे हर खटके और नाउम्मीदी से महफ़ूज़ हो जाएँगे। और अगर इसके ख़िलाफ़ किया, न दिल से माना, न अ़मल किया तो वे दोज़ख़ में जाएँगे और फिर हमेशा वहीं रहेंगे।

सो उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झूठा बतलाए। उन लोगों के नसीब का जो कुछ (लिखा) है वह उनको मिल जाएगा, यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान क़ब्ज़ करने आएँगे तो कहेंगे कि वे कहाँ गए जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर इबादत किया करते थे? वे कहेंगे कि हमसे सब ग़ायब हो गए, और अपने काफ़िर होने का इक़रार करने लगेंगे। (37)	فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝

हसरत व नाकामी

हक़ीक़त यह है कि सबसे बड़ा ज़ालिम वह है जो ख़ुदा तआ़ला पर झूठा बोहतान बाँधे, और वह भी जो ख़ुदा के कलाम की आयतों को झूठा समझे। उन्हें उन पर लिखा हुआ हिस्सा मिलेगा। इसके मायने एक तो यह हैं कि उन्हें सज़ा होगी, उनके मुँह काले होंगे, उनके आमाल का बदला मिलकर रहेगा, ख़ुदा के वादे

Maktab E Ashraf

वईद पूरे होकर रहेंगे। दूसरे मायने यह हैं कि उनकी उम्र, अमल और रिज़्क़ जो लौहे महफ़ूज़ पर लिखा हुआ है वह दुनिया में तो मिलेगा। यह क़ौल प्रबल मालूम होता है क्योंकि इसके बाद का जुमला इसकी ताईद करता है। इसी मतलब की आयतः

اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ..... الخ

है। कि ख़ुदा पर झूठ बातें गढ़ लेने वाले फ़लाह को नहीं पहुँचते, दुनिया में अगरचे कुछ फ़ायदा उठा लें लेकिन आख़िरकार हमारे सामने पेश होंगे, उस वक़्त उनके कुफ़्र के बदले में उन्हें हम सख़्त सज़ाएँ देंगे।

एक और आयत में है कि काफ़िरों के कुफ़्र से तू ग़मगीन न हो, उनका लौटना हमारी तरफ़ ही होगा। फिर हम ख़ुद उन्हें उनके करतूत से आगाह करेंगे। अल्लाह तआ़ला दिलों के भेद से वाक़िफ़ है, वह दुनिया का फ़ायदा थोड़ा-बहुत उठा लें। फिर फ़रमाया कि उनकी रूहों को क़ब्ज़ करने के लिये हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते आते हैं, तो उनसे बतौर छींटा-कशी के कहते हैं कि अब अपने माबूदों को क्यों नहीं पुकारते कि वे तुम्हें इस अ़ज़ाब से बचा लें। आज वे कहाँ हैं? तो ये निहायत हसरत (अफ़सोस) से जवाब देते हैं कि अफ़सोस वे तो खोये गये, हमें उनसे अब किसी फ़ायदे और लाभ की उम्मीद नहीं रही। पस अपने कुफ़्र के आप ही इक़रारी होकर मरते हैं।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ
كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰٓى
اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ
لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ
وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ
لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝ ع ٨ ١١

(अल्लाह) फ़रमायेगा कि जो फ़िर्क़े तुम से पहले गुज़र चुके हैं जिन्नात में से भी और आदमियों में से भी, उनके साथ तुम भी दोज़ख़ में जाओ। जिस वक़्त भी (काफ़िरों की) कोई जमाअ़त (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी, अपनी जैसी दूसरी जमाअ़त को लानत करेगी, यहाँ तक कि जब उसमें सब जमा हो जाएँगे तो बाद वाले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था, सो इनको दोज़ख़ का अ़ज़ाब (हमसे) दोगुना दीजिए। (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएँगे कि सब ही का दोगुना है, लेकिन (अभी) तुमको ख़बर नहीं। (38) और पहले लोग बाद वाले लोगों से कहेंगे कि फिर तुमको हमपर कोई बरतरी नहीं, सो तुम भी अपने किरदार के मुक़ाबले में अ़ज़ाब (का मज़ा) चखते रहो। (39)

नतीजा जहन्नम

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन मुश्रिकों को जो ख़ुदा पर झूठ बोलते और बोहतान बाँधते थे, उसकी आयतों को झुठलाते थे, फ़रमायेगा कि तुम भी अपने जैसों के साथ जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, चाहे वे

Maktab E Ashraf

जिन्नात में से हों चाहे इनसानों में से, जहन्नम में जाओ। हर गिरोह अपने साथ के अपने जैसे गिरोह पर लानत करेगा, जैसा के इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि तुम एक दूसरे से उस दिन कुफ़्र करोगे......। एक और आयत में है:

اِذْ تَبَرَّأَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا..... الخ

यानी वह ऐसा बुरा वक़्त होगा कि वे अपने चेलों से अलग और बेताल्लुक़ हो जाएँगे। अ़ज़ाब को देखते ही सारे ताल्लुक़ात टूट जाएँगे। मुरीद लोग उस वक़्त कहने लगेंगे कि अगर हमें भी यहाँ से फिर वापस दुनिया में जाना मिल जाये तो जैसे ये लोग आज हमसे बेज़ार (बेताल्लुक़) हो गए हैं हम भी इनसे बिल्कुल ही अलग और बेताल्लुक़ हो जाएँ। अल्लाह तआ़ला इसी तरह उनके करतूत उनके सामने लायेगा जो उनके लिये सर से पैर तक हसरत व अफ़सोस का सबब होंगे और ये दोज़ख़ से कभी आज़ाद न होंगे। यहाँ फ़रमाता है कि जब ये सारे के सारे जहन्नम में जा चुके होंगे तो पिछले यानी ताबेदारी, मुरीदी और इनकी पैरवी करने वाले पहलों से यानी जिनकी वे मानते रहे हैं उनके बारे में अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद करेंगे। इससे ज़ाहिर है कि ये गुमराह करने वाले उनसे पहले ही जन्नहम में मौजूद होंगे क्योंकि उनका गुनाह बढ़ा हुआ था, कहेंगे कि ख़ुदाया! इन्हें दोगुना अ़ज़ाब कर। चुनाँचे एक दूसरी आयत में है:

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ...... الخ

जबकि उनके चेहरे जहन्नम की आग में इधर-उधर से झुलसते जाते होंगे, उस वक़्त हसरत व अफ़सोस करते हुए कहेंगे कि काश हम भी ख़ुदा व रसूल के फ़रमाँबरदार और हुक्म मानने वाले होते। ख़ुदाया हमने अपने सरदारों और बड़ों की ताबेदारी की, जिन्होंने हमें गुमराह कर दिया। ख़ुदाया उन्हें दोगुना अ़ज़ाब कर। उन्हें जवाब मिलेगा कि हर एक के लिए दोगुना है, यानी हर एक को उसकी बुराईयों का पूरा पूरा बदला मिल चुका है। जैसा कि फ़रमाया:

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا..... الخ

जिन्होंने कुफ़्र किया और ख़ुदा की राह से रोका, उन्हें हम अ़ज़ाब ज़्यादा करेंगे। एक और आयत में है:

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ مَّعَ اَثْقَالِهِمْ.

यानी अपने बोझ के साथ उनके बोझ भी उठाएँगे।

एक और आयत में है कि उनके बोझ भी उन पर लादे जाएँगे जिनको उन्होंने बे-अ़मली से गुमराह किया। अब वे जिनकी मानी जाती रही अपने मानने वालों से कहेंगे कि जैसे हम गुमराह थे तुम भी गुमराह हुए। अब अपने करतूतों का मज़ा चखो। एक और आयत में है:

وَلَوْ تَرٰى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ.

काश कि तू देखता जबकि ये गुनाहगार लोग ख़ुदा के सामने खड़े हुए होंगे, एक दूसरे पर इल्ज़ाम रख रहे होंगे। कमज़ोर लोग घमंडियों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम मोमिन बन जाते। वे जवाब देंगे कि क्या हमने तुम्हें हिदायत (हक़ रास्ते) से रोका था? वह तो तुम्हारे सामने खुली हुई मौजूद थी। बात यह है कि तुम ख़ुद ही गुनाहगार और बुरे अ़मल करने वाले थे। ये फिर कहेंगे कि नहीं नहीं! तुम्हारी दिन रात की चालाकियों ने और तुम्हारे इस अ़क़ीदे ने कि हम ख़ुदा के साथ कुफ़्र करें और उसके शरीक ठहराएँ हमको

गुमराह कर दिया। बात यह है कि सबके सब उस वक़्त सख़्त नादिम (शर्मिन्दा) होंगे, लेकिन शर्मिन्दगी को छुपाने की कोशिश में होंगे। गर्दनों में तौक़ पड़े हुए होंगे और उन्हें उनके आमाल का बदला ज़रूर दिया जाएगा। न कम न ज़्यादा।

जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाते हैं और उन (के मानने) से तकब्बुर करते हैं, उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएँगे, और वे लोग कभी जन्नत में न जाएँगे, जब तक कि ऊँट सूई के नाके के अन्दर से (न) चला जाए, और हम मुजरिम लोगों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (40) उनके लिए दोज़ख़ (की आग) का बिछौना होगा और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा, और हम ऐसे ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (41)	إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ○ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ○

काफ़िरों पर जन्नत हराम कर दी गई है

काफ़िरों के न तो नेक आमाल ख़ुदा की तरफ़ चढ़ेंगे न उनकी दुआएँ क़बूल होंगी। न उनकी रूहों के लिए आसमान के दरवाज़े खुलेंगे। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि जब बदकारों की रूहें क़ब्ज़ की जाती हैं और फ़रिश्ते उन्हें लेकर आसमानों की तरफ़ चढ़ते हैं तो फ़रिश्तों की जिस जमाअ़त के पास से गुज़रते हैं वे कहते हैं- यह ख़बीस रूह किसकी है? ये उसका बुरे से बुरा नाम लेकर बतलाते हैं कि फ़ुलाँ की। यहाँ तक कि उसे आसमान के दरवाज़े तक पहुँचाते हैं, लेकिन उनके लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाता। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आयतः

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ.

पढ़ी। जिसका तर्जुमा यह है कि उनके लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाते।

यह बहुत लम्बी हदीस है जो सुनन में मौजूद है। मुस्नद अहमद में यह हदीस पूरी यूँ है-

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी सहाबी के जनाज़े में हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ थे। जब क़ब्रिस्तान पहुँचे तो क़ब्र तैयार होने में कुछ देर थी, सब बैठ गये। हम इस तरह ख़ामोश और अदब से बैठे थे कि गोया हमारे सरों पर पक्षी हैं। आपके हाथ में एक तिनका था, जिसे आप ज़मीन पर फहरा रहे थे। थोड़ी देर में आपने सर उठाकर दो-तीन बार हमसे फ़रमाया कि अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तआ़ला की पनाह तलब करो। फिर फ़रमाया मोमिन जब दुनिया की आख़िरी और आख़िरत की पहली घड़ी में होता है तो उसके पास आसमान से नूरानी चेहरों वाले फ़रिश्ते आते हैं, गोया कि उनका मुँह सूरज की तरह रोशन है। उनके साथ जन्नत का कफ़न और जन्नत की ख़ुशबू होती है। वे आकर मरने वाले मोमिन के पास बैठ जाते हैं, जहाँ तक उसकी निगाह काम करती है फ़रिश्ते नज़र

आते हैं।

फिर हज़रत मलकुल-मौत आकर उसके सिरहाने बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं- ऐ इत्मीनान वाली रूह! अल्लाह की मग़फ़िरत और रज़ामन्दी की तरफ़ चल। यह सुनते ही वह रूह उस बदन से ऐसे निकल जाती है जैसे मश्क के मुँह से पानी का क़तरा टपक जाए। उसी वक़्त पलक झपकने के बराबर की देर में वे जन्नती फ़रिश्ते उस पाक रूह को अपने हाथों में ले लेते हैं और जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुशबुओं में रख लेते हैं। उसमें से ऐसी उम्दा और बेहतरीन ख़ुशबू निकलती है कि कभी दुनिया वालों ने न सूँघी हो। अब ये उसे लेकर आसमान पर चढ़ते हैं। फ़रिश्तों की जो जमाअ़त उन्हें मिलती है वह पूछती है कि यह पाक रूह किसकी है? ये उसका बेहतर से बेहतर नाम जो दुनिया में मशहूर था, वह लेकर कहते हैं कि फ़ुँला की, यहाँ तक कि दुनिया वाले आसमान तक पहुँच जाते हैं। दरवाज़ा खुलवाकर ऊपर चढ़ते हैं, यहाँ से उसके साथ दूसरे आसमान तक पहुँचाने के लिए फ़रिश्तों की और बड़ी जमाअ़त हो जाती है। इसी तरह सातवें आसमान तक पहुँचते हैं।

अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाता है मेरे इस बन्दे की किताब इल्लिय्यीन में रख लो और इसे ज़मीन की तरफ़ लौटा दो। मैंने इन्हें उसी से पैदा किया है, उसी में लौटाऊँगा और उसी से दोबारा निकालूँगा। पस वह रूह लौटा दी जाती है। वहीं उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, उसे बैठाते हैं और उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देता है कि मेरा रब अल्लाह है। फिर पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह कहता है मेरा दीन इस्लाम है। फिर पूछते हैं कि वह शख़्स जो तुम में भेजे गए वे कौन थे? वह कहता है वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम थे। फ़रिश्ते उससे मालूम करते हैं कि तुझे कैसे मालूम हुआ? जवाब देता है कि मैंने ख़ुदा की किताब पढ़ी, उस पर ईमान लाया और उसे सच्ची मानी। वहीं आसमान से एक आवाज़ देने वाला आवाज़ करता है कि मेरे बन्दा सच्चा है, इसके लिए जन्नत का फ़र्श बिछा दो और इसे जन्नती लिबास पहना दो, और इसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दो। पस उसके पास जन्नत की तरोताज़गी और उसकी ख़ुशबू और वहाँ की हवा आती रहती है। उसकी क़ब्र खोल दी जाती है, जहाँ तक उसकी नज़र पहुँचती है उसे कुशादगी ही कुशादगी नज़र आती है। उसके पास एक बहुत ही हसीन व ख़ूबसूरत शख़्स शानदार लिबास पहने हुए ख़ुशबू लगाये हुए आता है और उससे कहता है कि ख़ुश हो, यही वह दिन है जिसका तुझसे वादा किया जाता था। यह उससे पूछता है कि तू कौन है? तेरे चेहरे से भलाई पाई जाती है? वह जवाब देता है कि मैं तेरा नेक अ़मल हूँ। अब तो मोमिन आरज़ू करने लगता है कि ख़ुदा करे क़ियामत आज ही क़ायम हो जाए ताकि मैं जन्नत में पहुँचकर अपने माँ बाप, अपने घर वालों और बाल-बच्चों को पा लूँ।

और काफ़िर की जब दुनिया की आख़िरी घड़ी होती है तो उसके पास काले चेहरे वाले फ़रिश्ते आसमान से आते हैं। उनके साथ टाट होता है, उसकी निगाह तक उसे यही नज़र आते हैं। फिर मलकुल् मौत आकर उसके सिरहाने बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं- ऐ ख़बीस रूह! अल्लाह की नाराज़गी और उसके ग़ज़ब की तरफ़ चल। यह सुनकर वह रूह बदन में छुपने लगती है जिसे मलकुल-मौत (मौत का फ़रिश्ता) जबरन घसीटकर निकालते हैं। उसी वक़्त वे फ़रिश्ते उनके हाथ से एक आँख झपकने में ले लेते हैं, उसे जहन्नमी टाट में लपेट लेते हैं और उससे बहुत ही सड़ी हुई बू निकलती है। ये उसे लेकर चढ़ने लगते हैं। फ़रिश्तों का जो गिरोह मिलता है इनसे पूछता है कि यह नापाक रूह किसकी है? ये उसका जो सबसे बुरा नाम दुनिया में था उन्हें बतलाते हैं। फिर आसमान का दरवाज़ा उसके लिए खुलवाना चाहते हैं मगर खोला

नहीं जाता। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़ुरआने करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई। अल्लाह तआ़ला का इरशाद होता है कि इसकी किताब सिज्जीन में सबसे नीचे की ज़मीन में रख लो। फिर उसकी रूह वहाँ से फेंक दी जाती है। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ

यानी जिसने ख़ुदा के साथ शरीक किया गोया वह आसमान से गिर पड़ा। पस उसे या तो परिन्दे (पक्षी) उचक ले जाएँगे या हवायें किसी दूर-दराज़ की दहश्तनाक और वीरान जगह फेंक देंगी।

अब उसकी रूह उसके जिस्म में लौटाई जाती है और उसके पास दो फ़रिश्ते पहुँचते हैं, उसे उठा बैठाते हैं और पूछते हैं तेरा रब कौन है? यह कहता है कि हाय हाय मुझे ख़बर नहीं। पूछते हैं तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है अफ़सोस मुझे इसकी भी ख़बर नहीं। पूछते हैं बता उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता है जो तुम में भेजे गए थे? यह कहता है आह! मैं इसका जवाब भी नहीं जानता। उसी वक़्त आसमान से आवाज़ आती है कि मेरे इस ग़ुलाम ने ग़लत कहा, इसके लिए जहन्नम की आग बिछा दो और जहन्नम का दरवाज़ा इसकी क़ब्र की तरफ़ खोल दो। वहाँ से इसे गर्मी और आग के झोंके आने लगते हैं। उसकी क़ब्र उस पर तंग हो जाती है, यहाँ तक कि इधर की पसलियाँ उधर और उधर की पसलियाँ इधर हो जाती हैं। उसके पास एक शख़्स बहुत ही बुरी और डरावनी सूरत वाला बुरे कपड़े पहने बदबू वाला आता है, और उससे कहता है कि अब अपनी बुराईयों का मज़ा चख। इसी दिन का तुझसे वादा किया जाता था। यह पूछता है कि तू कौन है? तेरे तो चेहरे से घबराहट और बुराई टपक रही है। वह जवाब देता है कि मैं तेरा ख़बीस अ़मल हूँ। यह कहता है ख़ुदा करे क़ियामत क़ायम न हो।

इसी रिवायत की दूसरी सनद में है कि मोमिन की रूह को देखकर आसमान के और आसमान व ज़मीन के तमाम फ़रिश्ते मग़फ़िरत व रहमत की दुआ़ करते हैं, उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और हर दरवाज़े के फ़रिश्तों की तमन्ना होती है कि ख़ुदा करे यह रूह हमारी तरफ़ से आसमान पर चढ़े। उसमें यह भी है कि काफ़िर की क़ब्र में अंधा बहरा गूँगा फ़रिश्ता मुक़र्रर हो जाता है, जिसके हाथ में एक गुर्ज़ (लोहे का डंडा) होता है, कि अगर उसे किसी बड़े पहाड़ पर मारा जाए तो वह मिट्टी हो जाए। चुनाँचे उसकी एक चोट से उसका चूरा हो जाता है, बल्कि मिट्टी बन जाता है। फिर अल्लाह तआ़ला उसको जैसा वह था कर देता है। फ़रिश्ता दोबारा उसे गुर्ज़ मारता है, जिससे यह चीख़ने और चिल्लाने लगता है, जिसे इनसान और जिन्नात के अ़लावा तमाम मख़्लूक़ सुनती है।

तफ़सीर इब्ने जरीर में है कि नेक सालेह शख़्स से फ़रिश्ते कहते हैं ऐ मोमिन नफ़्स! जो पाक जिस्म में था, तू तारीफ़ों वाला बनकर निकल और जन्नत की ख़ुशबू और जन्नत की हवा की तरफ़ चल। उस ख़ुदा के पास चल जो तुझ पर ग़ुस्सा नहीं है। फ़रमाते हैं कि जब उस रूह को लेकर आसमानों की तरफ़ चढ़ते हैं, दरवाज़ा खुलवाते हैं तो पूछा जाता है कि यह कौन है? ये उसका नाम बतलाते हैं तो वे उसे मरहबा! कहकर वही कहते हैं। यहाँ तक ये उस आसमान पर पहुँचते हैं जहाँ अल्लाह है।

उसमें यह भी है कि बुरे शख़्स से वे कहते हैं ऐ ख़बीस नफ़्स! जो ख़बीस जिस्म में था, तू बुरा बनकर निकल और गर्म खोलते हुए पानी और लहू व पीप और इसी क़िस्म के विभिन्न और अनेक अ़ज़ाबों की तरफ़ चल। उसके निकलने तक फ़रिश्ते उसे यही सुनाते रहते हैं। फिर उसे लेकर आसमानों की तरफ़ चढ़ते

Maktab E Ashraf

हैं। पूछा जाता है कि यह कौन है? ये उसका नाम बताते हैं तो आसमानों के फ़रिश्ते कहते हैं इस ख़बीस को मरहबा न कहो। यह थी भी ख़बीस जिस्म में, तू बुरी बनकर लौट जा। उसके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खुलते और आसमान व ज़मीन के बीच छोड़ दी जाती है। फिर क़ब्र की तरफ़ लौट आती है। इमाम इब्ने जरीर ने लिखा है कि न उनके आमाल चढ़ें न उनकी रूहें। इससे दोनों क़ौल एक दूसरे के मुताबिक़ हो जाते हैं। वल्लाहु आलम

इसके बाद के जुमले में जमहूर की क़िराअत "जमल" है, जिसके मायने नर ऊँट के हैं, लेकिन एक क़िराअत में "जुमल" है, इसके मायने बड़े पहाड़ के हैं। मतलब दोनों सूरतों में एक ही है कि न ऊँट सूई के नाके से गुज़र सके न पहाड़। इसी तरह काफ़िर जन्नत में नहीं जा सकता है। उनका ओढ़ना बिछौना आग है। ज़ालिमों की यही सज़ा है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا
نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝
وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ
الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۗ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ
اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا
بِالْحَقِّ ۗ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ
اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा कोई काम नहीं बतलाते, ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा- हमेशा रहेंगे। (42) और जो कुछ उनके दिलों में गुबार था हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे लोग कहेंगे कि अल्लाह का (लाख-लाख) एहसान है जिसने हमको इस मक़ाम तक पहुँचाया, और हमारी कभी रसाई न होती अगर अल्लाह तआ़ला हमको न पहुँचाते, वाक़ई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे। और उनसे पुकारकर कहा जाएगा कि तुमको यह जन्नत दी गई है तुम्हारे आमाल के बदले। (43)

शरीअ़त के अहकाम ताक़त के मुताबिक़ होते हैं

ऊपर गुनाहगारों का ज़िक्र हुआ, यहाँ नेकबख़्तों का ज़िक्र हो रहा है, कि जिनके दिल में ईमान है और जो अपने जिस्म से क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ काम करते हैं, बदकारों के उलट कि वे दिल में कुफ़्र रखते हैं और अ़मल से दूर भागते हैं। फिर फ़रमाता है कि ईमान और नेकियाँ इनसान के बस में हैं, अल्लाह के अहकाम इनसानी ताक़त से ज़्यादा नहीं, ऐसे लोग जन्नती हैं और हमेशा जन्नत ही में रहेंगे। उनके दिलों में आपस की कदूरतें, हसद, बुग़्ज़ दूर कर दिए जाएँगे। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि मोमिन आग से छुटकारा हासिल करके जन्नत दोज़ख़ के बीच एक पुल पर कुछ देर रोक दिये जाएँगे वहाँ उनके आपस के अत्याचारों का बदला हो जायेगा और पाक होकर जन्नत में जाने की इजाज़त पाएँगे। वल्लाहु

Maktab E Ashraf

आलम।

वे लोग अपने-अपने दर्जों को और अपने-अपने मकानों को इस तरह पहचान लेंगे जैसे दुनिया में जान लेते थे, बल्कि उससे भी ज़्यादा। सुद्दी रहमतुल्लाहि अ़लैहि से रिवायत है कि जन्नत वाले जन्नत के दरवाज़े पर एक दरख़्त देखेंगे जिसकी जड़ों के पास से नहरें बह रही होंगी, ये उनमें से एक का पानी पियेंगे जिससे दिल की कदूरतें (यानी मैल और आपस के गिले शिकवे) धुल जाएँगी। यह शराबे तहूर है। फिर दूसरी नहर में ग़ुस्ल करेंगे जिससे चेहरों पर तरोताज़गी आयेगी। फिर न तो बाल बिखरेंगे, न सुर्मा लगाने और सिंघार करने की ज़रूरत पड़ेगी। हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से भी इसी जैसा क़ौल नक़ल है जो आयत "व सीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम इलल् जन्नति ज़ु-मरा....." (सूरः ज़ुमर आयत 73) की तफ़सीर में आयेगा इन्शा-अल्लाह।

आपसे यह भी नक़ल किया गया है कि इन्शा-अल्लाह मैं और उस्मान और तलहा और ज़ुबैर उन लोगों में से होंगे, जिनके दिल अल्लाह तआ़ला साफ़ कर देगा। फ़रमाते हैं कि हम बदर वालों के बारे में यह आयत उतरी है। इब्ने मरदूया में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- हर जन्नती को उसका जहन्नम का ठिकाना दिखाया जायेगा, ताकि वह और भी ख़ुदा का शुक्र अदा करे कि अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे राहे हिदायत अ़ता फ़रमाई। और हर जहन्नमी को उसका जन्नत का ठिकाना दिखाया जायेगा ताकि उसकी हसरत बढ़े। उस वक़्त वह कहेगा काश मैं भी सही राह पाने वाला होता। फिर जन्नतियों को उन जहन्नमियों की जन्नत की जगहें दे दी जाएँगी और एक ऐलान करने वाला ऐलान करेगा कि यही वह जन्नत है जिसके तुम अपनी नेकियों के सबब वारिस बनाये गये। यानी तुम्हारे आमाल की वजह से तुम्हें रहमते ख़ुदा मिली और रहमते ख़ुदा से तुम दाख़िले जन्नत हुए। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- याद रखो कि तुममें से कोई भी सिर्फ़ अपने आमाल की वजह से जन्नत में नहीं जा सकता। लोगों ने पूछा आप भी नहीं? फ़रमाया हाँ मैं भी नहीं, मगर यह कि ख़ुदा मुझे अपनी रहमत व फ़ज़्ल में ढाँप ले।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ
اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ
وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ
فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
كٰفِرُوْنَ ۘ

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे जो हमारे रब ने वादा फ़रमाया था हमने तो उसको हक़ीक़त के मुताबिक़ पाया, सो तुमसे जो तुम्हारे रब ने वादा किया था तुमने भी उसको हक़ीक़त के मुताबिक़ पाया? वे कहेंगे हाँ। फिर एक पुकारने वाला उन (दोनों) के दरमियान में पुकारेगा कि अल्लाह की मार हो उन ज़ालिमों पर (44) जो अल्लाह की राह से मुँह फेरा करते थे, और उसमें कजी "यानी टेढ़ और कमी" तलाश करते रहते थे, और वे लोग आख़िरत का इनकार करने वाले भी थे। (45)

Maktab-E-Ashraf

जन्नती और दोज़ख़ी लोगों की एक गुफ़्तगू

जन्नती जब जन्नत में जाकर अमन चैन से बैठ जाएँगे तो जहन्नमियों को शर्मिन्दा करने के लिए उनसे पूछेंगे कि हमने तो अपने रब के उन वादों को जो हमसे किये गये थे, सही पाया, तुम अपनी कहो। इसके जवाब में मुशिरक लोग शर्मिन्दगी से कहेंगे कि हाँ हमने भी अपने रब के उन वादों को जो हमसे किए थे ठीक पाया। जैसे सूरः साफ़्फ़ात में अल्लाह का फ़रमान है कि जन्नती लोगों में से एक कहेगा कि मेरा एक साथी था जो मुझसे ताज्जुब के साथ सवाल किया करता था कि क्या तू भी उन लोगों में से है जो क़ियामत के क़ायल हैं? क्या जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, क्या वाक़ई हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे और हमें बदले दिये जाएँगे? यह जन्नती कहेगा कि क्या तुम भी मेरे साथ होकर उसे झाँककर देखना चाहते हो? यह कहकर वह ऊपर से झाँककर देखेगा तो अपने उस साथी को बीच जहन्नम में पायेगा। कहेगा क़सम ख़ुदा की तू तो मुझे भी तबाह करने ही को था। अगर मेरे रब का फ़ज़्ल मेरे शामिले हाल न होता तो मैं भी आज अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होता। अब बता तू दुनिया में जो कहा करता था क्या सच्चा था कि हम मरकर जीने वाले और बदले भुगतने वाले नहीं? उस वक़्त फ़रिश्ते कहेंगे कि यही वह जहन्नम है जिसे तुम झूठा मान रहे थे, अब बताओ क्या यह जादू है? या तुम्हारी आँखें नहीं हैं? अब यहाँ जलते रहो, सब्र और बेसब्री दोनों नतीजे के एतिबार से तुम्हारे लिए बराबर है। तुम्हें अपने किए हुए बुरे आमाल का बदला उठाना ही है।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़ुरैश के काफ़िरों के उन मक़्तूलों को जो बदर में मारे गये थे और जिनकी लाशें एक खाई में थीं, डाँटा था और यह फ़रमाया था कि ऐ अबू जहल बिन हिशाम! और ऐ उतबा बिन रबीआ़! और ऐ शैबा बिन रबीआ़! और दूसरे सरदारों का भी नाम लिया और फ़रमाया क्या तुमने अपने रब को सच्चा पाया? मैंने अपने रब के वे वादे देख लिए जो उसने मुझसे किये थे। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया- या रसूलल्लाह! आप उनसे बातें कर रहे हैं जो मरकर मुर्दार हो गए? तो आपने फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मेरी बात को तुम भी उनसे ज़्यादा नहीं सुन रहे हो लेकिन वे जवाब नहीं दे सकते।

फिर फ़रमाता है कि उसी वक़्त एक मुनादी ऐलान करके मालूम करा देगा कि ज़ालिमों पर रब की हमेशा की लानत वाक़े हो चुकी, जो लोगों को राहे ख़ुदा और हिदायत वाली शरीअ़त से रोकते थे। चाहते थे कि ख़ुदा की शरीअ़त टेढ़ी कर दें, ताकि उस पर कोई अ़मल न करे। आख़िरत पर भी उन्हें यक़ीन न था। ख़ुदा की मुलाक़ात को नहीं मानते थे, इसलिए बेपरवाही से बुराईयाँ करते थे। हिसाब का डर न था, इसलिए सबसे ज़्यादा बुरी ज़बान और बुरे आमाल वाले थे।

और उन दोनों के दरमियान एक आड़ होगी, और आराफ़ के ऊपर बहुत-से आदमी होंगे, वे लोग हर एक को उनके निशानों से पहचानेंगे और जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे, अस्सलामु अ़लैकुम। अभी ये (आराफ़ वाले) उसमें (यानी जन्नत में) दाख़िल नहीं हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे। (46) और	وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا ۢ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۣ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ○ وَاِذَا صُرِفَتْ

जब उनकी निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमको उन ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कीजिए। (47)	اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ۠

Maktaba E Ashraf

आराफ़ का स्थान

जन्नतियों और दोज़ख़ियों के बारे में बयान फ़रमाकर इरशाद होता है कि जन्नत दोज़ख़ के बीच एक आड़, सीमा, रेखा और दीवार है, जिसका मक़सद यह है कि जहन्नमियों को जन्नत से दूर रखे। उसी दीवार का ज़िक्र आयतः

فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ.... الخ

में है। यानी उनके बीच एक दीवार रोक और आड़ कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा है, उसके अन्दर रहमत है और बाहर अ़ज़ाब है। इसी का नाम "आराफ़" है। आराफ़ अ़रफ़ की जमा (बहुवचन) है। हर ऊँची ज़मीन को अ़रब मे अ़रफ़ा कहते हैं। इसी लिए मुर्ग़ के सर की कलस को भी अ़रब में 'अ़रफ़ुद्दीक" कहते हैं। क्योंकि वह ऊँची जगह होता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं- यह एक ऊँची जगह है, जन्नत दोज़ख़ के बीच, जहाँ कुछ लोग रोक दिये जाएँगे। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं इसका नाम आराफ़ इसलिये रखा गया है कि यहाँ के लोग और लोगों को जानते पहचानते हैं। यहाँ कौन लोग होंगे इसमें बहुत से अक़वाल हैं। सबका हासिल यह है कि वे ये लोग होंगे जिनके गुनाह और नेकियाँ बराबर होंगी। बाज़ पहले उलेमा से भी यही मन्क़ूल है। हज़रत हुज़ैफ़ा, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह ने यही फ़रमाया है। यही बाद वाले मुफ़स्सिरीन का क़ौल है।

एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी है लेकिन सनद के एतिबार से वह हदीस ग़रीब है। तथा दूसरी सनद से है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से उन लोगों के बारे में जिनकी नेकियाँ व बुराईयाँ बराबर हों और उनके बारे में जो आराफ़ वाले हैं दरियाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया ये वे नाफ़रमान लोग हैं जो अपने माँ-बाप की इजाज़त के बग़ैर निकले, फिर राहे ख़ुदा में क़त्ल कर दिये गये। एक और रिवायत में है कि ये लोग राहे ख़ुदा में क़त्ल किये गये और थे अपने बाप के नाफ़रमान। तो बाप की नाफ़रमानी ने जन्नत में जाने से रोक दिया और जहन्नम में जाने से शहादत ने रोक दिया। इब्ने माजा वग़ैरह में भी ये रिवायतें हैं। अब ख़ुदा ही को इनके सही होने का इल्म है। बहुत मुम्किन है कि ये मौक़ूफ़ रिवायतें हों। बहरहाल इनसे आराफ़ वालों का हाल मालूम हो रहा है। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. से जब उनके बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया ये वे लोग हैं जिनकी नेकियाँ और बुराईयाँ बराबर थीं। बुराईयों की वजह से जन्नत में न जा सके और नेकियों की वजह से जहन्नम से बच गये। पस यहाँ आड़ में रोक दिये जाएँगे। यहाँ तक कि ख़ुदा का कोई और फ़ैसला उनके बारे में हो।

एक और रिवायत में आपसे नक़ल किया गया है कि ये जहन्नमियों को देख-देखकर डर रहे होंगे और ख़ुदा से निजात तलब कर रहे होंगे कि अचानक उनका रब उनकी तरफ़ देखेगा और फ़रमायेगा- जाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओ, मैंने तुम्हें बख़्शा। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- क़ियामत के दिन लोगों

Maktab E Ashraf

का हिसाब होगा, एक नेकी भी अगर बुराई से बढ़ गई तो जन्नत में दाख़िल होगा और एक बुराई भी अगर नेकियों से ज़्यादा हो गई तो दोज़ख़ में जायेगा फिर आपने ये दो आयतें तिलावत फ़रमायीं:

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ٥

और फ़रमाया एक राई के दाने के बराबर की ज़्यादती से तराज़ू का पलड़ा हल्का भारी हो जाता है और जिनकी नेकियाँ और बुराईयाँ बराबर हुईं ये आराफ़ वाले हैं। ये रोक लिये जाएँगे और जन्नती दोज़ख़ी मशहूर हो जाएँगे। ये जब जन्नत को देखेंगे तो जन्नत वालों पर सलाम करेंगे। और जब जहन्नम को देखेंगे तो अल्लाह से पनाह तलब करेंगे। नेक लोगों को नूर मिलेगा जो उनके आगे और उनके दाहिने मौजूद रहेगा, हर इनसान को वे मर्द हों या औ़रतें हों एक नूर मिलेगा, लेकिन पुलसिरात पर मुनाफ़िक़ों का नूर छीन लिया जायेगा। उस वक़्त सच्चे मोमिन ख़ुदा से अपने नूर के बाक़ी रहने की दुआ़एँ करेंगे। आराफ़ वालों का नूर छीना नहीं जायेगा, वह उनके आगे-आगे मौजूद होगा, उन्हें जन्नत में जाने की तमन्ना होगी। लोगो! एक नेकी दस गुनी करके लिखी जाती है और एक बुराई उतनी ही लिखी जाती है जितनी हो। अफ़सोस उन पर जिनकी इकाईयाँ दहाईयों पर ग़ालिब आ जाएँ।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि आराफ़ एक दीवार है जो जन्नत व दोज़ख़ के बीच है। आराफ़ वाले वहीं होंगे जब उन्हें आ़फ़ियत देने का ख़ुदा का इरादा होगा तो हुक्म मिलेगा कि उन्हें नहरे हयात की तरफ़ ले जाओ, उसके दोनों किनारों पर सोने के ख़ेमे होंगे जो मोतियों से जड़े होंगे। उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क की होगी। उसमें ग़ोता लगाते ही उनके रंग निखर जाएँगे और उनकी गर्दनों पर एक सफ़ेद चमकीला निशान हो जायेगा, जिससे वे पहचान लिए जाएँ। ये ख़ुदा के सामने लाए जाएँगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा जो चाहो माँगो, ये माँगेंगे यहाँ तक कि उनकी तमाम तमन्नायें अल्लाह तआ़ला पूरी कर देगा। फिर फ़रमायेगा इन जैसी सत्तर गुनी और नेमतें भी मैंने तुम्हें दीं फिर ये जन्नत में जाएँगे, वह निशान उन पर मौजूद होगा। जन्नत में उनका नाम मसाकीने अहले जन्नत होगा। यही रिवायत हज़रत मुजाहिद रह. के अपने क़ौल से भी मन्क़ूल है और यही ज़्यादा सही है। वल्लाहु आलम

एक हसन सनद की मुर्सल हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से आराफ़ वालों के बारे में दरियाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया उनका फ़ैसला सबसे आख़िर में होगा। रब्बुल-आ़लमीन जब अपने बन्दों के फ़ैसले कर चुकेगा तो उनसे फ़रमायेगा कि तुम लोगों को तुम्हारी नेकियों ने दोज़ख़ से तो महफ़ूज़ कर दिया लेकिन तुम जन्नत में जाने के मुस्तहिक़ साबित नहीं हुए। अब तुमको मैं अपनी तरफ़ से आज़ाद करता हूँ। जाओ जन्नत में रहो और जहाँ चाहो खाओ पियो। यह भी कहा गया है कि ये नाजायज़ औलाद हैं। इब्ने अ़साकिर में फ़रमाने नबी है कि मोमिन जिन्नात को सवाब है और उनमें से जो बुरे हैं उन्हें अ़ज़ाब भी होगा, कि हमने उनके सवाब और उनके ईमान वालों के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दरियाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया- वे आराफ़ पर होंगे। जन्नत में मेरी उम्मत के साथ न होंगे हमने पूछा या रसूलल्लाह सल्ल.! आराफ़ क्या है? फ़रमाया जन्नत का एक बाग़ जहाँ नहरें जारी हैं और फल पक रहे हैं। (बैहक़ी)

हज़रत मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं ये नेक दीनदार फ़ुक़हा व उलेमा लोग होंगे। अबू मुजिल्ज़ रह. फ़रमाते हैं ये फ़रिश्ते हैं, जन्नत दोज़ख़ वालों को जानते हैं। फिर आपने इन आयतों को तिलावत किया और

फ़रमाया जब जन्नती जन्नत में जाने लगेंगे तो कहा जाएगा तुम अमन व अमान के साथ बेख़ौफ़ व बेख़तर होकर जन्नत में जाओ। इसकी सनद अगरचे ठीक है लेकिन यह क़ौल बहुत ग़रीब है, बल्कि इबारत की रवानी भी इसके ख़िलाफ़ है, और जमहूर का क़ौल ही मुक़द्दम है, क्योंकि आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ के मुताबिक़ है। हज़रत मुजाहिद रह. का क़ौल भी जो ऊपर बयान हुआ ग़रीब होने से ख़ाली नहीं। वल्लाहु आलम।

क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इसमें बारह क़ौल नक़ल किये हैं- नेक लोग, अम्बिया, फ़रिश्ते वग़ैरह। ये जन्नतियों के उनके चेहरे की रौनक़ और सफ़ेदी से और जहन्नमियों को उनके चेहरे की सियाही से पहचान लेंगे। ये यहाँ इसी लिए हैं कि हर एक का इम्तियाज़ (फ़र्क़) कर लें और सबको पहचान लें। ये जन्नतियों से सलाम करेंगे, जहन्नमियों को देख-देखकर ख़ुदा की पनाह चाहेंगे और तमन्ना व आरज़ू रखेंगे कि ख़ुदा तआ़ला अपने फ़ज़्ल से उन्हें भी जन्नत में पहुँचा दे। यह तमन्ना व आरज़ू उनके दिल में ख़ुदा ने इसी लिए डाली है कि उसका इरादा उन्हें जन्नत में ले जाने का हो चुका है। जब वे दोज़ख़ वालों को देखते हैं तो कहते हैं- परवर्दिगार! हमें ज़ालिमों में से न कर। जब कोई जमाअ़त जहन्नम में पहुँचाई जाती है तो ये अपने बचाव की दुआ़एँ करने लगते हैं। जहन्नम से उनके चेहरे कोयले जैसे हो जाएँगे लेकिन जब जन्नत वालों को देखेंगे तो यह सियाही चेहरों से दूर हो जाएगी। जन्नतियों के चेहरे की निशानी नूर होगा और जहन्नमियों के चेहरों पर सियाही और आँखों में भैंगापन होगा।

وَنَادَىٰ أَصْحَٰبُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم بِسِيمَٰهُمْ قَالُوا۟ مَآ أَغْنَىٰ عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ أَهَٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا۟ الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ۝	और आराफ़ "जन्नत और दोज़ख़ के बीच एक जगह" वाले बहुत-से आदमियों को जिनको कि उनके निशानों और अन्दाज़ों से पहचानेंगे, पुकारेंगे। कहेंगे कि तुम्हारी जमाअ़त और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (48) क्या ये वही हैं जिनके बारे में तुम क़समें खा-खाकर कहा करते थे कि अल्लाह तआ़ला उन पर रहमत न करेगा? (उनको यूँ हुक्म हो गया कि) जाओ जन्नत में, तुम पर न कुछ अन्देशा है और न तुम ग़मज़दा होगे। (49)

गुफ़्तगू और बातचीत

कुफ़्र के जिन सुतूनों को, काफ़िरों के जिन सरदारों को आराफ़ वाले उनके चेहरों से पहचान लेंगे उन्हें डाँट-डपटकर पूछेंगे कि आज तुम्हारी अधिकता और संगठन कहाँ गया? उसने तो तुम्हें बिल्कुल भी फ़ायदा न पहुँचाया। आज वह तुम्हारी अकड़-फ़ूँ क्या हुई? तुम तो अनेक अ़ज़ाबों में जकड़ दिये गये हो। उनके इस फ़रमान के बाद ही ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से फ़रमाया गया है कि बदबख़्तो! इन्हीं के बारे में तुम कहा करते थे कि ख़ुदा इन्हें कोई राहत नहीं पहुँचायेगा? ऐ आराफ़ वालो! मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि जाओ आराम से बेखटके जन्नत में जाओ। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं कि आराफ़ वालों के नेक आमाल इस

Maktab E Ashraf

क़ाबिल न निकले कि उन्हें जन्नत में पहुँचाएँ लेकिन इतनी बुराईयाँ भी उनकी न थीं कि दोज़ख़ में जायें, तो ये आराफ़ पर ही रोक दिये गये। लोगों को उनके अन्दाज़े से पहचानते होंगे।

जब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में फ़ैसले कर चुकेगा, शफ़ाअ़त की इजाज़त देगा, लोग हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के पास आएँगे और कहेंगे कि ऐ आदम! आप हमारे बाप हैं हमारी शफ़ाअ़त ख़ुदा तआ़ला की जनाब में कीजिये। आप जवाब देंगे कि क्या तुम जानते हो कि मेरे अ़लावा किसी को अल्लाह तआ़ला ने अपने हाथ से पैदा किया हो? अपनी रूह उसमें फूँकी हो? अपनी रहमत उस पर अपने ग़ज़ब से पहले पहुँचाई हो? अपने फ़रिश्तों से उसे सज्दा कराया हो? सब जवाब देंगे कि नहीं, कोई ऐसा आपके अ़लावा नहीं। आप फ़रमायेंगे मैं उसकी हक़ीक़त से बेख़बर हूँ मैं तुम्हारी शफ़ाअ़त नहीं कर सकता, हाँ तुम मेरे लड़के इब्राहीम के पास जाओ। अब सब लोग हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँचेंगे और उनसे शफ़ाअ़त करने की दरख़्वास्त करेंगे। आप जवाब देंगे कि क्या तुम जानते हो कि मेरे सिवा कोई ख़ुदा का दोस्त हुआ हो? या ख़ुदा के बारे में उसे उसकी क़ौम ने आग में फेंका हो? सब कहेंगे नहीं! आपके सिवा और कोई नहीं। फ़रमाएँगे मुझे उसकी हक़ीक़त मालूम नहीं, मैं तुम्हारी शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त नहीं ले जा सकता, तुम मेरे लड़के मूसा (यहाँ मुराद सिर्फ़ यह है कि नुबुव्वत में मेरे बाद के बुलन्द रुतबे वाले पैग़म्बर, छोटे होने की वजह से लड़के कहा वरना यह आपके नसबी लड़के नहीं थे) के पास जाओ। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जवाब देंगे कि बताओ मेरे सिवा ख़ुदा ने किसी को अपना कलीम (कलाम और बातचीत करने वाला) बनाकर अपनी सरगोशियों (आहिस्ता-आहिस्ता बातें करने) के लिए नज़दीकी अ़ता फ़रमाई? सब जवाब देंगे कि नहीं। फ़रमाएँगे मैं उसकी हक़ीक़त से बेख़बर हूँ। मैं तुम्हारी शफ़ाअ़त करने की ताक़त नहीं रखता। हाँ तुम हज़रत ईसा के पास जाओ, लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के पास आएँगे उनसे शफ़ाअ़त करने का तक़ाज़ा करेंगे। यह जवाब देंगे कि क्या तुम जानते हो कि मेरे सिवा किसी को ख़ुदा ने बिना बाप के पैदा किया हो? जवाब मिलेगा कि नहीं। पूछेंगे जानते हो कि कोई मादरज़ाद अन्धों और कोढ़ियों को ख़ुदा के हुक्म से मेरे सिवा अच्छा करता हो? या कोई मुर्दे को ख़ुदा के हुक्म से मेरे सिवा ज़िन्दा कर देता हो? कहेंगे कि कोई नहीं। फ़रमाएँगे मैं तो आज अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त की फ़िक्र में हूँ। मैं उसकी हक़ीक़त से बेख़बर हूँ। मुझमें इतनी ताक़त कहाँ कि तुम्हारी सिफ़ारिश कर सकूँ। हाँ तुम सबके सब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाओ।

चुनाँचे सब लोग मेरे पास आएँगे। मैं पूरे इत्मीनान से कहूँगा कि हाँ हाँ मैं इसके लिए मौजूद हूँ। फिर मैं चलकर ख़ुदा के अ़र्श के सामने ठहर जाऊँगा। अपने रब के पास पहुँच जाऊँगा और ऐसी ऐसी उसकी तारीफ़ें बयान करूँगा कि किसी सुनने वाले ने कभी न सुनी हों। फिर सज्दे में गिर पड़ूँगा, फिर मुझसे फ़रमाया जायेगा कि ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाओ, माँगो दिया जायेगा, शफ़ाअ़त करो क़बूल की जाएगी। पस मैं अपना सर उठाकर कहूँगा मेरे रब! मेरी उम्मत। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे वे सब तेरे ही हैं। फिर तो हर पैग़म्बर और हर एक फ़रिश्ता रश्क करने लगेगा। यही मक़ाम मक़ामे महमूद है। फिर मैं उन सबको लेकर जन्नत की तरफ़ आऊँगा। जन्नत का दरवाज़ा खुलवाऊँगा और मेरे लिये और उनके लिये खोल दिया जायेगा। फिर उन्हें एक नहर की तरफ़ ले जाएँगे जिसका नाम नेहरुल-हयवान है, उसके दोनों किनारों पर सोने के महल हैं, जिन पर याक़ूत जड़े गये हैं। ये उसमें ग़ुस्ल करेंगे जिससे जन्नती रंग और जन्नती ख़ुशबू उनमें पैदा हो जाएगी और चमकते हुए सितारों जैसे वे नूरानी हो जाएँगे। हाँ उनके सीनों पर सफ़ेद निशान बाक़ी रह जाएँगे, जिनसे वे पहचाने जाएँगे, इन्हें जन्नत वालों के मसाकीन (ग़रीब लोग) कहा जायेगा।

Maktaba E Ashraf

और दोज़ख़ वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमारे ऊपर थोड़ा पानी ही डाल दो, या और ही कुछ दे दो, जो अल्लाह तआ़ला ने तुमको दे रखा है। (जन्नत वाले) कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने दोनों चीज़ों की काफ़िरों के लिए बन्दिश कर रखी है। (50) जिन्होंने (दुनिया में) अपने दीन को लह्व-व- लअ़िब "यानी खेल-तमाशे की चीज़" बना रखा था, और जिनको दुनियावी ज़िन्दगानी ने धोखे में डाल रखा था। सो हम भी आज के दिन उनका नाम न लेंगे, जैसा कि उन्होंने इस दिन का नाम तक न लिया था, और जैसा कि ये हमारी आयतों का इनकार किया करते थे। (51)	وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ○ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ○

जहन्नमियों की दरख़्वास्त

दोज़ख़ियों की ज़िल्लत व ख़्वारी, उनका भीख माँगना और डाँट दिया जाना बयान हो रहा है, कि वे जन्नतियों से पानी या खाना माँगेंगे, अपने नज़दीक के रिश्ते कुनबे वाले जैसे बाप बेटे भाई बहन वग़ैरह से कहेंगे कि हम जल-भुन रहे हैं, भूखे प्यासे हैं, हमें एक घूँट पानी या एक लुक़्मा खाना दे दो। वे अल्लाह के हुक्म से उन्हें जवाब देंगे कि ये सब कुछ काफ़िरों पर हराम है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास से सवाल किया गया कि किस चीज़ का सदक़ा अफ़ज़ल है? फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि सबसे अफ़ज़ल (बेहतर और अच्छी) ख़ैरात पानी है। देखो जहन्नमी जन्नत वालों से इसी का सवाल करेंगे।

रिवायत है कि जब अबू तालिब मौत की बीमारी में मुब्तला हुआ तो क़ुरैशियों ने उससे कहा- किसी को भेजकर अपने भतीजे से कहलवाओ कि वह तुम्हारे पास जन्नती अँगूर का एक ख़ोशा (गुच्छा) भिजवा दे ताकि तेरी बीमारी जाती रहे। जिस वक़्त क़ासिद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आता है, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु आपके पास मौजूद थे, सुनते ही फ़रमाने लगे- अल्लाह ने जन्नत की खाने-पीने की चीज़ें काफ़िरों पर हराम कर दी हैं। फिर उनके बुरे किरदार को बयान फ़रमाया कि ये लोग अल्लाह के दीन को एक हंसी-खेल समझे हुए थे। दुनिया की चमक-दमक और उसकी सज-धज में ही उम्रभर मशग़ूल रहे। ये चूँकि इस दिन को भूल गए थे इसके बदले हम उनके साथ वही मामला करेंगे जो किसी भूल जाने वाले का मामला हो। क्योंकि ख़ुदा तआ़ला भूलने से पाक है, उसके इल्म से कोई चीज़ निकल नहीं सकती। फ़रमाता है:

لَايَضِلُّ رَبِّىْ وَلَايَنْسَى.

न वह बहके न वह भूले।

यहाँ जो फ़रमाया यह सिर्फ़ मुक़ाबले के लिए है। जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

Maktab E Ashraf

نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ.

कि ये अल्लाह को भूल गये तो अल्लाह इन्हें भूल गया।

और जैसे दूसरी आयत में हैः

كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى.

कि तेरे पास हमारी आयतें आईं तो तूने उन्हें भुला दिया, चुनाँचे उसी तरह आज तुझे भुला दिया जायेगा। या जैसे अल्लाह का फ़रमान हैः

اَلْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا.

कि जैसे आजके दिन की मुलाक़ात को वे लोग भुलाये बैठे थे तो आज उन्हें भी भुला दिया जायेगा।

पस ये भलाईयों से जान-बूझकर भुला दिए जाएँगे। हाँ बुराईयाँ और अ़ज़ाब बराबर होते रहेंगे। उन्होंने इस दिन की मुलाक़ात को छोड़ा हमने उन्हें आग में छोड़ा। रहमत से दूर किया। जैसे ये अ़मल से दूर थे। सही हदीस में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला बन्दे से फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे बीवी बच्चे नहीं दिये थे? क्या इज़्ज़त व आबरू नहीं दी थी? क्या घोड़े ऊँट तेरे ताबे और अधीन नहीं किये थे? और क्या तरह-तरह की राहतें तेरे लिए मुहैया नहीं की थीं? बन्दा जवाब देगा कि हाँ परवर्दिगार बेशक तूने ऐसा ही किया था। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा फिर क्या तू मेरी मुलाक़ात पर ईमान रखता था? वह जवाब देगा कि नहीं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा पस आज मैं भी तुझे ऐसे ही भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूल गया था।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ
هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هَلْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ تَاْوِيْلُهٗ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ
فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِىْ
كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ ع ١٣

और हमने उन लोगों के पास एक ऐसी किताब पहुँचा दी है जिसको हमने अपने कामिल इल्म से बहुत ही वाज़ेह करके बयान कर दिया है, (और वह) हिदायत का ज़रिया और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (52) उन लोगों को और किसी बात का इन्तिज़ार नहीं सिर्फ़ उसके आख़िरी नतीजे का इन्तिज़ार है, जिस दिन उसका आख़िरी नतीजा पेश आएगा उस दिन जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे यूँ कहने लगेंगे कि वाक़ई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची- सच्ची बातें लाए थे, सो अब क्या हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला है कि वह हमारी सिफ़ारिश कर दे, या क्या हम फिर वापस भेजे जा सकते हैं ताकि हम लोग उन आमाल के उलट जिनको हम किया करते थे दूसरे आमाल करें? बेशक उन लोगों ने अपने को घाटे में डाल दिया, और ये जो-जो बातें बनाते थे सब गुम हो गईं। (53)

Maktaba E Ashraf

हिदायत की किताब

अल्लाह तआला ने मुश्रिकों के तमाम उज़्र और बहाने तोड़ (नकार और रद्द कर) दिये थे। अपने रसूलों के द्वारा अपनी किताब भेजी जो तफ़सीली (विस्तृत) और वाज़ेह (स्पष्ट) थी। जैसा कि फ़रमाया है:

كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ.... الخ

इस क़ुरआन की आयतें मज़बूत और तफ़सीली हैं, इसकी जो तफ़सील है वह भी इल्म पर है। जैसा कि फ़रमायाः

اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ.

यानी इसे अपने इल्म के साथ उतारा है।

इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं- यह आयत उसी आयत पर जाती है जिसमें फ़रमान है:

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ..... الخ

कि यह किताब तेरी तरफ़ नाज़िल फ़रमाई गई है, पस इससे तेरे सीने में कोई हर्ज (तंगी) न होना चाहिए। यहाँ फ़रमायाः

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ... الخ

कि हमने उन लोगों के पास ऐसी किताब भेजी है.......।

लेकिन यह सोचने का मक़ाम है, इसलिए कि फ़ासला बहुत है, और यह क़ौल बेदलील है। बात यह है कि जब उनके ख़सारे (नुक़सान उठाने और घाटे) का ज़िक्र हुआ जो उन्हें आख़िरत में होगा तो बयान फ़रमाया कि दुनिया में ही हमने अपना पैग़ाम पहुँचा दिया था, रसूल भी किताब भी। जैसे इरशाद है कि जब तक हम रसूल न भेज दें अ़ज़ाब नहीं करते, इसलिए इसके बाद ही फ़रमाया, उन्हें तो अब जन्नत व दोज़ख़ के अपने सामने आने का इन्तिज़ार है। या यह मतलब है कि उसकी हक़ीक़त एक के बाद एक करके रोशन होती रहेगी, यहाँ तक कि आख़िरी हक़ीक़त यानी जन्नत व दोज़ख़ ही सामने आ जाएगी और हर एक अपने लायक़ मक़ाम में पहुँच जाएगा। क़ियामत वाले दिन ये वाक़िआत ज़ाहिर होंगे, अब जो सुन रहे हैं उस वक़्त देख लेंगे। इस वक़्त उसे भुला करके बैठ रहने वाले अ़मल से कोरे लोग मान लेंगे कि बेशक ख़ुदा के अम्बिया सच्चे थे। रब की किताबें सच्ची थीं। क्या अच्छा हो कि कोई हमारा शफ़ी (सिफ़ारिशी) खड़ा हो और हमें इस तबाही से निजात दिलाए या ऐसा हो कि हम फिर से दुनिया की तरफ़ लौटा दिए जाएँ तो जो काम किए थे उनके ख़िलाफ़ (विपरीत) अब करें। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ.... الخ

यानी जब ये लोग आग पर खड़े होंगे तो काश आप देखें कि ये कहते होंगे- काश हम फिर दुनिया में लौटाए जाते अपने रब की आयतों को न झुठलाते और मोमिन बन जाते। इससे पहले जो वे छुपा रहे थे अब ज़ाहिर हो गया। बात यह है कि अगर ये दोबारा भी दुनिया में भेजे जाएँ तो जिस चीज़ से रोके जाएँ वही फिर भी करेंगे, और झूठे साबित होंगे। उन्होंने आप ही अपना बुरा किया, ख़ुदा के सिवा औरों से उम्मीदें रखते रहे, जो आज सब झूठी साबित हुई और बेकार गईं। न कोई इनका सिफ़ारिशी है न हिमायती।

Maktab E Ashraf

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छह दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ। छुपा देता है रात से दिन को, ऐसे तौर पर कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है, और सूरज और चाँद और दूसरे सितारों को पैदा किया, ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के ताबे हैं। याद रखो अल्लाह ही के लिए ख़ास है ख़ालिक़ 'यानी पैदा करने वाला' होना और हाकिम होना, बड़ी ख़ूबियों से भरे हुए हैं अल्लाह तआ़ला जो तमाम जहान के पालने वाले हैं। (54)	اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○

छह दिन

बहुत सी आयतों में यह बयान हुआ है कि आसमान व ज़मीन और तमाम मख़्लूक़ ख़ुदा तआ़ला ने छह दिन में पैदा की है। यानी इतवार से जुमे के तक दिन सारी मख़्लूक़ पैदा हो चुकी थी। उसी दिन हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए। या तो यह दिन दुनिया के मामूली दिनों के बराबर ही थे जैसा कि आयत के ज़ाहिरी अलफ़ाज़ से समझा जाता है। या हर दिन एक हज़ार साल का था जैसा कि हज़रत मुजाहिद रह. का क़ौल है, और हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह. का फ़रमान है। और हज़रत ज़ह्हाक की रिवायत के मुताबिक़ इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि शनिवार के दिन कोई मख़्लूक़ पैदा नहीं हुई इसी लिए अ़रबी में इसका नाम "यौमुस्सबृत" है। 'सबत' के मायने काटने और किसी चीज़ को अलग करने के हैं। हाँ मुस्नद अहमद, नसाई, सही मुस्लिम में जो हदीस है कि अल्लाह ने मिट्टी को शनिवार के दिन पैदा किया और पहाड़ों को इतवार के दिन और दरख़्तों को पीर के दिन और बुराईयों को मंगल के दिन और नूर को बुध के दिन और जानवरों को जुमेरात के दिन और आदम अ़लैहिस्सलाम को जुमे के दिन अ़सर के बाद दिन की आख़िरी घड़ी में अ़सर से लेकर मग़रिब तक। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का हाथ पकड़कर यह गिनवाया, उससे मालूम होता है कि सात दिन तक पैदाईश का सिलसिला जारी रहा। हालाँकि क़ुरआन में मौजूद है कि छह दिन में पैदाईश (चीज़ों का बनाया जाना) ख़त्म हुई, इसी वजह से इमाम बुख़ारी रह. वग़ैरह हदीस के बड़े उलेमा और दूसरे इमामों ने इस हदीस पर कलाम किया है और फ़रमाया है कि यह इबारत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने कअ़बे अहबार (सहाबी) से ली है, फ़रमाने रसूल नहीं है। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि वह अपने अ़र्श पर क़ायम हुआ। इस पर लोगों ने बहुत कुछ अपनी राय व्यक्त की हैं जिन्हें तफ़सील से बयान करने की यह जगह नहीं। मुनासिब यही है कि इस मक़ाम में पहले उलेमा और नेक लोगों के रास्ते को इख़्तियार किया जाए। जैसे इमाम मालिक, इमाम औज़ाई, इमाम नववी, इमाम लैस बिन सअ़द, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, इमाम इस्हाक़ बिन राहवैह वग़ैरह वग़ैरह पहले और बाद के उलेमा व इमामों का मस्लक है। इन सब बुज़ुर्गाने दीन का यही मज़हब था कि जैसी यह आयत है इसी तरह

इसे रखा जाये, बग़ैर कैफ़ियत के, बग़ैर तशबीह के और बग़ैर मोहमल छोड़ने के। हाँ शुब्हात में पड़े लोगों के ज़ेहनों में जो चीज़ आ रही है उससे अल्लाह तआ़ला पाक और बहुत दूर है। (यानी अ़र्श पर उसके क़ायम होने की क्या कैफ़ियत है इसको लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता, न ही हर आदमी की समझ में यह आ सकता है। इसलिये यह कहा जायेगा कि जैसी उसकी शान है उसके मुताबिक़ वह अ़र्श पर क़ायम हुआ) अल्लाह के जैसा उसकी मख़्लूक़ में से कोई नहीं। अल्लाह फ़रमाता है:

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ. وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ.

उसके जैसा कोई नहीं, और वह सुनने देखने वाला है।

बल्कि सही बात उसी तरह है जो पहले उलेमा और इमामों ने कही है। उन्हीं में से हज़रत नईम बिन हम्माद ख़ुज़ाई रह. हैं। आप हज़रत इमाम बुख़ारी रह. के उस्ताद हैं। फ़रमाते हैं जो शख़्स अल्लाह को मख़्लूक़ से तशबीह दे वह काफ़िर है, और जो शख़्स अल्लाह के उस वस्फ़ (ख़ूबी, सिफ़त और कमाल) से इनकार करे जो उसने अपनी ज़ाते पाक के लिए बयान फ़रमाया है वह भी काफ़िर है। अल्लाह के रसूल सल्ल. ने जो औसाफ़ (सिफ़तें) अल्लाह पाक के बयान फ़रमाये हैं उनमें हरगिज़ शुब्हा नहीं, पस सही हिदायत के रास्ते पर वही है जो सहाबा और पहले उलेमा व बुज़ुर्गों के अक़वाल और उनके ज़रिये बयान की हुई रायों से जो सिफ़ात अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के साबित हैं उन्हें उसी तरह जाने जो ख़ुदा की शान व बुज़ुर्गी के लायक़ है। और हर ऐब, नुक़्स और कमी से अपने रब को पाक और बरी समझे।

आगे फ़रमाता है कि रात का अंधेरा दिन के उजाले से और दिन का उजाला रात के अंधेरे से दूर हो जाता है। हर एक दूसरे के पीछे लपका चला आता है। यह गया वह आया, वह गया यह आया। जैसा कि फ़रमायाः

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ..... الخ

उनके समझने के लिए हमारी एक निशानी रात है, कि उसमें से हम दिन को खींच निकालते हैं, जिससे ये अंधेरे में आ जाते हैं। सूरज है कि वह अपने ठिकाने की तरफ़ बराबर जा रहा है, यह है अन्दाज़ा ख़ुदा का बाँधा हुआ, जो ग़ालिब और हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। हमने चाँद की भी मन्ज़िलें तय कर दी हैं, यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी टहनी जैसा होकर रह जाता है, न सूरज चाँद से आगे निकल सके, न रात दिन से पहले आ सके। सब के सब अपने घेरे में तैरते फिरते हैं। रात दिन में कोई फ़ासला नहीं, एक का जाना ही दूसरे का आ जाना है। हर एक दूसरे के लगातार पीछे है। (यह सूरः यासीन की आयतों का तर्जुमा है, तफ़सील से वहाँ देखें)

"वश्शमसु वल् क़-मरु वन्नुजूमु" को बाज़ों ने पेश से भी पढ़ा है। मायने मतलब दोनों सूरतों में क़रीब-क़रीब बराबर हैं। ये सब ख़ुदा के फ़रमान के ताबे, उसके मातहत, उसके इरादे में हैं। मिल्क और तसर्रुफ़ (यानी हर तरह का अ़मल-दख़ल और उलट-फेर करने का इख़्तियार) उसी का है, वह बरकतों वाला और तमाम जहान का पालने वाला है। अल्लाह फ़रमाता है:

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا...... الخ

पाक है वह ज़ात जिसने आसमान में बुरूज बनाये......।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं- जिस किसी ने किसी नेकी पर ख़ुदा की तारीफ़

Maktab E Ashraf

बयान न की बल्कि अपने नफ़्स को सराहा उसने कुफ़्र किया और उसके आमाल ग़ारत (बरबाद) हुए। और वह जिसने यह अ़क़ीदा रखा कि अल्लाह ने कुछ इख़्तियारात अपने बन्दों को भी दिये हैं उसने उसके साथ कुफ़्र किया जो अल्लाह ने अपने नबियों पर नाज़िल फ़रमाया है। क्योंकि उसका फ़रमान हैः

اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ..... الخ (ابن جرير)

क्या 'ख़ल्क़' और 'अम्र' (यानी हर चीज़ का बनाना और पैदा करना) उसी के लिये नहीं है.......।

एक मरफ़ूअ़ हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल. की यह दुआ़ भी नक़ल की गयी है कि आप फ़रमाते थेः

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْمُلْكُ كُلُّهٗ وَلَكَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ.

ख़ुदाया सारा मुल्क तेरा ही है, तमाम तारीफ़ें तेरे लिए ही हैं, सब काम तेरे लिए ही हैं, सब काम तेरी ही तरफ़ लौटते हैं, मैं तुझसे तमाम भलाईयाँ माँगता हूँ और सारी बुराईयों से तेरी पनाह चाहता हूँ।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝	तुम लोग अपने परवर्दिगार से दुआ़ किया करो आ़जिज़ी ज़ाहिर करके भी और चुपके-चुपके भी। (अलबत्ता यह बात) वाक़ई (है कि) अल्लाह तआ़ला उन लोगों को ना-पसन्द करते हैं जो हद से निकल जाएँ। (55) और दुनिया में बाद इसके कि इसकी दुरुस्ती कर दी गई है, फ़साद मत फैलाओ, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत किया करो डरते और उम्मीदवार रहते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत नज़दीक है नेक काम करने वालों से। (56)

ख़ुशू व ख़ुज़ू

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को दुआ़ की हिदायत करता है, जिसमें उनकी दुनिया व आख़िरत की भलाई है। तो फ़रमाता है कि अपने परवर्दिगार को आ़जिज़ी, मिस्कीनी और आहिस्ता से पुकारो। जैसा कि फ़रमायाः

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ...... الخ

अपने रब को अपने नफ़्स (यानी दिल) में याद करो।

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि लोगों ने दुआ़ में अपनी आवाज़ें बहुत बुलन्द कर दीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- लोगो! अपनी जानों पर रहम करो। तुम किसी बहरे या ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, जिसे तुम पुकार रहे हो वह बहुत सुनने वाला और बहुत नज़दीक है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि पोशीदगी (गोपनीयता) मुराद है। इमाम इब्ने जरीर रह. फ़रमाते हैं 'तज़रुअ़न्' के मायने ज़िल्लत, मिस्कीनी और इताअ़त-गुज़ारी के हैं

Maktab E Ashraf

'ख़ुफ़यतन्' के मायने दिलों के ख़ुशू व ख़ुज़ू (झुकने व आजिज़ी) से यक़ीन की सेहत से उसके एक और रब होने का, उसके और अपने दरमियान यक़ीन रखते हुए पुकारो, न कि रियाकारी और दिखावे के साथ बहुत बुलन्द आवाज़ से। हज़रत हसन रह. से रिवायत है कि लोग हाफ़िज़े क़ुरआन होते थे और किसी को मालूम भी नहीं होता था, लोग मसाईल के बड़े आलिम हो जाते थे और कोई जानता भी न था, लोग लम्बी-लम्बी नमाज़ें अपने घरों में पढ़ते थे और मेहमानों को भी पता न चलता था, ये वे लोग थे कि जहाँ तक उनके बस में होता था अपनी किसी नेकी को लोगों पर ज़ाहिर नहीं होने देते थे। पूरी कोशिश से दुआएँ करते थे, लेकिन इस तरह जैसे धीमी आवाज़ से किसी से बात कर रहे हों। यह नहीं कि चीख़ें चिल्लाएँ। यही अल्लाह का फ़रमान है कि अपने रब को आजिज़ी और आहिस्तगी से पुकारो। देखो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे का ज़िक्र किया जिससे वह ख़ुश था, कि उसने अपने रब को ख़ुफ़िया तौर पर पुकारा।

इमाम इब्ने जुरैज रह. फ़रमाते हैं- दुआ में आवाज़ और ज़ोर की पुकार को, चीख़ने को मक्रूह (बुरा और नापसन्दीदा) समझा जाता था, और रोने, सिसकने और आहिस्तगी का हुक्म दिया जाता था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- दुआ वग़ैरह में हद से गुज़र जाने वालों को अल्लाह दोस्त नहीं रखता। अबू मुजलिज़ कहते हैं- जैसे अपने लिए नबी बन जाने की दुआ करना वग़ैरह (यह भी हद से गुज़र जाना है)।

हज़रत सअ़द ने सुना कि उनका लड़का अपनी दुआ में कह रहा है कि ऐ अल्लाह तआ़ला! मैं तुझसे जन्नत, उसकी नेमतें और उसके रेशम व हरीर वग़ैरह वग़ैरह तलब करता हूँ और जहन्नम से, उसकी ज़न्जीरों और उसके तौक़ वग़ैरह से तेरी पनाह चाहता हूँ तो आपने फ़रमाया तूने अल्लाह से बहुत सी भलाईयाँ तलब कीं और बहुत सी बुराईयों से पनाह चाही, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, आप फ़रमाते थे कि जल्द ही कुछ लोग होंगे जो दुआ में हद से गुज़र जाया करेंगे। एक सनद से रिवायत है कि वे दुआ माँगने में और वुज़ू करने में हद से निकल जाएँगे। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया तुझे अपनी दुआ में यही कहना काफ़ी है कि ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत और जन्नत से क़रीब करने वाले क़ौल व फ़ेल की तौफ़ीक़ तलब करता हूँ। और जहन्नम और उसके नज़दीक करने वाले क़ौल व फ़ेल से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबू दाऊद)

इब्ने माजा वग़ैरह में है कि उनके लड़के अपनी दुआ में यह कह रहे थे कि ख़ुदाया जन्नत में दाख़िल होने के बाद जन्नत की दाईं तरफ़ का सफ़ेद रंग का आ़लीशान महल मैं तुझसे तलब करता हूँ।

फिर ज़मीन में अमन व अमान के बाद फ़साद करने को मना फ़रमाया है। क्योंकि उस वक़्त का फ़साद ख़ुसूसियत से ज़्यादा बुराईयाँ पैदा करता है। पस अल्लाह इसे हराम क़रार देता है और अपनी इबादत करने का और दुआ करने का मिस्कीनी और आजिज़ी करने का हुक्म देता है, कि ख़ुदा को उसके अ़ज़ाब से डरकर और उसकी नेमतों के उम्मीदवार बनकर पुकारो, ख़ुदा की रहमत नेक काम करने वालों के सर पर मंडला रही है, जो उसके अहकाम बजा लाते हैं, उसके मना किये हुए कामों से बाज़ रहते हैं। जैसा कि फ़रमायाः

وَرَحْمَتِىْ وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ....... الخ

यूँ तो मेरी रहमत तमाम चीज़ों को घेरे हुए है, लेकिन मैं इसे मख़्सूस कर दूँगा परहेज़गार लोगों के लिए। चूँकि रहमत सवाब से जुड़ी हुई है इसलिए 'क़रीबुन' कहा। 'क़रीबतुन' न कहा, इसलिए वह अल्लाह

की तरफ़ मन्सूब है। उन्होंने ख़ुदा के वादों का सहारा लिया। ख़ुदा ने अपना फ़ैसला कर दिया कि उसकी रहमत बिल्कुल क़रीब है।

Maktab E Ashraf

وَهُوَ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ بُشْرًاۢ بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰی لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّیِّبُ یَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا یَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّشْكُرُوْنَ ۝ ع

और वह (अल्लाह) ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे ख़ुश कर देती हैं, यहाँ तक कि जब वे हवाएँ भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से हर क़िस्म के फल निकालते हैं, यूँ ही हम मुर्दों को निकाल खड़ा कर देंगे, ताकि तुम समझो। (57) और जो सुथरी सरज़मीन होती है उसकी पैदावार तो ख़ुदा के हुक्म से ख़ूब निकलती है, और जो ख़राब है उसकी पैदावार (अगर निकली भी) तो बहुत कम निकलती है। इसी तरह हम (हमेशा) दलीलों को तरह-तरह से बयान करते रहते हैं, उन लोगों के लिए जो क़द्र करते हैं। (58)

रहमत की हवाएँ

ऊपर बयान हुआ कि ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ (बनाने और पैदा करने वाला) अल्लाह है। सब पर क़ब्ज़ा रखने वाला, हाकिम, तदबीर करने वाला, अपनी तरफ़ झुके हुए और फ़रमाँबरदार रखने वाला अल्लाह ही है। फिर दुआएँ करने का हुक्म दिया, क्योंकि वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अब यहाँ बयान हो रहा है कि रज़्ज़ाक़ (रोज़ी देने वाला) भी वही है, और क़ियामत के दिन मुर्दों को ज़िन्दा कर देने वाला भी वही है। पस फ़रमाया कि बारिश से पहले ख़ुशगवार हवाएँ वही चलाता है। रहमत से मुराद यहाँ बारिश है जैसे अल्लाह का फ़रमान है:

وَهُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَیَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ وَهُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ.

वह वही है जो लोगों की नाउम्मीदी के बाद बारिश उतारता है और अपनी रहमत की कसरत (बोहतात) कर देता है। वह वाली है और क़ाबिले तारीफ़ है।

एक और आयत में है- अल्लाह की रहमत के आसार देखो कि किस तरह मुर्दा ज़मीन को वह जिला देता है, वही मुर्दा इनसानों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। बादल जो पानी की वजह से बोझल हो रहे हैं उन्हें ये हवाएँ उठा ले चलती हैं। ये ज़मीन से बहुत क़रीब होते हैं और काले होते हैं। चुनाँचे हज़रत ज़ैद बिन अ़मर बिन नुफ़ैल रह. के शे'रों में है- मैं उसका फ़रमाँबरदार हूँ जिसके इताअ़त गुज़ार मीठे और साफ़ पानी के भरे हुए बादल हैं, और जिसके फ़रमान के अधीन भारी बोझल पहाड़ों वाली ज़मीन है। फिर हम उन बादलों को मुर्दा ज़मीन की तरफ़ ले चलते हैं जिसमें कोई सब्ज़ा नहीं, सूखी बंजर

Maktab E Ashraf

ज़मीन पड़ी हुई है। जैसा कि एक आयत में बयान हुआ है:

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ.......

फिर उससे पानी बरसाकर उसी ग़ैर-आबाद ज़मीन को लहलहाती बना देते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे, हालाँकि वे बोसीदा हड्डियाँ और फिर टुकड़े-टुकड़े होकर मिट्टी में मिल गये होंगे। क़ियामत के दिन उन पर अल्लाह जल्ल शानुहू बारिश बरसायेगा चालीस दिन तक बराबर बरसती रहेगी, जिससे जिस्म क़ब्रों में उगने लगेंगे, जैसे दाना ज़मीन पर उगता है। यह बयान क़ुरआने करीम में कई जगह है। क़ियामत की मिसाल बारिश की पैदावार से दी जाती है। फिर फ़रमाया यह तुम्हारी नसीहत के लिए है। अच्छी ज़मीन में से पैदावार भी उम्दा निकलती है और जल्दी। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

وَاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا.....

और हमने उम्दा तरीक़े पर उसे पाला और बढ़ाया।

और जो ज़मीन ख़राब है जैसे संगलाख़ (पथरीली) ज़मीन, नमकीली ज़मीन वग़ैरह, उसकी पैदावार भी वैसी ही होती है। यही मिसाल मोमिन व काफ़िर की है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं जिस इल्म व हिदायत के साथ ख़ुदा ने मुझे भेजा है उसकी मिसाल ऐसी है जैसे ज़मीन पर बहुत ज़्यादा बारिश हुई, ज़मीन के एक साफ़ उम्दा टुकड़े ने तो पानी को क़बूल किया और घास और चारा बहुत सा उसमें से निकला, उनमें बाज़ टुकड़े ऐसे भी थे जिनमें पानी जमा हो गया और वहाँ रुक गया। पस उससे भी लोगों ने फ़ायदा उठाया, पिया और पिलाया, खेतियाँ कीं, बाग़ात ताज़ा किये। ज़मीन के जो चटियल, पथरीले टुकड़े थे उन पर भी वह पानी बरसा लेकिन न तो वहाँ रुका न वहाँ कुछ उगा। यही मिसाल उसकी है जिसने दीने ख़ुदा की समझ पैदा की और मेरे दुनिया में नबी बनकर आने से उसने फ़ायदा उठाया, या ख़ुद सीखा और दूसरों को सिखाया। और ऐसे भी हैं कि उन्होंने सर ही न उठाया और ख़ुदा की वह हिदायत क़बूल ही न की जो मेरे ज़रिये भेजी गई। (मुस्लिम व नसाई)

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ○ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ

हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, सो उन्होंने फ़रमायाः ऐ मेरी क़ौम! तुम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद होने के लायक़ नहीं, मुझको तुम्हारे लिए एक बड़े (सख़्त) दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। (59) उनकी क़ौम के आबरूदार "यानी समाज के इ़ज़्ज़तदार" लोगों ने कहा कि हम तुमको खुली ग़लती में (मुब्तला) देखते हैं। (60) उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझमें तो ज़रा भी ग़लती नहीं लेकिन मैं परवर्दिगारे- आ़लम का रसूल हूँ। (61) तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही करता हूँ और मैं ख़ुदा की

Maktab E Ashraf

तरफ़ से उन चीज़ों की ख़बर रखता हूँ जिनकी तुमको ख़बर नहीं। (62)	وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَالَا تَعْلَمُوْنَ٥

लगातार तब्लीग़

चूँकि इस सूरः के शुरू में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान हुआ था, फिर उससे संबन्धित बातें बयान हुई और उसके साथ और बयानात फ़रमाकर अब फिर और दूसरे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के वाक़िआ़त बयान होने शुरू हुए और लगातार उनके बयानात हुए। सबसे पहले हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र हुआ, क्योंकि आदम अ़लैहिस्सलाम के बाद ज़मीन वालों की तरफ़ सबसे पहले पैग़म्बर आप ही आये थे। आप नूह बिन लामिक बिन मुतवश्लह बिन ख़नूख़ यानी इदरीस अ़लैहिस्सलाम, यही पहले वह शख़्स हैं जिन्होंने क़लम से लिखा। इब्ने बरद बिन महलील बिन क़िन्नीन बिन यानिश बिन शीस बिन आदम अ़लैहिस्सलाम। नसब के माहिर जैसे इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ वग़ैरह ने आपका नसब-नामा इसी तरह बयान फ़रमाया है। इमाम साहिब फ़रमाते हैं- हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जैसा कोई और नबी उम्मत की तरफ़ से सताया नहीं गया, हाँ अम्बिया क़त्ल तो कर दिये गये। इन्हें नूह इसी लिए कहा गया कि यह अपने नफ़्स का रोना बहुत रोते थे। हज़रत आदम और हज़रत नूह अ़लैहिमस्सलाम के बीच दस ज़माने थे जो इस्लाम पर गुज़रे थे। बुत-परस्ती का रिवाज इस तरह शुरू हुआ कि जब औलिया-अल्लाह (अल्लाह के नेक बन्दे) इन्तिक़ाल कर गये तो उनकी क़ौम ने उनकी क़ब्रों पर मस्जिदें बना लीं और उनमें उन बुज़ुर्गों की तस्वीरें बना लीं ताकि उनका हाल और उनकी इबादत का नक़्शा सामने रहे, और अपने आपको उन जैसा बनाने की कोशिश करें। लेकिन कुछ ज़माने के बाद उन तस्वीरों के मुजस्समे (मूर्ती) बना लिए। कुछ और ज़माने के बाद उन्हीं बुतों (मूर्तियों) की पूजा करने लगे और उनके नाम उन्हीं औलिया-अल्लाह के नामों पर रख लिए। 'वुद्द' 'सुवाअ़' 'यग़ूस' 'यऊक़' 'नस्र' वग़ैरह।

जब बुत-परस्ती का रिवाज हो गया तो अल्लाह ने अपने रसूल हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को भेजा, आपने एक ख़ुदा की इबादत की तलक़ीन की और कहा कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुझे तो डर है कि कहीं क़ियामत के दिन तुम्हें अ़ज़ाब न हो। क़ौमे नूह के बड़ों ने, उनके सरदारों और उनके चौधरियों ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को जवाब दिया कि तुम बहक गए हो, कि हमें अपने बाप-दादाओं के दीन से हटा रहे हो। हर बुरा शख़्स नेक लोगों को गुमराह समझा करता है। क़ुरआन में है कि जब ये बदकार उन नेक लोगों को देखते हैं, कहते हैं कि ये तो बहके हुए हैं। कहा करते थे कि अगर यह दीन अच्छा होता तो इनसे पहले हम न मान लेते। यह तो बात ही ग़लत और झूठ है।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि मैं बहका हुआ नहीं हूँ बल्कि मैं ख़ुदा का रसूल हूँ। तुम्हें पैग़ामे ख़ुदा पहुँचाता रहा हूँ। तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ और ख़ुदा की वे बातें जानता हूँ जिन्हें तुम नहीं जानते। हर रसूल मुबल्लिग़ (अल्लाह की बात पहुँचाने वाला), फ़सीह व बलीग़ (स्पष्ट और अच्छे अन्दाज़ में बात करने वाला), नसीहत करने वाला और दूसरों की भलाई चाहने वाला अल्लाह का इल्म रखने वाला होता है। इन सिफ़ात में और कोई उसकी बराबरी नहीं कर सकता। मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अ़रफ़े के दिन सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमाया जबकि वे बहुत बड़ी तादाद में बहुत ज़्यादा थे। ऐ लोगो! तुमसे मेरे बारे में ख़ुदा के यहाँ सवाल किया जाएगा तो बतलाओ क्या जवाब

दोगे? सबने कहा हम कहेंगे कि आपने तब्लीग़ कर दी थी, और रिसालत (पैग़ाम पहुँचाने) का हक़ अदा कर दिया था, और पूरी ख़ैरख़्वाही की थी। पस आपने अपनी उंगली आसमान की तरफ़ उठाई और फिर नीचे ज़मीन की तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया- ख़ुदाया! तू गवाह रह, ऐ अल्लाह! तू गवाह रह, ख़ुदाया तू गवाह रह।

क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक ऐसे शख़्स के ज़रिये जो तुम्हारी ही जिन्स का है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख़्स तुमको डराये और ताकि तुम डर जाओ, और ताकि तुमपर रहम किया जाये? (63) सो वे लोग उनको झुठलाते ही रहे तो हमने उनको (यानी नूह को) और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हमने डुबो दिया, बेशक वे लोग अन्धे हो रहे थे। (64)	اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ○

ع ८ १५

नबी के भेजे जाने पर हैरत क्यों?

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम से फ़रमा रहे हैं कि तुम इस बात को कोई अनोखी और ताज्जुब वाली बात न समझो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने लुत्फ़ व करम से किसी इनसान पर अपनी 'वही' (अपना पैग़ाम) नाज़िल फ़रमाई और उसे पैग़म्बरी से सम्मानित कर दे और वह तुम्हें अल्लाह के अहकाम से आगाह कर दे। फिर तुम शिर्क व कुफ़्र से अलग होकर अ़ज़ाबे ख़ुदा से निजात पा लो और तुम पर तरह-तरह की रहमतें नाज़िल हों। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की इन दलीलों ने, उनके असरदार वअ़ज़ों (दीनी बयानात) ने उन संगदिलों पर कोई असर न किया, ये उन्हें झुठलाते रहे, मुख़ालफ़त से बाज़ न आये, ईमान क़बूल न किया, सिर्फ़ चन्द लोग ईमान लाये और बस। पस हमने उन नेक लोगों को अपने नबी के साथ कश्ती में बैठाकर तूफ़ान से निजात दी और बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया। जैसा कि सूरः नूह में फ़रमाया है कि वे अपने गुनाहों के सबब ग़र्क़ कर दिये गये। फिर दोज़ख़ में डाल दिये गये और कोई न हुआ जो उनकी किसी क़िस्म की मदद करता। ये लोग हक़ से आँखें बन्द किए हुए थे, अंधे हो गए थे, राहे हक़ उन्हें आख़िर तक दिखाई न दी। पस अल्लाह ने अपने नबी को, अपने दोस्तों को निजात दी, अपने और उनके दुश्मनों को पानी में डुबोकर तबाह व बरबाद कर दिया। जैसे उसका वादा है कि हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की ज़रूर मदद फ़रमाया करते हैं।

दुनिया में ही नहीं बल्कि आख़िरत में भी वह उनकी इमदाद करता है। उन परहेज़गारों के लिये आ़फ़ियत है, अन्जाम कार ग़ालिब, कामयाब और विजयी यही रहते हैं। जैसा कि नूह अ़लैहिस्सलाम आख़िरकार ग़ालिब रहे और काफ़िर लोग नाकाम व नामुराद हुए। ये लोग सख़्त पकड़ में आ गये और ग़ारत कर दिये गये, सिर्फ़ पैग़म्बरे ख़ुदा के अस्सी आदमियों ने निजात पाई। उन्हीं में से एक साहिब जुरहुम नाम

के थे, जिनकी ज़बान (भाषा) अ़रबी थी। इब्ने अबी हातिम में यह रिवायत हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मुत्तसिल तौर पर नक़ल की गयी है।

وَاِلٰی عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ○ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ○ قَالَ یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِیْنٌ ○ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰی رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِیُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِی الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○	और हमने आ़द क़ौम की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, सो क्या तुम नहीं डरते? (65) उनकी क़ौम में जो आबरूदार काफ़िर थे उन्होंने कहा कि हम तुमको कम-अ़क्ली में देखते हैं, और हम बेशक तुमको झूठे लोगों में से समझते हैं। (66) उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझमें ज़रा भी कम-अ़क्ली नहीं, लेकिन मैं परवर्दिगारे-आ़लम का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ। (67) तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूँ। (68) और क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक शख़्स की मारिफ़त जो तुम्हारी जिन्स का (आदमी) है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख़्स तुमको डराए? और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआ़ला ने तुमको नूह की क़ौम के बाद आबाद किया और डील-डोल में तुमको फैलाव (भी) ज़्यादा दिया। सो ख़ुदा तआ़ला की (इन) नेमतों को याद करो ताकि तुमको कामयाबी हो। (69)

क़ौमे आ़द और उनके पैग़म्बर

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जैसे क़ौमे नूह की तरफ़ हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को हमने भेजा था, क़ौमे आ़द की तरफ़ हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम को हमने नबी बनाकर भेजा। ये लोग आ़द बिन इरम बिन अ़वस बिन साम बिन नूह की औलाद थे। यह आ़दे ऊला (यानी पहले वाली आ़द क़ौम) हैं। ये जंगल में आ़लीशान मकानों में रहते थे। अल्लाह का फ़रमान है:

اَلَمْ تَرَ كَیْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ.

यानी क्या तूने नहीं देखा कि आ़दे इरम के साथ तेरे रब ने क्या किया? जो लम्बे क़द वाले थे, कि उन जैसे लोग और शहरों में पैदा ही नहीं किये गये। ये लोग बड़े क़वी, ताक़तवर और लम्बे-चौड़े क़द के थे।

जैसा कि फ़रमाया- आद वालों ने ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर (घमंड) किया और नारा लगाया कि हमसे ज़्यादा क़वी कौन है? क्या उन्हें इतनी भी तमीज़ नहीं कि उनका पैदा करने वाला यक़ीनन उनसे ज़्यादा ताक़त व क़ुव्वत वाला है। हमारी आयतों (निशानियों) से इनकार कर बैठे, उनके शहर यमन में अहक़ाफ़ में थे। ये रेतीले पहाड़ थे। हज़रत अ़ली रज़ि. ने हज़रे-मौत के एक शख़्स से कहा तूने सुर्ख़ टीला देखा होगा जिसमें सुर्ख़ रंग की राख जैसी मिट्टी है। उसके आस-पास पीलू और बेरी के दरख़्त अधिक संख्या में हैं, वे टीले फ़ुलाँ जगह हज़रे-मौत में हैं। उसने कहा ऐ अमीरुल-मोमिनीन! आप तो इस तरह उसके निशान बतला रहे हैं गोया आपने अपनी आँख से देखा है? आपने फ़रमाया देखा तो नहीं लेकिन हाँ मुझ तक हदीस पहुँची है कि वहीं हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र है। इससे साबित होता है कि उन लोगों की बस्तियाँ यमन में थीं, इसलिए उनके पैग़म्बर वही दफ़न हैं। आप उन सब में शरीफ़ क़बीले के थे, इसलिए कि अम्बिया हमेशा हसब नसब (ख़ानदान और नस्ल) के एतिबार आ़ला ख़ानदान में ही होते रहे हैं, लेकिन आपकी क़ौम जिस तरह जिस्मानी तौर से सख़्त और ज़ोरदार थी इसी तरह दिलों के एतिबार से भी जब अपने नबी की ज़बानी ख़ुदा की इबादत और तक़वे की नसीहत सुनी तो अक्सर लोग उनकी अधिक जमाअ़त, उनके सरदार और बड़े बोल उठे कि तू तो पागल हो गया है, कि हमें अपने ख़ुदाओं की इन ख़ूबसूरत तस्वीरों की इबादत से हटाकर एक ख़ुदा की इबादत की तरफ़ बुला रहा है। यही ताज्जुब क़ुरैश को हुआ था। उन्होंने कहा था कि इसने सारे ख़ुदाओं को छुड़ाकर एक की इबादत की दावत क्यों दी?

हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें जवाब दिया कि मुझमें तो अल्लाह के फ़ज़्ल से बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं, मैं जो कह रहा हूँ वह ख़ुदा की कही हुई कह रहा हूँ। इसलिए कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। रब की तरफ़ से हक़ लाया हूँ और वह रब हर चीज़ का मालिक, सबका ख़ालिक़ है। मैं तो तुम्हें कलामे ख़ुदा पहुँचा रहा हूँ। तुम्हारी भलाई और बेहतरी चाहता हूँ और अमानतदारी से रब का पैग़ाम अदा कर रहा हूँ। यही वे सिफ़तें हैं जो तमाम रसूलों में यक्साँ (बराबर तौर पर) होती हैं। यानी पैग़ामे ख़ुदा पहुँचाना, लोगों की भलाई चाहना और अमानतदारी का नमूना बनना। तुम मेरी रिसालत पर ताज्जुब न करो, बल्कि अल्लाह का शुक्र बजा लाओ कि उसने तुममें से भी एक को अपना पैग़म्बर बनाया कि वह तुम्हें अ़ज़ाबे ख़ुदा से डराये। तुम्हें रब के इस एहसान को भी नहीं भुलाना चाहिए कि उसने तुम्हें उन लोगों में से बनाया जो हलाक नहीं हुए। तुम्हें बाक़ी रखा, इतना ही नहीं बल्कि तुम्हें मज़बूत क़द-काठी वाला और ताक़तवर बना दिया। यही नेमत हज़रत तालूत पर थी कि उन्हें जिस्मानी और इल्मी वुस्अ़त दी गई थी, तुम अल्लाह की नेमतों को याद रखो ताकि निजात हासिल कर सको।

वे लोग कहने लगे कि क्या आप हमारे पास इस वास्ते आए हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत किया करें और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते थे हम उनको छोड़ दें? और हमको जिस अ़ज़ाब की धमकी देते हो उस को हमारे पास मँगवा दो अगर तुम सच्चे हो। (70) उन्होंने फ़रमाया कि बस अब तुम पर ख़ुदा की तरफ़ से अ़ज़ाब और ग़ज़ब आया ही चाहता है,	قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ

Maktab e Ashraf

क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने (आप ही) ठहरा लिया है। उसकी (यानी उनके माबूद होने की) ख़ुदा तआ़ला ने कोई (नक़ली या अ़क़्ली) दलील नहीं भेजी, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (71) ग़र्ज़ कि हमने उनको और उनके साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया, और उन लोगों की जड़ (तक) काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, और वे ईमान लाने वाले न थे। (72)	اَتُجَادِلُوْنَنِیْ فِیْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّیْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُکُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّیْ مَعَکُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ○ فَاَنْجَیْنٰهُ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِیْنَ کَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَمَا کَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ○ ع ٨ ١٢

बुत-परस्ती के साथ बाप-दादाओं की भी पूजा

क़ौमे आ़द की नाफ़रमानी और तकब्बुर, ज़िद और बैर का बयान हो रहा है कि उन्होंने हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम से कहा कि आपके तशरीफ़ लाने की ग़र्ज़ क्या यही है कि हम एक अल्लाह ही के परस्तार (पूजने वाले) बन जाएँ और अपने बाप-दादों के पुराने माबूदों से ख़ुद को फेर लें? सुनो अगर यही मक़सद है तो इसका पूरा होना मुहाल है। हम तैयार हैं, अगर तुमसे हो सके तो अपने ख़ुदा से हमारे लिए अ़ज़ाब तलब करो। यही मक्का के काफ़िरों ने कहा था। कहने लगे कि ख़ुदाया मुहम्मद का क्या हक़ है? और वह वाक़ई क्या तेरा कलाम है? और हम नहीं मानते तो तू हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और सख़्त तकलीफ़देह अ़ज़ाब हमें कर। इन आ़द के बुतों के नाम ये हैं- समद, समूधिया।

उनकी इस गुस्ताख़ी के मुक़ाबले में ख़ुदा के पैग़म्बर ने फ़रमाया कि तुम्हारी इन बातों से बेशक तुम पर ख़ुदा का अ़ज़ाब और उसका ग़ज़ब साबित हो गया। 'रिजसुन्' से मुराद 'रिज्ज़' यानी अ़ज़ाब है। नाराज़ी और ग़ुस्से के मायने यही हैं। फिर फ़रमाया कि तुम उन बुतों के बारे में मुझसे झगड़ रहे हो जिनके नाम भी तुमने ख़ुद रखे हैं, या तुम्हारे बड़ों ने। और ख़्वाह-मख़्वाह बेवजह उन्हें माबूद समझ बैठे हो। ये पत्थर के टुकड़े नफ़े और नुक़सान से बिल्कुल ख़ाली हैं। न ख़ुदा ने इनकी इबादत की कोई दलील उतारी है। अच्छा जब यूँही तुमने मुक़ाबले की ठान ली है तो इन्तिज़ार करो मैं भी मुन्तज़िर हूँ। अभी मालूम हो जाएगा कि अल्लाह का मक़बूल कौन है और उसकी बारगाह का मरदूद कौन है। कौन अ़ज़ाब का हक़दार है और कौन सवाब के क़ाबिल है।

आख़िरकार हमने अपने नबी और उनके ईमान वाले साथियों को निजात दी और काफ़िरों की जड़ें काट दीं। क़ुरआने करीम के कई मक़ामात पर अल्लाह तआ़ला ने उनकी तबाही की सूरत बयान फ़रमाई है कि उन पर तुन्द और तेज़ हवाएँ भेजी गयीं जिसने उन्हें और उनकी तमाम चीज़ों को ग़ारत और बरबाद कर दिया। ये आ़द सख़्त आँधियों से हलाक कर दिये गये, जो उन पर बराबर सात रात और आठ दिन चलती रहीं। सारे के सारे इस तरह हो गये जैसे खजूर के दरख़्तों के तने अलग हों और शाख़ें अलग हों। देख लो क्या उनमें से एक भी अब नज़र आ रही है? उनकी सरकशी की सज़ा में तेज़ हवा उन पर मुसल्लत कर दी

गयी जो उनमें से एक-एक को उठाकर आसमान की बुलन्दी की तरफ़ ले जाती और वहाँ से गिराती, जिससे सर अलग हो जाता, धड़ अलग गिर जाता।

ये लोग यमन के इलाक़े ओमान और हज़्रे-मौत में रहते थे। इधर-उधर निकलते और लोगों को मार पीटकर जबरन और धौंस से उनके मुल्क व माल पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा कर लेते। सारे के सारे बुत-परस्त थे। हज़रत हूद जो उनमें के शरीफ़ ख़ानदानी शख़्स थे, उनके पास अल्लाह का पैग़ाम लेकर आये, ख़ुदा की तौहीद का हुक्म दिया, शिर्क से रोका, लोगों पर ज़ुल्म करने की बुराई समझाई, लेकिन उन्होंने इस नसीहत को क़ुबूल न किया, मुक़ाबले पर तन गये और अपनी ताक़त से हक़ को दबाने लगे। बाज़ लोग अगरचे ईमान लाए थे लेकिन वे भी बेचारे जान के ख़ौफ़ के मारे छुपे-छुपाए थे। बाक़ी लोग बदस्तूर अपनी बेईमानी और नाइन्साफ़ी पर जमे रहे। ख़्वाह-मख़्वाह अपनी बड़ाई और बरतरी ज़ाहिर करने लगे, बेकार इमारतें बनाते और फूले न समाते। इन सब कामों को पैग़म्बरे ख़ुदा नापसन्द फ़रमाते, उन्हें रोकते, परहेज़गारी और अल्लाह की इताअ़त की हिदायत करते, लेकिन ये कभी तो उन्हें बेदलील बताते, कभी उन्हें मजनूँ (पागल) कहते। आप इन चीज़ों से अपने आपको बरी ज़ाहिर करते और उनसे साफ़ फ़रमाते कि मुझे तुम्हारी ताक़त का बिल्कुल भी ख़ौफ़ नहीं। जाओ जो तुमसे हो सके कर लो, मेरा भरोसा अल्लाह पर है, उसके सिवा न कोई भरोसे के लायक़ है न इबादत के क़ाबिल। सारी मख़्लूक़ उसके सामने बेबस, पस्त और लाचार है। सच्ची राह ख़ुदा की राह है।

आख़िर जब ये अपनी बुराईयों से बाज़ न आए तो उन पर बारिश न बरसाई गई, तीन साल तक क़हत-साली (सूखे की हालत) रही, परेशान हो गये, तंग आ गये। आख़िर यह तदबीर सोची कि चन्द आदमियों को बैतुल्लाह शरीफ़ भेजें, वे वहाँ जाकर ख़ुदा से दुआ़एँ करें, यही उनका दस्तूर था कि जब किसी मुसीबत में फंस जाते तो वहाँ वफ़्द (एक जमाअ़त) भेजते। उस वक़्त उनका एक क़बीला हरम शरीफ़ के अ़मालीक़ में भी रहता था। ये लोग अ़मालीक़ बिन आदम बिन साम बिन नूह की नस्ल में से थे, उनका सरदार उस ज़माने में मुआ़विया बिन बक्र था। उसकी माँ क़ौमे आ़द से थी, जिसका नाम जाहिदा बिन्ते ख़बीरी था। क़ौमे आ़द ने अपने यहाँ से सत्तर शख़्सों को चुनकर बतौर वफ़्द (जमाअ़त) के मक्का शरीफ़ को रवाना किया। यहाँ आकर ये मुआ़विया के मेहमान बने, शानदार दावतों के उड़ाने, शराब पीने और मुआ़विया की दो बाँदियों का गाना सुनने में इस बेख़ुदी से मशग़ूल हो गए कि पूरा एक महीना गुज़र गया, इन्हें अपने काम की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह न हुई। मुआ़विया उनकी यह रविश देखकर और अपनी क़ौम की बुरी हालत सामने रखकर बहुत कुढ़ता था, लेकिन यह मेहमान-नवाज़ी के ख़िलाफ़ था कि ख़ुद उनसे कहता कि जाओ। इसलिए उसने कुछ अश्आ़र लिखे और उन्हीं दोनों कनीज़ों (बाँदियों) को याद कराये कि वे यही गाकर उन्हें सुनाएँ। उन शे'रों का मज़मून यह था कि ऐ वे लोगो! जो क़ौम की तरफ़ से ख़ुदा से दुआ़एँ करने को भेजे गए हो कि वह आ़द पर बारिश बरसाये, जो आज क़हत-साली (अकाल और सूखे) की वजह से तबाह हो गए हैं, भूखे प्यासे मर रहे हैं, बूढ़े बच्चे, मर्द औ़रतें तबाह हाल फिर रहे हैं, क्योंकि किसी आ़द में इतनी क़ुव्वत कहाँ थी कि वह तीर चला सके। लेकिन अफ़सोस कि तुम यहाँ अपने मन माने मशग़लों में खो गये हो और समय को बेफ़ायदा ज़ाया करने लगे। तुमसे ज़्यादा बुरा वफ़्द दुनिया में कोई न होगा। याद रखो कि अब भी अगर तुमने मुस्तैदी से क़ौमी ख़िदमत न की तो तुम बरबाद और ग़ारत हो जाओगे।

Muktab E Ashraf

यह सुनकर उनके कान खड़े हो गये। ये हरम में गये और दुआएँ माँगनी शुरू कर दीं। अल्लाह तआ़ला ने तीन बादल उनके सामने पेश किये- एक सफ़ेद, एक काला, एक सुर्ख़। और एक आवाज़ आई कि इनमें से एक को चुन लो। उन्होंने काले बादल को पसन्द किया। आवाज़ आई तुमने काले को पसन्द किया, जो आ़द में से एक को भी बाक़ी न छोड़ेगा। न बेटे को न बाप को, सब को ग़ारत कर देगा, सिवाये बनी लवेज़िया के।

यह बनी लवेज़िया भी आ़द का एक क़बीला था, जो मक्का में रहता था। उन पर वे अ़ज़ाब नहीं आए थे, यही बाक़ी रहे और उनमें से 'आ़दे उख़रा' (यानी बाद वाले आ़द) हुए। उस वफ़्द के सरदार ने काले बादल को पसन्द किया था जो उसी वक़्त आ़द की तरफ़ चला, उस शख़्स का नाम क़ील बिन ग़ज़ था। जब यह आ़द के मैदान में जा पहुँचा, जिसका नाम ग़ैस था तो इसे देखकर वे लोग ख़ुशियाँ मनाने लगे कि इस बादल से पानी ज़रूर बरसेगा, हालाँकि यह वह था जिसकी ये लोग नबी के मुक़ाबले में जल्दी मचा रहे थे, जिसमें दर्दनाक अ़ज़ाब था, जो तमाम चीज़ों को फ़ना कर देने वाला था।

सबसे पहले उस अ़ज़ाबे ख़ुदा को एक औ़रत ने देखा, जिसका नाम मुमैयद था। यह चीख़ मारकर बेहोश हो गई। जब होश में आई तो लोगों ने उससे पूछा कि तूने क्या देखा? उसने कहा आग का एक बगूला, जो हवा की सूरत में था। जिसे फ़रिश्ते घसीटते लिए चले आते थे, बराबर सात रातें और आठ दिन तक यह आग वाली हवा उन पर चलती रही और अ़ज़ाब का बादल उन पर बरसता रहा। पूरी क़ौमे आ़द का सत्यानास हो गया।

हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम और आपके साथी मोमिन एक बाग़ीचे में चले गए थे, वहाँ ख़ुदा ने उन्हें महफ़ूज़ रखा, वही हवा ठंडी और भीनी-भीनी होकर उनके जिस्मों को लगती रही, जिससे रूह को ताज़गी और आँखों को ठंडक पहुँचती रही। हाँ आ़द क़ौम पर उस हवा ने संगबारी (पत्थर बरसाना) शुरू कर दी, उनके दिमाग़ फट गये, आख़िर उन्हें उठा-उठाकर पटख़ा, सर अलग हो गये धड़ अलग जा पड़े, सवार को सवारी समेत ऊपर उठा लेती थी और बहुत ऊँचा लेजाकर उसे औंधा करके पटख़ती थी।

मज़मून का यह हिस्सा बहुत ग़रीब है और इसमें बहुत से फ़ायदे हैं। अ़ज़ाबे ख़ुदा के आ जाने के वक़्त हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम और मोमिनों को निजात मिल गई, रहमते ख़ुदा उनके शामिले हाल रही और बाक़ी काफ़िर लोग इस बदतरीन सज़ा में गिरफ़्तार हुए। मुस्नद अहमद में है- हज़रत हारिस बकरी रज़ि. फ़रमाते हैं- मैं अपने यहाँ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में उला बिन हज़रमी की शिकायत लेकर चला, जब मैं रबज़ा में पहुँचा तो बनू तमीम की एक बुढ़िया लाचार होकर बैठी हुई मिली। मुझसे कहने लगी ऐ ख़ुदा के बन्दे! मुझे रसूले ख़ुदा के पास पहुँचना है, क्या तू मेरे साथ इतना सुलूक करेगा कि मुझे दरबारे रिसालत में पहुँचा दे? मैंने कहा आओ। चुनाँचे मैंने उसे अपने ऊँट पर बैठा लिया और मदीना पहुँचा। देखा कि मस्जिद लोगों से भरी हुई है, काले झंडे लहरा रहे हैं और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु नबी करीम सल्ल. के सामने तलवार लटकाये खड़े हैं। मैंने पूछा क्या बात है? लोगों ने कहा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत अ़मर बिन आ़स की मातहती में कहीं लश्कर भेजने वाले हैं। मैं थोड़ी देर बैठा रहा, इतने में हुज़ूर सल्ल. अपनी मन्ज़िल (यानी मकान) में तशरीफ़ ले गये। मैं आपके पीछे ही गया, इजाज़त तलब की, इजाज़त मिली तब मैंने अन्दर जाकर सलाम किया तो आपने मुझसे पूछा- क्या तुममें और बनू तमीम में कुछ बैर और खींचतान है? मैंने कहा हाँ! और बोझ-बाझ उन्हीं पर था। मैं अब आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो रहा था तो रास्ते में क़बीला बनू तमीम की एक बुढ़िया औ़रत मिल गई जिसके पास सवारी

Maktab E Ashraf

वग़ैरह न थी, उसने मुझसे दरख़्वास्त की और मैं उसे अपने सवारी पर बैठाकर यहाँ लाया हूँ। वह दरवाज़े पर बैठी है। आपने उसे भी अन्दर आने की इजाज़त दी, मैंने कहा या रसूलल्लाह! हममें और बनू तमीम में कोई फ़ैसला कर दीजिए। इस पर बुढ़िया तेज़ होकर बोली अगर आपने ऐसा किया तो आपके यहाँ के बेबस कहाँ पनाह लेंगे? मैंने कहा सुब्हानल्लाह! मेरी और तेरी तो वही मिसाल हो गई कि बकरी अपनी मौत को आप उठाकर ले गई। मैंने ही तुझे यहाँ पहुँचाया, मुझे इसके अन्जाम की क्या ख़बर थी? अल्लाह ऐसा न करे कि मैं भी आ़द क़बीले के वफ़्द की तरह हो जाऊँ। तो हुज़ूर सल्ल. ने मुझसे मालूम किया भी कि आ़द के वफ़्द का क़िस्सा क्या है? इसके बावजूद कि आपको मुझसे ज़्यादा उसका इल्म था, लेकिन यह समझकर कि इस वक़्त आप बातें करना चाहते हैं, मैंने क़िस्सा शुरू कर दिया कि हुज़ूर जिस वक़्त क़ौमे आ़द में क़हत-साली हुई (यानी सूखा पड़ा) तो उन्होंने क़ील नाम के एक शख़्स को बतौर अपने क़ासिद के बैतुल्लाह शरीफ़ में दुआ़ वग़ैरह करने के लिए भेजा। यह मुआ़विया बिन बक्र के पास आकर मेहमान हुआ। यहाँ शराब कबाब और राग रंग में ऐसा मशग़ूल हुआ कि महीने भर तक जाम लुंढाता रहा और मुआ़विया की दो बाँदियों के गाने सुनता रहा। उनका नाम जरादा था।

महीने भर के बाद मेहरा के पहाड़ों पर गया और ख़ुदा से दुआ़ माँगने लगा कि बारी तआ़ला! मैं किसी बीमार की दवा के लिए या किसी क़ैदी के फ़िदये के लिए नहीं आया। ख़ुदाया! तू आ़द को वह पिला जो पिलाया करता था। इतने में वह देखता है कि चन्द काले बादल उसके सर पर मंडला रहे हैं, उनमें से एक ग़ैबी आवाज़ आई कि इनमें से जो तुझे पसन्द हो क़बूल कर ले। उसने गहरे काले बादल को इख़्तियार किया। उसी वक़्त दूसरी आवाज़ आई कि ले ले ख़ाक राख जो आ़द वालों में से एक को भी न छोड़े। आ़द वालों पर हवा के ख़ज़ाने में से सिर्फ़ अंगूठी के छल्ले के बराबर हवा छोड़ दी गई थी, जिसने सबको ग़ारत और उलट-पलट करके रख दिया।

अबू वाईल कहते हैं कि यह वाक़िआ़ सारे अ़रब में एक मिसाल और कहावत हो गया था। जब लोग किसी को बतौर वफ़्द भेजते थे तो कह दिया करते थे कि आ़द वालों के वफ़्द की तरह न हो जाना। इसी तरह मुस्नद अहमद में भी यह रिवायत मौजूद है। सुनन की और किताबों में भी यह वाक़िआ़ मौजूद है। वल्लाहु आलम

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا م قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ط هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ○ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْ م

और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक साफ़ और वाज़ेह दलील आ चुकी है यह ऊँटनी है अल्लाह की, जो तुम्हारे लिए दलील है, सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको दर्दनाक अ़ज़ाब आ पकड़े। (73) और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह

بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝

तआ़ला ने तुमको आ़द के बाद आबाद किया और तुमको ज़मीन पर रहने के लिए ठिकाना दिया कि नर्म ज़मीन पर महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश- तराशकर उनमें घर बनाते हो, सो ख़ुदा तआ़ला की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ। (74) उनकी क़ौम में जो घमण्डी सरदार थे, उन्होंने ग़रीब लोगों से जो कि उनमें से ईमान ले आए थे पूछा कि क्या तुमको इस बात का यक़ीन है कि सालेह अपने रब की तरफ़ से भेजे हुए हैं? उन्होंने कहा कि बेशक हम तो उस पर पूरा यक़ीन रखते हैं जो उनको देकर भेजा गया है। (75) वे घमण्डी लोग कहने लगे कि तुम जिस चीज़ पर यक़ीन लाए हुए हो हम तो उसका इनकार करते हैं। (76) ग़र्ज़ कि उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला और अपने परवर्दिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि ऐ सालेह! जिसकी आप हमको धमकी देते थे उसको मंगवाईये, अगर आप पैग़म्बर हैं। (77) पस आ पकड़ा उन को ज़लज़ले ने, सो अपने घरों में औंधे (के औंधे) पड़े रह गये। (78)

क़ौमे समूद

नसब के माहिरीन (नस्लों और ख़ानदानों का इल्म रखने वाले हज़रात) ने बयान किया है कि समूद बिन आ़मिर बिन इरम बिन साम बिन नूह, यह भाई था जदीस बिन आ़मिर का, इसी तरह क़बीला तसम यह ख़ालिस अ़रब थे। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम से पहले समूद आ़द के बाद हुए हैं। उनके शहर हिजाज (सऊदी इलाक़े) और शाम (यानी मुल्क सीरिया) के दरमियान वादी-ए-क़ुरा और उसके इर्द-गिर्द मशहूर हैं। सन् 9 हिजरी में तबूक जाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनकी उजाड़ बस्तियों में से गुज़रे थे। मुस्नद अहमद में है कि जब हुज़ूर सल्ल. तबूक के मैदान में उतरे लोगों ने समूद के घरों के पास डेरे डाले और उन्हीं के कुँओं के पानी से आटे गूँधे और हाँडियाँ चढ़ाई तो आपने हुक्म दिया कि सब हाँडियाँ उलट दी जाएँ और गूँधे हुए आटे ऊँटों को खिला दिए जाएँ। फिर फ़रमाया यहाँ से कूच करो और उस कुएँ के पास ठहरो जिससे हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊँटनी पानी पीती थी। और फ़रमाया आईन्दा अ़ज़ाब वाली बस्ती में पड़ाव न किया करो। कहीं ऐसा न हो कि उसी अ़ज़ाब के शिकार तुम भी

Maktaba E Ashraf

Maktab E Ashraf

बन जाओ। एक और रिवायत में है कि इन बस्तियों से रोते और डरते हुए गुज़रो कि कहीं वही अ़ज़ाब तुम पर न आ जाएँ जो उन पर आये थे। एक और रिवायत में है कि ग़ज़वा-ए-तबूक में लोग बहुत तेज़ी के साथ हिज्र के लोगों की तरफ़ लपके, आपने उसी वक़्त आवाज़ दिलवाई कि "नमाज़ के लिये जमा हो जाओ" जब लोग जमा हो गये तो आपने फ़रमाया कि उन लोगों के घरों में क्या घुसे जा रहे हो जिन पर ग़ज़बे ख़ुदा नाज़िल हुआ? हदीस के रावी अबू कबशा अनमारी रज़ि. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. के हाथ में एक नेज़ा था। मैंने यह सुनकर अ़र्ज़ किया- या रसूलल्लाह! हम तो सिर्फ़ इबरत के तौर पर उन्हें देखने चले गये थे, आपने फ़रमाया मैं तुम्हें उससे भी ज़्यादा इबरत की (सबक़ लेने वाली) चीज़ बतला रहा हूँ। तुम में से ही एक शख़्स है जो तुम्हें वे चीज़ें बतला रहा है जो गुज़र चुकीं और वे ख़बरें दे रहा है जो तुम्हारे सामने हैं, और जो तुम्हारे बाद होने वाली हैं। पस तुम ठीक-ठाक रहो और सीधे चले जाओ। तुम्हें अ़ज़ाब करते हुए भी ख़ुदा तआ़ला को कोई परवाह नहीं। याद रखो कि ऐसे लोग आएँगे जो अपनी जानों से किसी चीज़ को हटा न सकेंगे।

हज़रत अबू कबशा रज़ि. का नाम उमर बिन सअ़द है और कहा गया है कि आ़मिर बिन सअ़द है। वल्लाहु आलम। एक और रिवायत में है कि हिज्र की बस्ती के पास आते ही हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- निशानियाँ तलब न करो, देखो क़ौमे सालेह ने निशान तलब किया जो ज़ाहिर हुआ, यानी ऊँटनी, जो इस रास्ते से आती थी और उस रास्ते से जाती थी। लेकिन उन लोगों ने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की और ऊँटनी की कोचें काट दीं। एक दिन ऊँटनी उनका पानी पीती थी और एक दिन ये सब उसका दूध पीते थे, उस ऊँटनी को मार डालने पर उन पर एक चीख़ आई और ये जितने भी थे सब के सब ढेर हो गये सिवाये उस एक शख़्स के जो हरम शरीफ़ में था। लोगों ने पूछा उसका नाम क्या था? फ़रमाया अबू रिग़ाल, यह भी जब हरम की सीमा से बाहर आया तो उसे भी वही अ़ज़ाब हुआ। यह रिवायत हदीस की छह बड़ी किताबों में तो नहीं, लेकिन है मुस्लिम शरीफ़ की शर्त पर।

आयत का मतलब यह है कि समूदी क़बीले की तरफ़ उनके भाई हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा गया। तमाम नबियों की तरह आपने भी अपनी उम्मत को सबसे पहले तौहीदे ख़ुदा सिखाई (यानी अल्लाह का एक होना बताया) कि फ़क़त उसकी इबादत करें, उसके सिवा और कोई लायक़े इबादत नहीं। यह फ़रमाने ख़ुदा है, जितने भी रसूल आये सबकी तरफ़ यही 'वही' की जाती रही कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, सिर्फ़ मेरी ही इबादत करो। एक जगह और इरशाद है कि हमने हर उम्मत में रसूल भेजे कि ख़ुदा ही की इबादत करो और उसके सिवा औरों की इबादत से बचो।

हज़रत सालेह फ़रमाते हैं- लोगो! तुम्हारे पास अल्लाह की दलील आ चुकी जिसमें मेरी सच्चाई ज़ाहिर है। उन लोगों ने हज़रत सालेह से यह मोजिज़ा तलब किया था कि एक पथरीली चट्टान जो उनकी बस्ती के एक किनारे पड़ी थी, जिसका नाम कातिबा था, उससे आप एक ऊँटनी निकालें जो गाभन हो। हज़रत सालेह ने उनसे फ़रमाया कि अगर ऐसा हो जाये तो क्या तुम ईमान क़बूल कर लोगे? उन्होंने पुख़्ता वादे किए और मज़बूत अ़हद व पैमान किये। हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने नमाज़ पढ़ी, दुआ़ की, उन सबके देखते हुए चट्टान ने हिलना शुरू किया और चटख़ गई और उसके बीच से एक ऊँटनी ज़ाहिर हुई। उसे देखते ही उनके सरदार जुन्दअ़ बिन अ़मर ने तो इस्लाम क़बूल कर लिया और उसके साथियों ने भी। बाक़ी जो और सरदार थे वे ईमान लाने के लिए तैयार थे मगर ज़ुवाब बिन अ़मर बिन लबीद ने और हब्बाब ने जो बुतों का मुजाविर था और रुबाब बिन सुमर बिन जलहस वग़ैरह ने उन्हें रोक दिया। हज़रत जुन्दअ़ का

भतीजा था शहाब नाम का, यह समूद कौम में बड़ा आलिम फ़ाज़िल और शरीफ़ शख़्स था, इसने भी ईमान लाने का इरादा कर लिया था लेकिन इन्हीं बदबख़्तों ने इसे भी रोका, जिस पर कौम समूद के एक मोमिन महूश बिन ग़नमा ने कहा कि आले अ़मर ने शहाब को दीने ख़ुदा की दावत दी, क़राब था कि वह इस्लाम में दाख़िल हो जाये, और अगर हो जाता तो उसकी इज़्ज़त दोगुनी हो जाती, मगर बदबख़्तों ने उसे रोक दिया और नेकी से हटाकर बदी पर लगा दिया। उस हामिला (गाभन) ऊँटनी को उसी वक़्त बच्चा हुआ, एक मुद्दत दोनों उनमें रहे। एक दिन ऊँटनी उनका पानी पीती, उस दिन इस क़द्र दूध देती कि ये लोग अपने सब बर्तन भर लेते। दूसरे दिन यह पानी न पीती और समूद के और जानवर पानी पी लेते। जैसा कि क़ुरआन में है:

وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ......الخ

यानी उन्हें बता दीजिये कि उनके और ऊँटनी के बीच पानी की बारी तय कर दी गयी है।

एक और आयत में है:

هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ.

यह है ऊँटनी, इसके और तुम्हारे पानी पीने के दिन तक़सीम शुदा और मुक़र्रर हैं।

यह ऊँटनी समूद की बस्ती हिज्र के इर्द-गिर्द चरती चुगती थी। एक रास्ते से जाती दूसरे रास्ते से आती। यह बहुत ही मोटी ताज़ी और हैबत वाली ऊँटनी थी, जिस रास्ते से गुज़रती दूसरे सब जानवर इधर उधर हो जाते। कुछ ज़माने के बाद उन ओबाशों (बुरे लोगों) ने इरादा किया कि उसको मार डालें ताकि हर दिन उनके जानवर बराबर पानी पी सकें। उन ओबाशों के इरादों पर सब ने इत्तिफ़ाक़ किया, यहाँ तक कि औ़रतों और बच्चों ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलाई और उन्हें शह दी कि हाँ इस पाप को काट दो, इस ऊँटनी को मार डालो। चुनाँचे क़ुरआने करीम में है:

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا....... الخ

सालेह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने अपने नबी को झुठलाया और ऊँटनी की कोचें काटकर उसे मार डाला तो उनके परवर्दिगार ने उनके गुनाहों के बदले उन पर हलाकत नाज़िल फ़रमाई और सबको बराबर ही कर दिया।

एक और आयत में है कि हमने समूद को ऊँटनी दी, जो उनके लिए पूरी समझ-बूझ की चीज़ थी, लेकिन उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया। यहाँ भी फ़रमाया कि उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला। पस इस हरकत और फ़ेल की निस्बत सारे ही क़बीले की तरफ़ है, जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि छोटे बड़े सब इस पर सहमत थे। इमाम इब्ने जरीर रह. वग़ैरह का फ़रमान है कि उसके क़त्ल की वजह यह हुई कि उनीज़ा बिन्ते ग़नम बिन मुजलिज़ जो एक काफ़िर बुढ़िया थी और हज़रत सालेह से बड़ी दुश्मनी रखती थी, उसकी लड़कियाँ बहुत ख़ूबसूरत थीं, और थी भी यह औ़रत मालदार, उसके शौहर का नाम जुआब बिन अ़मर था जो समूद का एक सरदार था। यह भी काफ़िर था, इसी तरह एक और औ़रत थी जिसका नाम सदूफ़ बिन्ते महया बिन दहर बिन मुख़्तार था, यह भी हसीन होने के साथ-साथ माल, हसब नसब में बढ़ी हुई थी, उसके शौहर मुसलमान हो गये थे। उस सरकश (नाफ़रमान) औ़रत ने उनको छोड़ दिया था।

अब ये दोनों औ़रतें लोगों को उकसाती थीं कि कोई तैयार हो जाये और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम

की ऊँटनी को क़त्ल कर दे। सदूफ़ नाम की औरत ने एक शख़्स हब्बाब को बुलाया और उससे कहा कि मैं तेरे घर आ जाऊँगी अगर तू इस ऊँटनी को क़त्ल कर दे, लेकिन उसने इनकार कर दिया। इस पर उसने मिसदा बिन मेहरज बिन महया को बुलाया जो उसके चचा का लड़का था और उसे भी इसी बात पर तैयार किया। यह ख़बीस उसके हुस्न व जमाल का आशिक़ था, इस बुराई पर तैयार हो गया। उधर उनैज़ा ने क़ेदार बिन सालिफ़ बिन जुन्दा को बुलाकर उससे कहा कि मेरी इन ख़ूबसूरत जवान लड़कियों में से जिसे तू पसन्द करे उसे तुझे दे दूँगी इस शर्त पर कि तू उस ऊँटनी की कोचें (टाँगें) काट डाले। यह ख़बीस भी आमादा हो गया, यह था भी नाजायज़ औलाद। सालिफ़ की औलाद में न था, सहयाद नाम के एक शख़्स से इसकी बदकार माँ ने ज़िना किया था, उसी से यह पैदा हुआ था। अब ये दोनों चले और समूद के दूसरे शरीर लोगों को भी इस पर तैयार किया। चुनाँचे सात शख़्स और भी इस पर आमादा हो गये और ये नौ फ़सादी शख़्स इस बुरे इरादे पर तुल गये, जैसा कि क़ुरआने करीम में है:

وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَايُصْلِحُوْنَ.

उस शहर में नौ शख़्स थे जिनमें इस्लाह (सुधार और अच्छाई फैलाने) का माद्दा ही न था, सरासर फ़सादी ही थे।

चूँकि ये लोग क़ौम के सरदार थे, इनके कहने सुनने से तमाम काफ़िर लोग भी इस पर राज़ी हो गये और ऊँटनी के वापस आने के रास्ते में ये दोनों शरीर अपनी-अपनी छुपने की जगहों में बैठ गये। जब ऊँटनी निकली तो पहले मिसदा ने उसे तीर मारा जो उसकी रान की हड्डी में घुस गया, उसी वक़्त उनीज़ा ने अपनी ख़ूबसूरत लड़की को खुले मुँह क़ेदार के पास भेजा, उसने कहा क़ेदार क्या देखते हो उठो और इसका काम तमाम कर दो। यह उसका मुँह देखते ही दौड़ा और उसके दोनों पिछले पाँव काट दिए। ऊँटनी चकरा कर गिरी और एक आवाज़ निकाली जिससे उसका बच्चा होशियार हो गया और उस रास्ते को छोड़कर पहाड़ी पर चला गया। यहाँ क़ेदार ने ऊँटनी का गला काट दिया और वह मर गई। उसका बच्चा पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और तीन बार बिलबिलाया।

हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि उसने ख़ुदा के सामने अपनी माँ के क़त्ल की फ़रियाद की, फिर जिस चट्टान से निकला था उसी में समा गया। यह रिवायत भी है कि उसे भी उसकी माँ के साथ ही ज़िबह कर दिया गया था। वल्लाहु आलम

हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम को जब यह ख़बर पहुँची तो आप घबराये हुए मौक़े पर पहुँचे, देखा कि ऊँटनी बेजान पड़ी हुई है। आपकी आँखों से आँसू निकल आये और फ़रमाया बस अब तीन दिन में तुम हलाक कर दिये जाओगे। यही हुआ भी। बुध के दिन उन लोगों ने ऊँटनी को क़त्ल किया था और चूँकि कोई अ़ज़ाब न आया इसलिए इतरा गये और इन्हीं फ़सादियों ने इरादा कर लिया कि अब आज शाम को सालेह को भी मार डालो, अगर वाक़ई हम हलाक होने वाले ही हैं तो फिर यही क्या बचा रहे? और अगर हम पर अ़ज़ाब नहीं आता तो भी आओ रोज़-रोज़ की इस मुसीबत से निजात तो हो जायेगी।

चुनाँचे क़ुरआने करीम का बयान है कि उन लोगों ने मिलकर मश्विरा किया और फिर क़समें खाकर इक़रार किया कि रात को सालेह के घर पर धावा बोलो, उसे और उसके घराने को तलवारों से काट डालो, और साफ़ मुकर जाओ कि हमें क्या ख़बर किसने मारा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उनके इस मक्र (फ़रेब और साज़िश) के मुक़ाबिल हमने भी मक्र (तदबीर और अपना फ़ैसला) किया और ये हमारे मक्र से

Maktab E Ashraf

बिल्कुल बेख़बर हैं। अब अन्जाम देख लो कि क्या हुआ? रात के वक़्त इसी बुरी नीयत से हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम के घर की तरफ़ चले। आपका घर पहाड़ की बुलन्दी पर था, अभी ये ऊपर चढ़ ही रहे थे कि ऊपर से एक चट्टान पत्थर की लुढ़कती हुई आई और सब ही को पीस डाला।

उनका तो यह हश्र हुआ, उधर जुमेरात के दिन समूद क़ौम के तमाम अफ़राद के चेहरे ज़र्द (पीले) पड़ गये। जुमे के दिन उनके चेहरे आग जैसे सुर्ख़ हो गये और शनिवार के दिन जो मोहलत का आख़िरी दिन था, उनके मुँह सियाह हो गये। तीन दिन जब गुज़र गये तो चौथे दिन इतवार की सुबह ही सुबह सूरज के रोशन होते ही ऊपर आसमान से सख़्त कड़ाका हुआ, जिसकी हौलनाक, दहशत भरी चिंघाड़ ने उनके कलेजे फाड़ दिये। साथ ही नीचे से ज़लज़ला आया, एक ही घड़ी में एक साथ ही उन सबका ढेर लग गया। मुर्दों से मकानात, बाज़ार, गली कूचे भर गये। मर्द औ़रत बच्चे बूढ़े अव्वल से आख़िर तक सारे के सारे तबाह हो गये। शाने ख़ुदा देखिए कि इस वाक़िए की ख़बर दुनिया को पहुँचाने के लिए एक काफ़िर औ़रत बचा दी गई। यह भी बड़ी ख़बीस थी। हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की दुश्मनी की आग से भरी हुई थी। उसकी दोनों टाँगे न थीं, लेकिन इधर अ़ज़ाबे ख़ुदा आया उधर उसके पावँ खुल गये, अपनी बस्ती से बड़ी तेज़ी से भागी और तेज़ दौड़ती हुई दूसरे शहर जा पहुँची और वहाँ जाकर उन सबके सामने सारा वाक़िआ़ बयान किया। बयान कर चुकी थी कि उनसे पानी माँगा, अभी पूरी प्यास भी न बुझी थी कि अ़ज़ाबे ख़ुदा आ पड़ा और वहीं ढेर हो गई। हाँ अबू रिग़ाल नाम का एक शख़्स और बच गया था, यह यहाँ न था, हरम शरीफ़ की पाक ज़मीन में था, लेकिन कुछ दिनों के बाद जब यह अपने किसी काम की ग़र्ज़ से हरम की सीमा से बाहर आया उसी वक़्त आसमान से एक पत्थर आया और इसे भी जहन्नम रसीद किया।

समूद क़ौम में सिवाये हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम और उनके मोमिन साथियों के और कोई भी न बचा। अबू रिग़ाल का वाक़िआ़ इससे पहले हदीस से बयान हो चुका है। क़बीला-ए-सक़ीफ़ जो ताईफ़ में है, बयान किया गया है कि यह उसी की नस्ल से हैं। मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि उसकी क़ब्र के पास से जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गुज़रे तो फ़रमाया कि जानते हो यह किसकी क़ब्र है? लोगों ने जवाब दिया कि ख़ुदा और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। आपने फ़रमाया यह अबू रिग़ाल की क़ब्र है। यह एक समूदी शख़्स था। अपनी क़ौम के अ़ज़ाब के वक़्त यह हरम में था, इस वजह से अ़ज़ाबे ख़ुदा से बचा रहा, लेकिन जब हरम शरीफ़ से निकला उसी वक़्त उसी क़ौमी अ़ज़ाब से यह भी हलाक हुआ और यहीं दफ़्न किया गया, और इसी के साथ इसकी सोने की छड़ी भी दफ़ना दी गई है। चुनाँचे लोगों ने उस गड्ढे को खोदकर उसी वक़्त उसमें से वह छड़ी निकाल ली।

एक और हदीस में है कि आपने फ़रमाया था- सक़ीफ़ क़बीला इसी की औलाद है। एक मुर्सल हदीस में यह भी है कि आपने फ़रमाया था- इसके साथ सोने की शाख़ (छड़ी) दफ़्न कर दी गई थी, यही निशान इसकी क़ब्र का है। अगर तुम उसे खोदो तो वह शाख़ ज़रूर निकल आयेगी। चुनाँचे बाज़ लोगों ने उसे खोदा और शाख़ निकाल ली। अबू दाऊद में भी यह रिवायत है और हसन ग़रीब है। लेकिन मैं कहता हूँ कि इस हदीस के पहुँचने का सिर्फ़ यही एक तरीक़ (सनद) बहीर बिन अबी बहीर का है, और यह सिर्फ़ इसी हदीस के साथ मारूफ़ है। और बक़ौल हज़रत इमाम यह्या बिन मईन रह. सिवाये इस्माईल बिन अबी उमैया के इसे उससे और किसी ने रिवायत नहीं किया। तो शंका है कि कहीं इस हदीस के मरफ़ूअ़ करने में चूक न हो। यह अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ही का क़ौल हो और फिर इस सूरत में यह भी मुम्किनात में से है कि

उन्होंने इसे उन दो दफ़्तरों से लिया हो जो उन्हें यरमूक की लड़ाई में मिले थे। मेरे उस्ताद शैख़ अबू हज्जाज रह. इस रिवायत को पहले तो हसन ग़रीब कहते थे, लेकिन जब मैंने उनके सामने यह हुज्जत पेश की तो आपने फ़रमाया बेशक इन बातों का इसमें एहतिमाल (शक) है। वल्लाहु आलम

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ۝	उस वक़्त वह (यानी सालेह अ़लै.) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तो तुमको अपने परवर्दिगार का हुक्म पहुँचा दिया था, और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, लेकिन तुम लोग ख़ैरख़्वाहों को पसन्द ही नहीं करते थे। (79)

नबी की नसीहत पर अ़मल न करने का नुक़सान

क़ौम की हलाकत (तबाही) देखकर अफ़सोस व हसरत और आख़िरी डाँट-डपट के तौर पर पैग़म्बरे ख़ुदा हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि न तो तुम्हें रब की रिसालत (यानी अल्लाह की तरफ़ से आये पैग़ाम) ने फ़ायदा पहुँचाया, न मेरी ख़ैरख़्वाही ठिकाने लगी, तुम अपनी बेसमझी से दोस्त को दुश्मन समझ बैठे और आख़िर इस दिन को बुला ही लिया।

चुनाँचे नबी करीम सल्ल. जब बदर में काफ़िरों पर ग़ालिब आये वहीं तीन दिन तक ठहरे रहे, फिर रात के आख़िरी वक़्त ऊँटनी क़ुसवा पर आप तशरीफ़ ले चले और जब उस घाटी के पास पहुँचे जहाँ उन काफ़िरों की लाशें डाली गई थीं तो आप ठहर गये और फ़रमाने लगे ऐ अबू जहल! ऐ उतबा! ऐ शैबा! ऐ फ़ुलाँ! ऐ फ़ुलाँ! बताओ रब के वादे तुमने दुरुस्त पाये या नहीं? मैंने तो अपने रब के फ़रमान की सच्चाई अपनी आँखों देखी। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! आप इन जिस्मों से बातें कर रहे हैं जो मुर्दार हो गये? आपने फ़रमाया उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, जो कुछ इनसे कह रहा हूँ ये तुमसे ज़्यादा सुन रहे हैं, लेकिन जवाब की ताक़त नहीं। सीरत की किताबों में है कि आपने फ़रमाया- तुमने बावजूद मेरे ख़ानदानी होने के मेरे साथ ऐसी बुराई की कि किसी ख़ानदान ने अपने पैग़म्बर के साथ न की हो, तुमने मेरे क़बीले के होने के बावजूद मुझे झुठलाया और दूसरे लोगों ने मुझे सच्चा समझा, तुमने बावजूद रिश्तेदारी के मुझे वतन से निकाल दिया, और दूसरों ने मुझे अपने यहाँ जगह दी। अफ़सोस तुम अपने होकर मुझसे लड़ते रहे और दूसरों ने मेरी इमदाद की। पस तुम अपने नबी के क़बीले वाले बहुत ही बुरे लोग हो।

यही हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम से फ़रमा रहे हैं कि मैंने तो हमदर्दी की इन्तिहा कर दी, ख़ुदा के पैग़ाम की तब्लीग़ में, तुम्हारी ख़ैरख़्वाही में कोई कोताही नहीं की। आह! न तुमने इससे कोई फ़ायदा उठाया न हक़ की पैरवी की, न ख़ैरख़्वाही की बात मानी बल्कि और उसे अपना दुश्मन समझा। बाज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि हर नबी जब देखता कि मेरी उम्मत पर आ़म अ़ज़ाब आने वाला है तो उन्हें छोड़कर निकल खड़ा होता और मक्का शरीफ़ के हरम में पनाह लेता। वल्लाहु आलम

मुस्नद अहमद में है कि हज के मौक़े पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वादी-ए-अ़स्फ़ान पहुँचे तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया- यह कौनसी वादी (घाटी) है? आपने जवाब दिया कि वादी-ए-अ़स्फ़ान। फ़रमाया मेरे सामने से हज़रत हूद और हज़रत सालेह अ़लैहिमस्सलाम

Maktaba E Ashraf

अभी गुज़रे, ऊँटनियों पर सवार थे, जिनकी नकेलें खजूर के पत्तों की थीं, कम्बलों के तहबन्द बाँधे हुए और मोटी चादरें ओढ़े हुए थे, लब्बैक पुकारते हुए बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे। यह हदीस ग़रीब है 'सिहाहे सित्ता' में नहीं।

और हमने लूत को भेजा जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया, क्या तुम ऐसा फ़ुहश "यानी गंदा और बुरा" काम करते हो जिसको तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में से नहीं किया। (80) (यानी) तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के साथ ख़्वाहिश पूरी करते हो, बल्कि तुम (इनसानियत की) हद से ही गुज़र गए हो। (81)	وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ○ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ○

क़ौमे लूत

इरशाद है कि हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को भी हमने उनकी क़ौम की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा, तू उनके वाक़िए को भी याद कर। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम हारान बिन आज़र के बेटे थे। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के भतीजे थे। आप ही के हाथ पर ईमान क़बूल किया था और आप ही के साथ शाम (मुल्क सीरिया) की तरफ़ हिजरत की थी। ख़ुदा तआ़ला ने उन्हें अपना नबी बनाकर सद्दूम नाम की बस्ती की तरफ़ भेजा। आपने उन्हें और आस-पास के लोगों को ख़ुदा की तौहीद और अपनी इताअ़त की तरफ़ नेकियों के करने, बुराईयों को छोड़ने का हुक्म दिया, जिनमें एक बुराई इग़लाम-बाज़ी (यानी लड़कों के साथ बदकारी करने की) थी। जो उनसे पहले दुनिया में कभी नहीं हुई थी। इस बदकारी को ईजाद (यानी शुरू) करने वाले यही मलऊन लोग थे। अ़मर बिन दीनार यही फ़रमाते हैं। जामे दमिश्क़ के बानी (संस्थापक) ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल-मलिक कहते हैं कि अगर यह ख़बर क़ुरआन में न होती तो मैं इस बात को कभी न मानता कि मर्द मर्द से अपनी ज़रूरत पूरी कर ले (यानी बदफ़ेली करे)। इसी लिए हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने उन हरामकारों से फ़रमाया कि तुमसे पहले तो यह नापाक और ख़बीस फ़ेल किसी ने नहीं किया। औरतों को जो इस काम के लिए थीं, छोड़कर तुम मर्दों पर रीझ रहे हो। लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि हमें उनकी चाहत नहीं, हम तो तुम्हारे इन मेहमान लड़कों के इच्छुक हैं। मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापक) फ़रमाते हैं कि जिस तरह मर्द मर्द आपस में मशग़ूल थे इसी तरह औ़रतें औ़रतें आपस में फंसी हुई थीं (यानी एक तरह से समलैंगिकता को उन लोगों ने अपना रखा था)।

और उनकी क़ौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि (आपस में) कहने लगे कि इन लोगों को तुम अपनी बस्ती में से निकाल दो, ये लोग बड़े पाक-साफ़ बनते हैं। (82)	وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ○

Maktab E Ashraf

नाफ़रमानी

क़ौमे लूत पर नबी की नसीहत कारगर न हुई बल्कि उल्टे दुश्मनी में लग गए और देश-निकाला देने पर तुल गये। अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को मय उन पर ईमान लाने वालों के वहाँ से सही सालिम बचा लिया और तमाम बस्ती वालों को ज़िल्लत व पस्ती के साथ तबाह व ग़ारत कर दिया। उन्होंने जो यह कहा कि ये बड़े पाकबाज़ लोग हैं, यह बतौर ताने के कहा था। और यह भी मतलब था कि ये उस काम से जो हम करते हैं दूर हैं, फिर इनका हममें क्या काम। मुजाहिद और इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का यही क़ौल है।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ○ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ○	सो हमने उनको (यानी लूत अ़लैहि. को) और उनके मुताल्लिक़ीन को बचा लिया सिवाय उनकी बीवी के, कि वह उन्हीं लोगों में रही जो अ़ज़ाब में रह गये थे। (83) और हमने उनके ऊपर एक नई तरह की बारिश बरसाई (जो कि पत्थरों की थी)। सो देख तो सही उन मुजरिमों का अन्जाम कैसा हुआ? (84)

सख़्त और बड़ा अ़ज़ाब

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और उनका घराना ख़ुदा के अ़ज़ाबों से बच गया जो लूतियों (लड़कों के साथ इन बदफ़ेली करने वालों) पर नाज़िल हुए। सिवाय आपके घराने के और कोई आप पर ईमान न लाया था, जैसा कि फ़रमाने ख़ुदा है:

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ.

यानी वहाँ जितने मोमिन थे हमने सबको निकाल दिया, लेकिन सिवाय एक घर वालों के वहाँ हमने किसी मुसलमान को पाया ही नहीं।

बल्कि लूत अ़लैहिस्सलाम के ख़ानदान में से भी ख़ुद हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी हलाक हुई क्योंकि यह बदनसीब काफ़िर ही थी, बल्कि क़ौम के काफ़िरों की तरफ़दार थी। अगर कोई मेहमान आता तो इशारों से क़ौम को ख़बर पहुँचा देती। इसलिए हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम से कह दिया गया था कि उसे अपने साथ न ले जाना, बल्कि उसे ख़बर भी न करना। एक क़ौल यह भी है कि साथ तो चली थी, लेकिन क़ौम पर अ़ज़ाब आया तो उसके दिल में क़ौम की मुहब्बत आ गई और रहम की निगाह से उन्हें देखने लगी, वहीं उसी वक़्त वही अ़ज़ाब उस बदनसीब पर भी आ गया। लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर क़ौल पहला ही है यानी न उसे हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने अ़ज़ाबों की ख़बर की, न अपने साथ ले गये। यह यहीं बाक़ी रह गई और फिर हलाक हो गई। 'ग़ाबिरीन' के मायने भी बाक़ी रह जाने वाले के हैं। जिन बुज़ुर्गों ने इसके मायने हलाक होने वाले के किये हैं वे बतौर लुज़ूम के हैं, क्योंकि जो बाक़ी थे वे हलाक ही होने वाले थे।

हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम और उनके मुसलमान साथियों के शहर से निकलते ही अ़ज़ाबे ख़ुदा उन पर बारिश की तरह बरसने लगा। वह बारिश पत्थरों और ढेलों की थी, जो हर एक पर उसी के निशान लगे हुए आसमान से गिर रहे थे, अगरचे ख़ुदा के अ़ज़ाबों को बेइन्साफ़ लोग दूर समझ रहे हों लेकिन हक़ीक़त में

Maktaba E Ashraf

ऐसा नहीं। ऐ पैग़म्बर! अब आप ख़ुद देख लीजिए कि ख़ुदा की नाफ़रमानियों और रसूले ख़ुदा को झुठलाने वालों का अन्जाम क्या होता है।

इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि लूती फ़ेल करने वाले को ऊँची दीवार से गिरा दिया जाए। फिर ऊपर से पथराव करके उसको मार डालना चाहिए क्योंकि लूतियों को ख़ुदा की तरफ़ से यही सज़ा दी गई। और उलेमा-ए-किराम का फ़रमान है कि उसे रजम (यानी पत्थरों से मार-मारकर हलाक) कर दिया जाए चाहे वह शादीशुदा हो या बेशादीशुदा हो। इमाम शाफ़ई रह. के दो क़ौल में से एक यही है। इसकी दलील मुस्नद अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा की यह हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जिसे तुम लूती फ़ेल (यानी बदफ़ेली) करते पाओ उसे और उसके नीचे वाले (यानी जिसके साथ लवातत की जा रही है) को दोनों को क़त्ल कर दो। उलेमा की एक जमाअ़त का क़ौल यह है कि यह भी ज़िनाकारी की तरह है। शादीशुदा हों तो रजम, वरना सौ कोड़े। इमाम शाफ़ई रह. का दूसरा क़ौल भी यही है कि औ़रतों से इस क़िस्म की हरकत करना भी छोटी लवातत है, और उम्मत के उलेमा इस बात पर सहमत हैं कि यह हराम है, सिवाय एक शाज़ (ग़ैर-मशहूर) क़ौल के। और बहुत सी हदीसों में इसकी हुर्मत (हराम होने का ज़िक्र) मौजूद है। इसका पूरा बयान सूरः ब-क़रह की तफ़सीर में गुज़र चुका है।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ
جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ
وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

और हमने मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक वाज़ेह और खुली दलील आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो और लोगों का इन चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और रू-ए-ज़मीन में इसके बाद कि उसकी दुरुस्ती कर दी गई, फ़साद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है, अगर तुम तस्दीक़ करो। (85)

मदयन

मशहूर इतिहासकार हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि ये लोग मदयन बिन इब्राहीम की नस्ल से हैं। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम मेकेल बिन यश्जर के लड़के थे, उनका नाम सुरयानी ज़बान में बसरून था। यह भी याद रहे कि क़बीले का नाम भी मदयन था और उस बस्ती का नाम भी यही था। यह शहर मआ़न से होते हुए हिजाज़ वाले रास्ते में आता है। क़ुरआन की आयत "व लम्मा व-र-द मा-अ मदय-न" में शहर मदयन के कुएँ का ज़िक्र मौजूद है। उससे मुराद ऐका वाले हैं जैसा कि इन्शा-अल्लाह हम आगे बयान करेंगे। आपने भी तमाम रसूलों की तरह उन्हें तौहीद की और शिर्क से बचने की दावत दी, और फ़रमाया कि ख़ुदा की तरफ़ से मेरी नुबुव्वत की दलीलें तुम्हारे सामने आ चुकी हैं।

Maktab E Ashraf

ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) का हक़ बताकर फिर मख़्लूक़ (पैदा की और बनाई हुई चीज़) के हक़ की अदायेगी की तरफ़ रहबरी की, और फ़रमाया कि नाप-तौल में कमी करने की आ़दत छोड़ो। लोगों के हुक़ूक़ न मारो। यह ख़ियानत है कि कहो कुछ और दो कुछ। अल्लाह का फ़रमान है:

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ......

बड़ी ख़राबी है इन नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए ....।

अल्लाह तआ़ला इस बुरी ख़स्लत से हर एक को बचाए। फिर हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम का और वअ़ज़ (नसीहत) बयान होता है। चूँकि आप बहुत उम्दा तरीक़े पर वअ़ज़ व नसीहत करते और दिलकश अन्दाज़ में अल्लाह के बन्दों को ख़िताब करते थे इसलिये आपको "ख़तीबुल-अम्बिया" कहा जाता था। उन पर बेशुमार अल्लाह की रहमतें और सलाम नाज़िल हों।

وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝	और तुम सड़कों पर (इस ग़रज़ से) मत बैठा करो कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को धमकियाँ दो और अल्लाह की राह से रोको, और उसमें कजी "यानी टेढ़ और कमी" की तलाश में लगे रहो। और उस हालत को याद करो जबकि तुम कम थे फिर अल्लाह तआ़ला ने तुमको ज़्यादा कर दिया, और देखो कि कैसा अन्जाम हुआ फ़साद करने वालों का। (86) और अगर तुम में से बाज़े उस हुक्म पर जिसको देकर मुझे भेजा गया है, ईमान लाए हैं, और बाज़े ईमान नहीं लाए हैं तो ज़रा ठहर जाओ यहाँ तक कि हमारे दरमियान में अल्लाह तआ़ला फ़ैसला किए देते हैं, और वह सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर हैं। (87)

कुछ नसीहतें

फ़रमाते हैं कि लोगों के रास्ते न रोको, कि डाका डालने और लूटने की नीयत से बैठ गये। जो निकला डरा धमकाकर उसका माल छीन लिया। चुंगी वसूल कर ली। मेरे पास हिदायत हासिल करने के लिए जिसने आना चाहा उसे डराकर रोक दिया। ईमान वालों को ख़ुदा की राह पर चलने में रोड़े अटका दिये। राहे ख़ुदा को टेढ़ा कर देना चाहा। इन तमाम बुराईयों से बचो। यह भी हो सकता है बल्कि ज़्यादा ज़ाहिर यही है कि हर रास्ते पर न बैठने की हिदायत से तो क़त्ल व ग़ारत से रोकना मुराद हो जो उनकी आ़दत थी, और राहे हक़ से मोमिनों को न रोकने की हिदायत की हो।

तुम अल्लाह के उस एहसान को याद करो कि गिनती में क़ुव्वत में तुम कुछ न थे, बहुत ही कम थे,

Maktab E Ashraf

उसने अपनी मेहरबानी से तुम्हारी तादाद बढ़ा दी और तुम्हें ज़ोरावर (ताक़तवर और बहादुर) बना दिया। रब की इस नेमत का शुक्रिया अदा करो, इबरत (सबक़ लेने) की आँखों से उनका अन्जाम देख लो, जो तुमसे पहले अभी अभी गुज़रे हैं। जिनके ज़ुल्म व जब्र की वजह से जिनकी बद-अमनी और फ़साद की वजह से रब के अज़ाब उन पर टूट पड़े। वे ख़ुदा की नाफ़रमानियों में से रसूलों के झुठलाने में मशग़ूल रहे, दलेर बन गये, जिसके बदले में ख़ुदा की पकड़ उन पर नाज़िल हुई। आज उनकी एक आँख झपकती हुई बाक़ी न रही, भेजा निकल गया, सत्यानास हो गया।

देखो मैं तुम्हें साफ़ बेलाग एक बात बतला दूँ। तुममें से एक गिरोह मुझ पर ईमान ला चुका है और एक गिरोह ने मेरा इनकार और बुरी तरह मुझसे कुफ़्र किया है। अब तुम ख़ुद ही देख लोगे कि मददे ख़ुदा किसका साथ देती है और ख़ुदा की नज़रों में कौन गिर जाता है। तुम रब के फ़ैसले के मुन्तज़िर रहो वह सब फ़ैसले करने वालों से अच्छा और सच्चा फ़ैसला करते हैं। तुम ख़ुद देख लोगे कि ख़ुदा वाले कामयाब होंगे और अल्लाह के दुश्मन नाकाम और परेशान होंगे।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से पारा नम्बर आठ की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

पारा नम्बर नौ

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ○ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ○

उनकी क़ौम के घमंडी सरदारों ने कहा कि ऐ शुऐब! हम आपको और आपके साथ जो ईमान वाले हैं उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में फिर आ जाओ, (शुऐब अ़लैहि. ने) जवाब दिया कि क्या (हम तुम्हारे मज़हब में आ जाएंगे) अगरचे हम उसको (समझ की दलील से) नापसन्द और बुरा ही समझते हों? (88) हम तो अल्लाह पर बड़ी झूठी तोहमत लगाने वाले हो जाएँ अगर (ख़ुदा न करे) हम तुम्हारे मज़हब में आ जाएँ, (ख़ास कर) इसके बाद कि अल्लाह तआ़ला ने हमको उससे निजात दी हो, और हमसे मुम्किन नहीं कि उसमें (यानी तुम्हारे मज़हब में) फिर आ जाएँ, लेकिन हाँ यह कि अल्लाह ही ने जो कि हमारा मालिक है हमारे मुक़द्दर (में) किया हो। हमारे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। हम अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा रखते हैं, ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी (इस) क़ौम के बीच हक़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दीजिए, और आप सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाले हैं। (89)

सरकशी और दुश्मनी का इबरतनाक अन्जाम

कुफ़्फ़ार अपने नबी शुऐब अ़लैहिस्सलाम के साथ और उस ज़माने के मुसलमानों के साथ जिस बुरे सुलूक के साथ पेश आये और जिस तरह शुऐब अ़लैहिस्सलाम को और मोमिनों को डराया धमकाया, कि या तो हमारी बस्ती छोड़ दो या फिर यह कि हमारा मज़हब इख़्तियार करो, और हमारे साथ वफ़ा का मामला करो। इन्हीं सब बातों को अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमा रहे हैं। यह ख़िताब बज़ाहिर तो रसूल से है लेकिन ख़िताब का असल रुख़ उम्मत की तरफ़ है। शुऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के घमंडियों ने कहा था कि ऐ शुऐब! हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को बस्ती से निकाल देंगे या यह कि फिर तुम्हें हमारी मिल्लत (तरीक़े और दीन) में वापस आना पड़ेगा। शुऐब अ़लैहिस्सलाम कहते हैं कि क्या तुम ऐसा करना चाहते हो अगरचे हमें शिर्क इख़्तियार करना नापसन्द हो? अगर हम तुम्हारी मिल्लत में आ जाएँ और तुम्हारे ही नज़रियों को अपना लें तो हम ख़ुदा पर बड़ा ज़बरदस्त बोहतान लगाएँगे कि इन बुतों को ख़ुदा का शरीक ठहराएँ। इस तरह कुफ़्फ़ार की बात मानने और उनकी राह पर आने से नफ़रत ज़ाहिर की जा रही है। हम से तो यह न

Maktab E Ashraf

होगा कि हम मुश्रिक बन जाएँ। हाँ ख़ुदा ही हमें भटकने दे तो और बात है।

यहाँ भी बात का दारोमदार ख़ुदा तआ़ला ही को क़रार दिया जा रहा है। क्योंकि उसको आगे की हर-हर बात मालूम है। हम जो इख़्तियार करते हैं और जो इख़्तियार नहीं करते, सारे मामलात में अल्लाह ही पर भरोसा रखते हैं। ऐ ख़ुदा! हमारी इस क़ौम और हमारे बीच हक़ बात को ज़ाहिर फ़रमा दे और हमें उन पर फ़तह इनायत फ़रमा। तू ख़ैरुल-फ़ातिहीन है, ख़ैरुल-हाकिमीन है, ऐसा आ़दिल व इन्साफ़ करने वाला है कि ज़र्रा भर भी ज़ुल्म नहीं करता।

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ○ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ○ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ○	और उनकी क़ौम के (उन्ही ज़िक्र किए गए) काफ़िर सरदारों ने कहा कि अगर तुम शुऐब की राह पर चलने लगोगे तो बेशक बड़ा नुक़सान उठाओगे। (90) पस उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा, सो अपने घर में (औंधे के औंधे) पड़े रह गये। (91) जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था (उनकी यह हालत हो गई कि) जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था वही घाटे में पड़ गये। (92)

घाटे में पड़ना बदबख़्त क़ौम ही का हिस्सा है

इरशाद है कि उनका कुफ़्र, सरकशी और गुमराही किस शिद्दत की है, और हक़ की मुख़ालफ़त उनके दिलों में किस क़द्र जिबिल्ली और फ़ितरी बन गई है। इसलिये उन्होंने आपस में क़समें खा लीं और अ़हद कर लिया कि देखो अगर तुमने शुऐब की बात मान ली तो बड़े ख़सारे (नुक़सान और घाटे) में रहोगे। उनके इस पक्के इरादे के बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इस अ़हद व इरादे के सबब उन पर एक ऐसा ज़लज़ला भेजा गया कि वे अपने घरों में धरे के धरे रह गये और यह सज़ा थी इस बात की कि शुऐब अ़लैहिस्सलाम को उन्होंने बिला वजह डराया, उन्हें वतन से निकालने की धमकी दी जैसा कि सूरः हूद में ज़िक्र है कि "जब हमारा अ़ज़ाब उन पर आ पहुँचा तो हमने शुऐब को और उनके साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया। और उन ज़ालिमों को एक ऐसी कड़क ने आ पकड़ा कि अपने घरों में ही बैठे के बैठे रह गये और फ़ना हो गये" इन दोनों आयतों में मुनासबत (ताल्लुक़ और जोड़) यह है कि उन काफ़िरों ने जब "अ सलातु-क तअ्मुरु-क...." कहकर अपमान किया तो एक ज़बरदस्त चीख़ ने उन्हें हमेशा के लिये ख़ामोश कर दिया।

सूरः शुअ़रा में अल्लाह पाक वाक़िआ़ यूँ बयान फ़रमाता है कि जब उन्होंने नबी को झुठलाया तो बादल से उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ। उसकी वजह यह थी कि उन्होंने मुतालबा किया था कि ऐसा है तो हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो। चुनाँचे बताया गया कि उन्हें आसमानी अ़ज़ाब आ पहुँचा और उन पर तीन अ़ज़ाब जमा हो गये- एक तो आसमानी अ़ज़ाब कि बादल से आग की चिंगारियाँ और शोले गिरने लगे, फिर आसमान से एक बिजली और कड़क पैदा हुई और उनके क़दमों तले ज़मीन से एक शदीद ज़लज़ला

पैदा हुआ, कि उनकी जानें निकल गईं और बेजान जिस्म बनकर रह गये और अपने घरों में ढेर हो गये। गोया कभी उस बस्ती में बसे ही नहीं थे (यानी बस्तियाँ खंडर बन गयीं)। हालाँकि वे रसूल को देस-निकाला दे रहे थे, अब मुक़ाबले के तौर पर उन्हीं के अलफ़ाज़ को अल्लाह पाक दोहराता है कि जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था वही ख़सारे (घाटे) में रहे।

उस वक़्त वह (यानी शुऐब अ़लैहि.) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुमको अपने परवर्दिगार के अहकाम पहुँचा दिए थे, और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, फिर मैं उन काफ़िर लोगों पर क्यों रंज करूँ। (93)	فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝ ع

बेज़ारी

काफ़िरों के इस तरह कहने से शुऐब अ़लैहिस्सलाम वहाँ से चले गये और कह दिया कि ऐ क़ौम! मैंने ख़ुदा के पैग़ाम तुम्हें पहुँचा दिये थे। मैंने अपना हक़ अदा कर दिया था, इस पर भी मेरी ख़ैरख़्वाही (तुम्हारा भला चाहने) से तुमने फ़ायदा न उठाया तो तुम्हारे इस बुरे अन्जाम को देखकर मैं क्यों अफ़सोस करूँ और अपने को क्यों हलाक करूँ?

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर यह कि वहाँ के रहने वालों को (झुठलाने पर) हमने मोहताजी और बीमारी में पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाएँ। (94) फिर हमने उस बदहाली की जगह ख़ुशहाली बदल दी, यहाँ तक कि उनको ख़ूब तरक्क़ी हुई और (उस वक़्त अपनी उल्टी समझ की वजह से) कहने लगे कि हमारे बाप-दादा को भी तंगी और राहत पेश आई थी, तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया और उनको ख़बर भी न थी। (95)	وَمَآ اَرْسَلْنَا فِىْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِىٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

बदनसीब क़ौमें ख़ुदा के अ़ज़ाब की मुस्तहिक़ हैं

इस बात की ख़बर दी जा रही है कि पहली उम्मतें जिनकी तरफ़ अम्बिया भेजे गये उन्हें तकलीफ़ पहुँचाकर और ख़ुशियाँ देकर हर तरह हमने आज़मा लिया। यानी बदनी तकलीफ़ें, जिस्मानी बीमारियाँ और वह मुसीबत जो तंगदस्ती व हाजत की होती है, शायद कि वे हमारी तरफ़ रुजू करें, हमसे डरें और उस मुसीबत के दूर होने की दरख़्वास्त करें। मतलब यह कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सख़्तियों में मुब्तला किया

Maktab E Ashraf

ताकि हमारे सामने आजिज़ी पेश करें। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस पर भी हमने दुनियावी राहत और ख़ूब माल व दौलत अ़ता किया, उन्हें दौलतमन्द ख़ुशहाल बना दिया ताकि उन्हें आज़मायें। इसी लिये फ़रमाया कि शिद्दत और सख़्ती के बजाये नर्मी व राहत पैदा कर दी। बीमारी के बजाय सेहत व आ़फ़ियत दे दी। फ़क़्र (गुर्बत व तंगदस्ती) के बजाय दौलतमन्दी बख़्शी, ताकि वे शुक्र अदा करें और नेमत की नाशुक्री छोड़ दें, लेकिन उन्होंने ऐसा न किया, और उनके माल व औलाद को ख़ूब बढ़ाया।

इरशाद होता है कि ख़ुशी व आराम और परेशानी व मुसीबत दोनों चीज़ों से हमने उन्हें आज़माया ताकि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ झुकें। लेकिन न वे हमारे शुक्रगुज़ार हुए न सब्र व आ़जिज़ी इख़्तियार की, और कहने लगे कि हम तो मुसीबत व नुक़सान में फंस गये हैं। उसके बाद हमने उन्हें राहत व ख़ुशी दी तो कहने लगे कि यह राहत व आराम का आना-जाना और नफ़े व नुक़सान का होना हमारे बड़ों और पुर्खों के ज़माने से चला आ रहा है, और हमेशा से यही दौर रहता है। ज़माना कभी ऐसा होता है कभी वैसा। इसी तरह हम भी कभी राहत में रहे, कभी मुसीबत में, यह कोई नई बात नहीं है। चाहिये था कि वे इस इशारे से ख़ुदा के अ़ज़ाब को ताड़ जाते और ख़ुदा की आज़माईश की तरफ़ उनका ज़ेहन जाता। लेकिन मोमिनों का हाल उनके उलट और विपरीत था। वे शादमानी और राहत के ज़माने में ख़ुदा का शुक्र अदा करते और नुक़सान व मुसीबत पर सब्र इख़्तियार करते, जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन के हाल पर बड़ा ताज्जुब है कि ख़ुदा का जो हुक्म भी उससे मुताल्लिक़ हो, उसमें उसके लिये ख़ैर का ही पहलू निकल आता है। अगर मुसीबत पहुँची और सब्र किया तो भी उस नुक़सान और मुसीबत के अन्दर नफ़ा ही रहा, और अगर ख़ुशी व राहत मिली और शुक्र किया तो भी मज़े में रहा। मोमिन तो वह है कि राहत व मुसीबत पहुँचे तो हर सूरत में इस नतीजे पर पहुँचे कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से राहत व मुसीबत देकर आज़माया जा रहा हूँ। हदीस में है कि मुसीबतें मोमिन को गुनाहों से पाक करती रहती हैं, और मुनाफ़िक़ की मिसाल गधे के जैसी है, जो नहीं जानता कि उस पर क्या लदा है और किस ग़र्ज़ से उससे काम लिया जा रहा है, और क्यों बाँधा गया और क्यों खोला गया।

चुनाँचे इसके बाद ही इरशाद होता है कि हमने उन्हें एक दम से अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया कि अ़ज़ाब आने का गुमान तक न था, जैसा कि हदीस में है कि अचानक की मौत मोमिन के लिये रहमत हो सकती है और काफ़िर के लिये हसरत व अफ़सोस की चीज़ है (यानी अगर बीमार होकर मरता तो हो सकता है कि ईमान की तौफ़ीक़ नसीब हो जाती, अचानक की मौत से यह संभावना भी जाती रही)।

और अगर उन बस्तियों के रहने वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी "यानी हराम कामों से बचते और एहतियात" करते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते, लेकिन उन्होंने तो (पैग़म्बरों को) झुठलाया, तो हमने (भी) उनके (बुरे) आमाल की वजह से उनको पकड़ लिया। (96) क्या फिर भी उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो	وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ

يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ۞ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۞ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ۞	गए हैं कि उन पर (भी) हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आ पड़े, जिस वक़्त वे (पड़े) सोते हों। (97) और क्या इन (मौजूदा) बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन-दोपहरी आ पड़े, जिस वक़्त कि वे अपने फ़ुज़ूल क़िस्सों में मशग़ूल हों। (98) हाँ तो क्या अल्लाह की इस (अचानक) पकड़ से बेफ़िक्र हो गये, सो (समझ लो कि) ख़ुदा तआ़ला की पकड़ से सिवाय उनके जिनकी शामत ही आ गई हो और कोई बेफ़िक्र नहीं होता। (99)

ع १२

ईमान की बरकतें

बस्ती वालों के कुफ़्र की ख़बर दी जा रही है, जिसकी तरफ़ पैग़म्बर भेजे गये थे जैसा कि फ़रमाया कि यह बस्ती वाले ईमान क्यों नहीं लाये कि उनका ईमान उनको नफ़ा देता। क़ौमे युनूस जब ईमान लाई थी तो हमने उन्हें दुनिया के रुस्वा करने वाले अ़ज़ाबों से बचा लिया और एक अ़रसे तक वे दुनिया की राहतों से लाभान्वित रहे, यानी सब के सब ने ईमान क़बूल नहीं किया सिवाय क़ौमे युनूस के, कि जब उन्होंने अ़ज़ाब देख लिया तो मोमिन हो गये जैसा कि फ़रमाया कि हमने उसको एक लाख से ज़्यादा इनसानों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा था।

इरशाद होता है कि अगर ये बस्ती वाले ईमान लाते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो हम आसमान व ज़मीन की बरकतें उन पर नाज़िल करते, यानी आसमान से बारिश और ज़मीन से खाने पीने की चीज़ें और पेड़-पौधे वग़ैरह उगाते। लेकिन उन्होंने झुठलाया, इसकी सज़ा में हमने भी उन्हें अ़ज़ाब का मज़ा चखाया। यानी रसूलों को झुठलाया तो उनके बुरे आमाल के सबब उन्हें अ़ज़ाब के शिकन्जे में कसा।

फिर अल्लाह पाक अपने अहकाम की मुख़ालफ़त और गुनाहों पर जुर्रत करने से उन्हें डराता है। क्या ये बस्ती वाले काफ़िर हमारे अ़ज़ाब व इबरत से महफ़ूज़ हो गये, वे सोते ही रहेंगे और रात ही रात में हमारा अ़ज़ाब उन्हें आ पहुँचेगा। या इस बात से वे सुरक्षित और बेफ़िक्र हो गये हैं कि दिन में किसी वक़्त अ़ज़ाब उन्हें घेरे और उस वक़्त वे अपने कारोबार और अपनी ग़फ़लत में लगे हुए हों? क्या इस बात से वे अमन में हो गये कि हमारा इन्तिक़ाम (बदला) किसी वक़्त भी आ पकड़ लेगा और वे उस वक़्त अपनी भूल और लापरवाही में होंगे (यानी अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है वह कभी भी कहीं भी पकड़ फ़रमा सकता है, ऐसे क़ादिर के सामने जुर्रत या लापरवाही का प्रदर्शन करना परले दर्जे की बेवक़ूफ़ी है)।

समझ लो कि कमबख़्त क़ौम के सिवा कोई ख़ुदा के अ़ज़ाब से बेफ़िक्र नहीं रह सकता, इसी लिये हसन बसरी रह. ने कहा है कि मोमिन नेकी करता है, नेक अ़मल करता है और फिर भी वह ख़ुदा से डरा हुआ रहता है। और फ़ाजिर (बदकार व गुनाहगार) गुनाहों का इर्तिकाब करता है और फिर भी वह अपने को महफ़ूज़ व सुरक्षित समझता है।

और इन (गुज़रे हुए) ज़मीन पर रहने वालों के बाद जो लोग (अब) ज़मीन पर उनकी जगह रहते हैं, क्या (इन ज़िक्र हुए वाक़िआत ने) उनको यह बात (अभी) नहीं बतलाई कि अगर हम चाहते तो उनको उनके जुर्मों के सबब हलाक कर डालते, और हम उनके दिलों पर बन्द लगाए हुए हैं, इससे वे सुनते नहीं। (100)	أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝

उनके दिलों पर बन्द लगे हुए हैं

इरशाद होता है कि जानते हो कि पहले के लोगों को हमने उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया था और अब ये ज़मीन के वारिस बने हैं और ज़मीन पर इन्हें बसाया गया है। लेकिन क्या यह बात अब भी इन पर स्पष्ट नहीं हुई कि अगर हम चाहें तो इन्हें भी अ़ज़ाब में मुब्तला कर दें। इन काफ़िरों ने अपने से पहले लोगों का चलन इख़्तियार कर रखा है, उन्हीं के जैसे आमाल कर रहे हैं, और ख़ुदा से सरकश बने हुए हैं। इस सरकशी (नाफ़रमानी) की सज़ा में हम उनके दिलों पर मुहर लगा देंगे कि फिर वे किसी अच्छी बात को न सुन सकें न समझ सकें। इसी तरह दूसरी जगह फ़रमाया है कि क्या इन्हें इस बात से इबरत (सीख) नहीं होती कि इससे पहले कितनी ही क़ौमें तबाह कर दी गई हैं कि वे अपने घरों में कैसे रहते बस्ते थे? क्या यह समझदारों के लिये इशारा नहीं है?

और फ़रमाया क्या इससे पहले तुम पुख़्ता इरादे के साथ दावा नहीं करते थे कि तुमको ज़वाल (ख़ात्मा और पतन) होगा ही नहीं, हालाँकि उनका ज़वाल हो गया और आज उन्हीं ज़ालिमों की जगह तुम लेते हो? और फ़रमाया कि इनसे पहले कितनी क़ौमें तबाह हो गईं कि आज उनका नाम व निशान तक नहीं, न उनकी कोई आवाज़ सुनाई देती है। और फ़रमाया "क्या ये काफ़िर नहीं देखते कि इनसे पहले कितनी क़ौमें यहाँ बादशाहत करती थीं कि वह हुकूमत व सल्तनत तुम्हें भी नसीब नहीं, और फिर आसमान से बारिश का अ़ज़ाब और ज़मीन के नीचे से सैलाब उबल पड़ा और वे सब के सब हलाक कर दिये गए। उसके बाद हमने दूसरी क़ौम को ला बसाया।

आ़द की क़ौम की तबाही का ज़िक्र करके फ़रमाता है कि अब सिर्फ़ उनके खंडर देखे जा सकते हैं। मुजरिमों का यही हश्र होता है, जिसमें आज हमने तुम्हें बसाया है इसमें कभी उनको बसाया था, उनको सुनने वाले कान, देखने वाली आँखें और समझने वाले दिल दिये थे, लेकिन उनके कानों, उनकी आँखों और उनके दिलों ने उन्हें कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुँचाया, क्योंकि वे ख़ुदा की आयतों का इनकार करने लगे और जो मज़ाक़ वे उड़ाते थे उसकी सज़ा पाई। तुम्हारी सरज़मीन के चारों तरफ़ ही कितनी बस्तियाँ उजड़ गईं और कितनी ही निशानियों का हेर-फेर हो गया। समझो शायद कि तुम कुछ इबरत पकड़ो।

एक जगह फ़रमाया कि उनसे पहले के लोगों ने रसूलों को झुठलाया तो उसका कैसा नतीजा देखना पड़ा, और तुम तो उनके दसवें हिस्से के बराबर भी क़ुव्वत नहीं रखते हो। और फ़रमाया कितनी बस्तियाँ उजड़ गईं, उनके घरों की छतें गिर गईं, चश्मे बेकार हो गये, बड़े-बड़े महल वीरान पड़े हैं। उन्होंने दुनिया में घूम-फिरकर क्यों नहीं देखा कि उन्हें समझने वाले दिल और सुनने वाले कान मिलते, क्योंकि आँखें अंधी

Maktab_e_Ashraf

Maktab E Ashraf

नहीं होती हैं बल्कि वे दिल अंधे होते हैं जो सीनों के अन्दर हैं। और फ़रमाया कि रसूलों के साथ मज़ाक़ किया गया, उन पर उसी मज़ाक़ का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ। ग़र्ज़ इस किस्म की बहुत सी आयतें हैं जो ख़ुदा के दुश्मनों के साथ इन्तिक़ाम (बदले) पर रोशनी डालती हैं और अल्लाह के वलियों के साथ एहसान व करम पर। चुनाँचे इसी सिलसिले में यह इरशाद होता है।

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۗ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ۝

उन (ज़िक्र हुई) बस्तियों के कुछ-कुछ क़िस्से हम आपसे बयान कर रहे हैं, और उन सबके पास उनके पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए थे, फिर जिस चीज़ को उन्होंने पहली (ही मर्तबा में एक बार) झूठा कह दिया, यह बात न हुई कि फिर उसको मान लेते। अल्लाह तआ़ला इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर बन्द लगा देते हैं। (101) और ज़्यादातर लोगों में हमने अ़हद को पूरा करना न देखा, और हम ने अक्सर लोगों को बेहुक्म ही पाया। (102)

बस्तियों के अफ़साने

नूह, हूद, सालेह, लूत, शुऐब (अ़लैहिमुस्सलाम) की क़ौमों का ज़िक्र करने के बाद कि वे तो हलाक कर दिये गये और मोमिन बचा लिये गये, और यह कि रसूलों के ज़रिये मोजिज़े और दलाईल पेश करके उनकी हुज्जत पूरी कर दी गई, इरशाद होता है कि ऐ मुहम्मद सल्ल! उन बस्तियों के हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं। उनके पास रसूलों ने खुली निशानियाँ पेश की थीं और हम तो रसूल भेजकर हुज्जत पूरी करने के बग़ैर अ़ज़ाब नहीं करते। ये उन बस्तियों के क़िस्से हैं कि जिनमें से कुछ तो क़ायम हैं और कुछ खंडर बने हुए हैं। यह ज़ुल्म हमने नहीं किया, उन्होंने अपनी जानों पर कर लिया है। वे आप ज़िम्मेदार हैं और वे क्या ईमान लाते जबकि उससे पहले उन्होंने झुठला दिया था।

यहाँ इस बात का सबब बयान किया जा रहा है कि वे ईमान लाने के हक़दार ही न रहे थे, क्योंकि उन्होंने अल्लाह की तरफ़ से भेजी गयी 'वही' को झुठलाया था। जैसा कि फ़रमाया- तुम क्या जानो ये तो मोजिज़े पेश करने पर भी ईमान न लायेंगे, हम उनके दिलों और आँखों को उलट देंगे, क्योंकि ये पहली बार भी ईमान नहीं लाये थे। इसी लिये यहाँ फ़रमाया कि "अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है, उनमें की अक्सर पहले गुज़री क़ौमों को अपने अ़हद व क़रार का पास ही नहीं। उनमें से अक्सर तो हमें फ़ासिक़ (बदकार और बुरे आमाल करने वाले) ही मिले, जो नेकी और फ़रमाँबरदारी से ख़ारिज हैं।

यह अ़हद वह है जो रोज़े अज़ल में उनसे लिया गया था और उसी पर वे पैदा किये गये, और वही बात उनकी फ़ितरत व नेचर में रखी गई। वादा यह था कि अल्लाह ही उनका रब और मालिक है, उसके सिवा कोई दूसरा ख़ुदा नहीं।

इसका उन्होंने इक़रार किया था, गवाही दी थी, लेकिन फिर इसकी मुख़ालफ़त करके अ़हद को उन्होंने

Maktab E Ashraf

पीठ के पीछे डाल दिया, और ख़ुदा के साथ दूसरों को भी शरीक करने लगे, जिसकी न कोई दलील है न हुज्जत, न अक़्ल की बात है न शरीअ़त की। सही और सलीम फ़ितरत तो इस बुत-परस्ती के ख़िलाफ़ है। शुरू से आख़िर तक तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम बुत-परस्ती (अल्लाह के अ़लावा दूसरी किसी चीज़ को पूजने) से रोकते रहे हैं। जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मैंने अपने बन्दों को तो बुत-परस्ती से अलग पैदा किया था, शयातीन आये और उनके सच्चे दीन से उन्हें भटका दिया। और मैंने जो हलाल किया था वह उन्होंने हराम कर लिया। सहीहैन में है कि हर मौलूद (पैदा होने वाला) अपनी फ़ितरते इस्लामिया पर पैदा होता है, लेकिन उसके यहूदी व ईसाई माँ-बाप उसको यहूदी व ईसाई बना डालते हैं या मजूसी (आग को पूजने वाला) बनाते हैं। अल्लाह तआ़ला अपनी पवित्र किताब में फ़रमाता है कि हमने तुमसे पहले जितने नबी भेजे सब "ला इला-ह इल्लल्लाहु" की तलक़ीन (हिदायत व तालीम) करते रहे। इरशाद है कि तुमसे पहले जो रसूल हमने भेजे उनसे हम पूछेंगे कि क्या ख़ुदा के सिवा कोई और भी इबादत और पूजा के क़ाबिल क़रार दिया गया था? और फ़रमाया हर क़ौम में हमने रसूल भेजे कि पूजा व इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की करो और शैतान की पूजा से बचो। इस क़िस्म की बहुत सी आयतें हैं। ऊपर की आयत के बारे में इब्ने कअ़ब कहते हैं कि 'अ़हद के दिन' में बन्दों ने जो अल्लाह के एक होने का इक़रार किया था वह अल्लाह तआ़ला के इल्म में है, इसलिये अल्लाह के इल्म की बिना पर वे ईमान लाने वाले नहीं, और यही होकर रहा कि दलाईल सामने आने के बावजूद ईमान न लाये। अगरचे अ़हद के दिन ईमान क़बूल किया था, लेकिन ख़ुदा जानता था कि ये नाख़ुशी (नागवारी) के साथ है। जैसा कि फ़रमाया कि अगर ये दोबारा दुनिया में भेजे जायें तो फिर भी वही बुतपरस्ती और शिर्क व नाफ़रमानी करने लगें, जिससे इनको मना कर दिया गया था।

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी दलीलें देकर फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा, सो उन लोगों ने उनका हक़ बिल्कुल अदा न किया, सो देखिए उन फ़सादियों और बिगाड़ करने वालों का क्या अन्जाम हुआ। (103)	ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

अल्लाह का दुश्मन फ़िरऔ़न

इरशाद होता है कि पहले पैग़म्बरों नूह, हूद, सालेह, लूत, शुऐब (अ़लैहिमुस्सलाम) के बाद हमने मूसा को अपनी स्पष्ट आयतें और निशानियाँ देकर फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजा। फ़िरऔ़न मिस्र का बादशाह था। लेकिन फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम ने इनकार और कुफ़्र किया, जैसा कि फ़रमाया- उन्होंने सरकशी के सबब इनकार किया है हालाँकि उनके दिल मानते हैं। यानी जिन लोगों ने अल्लाह की राह से रोक दिया है और रसूलों को झुठलाया। ऐ मुहम्मद! तुम ग़ौर करो कि हमने उन्हें कैसी सज़ा दी, और मूसा अ़लैहिस्सलाम की नज़रों के सामने हमने उन्हें ग़र्क़ कर दिया। देखो उन फ़साद व बिगाड़ पैदा करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम के अ़ज़ाब से मुताल्लिक़ बात किस उम्दा तरीक़े से बयान की गई है और मूसा अ़लैहिस्सलाम और मोमिनों के लिये कैसी तसल्ली व इत्मीनान-बख़्श है।

Maktab E Ashraf

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ حَقِيْقٌ عَلٰۤى اَنْ لَّاۤ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝	और मूसा ने फ़रमाया कि ऐ फ़िरऔन! मैं रब्बुल-आलमीन की तरफ़ से पैग़म्बर हूँ। (104) मेरे लिए (यही) मुनासिब है कि सिवाय सच के ख़ुदा की तरफ़ कोई बात मन्सूब न करूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी दलील भी लेकर आया हूँ। सो तू बनी इस्राईल को मेरे साथ भेज दे। (105) (फ़िरऔन ने कहा) अगर आप कोई मोजिज़ा लेकर आए हैं तो उसको पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं। (106)

तब्लीग़ और हिदायत व रहनुमाई

मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔन का मुनाज़िरा (बहस व गुफ़्तगू) होता है। फ़िरऔन के दरबार में और उसकी क़ौम क़िब्तियों के सामने स्पष्ट निशानियों का इज़हार होता है और दलाईल व हुज्जत पेश किये जाते हैं, कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से कहा कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से रसूल हूँ। मुझे उसने भेजा है जो हर चीज़ का ख़ालिक़ और मालिक है। मुझ पर लाज़िम है कि हक़ बात ही पेश करूँ। यानी मुझ पर वाजिब और हक़ है कि हक़ बात के सिवा दूसरी बात न कहूँ। मैं ख़ुदा की तरफ़ से क़तई (निश्चित) दलील लेकर तुम्हारी तरफ़ आया हूँ। मेरे साथ बनी इस्राईल को भेज दो, उन्हें अपनी क़ैद से आज़ाद कर दो, क्योंकि वे इस्राईल (यानी याक़ूब बिन इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम) नबी की नस्ल से हैं, उनकी औलाद हैं। तो फ़िरऔन ने कहा तुम्हारे रसूल होने के दावे को हम नहीं मानते, अगर तुम पैग़म्बर हो और कोई मोजिज़ा लेकर आये हो तो दिखाओ ताकि तुम्हारी बात की तस्दीक़ (पुष्टि) की जा सके।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ ع ۱۳	पस आपने (फ़ौरन) अपना अ़सा "यानी लाठी" डाल दिया, सो वह देखते ही देखते साफ़ एक अज़्दहा (बन गया)। (107) और अपना हाथ बाहर निकाल लिया, सो वह एकदम सब देखने वालों के सामने बहुत चमकता हुआ (हो गया)। (108)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मोजिज़ात

मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपना अ़सा (लाठी) सामने डाल दिया तो ख़ुदा की क़ुदरत से वह एक अज़्दहा बन गया और अपना मुँह फाड़कर फ़िरऔन की तरफ़ लपका। फ़िरऔन तख़्त से कूद पड़ा और मूसा अ़लैहिस्सलाम से चिल्लाकर कहने लगा कि मूसा! इसे रोक लो। आपने रोक लिया और वह फिर अ़सा बन

Mahtab E Ashraf

गया। हज़रत सुद्दी कहते हैं कि जब उसने मुँह फाड़ा तो उसका नीचे का जबड़ा ज़मीन पर और ऊपर का महल की दीवार पर था। जब वह फ़िरऔन की तरफ़ बढ़ा तो वह काँप उठा, कूदकर भागने लगा और चीख़ उठा कि ऐ मूसा इसको पकड़ लो। मैं तुम पर ईमान लाता हूँ और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ कर दूँगा। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसको पकड़ लिया और वह अ़सा (लाठी, डंडा) बन गया।

मूसा अ़लैहिस्सलाम जब फ़िरऔन के पास आये थे तो फ़िरऔन ने कहा मैं बताऊँ तुम कौन हो? मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा अच्छा बताओ। उसने कहा तुम वही तो हो कि हमारे पास ही बढ़े और पले, हम ही तुम्हें पालते रहे। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इसका जवाब दे दिया तो फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि इसको पकड़ लो। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह सुनकर फ़ौरन अपना अ़सा फेंक दिया, वह एक बड़ा सा अज़्दहा बनकर लहराने लगा और लोगों पर हमला करने लगा। लोगों में भगदड़ मच गई। इस हंगामे में पचास हज़ार आदमी मर गये, लोग कुचलकर मरने लगे, फ़िरऔन अपने महल में भाग गया। यह रिवायत बहुत ग़रीब है। वल्लाहु आलम

अब इरशाद होता है कि दूसरा मोजिज़ा मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह दिखाया कि अपनी क़मीज़ (कुर्ते) में हाथ डालकर जब बाहर निकाला तो वह बहुत ज़्यादा रोशन और चमकदार होकर निकला, कि उस पर नज़र नहीं ठहर सकती थी। उसकी रोशनी में कोई कमी और नुक़्स नहीं था और जब अपनी आस्तीन में वापस ले जाते तो वह फिर पहले जैसा हो जाता था।

फ़िरऔन की क़ौम में जो सरदार "यानी बड़े" लोग थे, उन्होंने कहा कि वाक़ई यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। (109) (ज़रूर) यह चाहता है कि तुमको तुम्हारे (इस) मुल्क से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मश्विरा देते हो? (110)	قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝

तोहमत लगाना और जादूगरी के इल्ज़ामात

जब उन लोगों का ख़ौफ़ ख़त्म हुआ और असली हालत पर आये तो फ़िरऔन ने अपनी हुकूमत के अहलकारों से कहा कि यह तो बड़ा ही माहिर जादूगर मालूम होता है। लोगों ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई और मश्विरे के लिये बैठे कि अब इस बारे में क्या किया जाये। उसके नूर को बुझाने, उसकी बात को दबाने और मूसा अ़लैहिस्सलाम पर लगाये गये झूठ और बोहतान को साबित करने के लिये क्या तदबीर की जाये। उन्हें इस बात का अन्देशा हो गया कि लोग उसके मोतक़िद (अनुयायी) होकर उसके जादू की तरफ़ माईल हो जायेंगे, जिससे मूसा का ग़लबा हो जायेगा और वह लोगों को उनकी सरज़मीन से निकाल बाहर करेगा। लेकिन जिस बात का अन्देशा उन्हें था उसी में मुब्तला होना पड़ा। जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि फ़िरऔन और हामान के वही ख़ौफ़ (आशंकायें और डर) सामने आया जो उन्हें था। और जब ये लोग मूसा के बारे में मश्विरा कर चुके तो एक राय पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया (यानी सब सहमत हो गये) जिसको अल्लाह तआ़ला यूँ बयान फ़रमाता है।

Maktab E Ashraf

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝	उन्होंने कहा कि आप इनको और इनके भाई को थोड़ी मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को भेज दीजिये (111) कि वे सब माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। (112)

झूठ के पुजारियों का धावा बोलना

सरदारों ने फ़िरऔन को मश्विरा दिया कि मूसा और उसके भाई को रोक लिया जाये और मुल्क भर के तमाम शहरों में आदमी भेज दिये जायें और मशहूर-मशहूर जादूगर जमा किये जायें। उस ज़माने में जादू का बहुत ज़ोर था। सब का यही वहम और गुमान हो गया कि मूसा का यह मोजिज़ा जादू और बाज़ीगरी था। चुनाँचे उन्होंने तमाम जादूगरों को जमा किया ताकि मूसा अ़लैहिस्सलाम की इस फ़नकारी का मुक़ाबला किया जाये जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़िरऔन की बात नक़ल फ़रमाई है, कि ऐ मूसा! तुम अपने जादू के ज़ोर से हमें हमारे मुल्क से निकाल बाहर करना चाहते हो। हम भी तुम्हारी तरह के जादू से तुम्हारा मुक़ाबला करेंगे। अब इम्तिहान और मुक़ाबले की कोई तारीख़ निर्धारित करो, उसके ख़िलाफ़ न तुम करो न हम। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा ईद के रोज़ सुबह के वक़्त सब लोग जमा किये जायें (मक़सद यह था कि उस दिन मजमा ज़्यादा होगा तो ज़्यादा लोगों तक हक़ की फ़तह का हाल पहुँचेगा)। अब इम्तिहान और मुक़ाबले की कई फ़रेब से भरी तदबीरें इख़्तियार कीं और आख़िरकार तयशुदा वक़्त आ गया। चुनाँचे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है:

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝	(चुनाँचे ऐसा ही किया गया) और वे जादूगर फ़िरऔन के पास हाज़िर हुए! कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब आए तो क्या हमको कोई (बड़ा) सिला मिलेगा? (113) (फ़िरऔन) ने कहा कि हाँ! (बड़ा इनाम मिलेगा) और (उसके अ़लावा यह कि) तुम क़रीबी और ख़ास लोगों में दाख़िल हो जाओगे। (114)

बातिल-परस्ती की एक और मिसाल

यहाँ उस क़रारदाद (समझौते) को बयान किया जा रहा है जो फ़िरऔन और जादूगरों के बीच हुई थी, जो मूसा अ़लैहिस्सलाम से मुक़ाबला करने के लिये बुलाये गये थे, कि अगर वे मूसा पर ग़ालिब आ जायेंगे तो उन्हें बड़ा इनाम दिया जायेगा, और उनको मुँह माँगी मुराद दी जायेगी, और उन्हें अपने ख़ास लोगों और साथ बैठने वालों में बना लिया जायेगा। जब फ़िरऔन से वादा ले लिया तो मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा:

Maktab E Ashraf

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِىَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ○ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ○	(उन जादूगरों ने) अर्ज़ किया, ऐ मूसा! चाहे आप डालिए और या हम ही डालें। (115) (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि (पहले) तुम ही डालो। जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो लोगों की नज़र-बन्दी कर दी, और उन पर हैबत ग़ालिब कर दी और एक (तरह का) बड़ा जादू दिखलाया। (116)

जादू यह था

यह मूसा अ़लैहिस्सलाम और जादूगरों का मुक़ाबला और जंग है। जादूगर कह रहे हैं कि ऐ मूसा या तो तुम पहले अपना हुनर दिखाओ या हम पहले दिखायें? मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा तुम ही पहले अपना शिगूफ़ा छोड़ो। मूसा अ़लैहिस्सलाम की इस कहने में मस्लेहत यह थी ताकि लोग पहले उन जादूगरों का तमाशा देख लें और सोच समझ लें और जादूगर अपनी बाज़ीगरी से फ़ारिग़ हो लें तो हक़ बात तलब और इन्तिज़ार के बाद वाज़ेह और स्पष्ट होकर उनके सामने आ जाये, क्योंकि कोई बात तलब के बाद ही दिल पर ज़्यादा कारगर होती है। चुनाँचे ऐसा ही हुआ।

फिर अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जब जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं तो लोगों की नज़र-बन्दी कर दी और यूँ दिखाई देने लगा कि जो कुछ ये दिखा रहे हैं हक़ीक़त में ऐसा ही मौजूद है, हालाँकि ये रस्सियाँ और लाठियाँ वास्तव और हक़ीक़त में लाठियाँ ही थीं। देखने वालों का सिर्फ़ वहम व ख़्याल था कि ये साँप हैं। चुनाँचे इरशाद होता है कि "उनके जादू से ऐसा मालूम हो रहा था कि वे चलते और रेंगते हैं। यह देखकर मूसा अ़लैहिस्सलाम पर दहशत तारी हो गई। हमने कहा डरो नहीं, ग़ालिब तुम ही रहोगे। अपने हाथ का अ़सा (लाठी, डंडा) तुम भी मैदान में फेंक दो, यह अज़्दहा बनकर इन सब साँपों को निगल जायेगा। यह जादू तो इनका फ़रेब है, जादूगर अपने तमाशे में कामयाब नहीं हो सकते।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि पन्द्रह हज़ार जादूगरों की सफ़बन्दी थी। हर जादूगर के साथ उसकी रस्सियाँ और लाठियाँ थीं। मूसा अ़लैहिस्सलाम अपने भाई को लेकर अ़सा (डंडा) टेकते हुए निकले, मैदान में आये, फ़िरऔ़न अपने तख़्त पर हुकूमत के सरदारों और अहलकारों के साथ बैठा हुआ था। जादूगरों ने सबसे पहले मूसा अ़लैहिस्सलाम की आँखों पर अपने जादू से बन्दिश कर दी, फिर फ़िरऔ़न और दूसरे लोगों की आँखों पर। अब हर जादूगर ने अपनी रस्सियाँ और लाठी डालीं। वे सब साँप बन गये, सारा मैदान साँपों से भर गया। एक पर एक रेंग रहे थे। सुद्दी रह. कहते हैं कि ये तीस हज़ार से ज़्यादा जादूगर थे, सबके साथ लाठी और अ़सा था। अ़वाम की नज़रबन्दी हो गई तो यह मन्ज़र देखकर सब डर गये। इब्ने अबी बिर्रा कहते हैं कि फ़िरऔ़न ने सत्तर हज़ार जादूगर बुलाये थे, सत्तर हज़ार रस्सियाँ और सत्तर हज़ार लाठियाँ साँप बने हुए रेंग रहे थे। इसी लिये अल्लाह पाक ने फ़रमाया किः

وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ

यानी उन्होंने बहुत बड़ा जादू बनाया।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۝ وَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝

और हमने मूसा को (वही के ज़रिये) हुक्म दिया कि आप अपनी लाठी डाल दीजिए। (सो लाठी का डालना था कि) उसने अचानक (अज़्दहा बनकर) उनके सारे बने- बनाए खेल को निगलना शुरू किया। (117) पस (उस वक़्त) हक़ (का हक़) होना ज़ाहिर हो गया, और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब (आता) जाता रहा। (118) पस वे लोग उस मौक़े पर हार गये और ख़ूब ज़लील हुए। (119) और वे जो जादूगर थे सज्दे में गिर गये। (120) (और पुकार-पुकारकर) कहने लगे कि हम ईमान लाये रब्बुल-आ़लमीन पर। (121) जो मूसा और हारून का भी रब है। (122)

हक़ की फ़तह, बातिल की शिकस्त

अल्लाह तआ़ला ने आज़माईश के इस ज़बरदस्त मैदान में मूसा अ़लैहिस्सलाम को अपनी 'वही' भेजी जिसने हक़ व बातिल (सही और ग़लत) में फ़र्क़ कर दिया। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने भी अपना अ़सा (डंडा) डाल दिया। देखते क्या हैं कि वह उन तमाम साँपों को निगले जा रहा है और एक भी उनका झूठा साँप न बचा। यह देखकर उन जादूगरों ने जान लिया कि यह जादू नहीं कोई आसमानी मदद है, ख़ुदा के काम हैं। चुनाँचे सबके सब ख़ुदा के आगे सज्दे में गिर पड़े और कहने लगे कि हम मूसा और हारून के ख़ुदा पर ईमान लाते हैं। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जब कामयाबी हासिल कर ली तो अपने अ़सा पर हाथ डाला, वह फिर अ़सा बन गया। जादूगर सज्दे में गिर पड़े और कहने लगे कि यह नबी न होता और जादूगर होता तो कभी हम पर ग़ालिब आ ही नहीं सकता। क़ासिम बिन अबी बिर्रा कहते हैं कि जादूगरों ने अपना सर सज्दे से उठाने से पहले ही जन्नत और दोज़ख़ को देख लिया।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

फ़िरऔन कहने लगा कि हाँ तुम उस पर (यानी मूसा पर) ईमान लाए हो इसके बग़ैर ही कि मैं तुमको इजाज़त दूँ? बेशक यह एक कार्रवाई थी जिस पर इस शहर में तुम्हारा अ़मल दरामद हुआ है ताकि तुम सब इस (शहर) के रहने वालों को इससे बाहर निकाल दो। सो (बेहतर है) अब तुमको हक़ीक़त मालूम हुई जाती है। (123) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ

Maktab E Ashraf

और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा, फिर तुम सब को सूली पर टाँग दूँगा। (124) उन्होंने जवाब दिया कि (कुछ परवाह नहीं) हम मरकर अपने मालिक ही के पास जाएँगे। (125) और तूने हममें कौनसा ऐब देखा सिवाय इसके कि हम अपने रब के अहकाम पर ईमान ले आये जब वे (अहकाम) हमारे पास आए। ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर सब्र का फ़ैज़ान फ़रमा और हमारी जान इस्लाम की हालत पर निकालिये। (126)	قَالُوْآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ○ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ط رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ○

ع ١٤

ईमान के बाद सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला ही का डर

जादूगर जब ईमान ला चुके और फ़िरऔ़न को अपने मक़सद में शिकस्त हो गई तो जादूगरों को धमकी दे रहा है कि आज मूसा को जो तुम पर ग़लबा मिला है दर असल यह तुम लोगों का आपसी समझौता और साज़िश थी, कि इस तरह हुकूमत पर ग़ालिब आकर इस मुल्क के असल लोगों को मुल्क से निकाल बाहर करना चाहते हो। यक़ीनन यह तुम सब का उस्ताद था जिसने तुम्हें जादू सिखाया था।

हर शख़्स जिसको ज़रा भी अ़क़्ले सलीम है समझ जायेगा कि फ़िरऔ़न का यह इल्ज़ाम इस बिना पर था कि बातिल (ग़ैर-हक़) के बातिल साबित हो जाने की वजह से वह परेशान और लाजवाब हो गया था। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने तो मद्यन से आते ही फ़िरऔ़न के पास पहुँचकर उसको इस्लाम की दावत दी थी और अपने स्पष्ट मोजिज़े दिखाकर रसूल होने की तस्दीक़ कर दी थी। उसके बाद फ़िरऔ़न ने अपने मुल्क के तमाम शहरों और समस्त इलाक़े में लोगों को भेज-भेजकर मिस्र के अलग-अलग जादूगरों को जो जमा किया था, जिनको उसने और उसकी क़ौम ने चुना था और उनसे बेहतरीन इनाम व सम्मान का वादा किया गया था। इसलिये उन्हें इस बात की बड़ी कोशिश थी कि किसी तरह मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ग़ालिब आ जायें और फ़िरऔ़न के पास तक़र्रुब (ख़ास दर्जा) हासिल कर लें। मूसा अ़लैहिस्सलाम तो किसी जादूगर से वाक़िफ़ नहीं थे, न उन्हें कभी देखा था, न उनसे मिले थे, और फ़िरऔ़न इस बात को भी जानता ही था मगर जाहिल अ़वाम की ज़ेहनियत (मानसिकता) को प्रभावित होने से बचाना चाहता था। जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न की क़ौम उसकी ताबेदार थी और उसके हम-ख़्याल बनी हुई थी, और वे लोग बड़ी ज़बरदस्त गुमराही में पड़े हुए थे जो फ़िरऔ़न के "मैं ही तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ" वाले दावे की तस्दीक़ करते थे।

हज़रत सुद्दी रह. कहते हैं कि मूसा अ़लैहिस्सलाम की मुलाक़ात जादूगरों के सरदार से हुई तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उससे कहा था कि अगर मैं ग़ालिब आ जाऊँ और तुम हार जाओ तो क्या मुझ पर ईमान लाओगे? और क्या यह तस्लीम कर लोगे कि मेरी पेश की हुई चीज़ ख़ुदा का मोजिज़ा होगी? तो जादूगर ने कहा था कि कल मैं ऐसा जादू पेश करूँगा कि कोई जादूगर उस पर ग़ालिब नहीं आ सकता। अगर तुम ग़ालिब आ गये तो मैं मान लूँगा कि तुम अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये पैग़म्बर हो। फ़िरऔ़न ने उनकी यह गुफ़्तगू सुन ली। इसी लिये साज़िश का इल्ज़ाम लगाया था कि तुम इसलिये जमा हुए थे कि हुकूमत पर

तुम्हें पूरा ग़लबा हासिल हो जाये, तुम मुल्क से बड़े सरदारों को निकाल देना चाहते हो और तख़्त पर ख़ुद क़ाबिज़ होने के इच्छुक हो। तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा कि मैं तुम्हें क्या सज़ा देने वाला हूँ। समझ लो कि मैं तुम्हारा दायाँ हाथ और बायाँ पाँव काट दूँगा या इसके विपरीत, फिर तुम सबको फाँसी पर लटका दूँगा, तुम्हारी लाशें दरख़्तों की टहनियों से बंधी और लटकी होंगी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि फाँसी और हाथ-पाँव काटने की सज़ा सबसे पहले फ़िरऔ़न ही की ईजाद की हुई है। जादूगर कहते हैं कि हम तो अब ख़ुदा के हो चुके, उसकी तरफ़ रुजू कर चुके। आज तुम हमें जिस अ़ज़ाब की धमकी दे रहे हो उससे ज़्यादा सख़्त ख़ुदा का अ़ज़ाब है, हम तुम्हारे अ़ज़ाब पर आज सब्र कर लेते हैं ताकि कल ख़ुदा के अ़ज़ाब से हमें छुटकारा मिल सके। इसी लिये बोल उठे कि "ऐ ख़ुदा! अपने दीन पर साबित क़दम रहने के लिये और फ़िरऔ़न के अ़ज़ाब से न डरने के लिये हमें सब्र इनायत फ़रमा और अपने नबी मूसा अ़लैहिस्सलाम की इत्तिबा में हमें दुनिया से मुसलमान उठा।" चुनाँचे फ़िरऔ़न से साफ़-साफ़ कह दिया कि तू जो कुछ हमारा बिगाड़ना चाहता है बिगाड़ ले। तू सिर्फ़ यही कर सकता है कि हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी को ख़त्म कर देगा। हम उसी पर ईमान लाते हैं जो हमारा सच्चा रब है ताकि वह हमारी पिछली ख़ताओं को माफ़ कर दे और जादू पेश करने पर मजबूर होना पड़ा है उससे दरगुज़र फ़रमाये। क्योंकि जो शख़्स ख़ुदा के पास काफ़िर बनकर हाज़िर होगा उसकी क़िस्मत में जहन्नम होगी, कि न ज़िन्दों में शुमार न मुर्दों में। और जो मोमिन और फिर नेकी करने वाला बनकर हाज़िर होगा उसको आख़िरत में बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे। चुनाँचे ये सब जादूगर सुबह के वक़्त तो काफ़िर जादूगर थे और शाम के वक़्त नेक और शहीद थे।

और फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उनकी क़ौम को यूँ ही रहने देंगे कि वे मुल्क में फ़साद करते फिरें, और वे आपको और आपके माबूदों को छोड़े रहें। (फ़िरऔ़न ने) कहा कि हम अभी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें और उनकी औ़रतों को ज़िन्दा रहने दें, और हमको उनपर हर तरह का ज़ोर है। (127) मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ख़ुदा तआ़ला का सहारा रखो और मुस्तक़िल "यानी जमे" रहो, (घबराओ मत) यह ज़मीन अल्लाह तआ़ला की है, अपने बन्दों में से जिसको चाहें इसका मालिक (व हाकिम) बना दें, और अख़ीर कामयाबी उन्हीं (लोगों) की होती है जो ख़ुदा तआ़ला से डरते हैं। (128) (क़ौम के लोग) कहने लगे कि हम तो (हमेशा) मुसीबत ही में रहे, आपके तशरीफ़ लाने से पहले भी और	وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ ۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ

Maktab-e-Ashraf

اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ○ع	आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी। (मूसा ने) फ़रमाया कि बहुत जल्द अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देंगे, और उनकी जगह तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देंगे, फिर तुम्हारे अ़मल का तरीक़ा देखेंगे। (129)

Maktabah Ashraf

फ़िरऔ़नियों का
बनी इस्राईल के बच्चों को ज़िबह करने का मन्सूबा

फ़िरऔ़न और उसकी जमाअ़त के आपसी मश्विरों की ख़बर दी जा रही है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिये उन लोगों के दिलों में कैसा कीना था। फ़िरऔ़न से उसके ख़ास और क़रीबी लोग कह रहे हैं कि क्या आप मूसा को यूँ ही छोड़ देंगे कि दुनिया में फ़साद मचाता फिरे और मुल्क में रहने वालों को फ़ितने में डाले और उनमें अपने ख़ुदा की तब्लीग़ करे? यह कैसी अ़जीब बात है। ये तो दूसरों को मूसा और मोमिनों के फ़साद उठाने से डरा रहे हैं हालाँकि यही लोग मुफ़सिद (ख़राबी और बिगाड़ फैलाने वाले) हैं, उन्हें ख़ुद अपनी ख़बर नहीं। बाज़ कहते हैं कि "व य-ज़्-र-क" का "वाव" 'और' के मायने में नहीं बल्कि हाल के मायने में है। मतलब यह हुआ कि क्या आप मूसा को इजाज़त दे देंगे कि फ़साद मचाता फिरे, जबकि हाल यह है कि उसने आपकी फ़रमाँबरदारी और आपके ख़ुदाओं की इबादत छोड़ दी है।

बाज़ ने इस 'वाव' को अ़ातिफ़ा कहा है। यानी क्या आप उसे छोड़ देंगे कि फ़साद मचाये और आपको और आपके ख़ुदाओं को छोड़ दे? बाज़ इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि फ़िरऔ़न भी पोशीदा तौर पर एक बुत की पूजा करता था और एक दूसरी रिवायत में है कि उसके गले में एक मूर्ती लटकी हुई थी कि उसको सज्दा करता था। इसी पर बिना इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि ये लोग जब किसी ख़ूबसूरत गाय को पालते थे तो फ़िरऔ़न उन्हें हुक्म देता था कि उसकी पूजा करें। इसी लिये सामरी ने एक गौसाला (बछड़ा) बनाया था जिसके अन्दर से आवाज़ निकलती थी। ग़र्ज़ यह कि फ़िरऔ़न ने अपने दरबारियों की दरख़्वास्त मन्ज़ूर कर ली और कहा कि उनकी नस्ल को ख़त्म करने के लिये हम उनके बेटों को क़त्ल कर दिया करेंगे और लड़कियों को ज़िन्दा रहने देंगे। इस क़िस्म का यह दूसरा ज़ुल्म था और इससे पहले भी मूसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले उसने ऐसा ही किया था ताकि मूसा अ़लैहिस्सलाम का वजूद ही दुनिया में न आने पाये। और वाक़े हुआ उसके विपरीत जो फ़िरऔ़न चाहता था कि मूसा अ़लैहिस्सलाम आख़िरकार ज़िन्दा बच रहे। दोबारा उसने ऐसा ही इरादा किया जबकि बनी इस्राईल को ज़लील करना और उन पर ग़ालिब आना चाहता था। यहाँ भी उसकी ख़्वाहिश पूरी नहीं हुई, अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम को इज़्ज़त दी और फ़िरऔ़न को ज़लील किया, और उसको और उसके लश्कर को ग़र्क़ कर दिया।

जब फ़िरऔ़न बनी इस्राईल के साथ बुराई करने का पक्का इरादा कर चुका तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा कि सब्र करो और अल्लाह ही से मदद माँगो। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनसे अन्जाम के अच्छा होने का वादा किया और यह कि मुल्क तुम्हारा हो जायेगा, ज़मीन अल्लाह तआ़ला की है वह जिसको चाहे मुल्क की बादशाहत सौंपे और अच्छा अन्जाम परहेज़गारों और अल्लाह से डरने वालों ही के लिये है।

Maktab_E_Ashraf

मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथियों ने कहा कि आपके आने से पहले भी हमें बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें दी गई हैं और आपके आने के बाद भी आप देख रहे हैं कि किस तरह ज़लील किया जा रहा है। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उन्हें मौजूदा स्थिति और पेश आने वाले हालात पर होशियार करते हुए फ़रमाया कि बहुत जल्द अल्लाह पाक तुम्हारे दुश्मन को हलाक करने वाला है। इस आयत के ज़रिये उन्हें नेमतों पर शुक्र गुज़ारी के लिये उभारा जा रहा है।

और हमने फ़िरऔ़न वालों को क़हत-साली (अकाल) में मुब्तला किया, और फलों की कम पैदावारी में ताकि वे (हक़ बात को) समझ जाएँ। (130) सो जब उनपर ख़ुशहाली आ जाती तो कहते कि यह तो हमारे लिए होना ही चाहिए, और अगर उनको कोई बदहाली पेश आती तो मूसा और उनके साथियों की नहूसत बतलाते। याद रखो कि उनकी नहूसत अल्लाह तआ़ला के इल्म में है, लेकिन उनमें अक्सर लोग (अपनी बेतमीज़ी की वजह से) नहीं जानते थे। (131)	وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ٥ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ٥

कुफ़्र की नहूसत

हमने आले फ़िरऔ़न को क़हत (सूखे और अकाल) में मुब्तला करके आज़माना चाहा। उनकी खेतियों में ग़ल्ला नहीं हुआ और दरख़्तों पर फल नहीं आये। खजूर के पेड़ में एक ही खजूर लगती थी ताकि वे कुछ इबरत हासिल करें। जब ये ख़ूब सरसब्ज़ रहते थे, ग़ल्ला मौजूद होता था तो कहते थे कि हम तो इसके हक़दार ही थे। यह हमारा अपना हक़ है, हम कैसे कामयाब न होते। और अगर क़हत हो जाता भूखों मरने लगते तो कहते कि यह मूसा और उसके साथियों की नहूसत है। हालाँकि यह नहूसत तो ख़ुद उनकी अपनी क़िस्मत की बात है। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु लफ़्ज़ 'ताइर' से मुसीबतें मुराद लेते हैं। नहूसत के इस असली सबब को लोग समझते नहीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु "अल्लाह के पास से" से "अल्लाह की तरफ़ से" मुराद लेते हैं।

और (यूँ) कहते थे (चाहे) कैसी ही अ़जीब बात हमारे सामने लाओ, कि उसके ज़रिये से हमपर जादू चलाओ, (जब भी) हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे। (132) फिर हमने उनपर तूफ़ान भेजा और टिड्डियाँ और घुन का कीड़ा और मेंढक और ख़ून, कि ये सब खुले-खुले मोजिज़े थे, सो वे तकब्बुर करते रहे, और वे	وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ٥ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۟

Maktaba E Ashraf

فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ○ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَ لَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ○ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ○	लोग कुछ थे ही जराईम- पेशा। (133) और जब उनपर कोई अ़ज़ाब आता तो (यूँ) कहते कि ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से दुआ़ कर दीजिए, जिसका उसने आपसे अ़हद कर रखा है। अगर आप इस अ़ज़ाब को हमसे हटा दें तो हम ज़रूर आपके कहने से ईमान ले आएँगे और हम बनी इस्राईल को भी (रिहा करके) आपके साथ कर देंगे। (134) फिर जब उनसे उस अ़ज़ाब को एक ख़ास वक़्त तक कि उस तक उनको पहुँचना था हम हटा देते तो वे फ़ौरन ही अ़हद तोड़ने लगते। (135)

अल्लाह के अ़ज़ाब का न टूटने वाला सिलसिला

फ़िरऔन की क़ौम की अकड़ व सरकशी की ख़बर दी जा रही है कि उन्हें कैसा हक़ से बैर और बातिल (ग़ैर-हक़) पर इसरार (ज़िद और हठ) था कि वे यह भी कहने लगे कि अगर मूसा कोई निशानी बताये जिसके ज़रिये हम पर जादू कर दे तो भी हम उस पर ईमान लाने वाले नहीं। हम न उसकी दलील को क़बूल करेंगे, न उस पर न उसके मोजिज़े पर ईमान लायेंगे। चुनाँचे अल्लाह पाक फ़रमाता है कि "हमने उन पर तूफ़ान भेजा" तूफ़ान के मायने में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं "बारिश की अधिकता जो ग़र्क़ कर दे या खेतों और बाग़ों को नुक़सान पहुँचाये, या यह कि आ़म वबा"। मुजाहिद रह. कहते हैं कि सैलाब और ताऊन। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तूफ़ान यानी मौत। एक दूसरी रिवायत में है "ख़ुदा का अचानक का और आसमानी अ़ज़ाब" जैसा कि फ़रमायाः

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ.

यानी ख़ुदा का नागहानी (अचानक का) अ़ज़ाब उनके सोते हुए उन्हें आ पहुँचा।

"जराद" यानी टिड्डी जो एक मशहूर पक्षी है जिसका खाना हलाल है। सहीहैन की हदीस में है अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा कहते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सात ग़ज़वात (लड़ाईयों) में शरीक रहे हैं और हर वक़्त जराद (टिड्डी) खाने का मौक़ा मिला। इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया दो मुर्दार और दो ख़ून हमारे लिये हलाल हैं- एक मछली और दूसरी टिड्डी, कि ये मरी हुई भी हों तो जायज़ हैं। और ख़ून में दो जमे हुए ख़ून यानी तिल्ली और कलेजी। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अक्सर जानदार जो दर हक़ीक़त ख़ुदा का लश्कर हैं जिनको न मैं खाता हूँ न दूसरों के लिये हराम कहता हूँ बल्कि वे हलाल हैं अगरचे मैं न खाऊँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के न खाने का सबब यह है कि आपको पसन्द नहीं था। जैसे जानवर 'गोह' कि आपको उसका खाना पसन्द नहीं था, लेकिन दूसरों को इजाज़त दे रखी थी

(गोह का खाना मक्रूह है)।

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम टिड्डी और गोह और गुर्दे नहीं खाते थे, मगर यह कि इसको हराम नहीं कहा। टिड्डी से इसलिये बचते थे कि वह ख़ुदा का एक अ़ज़ाब है, जिस तरह टिड्डीदल गुज़र जाता है, खेत के खेत बरबाद हो जाते हैं। गुर्दे और मसानों से इसलिये परहेज़ था कि यह पेशाब से क़रीब के अंग हैं। और गोह इसलिये कि ग़ालिबन यह कोई अ़ज़ाब से शक्ल बिगड़ी हुई उम्मत है। फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि यह रिवायत भी ग़रीब है। मैंने इसलिये इसको नक़ल किया है कि इससे उसके परहेज़ की वजह पर रोशनी पड़े।

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु टिड्डी को बड़े शौक़ से खाते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से टिड्डी के बारे में पूछा गया कि क्या यह हलाल है? तो फ़रमाया काश दो एक लपें टिड्डियाँ मिल जातीं तो हम बड़े मज़े से खाते। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. की पाक बीवियाँ तबाक़ भर-भरकर टिड्डी तोहफ़े के तौर पर भेजा करती थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मरियम बिन्ते इमरान अ़लैहस्सलाम ने ख़ुदा से दुआ़ की थी कि मुझे ऐसा गोश्त खिला जिसमें ख़ून न हो, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें टिड्डी खिलाई। मरियम ने कहा ऐ ख़ुदा! परवरिश के बग़ैर भी इसको दे और बग़ैर आवाज़ और शोर के इसको एक दूसरे के पीछे रख। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि टिड्डी को न मारो कि यह ख़ुदा का एक ज़बरदस्त लश्कर है। यह हदीस बहुत ग़रीब है।

'फ़-अर्सल्ना' वाली आयत के बारे में मुजाहिद रह. कहते हैं कि ये अ़ज़ाब इसलिये हैं कि पिछले ज़माने में ये दरवाज़ों की कीलें खा जाते थे और लकड़ी छोड़ देते थे। इमाम औज़ाई कहते हैं कि मैं जंगल की तरफ़ निकला था कि अचानक एक टिड्डीदल देखा कि ज़मीन व आसमान पर छाया हुआ है और एक आदमी उस टिड्डीदल के अन्दर है और वह हथियारबन्द है, और जिस तरफ़ अपने हाथ से इशारा करता और धकेलता है तो टिड्डियाँ हट जाती हैं और वह बार-बार कहता जाता है कि दुनिया और जो कुछ उसमें है सब बातिल है बातिल है। क़ाज़ी शुरैह से टिड्डी के बारे में पूछा गया तो कहा, ख़ुदा इसे बरबाद करे इसमें सात ताक़तवर चीज़ों की शान है- इसका सर तो है घोड़े का, गर्दन है बैल की, सीना है शेर का, बाज़ू हैं गधे के, पाँव हैं ऊँट के, दुम है साँप की और पेट है बिच्छू का। अल्लाह तआ़ला के क़ौल 'उहिल्-ल लकुम् सैदुल-बहरि त तआमुहू मताअ़ल्लकुम....." के ज़िक्र के वक़्त (यानी सूरः मायदा की आयत 96 में) यह हदीस बयान की जा चुकी है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ हज या उमरे के लिये जा रहे थे कि हमें एक टिड्डीदल से सामना हुआ। हम उसे लकड़ियों से धकेल और मार रहे थे हालाँकि हम हालते एहराम में थे। हमने यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कही तो आपने फ़रमाया- एहराम की हालत में पानी के शिकार की मनाही नहीं।

हज़रत जाबिर से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब टिड्डी के लिये यूँ बददुआ़ की थी कि इलाही! छोटे बड़े सब जराद (टिड्डियों) को हलाक कर दे, उनके अण्डों को तबाह कर दे, उनकी नस्ल को ख़त्म कर दे और हमारा छीना हुआ रिज़्क़ उनके मुँह से ले ले। तो हज़रत जाबिर ने कहा या रसूलल्लाह! यह तो ख़ुदा का एक लश्कर है, आप इसकी नस्ल के ख़ात्मे की बददुआ़ दे रहे हैं? तो फ़रमाया कि ये समुद्र की मछलियों से पैदा होते हैं। ज़ियाद ने ख़बर दी है कि जिस शख़्स ने मछलियों से पैदा होते हुए इन्हें देखा है उसका बयान है कि मछली जब समुद्र के किनारे के क़रीब अण्डे देती है और किनारे का पानी सूख जाता

Maktab E Ashraf

है, धूप चमकती है तो अण्डों में से ये जराद निकल कर उड़ने लगते हैं।

अल्लाह के क़ौल "इल्ला उममुन् अमसालुकुम" के तहत हमने यह हदीस बयान कर दी है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़ार क़िस्म की मख़्लूक़ पैदा की है, छह सौ समुद्री है और चार सौ ख़ुश्की वाली। और जल्दी हलाक होने वाली मख़्लूक़ जराद है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जंग में हलाक हुए लोगों के सामने वबा भी कोई चीज़ नहीं और जराद के मुक़ाबले में लकड़ी की कोई हक़ीक़त नहीं। यह हदीस ग़रीब है।

'क़ुम्मल' के बारे में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि वे गेहूँ के अन्दर के कीड़े हैं। या यह कि वे छोटे-छोटे जराद हैं जिनके पर नहीं होते और उड़ते नहीं। मुजाहिद रह. कहते हैं कि 'क़ुम्मल' छोटे काले रंग के कीड़े हैं या मच्छरों को कहते हैं। या वह एक ऐसा कीड़ा है जो ऊँटों को चिमटी रहने वाली चिचड़ियों के जैसा है। रिवायत है कि जब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔ़न से कहा था कि बनी इस्राईल को मेरे साथ कर दो तो उस वक़्त ख़ुदा की तरफ़ से तूफ़ान आया हुआ था, वह बारिश थी कि मूसलाधार बरस रही थी। फ़िरऔ़न वाले समझ गये थे कि यह ख़ुदा का अ़ज़ाब है। कहने लगे ऐ मूसा! ख़ुदा से दुआ़ करके इस बारिश को बन्द करा दीजिये हम आप पर ईमान ले आयेंगे और बनी इस्राईल को भी आपके साथ कर देंगे। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की लेकिन न वे ईमान लाये न बनी इस्राईल को आज़ाद किया। उस साल बारिश की वजह से ख़ूब खेती हुई, ग़ल्ला और फल ख़ूब पैदा हुए, सब्ज़ियाँ उगीं, लोगों ने कहा बस हमारी यही आरज़ू थी, लेकिन ईमान न लाने की वजह से जराद उन पर मुसल्लत कर दिये गये। वे सब खेत खा गये, सब्ज़ियाँ तबाह कर दीं। वे लोग समझ गये कि अब कोई फ़सल बाक़ी नहीं रहेगी। उन्होंने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि इस अ़ज़ाब को हटा दीजिये हम ईमान लायेंगे। मूसा अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ से जराद ख़त्म हो गये लेकिन फिर भी ईमान न लाये और ग़ल्ला घरों में ख़ूब जमा करके रख लिया, और कहने लगे कि अब क्या डर है, ग़ल्ला बहुत सारा जमा किया हुआ मौजूद है कि देखते ही देखते गन्दुम के कीड़ों का अ़ज़ाब उन पर नाज़िल हुआ। अगर कोई पिसवाने के लिये दस जरीब पैमाने ग़ल्ला लेकर निकलता तो पिसने तक तीन जरीब ग़ल्ला भी न रहता। फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि यह 'क़ुम्मल' का अ़ज़ाब दूर करा दो हम आपकी बात सुनेंगे। लेकिन अ़ज़ाब दूर होने के बाद फिर भी सरकशी (नाफ़रमानी) की।

एक वक़्त मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔ़न से मिल रहे थे कि मेंढक की टर-टर सुनी गई। आपने फ़िरऔ़न से कहा कि तुम पर और तुम्हारी क़ौम पर यह क्या अ़ज़ाब है? उसने कहा इससे तो कोई अन्देशे की बात नहीं, लेकिन शाम भी न होने पाई थी कि लोगों के सारे जिस्म पर मेंढक कूदने लगे। कोई बात करने के लिये मुँह खोलता और मेंढक कूदकर मुँह में घुस जाता। फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की और अ़ज़ाब दूर होने पर ईमान न लाये। अब के ख़ून का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ, नहरों और बावलियों से पानी लाते हैं तो ख़ून बन जाता है, बरतनों में पानी रखते हैं तो ख़ून हो जाता है। फ़िरऔ़न से लोगों ने शिकायत की कि ख़ून के अ़ज़ाब में हम मुब्तला हैं। पीने को पानी नहीं मिलता। फ़िरऔ़न ने कहा तुम पर जादू कर दिया गया है, लोगों ने कहा यह किसने जादू किया होगा? हमारे बरतनों में ख़ून ही ख़ून भरा हुआ है। फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आकर दरख़्वास्त की और वादे किये गये लेकिन अब भी ईमान न लाये, न बनी इस्राईल को आज़ाद किया।

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जब जादूगर ईमान लाये और फ़िरऔ़न मग़लूब और नाकाम वापस हुआ तो फिर भी सरकशी और कुफ़्र से बाज़ न आया, तो लगातार एक के बाद एक उस पर परेशानियों का ज़हूर हुआ। क़हत (सूखे और अकाल) से साबक़ा पड़ा, बारिश का तूफ़ान आया, फिर जराद का अ़ज़ाब, फिर जूँ और कीड़ों का, फिर मेंढक और ख़ून ये निरंतर निशानियाँ ज़ाहिर हुईं। तूफ़ान आया, सारी ज़मीन दलदल हो गई, न हल चला सकते थे न कुछ बो सकते थे, भूख से तड़पने लगे। मूसा अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि अ़ज़ाब खुल जाये, लेकिन ईमान लाने के वादे को पूरा न किया। फिर जराद का अ़ज़ाब आया जो सारी खेती खा गये, दरवाज़ों की कीलें चाट गये, जिसकी वजह से उनके घर गिर पड़े। फिर जुओं का अ़ज़ाब आया। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि इस टीले की तरफ़ आओ। फिर मूसा ने ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से एक पत्थर पर लकड़ी मारी जिससे बेशुमार चिचड़ियाँ निकल पड़ीं, घरों में हर जगह फैल गईं, ग़िज़ा (खाने-पीने की चीज़ों) को चिमटने लगीं, न सो सकते थे न चैन ले सकते थे। फिर मेंढक का अ़ज़ाब आया। खानों में मेंढक, बरतनों में मेंढक, कपड़ों में मेंढक। फिर ख़ून का अ़ज़ाब आया, पानी के हर बरतन में बजाय पानी के ख़ून ही ख़ून। ग़र्ज़ कि विभिन्न और अनेक अ़ज़ाबों से दोचार होना पड़ा।

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- मेंढक को न मारा करो क्योंकि मेंढक का अ़ज़ाब जब क़ौमे फ़िरऔ़न पर भेजा गया था तो एक मेंढक आग के एक तन्दूर में ख़ुदा की रज़ा की ख़ातिर गिर पड़ा था। चुनाँचे मेंढकों का ठिकाना और रहने की जगह अल्लाह तआ़ला ने ठंडी चीज़ पर बनाई, यानी पानी का स्थान, और उनकी आवाज़ को तस्बीह क़रार दिया। ज़ैद बिन असलम "दम" (यानी ख़ून) के अ़ज़ाब से नक्सीर फूटने का अ़ज़ाब मुराद लेते हैं।

फिर हमने उनसे बदला लिया, यानी उनको दरिया में डुबो दिया, इस सबब से कि वे हमारी आयतों को झुठलाते थे, और उनसे बिल्कुल ही लापरवाही बरतते थे। (136) और हमने उन लोगों को जो कि बिल्कुल कमज़ोर ही शुमार किये जाते थे उस सरज़मीन 'यानी मुल्क' के पूरब-पश्चिम का मालिक बना दिया, जिसमें हमने बरकत रखी है। और आपके रब का नेक वादा बनी इस्राईल के हक़ में उनके सब्र की वजह से पूरा हो गया, और हमने फ़िरऔ़न को और उसकी क़ौम के तैयार किये और सजाये हुए कारख़ानों को और जो कुछ वे ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाते थे, सबको उलट-पलट कर दिया। (137)	فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِی الْیَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِیْنَ كَانُوْا یُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰی عَلٰی بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ یَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا یَعْرِشُوْنَ ۝

आख़िरी अ़ज़ाब और फ़िरऔ़न की हलाकत

फ़िरऔ़न की क़ौम को इसके बावजूद कि निरंतर निशानियाँ दिखाई गईं और एक के बाद दूसरा उन्हें

Maktaba Ashraf

कई अ़ज़ाब दिये गये, लेकिन उनकी सरकशी दूर न हुई। तो उन्हें दरिया में डुबो दिया गया जिसमें मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिये रास्ता बना दिया गया, वह उसमें उतर पड़े और उसको पार कर गये। बनी इस्राईल भी उनके साथ थे। फिर फ़िरऔ़न और उसका लश्कर भी उनका पीछा करते हुए उनके पीछे उतरा। जब वे बीच दरिया में हो गये तो पानी मिल गया और वे डूब गये। यह अल्लाह की निशानियों को झुठलाने और उससे ग़फ़लत बरतने का नतीजा था।

अल्लाह पाक ने ख़बर दी है कि फिर ख़ुदा ने फ़िरऔ़न की तमाम सरज़मीन को बनी इस्राईल के सुपुर्द कर दिया हालाँकि बनी इस्राईल को बहुत ही कमज़ोर समझा जाता था। जो कमज़ोर बने हुए ज़िन्दगी ग़ुलामी में गुज़ार रहे थे जैसा कि फ़रमाया "हम चाहते हैं कि उस क़ौम पर एहसान करें जो दुनिया में कमज़ोर समझी जाती है। हम उनको बादशाह और सरदार बनाना चाहते हैं, उन्हें अपनी ज़मीन का वारिस क़रार देंगे और जिस अ़ज़ाब से फ़िरऔ़न, हामान और क़ौमे फ़िरऔ़न को अन्देशा था वही उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करेंगे" और फ़रमाया कि वे कैसे बाग़ात खेतियाँ और बेहतरीन मक़ामात छोड़कर तबाह हो गये जिनमें वे बड़े मज़े से ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। हम अगर चाहते हैं तो इसी तरह किसी दूसरी क़ौम को सरदार और बादशाह बना देते हैं। हज़रत हसन बसरी रह. और हज़रत क़तादा पूरब व पश्चिम से मुल्के शाम (सीरिया) मुराद लेते हैं। ख़ुदा की मुबारक बात बनी इस्राईल के हक़ में पूरी हुई, क्योंकि उन्होंने मुसीबतों पर सब्र किया था। और ख़ुदा की वह बात और वादाः

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ٥ وَنُمَكِّنَ

لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ٥

है। कि हम इरादा कर रहे थे कि उन पर अपना एहसान करें जिनको ज़मीन में कमज़ोर देखा जा रहा था, और यह कि हम उनको ज़मीन के वारिस और सरदार बनायें और फ़िरऔ़न, हामान और उसके लश्कर को वह दिखायें जिसकी उनको आशंका थी। यानी अपने बाग़ात, महलों और मुल्क से बेदख़ल होने की।

وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ.

यानी फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम ने जो इमारतें और बाग़ात बना रखे थे और महल खड़े किये हुये थे, सब हमने तबाह कर दिये और उजाड़ दिये।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ٥ اِنَّ	**और हमने बनी इस्राईल को दरिया से पार उतार दिया, पस उन लोगों का एक क़ौम पर गुज़र हुआ जो अपने चन्द बुतों को लगे बैठे थे। कहने लगे कि ऐ मूसा! हमारे लिए भी एक (जिस्म वाला) माबूद ऐसा ही मुक़र्रर कर दीजिए, जैसे उनके ये माबूद हैं। आपने फ़रमाया कि वाक़ई तुम लोगों में बड़ी जहालत है। (138) ये**

Maktab E Ashraf

هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ०	लोग जिस काम में लगे हैं यह (अल्लाह की तरफ़ से भी) तबाह किया जाएगा और (अपने आप में भी) उनका यह काम महज़ बेबुनियाद है। (139)

सदियों का कुफ़्र व शिर्क फिर रंग लाया

बनी इस्राईल के जाहिल लोगों का मुतालबा बयान किया जा रहा है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जब दरिया को पार कर लिया और अल्लाह की यह अ़ज़ीम निशानी वे देख चुके तो उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जो बुतों को लिये बैठी थी। बाज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि वे किनआ़नी थे या क़बीला लख़्म के थे। गाय के जैसे जानवर का बुत बना रखा था। इसी लिये बाद में उसी के जैसे एक बछड़े की पूजा में वे मुब्तला हो गये और कहने लगे कि "ऐ मूसा! हमारे लिये एक ख़ुदा बना दीजिये जैसे कि इन लोगों के ख़ुदा हैं" मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा तुम बड़े ही जाहिल लोग हो, ख़ुदा की बड़ाई को भूल बैठे हो। वह तो ऐसी बातों से पाक और बरी है कि कोई उसका शरीक या उस जैसा हो सके। उनका मज़हब भी बातिल है और उनका अ़मल भी बातिल है।

बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहते हैं कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मक्के से हुनैन की तरफ़ जा रहे थे, रास्ते में कुफ़्फ़ार का एक बेरी का पेड़ था, जिस पर धरना जमाये बैठे हुये थे। अपने हथियार उस दरख़्त पर बाँध रखे थे, उस दरख़्त की इज़्ज़त व सम्मान करते थे। उस दरख़्त को 'ज़ाते अनवात' कहा जाता था। जब हम उस दरख़्त के पास पहुँचे जो बहुत हरा-भरा और अ़ज़ीमुश्शान था, तो हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि या रसूलल्लाह! एक 'ज़ाते अनवात' हमारे लिये भी मुक़र्रर कर दीजिये जैसा कि इन लोगों का है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! तुमने तो वह बात कही जो मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने मूसा से कही थी, कि ऐ मूसा! हमारे लिये भी एक ख़ुदा बना दीजिये जैसा कि इन लोगों का है। तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा था कि तुम बड़े ही जाहिल हो। इनका तरीक़ा और इनके आमाल सब झूठे और बातिल हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तुम भी उन्हीं के नक़्शे-क़दम (तरीक़े) पर चलना चाहते हो।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ० وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ	फ़रमाया कि क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी को तुम्हारा माबूद तजवीज़ कर दूँ? हालाँकि उसने तुमको तमाम दुनिया- जहान वालों पर बरतरी दी है। (140) और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔ़न वालों (के ज़ुल्म व तकलीफ़ पहुँचाने) से बचा लिया, जो तुमको बड़ी सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को (बड़ी संख्या में) क़त्ल कर डालते थे

Maktab E Ashraf

नِسَآءَكُمْ ۚ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ ع	और तुम्हारी औरतों को (अपनी बेगार और ख़िदमत के लिए) ज़िन्दा छोड़ देते थे। और इस (वाक़िए) में तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से बड़ी भारी आज़माईश थी। (141)

शुक्र के बजाय नेमत की नाशुक्री

मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल को अल्लाह की नेमतें याद दिला रहे हैं कि जिस अल्लाह ने तुम्हें फ़िरऔ़न की क़ैद और उसके ग़लबे से निजात दी और रुस्वाई व ज़िल्लत से छुटकारा दिया, यहाँ तरक़्क़ी व इज़्ज़त अ़ता की, तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे सामने बरबाद किया, उसके सिवा और कौन है जो इबादत के क़ाबिल हो? इसकी पूरी तफ़सील सूरः ब-क़रह में गुज़र चुकी है।

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِىْ فِىْ قَوْمِىْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝	और हमने मूसा से तीस रात का वायदा किया, और दस रात को उन (तीस रात) का पूरा करने वाला बनाया, सो उनके परवर्दिगार का वक़्त पूरी चालीस रात हो गया। और मूसा ने अपने भाई हारून से कह दिया था कि मेरे बाद मेरी क़ौम का इन्तिज़ाम रखना और इस्लाह करते रहना और बद-नज़्म 'यानी बिगाड़ व ख़राबी पैदा करने वाले' लोगों की राय पर अ़मल मत करना। (142)

अ़ज़ीमुश्शान इनाम

बनी इस्राईल पर एहसानों का ज़िक्र किया जा रहा है, कि तुमको हिदायत हासिल हुई, मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा से कलाम किया, उसने तौरात दी जिसमें अहकाम हैं और शरीअ़त की तमाम तफ़सीली बातें हैं। ख़ुदा तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम से तीस रातों का वादा किया था। मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उन दिनों रोज़ा रखा था। जब ये तीस दिन पूरे हुए तो अल्लाह तआ़ला ने मज़ीद हुक्म दिया कि चालीस दिन पूरे करें। अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि तीस दिन ज़ीक़ादा के और दस दिन ज़िलहिज्जा के थे। इस तरह ईद के दिन तक चालीस दिन पूरे हुए। उसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया और उसी दिन दीने मुहम्मदी भी कामिल हुआ। जैसा कि फ़रमाया आज मैंने तुम्हारा दीन कामिल कर दिया, अपनी नेमत तुम पर पूरी उतार दी और तुम्हारे लिये दीने इस्लाम पसन्द किया।

ग़र्ज़ यह कि जब मीयाद पूरी हो गई और मूसा अ़लैहिस्सलाम तूर पहाड़ की तरफ़ गये जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है "ऐ बनी इस्राईल! हमने तुमको दुश्मनों से निजात दी और तूर की तरफ़ सीधा बुलाया था। अब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जाते हुए अपने भाई को अपना जानशीन (उत्तराधिकारी)

बनाया और हालात को बेहतरीन रखने की वसीयत की ताकि ख़राबियाँ और बिगाड़ पैदा न हो। यह बात बतौर तंबीह और याद दिलाने के है, वरना हारून अ़लैहिस्सलाम ख़ुद नबी थे और दबदबे व जलाल वाले नबी थे।

وَلَمَّا جَآءَ مُوسٰى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِیْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ تَرٰىنِیْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ○	और जब मूसा हमारे (मुक़र्ररा) वक़्त पर आए और उनके रब ने उनसे (बहुत ही लुत्फ़ और इनायत की) बातें कीं, तो अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको अपना दीदार दिखला दीजिए कि मैं आपको एक नज़र देख लूँ। इरशाद हुआ कि तुम मुझको (दुनिया में) हरगिज़ नहीं देख सकते, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, सो अगर यह अपनी जगह बरक़रार रहा तो (ख़ैर) तुम भी देख सकोगे। पस उनके रब ने जब पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो (तजल्ली ने) उस (पहाड़) के परख़चे "यानी धज्जियाँ" उड़ा दिए और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े। फिर जब होश में आए तो अ़र्ज़ किया कि बेशक आपकी ज़ात पाकीज़ा (और बुलन्द) है, मैं आपकी जनाब में माज़िरत करता हूँ और सबसे पहले मैं उस पर यक़ीन करता हूँ। (143)

तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते

मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में ख़बर दी जा रही है कि जब मूसा अ़लैहिस्सलाम वादे के स्थान पर आये और आपको अल्लाह पाक से कलाम का शर्फ़ (सम्मान और गौरव) हासिल हुआ तो यह भी दरख़्वास्त की कि ऐ ख़ुदा! मैं तुझे देखना चाहता हूँ मुझे देखने का मौक़ा इनायत फ़रमा। अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि तुम हरगिज़ नहीं देख सकते। लफ़्ज़ 'लन' ने जो 'लन तरानी' में है, अक्सर उलेमा के लिये इश्काल पैदा कर दिया है। इसलिये कि 'लन' हमेशा की नफ़ी (मना करने) के लिये आया करता है। इस बिना पर मोतज़िला (एक फ़िर्क़ा है) ने दलील पकड़ी है कि दुनिया हो या आख़िरत में अल्लाह का दीदार नहीं हो सकता। और यह क़ौल कमज़ोर है क्योंकि इस बारे में मुतवातिर हदीसें मौजूद हैं कि मोमिनों को आख़िरत में ख़ुदा का दीदार होगा। जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया है:

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ.

इसमें मोमिनों को ख़ुशख़बरी दी गई है कि वे ख़ुदा तआ़ला को देख सकेंगे। फिर काफ़िरों के बारे में कहा है कि वे न देख सकेंगे। जैसा कि फ़रमाया:

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ.

Maktab E Ashraf

यानी बेशक काफ़िर लोग अपने रब से आड़ और पर्दे में होंगे।

यह भी कहा गया है कि यह नफ़ी (इनकार और मना) दुनिया के लिये है, न कि आख़िरत के लिये। इस तरह अब कलाम में मुताबक़त पैदा हो जाती है कि आख़िरत में अल्लाह का दीदार सही है और दुनिया में नहीं, और यह भी कहा गया है कि इस मक़ाम में यह कलाम बिल्कुल ऐसा है जैसा कि फ़रमायाः

لَاتُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَيُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ.

कि आँख उसका इहाता नहीं कर सकती और वह आँखों का इदराक करता है और वह बारीक-बीं और ख़बर रखने वाला है।

सूरः अन्आम में इस पर काफ़ी बहस गुज़र चुकी है कि पहली किताबों में है कि अल्लाह पाक ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा- ऐ मूसा! कोई ज़िन्दा, मरने से पहले मुझे नहीं देख सकता। खुश्क चीज़ें भी मेरी तजल्ली से फ़ना हो जाती हैं। इसी लिये फ़रमाया कि रब ने जब अपनी तजल्ली पहाड़ पर डाली तो वह रेज़ा-रेज़ा हो गया और मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर पड़े। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब अल्लाह तआला ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली की (उस वक़्त आपने अपनी उंगली से इशारा भी किया) तो वह रेज़ा-रेज़ा (टुकड़े-टुकड़े) हो गया। अबू इस्माईल ने यह कहते हुए हमें अपनी शहादत की उंगली से इशारा करते हुए बताया। इस हदीस की सनद में एक रावी का नाम मुब्हम (ग़ैर-स्पष्ट) है, बताया नहीं गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आयत "फ़-लम्मा तजल्ला रब्बुहू..." पढ़ते वक़्त अपने अंगूठे को अपनी छंगलिया के ऊपर के पोरे पर रखकर बताया कि इतनी सी तजल्ली के सबब पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो गया। हमीद ने साबित से कहा कि देखो इस तरह, चुनाँचे साबित ने अपना हाथ हमीद के सीने पर मारा और कहा इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है। अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की है तो क्या मैं इसको छुपाऊँगा। इमाम अहमद रह. ने भी इसी तरह रिवायत की है। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रब ने सिर्फ़ छंगलिया के बराबर तजल्ली की थी कि पहाड़ जल उठा और ख़ाक बन गया।

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. कहते हैं कि ज़मीन में धंस गया और धंसता जा रहा है, अब वह क़ियामत तक ज़ाहिर नहीं होगा। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब पहाड़ों पर तजल्ली हुई तो छह पहाड़ उड़ गये। तीन मक्का में आकर गिरे और तीन मदीने में। मदीने में उहुद है, वरक़ान है, रज़्वी है। और मक्के में हिरा है, सबीर है, सौर है। यह हदीस ग़रीब बल्कि मुन्कर है। तजल्ली से पहले तूर पहाड़ चिकना और साफ़ था, तजल्ली के बाद उसमें गुफ़ायें और दरारें पड़ गयीं। मुजाहिद रह. कहते हैं कि "यह क़ौल कि ऐ मूसा पहाड़ की तरफ़ देखो, अगर वह क़ायम रहे तो समझो कि तुम मुझे देख सकोगे वरना नहीं" या तो इसलिये कहा कि पहाड़ की बनावट और मज़बूती तो इनसान से कहीं ज़्यादा और सख़्त है, और जब पहाड़ पर ख़ुदा की तजल्ली हुई और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो गया तो पहाड़ की यह कैफ़ियत देखकर हज़रत मूसा बेहोश होकर गिर पड़े। "सअ़ि-क़" के मायने बेहोशी के हैं जैसा कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने तफ़सीर की। क़तादा रह. इसे मौत के मायने में लेते हैं और लुग़त के हिसाब से यह मायने भी सही हैं, जैसा कि क़ुरआन की एक दूसरी आयत में है किः

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ..... الخ

यानी सूर फूँका जायेगा तो हर चीज़ मर जायेगी, फ़ना हो जायेगी।

ग़र्ज़ यहाँ क़रीना मौत का है और बेहोशी का भी है। ग़शी का इसलिये कि फिर अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि "फ़-लम्मा अफ़ा-क़...." और इफ़ाक़ा तो ग़शी (बेहोशी) ही से होता है न कि मौत से। इसलिये ग़शी के मायने लेना ही सही है। इफ़ाक़े के बाद मूसा अ़लैहिस्सलाम कहने लगे कि ऐ ख़ुदा! तू पाक है तुझ पर कोई नज़र नहीं डाल सकता, वरना मर जायेगा, जल जायेगा, मैंने तेरे दीदार की दरख़्वास्त करके जो ग़लती की है उससे तौबा करता हूँ। अब मुझे इसका यक़ीन हो गया और सबसे पहले मुझे यक़ीन है। यहाँ ईमान से ईमान व इस्लाम मुराद नहीं बल्कि ईमान इस बात का कि तेरी मख़्लूक़ तुझे नहीं देख सकती। इब्ने जरीर ने इस आयत की तफ़सीर में मुहम्मद बिन इस्हाक़ की रिवायत से एक अ़जीब व ग़रीब हदीस नक़ल की है, और ग़ालिबन उन्हें यह बात इस्राईली रिवायतों के दफ़्तर से मिली है। वल्लाहु आलम

"ख़र्र मूसा सअ़िक़ा" (यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर पड़े) से मुताल्लिक़ अबू सईद ख़ुदरी की रिवायत है कि एक यहूदी ने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से शिकायत की कि आपके एक अन्सारी सहाबी ने मेरे मुँह पर तमाँचा मार दिया है। उस अन्सारी को बुलाकर आपने पूछा, उसने कहा या रसूलल्लाह! मैंने इस यहूदी को कहते सुना कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम को तमाम इनसानों पर फ़ज़ीलत दी है। मैंने कहा क्या मुहम्मद पर भी? तो इसने कहा हाँ। मुझे गुस्सा आ गया और मैंने एक तमाँचा रसीद कर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे अम्बिया पर फ़ज़ीलत न दो, लोग क़ियामत के दिन बेहोश हो जायेंगे और जब इफ़ाक़ा (सुकून) होगा तो सबसे पहले मुझे होगा। लेकिन मैं देखूँगा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम अ़र्श के पाये को थामे खड़े हैं। मैं नहीं जानता कि मुझसे पहले उन्हें होश आयेगा या यह कि वह बेहोश होंगे ही नहीं, क्योंकि वह एक बार तजल्ली-ए-तूर से बेहोश हो चुके थे। और अल्लाह उन्हें बेहोश होने से महफ़ूज़ फ़रमा देगा। सहीहैन में यह रिवायत मौजूद है। अबू बक्र बिन अबी दीनार कहते हैं कि इस क़ज़िये के फ़रीक़ हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे लेकिन सहीहैन में यह बात गुज़र चुकी है कि वह अन्सार का एक आदमी था और अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु तो अन्सार में से नहीं थे, बल्कि मुहाजिर थे। और यह बात कि 'मुझे मूसा पर फ़ज़ीलत और बरतरी न दो' उस हदीस की तरह है जिसमें फ़रमाया है कि 'मुझे अम्बिया और यूनुस बिन मता पर फ़ज़ीलत न दो'।

कहते हैं कि यह बात तवाज़ो और विनम्रता के तौर पर थी, या यह फ़रमान उससे पहले का है कि आपको अपनी फ़ज़ीलत का इल्म ख़ुदा की तरफ़ से हुआ हो। या यह कि गुस्से में आकर तास्सुब की बिना पर मुझे फ़ज़ीलत न दो। या यह कि सिर्फ़ अपनी राय से फ़ज़ीलत क़ायम न करो। वल्लाहु आलम

लोग क़ियामत के दिन बेहोश होंगे जैसा कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तजल्ली की बरदाश्त न ला सके। इसलिये आपका फ़रमान है कि न मालूम मुझसे पहले इफ़ाक़ा होगा (यानी उन्हें होश और सुकून होगा) या तूर की बेहोशी के बदले यहाँ बेहोश नहीं हुए। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तजल्ली हुई तो आपकी नज़र ऐसी तेज़ हो गई कि दस कोस की दूरी से अंधेरी रात में भी किसी चट्टान पर चलती हुई चींवटी को देख लेते थे। फिर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया- इस लिहाज़ से कोई बईद नहीं कि यह ख़ुसूसियत हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी हासिल हो। क्योंकि मेराज में आपने तो बड़ी-बड़ी निशानियाँ अपनी आँखों से देख ली थीं। इस बात के ज़रिये गोया कि हदीस को सेहत का दर्जा हासिल हो

Maktab-E-Ashraf

गया लेकिन इसकी सेहत ग़ौर-तलब बात है, क्योंकि इस हदीस में कई ग़ैर-मारूफ़ (जिनका हाल मशहूर नहीं) लोग हैं, और ऐसी बातें जब तक मोतबर और मज़बूत राविय़ों से मन्सूब न हो क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकतीं।

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ○ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۭ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ○

इरशाद हुआ कि ऐ मूसा! (यही बहुत है कि) मैंने पैग़म्बरी और अपनी गुफ़्तगू (यानी अपने साथ बात करने के सम्मान) से और लोगों पर तुमको इम्तियाज़ दिया है, तो (अब) जो कुछ मैंने तुमको अ़ता किया है उसको लो और शुक्र करो। (144) और हमने चन्द तख़्तियों पर हर क़िस्म की (ज़रूरी) नसीहत और (ज़रूरी अहकाम के मुताल्लिक़) हर चीज़ की तफ़सील उनको लिखकर दी, तो उनको कोशिश के साथ (ख़ुद भी) अ़मल में लाओ और अपनी क़ौम को (भी) हुक्म करो कि उनके अच्छे-अच्छे अहकाम पर अ़मल करें, मैं अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन बेहुक्मों का मक़ाम दिखलाता हूँ। (145)

कलीमुल्लाह (अल्लाह के साथ कलाम करने वाले)

मूसा अ़लैहिस्सलाम से ख़िताब है कि हमने तुमको रिसालत और कलाम के लिये सब लोगों में से चुन लिया है। और इसमें कोई शक नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम इनसानों के सरदार हैं। इसी लिये तो अल्लाह ने आपको ख़ातिमुल-अम्बिया बनाया जिनकी शरीअ़त क़ियामत तक के लिये जारी होगी, और आपके उम्मती सारे अम्बिया की उम्मतों से ज़्यादा होंगे। शर्फ़ व फ़ज़्ल (सम्मान व इज़्ज़त) में आपके बाद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं, फिर हज़रत मूसा बिन इमरान कलीमुल्लाह।

अल्लाह तआ़ला मूसा अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाता है कि मैंने तुम्हें जो कलाम और मुनाजात दी है उसको ले लो और शुक्र अदा करो, और जिन अहकाम को बरदाश्त करने की तुम्हें ताक़त नहीं उनका मुतालबा न करो। फिर ख़बर दी जाती है कि इन अलवाह (तख़्तियों) में हर बात की नसीहत और हर हुक्म की तफ़सील मौजूद है। कहा जाता है कि ये 'अलवाह' (तख़्तियाँ) जवाहर के थे। अल्लाह पाक ने उनमें वअ़ज़ व नसीहत और अहकाम तफ़सील से लिख दिये थे और सब हलाल व हराम बता दिया गया था। उन तख़्तियों पर तौरात लिखी हुई थी। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि पहले ज़माने वालों को हलाक करने के बाद हमने मूसा को किताब दी, जिसमें लोगों के लिये अ़क़्ल समझ की बातें थीं। यह भी कहा जाता है कि ये तख़्तियाँ तौरात लिखने से पहले ही दी गयी थीं।

बहरहाल यह ज़रूर है कि यह दीदार के सवाल को नामन्ज़ूर करने का मुआ़वज़ा था। क़ुव्वत के साथ लो, यानी नेकी करने का पुख़्ता इरादा करके, और अपनी क़ौम को भी हुक्म करो कि इस पर अच्छी तरह

Maktab E Ashraf

अ़मल करें। मूसा अ़लैहिस्सलाम के हुक्म के साथ 'क़ुव्वत' (कोशिश करने) का लफ़्ज़ है और क़ौमे मूसा के साथ 'अहसन' (अच्छे-अच्छे आमाल) का लफ़्ज़ है, यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम को ताकीद है कि सबसे पहले तुम इस पर सख़्ती से अ़मल करो और तुम्हारी क़ौम भी अच्छे तरीक़े से अ़मल करे।

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ.

जल्द ही तुम मेरी मुख़ालफ़त करने वालों और मेरा हुक्म न मानने वालों का अन्जाम देख लोगे कि वे किस तरह हलाक और बरबाद हो जायेंगे।

यह बात बिल्कुल इसी तरह है जैसे कोई अपने मुख़ालिफ़ से कहे कि अगर तुम मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ करोगे तो कल में तुम्हें देख लूँगा। यहाँ ख़िलाफ़े हुक्म करने वालों को धमकी और डाँट दी जा रही है और कहा गया है कि इसका मतलब यह है कि हम इताअ़त करने वालों को फ़ासिक़ों का मुल्क यानी शाम (सीरिया) अ़ता करेंगे, या यह कि क़ौमे फ़िरऔ़न के महल और मकानात मुराद हैं। लेकिन पहली बात ज़्यादा मुनासिब मालूम होती है। वल्लाहु आलम। क्योंकि यह फ़रमान मूसा अ़लैहिस्सलाम के मिस्र शहर को छोड़ने के बाद का है और यह दूसरा क़ौल तो बनी इस्राईल से ख़िताब है और यह गुफ़्तगू मैदाने तीह में दाख़िल होने से पहले की है।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ ع	मैं ऐसे लोगों को अपने अहकाम से बरगश्ता "यानी विमुख" ही रखूँगा जो दुनिया में तकब्बुर करते हैं जिसका उनको कोई हक़ हासिल नहीं, और अगर तमाम निशानियाँ देख लें तब भी उनपर ईमान न लाएँ, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा न बनाएँ, और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा बना लें। यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे। (146) और ये लोग जिन्होंने हमारी आयतों को और क़ियामत के पेश आने को झुठलाया, उनके सब काम ग़ारत गये, उनको वही सज़ा दी जाएगी जो कुछ ये करते थे। (147)

सीधी राह

इरशाद होता है कि हम उन लोगों को जिन्हें हमारी फ़रमाँबरदारी से इनकार है और जो बिला वजह लोगों से गुरूर करते हैं, शरीअ़त और अहकाम के समझने ही से मेहरूम कर देंगे। जो हमारी बड़ाई व वहदानियत (अल्लाह के एक होने) पर न कटने वाली दलील हैं। उन्हें जहालत से पाला पड़ा है। अल्लाह

Maktab E Ashraf

तआ़ला ने उन्हें ज़लील कर दिया है। जैसा कि फ़रमाया- हमने उनके दिलों और आँखों को उलट ही दिया है। क्योंकि समझाने बुझाने पर भी वे ईमान लाये ही नहीं। और फ़रमाया कि वे जब टेढ़े हो गये तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों को भी टेढ़ा कर दिया, ताकि नहीं समझते तो कभी भी न समझने पायें।

बाज़ उलेमा और पहले के बुज़ुर्गों ने कहा है कि ग़ुरूर करने वाला इल्म और मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) सीख ही नहीं सकता। उसकी तो नाक चढ़ी हुई होती है, जिसने कुछ अ़रसे के लिये इल्म सीखने की ज़िल्लत (आ़जिज़ी व विनम्रता और ख़ुद को पामाल) करने को बरदाश्त नहीं किया उसको हमेशा के लिये इल्म से मेहरूम रहने की ज़िल्लत बरदाश्त करनी पड़ेगी। इसी लिये अल्लाह पाक ने उनसे क़ुरआन के समझने की सलाहियत छीन ली है और अपनी आयतों से उनको मेहरूम कर दिया है।

इस आयत का इशारा इस उम्मत की तरफ़ भी है। यह इब्ने उयैना का ख़्याल है, लेकिन यह कोई ज़रूरी नहीं। इब्ने उयैना रह. तो हर उम्मत के हक़ में इसको क़रार देते हैं, और उम्मतों के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं करते। वल्लाहु आलम

इरशाद है कि वे कैसी ही आयत क्यों न सुनें ईमान नहीं लाते जैसा कि फ़रमाया- जिन लोगों के हक़ में अपने रब का कलिमा पूरा हो चुका कि वे सही राह पर नहीं आयेंगे तो वे हरगिज़ ईमान नहीं लायेंगे। चाहे कैसी ही आयत क्यों न आये, यहाँ तक कि वे अ़ज़ाबे इलाही को देख लेंगे। और अगर हिदायत के रास्ते और तरीक़ा-ए-निजात उन पर ज़ाहिर हो जाये लेकिन फिर भी सीधी राह इख़्तियार नहीं करेंगे। और अगर हलाकत और गुमराही की राह उनके सामने आ जाये तो फ़ौरन इख़्तियार कर लेंगे।

अब उनकी इस नादानी की वजह बयान की जाती है कि यह नतीजा है इस बात का कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे, उन पर अ़मल नहीं किया। इरशाद होता है कि वे लोग जिन्हें हमारी आयतों के मानने से इनकार है और क़ियामत के दिन में हमसे सामना होने का यक़ीन नहीं, और मरते दम तक अपने इसी ख़्याल पर क़ायम रहे तो ईमान के साथ नेक अ़मल न होने के सबब ये सारे नेक आमाल भी ज़ाया हो जायेंगे और उनसे दूर कर दिये जायेंगे। इरशाद है कि उनके आमाल की यही जज़ा (बदला) है, हम उनके आमाल के अनुसार जज़ा देते हैं। अगर वे ईमान के साथ नेकी करते तो नेक जज़ा देते, और बुराई तो बुराई ही है। जैसा अ़मल वैसा बदला।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسٰى مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۭ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

और मूसा की क़ौम ने उनके बाद अपने (क़ब्ज़े में मौजूद) ज़ेवरों का एक बछड़ा ठहरा लिया जो कि एक क़ालिब 'यानी ढाँचा और साँचा' था जिसमें एक आवाज़ थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात तक नहीं करता था, और न उनको कोई राह बतलाता था, उसको उन्होंने (माबूद) क़रार दिया और बड़ा बेढंगा काम किया। (148) और जब शर्मिन्दा हुए और मालूम हुआ कि वाक़ई वे लोग गुमराही में पड़ गये तो कहने लगे कि अगर हमारा रब हम पर रहम न करे और हमारा (यह) गुनाह माफ़ न करे तो हम बिल्कुल गये-गुज़रे। (149)

Maktaba E Ashraf

गाय के बछड़े की पूजा

बनी इस्राईल में से गुमराह लोगों ने गाय के बछड़े की परस्तिश की थी। सामरी ने उन ज़ेवरों से जो क़िब्तियों से माँगे हुए ले गये थे उनके सोने चाँदी से बछड़े के जैसी एक मूर्ती और प्रतिमा बनायी और उसके पेट के अन्दर एक मुट्ठी भर वह मिट्टी डाल दी जो जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के घोड़े के क़दमों के नीचे से हासिल कर रखी थी। चुनाँचे उस बछड़े के अन्दर से ऐसी आवाज़ें निकलने लगीं जैसी गाय की होती है। यह सारा खेल मूसा अ़लैहिस्सलाम की ग़ैर-मौजूदगी में हुआ, जबकि आप ख़ुदा तआ़ला के वादे के मुताबिक़ तूर पहाड़ पर गये हुए थे। तूर पर अल्लाह तआ़ला ने आपको इस फ़ितने से आगाह फ़रमा दिया। चुनाँचे मूसा अ़लैहिस्सलाम से ख़िताब होता है कि ऐ मूसा! तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे पीछे हमने आज़माईश में डाल दिया है, यानी सामरी ने उन्हें गुमराह कर दिया है।

मुफ़स्सिरीन ने इस बारे में इख़्तिलाफ़ किया है कि क्या यह गोश्त और ख़ून का बन चुका था और आवाज़ देने लगा था या सोने ही का बना हुआ था, सिर्फ़ उसमें हवा दाख़िल हो गई थी और उसके अन्दर से गाय की तरह आवाज़ निकलती थी? कहा जाता है कि बछड़ा तैयार होने के बाद गाय की तरह आवाज़ देने लगा तो लोग नाचते हुए उसके इर्द-गिर्द तवाफ़ करने लगे और बड़े फ़ितने में मुब्तला हो गये, और आपस में कहने लगे कि यही है तुम्हारा ख़ुदा और मूसा का ख़ुदा, मूसा भूल में पड़ गये हैं। इरशाद होता है कि क्या वे इतनी सी बात को नहीं समझते कि आवाज़ निकलती है तो क्या हुआ, वह तुम्हारी किसी बात का जवाब तो देता नहीं, न तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचा सकता है न नफ़ा। चुनाँचे इस आयते करीमा में फ़रमाया कि न वह उनसे बात करता है न उनकी कोई रहनुमाई कर सकता है। उन बछड़े के पुजारियों को मलामत की जा रही है कि बछड़े को लेकर गुमराह हो गये, ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले को भूल गये, उनकी आँखों पर जहल (अज्ञानता) व गुमराही के पर्दे पड़ गये हैं जैसा कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि किसी चीज़ की मुहब्बत तुम्हें अंधा और बहरा कर देगी। और जब ये अपने फ़ेल पर नादिम हुए और समझ में आ गया कि वाक़ई हम गुमराह हो गये हैं तो कहने लगे कि अगर अल्लाह तआ़ला हम पर रहम न करे और मग़फ़िरत न फ़रमाये तो हम घाटे में रहेंगे और हलाक हो जायेंगे। चुनाँचे उन्होंने गुनाह का इक़रार किया और ख़ुदा तआ़ला के सामने आ़जिज़ी करने व रोने लगे।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ
اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ
بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى
الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ
قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَ
كَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ڮ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ

और जब मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आए गुस्से और रंज में भरे हुए। तो फ़रमाया तुमने मेरे बाद यह बड़ी नामाक़ूल हरकत की। क्या अपने रब का हुक्म (आने) से पहले ही तुमने जल्दबाज़ी कर ली? और (जल्दी में) तख़्तियाँ एक तरफ़ रखीं और अपने भाई का सर पकड़कर उनको अपनी तरफ़ घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाये (भाई!) इन लोगों ने मुझको बेहक़ीक़त समझा और क़रीब था कि मुझको क़त्ल कर डालें, तो तुम मुझ पर

الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْلِىْ وَلِاَخِىْ وَاَدْخِلْنَا فِىْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ ع ١٨ ٨

(सख़्ती कर के) दुश्मनों को मत हँसाओ, और मुझको इन ज़ालिमों के साथ मत शुमार करो। (150) (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी ख़ता माफ़ फ़रमा दे और मेरे भाई की भी, और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाईये, और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं। (151)

Maktab E Ashraf

मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम और मूसा अ़लैहिस्सलाम की नाराज़गी व ग़ुस्सा

मूसा अ़लैहिस्सलाम जब ख़ुदा से बातें करके क़ौम की तरफ़ लौटे तो निहायत ग़ज़बनाक थे और रंज व अफ़सोस में थे। कहने लगे कि मेरे पीछे बछड़े की पूजा करके तुमने बहुत ही बुरा काम किया है, क्या ख़ुदा के अ़ज़ाब को तुम जल्दी बुला लेना चाहते थे और ख़ुदा की बातों से हटाकर मुझे जल्दी लौटाना चाहते थे? मगर यही बात मुक़द्दर में थी। और हद से ज़्यादा ग़ुस्से की वजह से अलवाह (वे तख़्तियाँ जिन पर तौरात लिखी हुई थी) उन्होंने ज़मीन पर डाल दीं और भाई का सर पकड़कर अपनी तरफ़ घसीटा। कहा जाता है कि ये अलवाह ज़मर्रुद के थे या याक़ूत के या कपड़े के या लकड़ी के। इस वाक़िए से दलालत होती है उस हदीस पर जो नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया किः

لَيْسَ الْخَبَرُ كَالْمُعَايِنَةِ.

यानी सुनी हुई बात देखे हुए के बराबर नहीं हो सकती।

मज़मून के ज़ाहिर अलफ़ाज़ से यह मालूम होता है कि आपने ग़ुस्से में आकर अलवाह (तख़्तियाँ और पतरे) क़ौम के सामने फेंक दिये। पहले और बाद के उलेमा और जमहूर का यही क़ौल है। इब्ने जरीर रह. ने रिवायत की है कि यह क़ौल ग़रीब है, इसकी सनद सही नहीं। अक्सर उलेमा कहते हैं कि यह रद्द करने के क़ाबिल है, शायद बाज़ अहले किताब के ज़ख़ीरे से क़तादा रह. ने नक़ल कर लिया हो, और अहले किताब में तो झूठ तसर्रुफ़ करने वाले, बात बनाने वाले और गुमराह बहुत हैं। भाई का सर पकड़कर घसीटा तो इस ख़्याल के तहत कि लोगों को बछड़े को पूजने से रोकने में उसने कोताही की होगी, जैसा कि दूसरी आयत में है कि ऐ हारून! जब तुमने देखा था कि ये गुमराही इख़्तियार कर रहे हैं तो मेरे हुक्म पर चलने से तुम्हें किसने रोका था? क्या तुम्हें मेरी नाफ़रमानी की जुर्रत हो गई? तो हारून ने कहा "ऐ मेरे माँ जाये! मेरी दाढ़ी और सर के बालों को पकड़कर न खींचो, मुझे तो यह ख़ौफ़ था कि कहीं तुम यह न कहो कि मेरा इन्तिज़ार क्यों नहीं किया और बनी इस्राईल में फूट क्यों डाल दी। ऐ भाई! ये लोग तो मेरी परवाह नहीं करते थे, मुझे कमज़ोर ख़्याल कर लिया और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर देते। दुश्मनों को मुझ पर मत हंसाओ (यानी मेरे साथ ऐसा सुलूक करके लोगों को हंसने और मज़ाक़ उड़ाने का मौक़ा मत दो) और इन ज़ालिमों में मुझे शुमार न करो"।

'मेरी माँ के बेटे' के अलफ़ाज़ इसलिये कहे ताकि ये अलफ़ाज़ प्रभावी हों, मूसा अलैहिस्सलाम को रहम आ जाये, वरना वह तो उनके माँ बाप दोनों तरफ़ से सगे भाई थे। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर भाई का बेख़ता होना साबित हो गया तो हारून को छोड़ दिया। इरशाद है कि हारून ने पहले ही लोगों से कह दिया था कि ऐ लोगो! तुम फ़ितने में मुब्तला हो रहे हो, तुम्हारा रब यह बछड़ा नहीं बल्कि रहमान है तुम मेरे पीछे चलो और मेरी बात सुनो। इसी लिये मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा था कि "इलाही! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे, हम दोनों को तू अपनी रहमत में ले ले, तू तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है"। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला मूसा अलैहिस्सलाम पर रहम करे, देखने वाले की बात अलग और सुनने वाले की अलग होती है। अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी थी कि तुम्हारे पीछे तुम्हारी क़ौम शिर्क में मुब्तला हो गई है, यह सुनकर उन्होंने अलवाह नहीं फेंके और जब उन्होंने आँख से देख लिया तो ग़ुस्से के मारे अलवाह फेंक दिये।

बेशक जिन लोगों ने गौसाला-परस्ती की है, उन पर बहुत जल्द उनके रब की तरफ़ से ग़ज़ब और ज़िल्लत इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही पड़ेगी, और हम बोहतान बाँधने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (152) और जिन लोगों ने गुनाह के काम किए फिर वे उनके बाद तौबा कर लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद गुनाह का माफ़ कर देने वाला, रहमत करने वाला है। (153)	اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ ۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۟ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ ۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

बछड़े को पूजने की इबरतनाक सज़ा

बछड़े को पूजने की सज़ा में अल्लाह का जो ग़ज़ब बनी इस्राईल पर नाज़िल हुआ वह यह था कि उनकी तौबा उस वक़्त तक क़बूल नहीं हुई जब तक कि अल्लाह के हुक्म से आपस में एक दूसरे को क़त्ल न कर डालें। जैसा कि सूरः बक़रह में गुज़र चुका है कि "ख़ुदा की बारगाह में तौबा पेश करो कि आपस में अपनी जानों को क़त्ल कर डालो, ख़ुदा इसी में तुम्हारी बेहतरी जानता है" और जब उन्होंने ऐसा किया तो उनकी तौबा क़बूल कर ली गई। वह तो रब्बे रहीम है लेकिन दुनिया में उन्हें ज़िल्लत व रुस्वाई नसीब हुई। और यह ज़िल्लत तो हर तोहमत बाँधने वाले के लिये क़ियामत के दिन तक रहती है।

सुफ़ियान बिन उयैना कहते हैं कि इसी तरह हर बिदअ़ती ज़लील होगा, जो बिदअ़त निकालता है उसको यही सज़ा मिलेगी। रसूल की मुख़ालफ़त और बिदअ़त का बोझ उसके दिल से निकल कर उसके कन्धों पर आ पड़ता है। हसन बसरी रह. फ़रमाते हैं कि अगरचे वह दुनिया की शान व शौकत रखता हो लेकिन ज़िल्लत उसके चेहरे पर बरसती है। ख़ुदा की तरफ़ से क़ियामत तक यह सज़ा झूठ लगाने वाले और तोहमत व इल्ज़ाम बाँधने वाले को मिलती रहेगी। अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला है, चाहे कैसा ही गुनाह हो, लेकिन तौबा के बाद अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ कर देता है अगरचे कुफ़्र व शिर्क और निफ़ाक़ ही

हो। हुक्म होता है कि जो गुनाह के बाद तौबा कर लें और ईमान लायें तो ऐ रसूले रहमत! तुम्हारा रब उसके बाद भी ग़फ़ूर व रहीम है।

इब्ने मसऊद रज़ि. से सवाल किया गया एक ऐसे शख़्स के बारे में कि किसी औरत से ज़िना करे फिर उससे निकाह कर ले तो उसके बारे में क्या होगा? तो इस आयत की तिलावत की कि "जिन लोगों ने बुरे काम किये फिर तौबा कर ली ईमान लाये और सीधी राह पर आ गये तो अल्लाह तआ़ला उसके बाद भी बख़्शने वाला और रहीम है। अ़ब्दुल्लाह ने दस बार इसकी तिलावत की।

और जब मूसा का गुस्सा ख़त्म हुआ तो (उन) तख़्तियाँ को उठा लिया और उनके मज़ामीन में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे हिदायत और रहमत थी। (154)	وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۝

हिदायत की किताब

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जब मूसा अ़लैहिस्सलाम का ग़ुस्सा थम गया तो उन्होंने तख़्तियाँ उठा लीं जो ग़ुस्से की वजह से फेंक दी थीं। यह हरकत बुतपरस्ती पर ग़ैरत और ग़ुस्से की वजह से थी। इरशाद है कि "उसके अन्दर हिदायत व रहमत थी उन लोगों के लिये जो अपने ख़ुदा से डरते हैं" अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि जब उन्हें फेंक दिया तो वे टूट गई थीं। फिर उन्हें जमा कर लिया और इसी बिना पर बाज़ पुराने उलेमा ने कहा है कि उन टूटी हुई तख़्तियों में हिदायत व रहमत के अहकाम दर्ज थे, लेकिन तफ़सील से मुताल्लिक़ अहकाम ज़ाया हो गये। गुमान किया गया कि इस्राईली बादशाहों के ख़ज़ानों में इस्लामी हुकूमत के ज़माने तक ये टुकड़े मौजूद थे। वल्लाहु आलम

लेकिन इस बात पर दलील वाज़ेह है कि फेंक देने से वे टूट गई थीं, वे तख़्तियाँ जन्नत के जौहर की बनी हुई थीं। अल्लाह पाक ने ख़बर दी है कि जब उन्हें उठा लिया तो उनमें हिदायत व रहमत पाई।

'रहबत' के मायने ख़ुशू व ख़ुज़ू (यानी आ़जिज़ी व झुकने) के हैं। 'तख़्तियों को उठा लिया' से मुताल्लिक़ क़तादा रह. ने कहा है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि या रब! मैं अलवाह (तख़्तियों) में लिखा पाता हूँ कि एक बेहतरीन उम्मत होगी जो हमेशा अच्छी बातों को सिखाती रहेगी और बुरी बातों से रोकती रहेगी। ऐ ख़ुदा! वह उम्मत मेरी उम्मत हो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मूसा! वह तो अहमद की उम्मत होगी। फिर कहा या रब! इन अलवाह से ऐसी उम्मत का पता चलता है जो सबसे आख़िर में पैदा होगी लेकिन जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होगी। ऐ ख़ुदा वह मेरी उम्मत हो। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया वह अहमद की उम्मत है। फिर कहा या रब! उस उम्मत का क़ुरआन उनके सीनों में होगा, दिल में देखकर पढ़ते होंगे, हालाँकि उनसे पहले के सब ही लोग अपने क़ुरआन पर नज़र डालकर क़ुरआन पढ़ते हैं, दिल से नहीं पढ़ते, यहाँ तक कि उनका क़ुरआन अगर हटा लिया जाये तो फिर उनको कुछ भी याद नहीं, और न वे कुछ पहचान सकते हैं, अल्लाह ने उनको हिफ़्ज़ की ऐसी क़ुव्वत दी है कि किसी उम्मत को नहीं दी गई। या रब वह मेरी उम्मत हो। कहा ऐ मूसा! वह तो अहमद की उम्मत है। फिर कहा या रब! वह उम्मत तेरी हर किताब पर ईमान लायेगी, वह गुमराहों और काफ़िरों से जंग करेंगे यहाँ तक कि काने दज्जाल से भी लड़ेंगे।

इलाही! वह मेरी उम्मत हो। ख़ुदा तआला ने कहा कि यह अहमद की उम्मत होगी।

फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा या रब! अलवाह में एक ऐसी उम्मत का ज़िक्र है कि वे अपने नज़राने और सदक़े आपस में ही खा लेंगे हालाँकि उस उम्मत से पहले तक की उम्मतों का यह हाल होगा कि अगर वे कोई सदक़ा या नज़्र पेश करेंगे और वह क़बूल हो गई तो अल्लाह आग को भेजेगा और आग उसे खा जायेगी, और क़बूल न हुई, रद्द हो गई तो फिर भी वे उसको न खायेंगे, बल्कि दरिन्दे और परिन्दे आकर खा जायेंगे। और अल्लाह उनके सदक़े उनके अमीरों से लेकर उनके ग़रीबों को देगा या रब वह मेरी उम्मत हो। तो फ़रमाया यह अहमद की उम्मत होगी। फिर कहा या रब! मैं पाता हूँ कि वह अगर कोई नेकी का इरादा करेगी लेकिन अ़मल में न ला सकेगी तो फिर भी एक सवाब की हक़दार हो जायेगी, और अगर अ़मल में लायेगी तो दस हिस्से सवाब मिलेगा बल्कि सात सौ हिस्से तक। ऐ ख़ुदा वह मेरी उम्मत हो। तो फ़रमाया कि वह अहमद की उम्मत है। फिर कहा कि अलवाह में है कि वे दूसरों की शफ़ाअ़त भी करेंगे और उनकी शफ़ाअ़त भी दूसरों की तरफ़ से होगी। ऐ ख़ुदा वह मेरी उम्मत हो। तो कहा नहीं! यह अहमद की उम्मत होगी। क़तादा रह. कहते हैं कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फिर अलवाह रख दिये और कहा या रब! मुझे उस अहमद की उम्मत में से बना दे।

और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने सत्तर आदमी अपनी क़ौम में से हमारे मुक़र्ररा वक़्त (पर लाने) के लिए चुने, सो जब उन को ज़लज़ले (वग़ैरह) ने आ पकड़ा तो (मूसा) अ़र्ज़ करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! अगर आपको यह मन्ज़ूर होता तो आप इस से पहले ही इनको और मुझको हलाक कर देते, कहीं आप हममें के चन्द बेवक़ूफ़ों की हरकत पर सबको हलाक कर देंगे? यह सिर्फ़ आपकी तरफ़ से एक इम्तिहान है, और इन (इम्तिहानों) से जिसको आप चाहें गुमराही में डाल दें और जिसको आप चाहें हिदायत पर क़ायम रखें। आप ही तो हमारे ख़बरगीरी करने वाले हैं। हम पर मग़फ़िरत और रहमत फ़रमाईये, और आप सब माफ़ी देने वालों से ज़्यादा 'माफ़ी देने वाले' हैं। (155)	وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ۝

सत्तर आदमियों की गुस्ताख़ी, ख़ुदा का क़हर और मूसा अ़लैहिस्सलाम की परेशानी

अल्लाह पाक ने मूसा अ़लैहिस्सलाम को सत्तर आदमी चुन लेने का हक़ दिया था, चुनाँचे मूसा अ़लैहिस्सलाम ऐसे चुने हुए सत्तर लोगों को लेकर ख़ुदा से दुआ़ करने के लिये गये। लेकिन जब उन्होंने ख़ुदा से दुआ़ की तो कुछ इस तरह की कि ऐ ख़ुदा! हमें वह कुछ इनायत कर जो अब तक हम से पहले

Maktab E Ashraf

तूने किसी को न दिया हो और न हमारे बाद फिर किसी और को दे। यह बात खुदा को नागवार गुज़री चुनाँचे ज़लज़ले ने उन्हें आ घेरा। सुद्दी रह. कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम को तीस आदमियों के साथ आने के लिये कहा जो बछड़े की पूजा के सबब खुदा से माफ़ी माँगें और दुआ़ के लिये एक वक़्त और एक मक़ाम तय कर दिया। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने सत्तर आदमी चुने जिन्हें अल्लाह के सामने माफ़ी माँगने के लिये अपने साथ ले गये। लेकिन जब वादे की (यानी निर्धारित) जगह पर पहुँचे तो कहने लगे कि ऐ मूसा! हम तो तुम पर उस वक़्त तक ईमान न लायेंगे जब तक कि अपनी आँखों से खुले तौर पर खुदा तआ़ला को न देख लें। तुमने तो खुदा से बातें कर लीं, अब हमें भी खुदा को दिखला दीजिये। इस जुर्रत की सज़ा में उन पर बिजली गिरी और सब वहीं ढेर हो गये।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम रोते हुए उठे, खुदा से कह रहे थे कि ऐ खुदा! अब मैं बनी इस्राईल को क्या जवाब दूँगा? ये तो उनमें के अच्छे लोग थे, इन्हें भी तूने हलाक कर दिया। ऐ खुदा! काश तू इनके साथ मुझे भी हलाक कर देता। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल के सत्तर अच्छे से अच्छे आदमी चुने थे और कहा था कि चलो खुदा की तरफ़ और अपनी बक़िया क़ौम की तरफ़ से खुदा के पास माज़िरत पेश करो, तौबा करो, रोज़े रखो, जिस्म और कपड़ों को पाक कर लो। फिर उन्हें तयशुदा वक़्त पर तूरे सीना पहाड़ की तरफ़ ले चले और ये सब खुदा की इजाज़त और इल्म से था। अब ये सब ही सत्तर अफ़राद जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की रहनुमाई में खुदा से मिलने के लिये आये हुये थे, कहने लगे ऐ मूसा! खुदा से तुम्हारी बातें होती हैं, हमें भी ये बातें सुनने दीजिये। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा अच्छा! और जब मूसा अ़लैहिस्सलाम पहाड़ के क़रीब पहुँचे तो वह एक बहुत ही गहरे और उमड़े हुए बादल के अन्दर छुप गये। पहाड़ भी बादल के अन्दर ढक गया। मूसा अ़लैहिस्सलाम बादल में आये, क़ौम से कहा तुम भी और क़रीब हो जाओ और मूसा अ़लैहिस्सलाम जब खुदा से बातें करते होते तो आपके चेहरे पर एक बहुत ही चमकदार नूर चमकता होता कि कोई आपके चेहरे पर नज़र डालने की क़ुदरत न रखता, इसलिये आप अपने चेहरे पर नक़ाब डाल लेते।

जब ये लोग उस बादल के क़रीब आकर उसमें दाख़िल हो गये तो सज्दे में गिर पड़े और उन्होंने मूसा अ़लैहिस्सलाम और खुदा की बातें सुनीं, कि अल्लाह पाक मूसा अ़लैहिस्सलाम को हुक्म दे रहा है और कुछ चीज़ों से मना कर रहा है, कि यह करो और वह न करो। इससे जब फ़ारिग़ हो गये बादल हट गया और मूसा अ़लैहिस्सलाम उन लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए तो वे हज़रत मूसा से कहने लगे कि हम तो उस वक़्त तुम पर ईमान लायेंगे कि तुम हमें ऐलानिया खुदा को दिखला दो। इस गुस्ताख़ी में उन्हें बिजली ने आ पकड़ा। उनकी रूहें जिस्मों से निकल गईं, मर गये। मूसा अ़लैहिस्सलाम यह देखकर खुदा के सामने रोने और फ़रियाद करने लगे कि इलाही! अगर तू इन्हें हलाक करना ही चाहता था तो इनके साथ मुझे भी हलाक कर देता। इन्होंने बेवक़ूफ़ी की हरकत की, मेरे पीछे क्या तू बनी इस्राईल को हलाक कर देगा।

हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब से रिवायत है कि मूसा व हारून और शब्बर व शब्बीर ये सब मिलकर एक पहाड़ की वादी की तरफ़ गये। हारून एक टीले पर खड़े थे कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मौत दे दी। मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल की तरफ़ लौटे तो उन्होंने हज़रत हारून के बारे में पूछा। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा- वह मर गये। वे कहने लगे कि नहीं! उन्हें तुमने क़त्ल किया होगा। वह बड़े नर्म-मिज़ाज और और सीधे-सादे आदमी थे। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा अच्छा तुम कुछ आदमी चुन लो!

Maktab E Ashraf

उन्होंने सत्तर आदमी चुन लिये। अब हारून अ़लैहिस्सलाम की लाश पर गये और पूछा हारून तुमको किसने क़त्ल किया है? हज़रत हारून के जिस्म से आवाज़ आई मुझे तो किसी ने भी क़त्ल नहीं किया, मैं तो अपनी मौत मरा हूँ। अब ये लोग कहने लगे "ऐ मूसा! इसके बाद हम तुमसे कभी सरकशी नहीं करेंगे" सज़ा यह मिली कि उन्हें एक कड़क ने आ पकड़ा। मूसा अ़लैहिस्सलाम इधर-उधर यूँही बिना मक़सद घूमने लगे और कहने लगे कि ऐ ख़ुदा! क्या इन बेहूदों की गुफ़्तगू पर तू हमें हलाक कर देगा? यह तेरी आज़माईश थी, तू जिसको चाहे गुमराह करे जिसको चाहे हिदायत दे। तो अल्लाह तआ़ला ने उन सबको ज़िन्दा कर दिया और उन सबको अपने नबी बनाया। यह बहुत ग़रीब और नाक़ाबिले यक़ीन हदीस है। रावियों में अ़म्मारा बिन उबैद तो बिल्कुल मजहूल शख़्स है (यानी इनके हालात का इल्म नहीं)।

इब्ने जरीर कहते हैं कि इसलिये उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ था कि गाय के बछड़े के पूजने को चुपचाप देख रहे थे, और क़ौम को इस शिर्क से मना नहीं किया था। इसी लिये हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनको बेवक़ूफ़ों का नाम दिया था और कहा था कि ऐ ख़ुदा! यह तेरी आज़माईश और इम्तिहान है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला की यूँ तारीफ़ व सना की कि यह तो तेरी तरफ़ से आज़माईश है, तेरा ही हुक्म चलता है और तू जो चाहता है वही होता है, हिदायत व गुमराही तेरे ही पास है, जिसे तू राह दिखाये उसे कोई बहका नहीं सकता और जिसे तू गुमराह कर दे उसे कोई राह नहीं दिखा सकता। तू जिससे रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता और जिसे तू दे दे उससे कोई छीन नहीं सकता। मुल्क का मालिक तू ही है और हुक्म का हाकिम भी सिर्फ़ तू ही है। हर चीज़ का पैदा करने और बनाने वाला तू ही है। फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की कि "ऐ ख़ुदा! तू हमारा वली है, हमें बख़्श दे, हम पर रहम फ़रमा। तू सबसे ज़्यादा माफ़ करने वाला है। 'ग़-फ़-र' के मायने ढाँपना, छुपाना, गुनाह पर पकड़ न करना और माफ़ करने के साथ जब रहमत का जोड़ हो जाये तो यह मतलब है कि बख़्श देने के बाद फिर अल्लाह तआ़ला उसको आईन्दा गुनाह में लिप्त न होने दे।

और हम लोगों के नाम दुनिया में भी नेक हालत पर रहना लिख दीजिए और आख़िरत में भी हम आपकी तरफ़ रुजू करते हैं। (अल्लाह तआ़ला) ने फ़रमाया कि मैं अपना अ़ज़ाब तो उसी पर करता हूँ जिसपर चाहता हूँ और मेरी रहमत तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। तो वह रहमत उन लोगों के नाम तो ज़रूर ही लिखूँगा जो अल्लाह तआ़ला से डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो कि हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। (156)	وَاكْتُبْ لَنَا فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۚ○

रहमत व ज़हमत

ऐ ख़ुदा! दुनिया में भी तू हमें नेकी दे और आख़िरत में भी। 'ह-स-नतन्' की तफ़सीर सूरः ब-क़रह में गुज़र चुकी है। हम तौबा करते हैं और तेरी तरफ़ रुजू करते हैं। हज़रत अ़ली रज़ि. कहते हैं कि उनका नाम

Maktaba E Ashraf

यहूद इसलिये पड़ गया कि उन्होंने 'हुद्ना इलै-क' (यानी हम तेरी ही तरफ़ रुजू करते हैं) कहा था।

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा था कि ऐ ख़ुदा! यह तेरा फ़ितना (आज़माईश) तेरा अ़ज़ाब है, तो इरशाद होता है कि अ़ज़ाब उसी को पहुँचता है जिसके लिये मेरा इरादा होता है कि उसको अ़ज़ाब होना चाहिये, वरना मेरी रहमत तो हर चीज़ पर फैली हुई है, मैं जैसा चाहूँ करूँ। हर बात में हिक्मत और इन्साफ़ मेरा ही हक़ है। रहमत वाली आयत बहुत अ़ज़ीम है और सब पर शामिल है जैसा कि अ़र्श को उठाने वाले फ़रिश्ते की ज़बान में इरशाद होता है कि ऐ ख़ुदा! तेरा इल्म सब पर हावी है।

कहते हैं कि एक देहाती आया, ऊँट को बैठाकर बाँध दिया, फिर नबी करीम सल्ल. के पीछे नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपनी ऊँटनी खोली, उस पर सवार होकर यह दुआ़ करने लगा कि ऐ ख़ुदा! मुझ पर और मुहम्मद पर अपनी रहमत कर, हमारी रहमत में किसी को शरीक न बना। हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमाया बताओ तो यह ज़्यादा गुमराह और बेवक़ूफ़ है या इसका ऊँट? तुमने सुना जो उसने कहा? लोगों ने कहा हाँ! आपने फ़रमाया उसकी रहमत बड़ी विस्तृत है, उसने रहमत के सौ हिस्से किये हैं, एक हिस्सा सारी मख़्लूक़ पर तक़सीम किया है, जिन्नात, इनसान और चौपाये सबको उसी एक में से हिस्सा मिला है और बाक़ी निन्नानवे हिस्से अपने लिये ख़ास रखे हैं। अब तुम ही बताओ कि इन दोनों में कौन ज़्यादा बेवक़ूफ़ है।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत के सौ हिस्से किये हैं जिनमें से सिर्फ़ एक ही हिस्सा दुनिया में उतारा, उसी से मख़्लूक़ एक दूसरे पर तरस खाती और रहम करती है, उसी से हैवान अपनी औलाद के साथ नर्मी और रहम का बर्ताव करते हैं। बाक़ी निन्नानवे हिस्से उसके पास ही हैं, जिनका इज़्हार क़ियामत के दिन होगा और क़ियामत के दिन इसी हिस्से के साथ जो बाक़ी के निन्नानवे हिस्से हैं, उनको मिला दिये जायेंगे। एक और रिवायत में है कि इसी नाज़िल किये हुए एक हिस्से में चरिन्द-परिन्द (पशु-पक्षि) भी शामिल हैं। ख़ुदा की क़सम जो दीन के लिहाज़ से बुरा और गुनाहगार है, जो रोज़ी कमाने के लिहाज़ से अहमक़ है वह भी इसमें दाख़िल है। ख़ुदा की क़सम वह भी जन्नत में जायेगा जिसको आग ने गुनाहों के सबब घेर रखा होगा, उसकी रहमत क़ियामत में ऐसी छा जायेगी कि इब्लीस (शैतान) को भी उसमें से कुछ मिलने की उम्मीद पैदा हो जायेगी। यह हदीस बहुत ग़रीब है। सअ़द इसके रावियों में एक ग़ैर-मारूफ़ (अपरिचित और ग़ैर-मशहूर) शख़्स है।

मेरी रहमत के मुस्तहिक़ वे होंगे जो मुझसे डरते हैं और परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं। जैसा कि फ़रमाया- तुम्हारे रब ने अपनी ज़ात के लिये रहमत को फ़र्ज़ क़रार दे लिया है उनके लिये जो परहेज़गारी करते हैं, यानी शिर्क और बड़े गुनाहों से बचते हैं, और ज़कात देते हैं। कहा गया है कि ज़कात से या तो नफ़्सों और जान की ज़कात मुराद है या मालों की ज़कात, या यह कि दोनों मुराद हैं, क्योंकि यह आयत मक्की है। और वे लोग जो हमारी आयतों को मानते और उनकी तस्दीक़ करते हैं।

जो लोग ऐसे रसूल नबी उम्मी की इत्तिबा करते हैं जिनको वे लोग अपने पास तौरात व इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, (जिनकी सिफ़त	اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِىْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي

التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۡ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِىْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِىْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۠	यह भी है) कि वह उनको नेक बातों का हुक्म फ़रमाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं, और पाकीज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल बतलाते हैं और गन्दी चीज़ों को (बदस्तूर) उनपर हराम फ़रमाते हैं, और उन लोगों पर जो बोझ और तौक़ 'यानी बेड़ियाँ' थे उनको दूर करते हैं, सो जो लोग उन (नबी मौसूफ़) पर ईमान लाते हैं और उनकी हिमायत करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उस नूर की इत्तिबा करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

नबी-ए-उम्मी

जो लोग नबी-ए-उम्मी (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पैरवी करते हैं और मुसलमान हो जाते हैं, उन्हें उन भविष्यवाणियों का इल्म है जो उनकी किताबों तौरात व इन्जील में नबी-ए-उम्मी से मुताल्लिक़ लिखी हुई हैं। पहले नबियों की किताबों में नबी करीम सल्ल. की सिफ़त मज़कूर है। जिन्होंने अपनी-अपनी उम्मत को आपके दुनिया में तशरीफ़ लाने की ख़ुशख़बरी दी है और आपका मज़हब इख़्तियार करने की हिदायत की है। उनके उलेमा और राहिब (धर्मगुरू) इस चीज़ को जानते हैं। मुस्नद इमाम अहमद में है कि एक देहाती ने बयान किया है कि नबी सल्ल. के ज़माने में मैं दूध बेचने के लिये मदीने गया। दूध फ़रोख़्त करने के बाद मैंने कहा चलो उनसे भी (मुहम्मद सल्ल. से) मिल लूँ और उनसे कुछ बातें सुनूँ। मैंने देखा कि आप हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर के साथ जा रहे हैं, मैं भी पीछे हो लिया। ये तीनों एक यहूदी के घर पहुँचे जो तौरात जानता था, उसका लड़का मरने के क़रीब था, नौजवान और ख़ूबसूरत, वह उसके पास बैठा उसकी तसल्ली के लिये तौरात पढ़ रहा था। हुज़ूर सल्ल. उस यहूदी से बातें करने लगे और कहा कि तुम्हें तौरात नाज़िल करने वाले की क़सम है, सच बताओ इसमें मेरा ज़िक्र और मेरे नबी बनकर आने की ख़बर भी है कि नहीं? उसने सर हिलाकर कहा "नहीं" तो उसका मौत के क़रीब नौजवान लड़का बोल उठा कि तौरात नाज़िल करने वाले की क़सम! हम अपनी किताबों में आपकी सिफ़त (निशानियाँ) और रसूल बनकर तशरीफ़ लाने की ख़बर पाते हैं और मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। जब वह मर गया तो आपने कहा कि यह मुसलमान है, यहूदियों को यहाँ से हटा दो। फिर आपने उसके कफ़न और नमाज़ का इन्तिज़ाम किया। यह हदीस उम्दा और क़वी है, और सही बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत की गयी है।

हिशाम बिन आ़स से रिवायत है कि हिरक़्ल रोम के बादशाह के पास इस्लाम की तब्लीग़ के लिये मैं और एक आदमी भेजे गये, हम चले और ग़ोता दमिश्क़ तक पहुँचे। जबला बिन ऐहम ग़स्सानी के महल में गये, वह वहाँ का बादशाह था। हमारे पास एक सफ़ीर को भेजा कि बात करे कि क्या कहना है। हमने कहा

Maktab E Ashraf

हम तुमसे बात नहीं करेंगे, हम बादशाह से बात करने के लिये भेजे गये हैं। अगर उसने बुला लिया तो उसी से बात करेंगे, हमें तुमसे कुछ कहना नहीं है। उसने जाकर बादशाह को ख़बर की। उसने बुलाया और कहने लगा कहो क्या कहना चाहते हो? हिशाम बिन आ़स ने उससे गुफ़्तगू की और इस्लाम की दावत दी, वह काले कपड़े पहने था। हिशाम ने कहा यह काले कपड़े क्यों हैं? जबला ने कहा मैंने क़सम खा रखी है कि यह काला लिबास मैं न उतारूँगा जब तक कि तुम लोगों को शाम (सीरिया) से न निकाल दूँगा। हमने कहा ख़ुदा की क़सम! हम यह तख़्त तुमसे लेने वाले हैं और मलिके आज़म का मुल्क भी इन्शा-अल्लाह हमारे क़ब्ज़े में आ जायेगा। हमारे नबी सल्ल. ने इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) फ़रमा दी है। उसने कहा तुम वे लोग नहीं हो वे ऐसे लोग होंगे कि दिन में रोज़ा रखेंगे, रातों को नमाज़ पढ़ेंगे, तुम बताओ तुम्हारा रोज़ा कैसा है? हमने पूरी तरह बता दिया तो गोया उसके चेहरे पर सियाही सी दौड़ गई। उसने कहा अच्छा जाओ बादशाह से मिलो और हमारे साथ एक रहबर कर दिया। हम उसकी रहनुमाई (अगुवाई) में चले और जब हम शहर के क़रीब पहुँचे तो हमारे रहबर ने हमसे कहा कि तुम इन सवारियों और ऊँटों को लेकर शहर में दाख़िल नहीं हो सकते, तुम चाहो तो हम तुम्हारे लिये घोड़े और ख़च्चर उपलब्ध करा दें? हमने कहा ख़ुदा की क़सम! हम तो इन्हीं पर सवार रहेंगे। उसने बादशाह को लिख भेजा कि इन्हें दूसरी सवारियों पर बैठने से इनकार है। बादशाह ने ऊँटों पर ही सवार होकर आने की इजाज़त दे दी। हम अपनी तलवार लटकाये बादशाह के महल तक पहुँचे, अपनी सवारियाँ वहाँ बैठा दीं।

बादशाह अपने महल के बाला-ख़ाने से हमें देख रहा था, हमने उतरते ही कहा "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" ख़ुदा जानता है कि हमारी तकबीर की आवाज़ से सारा महल काँप उठा, गोया आँधियों ने उसको हिला दिया हो। बादशाह ने कहला भेजा कि तुमको अपने दीन का इस तरह मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) नहीं करना चाहिये। फिर हमें बुला भेजा, हम दरबार में दाख़िल हुए। वह अपने तख़्त पर बैठा हुआ था और पोप पादरी तथा हुकूमत के बड़े लोग और वज़ीर उसके आस-पास बैठे हुए थे। उसकी मजलिस की हर चीज़ सुर्ख़ थी, सारा माहौल सुर्ख़, उसके कपड़े भी सुर्ख़। हम उसके क़रीब गये। वह हंसा और कहने लगा कि तुम आपस में जिस तरह सलाम कर लिया करते हो मुझे क्यों नहीं किया? उसके पास एक उम्दा अ़रबी जानने वाला तर्जुमान मौजूद था। हमने उसके ज़रिये यह कहा कि हम आपस में जो सलाम कह लिया करते हैं वह आपके लायक़ नहीं और आपका जो अदब और सलाम का तरीक़ा है वह हमारे लायक़ नहीं, कि वह ताज़ीम का तरीक़ा और सलाम व कलाम का ढंग हम आपके लिये बरतें। उसने कहा तुम्हारा आपसी सलाम कैसा होता है? हमने कहा "अस्सलामु अ़लैक" उसने पूछा तुम अपने बादशाह को किस तरह सलाम करते हो? हमने कहा उन्हें भी इसी तरह। उसने पूछा कि वह किस तरह जवाब देते हैं? हमने कहा वह भी यही अलफ़ाज़ कहकर जवाब देते हैं। उसने पूछा तुम्हारा दूसरों से अलग नारा क्या है? हमने कहा "ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर"।

जब हमने बुलन्द आवाज़ से यह कहा तो सारा महल लरज़ गया, यहाँ तक कि वह घबराकर सर उठाकर देखने लगा कि छत तो नहीं गिरेगी। वह कहने लगा यह कलिमा जो तुमने कहा जिससे मकान हिल गया, जब कभी तुम अपने घर में कहते हो तो क्या तुम्हारें घर भी काँप उठते हैं? हमने कहा नहीं। हमने ऐसा कभी नहीं देखा, सिवाय आपके महल के। कहा क्या अच्छा होता कि कभी तुम लोग यह नारा लगाते तो तुम्हारी हर चीज़ भी लरज़ उठती और और इस नारे की चोट से मेरा आधा मुल्क मार खा जाता और आधा रह जाता। हमने पूछा ऐसा क्यों? कहा यह आसान है इस बात से कि नुबुव्वत का मामला मज़बूत

और क़ायम हो जाये।

फिर हमसे आने की ग़र्ज़ पूछी। हमने मक़सदे तब्लीग़ बता दिया। पूछा तुम्हारा नमाज़ रोज़ा कैसा होता है? हमने बता दिया। उसने अब हमें रुख़्सत कर दिया। हमें मेहमानख़ाने में ठहराया, हमारी मेहमानी की। हम वहाँ तीन दिन ठहरे, फिर एक रात हमें बुला भेजा। हम गये, फिर हमसे दरियाफ़्त किया, फिर हमने अपना मक़सद दोहरा दिया। अब उसने एक बहुत बड़ी चीज़ सोने चाँदी से जड़ी हुई मंगवाई। उसमें छोटे ख़ाने बने हुए थे, उसमें दरवाज़े लगे हुए थे। उसने एक ख़ाने का ताला खोला और उसमें से एक काला रेशमी कपड़ा निकाला, उसमें एक सुर्ख़ तस्वीर बनी हुई थी। एक आदमी की तस्वीर थी जिसकी बड़ी-बड़ी आँखें थीं। मोटी रानें, लम्बी और घनी दाढ़ी, सर के बाल दो हिस्सों में बहुत ही ख़ूबसूरत और लम्बे-लम्बे। कहने लगा कि क्या इसको जानते हो? हमने कहा नहीं। कहने लगा यह आदम अ़लैहिस्सलाम हैं, इनके जिस्म पर बहुत बाल थे। फिर एक और डिब्बे का ताला खोला। उसमें से भी एक काला रेशमी कपड़ा निकाला, उसमें एक गोरे रंग के आदमी की तस्वीर बनी हुई थी। घुंघराले बाल सुर्ख़ आँखें, बड़ा सा सर, ख़ुबसूरत दाढ़ी, कहने लगा यह नूह अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर एक और डिब्बे में से एक और तस्वीर निकाली, बहुत ही गोरा रंग, ख़ूबसूरत सी आँखें, कुशादा पेशानी, मुनव्वर चेहरा, सफ़ेद दाढ़ी हंसमुखँ, कहा जानते हो यह कौन हैं? यह इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर एक और डिब्बा खोला, एक रोशन और गोरे रंग की तस्वीर थी, वह मुहम्मद सल्ल. की थी। पूछा क्या इन्हें जानते हो? हमने कहा हाँ यह मुहम्मद सल्ल. हैं। तस्वीर देखकर हम पर रिक़्क़त तारी हो गई (यानी दिल पसीज गया), वह कहने लगा कि अल्लाह ही जानता है कि यही मुहम्मद हैं। फिर वह खड़ा हो गया, फिर बैठ गया और कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम क्या यह वही हैं? हमने कहा हाँ वही हैं। इस तस्वीर को देखकर तुम यह समझ लो कि आप ही को देखा है, फिर कुछ देर तक उस सूरत को घूरता रहा, फिर कहा यह आख़िरी डिब्बा था, लेकिन मैंने इसको सबसे आख़िर में दिखाने के बजाय दूसरे डिब्बे छोड़कर बीच में दिखा दिया, ताकि तुम्हारी सच्चाई का इम्तिहान करूँ।

फिर एक और तस्वीर निकाली जो गन्दुमी रंग की और नर्म-सूरत थी। घुंघराले बाल गड़ी हुई आँखें, तेज़-नज़र जलाल से भरा चेहरा, जड़े हुए दाँत, मोटे होंठ, कहने लगा यह मूसा अ़लैहिस्सलाम की तस्वीर है। उसके बराबर में एक और तस्वीर थी जो शक्ल व सूरत में उनसे बहुत मिलती-जुलती थी। मगर यह कि बालों में तेल पड़ा हुआ, कंघी की हुई, कुशादा पेशानी, आँखें बड़ी, कहने लगा यह हारून बिन इमरान हैं। फिर एक डिब्बे में से एक तस्वीर निकाली गन्दुमी रंग, दरमियाना क़द, सीधे बालों वाली, चेहरे से रंज व ग़म ज़ाहिर, कहने लगा यह लूत अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर एक सफ़ेद रंग का रेशमी कपड़ा निकाला, एक सुनहरे रंग का आदमी जिसका क़द लम्बा न था, गाल हल्के थे, चेहरा ख़ूबसूरत था, कहा यह हज़रत इस्हाक़ हैं। फिर एक और दराज़ खोली, उसमें से सफ़ेद रेशमी कपड़ा निकालकर हमें दिखाया, उसकी शक्ल इस्हाक़ की तस्वीर से बहुत मुशाबह (मिलती-जुलती) थी, मगर उसके होंठ पर तिल था, कहा यह याक़ूब अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर एक काले कपड़े पर की तस्वीर दिखाई गोरा रंग, बहुत ख़ूबसूरत चेहरा, चेहरा पुर नूर और इख़्लास व ख़ुशू के आसार नुमायाँ, रंग सुर्ख़ी माईल, कहा यह इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हैं।

फिर और एक डिब्बे में से सफ़ेद रेशमी कपड़ा निकाला, जिसके अन्दर की तस्वीर आदम अ़लैहिस्सलाम की तस्वीर से मिलती-जुलती थी। चेहरा सूरज की तरह चमक रहा था, कहा यह युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर एक और तस्वीर निकाली, सुर्ख़ रंग, गोश्त से भरी पिन्डलियाँ, बड़ी-बड़ी आँखें, बड़ा पेट, ठिगना क़द,

Maktab E Ashraf

तलवार लटकाये हुए, कहा यह दाऊद अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर और एक तस्वीर निकाली, मोटी रानें, लम्बे पाँव, घोड़े पर सवार, कहा यह सुलैमान अ़लैहिस्सलाम हैं। फिर एक और तस्वीर निकाली जवान, काली दाढ़ी, घने बाल, ख़ूबसूरत आँखें, कहा यह ईसा बिन मरियम अ़लैहिस्सलाम हैं।

हमने कहा ये तस्वीरें आपको कहाँ से मिलीं? हम जानते हैं कि ये तस्वीर ज़रूर अम्बिया की होंगी। क्योंकि हमने अपने नबी की तस्वीर भी सही पाई है। वह कहने लगा कि आदम अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा से सवाल किया था कि मेरी औलाद में से होने वाले नबियों के बारे में मुझे बता, तो अल्लाह ने इन अम्बिया की तस्वीरें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को दीं। इनको आदम ने पश्चिमी मुल्क में महफ़ूज़ कर दिया था, ज़ुलक़रनैन ने इनको निकाला और दानियाल अ़लैहिस्सलाम के सुपुर्द किया। फिर कहने लगा कि मैं तो चाहता था कि अपना मुल्क छोड़ दूँ और तुम में से किसी मामूली से आदमी का ग़ुलाम हो रहूँ यहाँ तक कि मुझे मौत आ जाये।

अब हमें रुख़्सत कर दिया, इनाम व इकराम दिया, जाने की व्यवस्था कर दी। जब हम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के पास आये, उनसे वाक़िआ़ बयान किया तो वह रोने लगे और कहा अगर अल्लाह तआ़ला उसको तौफ़ीक़ देता तो वह ज़रूर ऐसा करता। फिर फ़रमाया- नबी करीम सल्ल. ने हमें ख़बर दी है कि यहूद अपनी किताब में नबी सल्ल. की सिफ़ात पाते हैं।

(मौलाना अन्ज़र शाह कशमीरी रह. ने फ़रमाया है कि यह रिवायत क़ाबिले एतिबार नहीं है। उन्होंने इस पर भी अफ़सोस ज़ाहिर किया है कि इब्ने कसीर रह. ने इस रिवायत को नक़ल करने के बाद किसी भी तरह की टिप्पणी नहीं की, इससे एक आ़म आदमी इसको मोतबर और सही समझ सकता है।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

अ़ता बिन यसार कहते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ि. से मैंने मुलाक़ात की और तौरात में हुज़ूर सल्ल. से मुताल्लिक़ भविष्यवाणी को दरियाफ़्त किया तो कहा हाँ ख़ुदा की क़सम तौरात में भी आपका ऐसा ही ज़िक्र है जैसे क़ुरआन में है कि ऐ नबी! हमने तुमको उम्मत का गवाह बना दिया और जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाला और दोज़ख़ से डराने वाला और अ़वाम को पनाह देने वाला बनाया है। तुम मेरे बन्दे और रसूल हो, तुम्हारा नाम मुतवक्किल है, तुम न सख़्ती करने वाले हो न संगदिल हो। तुमको उस वक़्त तक अल्लाह तआ़ला वफ़ात न देगा जब तक कि ग़लत राह चलने वाली इस क़ौम को तुम सीधा न कर लो, और जब तक वे ईमान न ले आयें, और उनके दिलों से पर्दे न उठ जायें और कान सुनने और आँखें देखने न लगें। फिर अ़ता की मुलाक़ात हज़रत कअ़ब से हुई तो यही सवाल उनसे किया, तो बयान में एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ न पाया, सिवाय इसके कि वह अपनी ज़बान में कुछ अलफ़ाज़ को दूसरे अन्दाज़ से अदा करते थे। लेकिन ये जुमले बढ़ा दिये कि वह बाज़ारों में शोर-शराबा न करेंगे, वह बुराई का बदला बुराई से नहीं देते, दरगुज़र करते हैं। और अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. की हदीस का ज़िक्र किया, फिर कहा कि पहले बुज़ुर्गों के कलाम में लफ़्ज़ तौरात का हुक्म उमूमन अहले किताब की किताबों पर होता है, और हदीस की किताबों में भी कुछ ऐसा ही बयान किया गया है। वल्लाहु आलम

हज़रत ज़ुबैर बिन मुतअ़िम से रिवायत है कि मैं शाम (मुल्क सीरिया) की तरफ़ तिजारत की ग़र्ज़ से निकला, जब मैं मुल्के शाम के क़रीब पहुँचा तो अहले किताब में से एक आदमी से मुलाक़ात हुई। उसने पूछा कि क्या तुम्हारे मुल्क में कोई शख़्स नबी आया हुआ है? मैंने कहा हाँ। उसने कहा क्या तुम उसकी

Maktab E Ashraf

तस्वीर पहचान सकते हो? मैंने कहा हाँ। वह मुझे एक घर में ले गया, जिसमें तस्वीरें थीं। मगर मैंने नबी सल्ल. की तस्वीर नहीं देखी। हम इसी गुफ़्तगू में थे कि एक और शख़्स आया, उसने कहा क्या बात है? हमने उसको बता दिया तो वह हमें अपने घर ले गया, घर में दाख़िल होते ही मैंने नबी सल्ल. की तस्वीर देखी और यह भी कि तस्वीर में एक शख़्स नबी सल्ल. के पीछे खड़ा हुआ है। मैंने कहा यह कौन है जो इनके पीछे इन्हें थामे खड़ा है? उसने कहा यह नबी तो नहीं है लेकिन अगर इनके बाद कोई नबी होता तो यह होता, मगर इनके बाद कोई नबी नहीं आयेगा, लेकिन यह इनका जानशीन (ख़लीफ़ा) होगा।

अक़रा (हज़रत उमर के मुअज़्ज़िन) कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि. ने मुझे एक पादरी को बुलाने के लिये भेजा। मैं बुला लाया, उससे हज़रत उमर रज़ि. ने पूछा क्या तुम अपनी किताब में मेरा भी ज़िक्र पाते हो? उसने कहा हाँ! किताब में आपको क़र्न कहा गया है। आपने अपना दुर्रा उठाकर कहा क़र्न क्या चीज़ है? उसने कहा इससे मुराद है लौहपुरुष "सख़्त चीज़" फिर उमर रज़ि. ने पूछा अच्छा मेरे बाद? कहा हाँ तुम्हारा जानशीन एक नेक मर्द होगा लेकिन वह अपने क़रीबी लोगों और रिश्तेदारों को बहुत तर्जीह देगा। उमर रज़ि. कहने लगे "ख़ुदा उस्मान पर रहम करे" तीन बार कहा, फिर कहा उसके बाद कौन? कहा लोहे के टुकड़े की तरह एक शख़्स। उमर रज़ि. समझ गये कि अ़ली मुराद हैं। आपने अपना सर पकड़ लिया और अफ़सोस करने लगे। उसने कहा ऐ अमीरुल-मोमिनीन! वह नेक ख़लीफ़ा है, लेकिन वह उस वक़्त ख़लीफ़ा होगा जबकि तलवार म्यान से निकाल ली गई होगी और ख़ून बह रहा होगा।

अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि नबी नेक बातों का हुक्म करते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं। यह रसूलुल्लाह सल्ल. की सिफ़त है जो पहली पवित्र किताबों में दर्ज है, और वाक़ई हुज़ूर सल्ल. का यही हाल था कि ख़ैर के सिवा कुछ न कहते, और हर उस बात से रोकते जो शर (बुराई) की हो। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि जब तुम क़ुरआन में यह पढ़ोः

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟.....

(ऐ ईमान वालो!) तो कान लगा दो कि शायद कोई ख़ैर का हुक्म दिया जाने वाला है, या किसी शर (बुराई और ग़लत बात) से रोका जाने वाला है। और सबसे अहम चीज़ जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है यह कि बिना किसी दूसरे की शिर्कत के ख़ुदा की इबादत करो, किसी को उसका शरीक न बनाओ। तमाम अम्बिया इसी दावत को लेकर भेजे गये थे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि हमने हर क़ौम के अन्दर अपने पैग़म्बर भेजे हैं कि इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की करो और बुतों की पूजा से बाज़ रहो।

हज़रत अबू उसैद से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया है- जब तुम मेरी कोई हदीस सुनो जिसको तुम्हारे दिल मान लें, तुम्हारे शऊर उससे नर्म हो जायें और तुम यह बात महसूस करो कि यह बात तुम्हारी ज़ेहनियत (समझ) से ज़्यादा क़रीब है तो यक़ीनन तुम्हारे मुक़ाबले में मेरी ज़ेहनियत उससे ज़्यादा क़रीब होगी, यानी वह मेरी हदीस हो सकती है। और अगर ख़ुद तुम्हारे दिल उस हदीस का इनकार करें और वह बात तुम्हारी ज़ेहनियत (समझ) और शऊर से दूर हो तो समझो कि तुम्हारे मुक़ाबले में मेरी ज़ेहनियत से दूर होगी और वह मेरी हदीस न होगी।

(जनाब इब्ने कसीर ने हदीस को पहचानने का जो मेयार बयान फ़रमाया वह सही है मगर वह इस्तेदाद और क़ाबलियत हर किसी को हासिल नहीं हो सकती जो इस चीज़ के लिये पैमाना और मेयार बन सके।

Maktab E Ashraf

ज़माना-ए-ख़ैर में मुहद्दिसीन ने सही और ग़ैर-सही का फ़ैसला ऐसी दलीलों और मेहनत से फ़रमा दिया है कि अब उन पर एतिमाद करने में ही आ़फ़ियत है, अपनी अ़क्ल चलाने में ठोकर खाने का प्रबल बल्कि यक़ीनी अन्देशा है। इसलिये हर आ़म-ख़ास आदमी को हदीस या उसके मतलब में अपनी अ़क्ल चलाने और उसके रद्द व कबूल करने का कोई इख़्तियार नहीं। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि जब तुम रसूलुल्लाह सल्ल. की कोई हदीस सुनो तो उसके बारे में वही गुमान करो जो ज़्यादा सही गुमान हो, और जो ज़्यादा पाकीज़ा हो। इरशादे बारी है कि "उसने पाक और अच्छी चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल कर रखी हैं और ख़बीस व बुरी चीज़ें हराम कर दी हैं" जैसे 'बहीरा' और 'साइबा' और 'वसीला' और 'हाम' ये हलाल हैं लेकिन ज़बरदस्ती हराम कर रखे हैं। इससे अपनी ज़ात पर और तंगी कर ली है। और जो ख़बीस (बुरी चीज़ें) अल्लाह तआ़ला ने हराम किये हैं जैसे ख़िन्ज़ीर का गोश्त, सूद और खाने की जो चीज़ें अल्लाह तआ़ला ने हराम कर दी थीं, उन्होंने हलाल कर लिया। अल्लाह तआ़ला ने हर वह चीज़ जो हलाल कर रखी है उसका खाना बदन को नफ़ा बख़्शता है, दीन के लिये मददगार होता है, और जिसको अल्लाह ने हराम कर दिया वह जिस्म और दीन दोनों के लिये मुज़िर (नुक़सानदेह) है। वे लोग जो अ़क़्ली तौर पर ख़ूबी और ख़राबी को जाँचते हैं, वे इसी आयत से दलील पकड़ते हैं। इस सोच और धारणा का जवाब भी दिया गया है लेकिन यहाँ इन तमाम तफ़सीलात का मौक़ा नहीं है, और इसी आयत से हुज्जत क़ायम की है उन उलेमा ने भी जो यह कहते हैं कि अगर किसी चीज़ की हिल्लत और हुर्मत (यानी हलाल व हराम होने) से मुताल्लिक़ कोई हदीस न हो तो हलाल और हराम को जाँचने का यह मेयार हो सकता है कि उसकी गुणवत्ता और फ़ायदा पहुँचाने के लिहाज़ से अ़रब लोग किस चीज़ को मुफ़ीद और अच्छी समझते हैं और किसको ख़बीस और नुक़सानदेह समझते हैं। इस ख़्याल और सोच के बारे में भी बहुत कुछ बहस हुई है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि वह बोझ जो लोगों के दिलों पर था रसूल उसको हल्का करते हैं और रिवाज की जिन ज़न्जीरों में वे जकड़े हुए थे रसूल उनको हटा देते हैं। वह आसानी व बख़्शिश और माफ़ी लेकर आये हैं। जैसा कि हदीस में है कि मैं आसान और बातिल की मिलावट से पाक दीन देकर भेजा गया हूँ।

नबी करीम सल्ल. ने जब हज़रत मुआ़ज़ और अबू मूसा अश्अ़री को यमन का अमीर (गवर्नर) बनाकर भेजा तो हिदायत की थी कि ख़ुश-मिज़ाज और हंसते हुए चेहरे के साथ रहना, लोग तुमसे दूर न भागें, उनके लिये आसानियाँ पैदा करो, तंगी में न डालो। लोगों में आ़दत मान लेने की हो, मतभेद और विवाद करने की ज़ेहनियत न हो। हुज़ूर सल्ल. के सहाबी अबू बरज़ा असलमी कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ रहा हूँ। आपकी आसानियाँ बख़्शने को ख़ूब देख चुका हूँ। पहली उम्मतों में बड़ी सख़्तियाँ थीं, इस उम्मत पर वे अहकाम हल्के कर दिये गये हैं, इसी लिये हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत से दिल के ख़्यालात और इरादों पर गिरफ़्त नहीं करता, जब तक कि वे ज़बान से बोल न चुकें या अ़मल न कर चुकें। फ़रमाया कि मेरी उम्मत से ख़ता और भूल-चूक माफ़ कर दी गयी है। भूल-चूक से अगर कुछ किया हो या ज़बरदस्ती और किसी के मजबूर किये जाने से किया हो तो उसको क़ाबिले माफ़ी समझा गया है, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने यह दुआ़ माँगने की हिदायत फ़रमाई है:

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ج رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ج وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ٥

Maktab E Ashraf

यानी ऐ हमारे रब! हमारी ऐसे काम के बारे में पकड़ न फ़रमाईये जिसे हम भूल या चूक से करें। और या अल्लाह! हम पर ऐसा हुक्म और बोझ न डालना जैसा कि हमसे पहले लोगों पर डाला गया। और या अल्लाह! हम पर वह बोझ भी मत डालिये जिसकी हम सहार न कर सकें। और या अल्लाह! तू हमें माफ़ फ़रमा, हमें बख़्श दे, हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा मौला है। तो हमारी मदद फ़रमा काफ़िर क़ौमों के मुक़ाबले में।

सही मुस्लिम से साबित है कि इस दुआ के ज़रिये जो कुछ ख़ुदा से माँगा जाता है तो हर सवाल पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "अच्छा मैंने दिया, मैंने क़बूल किया"। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि जो लोग नबी सल्ल. की अ़ज़्मत (इज़्ज़त) करते हैं और उनके लाये हुए दीन की पैरवी करते हैं, यही लोग दुनिया व आख़िरत में फ़लाह (कामयाबी) पाने वाले हैं।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ۨالَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ الَّذِىْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝	आप कह दीजिए कि ऐ (दुनिया-जहान के) लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ (पैग़म्बर) हूँ जिसकी बादशाही है तमाम आसमानों और ज़मीन में, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। सो (ऐसे) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके (ऐसे) नबी-ए-उम्मी पर (भी) जो कि (ख़ुद) अल्लाह पर और उसके अहकाम पर ईमान रखते हैं। और उन (नबी) की पैरवी करो ताकि तुम सही रास्ते पर आ जाओ। (158)

तमाम दुनिया जहान के रसूल

ऐ नबी! (सल्ल. अ़रब व ग़ैर-अ़रब और दुनिया जहान के लोगों से) कह दो कि मैं सबकी तरफ़ रसूल बनकर आया हूँ। यह आपके शर्फ़ व सम्मान और बड़ाई व अ़ज़्मत की दलील है कि नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई और वह क़ियामत तक सारी दुनिया के पैग़म्बर हैं। और कह दो कि मेरे और तुम्हारे बीच ख़ुदा गवाह है, तुम्हें तंबीह करने के लिये अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर 'वही' भेजी है। अल्लाह का इरशाद है कि जो क़ौम नबी को न माने उसका ठिकाना दोज़ख़ है। और फ़रमाया कि "अहले किताब और ग़ैर-अहले किताब सबसे कह दो कि इस्लाम लाते हो या नहीं? अगर वे इस्लाम लायें तो हिदायत पायेंगे वरना तुम्हारा काम तो सिर्फ़ तब्लीग़ करना था। इस मज़मून की इस क़द्र ज़्यादा हदीसें हैं कि उनको शुमार करना दुश्वार है। और दीने इस्लाम की यह बात तो सबको मालूम है कि नबी सल्ल. सारी दुनिया की तरफ़ भेजे गये हैं।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि. कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ि. में आपस में कुछ तेज़ गुफ़्तगू हो गई। अबू बक्र रज़ि. ने उमर रज़ि. को नाराज़ कर दिया, उमर ग़मगीन वापस हो गये। अबू बक्र रज़ि. को एहसास हुआ और वह उमर रज़ि. से माफ़ी माँगने के लिये उनके पीछे ही गये। लेकिन उमर रज़ि. ने घर में आने नहीं दिया, दरवाज़ा बन्द कर लिया। अब अबू बक्र रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. के पास गये। हज़रत अबू दर्दा कहते हैं कि हम भी उस वक़्त बैठे हुए थे। हुज़ूर सल्ल. ने हमसे फ़रमाया तुम्हारे इस साथी ने उमर को

गुस्सा दिलाया है। फिर उमर रज़ि. को भी सिद्दीके अकबर रज़ि. को घर में आने की इजाज़त न देने पर शर्मिन्दगी और एहसास हुआ, वह भी रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आये, सलाम करके बैठ गये और वाक़िआ हुज़ूरे पाक के सामने बयान किया तो हुज़ूर सल्ल. को हज़रत उमर रज़ि. पर गुस्सा आ गया। अबू बक्र रज़ि. यह कहते ही रह गये कि "या रसूलल्लाह! ज़्यादती मेरी तरफ़ से थी" लेकिन हुज़ूर सल्ल. फ़रमा रहे थे कि "क्या तुम लोग मेरे दोस्त और साथी को छोड़ देना चाहते हो? मैंने तुम लोगों से कहा था कि मैं तुम्हारी तरफ़ रसूल बनकर आया हूँ तो तुम कहते थे कि झूठ कहते हो, और अबू बक्र ने मेरी तस्दीक़ कर दी थी।"

रसूलुल्लाह सल्ल. तबूक की लड़ाई में रात की नमाज़ पढ़ने के लिये उठे तो आपके बाज़ सहाबा आपकी हिफ़ाज़त व निगरानी करने लगे। नमाज़ पढ़ लेने के बाद आप उनकी तरफ़ मुतवज्जह हो गये और फ़रमाया कि आज रात पाँच चीज़ें ख़ुसूसियत के साथ मुझे दी गईं कि मुझसे पहले ये ख़ास चीज़ें किसी दूसरे पैग़म्बर को नहीं दी गयी थीं-

1. यह कि मैं दुनिया जहान के लोगों की तरफ़ पैग़म्बर बनकर आया हूँ और इससे पहले कोई भी रसूल सिर्फ़ अपनी क़ौम की तरफ़ ही रसूल होकर आता रहा है।

2. मुझे सिर्फ़ रौब ही से दुश्मन पर मदद हासिल हो जाती है। अगरचे मेरे और उसके बीच एक महीने की मुसाफ़त (दूरी) हो। मगर उस पर मेरा रौब छा जाता है।

3. माले ग़नीमत मेरे और मेरी उम्मत के लिये हलाल कर दिया गया है, लेकिन मुझसे पहले माले ग़नीमत को खा जाना गुनाहे कबीरा था, उसको जला दिया जाता था।

4. सारी ज़मीन मेरे लिये पाक है और मस्जिद है, जहाँ कहीं नमाज़ का वक़्त आया उसी मिट्टी से मसह (यानी अगर पानी न मिले तो तयम्मुम) किया और उसी मिट्टी पर नमाज़ पढ़ ली। मुझसे पहले के लोग सिर्फ़ अपने गिरजाओं, कनीसों और मन्दिरों में इबादत करते थे।

5. पाँचवीं यह चीज़ कि मुझसे कहा गया कि एक चीज़ की इजाज़त है माँग लो। हर नबी ने भी पसन्दीदा चीज़ की दरख़्वास्त की है। मैंने अपना सवाल क़ियामत के दिन पर उठा रखा और वह तुम्हारे लिये है और अल्लाह को एक मानने वाले के लिये है। इसकी सनद बहुत क़वी और उम्दा है।

रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से किसी यहूदी या ईसाई ने मेरे आने की ख़बर सुन ली और मुझ पर ईमान नहीं लाया तो वह जन्नत में नहीं जा सकता। यह हदीस सही मुस्लिम में एक दूसरी सनद से है, मगर सबका मफ़हूम एक ही है। अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन की बादशाहत उसी की है, वही जिलाता और मारता है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि जिसने मुझे भेजा वह हर चीज़ का ख़ालिक़ (पैदा करने और बनाने वाला) है, रब है, मालिक है, मारना और जिलाना उसी की क़ुदरत में है।

हुक्म होता है कि अल्लाह तआ़ला पर और इस नबी-ए-उम्मी पर ईमान लाओ। अल्लाह पाक ख़बर देता है कि वह अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, तुम्हारी तरफ़ भेजे गये हैं, तुम उनका इत्तिबा करो, उन पर ईमान लाओ, उन्हीं का तुमसे वादा किया गया था, उन्हीं की पहली आसमानी किताबों में ख़ुशख़बरी है और पहली किताबों में नबी-ए-उम्मी ही के अलफ़ाज़ से आपकी तारीफ़ की गई है। फिर इरशाद होता है कि जो इस पर और इसके कलिमात पर ईमान लाये और इसकी पैरवी करे तो वह सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत पा जाये।

Maktab e Ashraf

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ○	और मूसा की कौम में एक जमाअ़त ऐसी भी है जो (दीने) हक़ के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं। (159)

हक़ की पैरवी करने वाले

आगाह फ़रमाया जाता है कि बनी इस्राईल में ऐसे भी लोग हैं जो हक़ बात की पैरवी करते हैं, हक़ की रहबरी करते हैं और अ़दल व इन्साफ़ को सामने रखते हैं। जैसा कि फ़रमाया "अहले किताब में भी एक जमाअ़त है जो रातों को ख़ुदा की आयतों की तिलावत करती है और नमाज़ें पढ़ती है। और फ़रमाया कि बाज़ अहले किताब अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हैं, तुम पर और उन पर जो कुछ उतरा है सबको मानते हैं। अल्लाह तआ़ला के सामने आ़जिज़ी करते हैं, दूसरे अहले किताब की तरह अल्लाह की आयतों को रुपयों के लालच में नहीं बेचते, अल्लाह के पास से उनको बड़ा अज्र मिलेगा। अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है वे उस पर ईमान लाते हैं और जब उनके सामने हमारी आयतों की तिलावत की जाती है तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाये, यह कलाम हक़ है, हम अब भी मुसलमान हैं, इससे पहले भी मुसलमान थे। उन्हें उनके सब्र का दो दफ़ा अज्र दिया जायेगा। और फ़रमाया कि जिन्हें किताब दी गई है वे उसकी तिलावत (पढ़ने) का हक़ अदा करते हैं, यही मोमिन हैं। और फ़रमाया कि वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया है यानी किताब, जब यह किताब उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है तो सर के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं और सज्दे में उनका अल्लाह के सामने झुकना और आ़जिज़ी बहुत बढ़ जाता है।

बनी इस्राईल ने जब अपने अम्बिया को क़त्ल किया और कुफ़्र इख़्तियार किया तो वे बारह गिरोह थे। उनमें से एक गिरोह बाक़ी के ग्यारह गिरोहों के अ़क़ायद से बेज़ार था। उन्होंने अल्लाह से दरख़्वास्त की कि "ऐ अल्लाह! हम में और इनमें जुदाई कर दे" तो अल्लाह ने ज़मीन के अन्दर उनके लिये एक सुरंग पैदा कर दी, वे उसमें चलते रहे, यहाँ तक कि उसी राह से मुल्के चीन में जा निकले। वे हमारे ईमान वाले बन्दे थे जो हमारे ही क़िबले की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे। फिर इरशाद होता है कि हमने उसके बाद बनी इस्राईल से कहा कि अब ज़मीन पर रहो बसो, और जब आख़िरत का वादा आयेगा तो हम तुम्हें हाज़िर करेंगे। कहते हैं कि वे सुरंग में डेढ़ साल तक चलते रहे।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۭ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ	और हमने उनको बारह ख़ानदानों में बाँट करके सबकी अलग-अलग जमाअ़त मुक़र्रर कर दी। और (एक इनाम यह किया कि) हमने मूसा को हुक्म दिया जबकि उनकी क़ौम ने पानी माँगा कि अपनी लाठी को (फ़ुलाँ) पत्थर पर मारो, (बस मारने की देर थी) फ़ौरन उससे बारह चश्मे फूट निकले, (चुनाँचे) हर-हर शख़्स ने अपने पानी पीने का मौक़ा 'यानी जगह' मालूम कर लिया। और (एक इनाम यह किया

Maktab E Ashraf

عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۚ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ○ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓئٰتِكُمْ ۚ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ○ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ○ ع ٢٠ / ١٠

कि) हमने उनपर बादल से साया किया, और (एक इनाम यह किया कि) उनको तुरंजबीन 'यानी एक क़िस्म की क़ुदरती शकर' और बटेरें पहुँचाईं, (और इजाज़त दी कि) खाओ पाक चीज़ों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे। (160) और (वह ज़माना याद करो) जब उनको हुक्म दिया कि तुम लोग उस आबादी में जाकर रहो, और खाओ उससे जिस जगह से तुम्हारा दिल चाहे, और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है) और (आजिज़ी से) झुके-झुके दरवाज़े में दाख़िल होना, हम तुम्हारी (पिछली) ख़ताएँ माफ़ कर देंगे (यह तो सबके लिए होगा और) जो नेक काम करेंगे उनको और भी ज़्यादा देंगे। (161) सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस (कलिमे) के जिसकी उनसे फ़रमाईश की गई थी, (इसपर) हमने उनपर एक आसमानी आफ़त भेजी, इस वजह से कि वे हुक्म को ज़ाया करते थे। (162)

इन तमाम आयतों की तफ़सीर सूरः ब-क़रह में गुज़र चुकी है। वह मदनी सूरः है और आयत का मज़मून मक्की है। इन आयतों और उन आयतों का फिर भी हमने ज़िक्र कर दिया है, दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं।

وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ○ النصف

और आप इन (अपने ज़माने के यहूदी) लोगों से (तंबीह के तौर पर) उस बस्ती (वालों) का जो कि दरिया-ए-शोर के क़रीब आबाद थे, (उस वक़्त का) हाल पूछिए जबकि वे हफ़्ता 'शनिवार' के बारे में (शरई) हद से निकल रहे थे, जबकि उनके हफ़्ते 'शनिवार' के दिन उन (के दरिया) की मछलियाँ ज़ाहिर हो-होकर उनके सामने आती थीं, और जब हफ़्ते 'शनिवार' का दिन न होता तो उनके सामने न आती थीं। हम उनकी इस तरह पर (सख़्त) आज़माईश करते थे, इस सबब से कि वे (पहले से) बेहुक्मी किया करते थे। (163)

Maktab E Ashraf

अल्लाह के अहकाम से खेल करने का इबरतनाक अन्जाम

अल्लाह पाक का क़ौल थाः

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ.

यानी तुम उन लोगों को जानते हो जो शनिवार के दिन के बारे में हद से निकल गये। अल्लाह पाक अपने नबी सल्ल. से इरशाद फ़रमाता है कि जो यहूदी तुम्हारे पास हैं उनसे उन लोगों के वाक़िआत दरियाफ़्त करो जिन्होंने ख़ुदा के हुक्म की मुख़ालफ़त की। फिर उनकी सरकशी (नाफ़रमानी) की कैसी सज़ा उन्हें दी गई। और उन्हें इस बात के बुरे परिणामों से डराओ जो तुम्हारी इन सिफ़ात को छुपाते हैं जो अपनी किताबों में पाते हैं, ताकि इस ज़माने के यहूदी भी उसी अ़ज़ाब में मुब्तला न हो जायें जिनमें इनके पहले मुब्तला हो गये थे। उस बस्ती का नाम ईला था और यह क़ुलज़ुम दरिया के किनारे पर स्थित थी, और इस आयत में कि "इन बस्ती वालों से पूछो जो समुद्र के किनारे पर रहते हैं" जिस बस्ती का ज़िक्र है उसका नाम हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के बयान के मुताबिक़ ईला था, जो मद्यन और तूर के बीच स्थित है। और यह भी कहा गया है कि उसका नाम मतना है और वह मद्यन और अ़ीनूना के बीच में है।

"यअ़दू-न" का मतलब है कि वे शनिवार के दिन के बारे में अल्लाह के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं और उस दिन तो वे मछलियाँ कसरत से चढ़ी आती हैं और पानी पर फैल जाती हैं। और जब शनिवार का दिन नहीं होता था तो किनारे तक हरगिज़ न आतीं। यह हमने क्यों किया? सिर्फ़ इसलिये कि उनकी इताअ़त (हुक्म मानने) को आज़मायें कि शिकार की मनाही वाले रोज़ तो मछलियाँ उम्मीद के ख़िलाफ़ उनकी पकड़ में रहतीं और जिन दिनों शिकार हलाल है उनमें छुप जातीं। यह आज़माईश थी क्योंकि वे अल्लाह की हुक्म-बरदारी में कोताही करते थे, लेकिन उन लोगों ने ख़ुदा की हुर्मत को तोड़ने के लिये मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से हीले (बहाने और रास्ते) ढूँढे और मना किये हुए काम का इर्तिकाब करने के लिये चोर दरवाज़े से घुसना चाहा, इसलिये नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि तुम न करो जैसा कि यहूद ने किया कि हीला (बहाना) सोच-सोचकर हराम को हलाल कर लिया।

और (उस वक़्त का हाल पूछिये) जबकि उनमें से एक जमाअ़त ने (यूँ) कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जाते हो जिनको अल्लाह तआ़ला (बिल्कुल) हलाक करने वाले हैं या उनको सख़्त सज़ा देने वाले हैं? उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने उज़्र करने के लिये और (साथ ही) इसलिए कि शायद ये डर जाएँ। (164) सो (आख़िर) जब वे उस अमूर "यानी बात और हुक्म" को छोड़े ही रहे जो उनको समझाया जाता था, (यानी न माना) तो हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो उस बुरी बात से मना	وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ○ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ

Maktab E Ashraf

ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ○ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ○	किया करते थे, और उन लोगों को जो (ज़िक्र हुए हुक्म में) ज़्यादती करते थे एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया, इस वजह से कि वे नाफ़रमानी किया करते थे। (165) (यानी) जिस काम से उन को मना किया गया था जब वे उसमें हद से निकल गये तो हमने उनको (ग़ज़ब और गुस्से से) कह दिया कि तुम ज़लील बन्दर बन जाओ। (166)

नेक कामों का हुक्म करने की बरकतें

इरशाद होता है कि ये बस्ती वाले तीन क़िस्म के हो गये- एक तो वे जिन्होंने हफ़्ते (शनिवार) के दिन मछलियाँ पकड़ने का बहाना इख़्तियार करके वर्जित (मना किये हुए) काम का इर्तिकाब किया, जैसा कि सूरः ब-क़रह में गुज़र चुका है। और दूसरे वे लोग जिन्होंने इन गुनाह में लिप्त होने वालों को मना किया, रोका और इस फ़ेल में उनसे अलग रहे। और तीसरी वह जमाअ़त जो इस बारे में बिल्कुल ख़ामोश रही, न ख़ुद ऐसा किया न करने वालों को रोका, बल्कि मना करने वालों से कहा कि "ऐसे लोगों को नसीहत करने से क्या फ़ायदा जिन्हें अल्लाह हलाक करना और अ़ज़ाब देना चाहता है, तुम जानते हो कि ये अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो गये हैं, नसीहत का कोई असर नहीं लेते" तो वे जवाब देते हैं कि ख़ुदा के पास हम तो माज़ूर समझे जायें कि क्यों नहीं रोका था, क्योंकि अच्छी बातें सिखाना और बुरी बातों से रोकना चाहिये।

बाज़ ने "माज़िरतन्" के बजाय "माज़िरतुन्" पढ़ा है, यानी यह माज़िरत (उज़्र पेश करना) है और बाज़ ने "माज़रतन्" यानी माज़िरत की ख़ातिर उन्हें रोकते हैं और क्या अ़जब कि वे इस फ़ेल से बाज़ आ जायें और ख़ुदा के सामने तौबा कर लें। लेकिन जब उन्होंने नसीहत क़बूल करने से इनकार कर दिया तो जो लोग इस बुराई से उन्हें रोक रहे थे उनको तो हमने बचा लिया और नाफ़रमानी करने वाले ज़ालिमों को हमने पकड़ लिया, और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब दिया। यहाँ रोकने वालों की निजात और गुनाहगारों की हलाकत बताई गई, और ग़ैर-जानिबदार लोगों के बारे में ख़ामोशी इख़्तियार कर ली गयी, इसलिये कि बदला वैसा ही होता है जैसा अ़मल होता है। इसलिये वे न तारीफ़ व सवाब के मुस्तहिक़ हुए क्योंकि तारीफ़ के क़ाबिल काम न किया था, और न निंदा और बुराई के मुस्तहिक़ हुए क्योंकि गुनाह भी नहीं किया था। फिर भी इमामों का इख़्तिलाफ़ है कि क्या उनकी निजात हुई होगी या हलाकत हुई होगी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मछलियाँ हफ़्ते (शनिवार) के दिन तो बहुत आतीं लेकिन दूसरे दिनों में न आतीं, इस पर कुछ अ़रसा गुज़रने के बाद उनमें से बाज़ लोग हफ़्ते के दिन भी मछलियाँ पकड़ने लगे, तो बाज़ लोगों ने उनसे कहा कि इस रोज़ तो मछलियों का शिकार हराम है। लेकिन उनकी सरकशी (नाफ़रमानी) क़ायम रही। लेकिन कुछ लोग उन्हें बराबर मना करते रहे। जब इस पर भी कुछ अ़रसा गुज़र गया तो रोकने वालों की एक जमाअ़त ने बाज़ दूसरे रोकने वालों से कहा कि इन कमबख़्तों को मना करने से क्या फ़ायदा? इन पर ख़ुदा का अ़ज़ाब साबित हो चुका है, इनको क्यों नसीहत करते हो? ये लोग मना करने वालों के मुक़ाबले में राहे ख़ुदा में ज़्यादा ग़ज़बनाक थे। चुनाँचे मना करने वालों ने कहा ख़ुदा हमें माफ़ करे, हम माज़िरत करते हैं, गोया ये दोनों जमाअ़तें भी मना करने वालों की थीं, चुनाँचे जब ख़ुदा का अ़ज़ाब

Maktab E Ashraf

नाज़िल हुआ तो ये दोनों जमाअ़तें तो बच गईं और ये चोर दरवाज़े से भागने वाले सरकश गुनाहगार बन्दर बना दिये गये।

हज़रत इक्रिमा रह. कहते हैं कि एक दिन मैं इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के पास आया, उनकी आँखों में आँसू थे और क़ुरआन पाक उनकी गोद में था। मैं इस बात को अहम समझकर उनके पास गया, आगे बढ़कर उनके पास बैठ गया और पूछा आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने कहा क़ुरआन के यह पन्ने रुला रहे हैं। सूरः आराफ़ को पढ़ रहे थे। कहने लगे ईला क्या है जानते हो? मैंने कहा हाँ, वह कहते हैं ईला में यहूद लोग बसते थे, उन्हें शनिवार के दिन मछली के शिकार की मनाही थी। उनकी आज़माईश के लिये मछलियों को हुक्म हुआ कि वे सिर्फ़ शनिवार के दिन ही निकलें, शनिवार के दिन दरिया मछलियों से पटे रहते थे। तरोताज़ा मोटी और उम्दा मछलियाँ बहुत बड़ी संख्या में पानी के ऊपर कूदती-फाँदती रहती थीं। शनिवार के सिवा दूसरे दिनों में सख़्त कोशिश के बाद मिलती थीं। कुछ दिन तो ये लोग हुक्मे ख़ुदा की अ़ज़्मत (बड़ाई) करते रहे और उन्हें पकड़ने से रुके रहे, लेकिन फिर शैतान ने उनके दिलों में यह ख़्याल डाला कि मनाही तो हफ़्ते (शनिवार) के रोज़ मछलियों के खाने की है, तुम इन्हें हफ़्ते के दिन पकड़ सकते हो, लेकिन खा नहीं सकते, दूसरे रोज़ खा लेना। यह ख़्याल एक जमाअ़त का हो गया, लेकिन दूसरी जमाअ़त ने कहा कि खाने और पकड़ने दोनों की मनाही है।

ग़र्ज़ यह कि इस बहस के बाद जुमे का दिन आया तो ये लोग अपनी औ़रतों और बच्चों को लिये हुए निकले। उनके दाहिनी तरफ़ रोकने वाली जमाअ़त थी जो उनसे अलग रही, और बाईं तरफ़ दूसरी जमाअ़त थी जिसने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली। सीधी जानिब वालों ने कहा कि देखो हम तुम्हें मना करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ बन जाओ, और बाईं तरफ़ वालों ने कहा कि "अरे इस हलाक होने वाली और अ़ज़ाब में मुब्तला होने वाली क़ौम को क्या नसीहत कर रहे हो? ये कहीं मानने वाले हैं?" दायें वालों ने कहा ख़ुदा हमें माफ़ करे, इसलिये हम रोक रहे हैं कि शायद रुक जायें, हमारी तो दिली ख़्वाहिश है कि ये अ़ज़ाब में गिरफ़्तार न हों, अगर ये बाज़ न आये तो ख़ुदा माफ़ करे। लेकिन वे लोग ख़ता पर क़ायम रहे तो उन्होंने कहा ऐ ख़ुदा के दुश्मनो! तुमने न माना, ख़ुदा की क़सम हमको तो अन्देशा है कि तुम पर दिन भी न निकलेगा या तो ज़मीन में धंसा दिये जाओगे या पत्थर बरस पड़ेंगे, या ऐसा ही कोई और अ़ज़ाब आयेगा।

ये मना करने वाले और चुप रहने वाले अ़ज़ाबे ख़ुदा से डरकर शहर से बाहर ही रह गये। और ये गुनाहगार शहर के अन्दर रहे। शहर की चारदीवारी का दरवाज़ा अन्दर से लगा लिया, अब बाहर रहने वाले सुबह को शहर की चारदीवारी के दरवाज़े पर पहुँचे, लोग बाहर निकले हुए नहीं थे, दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। बहुत कुछ खटखटाया आवाज़े दीं लेकिन कुछ जवाब न मिला, अब फ़सील की दीवार के ऊपर सीढ़ियाँ लगाकर चढ़े, देखा कि ये सब बन्दर बने हुए हैं, उनकी लम्बी-लम्बी दुमें हैं। अब शहर की चारदीवारी का दरवाज़ा खोला, अन्दर दाख़िल हुए उन बन्दरों ने अपने अ़ज़ीज़ों (रिश्तेदारों) को पहचान लिया, लेकिन इनसानों ने अपने अ़ज़ीज़ बन्दरों को नहीं पहचाना, ये बन्दर नज़दीक आते उनके पाँव पर लौटते, तो इनसान उनसे कहते कि क्या हम तुमको मना नहीं करते थे, तो सर हिलाकर कहते कि हाँ। फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने यह आयत पढ़ी "जब उन्होंने नसीहत न मानी तो मना करने वालों को हमने बचा लिया और ज़ालिमों

Maktab E Ashraf

को अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया।"

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मना करने वालों को तो मैं जानता हूँ कि निजात पा गये, लेकिन दूसरों के बारे में ऐसा नहीं समझता। मुसीबत तो यह है कि हम भी लोगों को गुनाह करते हुए देखते हैं लेकिन उन्हें कुछ नहीं कहते। तो इक्रिमा कहते हैं कि मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा ये दूसरे भी तो इन गुनाहगारों से बहुत नाराज़ थे, और उनकी मुख़ालफ़त करते थे और कहते थे कि इस हलाक होने वाली क़ौम को नसीहत करके क्या करोगे? इससे ज़ाहिर है कि वे अ़ज़ाब में शरीक नहीं बनाये जा सकते। तो इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने खुश होकर मुझे दो अच्छे कपड़े इनाम में दिये। कहते हैं कि ये मछलियाँ हफ़्ते के रोज़ किनारे पर बहुत दिखाई देतीं और शाम हो जाती तो दूसरे हफ़्ते के आने तक न दिखाई देतीं। एक वक़्त एक आदमी जाल डोरियाँ और कीलें लेकर गया और वहाँ लगा दिया, एक बड़ी सी मछली हफ़्ते के दिन उसमें लग गई और हफ़्ते का दिन गुज़रने पर जब इतवार की रात आई तो यह मछली पकड़कर और भूनकर खाने लगा। मछली की बू पाकर लोग उसके पास दौड़े आये उससे पूछा उसने इनकार किया, जब बहुत इसरार किया तो कह दिया कि उसने एक मछली पकड़ी थी और जब दूसरा हफ़्ता (शनिवार) आया तो फिर ऐसा ही किया, और इतवार की रात में उसको भूनकर खाया। लोगों ने मछली की खुशबू पाई तो फिर आकर पूछा तो कहा तुम भी ऐसा ही करो जैसा कि मैं करता हूँ। उन लोगों ने पूछा तू क्या करता है उसने उन्हें अपना हीला बता दिया, तो दूसरे लोग भी उस हीले पर अ़मल करने लगे, यहाँ तक कि यह बात आ़म हो गई।

उनका एक शहर था उसको रबज़ कहते थे। उस शहर का दरवाज़ा रात में बन्द कर लिया करते थे, चुनाँचे रात ही में उनकी सूरतें मस्ख़ हो गईं (यानी बिगड़ गयीं) उनके पड़ोस के देहाती जो उस बस्ती के इर्द-गिर्द ही रहते थे और सुबह अपनी रोज़ी-रोटी की तलाश में शहर के अन्दर जाते थे, तो दरवाज़ा बन्द पाया, आवाज़ें दीं, जवाब न मिला दीवार के ऊपर चढ़कर देखा तो वे बन्दर बन चुके थे। नज़दीक आ रहे थे, अपने लोगों से लिपट रहे थे, सूरः ब-क़रह में इसकी तफ़सील हमने बयान कर दी है, वहाँ देख लेना काफ़ी है।

दूसरा क़ौल एक यह भी है कि चुप रहने वाले लोग भी अ़ज़ाब में मुब्तला हुए थे, क्योंकि ये लोग उन्हें भूनते और खाते देखकर भी मना नहीं करते थे। सिर्फ़ एक जमाअ़त ने मना किया था और उन लोगों का यह अ़मल आ़म तौर पर तक़लीद किया जाने लगा तो उनके बाज़ लोगों ने कहा कि क्यों इन ज़ालिमों को मना करते हो? इन्हें सख़्त अ़ज़ाब से साबक़ा पड़ने वाला है। हम तो इनके इस अ़मल से सख़्त नाराज़ हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि ये तीन फ़रीक़ थे, उनमें से सिर्फ़ मना करने वाले बचे, बाक़ी दोनों अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। लेकिन हज़रत इक्रिमा के कहने के बाद फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने अपने क़ौल से गोया रुजू कर लिया, क्योंकि उन्हें इनाम में लिबास और जोड़ा दिया, और इस क़ौल से तो यह रुजू वाला क़ौल बेहतर है कि ख़ामोश और चुप रहने वाले लोग भी निजात पा गये थे। और अल्लाह तआ़ला का क़ौल कि "हमने उन लोगों को सख़्त अ़ज़ाब में पकड़ लिया जो इस हुक्म की नाफ़रमानी करते थे" से इस बात पर दलालत होती है कि उनके सिवा दूसरे दो क़िस्म के लोग जो बच गये उन्हें ज़रूर निजात मिल गई होगी। 'बईसिन' के मायने सख़्त के हैं या दुख देने वाले के हैं या दर्दनाक के हैं, ये सब मायने आपस में क़रीब और एक दूसरे के मुनासिब हैं। वल्लाहु आलम। 'ख़ासिईन' के मायने ज़लील व हक़ीर के हैं।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ښ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○	और (वह वक़्त याद करना चाहिये) जब आपके रब ने (यह बात) बतला दी कि वह उन (यहूद) पर क़ियामत (के क़रीब) तक ऐसे (किसी-न-किसी) शख़्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उनको सख़्त सज़ाओं की तकलीफ़ पहुँचाता रहेगा, बेशक आपका रब वाक़ई (जब चाहे) जल्द ही सज़ा दे देता है, और बेशक वह (अगर कोई बाज़ आ जाए तो) बड़ी ही मग़फ़िरत (और) बड़ी ही रहमत वाला (भी) है (167)

हमेशा की फटकार

आगे इरशाद होता है कि अल्लाह ने हुक्म लगा दिया है कि उन यहूदियों पर क़ियामत तक बराबर अ़ज़ाब नाज़िल होता रहेगा। यानी उनके गुनाहों व मुख़ालफ़त और हर बात में बहाने ढूँढने के सबब उन्हें ज़िल्लत व हिक़ारत का अ़ज़ाब मिलता रहेगा। कहते हैं कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उन पर सात या तेरह साल तक ख़िराज (टैक्स) लगा रखा था, और सबसे पहले ख़िराज आप ही ने लगाया। फिर इन यहूदियों पर यूनानियों कुशदानियों कुलदानियों का क़ब्ज़ा रहा, फिर ईसाईयों के ग़ज़ब के अधीन रहे, वे इन्हें ज़लील करते रहे, जिज़या और ख़िराज (टैक्स) लेते रहे। इस्लाम आया तो नबी सल्ल. ने उन पर अपना ग़लबा किया। वे ज़िम्मी थे, जिज़या देते थे। फिर आख़िरकार वे दज्जाल के मददगार बनकर निकलेंगे लेकिन मुसलमान उनको क़त्ल कर देंगे। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम इसी मक़सद से मुसलमानों का साथ देंगे। ये सब क़ियामत के नज़दीक होगा।

आगे फ़रमाते हैं 'अल्लाह तआ़ला गुनाहगारों से बहुत जल्द बदला लेने वाला है लेकिन वह बड़ा ग़फ़ूर व रहीम है। जो तौबा करता है वह उसे बख़्श देता है' यहाँ भी वही बात है कि अ़ज़ाब और रहमत दोनों का ज़िक्र साथ-साथ है, ताकि अ़ज़ाब से डरने के सबब लोग मायूसी और नाउम्मीदी में मुब्तला न हो जायें। इसलिये तरग़ीब व तरहीब दोनों साथ हैं। ताकि लोग उम्मीद व ख़ौफ़ के बीच रहें।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۡ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ○ فَخَلَفَ مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ	और हमने दुनिया में उनकी अलग- अलग जमाअ़तें कर दीं, बाज़े उनमें नेक थे और बाज़े उनमें और तरह के थे (यानी बुरे), और हम उनको ख़ुशहालियों (सेहत और मालदारी) और बदहालियों (बीमारी और तंगी) से आज़माते रहे, शायद कि बाज़ आ जाएँ। (168) फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए कि किताब (तौरात) को उनसे हासिल किया, इस ज़लील दुनिया का माल व सामान ले लेते हैं, और (इस गुनाह को मामूली समझकर) कहते हैं कि हमारी ज़रूर मग़फ़िरत हो जाएगी, हालाँकि

Maktab E Ashraf

مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝	अगर उनके पास (फिर) वैसा ही माल व सामान (दीन बेचने के बदले) आने लगे तो उसको ले लेते हैं। क्या उनसे (इस) किताब (के इस मज़मून) का अ़हद नहीं लिया गया कि ख़ुदा की तरफ़ सिवाय हक़ बात के और किसी बात की निस्बत न करें? और उन्होंने उस (किताब) में जो कुछ था उसको पढ़ (भी) लिया, और आख़िरत वाला घर उन लोगों के लिए (इस दुनिया से) बेहतर है जो (इन बुरे अ़क़ीदों और आमाल से) परहेज़ रखते हैं, क्या फिर (ऐ यहूद) तुम नहीं समझते? (169) और (उनमें से) जो लोग किताब के पाबन्द हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो अपना सुधार और दुरुस्ती करें सवाब ज़ाया न करेंगे। (170)

विभिन्न जमाअ़तें विभिन्न काम

इरशाद होता है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल को गिरोह दर गिरोह करके दुनिया में फैला दिया, जैसा कि फ़रमाया- इसके बाद हमने बनी इस्राईल से कहा कि ज़मीन पर बसो, जब आख़िरत का दिन आयेगा तो हम फिर तुम सबको जमा कर लेंगे। इन बनी इस्राईल में अच्छे लोग भी हैं और वे भी हैं जो अच्छे नहीं। जैसा कि जिन्नात कहते थे कि हम में नेक जिन्न भी हैं और ग़ैर-नेक भी। हमारे भी विभिन्न फ़िर्क़े होते हैं। हमने उन्हें राहत व आराम का ज़माना और ख़ौफ़ व मुसीबत का ज़माना देकर दोनों तरह आज़माया ताकि वे इबरत (सीख) हासिल करके बुरे कामों से बाज़ आ जायें। फिर फ़रमाया कि "इसके बाद उनके जानशीन (उत्तराधिकारी) ऐसे ना-अहल और बुरे साबित हुए कि किताब के वारिस होने के बावजूद इस दुनिया की थोड़ी सी दौलत और शान व शौकत को तर्जीह देते हैं, उन जानशीनों में कोई भलाई और अच्छाई नहीं। ये तौरात को पढ़ना सिर्फ़ अपना हक़ समझते हैं दूसरों को पढ़ाना नहीं।

मुजाहिद रह. कहते हैं कि इससे ईसाई मुराद हैं, बल्कि यह आयत तो और भी आ़म है ईसाई और ग़ैर-ईसाई सब हक़ को बेचने का काम करते हैं और इससे दुनिया हासिल करते हैं, और अपने नफ़्स को यूँ बहला लेते हैं कि फिर तौबा कर लेंगे। लेकिन उसी जैसी फिर कोई वजह पैदा हो गई तो फिर पहले की तरह दुनिया के बदले दीन को बेच दिया। आयतों में तहरीफ़ (रद्दोबदल) कर दी, ग़लत मसला और ग़लत फ़तवा बता दिया, दुनियावी जो चीज़ भी हासिल करने की सूरत पैदा हो गई फिर न हलाल को देखा न हराम को, ले लिया, और फिर तौबा करने बैठ गये। तौबा की और ख़ुदा से मग़फ़िरत की दुआ़ की और फिर दुनिया का कोई माल सामने आया तो फिर उनके क़दम डगमगाये। ख़ुदा की क़सम ये तो बड़े नाफ़रमान और बुरे लोग थे। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद यही लोग तौरात व इन्जील के वारिस थे। हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने किताब में इनसे अ़हद भी ले लिया था। और एक दूसरी जगह इरशाद होता है कि उन अच्छे लोगों के बाद ऐसे बुरे जानशीन (उनके उत्तराधिकारी) आये जिन्होंने नमाज़ को ज़ाया कर

Maktab E Ashraf

दिया, अल्लाह तआ़ला से लम्बी चौड़ी उम्मीदें बाँधे रखीं और अपने नफ़्स को धोखा देते गये। दुनिया कमाने का मौक़ा आया तो फिर कुछ न देखा, कोई चीज़ गुनाह के करने से उन्हें न रोक सकी, जो मिला खा गये, न हलाल की परवाह की न हराम की।

बनी इस्राईल का जो क़ाज़ी होता था वह रिश्वतख़ोर होता था। उनके अच्छे लोग उस रिश्वतख़ोर हाकिम को निकालकर दूसरे को लाते, उसको ताकीद होती कि रिश्वत लेकर मुक़द्दमों का फ़ैसला न किया करे। वह वादे-वईद करके जब क़ाज़ी और जज बन जाता तो दोनों हाथों से रिश्वत लेने लगता और कहता कि अरे अल्लाह बख़्शने वाला है। दूसरे इस पर एतिराज़ और ताने व तशने करने लगते, लेकिन जब यह रिश्वतख़ोर मर जाता या हटा दिया जाता और यह ताने देने वाला क़ाज़ी बना दिया जाता तो यही शख़्स ख़ुद रिश्वत लेने लगता। इसी लिये अल्लाह पाक फ़रमाता है कि दुनिया उनके पास आई और उन्होंने उसको समेटना शुरू कर दिया। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि क्या किताब में उनसे अ़हद नहीं लिया गया था कि हक़ बात के सिवा कोई दूसरी बात ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब न करना। अ़हद यह लिया गया था कि लोगों को हक़ बात की तलक़ीन किया करना और हक़ मामले को छुपाना नहीं। लेकिन उन्होंने इस हुक्म को पीठ पीछे डाल दिया और थोड़े से रुपयों की ख़ातिर आयतों में तहरीफ़ (रद्दोबदल और हेर-फेर) कर दी, या उनका ग़लत मतलब निकाल लिया। उनकी यह कमाई क्या बुरी कमाई है। वे ख़ुदा से तमन्ना रखते हैं गुनाहों की बख़्शिश की, बख़्शिश की आरज़ू तो रखते हैं मगर गुनाहों को छोड़ते नहीं, तौबा पर क़ायम नहीं रहते। अगर ख़ुदा से डरना चाहो तो आख़िरत का ठिकाना तुम्हारे लिये बेहतर है, दुनिया पर क्यों जान दिये जाते हो। क्या इतनी सी बात समझते नहीं कि अल्लाह पाक बड़े अज्र की तर्ग़ीब दे रहा है और गुनाहों के बुरे नतीजों से डरा रहा है? इन दीन बेचने वालों को क्या ज़रा सी भी अ़क़्ल नहीं?

फिर अल्लाह पाक उन लोगों की तारीफ़ फ़रमाता है जिन्होंने अल्लाह की किताब से अपना ताल्लुक़ क़ायम रखा है, जो उन्हें मुहम्मद सल्ल. की पैरवी की तरफ़ बुला रही है और यह चीज़ उनकी किताब तौरात व इन्जील में दर्ज है। चुनाँचे फ़रमाया कि जो अल्लाह की किताब को थामे हुए हैं उसके हुक्मों पर अ़मल करते और उसकी मना की हुई चीज़ों से रुकते हैं, गुनाहों से बाज़ रहते हैं, नमाज़ें पढ़ते हैं तो हम उनके अज्र को ज़ाया नहीं करेंगे।

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है) जब हमने पहाड़ को उठाकर छत की तरह उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया और उनको यक़ीन हुआ कि अब उन पर गिरा, (और कहा कि जल्दी) क़बूल करो जो किताब हमने तुमको दी है, (यानी तौरात और) मज़बूती के साथ (क़बूल करो) और याद रखो जो अहकाम उसमें हैं, जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तक़ी बन जाओ। (171)	وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌ ۢبِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ ع ٢١

पहाड़ सर पर

और जबकि हमने उनके सरों पर पहाड़ को एक छज्जे की तरह लटका दिया जैसा कि आयत 'व

Maktaba Ashraf

र-फ़अ्ना फ़ौक़हुमुत्तूर....' से ज़ाहिर है। उस पहाड़ को फ़रिश्तों ने उनके सरों पर खड़ा किया था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जब मूसा अ़लैहिस्सलाम उनको पाक ज़मीन की तरफ़ लेकर चले और ग़ुस्सा दूर हो जाने के बाद तख़्तियाँ उठा लीं, और तब्लीग़ के फ़रीज़े से मुताल्लिक़ ख़ुदा का हुक्म उन्हें सुनाया तो उन्हें भारी गुज़रा और मानने से इनकार कर दिया, तो अल्लाह तआ़ला ने उनके सरों पर पहाड़ ला खड़ा किया जैसा कि सरों पर छत, फ़रिश्ते उसको थामे हुए थे और कहा गया कि देखो यह ख़ुदा की 'वही' और उसके अहकाम हैं, इसमें हलाल व हराम और 'अमर' (किये जाने वाले कामों) व 'नही' (मना किये हुए कामों) का ज़िक्र है, क़बूल करते हो या नहीं? वे कहने लगे सुनाईये क्या अहकाम हैं, अगर ये फ़राईज़ और हुदूद (सज़ायें) ख़ूब आसान हैं तो ज़रूर क़बूल कर लेंगे। नबी अ़लैहिस्सलाम ने कहा जो कुछ भी हो क़बूल कर लो। उन्होंने कहा नहीं, जब तक कि हम वाक़िफ़ न हो जायें कि क्या हदें व फ़राईज़ हैं कैसे क़बूल कर लें? कई दफ़ा यह सवाल जवाब हुआ आख़िरकार पहाड़ को ख़ुदा का हुक्म हुआ वह अपनी जगह से उठकर आसमान में उड़ता हुआ उनके सरों पर छा गया। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा ख़ुदा तआ़ला जो कुछ फ़रमाता है मानते हो कि नहीं? अगर तौरात और उसके अहकाम को नहीं मानोगे तो तुम्हारे सरों पर पहाड़ गिर पड़ेगा। जब उन्होंने देख लिया कि पहाड़ गिरने ही वाला है तो सज्दे में बायें रुख़ पर गिर पड़े और दाहिनी आँख से कन-अंखियों के तौर पर पहाड़ को देख रहे थे कि कहीं गिर तो नहीं रहा है। यही वजह है कि आज तक यहूदी जब भी सज्दा करते हैं तो अपने बायें रुख़ पर करते हैं और कहते हैं कि यह वह सज्दा है जो अ़ज़ाब को दूर करने की यादगार है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि. कहते हैं कि जब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अलवाह फेंक दिये थे जो ख़ुदा की किताब और उसके यहाँ की लिखी हुई थीं तो ज़मीन का हर पहाड़ हर दरख़्त हर पत्थर लरज़ उठा और हरकत में आ गया, यही वजह है कि हर यहूदी जब तौरात पढ़ता है तो अपना सर हिलाने और झूमने लगता है, जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया है कि "वे अपने सर हिलाने लगते हैं" वल्लाहु आलम।

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۚ شَهِدْنَا ۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝	और जबकि आपके रब ने आदम की औलाद की पुश्त से उनकी औलाद को निकाला, और उनसे उन्हीं के मुताल्लिक़ इक़रार लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सबने जवाब दिया कि क्यों नहीं, हम सब (इस हक़ीक़त के) गवाह बनते हैं, ताकि तुम लोग क़ियामत के दिन (यूँ न) कहने लगो कि हम तो इस (तौहीद) से (बिल्कुल) बेख़बर थे। (172) या (यूँ) कहने लगो कि (असल) शिर्क तो हमारे बड़ों ने किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए, सो क्या उन ग़लत राह (निकालने) वालों के फ़ेल पर आप हमको तबाही में डाले देते हैं? (173) और हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं, और ताकि वे बाज़ आ जाएँ। (174)

Maktab E Ashraf

अ़हदे अलस्त

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि हमने आदम अ़लैहिस्सलाम की ज़ुर्रियत (औलाद और नस्ल) को उनकी पुश्त से पहले दिन में बाहर निकाला और उन्होंने अपने नफ़्सों पर आप गवाही दी कि अल्लाह हमारा रब और मालिक है, ख़ुदा वही है और कोई नहीं। चुनाँचे यही एतिराफ़ (मानना और स्वीकार करना) इनसानी फ़ितरत है और यही उनकी जिबिल्लत (फ़ितरत) है। जैसा कि फ़रमाया कि तुम अपनी पूरी तवज्जोह हक़ दीन की तरफ़ क़ायम रखो। अल्लाह ने इसी फ़ितरत पर इनसान की फ़ितरत बनाई है। अल्लाह ने जिस चीज़ को जिस तरह पैदा कर दिया वह उसी तरह क़ायम रहेगी, उसमें तब्दीली नहीं होगी। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि हर मौलूद (नवजात) और हर मख़्लूक़ अपनी फ़ितरत पर पैदा हुई है। तथा हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि अल्लाह का इरशाद है कि मैंने अपने बन्दों को शिर्क से हटाकर पैदा किया है, लेकिन शयातीन आते हैं और दीने हक़ से उनको फेर देते हैं और मैंने जो हलाल रखा है उसको हराम कर देते हैं।

एक और रिवायत में है कि हर मौलूद (पैदा होने वाला) इसी मज़हबे इस्लाम पर पैदा होता है, लेकिन उसके माँ-बाप उसको यहूदी, ईसाई और मजूसी (आग को पूजने वाला) बना देते हैं। जैसा कि मवेशी भले चंगे पैदा होते हैं लेकिन उनके कान काटकर उनको बिगाड़ देते हैं। अस्वद बिन सरीअ़ कहते हैं कि मैं नबी सल्ल. के साथ चार लड़ाईयों में शरीक रहा, मुजाहिदीन ने काफ़िरों को क़त्ल करके उनके बच्चों को पकड़ लिया, इसकी ख़बर हुज़ूर सल्ल. को मिली, आपको यह हरकत बहुत नागवार गुज़री, कहने लगे लोगो! बच्चों को पकड़ रहे हो? किसी ने कहा या रसूलल्लाह! क्या ये मुश्रिकों के बच्चे नहीं हैं? आपने फ़रमाया तुम में से अच्छे से अच्छे लोग भी तो मुश्रिकों ही की औलाद हैं। कोई जान ऐसी नहीं जो इस्लाम पर पैदा न होती हो, और वह मुसलमान ही रहती है यहाँ तक कि वे माँ-बाप की ज़बान सीखते हैं और माँ-बाप उन्हें ईसाई या यहूदी बना देते हैं।

हदीसों में है कि आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ से उनकी औलाद और नस्ल ली गई और उन्हें या तो दायें वाले या बायें वाले बनाया और उनसे गवाही ली गई कि अल्लाह ही उनका रब है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- क़ियामत के दिन एक दोज़ख़ी से पूछा जायेगा कि बताओ तो अगर सारी ज़मीन और उसकी सारी दौलत व माल तुम्हारी मिल्क में हों और तुमसे कहा जाये कि बदले में यह सब देकर निजात हासिल कर लो तो क्या निजात हासिल करोगे? वह कहेगा यक़ीनन ऐसा करूँगा। तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मैंने तो तुमसे इससे बहुत ही कम का मुतालबा किया था। मैंने आदम अ़लैहिस्सलाम की पुश्त ही में तुमसे अ़हद ले लिया था कि किसी को मेरा शरीक न बनाओगे, लेकिन तुम शिर्क कर बैठे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि मक़ामे नोमान में अ़रफ़ा के दिन रूहों से जो वादा लिया गया था और आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ से निकाल कर उन्हें ज़र्रों (कणों) की तरह फैला दिया गया था, और उनसे यूँ गुफ़्तगू हुई थी कि "बताओ! क्या मैं तुम्हारा रब नहीं" सब रूहें कहने लगीं "क्यों नहीं! ज़रूर"।

हज़रत जरीर से रिवायत है कि ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम का लड़का मर गया जो सिर्फ़ छह दिन का था, तो ज़ह्हाक ने कहा ऐ जाबिर! तुम इसको लहद (क़ब्र) में रखो तो इसका चेहरा क़ब्र में खुला रखना, क्योंकि बच्चे को बैठाया जायेगा और उससे सवाल भी होगा। चुनाँचे मैंने ऐसा ही किया। फ़ारिग़ होने के बाद मैंने ज़ह्हाक से पूछा कि तुम्हारे बच्चे से क्या पूछा जाने वाला है और कौन पूछेगा? तो कहा उससे अज़ल के

अ़हद के बारे में सवाल होगा, जबकि आदम की पीठ में रूहों से बन्दगी का इक़रार लिया गया था। मैंने पूछा कि वह क्या इक़रार है? कहा कि जब अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ को छुआ तो उससे वे रूहें निकल पड़ीं जो क़ियामत तक नस्ले आदम से होने वाली हैं। फिर उनसे वादा लिया गया कि इबादत सिर्फ़ अल्लाह की करेंगे और किसी को शरीक नहीं बनायेंगे। फिर अल्लाह पाक उन रूहों के रिज़्क़ का ख़ुद कफ़ील बना, इसके बाद आदम अ़लैहिस्सलाम की पीठ में उन्हें वापस कर दिया गया। जब तक कि ये अ़हद वाले पैदा होते रहेंगे क़ियामत नहीं आयेगी। अब उनमें से जिसको बाद वाले अ़हद से साबक़ा पड़ेगा और वह उसको अच्छे तरीक़े पर पूरा करेगा तो उसी को पहले वाला अ़हद भी नफ़ा दे सकता है, और जो बाद के अ़हद (यानी दुनिया में आकर ईमान लाने) में कामयाब नहीं हुआ उसको पहले वाला अ़हद भी नफ़ा-बख़्श साबित नहीं हो सकता, और जो बचपन ही में मर गया इससे पहले कि बाद के अ़हद की नौबत आये और दुनिया में अच्छे अच्छे काम अन्जाम दे तो समझा जायेगा कि वह पहले वाले अ़हद यानी अज़ल के वादे पर क़ायम है, जो फ़ितरते इस्लाम की बुनियाद है। इस तमाम तहरीर से पता चलता है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इन बातों से बख़ूबी वाक़िफ़ थे। वल्लाहु आलम

नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने आदम से उनकी नस्ल और औलाद निकाली तो इस तरह निकलीं जैसे कंघी करने में बाल कंघी के अन्दर हो जाते हैं। अब अल्लाह तआ़ला ने उनसे पूछा "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?" तो रूहों ने कहा कि तू ज़रूर हमारा रब है। फ़रिश्ते कहने लगे हम गवाह हैं कि क़ियामत के रोज़ कहीं तुम यह न कह बैठो कि हमें तो इसका कोई इल्म नहीं।

हज़रत उमर रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा करके उनकी पीठ पर जब हाथ फैरा तो ज़ुर्रियत (यानी उनकी नस्ल) निकलना शुरू हो गई, तो फ़रमाया कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ तो जन्नती हैं, क्योंकि जन्नत वालों के जैसा ही अ़मल करेंगे और ये दोज़ख़ी हैं क्योंकि ये दोज़ख़ वालों का सा अ़मल करेंगे। किसी ने पूछा या रसूलल्लाह! जब यह वहीं तय हो चुका है तो फिर अ़मल का क्या फ़ायदा रहा? फ़रमाया कि अल्लाह का वही बन्दा जन्नत के लिये पैदा हुआ है जिसके अ़मल जन्नतियों के से होंगे और समझो कि दोज़ख़ी वही है जो दोज़ख़ियों के से काम करे और उसी बुरे अ़मल पर तौबा से पहले उसका दम टूटे।

हुज़ूर नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि जब रूहें पीठ से ज़ाहिर हुईं तो हर इनसान के माथे पर एक रोशनी चमक रही थी, उस तमाम नस्ल को आदम के सामने पेश किया गया। आदम ने पूछा ऐ रब! ये कौन हैं? फ़रमाया गया ये सब तुम्हारी नस्ल है। एक शख़्स के चेहरे पर बहुत ज़्यादा रोशनी थी। पूछा या रब! यह कौन है? अल्लाह ने फ़रमाया कि एक लम्बी मुद्दत के बाद तुम्हारी नस्ल से एक शख़्स होगा जिसको दाऊद कहेंगे। आदम ने पूछा या रब! इसकी क्या उम्र होगी? कहा साठ बरस। तो आदम ने कहा या रब! मैंने अपनी उम्र में से चालीस साल इसको दे दिये। लेकिन जब आदम अ़लैहिस्सलाम की उम्र ख़त्म हो गई, मलकुल-मौत आये तो आदम अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि अभी से क्यों आ गये, अभी तो चालीस साल मेरी उम्र के बाक़ी हैं। कहा गया कि ये चालीस साल तुमने अपने बेटे दाऊद को नहीं दिये थे? तो आदम अ़लैहिस्सलाम ने इनकार किया, चुनाँचे उनकी नस्ल में भी इनकार की आ़दत पड़ गई। और चूँकि आदम भूल गये थे इसलिये भूल-चूक भी औलादे आदम की ख़स्लत बन गई। और आदम से चूँकि ख़ता सरज़द हो गई थी इसलिये ख़ता करना भी औलादे आदम की फ़ितरत है। जब आदम अ़लैहिस्सलाम ने अपनी ज़ुर्रियत (नस्ल और औलाद) को देखा था तो उनमें बीमार भी थे, कोढ़ी भी, सफ़ेद दाग़ वाले भी और

अंधे वग़ैरह भी, आदम ने कहा या रब! ये ऐसे क्यों बना दिये गये? फ़रमाया ताकि इनसान हर हाल में मेरा शुक्र करे। आदम अ़लैहिस्सलाम ने पूछा या रब! ये कौन हैं जो सर से पैर तक नूर हैं? कहा गया ये अम्बिया (नबी और रसूल) हैं।

नबी करीम सल्ल. से किसी ने पूछा या रसूलल्लाह! क्या आमाल नये सिरे से कुछ फ़ायदेमन्द हैं या जो कुछ तय हो गया सो हो गया? फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहिस्सलाम से उनकी नस्ल और औलाद निकाली, फिर उन्हीं की अपनी ज़बान से अल्लाह के एक होने की गवाही ली, फिर दो मुट्ठियाँ उनमें से भरीं और कहा ये तो ठहरे जन्नती और वे ठहरे दोज़ख़ी। अगरचे अ़मल पर जन्नत दोज़ख़ का दारोमदार है लेकिन हमें मालूम है कि जन्नत वालों जैसे अ़मल करना किस पर आसान रहेगा और किस पर दोज़ख़ियों जैसे अ़मल करना आसान रहेगा। इसी बिना पर वे जन्नती या दोज़ख़ी होंगे। कुछ हमने अज़ल में (यानी शुरू के दिन) उन्हें जन्नती या दोज़ख़ी नहीं बनाया, उनके आमाल इसके ज़िम्मेदार हैं। अलबत्ता हम अभी से दोनों का इल्म रखते हैं। इसी लिये कहते हैं कि फ़ुलाँ जन्नती होंगे और फ़ुलाँ दोज़ख़ी। यह तक़सीम हमारे कह देने की बिना पर नहीं हुई है बल्कि अ़मल की बिना पर हुई है। यह हमने अबू हुरैरह रज़ि. की हदीस की वज़ाहत की है।

रसूले पाक सल्ल. ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा करके क़िस्मत बना दी तो दायीं जानिब भी रूहें थीं और बाईं ज्ञानिब भी, अल्लाह तआ़ला ने दोनों से सवाल किया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? दोनों ने माना कि हाँ तू हमारा रब है। फिर दायें बायें दोनों तरफ़ की रूहें मिला दी गईं, किसी ने ख़ुदा से पूछा या रब ये दोनों अलग अलग थे, इनमें फ़र्क़ था फिर एक दूसरे में क्यों मिला दिये गये? ख़ुदा ने कहा इसमें कोई हर्ज नहीं, अपने अपने अ़मल के सबब वे अब भी एक दूसरे से अलग ही रहेंगे। मिला देने पर भी नेक व बद दोनों का आपस में कोई मिलाप नहीं। हम ऐसा न करते तो क़ियामत के दिन गुनाहगार कहते कि हमको तो इसका कोई इल्म ही नहीं था, और नेक तो किसी सूरत में न कहते। अब बात सिर्फ़ अ़मल पर रह गई है, तो गुनाहगारों को एतिराज़ करने और वाक़िफ़ न होने का उज़्र (बहाना) करने का हक़ नहीं रहा। यह हमने अबू उमामा की हदीस की वज़ाहत की है।

क़ियामत तक पैदा होने वाली रूहों को शक्लें दी गईं, बोलने की ताक़त दी, उनसे अ़हद लिया, उस अ़हद पर ज़मीन व आसमान गवाह बनाये गये, आदम भी गवाह हुए वरना क़ियामत में तो वे साफ़ इनकार कर बैठते। जान लो कि ख़ुदा के सिवा कोई रब नहीं है, किसी को शरीक न बनाओ, मैं तुम्हारे पास पैग़म्बर भेजूँगा ताकि वह तुमको अ़हद व वादा याद दिलायें। मैं किताबें भेजूँगा। तो रूहों ने कहा कि तेरे सिवा हमारा कोई रब नहीं, ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी का इक़रार किया। आदम उनके सामने लाये गये, आदम ने देखा कि उनमें ग़नी (मालदार) भी हैं और फ़क़ीर भी, ख़ूबसूरत भी हैं और बदसूरत भी, कहा गया या रब! सब लोग एक ही हालत में क्यों नहीं पैदा किये गये? कहा कि मुझे यह पसन्द था कि देखूँ शाकिर (शुक्र करने वाला) व साबिर (सब्र करने वाला) कौन है। सब एक ही जैसे हों तो यह इम्तिहान कहाँ हो सकता है? अम्बिया उन लोगों में नूर भरे चिराग़ की मानिंद थे। यह रिसालत व नुबुव्वत दूसरा अ़हद था कि ख़ुदा की तौहीद (एक होने) के इक़रार के बाद इक़रारे रिसालत (यानी जो नबी उनको दावत दे उसके अल्लाह का पैग़म्बर होने का इक़रार) भी करें। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने नबियों से भी मीसाक़ (अ़हद व वादा) लिया है, वह यह कि दीने हनीफ़ फैलाने के लिये पुख़्ता इरादा कर लो जो एक फ़ितरी दीन है। इस गवाही लेने से ग़र्ज़ यह थी कि इनसान तौहीद की फ़ितरत पर पैदा किया गया है और इसलिये 'मिन्

Mahtab E Ashraf

ज़ुहूरिहिम्' कहा गया न कि 'मिन् ज़हरिही' यानी सब इनसानों की नस्लों से एक के बाद एक दूसरी नस्ल। जैसा कि फ़रमाया कि उसने तुम सबको अलग-अलग (यानी अकेले-अकेले) ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाया है। और फ़रमाया- "जैसा कि हमने तुमको पैदा किया दूसरी क़ौमों की नस्ल से" और ख़ुद आप अपना उन्हें गवाह बनाया, जब ही तो गवाही दी कि "हाँ तू हमारा रब है" यानी अपने हाल से और अपने क़ौल से दोनों तरह वे इक़रारी रहे। क्योंकि शहादत (गवाही व इक़रार) कभी तो क़ौल के ज़रिये होती है जैसा कि अल्लाह के फ़रमान में है "क़ालू शहिद्ना अ़ला अन्फ़ुसिना" (हमने अपनी जानों पर गवाही दी) और कभी हाल के ज़रिये होती है जैसा कि फ़रमायाः

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسَاجِدَ اللّٰهِ شَاهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ.

यानी मुश्रिकों को कोई हक़ नहीं कि ख़ुदा की मस्जिदें बसायें, अपनी ही ज़ात पर कुफ़्र की शहादत (इक़रार व गवाही) देते हुए। यानी उनका हाल उनके कुफ़्र का शाहिद (गवाह) है, यह शहादत क़ौली शहादत नहीं हाली शहादत है। और सवाल कभी क़ाल (ज़बान और अलफ़ाज़) के ज़रिये होता है कभी हाल के ज़रिये, जैसा कि फ़रमायाः

وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ.

यानी तुमने जो कुछ माँगा अल्लाह ने तुम्हें दिया।

कहते हैं कि इस बात पर यह दलील भी है कि उनके शिर्क करने पर यह हुज्जत उनके ख़िलाफ़ पेश की। पस अगर यह वास्तव में हुआ होता जैसा कि एक क़ौल है तो चाहिये था कि हर एक को याद होता ताकि उस पर हुज्जत रहे। अगर इसका जवाब यह हो कि फ़रमाने रसूल से ख़बर पा लेना काफ़ी है तो इसका जवाब यह है कि जो रसूलों ही को नहीं मानते वे रसूलों की दी हुई ख़बरों को कब सही मानेंगे? हालाँकि क़ुरआने करीम ने रसूलों के झुठलाने के अ़लावा ख़ुद इस शहादत (गवाही देने) को मुस्तक़िल दलील ठहराया है, चुनाँचे इससे यही साबित होता है कि इससे मुराद फ़ितरते सलीमा है जिस पर ख़ुदा ने सारी मख़्लूक़ को पैदा किया है, और वह फ़ितरत अल्लाह तआ़ला को एक मानना और किसी को उसका शरीक न मानना है। इसी लिये फ़रमाता है कि कहीं तुम यह न कहो कि हमको तो इस तौहीद (अल्लाह के एक होने) का इल्म ही नहीं था और यह कि शिर्क तो हमारे बाप-दादाओं ने किया था, उनके इस नये रास्ते को निकालने पर हमें सज़ा क्यों हो।

(इन आख़िर की सतरों में जो मज़मून बयान हुआ है इससे किसी दुविधा में पड़ने की ज़रूरत नहीं, यह अ़हद हर इनसान से लिया गया है, इसका याद होना ज़रूरी नहीं, कितनी बातें ऐसी हैं जो इनसान इसी दुनिया में और इसी ज़िन्दगी में भूल जाता है, और बहुत सी बार याद दिलाने पर भी याद नहीं आता, फिर वह तो दूसरे आ़लम की बात है, अगर याद न रहे तो उसकी वास्तविकता पर कोई असर नहीं पड़ता, अल्लाह ने अपने कलाम में इसकी ख़बर दी, उसके रसूलों ने इसको बयान किया बस हुज्जत पूरी हो गयी, किताबें और रसूल इसी राहे हिदायत की तरफ़ बुलाने के लिये भेजे गये। फिर आख़िरत में सबको याद आ जायेगा।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

Maktaba Ashraf

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِىْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ○ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ○ سَاۗءَ مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ○

और उन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुनाईये कि उसको हमने अपनी आयतें दीं, फिर वह उनसे बिल्कुल ही निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग लिया, सो वह गुमराह लोगों में (दाख़िल) हो गया। (175) और अगर हम चाहते तो उसको उन (आयतों) की बदौलत बुलन्द (रुतबे वाला) कर देते, लेकिन वह तो दुनिया की तरफ़ माईल हो गया और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी करने लगा। सो उसकी हालत कुत्ते की सी हो गई कि अगर तू उसपर हमला करे तब भी हाँपे या उसको छोड़ दे तब भी हाँपे। यही हालत (आ़म तौर पर) उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया सो आप उस हाल को बयान कर दीजिए, शायद वे लोग कुछ सोचें। (176) (हक़ीक़त में) उन लोगों की (हालत भी) बुरी हालत है, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, और (इस झुठलाने से) वे अपना (ही) नुक़सान करते हैं। (177)

रहमत के बाद लानत

बनी इस्राईल में एक शख़्स बलअ़म बिन बाउर नाम का बलक़ा वालों में से था। कहते हैं कि वह 'इस्मे आज़म' जानता था। यहूदी उलेमा के साथ बैतुल-मुक़द्दस में रहता था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि वह यमन वालों में से था। अल्लाह तआ़ला ने उसको अपनी निशानियाँ और करामतें दी थीं। लेकिन उसने नाक़द्री की, वह 'मुस्तजाबुद्दावात' था। उसकी दुआयें क़बूल हो जाती थीं। लोग मुसीबतों के वक़्त ख़ुदा से दुआ़ माँगने के लिये उसी को आगे बढ़ाते। अल्लाह के नबी हज़रत मूसा ने उसको तब्लीग़े दीन के लिये मुल्के मद्यन की तरफ़ भेजा, यहाँ के बादशाह ने उसको अपना बना लिया और उस पर बहुत इनायतें कीं। चुनाँचे उसने उस बादशाह के दीन को क़बूल कर लिया और दीने मूसा को छोड़ दिया। उसका नाम बलअ़म था, और यह भी कहा गया है कि यह उमैया बिन अबी सल्त है, मुम्किन है कि इस कहने से यह मुराद हो कि यह उमैया भी उसी के जैसा था, उसको भी पहली शरीअ़तों का इल्म था लेकिन उसने इससे फ़ायदा न उठाया। हुज़ूर सल्ल. के ज़माने को भी उसने पाया था। आपकी खुली निशानियाँ देखी थीं, मोजिज़े अपनी आँखों से देख लिये। दीने ख़ुदा में दाख़िल होते हुए हज़ारों को देखा, लेकिन मुश्रिकों के मेल-जोल, उनमें उसके सम्मान और वहाँ की सरदारी ने उसे इस्लाम और हक़ को क़बूल करने से रोक दिया, उसने बड़े मर्सिये बदर की लड़ाई में मारे गये काफ़िरों के मातम में कहे हैं। उसकी ज़बान तो ईमान ला चुकी थी लेकिन दिल मोमिन नहीं हुआ था। यह सारा बयान मुम्किन है कि उमैया बिन अबी सल्त से मुताल्लिक़ हो

और इसका बलअ़म से कोई ताल्लुक़ न हो। बलअ़म का ज़िक्र क़ुरआने करीम में हो रहा है कि हमने उसको अपनी आयतें यानी करामतें बख़्शीं, लेकिन वह उनसे हट गया। यानी उनसे मेहरूम रहा, अल्लाह तआ़ला ने उसको तीन दुआ़ओं का हक़ दिया था, कि क़बूल होंगी। एक औ़रत और एक लड़का उसका था। उसकी औ़रत ने कहा कि एक दुआ़ मेरे हक़ में ख़ास कर दो। उसने कहा अच्छा कहो क्या दुआ़ है? औ़रत ने कहा कि ख़ुदा तआ़ला से दुआ़ करो कि सारे बनी इस्राईल में मुझसे ज़्यादा हसीन कोई औ़रत न हो। उसने ख़ुदा से दुआ़ की और वह सबसे ज़्यादा हसीन औ़रत बन गई। जब औ़रत ने यह महसूस कर लिया कि उस जैसी हसीन अब कोई औ़रत नहीं तो शौहर से बेपरवाह हो गई और उसके ख़्यालात और आमाल कुछ और ही हो गये, तो बलअ़म ने दुआ़ की कि वह कुतिया बन जाये। चुनाँचे वह कुतिया बन गई। दो दुआ़यें ख़त्म हो गईं उसके लड़के आकर कहने लगे कि हमसे तो नहीं देखा जा सकता कि हमारी माँ कुतिया हो, लोग हमें शर्म दिला रहे हैं, दुआ़ करो कि वह अपने पहले हाल पर आ जाये। चुनाँचे दुआ़ की और वह औ़रत जैसी पहले थी वैसी ही हो गई। अब तीनों दुआ़यें ख़त्म हो गईं। यह रिवायत ग़रीब है।

इस आयत का सबबे नुज़ूल जो मशहूर है वह यह है कि बनी इस्राईल के ज़माने में एक शख़्स था और वह जब्बारीन यहूद के शहर का रहने वाला था। इस्मे आज़म जानता था। कहा गया है कि उसकी दुआ़ अल्लाह के यहाँ क़बूल हुआ करती थीं और सबसे अ़ज़ीब यह है जो बाज़ लोग कहते हैं कि वह नबी था, मगर उसकी नुबुव्वत छीन ली गई। इब्ने जरीर का ऐसा क़ौल है लेकिन यह बिल्कुल सही नहीं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मूसा जब शहरे जब्बारीन में आये तो बलअ़म के पास उसके लोग आये और कहा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम एक लौहपुरुष है, उसके साथ बड़ी फ़ौज है, अगर वह हम पर ग़ालिब आ जाये तो हम सब हलाक हो जायेंगे, ख़ुदा से दुआ़ करो कि यह मूसा और उसके साथियों की मुसीबत हम से दूर हो जाये। उसने कहा कि अगर मैं ऐसी दुआ़ करूँगा तो मेरा दीन और दुनिया दोनों तबाह हो जायेंगे। लेकिन लोग उसको तंग ही करते रहे। चुनाँचे उसने ऐसी दुआ़ की तो ख़ुदा ने उसकी बुज़ुर्गी और करामतें सब उससे छीन लीं। चुनाँचे फ़रमायाः

فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ.

यानी वह करामतों से मेहरूम हो गया। यहीं से शैतान उसके पीछे लग गया।

सुद्दी रह. कहते हैं कि जब मूसा के लिये मैदाने तीह की चालीस साल की गर्दिश ख़त्म हुई तो अल्लाह तआ़ला ने यूशा बिन नून नबी को भेजा। उन्होंने बनी इस्राईल को अपने नबी होने की ख़बर दी और यह कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया है कि जब्बारीन से जंग करो। जब्बारीन ने यूशा के हाथ पर बैअ़त की और तस्दीक़ की। लेकिन बनी इस्राईल का एक आदमी बलअ़म नाम का नाफ़रमानी करके जब्बारीन के पास चला गया और उनसे कहा कि तुम न घबराओ, जब तुम लड़ने के लिये निकलोगे तो मैं अपने बददुआ़ के हथियार से काम लूँगा और वे सब हलाक हो जायेंगे। जब्बारीन के पास उसके दुनियावी ऐश व आराम और लाभ उठाने का सारा सामान मौजूद था सिवाय इसके कि वह उनकी औ़रतों से कोई फ़ायदा नहीं उठा सकता था, क्योंकि उन औ़रतों की अ़ज़मत उस पर छाई हुई थी, वह सिर्फ़ अपनी ही औ़रत से ताल्लुक़ रखता था, शैतान उसके पीछे लग गया, यानी उस पर छा गया। अब वह शैतान की फ़रमाँबरदारी करने लगा तो वह हलाक और तबाह होने वालों में से हो गया।

नेक लोग भी बाज़ वक़्त बुरे बन जाते हैं, चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मुझको तुम पर कुछ इस

Maktaba Ashraf

क़िस्म का अन्देशा है जैसे वह आदमी जो क़ुरआन का इल्म रखता था, क़ुरआन की बरकत और रौनक़ उसके चेहरे से ज़ाहिर थी, और इस्लामी शान थी। लेकिन अल्लाह की दी हुई बदबख़्ती ने उसे आ घेरा, इस्लाम के अहकाम उसने पीठ पीछे डाल दिये। वह अपने पड़ोसी पर तलवार लेकर दौड़ा, यह इल्ज़ाम लगाकर कि उसने शिर्क किया है। नबी पाक सल्ल. से पूछा गया कि इल्ज़ाम लगाने वाला ख़ताकार था या जिस पर इल्ज़ाम लगाया गया? आपने फ़रमाया कि ख़ताकार इल्ज़ाम लगाने वाला था। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि अगर हम चाहते तो दुनिया-परस्ती की गन्दगी से उसको दूर और पाक रखते और जो करामतें उसको दी थीं उनसे उसको मेहरूम न करते, लेकिन वह दुनिया की तरफ़ माईल हो गया और दुनिया में ऐसा फंस गया जैसे दूसरे ना-समझ लोग, वह शैतान का साथी बन गया और पस्ती इख़्तियार कर ली। उसकी सवारी ने ख़ुदा को सज्दा किया, लेकिन बलअ़म ने शैतान को सज्दा किया।

इब्ने सय्यार से इस आयत "और उस शख़्स की ख़बर पढ़ो जिसको हमने करामतें बख़्शी थीं" के बारे में रिवायत है कि मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को लेकर उस सरज़मीन (इलाक़े और मुल्क) का रुख़ किया जिसमें बलअ़म रहता था। या शाम (सीरिया) का रुख़ किया। मूसा की फ़ौजी चढ़ाई से वहाँ के लोग घबरा गये और बलअ़म के पास आकर कहने लगे कि मूसा और उनके लश्कर के लिये बददुआ़ करो। उसने कहा कि ठहरो मैं अपने रब से मश्विरा कर लूँ। चुनाँचे उसने इस्तिख़ारा किया तो उससे कहा गया कि नहीं बददुआ़ न करना। क्योंकि वे मेरे बन्दे हैं, और उनमें मेरा नबी भी है। उसने अपनी क़ौम से कह दिया कि मैंने रब से मश्विरा किया लेकिन मुझे बददुआ़ करने की मनाही आई है। अब लोगों ने उसके पास बहुत से हदिये और तोहफ़े भेजे। चाहिये था कि वह क़बूल न करता लेकिन उसने क़बूल कर लिया।

उसके बाद ये लोग फिर उसको मजबूर करने लगे, उसने कहा अच्छा फिर मश्विरा करूँगा। अब के उसको कोई मश्विरा न मिला, उसने कहा मुझे कोई मश्विरा नहीं दिया गया, इसलिये बददुआ़ न करूँगा। लेकिन लोगों ने उसको बहकाया कि अगर ख़ुदा को मन्ज़ूर ही न होता तो पहले की तरह रोक देता। अब अल्लाह तआ़ला ख़ामोश है तो गोया तुमको बददुआ़ की इजाज़त है। चुनाँचे धोखा खा गया और मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके लश्कर के लिये बददुआ़ करने लगा। जब कभी वह बददुआ़ के अलफ़ाज़ मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिये निकालना चाहता तो अपनी ही क़ौम के लिये बददुआ़ के अलफ़ाज़ ज़बान से निकलते। और अपनी क़ौम की फ़तह के अलफ़ाज़ अदा करना चाहता तो मूसा की फ़तह के अलफ़ाज़ ज़बान से निकल जाते, या "इन्शा-अल्लाह तआ़ला" का जुमला भी आख़िर में ज़बान से निकल जाता। जिसके सबब बददुआ़ अल्लाह की चाहत के साथ मशरूत होने के सबब बेकार बनकर रह जाती।

लोग कहने लगे अरे तुम तो बददुआ़ मूसा के बजाय हमारे हक़ में कर रहे हो? वह कहता मैं क्या करूँ मेरी ज़बान से बिना इरादा ऐसा ही कुछ निकल जाता है। मैं गुमान करता हूँ कि अगर बददुआ़ करूँगा भी तो क़बूल नहीं होगी। अब मैं तुमको एक तदबीर बताता हूँ जिससे ये लोग हलाक हो सकते हैं। देखो अल्लाह तआ़ला ने ज़िना को हराम कर दिया है, और ज़िना के फ़ेल से सख़्त नाराज़ है। अगर ये लोग किसी तरह ज़िना में मुब्तला कर दिये जायें तो यक़ीनन इनकी हलाकत की उम्मीद है। चुनाँचे ऐसा करो कि उनकी फ़ौज में अपने पास की औरतें भेज दो, ये तो बीवी छोड़े हुए हैं, मुसाफ़िर हैं, हो सकता है कि ज़िना में पड़ जायें और हलाक हो जायें। उन लोगों ने ऐसा ही किया, औरतों को मूसा अ़लैहिस्सलाम की फ़ौज की तरफ़ भेज दिया यहाँ तक कि बादशाह की बेटी भी फ़ौज में इसी मक़सद के लिये आ गई। शहज़ादी को उसके बाप ने या बलअ़म ने ताकीद कर दी थी कि मूसा अ़लैहिस्सलाम के सिवा और किसी के क़ब्ज़े और

Maktab E Ashraf

इस्तेमाल में न आना।

कहते हैं कि वाक़ई लोग ज़िना में पड़ गये। शहज़ादी के पास बनी इस्राईल का एक सरदार आ पहुँचा और उससे फ़ायदा उठाना चाहा। उसने कह दिया कि मूसा अ़लैहिस्सलाम के सिवा मैं और किसी को न आने दूँगी। सरदार ने बताया कि मेरा ओ़हदा ऐसा ऊँचा है और मेरी यह शान व शौकत है, तो लड़की ने अपने बाप को लिख भेजा और इस बारे में उसकी हिदायत माँगी। उससे कहा गया कि हाँ मान जाओ। वे दोनों जब इस बुरे फ़ेल में मसरूफ़ थे तो हारून अ़लैहिस्सलाम का एक बेटा वहाँ पहुँचा, उसके हाथ में एक नेज़ा था, ऐसा मारा कि दोनों अपनी मौजूदा हालत के अन्दर एक ही नेज़े में पिरो (यानी बिन्ध) गये। वह नेज़ा बुलन्द करके लोगों के सामने आया और लोग देखते रह गये और अल्लाह तआ़ला ने उन पर ताऊन की बीमारी का अ़ज़ाब भेजा। जिससे सत्तर हज़ार आदमी मर गये।

इब्ने सय्यार का बयान है कि बलअ़म अपनी गधी पर सवार होकर मालूली तक आया, यहाँ से उसकी सवारी आगे नहीं चल रही थी, वह उसको मार रहा था और वह बैठती जा रही थी, अल्लाह ने उसको ज़बान दी और वह कहने लगी कि तू मुझको क्यों मार रहा है, सामने देख क्या है? देखा तो वहाँ शैतान खड़ा था, वह उतरकर शैतान को सज्दा करने लगा। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है 'कि फिर वह उनसे बिल्कुल ही निकल गया.........'।

सालिम अबू नज़र कहते हैं कि मूसा अ़लैहिस्सलाम जब मुल्क शाम से बनी किनआ़न में आये तो बलअ़म की क़ौम आकर उनसे कहने लगी कि मूसा अपनी क़ौम को लेकर हमारे मुल्क में आया हुआ है, ताकि हमें क़त्ल करे और यहाँ उन्हें बसाये। हम तुम्हारी क़ौम हैं, हमारा कोई ठिकाना न रहेगा, तुम दुआ़ की क़ुबूलियत वाले इनसान हो। ख़ुदा से उनके लिये बद्दुआ़ करो। उसने कहा यह तुम्हारी कमबख़्ती है, मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला के नबी हैं, उनकी मदद पर फ़रिश्ते भी हैं और मोमिन लोग भी हैं। मैं कैसे बद्दुआ़ करूँ? मैं जो जानता हूँ सो जानता हूँ। लोगों ने कहा हम रहें कहाँ और हर घड़ी उस पर दबाव डालते रहे और आ़जिज़ी व ख़ुशामद करते रहे, यहाँ तक कि उन लोगों ने उसको फ़ितने में डाल ही दिया। चुनाँचे वह अपनी गधी पर सवार होकर एक पहाड़ की तरफ़ चला जिस पर चढ़कर बनी इस्राईल के लश्कर को देखते थे, उसको 'जबले हुसबान' कहते हैं। कुछ दूर चला था कि उसकी सवारी बैठ गई, उतर कर उसको मारने लगा, कुछ दूर चलकर वह फिर बैठ गई। जब बार-बार उसको मारने लगा तो अल्लाह तआ़ला ने उसको ज़बान दी और वह कहने लगी कि "बलअ़म! तू मुझे किधर लिये जा रहा है, क्या नहीं देखता कि फ़रिश्ते मेरे सामने हैं, मुझे धकेल कर वापस कर रहे हैं। तू अल्लाह के नबी और मोमिनों पर बद्दुआ़ करने के लिये जा रहा है" लेकिन वह बाज़ न आया और फिर उसको मारने लगा। चुनाँचे अबकी बार वह अल्लाह के हुक्म से हुसबान नाम की पहाड़ी पर चढ़ गई। वह वहाँ पहुँचकर मूसा और मोमिनों के लिये बद्दुआ़ करने लगा, लेकिन उसकी ज़बान उलट जाती थी और बद्दुआ़ अपनी क़ौम के लिये और दुआ़ मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिये निकलती थी।

कहते हैं कि बद्दुआ़ करने पर उसकी ज़बान बाहर निकल पड़ी और उसके सीने पर लम्बी होकर लटक गई। अब वह बोल उठा कि मेरी दुनिया भी गई और दीन भी गया। क़ौम से कहने लगा अब तो सिर्फ़ एक बुरे हीले और तदबीर ही से काम लिया जा सकता है, अपनी लड़कियों को बनाव-सिंगार करके बनी इस्राईल के लश्कर में भेजो, उनसे कह दो कि मर्दों को अपनी तरफ़ माईल करें, अगर एक शख़्स भी ज़िना का मुर्तकिब हो गया तो समझो तुमने मक़सद पा लिया। चुनाँचे औ़रतें बनी इस्राईल के लश्कर में भेजी गईं।

Maktab E Ashraf

किनआ़न वालों में की एक औ़रत जिसका नाम कस्बती था। सूर की बेटी थी जो क़ौम का सरदार और बादशाह था। उस औ़रत का मिलाप हो गया बनी इस्राईल के एक सरदार से, जिसका नाम ज़मरी बिन शलूम था। जो शमऊन बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम का पोता था, और सरदार था। उसने उस औ़रत को देखा तो पसन्द आ गई। उसका हाथ पकड़कर मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास ले गया और कहने लगा मूसा! तुम तो यही कहोगे कि यह तुझ पर हराम है, इसके नज़दीक न होना। मूसा ने कहा हाँ यह तुझ पर हराम है। उसने कहा मूसा! ख़ुदा की क़सम! मैं यहाँ तुम्हारी बात न सुनूँगा। फिर उस लड़की को अपने ख़ेमे में ले गया और उसके साथ सोहबत की। अल्लाह ने बनी इस्राईल में ताऊन भेज दिया। मूसा की क़ौम का सरदार फ़ख़्ख़ास बिन अ़नीरार बिन हारून नाम का ज़मरी बिन शलूम की इस हरकत के वक़्त वहाँ मौजूद न था, और इस हरकत से सारी क़ौम में ताऊन फैल गया। यह सारा वाक़िआ फ़ख़्ख़ास को मालूम हुआ उसने अपना लोहे का नेज़ा उठाया और ज़मरी के ख़ेमे में दाख़िल हुआ, वे दोनों लेटे हुए थे, दोनों को एक ही नेज़े में पिरो लिया और नेज़े को सर पर बुलन्द करके निकला। फ़ख़्ख़ास नौजवान और ताक़तवर था, यह बोझ उठा लिया और उठाते हुए कहता जा रहा था कि "ऐ ख़ुदा! हम तेरे नाफ़रमानों के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं। अब ताऊन ख़त्म कर दे" ताऊन ख़त्म हो गया। इस मुद्दत में कि उसने औ़रत हासिल की फिर फ़ख़्ख़ास के हाथों क़त्ल हुआ, ताऊन (प्लेग) से हलाक होने वाले बनी इस्राईल की संख्या सत्तर हज़ार तक पहुँच गयी या कम से कम बीस हज़ार। फ़ख़्ख़ास की इसी शुक्रगुज़ारी में बनी इस्राईल जब कभी ज़बीहा करते हैं तो जानवर की सिरी और दस्त और अपने फलों और मालों की पहली चीज़ फ़ख़्ख़ास की औलाद को नज़राने के तौर पर देते हैं।

इस आयत की तफ़सीर में इख़्तिलाफ़ात (मतभेद) हैं कि "उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि उस पर कोई बोझ लाद दो तो भी ज़बान लटकाये हुए हाँपता रहे, और छोड़ दो तो भी हाँपता रहे" चुनाँचे कहते हैं कि बलअ़म की ज़बान भी लटक कर उसके सीने पर आ गिरी थी तो उसकी तशबीह भी कुत्ते से कर दी गई है, जो दोनों हालतों में एक सा हो कि उस पर करामतें नाज़िल करो या रहमतें, दोनों हालत में बराबर है। या यह मिसाल उसकी गुमराही और गुमराही की पायदारी में और ईमान की तरफ़ बुलाने या न बुलाने दोनों हालतों में उससे नफ़ा न उठाने के अन्दर उस कुत्ते की सी है जो बोझ उठाने या न उठाने दोनों सूरतों में ज़बान लटकाये हाँपता रहता है। इस तरह यह बलअ़म भी है कि ईमान की तरफ़ बुलाने से भी फ़ायदा नहीं उठाता और न बुलाने से भी नहीं।

इसी तरह की एक बात एक दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाई है कि "चाहे तो उन्हें डराओ या न डराओ वे ईमान नहीं लायेंगे" या एक और मिसाल कि "तुम उनके लिये इस्तिग़फ़ार करो या न करो अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा" या यह मायने भी हो सकते हैं कि काफ़िर और मुनाफ़िक़ और गुमराह का दिल कमज़ोर और हिदायत से ख़ाली होता है, कितनी ही कोशिश की जाये हिदायत नहीं पाता।

अल्लाह पाक अपने नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि लोगों को ये वाक़िआ़त सुनाओ ताकि बनी इस्राईल के हालात से वाक़िफ़ होने के बाद वे ग़ौर व फ़िक्र (सोच विचार) करके अल्लाह की राह पर आ जायें और यह सोचें कि बलअ़म का क्या हाल हुआ। रब्बानी (अल्लाह के) इल्म जैसी ज़बरदस्त दौलत उसने दुनिया की हक़ीर (मामूली और बेहैसियत) राहत पर खो दी। आख़िर न यह मिला न वह। इसी तरह ये यहूद के उलेमा जो अपनी किताबों में ख़ुदा की हिदायतें पढ़ रहे हैं और आपके औसाफ़ (सिफ़तें और निशानियाँ) उसमें लिखे पाते हैं, उन्हें चाहिये कि दुनिया के लालच में फंसकर और अपने मुरीदों को फाँसने के लिये भूल और

Maktab E Ashraf

ग़फ़लत में न पड़ जायें, वरना ये भी इसी तरह दीन व दुनिया से खो दिये जायेंगे। इन्हें चाहिये कि अपनी जानकारी और इल्म से फ़ायदा उठायें और तुम्हारी इताअ़त की तरफ़ झुकें, और दूसरों पर भी हक़ बात को ज़ाहिर कर दें।

देख लो कुफ़्फ़ार की कैसी बुरी मिसालें हैं कि कुत्तों की तरह खाने और अपनी शहवत पूरी करने में पड़े हुए हैं। पस जो भी इल्म व हिदायत को छोड़कर नफ़्स की इच्छाओं को पूरा करने में लग जाये वह भी कुत्ते जैसा है। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया है कि बुरी मिसाल हम पर सादिक़ नहीं आनी चाहिये, यानी किसी को देकर फिर वापस ले लेने वाले की मिसाल उस कुत्ते की सी है जो क़ै करे, फिर उसी को खा जाये। और फ़रमाया "उन्होंने आप अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है, क्योंकि हिदायत का इत्तिबा नहीं किया" दुनिया और दुनिया की लज़्ज़तों में फंस गये। यह अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ुल्म नहीं है।

जिसको अल्लाह हिदायत करता है सो हिदायत पाने वाला वही होता है, और जिसको वह गुमराह कर दे, सो ऐसे ही लोग (हमेशा के) घाटे में पड़ जाते हैं। (178)	مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

हिदायत और गुमराही

जिसको अल्लाह तआ़ला हिदायत करे (यानी सही रास्ता दिखाये) कोई उसको गुमराह नहीं कर सकता, और जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराह करे किसकी मजाल है कि उसको हिदायत करे। अल्लाह ने जो चाहा हुआ और जो नहीं चाहा नहीं हुआ। इसी लिये हदीस में है किः

اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَهْدِيْهِ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا. مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. (عن ابن مسعودؓ)

तर्जुमाः सब तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं, हम उसकी तारीफ़ बयान करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं, और उसी से हिदायत तलब करते हैं, और उसी से बख़्शिश माँगते हैं। हम अपने नफ़्स की शरारतों से अल्लाह की पनाह लेते हैं और अपने आमाल की बुराईयों से भी। ख़ुदा के राह दिखाये हुए को कोई भटका नहीं सकता और उसके गुमराह किये हुए को कोई सही राह पर नहीं ला सकता। मैं गवाही देता हूँ कि माबूद सिर्फ़ अल्लाह ही है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्ल. उसके बन्दे और रसूल हैं।

और हमने ऐसे बहुत-से जिन्न और इनसान दोज़ख़ के लिए पैदा किये हैं जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे नहीं समझते, और जिनकी आँखें ऐसी हैं	وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫

Maktab E Ashraf

وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ○	जिनसे नहीं देखते, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते, ये लोग जानवरों की तरह हैं, बल्कि ये लोग ज़्यादा बेराह हैं, ये लोग ग़ाफ़िल हैं। (179)

जहन्नम का ईंधन

हुज़ूर नबी करीम सल्ल. को एक बार किसी अन्सारी के लड़के के जनाज़े में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. से कहा या रसूलल्लाह! यह बच्चा तो जन्नत की एक चिड़िया है, न इसने कोई बुरे काम किये न दोज़ख़ इसका ठिकाना। आपने फ़रमाया ऐ आयशा! अब मुझसे भी कुछ सुनो! अल्लाह तआ़ला ने जन्नत को पैदा किया और वे लोग भी पैदा किये जो जन्नत वाले होंगे और जन्नत के हक़दार उसी रोज़ क़रार दिये गये कि अभी वे आदम की पुश्त ही में थे, और दोज़ख़ और दोज़ख़ वाले पैदा किये गए और अभी वे आदम की पुश्त ही में थे।

इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि अल्लाह पाक माँ के पेट में एक फ़रिश्ते को भेजता है जो चार बातें उससे मुताल्लिक़ लिख देता है: 1. उसका रिज़्क़। 2. उसकी उम्र। 3. उसके आमाल। 4. और उसका नेक या बद होना। और यह बात पहले बयान हो चुकी कि आदम की पुश्त से जब अल्लाह ने उनकी नस्ल और औलाद को निकाला तो दायें वाले और बायें वाले दोनों फ़रीक़ बनाये। एक जन्नत के लिये और एक दोज़ख़ के लिये, और मैं इससे बेनियाज़ (बेपरवाह) हूँ कि कौन अपने को जन्नत का हक़दार बना रहा है और कौन दोज़ख़ का हक़दार। इस बारे में हदीसें कसरत से वारिद हैं, और तक़दीर का मसला एक अहम मसला है, यहाँ इसकी ज़्यादा वज़ाहत की गुंजाईश नहीं।

इरशाद होता है कि उनके दिल तो हैं लेकिन वे नहीं समझ सकते, आँखें हैं और देखते नहीं, कान हैं और वे सुनते नहीं। ये चीज़ें जिनको हिदायत हासिल करने के लिये सबब बनाया गया था, इनसे वे कुछ भी फ़ायदा नहीं उठाते। जैसा कि फ़रमाया "इन्हें कान, आँख, दिल दिये गये हैं लेकिन इससे इन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा, क्योंकि इन चीज़ों से इन्होंने काम नहीं लिया और ख़ुदा की आयतों का इनकार कर बैठे। मुनाफ़िक़ों के हक़ में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि:

صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ.

यानी ये बहरे, गूँगे और अंधे हैं तो यह नहीं रुजू करेंगे।

और काफ़िरों के हक़ में है:

صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ.

यानी ये बहरे गूँगे और अंधे हैं तो यह अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

और फ़रमाया कि "अगर अल्लाह बुरों में कोई ख़ैर मालूम करता तो ज़रूर उनको सुनने के क़ाबिल बनाता और ज़रूर वे हिदायत पाते" और फ़रमाया कि "आँखें अंधी नहीं होती हैं बल्कि दिल अंधे होते हैं"

(यानी आदमी आँखों से देखता है मगर फिर भी समझ से काम नहीं लेता) और फ़रमाया कि जिसने ख़ुदा तआ़ला की 'वही' से मुँह मोड़ा तो शैतान उस पर मुसल्लत हो जाता है और हर वक़्त उससे लगा लिपटा रहता है। ये लोग ख़ुदा की राह से लोगों को रोकते हैं और समझते हैं कि यही ठीक राह पर हैं।

अब यहाँ यह इरशाद होता है कि ये लोग जानवरों की तरह हैं कि न हक़ बात सुनते हैं न हक़ की मदद करते हैं, न हिदायत को देखते हैं, और अपने ज़ाहिरी हवास (देखने, सुनने, छूने, सूँघने और चखने) से कुछ भी फ़ायदा नहीं उठाते, सिवाय इसके कि दुनियावी ज़िन्दगी के अन्दर इससे फ़ायदा उठा लिया। जैसा कि फ़रमाया काफ़िरों की मिसाल जानवर की है जो चरवाहे (निगराँ) के अलफ़ाज़ को नहीं समझता सिर्फ़ आवाज़ को सुनता है, कि इन्हें भी ईमान की तरफ़ बुलाया जाये तो उसके फ़ायदे को नहीं समझते, अलबत्ता आवाज़ सुन पाते हैं। इसी लिये फ़रमाया कि ये उन जानवरों से भी ज़्यादा ज़लील (घटिया) हैं कि जानवर अपने चराने वाले की बात अगर न समझें लेकिन उसके बुलाने पर उसका रुख़ तो करते हैं, और इसलिये कि उन जानवरों से न समझ सकने का फ़ितरी व पैदाईशी फ़ेल सरज़द होता है या तो उनकी तबीयत की बिना पर या सधाने की बिना पर, काफ़िर आदमी के विपरीत कि वह तो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के लिये पैदा किया गया था, बन्दगी में किसी का साझा नहीं, लेकिन उसने कुफ़्र और शिर्क किया और इसी लिये जिसने अल्लाह की इताअ़त की वह क़ियामत के दिन फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल (बेहतर) है और जिसने कुफ़्र किया वह जानवर बल्कि उससे भी बदतर है।

और अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह तआ़ला ही के लिए हैं, सो उन (नामों) से अल्लाह तआ़ला ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से ताल्लुक़ भी न रखो जो उसके नामों में ग़लत रास्ता इख़्तियार करते हैं। उन लोगों को उनके किये की ज़रूर सज़ा मिलेगी। (180)	وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ص وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ط سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○

ख़ुदा तआ़ला को अच्छे नामों से याद करो

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह के निन्नानवे नाम हैं एक कम सौ, जो इनका विर्द रखेगा वह जन्नत में जायेगा। ख़ुदा तआ़ला बेजोड़ है इसलिये संख्या में भी बेजोड़ ही को पसन्द करता है। वे पाक नाम ये हैं:

هُوَاللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّاهُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ. اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْغَفَّارُ الْقَهَّارُ الْوَهَّابُ الرَّزَّاقُ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ. اَلْقَابِضُ الْبَاسِطُ الْخَافِضُ الرَّافِعُ الْمُعِزُّ الْمُذِلُّ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ الْحَكَمُ الْعَدْلُ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ الْحَلِيْمُ الْعَظِيْمُ الْغَفُوْرُ الشَّكُوْرُ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ الْحَفِيْظُ الْمُقِيْتُ الْحَسِيْبُ الْجَلِيْلُ الْكَرِيْمُ الرَّقِيْبُ الْمُبْدِئُ الْوَاسِعُ الْحَلِيْمُ الْوَدُوْدُ الْمَجِيْدُ الْبَاعِثُ الشَّهِيْدُ الْحَقُّ الْوَكِيْلُ الْقَوِىُّ الْمَتِيْنُ الْوَلِىُّ الْحَمِيْدُ الْمُحْصِى

Maktab-E-Ashraf

الْمُبْدِئُ الْمُعِيْدُ الْمُحْيِي الْمُمِيْتُ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ الْوَاجِدُ الْمَاجِدُ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الْفَرْدُ الصَّمَدُ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ الْمُقَدِّمُ الْمُؤَخِّرُ الْاَوَّلُ الْاٰخِرُ الظَّاهِرُ الْبَاطِنُ الْوَالِي الْمُتَعَالِي الْبَرُّ التَّوَّابُ الْمُنْتَقِمُ الْعَفُوُّ الرَّءُوْفُ مَالِكُ الْمُلْكِ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ الْمُقْسِطُ الْجَامِعُ الْغَنِيُّ الْمُغْنِي الْمَانِعُ الضَّارُّ النَّافِعُ النُّوْرُ الْهَادِي الْبَدِيْعُ الْبَاقِي الْوَارِثُ الرَّشِيْدُ الصَّبُوْرُ.

यह हदीस ग़रीब है। कुछ कमी ज़्यादती के साथ इसी तरह ये नाम इब्ने माजा की हदीस में भी हैं। बाज़ बुज़ुर्गों का ख़्याल है कि ये नाम रावियों ने क़ुरआन में से चुनकर लिये हैं, वल्लाहु आलम। यह याद रहे कि सिर्फ़ यही निन्नानवे नाम अल्लाह के हों और न हों, यह बात नहीं। मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जिसे कभी भी कोई रंज व ग़म पहुँचे और वह यह दुआ करे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ عَبْدُكَ بْنُ عَبْدِكَ بْنِ اَمَتِكَ نَاصِيَتِيْ بِيَدِكَ مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَآؤُكَ اَسْاَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ وَاَنْزَلْتَهُ فِيْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهُ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوِ اسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ رَبِيْعَ قَلْبِيْ وَنُوْرَ صَدْرِيْ وَجَلَآءَ حُزْنِيْ وَذَهَابَ هَمِّيْ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अ़ब्दुकब्नु अ़ब्दिकब्ने अ-मति-क नासियती बि-यदि-क माज़िन् फ़िय्य हुक्मु-क अ़द्लुन् फ़िय्य क़ज़ाउ-क अस्अलु-क बिकुल्लि इस्मिन् हु-व ल-क सम्मै-त बिही नफ़्स-क व अन्ज़ल्तहू फ़ी किताबि-क औ अ़ल्लमतहू अ-हदम् मिन् ख़ल्कि-क अविस्तअ्सर्-त बिही इल्मल् ग़ैबि अ़िन्द-क अन् तज्अ़लल् क़ुरआनल् अ़ज़ी-म रबी-अ़ क़ल्बी व नू-र सद्री व जिला-अ हुज़्नी व ज़हा-ब हम्मी।

इस पर आपसे अ़र्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह! क्या हम यह याद कर लें? आपने फ़रमाया बल्कि जो भी इसे सुने चाहिये कि याद कर ले। बाज़ लोगों ने तो क़ुरआन व हदीस से ख़ुदा के एक हज़ार नाम निकाले हैं।

इरशाद होता है कि जाने भी दो इन लोगों को जो ख़ुदा के नामों में टेढ़ी राह इख़्तियार करते हैं कि ये काफ़िर लोग अल्लाह के नामों में 'लात' (एक बुत का नाम है) का लफ़्ज़ शरीक कर देते हैं कि लात को अल्लाह का मुअन्नस (Feminin) लफ़्ज़ बताते हैं। 'उज़्ज़ा' (बुत का नाम है) को अ़ज़ीज़ का। ये दोनों नाम काफ़िरों के पास मुअन्नस ख़ुदाओं के हैं। 'इलहाद' के मायने झुठलाने के हैं और अ़रब के कलाम में सही और दरमियानी राह से हटने को कहते हैं। 'लहद' के मायने क़ब्र के हैं, क्योंकि वह क़िब्ले की तरफ़ से रुख़ फेरकर बनाई जाती है।

और हमारी मख़्लूक़ (जिन्न और इनसान) में एक जमाअ़त ऐसी भी है जो हक़ (यानी दीन इस्लाम) के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं। (181)	وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝ع

ع ٢٢ ١٢

हिदायत पाने वाली उम्मत

हमारी पैदा की हुई क़ौमों में से एक क़ौम तो अपने क़ौल व अ़मल से हक़ पर क़ायम है, हक़ पसन्द

है, हक़ की तरफ़ बुलाती है और हक़ के एतिबार से ही फ़ैसला करती है। इस उम्मत से मुराद उम्मते मुहम्मदिया है। नबी करीम सल्ल. जब इस आयत को पढ़ते तो फ़रमाते थे कि यह तुम हो और वह क़ौम जो तुमसे पहले गुज़री यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम, कि ये लोग भी दूसरों को हक़ की तरफ़ बुलाते थे। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से एक क़ौम हक़ पर क़ायम रहेगी यहाँ तक कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे और वह जमाअ़त हक़ पर ग़ालिब रहेगी, उनका कोई मुख़ालिफ़ उनको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा, और क़ियामत के आने या वे अपने मरने तक उस पर कारबन्द रहेंगे।

और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं, हम उनको धीरे-धीरे लिए जा रहे हैं, इस तरह पर कि उनको ख़बर भी नहीं। (182) और उनको मैं मोहलत देता हूँ, इसमें कोई शक नहीं कि मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। (183)	وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۗ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝

मज़बूत हाथ

इसका मतलब यह है कि उनके लिये रिज़्क़ के दरवाज़े खुल जायेंगे, दुनियावी फ़ायदा ज़्यादा हो जायेगा यहाँ तक कि वे इसी धोखे में रहेंगे और यह गुमान करने लगेंगे कि उनकी हमेशा यही हालत रहेगी। जैसा कि फ़रमाया "उन्होंने जब हमारी याद भुला दी तो हमने रिज़्क़ के दरवाज़े उन पर खोल दिये और जब वे गुरूर में उतर आये तो अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया और वे मायूस होकर रह गये। उन ज़ालिमों की नस्ल ही नेस्त नाबूद कर दी गई। तारीफ़ के लायक़ तो अल्लाह रब्बुल-आ़लमीन ही है, इसी लिये फ़रमाया कि हम उन्हें भी ढील देते हैं, हमारी सियासत (तदबीर) बहुत मज़बूत होती है।

क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर न किया कि उनका जिनसे वास्ता है उनको ज़रा भी जुनून नहीं, वे तो सिर्फ़ (अ़ज़ाब से) एक साफ़-साफ़ डराने वाले हैं। (184)	اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا سكتة مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

मजनूँ व दीवाना नहीं

इन झुठलाने वालों ने यह भी ग़ौर नहीं किया कि इनके साथी मुहम्मद सल्ल. को वास्तव में कोई जुनून नहीं, बल्कि वह अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, और हक़ की तरफ़ बुलाते हैं। जिस शख़्स को अ़क़्ले सलीम है और उससे काम लेना चाहता है वह उसको साफ़-साफ़ तंबीह करने वाले हैं। और फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ कि ख़ुदा की इबादत और उसकी तब्लीग़ के लिये एक-एक और दो-दो मिलकर खड़े हो जाओ, फिर इस बात पर तो कुछ ग़ौर करो कि तुम्हारे रफ़ीक़ (साथी) को जुनून नहीं, बल्कि वह तो ख़ुदा के सख़्त अ़ज़ाब से डराने वाले हैं। ख़ुदा से ख़ुलूस इख़्तियार करो, तास्सुब व दुश्मनी को छोड़ दो, अगर तुम ऐसा करोगे तो हक़ीक़त तुम पर खुल जायेगी कि यह रसूल सच्चे हैं और ख़ैरख़्वाह हैं। नबी सल्ल. सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ गये, क़ुरैश को जमा किया और एक-एक क़बीले का नाम ले-लेकर बुलाने लगे, फिर अल्लाह के अ़ज़ाब और आने वाले हादसों से उन्हें डराया तो बाज़ बेवक़ूफ़ कहने लगे कि यह तो कुछ दीवाने से

मालूम होते हैं। सुबह तक बकवास करते रहे, तो अल्लाह की तरफ़ से यह आयत उतरी थी।

और क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया आसमानों और ज़मीन के आ़लम में, और साथ ही दूसरी चीज़ों में जो अल्लाह तआ़ला ने पैदा की हैं, और इस बात में (भी ग़ौर नहीं किया) कि हो सकता है कि उनकी मुद्दत क़रीब ही आ पहुँची हो? फिर इस (क़ुरआन) के बाद कौनसी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे। (185)	اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِىْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَىْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَىِّ حَدِيْثٍ ۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ۝

इबरत की निगाह

इरशाद होता है कि हमारी निशानियों को झुठलाने वाले क्या इस बात पर ग़ौर नहीं करते कि हमें कैसा ग़लबा हासिल है, आसमानों और ज़मीन पर, और इनमें जो कुछ है उन सब पर। उन्हें चाहिये था कि इस पर सोच-विचार करते और इबरत (सबक़ व नसीहत) लेते और इस नतीजे पर पहुँचते कि ये सब उसका है जिसके जैसा कोई नहीं। उसके जोड़ और बराबर का कोई नहीं, वही इस बात का मुस्तहिक़ है कि इबादत और ख़ुलूस सिर्फ़ उसी से रखें और उसके रसूल की तस्दीक़ करें, उसकी इताअ़त की तरफ़ झुक जायें, बुतों को निकाल फेंके और इस बात से डरें कि मौत क़रीब है। अगर कुफ़्र में ही मर जायेंगे तो दर्दनाक अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ होंगे।

फिर फ़रमाया कि अब इसके बाद फिर और कौनसा डरावा चाहिये कि जो धमकी आई हुई है वह ख़ुदा की तरफ़ से आई हुई है। अगर वे इस 'वही' व क़ुरआन की तस्दीक़ न करें जो मुहम्मद सल्ल. ने पेश की है तो फिर किस बात की तस्दीक़ करेंगे? हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मेराज की रात में मैंने देखा कि सातवें आसमान तक जब मैं पहुँचा और ऊपर नज़र की तो रअ़्द व बर्क़ (यानी बिजली और कड़क) देखे और ऐसी क़ौम पर से मेरा गुज़र हुआ जिनके पेट मटकों की तरह फूले हुए थे, उनमें साँप भरे हुए थे, जो बाहर से भी दिखाई दे रहे थे। मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा तो उन्होंने बताया कि ये सूद खाने वाले लोग हैं और जब इस पहले आसमान पर उतरा तो मैंने अपने से नीचे की तरफ़ नज़र डाली तो एक धुंध और धुआँ था और शोर व हंगामा हो रहा था। मैंने पूछा कि ऐ जिब्राईल! यह क्या है? कहा ये वे शयातीन हैं जो इनसानों की आँखों के सामने घूमते रहते हैं और आड़ बन जाते हैं, ताकि ज़मीन व आसमान के आ़लम में इनसान नज़र ही न कर सके, अगर ये रुकावट न होते तो इनसान आसमान की अ़जीब-अ़जीब बातें देखता। इसके एक रावी अ़ली बिन ज़ैद से बहुत सी मुन्कर रिवायतें भी मन्सूब हैं।

जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराह करे उसको कोई राह पर नहीं ला सकता (फिर ग़म करना बेकार है) और अल्लाह तआ़ला उनको उनकी गुमराही में भटकते हुए छोड़ देता है। (186)	مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ۝

Maktab E Ashraf

गुमराही से निजात नहीं

अल्लाह तआ़ला ने जिसके नाम गुमराही लिख दी उसको कोई हिदायत नहीं कर सकता, वह कितनी ही निशानियाँ देखे कुछ फ़ायदा नहीं होता। जिसको ख़ुदा ही फ़ितने में डाले उसको कौन सही राह पर लाये, जैसा कि फ़रमाया देखो! आसमान और ज़मीन में हमारी कुछ निशानियाँ हैं लेकिन निशानियाँ मोजिज़े और धमकियाँ कोई चीज़ भी इन काफ़िरों को फ़ायदा नहीं पहुँचातीं।

يَسْــئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ط
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ ج لَا يُجَلِّيْهَا
لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ط ثَقُلَتْ فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ط لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ط
يَسْــئَلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِىٌّ عَنْهَا ط قُلْ اِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ○

ये लोग आपसे क़ियामत के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं कि वह कब आयेगी, आप फ़रमा दीजिये कि उसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है, उसके वक़्त पर उसको सिवाय उसके (यानी अल्लाह तआ़ला के) कोई और ज़ाहिर न करेगा, वह आसमान और ज़मीन में बड़ा भारी (हादसा) होगा, इसलिए कि वह तुम पर बिल्कुल अचानक आ पड़ेगी। वे आपसे (इस तरह) पूछते हैं (जैसे) गोया आप उसकी तहक़ीक़ात कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका ख़ास इल्म अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

क़ियामत का किसी को इल्म नहीं

यह आयत क़ुरैश के बारे में नाज़िल हुई है या यहूद की एक जमाअ़त के बारे में, लेकिन पहली बात ज़्यादा सही है। क्योंकि यह आयत मक्की है और यहूद तो मदीने में रहते थे। ये लोग क़ियामत का वक़्त जो तुमसे पूछते हैं सो उसका यक़ीन न करेंगे बल्कि झुठलाने के अन्दाज़ में पूछते हैं। जैसा कि इस आयत के अन्दाज़े बयान से नतीजा निकलता है- "ये लोग कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ कि वह कब होगी और किस तारीख़ में" और फ़रमाया कि ये काफ़िर क़ियामत को जल्दी माँगते हैं हालाँकि मोमिन तो क़ियामत के दिल दहलाने वाली चीज़ों से डरते हैं और यक़ीन किये हुए हैं कि उसका आना हक़ है। और जो लोग क़ियामत में शक करते हैं, बड़ी गुमराही में हैं। और फ़रमाया "बताओ वह किस तारीख़ में होगी, और दुनिया कब ख़त्म हो जायेगी, और फिर घड़ी क़ियामत की कौनसी है" तो ऐ नबी! कह दो कि इसका इल्म तो मेरे रब ही को है, ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं मालूम कि कब आयेगी। अल्लाह तआ़ला ने रसूल सल्ल. को मश्विरा दिया कि ऐ नबी! वे क़ियामत का वक़्त पूछें तो बात को अल्लाह की तरफ़ फेर दो कि उसके वक़्त की हद बन्दी तो ख़ुदा के सिवा कोई नहीं कर सकता, इसी लिये फ़रमायाः

ثَقُلَتْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ.

यानी ज़मीन व आसमान वाले उसके इल्म से नावाक़िफ़ हैं।

Maktab E Ashraf

हसन रह. यह मतलब बयान करते हैं कि जब क़ियामत आयेगी तो ज़मीन व आसमान वालों पर बहुत भारी गुज़रेगी। इब्ने अब्बास रज़ि. कहते हैं कि कोई चीज़ भी ऐसी नहीं होगी जिसको क़ियामत का नुक़सान न पहुँचेगा। आसमान फट जायेंगे, सितारे टूट पड़ेंगे, सूरज बेनूर हो जायेगा, पहाड़ उड़ जायेंगे और ख़ुदा ने जो कुछ कहा है वह सब होगा। आसमान वालों को भी इसका इल्म नहीं जैसा कि फ़रमाया कि वह अचानक आयेगी, लोगों को उसका वहम व गुमान भी न होगा। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक न आयेगी जब तक कि एक वक़्त सूरज मग़रिब (पश्चिम की तरफ़) से न निकलेगा। काफ़िर यह अ़जीब बात और इस पेशीनगोई की सच्चाई देखकर ईमान लायेंगे, लेकिन किसी को भी उस वक़्त का ईमान लाना कोई फ़ायदा नहीं देगा, या गुनाहगारों को अब नेक काम करना कोई नतीजा न बख़्शेगा। दो आदमी कपड़े का लेन-देन कर रहे होंगे, इस ग़र्ज़ से कपड़े का थान खोला जा रहा होगा, दूध दूहकर पिया भी न गया होगा, लोग पीने के पानी की टंकी साफ़ ही कर रहे होंगे, निवाला मुँह की तरफ़ ले जाया जा रहा होगा कि अचानक क़ियामत शुरू हो जायेगी।

'यस्अलून-क क-अन्न-क हफ़िय्युन अ़न्हा' के मायने में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है। यानी वह क़ियामत का राज़ तुमसे ऐसा पूछते हैं गोया तुम उनके बड़े दोस्त हो और इस अन्दाज़ में पूछते हैं गोया क़ियामत के आने की तारीख़ से तुम वाक़िफ़ हो। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इसका इल्म ख़ुदा के सिवा और किसी को नहीं, अल्लाह ने तो इस राज़ को किसी ख़ास से ख़ास और क़रीबी से क़रीबी फ़रिश्ते या अपने किसी रसूल पर भी ज़ाहिर नहीं किया।

क़तादा रह. कहते हैं कि क़ुरैश हुज़ूर सल्ल. से कहते थे कि तुम्हारे हमारे दरमियान तो रिश्तेदारी है, हमें तो बता दीजिये कि क़ियामत कब आ रही है। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि कह दो इसका इल्म सिर्फ़ ख़ुदा तआ़ला को है। ये लोग जो नबी सल्ल. से क़ियामत का वक़्त पूछते हैं सो नहीं जानते कि नबी को भी उसका इल्म नहीं। ख़ुदा के सिवा कोई उसका इल्म नहीं रखता।

हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम एक देहाती की शक्ल में हुज़ूर सल्ल. के पास आये ताकि उनसे दीनी बातों की तालीम लोग हासिल कर सकें, और एक तालिबे हिदायत साईल के अन्दाज़ में हुज़ूर सल्ल. के पास बैठ गये और आपसे इस्लाम के बारे में पूछा, फिर ईमान और एहसान से मुताल्लिक़ दरियाफ़्त किया, फिर पूछा क़ियामत कब आने वाली है, इस चौथे सवाल के जवाब में हुज़ूर सल्ल. ने इरशाद फ़रमाया कि इस चीज़ के बारे में मुझको तुमसे ज़्यादा इल्म नहीं, यानी जैसे तुम नावाक़िफ़ हो मैं भी नावाक़िफ़ हूँ और कोई शख़्स भी इस बारे में कुछ नहीं जान सकता। फिर हुज़ूर सल्ल. ने यह आयत पढ़ीः

إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ.

कि बेशक क़ियामत का इल्म तो अल्लाह ही को है।

और एक रिवायत में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने एक देहाती की शक्ल में आपसे क़ियामत की निशानियाँ पूछीं, आपने निशानियाँ बता दीं। फिर आपने फ़रमाया कि पाँच चीज़ों का इल्म ख़ुदा के सिवा कोई नहीं रखता। आपके हर जवाब पर वह देहाती कहता गया कि आप सही कह रहे हैं, गोया कि वह जानता था और बात की सच्चाई का इक़रार कर रहा है, तस्दीक़ के इस अन्दाज़ पर सहाबा ने ताज्जुब किया कि यह कैसा साईल (पूछने वाला) है, ख़ुद ही सवाल कर रहा है और ख़ुद ही जवाब के सही होने की तस्दीक़ कर रहा है। फिर यह साईल (सवाल करने वाला) चला गया तो नबी सल्ल. ने फ़रमाया- यह

Maktab E Ashraf

जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम थे और इस तरह से तुम लोगों को दीन के मसाईल और इस्लाम के अक़ायद की तालीम देने के लिये आये थे। इससे पहले जब कभी यह सूरत बदल कर आते रहे मैं पहचानता रहा, और इस दफ़ा तो मैंने भी नहीं पहचाना था। शरह बुख़ारी के शुरू में इस हदीस को बयान कर दिया गया है। और जब उस देहाती ने आपसे पूछा और बुलन्द आवाज़ में आपको पुकारा कि या मुहम्मद! तो आपने भी बुलन्द आवाज़ में जवाब दिया "हाँ क्या है?" उसने कहा क़ियामत कब आने वाली है? आपने फ़रमाया ऐ मियाँ! क़ियामत जब भी आयेगी ज़रूर आयेगी, लेकिन तुम बताओ कि उसके लिये तुमने क्या तैयारी कर रखी है? कहा ख़ूब ज़्यादा नमाज़ें और रोज़े अगरचे नहीं हो सके लेकिन ख़ुदा और रसूल से मुझे बहुत मुहब्बत और ताल्लुक़ है। फ़रमाया आदमी क़ियामत के दिन उसी के साथ रहेगा जिससे उसको मुहब्बत हो। इस हदीस को सुनकर सहाबा बेइन्तिहा ख़ुश हो गये। सहीहैन में बहुत से सहाबा रज़ि. की रिवायतों से यह हदीस अनेक तरीक़ों से बयान हुई है।

हुज़ूर सल्ल. की आ़दते शरीफ़ा थी कि जब कोई शख़्स ऐसा सवाल करता जिसकी उसको कोई ज़रूरत नहीं और उसके लिये बेफ़ायदा है, तो आप जवाब में उस बात की तरफ़ रुख़ फेर देते जिसका जानना उसके लिये अपने सवाल से कहीं ज़्यादा ज़रूरी होता, ताकि वह अपनी ज़ात को उससे निपटने का अहल बना ले, और पहले से तैयारी करके रखे, अगरचे उसके आने के वक़्त से वाक़िफ़ न हो। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि अ़रब के देहाती हुज़ूर सल्ल. के पास आते तो अक्सर यह सवाल करते रहते कि क़ियामत कब आयेगी? आप उनके किसी बच्चे की तरफ़ इशारा करके कहते कि अगर अल्लाह ने इसको ज़िन्दगी दी तो यह बूढ़ा भी न होने पायेगा कि तुम्हारी क़ियामत तो आ जायेगी, गोया क़ियामत से मुराद मौत हुई, जो तुमको दुनिया से निकाल कर तुम्हें बर्ज़ख़ की दुनिया में ले जा छोड़ेगी, और बहुत-सी हदीसें इसी मज़मून की अलफ़ाज़ के थोड़े से हेर-फेर और तब्दीली के साथ पेश की गई हैं, जो सब की सब एक ही मज़मून की हैं।

कलाम का हासिल यह है कि मक़सद इन सब हदीसों का यही है कि क़ियामत आयेगी और ज़रूर आयेगी। लेकिन वक़्त का निर्धारण नहीं किया जा सकता। "इस बच्चे के बुढ़ापे से पहले क़ियामत आ जायेगी" मुराद इससे लोगों की मौत का वक़्त है। अपनी वफ़ात से एक महीने पहले आपने फ़रमाया था कि क़ियामत के बारे में मुझसे तुम लोग पूछते रहते हो, उसका इल्म ख़ैर ख़ुदा को है कि क़ियामत आने में कितनी मुद्दत है, लेकिन मैं क़सम खाकर बयान करता हूँ कि इस वक़्त ज़मीन पर जितने जानदार आबाद हैं सौ साल के बाद उनमें से एक भी बाक़ी नहीं रहेगा, तो गोया यह मतलब हुआ कि जैसे क़ियामत में सब लोग मर जायेंगे उसी तरह सौ साल में मौजूदा सब लोगों के लिये क़ियामत आ जायेगी, गोया वक़्त का निर्धारण ही अगर चाहते हो तो लो यह वक़्त का निर्धारण है, इस तरह क़ियामत से मुराद उस एक सदी का ख़ात्मा था कि बात को इस ढंग से बयान किया गया।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेराज की रात में हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अ़लैहिमुस्सलाम पर मेरा गुज़र हुआ, लोग क़ियामत का ज़िक्र कर रहे थे, सब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से पूछने लगे आपने फ़रमाया कि मुझे तो इसका कोई इल्म नहीं। फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास गये, आपने भी यही कहा कि उसका इल्म तो ख़ुदा के सिवा किसी को है ही नहीं, लेकिन अ़लामत यह है कि दज्जाल निकलेगा, मेरे साथ एक दो-शाख़ा होगा, वह मुझे देखेगा तो सीसे की तरह पिघल जायेगा और अल्लाह पाक उसको हलाक कर देगा यहाँ तक कि पेड़ और पत्थर भी बोल उठेंगे

Maktab E Ashraf

कि ऐ मुसलमान! मेरी आड़ में एक काफ़िर छुपा हुआ है, आ और इसको क़त्ल कर दे। पस अल्लाह उन सब काफ़िरों को हलाक कर देगा। फिर लोग अपने अपने शहरों और वतनों को वापस जायेंगे, ऐसे वक़्त में याजूज माजूज निकलेंगे, वे हर तरफ़ से उबल पड़ेंगे, शहरों को बरबाद करते फिरेंगे, हर चीज़ उनके आने और फिरने से बरबाद और ज़ाया होती रहेगी, यहाँ तक कि पानी के चश्मों पर पहुँचेंगे तो चश्मों को ख़ाली कर देंगे। लोग मेरे पास उनकी शिकायत लेकर आयेंगे, मैं उनके लिये ख़ुदा से बददुआ करूँगा, अल्लाह उन सब याजूज माजूज को हलाक कर देगा, यहाँ तक कि हर जगह की फ़िज़ा उनकी लाशों की बदबू से ज़हरीली हो जायेगी। उसके बाद अल्लाह तआला बारिश बरसायेगा तो पानी का बहाव उनकी लाशों को बहाकर समुद्र में लेजा डालेगा। उस वक़्त पहाड़ उखड़ जायेंगे, ज़मीन फैल जायेगी, उस वक़्त क़ियामत ऐसी क़रीब होगी जैसे नौ महीने की हामिला (गर्भवती), कि जिसको लोग नहीं जानते कि दिन रात में किस वक़्त बच्चे की पैदाईश हो जाये। बड़े-बड़े पैग़म्बर भी क़ियामत का वक़्त नहीं जानते थे। ईसा अ़लैहिस्सलाम ने भी सिर्फ़ उसकी अ़लामतें (निशानियाँ) बता दीं, क्योंकि इस उम्मत के आख़िरी ज़माने में वह उतरेंगे और नबी सल्ल. के अहकाम नाफ़िज़ फ़रमायेंगे। मसीह दज्जाल को क़त्ल करेंगे और याजूज व माजूज को अल्लाह तआ़ला उनकी दुआ़ की बरकत से हलाक कर देगा।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मैं तुम्हें उसकी अ़लामतें (निशानियाँ) बताऊँ? वे ये कि उसके सामने बड़े फ़ितने और इन्क़िलाब (हालात का उलट-फेर) वाक़े होंगे। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! हम फ़ितने का मफ़हूम (मतलब) तो समझते हैं, लेकिन 'हरज' क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया कि हब्श की अ़रबी ज़बान में इसके मायने क़त्ल के हैं। फिर फ़रमाया कि लोगों में अजनबियत (बेताल्लुक़ी) और बेपरवाही इतनी बढ़ जायेगी कि एक शख़्स दूसरे को कहेगा कि मैं नहीं पहचानता। हदीस की बड़ी किताबों में बात को इस तरीक़े से रिवायत नहीं किया गया है। हमारे नबी-ए-उम्मी सैयदुल-मुरसलीन ख़ातिमुन्नबिय्यीन सल्ल. ने जो नबी-ए-रहमत और नबी-ए-तौबा हैं, फ़रमाया कि "मैं और क़ियामत इन दो उंगलियों की तरह हैं" चुनाँचे आपने कलिमे की और बीच की उंगली को जोड़कर बताया, गोया कि मेरे साथ क़ियामत लगी हुई है, यानी दोनों के बीच कोई नबी होने वाला नहीं है। ग़र्ज़ यह कि क़ियामत का इल्म सिर्फ़ ख़ुदा-ए-पाक को है।

आप कह दीजिए कि मैं ख़ुद अपनी ख़ास ज़ात के लिए किसी नफ़े का इख़्तियार नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, मगर इतना ही जितना ख़ुदा तआ़ला ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत-से मुनाफ़े हासिल कर लिया करता और कोई नुक़सान मुझको हरगिज़ न होता, मैं तो सिर्फ़ (शरई अहकाम बतलाकर सवाब की) ख़ुशख़बरी देने वाला और (अ़ज़ाब से) डराने वाला हूँ, उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (188)	قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ ع ۲۳ ۱۳

हुज़ूरे पाक सल्ल. ग़ैब के आ़लिम नहीं थे

अल्लाह तआ़ला ने आपको हुक्म दिया है कि तमाम मामलात की निस्बत ख़ुदा की तरफ़ करो, और

Maktab E Ashraf

अपने बारे में कह दो कि आने वाले वक़्त का इल्म मुझे नहीं, हाँ ख़ुदा तआ़ला ने जो कुछ बता दिया तो बता देता हूँ जैसा कि फ़रमाया- आ़लिमुल-ग़ैब के इल्मे ग़ैब को कोई नहीं पा सकता। और ऐ नबी! कह दो कि अगर मैं ग़ैब की बात जानता होता तो अपने लिये बहुत सी भलाई जमा कर लेता, यानी अगर मुझको अपनी मौत की ख़बर होती कि कब मरूँगा तो कोशिश करता कि बहुत जल्द बहुत से नेक आमाल कर लूँ। यह क़ौल मुजाहिद रह. का है, और इब्ने जरीर भी यही कहते हैं, लेकिन यह बात ग़ौर-तलब है, इसलिये कि हुज़ूर सल्ल. का हर अ़मल अच्छा ही था, और जो अ़मल करते वह मुस्तक़िल और पायदार होता, सारे आमाल एक ही ढंग के थे, हर अ़मल में आपकी नज़र अल्लाह पर ही होती थी।

ग़र्ज़ यह कि कोई अ़मल भी नेक अ़मल के अ़लावा न था, हाँ यह हो सकता है कि यह मुराद हो कि ग़ैब की बातें जान लेता तो लोगों की किस क़िस्म की भलाई किस काम के अन्दर होती, तो उससे उनको आगाह कर देता। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने ख़ैर के मायने माल के लिये हैं और यह मफ़्हूम (मायने व मतलब) बहुत उम्दा है। या यह कि जिस ख़रीदारी में फ़ायदे का इल्म होता वह ज़रूर ख़रीदता, और कोई चीज़ न बेचता जब तक उसमें फ़ायदे का इल्म न होता। ग़र्ज़ यह कि तिजारत में कभी नुक़सान न उठाता, या न उठाने देता, या मुझे फ़क्र व तंगदस्ती कभी न आने पाती।

बाज़ लोगों ने यह मतलब भी लिया है कि क़हत आने वाला होता तो बहुत कुछ ग़ल्ला जमा करके रखता, सस्ते ज़माने में ख़रीद लेता और महंगाई के ज़माने में बेचता, और मुझे ग़ुर्बत व तंगदस्ती कभी न छूती, और नुक़सान आने से पहले उससे बच जाता। फिर आपने कहा मैं सिर्फ़ नज़ीर (डराने वाला) और बशीर (ख़ुशख़बरी देने वाला) हूँ। अ़ज़ाब से डराने वाला और जन्नत की बशारत देने वाला हूँ। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि "हमने क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान पर आसान बना दिया है ताकि तक़्वा व परहेज़गारी का इरादा रखने वालों को तुम बशारत (ख़ुशख़बरी) दो, और झगड़ने वाले सरकश लोगों को डराओ।"

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ

वह (अल्लाह तआ़ला) ऐसा क़ादिर व नेमतें देने वाला) है जिसने तुमको एकमात्र बदन (आदम) से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा (हव्वा अ़लैहस्सलाम को) बनाया ताकि वह उस (अपने जोड़े) से उन्स हासिल करे। फिर जब मियाँ ने बीवी से क़ुर्बत 'निकटता' की तो उसको हल्का सा हमल 'गर्भ' रह गया, सो वह उसको लिए हुए चलती फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों (मियाँ-बीवी) अल्लाह से जो कि उनका मालिक है दुआ़ करने लगे कि अगर आपने हमको सही (सालिम औलाद) दे दी तो हम ख़ूब शुक्रगुज़ारी करेंगे। (189) सो जब अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों को

सही (सालिम औलाद) दे दी तो अल्लाह तआ़ला की दी हुई चीज़ में वे दोनों अल्लाह तआ़ला के शरीक क़रार देने लगे सो अल्लाह तआ़ला पाक है उनके शिर्क से। (190)	اٰتٰھُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○

Maktaba E Ashraf

शुक्र के बजाय नाशुक्री

इरशाद होता है कि दुनिया जहान के लोग आदम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से पैदा किये गये हैं, और आदम अ़लैहिस्सलाम ही से उनकी बीवी हव्वा पैदा की गईं। उन्हीं दोनों से नस्ल बढ़ी, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया है, और इतना बढ़ाया कि तुम लोग ख़ानदान और क़बीले बन गये। अब तुम्हें एक दूसरे के हुक़ूक़ पहचानने चाहियें और ख़ुदा तआ़ला की नज़रों में तुम में ज़्यादा सम्मानित वही होगा जो सबसे ज़्यादा एहतियात वाले अ़मल करे।

'लियस्कु-न इलैहा' के मायने हैं ताकि एक दूसरे में उलफ़त रहे। इसी लिये फ़रमाया किः

جَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً.

यानी तुम दोनों के दिलों में मुहब्बत और रहमत डाल दी।

दो रूहों में जो मुहब्बत व रहमत होती है, वह रूहों की आपसी उलफ़त व ताल्लुक़ से बढ़कर नहीं हो सकती, इसलिये तो अल्लाह तआ़ला ने यह बयान फ़रमाया है कि जादूगर अक्सर अपने जादू के ज़रिये इस बात की कोशिश करते हैं कि मियाँ-बीवी में फूट और जुदाई डाल दें। ग़र्ज़ कि शौहर जब अपनी बीवी के साथ फ़ितरी मुहब्बत की बिना पर लगाव इख़्तियार करता है तो शुरू में वह अपने पेट में एक हल्का सा बोझ महसूस करने लगती है, यह गर्भ की शुरूआ़त का ज़माना होता है। उस वक़्त तो औ़रत को कोई तकलीफ़ महसूस नहीं होती, क्योंकि यह हमल (गर्भ) तो अभी नुत्फ़ा (वीर्य) या अ़लक़ा (जमा हुआ ख़ून) या मुज़ग़ा (लोथड़ा) है। यानी नुत्फ़ा या गोश्त का छोटा सा लोथड़ा, अभी वह हल्की-फुल्की होती है।

अय्यूब रह. कहते हैं कि मैंने हसन रह. से "मर्रत् बिही" के मायने पूछे तो कहा अगर मैं अ़रब होता, अहले ज़बान होता तो जानता, इसके मायने यह हो सकते हैं कि इसी तरह वह उस हमल (गर्भ) को कुछ वक़्त तक लिये फिरती रहती है। क़तादा रह. इसके मायने यह बताते हैं कि हमल ज़ाहिर हो गया। इब्ने जरीर कहते हैं कि हमल लिये हुए आसानी से उठ-बैठ सकती है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि मतलब यह है कि शुरू का ज़माना वह है कि जब ख़ुद उसको शक है कि मुझे हमल (गर्भ) है भी या नहीं।

ग़र्ज़ यह कि उसके बाद जब औ़रत को बोझ अच्छा-ख़ासा महसूस होने लगता है और हमल (गर्भ) का यक़ीन हो जाता है तो ये माँ-बाप दोनों ख़ुदा से तमन्ना करने लगते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला उन्हें सही सालिम बच्चा दे तो ख़ुदा तआ़ला का बड़ा एहसान हो। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि माँ-बाप को डर लगा रहता है कि कहीं जानवर की शक्ल या अधूरे अंगों वाला बच्चा न हो जाये, जैसा कि बाज़ मर्तबा हो जाया करता है। हसन बसरी रह. यह मतलब लेते हैं कि अगर ख़ुदा हमको लड़का दे, क्योंकि नवजात में ज़्यादा सलाहियत वाला नवजात लड़का ही होता है। ग़र्ज़ यह कि जब अल्लाह उनको सही सालिम बच्चा देता है तो उसको बुतों का हिस्सा बना डालते हैं, ख़ुदा की ज़ात ऐसे शिर्क से बेनियाज़ है। मुफ़स्सिरीन ने यहाँ बहुत से अक़वाल और हदीसें बयान की हैं, जिनका हम ज़िक्र करेंगे, उन पर रोशनी डालेंगे, फिर इन्शा-अल्लाह

तआ़ला सही बात की तरफ़ रहनुमाई करेंगे। ख़ुदा ही पर भरोसा है।

नबी सल्ल. फ़रमाते हैं कि हव्वा अ़लैहस्सलाम को जब बच्चे की पैदाईश हुई तो शैतान उनके पास आया, उनका बच्चा ज़िन्दा नहीं रहता था तो हव्वा को मश्विरा दिया कि बच्चे का नाम अ़ब्दुल-हारिस रखो तो वह ज़िन्दा रहेगा। चुनाँचे बच्चे का नाम अ़ब्दुल-हारिस रखा गया (हारिस शैतान का नाम भी है, इसके मायने हुए शैतान का बन्दा) और वह ज़िन्दा रहा। यह शैतान की तरफ़ से उनके दिल में डाली हुई बात थी और हारिस शैतान का नाम होता है।

इस हदीस में तीन बातें ग़ौर-तलब हैं- एक तो यह कि इसका रावी उमर बिन इब्राहीम एक बसरी शख़्स है। अगरचे इब्ने मईन ने इसको भरोसे के लायक़ माना है लेकिन अबू हातिम ने कहा कि इससे हुज्जत नहीं पकड़ी जा सकती। दूसरे यह कि यही रिवायत मौक़ूफ़न हज़रत समुरा के अपने क़ौल से नक़ल की गयी है जो मरफ़ूअ़ नहीं। इब्ने जरीर में ख़ुद समुरा बिन जुन्दुब का कहना है कि आदम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटे का नाम अ़ब्दुल-हारिस रखा। तीसरे यह कि इसके रावी हसन से भी इस आयत की तफ़सीर इसके अ़लावा बयान की गई है। तो ज़ाहिर है कि अगर ये मरफ़ूअ़ हदीस उनकी रिवायत की हुई होती तो यह ख़ुद इसके ख़िलाफ़ तफ़सीर न करते। इब्ने जरीर कहते हैं कि यह आदम अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ़ नहीं बल्कि बाज़ दूसरे मज़हब वालों का है, और यह भी है कि इससे मुराद बाज़ मुश्रिक इनसान हैं जो ऐसा करते हैं। कहते हैं कि ये यहूद और ईसाईयों का फ़ेल बयान हुआ है कि अपनी औलाद को अपनी रविश (तरीक़े और ढंग) पर डाल लेते हैं। इस आयत की जो तफ़सीरें बयान की गई हैं उन सब में बेहतर तफ़सीर यही है।

ग़र्ज़ ताज्जुब के लिये गुंजाईश यह थी कि ऐसा मुत्तक़ी और परहेज़गार आदमी एक आयत की तफ़सीर में एक मरफ़ूअ़ हदीस (क़ौले पैग़म्बर) रिवायत करे फिर उसके ख़िलाफ़ ख़ुद तफ़सीर करे? इससे यह साबित होता है कि वह हदीस मरफ़ूअ़ नहीं, बल्कि वह हज़रत समुरा का अपना क़ौल है। इसके बाद यह ख़्याल होता है कि मुम्किन है कि हज़रत समुरा ने इसे अहले किताब से हासिल किया हो जैसे हज़रत कअ़ब और हज़रत वहब वग़ैरह जो मुसलमान हो गये थे। इन्शा-अल्लाह तआ़ला इसका बयान भी जल्द ही आयेगा। ग़र्ज़ यह कि इस हदीस का मरफ़ूअ़ होना तस्लीम नहीं हो सकता। अब दूसरी हदीसें भी इस बारे में हैं, यह कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हव्वा के जो औलाद होती थी वह उनको अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिये मख़्सूस कर देती थीं, और उनका नाम अ़ब्दुल्लाह, उबैदुल्लाह वग़ैरह रखती थीं। ये बच्चे मर जाते थे। चुनाँचे हज़रत आदम व हज़रत हव्वा अ़लैहिमस्सलाम के पास इब्लीस आया और कहने लगा कि अगर तुम अपनी औलाद का दूसरा नाम रखोगे तो वह ज़िन्दा रहेगी। अब हव्वा के बच्चा हुआ तो माँ-बाप ने बच्चे का नाम अ़ब्दुल-हारिस रखा, इसी से मुताल्लिक़ अल्लाह पाक फ़रमाता हैः

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ.....

हव्वा अ़लैहस्सलाम को शक था कि हमल (गर्भ) है या नहीं। ग़र्ज़ जब वह हमल से बोझल हो गईं तो उन दोनों ने ख़ुदा से दुआ़ की कि अगर जीता जागता नेक बच्चा होगा तो हम बड़ा शुक्र करेंगे। अब शैतान उन दोनों के पास आया और कहने लगा तुम्हें क्या ख़बर कि कैसा बच्चा पैदा होगा? जानवर की शक्ल व सूरत का होगा या इनसान की। एक ग़लत बात उनकी निगाहों में अच्छी बनाकर पेश की और शैतान तो धोखा देने वाला है ही, इससे पहले दो बच्चे हो चुके थे और मर चुके थे। शैतान ने उन्हें समझाया कि अगर

तुम मेरे नाम पर इसका नाम न रखोगे तो न वह ठीक पैदा होगा और न ज़िन्दा रहेगा। चुनाँचे उन्होंने उस बच्चे का नाम अ़ब्दुल-हारिस रखा। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब अल्लाह तआ़ला ने उनकी दुआ़ पर सही सालिम बच्चा दिया तो उसका नाम अ़ब्दुल-हारिस रखकर अल्लाह के साथ शिर्क किया। इन आयतों में इसी का बयान है।

और एक रिवायत में है कि पहली दफ़ा के हमल (गर्भ) के वक़्त यह (शैतान) आया और उन्हें डराया कि मैं वही हूँ जिसने तुम्हें जन्नत से निकलवाया, अब तुम मेरी इताअ़त करो वरना मेरे कर्तब से उसके सींग पैदा हो जायेगा और वह पेट को फाड़कर निकलेगा, और यह होगा और वह होगा। ग़र्ज़ उन्हें बहुत डरा दिया मगर उन्होंने उसकी बात न मानी। ख़ुदा की मस्लेहत पर मुर्दा बच्चा पैदा हुआ। दूसरा हमल हुआ फिर मुर्दा बच्चा पैदा हुआ। अबके इब्लीस (शैतान) ने आकर अपनी बहुत ख़ैरख़्वाही जताई, बच्चे की मुहब्बत ग़ालिब आ गई और उसका नाम उन्होंने अ़ब्दुल-हारिस रख दिया। इसी पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰهُمَا.

कि अल्लाह की दी हुई चीज़ में वे अल्लाह का शरीक दूसरे को बनाने लगे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से इस हदीस को लेकर उनके शागिर्दों की एक जमाअ़त ने भी यही कहा है, जैसे मुजाहिद, सईद बिन जुबैर, इक्रिमा, क़तादा और सुद्दी। इसी तरह पहले उलेमा से लेकर बाद के उलेमा और बुज़ुर्गों तक बहुत से मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़सीर में यही कहा है, लेकिन ज़ाहिर यह है कि यह वाक़िआ़ अहले किताब से लिया गया है। इसकी एक बड़ी दलील यह है कि इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसे उबई बिन कअ़ब रज़ि. से रिवायत करते हैं, जैसा कि इब्ने अबी हातिम में है। पस ज़ाहिर है कि यह बात अहले किताब से नक़ल की गई है, जिनके बारे में हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि उनकी बातों को न सच्ची कहो न झूठी। उनकी रिवायतें तीन तरह की होती हैं- एक तो वे जिनका सही होना आयत या हदीस से मालूम होता है। दूसरी वे जिनका ग़लत और झूठा होना किसी आयत या हदीस से मालूम होता है। तीसरी वे जिनके बारे में कोई फ़ैसला हमारे दीन में न मिले। तो बक़ौल हुक्मे हदीस उसके बयान में तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन उसकी तस्दीक़ व तक्ज़ीब नहीं करनी चाहिये (यानी उसके सही या ग़लत होने का हुक्म न लगाना चाहिये)। मेरे नज़दीक तो यह क़ौल दूसरी क़िस्म का है, यानी मानने के क़ाबिल नहीं। और जिन सहाबा या ताबिईन से यह रिवायत है उन्होंने इसे तीसरी क़िस्म का समझकर रिवायत कर दिया है, लेकिन हम तो वही कहते हैं जो हज़रत इमाम हसन कहते थे कि इन आयतों में मुश्रिकों का अपनी औलाद में शरीके ख़ुदा करने का बयान है, न कि हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम का। पस अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अल्लाह इस शिर्क से बुलन्द व बाला है। इन आयतों में यह ज़िक्र और इससे पहले आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम का ज़िक्र बात को पस्त करने की तरह है कि उनके असली माँ-बाप का ज़िक्र करके फिर और माँ-बाप का ज़िक्र हुआ और उन्हीं का शिर्क बयान हुआ।

अब व्यक्तिगत ज़िक्र ख़त्म करके जिन्स (समूह और वर्ग) के ज़िक्र की तरफ़ बात का रुख़ फेरा जाता है जैसे "हमने दुनिया वाले आसमान को सितारों से सजाया और फिर उन्हीं सितारों को शैतानों को मार भगाने के काम में लाये" और यह ज़ाहिर है कि जो सितारे सजावट के हैं वे झड़ते नहीं, उनसे शैतान पर मार नहीं पड़ती। यहाँ भी बात का रुख़ यूँ फेरा जाता है कि तारों के व्यक्तित्व से तारों की जिन्स की तरफ़। इसकी और बहुत सी मिसालें और नज़ीरें क़ुरआन में मौजूद हैं। वल्लाहु आलम

Maktab-E-Ashraf

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ٥ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ٥ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ٥ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٥ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ٥ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۫ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ٥ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ٥ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ٥

क्या ऐसों को शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को बना न सकें और वे ख़ुद ही बनाए जाते हों। (191) और वे उनको किसी क़िस्म की मदद (भी) नहीं दे सकते, और वे ख़ुद अपनी भी मदद नहीं कर सकते। (192) और अगर तुम उनको कोई बात बतलाने को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें। तुम्हारे एतिबार से (दोनों बातें) बराबर हैं, चाहे तुम उनको पुकारो या तुम चुप रहो। (193) वाक़ई तुम ख़ुदा को छोड़कर जिनकी इबादत करते हो वे भी तुम जैसे ही बन्दे हैं, सो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम सच्चे हो। (194) क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हैं, या उनके हाथ हैं जिनसे वे किसी चीज़ को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हों, या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? आप (यह भी) कह दीजिए कि तुम अपने सब शरीकों को बुला लो, फिर मुझे नुक़सान पहुँचाने की तदबीर करो, फिर मुझ को बिल्कुल भी मोहलत मत दो। (195) यक़ीनन मेरा मददगार अल्लाह तआ़ला है जिसने यह किताब नाज़िल फ़रमाई, और वह (आ़म तौर पर) नेक बन्दों की मदद किया करता है। (196) और तुम जिन लोगों की ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हो वे तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वे अपनी मदद कर सकते हैं। (197) और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो (उसको) न सुनें, और उनको आप देखते हैं कि (जैसे) वे आपको देख रहे हैं, और वे कुछ भी नहीं देखते। (198)

दुनिया में सबसे ज़्यादा कमज़ोर मख़्लूक़ बुतों के पुजारियों के माबूद हैं

वे मुश्रिक लोग जो अल्लाह के बजाय औसान व बुतों की इबादत करते हैं उन्हें तंबीह हो रही है कि ये

Muftab Ashraf

बुत भी खुदा की मख़्लूक़ में एक बनाई हुई चीज़ हैं, किसी बात की भी इनको क़ुदरत नहीं, न वे किसी को नुक़सान पहुँचा सकते हैं न नफ़ा, न उनमें देखने की ताक़त है न वे अपने इबादत करने वालों की मदद कर सकते हैं, बल्कि ये बुत तो बेजान चीज़ों में से हैं, हरकत तक नहीं कर सकते। बल्कि उनकी इबादत करने वाले उनसे कहीं ज़्यादा अच्छे हैं कि सुन सकते हैं, देख सकते हैं, छू सकते हैं, पकड़ सकते हैं। इसी लिये फ़रमाया कि वे क्या उन पत्थरों के बुतों को खुदा का शरीक बनाते हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे खुद पैदा किये हुए हैं। जैसा कि फ़रमाया- ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है सुनो! ये लोग जो खुदा के अ़लावा और दूसरों की पूजा करते हैं वे एक मक्खी तक नहीं हटा सकते, चाहे सब के सब ही मिलकर क्यों न कोशिश करें, बल्कि मक्खी अगर उनके खाने की कोई चीज़ ले उड़े तो वे उससे वापस तक नहीं ले सकते। तालिब (माँगने वाला अर्थात् बुतों को पूजने वाला) और मतलूब (जिससे माँगा जा रहा है अर्थात् जिसको पूजा जा रहा है) दोनों किस क़द्र कमज़ोर और बेक़ुदरत हैं। उन्होंने खुदा की क़द्र नहीं पहचानी, बेशक खुदा बड़ा क़वी और ग़ालिब है। मक्खी एक मामूली सी गिज़ा भी उनसे ले उड़े तो उससे छुड़ाने की ताक़त नहीं रखते। जिसकी यह सिफ़त हो वह कैसे रिज़्क़ देगा या मदद करेगा? जैसा कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया थाः

اَتَعْبُدُوْنَ مَاتَنْحِتُوْنَ.

क्या तुम उसकी इबादत करते हो जिसको खुद गढ़ते (बनाकर तैयार करते) हो?

फिर फ़रमाया कि वे अपने इबादत करने वालों की ज़रा सी भी मदद नहीं कर सकते, यहाँ तक कि अगर कोई उनके साथ बुरा बर्ताव करे तो खुद अपना बचाव नहीं कर सकते। जैसे हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम के बुतों को तोड़-फोड़ देते थे और उनका अत्यंत अपमान करते थे, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इब्राहीम ने मार-मारकर बुतों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, लेकिन बुतख़ाने के सबसे बड़े बुत को छोड़ दिया, ताकि लोग आकर उसी बड़े बुत से पूछ लें कि यह क्या हुआ और किसने किया?

मुआ़ज़ बिन अ़मर बिन जमूअ़ और मुआ़ज़ बिन जबल दोनों जवान थे, मुसलमान हो चुके थे, मदीने में रात के वक़्त मुश्रिकों के बुतों को तोड़ देते, अगर वे लकड़ी के बने हुए होते तो उनको तोड़कर जलाने के लिये बेवा ग़रीब औ़रतों को दे देते, ताकि उन कमबख़्त मुश्रिकों को कुछ इबरत हो और अपने अ़मल और अ़क़ीदे पर कुछ ग़ौर करें। अ़मर बिन जमूअ़ अपनी क़ौम का सरदार था, उसके पास एक बुत था जिसकी वह इबादत करता था। उसको खुशबुएँ मलता, वे दोनों नौजवान रात के वक़्त उसके बुतख़ाने में जाते, उस पर पाख़ाना करते, अ़मर बिन जमूअ़ आता, बुत को इस हालत में देखता तो उसको धोता खुशबुएँ मलता और उसके पास तलवार रख देता और कहता कि इससे अपनी रक्षा कर। दोबारा ये लोग ऐसा ही करते और इब्ने जमूअ़ फिर धोता, साफ़ करता, फिर उसके पास तलवार रखता। आख़िरकार एक दिन इन दोनों ने उस बुत को निकाला और एक कुत्ते की लाश से उसको बाँध दिया और एक रस्सी के ज़रिये एक बावली पर लटका दिया। जब अ़मर बिन जमूअ़ आया और यह कैफ़ियत देखी तो उसको अ़क़्ल आ गई कि वह बुत-परस्ती के बारे में ग़लत और झूठा एतिक़ाद रखता है। चुनाँचे वह कहने लगा कि "अगर तू सचमुच खुदा होता तो कुएँ में कुत्ते के साथ पड़ा न होता" फिर वह इस्लाम ले आया और सच्चा मुसलमान रहा, और जंगे उहुद में शहीद हुआ। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वे कभी तुम्हारी पैरवी न करें, यानी ये बुत किसी की पुकार को नहीं सुन सकते, इनको पुकारना न पुकारना बराबर है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा था कि "ऐ बाप! इबादत न करो ऐसी मूर्ती की जो न सुनती है न देखती है, न तुम्हारा कुछ काम निकालती है" फिर फ़रमाया वह भी ख़ुदा की एक मख़्लूक़ है जैसे ये बुतों को पूजने वाले। बल्कि ये बुत-परस्त ही इन बुतों से अच्छे हैं कि सुनते, देखते और छूते तो हैं। फिर फ़रमाया कि अच्छा अपनी मदद के लिये अपने शरीकों को बुलाओ और मुझे पलक झपकने की भी मोहलत न दो, और मेरे ख़िलाफ़ जी खोलकर कोशिश करके देख लो, मेरा मददगार वह ख़ुदा है जिसने किताब नाज़िल फ़रमाई। वह नेक काम करने वालों का वाली है, वही ख़ुदा मेरे लिये काफ़ी व वाफ़ी है, वही मेरी मदद करेगा, उसी पर मेरा भरोसा है, मैं मजबूर हूँ तो उसी का हूँ, वह दुनिया व आख़िरत में न सिर्फ़ मेरा बल्कि मेरे बाद भी हर नेक काम करने वाले का सरपरस्त है।

जैसा कि हूद अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के जवाब में फ़रमाया था जबकि आपकी क़ौम ने आप पर यूँ तोहमत बाँधी कि तुम पर हमारे ख़ुदाओं की कुछ मार पड़ी है, तभी तो तुम ऐसी बहकी-बहकी बातें करने लगे हो। तो आपने जवाब दिया कि मैं तो ख़ुदा की गवाही देता हूँ और साफ़-साफ़ कहे देता हूँ कि मैं तुम्हारे शरीकों से नफ़रत व बेज़ारी ज़ाहिर करता हूँ। अच्छा तुम सब मिलकर मेरे साथ कुछ शरारत करके देखो और हाँ दमभर के लिये भी मुझे मोहलत न देना, तुम मेरा क्या बिगाड़ोगे? मेरा भरोसा तो ख़ुदा पर है, वह मेरा और तुम्हारा सब का रब है। ज़मीन पर कोई ऐसा जानदार नहीं जिसकी नकेल उसके हाथ में न हो। मेरा रब सीधे और सच्चे तरीक़े पर है।

और हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि तुम्हारा क्या ख़्याल है इन बुतों के बारे में जिनकी तुम और तुम्हारे बाप-दादा (यानी बड़े) पूजा करते थे। ये लोग तो मेरे दुश्मन हैं, मगर परवर्दिगार मेरा दोस्त है, उसी ने मुझे पैदा किया और वही ठीक राह पर चलायेगा। और जैसे कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा था कि मैं तो बरी हूँ तुम्हारे ख़ुदाओं से। मगर अपने ख़ुदा का मैं इबादत-गुज़ार हूँ जिसने मुझे पैदा किया और फिर मेरी हिदायत फ़रमाई और उसके पीछे उसके कलिमे को यादगार बना छोड़ा, शायद कि ये अपनी बात से रुजू करें। और इसलिये फ़रमाया कि वे न तो तुम्हारी मदद कर सकते हैं न अपनी, और अगर तुम उन्हें हिदायत (सही रास्ते) की तरफ़ बुलाओ तो वे ख़ाक नहीं सुनते, तुम ऐसा समझते हो कि वे तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं लेकिन ख़ाक कुछ नहीं देखते। वे अपनी बनावटी आँखों से तुम्हें देख रहे हैं जैसे वाक़ई देख रहे हों, लेकिन वे तो बेजान हैं। इसी लिये उनसे ऐसा मामला किया जो एक अ़क़्लमन्द करता हो। उन बुतों की शक्ल तो तस्वीरी शक्ल है और इनसान जैसे मालूम होते हैं, तुम देखते हो कि जैसे वे तुमको घूर रहे हैं।

सरसरी बर्ताव को क़बूल कर लिया कीजिए और नेक काम की तालीम कर दिया कीजिए, और जाहिलों से एक किनारे हो जाया कीजिए। (199) और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे तो अल्लाह तआ़ला की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (200)	خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ إِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

Maktab E Ashraf

नेक कामों का हुक्म करना

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि "ख़ुज़िल् अ़फ़्-व" का यह मतलब है कि उनके माल जो उनकी ज़रूरतों से ज़्यादा हैं और वे माल जो तुम्हें ला दें वह ले लो। और यह हुक्म सूरः बराअत में फ़राईज़ व सदक़ात की वज़ाहत व व्याख्या (स्पष्टीकरण और बयान) से पहले था कि सदक़ात आपके पास पेश किये जाते थे। और ज़ह्हाक रह. कहते हैं कि "ख़ुज़िल् अ़फ़्-व" के मायने हैं जो ज़्यादती है वह ख़र्च कर दो। "अ़फ़्व" के मायने ज़्यादा होने के लिये गये हैं। ज़ैद बिन असलम कहते हैं कि इसमें मुश्रिकों से अ़फ़्व (दरगुज़र करने) का हुक्म है। दस साल तक यह अ़फ़्व (माफ़ी व दरगुज़र) रहा, फिर उन पर सख़्ती का हुक्म हुआ। यह इब्ने जरीर का क़ौल है। मुजाहिद रह. कहते हैं कि लोगों के अख़्लाक़ और आमाल से दरगुज़र (यानी नज़र-अन्दाज़) करो। यानी उनके आमाल व अख़्लाक़ की खोज न करो। मुराद यह है कि लोगों से दरगुज़र करो और बुरी सोहबत इख़्तियार करने से बचो। ख़ुदा की क़सम मैं जिसकी सोहबत इख़्तियार करूँगा ज़रूर उसकी ख़ू-बू (आदत और तौर-तरीक़ा) पकड़ लूँगा। सब अक़वाल में यही क़ौल ज़्यादा बेहतर है। उयैना रह. से रिवायत है कि जब अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी पर यह आयत उतारीः

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ.

कि माफ़ कर दिया करो और नेक कामों की रहनुमाई किया करो और जाहिल लोगों से अन्जान बन जाओ।

तो हुज़ूर सल्ल. ने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि इसका क्या मक़सद है? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि अल्लाह तआ़ला आपको हुक्म देता है कि जो तुम्हारे ऊपर कोई ज़्यादती करे तो उसको माफ़ कर दिया करो। जो तुमको न दे तुम उसको दो, जो तुमसे ताल्लुक़ तोड़े तुम उससे ताल्लुक़ जोड़ो। इसी मज़मून की हदीस से मुताल्लिक़ इब्ने आ़मिर कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल. से मुलाक़ात की, मैंने आपका हाथ थाम लिया और कहा या रसूलल्लाह! बेहतरीन आमाल मुझे बताईये। आपने फ़रमाया ऐ उक़्बा बिन आ़मिर! जो तुमसे हमदर्दी नहीं करता तुम उससे हमदर्दी करो, जो तुमको मेहरूम रखता है तुम उसको अपने लेने-देने से मेहरूम न रखो, जो तुम्हारी ज़ात से मुताल्लिक़ ज़्यादती करे तुम उससे दरगुज़र (माफ़) करो और बख़्श दो।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ.

(माफ़ कर दिया करो और नेक कामों की रहनुमाई किया करो और जाहिल लोगों से अन्जान बन जाओ) 'उर्फ़' के मायने मारूफ़ (जाने-पहचाने और परिचित) के हैं। सही बुख़ारी में है कि उयैना अपने भतीजे हुर्र बिन क़ैस के यहाँ आकर ठहरे। हुर्र बिन क़ैस हज़रत उमर रज़ि. के दरबारी आदमी थे। वह क़ुरआने करीम के माहिर थे और क़ारी उलेमा हज़रत उमर रज़ि. की मजलिसे शूरा के सदस्य थे। ये उलेमा जवान भी होते थे और बूढ़े भी। उयैना ने अपने भतीजे से कहा ऐ भतीजे! तुमको अमीरुल-मोमिनीन के पास रुसूख़ (इज़्ज़त व मर्तबा) हासिल है, अमीर से इजाज़त ले लो कि मैं उनसे मिल लूँ? हुर्र ने उयैना के लिये इजाज़त हासिल कर ली और उमर रज़ि. ने हाज़िरी की इजाज़त दे दी। जब उयैना अमीरुल-मोमिनीन से मिले तो कहने लगे ऐ इब्ने ख़त्ताब! तुमने हमको काफ़ी रुपया नहीं दिया, न हमारे साथ इन्साफ़ से काम लिया। इन्साफ़ का नाम सुनकर हज़रत उमर रज़ि. ग़ुस्सा हो गये और क़रीब था कि उयैना को मार बैठें, तो

हुई कहने लगे ऐ अमीरुल-मोमिनीन! अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्ल. से फ़रमाया है कि "माफ़ कर दिया करो और नेक कामों का मश्विरा दिया करो और जाहिलों से किनारा कर लिया करो, और यह तो जाहिल लोगों में से है।

ख़ुदा की क़सम जब उमर रज़ि. के आगे यह आयत तिलावत की गई तो वहीं रुक गये, कोई सज़ा नहीं दी। वह किताबुल्लाह के जानने वाले थे, सिर्फ़ बुख़ारी ने इसकी रिवायत की है। रिवायत है कि सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह का गुज़र शाम (सीरिया) वालों के एक क़ाफ़िले पर से हुआ। क़ाफ़िले में घन्टियाँ बज रही थीं तो कहा कि घन्टी बजाना मना है, कुफ़्फ़ार मन्दिरों में घंटी बजाते हैं। क़ाफ़िला वालों ने कहा कि इस बारे में हमें तुमसे ज़्यादा मालूमात हैं। मनाही बड़े-बड़े घंटों की है, इन छोटी-छोटी घन्टियों में कोई हर्ज नहीं। तो सालिम ख़ामोश हो गए और सिर्फ़ इतना कहा कि जाहिलों के मुँह न लगना ही बेहतर है।

अल्लाह ने अपने नबी सल्ल. को हुक्म दिया है कि बन्दों को नेक काम का हुक्म दो। लफ़्ज़ 'मारूफ़' के अन्दर तमाम नेकियाँ और अच्छाईयाँ दाख़िल हैं और जाहिलों से किनारा करने का भी हुक्म दिया है, अगरचे यह ख़िताब बज़ाहिर नबी सल्ल. को है लेकिन दर हक़ीक़त सब ही बन्दों को यह हुक्म दिया जा रहा है। इसके ज़रिये बन्दों को अदब सिखाया जा रहा है कि अगर कोई तुम पर ज़ुल्म करे तो उसको बरदाश्त कर लो। यह मतलब नहीं कि कोई ख़ुदा के लाज़िमी और वाजिबी हुक़ूक़ में कोताही करे तो भी तुम उससे निगाह फेर लो, उसको कुछ न कहो। या अल्लाह से कुफ़्र करे या अल्लाह के एक होने से जाहिल रहे तो भी दरगुज़र करो, या मुसलमानों से अपनी जहालत के सबब लड़े तो भी ख़ामोश हो जाओ? ग़र्ज़ यह कि ऐसी ग़लत-फ़हमी न होनी चाहिये। ये वे अख़्लाक़ हैं जिनकी तालीम अल्लाह ने नबी सल्ल. को दी है। इस मज़मून को एक अ़क़्लमन्द शायर ने बहुत अच्छे अन्दाज़ में शे'र में लिखा है। कहता है:

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِعُرْفٍ كَمَا أُمِرْتَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ

وَلِنْ فِي الْكَلَامِ لِكُلِّ الْأَنَامِ فَمُسْتَحْسَنٌ مِنْ ذَوِي الْجَاهِلِيْنَ

यानी माफ़ करने की आ़दत रखो, नेक कामों की रहबरी किया करो और जाहिलों से दूर रहो। हर शख़्स के साथ बात में नर्मी बरतो और बुलन्द मर्तबे वालों के लिये बात में नर्मी बरतना और भी ज़्यादा अच्छा है।

बाज़ उलेमा का मक़ूला है कि लोग दो क़िस्म के होते हैं- एक तो मर्दे मोहसिन कि जो कुछ वह ख़ुशी से तुझ पर एहसान करे शुक्रिये के साथ क़बूल कर ले, और उसकी ताक़त से ज़्यादा उस पर भार न डाले कि वह ख़ुद दबकर रह जाये। दूसरा बुरे क़िस्म का आदमी उसको नेक काम का मश्विरा देते रहो, लेकिन अगर उसकी गुमराही बढ़ती जाये और वह अपनी जहालत पर क़ायम रहे तो उससे मुँह फेर लो, शायद यही अनदेखा करना उसकी बुराई से उसको रोक दे, जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि अच्छे अन्दाज़ से अपना दिफ़ा (रक्षा) करो। इस तरह दुश्मन भी तुम्हारे दोस्त बन जायेंगे। हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे इज़हारे ख़्याल करते हैं। और कहा करो कि ऐ ख़ुदा मैं शैतान के बहकाने से तेरी पनाह माँगता हूँ और इससे तेरी पनाह कि शैतानों का अ़मल-दख़ल मेरे पास हो। और फ़रमाया कि नेकी और बदी बराबर नहीं हुआ करते। अपने दिफ़ा और जवाब देना अच्छे ढंग से किया करो, यह अ़मल वही लोग इख़्तियार कर सकते हैं

Maktab E Ashraf

जो तबीयत के साबिर हैं, नतीजे में उनको बड़ी कामयाबी हासिल रहेगी। ख़ुश-क़िस्मत ही इस पर अ़मल करेंगे।

अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ वस्वसे (बुरे ख़्यालात) डाले और बहकाने लगे या तुम्हें दुश्मन से निपटने के वक़्त ग़ज़ब (क्रोध) में लाये और उस जाहिल से किनारा करने से तुम्हें रोक दे, और उससे टकराव पर तुम्हें तैयार करे तो ख़ुदा से पनाह माँगने लगो। जाहिल की तुम पर ज़्यादती को भी ख़ुदा देख रहा है और तुम्हारे पनाह माँगने को भी सुन रहा है। उस पर कोई बात पोशीदा नहीं। शैतान का बहकाना और फ़साद खड़ा करना तुमको जिस क़द्र नुक़सान पहुँचा सकते हैं ख़ुदा उससे वाक़िफ़ है।

जब 'ख़ुज़िल् अ़फ़्-व' वाली आयत (यानी जिसकी यह तफ़सीर चल रही है) उतरी तो बन्दे ने कहा या इलाही! गुस्सा आ जाये तो किस तरह माफ़ व दरगुज़र किया जाये? तो "फ़स्तअ़िज़् बिल्लाह" (यानी अल्लाह की पनाह माँगने) वाली आयत नाज़िल हुई। इन दो आदमियों का वाक़िआ पहले बयान हो चुका है कि ये दोनों आपस में नबी सल्ल. के सामनें लड़ बैठे, यहाँ तक कि एक के ग़ुस्से के मारे नथने फूल गये तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मैं ऐसा कलिमा जानता हूँ कि अगर वह पढ़े तो उसका ग़ुस्सा थम जाये। वह कलिमा यह है- 'अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'।

उसको यह बात बताई गई तो कहा मुझे कुछ जुनून नहीं है 'नज़्ग़ुन्' के असली मायने फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) के हैं यह फ़साद चाहे ग़ुस्से की वजह से हो या बिना ग़ुस्से के। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि "ऐ नबी! मेरे बन्दों से कह दो कि बात अच्छे ढंग से किया करो। शैतान आपस में फ़साद डालने की कोशिश करता रहता है।

यक़ीनन जो लोग ख़ुदा से डरने वाले हैं, जब उनको शैतान की तरफ़ से कोई ख़तरा आ जाता है तो वे याद में लग जाते हैं, सो एक दम उनकी आँखें खुल जाती हैं। (201) और जो (शैतानों के ताबे या अधीन) हैं वे उनको गुमराही में खींचे चले जाते हैं, पस वे बाज़ नहीं आते। (202)	اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝

शैतान के बहकावे से महफ़ूज़ रहने का कामयाब तरीक़ा

जिन बन्दों ने अल्लाह के हुक्मों की इताअ़त की और उसकी मना की हुई चीज़ों से बाज़ रहे हैं, अगर शैतानी वस्वसे उनको पेश आते हैं तो फ़ौरन उन्हें ज़िक्रे इलाही की याद आ जाती है। इस लफ़्ज़ को बाज़ 'तीफ़' और बाज़ 'ताईफ़' कहते हैं। ये दोनों क़िराअतें मशहूर हैं और मायने एक ही हैं। और कहा जाता है कि कुछ फ़र्क़ भी है। बाज़ ने इसके मायने ग़ज़ब (ग़ुस्से के) बताये हैं और बाज़ ने कहा है कि शैतान ने अगर अपना असर डाल दिया हो, और बाज़ ने कहा है कि गुनाह की वजह से नदामत और रंज। बाज़ ने कहा है कि गुनाह कर लेने से ऐसे लोगों को ख़ुदा की सज़ा व सवाब, ख़ुदा के वादे और वईद याद आ जाते हैं तो वे तौबा करने लगते हैं, ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ झुक जाते हैं और फ़ौरन उसकी तरफ़ रुजू करके

Maktab E Ashraf

पनाह माँगने लगते हैं। वे फ़ौरन समझ और होश से काम लेने वाले बन जाते हैं, बेहोशी में थे तो फ़ौरन होश में आ जाते हैं।

कहते हैं कि एक औरत नबी सल्ल. के पास आई उसको मिर्गी की बीमारी थी। हुज़ूर सल्ल. के पास आकर अर्ज़ करने लगी या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला से मेरी शिफ़ा के लिये दुआ़ फ़रमाईये। आपने फ़रमाया कि अगर यही तेरी मर्ज़ी है तो मैं ख़ुदा से दुआ़ करता हूँ वह तुझे शिफ़ा दे देगा, और अगर तू चाहे तो सब्र कर और क़ियामत के दिन हिसाब तुझ पर से उठ जाये। तो कहने लगी अच्छा मैं बीमारी पर सब्र कर लूँगी जबकि मुझे हिसाब से आज़ाद किया जा सकता है। वह यह कह रही थी कि मुझे मिर्गी की बीमारी है, होश व हवास रुख़्सत हो जाते हैं, जिस्म पर से कपड़ा खुल जाता है, नंगी हो जाती हूँ बीमारी दूर न हो तो दुआ़ कीजिये कि कम से कम मेरा कपड़ा न खुलने पाये। आपने दुआ़ फ़रमाई और फिर कभी सर चकराने और मिर्गी की हालत में कपड़ा उसके जिस्म पर से न हटा।

कहते हैं कि एक नौजवान एक मस्जिद में बैठा इबादत करता रहता था। एक औ़रत उसकी दीवानी हो गई। उसको अपनी तरफ़ माईल करती रहती थी। यहाँ तक कि एक दिन वह उसके घर आ ही गया अब फ़ौरन उसको यह आयत याद आ गई:

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ.

और साथ ही वह ग़श खाकर गिर पड़ा। जब होश आया तो फिर यही आयत पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते जान दे दी। हज़रत उमर रज़ि. आये, उसके बाप से ताज़ियत की। वह रात को दफ़न किया गया तो उमर रज़ि. अपने कुछ साथियों को लेकर उसकी क़ब्र पर गये, उसकी नमाज़े मग़फ़िरत पढ़ी, फिर क़ब्र से मुख़ातिब होकर यूँ बोलने लगे ऐ नौजवान!

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ.

यानी जो ख़ुदा तआ़ला से डर गया उसको ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से दो जन्नतें हैं।

इस आयते करीमा को सुनकर क़ब्र के अन्दर से आवाज़ आई- ऐ उमर! ख़ुदा ने मुझे दो जन्नतें ही बख़्शी हैं।

अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ.

यानी उनके साथी इनसानी शैतान उनको गुमराही की तरफ़ घसीटते लिये जाते हैं। जैसा कि फ़रमाया:

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ.

यानी फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले लोग शैतान के भाई हैं। यानी उनके ताबेदार उनकी बातों को तस्लीम करने वाले उन्हें और गुमराही की तरफ़ लेजा रहे हैं, गुनाहों को उन पर आसान बनाते हैं और गुनाहों को उनकी निगाहों में अच्छा करके दिखलाते हैं। 'मद्द' के मायने ज़्यादती के हैं यानी जहल (अज्ञानता) और गुमराही में ज़्यादती करते हैं, और ये शयातीन अपनी कोशिशों में कोई कसर नहीं छोड़ते।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि न तो इनसान ही अपने बुरे आमाल के करने से रुकते हैं और न शयातीन उनसे बाज़ रहते हैं। गुमराही की तरफ़ खींच ले जाने वाले जिन्न व शयातीन हैं, जो अपने

Maktab E Ashraf

मानने वालों और अनुयायी लोगों की तरफ़ अपनी बातें भेजते रहते हैं, और अपनी इस कोशिश में कोई कसर नहीं छोड़ते, इसलिये कि उनकी फ़ितरत और तबीयत ही ऐसी है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

اَلَمْ تَرَ اَنَّـآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا.

यानी ऐ पैग़म्बर! क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शयातीन को काफ़िरों के पास भेजा जो उन काफ़िरों को नाफ़रमानी और गुनाहों की तरफ़ माईल करते रहते हैं।

وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ مِنْ رَّبِّىْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ○	और जब आप कोई मोजिज़ा उनके सामने ज़ाहिर नहीं करते तो वे लोग कहते हैं कि आप यह मोजिज़ा क्यों न लाए? आप फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी पैरवी करता हूँ जो मुझ पर मेरे रब की तरफ़ से हुक्म भेजा गया है, ये (गोया) तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत-सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

अल्लाह की तरफ़ से आये अहकाम की इत्तिबा

ये लोग किसी मोजिज़े और निशानी के तालिब होते हैं और तुम नहीं पेश करते हो तो कहते हैं कि कोई निशानी तुमने ख़ुद क्यों नहीं बना डाली, अपनी तरफ़ से क्यों न गढ़ लिया, या आसमान से कोई निशानी क्यों न खींच लाये। आयत से मुराद मोजिज़े और असाधारण चीज़ है जैसा कि फ़रमाया "अगर हम चाहें तो आसमान से मोजिज़े उतारें जिसको देखकर उनकी गर्दनें झुक जायें। ये काफ़िर भी हमारे रसूल से कहते हैं कि अल्लाह की तरफ़ से कोई निशानी हासिल करने की तुम कोशिश क्यों नहीं करते, ताकि हम उसको देख लें तो ईमान लायें। अल्लाह पाक फ़रमाता है- कह दो कि मैं अपनी तरफ़ से इस बारे में कोई पहल नहीं करना चाहता। मैं तो ख़ुदा का बन्दा हूँ जो मुझे हुक्म भेजा गया उसकी तामील करने वाला। अगर उसने अपनी तरफ़ से कोई मोजिज़ा भेजा तो मैंने पेश कर दिया, अगर न भेजा तो मैं इसरार (ज़िद) नहीं कर सकता। उसने मुझे यह बात बताई है कि यह क़ुरआन ही सबसे बड़ा मोजिज़ा है, इसमें अल्लाह के एक होने की दलीलें ऐसी स्पष्ट हैं कि ख़ुद मोजिज़े बने हुई हैं। गोया ये बहुत सी दलीलें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से और हिदायत है उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○	और जब क़ुरआन पढ़ा जाया करे तो उसकी तरफ़ कान लगा दिया करो और ख़ामोश रहा करो, उम्मीद है कि तुमपर (नई या और ज़्यादा) रहमत हो। (204)

अल्लाह का कलाम सुनने के आदाब

जब इस बयान से फ़राग़त हासिल हो चुकी कि क़ुरआन हिदायत और रहमत है और लोगों के लिये

Maktab E Ashraf

समझने की चीज़ है तो अब इरशाद होता है कि इसकी तिलावत के वक़्त ख़ामोश रहा करो, ताकि इसका एहतिराम और ताज़ीम (सम्मान) की जा सके। ऐसा नहीं जैसा कि क़ुरैश के काफ़िर लोग करते थे, यानी कहते थे कि क़ुरआन न सुनो न सुनने दो, क़ुरआन पढ़े जाने के वक़्त शोर व हंगामा मचाया करो। लेकिन यह चुप रहने की ताकीद फ़र्ज़ नमाज़ के बारे में है और वह भी उस वक़्त जबकि इमाम बुलन्द आवाज़ से क़िराअत कर रहा हो (यह इमाम शाफ़ई का मज़हब है, इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक इमाम के पीछे हर हाल में ख़ामोशी है। हिन्दी अनुवादक)। जैसा कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि जब इमाम नमाज़ पढ़ने लगे, जब वह तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो और जब वह क़िराअत करने लगे तो तुम ख़ामोश हो जाओ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. कहते हैं कि इस आयत के उतरने से पहले लोग नमाज़ पढ़ने में बातें कर लिया करते थे, चुनाँचे जब यह आयत उतरी कि ख़ामोश हो जाओ और क़ुरआन सुनो तो चुप रहने का हुक्म दिया गया। इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि हम लोग नमाज़ में एक दूसरे को सलामु अ़लैक कह लिया करते थे, इसलिये यह आयत उतरी। इब्ने मसऊद रज़ि. नमाज़ पढ़ा रहे थे, लोगों को देखा कि इमाम के साथ ख़ुद भी क़िराअत कर रहे हैं तो नमाज़ ख़त्म करके कहा "तुम्हें क्या हो गया कि क़ुरआन सुनते नहीं समझते नहीं, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने ख़ामोश रहकर सुनने की हिदायत फ़रमाई है।" ज़ोहरी रह. कहते हैं कि यह आयत अन्सार के एक शख़्स के बारे में नाज़िल हुई (यह आयत मक्की है और अन्सार के इस्लाम क़बूल करने से पहले नाज़िल हुई है) नबी करीम सल्ल. पढ़ते थे तो वह भी आपके पीछे पढ़ता था।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने आवाज़ के साथ क़िराअत करने वाली नमाज़ ख़त्म करने के बाद फ़रमाया कि क्या तुम में से कोई ख़ुद भी मेरे साथ-साथ पढ़ रहा है? एक शख़्स ने कहा हाँ या रसूलल्लाह। आपने फ़रमाया मुझे क्या हुआ कि मैं देखता हूँ कि मेरे साथ-साथ क़ुरआन पढ़ा जाता है। चुनाँचे उसके बाद लोग आवाज़ के साथ क़िराअत पढ़े जाने वाली नमाज़ों में इमाम के पीछे क़िराअत करने से रुक गये। ज़ोहरी ने कहा है कि आवाज़ वाली नमाज़ में इमाम के पीछे क़िराअत नहीं करनी चाहिये, इमाम की अपनी क़िराअत ही तुम्हारे लिये काफ़ी है, अगरचे उसकी आवाज़ तुम्हें सुनाई न दे। लेकिन आवाज़ वाली नमाज़ न हो तो लोग ख़ुद पढ़ लिया करते थे, लेकिन यह दुरुस्त नहीं कि कोई शख़्स आवाज़ वाली नमाज़ में इमाम के पीछे क़िराअत करे, न आहिस्ता से करे और न आवाज़ से, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि क़ुरआन पढ़े जाने के वक़्त ख़ामोशी इख़्तियार कर लिया करो। मैं कहता हूँ कि यह तरीक़ा उलेमा की एक जमाअ़त का है कि मुक़्तदी पर आवाज़ वाली नमाज़ में वाजिब नहीं है कि क़िराअत ख़ुद भी करे, न इमाम के फ़ातिहा पढ़ने के वक़्त न ग़ैर-फ़ातिहा पढ़ने के वक़्त, और शाफ़ई रह. के दो क़ौल हैं जिनमें एक क़ौल यह भी है। इमाम अबू हनीफ़ा और अहमद इब्ने हंबल रह. कहते हैं कि मुक़्तदी हरगिज़ क़िराअत न करे, न सिर्री (आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ में न जहरी (आवाज़ से क़िराअत की जाने वाली) नमाज़ में, क्योंकि हदीस में वारिद है कि इमाम की क़िराअत तुम्हारी क़िराअत है। यही ज़्यादा सही है।

यह मसला बहुत तफ़सीली है और इसमें उलेमा के मतभेद हैं। इमाम बुख़ारी ने कहा है कि इमाम के पीछे क़िराअत वाजिब है चाहे नमाज़ सिर्री हो या जहरी। वल्लाहु आलम

क़ुरआने करीम पढ़ा जाने लगे तो ख़ामोशी से सुनो, यानी जबकि फ़र्ज़ नमाज़ों में पढ़ा जा रहा हो। इब्ने

Muktab E Ashraf

अ़ब्बास रज़ि. का कौल है, तल्हा बिन उबैदुल्लाह बिन कुरैज़ कहते हैं कि मैंने उबैदुल्लाह बिन उमैर और अ़ता बिन अबी रबाह को आपस में बातें करते पाया, हालाँकि दूसरी तरफ़ वअ़ज़ (दीनी बयान) हो रहा था, तो मैंने कहा कि ज़िक्रे ख़ुदा क्यों नहीं सुनते? तुम वईद के क़ाबिल हो रहे हो। उन दोनों ने मेरी तरफ़ देखा, फिर अपनी बातों में लग गये। मैंने दोबारा उन्हें तंबीह की, उन्होंने मेरी तरफ़ देखा फिर बातों में लग गये। मैंने तीसरी बार अपनी बात को दोहराया तो कहने लगे कि यह हुक्म नमाज़ से मुताल्लिक़ है कि इमाम क़ुरआन पढ़ रहा हो और तुम मुक़्तदी हो तो ख़ामोश होकर सुनो, तुम भी न पढ़ने लगो।

मुजाहिद और दूसरे भी कई रावी इसे हुक्मे क़ुरआन से मुताल्लिक़ ही बताते हैं, और कहते हैं कि कोई शख़्स नमाज़ में न हो और क़ुरआन पढ़ा जा रहा हो तो फिर बातें करने में कोई हर्ज नहीं। ज़ैद बिन असलम भी यही मुराद लेते हैं। मुजाहिद कहते हैं कि यह हुक्म नमाज़ और जुमे के दिन के ख़ुतबे से मुताल्लिक़ है। इब्ने जुबैर कहते हैं कि ईद, बक़र-ईद और जुमे के दिन के ख़ुतबे और जहरी नमाज़ से मुताल्लिक़ है, ग़ैर-जहरी नमाज़ से मुताल्लिक़ नहीं है। इब्ने जरीर ने भी यही इख़्तियार किया है कि इससे मुराद चुप रहना है नमाज़ में, और ख़ुतबे में, और यही हुक्म है कि ख़ुतबे में और इमाम के पीछे चुप रहा करो। हदीस में बिल्कुल यही हुक्म है।

मुजाहिद रह. इस बात को बहुत ही बुरा समझते थे कि जब इमाम कोई ख़ौफ़ या रहमत की आयत पढ़े तो बोलने लगें, नहीं बल्कि ख़ामोश रहें, अपनी ज़बान से ख़ौफ़ व उम्मीद के जज़्बात के तहत कुछ नहीं कहना चाहिये। नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि जो क़ुरआन की कोई आयत ख़ामोश होकर सुने तो उसके लिये दोगुनी नेकियाँ लिखी जाती हैं और जो क़ुरआन को तिलावत करता है क़ुरआन क़ियामत के दिन उसके लिये नूर बन जाता है।

और (आप हर-हर शख़्स से यह भी कह दीजिए कि ऐ शख़्स!) अपने रब की याद किया कर, अपने दिल में आजिज़ी के साथ, और ख़ौफ़ के साथ, और ज़ोर की आवाज़ के मुक़ाबले में कम-आवाज़ के साथ, सुबह और शाम, (यानी हमेशा) और ग़ाफ़िलों में शुमार मत होना। (205) यक़ीनन जो (फ़रिश्ते) तेरे रब के नज़दीक (ख़ास और क़रीबी) हैं वे उसकी इबादत से (जिसमें असल अ़क़ायद हैं) तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बयान करते हैं, (जो कि ज़बान की नेकी है) और उसको सज्दा करते हैं, (जो कि हाथ-पाँव और जिस्म के अन्य अंगों के आमाल से है)। (206) ✿ (सज्दा)	وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ○ السجدة

✿ सज्दा नम्बर - 1

منزل ٢ ع ١٨ ١٣ سجدة

ख़ुदा तआ़ला से सरगोशी

अल्लाह पाक हुक्म देता है कि दिन के शुरू हिस्से में और दिन के आख़िरी हिस्से में ख़ुदा को बहुत

Mahtab E Ashraf

याद करो, जैसा कि इन दोनों वक़्तों में ख़ुदा की इबादत करने का इस आयत के ज़रिये हुक्म दिया गया है, कि सूरज निकलने से पहले और इसी तरह सूरज छुपने से पहले ख़ुदा की तारीफ़ व पाकी बयान किया करो, और यह मेराज की रात में पाँच नमाज़ों के फ़र्ज़ होने से पहले की बात है। यह आयत मक्की है।

फिर हुक्म होता है कि अपने रब को दिल से भी याद करो और ज़बान से भी, उससे रग़बत (लगाव) रखकर भी और डरकर भी, बुलन्द आवाज़ के साथ नहीं, और यह मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है कि ख़ुदा का ज़िक्र चीख़-पुकार के साथ न हो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से लोगों ने पूछा कि हमारा रब हमसे क़रीब है या दूर? अगर क़रीब है तो हम सरगोशी (धीमी और आहिस्ता आवाज़) के तौर पर उसको पुकारें और अगर दूर है तो आवाज़ देंगे। इस पर अल्लाह पाक ने यह आयत उतारी कि "मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछते हैं तो उनसे कह दो कि मैं बहुत क़रीब हूँ। वे मुझे पुकारें तो मैं पुकारने वाले की दुआ़ को सुनता हूँ।"

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. से रिवायत है कि लोग किसी सफ़र में बुलन्द आवाज़ से दुआ़ करने लगे तो उनसे नबी सल्ल. ने कहा कि ऐ लोगो! अपनी जानों पर रहम करो, तुम किसी बहरे या ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, जिसको पुकार रहे हो वह सुनने वाला और क़रीब है। तुम्हारी गर्दन की मुख्य रग से भी क़रीब है। इस आयत से यह भी मुराद हो सकती है कि जो इस आयत में है कि अपनी दुआ़ और नमाज़ न बहुत बुलन्द आवाज़ से पढ़ो और न बहुत आहिस्ता आवाज़ से, बल्कि दोनों के बीच की आवाज़ हो, क्योंकि मुश्रिक लोग जब क़ुरआन सुनते थे तो क़ुरआन को और क़ुरआन उतारने वाले और लाने वाले को बुरा भला कहते थे, तो अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि न बहुत बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ो ताकि मुश्रिक लोगों को तकलीफ़ न हो, और न इतनी पस्त आवाज़ से कि तुम्हारे साथी भी न सुन सकें। इस आयते करीमा में भी यही मज़मून है कि सुबह व शाम की इबादत में बुलन्द आवाज़ से न पढ़ो और नादानों में से न बनो। मुराद यह है कि क़ुरआन के सुनने वाले को हुक्म दिया जाये कि इस तरीक़े से नमाज़ और इबादत की जाये और यह बात बईद है और आहिस्ता पढ़ने के हुक्म के ख़िलाफ़ है, और फिर इससे मुराद यह भी है कि यह हुक्म नमाज़ से मुताल्लिक़ है जैसा कि इससे पहले गुज़र चुका। यह नमाज़ों और ख़ुतबे से मुताल्लिक़ है। और यह बात ज़ाहिर है कि ऐसे वक़्त ज़िक्र करने से अफ़ज़ल ख़ामोश रहना है, चाहे वह ज़िक्र आहिस्ता हो या बुलन्द आवाज़ से हो। यह चीज़ जो इन दोनों ने बयान की उसकी पैरवी नहीं की गई बल्कि मक़सद यह है कि बन्दों को सुबह व शाम हर वक़्त ज़्यादा ज़िक्र करने पर उभारा जाये ताकि वे किसी वक़्त भी ज़िक्रे ख़ुदा से ग़ाफ़िल न रहें। इसी लिये तो उन फ़रिश्तों की तारीफ़ की गई है जो सुबह व शाम ख़ुदा की तस्बीह करने में ग़फ़लत नहीं करते। चुनाँचे फ़रमायाः

إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ.

उन फ़रिश्तों की मिसाल सिर्फ़ इसी लिये बयान की गई ताकि बन्दे ख़ूब ज़्यादा नेक काम करने में फ़रिश्तों की पैरवी करें, जैसा कि हदीस में आया है। और जब अल्लाह ने फ़रिश्तों को सज्दा करने का ज़िक्र फ़रमाया तो ऐसा ही सज्दा हमारे लिये भी मशरू फ़रमाया। हदीस में है कि तुम भी इबादते ख़ुदा के लिये ऐसी ही सफ़ें क्यों नहीं बाँधते जैसी कि फ़रिश्ते अपने रब के सामने सफ़ें बाँधे रहते हैं। और पहली सफ़ वालों को अव्वलियत हासिल है और सफ़ों में सही और सीधी सफ़बन्दी का बहुत ख़्याल रखते हैं। यहाँ जो

Maktaba E Ashraf

सज्दा-ए-तिलावत है वह क़ुरआन का सबसे पहला सज्दा-ए-तिलावत है, जिसका अदा करना तिलावत करने वाले और सुनने वाले सब पर तमाम उलेमा के नज़दीक मशरू है। और इब्ने माजा की हदीस में है कि नबी सल्ल. ने इसको क़ुरआन के सज्दों में से क़रार दिया है।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से सूरः आराफ़ की तफ़सीर ख़त्म हुई।

सूरः अनफ़ाल

सूरः अनफ़ाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये लोग आपसे (ख़ास) ग़नीमतों का हुक्म मालूम करते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि ये ग़नीमतें अल्लाह की हैं और रसूल की हैं, सो तुम अल्लाह से डरो और अपने आपस के ताल्लुक़ात की इस्लाह (भी) करो, और अल्लाह की और उसके रसूल की इताअ़त करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (1)	يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الۡاَنۡفَالِ ؕ قُلِ الۡاَنۡفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوۡلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصۡلِحُوۡا ذَاتَ بَيۡنِكُمۡ ۖ وَاَطِيۡعُوا اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ○

माले ग़नीमत की तक़सीम

तरीक़ा-ए-तक़सीम और उसके बारे में अहकाम वग़ैरह

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि "अनफ़ाल" माले-ग़नीमत को कहते हैं और कहा कि सूरः अनफ़ाल ग़ज़वा-ए-बदर में नाज़िल हुई है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा है कि अनफ़ाल वे ग़नीमत हैं कि वह किसी का हक़ नहीं सिर्फ़ नबी सल्ल. का हक़ है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से जब कोई बात पूछी जाती तो कहते कि न मैं इजाज़त देता हूँ न मना करता हूँ। फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्ल. को मना करने वाला, हुक्म देने वाला और हलाल व हराम की वज़ाहत व व्याख्या करने वाला बनाकर भेजा है। क़ासिम कहते हैं कि इब्ने अ़ब्बास के पास एक आदमी आया और अनफ़ाल के बारे में आपसे सवाल किया, आपने कहा अनफ़ाल यह है कि एक आदमी जंग में दूसरे को मारकर उसका घोड़ा और हथियार माले-ग़नीमत के तौर पर ले ले। उस आदमी ने फिर सवाल किया तो आपने फिर वैसा ही जवाब दिया। फिर उसने सवाल किया तो आपको ग़ुस्सा आ गया और आप उस पर हमला करने के क़रीब हो गये। फिर इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा कि इसकी मिसाल तो उस शख़्स की तरह है जिसको हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने मारा था, यहाँ तक कि ख़ून उसकी ऐड़ी और पाँव पर बहने लगा था, तो उस आदमी ने कहा कि क्या तुम भी वह नहीं हो कि उमर रज़ि. का बदला

अल्लाह ने तुमसे लिया है। इसकी सनद सही हैं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने 'नफ़ल' की तफ़सीर उस माले-ग़नीमत से की है जो जंग में छीना जाये और इमाम (यानी मुसलमानों का हाकिम) बाज़ लोगों को असल ग़नीमत की तक़सीम के बाद कुछ और ज़्यादा दे देता है, और अक्सर फ़ुक़हा ने भी अनफ़ाल का मतलब यही लिया है। लोगों ने नबी सल्ल. से उस पाँचवे हिस्से के बारे में पूछा जो चार हिस्से निकालने के बाद रह जाये तो यह आयत उतरीः

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ........

कि ये लोग आपसे ख़ास ग़नीमतों के बारे में मालूम करते हैं.........।

इब्ने मसऊद और मसरूक़ कहते हैं कि "नफ़ल" का इतलाक़ (हुक्म) जंग के दिन छीने हुए माल पर नहीं, बल्कि जंग की सफ़ें क़ायम करने से पहले होता है। क्योंकि वह तो एक क़िस्म की ज़्यादती है। इब्ने मुबारक कहते हैं- मतलब यह है कि ऐ नबी! तुमसे लोग उस बाँदी, ग़ुलाम, सवारी और सामान वग़ैरह के बारे में पूछते हैं जो बग़ैर जंग के मुश्रिकों से मुसलमानों को मिला हो, सो यह नबी सल्ल. का हक़ है, वह जिस तरह चाहें उसको ख़र्च करें। इससे यह नतीजा निकलता है कि वह माले फ़ै को अनफ़ाल समझते हैं और फ़ै वह माल है जो कुफ़्फ़ार से बग़ैर लड़ाई हासिल हुआ हो। दूसरे लोगों का ख़्याल है कि सराया से जो माल मिल जाये वह अनफ़ाल है। यानी मुसलमान काफ़िरों से लड़ने के लिये गये हों और काफ़िर लड़े बग़ैर अपना माल व दौलत और सामान छोड़कर भाग गये हों और यह माल मुसलमानों के हाथ आ गया हो और नबी सल्ल. उस लश्कर के साथ न हों। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद लश्कर के किसी रिसाले (हिस्से और बटालिन) को उसकी कारगुज़ारी के बदले में या उसकी हौसला-अफ़ज़ाई की ख़ातिर हाकिमे वक़्त उन्हें आ़म तक़सीम से कुछ ज़्यादा दे दे।

सअ़द इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ि. कहते हैं कि जंगे बदर में मेरा भाई उमैर क़त्ल कर दिया गया था तो मैंने भी सईद बिन आ़स को क़त्ल कर दिया और उसकी तलवार ले ली, जिसका नाम ज़ुलक़तीफ़ा था, उसको नबी सल्ल. के पास ले आया, हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया क़ब्ज़ाये हुए माल के ज़ख़ीरे में डाल आओ, मैं डालने जा रहा था, उस वक़्त मेरे दिल की हालत को ख़ुदा ही जानता था। एक तो भाई का क़त्ल, दूसरे जो कुछ मैंने छीना था वह भी ले लिया गया, लेकिन मैं थोड़ी दूर ही गया था कि सूरः अनफ़ाल की ये आयतें उतरीं, रसूलुल्लाह सल्ल. ने मुझे बुलाकर कहा कि जाओ अपना छीना हुआ माल ले लो। सअ़द बिन मालिक से रिवायत है कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह ने आज मुझे मुश्रिकों की हार से तसल्ली बख़्शी है। अब यह तलवार मुझे बख़्श दीजिये, आपने फ़रमाया कि यह तलवार न तुम्हारी है न मेरी, इसको रख दो, मैंने रख दी और वापस हुआ और दिल में ख़्याल कर रहा था कि मुझे नहीं मिली तो कोई ऐसा शख़्स पा लेगा जो मुझ जैसा मुस्तहिक़ नहीं, और जिसने न ऐसी मुसीबत बरदाश्त की जैसी मैंने, अचानक किसी ने मुझको पीछे से आवाज़ दी, हुज़ूर सल्ल. के पास पहुँचा और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या कोई 'वही' नाज़िल हुई है? आपने फ़रमाया तुमने मुझसे तलवार माँगी थी लेकिन वह मेरी थी नहीं कि तुम्हें देता, अब अल्लाह तआ़ला ने वही के ज़रिये मुझे दे दी है, तो लो अब तुम्हें देता हूँ। अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी हैः

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ. قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ......

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

कि ये लोग आपसे ख़ास ग़नीमतों के बारे में मालूम करते हैं तो आप फ़रमा दीजिये कि ये ग़नीमतें अल्लाह की हैं और रसूल की हैं।

सअ़द कहते हैं कि मेरे बारे में चार आयतें उतरी हैं- जंगे बदर में एक तलवार पर मैंने क़ब्ज़ा किया था, मैं नबी सल्ल. के पास आया और कहा यह तलवार मुझे बख़्श दीजिये। आपने फ़रमाया जहाँ से ली है वहीं रख दो, आपने दो बार कहा मैंने फिर दरख़्वास्त की तो आपने फिर यही कहा, चुनाँचे अनफ़ाल वाली आयत उतरी। और मुझसे मुताल्लिक़ दूसरी आयत है:

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ...... الخ

कि हमने इनसान को वसीयत की है कि वह अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे.....।

और तीसरी आयत यह है:

اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ....... الخ

कि बेशक शराब, जुआ और बुत और कुर्आ के तीर ये सब गन्दी चीज़ें और शैतानी आमाल हैं...।

और चौथी वसीयत वाली आयत।

मालिक बिन रबीआ़ कहते हैं कि बदर के दिन इब्ने आ़ईज़ की तलवार मेरे क़ब्ज़े में आई, जिसका नाम हरज़बान था। जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने हुक्म दिया कि अपना अपना लूटा हुआ माल रख दो तो मैंने भी तलवार रख दी और रसूलुल्लाह सल्ल. की आ़दते शरीफ़ा थी कि कोई कुछ माँगे तो सवाल रद्द नहीं करते थे, अरक़म ने यह तलवार देखकर हुज़ूर सल्ल. से माँग ली और आपने दे दी।

इस आयत के नाज़िल होने का दूसरा सबब

अबू उमामा कहते हैं कि अनफ़ाल के बारे में मैंने उबादा से सवाल किया तो उन्होंने कहा हमारे साथ बदर के मुजाहिदीन भी थे और यह आयत उस वक़्त उतरी है जबकि अनफ़ाल के लिये हम में इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) पड़ गया और हम आपस में तेज़ व कड़वी बातें करने लगे तो बात अल्लाह ने हमारे हाथ से ले ली और नबी सल्ल. को दे दी। अब हुज़ूर सल्ल. ने यह माले ग़नीमत मुसलमानों में बराबर-बराबर तक़सीम कर दिया। उबादा बिन सामित कहते हैं कि मैं बदर में आपके साथ शरीक था, अल्लाह तआ़ला ने दुश्मन को शिकस्त दे दी, अब एक जमाअ़त ने तो दुश्मनों का पीछा किया और भागने वालों को क़त्ल किया और एक जमाअ़त लश्कर पर आ पड़ी कि उनका घेराव कर रही थी, और एक जमाअ़त नबी सल्ल. को घेरे में लिये हुए आपकी हिफ़ाज़त कर रही थी कि कहीं दुश्मन कोई तकलीफ़ न पहुँचाये। जब रात हो गई और माले-ग़नीमत तक़सीम करने लगे तो जिन लोगों ने माले-ग़नीमत समेटकर महफ़ूज़ किया था, कहने लगे कि इसके सिर्फ़ हम हक़दार हैं, और जो दुश्मन का पीछा करने गये थे उनका कहना था कि हम दुश्मन की शिकस्त का सबब हैं इसलिये सिर्फ़ हम हक़दार हैं, और जिन्होंने हुज़ूर सल्ल. की हिफ़ाज़त की थी वे कहते थे कि हमको इस बात का सख़्त अन्देशा था कि कहीं हज़रत को तकलीफ़ न पहुँचे, इसलिये हम तो एक बहुत ही अहम काम में लगे हुए थे, चुनाँचे यह आयत उतरी कि अनफ़ाल तो अल्लाह और अल्लाह के रसूल का है। पस अल्लाह से डरो और आपस में सुलह क़ायम रखो। अब आपने मुसलमानों में इसकी तक़सीम कर दी और नबी सल्ल. की आ़दत थी कि जब दुश्मन पर ग़ालिब होते तो उसी रोज़ वहीं चौथाई माले-ग़नीमत तक़सीम कर देते और जब वापस हो चुकते तो तिहाई की तक़सीम कर

देते और अपने लिये उसको नामुनासिब समझते।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जंगे बदर के रोज़ हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि जो ऐसी-ऐसी कारगुज़ारियाँ दिखायेगा उसको ऐसा-ऐसा इनाम मिलेगा। अब नौजवान अपनी कारगुज़ारी दिखाने की कोशिश में लग गये और बूढ़ों ने मोर्चे और झंडे संभाल लिये और जब माले-ग़नीमत आया तो जिसके लिये जो वादा किया गया था वह लेने के लिये आया। बूढ़ों ने कहा तुमको हम पर वरीयता नहीं हो सकती, हम तुम्हारे पुश्त-पनाह बने (यानी पीछा थामे) हुए थे, अगर तुम्हें शिकस्त होती तो हमारे ही पास तुमको पनाह मिलती। बात बढ़ गई, विवाद हो गया, अनफ़ाल वाली आयत उतरी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि बदर के रोज़ हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि जिसने किसी को क़त्ल किया उसको क़त्ल होने वाले के माल में से यह-यह इनाम, और जो किसी को क़ैद कर लाये उसको यह इनाम। चुनाँचे अबू युसर दो क़ैदी लाये और कहा या रसूलल्लाह! आपने वादा फ़रमाया था तो सअ़द बिन उबादा बोल उठे कि या रसूलल्लाह! अगर आपने इस तरह दे दिया तो आपके दूसरे सहाबा के लिये कुछ न बचेगा, हम जो मैदाने जंग में रुके रहे तो इसका सबब कुछ यह नहीं था कि हमको माल का या मुआ़वज़े का कुछ लालच था, और न यह कि हम दुश्मन से घबराते थे, हम तो यहाँ सिर्फ़ इसलिये ठहरे रहे कि कहीं आप पर पीछे से हमला न हो जाये। मक़ामी हिफ़ाज़त की भी सख़्त ज़रूरत थी। ग़र्ज़ यह कि कुछ झगड़ा हो गया और यह आयत नाज़िल हुई। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

وَاعْلَمُوْآ اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ.

यानी जो माले ग़नीमत तुमको मिला है उसमें पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का है।

इमाम अबू उबैदुल्लाह ने अपनी किताब "अल-अमवालुश्शरअ़िया" में लिखा है कि अनफ़ाल माले-ग़नीमत को कहते हैं और हर वह माल जो मुसलमानों से लड़ने वालों से मुसलमानों को मिले। अनफ़ाल पर सबसे पहले तो रसूल का हक़ है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन में फ़रमाया है, आपने बदर के दिन में इसकी तक़सीम अल्लाह की हिदायत के मुताबिक़ ख़ुम्स (पाँचवाँ हिस्सा) निकाले बग़ैर की थी। जैसा कि हज़रत सअ़द की हदीस में हम ज़िक्र कर चुके हैं, फिर उसके बाद ख़ुम्स वाली आयत नाज़िल हुई तो पहली आयत मन्सूख़ हो गई। इब्ने ज़ैद का बयान है कि मन्सूख़ नहीं हुई बल्कि वह भी क़ायम है। अबू उबैदुल्लाह कहते हैं कि इस बारे में और भी हदीसें हैं।

'अनफ़ाल' इकट्ठा किये हुए माले ग़नीमत को कहते हैं। लेकिन उसमें से ख़ुम्स (पाँचवाँ हिस्सा) नबी सल्ल. के घर वालों के लिये मख़्सूस है जैसा कि क़ुरआन में है और हदीसों में है "अनफ़ाल" अ़रब के कलाम में हर वह एहसान है जो मोहसिन (एहसान करने वाले) ने महज़ मेहरबानी के तौर पर किया हो और उस पर एहसान करना वाजिब न हो। यही है वह माले ग़नीमत जिसको अल्लाह ने मोमिनों के लिये हलाल कर दिया है, और यह वह चीज़ है कि हम मुसलमान ही इसके मख़्सूस हैं और मुसलमानों से पहले दूसरी उम्मतों पर माले ग़नीमत हलाल नहीं था। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया कि मुझे ख़ुम्स (पाँचवें हिस्से) का हक़दार बनाया गया है जबकि मुझसे पहले किसी को ख़ुम्स नहीं दिया गया था।

अबू उबैदा कहते हैं कि इमाम (मुसलमानों का हाकिम व सरदार) अगर फ़ौज के अफ़राद को कोई इनाम दे जो उनके निर्धारित हिस्से के अ़लावा हो तो उसको 'नफ़ल' या 'अनफ़ाल' कहते हैं, और यह उसकी कारगुज़ारियों और दुश्मन पर ज़ोरदार हमले का लिहाज़ करते हुए होता है। यह नफ़ल जो इमाम की

Maktaba Ashraf

तरफ़ से उसकी अच्छी कारगुज़ारी के एतिराफ़ के तौर पर मिलता है, चार तरीक़ों पर होता है, हर तरीक़ा अपनी जगह दूसरे तरीक़े से अलग है। एक तो मक़्तूल (क़त्ल किये जाने वाले) का लूटा हुआ माल व सामान, उसमें से कोई पाँचवाँ हिस्सा नहीं निकाला जाता। दूसरा वह नफ़्ल जो पाँचवाँ हिस्सा अलग करने के बाद दिया जाता है, जैसे इमाम ने कोई छोटा सा लश्कर दुश्मन के मुक़ाबले में भेजा और यह ग़नीमत का माल लेकर लौटा तो इमाम उसमें से उस लश्कर को चौथाई या तिहाई जैसा बेहतर समझे उसके मुताबिक़ तक़सीम कर दे। तीसरा यह तरीक़ा जो ख़ुम्स निकालकर बाक़ी तक़सीम किया जाने वाला है। इसमें से अपने राय और कारगुज़ारी के मुताबिक़ जिसको जितना मुनासिब समझे दे और बाक़ी तक़सीम कर दे। चौथी सूरत यह कि सारी ग़नीमत में से नफ़्ल दे, इससे पहले कि ख़ुम्स निकाले और यह पानी पिलाने वालों, चरवाहों, साईसों (घोड़े की देखभाल करने वालों) और दूसरे मज़दूरों का हक़ होता है। ग़र्ज़ यह कि कई सूरतों से इसकी तक़सीम होती है।

इमाम शाफ़ई रह. कहते हैं कि माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा निकालने से पहले मुजाहिदों को मक़्तूल लोगों का जो सामान और माल व मता दिया जाता है, वह अनफ़ाल में दाख़िल है। दूसरी वजह यह है कि नबी करीम सल्ल. का वह हिस्सा जो पाँचवें हिस्से में से पाँचवाँ था, उसमें से आप जिसे चाहें और जितना चाहें अ़ता फ़रमायें, यह भी नफ़्ल है। पस इमाम को चाहिये कि दुश्मनों की अधिकता और मुसलमानों की कम संख्या और इस क़िस्म के ज़रूरी मौक़ों का लिहाज़ रखते हुए सुन्नत की पैरवी करे। ऐसी मस्लेहत सामने न हो तो नफ़्ल निकालना ज़रूरी नहीं। तीसरी वजह यह है कि इमाम एक जमाअ़त काफ़िरों से लड़ने के लिये भेजता है और उनसे कह देता है कि जो शख़्स जो कुछ हासिल करे उसमें से पाँचवाँ हिस्सा तो अलग कर दे, और बाक़ी ले ले, और यह बात लड़ाई पर जाने से पहले ही आपसी रज़ामन्दी से तय पा चुकी होती है, लेकिन उनके इस बयान में जो कहा गया है कि बदर की ग़नीमत का पाँचवाँ हिस्सा नहीं निकाला गया, इसमें कलाम की गुंजाईश है। हज़रत अ़ली रज़ि. ने फ़रमाया था कि दो ऊँटनियाँ वे हैं जो उन्हें बदर के दिन पाँचवे हिस्से में से मिली थीं। मैंने इसका पूरा बयान किताबुस्सीरत में कर दिया है।

अल्लाह तआ़ला का क़ौल है:

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ.....

यानी अपने मामलों में अल्लाह से डरो और आपस में पूरी तरह सुलह के साथ रहो। न एक दूसरे पर ज़ुल्म करो, न दुश्मन बनो, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें जो हिदायत और इल्म दिया है क्या वह यह इस माल से बेहतर नहीं जिसके लिये तुम लड़ रहे हो? और अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअ़त करो, नबी जो तक़सीम करते हैं वह ख़ुदा के इरादे के अनुसार ही करते हैं, उनकी तक़सीम अ़दल व इन्साफ़ पर आधारित होती है।

सुद्दी कहते हैं कि 'आपस में पूरी तरह सुलह के साथ रहो' के मायने हैं कि आपस में लड़ो झगड़ो नहीं, और गाली-गलौज न करो।

हज़रत अनस रज़ि. कहते हैं कि हमने एक बार नबी सल्ल. को देखा कि आप मुस्कुरा रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि. ने पूछा या रसूलल्लाह! आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं? फ़रमाया कि मेरे दो उम्मती ख़ुदा के सामने घुटने टेककर खड़े हो गये हैं, एक ख़ुदा से कहता है कि या रब! इसने मुझ पर ज़ुल्म किया है, मैं बदला

चाहता हूँ। अल्लाह पाक उससे फ़रमाता है कि अपने ज़ुल्म का बदला अदा करो। ज़ालिम जवाब देता है या रब! अब मेरी कोई नेकी बाक़ी नहीं रही कि ज़ुल्म के बदले में इसे दे दूँ। तो वह मज़लूम कहता है कि ऐ ख़ुदा! मेरे गुनाहों का बोझ इस पर लाद दे, यह कहते हुए हुज़ूर सल्ल. रोने लगे और फ़रमाने लगे कि वह बड़ा ही सख़्त दिन होगा, लोग इस बात के ज़रूरतमन्द होंगे कि अपने गुनाहों का बोझ किसी और के सर धर दें। अब अल्लाह पाक बदला लेने के इच्छुक से फ़रमायेगा कि नज़र उठाकर जन्नत की तरफ़ देख, वह सर उठायेगा, जन्नत की तरफ़ देखेगा और अ़र्ज़ करेगा या रब! इसमें तो चाँदी और सोने के महल हैं, मोतियों के बने हुए हैं। या रब! ये महल किसी नबी किसी सिद्दीक़ और शहीद के हैं? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि जो इसकी क़ीमत अदा करता है उसको दे दिये जाते हैं। वह कहेगा या रब! कौन इसकी क़ीमत अदा कर सकता है? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तू इसकी क़ीमत अदा कर सकता है। अब वह अ़र्ज़ करेगा या रब! किस तरह? अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमायेगा वह इस तरह कि तू अपने भाई को माफ़ कर दे, वह कहेगा या रब! मैंने माफ़ किया। अल्लाह पाक फ़रमायेगा अब तुम दोनों एक दूसरे का हाथ थामे जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

इसके बाद आपने फ़रमाया कि "ख़ुदा से डरो आपस में सुलह क़ायम रखो, क्योंकि क़ियामत के दिन अल्लाह पाक भी मोमिनों के दरमियान आपस में सुलह कराने वाला है।"

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ○ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ○ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ○	(क्योंकि) बस ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र आता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे (आयतें) उनके ईमान को और ज़्यादा (मज़बूत) कर देती हैं, और वे लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2) (और) जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। (3) (बस) सच्चे ईमान वाले ये लोग हैं। उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और (उनके लिए) मग़फ़िरत है और इज़्ज़त की रोज़ी। (4)

नर्म-दिली ईमान की निशानी है

मुनाफ़िक़ लोग जब नमाज़ अदा करते हुए दिखाई देते हैं तो क़ुरआन की आयतें ज़र्रा भर उनके दिल पर असर नहीं करतीं, न अल्लाह की आयतों पर ईमान लाते हैं, न ख़ुदा पर भरोसा करते हैं, न नमाज़ पढ़ते हैं जबकि घरों में होते हैं, न अपने माल की ज़कात अदा करते हैं। अल्लाह पाक ख़बर देता है कि मोमिन ऐसे नहीं होते, मोमिनों का वस्फ़ इस आयत में यूँ बयान फ़रमाता है कि जब वे क़ुरआन पढ़ते हैं तो ख़ुदा के ख़ौफ़ से उनके दिल काँप उठते हैं। जब आयतें उनके सामने तिलावत की जाती हैं तो तस्दीक़ करने के सबब उनका ईमान और बढ़ जाता है और वे ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे पर भरोसा करते ही नहीं। मोमिनों

Maktab E Ashraf

की असली पहचान यही है कि किसी मामले में ख़ुदा का नाम आ गया तो उनके दिल काँप उठते हैं, वे उसके हुक्म की तामील करते हैं और उसकी मना की हुई बातों से बाज़ रहते हैं। जैसा कि फ़रमाया "मोमिनों से अगर कोई गुनाह का काम सरज़द हो भी गया या वे हदों से बाहर निकल भी गये तो फ़ौरन उन्हें ख़ुदा का ध्यान आ जाता है, वे अपने गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करने लगते हैं और ख़ुदा के सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला ही कौन है? ग़लती से गुनाह हो गया तो बार-बार उस पर जमे नहीं रहते, कि बार-बार उसको करते रहें, क्योंकि वे समझदार लोग हैं।

और फ़रमाया कि "जिसको ख़ुदा का सामना करने का ख़ौफ़ लगा है और नफ़्स की इच्छायें नाजायज़ तौर पर पूरी करने से वह बाज़ रहा तो जन्नत उसी का हक़ है" चुनाँचे सुद्दी मर्दे मोमिन की तशरीह यूँ करते हैं कि वह एक ऐसा शख़्स है जो नाफ़रमानी और गुनाह का इरादा करता है और उससे कहा जाता है कि ख़ुदा से डरो तो उसका दिल काँप उठता है। उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से धड़कने लगते हैं और तन-बदन में एक जलन और लहर सी हो जाती है। यही तो वजह है रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब यह कैफ़ियत तारी हो जाये तो बन्दे को चाहिये कि उस वक़्त ख़ुदा से अपने मक़सद की दुआ़ माँगने लगे, क्योंकि ऐसे वक़्त की दुआ़ क़बूल होती है। इरशाद होता है कि "क़ुरआन सुनकर उनका ईमान बढ़ जाता है" जैसा कि फ़रमाया "जब कोई सूरः नाज़िल होती है तो कोई कहता है कि इस आयत से तुम में से किसका ईमान बढ़ गया" सो बात यह है कि उसका ईमान बढ़ जाता है जो पहले ही से मोमिन है, और जन्नत की ख़ुशख़बरी उसी के हक़ में है। इमाम बुख़ारी रह. और दूसरे अईम्मा ने इसी तरह की आयतों से यह दलील ली है कि ईमान में ज़्यादती और कमी हो सकती है, जैसा कि जमहूर अईम्मा का मज़हब है, बल्कि कहा गया है कि बहुत सारे इमाम हज़रात का इसी पर इजमा (एक राय और सहमति) है। जैसे इमाम शाफ़ई, अहमद बिन हंबल और अबू उबैदा। इसको हमने शरह बुख़ारी में बयान किया है।

आगे अल्लाह का इरशाद हैः

وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ.

यानी उसके सिवा किसी से उम्मीद ही नहीं रखते।

अपनी पनाह उसको क़रार देते हैं, कुछ माँगते हैं तो उसी से माँगते हैं, और हर बात में उसी की तरफ़ झुकते हैं। जानते हैं कि वह जो चाहेगा वह होगा, और जो न चाहेगा वह न होगा।

वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है। हुक्म सिर्फ़ उसी का चलता है, उसके हुक्म के बाद किसी का हुक्म नहीं। वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। सईद बिन जुबैर कहते हैं कि तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) ईमान का हिस्सा है।

اَلَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ.

मोमिनों के एतिक़ाद का ज़िक्र करने के बाद उनके आमाल के बारे में जानकारी दी जा रही है कि वे नमाज़ पढ़ते हैं और लोगों को देते दिलाते रहते हैं। ये दोनों आमाल ऐसे ज़बरदस्त हैं कि तमाम अच्छे आमाल को अपने अन्दर समेटे हुए हैं।

'नमाज़ का क़ायम करना' अल्लाह के हुक़ूक़ में से है। नमाज़ क़ायम करने का मतलब है नमाज़ को अपने वक़्तों पर पाबन्दी के साथ अदा करना, और यह कि वुज़ू में अच्छी तरह मुँह, हाथ, पाँव धोये गये

Maktab E Ashraf

हों। रुकूअ़ और सज्दे, नमाज़ के अरकान को सही तरीक़े के साथ अदा किया गया हो, क़ुरआन की तिलावत उसके आदाब के साथ हो, तशह्हुद (अत्तहिय्यात) हो, नबी सल्ल. पर दुरूद हो। यह है नमाज़ का क़ायम करना, जिसको बताया गया कि वे 'नमाज़ को क़ायम करते हैं'।

और 'युन्फ़िक़ून' का मतलब यह है कि जो कुछ अल्लाह ने दिया है, कि अगर ज़कात के क़ाबिल हों तो ज़कात दें, और जो कुछ भी है लोगों को देते दिलाते हैं। बन्दों के वाजिब व मुस्तहब माली हुक़ूक़ अदा करते हैं और अल्लाह तआ़ला ने दिया है तो सबकी मदद करें, क्योंकि सब लोग ख़ुदा के बन्दे हैं, ख़ुदा को वही बन्दा सबसे ज़्यादा प्यारा है जो मख़्लूक़ को सबसे ज़्यादा नफ़ा पहुँचाने वाला है। तुम्हारे माल ख़ुदा की तरफ़ से तुम्हारे पास गोया बतौर अमानत हैं, और बहुत जल्द तुम्हारा माल तुमसे जुदा (अलग) होने वाला है। इसलिये उससे मुहब्बत नहीं होनी चाहिये। आगे फ़रमायाः

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا.

यानी जिनके अन्दर ये सिफ़ात पाई जायें सही मायनों में वही ईमान वाले हैं।

हज़रत हारिस बिन मालिक नबी सल्ल. के पास आये तो आपने फ़रमाया कि हारिस! सुबह कैसी गुज़री? हारिस ने कहा एक असली मोमिन की हैसियत से। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया, ख़ूब सोचकर कहो, हर चीज़ की हक़ीक़त हुआ करती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है बताओ तो सही? हज़रत हारिस ने कहा कि दुनिया की मुहब्बत से मैंने मुँह फेर लिया है, रातों को जागकर इबादत करता हूँ दिन को रोज़े के सबब प्यासा रहता हूँ और अपने को यूँ पाता हूँ गोया मेरे सामने रब तआ़ला का अ़र्श खुला हुआ है और गोया मैं जन्नत वालों को आपस में मुलाक़ातें करता देखता हूँ और दोज़ख़ वालों को बला व मुसीबतों में गिरफ़्तार देख रहा हूँ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ ऐ हारिस! तुम ईमान की हक़ीक़त तक पहुँच चुके हो। इस पर क़ायम रहने की कोशिश करो। यह आपने तीन बार फ़रमाया।

आगे फ़रमाता हैः

لَهُمْ دَرَجَٰتٌ عِندَ رَبِّهِمْ.

यानी जन्नत में उनको बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे। जैसा कि फ़रमाया अल्लाह तआ़ला के पास उनके बड़े दर्जे हैं। और जो कुछ वे अ़मल कर रहे हैं अल्लाह उससे वाक़िफ़ है, अल्लाह पाक उनके गुनाहों को माफ़ कर देगा और उनकी नेकियों को क़बूल फ़रमायेगा। जन्नत वालों में से बाज़ के दर्जे बाज़ से ऊँचे हैं, ऊपर वाले ऊपर से नीचे के दर्जे वालों को देखेंगे और फ़ख़्र नहीं करेंगे, नीचे वाले ऊपर वालों को देखकर हसद (जलना) नहीं करेंगे। मुस्लिम और बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया "अ़िल्लिय्यीन" (ऊँचे दर्जे) वालों को नीचे वाले इस तरह देखेंगे जिस तरह कि आसमान के किनारों पर तुम सितारों को देखते हो। लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह! क्या ये अम्बिया के मनाज़िल हैं? क्या ये किसी और को नहीं मिलेंगे? आपने फ़रमाया, क्यों नहीं! ख़ुदा की क़सम वे लोग जो अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों की तस्दीक़ की वे भी इसके मुस्तहिक़ हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि जन्नत वाले ऊपर की जन्नत वालों को ऐसे देखेंगे जैसे आसमान

Muftab E Ashraf

के किनारों पर सितारे हैं, और अबू बक्र व उमर उन्हीं में से हैं, इन्हें भी यह इज़्ज़त मिलेगी।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ؕ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ	जैसा कि आपके रब ने आपके घर (और बस्ती) से मस्लेहत के साथ आपको (बदर की तरफ़) रवाना किया, और मुसलमानों की एक जमाअ़त उसको नागवार समझती थी। (5) (और) वे उस मस्लेहत (के काम) में इसके बाद कि वह ज़ाहिर हो गया था, (अपने बचाव के लिए) आपसे (मश्विरे के तौर पर) इस तरह झगड़ रहे थे कि जैसे कोई उनको मौत की तरफ़ हाँके लिए जाता है और वे देख रहे हैं। (6) और (तुम लोग उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआ़ला तुमसे उन दो जमाअ़तों में से एक का वायदा करते थे कि वह तुम्हारे हाथ आ जाएगी, और तुम इस तमन्ना में थे कि हथियारों से ख़ाली जमाअ़त (यानी क़ाफ़िला) तुम्हारे हाथ आ जाये, और अल्लाह तआ़ला को यह मन्ज़ूर था कि अपने अहकाम से हक़ का हक़ होना (अ़मली तौर पर) साबित कर दे, और उन काफ़िरों की बुनियाद (और ताक़त) को काट दे। (7) ताकि हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना (अ़मली तौर पर) साबित कर दे, अगरचे ये मुजरिम लोग ना-पसन्द ही करें। (8)

बदर की लड़ाई, मोमिनों पर नाज़ुक हालात का असर और रहमते इलाही की मदद

मुफ़स्सिरीन (क़ुरआन के व्याख्यापकों) ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया है कि 'कमा अख़्र-ज-क' में 'कमा' (जैसा कि) के आने का क्या सबब है। बाज़ ने कहा है कि इस आयत में तशबीह दी गई है, मोमिनों की आपसी सुलह के साथ उनके अपने रब से डरने और रसूल की इताअ़त के बारे में। चुनाँचे बात का ढंग यूँ होता है कि जैसा कि तुमने ग़नीमतों के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद और आपस में विवाद) किया था और लड़ पड़े थे, और अल्लाह ने तुम्हारा फ़ैसला किया था, और तुम सबसे छीनकर तक़सीम का हक़ रसूल को दे दिया था, और रसूल ने इन्साफ़ व बराबरी के साथ तक़सीम कर दी थी, और यह बात तुम्हारी पूरी मस्लेहत की ख़ातिर थी, इसी तरह इस मौक़े पर जब दुश्मनों से लड़ने के लिये तुमको मदीने से निकलना पड़ा तो उस बड़े लश्कर से लड़ना तुम्हें नापसन्द हुआ। यह बड़ा लश्कर वह था जो अपने हम-मज़हब काफ़िरों की

मदद और शाम (सीरिया) को गये हुए माले तिजारत के क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के लिये मक्का से निकल आये थे और इस जिहाद को नापसन्द करने का यह नतीजा निकला कि अल्लाह ने उसी जंग से तुम्हें दोचार किया और पहले से बग़ैर किसी जंग की तैयारी के दुश्मन से तुम्हें भिड़ा दिया और नतीजे में तुम्हें मदद व हिदायत बख़्शी। जैसा कि फ़रमाया क़िताल (लड़ाई) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है और यह तुम्हें नापसन्द है, लेकिन यह बहुत मुम्किन है कि तुम किसी बात को नागवार समझो और असल तुम्हारी भलाई उसी में हो, और तुम किसी बात को पसन्द करो और दर हक़ीक़त नतीजे में वह तुम्हारे लिये नुक़सानदेह साबित हो। तुम्हारी फ़लाह का इल्म तुम्हारे ख़ुदा को है, तुमको नहीं।

बाज़ उलेमा ने इस तशबीह (मिसाल देने) के यह मायने बताये हैं कि जिस तरह तुम्हारे ख़ुदा ने हक़ तौर पर तुमको मदीने से निकलने में कामयाब किया है, हालाँकि बाज़ मोमिन हज़रात इस निकलने से नाराज़ थे, लेकिन उन्हें आना पड़ा, इसी तरह वे जंग से बाज़ रहना चाहते हैं और तुमसे मतभेद रखते हैं, हालाँकि रसूल की राय की हक़्क़ानियत (सही होना) उन पर ज़ाहिर हो चुकी थी।

मुजाहिद रह. कहते हैं कि यह मायने हैं कि जिस तरह मदीने से मजबूरन तुम लोग निकले, उसी तरह हक़ बात में रसूल से झगड़ते हैं। सुद्दी रह. कहते हैं कि यह आयत बदर की लड़ाई में निकलने के बारे में नाज़िल हुई।

बाज़ कहते हैं कि इसका यह मतलब है कि ऐ नबी! ये मोमिन लोग तुमसे लड़ने की नीयत से अनफ़ाल के बारे में सवालात कर रहे हैं, जैसा कि बदर के रोज़ भी इन्होंने तुमसे बहस की थी, और यह कहा था कि आप तो हमें क़ाफ़िले से निपटने के लिये लेकर निकले थे, हमको गुमान भी न था कि हमें जंग करनी पड़ेगी, और न हम जंग के लिये तैयार होकर घर से निकले थे।

मैं कहता हूँ कि नबी सल्ल. मदीना से अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले का रास्ता रोकने के लिये निकले थे क्योंकि आपको मालूम था कि यह क़ाफ़िला मुल्के शाम से क़ुरैश के लिये बहुत सारा माल लेकर रवाना हो चुका है। चुनाँचे नबी सल्ल. ने उनको तैयार किया और तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा आदमी लेकर निकल खड़े हुए और चश्मा-ए-बदर की राह पर साहिल की तरफ़ चल पड़े। अबू सुफ़ियान को हुज़ूर सल्ल. के हमले की ख़बर हो चुकी थी, जो उस क़ाफ़िले का सरदार था। उसने ज़मज़म बिन उमर को मक्का भेजकर मक्का वालों को मदीने वालों के इरादे से आगाह किया, मक्का वाले तक़रीबन एक हज़ार आदमी लेकर निकले। अबू सुफ़ियान क़ाफ़िले को सैफ़ दरिया की तरफ़ से लेकर निकल गया और साफ़ बच गया। अब मक्का का यह एक हज़ारी लश्कर आगे बढ़ता रहा यहाँ तक कि चश्मा-ए-बदर के पास आकर पड़ाव डाला। अब मुसलमान और काफ़िर बग़ैर इसके कि पहले से कोई जंग की क़रारदाद हो, आपस में गुथ गये, क्योंकि अल्लाह पाक मुसलमानों का बोल-बाला करना चाहता था और हक़ व बातिल के बीच एक फ़ैसला कर देने वाली जंग ख़ुदा को मन्ज़ूर थी, जैसा कि यह बयान आगे आने वाला है।

ग़र्ज़ यह कि रसूलुल्लाह सल्ल. को जब यह ख़बर मिली कि मक्का से एक बड़ा लश्कर उनसे लड़ने के लिये निकला है तो अल्लाह तआ़ला ने आपको वही भेजी कि दो में से एक चीज़ तुम्हें मिलेगी, या तो क़ाफ़िले को लूट लो या उस लश्कर से लड़ बैठो। दोनों नहीं मिलेंगी। किसी एक को इख़्तियार कर लो और उसमें कामयाब हो जाओ। मुसलमानों में से अक्सर की यह राय थी कि क़ाफ़िले को लूट लो और चल दो बग़ैर जंग के बहुत सारा माल मिल जायेगा, जिसको अल्लाह पाक ने ख़ुद यूँ बयान फ़रमाया है कि "तुम चाहते हो कि दोनों में से वह सूरत पसन्द करें जो दबदबे और शान वाली न हो, यानी क़ाफ़िले से निपट लें।

Maktab e Ashraf

और अल्लाह का तो इरादा यह था कि हक़ ज़ाहिर होकर रहे और मक्का के काफ़िरों का ज़ोर टूटे और उनकी ताक़त ख़त्म हो जाये।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि. कहते हैं कि हम मदीने में थे और नबी पाक ने यह फ़रमाया था- मुझे ख़बर मिली है कि अबू सुफ़ियान क़ाफ़िला लेकर आ रहा है। तुम लोग क्या कहते हो? उस क़ाफ़िले की राह रोकने के लिये हम निकल पड़ें, मुम्किन है कि तुम लोगों को बहुत सारा माल व दौलत मिल जाये। हमने अ़र्ज़ किया चलना चाहिये। चुनाँचे हम सब निकले और एक या दो रोज़ चलते रहे, अब आपने फ़रमाया कि अच्छा उन काफ़िरों से जंग करने के बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्हें इस बात की ख़बर हुई है कि तुम क़ाफ़िले के ख़्याल से निकल चुके हो। मुसलमानों ने कहा वल्लाह हम दुश्मन के इतने लश्कर से लड़ने की ताक़त नहीं रखते, हम जो निकले हैं तो सिर्फ़ क़ाफ़िले को लूटने के ख़्याल से चल पड़े हैं। आपने दोबारा यही सवाल किया, फिर हम लोगों ने यही जवाब दिया, अब मिक़दाद बिन अ़मर ने कहा या रसूलल्लाह! हम इस मौक़े पर ऐसा न कहेंगे जैसा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत ने उनसे कहा था कि ऐ मूसा! तुम और तुम्हारा रब दोनों जाओ और दुश्मन से लड़ो, हम यहीं बैठे तुम्हारी वापसी के मुन्तज़िर रहते हैं। हम अन्सारियों की जमाअ़त ने तमन्ना की और कहा अगर हम भी वही कहते जो मिक़दाद ने कहा तो यह बात क़ाफ़िले का बहुत ज़्यादा माल मिल जाने से भी हमें ज़्यादा पसन्द होती। चुनाँचे यह आयत उतरीः

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ م بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ.

यानी जैसा कि आपके रब ने आपके घर से मस्लेहत के साथ आपको रवाना किया और मुसलमानों की एक जमाअ़त इसको अपने ऊपर भारी और नागवार समझती थी।

अबू वक़्क़ास लैसी बयान करते हैं कि नबी सल्ल. बदर की तरफ़ सबको लेकर निकले और मक़ामे रौहा में पहुँचकर लोगों के सामने ख़ुतबा दिया और कहा तुम लोगों की क्या राय है? अबू बक्र रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! हमें इल्म हो चुका है कि ये कुफ़्फ़ार यहाँ तक पहुँच गये हैं। फिर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया तुम लोगों की क्या राय है? अबकी बार उमर रज़ि. ने भी अबू बक्र रज़ि. की तरह जवाब दिया। आपने फिर एक बार और यह सवाल किया तो सअ़द बिन मुआ़ज़ रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! आपकी मुराद हमसे है? ख़ुदा की क़सम न मैं कभी 'बरकुल-ग़िमाद' (एक स्थान का नाम है) ही गया हूँ न मुझे उस रास्ते का इल्म है, लेकिन अगर आप यमन से हब्श के मुल्क 'बरकुल-ग़िमाद' तक भी जायें तो भी हम आपके साथ चलेंगे और उम्मते मूसा की तरह न कहेंगे कि तुम और तुम्हारा रब जाकर लड़ो, हम यहीं से तुम्हारा साथ देंगे। मुम्किन है कि आप निकलने के वक़्त किसी और ग़र्ज़ से निकले हों, फिर अल्लाह तआ़ला ने आपके लिये कोई दूसरी सूरत पैदा कर दी हो, तो आप जो सूरत चाहें इख़्तियार करें, जो आपका साथ देना चाहता है दे और जो आपसे टूटना चाहता है टूट जाये, जो चाहे आपका मुख़ालिफ़ बन जाये और जो चाहे आपसे सुलह करके रहे, हमारा माल जो कुछ है आप सब ले सकते हैं। सअ़द रज़ि. के इसी क़ौल की बिना पर यह आयत उतरी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि जब नबी सल्ल. ने जंगे बदर के लिये मश्विरा किया और फिर क़ुरैश के लश्कर से जंग का हुक्म दिया तो मुसलमानों को यह जंग नापसन्द थी, इसी लिये यह आयत उतरी थी किः

اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ.

Maktaba Ashraf

यानी बाज़ मोमिनों की यह मर्ज़ी नहीं है और हक़ बात ज़ाहिर हो जाने के बाद भी ये तुमसे बहस करते हैं। वे ऐसा समझ रहे हैं कि जंग करेंगे तो गोया मौत की तरफ़ खींचे जा रहे हैं। मुजाहिद रह. कहते हैं कि 'फ़िल-हक़्क़ि'' से मुराद ''फ़िल-क़िताल'' है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि 'लकारिहून'' से मुश्रिकों के साथ ही जंग की नागवारी मुराद है। सुद्दी कहते हैं कि 'ज़ाहिर हो जाने के बाद' का मतलब है कि यह ज़ाहिर हो जाने के बाद कि तुम हुक्मे ख़ुदा के सिवा किसी बात का इक़्दाम (पहल और शुरूआत) नहीं करते, फिर भी रसूल की राय के ख़िलाफ़ करते हो। इब्ने ज़ैद इस आयतः

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَاتَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ.

के बारे में कहते हैं कि इससे मुराद मुश्रिक लोग हैं, यानी ये मुश्रिक हक़ बात के बारे में झगड़ते और बहस करते हैं, गोया कि वे मौत की तरफ़ खींचे जा रहे हैं, जबकि उन्हें इस्लाम की दावत दी जा रही हो, और यह कि मोमिनों के अन्दर ऐसी बुरी सिफ़त नहीं हो सकती, और यह सिफ़त कुफ़्र वालों ही की हो सकती है। इब्ने जरीर का इस पर यह एतिराज़ है कि इब्ने ज़ैद का यह क़ौल कोई वक़्अ़त नहीं रखता क्योंकि अलफ़ाज़ 'युजादिलून-क फ़िल-हक़्क़ि' से पहले की इबारत ईमान वालों से मुताल्लिक़ है, और जो अलफ़ाज़ उसके बाद हैं ज़ाहिर है कि वह इसी की ख़बर होगी। सच तो यह है कि इब्ने अ़ब्बास ही का क़ौल दुरुस्त है कि इससे मुराद मोमिन ही हैं। इब्ने जरीर ने इसी क़ौल (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वाले) की ताईद की है, यही हक़ है और आगे-पीछे के मज़मून से इसी की ताईद होती है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है जब नबी सल्ल. कामयाबी के साथ जंगे बदर से फ़ारिग़ हुए तो आपसे कहा गया कि अब माल भरे क़ाफ़िले से भी निपट लें, अब कोई रुकावट बाक़ी नहीं रही, तो अ़ब्बास रज़ि. जो क़ैदी की हैसियत से जंग के बन्धकों में थे, बोल उठे कि हरगिज़ यह मुनासिब नहीं, क्योंकि या रसूलल्लाह! अल्लाह पाक ने आपसे दो चीज़ों में से एक का वादा फ़रमाया है चुनाँचे एक चीज़ आपको हासिल हो चुकी, अब दूसरी चीज़ भी हासिल करने का कोई हक़ नहीं है। इसकी सनद उम्दा है। इस क़ौलः

تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ.

के मायने यह हैं कि तुम यह चाहते थे कि वह चीज़ हासिल करें जिसमें न कोई रुकावट है न जंग है, यानी अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले को लूटना, हाँलाकि अल्लाह तआ़ला तो यह चाहता था कि तुमको एक ऐसी जमाअ़त से भिड़ा दे जो शान व दबदबे वाली हो और उससे जंग हो ताकि अल्लाह तआ़ला तुमको उन पर कामयाबी बख़्शे और ख़ुदा के दीन का ग़लबा हो, इस्लाम का कलिमा बुलन्द हो, कामों के अन्जाम और परिणाम से अल्लाह के सिवा और कोई वाक़िफ़ नहीं। बेहतरीन तदबीर का मालिक वही है, अगरचे लोग उसके ख़िलाफ़ ही क्यों न चाहते हों, जैसा कि फ़रमाया- क़िताल (जंग करना) तुम पर फ़र्ज़ है चाहे वह तुम्हें नागवार ही हो। बहुत मुम्किन है कि एक बात नापसन्द हो और ख़ैर उसी के अन्दर हो, और एक बात अच्छी लगे और बुराई उसी के अन्दर हो। निम्नलिखित हदीस भी जंगे बदर ही से संबन्धित है कि जब नबी सल्ल. ने शाम (मुल्क सीरिया) से अबू सुफ़ियान के चलने की ख़बर पाई तो मुसलमानों को बुलाया और कहा कि क़ुरैश के इस क़ाफ़िले के साथ माल दौलत बहुत है, इस पर धावा बोलो, हो सकता है कि कुफ़्फ़ार का माले ग़नीमत अल्लाह तुम्हें दे दे। बाज़ के पास हथियार थे और बाज़ के पास नहीं, और न उन्हें गुमान

Mahtab E Ashraf

था कि नबी सल्ल. जंग करेंगे।

अबू सुफ़ियान जब हिजाज (मक्के के इलाक़े) से क़रीब हुआ तो उसने अपने जासूस छोड़ रखे थे, और हर आने-जाने वाले से नबी सल्ल. की ख़बरें पूछता रहता था। चुनाँचे उसको ख़बर मिल गई कि मुहम्मद तुम्हारे क़ाफ़िले की ताक में हैं, तो उसने एहतियाती तदबीर इख़्तियार कर ली और ज़मज़म बिन अ़मर ग़िफ़ारी को फ़ौरन मक्का भेजा कि क़ुरैश से मिलकर क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम कराये, क्योंकि मुहम्मद हमलावर हो रहे हैं। उधर रसूलुल्लाह सल्ल. भी अपने साथियों को लेकर निकले और वादी-ए-ज़फ़रान तक पहुँचे और वहाँ क़ियाम किया। इतने में आपको ख़बर मिली कि क़ुरैश अपने क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त व रक्षा की ख़ातिर मक्का से रवाना हो गये हैं, तो आपने मश्विरा किया। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने भी जो मुनासिब मश्विरा समझा ज़ाहिर किया, और हज़रत उमर रज़ि. ने भी यही कहा। फिर मिक़दाद कहने लगे या रसूलल्लाह! हम आपके साथ हैं, ख़ुदा का जो मंशा है उसको पूरा कीजिये। ख़ुदा की क़सम हम मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम की तरह नहीं कहेंगे (कि तुम और तुम्हारा रब जाकर लड़ लो हम यहीं तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहे हैं)। अगर आप हमें हब्श तक भी ले जाना चाहें तो जब तक आप वहाँ न पहुँचें हम आपका साथ न छोड़ेंगे। तो आपने सअ़द रज़ि. को दुआ़-ए-ख़ैर दी। फिर आपने फ़रमाया ऐ लोगो! मुझे मश्विरा दो, आपकी मुराद अन्सार से थी, एक तो इस वजह से भी कि अन्सार तादाद में ज़्यादा थे, दूसरे इसलिये भी कि अ़क़बा में जब अन्सार ने बैअ़त की थी तो इस बात पर की थी कि जब आप मक्का से निकल कर मदीना पहुँच जायेंगे तो हर हाल में हम आपका साथ देंगे। यानी दुश्मन आप पर चढ़ाई करके आये तो हम उसके मुक़ाबले पर हो जायेंगे। इसमें चूँकि यह वादा न था कि हमला करने में अपनी तरफ़ से पहल करने पर भी साथ देंगे, इसलिये नबी पाक सल्ल. उनका भी इरादा और राय मालूम कर लेना चाहते थे, ताकि उनसे भी वादा लेकर उनकी हमदर्दियाँ भी हासिल कर लें।

हज़रत सअ़द ने कहा कि शायद आप हमसे जवाब तलब फ़रमा रहे हैं? हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया हाँ! मेरी मुराद तुम्हीं लोगों से है। हज़रत सअ़द ने कहा या रसूलल्लाह! हमारा आप पर ईमान है, हम आपके हुक्म मानने का वादा आपसे कर चुके हैं। हम आपका साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। ख़ुदा की क़सम अगर समुद्र के किनारे पर खड़े होकर भी आप उसमें घोड़ा डाल दें तो हम भी उसमें कूद पड़ेंगे, हम में से कोई भी ज़रा भी संकोच न करेगा, हम लड़ाईयों में बहादुरी का प्रदर्शन करने वाले, मुसीबतों को झेलने वाले हैं, आप हमसे इन्शा-अल्लाह ख़ुश रहेंगे। इस जवाब से आप बहुत ख़ुश हुए। उसी वक़्त कूच का हुक्म दे दिया और फ़रमाया कि रब ने दो में से एक का मुझसे वादा फ़रमाया है, और क्या अ़जब है कि वह एक यही जंग हो, मैं गोया मुश्रिकों के क़त्ल होने का स्थान यहीं से अपनी आँखों से देख रहा हूँ।

(उस वक़्त को याद करो) जबकि तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे। फिर उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) तुम्हारी सुन ली, कि मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा जो सिलसिलेवार चले आएँगे। (9) और अल्लाह तआ़ला ने यह (इमदाद) सिर्फ़ इस (हिक्मत के)	اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ○ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى

Maktab e Ashraf

وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝	लिए की कि (ग़लबे की) ख़ुशख़बरी हो, और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी से) क़रार हो जाए, और (हक़ीक़त में तो) मदद (और ग़लबा) सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (10)

ع ١٥

अल्लाह की मदद

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से रिवायत है कि बदर के रोज़ हुज़ूर सल्ल. ने अपने साथियों का शुमार किया तो तीन सौ से कुछ ऊपर थे, और मुश्रिक लोग कोई एक हज़ार की तादाद में थे। चुनाँचे आप क़िब्ला-रू होकर ख़ुदा से दुआ़ माँगने लगे। आप सिर्फ़ एक चादर ओढ़े हुए थे और तहबन्द बाँधा हुआ था, और फ़रमा रहे थे कि या रब! तूने मुझसे जो वादा फ़रमाया है इस मौक़े पर पूरा कर। अगर मुसलमानों की इस मुट्ठी भर जमाअ़त को तूने हलाक कर दिया तो ज़मीन पर इबादत करने वाला कोई न रहेगा, और तौहीद का नाम व निशान मिट जायेगा। आप ख़ुदा से फ़रियाद कर रहे थे, दुआ़यें माँग रहे थे यहाँ तक कि चादर आपके कन्धों पर से गिर पड़ी। हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने आकर उसको आपके कन्धों पर डाल दिया और आपके पीछे खड़े हो गये और कहने लगे या रसूलल्लाह! बस कीजिये, वह अपना वादा ज़रूर पूरा करेगा। चुनाँचे अल्लाह ने यह आयत उतारी कि जब तुमने ख़ुदा से दुआ़ माँगी तो उसने तुम्हारी दरख़्वास्त क़बूल कर ली। अब मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करता हूँ। चुनाँचे जिस रोज़ जंग हुई तो अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकों को खुली शिकस्त दे दी। मुश्रिकों में से सत्तर क़त्ल हुए और सत्तर क़ैद हुए। अब रसूलुल्लाह सल्ल. ने अबू बक्र, उमर और अ़ली रज़ि. से मश्विरा किया तो हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! ये आपके भाई-बन्द और क़बीले व ख़ानदान वाले हैं, मैं तो यह राय रखता हूँ कि इनसे फ़िदया लेकर छोड़ दिया जाये, ताकि फ़िदये की रक़म से हमें माली मज़बूती हासिल हो, काफ़िरों पर ग़लबे की और क़ुव्वत पैदा हो, और हो सकता है कि बाद में अल्लाह तआ़ला उन्हें हिदायत बख़्शे, फिर ये ख़ुद हमारी क़ुव्वत में इज़ाफ़ा करें।

उसके बाद हुज़ूर सल्ल. ने उमर रज़ि. से मुख़ातिब होकर कहा कि उमर! तुम क्या कहते हो? तो उमर रज़ि. ने कहा मेरी राय अबू बक्र की राय के ख़िलाफ़ है। आप मुझे हुक्म दीजिये कि मैं अपने रिश्तेदार काफ़िर क़ैदी को क़त्ल कर दूँ और अ़ली को हुक्म दीजिये कि वह अपने भाई अ़क़ील की गर्दन उड़ा दें और हमज़ा अपने फ़ुलाँ भाई की गर्दन मारें ताकि हम ख़ुदा के हुज़ूर में यह साबित कर सकें कि मुश्रिकों के लिये हमारे दिलों में कोई रियायत नहीं। ये मुश्रिक क़ैदी काफ़िरों के सरदार और लीडर हैं। लेकिन नबी सल्ल. ने हज़रत अबू बक्र रज़ि. की राय को तरजीह (वरीयता) दी और उन क़ैदियों से फ़िदया लेकर छोड़ दिया।

हज़रत उमर रज़ि. कहते हैं कि दूसरा दिन निकला तो मैं नबी पाक सल्ल. के घर गया देखता हूँ कि आप और अबू बक्र दोनों रो रहे हैं। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप और अबू बक्र क्यों रो रहे हैं? रोना आये तो मैं भी रो लूँ न आये तो रोने की सूरत ही बना लूँ ताकि आपका शरीक हो जाऊँ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि फ़िदया लेकर छोड़ देने की वजह से रोना है, मैं इस ख़ता की वजह से अ़ज़ाब को देख रहा हूँ जो इतना क़रीब है जितना यह मेरे सामने का पेड़। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल

Maktab-E-Ashraf

फ़रमाईः

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ........فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا.

यानी नबी की शान के लायक़ नहीं कि उनके क़ैदी बाक़ी रहें (बल्कि क़त्ल कर दिये जायें) जब तक कि वह ज़मीन में अच्छी तरह (कुफ़्फ़ार की) ख़ूँरेज़ी न कर लें। तुम दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआ़ला आख़िरत (की मस्लेहत) को चाहते हैं।..........(सूरः अनफ़ाल आयत 67-69)

चुनाँचे ग़नीमत हलाल कर दी गई। फिर जब अगले साल उहुद का दिन आया तो बदर के दिन की ग़लती का अल्लाह ने यूँ बदला लिया कि फ़िदये के छोड़े हुए काफ़िरों के बदले उहुद में मुसलमानों के सत्तर सहाबी शहीद हुए। हुज़ूर सल्ल. के सामने के चार दाँत टूट पड़े, ख़ुद (लोहे की टोपी) सर मुबारक में धँस गया, ख़ून चेहरा-ए-अनवर पर बहने लगा। चुनाँचे यह आयत उतरी कि "मुसीबत पहुँची तो तुम कहने लगे कि यह कहाँ से आ गई? कह दो कि यह तुम्हारे अपने हाथों नाज़िल हुई है। यानी फ़िदया लेकर छोड़ देने के सबब।"

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि आयते करीमा

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ........

(उस वक़्त को याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे.....) से मुराद हुज़ूर सल्ल. का दुआ़ करना है। क्योंकि बदर के रोज़ नबी सल्ल. अल्लाह से बहुत ज़्यादा लगकर दुआ़ माँग रहे थे कि हज़रत उमर रज़ि. आकर कहने लगे या रसूलल्लाह! अब दुआ़ को मुख़्तसर कीजिये, अल्लाह पाक ज़रूर अपना वादा पूरा फ़रमायेगा जो आपसे किया गया है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि बदर के दिन में हुज़ूर सल्ल. फ़रमा रहे थे कि ऐ ख़ुदा! मैं अ़हद के पूरा करने की तरफ़ तुझे तवज्जोह दिलाता हूँ वरना ऐ ख़ुदा! तुझे पूजने वाला कोई न रहेगा, तो अबू बक्र रज़ि. ने आपका हाथ थाम लिया और कहा हज़रत! बस बस, तो आप उठे और फ़रमा रहे थे कि बहुत जल्दी काफ़िरों को शिकस्त होने वाली है और वे पीठ फेरकर भागने वाले हैं।

بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ.

यानी फ़रिश्तों की सफ़ें एक के पीछे एक लगी हुई थीं, और 'मुर्दिफ़ीन' से मुराद मदद भी हो सकती है यानी फ़रिश्ते मदद पर थे। हज़रत अ़ली रज़ि. से रिवायत है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हज़ार फ़रिश्ते लेकर नबी सल्ल. की सीधी तरफ़ थे, जिधर कि अबू बक्र थे, और मीकाईल अ़लैहिस्सलाम एक हज़ार फ़रिश्ते लेकर बाईं तरफ़ थे जिधर मैं था। इससे यह साबित होता है कि हज़ार की मदद पर दूसरे हज़ार भी थे, इसलिये बाज़ ने "मुर्दफ़ीन" ज़बर के साथ क़िराअत की है। वल्लाहु आलम

और यह भी रिवायत है कि पाँच सौ फ़रिश्ते जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के साथ थे और पाँच सौ मीकाईल के साथ। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि एक मुसलमान एक मुश्रिक के पीछे लगा हुआ था, कि ऊपर से एक कोड़ा मुश्रिक के सर पर पड़ने की आवाज़ सुनी और एक सवार की भी आहट पाई, अब क्या देखते हैं कि काफ़िर गिरकर ज़मीन पर ढेर हो गया है, कोड़े की चोट से सर फट गया है, हालाँकि किसी इनसान ने उसे न मारा था। जब पीछे वाले अन्सारी ने यह ख़बर हुज़ूर सल्ल. को पहुँचाई तो आपने फ़रमाया तुमने सच कहा, यह आसमानी मदद थी। यह आपने तीन बार फ़रमाया। चुनाँचे सत्तर तो क़त्ल हुए थे और

Maktab E Ashraf

सत्तर कैदी हुए।

हज़रत राफ़ेअ बदर वालों में से थे, कहते हैं कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम आये और हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि आप बदर वालों को कैसा समझते हैं? आपने फ़रमाया मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम कहने लगे कि बदर में मदद करने वाले फ़रिश्ते भी दूसरे फ़रिश्तों में ऐसे ही अफ़ज़ल (बेहतर और सम्मानित) समझे जाते हैं। सहीहैन में है कि नबी सल्ल. ने हज़रत उमर रज़ि. से कहा जबकि हज़रत उमर ने हातिब इब्ने अबी बल्तआ के क़त्ल के बारे में मश्विरा दिया था, कि यह हातिब बदर में शरीक हुआ था, और तुम्हें क्या ख़बर कि शायद अल्लाह पाक ने बदर वालों को बख़्श दिया हो, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया था कि अब जो चाहो करो मैंने तुम्हें बख़्श दिया है। आगे अल्लाह फ़रमाता है:

وَمَاجَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّابُشْرٰى لَكُمْ.

यानी फ़रिश्तों का यह भेजना तुम्हें सिर्फ़ ख़ुश करने के लिये था और यह कि तुम्हारे दिल को इत्मीनान की सूरत हो, वरना ख़ुदा तुम्हारी मदद करने पर हर तरह क़ादिर था। उसको तुम्हारी मदद के लिये फ़रिश्तों की भी ज़रूरत नहीं है। यह मदद तो दर हक़ीक़त ख़ुदा की मदद थी, फ़रिश्ते तो मदद की ज़ाहिरी सूरत थे। जैसा कि फ़रमाया कि जब कभी तुम काफ़िरों को पाओ तो उनकी गर्दन उड़ा दो, ग़ालिब आ जाओ तो उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ लो, फिर या तो माफ़ कर दो या फ़िदया लेकर छोड़ दो, यहाँ तक कि जंग का सिलसिला बन्द हो जाये। यह इसलिये कहा गया है कि अगर अल्लाह चाहे तो ख़ुद उनकी मदद कर सकता है। लेकिन दर असल वह एक को दूसरे के ज़रिये आज़माता है और जो लोग ख़ुदा की राह में शहीद हो गये हैं अल्लाह उनके आमाल को भी ज़ाया नहीं करेगा, उन्हें हिदायत करेगा और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा। और अल्लाह का इरशाद है कि:

وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ط وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ o وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ o

हम ज़माने को लोगों में घुमाते रहते हैं और ज़माने को बदल-बदलकर लाते हैं ताकि अल्लाह तआ़ला जाँच ले और शहीदों को अलग करे, ज़ालिमों से अल्लाह ख़ुश नहीं रह सकता।

इसमें ईमान वालों का इम्तियाज़ हो जाता है और काफ़िरों को ख़ुदा मिटा देता है। जिहाद का शरई फ़ल्सफ़ा यही है कि ख़ुदा तआ़ला मुश्रिकों को ईमान वालों के हाथों सज़ा देता है, इससे पहले वे आ़म आसमानी अ़ज़ाबों से हलाक कर दिये जाते थे जैसे क़ौमे नूह पर तूफ़ान आया, आदे ऊला आँधी में तबाह हुये, समूद वाले चीख़ से ग़ारत कर दिये गये, क़ौमे लूत का तबक़ा उलट गया और पत्थरों की बारिश हुई, शुऐब की क़ौम के सर पर पहाड़ लटका दिया गया, अल्लाह ने मूसा अ़लैहिस्सलाम को भेजा और उनके दुश्मन फ़िरऔन को हलाक कर दिया गया, और उसकी क़ौम को दरिया में ग़र्क़ कर दिया गया। मूसा अ़लैहिस्सलाम को तौरात देकर कुफ़्फ़ार को क़त्ल कर देना फ़र्ज़ क़रार दिया गया, और यही हुक्म दूसरी शरीअ़तों के अन्दर भी क़ायम रहा, जैसा कि फ़रमाया कि हमने मूसा को किताब दी और उनसे पहले की उम्मतें भी नाफ़रमानी के सबब हलाक कर दी गई थीं। इसमें लोगों के लिये सबक़ है, मोमिनों का काफ़िरों को भी बजाय क़ैद के क़त्ल कर देना उन काफ़िरों के ज़बरदस्त अपमान की चीज़ थी, और इससे मोमिनों के दिल भी ठंडे होते, जैसा कि उस उम्मत के मोमिनों को हुक्म दिया गया था कि इन काफ़िरों को क़त्ल ही

कर दो। अल्लाह पाक तुम्हारे हाथों उन्हें रुस्वा करना और अ़ज़ाब देना चाहता है और इसलिये भी कि तुम्हारा दिल ठंडा हो, क्योंकि यह क़त्ल किये जाने वाले क़ुरैश के सरदार मुसलमानों को बड़ी हिक़ारत (अपमान) की नज़र से देखते थे और उन्हें हर मुम्किन तकलीफ़ पहुँचाते थे। अगर ये क़त्ल होकर सरे बाज़ार रुस्वा होते तो मुसलमानों के दिलों को इस इन्तिक़ाम से कितनी ठंडक पहुँचती। चुनाँचे अबू जहल जब ऐन जंग में मारा गया तो उसकी लाश की बड़ी बेइ़ज़्ज़ती हुई कि अगर बिस्तर पर अपनी मौत मरता तो उसकी कभी रुस्वाई न होती। या जैसा कि अबू लहब मरा तो ऐसा सड़ गया था कि उसके क़रीबी परिजन भी उसकी लाश के क़रीब न आते थे, नहलाने के बजाय दूर से लाश पर पानी फेंक दिया गया था और दफ़न के तौर पर उसको एक गड्ढे में गिरा दिया गया था। इसी लिये फ़रमाया कि इ़ज़्ज़त काफ़िरों के लिये नहीं बल्कि रसूलों और मोमिनों के लिये है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। और फ़रमाया कि हम अपने रसूलों और मोमिनों की मदद दुनिया में भी करते हैं और आख़िरत में भी। तुमको यह हुक्म देना कि काफ़िरों को क़त्ल करो, इसमें भी उसकी ख़ास हिक्मत है, वरना क्या वह ख़ुद अपनी क़ुदरत से उन्हें हलाक नहीं कर सकता।

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

(उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआ़ला तुम पर ऊँघ को तारी कर रहा था अपनी तरफ़ से चैन सुकून देने के लिये, और (उससे पहले) तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था, ताकि उस (पानी) के ज़रिये से तुमको (छोटी-बड़ी नापाकी से) पाक कर दे, और तुमसे शैतानी वस्वसे को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे, और तुम्हारे पाँव जमा दे। (11) (और उस वक़्त को याद करो) जबकि आप का रब (उन) फ़रिश्तों को हुक्म देता था कि मैं तुम्हारा साथी (और मददगार) हूँ, सो (मुझको मददगार समझकर) तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रौब डाले देता हूँ, सो तुम (काफ़िरों की) गर्दनों पर मारो और उनके पोर-पोर को मारो। (12) यह (सज़ा) इसलिये है कि उन्होंने अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है सो अल्लाह तआ़ला (उसको) सख़्त सज़ा देते हैं। (13)

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

एक और रास्ते से मदद

अल्लाह पाक उन एहसानों को याद दिलाता है कि जंग के वक़्त तुम पर ग़ुनूदगी (एक हल्की सी नींद और ऊँघ) तारी करके हमने तुम पर एहसान किया है, कि अपनी क़िल्लत (संख्या की कमी) और दुश्मनों की कसरत (ज़्यादा संख्या में होने) का जो तुम्हें एहसास था और उस एहसास के तहत तुम पर ख़ौफ़ सा जो तारी था उससे तुम्हें मामून कर दिया। और इसी तरह अल्लाह ने उहुद के दिन में भी किया था, जैसा कि फ़रमायाः

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ ۢبَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى... الخ

यानी रंज व ग़म के बाद अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अमन दिया जो ग़ुनूदगी की सूरत में तुम्हें ढाँके हुए था। अबू तल्हा कहते हैं कि जंगे उहुद के रोज़ मुझे भी ग़ुनूदगी (ऊँघ) आ गई थी कि तलवार मेरे हाथ से गिरी जा रही थी और मैं थामे जाता था, और मैं लोगों को भी देख रहा था कि ढाल पर सर लगाये नींद में लोग झूल रहे थे। हज़रत अ़ली रज़ि. कहते हैं कि बदर के रोज़ मिक़दाद रज़ि. के सिवा किसी के पास सवारी नहीं थी, हम सब नींद के आलम में थे लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल. एक दरख़्त के नीचे सुबह तक नमाज़ें पढ़ते रहे और ख़ुदा के आगे रोते रहे। इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि जंग के दिन यह ऊँघ ख़ुदा की तरफ़ से गोया एक अमन की शक्ल में थी और नमाज़ में यही ऊँघ शैतान की तरफ़ से होती है।

क़तादा रह. कहते हैं कि ऊँघ का ताल्लुक़ सर से है और नींद का ताल्लुक़ दिल से, मैं कहता हूँ कि ग़ुनूदगी उहुद के दिन में मुसल्लत थी और यह ख़बर तो बहुत आ़म और मशहूर है। और यहाँ आयते शरीफ़ा का मज़मून बदर के क़िस्से से मुताल्लिक़ है और यह इस बात पर दलालत करता है कि बदर में भी ग़ुनूदगी (ऊँघ) तारी थी। और यह मोमिनों पर उस वक़्त तारी होती थी जबकि जंग ज़ोर-शोर से जारी थी, ताकि उनके दिल अल्लाह की मदद से मुत्मईन और मामून रहें और यह मोमिनों पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत है जैसा कि फ़रमाया कि मुश्किलों के साथ आसानियाँ भी हैं। इसलिये हदीस में है कि बदर के दिन नबी सल्ल. अपने लिये बनाये हुए काशाने (ठिकाने) में सिद्दीक़े अकबर रज़ि. के साथ थे और दोनों मिलकर ख़ुदा से दुआ़ कर रहे थे, उस हालत में नबी सल्ल. को ऊँघ सी आ गई। फिर आप मुस्कुराते हुए बेदार हो गये और फ़रमाने लगे ऐ अबू बक्र! ख़ुश हो जाओ वह हैं जिब्राईल! गर्द में भरे हुए। फिर आप अपने ठिकाने से बाहर आये और यह आयत तिलावत फ़रमा रहे थे कि "दुश्मनों को शिकस्त हो गई और वे पीठ फेरकर भाग जायेंगे" फिर इरशाद होता हैः

يُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً.

यानी अल्लाह तआ़ला ने आसमान से तुम पर पानी बरसाया। एक तो नींद की सी कैफ़ियत को तुम्हारे लिये अमन की वजह क़रार दी, दूसरा एहसान तुम पर ख़ुदा का यह है कि पानी बरस पड़ा जो मुसलमानों के लिये मुफ़ीद (आरामदायक) और काफ़िरों के लिये परेशानी का सबब साबित हुआ।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि बदर में जहाँ नबी सल्ल. ने क़ियाम किया था वहाँ मुश्रिकों ने मैदाने बदर के पानी पर क़ब्ज़ा कर लिया था और मुसलमानों के और पानी के बीच वे बाधा और रोक हो गये थे। मुसलमान कमज़ोरी की हालत में थे, शैतान ने मुसलमानों के दिलों में वस्वसे (शंकायें और बुरे ख़्यालात) डालने शुरू किये कि तुम बड़े अल्लाह वाले होने का दावा करते हो और तुम में रसूल भी मौजूद हैं, और

Maktab E Ashraf

पानी पर क़ब्ज़ा मुश्रिकों का है, और पानी से तुम मेहरूम हो गये हो, कि नमाज़ भी पढ़ते हो तो तयम्मुम करके पढ़ लेते हो। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने ख़ूब पानी बरसाया, मुसलमानों ने पिया भी और पाकी व सफ़ाई भी की, अल्लाह ने शैतान के वस्वसे को भी नीचा दिखाया, पानी की वजह से मुसलमानों की तरफ़ की रेत जम गई, लोगों को और जानवरों को चलने में आसानी हो गई, और अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्ल. और मोमिनों की एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद की। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम एक तरफ़ पाँच सौ फ़रिश्ते लिये हुए थे और मीकाईल अ़लैहिस्सलाम दूसरी तरफ़ पाँच सौ फ़रिश्ते लिये हुए थे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि क़ुरैश के मुश्रिक लोग जब अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले की मदद के लिये निकले और मुसलमानों से लड़ बैठे तो बदर के पानी के चश्मे पर पड़ाव डाला। मुसलमान पानी से मेहरूम हो गये, प्यास से तड़पने लगे, नमाज़ भी, नहाने और वुज़ू की ज़रूरत होते हुए (पानी न होने की वजह से तयम्मुम करके) बिना नहाये और बिना वुज़ू किये पढ़ने लगे, यहाँ तक कि उनके दिलों में मुख़्तलिफ़ ख़्यालात पैदा होने लगे। अब अल्लाह तआ़ला ने पानी बरसाया और मैदानों में पानी बहने लगा, मुसलमानों ने बरतन भर लिये, जानवरों को पिलाया, नहाये, अल्लाह ने उन्हें पाकी बख़्शी, अब वे साबित-क़दम भी हो गये, मुसलमानों और काफ़िरों के बीच रेत थी, पानी बरस गया तो ज़मीन दब गई और सख़्त हो गई। मुसलमानों के क़दम ज़मीन पर जमने लगे।

मशहूर यह है कि नबी सल्ल. जब बदर की तरफ़ चले तो वहाँ पानी के क़रीब उतरे। हुबाब बिन मुन्ज़र रज़ि. ने नबी करीम सल्ल. की ख़िदमत में पहुँचकर अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! यह मक़ाम जहाँ आप उतरे हैं सो क्या आप अल्लाह के इशारे से उतरे हैं? जिससे हम ज़र्राभर भी नाफ़रमानी नहीं कर सकते, या यह कि जंगी मस्लेहत के तहत क़ियाम फ़रमाया है? आपने फ़रमाया कि मस्लेहत के तहत क़ियाम किया है। हुबाब ने कहा कि ऐसी सूरत में और आगे चलिये, आख़िर पानी पर क़ब्ज़ा कर लीजिये, वहीं हौज़ बनाकर यहाँ का सब पानी जमा कर लें तो पानी पर हमारा क़ब्ज़ा रहेगा और दुश्मन पानी के बग़ैर रह जायेगा। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. आगे के लिये चल खड़े हुए। कहते हैं कि हुबाब ने जब यह मश्विरा दिया तो उस वक़्त आसमान से एक फ़रिश्ता उतरा और जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम नबी पाक सल्ल. के पास बैठे हुए थे, उस फ़रिश्ते ने कहा "ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआ़ला ने सलाम फ़रमाया है, और इरशाद है कि हुबाब बिन मुन्ज़र की राय तुम्हारे लिये सही है" आप जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जह हुए और पूछा क्या तुम इसको जानते हो? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने उसको देखकर कहा कि मैं तमाम फ़रिश्तों को जानता तो नहीं हूँ लेकिन यह ज़रूर है कि यह फ़रिश्ता है, कोई शैतान नहीं।

इब्ने ज़ुबैर रज़ि. कहते हैं कि अल्लाह ने पानी बरसाया, मुसलमानों की तरफ़ ज़मीन पानी से दबकर सख़्त हो गई और चलने में आसानी हो गई, लेकिन काफ़िरों की तरफ़ ज़मीन नीची थी जहाँ दलदल हो गई, उन्हें चलना फिरना दुश्वार था। अल्लाह ने ग़ुनूदगी (ऊँघ) का एहसान करने से पहले पानी बरसाकर एहसान किया, गर्द व ग़ुबार दब गया, ज़मीन सख़्त हो गई, मुसलमान ख़ुश हो गये, साबित-क़दमी (यानी हौसला और दिल का जमाव) बढ़ गई। अब ऊँघ आने लगी। मुसलमान ताज़ा-दम (फ़्रेश) हो गये, सुबह लड़ाई होने वाली है, रात को हल्की बारिश हुई। हमने दरख़्त के नीचे होकर बारिश से पनाह ली, हुज़ूर सल्ल. जागते रहे और लोगों से जंग के मुताल्लिक़ बातें करते रहे।

आगे अल्लाह का इरशाद हैः

Maktab E Ashraf

لِيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ.

यानी हदसे असग़र (छोटी नापाकी जैसे वुज़ू की ज़रूरत) और हदसे अकबर (यानी बड़ी नापाकी जैसे नहाने की ज़रूरत) से पाक करने के लिये पानी बरसाया और ताकि शैतान के बहकाने से भी तुमको छुड़ा दें, और यह दिल की पाकी थी, जैसा कि जन्नत वालों के हक़ में फ़रमाया है कि उन्हें पहनने के लिये रेशमी लिबास मिलेगा और सोने चाँदी का ज़ेवर होगा, और यह ज़ाहिरी ज़ीनत (बनाव सिंगार) है और अल्लाह उन्हें शराबे तहूर (पाक शराब) पिलायेगा और हसद और बुग़ज़ के कीने से उन्हें पाक रखेगा, और यह बातिन की ज़ीनत (संवारना और सुधार) है। पानी बरसाने से यह भी ग़र्ज़ थी कि तुम्हारे दिलों को इत्मीनान देकर साबिर और साबित-क़दम बनाया जाये। यह सब्र और इक़्दाम अन्दरूनी बहादुरी है और यह साबित-क़दमी ज़ाहिरी और बाहर की बहादुरी है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا.....

अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों की तरफ़ 'वही' भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम मोमिनों को साबित-क़दम रखो (यानी उनके क़दम और दिल जमाये रखो)।

यह छुपी नेमत है, इसको अल्लाह तआ़ला मुसलमानों पर ज़ाहिर फ़रमा रहा है ताकि उसकी शुक्रगुज़ारी करें, वह पाक और बुलन्द रुतबे वाला है। अल्लाह ने फ़रिश्तों को ताकीद फ़रमाई कि नबी सल्ल. की और दीने नबी और मोमिनों की जमाअ़त की मदद करें ताकि उनके दिल टूट न जायें, वे हिम्मत न हारें, तुम भी उनके साथ काफ़िरों से जंग करो। कहा गया है कि फ़रिश्ता किसी मुसलमान के पास आता और कहता कि मुश्रिकों में अ़जीब बेचैनी और मायूसी फैली हुई है, वे तो कह रहे हैं कि अगर मुसलमानों ने हमला कर दिया तो हमारे क़दम टिक नहीं सकते, हम तो भाग खड़े होंगे। अब हर एक दूसरे से कहता दूसरा तीसरे से कहता, इस तरह सहाबा के दिल बढ़ जाते और समझ लेते कि मुश्रिकों में ताक़त व क़ुव्वत नहीं है।

फिर फ़रमाता है कि मैं काफ़िरों के दिलों में रौब डाल दूँगा। यानी ऐ फ़रिश्तो! तुम मोमिनों को जमाये रखो, उनका हौसला बढ़ाओ और उनके दिलों को क़वी बनाओ, तुम उन काफ़िरों की गर्दनों पर मारो और उनकी एक-एक पोरी को ज़ख़्मी कर दो, उनके हाथ पाँव काट दो। मुफ़स्सिरीन ने 'फ़ौक़ल-अअ़्नाक़ि' के मायनों में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया है। बाज़ ने सर पर मारने के मायने लिये हैं और बाज़ ने गर्दन पर। चुनाँचे इस मायने की ताईद इस आयत से होती है।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ.

यानी काफ़िरों से जंग हो तो गर्दनों पर मारो और उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ लो।

क़ासिम रह. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा के अ़ज़ाब में मुब्तला करने के लिये नहीं भेजा गया हूँ। यानी ख़ुदा की तरफ़ का अ़ज़ाब जैसा कि पहली उम्मतों पर नाज़िल होता रहा, बल्कि ख़ुद लड़कर गर्दनें मारकर और क़ैद करके उन्हें इबरतनाक अन्जाम तक पहुँचाऊँगा। इब्ने जरीर कहते हैं कि गर्दनें मारना और खोपड़ी फोड़ना मुराद है।

'मग़ाज़ी-ए-उमवी' में लिखा है कि जंगे बदर के दिन नबी सल्ल. मक़्तूलीन (क़त्ल हुए लोगों) पर से गुज़रे और आप फ़रमा रहे थे 'युफ़्लक़ु हाम्मनू' (सर टूटे पड़े हैं)। अबू बक्र रज़ि. साथ ही बोल उठे और एक पंक्ति बढ़ाकर उसका एक शे'र ही बना दिया यानी:

Maktaba Ashraf

يفلق هاما من رجال اعزة علينا ☆ وهم كانوا اعق واظلما.

यानी सर टूटे पड़े हैं उन लोगों के जो हम पर ग़ुरूर करते थे, क्योंकि वे लोग बड़े ज़ालिम और नाफ़रमान थे।

नबी सल्ल. ने गोया एक शे'र के शुरू के दो लफ़्ज़ कह दिये और मुन्तज़िर थे कि अबू बक्र इसको एक शे'र बनाकर पूरा कर देंगे। क्योंकि आपके लिये शायर होना मुनासिब नहीं था जैसा कि ख़ुद अल्लाह पाक ने फ़रमाया किः

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنبَغِي لَهُ.

यानी हमने उनको शायर नहीं बनाया और न उनके लिये शायर होना कोई इम्तियाज़ (शान की और अच्छी बात) है।

बदर के दिन में लोग उन मक़्तूलीन को पहचान जाते थे जो फ़रिश्तों के हाथों मरे हैं, क्योंकि ऐसे मक़्तूलीन (क़त्ल होने वालों) का ज़ख़्म गर्दन पर या जोड़ बन्दों पर होता था और ये ऐसे निशानात होते थे गोया आग से जले हुए हैं। फ़रमायाः

وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ.

ऐ मोमिनो! दुश्मनों को मारो उनके जोड़बन्दों पर ताकि हाथ पाँव टूट जायें।

'बनान' बहुवचन है 'बनानतुन्' का, हर जोड़ और हर हिस्से को "बनान" कहते हैं। इमाम औज़ाई कहते हैं मतलब यह है कि ऐ फ़रिश्तो! उन काफ़िरों के चेहरों और आँखों पर मारो और ऐसे ज़ख़्म डालो गोया आग की चिंगारियों से जला दिये गये हैं और किसी काफ़िर को क़ैद कर लेने के बाद मारना जायज़ नहीं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. बदर का क़िस्सा बयान करते हैं कि अबू जहल ने कह रखा था कि क़त्ल करने के बजाय मुसलमानों को ज़िन्दा पकड़ो ताकि उन्हें हमारे दीन को बुरा कहने, हमको ताने देने और 'लात' व 'उ़ज़्ज़ा' (ये दोनों बुतों के नाम हैं) से मुँह मोड़ने का मज़ा चखा सकें। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों से कह दिया था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम मोमिनों को साबित-क़दम रखो, मैं काफ़िरों के दिलों में मुसलमानों का रौब डाल दूँगा, तुम उनकी गर्दनों और जोड़-बन्दों पर मारो। बदर में क़त्ल होने वालों में अबू जहल का 69वाँ नम्बर था। फिर उ़क़्बा बिन अबी मुईत क़ैद करके क़त्ल कर दिया गया और सत्तर की संख्या पूरी हो गई। आगे फ़रमायाः

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ.

इसकी वजह यह थी कि उन्होंने अल्लाह और अल्लाह के रसूल की मुख़ालफ़त की थी, और शरीअ़त व ईमान को छोड़ा। लफ़्ज़ 'शक़्क़' "शक़्क़ अ़सा" से लिया गया है, यानी उसने लकड़ी के दो टुकड़े कर दिये। इरशाद है कि जिसने अल्लाह और रसूल से अ़लैहदगी (यानी मुख़ालफ़त) इख़्तियार की क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह ही मुख़ालफ़त करने वाले पर ग़ालिब है। किसी बात में उसको भूल-चूक नहीं, उसके ग़ज़ब का कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। फ़रमायाः

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ.

यह काफ़िरों से ख़िताब हो रहा है कि दुनिया में अ़ज़ाब व रुस्वाई का मज़ा चखो और आख़िरत में भी अ़ज़ाबे दोज़ख़ का।

Maktab E Ashraf

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ○ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○

(सो) यह (सज़ा) चखो, और (जान लो कि) काफ़िरों के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब (मुक़र्रर ही) है। (14) ऐ ईमान वालो! जब तुम (जिहाद में) काफ़िरों से आमने-सामने हो जाओ तो उनसे पुश्त मत फेरना। (15) और जो शख़्स उनसे उस मौक़े पर (यानी मुक़ाबले के वक़्त) पुश्त फेरेगा मगर हाँ जो लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो या जो अपनी जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने आता हो (वह इससे अलग है, बाक़ी और जो ऐसा करेगा) तो वह अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब में आ जायेगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी जगह है। (16)

जंग से भागना कुफ़्र है

जंग के वक़्त में फ़रार इख़्तियार करने (यानी पीठ फेरकर भागने) वालों को धमकी दी जा रही है कि ऐ ईमान वालो! जब लड़ाई शुरू हो गई तो अपने साथियों को छोड़कर भाग न जाना, हाँ कोई मस्लेहत (दाव-पैच और जंगी चालाकी) के तौर पर भागे कि जैसे डर गया है, ताकि उसका पीछा किया जाये फिर अकेला पाकर पलटकर हमला करके क़त्ल कर दे, तो ऐसी मस्लेहत के तहत भागने में कोई हर्ज नहीं। या इस ग़र्ज़ से भागे कि मुसलमानों के दूसरे दस्ते से जा मिले ताकि जाकर उनकी मदद करे या वे इसकी मदद करें तो यह भी जायज़ है। क्योंकि वह अपने इमाम की पनाह में जाना चाहता है।

अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि मैं हुज़ूर सल्ल. के भेजे हुए एक छोटे से लश्कर का सिपाही था कि लोगों में भगदड़ पड़ गई। मैं भागा, अब हमें एहसास हुआ कि हम जंग से भागे हैं और ख़ुदा के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गये, अब क्या करें? हमने मश्विरा किया कि मदीना चलेंगे, हुज़ूर सल्ल. के सामने पेश होंगे, अगर हमारी तौबा आपने क़बूल कर ली तो क्या कहना! वरना हम कहीं भी निकल जायेंगे और मुँह न दिखायेंगे। चुनाँचे हम ज़ोहर की नमाज़ से पहले हुज़ूर सल्ल. के पास आये, आपने पूछा तुम कौन लोग हो? हमने कहा हम पीठ फेरकर भागने वाले लोग हैं, आपने फ़रमाया नहीं! बल्कि तुम लोग अपने मर्कज़ (ठिकाने, जमाअ़त और केन्द्र) की तरफ़ आने वाले हो। मैं तुम्हारा और तुम्हारी मोमिनों की जमाअ़त का मर्कज़ हूँ। हमने यह सुनकर आगे बढ़कर आपके हाथों को चूम लिया। अबू दाऊद ने मज़ीद कहा है कि आपने यह आयत पढ़ीः

اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ.

'यानी जो अपनी जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने के लिये आता हो' वह इस हुक्म से अलग है।

हज़रत अबू उबैदा ईरान की सरज़मीन के एक पुल पर क़त्ल कर दिये गये तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने कहा कि होशियारी बरत कर उन्हें भाग आने का मौक़ा था, मैं उनका अमीर और बन्धन था, मेरे पास

Maktab-E-Ashraf

क्यों न आ गये। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा "ऐ लोगो! इस आयत से तुम ग़लत-फ़हमी में न पड़ना, यह आयत बदर के दिन के लिये थी और इस वक़्त हर मुसलमान की जमाअ़त मैं हूँ"। नाफ़ेअ़ ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से कहा कि हम लोग दुश्मन से जंग के वक़्त साबित-क़दम नहीं रह सकते और हम नहीं जानते कि हमारा मर्कज़ (केन्द्र) क्या है, इमाम या जंगी केन्द्र? तो कहा मर्कज़ रसूल सल्ल. हैं। मैंने कहा कि अल्लाह पाक फ़रमाता है किः

اِذَالَقِیْتُمُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا زَحْفًا.

यानी जब तुम काफ़िरों के आमने-सामने आ जाओ तो फिर उनसे पीठ मत फेरना।

तो कहा यह आयत बदर के दिन के बारे में उतरी है, न इससे पहले के लिये न बाद के लिये। "मुतहय्यिज़न्" के मायने हैं नबी सल्ल. की तरफ़ पनाह लेने वाला। इसी तरह आज भी कोई शख़्स जंग के मैदान से हटकर अपने अमीर (कमांडर) या अमीर के साथियों की तरफ़ पनाह ले सकता है, लेकिन यह फ़रार (भागना और पीठ फेरना) अगर इस सबब के सिवा किसी और कारण से हो तो यह हराम है और बहुत बड़ा गुनाह है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. ने फ़रमायाः सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो- 1. अल्लाह के साथ शिर्क करना। 2. जादू करना। 3. किसी को नाहक़ क़त्ल कर देना। 4. सूद खाना। 5. यतीम का माल खा जाना। 6. जिहाद में पीठ फेरकर भाग जाना। 7. पाकदामन और बेगुनाह औ़रतों पर इल्ज़ाम लगाना। यह बात और कई तरह भी साबित है कि यह आयत बदर से मुताल्लिक़ नाज़िल हुई है। इसलिये अल्लाह ने फ़रमाया कि वह भागेगा तो ख़ुदा का ग़ज़ब साथ लेकर भागेगा, उसका ठिकाना दोज़ख़ है जो बहुत ही बुरा ठिकाना है। बशीर बिन मअ़बद कहते हैं कि मैं बैअ़त करने के लिये हुज़ूर सल्ल. के पास आया तो बैअ़त के लिये आपने यह शर्त की कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' की गवाही दो, मेरी रिसालत को मानो, नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो, ज़कात देते रहो, हज करो, रमज़ान में रोज़े रखो। और यह भी कि अल्लाह की राह में जिहाद करोगे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! इसमें से दो बातें मेरे लिये दुश्वार हैं एक तो जिहाद कि अगर बहालते जंग कोई पीठ फेरकर भाग जायेगा तो ख़ुदा का ग़ज़ब उस पर नाज़िल होगा, और मुझे ख़ौफ़ है कि मौत से घबराकर कहीं मुझसे यह गुनाह न हो जाये। दूसरे सदक़ा, सो ख़ुदा की क़सम मुझे ग़नीमत और उसके सिवा कुछ नहीं मिलता है, और दस ऊँटनियाँ हैं जिनका दूध दूह लिया, पिया, पिला लिया, उस पर सवारी कर ली। हुज़ूर सल्ल. ने मेरा हाथ थाम लिया उसको हिलाया और कहा जिहाद भी न करोगे, सदक़ा भी न दोगे फिर जन्नत की हक़दारी कैसे हासिल होगी। मैंने कहा या रसूलल्लाह! मुझे मन्ज़ूर है, मैं हर शर्त पर बैअ़त करूँगा।

यह हदीस ग़रीब है, सिहाहे सित्ता (हदीस की छह बड़ी किताबों) में मौजूद नहीं। नबी सल्ल. ने फ़रमाया तीन कोताहियों के होते हुए कोई नेक अ़मल भी कारामद नहीं हो सकता। 1. अल्लाह के साथ शिर्क। 2. माँ-बाप की नाफ़रमानी, उनसे सरकशी। 3. मैदाने जंग से भाग जाना। यह हदीस भी ग़रीब है।

जदी से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- जिसने कहा 'अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व व अतूबु इलैहि' तो उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे अगरचे जंग से फ़रार का गुनाह भी हो। यह हदीस

Maktab E Ashraf

भी ग़रीब है। हज़रत ज़ैद ख़ादिमे नबी ने भी इसके सिवा और कोई हदीस बयान नहीं की। बाज़ ने कहा है जंग से भागना सहाबा पर हराम था इसलिये कि जिहाद उस वक़्त उनही पर फ़र्ज़ था। बाज़ ने कहा है कि सिर्फ़ अन्सार पर फ़र्ज़ था इसलिये कि बैअ़त उनही ने की थी, और कहा था कि सख़्ती और राहत हर हालत में हम फ़रमाँबरदार रहेंगे, और यह भी कहा गया है कि यह आयत सिर्फ़ बदर वालों के साथ ख़ास है। दलील यह पेश की है कि उस वक़्त मुसलमानों की कोई बाक़ायदा मुस्तक़िल और ताक़तवर जमाअ़त थी ही नहीं, जो कुछ थे यही मुट्ठी भर लोग थे, इसलिये ऐसे हुक्म की सख़्त ज़रूरत थी। नबी सल्ल. की यह हदीस उसी हालत पर रोशनी डालती है कि या अल्लाह अगर तू इस मुट्ठी भर जमाअ़त को भी हलाक कर देगा तो दुनिया में तुझे पूजने वाला कोई बाक़ी न रहेगा।

हज़रत हसन बसरी रह. से रिवायत है कि बदर के दिन में यह बात ज़रूर थी लेकिन आज अगर कोई अपने इमाम (मुसलमान हाकिम) की तरफ़ या अपने क़िले की तरफ़ पनाह ले तो कोई हर्ज नहीं। चुनाँचे बदर के दिन में भागने वालों के लिये अल्लाह ने दोज़ख़ क़रार दी, लेकिन यह छूट भी दे दी कि दुश्मन को धोखा देने के लिये, रणनीति की ख़ातिर या अपनी जमाअ़त में आकर सुरक्षित हो जाने के लिये ऐसा किया तो ख़ैर हर्ज नहीं। फिर उसके बाद जंगे उहुद हुई तो फ़रमायाः

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ.

कि यक़ीनन तुम में से जिन लोगों ने पुश्तें फेर दी थीं जिस दिन के दोनों जमाअ़तें आमने-सामने हुईं इसके अ़लावा कोई बात नहीं कि उनको शैतान ने ग़लती में डाल दिया था उनके बाज़ आमाल के सबब।

फिर सात साल बाद जंगे हुनैन हुई तो फ़रमायाः

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ.

यानी फिर तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए।

और

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ.

फिर उसके बाद अल्लाह तौबा क़बूल करता है जिसकी चाहता है।

और फिर फ़रमायाः

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗ............

कि जो शख़्स उनसे इस मौक़े (यानी मुक़ाबले के मौक़े) पर पुश्त फेरेगा, मगर हाँ जो लड़ाई के लिये पैंतरा बदलता हो या अपनी जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने आता हो वह इस हुक्म से अलग है।

यह आयत बदर वालों के बारे में नाज़िल हुई है।

इस सारी व्याख्या और ख़ुलासे से यह साबित होता है कि जंगे बदर वालों के अ़लावा भी जंग के वक़्त अगर कोई पीठ फेरकर भागे तो भी यह हराम होना चाहिये। अगरचे यह आयत जंगे बदर के वक़्त नाज़िल हुई थी लेकिन जब इसको सात हलाक करने वाली चीज़ों में शुमार किया गया तो हराम होना चाहिये। वल्लाहु आलम

Maktab E Ashraf

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ص وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ج وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ط اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌo ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَo	सो तुमने उनको क़त्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने (बेशक) उनको क़त्ल किया, और आपने (ख़ाक की मुट्ठी) नहीं फेंकी, जिस वक़्त आपने फेंकी थी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने फेंकी, और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ़ से उनकी मेहनत का ख़ूब बदला दे, बेशक अल्लाह तआ़ला (उन मोमिनों की बातों के) ख़ूब सुनने वाले (और उनके कामों व हालात के) ख़ूब जानने वाले हैं। (17) (एक बात तो) यह हुई और (दूसरी बात) यह (है) कि अल्लाह तआ़ला को काफ़िरों की तदबीर को कमज़ोर करना था। (18)

असली कारसाज़ अल्लाह है

इस बात पर रोशनी डाली जा रही है कि बन्दों के अफ़आ़ल (कामों) का ख़ालिक़ अल्लाह पाक है और जो नेक काम बन्दों से ज़ाहिर होता है उसको ख़ुदा ही ने नेक बनाया है। क्योंकि तौफ़ीक़ उसी ने दी थी, और काम करने की हिम्मत व क़ुदरत उसी ने बख़्शी थी। इसी लिये इरशाद होता है कि उन काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया है बल्कि अल्लाह ने क़त्ल किया है, तुम्हारी ताक़त में यह कहाँ था कि इतने कम होने के बावजूद दुश्मन की इतनी बड़ी तादाद वाली फ़ौज को शिकस्त देते। यह कामयाबी ख़ुदा ही ने तुम्हें दी। जैसा कि फ़रमायाः

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ.

यानी बदर में ख़ुदा ने तुम्हें कामयाब बनाया हालाँकि तुम बहुत कमज़ोर थे। और फ़रमायाः

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَo

यानी अल्लाह ने अक्सर मौक़ों पर तुम्हारी मदद फ़रमाई। हुनैन की जंग में तुम्हारी अधिकता ने तुमको मग़रूर बना दिया था। लेकिन उस ज़्यादा होने ने तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं दिया। ज़मीन इतनी कुशादा होने के बावजूद तुम पर तंग हो गई और तुम पीठ फेरकर भाग गये। अल्लाह जानता है कि कामयाबी संख्या की अधिकता पर नहीं और न तादाद और हथियारों पर है, कामयाबी तो अल्लाह की तरफ़ की बात है। जैसा कि फ़रमायाः

كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً.

अक्सर ऐसा होता है कि छोटी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त पर ग़ालिब आ जाती है।

फिर मुट्ठी भर मिट्टी के बारे में अल्लाह तआ़ला नबी सल्ल. से फ़रमाता है कि जो जंगे-बदर में

काफ़िरों के मुँह पर आपने फेंकी थी कि मैदाने जंग की झोंपड़ी से आप बाहर आये, खुदा तआ़ला से दुआ़ और आ़जिज़ी की और यह मुट्ठी काफ़िरों की तरफ़ फेंकी और फ़रमाया- तुम्हारे चेहरे बिगड़ जायें। फिर अपने साथियों को हुक्म दिया कि फ़ौरन धावा बोल दो। खुदा की क़ुदरत कि यह मिट्टी और कंकर मुश्रिकों की आँखों में जा गिरे। एक भी ऐसा न था जो इससे परेशान व बेक़रार न हो, और जिसको जंग से असमर्थ न रहना पड़ा हो। इसी लिये फ़रमाया किः

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ.

यानी तुमने मिट्टी नहीं फेंकी थी, खुदा तआ़ला ने फेंकी थी।

आँखों में मिट्टी झोंककर तुमने उन्हें झुकाया और हराया नहीं था, खुदा ने ऐसा किया था। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने बदर के दिन में अपने दोनों हाथ उठाकर खुदा से दुआ़ की कि ऐ खुदा! ये मुट्ठी भर लोग मर जायेंगे तो कौन तेरा नामलेवा बाक़ी रहेगा? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर कहा कि मुट्ठी भर मिट्टी इन काफ़िरों की तरफ़ फेंक मारो। आपने ऐसा ही किया, काफ़िरों की नाक आँख और मुँह मिट्टी से भर गये और इस गर्द भरी आँधी से घबराकर वे पिछले पाँव भागे और शिकस्त हो गई। मुसलमानों ने उनको क़त्ल करते हुए उनका पीछा किया और क़ैद कर लिया। काफ़िरों को यह शिकस्त हुज़ूर सल्ल. के मोजिज़े के सबब हुई। अ़ब्दुर्रहमान इब्ने ज़ैद कहते हैं कि नबी करीम सल्ल. ने तीन कंकर लिये थे, एक कंकर सामने फेंका दो कंकर दुश्मन की फ़ौज की सीधी और बाईं तरफ़ फेंके थे। यह बदर के दिन का वाक़िआ़ है। हुज़ूर सल्ल. ने इसी तरह हुनैन के दिन में भी किया था। हकीम बिन हिज़ाम से रिवायत है कि बदर के दिन हमने आसमान से एक आवाज़ सुनी, गोया एक थाल में कंकर डालकर हिलाये गये हों। यह हुज़ूर सल्ल. की मिट्टी फेंकने की आवाज़ थी। चुनाँचे हमें शिकस्त हो गई थी। यहाँ और दो क़ौल हैं जो बहुत ग़रीब हैं।

1. यह कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने एक कमान मंगवाई यह बहुत लम्बी थी, आपने दूसरी लाने का हुक्म दिया, दूसरी लाई गई, आपने उससे क़िले की तरफ़ एक तीर फेंका यह तीर घूमता हुआ चला और सरदारे क़बीला इब्ने अबी हक़ीक़ को आ लगा, जबकि वह अपने क़िले के अन्दर अपने बिस्तर पर था। इसी बिना पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ.

यानी तुमने मिट्टी नहीं फेंकी थी, खुदा तआ़ला ने फेंकी थी।

यह हदीस बहुत ग़रीब है। मुम्किन है कि रावी को शुब्हा हो गया हो, या उसकी मुराद यह हो कि यह आयत आ़म है और इस वाक़िए को भी शामिल है, वरना यह तो ज़ाहिर है कि सूरः अनफ़ाल की इस आयत में जंगे बदर का ज़िक्र है, तो यह वाक़िआ़ इसी जंगे बदर का है, और यह बात बिल्कुल ज़ाहिर है।

2. यह कि उहुद की लड़ाई के दिन नबी करीम सल्ल. ने उबई बिन ख़लफ़ को एक नेज़ा मरा था, यह शख़्स लोहे का लिबास पहने हुए और पूरी तरह सुरक्षित था। लेकिन यह नेज़ा उसके तालू पर जा लगा और वह घोड़े से लुढ़कने लगा। उसके कई दिन बाद इसी तकलीफ़ से उसकी मौत वाक़े हुई। वह अ़ज़ाबे दुनियावी के अ़लावा अ़ज़ाबे आख़िरत का भी मुस्तहिक़ हुआ। इन दोनों इमामों से ऐसी रिवायत बहुत ग़रीब है। शायद इन दोनों का यही मक़सद हो कि यह आयत आ़म है। ख़ास वाक़िए ही से मुताल्लिक़ नहीं।

Maktab E Ashraf

बल्कि जब कभी ऐसा हो तो हर वाकिआ इसी आयत से संबन्धित हो सकता है।

आगे फ़रमायाः

وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا.

ताकि मोमिन लोग अल्लाह की इस नेमत को जान लें कि दुश्मन उनसे बहुत ज़्यादा होने के बावजूद अल्लाह ने उन्हें ग़लबा दिया। ताकि वे ख़ुदा का शुक्र अदा करें।

हदीस में है कि अल्लाह ने बड़ा अच्छा इम्तिहान हमसे लिया है। आगे फ़रमायाः

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ.

अल्लाह तआ़ला दुआ़ओं को सुनने वाला है और जानता है कि कौन मदद का मुस्तहिक़ है, और कौन नहीं। आगे इरशाद हैः

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ.

यह हासिल होने वाली मदद की दूसरी ख़ुशख़बरी है, अल्लाह तआ़ला बता रहा है कि वह काफ़िरों की चालों को नाकाम बना देने वाला है और आने वाले वक़्त में उनको ज़लील करने वाला है, और वे तबाह व बरबाद होने वाले हैं।

अगर तुम लोग फ़ैसला चाहते हो तो वह फ़ैसला तुम्हारे सामने आ मौजूद हुआ, और अगर बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा है। और अगर तुम फिर (वही काम) करोगे तो हम भी फिर (वही काम) करेंगे और तुम्हारी जमअ़ीयत "यानी जमाअ़त व संगठन" तुम्हारे ज़रा भी काम न आएगी, अगरचे कितनी ही ज़्यादा हो, और वाक़ई बात यह है कि अल्लाह (असल में) ईमान वालों के साथ है। (19)	اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ع ۲ ۱٦

तेरा फ़ैसला तेरे हाथों में है

काफ़िरों से ख़िताब है कि अगर फ़तह माँग रहे थे और ख़ुदा से कह रहे थे कि हमारे और दुश्मनों के बीच फ़ैसले कर दे तो जो तुम माँगते थे वही हुआ। ऐ ख़ुदा! जिसने हमसे ताल्लुक़ तोड़ रखा है और अ़जीब तरह की नामानूस बातें हमें पेश कर रहा है, कल उसे ज़लील कर, यह तो उन्हीं काफ़िरों की माँग थी। पस यह आयत उतरीः

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ.

जो तुम फ़तह माँग रहे थे, लो फ़तह आ गई।

सुद्दी रह. कहते हैं कि मक्का के मुश्रिक लोग बदर की जंग के लिये जब मक्का से चलने लगे तो काबे के ग़िलाफ़ को पकड़कर ख़ुदा से दुआ़ माँगने और कहने लगे "ऐ ख़ुदा! दोनों फ़रीक़ों में से जो तेरे

Maktab E Ashraf

नज़दीक बेहतर और सही है और जिसका क़बीला बेहतर क़बीला है, उसकी मदद फ़रमा" चुनाँचे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है कि तुम जैसा कहते हो वैसा ही मैं तुम्हारी मदद करता हूँ और वह मदद मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ होगी। चुनाँचे इरशाद है किः

وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ.

यानी अगर तुम कुफ़्र से बाज़ आ जाओगे तो इसके अन्दर तुम्हारी दीन व दुनिया में भलाई है, और अगर तुमने फिर शिर्क व कुफ़्र किया तो हम भी दोबारा सज़ा देंगे। और कुफ़्र व गुमराही को तुमने फिर अपनाया तो हम भी फिर ऐसा ही मज़ा चखायेंगे और दोबारा मुहम्मद सल्ल. को फ़तह व नुसरत देंगे और तुम्हारी जमाअ़त चाहे कितनी ही ज़्यादा क्यों न हो, कुछ तुम्हारे काम न आयेगी, क्योंकि ख़ुदा जिसके साथ हो उस पर कौन ग़ालिब आ सकता है?

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ.

अल्लाह तआ़ला मोमिनों के साथ है, और यही नबी सल्ल. की जमाअ़त है।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का कहना मानो और उसके रसूल का, और उस (का कहना मानने) से मुँह मत फेरना, और तुम (एतिक़ाद से) सुन तो लेते ही हो। (20) और तुम उन लोगों की तरह मत होना जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया, हालाँकि वे सुनते-सुनाते कुछ नहीं। (21) बेशक मख़्लूक़ में सबसे बुरे अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जो बहरे हैं, गूँगे हैं, जो कि ज़रा नहीं समझते। (22) और अगर अल्लाह तआ़ला उनमें कोई ख़ूबी देखते तो उनको सुनने की तौफ़ीक़ देते, और अगर उनको अब सुना दें तो ज़रूर मुँह फेर लेंगे, बेरुख़ी करते हुए। (23)	يٰٓـاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ○ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ○ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ○ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ○

इताअ़ते ख़ुदा और उसके बाद इताअ़ते रसूल

मोमिनों को अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करने और अल्लाह व उसके रसूल की मुख़ालफ़त को छोड़ देने का हुक्म होता है, और यह कि काफ़िरों के जैसे न बनो, और इसी लिये फ़रमाया "व ला तवल्लौ अ़न्हु" यानी इस हुक्म के मानने से मुँह न फेरो, हालाँकि तुम जानते हो कि नबी सल्ल. किस बात की तरफ़ बुला रहे हैं, और उन लोगों जैसे न बन जाओ जो कहते हैं कि हाँ हमने सुना हालाँकि वे नहीं सुनते। बाज़ कहते हैं कि इससे मुनाफ़िक़ लोग मुराद हैं, जिनका तरीक़ा यह था कि ज़बान से तो कहते थे कि हम सुनते हैं, क़बूल करते हैं, लेकिन ख़ाक नहीं सुनते थे। फिर आगाह फ़रमाया जा रहा है कि इनसान की यह क़िस्म फ़ितरी तौर पर सारी मख़्लूक़ से बुरी है, चौपायों और जानवरों में बुरे वे हैं जो हक़ बात सुनने

में बहरे हैं, हक़ बात बोलते नहीं गूँगे हैं, अ़क्ल ही नहीं रखते क्योंकि हक़ बात समझते नहीं। यह बहुत बुरी मख़्लूक़ है, और यह काफ़िर इनसान हैं, जानवर तो जिस फ़ितरत पर पैदा हुए हैं उसी ढर्रे पर चल रहे हैं, गोया ख़ुदा के फ़रमाँबरदार हैं। इनसान तो अपनी फ़ितरत के एतिबार से इबादत के लिये पैदा किये गये हैं, लेकिन फिर भी ये कुफ़्र करते हैं, यानी ख़िलाफ़े फ़ितरत करने की वजह से जानवरों से भी बदतर हैं। इसलिये इन्हें जानवरों से तश्बीह दी। और फ़रमाया कि काफ़िरों की मिसाल उन जानवरों के जैसी है जो पुकारने वाले का मतलब तो कुछ नहीं समझता सिर्फ़ आवाज़ को सुनता है। फिर फ़रमाया बल्कि ये काफ़िर जानवरों से भी गये गुज़रे हैं। ऐसे ही लोग इन्तिहाई ग़फ़लत में हैं।

कहा गया है कि इससे मुराद क़ुरैश के बनी अ़ब्दुद्दार के लोग हैं। बाज़ का ख़्याल है कि इससे मुनाफ़िक़ मुराद हैं, मगर मुश्रिकीन व मुनाफ़िक़ों में कोई एक दूसरे से अलग होने वाली बात नहीं, इसलिये कि ये दोनों फ़िर्क़े बेअ़क़्ल और बेसमझ हैं, और नेक अ़मल करने की इनमें सलाहियत ही नहीं। फिर इरशाद होता है कि अगर ख़ुदा जानता होता कि ये समझाने से समझ जायेंगे और इनमें कोई ख़ैर हो सकती है तो अल्लाह इन्हें सुनाता, यानी सुनने की क़ुव्वत देता। इस इबारत का मतलब यह है कि चूँकि उनमें ख़ैर ही नहीं इसलिये वे समझते ही नहीं हैं, और अगर ख़ुदा उन्हें सुनाये भी तो वे कमबख़्त सीधी राह इख़्तियार न करेंगे, मुँह ही मोड़ेंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝	ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के कहने पर अ़मल किया करो, जबकि रसूल तुमको तुम्हारी ज़िन्दगी देने वाली चीज़ की तरफ़ बुलाते हों, और जान लो कि अल्लाह तआ़ला आड़ बन जाया करता है आदमी के और उसके दिल के बीच में, और बेशक तुम सबको ख़ुदा ही के पास जमा होना है। (24)

इत्मीनान नहीं है

ऐ ईमान वालो! तुम्हारी ही इस्लाह और मस्लेहत (बेहतराई और भलाई) की ख़ातिर जब नबी तुम्हें बुलायें तो फ़ौरन क़बूल कर लो और हुक्म के पूरा करने में जल्दी करो। अबू सईद बिन अल-मुअ़ल्ला कहते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि नबी सल्ल. का गुज़र हुआ, आपने मुझे आवाज़ दी लेकिन नमाज़ की वजह से मैं न जा सका। नमाज़ पढ़कर मैं पहुँचा तो फ़रमाया कि क्यों अब तक नहीं आये? क्या तुमसे ख़ुदा ने नहीं कहा है कि ख़ुदा का रसूल तुम्हारे ही भले के लिये जब तुम्हें बुलाये तो फ़ौरन हाज़िर हो जाओ? फिर फ़रमाया कि मैं यहाँ से चलने से पहले तुम्हें क़ुरआन की एक अ़जीब सूरः की तालीम करूँगा। फिर हुज़ूर सल्ल. जाने लगे तो मैंने याद दिला दिया, ग़र्ज़ कि फ़ौरी तामील का हुक्म है।

एक और रिवायत में है कि यह वाक़िआ़ अबू सईद ख़ुदरी का है, आपने यह सूरत सूरः फ़ातिहा की बताई और फ़रमाया यही "सब्अ़े मसानी" है, यानी सात आयतें हैं जो हर वक़्त नमाज़ में दोहराई जाती रहती हैं। इस हदीस का बयान सूरः फ़ातिहा की तफ़सीर में गुज़र चुका है। हज़रत मुजाहिद रह. कहते हैं कि "लिमा युहयीकुम" के मायने हैं हक़ की ख़ातिर। क़तादा रह. कहते हैं कि यही क़ुरआन है जिसमें निजात,

Maktab E Ashraf

बक़ा और ज़िन्दगी है। सुद्दी रह. कहते हैं कि इस्लाम लाने में ही उनकी ज़िन्दगी है और कुफ़्र में मौत है, या यह कि जब नबी सल्ल. तुम्हें जंग के लिये बुलायें कि जिसके ज़रिये अल्लाह ने तुम्हें इज़्ज़त बख़्शी, हालाँकि उससे पहले तुम ज़लील थे और कमज़ोरी के बाद तुम्हें क़ुव्वत बख़्शी, और पहले तुम काफ़िरों से मग़लूब (दबे हुए) थे फिर तुम उन पर ग़ालिब हो गये। फ़रमायाः

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ.

जान लो कि अल्लाह इनसान और इनसान के दिल के दरमियान रोक है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि रोक है मोमिन और कुफ़्र के बीच, और काफ़िर के और ईमान के बीच, कि मोमिन को कुफ़्र करनें नहीं देता और काफ़िर को ईमान लाने नहीं देता। मुजाहिद रह. कहते हैं कि वह यूँ ही हाईल (रोक) है कि काफ़िर को समझने नहीं देता। सुद्दी रह. कहते हैं कि कोई भी इसकी क़ुदरत नहीं रखता कि उसकी इजाज़त के बग़ैर ईमान लाये या कुफ़्र करे। क़तादा रह. कहते हैं कि यह आयत इस आयत जैसी है किः

نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ.

कि हम इनसान के इस क़द्र क़रीब हैं कि उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा।

और बहुत सारी हदीसें इस मज़मून पर मुश्तमिल नक़ल की गयी हैं। हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि अक्सर आप फ़रमाया करते थेः

يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ.

ऐ दिलों को बदलने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर साबित (क़ायम और मज़बूत) रख।

तो हमने कहा या रसूलल्लाह! हम आप पर और क़ुरआन पर ईमान ला चुके हैं, क्या आपको हम पर कोई अन्देशा है? फ़रमाया हाँ! क्योंकि हो सकता है कि तुम बदल जाओ, क्योंकि लोगों के दिल अल्लाह की दो उंगलियों के बीच हैं। जब चाहे बदल दे। नवास बिन समआ़न कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते थे कि हर दिल ख़ुदा की दो उंगलियों के बीच है। अगर ख़ुदा तआ़ला उसको सीधा रखना चाहे तो वह सीधा रहता है, अगर चाहे बिगाड़ दे तो वह दिल बिगड़ जाता है। और फ़रमाया कि तराज़ू ख़ुदा के हाथ में है चाहे हल्का कर दे चाहे भारी। उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! क्या दिल बदल जाते हैं? फ़रमाया हाँ! ख़ुदा अगर चाहे तो इनसान के दिल को सीधा और सही राह पर रहने दे, और अगर चाहे तो वह टेढ़ा कर दे। इसी लिये हम ख़ुदा से दुआ़ माँगते हैं किः

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ.

यानी ऐ ख़ुदा! हिदायत पर होने के बाद हमारे दिलों को कज (टेढ़ा) न होने दे, और अपनी तरफ़ से हमारे लिये रहमत भेज, तू बड़ा देने और बख़्शने वाला है।

मैंने कहा या रसूलल्लाह! मुझे ऐसी दुआ़ सिखलाईये कि मैं अपने लिये वह दुआ़ माँगती रहूँ तो फ़रमाया यूँ दुआ़ माँगा करोः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْ لِىْ ذَنْبِىْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِىْ وَاَجِرْنِىْ مِنْ مُّضِلَّاتِ الْفِتَنِ

Maktab E Ashraf

مَآاَحْيَيْتَنِي.

यानी ऐ अल्लाह! मुहम्मद नबी के रब! मेरे गुनाहों को माफ़ कर दे, और मेरे दिल की गन्दगी व बुराई दूर कर दे और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ हर तरह के फ़ितनों और बहकने से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा।

और आपने फ़रमाया कि इनसानों के दिल अल्लाह तआ़ला के पास एक दिल की तरह हैं कि उन्हें जिस तरह चाहे फेरे। फिर फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَا اِلٰى طَاعَتِكَ.

यानी ऐ दिलों के फेरने वाले! हमारे दिलों को अपनी ताअ़त (फ़रमाँबरदारी) की तरफ़ फेर दे।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ○	और तुम ऐसे वबाल से बचो कि जो ख़ास उन्हीं लोगों पर न पड़ेगा जो तुममें से उन गुनाहों के करने वाले हुए हैं। और यह जान लो कि अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (25)

बहुत बड़ी आज़माईश

मोमिनों को आज़माईश से डराया जा रहा है कि ख़ुदा की आज़माईश गुनाहगार और नेकोकार सबसे मुताल्लिक़ होगी। सिर्फ़ गुनाहगार उसके साथ मख़्सूस नहीं। हज़रत ज़ुबैर रज़ि. से कहा गया है कि ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! तुम्हें क्या हो गया? अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान क़त्ल कर दिये गये, तुमने उस्मान को खो दिया, फिर उनके ख़ून के दावेदार बन गये? दावेदार ही बनना था तो उन्हें क़त्ल क्यों होने दिया। तो ज़ुबैर रज़ि. ने कहा- यह ख़ुदा की आज़माईश (इम्तिहान) थी, जिसमें हम लोग मुब्तला हो गये। हम नबी सल्ल., अबू बक्र रज़ि., उमर रज़ि, उस्मान रज़ि., के ज़माने में क़ुरआन के अन्दर पढ़ते थेः

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً.

यानी तुम भी ऐसी आज़माईश में मुब्तला होगे जो सिर्फ़ ज़ालिमों ही के साथ ख़ास नहीं, बल्कि सबका इम्तिहान होगा। लेकिन हमें गुमान भी न था कि हमीं को उससे साबक़ा पड़ेगा, यहाँ तक कि वह आज़माईश हम पर आ पड़ी और मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ मरे और हज़रत उस्मान रज़ि. के क़त्ल से इस फ़ितने की शुरूआत हो गई।

हज़रत हसन बसरी रह. से रिवायत है कि यह आयत हज़रत अ़ली, अ़म्मार, तल्हा और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के बारे में उतरी है। ज़ुबैर रज़ि. का बयान है कि हम हमेशा यह आयत पढ़ते रहते थे लेकिन क्या ख़बर थी कि इसका मिस्दाक़ हम ही होंगे। सुद्दी रह. का ख़्याल है कि यह ख़ासकर बदर वालों के हक़ में उतरी है। जंगे जमल में वही इसका मिस्दाक़ बने और आपस में लड़ बैठे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का ख़्याल है कि इससे सिर्फ़ नबी करीम के सहाबा मुराद हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. इसकी तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि मोमिनों को हुक्म है कि बुराई को मुसलमानों में फैलने न दो, जहाँ किसी को किसी बुराई और नाजायज़ काम में मुब्तला देखो फ़ौरन रोक दो, वरना अ़ज़ाब सब पर होने लगेगा। यही तफ़सीर ठीक है। मुजाहिद रह. कहते हैं कि यह हुक्म तुम्हारे लिये भी है। इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं कि तुम में से हर शख़्स इस

Maktab E Ashraf

आज़माईश में मुब्तला होगा। क्योंकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

إِنَّمَآ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ.

यानी तुम्हारे माल और औलाद तुम्हारे लिये फ़ितना और आज़माईश हैं।

तुम में से हर शख़्स को फ़ितनों की गुमराहियों से ख़ुदा की पनाह माँगनी चाहिये, क्योंकि यह चेतावनी सहाबा और ग़ैर-सहाबा सबके लिये है। अगरचे यह ज़रूर सही है कि ख़िताब सहाबा से है। यह हदीस फ़ितनों और आज़माईश से डरने पर दलालत करती है और इस विषय से मुताल्लिक़ इन्शा-अल्लाह तआ़ला एक मुस्तक़िल किताब में तफ़सील लिखी जायेगी कि यह काम इमामों ने भी मुस्तक़िल किताबों की सूरत में अन्जाम दिया है, यहाँ जिस चीज़ का ख़ुसूसियत से ज़िक्र है वह यह कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते थे कि अल्लाह तआ़ला ख़्वास के अ़मल के सबब अ़वाम पर अ़ज़ाब नहीं भेजता है, लेकिन जबकि ख़ास लोग किसी बुराई को क़ौम में फैला देखते हैं और उस बुराई को रोकने पर क़ादिर होते हैं लेकिन अपनी ताक़त और इख़्तियार को काम में लाकर नहीं रोकते तो फिर उमूमी अ़ज़ाब आ जाता है, और उसमें ख़ास व आ़म सब मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाते हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! जब तक तुम 'अमर बिल-मारूफ़' (अच्छे कामों का हुक्म करना) और 'नही अ़निल-मुन्कर' (बुराईयों से रोकना) करते रहोगे उस वक़्त तक अ़ज़ाब न आयेगा, और जहाँ बुरी बातों से तुमने रोकना छोड़ दिया और नेक काम की तरग़ीब से रुक गये तो अल्लाह पाक तुम पर बहुत सख़्त अ़ज़ाब भेज सकता है। फिर तुम लाख दुआ़ करोगे दुआ़ क़बूल न होगी। या यह कि अल्लाह तआ़ला तुम पर दूसरी क़ौम को मुसल्लत कर देगा, फिर तुम्हारी सारी दुआ़यें बेकार हो जायेंगी।

हज़रत अबू रक़ाद कहते हैं कि मैंने एक ग़ुलाम को हुज़ैफ़ा की तरफ़ भेजा तो वह उस वक़्त यह कह रहे थे कि नबी सल्ल. के ज़माने में अगर एक बात भी कोई इस क़िस्म की कह देता तो उसको मुनाफ़िक़ समझने लगते। लेकिन आज एक बैठक में तुम में से एक आदमी की ज़बान से मैं ऐसे चार मुनाफ़िक़ाना कलिमात सुन रहा हूँ। तुमको चाहिये कि नेक कामों का हुक्म दिया करो, बुरी बातों से फ़ौरन रोक दिया करो, लोगों को ख़ैर पर उभारा करो, वरना तुम सब के सब अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाओगे। या अ़ज़ाब इस अन्दाज़ का होगा कि तुम्हारे हाकिम बुरे लोग बना दिये जायेंगे, फिर अच्छे लोग भी लाख दुआ़यें करें कुछ न होगा। नोमान बिन बशीर तक़रीर कर रहे थे और अपनी दोनों उंगलियों से अपने कानों की तरफ़ इशारा कर रहे थे, और कह रहे थे कि अल्लाह की हदों पर क़ायम न रहने वाले, और अल्लाह की हदों (सीमाओं) को तोड़ने वाले या उसमें सुस्ती और ग़फ़लत करने वालों की मिसाल यूँ समझो जैसे कि चन्द लोग किसी कश्ती में सवार हैं, कश्ती के ऊपर के लोग नीचे के लोगों की तकलीफ़ का सबब बने और नीचे के लोगों ने ऊपर के लोगों को तकलीफ़ पहुँचाई। यानी नीचे के लोगों को पानी की ज़रूरत पड़ी तो ऊपर गये ताकि पानी खींच लायें, लेकिन ऊपर वालों को तकलीफ़ होने लगी तो कहने लगे कि अगर हम कश्ती में नीचे ही से कोई तख़्ता हटाकर पानी की सबील (बन्दोबस्त) कर लें तो ऊपर वालों को तकलीफ़ न होगी। अब यह ज़ाहिर है कि इसका नतीजा क्या हुआ होगा, कश्ती में पानी आने के सबब सब डूब गये होंगे। चाहिये कि कश्ती में सूराख़ करने से उन्हें रोक दिया जाये।

इसी तरह अगर इन गुनाहगारों को तुम छोड़ दोगे, गुनाह के काम से रोकोगे नहीं तो कश्ती वालों की तरह तुम सबके सब हलाक हो जाओगे, अगरचे कश्ती के ऊपर वालों की तरह तुम्हारा अपना क़ुसूर न हो। इसलिये यह सज़ा है इस बात की कि रोका क्यों नहीं। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु

Maktab E Ashraf

अ़न्हा से रिवायत है कि फ़रमाया अल्लाह के रसूल ने- गुनाह और बुराई जब मेरी उम्मत में आ़म हो जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब को आ़म कर देगा। मैंने कहा या रसूलल्लाह! उसमें नेक लोग भी तो होंगे? आपने फ़रमाया हाँ वे भी अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे, लेकिन मरने पर अल्लाह की मग़्फ़िरत उन्हें हासिल रहेगी।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ○	और उस हालत को याद करो जबकि तुम थोड़े से थे, सरज़मीन में कमज़ोर शुमार किए जाते थे, और इस अन्देशे में रहते थे कि तुमको (मुख़ालिफ़) लोग नोच-खसोट न लें। सो (ऐसी हालत में) अल्लाह ने तुमको (मदीना में) रहने को जगह दी, और तुमको अपनी मदद से क़ुव्वत दी, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें (खाने को) अ़ता फ़रमाईं, ताकि तुम शुक्र करो। (26)

बड़ा इन्क़िलाब

अल्लाह पाक उन नेमतों को बता रहा है जो मोमिनों पर की गईं कि तुम संख्या में कम थे हमने तुम्हें बढ़ा दिया, कमज़ोर थे और डरे हुए थे, हमने क़वी और ताक़तवर बना दिया, और ख़ौफ़ के असबाब दूर कर दिये। ग़रीब और फ़क़ीर थे, पाक रिज़्क़ दिया। शुक्रगुज़ार बनाया। इताअ़त करने लगे और हर बात में फ़रमाँबरदार हो गये। यह हाल मोमिनों का उस वक़्त था जबकि वे मक्का में थे, और तादाद में बहुत थोड़े थे, कमज़ोर थे। मजूसी, रोमी सबके सब उनकी कम संख्या और कमज़ोरी के सबब उनके क़त्ल के पीछे लगे थे, हर आन उन्हें ख़ौफ़ था कि वे उचक लिये जायेंगे। यही हालत एक अ़रसे तक रही, फिर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मदीने की तरफ़ हिजरत करने का हुक्म दिया, वहाँ उन्हें पनाह मिली, मदीने के लोगों ने उनकी मदद की, बदर के दिन और दूसरी लड़ाईयों में उनका साथ दिया, जान व माल उन पर क़ुरबान कर दिया, क्योंकि वे अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअ़त करना चाहते थे।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ.

उस हालत को याद करो जब तुम बहुत कम थे और सरज़मीन (मुल्क) में कमज़ोर थे।

क़तादा रह. कहते हैं कि अ़रब में ये लोग बहुत ही कमज़ोरी में थे। इनकी ज़िन्दगी बहुत तबाह थी। पेट से भूखे, जिस्म से नंगे, राह से बेराह, जो भी था बदनसीब, इन्हें तो खाने को न मिलता था, बल्कि इन ही को खाया जा रहा था। हमें तो नहीं मालूम कि दुनिया भर में इनसे बढ़कर भी कोई ज़लील हालत में हो। लेकिन इस्लाम लाने के बाद क्या हुआ, यही ज़लील लोग मुल्कों पर क़ाबिज़ हो गये, हाकिम और बादशाह बन गये। रिज़्क़ ढेरों मिलने लगा, बादशाहों पर भी हुक्म चलाने लगे। अल्लाह ने इन्हें वो सब कुछ दिया जो आज तुम देख रहे हो। अब अल्लाह की नेमतों का शुक्र करो, हक़ीक़त में वही नेमतें देने वाला है, शुक्रगुज़ार बन्दों को पसन्द करता है और दौलत व नेमत को और बढ़ाता है।

Maktaba Ashraf

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के हुक़ूक़ में ख़लल मत डालो, और अपनी हिफ़ाज़त के क़ाबिल चीज़ों में ख़लल मत डालो, और तुम तो (उसका नुक़सानदेह होना) जानते हो। (27) और तुम (इस बात को) जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है, और (इस बात को भी जान लो कि) अल्लाह तआ़ला के पास बड़ा भारी अज्र (मौजूद) है। (28)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝

ع ٣ ١٧

ख़ियानत बड़ा पाप है

यह आयत अबू लबाबा बिन अ़ब्दुल-मुन्ज़िर के हक़ में उतरी है, जबकि नबी करीम सल्ल. ने उन्हें बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों की तरफ़ भेजा था कि हुक्मे रसूल की शर्त मानते हुए क़िला ख़ाली कर दें। यहूदियों ने अबू लबाबा ही से मश्विरा माँगा। उन्होंने उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ मश्विरा दिया। उसके बाद ही अबू लबाबा को एहसास हुआ और वह ताड़ गये कि यह तो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत हुई। चुनाँचे क़सम खा बैठे कि जब तक अल्लाह तआ़ला तौबा क़बूल न फ़रमा लेगा मर जायेंगे लेकिन खाना न खायेंगे। अब मदीने की मस्जिद में आये, सुतून से अपने आपको बाँध दिया, नौ दिन इसी हालत में गुज़रे भूख प्यास से बेहोश होकर गिर गये यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़बानी अल्लाह तआ़ला ने तौबा क़बूल फ़रमाई। लोग ख़ुशख़बरी देते हुए आये और चाहा कि सुतून से खोल दें। अबू लबाबा ने कहा मुझे सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल. खोल सकते हैं। चुनाँचे रसूलुल्लाह सल्ल. ने खोला तो कहने लगे या रसूलल्लाह! मैंने अपना सारा माल सदक़ा कर दिया। आपने फ़रमाया नहीं! सिर्फ़ एक तिहाई सदक़ा होगा। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा कहते हैं कि मज़मून के एतिबार से यह आयत हज़रत उस्मान रज़ि. के क़त्ल की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) से मुताल्लिक़ है। क्योंकि अमीर (मुसलमानों के हाकिम व ख़लीफ़ा) को फ़ितना व फ़साद पैदा करके क़त्ल कर देना अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत है।

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. कहते हैं कि अबू सुफ़ियान मक्के से निकले, जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर हुज़ूर सल्ल. को ख़बर दी कि अबू सुफ़ियान फ़ुलाँ मक़ाम पर है तो हुज़ूर सल्ल. ने सहाबा से फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान फ़ुलाँ मक़ाम पर है, उसको गिरफ़्तार करने के लिये निकलो और यह मामला बिल्कुल राज़ में रहे, लेकिन एक मुनाफ़िक़ ने अबू सुफ़ियान को लिख भेजा कि मुहम्मद तुमको पकड़ने के पीछे लगे हैं होशियार हो जाओ। तो यह आयत उतरी कि अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत न करो, रसूल का राज़ ज़ाहिर कर देना यही रसूल की ख़ियानत है। यह हदीस ग़रीब है। आयत के मज़मून से भी इसका सुबूत नहीं मिलता।

मुस्लिम व बुख़ारी में हातिब बिन अबी बल्तआ़ का क़िस्सा यूँ लिखा है कि उन्होंने क़ुरैश के काफ़िरों को नबी सल्ल. के इरादे से आगाह करने के लिये ख़त लिखा, यह फ़तह मक्का के वक़्त की बात है, अल्लाह ने रसूल को आगाह फ़रमा दिया। आपने पीछे ही आदमी को दौड़ाया वह ख़त पकड़ा गया, हातिब

Maktab E Ashraf

को बुलाया गया, हातिब ने अपने क़ुसूर को मान लिया। उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. कहने लगे या रसूलल्लाह! इसकी गर्दन उड़ा दी जाये, इसने अल्लाह और रसूल से ख़ियानत की है। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया उमर! जाने भी दो, यह बदर के जिहाद में शामिल था, क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि बदर के मुजाहिदों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया है कि मैंने तुम्हें बख़्श दिया, तुम्हारे सब गुनाह माफ़ हैं। ग़र्ज़ कि ज़्यादा सही यही है कि यह आयत आ़म है। अगरचे यह दुरुस्त है कि आयत का शाने नुज़ूल एक सबबे ख़ास है और उलेमा के नज़दीक लफ़्ज़ के आ़म होने के क़ायल हो सकते हैं, सबब ख़ास न हो तो न सही, और ख़ियानत की तारीफ़ (परिभाषा) में छोटे बड़े लाज़िम और मुतअ़द्दी सब ही गुनाह शामिल हैं।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि यहाँ लफ़्ज़ 'अमानत' से वे सारे आमाल मुराद हैं जो अल्लाह ने बन्दों पर फ़र्ज़ कर रखे हैं। मुराद यह है कि फ़रीज़े को न तोड़ो, सुन्नत न छोड़ो, गुनाह और नाफ़रमानी से बचो। उर्वा बिन ज़ुबैर कहते हैं- मतलब यह है कि ऐसा न करो कि सामने तो किसी की मर्ज़ी की बात बोलो और उसकी पीठ पीछे किसी से उसकी ग़ीबत या मुख़ालफ़त करो, असली ख़ियानत यही है, अमानत इसी से ख़त्म होती है।

सुद्दी रह. कहते हैं कि अल्लाह और रसूल की ख़ियानत यही है कि आदमी आपस में ख़ियानत करे, लोग नबी सल्ल. से बात सुनते थे, दूसरों से कह देते थे। उसकी ख़बर मुश्रिकों तक पहुँच जाती थी, इसी लिये हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि दो आदमियों के दरमियान की बात हर सूरत में अमानत हुआ करती है, बात को जहाँ सुना है वहीं छोड़ देना चाहिये, किसी के सामने किसी की बात दोहराना नहीं चाहिये अगरचे उसने मना न किया हो।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ

इस आयत में 'फ़ितना' से आज़माईश और इम्तिहान मुराद है कि औलाद देकर आज़माते हैं कि तुम शुक्र करते हो या नहीं, और औलाद की ज़िम्मेदारियाँ पूरी करते हो या नहीं। या यह कि उनकी मुहब्बत में ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाते हो। अगर इस इम्तिहान में पूरे उतरोगे तो अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। और फ़रमाया कि शर (बुराई) और ख़ैर (भलाई) के ज़रिये हम तुमको आज़मायेंगे। और फ़रमाया कि मोमिनो! तुम्हारी औलाद और तुम्हारे माल ख़ुदा की याद से तुमको ग़ाफ़िल न बना दें। अगर ऐसा होगा तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। और फ़रमाया कि तुम्हारी बीवियाँ और औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, इसलिये एहतियात को सामने रखो। अल्लाह का सवाब और उसकी जन्नतें इस माल और औलाद से कहीं बेहतर हैं। ये दुश्मन की तरह नुक़सानदेह हैं और अक्सर इनमें से तुम्हारे लिये फ़ायदेमन्द नहीं बनते। अल्लाह पाक दुनिया और आख़िरत का मालिक है, क़ियामत में उसके पास बहुत बड़ा सवाब है।

हदीस में है कि "ऐ इनसान! तू मुझे ढूँढ मैं मिल जाऊँगा, मैं तुझे मिल गया तो समझ ले कि सब कुछ मिल गया। और अगर तूने मुझे खो दिया तो सब कुछ खो दिया। चाहिये कि मैं तेरे नज़दीक हर चीज़ से ज़्यादा महबूब रहूँ।"

नबी करीम सल्ल. ने फ़रमाया कि तीन चीज़ों में ईमान की ज़बरदस्त मिठास है-

1. अल्लाह और रसूल का हर चीज़ से ज़्यादा महबूब होना।

2. जिससे भी मुहब्बत और ख़ुलूस हो तो सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ातिर और लिल्लहियत के तौर पर हो, ज़ाती ग़र्ज़ शामिल न हो।

3. आग में झोंक दिया जाना बेहतर समझे इसके मुक़ाबले में कि इस्लाम के बाद मुर्तद (यानी बेदीन) हो जाये।

बल्कि रसूल की मुहब्बत को माल व औलाद पर भी मुक़द्दम समझे, जैसा कि हदीस में है कि "ख़ुदा की क़सम ईमान नसीब ही नहीं अगर अपनी जान व माल और औलाद से ज़्यादा मुझे न चाहो।"

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे, वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा और तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा, और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

तक़्वे और परहेज़गारी की बरकतें

ऐ मोमिनो! अगर तुम ख़ुदा से डरो तो अल्लाह तुमको दीन और दुनिया में निजात देगा। "फ़ुर्क़ान" से मुराद निजात या मदद या हक़ व बातिल में फ़ैसला है। यह तफ़सीर इब्ने इस्हाक़ की तफ़सीर (जो कि पहले बयान हुई) से ज़्यादा आम है, इसलिये कि जो ख़ुदा से डरेगा, उसके अहकाम बजा लायेगा, उसकी मनाही (मना की हुई बातों) से बचेगा, हक़ व बातिल की पहचान की उसे तौफ़ीक़ होगी। यह उसकी निजात व मदद का सबब होगा, उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जायेगा, ख़ुदा तआला ग़फ़्फ़ार व सत्तार बन जायेगा, अल्लाह से बहुत बड़े सवाब का हक़दार होगा जैसा कि फ़रमाया ऐ मोमिनो! ख़ुदा से डरो और रसूल की इताअत करो, ख़ुदा तुम पर दोहरी रहमत नाज़िल करेगा। वह तुम्हें एक नूर देगा कि उसकी रहनुमाई (रोशनी) में चलोगे, वह तुम्हें बख़्श देगा। वह बड़ा ग़फ़ूर व रहीम है।

और (उस वाक़िए का भी ज़िक्र कीजिए) जबकि काफ़िर लोग आपके बारे में (बड़ी- बड़ी) तदबीरें सोच रहे थे कि (आया) क़ैद कर लें या आपको क़त्ल कर डालें या आप को वतन से निकाल दें, और वे तो अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह (तआला) अपनी तदबीरें कर रहे थे, और सबसे ज़्यादा मज़बूत तदबीर वाला अल्लाह है। (30)	وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝

कमज़ोर तदबीरें और ग़ालिब तदबीर

अब काफ़िर यह चाल चलना चाहते हैं कि तुमको क़ैद करें, या क़त्ल कर दें, या वतन से निकाल दें। "इसबात" के मायने क़ैद और रोक लेने के हैं। मतलब यह है कि वे तुम्हारे साथ कोई बुरा इरादा रखते हैं। काफ़िरों ने जब यह मश्विरा किया कि नबी सल्ल. को क़ैद, या क़त्ल कर दें, या देस-निकाला दें, तो अबू तालिब ने भतीजे से पूछा क्या तुम्हें ख़बर है कि ये काफ़िर तुम्हारे साथ क्या इरादा रखते हैं? आपने

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

फ़रमाया कि कैद या कत्ल या जिला-वतनी। अबू तालिब ने पूछा आपको किसने ख़बर दी? आपने फ़रमाया मेरे रब ने ख़बर दी। अबू तालिब ने कहा तुम्हारा रब तो बहुत अच्छा रब है, हमेशा उससे ख़ैर माँगते रहो। आपने फ़रमाया मैं उससे ख़ैर क्या माँगूँगा बल्कि वही मेरी ख़ैर व भलाई चाहता है। सच तो यह है कि अबू तालिब का ज़िक्र इसमें बहुत ही अ़जीब है, बल्कि क़ाबिले इनकार। इसलिये कि यह आयत मदनी है और यह वाकिआ और क़ुरैश का इस तरह मश्विरा करना हिजरत की रात में था, और अबू तालिब की मौत तो उससे भी तीन साल पहले वाक़े हो चुकी थी। अबू तालिब की मौत ही के सबब तो काफ़िरों को हिम्मत व जुर्रत हुई थी, क्योंकि अबू तालिब तो हमेशा आपकी हिमायत और मदद करते रहते थे, और यह भतीजे की हिफ़ाज़त में क़ुरैश का मुक़ाबला करते थे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से नक़ल है कि क़ुरैश के सरदारों की एक जमाअ़त ने मश्विरे की मजलिस बुलाई, और आपको तकलीफ़ पहुँचाने की ठानी। उस मजलिस में इब्लीस भी एक बूढ़े आदमी की सूरत में आया। लोगों ने पूछा तुम कौन हो? उसने जवाब दिया मैं नज्द वालों में से हूँ। मैंने सुना है कि तुम लोग मजलिसे शूरा कर रहे हो, मैं भी चला आया ताकि मेरी नसीहत और मश्विरे से तुम मेहरूम न रहो। लोगों ने कहा आईये ज़रूर आईये। वह कहने लगा तुम लोग उस शख़्स के बारे में ख़ूब विचार और तदबीर से काम लो वरना मुम्किन है कि वह तुम पर ग़ालिब आ जाये। चुनाँचे एक ने राय दी कि उसे क़ैद कर देना चाहिये यहाँ तक कि वह क़ैद ही में हलाक हो जाये जैसा कि ज़ुहैर और नाबिग़ा शायरों को इससे पहले क़ैद कर दिया गया था, और वे वहीं मौत आने तक पड़े रहे। और यह भी तो एक शायर ही है। इस पर वह नज्दी बूढ़ा (शैतान) चीख़ उठा कि मेरी तो हरगिज़ यह राय नहीं, ख़ुदा की क़सम उसका रब उसको वहाँ से निकाल बाहर करेगा। लोगों ने कहा बड़े मियाँ ने सच कहा, कोई दूसरी तजवीज़ पेश करो। दूसरे ने राय दी कि उसको अपने मुल्क ही से निकाल बाहर करो और चैन पाओ, जब वह यहाँ रहेगा ही नहीं तो तुम्हें उससे फिर अन्देशा ही क्या है? उसका ताल्लुक़ तुम्हारे सिवा और किसी से रहेगा, तुम्हें क्या वास्ता।

यह सुनकर नज्दी बूढ़े ने कहा ख़ुदा की क़सम यह राय भी ठीक नहीं, क्या तुमको उसकी मीठी ज़बान की ख़बर नहीं? वह अपनी बातों से सब का दिल मोह लेता है। अगर तुमने ऐसा किया तो वह बाहर जाकर सारे अरब को मिला लेगा, उसके सारे हिमायती मिलकर जमा होकर बैठेंगे और तुम्हें अपने वतन से निकाल देंगे। तुम्हारे इज़्ज़तदार और सरदार सब क़त्ल हो जायेंगे। लोगों ने कहा बड़ा मियाँ सच कहता है, कोई और राय पेश हो। तो अबू जहल ने कहा मैं एक मश्विरा देता हूँ अगर तुम सोचो तो इससे बेहतर कोई दूसरी राय नहीं हो सकती। हर क़बीले से तुम एक-एक नौजवान चुन लो जो बहादुर और सम्मानित हो, हर एक के पास तलवार हो, सब मिलकर उस पर एक बार में हमला कर दें, इस तरह जब वह क़त्ल हो जाये तो उसका ख़ून विभिन्न क़बीलों में बट जायेगा, यह तो मुम्किन नहीं कि बनी हाशिम का एक क़बीला क़ुरैश के सारे क़बीलों से लड़ाई मोल ले। मजबूरन बनी हाशिम को उस क़त्ल की दियत क़बूल करनी पड़ेगी। दियत दे देंगे, हमको चैन मिल जायेगा। नज्दी बूढ़े (शैतान) ने कहा ख़ुदा की क़सम! यह राय ठीक रही, इससे बेहतर कोई राय नहीं। इस पर इत्तिफ़ाक़े राय के बाद मजलिस ख़त्म हो गई।

अब जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और हुज़ूर सल्ल. से कहा कि आजकी रात बिस्तर पर न सोना, और काफ़िरों की साज़िश की इत्तिला दे दी। आप उस रात बिस्तर पर नहीं सोये और उसी वक़्त हिजरत का हुक्म दे दिया। मदीना आने के बाद अल्लाह पाक ने आप पर सूरः अनफ़ाल नाज़िल फ़रमाई, अपनी नेमतों

Maktab E Ashraf

का ज़िक्र किया और फ़रमाया किः

يَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُاللّٰهُ ط وَاللّٰهُ خَيْرُالْمَاكِرِيْنَ.

वे चाल चलते हैं, अल्लाह भी चाल चलेगा, अल्लाह बड़ा तदबीर करने वाला है।

उनका कौल थाः

تَرَبَّصُوْابِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ، حَتّٰى يُهْلِكَ.

कि हम उसकी मौत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वह हलाक हो जाये।

इसी की तरफ़ इशारा करते हुए अल्लाह तआ़ला का इरशाद है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌنَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ.

तर्जुमाः क्या ये लोग यूँ कहते हैं कि यह शायर है, हम इसके बारे में मौत के हादसे का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

चुनाँचे उस दिन का नाम ही "यौम-ए-ज़हमत" (परेशानी और ज़हमत का दिन) पड़ गया, क्योंकि उस दिन हुज़ूर सल्ल. के क़त्ल की साज़िश की गई थी, उनके इरादों का ज़िक्र इस आयत में हैः

وَاِنْ كَادُوْالَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَاوَاِذًالَّايَلْبَثُوْنَ خِلَافَكَ اِلَّا قَلِيْلًا.

कि ये लोग इस सरज़मीन में से आपके क़दम ही उखाड़ने पर लगे थे, और अगर यह हो जाता तो ये भी फिर यहाँ बहुत ही कम ठहर पाते।

नबी सल्ल. हुक्मे ख़ुदावन्दी के इन्तिज़ार में थे और जब क़ुरैश ने क़त्ल का इरादा कर लिया तो नबी सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. को बुलाया और हुक्म दिया कि मेरे बिस्तर पर लेट जाओ। अ़ली रज़ि. सब्ज़ चादर ओढ़कर लेट गये। रसूलुल्लाह सल्ल. बाहर निकले, लोग दरवाज़े पर दिखाई दिये, आपने एक मुट्ठी भर मिट्टी ली, उनकी तरफ़ फेंकी, उनकी आँखें नबी सल्ल. की तरफ़ से फिर गईं। आप सूरः यासीन की शुरू की 9 आयतें पढ़ते हुए निकल गये।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत फ़ातिमा रसूलुल्लाह सल्ल. के पास रोती हुई आईं। आपने फ़रमाया क्यों रोती हो? हज़रत फ़ातिमा ने कहा कैसे न रोऊँ? ये क़ुरैश के लोग 'लात' व 'उज़्ज़ा' (बुतों) की क़समें खा-खाकर वादे किये हुए हैं कि आपको देखकर हमला करके क़त्ल कर देंगे, और हर एक उनमें से आपको क़त्ल करने में हिस्सा लेना चाहता है। आपने फ़रमाया बेटी वुज़ू के लिये पानी लाओ, आपने वुज़ू किया, काबा शरीफ़ की तरफ़ चले, क़ुरैशियों ने कहा कि यह वही है लेकिन साथ ही उनके सर नीचे को झुक गये, गर्दनें टेढ़ी हो गईं, वे अपनी निगाहें उठा न सके, आपने एक मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और उनकी तरफ़ फेंकी और कहा कि चेहरे बिगड़ जायें। जिसको यह कंकर लगी बदर के दिन में वह काफ़िर ज़रूर क़त्ल हुआ।

ग़र्ज़ कि आप हिजरत कर गये, ग़ार में जा पहुँचे, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को साथ ले लिया, मुश्रिक लोग रात भर आपके घर का घेराव किये रहे, और हज़रत अ़ली को हुज़ूर सल्ल. समझते रहे। सुबह के क़रीब धावा बोल दिया, लेकिन घर में अ़ली को देखा तो सारा मन्सूबा चौपट हो गया। पूछने लगे मुहम्मद कहाँ हैं? हज़रत अ़ली ने कहा मुझे कोई ख़बर नहीं। पैरों के निशानों के ज़रिये से चले, पहाड़ के क़रीब पहुँचे तो चक्कर काट गये, पहाड़ पर चढ़ गये, ग़ार के सामने से गुज़रे, ग़ार के मुँह पर मकड़ी ने जाला बुन

दिया था। कहने लगे कि अगर ग़ार (गुफ़ा) के अन्दर कोई गया होता तो इसके मुँह पर मकड़ी का इतना बड़ा जाला कैसे बाक़ी और सलामत रहता। आप ग़ार में तीन दिन ठहरे रहे। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि वे चाल चलते हैं तो हम भी अपनी चाल चलते हैं, देखो कैसे उन काफ़िरों से निजात दे दी।

Maktab E Ashraf

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا
لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ○ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ
كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ
عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا
بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ
وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ○

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, अगर हम इरादा करें तो इसके बराबर हम भी कहकर ले आएँ, ये तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बातें हैं, जो पहलों से (नक़ल होती हुई) चली आ रही हैं। (31) और जबकि उन लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यह (क़ुरआन) वाक़ई आपकी तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसाईये, या हम पर (और) कोई दर्दनाक अ़ज़ाब भेज दीजिए। (32) और अल्लाह तआ़ला ऐसा न करेंगे कि उनमें आपके होते हुए उनको (ऐसा) अ़ज़ाब दें और (यह कि) अल्लाह तआ़ला उनको (ऐसा) अ़ज़ाब न देंगे, जिस हालत में कि वे इस्तिग़फ़ार भी करते रहते हैं। (33)

काफ़िरों की बकवास और बेहूदा बातें

क़ुरैश के कुफ़्र व सरकशी की ख़बर दी जा रही है कि क़ुरआन सुनकर वे कैसा बातिल और बेहूदा दावा करते हैं। कहते हैं कि हमने जो यह क़ुरआन सुना है, चाहें तो हम भी ऐसा कह दें। यह सिर्फ़ उनका दावा ही दावा है और सिर्फ़ बकवास है। चुनाँचे इस पर बार-बार क़ुरआन में चुनौती दी गयी, चैलेंज दिया गया कि ऐसी एक ही सूरः बना लाओ, लेकिन वे ऐसा न कर सके। ऐसा कहकर वे ख़ुद अपने नफ़्सों को धोखा दे रहे हैं और अपने अहमक़ पैरोकारों को भी धोखे में रखे हुए हैं। कहते हैं कि यह कहने वाला नज़र बिन हारिस था, यह बेदीन फ़ारस के इलाक़े की तरफ़ गया हुआ था, वहाँ के ईरानी बादशाहों और रुस्तम व अस्फ़न्द-यार की तारीख़ पढ़ा हुआ था, और जब वापस हुआ तो रसूलुल्लाह सल्ल. की नुबुव्वत ज़ाहिर हो चुकी थी। आप सल्ल. लोगों को क़ुरआन सुना रहे थे। जब हज़रत मजलिस ख़त्म कर देते तो यह कमबख़्त नज़र बैठ जाता और यह ईरानी बादशाहों की तारीख़ बयान करके कहता बताओ किसने अच्छे क़िस्से सुनाये? मैंने या मुहम्मद ने? और जब अल्लाह तआ़ला ने बदर के दिन मुसलमानों को कामयाबी बख़्शी और मक्का के कुछ मुश्रिक गिरफ़्तार हुए तो हुज़ूर सल्ल. ने उसको भी गर्दन उड़ाये जाने का हक़दार क़रार दिया और उसकी भी गर्दन उड़ा दी गई। हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद ने उसको क़ैद किया हुआ था।

सईद बिन जुबैर कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल. ने बदर के रोज़ तीन क़ैदियों को क़त्ल का हुक्म दिया था- 1. उक़्बा बिन अबी मुईत। 2. तुऐमा बिन अ़दी। 3. नज़र बिन हारिस। नज़र मिक़दाद का क़ैदी था। हुज़ूर सल्ल. ने जब उसके क़त्ल का हुक्म दिया तो मिक़दाद ने कहा या रसूलल्लाह! यह तो मेरा क़ैदी है, मुझे

Maktaba E Ashraf

मिलना चाहिये। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया इसने अल्लाह की किताब का मज़ाक़ उड़ाया है, चुनाँचे क़त्ल का हुक्म हो गया। मिक़दाद ने अपने क़ैदी की तरफ़ फिर हुज़ूर को तवज्जोह दिलाई तो आपने यह दुआ की कि या अल्लाह! तू अपने फ़ज़्ल से मिक़दाद को बहुत कुछ दे। मिक़दाद कहने लगे या रसूलल्लाह! इसरार के साथ मुतालबे से मेरी यही तो ग़र्ज़ थी कि आपसे दुआ करा लूँ। इसी नज़र के बारे में यह आयत उतरीः

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا..... الخ

कि जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया.........।

सईद बिन जुबैर ने तईमा के बजाय मुतइम बिन अदी का नाम कहा है, और यह बात ग़लत है, इसलिये कि मुतइम बिन अदी तो बदर के रोज़ ज़िन्दा ही नहीं था। इसी लिये उस रोज़ हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि अगर आज मुतइम बिन अदी ज़िन्दा होता और क़त्ल होने वालों में से किसी का सवाल करता तो मैं उसको यह क़ैदी दे देता। आपने यह इसलिये फ़रमाया कि उसने हुज़ूर सल्ल. को उस वक़्त बचाया था जबकि आप ताईफ़ के ज़ालिमों से पीछा छुड़ाकर मक्का वापस हो रहे थे।

"असातीर" का मतलब है वे किताबें और मज़मून जो सीखकर लोगों को सुनाये जाते हैं और ये महज़ अफ़साने होते हैं। जैसा कि दूसरी जगह अल्लाह तआला ने यूँ फ़रमाया हैः

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۔ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۔ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا.

काफ़िर कहते हैं कि यह क़ुरआन तो पहले गुज़रे लोगों के झूठे अफ़साने हैं, जिन्हें लिख लिया गया, और रात-दिन सुनाया जाता है। जो अल्लाह की तरफ़ रुजू करता है वह उसको माफ़ फ़रमाकर उसकी तौबा क़बूल करता है। वह आसमान व ज़मीन के भेदों को जानता है, और यह क़ुरआन उसी की तरफ़ से है।

काफ़िर कहते थे कि "ऐ ख़ुदा! अगर यह क़ुरआन हक़ है तो आसमान से हम पर पत्थर बरसा, या दर्दनाक अज़ाब दे"। यह दुआ उनके जहल व नादानी और सरकशी व बैर की वजह से है, इसलिये वे बेवक़ूफ़ी में बदनाम हैं। उन्हें तो यह चाहिये था कि वे दुआ यूँ माँगते कि इलाही! अगर यह क़ुरआन तेरी ही तरफ़ से है तो हमें इसकी पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। लेकिन उन्होंने तो अपनी जान पर अज़ाब मोल ले लिया, और सज़ा के लिये जल्दी करने लगे। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि "ये लोग अज़ाब के लिये जल्दी करते हैं, अरे अज़ाब का अगर एक दिन मुक़र्रर न होता तो अज़ाब उन्हें फ़ौरन ही आ पकड़ता कि उन्हें ख़बर तक न होती।" वे कहते हैं किः

قَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا..... الخ

और

سَأَلَ سَآئِلٌ ۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ.

पहले गुज़री उम्मतों के जाहिलों ने भी तो ऐसा ही कहा था। शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम कहती है कि ऐ शुऐब! अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आसमान गिरा दो, या यह कि ऐ ख़ुदा! अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे। अबू जहल बिन हिशाम ने यही कहा था किः

اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ.

Maktab E Ashraf

कि अगर यह सच्चा क़ुरआन है तो आसमान से हम पर पत्थर क्यों नहीं बरसा देते। तो यह आयत उतरीः

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ.... الخ

यानी जब तक तुम उनके बीच में हो ख़ुदा उन्हें अ़ज़ाब न देगा, या जब तक कि वे इस्तिग़फ़ार करते (यानी अल्लाह से माफ़ी माँगते) हैं। और फ़रमायाः

لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ.

यानी तुम हमारे पास अकेले-अकेले आओगे, जैसा कि पहली बार हमने तुम्हें पैदा किया था।

अ़ता रह. कहते हैं कि इस मज़मून की दस आयतें क़ुरआने पाक में हैं। बरीदा कहते हैं कि मैंने अ़मर बिन आ़स रज़ि. को जंगे उहुद में घोड़े पर सवार देखा और वह यह कह रहे थे कि ऐ ख़ुदा! मुहम्मद जो कहते हैं अगर वह सच है तो मुझे घोड़े समेत ज़मीन में धंसा दे। यह उस वक़्त की बात है जब अ़मर बिन आ़स रज़ि. ईमान नहीं लाये थे। इस उम्मत के जाहिलों का भी ऐसा ही क़ौल था। अल्लाह पाक अपनी आयत को फिर दोहराता है और उन पर अपनी रहमत का ज़िक्र फ़रमाता है कि जब तक वे इस्तिग़फ़ार करते हैं और आप उनमें हैं, हम उन पर आसमानी अ़ज़ाब नाज़िल न करेंगे।

मुश्रिक लोग बैतुल्लाह का तवाफ़ करते थे और कहते थे "लब्बैक अल्लाहुम्-म लब्बैक लब्बैक ला शरी-क ल-क लब्बैक" तो नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं 'बस-बस यहीं तक बोलो आगे न बढ़ो' लेकिन काफ़िर लोग साथ ही यह भी बोलते 'इल्ला शरीकन् हु-व ल-क तमलिकुहू व मा म-ल-क' (लेकिन तेरा एक शरीक भी है, तू उसका भी मालिक है और जो कुछ उसके पास है उसका भी मालिक है) और फिर साथ ही यह भी कहते 'ग़ुफ़रान-क' यानी हम तुझसे तेरी मग़फ़िरत को चाहते हैं। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि जब तक तुम उनमें हो वे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ और सुरक्षित हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि उनको दो अमानें हासिल थीं, एक तो नबी सल्ल. का वजूद, दूसरा उनका शिर्क के बाद इस्तिग़फ़ार। अब नबी सल्ल. से सरकशी करने के बाद सिर्फ़ उनका इस्तिग़फ़ार माफ़ी का सबब रह गया। क़ुरैश आपस में कहते थे कि अल्लाह ने मुहम्मद को हमारे बीच बुज़ुर्ग (इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला) बनाया है, दिन में ख़ुदा के साथ वे जो गुस्ताख़ी करते रात को नादिम होकर कहते 'ग़ुफ़रानकल्लाहुम्-म' ऐ अल्लाह हम तेरी मग़फ़िरत और माफ़ी चाहते हैं।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने 'मा कानल्लाहु लियु-अ़ज़्ज़ि-बहुम' वाली आयत उतारी। यानी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम जब तक बस्ती से निकल नहीं जाते क़ौम पर अ़ज़ाब नहीं आया करता, उनमें बाज़ लोग वे भी थे जो पहले से ही ईमान हासिल कर चुके थे। वे इस्तिग़फ़ार करते, नमाज़ें पढ़ते, ये मुसलमान थे और हुज़ूरे-पाक की हिजरत के बाद भी मक्के में रह गये थे। हुज़ूर सल्ल. के मक्का की बस्ती को छोड़कर चले जाने के बावजूद मक्का वालों पर इसलिये अ़ज़ाब नहीं आया कि ये मुसलमान मक्का में रह गये थे और इस्तिग़फ़ार करते (अल्लाह से माफ़ी माँगते) रहते थे। ये मक्का वाले अ़ज़ाब आने से बच गये, क्योंकि ये अच्छे लोग अभी उनमें बाक़ी थे। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया था कि मेरे दुनिया से चले जाने के बाद भी क़ियामत तक इस्तिग़फ़ार लोगों को बचाता रहेगा। रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- "शैतान ने कहा ऐ ख़ुदा! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम जब तक तेरे बन्दों के जिस्मों में रूहें हैं मैं उन्हें बहकाता रहूँगा तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मुझे मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम जब तक वे इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे मैं भी उन्हें बख़्शता रहूँगा।"

Muftab E Ashraf

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ○ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ○	और (फिर) उनका क्या हक़ बनता है कि उनको अल्लाह तआला (बिल्कुल ही मामूली) सज़ा भी न दे, हालाँकि वे लोग मस्जिदे-हराम से रोकते हैं, जबकि वे लोग इस मस्जिद के मुतवल्ली (बनने के भी लायक़) नहीं। उसके मुतवल्ली (बनने के लायक़) तो सिवाय मुत्तक़ी लोगों के और कोई भी नहीं, लेकिन उनमें अक्सर लोग (अपनी नालायक़ी) का इल्म भी नहीं रखते। (34) और उनकी नमाज़ ख़ाना काबा के पास सिर्फ़ यह थी, सीटियाँ बजाना और तालियाँ बजाना, सो इस अ़ज़ाब का मज़ा चखो, अपने कुफ़्र के सबब। (35)

दुनिया का वह ज़ुल्म व ज़्यादती जिसकी दुनिया की तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती

ये अ़ज़ाब के हक़दार तो थे लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल. की बरकत से अ़ज़ाब से बच गये। इसी लिये जब आपने मक्का को छोड़ दिया तो अल्लाह तआ़ला ने बदर के दिन उन पर अ़ज़ाब वाक़े फ़रमाया। उनके सरदार क़त्ल कर दिये गये, बड़े-बड़े लोग क़ैदी बन गये, अल्लाह ने उन्हें इस्तिग़फ़ार की हिदायत फ़रमाई, लेकिन यह उसके साथ शिर्क व फ़साद को भी मिला देते थे। क़तादा और सुद्दी रह. कहते हैं कि क़ुरैश के क़त्ल होने वाले इस्तिग़फ़ार नहीं करते थे, अगर करते होते तो अल्लाह तआ़ला उन्हें बदर में ज़िल्लत की मौत न देता, और अगर ख़ुद मक्का में ये कमज़ोर मुसलमान इस्तिग़फ़ार न करते होते तो मक्का वालों पर ऐसी मुसीबत आ पड़ती कि हटाये न हटती। इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करने) की बरकत ही ने मक्का में अ़ज़ाब नाज़िल होने से क़ुरैश को बचाया और मक्का के मुसलमानों के सदक़े में वे एक अ़रसे तक अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहे। हुदैबिया के दिन में अल्लाह पाक ने फ़रमाया थाः

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْىَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ. الخ (سورہ فتح)

यानी उन लोगों ने कुफ़्र किया, बैतुल्लाह में आने से तुम्हें रोक दिया, क़ुरबानी के जानवरों को ज़िबह होने के मक़ाम तक नहीं पहुँचने दिया। अगर मक्का में ये मोमिन मर्द और औ़रतें न होतीं जिनको तुम जानते नहीं थे कि अगर तुम उनको पामाल (कुचल देते और बरबाद) कर देते तो तुमको उनकी वजह से बेख़बरी में नुक़सान और तकलीफ़ पहुँच जाती। यह इसलिये हुआ कि ख़ुदा अपने बन्दों में से जिसको चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे। अगर ये लोग यहाँ पनाह लिये हुए न होते तो कब का उन पर अ़ज़ाबे इलाही उतर चुका होता।

नबी सल्ल. मक्का में थे तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया था कि तुम्हारे होते हुए इन पर अ़ज़ाब न

दूँगा, और जबकि हज़रत मदीने की तरफ़ चले गये तो अल्लाह पाक फ़रमाता है कि तुम्हारे जानशीन (मानने वाले) अभी मक्का में हैं और इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं, इसलिये अभी अ़ज़ाब न दूँगा। और जब ये मुसलमान भी मक्का से निकल गये तो फ़रमाता है कि अब क्यों न अ़ज़ाब दिया जाये, उन्होंने तुम मुसलमानों को अल्लाह के घर (काबा शरीफ़) आने से रोका, वे ख़ुदा के दोस्त तो थे नहीं, चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने फ़तह-ए-मक्का का अ़ज़ाब उन पर नाज़िल फ़रमाया। और कहा गया है कि यह आयत "व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि-बहुम" की नासिख़ (निरस्त करने वाली) है। इक्रिमा और हसन बसरी रह. कहते हैं कि सूरः "अनफ़ाल" में "व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि-बहुम" वाली आयत को उसके बाद वाली आयत "व मा लहुम अल्ला युअ़ज़्ज़ि-बहुम" ने मन्सूख़ कर दिया। चुनाँचे "फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब" फ़रमाया गया। चुनाँचे मक्का वालों से जंग हुई और वे भूख और परेशानी के अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। यह अल्लाह तआ़ला ने शिर्क करने वालों को अ़ज़ाब से अलग भी किया है। फिर यह भी फ़रमाया कि उन्हें क्यों अ़ज़ाब न करे कि मस्जिदे हराम में वे मुसलमानों को रोकते हैं, अल्लाह के दोस्त वे नहीं बल्कि मुत्तक़ी (परहेज़गार) लोग हैं।

लेकिन अक्सर लोग यह बात नहीं जानते हालाँकि यही रोके जाने वाले लोग काबे के ज़्यादा अहल (पात्र) हैं कि उसमें नमाज़ पढ़ें, तवाफ़ करें और ये कुफ़्फ़ार मस्जिदे हराम के अहल नहीं जैसा कि फ़रमाया कि मुश्रिकों को क्या हक़ है कि अल्लाह की मस्जिद को आबाद रखें, हालाँकि कुफ़्र उनके दिलों में जड़ पकड़ चुका है। उनके तो सारे आमाल बेकार हैं और दोज़ख़ का ईंधन हैं। मसाजिद को तो वे आबाद रखें जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखें, नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें। हिदायत पाने वाले लोग यक़ीनन यही हैं। और फ़रमायाः

وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ.

ख़ुदा की राह से और मस्जिदे हराम (काबे की मस्जिद) से रोकना और मक्के के मुसलमानों को मक्के से निकाल देना यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ा गुनाह है। हुज़ूर सल्ल. से पूछा गया- आपके दोस्त कौन हैं? तो आपने फ़रमाया- मुत्तक़ी लोग। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़रमाईः

اِنْ اَوْلِيَآءُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ.

हुज़ूर सल्ल. ने क़ुरैश को जमा किया और पूछा क्या कोई ग़ैर-क़ुरैश भी तुम में हैं? लोगों ने कहा सिर्फ़ हमारे भांजे, हमारे साथी, हमारे ग़ुलाम। आपने फ़रमाया- हलीफ़ (दोस्त और सहायक), भांजे और ग़ुलाम सब एक ही क़बीले के होते हैं, ये सब औलिया (दोस्त और वली) हैं, लेकिन मेरे औलिया मुत्तक़ी लोग हैं। मुजाहिद कहते हैं कि उनसे मुजाहिद मुराद हैं जो भी हों और जहाँ भी हों।

फिर इस बात का ज़िक्र है कि मस्जिदे हराम में ये लोग क्या करते थे, इरशाद होता है कि इनकी इबादत बस यही थी कि काबे में आकर भी जानवरों की सी सीटियाँ और तालियाँ बजाते, नंगे होकर तवाफ़ करते, मुँह में उंगलियाँ रखकर सीटी की आवाज़ निकालते, रुख़्सार झुकाते, तालियाँ बजाते, बस इसी को इबादत समझते। बाईं तरफ़ से तवाफ़ करते, मक़सद यह होता कि मुसलमानों की इबादत में हर्ज (और रुकावट) पैदा करें। इस तरह ये लोग मोमिनों का मज़ाक़ उड़ाते हैं। अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद 'तस्दियतन्' के मायने कहते हैं 'ख़ुदा की राह से लोगों को रोकना'। फ़रमाता है कि अब अपने कुफ़्र का मज़ा चखो, यानी यह अ़ज़ाब कि बदर के दिन में क़त्ल भी हुए क़ैद भी हुए। मुजाहिद रह. कहते हैं कि इक़रार करने वालों पर अ़ज़ाब तलवार के ज़रिये आता है और झुठलाने वालों पर चीख़ और ज़लज़ले के तौर पर आता है।

Maktab E Ashraf

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ۝ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝	बेशक ये काफ़िर लोग अपने मालों को इसलिए ख़र्च कर रहे हैं कि अल्लाह तआ़ला की राह से रोकें, सो ये लोग अपने माल ख़र्च करते ही रहेंगे (मगर) फिर वे माल उन के हक़ में हसरत का सबब हो जाएँगे, फिर (आख़िर) मग़लूब हो जाएँगे, और काफ़िर लोगों को दोज़ख़ की तरफ़ जमा किया जायेगा। (36) ताकि अल्लाह तआ़ला नापाक (लोगों) को पाक (लोगों) से अलग कर दे और (उनसे अलग करके) नापाकों को एक- दूसरे से मिला दे यानी उन सबको एक जगह कर दे, फिर उन सबको जहन्नम में डाल दे, ऐसे ही लोग पूरे ख़सारे 'घाटे' में हैं। (37)

ع ۴ ۱۸

बेफ़ायदा ख़र्च, नफ़ा बरबाद और नुक़सान लाज़िम

क़ुरैश पर जंगे बदर में जब मुसीबत पड़ी और ये लोग मक्का वापस हुए और अबू सुफ़ियान भी क़ाफ़िले को लेकर लौटे तो अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ और इक्रिमा बिन अबी जहल और सफ़वान बिन उमैया और क़ुरैश के कई आदमी जिनके बाप, बेटे, भाई जंग में काम आये थे, अबू सुफ़ियान से और उनसे जिनका माले तिजारत इस क़ाफ़िले में था, कहने लगे कि ऐ क़ुरैश के लोगो! मुहम्मद तुमको नीचा दिखा चुके हैं, तुम्हारे सरदारों को क़त्ल कर दिया है। उनसे दोबारा लड़ने के लिये इस क़ाफ़िले का माल तुम दे दो ताकि हम उनसे अपना बदला लें। चुनाँचे उन्होंने सब माल दे दिया। इसी बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है किः

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ.

यानी काफ़िर अपना माल ख़र्च कर रहे हैं ताकि ख़ुदा का रास्ता रोक दें और वे रुपया ख़र्च करेंगे और यह माल ज़ाया हो जायेगा तो फिर अफ़सोस भी करेंगे। हम उन्हें दोबारा मग़लूब कर देंगे और वे जहन्नम की तरफ़ हाँके जायेंगे। ज़ह्हाक रह. कहते हैं कि अबू सुफ़ियान और मालों के ख़र्च करने के बारे में नहीं बल्कि यह आयत बदर वालों के बारे में उतरी है। बहरहाल यह आयत आ़म है, चाहे किसी के बारे में उतरी हो, और अगरचे सबबे नुज़ूल ख़ास हो। अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि हक़ रास्ते की पैरवी से रोकने के लिये कुफ़्फ़ार रुपया पैसा ख़ूब ख़र्च कर रहे हैं लेकिन उनके ये माल ज़ाया हो जायेंगे। उन्हें अफ़सोस व शर्मिन्दगी होगी, वे अल्लाह के नूर को बुझाना चाहते हैं और अल्लाह अपने नूर को कामिल करना चाहता है, चाहे यह काफ़िरों को बुरा ही क्यों न लगे। अल्लाह अपने दीन का मददगार, अपने कलिमे को ग़ालिब करने वाला बनेगा, उनके लिये दुनिया में रुस्वाई होगी और आख़िरत में अ़ज़ाबे दोज़ख़ होगा। जो ज़िन्दा बचा उसने अपनी आँखों से देख लिया और अपने कानों से सुन लिया कि कैसी रुस्वाई से आख़िरकार उन्हें

Maktab E Ashraf

साबका पड़ा। और जो मर गया या कत्ल हो गया वह रुस्वाई और हमेशा के अज़ाब में गिरफ़्तार हो गया।

आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ.....

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं कि इसमें नेकबख़्तों को बदबख़्तों से अलग करना मक़्सूद है। कि मोमिन काफ़िर से अलग और नुमायाँ हो जाये। और यह भी मुम्किन है कि इम्तियाज़ (फ़र्क़ करने और अलग करने) से मुराद आख़िरत का फ़र्क़ करना हो, जैसा कि फ़रमाया कि "हम मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शुरका (साथी और जिनको तुम अल्लाह का शरीक बनाते थे) अपनी जगह ठहरे रहो, हम उनके दरमियान फ़र्क़ कर देंगे" और फ़रमाया कि जब क़ियामत होगी तो वे अलग-अलग हो जायेंगे। और फ़रमाया जायेगा कि ऐ मुश्रिको और गुनाहगारो! आज मोमिनों से अलग-थलग हो जाओ। और यह मतलब भी हो सकता है कि इससे दुनिया में ही इम्तियाज़ (फ़र्क़ और अलग करना) मक़्सूद हो, कि मोमिनों के आमाल अलग और काफ़िरों के आमाल अलग। और "लि-यमीज़ल्लाहु" में 'लाम' सबब का हो सकता है, यानी गुनाह के तौर पर माल ख़र्च करने के सबब ख़बीस (बुरे और गन्दे) को तैयब (पाक और अच्छे) से अल्लाह ने अलग कर दिया। यानी यह फ़र्क़ करने के लिये कि काफ़िरों से लड़ने के लिये कौन इताअ़त करता है और कौन मुँह मोड़कर नाफ़रमानी करता है। जैसा कि फ़रमाया "दोनों लश्करों के भिड़ने के वक़्त जो कुछ तुम्हें पहुँचा वह ख़ुदा के हुक्म से था, ताकि मोमिनों और काफ़िरों में तमीज़ (फ़र्क़) हो जाये। उनसे कहा जाता है कि आओ ख़ुदा की राह में जिहाद करो, आक्रमक या सुरक्षात्मक। कहते हैं कि अगर उसूले जंग से हम वाक़िफ़ होते तो ज़रूर लड़ते।

और फ़रमाया कि ख़ुदा आख़िर मोमिनों को भी उनकी मौजूदा हालत पर क्यों छोड़े? वह तो इम्तिहान करके परखना चाहता है कि अच्छा कौन है और बुरा कौन। और ग़ैब की बात पर वह तुमको आगाह भी क्यों करे" और फ़रमाया "क्या तुम समझते हो कि जन्नत में चले जाओगे हालाँकि मुजाहिदीन के सब्र का अल्लाह ने अभी इम्तिहान नहीं लिया"। इसकी नज़ीर सूरः बराअत में भी है। चुनाँचे मायने यह हुए कि हम कुफ़्फ़ार से भिड़ाकर तुम्हें आज़मायेंगे, वे तुमसे लड़ाई और जंग करेंगे, तुम्हारे माल ख़र्च करेंगे, यह मालों का ख़र्च करना इस फ़र्क़ करने के लिये है कि कौन ख़बीस (बुरा) है और कौन तैयब (पाक और अच्छा) है। "रकम" कहते हैं एक पर एक चीज़ों को जमा करते जाना, जैसा कि बादल के बारे में फ़रमाया कि:

ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا.

यानी तह-ब-तह बादल।

فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ. اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخَاسِرُوْنَ.

फिर वे दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे और बड़े ख़सारे (घाटे) में रहेंगे।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ	आप उन काफ़िरों से कह दीजिए कि अगर ये लोग (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँगे तो उनके सारे गुनाह जो (इस्लाम से) पहले हो चुके हैं सब माफ़ कर दिये जाएँगे। और अगर अपनी

Maktab_E_Ashraf

سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

वही (कुफ़्र की) आदत जारी रखेंगे तो (सुना दीजिए कि) पहले गुज़रे (काफ़िरों के हक़) में (हमारा) क़ानून नाफ़िज़ हो चुका है। (38) और तुम उन (अ़रब के काफ़िरों) से इस हद तक लड़ो कि उनमें अ़क़ीदे की ख़राबी (यानी शिर्क) न रहे, और दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए। फिर अगर ये (कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह तआ़ला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं। (39) और अगर मुँह मोड़ें तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा रफ़ीक़ है, वह बहुत अच्छा रफ़ीक़ है और बहुत अच्छा मददगार है। (40)

तौबा पिछले तमाम गुनाहों को मिटा देती है

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल से ख़िताब फ़रमा रहे हैं कि इन काफ़िरों से कह दो कि अगर तुम कुफ़्र व दुश्मनी से बाज़ रहे और इस्लाम में दाख़िल होकर मग़फ़िरत के तालिब हुए तो कुफ़्र के ज़माने में जो कुछ गुनाह किये थे अल्लाह उनको माफ़ कर देगा। जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि जो इस्लाम में आकर नेक अ़मल करने वाला रहा तो उसके जाहिलीयत (इस्लाम से पहले) के गुनाहों के बारे में कोई पूछ और पकड़ न होगी। और जो इस्लाम ले आने के बाद भी बुरा रहा तो उससे दोनों ज़मानों के आमाल से मुताल्लिक़ पूछ और सवाल होगा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इस्लाम से पहले के गुनाहों के लिये तौबा है, और तौबा भी तो अपने से पहले के गुनाहों को मिटा देती है, लेकिन ऐ नबी! अगर ये अपनी पिछली चाल पर क़ायम रहे, दुश्मनी और मुख़ालफ़त न छोड़ी तो क्या वे नहीं जानते कि पहले के लोगों का क्या हश्र हुआ था, मुख़ालफ़त और झुठलाने का पहली उम्मतों ने क्या नतीजा देखा था? याद रखो अ़ज़ाब व सज़ा ही इसका इलाज होगा।

'सुन्नतुल-अव्वलीन' से मुजाहिद और सुद्दी रह. बदर का दिन मुराद लेते हैं और फ़रमाया "उनसे ख़ूब क़िताल (जंग) करो, यहाँ तक कि फ़ितना दब जाये, शिर्क मिट जाये और दीन ख़ुदा ही ख़ुदा का हो।"

एक शख़्स हज़रत इब्ने उमर रज़ि. के पास आया और कहने लगा ऐ अ़ब्दुर्रहमान! ख़ुदा ने फ़रमाया है कि "अगर मोमिनों की दो जमाअ़तें आपस में लड़ें और जंग करें तो तुम लड़ाई में क्यों शरीक नहीं होते, जबकि ऐसी दो जमाअ़तों का क़ुरआन में ज़िक्र है? तो इब्ने उमर रज़ि. ने फ़रमाया "ऐ भतीजे! शरीके जंग न होने का ताना सुन लेना मेरे लिये गवारा है इसके मुक़ाबले में कि किसी मोमिन को जान-बूझकर क़त्ल करूँ। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम उनसे क़िताल (लड़ाई और जंग) करो यहाँ तक कि फ़ितना ही बाक़ी न रहे। इब्ने उमर रज़ि. कहते हैं कि रसूल के ज़माने में हमारी यही कैफ़ियत थी, इस्लाम में बहुत कम अफ़राद थे। आदमी की दीन के बारे में आज़माईश होती थी, लोग या तो क़त्ल कर दिये जाते थे या क़ैद व बन्द की मुसीबत में मुब्तला होते थे। और जब इस्लाम ने तरक़्क़ी पा ली तो अब यह फ़ितना बाक़ी न रहा।

ग़र्ज़ यह कि उस एतिराज़ करने वाले शख़्स ने जब इब्ने उमर रज़ि. से अपने मुवाफ़िक़ बात नहीं देखी तो बात का रुख़ फेरकर कहने लगा कि अ़ली और उस्मान के बारे में आपका क्या ख़्याल है? इब्ने उमर रज़ि. ने कहा हज़रत उस्मान के लिये तो अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद कहा है कि उनको बख़्श दिया, और तुम उस्मान रज़ि. की मग़फ़िरत को नापसन्द करते हो। और रहे अ़ली रज़ि.! तो यह रसूलुल्लाह सल्ल. के चचाज़ाद भाई और दामाद हैं। और वह देखो वहाँ नबी की बेटी और अ़ली की बीवी रहती हैं।

सईद इब्ने ज़ुबैर कहते हैं कि इब्ने उमर रज़ि. हमारे पास आये और कहा कि फ़ितने की जंग और लड़ाई के बारे में तुम्हारी क्या राय है? और फ़ितना किसको कहते हैं? नबी सल्ल. मुश्रिकों से क़िताल (जंग) करते थे और उस वक़्त फ़ितना फैला हुआ था, और तुम्हारा क़िताल (जंग और लड़ाई) तो मुल्क और सत्ता हासिल करने के लिये होता है। इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि इब्ने ज़ुबैर रज़ि. के फ़ितने से मुताल्लिक़ दो आदमी उनके पास आये और कहा तुम जानते हो जो कुछ लोगों का अ़मल है? तुम उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बेटे हो, और रसूलुल्लाह सल्ल. के सहाबी हो। इस फ़ितने से तुमको किस बात ने रोका था? कहा कि अल्लाह तआ़ला ने मुसलमान का ख़ून मुसलमान पर हराम कर दिया है। लोगों ने कहा कि क्या ख़ुदा ने ख़ुद नहीं फ़रमाया है कि फ़ितना दब जाने के लिये क़िताल (जंग और लड़ाई) करो, ताकि दीन ख़ालिस अल्लाह का हो जाये। कहा हमने तो फ़ितना दबाने के लिये बहुत कुछ क़िताल किया है, यहाँ कि फ़ितना न रहा, और तुम मुसलमानों के दो गिरोहों में इसलिये क़िताल करना चाहते हो कि फ़ितना और खड़ा हो जाये, और दीन अल्लाह के बजाय ग़ैरुल्लाह का हो जाये।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद कहते हैं कि मैं तो ऐसे आदमी को कभी क़त्ल न करूँगा जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह चुका हो। फिर सअ़्द इब्ने मालिक ने भी ऐसा ही कहा, तो उस आदमी ने 'क़ातिलूहुम' वाली आयत पढ़ी, तो उन लोगों ने कहा कि फ़ितने को दबाने वाला ऐसा क़िताल (लड़ाई) हमने किया है और फ़ितना दब गया है, और दीन ख़ालिस ख़ुदा का हो गया है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़ितना दब जाने से शिर्क का दब जाना मुराद लेते हैं।

يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ.

कि दीन ख़ालिस अल्लाह का हो जाये।

से मुराद ख़ालिस तौहीद है, जिसमें शिर्क का लगाव (हिस्सा) न हो. और ख़ुदा की ख़ुदाई में किसी को शरीक न बनाया गया हो। ज़ैद बिन असलम कहते हैं- मतलब यह है कि दीने इस्लाम होते हुए कुफ़्र बाक़ी न रहे। इसकी तस्दीक़ इस हदीस से होती है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- काफ़िरों से क़िताल (जंग) करने का मुझे हुक्म दिया गया है, यहाँ तक कि लोग 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' (अल्लाह के एक होने यानी इस्लाम) के क़ायल हो जायें। अगर वे क़ायल हो गये तो उनके जान व माल महफ़ूज़ हो गये। हाँ किसी वजह से क़िसास (ख़ून के बदले ख़ून) वग़ैरह में क़त्ल किये जा सकते हैं, और उसका हिसाब ख़ुदा के पास है। नबी सल्ल. से ऐसे शख़्स के बारे में सवाल किया गया जिसने बहादुरी जताने की ग़र्ज़ से जंग की हो या क़ौम व ख़ानदान की हिमायत में या शोहरत व नाम की ख़ातिर, इसमें कौनसी जंग अल्लाह के रास्ते की है? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया कि सिर्फ़ वह क़िताल (जंग और लड़ाई) जो अल्लाह की बात बुलन्द करने की ख़ातिर अ़मल में आया हो, वह अल्लाह के रास्ते में है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

Maktab E Ashraf

فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ.

यानी अगर वे कुफ़्र के साथ तुम्हारे साथ लड़ने से बाज़ रहे तो तुम भी उनसे हाथ रोक लो। इसलिये कि तुम्हें उनके दिल का हाल क्या मालूम? जो कुछ उनके दिल का हाल है अल्लाह तआ़ला उसको जानता है, और उनको देखता है।

जैसा कि फ़रमाया- "अगर उन्होंने तौबा कर ली और नमाज़ पढ़ते रहे और ज़कात देते रहे तो फिर उनसे पूछ-गछ मुनासिब नहीं।" दूसरी जगह है कि वे तुम्हारे दीनी भाई हैं। और फ़रमाया कि फ़ितना दबने तक उनसे लड़ते रहो ताकि ख़ुदा ही का मज़हब राईज हो जाये। इल्ज़ाम सिर्फ़ हद से आगे बढ़ने वालों पर है। कहते हैं कि हज़रत उसामा रज़ि. ने एक शख़्स पर तलवार उठाई, उसने कहा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' लेकिन उसामा रज़ि. ने तलवार मार दी और उसको क़त्ल कर दिया। नबी सल्ल. को ख़बर पहुँची तो फ़रमाया कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के बाद भी तुमने उसको क़त्ल कर दिया? अब तुम क़ियामत के रोज़ 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के साथ क्या करोगे? हज़रत उसामा रज़ि. ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! उसने तो सिर्फ़ अपने बचाव के लिये ऐसा किया। फ़रमाया क्या तुमने उसके दिल को चीरकर देखा था? फिर आप बार-बार यही फ़रमाते रहे कि अब क़ियामत के रोज़ क्या करोगे? उसामा रज़ि. कहते हैं- मैं यह तमन्ना करने लगा कि काश मैं आज तक मुसलमान न हुआ होता, ताकि इस्लाम के गुमान में उसको क़त्ल न कर देता।

आगे अल्लाह फ़रमाता है- और अगर उन्होंने पीठ फेर ली तो जाने दो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है, वह बड़ा अच्छा मौला है, और बड़ा अच्छा मददगार है। और अगर उनकी आ़दत तुम्हारे ख़िलाफ़ और तुम्हारी मुख़ालफ़त पर क़ायम रही तो अल्लाह तुम्हारा मौला और तुम्हारा मददगार है।

अ़ब्दुल-मलिक बिन मरवान ने उर्वा को लिखा और चन्द बातें मालूम कीं, तो उर्वा रज़ि. ने यूँ जवाब लिख भेजा- सलामु अ़लैक! मैं एक ख़ुदा की तारीफ़ करता हूँ और फिर तुम्हें लिखता हूँ कि तुमने मुझसे नबी सल्ल. के मक्के से मदीने की तरफ़ हिजरत के वाक़िआ़त पूछे हैं। मैं तुम्हें बताऊँगा, क़ुव्वत व ताक़त ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्ल. को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई, वह कैसे अच्छे नबी कैसे सीधे नबी थे। अल्लाह तआ़ला उन्हें जज़ा-ए-ख़ैर दे, जन्नत में हमें उनका चेहरा दिखाये, उन्हीं के दीन व तरीक़े पर ज़िन्दा रखे और उन्हीं के दीन पर मौत दे, और उन्हीं के साथ आख़िरत में उठाये।

आपने जब हिदायत और नूर की तरफ़ क़ौम को बुलाया तो लोगों ने आपकी तब्लीग़ को कुछ अहमियत नहीं दी। हुज़ूर की 'वही' को सुन भी लेते थे, और जब आपने उनके बुतों का ज़िक्र शुरू किया और मालदार क़ुरैश के लोग ताईफ़ से मक्का आये, तो उनमें से अक्सर को यह तब्लीग़ बहुत नागवार गुज़री, आपकी तब्लीग़ से बेज़ार हुए। जो कोई मुसलमान हो भी जाता तो उसको बहकाने लगते। चुनाँचे माईल होने वाले आ़म लोग भी बेतवज्जोही दिखाने लगे, मगर चन्द लोग अपने मुस्तक़िल इरादे पर क़ायम रहे, इस्लाम की तरफ़ से उनके दिल में कोई बद्दिल होने की बात नहीं आई। अब क़ुरैश के सरदारों ने आपस में मश्विरा किया कि इस्लाम क़बूल करने वालों पर सख़्ती करें, यह फ़ितना एक ज़बरदस्त ज़लज़ला था, जो इस फ़ितने में फंस गया सो फंस गया और जिसको अल्लाह तआ़ला ने महफ़ूज़ रखा तो महफ़ूज़ रहा। जब मुसलमानों पर ये क़ुरैश बहुत ज़ुल्म ढाने लगे तो हुज़ूर सल्ल. ने मुसलमानों को मश्विरा दिया कि

मुल्क हब्शा की तरफ़ हिजरत कर जायें। हब्शा का बादशाह एक नेक आदमी था, जिसका नाम नज्जाशी था। वह ज़ालिम बादशाह नहीं था, चारों तरफ़ उसकी तारीफ़ होती थी। हब्शा का मुल्क क़ुरैश वालों की तिजारत का स्थान था, और क़ुरैश के व्यापारियों के वहाँ मकानात थे, जहाँ वे तिजारत (व्यापार) करके बहुत माल पैदा करते थे। हब्शा की तरफ़ चले गये, क्योंकि उनको अपनी जान का ख़ौफ़ था, वे वहाँ हमेशा के लिये नहीं ठहरे, सिर्फ़ चन्द साल रहे। वहाँ भी मुसलमानों ने इस्लाम फैलाया, वहाँ के सम्मानित और बड़े लोग इस्लाम लाये।

जब क़ुरैश के काफ़िरों ने यह रंग देखा कि मुसलमानों पर ज़ुल्म करने से वे हब्शा चले जाते हैं और वहाँ के लोगों और सरदारों को अपना बना लेते हैं, तो अब उन्होंने बेहतर यही समझा कि नर्म बर्ताव करें। चुनाँचे वे नबी पाक और आपके सहाबा के साथ नर्म बर्ताव करने लगे। चुनाँचे पहली आज़माईश मुसलमानों की यही थी जिसने मुसलमानों को हब्शा की तरफ़ भेजा। फिर जब नर्मी पैदा हो गई और वह फ़ितना जिसके ज़लज़लों ने मुसलमान व सहाबा को वतन छोड़ने और हब्शा जाने पर मजबूर किया था उसके कुछ दब जाने की ख़बरों ने हब्शा के मुहाजिरों को फिर आमादा किया कि वे मक्का वापस चले आयें तो वे थोड़े बहुत भी जो गये थे वापस आ गये। इस दौरान में मदीने के अन्सार मुसलमान हो गये और मदीने में भी इस्लाम की इशाअ़त (प्रसार) होनी लगी। इन मदीने वालों का मक्का आना-जाना शुरू हुआ, इससे मक्के वाले और बिगड़े। मश्विरा किया कि अब तो इन पर और सख़्ती करनी चाहिये। चुनाँचे अब खुले तौर पर मुसलमानों पर अत्याचार होने लगे। मुसलमान बड़ी मुसीबतों में मुब्तला हो गये। यह मुसलमानों के लिये दूसरा फ़ितना और दूसरी आज़माईश थी।

एक फ़ितना तो यह कि हब्शा की तरफ़ मुसलमानों को भागना पड़ा। दूसरा फ़ितना वहाँ से मुसलमानों के वापस आने के बाद जबकि मक्का वालों ने देखा कि मदीने के लोग आते जा रहे हैं और मुसलमान होते जा रहे हैं। चुनाँचे एक बार मदीने से सत्तर आदमी आये जो मोतबर और सरदार लोग थे, और ये सब मुसलमान हो गये। हज किया और अ़क़बा के मक़ाम में हुज़ूर सल्ल. के हाथ पर बैअ़त की, और अ़हद किया कि हम आपके हो रहे हैं और आप हमारे हो रहेंगे। अगर आपके सहाबा हमारे शहर में आयें या आप तशरीफ़ लायें तो हम आपकी और आपके सहाबा की हिमायत करेंगे, जैसे कि अपनी और अपने लोगों की करते हैं।

क़ुरैश ने इस मुआ़हिदे को सुनकर और ज़्यादा सख़्ती बरतनी शुरू कर दी। अब हुज़ूर सल्ल. ने अपने सहाबा को हुक्म दिया कि मदीने की तरफ़ हिजरत कर जायें। यह दूसरा फ़ितना था, ज़िसने नबी सल्ल. और सहाबा को मक्के से निकाला। इसी चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन में ज़ाहिर फ़रमाया है कि उन काफ़िरों से क़िताल (लड़ाई और जंग) करो यहाँ तक कि ये फ़ितने ख़त्म हो जायें। और अल्लाह के दीन का ही सिक्का चले। उर्वा इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि यह ख़त उरवा ने अ़ब्दुल-मलिक बिन मरवान को लिखा था। वल्लाहु आलम

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से पारा नम्बर नौ की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

पारा नम्बर दस

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ کُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ○	और (इस बात को) जान लो कि जो चीज़ (काफ़िरों) से ग़नीमत के तौर पर तुमको हासिल हो तो (उसका हुक्म यह है कि) कुल का पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का और उसके रसूल का है, और (एक हिस्सा) आपके रिश्तेदारों का है, और (एक हिस्सा) यतीमों का है, और (एक हिस्सा) ग़रीबों का है, और (एक हिस्सा) मुसाफ़िरों का है, अगर तुम अल्लाह पर यक़ीन रखते हो और उस चीज़ पर जिसको हमने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर फ़ैसले के दिन, जिस दिन कि (मोमिनों व काफ़िरों की) दोनों जमाअ़तें आपस में आमने-सामने हुई थीं, नाज़िल फ़रमाया था। और अल्लाह तआ़ला (ही) हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं। (41)

ग़नीमतों की तक़सीम

अल्लाह तआ़ला यहाँ ग़नीमत के माल की तफ़सील बयान करता है जो उसने ख़ास तौर पर इस उम्मत के लिये हलाल किया है। ग़नीमत का माल पहली उम्मतों पर हराम था। ग़नीमत वह माल है जो कुफ़्फ़ार पर हमला करने के बाद हासिल हो, और 'फ़ै' वह माल है जो बग़ैर लड़े-भिड़े हाथ आ जाये। जैसे उनसे सुलह करके कुछ माल बतौर तावान वसूल किया जाये, या वह माल जिसका कोई वारिस न हो, या जिज़्या या ख़िराज वग़ैरह का माल हो। इमाम शाफ़ई रह. और दीगर पहले और बाद के उलेमा की एक जमाअ़त का यही ख़्याल है, लेकिन बाज़ उलेमा ग़नीमत का हुक्म "फ़ै" पर और फ़ै का ग़नीमत पर करते हैं। इसी लिये क़तादा रह. का क़ौल है कि इस आयत से सूरः हश्र की यह आयत "मा अफ़ाअल्लाहु....." मन्सूख़ हो गई है। और इस तरह माले ग़नीमत के पाँच हिस्सों में से चार हिस्से तो मुजाहिदीन को मिलेंगे और एक हिस्सा उनको मिलेगा जिनका ज़िक्र इस आयत में आया है (यानी रसूल, रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों, यतीमों, मसाकीन और मुसाफ़िरों को, लेकिन यह क़ौल क़ाबिले क़ुबूल नहीं, क्योंकि यह आयत जंगे बदर के बाद नाज़िल हुई है और वह आयत "बनू नज़ीर" के बारे में उतरी है, और तारीख़ व इस्लामी इतिहास के उलेमा में से किसी का भी इस बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं है कि क़िस्सा-ए-बनू नज़ीर जंगे बदर के बाद का है, और न इसमें शक व शुब्हे की कोई गुंजाईश है।

लेकिन जो लोग फ़ै और ग़नीमत में फ़र्क़ करते हैं, वे कहते हैं कि वह आयत तो फ़ै के बारे में उतरी है और यह ग़नीमत के बारे में। और कुछ लोग फ़ै और ग़नीमत के मामले को इमाम (मुसलमानों के हाकिम) की राय पर मौक़ूफ़ रखते हैं कि जैसी उसकी मर्ज़ी हो वैसे करे। इस तरह इन दोनों आयतों (आयत

सूरः हश्र और यह पाँचवे हिस्से वाली आयत) में ततबीक़ और मुवाफ़क़त हो जाती है। वल्लाहु आलम

आयत में बयान है कि ख़ुम्स यानी पाँचवाँ हिस्सा माले ग़नीमत में से निकाल देना चाहिये, चाहे वह कम हो या ज़्यादा, अगरचे सूई हो या धागा ही हो। परवर्दिगारे आलम फ़रमाता है जो ख़ियानत करेगा वह उसे लेकर क़ियामत के दिन पेश होगा और हर एक को उसके अमल का पूरा बदला मिलेगा, किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

कहते हैं कि ख़ुम्स (पाँचवें हिस्से) में से ख़ुदा तआला का हिस्सा काबे में दाख़िल किया जायेगा। हज़रत अबुल-आलिया रबाही कहते हैं कि ग़नीमत के माल में रसूले ख़ुदा सल्ल. पाँच हिस्से करते थे, चार तो मुजाहिदों में तक़सीम होते, पाँचवें में से आप मुट्ठी भर निकालते, उसे काबे में दाख़िल कर देते, फिर जो बचता उसके पाँच हिस्से कर डालते, एक रसूले ख़ुदा सल्ल. का, एक क़राबत-दारों (आपके क़रीबी और रिश्तेदारों) का, एक यतीमों का, एक मिस्कीनों का और एक मुसाफ़िरों का। यह भी कहा गया है कि यहाँ अल्लाह के हिस्से का नाम सिर्फ़ बतौर तबर्रुक (बरकत हासिल करने के लिये) है। रसूलुल्लाह सल्ल. के हिस्से के बयान का गोया वह शुरू है। इब्ने अब्बास रज़ि. का बयान है कि जब हुज़ूर सल्ल. कोई लश्कर भेजते और ग़नीमत का माल मिलता तो आप उसके पाँच हिस्से करते और फिर पाँचवे हिस्से के पाँच हिस्से कर डालते, फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई। पस यह फ़रमान किः

اَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ.........

कि उसमें का पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह के लिये है, यह सिर्फ़ कलाम के शुरू के लिये है। ज़मीन व आसमान में जो कुछ है अल्लाह का है। पाँचवें हिस्से में से पाँचवाँ हिस्सा रसूलुल्लाह सल्ल. का है। बहुत से बुज़ुर्गों का क़ौल यही है कि ख़ुदा व रसूल का एक ही हिस्सा है, इसी की ताईद बैहक़ी की इस सही सनद वाली हदीस से भी होती है कि एक सहाबी ने हुज़ूर सल्ल. से वादी-ए-क़ुरा में पहुँचकर सवाल किया या रसूलल्लाह! ग़नीमत के बारे में आप क्या इरशाद फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया उसमें पाँचवाँ हिस्सा तो अल्लाह का है, बाक़ी के चार हिस्से लश्कर वालों के हैं। उसने पूछा तो उसमें किसी को किसी पर ज़्यादा हक़ नहीं? आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं, यहाँ तक कि तू अपने किसी दोस्त के जिस्म से तीर निकाले तो उस तीर का भी तू उससे ज़्यादा मुस्तहिक़ नहीं।

हज़रत हसन ने अपने माल के पाँचवे हिस्से की वसीयत की और फ़रमाया क्या मैं अपने लिये उस हिस्से पर रज़ामन्द न हो जाऊँ जो ख़ुदा तआला ने ख़ुद अपना रखा है। इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि माले ग़नीमत के पाँच हिस्से बराबर किये जाते थे, चार तो उन लश्करियों को मिलते थे जो उस जंग में शामिल थे, फिर पाँचवे हिस्से के चार हिस्से किये जाते थे, एक चौथाई अल्लाह का और उसके रसूल का, फिर यह हिस्सा नबी करीम सल्ल. के क़राबतदारों (रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों) में तक़सीम कर दिया जाता था, उसमें से जो कुछ नबी करीम सल्ल. लेते थे, यानी पाँचवे हिस्से का पाँचवाँ हिस्सा, वह आपके बाद जो भी आपका नायब हो उसका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बरीदा फ़रमाते हैं- अल्लाह का हिस्सा अल्लाह के नबी सल्ल. का है, और जो आपका हिस्सा था वह आपकी बीवियों का है। अता बिन रबाह फ़रमाते हैं अल्लाह और उसके रसूल का जो हिस्सा है वह सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल. ही का है, आपको इख़्तियार है जिस काम में आप चाहें लगायें। मिक़्दाम बिन मअदी-करब हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत अबू दर्दा और हज़रत हारिस बिन मुआविया कन्दी रज़ियल्लाहु अन्हुम के पास बैठे हुए थे, उनमें रसूलुल्लाह सल्ल. की

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

हदीसों का ज़िक्र होने लगा तो अबू दर्दा ने उबादा बिन सामित से कहा फ़ुलाँ-फ़ुलाँ लड़ाई में रसूलुल्लाह सल्ल. ने ख़ुम्स (पाँचवे हिस्से) के बारे में क्या इरशाद फ़रमाया था? आपने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल. ने एक जिहाद में ख़ुम्स के एक ऊँट के पीछे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को नमाज़ पढ़ाई, सलाम के बाद खड़े हो गये और चन्द बाल अपनी चुटकी में लेकर फ़रमाया- ये बाल उस ऊँट के हैं जो माले ग़नीमत में से है, ये भी माले ग़नीमत में से ही हैं, और मेरे नहीं हैं। मेरा हिस्सा तो तुम्हारे साथ सिर्फ़ पाँचवाँ है, और फिर वह भी तुमको ही वापस दे दिया जाता है। पस सूई धागे तक हर छोटी बड़ी चीज़ पहुँचा दिया करो, ख़ियानत न करो, ख़ियानत शर्म का सबब है, और ख़ियानत करने वाले की मलामत का ख़्याल तक न करो। वतन में और सफ़र में ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हदें (सीमायें और अहकाम) जारी रखो। ख़ुदा के बारे में जिहाद करते रहो, जिहाद जन्नत के बहुत बड़े दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है, इसी जिहाद की वजह से अल्लाह तआ़ला ग़म व रंज से निजात देता है। (मुस्नद अहमद)

यह हदीस हसन है और बहुत ही आला है। सिहाहे सित्ता (हदीस की छह बड़ी किताबों) में इस सनद से मन्क़ूल नहीं, लेकिन मुस्नद ही की दूसरी रिवायत में दूसरी सनद से ख़ुम्स का और ख़ियानत का ज़िक्र मौजूद है। अबू दाऊद और नसाई में भी मुख़्तसर तौर पर यह हदीस है। उस हिस्से में से नबी करीम सल्ल. बाज़ चीज़ें अपनी ज़ात के लिये भी मख़्सूस कर लिया करते थे, बाँदी, ग़ुलाम, तलवार, घोड़ा वग़ैरह जैसा कि मुहम्मद बिन सीरीन, आ़मिर शअ़बी और अक्सर उलेमा ने फ़रमाया है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि ज़ुलफ़क़ार नाम की तलवार बदर के दिन नफ़ल में से थी जो हुज़ूर सल्ल. के पास थी, उसी के बारे में उहुद वाले दिन ख़्वाब देखा था। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत सफ़िया भी इसी तरह आई थीं। अबू दाऊद वग़ैरह में है, हज़रत यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि हम बाड़े में बैठे हुए थे कि एक साहिब तशरीफ़ लाये, उनके हाथ में चमड़े का एक टुकड़ा था, हमने उसे पढ़ा तो उसमें लिखा था कि यह मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से ज़ुहैर बिन अक़ीश की तरफ़ है, कि अगर तुम अल्लाह के एक होने की और रसूलुल्लाह की रिसालत की गवाही दो और नमाज़ें क़ायम रखो और ज़कात दिया करो और ग़नीमत के माल से ख़ुम्स अदा करते रहो, और नबी का हिस्सा और ख़ालिस हिस्सा अदा करते रहो तो तुम अल्लाह की और उसके रसूल की अमान में हो। हमने उससे पूछा कि तुझे यह किसने लिखकर दिया है? उसने कहा रसूलुल्लाह सल्ल. ने। पस इन सही हदीसों की दलालत इस बात पर है, इसी लिये अक्सर बुज़ुर्गों और उलेमा ने इसे हुज़ूर सल्ल. की ख़ुसूसियतों (विशेषताओं) में शुमार किया है। उन पर हज़ारों दुरूद व सलाम हों।

और लोग कहते हैं कि ख़ुम्स में इमामे वक़्त मुसलमानों की मस्लेहत के मुताबिक़ जो चाहे कर सकता है, जैसे माले फ़ै में उसे इख़्तियार है। हमारे शैख़ अ़ल्लामा इब्ने तैमिया रह. फ़रमाते हैं कि यही क़ौल हज़रत इमाम मालिक रह. का है और अक्सर पहले उलेमा का है, और यही सबसे ज़्यादा सही क़ौल है। जब यह साबित हो गया और मालूम हो गया तो यह भी ख़्याल रहे कि ख़ुम्स जो हुज़ूर सल्ल. का हिस्सा था उसे अब आपके बाद क्या किया जाये? बाज़ तो कहते हैं कि अब यह हिस्सा इमामे वक़्त यानी मुसलमानों के ख़लीफ़ा व हाकिम का होगा। हज़रत अबू बक्र, हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा, हज़रत क़तादा और एक जमाअ़त का यही क़ौल है, और इस बारे में एक मरफ़ूअ़ हदीस भी आई है। कुछ लोग कहते हैं कि यह मुसलमानों की मस्लेहत (फ़ायदों) में ख़र्च होगा। एक क़ौल है कि यह भी बाक़ी की और क़िस्मों पर ख़र्च होगा, यानी क़राबतदार, यतीम, मिस्कीन और मुसाफ़िर पर।

Maktab E Ashraf

इमाम इब्ने जरीर का मुख़्तार (पसन्दीदा और अपनाया हुआ) यही है। कुछ हज़रात का फ़रमान है कि हुज़ूर सल्ल. का और आपके क़राबतदारों (क़रीबी और रिश्तेदारों) का हिस्सा यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को दे दिया जाये। इराक़ वालों की एक जमाअ़त का यही क़ौल है। और कहा गया है कि ख़ुम्स का यह पाँचवाँ हिस्सा सब का सब क़राबतदारों का है। चुनाँचे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अ़ली और अ़ली बिन हुसैन का क़ौल है कि यह हमारा हक़ है। पूछा गया कि आयत में यतीमों और मिस्कीनों का भी ज़िक्र है? तो इमाम अ़ली रज़ि. ने फ़रमाया इससे मुराद भी हमारे यतीम और हमारे मिस्कीन हैं। इमाम हसन बिन मुहम्मद बिन हनफ़िया रह. से इस आयत के बारे में सवाल होता है तो फ़रमाते हैं कि कलाम का शुरू इस तरह हुआ है वरना दुनिया व आख़िरत का सब कुछ अल्लाह ही का है। फिर इन दोनों हिस्सों के बारे में हुज़ूर सल्ल. के बाद क्या हुआ इसमें इख़्तिलाफ़ है। बाज़ कहते हैं कि आपका हिस्सा आपके ख़लीफ़ा को मिलेगा, बाज़ कहते हैं कि आपके क़राबतदारों (रिश्तेदारों) को, बाज़ कहते हैं कि ख़लीफ़ा के क़राबतदारों को। इनकी राय में इन दोनों हिस्सों को घोड़ों और हथियारों के काम में लगाया जाये। इसी तरह ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी में होता भी रहा है।

इब्राहीम रह. कहते हैं कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा हुज़ूर सल्ल. के इस हिस्से को जिहाद के काम में ख़र्च करते थे। पूछा गया कि हज़रत अ़ली रज़ि. इस बारे में क्या करते थे? फ़रमाया वह इस बारे में उन सबसे सख़्त थे। अक्सर उलेमा का यही क़ौल है। हाँ क़राबतदारों का जो हिस्सा है वह बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल-मुत्तलिब का है, इसलिये कि अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद ने हाशिम की औलाद की जाहिलीयत में और इस्लाम के शुरू ज़माने में मुवाफ़क़त और हमदर्दी की और इन्हीं के साथ उन्होंने घाटी में क़ैद होना भी मन्ज़ूर कर लिया, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल. को जो तकलीफ़ कुफ़्फ़ार से बराबर पहुँच रही थी उसकी वजह से ये लोग बिगड़ बैठे थे और आपकी हिमायत में थे, मुसलमान तो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इताअ़त के लिये, काफ़िर ख़ानदानी तरफ़दारी और रिश्ते-नातों की हिमायत के लिये और रसूलुल्लाह सल्ल. के चचा अबू तालिब की फ़रमाँबरदारी करके, हाँ अ़ब्दे शम्स और नौफ़ल की औलाद यह भी अगरचे आपके चचाज़ाद भाई थे लेकिन वे उनकी मुवाफ़क़त में न थे, बल्कि उनके ख़िलाफ़ थे, उन्हीं अलग कर चुके थे, उनसे लड़ रहे थे और कह रहे थे कि क़ुरैश के दूसरे तमाम क़बाईल उनके मुख़ालिफ़ हैं इसी लिये अबू तालिब ने अपने क़सीदा-ए-लामिया में उनकी बहुत ही मज़म्मत (बुराई और निंदा) की है, क्योंकि यह क़रीबी क़राबतदार थे। कहा है कि उन्हें बहुत जल्द ख़ुदा की तरफ़ से उनकी इस शरारत का पूरा बदला मिले। उन बेवक़ूफ़ों ने अपने होकर एक ख़ानदान और एक ख़ून के होकर हमसे आँखें फेर ली हैं, वग़ैरह।

एक मौक़े पर इब्ने ज़ुबैर बिन मुतअ़िम बिन अ़दी बिन नौफ़ल और हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान बिन अबिल-आ़स बिन उमैया बिन अ़ब्दे शम्स रसूलुल्लाह सल्ल. के पास गये और शिकायत की कि आपने ख़ैबर के ख़ुम्स में से अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद को तो दिया लेकिन हमें छोड़ दिया, हालाँकि आपकी क़राबतदारी (रिश्तेदारी और ख़ूनी रिश्ते) के लिहाज़ से वे और हम बिल्कुल बराबर हैं। आपने फ़रमाया सुनो! बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल-मुत्तलिब तो बिल्कुल एक ही चीज़ हैं। बाज़ रिवायतों में यह भी है कि उन्होंने तो मुझसे न कभी जाहिलीयत में जुदाई बरती न इस्लाम में, यह क़ौल तो जमहूर उलेमा का है कि यह बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल-मुत्तलिब हैं। बाज़ कहते हैं कि ये सिर्फ़ बनू हाशिम हैं। मुजाहिद रह. का क़ौल है कि अल्लाह को इल्म था कि बनू हाशिम में ग़रीब लोग हैं, पस सदक़े की जगह उनका हिस्सा ग़नीमत के माल में मुक़र्रर

कर दिया। यही रसूलुल्लाह सल्ल. के वे क़राबतदार हैं जिन पर सदक़ा हराम है। अ़ली बिन हुसैन रह. से भी इसी तरह रिवायत है। बाज़ कहते हैं कि ये सब क़ुरैश हैं। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से मालूम किया गया कि क़राबतदार कौन हैं? आपने जवाब तहरीर फ़रमाया कि हम तो कहते थे, हम हैं, लेकिन हमारी क़ौम मानती नहीं, वे सब कहते हैं कि सारे ही क़ुरैश हैं। (मुस्लिम वग़ैरह)

बाज़ रिवायतों में सिर्फ़ पहला जुमला ही है (कि हम तो कहते थे कि हम हैं) दूसरे जुमले के रावी अबू मअ़शर नजीह बिन अ़ब्दुर्रहमान मदनी की रिवायत में ही यह जुमला है, कि सब कहते हैं कि सारे क़ुरैश हैं। इसमें कमज़ोरी है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- तुम्हारे लिये लोगों के मैल कुचैल से तो मैंने मुँह फेर लिया, ख़ुम्स का पाँचवाँ हिस्सा काफ़ी है। यह हदीस हसन है, इसके रावी इब्राहीम बिन मेहदी को इमाम अबू हातिम मोतबर और भरोसे के लायक़ बतलाते हैं। लेकिन यहया बिन मईन कहते हैं कि यह मुन्कर रिवायतें बयान करते हैं। वल्लाहु आलम

आयत में यतीमों का ज़िक्र है, यानी मुसलमानों के बिना बाप के बच्चे। फिर बाज़ तो कहते हैं कि यतीमी के साथ फ़क़ीरी (ग़ुर्बत) भी हो तो वे मुस्तहिक़ हैं, और बाज़ कहते हैं कि हर अमीर फ़क़ीर यतीम को ये अलफ़ाज़ शामिल हैं। मसाकीन से मुराद वे मोहताज हैं जिनके पास इतना नहीं कि उनकी फ़क़ीरी और उनकी हाजत पूरी हो जाये, और उन्हें काफ़ी हो जाये। इब्नुस्सबील वह मुसाफ़िर है जो इतनी हद तक वतन से निकल चुका हो या जा रहा हो कि जहाँ पहुँचकर उसे नमाज़ को क़स्र पढ़ना जायज़ हो और सफ़र का काफ़ी ख़र्च उसके पास न रहा हो, इसकी तफ़सीर सूरः बराअत की आयत "इन्नमस्सदक़ातु....... (यानी सूरः तौबा आयत 60) की तफ़सीर में आयेगी, इन्शा-अल्लाह तआ़ला।

फिर फ़रमाता है कि अगर तुम में अल्लाह पर और उसकी 'वही' पर ईमान है तो जो वह फ़रमा रहा है बजा लाओ, यानी माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा अलग कर दिया करो। सहीहैन में है कि अ़ब्दुल-क़ैस के वफ़्द (जमाअ़त) को रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- मैं तुम्हें चार बातों का हुक्म करता हूँ और चार से मना करता हूँ। मैं तुम्हें अल्लाह पर ईमान लाने का हुक्म करता हूँ। जानते भी हो कि अल्लाह पर ईमान लाना क्या है? यह गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ को पाबन्दी से अदा करना, ज़कात देना और ग़नीमत में से ख़ुम्स अदा करना.....। पस ख़ुम्स का देना भी ईमान में दाख़िल है। हज़रत इमाम बुख़ारी रह. ने अपनी किताब "सही बुख़ारी शरीफ़" में बाब (अध्याय) क़ायम किया है कि ख़ुम्स का अदा करना ईमान में है, फिर इस हदीस को ज़िक्र किया है और हमने शरह सही बुख़ारी में इसका पूरा मतलब स्पष्ट भी कर दिया है।

फिर अल्लाह तआ़ला अपना एक एहसान व इनाम बयान फ़रमाता है कि उसने हक़ व बातिल में फ़र्क़ कर दिया, अपने दीन को ग़ालिब किया, अपने नबी की और आपके लश्करियों की मदद फ़रमाई और जंगे बदर में उन्हें ग़लबा दिया। ईमान का कलिमा कुफ़्र के कलिमे पर छा गया। पस 'यौमुल-फ़ुरक़ान' से मुराद बदर का दिन है, जिसमें हक़ व बातिल की तमीज़ (फ़र्क़) हो गई। बहुत से बुज़ुर्गों से इसकी यही तफ़सीर नक़ल की गयी है, यही सबसे पहला ग़ज़वा (इस्लामी लड़ाई) था। मुश्रिक लोग उतबा बिन रबीआ़ की मातहती में थे, जुमे के दिन 19 या 17 रमज़ान को लड़ाई हुई थी। रसूले पाक के सहाबा तीन सौ दस से कुछ ऊपर थे और मुश्रिकों की तादाद 900 से 1000 तक की थी, बावजूद इसके अल्लाह तबारक व तआ़ला ने काफ़िरों को शिकस्त दी, सत्तर से कुछ ज़्यादा तो मारे गये और इतने ही क़ैद कर लिये गये। मुस्तदरक हाकिम में है, इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि (लैलतुल-फ़ुरक़ान) शबे-क़द्र को ग्यारहवीं रात में

Maktab e Ashraf

ही यक़ीन के साथ तलाश करो, इसलिये कि उस सुबह को बदर की लड़ाई का दिन था। हसन बिन अ़ली फ़रमाते हैं कि लैलतुल-फ़ुरक़ान जिस दिन दोनों जमाअ़तों में घमासान लड़ाई हुई रमज़ान शरीफ़ की सत्रहवीं थी, यह रात भी जुमे की रात थी। इस्लामी तारीख़ के माहिरीन की राय के मुताबिक़ सही यही है, हाँ यज़ीद बिन अबू जअ़द जो अपने ज़माने के मिस्री इलाक़े में इमाम थे, फ़रमाते थे कि बदर का दिन पीर का दिन था, लेकिन किसी और ने उनकी राय से सहमति नहीं जताई और जमहूर का क़ौल यक़ीनन उनके क़ौल पर मुक़द्दम है। वल्लाहु आलम

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ۬ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۙ	(यह वह वक़्त था कि) जब तुम (उस मैदान के) इधर वाले किनारे पर थे और वे लोग (यानी काफ़िर उस मैदान के) उधर वाले किनारे पर थे, और वह (क़ुरैश का) क़ाफ़िला तुम से नीचे की तरफ़ (बचा हुआ) था, और अगर तुम (और वे) कोई बात ठहराते तो ज़रूर उस ठहराने के बारे में तुममें इख़्तिलाफ़ होता, लेकिन ताकि जो बात अल्लाह को करना मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे, यानी ताकि जिसको बरबाद (गुमराह) होना है वह निशान आने के बाद बरबाद हो, और जिसको ज़िन्दा (हिदायत-याफ़्ता) होना है वह (भी) निशान आने के बाद ज़िन्दा हो, और बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (42)

हालात का मुवाफ़िक़ न होना और अल्लाह की मदद का ज़बरदस्त मुज़ाहरा

फ़रमाता है कि उस दिन तुम वादी-ए-दुनिया में थे जो मदीना शरीफ़ से क़रीब है और मुश्रिक लोग मक्के की जानिब मदीने की दूर की वादी (घाटी) में थे, और अबू सुफ़ियान और उसका क़ाफ़िला तिजारती असबाब समेत नीचे की दिशा में दरिया की तरफ़ था। अगर तुम और क़ुरैश के काफ़िर पहले से जंग का इरादा और प्लान करते तो यक़ीनन तुम में मतभेद हो जाता कि लड़ाई कहाँ हो। यह भी मतलब बयान किया गया है कि अगर तुम आपस में तय करके जंग के लिये तैयार हुए होते और फिर तुम्हें उनकी तादाद और अस्लहा की अधिकता मालूम होती तो बहुत मुम्किन था कि इरादे पस्त हो जाते, इसलिये क़ुदरत ने बग़ैर पहले से तय किये दोनों जमाअ़तों को अचानक मिला दिया कि ख़ुदा का यह इरादा पूरा हो जाये कि इस्लाम और मुसलमानों को बुलन्दी हो और शिर्क और मुश्रिकों को पस्ती हो। पस जिसको करना था ख़ुदा पाक कर गुज़रा। चुनाँचे कअ़ब रज़ि. की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. और मुसलमान तो सिर्फ़ क़ाफ़िले के इरादे से ही निकले थे, अल्लाह ने दुश्मन से मुठभेड़ करा दी। बग़ैर किसी पहले से तय शुदा प्रोग्राम के और बग़ैर किसी जंगी तैयारी के। अबू सुफ़ियान मुल्क शाम से क़ाफ़िले को लेकर चला, अबू जहल उसे

मुसलमानों से बचाने के लिये मक्के से निकला, क़ाफ़िला दूसरे रास्ते से निकल गया और मुसलमानों और काफ़िरों की जंग हो गई, इससे पहले दोनों एक दूसरे से बेख़बर थे। एक दूसरे को ख़ुसूसन पानी लाने वालों को देखकर एक को दूसरे का इल्म हुआ।

सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि हुज़ूर सल्ल. अपने इरादे से चले जा रहे थे, सफ़रा के क़रीब पहुँच कर बसबस बिन उमर और अ़दी बिन अबुज़्ज़अ़बा जुहनी को अबू सुफ़ियान का पता चलाने के लिये भेजा, उन दोनों ने बदर के मैदान में पहुँचकर बतहा के एक टीले पर अपनी सवारियाँ बैठाईं और पानी के लिये निकले, रास्ते में दो लड़कियों को आपस में लड़ते हुए देखा, एक दूसरी से कहती है तू मेरा क़र्ज़ क्यों अदा नहीं करती? उसने कहा जल्दी न कर कल या परसों यहाँ क़ाफ़िला आने वाला है, मैं तुझे तेरा हक़ दे दूँगी। मजदा बिन अ़मर बीच में बोल उठा और कहा यह सच कहती है और इसे इन सहाबियों ने सुन लिया, अपने ऊँट कसे और फ़ौरन ख़िदमते नबवी में जाकर आपको ख़बर दी। उधर अबू सुफ़ियान अपने क़ाफ़िले से पहले यहाँ अकेला पहुँचा और मजदा बिन अ़मर से कहा कि इस कुएँ पर तुमने किसी को देखा? उसने कहा नहीं! अलबत्ता दो सवार आये थे अपने ऊँट इस टीले पर बैठाये, अपनी मश्क में पानी भरा और चल दिये। यह सुनकर यह उस जगह पहुँचा, मैंगनियाँ लीं, उन्हें तोड़ीं और खजूरों की गुठलियाँ उनमें पाकर कहने लगा वल्लाह ये मदनी लोग हैं। वहीं से वापस अपने क़ाफ़िले में पहुँचा और रास्ता बदलकर समुद्र के किनारे-किनारे चल दिया। जब उसे इस तरफ़ से इत्मीनान हो गया तो उसने अपना क़ासिद क़ुरैशियों की तरफ़ भेजा कि अल्लाह ने तुम्हारे क़ाफ़िले, माल और आदमियों को बचा लिया, तुम लौट आओ। यह सुनकर अबू जहल ने कहा नहीं! जब यहाँ तक हम आ चुके हैं तो हम बदर तक ज़रूर जायेंगे। यहाँ एक बाज़ार लगा करता था, वहाँ हम तीन रोज़ ठहरेंगे, वहाँ ऊँट ज़िबह करेंगे, शराब पियेंगे, कबाब बनायेंगे ताकि अ़रब में हमारी धूम मच जाये और हर एक को हमारी बहादुरी और जाँबाज़ी मालूम हो और वे हमेशा हमसे ख़ौफ़ज़दा (डरे) रहें। लेकिन अख़्नस बिन शुरैक़ ने कहा कि बनू ज़ोहरा के लोगो! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे माल महफ़ूज़ कर दिये, तुमको चाहिये कि अब वापस चले जाओ। उसके क़बीले ने उसकी बात मान ली, ये लोग तो लौट गये और बनू अ़दी भी।

बदर के क़रीब पहुँचकर रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब को हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम को ख़बर लाने के लिये भेजा, चन्द और सहाबा को भी उनके साथ कर दिया। उन्हें बनू सईद बिन आ़स और बनू हज्जाज का ग़ुलाम कुएँ पर मिल गया, दोनों को गिरफ़्तार कर लिया और रसूले ख़ुदा की ख़िदमत में पेश किया। उस वक़्त आप नमाज़ में थे। सहाबा ने उनसे सवाल करना शुरू किया कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा क़ुरैश के सक़्क़े हैं, उन्होंने हमें पानी लाने के लिये भेजा था। सहाबा का ख़्याल था कि अबू सुफ़ियान के आदमी हैं इसलिये उन्होंने उन पर सख़्ती शुरू की, आख़िर घबराकर उन्होंने कह दिया कि हम अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले के हैं, तब उन्हें छोड़ा। हुज़ूर सल्ल. ने एक रकअ़त पढ़कर सलाम फेरा और फ़रमाया कि जब तक ये सच बोलते रहे तुम इन्हें मारते पीटते रहे, और जब इन्होंने झूठ कहा तुमने छोड़ दिया। वल्लाह ये क़ुरैश के ग़ुलाम हैं, हाँ जी बतलाओ क़ुरैश का लश्कर कहाँ है? उन्होंने कहा वादी-ए-क़ुसवा के उस तरफ़ टीले के पीछे। आपने फ़रमाया वे तादाद में कितने हैं? उन्होंने कहा बहुत हैं। आपने फ़रमाया आख़िर कितने होंगे? उन्होंने कहा तादाद तो हमें मालूम नहीं। आपने फ़रमाया अच्छा यह बतला सकते हो कि हर रोज़ कितने ऊँट कटते हैं? उन्होंने कहा एक दिन नौ एक दिन दस। आपने फ़रमाया फिर तो वे नौ सौ से एक हज़ार तक हैं। फिर आपने दरियाफ़्त

Maktab E Ashraf

फ़रमाया कि उनमें क़ुरैश के सरदारों में से कौन-कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया उतबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, अबुल-बुख़्तरी बिन हिशाम, हकीम बिन हिज़ाम, नौफ़ल बिन ख़ुवैलद, हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल, तईमा बिन अदी, नज़र बिन हारिस, ज़अमा बिन अस्वद, अबू जहल, उमैया बिन ख़लफ़, नबीह बिन हज्जाज, मुनब्बेह बिन हज्जाज, सहल बिन अमर, अमर बिन अब्दे वुद्द। यह सुनकर आपने सहाबा से फ़रमाया लो मक्का ने अपने जिगर के टुकड़े तुम्हारी तरफ़ डाल दिये हैं। (यानी तुम हिम्मत से काम लो, क्योंकि ऐसे सरदारों से मुक़ाबला करना और अल्लाह के हुक्म से अगर फ़तह हो जाये तो अरब में मुसलमानों का सिक्का जमने के लिये यह सुनहरा मौक़ा है)।

बदर के दिन जब दोनों जमाअ़तों का मुक़ाबला शुरू होने लगा तो हज़रत सअ़द बिन मुआज़ रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया- अगर आप इजाज़त दें तो हम आपके लिये एक झोंपड़ी बना दें, आप वहाँ रहें, हम अपने जानवरों को यहीं बैठाकर मैदान में जा उतरें। अगर फ़तह हुई तो अल्हम्दु लिल्लाह यही हमारी चाहत व मक़सद है, वरना आप हमारे जानवरों पर सवार होकर उन्हें अपने साथ लेकर हमारी क़ौम के उन हज़रात के पास चले जायें जो मदीना शरीफ़ में हैं, वे हमसे ज़्यादा आपसे मुहब्बत रखते हैं। उन्हें मालूम न था कि कोई जंग होने वाली है, वरना वे हरगिज़ आपका साथ न छोड़ते, आपकी मदद के लिये आपके साथ निकल खड़े होते।

हुज़ूर सल्ल. ने उनके इस मश्विरे की क़द्र की, उन्हें दुआ़ दी और उस डेरे में आप ठहर गये। आपके साथ सिर्फ़ अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ही थे और कोई न था। सुबह होते ही क़ुरैशियों के लश्कर टीले के पीछे से आते हुए दिखाई दिये। उन्हें देखकर आपने अल्लाह की बारगाह में दुआ़ की कि बारी तआ़ला! ये घमंड व ग़ुरूर के साथ तुझसे लड़ते हैं और तेरे रसूल को झुठलाने के लिये आ रहे हैं। बारी तआ़ला! तू उन्हें पस्त व ज़लील कर।

इस आयत के आख़िरी जुमले की तफ़सीर सीरत इब्ने इस्हाक़ में यह है कि यह इसलिये कि कुफ़्र करने वाले ख़ुदा की दलील और निशानी देख ही लें अगरचे कुफ़्र पर ही रहें, और ईमान वाले भी दलील के साथ ईमान लायें। यानी बग़ैर किसी तैयारी और पहले से तयशुदा प्रोग्राम के अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों और मुश्रिकों की यहाँ अचानक मुठभेड़ करा दी कि हक़्क़ानियत को बातिल पर ग़लबा देकर हक़ को बिल्कुल ज़ाहिर कर दे। इस तरह कि किसी को शक व शुब्हा बाक़ी न रहे। अब जो कुफ़्र पर रहे वह भी कुफ़्र को कुफ़्र ही समझ कर रहे और जो ईमान वाला हो जाये वह दलील देखकर ईमान वाला बने। ईमान दिलों की ज़िन्दगी है और कुफ़्र ही असली हलाकत है। जैसा कि क़ुरआन में फ़रमाया गया है:

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ.......... الخ

यानी वह जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िन्दा कर दिया और उसके लिये नूर बना दिया कि उस रोशनी में वह लोगों में चल-फिर रहा है।

तोहमत वाले क़िस्से में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के अलफ़ाज़ हैं कि फिर जिसे हलाक होना था वह हलाक हो गया। यानी बोहतान में हिस्सा लिया। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे रोने-गिड़गिड़ाने और तुम्हारी दुआ़ व इस्तिग़फ़ार और फ़रियाद व मुनाजात को सुनने वाला है, वह ख़ूब जानता है कि तुम अहले हक़ हो, तुम इमदाद के हक़दार हो, तुम इस क़ाबिल हो कि तुम्हें काफ़िरों और मुश्रिकों पर ग़लबा दिया जाये।

Maktab E Ashraf

اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِىْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ۭ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِىْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِىْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِىَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝	(वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जब अल्लाह ने आपके ख़्वाब में आपको वे लोग कम दिखलाये और अगर अल्लाह आपको वे लोग ज़्यादा दिखा देते तो तुम्हारी हिम्मतें हार जातीं, और इस मामले में तुममें आपस में झगड़ा (व इख़्तिलाफ़) हो जाता, लेकिन (तय करने और ठहराने के बारे में) अल्लाह ने (उस कम-हिम्मती और इख़्तिलाफ़ से) बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात को ख़ूब जानता है। (43) और (उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तुमको जबकि तुम आमने-सामने हुए, वे लोग तुम्हारी नज़र में कम करके दिखला रहे थे और (इसी तरह) उनकी निगाह में तुमको कम करके दिखला रहे थे, ताकि जो बात अल्लाह को करनी मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे, और सब मुक़द्दमे ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाये जाएँगे। (44)

ع

मदद व ताईद एक नई शक्ल में

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को ख़्वाब में मुश्रिकों की तादाद बहुत कम दिखाई। आपने अपने सहाबा से ज़िक्र किया, यह चीज़ उनकी साबित-क़दमी का सबब बन गई। बाज़ बुज़ुर्ग कहते हैं कि आपको आपकी आँखों से तादाद कम दिखाई, जिन आँखों से आप सोते थे, लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। जब क़ुरआन में 'मनाम' के लफ़्ज़ हैं तो इसकी तावली बिला दलील करने की ज़रूरत ही क्या है। मुम्किन था कि उनकी तादाद की ज़्यादती दिलों पर रौब बैठा दे और आपस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो जाये कि आया उनसे लड़ें या न लड़ें, अल्लाह तआ़ला ने इस बात से ही बचा लिया और उनकी तादाद कम करके दिखाई। ख़ुदा पाक दिलों के भेद से, सीने के राज़ से वाक़िफ़ है। मुनाफ़िक़ों की ख़ियानत और दिल के भेद जानता है। ख़्वाब में तादाद कम दिखाकर फिर यह भी मेहरबानी फ़रमाई कि जंग के वक़्त भी मुसलमानों की निगाहों में वे बहुत ही कम आये, ताकि मुसलमान दिलेर हो जायें और उन्हें कोई चीज़ न समझें।

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- मैंने तो अन्दाज़ा करके अपने साथी से कहा कि ये लोग तो कुल सत्तर के क़रीब होंगे। उसने पूरा अन्दाज़ा करके कहा नहीं नहीं! कोई एक सौ हैं, फिर उनमें से एक शख़्स हमारे हाथ क़ैद हो गया, उससे हमने पूछा कि तुम कितने हो? उसने कहा यह एक हज़ार का लश्कर है। फिर इसी तरह काफ़िरों की नज़रों में भी ख़ुदा तआ़ला ने मुसलमानों की तादाद कम दिखाई। अब तो एक दूसरे पर कूद पड़े ताकि रब का काम जिसको वह अपने इल्म में मुक़र्रर कर चुका था, पूरा हो जाये। काफ़िरों पर अपनी पकड़ और मोमिनों पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा दे। पस जब तक लड़ाई शुरू नहीं हुई थी यही कैफ़ियत दोनों जानिब रही, लड़ाई शुरू होते ही अल्लाह ने एक हज़ार फ़रिश्तों से अपने बन्दों

Maktab E Ashraf

की मदद फ़रमाई। मुसलमानों का जत्था बढ़ गया और काफ़िरों का ज़ोर टूट गया। चुनाँचे अब तो काफ़िरों को मुसलमान अपने से दोगुने नज़र आने लगे और अल्लाह ने मोमिनों की मदद की और आँखों वालों के लिये इबरत का ख़ज़ाना खोल दिया। जैसा कि इस आयत में बयान हुआ है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ...... الخ

(यानी सूरः आले इमरान की आयत 13 में)

पस दोनों आयतें एक सी हैं, कम नज़र आते थे जब तक लड़ाई शुरू नहीं हुई, शुरू होते ही मुसलमान दोगुने दिखाई देने लगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝	ऐ ईमान वालो! जब तुमको (जिहाद में) किसी जमाअत से मुक़ाबले का इत्तिफ़ाक़ हुआ करे तो (इन आदाब का लिहाज़ रखो) (1) साबित-क़दम रहो (2) और अल्लाह तआ़ला का ख़ूब कसरत से ज़िक्र करो उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। (45) (3) और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त (का लिहाज़) किया करो। (4) और झगड़ा मत करो, (न अपने इमाम से और न आपस में) वरना कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (5) सब्र करो बेशक अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ हैं। (46)

अल्लाह का ज़िक्र एक कारामद हथियार

अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को लड़ाई की कामयाबी की तदबीर और दुश्मन के मुक़ाबले की हिम्मत व बहादुरी सिखा रहा है। एक ग़ज़्वे (लड़ाई) में रसूले मक़बूल सल्ल. ने सूरज ढलने के बाद खड़े होकर फ़रमाया- लोगो! दुश्मन से भिड़ जाने की तमन्ना न करो, अल्लाह तआ़ला से आ़फ़ियत माँगते रहो, लेकिन जब दुश्मनों से मुक़ाबला हो जाये तो अपने अन्दर जमाव रखो, और यक़ीन मानो कि जन्नत तलवारों के साये के नीचे है। फिर आपने खड़े होकर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की ऐ सच्ची किताब के नाज़िल फ़रमाने वाले! ऐ बादलों के चलाने वाले और लश्करों को शिकस्त देने वाले ख़ुदा! इन काफ़िरों को शिकस्त दे और इन पर हमारी मदद फ़रमा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत में है कि दुश्मन के मुक़ाबले की तमन्ना न करो, और मुक़ाबले के वक़्त साबित-क़दमी (जमाव), बहादुरी और जोश दिखाओ, वे अगरचे चीख़ें चिल्लायें लेकिन तुम ख़ामोश रहा करो। तबरानी में है कि तीन वक़्तों में अल्लाह तआ़ला को ख़ामोशी पसन्द है- जब क़ुरआन की तिलावत की जाये उस वक़्त, जिहाद के वक़्त और जनाज़े के वक़्त। एक और हदीस में है कि मेरा कामिल बन्दा वह है जो दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त भी मेरा ज़िक्र करता रहे। यानी उस हाल में भी मेरे ज़िक्र को, मुझसे दुआ़ करने को और मुझसे फ़रियाद करने को न छोड़े। हज़रत क़तादा रह. फ़रमाते हैं कि पूरी मशग़ूली के

Maktab E Ashraf

वक़्त यानी जब तलवार चलती हो तब भी अल्लाह तआ़ला ने अपना ज़िक्र फ़र्ज़ कर रखा है। हज़रत अ़ता रह. का क़ौल है कि चुप रहना और ज़िक्रुल्लाह करना लड़ाई के वक़्त भी वाजिब है। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई, तो जुरैज ने आपसे दरियाफ़्त किया- क्या अल्लाह तआ़ला की याद बुलन्द आवाज़ से करें? आपने फ़रमाया हाँ। कअ़बे अहबार रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम की तिलावत और ज़िक्रुल्लाह से ज़्यादा महबूब अल्लाह के नज़दीक और कोई चीज़ नहीं। इसमें भी आला वह है जिसका हुक्म लोगों को नमाज़ में किया गया है और जिहाद में, क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने जिहाद के वक़्त भी अपने ज़िक्र का हुक्म फ़रमाया है। फिर आपने यही आयत पढ़ी। शायर कहता है कि ऐन जंग व घमासान के वक़्त भी मेरे दिल में तेरी याद होती है। ग़तरा कहता है- नेज़ों और तलवारों के तेज़ी के साथ चलते हुए भी मैं तुझे याद करता रहता हूँ।

पस आयत में अल्लाह तआ़ला ने दुश्मनों के मुक़ाबले के वक़्त मैदाने जंग में साबित-क़दम रहने और सब्र व संयम का हुक्म दिया कि बुज़दिली न दिखाओ, अल्लाह को याद करो, उसे न भूलो, उससे फ़रियाद करो, उससे दुआयें करो, उसी पर भरोसा रखो, उससे मदद तलब करो, यही कामयाबी के गुर हैं। उस वक़्त भी ख़ुदा और रसूल की इताअ़त को हाथ से न जाने दो, वह जो फ़रमायें बजा लाओ, जिनसे रोकें रुक जाओ। आपस में झगड़े और इख़्तिलाफ़ न फैलाओ, वरना ज़लील हो जाओगे। बुज़दिली जम जायेगी, हवा उखड़ जायेगी, क़ुव्वत और तेज़ी जाती रहेगी, रुतबा और तरक़्क़ी रुक जायेगी। देखो सब्र का दामन न छोड़ो और यक़ीन रखो कि साबिरों के साथ ख़ुद ख़ुदा होता है।

सहाबा-ए-किराम इन अहकाम में ऐसे पूरे उतरे कि उनकी मिसाल उनसे पहलों में भी नहीं, बाद वालों का तो ज़िक्र ही क्या है। यही बहादुरी, यही इताअ़ते रसूल, यही सब्र व इस्तिक़लाल था जिसके कारण अल्लाह की मदद उनके शामिले हाल रही और बहुत ही कम मुद्दत में बावजूद तादाद और असबाब की कमी के पूरब व पश्चिम को फ़तह कर लिया, न सिर्फ़ लोगों के मुल्कों ही के मालिक बने बल्कि उनके दिलों को भी फ़तह करके ख़ुदा की तरफ़ लगा दिया। रोमियों और फ़ारसियों को, तुर्कों और सक़ालिया को, बरीरियों और हब्शियों को, सूडानियों और क़िबतियों को, ग़र्ज़ दुनिया के तमाम गोरों और कालों को अपने अधीन और ताबे कर लिया। अल्लाह के कलिमे को बुलन्द किया, दीने हक़ को फैला दिया, और इस्लामी हुकूमत को दुनिया के कोने-कोने में जमा दिया, अल्लाह उनसे ख़ुश रहे और उन्हें भी ख़ुश रखे। ख़्याल तो करो कि तेईस (23) साल में दुनिया का नक़्शा बदल दिया, तारीख़ का पन्ना पलट दिया, अल्लाह तआ़ला हमारा भी उनही की जमाअ़त में हश्र करे, वह करीम व वह्हाब है।

(6) और उन (काफ़िर) लोगों के जैसे मत होना कि जो (इसी बदर के वाक़िए में) अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी शान) दिखलाते हुए निकले और लोगों को अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोकते थे, और अल्लाह तआ़ला उनके आमाल को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है। (47) और (उस वक़्त का ज़िक्र कीजिये) जबकि शैतान ने उन	وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ○ وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ

Maktab E Ashraf

اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ
النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ
بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ
اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ اِذْ ع ٢
يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

(काफ़िरों) को उनके आमाल अच्छे करके दिखलाये और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारा हामी हूँ। फिर जब (काफ़िरों और मुसलमानों की) दोनों जमाअ़तें एक-दूसरे के आमने-सामने हुईं तो वह उल्टे पाँव भागा और (यह) कहा कि मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं, मैं उन चीज़ों को देख रहा हूँ जो तुमको नज़र नहीं आतीं (यानी फ़रिश्ते), मैं तो ख़ुदा से डरता हूँ और अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (48)

(और वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है कि) जब मुनाफ़िक़ लोग और जिनके दिलों में (शक की) बीमारी थी (यूँ) कहते थे कि इन (मुसलमान) लोगों को उनके दीन ने भूल में डाल रखा है। और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करता है तो बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले (भी) हैं। (49)

शैतानी फ़रेब का पर्दा चाक हो गया

जिहाद में साबित-क़दमी (पैर जमाने), नेक-नीयती और अल्लाह के ज़िक्र की अधिकता की नसीहत फ़रमाकर मुश्रिकों की मुशाबहत (यानी उन जैसे बनने) से मना किया जा रहा है कि जैसे वे हक़ को मिटाने और लोगों में अपनी बहादुरी दिखाने के लिये फ़ख़्र व ग़ुरूर के साथ अपने शहरों से चले तुम ऐसा न करना। चुनाँचे अबू जहल से जब कहा गया कि क़ाफ़िला तो बच गया अब लौटकर वापस चलना चाहिये, तो उस मलऊन ने जवाब दिया कि वाह किसका लौटना! बदर के पानी पर जाकर पड़ाव डालेंगे, वहाँ शराबें उड़ायेंगे, कबाब खायेंगे, गाना सुनेंगे ताकि लोगों में शोहरत हो जाये। अल्लाह की शान के क़ुरबान जाईये कि उनके अरमान क़ुदरत ने पलट दिये, यहीं उनकी लाशें गिरीं और यहीं के गड्ढ़ों में ज़िल्लत के साथ ठूँस दिये गये। अल्लाह उनके आमाल घेर लेने वाला है, उनके इरादे उस पर स्पष्ट हैं, इसलिये उन्हें बुरे वक़्त से पाला पड़ा। पस यह मुश्रिकों का ज़िक्र है जो अल्लाह के रसूल, रसूलों के सरताज हज़रत मुहम्मद सल्ल. से बदर में लड़ने चले थे, उनकी गाने वालियाँ भी थीं, बाजे गाजे भी थे, शैतान लईन उनका पुश्त-पनाह (पनाह देने वाला) बना हुआ था। उन्हें फुसला रहा था, उनके कामों को ख़ूबसूरत दिखा रहा था। उनके कानों में फूँक रहा था कि भला तुम्हें कौन हरा सकता है? उनके दिल से बनू बकर का मक्का पर चढ़ाई करने का ख़ौफ़ निकाल रहा था और सुराक़ा इब्ने मालिक बिन जाशम की सूरत में उनके सामने खड़े होकर कह रहा था कि मैं तो इस इलाक़े का सरदार हूँ बनू मुद्लज सब मेरे ताबे हैं, मैं तुम्हारा हिमायती हूँ बेफ़िक्र रहो। शैतान का काम भी यही है कि झूठे वादे करे, न होने वाली उम्मीदें दिलाये और धोखे के जाल में फंसाये।

बदर वाले दिन यह अपने झंडे वाले लश्कर को लेकर मुश्रिकों के साथ हुआ, उनके दिलों में डालता रहा कि बस तुम बाज़ी ले गये, मैं तुम्हारा मददगार हूँ। लेकिन जब मुसलमानों से मुक़ाबला शुरू हुआ और इस ख़बीस की नज़रें फ़रिश्तों पर पड़ीं तो पिछले पैरों भागा और कहने लगा- मैं वह देखता हूँ जिससे तुम्हारी आँखें अंधी हैं। इब्ने अ़ब्बास रजि. कहते हैं- बदर वाले दिन इब्लीस अपना झंडा बुलन्द किये मुद्लज ख़ानदान के एक शख़्स (सुराक़ा बिन मालिक) की सूरत में अपने लश्कर समेत पहुँचा और मुश्रिकों के दिल बढ़ाये, हिम्मत दिलाई। जब मैदाने जंग में सफ़-बन्दी हो गई तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने मिट्टी की मुट्ठी भरकर मुश्रिकों के मुँह पर मारी, उससे उनके क़दम उखड़ गये और उनमें भगदड़ पड़ गई। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम शैतान की तरफ़ चले, उस वक़्त यह एक मुश्रिक के हाथ में हाथ दिये हुए था, आपको देखते ही उसके हाथ से अपना हाथ छुड़ाकर अपने लश्कर समेत भाग खड़ा हुआ। उस शख़्स ने कहा सुराक़ा! तुम तो कह रहे थे कि तुम हमारे हिमायती हो, फिर यह क्या कर रहे हो? यह मलऊन चूँकि फ़रिश्तों को देख रहा था, कहने लगा मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देख सकते। मैं तो ख़ुदा से डरने वाला आदमी हूँ। अल्लाह के अ़ज़ाब बड़े भारी हैं।

एक और रिवायत में है कि उसे पीठ फेरता देखकर हारिस बिन हिशाम ने पकड़ लिया, उसने उसके मुँह पर थप्पड़ मारा, जिससे यह बेहोश होकर गिर पड़ा, तो औरों ने कहा कि सुराक़ा तू इस हाल में हमें ज़लील करता है? और ऐसे वक़्त हमें धोखा देता है? वह कहने लगा हाँ-हाँ मैं तुमसे अलग और बेताल्लुक़ हूँ। मेरा तुम्हारा कोई वास्ता नहीं। मैं उन्हें देख रहा हूँ जिन्हें तुम नहीं देख रहे हो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्ल. पर थोड़ी सी देर के लिये एक तरह की बेख़ुदी (यानी ऊँघ) तारी हो गई। फिर होशियार होकर फ़रमाने लगे सहाबियो! ख़ुश हो जाओ, ये हैं तुम्हारी दाईं जानिब हज़रत जिब्राईल और यह हैं तुम्हारी बाईं तरफ़ मीकाईल, और यह हैं हज़रत इस्राफ़ील। तीनों मय अपनी फ़ौजों के आ मौजूद हुए हैं। इब्लीस सुराक़ा बिन मालिक बिन जाशम मुद्लजी की सूरत में मुश्रिकों में था, उनके दिल बढ़ा रहा था और उनमें भविष्यवाणियाँ कर रहा था कि बेफ़िक्र रहो, आज तुम्हें कोई हरा नहीं सकता। लेकिन फ़रिश्तों के लश्कर देखते ही उसने तो मुँह मोड़ा और यह कहता हुआ भागा कि मैं तुमसे बरी हूँ। मैं उन्हें देख रहा हूँ जो तुम्हारी निगाह में नहीं आते। हारिस बिन हिशाम चूँकि उसे सुराक़ा ही समझे हुए था, इसलिये उसने उसका हाथ थाम लिया, उसने उसके सीने में इतनी ज़ोर से घूँसा मारा कि यह तो मुँह के बल गिर पड़ा और शैतान भाग गया। समुद्र में कूद पड़ा और अपना कपड़ा ऊँचा करके (यानी दामन फैलाकर) कहने लगा ख़ुदाया! मैं तुझे तेरा वादा याद दिलाता हूँ जो तूने मुझसे किया है (यानी क़ियामत की ज़िन्दगी देने का)।

तबरानी में हज़रत रिफ़ाआ़ बिन राफ़ेअ़ से भी इसी के क़रीब-क़रीब मन्क़ूल है। हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर कहते हैं कि जब क़ुरैशियों ने मक्के से निकलने का इरादा किया तो उन्हें बनू बकर की जंग याद आ गई और ख़्याल किया कि ऐसा न हो हमारी अ़दम-मौजूदगी (अनुपस्थिति) में यहाँ चढ़ दौड़ें। क़रीब था कि वे अपने इरादे से रुक जायें उसी वक़्त इब्लीस (शैतान) सुराक़ा की सूरत में उनके पास आया, यह बनू किनाना के सरदारों में से था, कहने लगा अपनी क़ौम का मैं ज़िम्मेदार हूँ तुम उनसे बेफ़िक्र रहो और मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये पूरे तैयार होकर सब जाओ, ख़ुद भी उनके साथ चला, हर मन्ज़िल में ये उसे देखते थे, सबको यक़ीन था कि सुराक़ा ख़ुद हमारे साथ है, यहाँ तक कि लड़ाई शुरू हो गई। उस वक़्त यह मरदूद दुम दबाकर भागा। हारिस इब्ने हिशाम या उमैर बिन वहब ने उसे जाते देख लिया, उसने शोर मचा दिया कि सुराक़ा कहाँ भागा जा रहा है? शैतान उन्हें मौत और दोज़ख़ के मुँह में धकेलकर ख़ुद फ़रार हो गया।

क्योंकि उसने ख़ुदाई लश्कर को मुसलमानों की इमदाद के लिये आते हुए देखा तो साफ़ कह दिया कि मैं तुमसे बरी हूँ। मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देखते। वह इस बात में था भी सच्चा।

फिर कहता है मैं ख़ुदा के ख़ौफ़ से डरता हूँ क्योंकि अल्लाह के अ़ज़ाब सख़्त और भारी हैं। उसने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को फ़रिश्तों के साथ उतरते देख लिया, समझ गया था कि इनके मुक़ाबले की मुझ में या मुश्रिकों में ताक़त नहीं, वह अपने इस क़ौल में तो झूठा था कि मैं ख़ौफ़े ख़ुदा करता हूँ। यह तो उसकी सिर्फ़ ज़बानी बात थी, दर असल वह अपने में ताक़त ही नहीं पाता था, यही उस दुश्मने ख़ुदा की आ़दत है कि भड़काता और बहकाता है, हक़ के मुक़ाबले में ला खड़ा कर देता है, फिर ग़ायब हो जाता है। क़ुरआन फ़रमाता है कि शैतान इनसान को कुफ़्र का हुक्म देता है, फिर जब वह कुफ़्र कर चुकता है तो यह कहने लगता है कि मैं तुझसे बेज़ार हूँ (यानी मेरा तेरा कोई वास्ता और संबन्ध नहीं) मैं अल्लाह रब्बुल आ़लमीन से डरता हूँ।

एक और आयत में है कि जब काम ख़त्म हो जाता है तो यह कहता है कि ख़ुदा के वादे सच्चे हैं। मैं ख़ुद झूठा, मेरे वादे सरासर झूठे, मेरा तुम पर कोई ज़ोर दावा तो था ही नहीं, तुमने तो ख़ुद ही मेरी आरज़ू पर गर्दन झुका दी। अब मुझे मलामत न करो, बुरा न कहो, ख़ुद अपने आपको मलामत करो, न मैं तुम्हें बचा सकूँ न तुम मेरे काम आ सको। इससे पहले तुम मुझे शरीके ख़ुदा बना रहे थे तो मैं आज इसका भी इनकारी हूँ। यक़ीन मानो कि ज़ालिमों के लिये दुख की मार (यानी दर्दनाक अ़ज़ाब) है।

हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीआ़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि अगर मेरी आँखें आज भी होतीं तो मैं तुम्हें बदर के मैदान में वह घाटी दिखा देता जहाँ से फ़रिश्ते आते थे, इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं कि मुझे वह मालूम है। उन्हें इब्लीस ने देख लिया और ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया कि मोमिनों को साबित-क़दम (जमाये) रखो। ये लोगों के पास उनके जान पहचान के आदमियों की शक्ल में आते और कहते ख़ुश हो जाओ, ये काफ़िर भी कोई चीज़ हैं? अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ है, बेख़ौफ़ी के साथ शेर की तरह हमला कर दो। इब्लीस यह देखकर भाग खड़ा हुआ, अब तक वह सुराक़ा की शक्ल में कुफ़्फ़ार में मौजूद था, अबू जहल ने यह हाल देखकर अपने लश्करों में गश्त शुरू किया, वह कह रहा था कि घबराओ नहीं उसके भाग खड़े होने से मायूस न हो जाओ, यह तो मुहम्मद की तरफ़ से सीखा-पढ़ा आया था कि तुम्हें ऐन मौक़े पर बुज़दिल कर दे। कोई घबराने की बात नहीं। 'लात' व 'उ़ज़्ज़ा' की क़सम हम आज इन मुसलमानों को इनके नबी समेत गिरफ़्तार कर लेंगे। नामर्दी न दिखाओ, दिल बढ़ाओ और सख़्त हमला करो। देखो ख़बरदार उन्हें क़त्ल न करना, ज़िन्दा पकड़ना ताकि उन्हें दिल खोलकर सज़ायें दें। यह भी अपने ज़माने का फ़िरऔ़न ही था, उसने भी जादूगरों के ईमान लाने पर कहा था कि यह तो सिर्फ़ तुम्हारा एक मक्र (चाल और फ़रेब) है, कि यहाँ से तुम हमें निकाल दो। उसने भी कहा था कि जादूगरो! यह मूसा तुम्हारा उस्ताद है, हालाँकि यह महज़ उसका फ़रेब था।

रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि अ़रफ़ा के दिन जिस क़द्र इब्लीस हक़ीर व ज़लील और कमज़ोर व पस्त होता है उतना किसी और दिन नहीं देखा गया। क्योंकि वह देखता है कि ख़ुदा तआ़ला की आ़म माफ़ी और आ़म रहमत उतरती है। हर एक के गुनाह उमूमन माफ़ हो जाते हैं, हाँ बदर के दिन की उस ज़िल्लत व रुस्वाई की कुछ न पूछो जबकि उसने देखा कि फ़रिश्तों की फ़ौजें जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के नेतृत्व में आ रही हैं। जब दोनों फ़ौजें सफ़बन्दी करके आमने-सामने आ गईं तो अल्लाह की क़ुदरत व हिक्मत से मुसलमान काफ़िरों को बहुत कम नज़र आने लगे, और काफ़िर मुसलमानों की निगाहों में कम जंचने लगे।

Maktab E Ashraf

इस पर काफ़िरों ने कहकहा (ठहाका) लगाया कि देखो मुसलमान कैसे मज़हबी दीवाने हैं, मुट्ठी भर आदमी हम एक हज़ार के लश्कर से टकरा रहे हैं, अभी कोई दम में इनका चूरा हो जायेगा, पहले ही हमले में वे शिकस्त खायेंगे कि सर सहलाते रह जायेंगे। अल्लाह रब्बुल-आलमीन फ़रमाते हैं कि उन्हें नहीं मालूम कि यह अल्लाह पर भरोसा करने वालों का गिरोह है, इनका भरोसा उस पर है जो ग़लबे का मालिक है, जो हिक्मत का मालिक है। ख़ुदा के दीन की सख़्ती मुसलमानों में महसूस करके उनकी ज़बान से यह कलिमा निकला कि उन्हें मज़हबी दीवानगी है।

दुश्मने ख़ुदा अबू जहल मलऊन टीले पर से झाँककर अल्लाह वालों की कम संख्या और सामान व हथियारों की कमी देखकर गधे की तरह फूल गया और कहने लगा लो पाला मार लिया है, बस आज से ख़ुदा की इबादत करने वालों से ज़मीन ख़ाली नज़र आयेगी। अभी हम इनमें से एक-एक के दो-दो करके रख देंगे। इब्ने जुरैज कहते हैं कि मुसलमानों के दीन में ताना देने वाले मक्का के मुनाफ़िक़ थे। आमिर कहते हैं ये चन्द लोग थे जो सिर्फ़ ज़बान से मुसलमान हुए थे लेकिन आज बदर के मैदान में मुश्रिकों के साथ थे। उन्हें मुसलमानों की कमी और कमज़ोरी देखकर ताज्जुब हुआ और कहा कि ये लोग मज़हबी जुनून का शिकार हैं।

मुजाहिद रह. कहते हैं कि यह क़ुरैश की एक जमाअ़त थी- क़ैस बिन वलीद बिन मुग़ीरा, अबू क़ैस बिन फ़ाका बिन मुग़ीरा, हारिस बिन ज़मआ़ बिन अस्वद, इब्ने अ़ब्दुल-मुत्तलिब, अ़ली बिन उमैया बिन ख़लफ़ और आ़स बिन मुनब्बेह बिन हज्जाज। ये क़ुरैश के साथ थे लेकिन थे ये शक में, और इसी में रुके हुए थे, यहाँ मुसलमानों की हालत देखकर कहने लगे ये लोग तो सिर्फ़ मज़हबी मजनूँ हैं, वरना मुट्ठी भर बिना सामान व बिना हथियार के आदमी इतने बड़े टिड्डी दल, शान व शौकत वाली फ़ौजों के सामने क्यों खड़े हो जाते? हसन रह. फ़रमाते हैं कि ये लोग बदर की लड़ाई में नहीं आये थे, इनका नाम मुनाफ़िक़ रख दिया गया। कहते हैं कि यह क़ौम इस्लाम की इक़रारी थी, लेकिन मुश्रिकों की रौ में बहकर यहाँ चली आई, यहाँ आकर मुसलमानों का कमज़ोर जत्था देखकर उन्होंने यह कहा।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि जो उस मालिकुल-मुल्क पर भरोसा करे उसे वह इज़्ज़त वाला कर देता है, क्योंकि इज़्ज़त उसकी बाँदी है और ग़लबा उसका ग़ुलाम है (यानी ये चीज़ें उसी के क़ब्ज़े में हैं)। वह बुलन्द शान वाला है, वह बड़ी अ़ज़मत वाला है, वह सच्चा सुल्तान है, वह हकीम है, उसके सब काम हिक्मत से भरे होते हैं। वह हर चीज़ को उसकी ठीक जगह पर रखता है। जो इमदाद के हक़दार और मुस्तहिक़ होते हैं उनकी वह मदद फ़रमाता है, और जो ज़िल्लत व रुस्वाई के मुस्तहिक़ होते हैं उनको वह ज़लील करता है। वह सब को ख़ूब जानता है।

और अगर आप (उस वक़्त का वाक़िआ़) देखें जबकि फ़रिश्ते इन (मौजूदा) काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते जाते हैं (और) उनके मुँह पर और उनकी पीठ पर मारते जाते हैं, और (यह कहते जाते हैं कि अभी क्या है आगे चलकर) आग की सज़ा झेलना। (50) यह (अ़ज़ाब) उन	وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ○

(कुफ़्रिया आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआ़ला बन्दों पर ज़ुल्म करने वाले नहीं। (51)	ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

Maktab E Ashraf

फ़रिश्तों का काफ़िरों पर टूट पड़ना और काफ़िरों का जहन्नम रसीद होना

काश कि ऐ पैग़म्बर! तू देखता कि फ़रिश्ते किस बुरी तरह काफ़िरों की रूह क़ब्ज़ करते हैं। वह उस वक़्त उनके चेहरों और कमर पर मारते हैं और कहते हैं कि आग का अ़ज़ाब अपनी बद-आमालियों के बदले चखो। यह मतलब भी बयान किया गया है कि यह वाक़िआ़ भी बदर के दिन का है कि सामने से उन काफ़िरों के चेहरों पर तलवारें पड़ती थीं और जब भागते थे तो पीठ पर वार पड़ते थे, फ़रिश्ते उनका ख़ूब बुरा हाल बना रहे थे।

एक सहाबी ने हुज़ूर सल्ल. से कहा- मैंने अबू जहल की पीठ पर काँटों के जैसे निशान देखे हैं। आपने फ़रमाया- ये फ़रिश्तों की मार के निशान हैं। हक़ यह है कि यह आयत बदर के साथ मख़्सूस नहीं, अलफ़ाज़ आ़म हैं, हर काफ़िर का यही हाल होता है। सूरः क़िताल में भी इस बात का बयान हुआ है, और सूरः अन्आ़म की आयतः

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ...... الخ

(सूरः अन्आ़म आयत नम्बर 94) में भी इसका बयान मय तफ़सीर गुज़र चुका है।

चूँकि ये नाफ़रमान लोग थे, इनकी मौत के वक़्त फ़रिश्तों के हाथ इनकी जानिब बढ़े हुए होते हैं, वे इन्हें ख़ूब मारते हैं, इनकी रूहें अपने बुरे आमाल की वजह से अपने बदन में छुपती फिरती हैं, जिन्हें फ़रिश्ते जबरन निकालते हैं और कहते हैं कि तेरे लिये अल्लाह का ग़ज़ब और उसका अ़ज़ाब है। जैसा कि हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस में है कि उस बुरी हालत (यानी जान निकलने के वक़्त की हालत) के वक़्त जबकि काफ़िर के पास मलकुल-मौत (मौत का फ़रिश्ता) आते हैं तो फ़रमाते हैं ऐ ख़बीस रूह! चल गर्म हवाओं, गर्म पानी और गर्म साये की तरफ़। पस वह रूह बदन में छुपती फिरती है, आख़िर उसे जबरन घसीटा जाता है, जिस तरह किसी ज़िन्दा शख़्स की खाल को उतारा जाये। उसी के साथ रगें और पट्ठे भी आ जाते हैं। फ़रिश्ते उससे कहते हैं अब जलने का मज़ा चखो, यह तुम्हारी दुनियावी बद-आमाली की सज़ा है। अल्लाह तआ़ला ज़ालिम नहीं, वह तो आ़दिल हाकिम है। बरकत व बुलन्दी, ग़िना और पाकीज़गी वाला बुज़ुर्ग और तारीफ़ों वाला है। चुनाँचे सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदसी में है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म हराम कर लिया है और तुम पर भी हराम कर दिया है, पस आपस में कोई किसी पर ज़ुल्म व सितम न करे। ऐ मेरे बन्दो! मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे किये हुए आमाल ही को घेरे हुए हूँ भलाई पाकर मेरी तारीफ़ें करो और इसके सिवा कुछ और देखो तो अपने आपको ही मलामत करो।

(उनकी हालत ऐसी है) जैसी फ़िरऔन वालों की, और उनसे पहले के (काफ़िर) लोगों की हालत (थी) कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया, सो ख़ुदा तआ़ला ने उनके (उन) गुनाहों पर उनको पकड़ लिया, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाले, सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (52)	كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

फ़िरऔन और उसकी हलाकत

इन काफ़िरों ने भी तेरे साथ वही किया जो इनसे पहले काफ़िरों ने अपने नबियों के साथ किया था। पस हमने भी इनके साथ वही किया जो इनसे पहलों के साथ किया था, जो इन्हीं जैसे थे। जैसे फ़िरऔन वाले और उनसे पहले कि लोग, जिन्होंने ख़ुदा की आयतों को न माना, जिसके कारण ख़ुदाई पकड़ उन पर आ गई। तमाम क़ुव्वतें अल्लाह की हैं और उसके अ़ज़ाब भी बड़े भारी हैं, कोई नहीं जो उस पर ग़ालिब आ सके, कोई नहीं जो उससे भाग सके।

यह बात इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला किसी ऐसी नेमत को जो किसी क़ौम को अ़ता फ़रमाई हो, नहीं बदलते जब तक कि वही लोग अपने ज़ाती आमाल को नहीं बदल डालते, और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले, बड़े जानने वाले हैं। (53) (उनकी हालत) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों की-सी हालत (है) कि उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, उस पर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया, और वे सब ज़ालिम थे। (54)	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝

क़ुदरत का क़ानून

अल्लाह तआ़ला के अ़दल व इन्साफ़ का बयान हो रहा है कि वह अपनी दी हुई नेमतें गुनाहों से पहले नहीं छीनता। जैसे एक दूसरी आयत में है कि अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वे अपनी उन बातों को न छोड़ दें जो उनके दिलों में हैं। जब वह किसी क़ौम की बुराईयों की वजह से उन्हें बुराई पहुँचाना चाहता है तो कोई उसके इरादे को लौटा नहीं सकता, न उसके ख़िलाफ़ काफ़िरों का

कोई हिमायती हो सकता है। तुम देख लो कि फ़िरऔन वालों के और उन जैसे उनसे पहले वालों के साथ भी यही हुआ। उन्हें अल्लाह ने अपनी नेमतें दीं, वे अपने बुरे आमाल में मुब्तला हो गये तो अल्लाह तआ़ला ने अपने दिये हुए बाग़ात, चश्मे, खेतियाँ, ख़ज़ाने, महल और नेमतें जिनमें वे मस्त हो रहे थे सब छीन लिये। इस बारे में उन्होंने खुद अपना बुरा किया, ख़ुदा ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था।

Maktab E Ashraf

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ عَاهَدتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝	**बिला शुब्हा मख़्लूक़ में सबसे बुरे अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ये काफ़िर लोग हैं, तो ये ईमान न लाएँगे। (55) जिनकी यह कैफ़ियत है कि आप उनसे (कई बार) अ़हद ले चुके हैं (मगर) फिर (भी) वे हर बार अपना अ़हद तोड़ डालते हैं, और वे (अ़हद तोड़ने से) डरते नहीं। (56) सो अगर आप लड़ाई में उन लोगों पर क़ाबू पाएँ तो उन (पर हमला करके उस) के ज़रिये से और लोगों को जो कि उनके अ़लावा हैं मुन्तशिर "यानी तितर-बितर" कर दीजिए, ताकि वे लोग समझ जाएँ। (57)**

कुफ़्फ़ार एक घिनौनी मख़्लूक़ हैं

ज़मीन पर जितने भी चलते फिरते (यानी प्राणी और ज़िन्दा चीज़ें) हैं उन सबसे बदतर अल्लाह के नज़दीक बेईमान काफ़िर हैं, जो अ़हद करके तोड़ देते हैं। इधर क़ौल व क़रार किया उधर फिर गये। इधर क़समें खाईं उधर तोड़ दीं। न ख़ुदा का ख़ौफ़ न गुनाह का डर। पस जब तू उन पर लड़ाई में ग़ालिब आ जाये तो ऐसी सज़ा दे कि बाद वालों को भी इबरत (सबक़) हासिल हो, वे भी ख़ौफ़ खा जायें, तो मुम्किन है कि अपने ऐसे करतूत से बाज़ रहें।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۝	**और अगर आपको किसी क़ौम से ख़ियानत (यानी अ़हद तोड़ने) का अन्देशा हो तो आप (वह अ़हद) उनको इस तरह वापस कर दीजिए कि (आप और वे उस इत्तिला में) बराबर हो जाएँ, बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ियानत करने वालों को पसन्द नहीं करते। (58)**

ع

जंग न करने का मुआ़हिदा और अ़हद का तोड़ना

इरशाद होता है कि ऐ नबी! अगर किसी से तुम्हारा अ़हद व पैमान (संधि) हुआ हो और तुम्हें ख़ौफ़ हो कि अ़हद और वादे के ख़िलाफ़ किया जायेगा तो तुम्हें इख़्तियार दिया जाता है कि बराबर की हालत में अ़हद-नामा तोड़ दो और उन्हें इत्तिला कर दो ताकि वे भी सुलह के ख़्याल (धोखे) में न रहें। कुछ दिन

Maktab E Ashraf

पहले ही से उन्हें ख़बर कर दो, अल्लाह ख़ियानत को नापसन्द फ़रमाता है। काफ़िरों से भी ख़ियानत तुम न करो। मुस्नद अहमद में है कि अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने लश्करों को रोम की सीमाओं की तरफ़ बढ़ाना शुरू किया, कि सुलह की मुद्दत ख़त्म होते ही उन पर अचानक हमला कर देंगे, तो एक शैख़ (बड़ी उम्र के आदमी) अपनी सवारी पर सवार यह कहते हुए आये कि अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है, वादा पूरा करो, धोखा और वादा-ख़िलाफ़ी दुरुस्त नहीं। रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान है कि जब किसी क़ौम से अ़हद व पैमान हो जायें तो न कोई गिरह खोलो न बाँधो (यानी उस वादे के ख़िलाफ़ कोई क़दम न उठाओ), जब तक कि सुलह की मुद्दत ख़त्म न हो जाये, या उन्हें इत्तिला देकर अ़हद-नामा ख़त्म न हो जाये। जब यह बात हज़रत मुआ़विया रज़ि. को मालूम हुई तो आपने उसी वक़्त फ़ौज को वापसी का हुक्म दे दिया। यह शख़्स हज़रत अ़मर बिन अ़ंबसा थे।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. ने एक शहर के क़िले के पास पहुँचकर अपने साथियों से फ़रमाया तुम मुझे बुलाओ मैं तुम्हें बुलाऊँगा, जैसा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को इन्हें बुलाते देखा है। फिर फ़रमाया मैं भी उनही में से एक शख़्स था, पस मुझे अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम की हिदायत की, अगर तुम भी मुसलमान हो जाओ तो जो हमारा हक़ है वही तुम्हारा हक़ होगा, और जो हम पर है तुम पर भी वही होगा, और अगर तुम इसे नहीं मानते तो ज़िल्लत के साथ तुम्हें जिज़या (इस्लामी हुकूमत में जान माल की हिफ़ाज़त के बदले टैक्स) देना होगा। इसे भी क़बूल न करो तो हम तुम्हें अभी से ख़बरदार करते हैं जबकि हम तुम बराबरी की हालत में हैं, अल्लाह तआ़ला ख़ियानत करने वालों को पसन्द नहीं रखता। तीन दिन तक उन्हें इसी तरह दावत दी, आख़िर चौथे दिन सुबह ही सुबह हमला कर दिया। अल्लाह तआ़ला ने मदद फ़रमाई और फ़तह नसीब हुई।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۭ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ۝ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝

और काफ़िर लोग अपने को यह ख़्याल न करें कि वे बच गये, यक़ीनन वे लोग (ख़ुदा तआ़ला को) आ़जिज़ नहीं कर सकते। (59) और उन (काफ़िरों) के लिए जिस क़द्र हो सके तुमसे क़ुव्वत (यानी हथियार) से और पले हुए घोड़ों से, सामान दुरुस्त रखो, कि उसके ज़रिये से तुम उन पर (अपना) रौब जमाये रखो जो कि (कुफ़्र की वजह से) अल्लाह के दुश्मन हैं और तुम्हारे दुश्मन हैं, और उनके अ़लावा दूसरों पर भी जिनको तुम (ख़ास और मुतैयन तौर पर) नहीं जानते, उनको अल्लाह ही जानता है, और अल्लाह की राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे वह तुमको पूरा-पूरा दे दिया जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ कमी न होगी। (60)

Maktaba E Ashraf

जिहाद की तैयारी

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि काफ़िर लोग यह न समझें कि वे हमसे भाग निकले, हम अब उनको पकड़ नहीं सकते, बल्कि वे हर वक़्त हमारे क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में हैं। वे हमें आजिज़ नहीं कर सकते। एक और आयत में है कि बुराईयाँ करने वाले हमसे आगे नहीं बढ़ सकते। फ़रमाता है कि काफ़िर हमें यहाँ हरा नहीं सकते, वहाँ उनका ठिकाना आग है जो बहुत बुरी जगह है। एक और फ़रमान है कि काफ़िरों का शहरों में आना-जाना चलना-फिरना (यानी चैन व सुकून, माल व दौलत और ऐश व आराम से रहना) कहीं तुझे धोखे में न डाल दे, यह तो मामूली सी पूँजी है, उनका ठिकाना दोज़ख़ है जो बुरा बिस्तर है। फिर मुसलमानों को हुक्म होता है कि अपनी ताक़त व संभावना के मुताबिक़ इन काफ़िरों के मुक़ाबले के लिये हर वक़्त मुस्तैद और तैयार रहो, जो क़ुव्वत व ताक़त, जो घोड़े, लश्कर रख सकते हो मौजूद रखो। मुस्नद में है कि नबी करीम सल्ल. ने मिम्बर पर क़ुव्वत की तफ़सीर तीर-अन्दाज़ी से की और दो मर्तबा यही फ़रमाया। फ़रमाते हैं कि तीर-अन्दाज़ी किया करो, सवारी किया करो और तीर-अन्दाज़ी (यानी निशाने की मश्क़) घुड़सवारी से बेहतर है। फ़रमाते हैं कि घोड़ों के पालने वाले तीन क़िस्म के हैं- एक तो अज्र व सवाब पाने वाले, एक न तो सवाब वाले न अ़ज़ाब वाले, एक अ़ज़ाब भुगतने वाले। जो जिहाद के इरादे से पाले उसका घोड़ा जो चरे-चुगे चले-फिरे जो करे उस पर सवाब मिलता है, यहाँ तक कि अगर वह अपनी रस्सी तोड़कर कहीं चढ़ जाये तो भी उसके क़दमों के निशान और उसकी लीद पर भी उसे नेकियाँ मिलती हैं। किसी नहर पर गुज़रते हुए वह पानी पी ले अगरचे मुजाहिद ने पिलाने का इरादा न किया हो फिर भी उसे नेकियाँ मिलती हैं। पस यह घोड़ा तो उसके पालने वाले के लिये बड़े अज्र व सवाब का ज़रिया है। और जिस शख़्स ने घोड़ा पाला कि वह दूसरों से बेपरवाह हो जाये (यानी अपनी सवारी और सामान वग़ैरह की ज़रूरत पूरी करे, इसमें किसी का मोहताज न रहे), फिर ख़ुदा का हक़ भी उसकी गर्दन और उसकी सवारी में न भूला तो यह उसके लिये पर्दा है। यानी न उसे अज्र न उसे गुनाह।

तीसरा वह शख़्स जिसने दिखावे और दूसरों पर शान जताने के तौर पर पाला और मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये, वह उसके ज़िम्मे वबाल है, और उसकी गर्दन पर बोझ है। आपसे दरियाफ़्त किया गया कि अच्छा गधों के बारे में क्या हुक्म है? फ़रमाया इसके बारे में कोई आयत तो उतरी नहीं, हाँ तमाम चीज़ों को शामिल यह आयत मौजूद है कि जो शख़्स एक ज़र्रे के बराबर नेकी करेगा वह उसे देख लेगा, और जो एक ज़र्रे के बराबर बुराई करेगा वह उसे देख लेगा।

यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। एक और हदीस में ये अलफ़ाज़ हैं- घोड़े तीन तरह के हैं रहमान के, शैतान के और इनसान के। उसमें है कि शैतानी घोड़े वे हैं जो घुड़दौड़ की शर्तें लगाने और जुए-बाज़ी करने के लिये हों। अक्सर उलेमा का क़ौल है कि तीर-अन्दाज़ी (यानी निशानेबाज़ी सीखना और उसकी मश्क़) घुड़सवारी से अफ़ज़ल है। इमाम मालिक की राय इसके ख़िलाफ़ हैं, लेकिन जमहूर का क़ौल क़वी और मज़बूत है, क्योंकि हदीस में भी आ चुका है, हज़रत मुआ़विया बिन जुरैज हज़रत अबूज़र रज़ि. के पास गये, उस वक़्त वह अपने घोड़े की ख़िदमत कर रहे थे, पूछा तुम इस घोड़े से क्या काम लेते हो? फ़रमाया मेरा ख़्याल है कि इस जानवर की दुआ़ मेरे हक़ में क़बूल हो गई है। कहा जानवर और दुआ़? फ़रमाया हाँ ख़ुदा की क़सम! हर घोड़ा हर सुबह दुआ़ करता है कि ऐ अल्लाह! तूने मुझे अपने बन्दों में से एक के हवाले किया है, तो तू मुझे उसके तमाम घर वालों, माल और औलाद से ज़्यादा अच्छा बनाकर

Maktaba E Ashraf

उसके पास रख। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हर अ़रबी घोड़े को हर सुबह को दो दुआ़यें करने की इजाज़त मिलती है।

नबी करीम सल्ल. फ़रमाते हैं कि घोड़ों की पेशानियों में भलाई बंधी हुई है। घोड़ों वाले ख़ुदा की मदद में हैं, उसे नेक-नीयती से जिहाद के इरादे से पालने वाला ऐसा है जैसे कोई शख़्स हर वक़्त हाथ बढ़ाकर ख़ैरात करता रहे। और भी हदीसें इस बारे में बहुत सी हैं। सही बुख़ारी शरीफ़ में भलाई की तफ़सील है कि अज्र और ग़नीमत (यानी दुश्मन से हाथ आया हुआ माल)।

फ़रमाता है कि इससे तुम्हारे दुश्मन ख़ौफ़ज़दा और भयभीत रहेंगे। इन ज़ाहिरी मुक़ाबले के दुश्मनों के अ़लावा और भी दुश्मन हैं, यानी बनू क़ुरैज़ा, फ़ारस और महलों के शैयातीन। एक मरफ़ूअ़ हदीस भी है कि इससे मुराद जिन्नात हैं। एक मुन्कर हदीस में है कि जिस घर में कोई आज़ाद घोड़ा हो वह घर कभी बद-नसीब नहीं होगा, लेकिन इस रिवायत की न तो सनद ठीक है न यह सही है। और इससे मुराद मुनाफ़िक़ भी लिया गया है, और यही क़ौल ज़्यादा मुनासिब भी है। जैसा कि फ़रमाने ख़ुदा है:

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ...... الخ

तुम्हारे हर तरफ़ देहाती और मदीने वाले मुनाफ़िक़ हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते, लेकिन हम उनसे ख़ूब वाक़िफ़ हैं। फिर इरशाद है कि जिहाद में जो कुछ तुम ख़र्च करोगे उसका पूरा बदला पाओगे। अबू दाऊद में है कि एक दिर्हम का सवाब सात सौ गुना करके मिलेगा जैसा कि आयत "म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न...." (सूरः ब-क़रह की आयत 261) में है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि पहले तो रसूलुल्लाह सल्ल. सिर्फ़ मुसलमानों को ही ख़ैरात सदक़ात देने का हुक्म दिया करते थे, जब यह आयत "व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइंय्युवफ़्-फ़ इलैकुम...." (सूरः ब-क़रह आयत 272) उतरी तो आपने फ़रमाया कि किसी धर्म का हो, जो भी सवाल करे उसके साथ सुलूक करो (यानी उसका ख़्याल करो)। यह रिवायत ग़रीब है। इब्ने अबी हातिम में है।

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَاِنْ
يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ
هُوَ الَّذِیْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

और अगर वे (काफ़िर) सुलह की तरफ़ झुकें तो आप भी उस तरफ़ झुक जाईये और अल्लाह पर भरोसा रखिये, बिला शुब्हा वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (61) और अगर वे लोग आपको धोखा देना चाहें तो अल्लाह तआ़ला आपके लिए काफ़ी हैं, वह वही है जिसने आपको अपनी (ग़ैबी) इमदाद (फ़रिश्तों) से और (ज़ाहिरी इमदाद) मुसलमानों से क़ुव्वत दी (62) और उनके दिलों में एकता और इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, अगर आप दुनिया भर का माल ख़र्च करते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (63)

Maktab E Ashraf

जंग न करने का मुआहिदा

इरशाद है कि जब किसी क़ौम की ख़ियानत का ख़ौफ़ (शंका और डर) हो तो उसे आगाह करके अ़हद नामा फाड़ डालो। लड़ाई की इत्तिला कर दो। उसके बाद अगर वे लड़ाई पर आमादगी ज़ाहिर करें तो अल्लाह पर भरोसा करके जिहाद शुरू कर दो, और अगर वे फिर सुलह पर आमादा हो जायें तो तुम फिर सुलह व सफ़ाई कर लो। इसी आयत की तामील में हुदैबिया वाले दिन रसूलुल्लाह सल्ल. ने मक्का के मुश्रिकों से नौ साल की मुद्दत के लिये सुलह कर ली, जो कई शर्तों पर तय हुई। हज़रत अ़ली रज़ि. से मन्क़ूल है कि रसूले करीम सल्ल. ने फ़रमाया- अ़न्क़रीब इख़्तिलाफ़ (विवाद और मतभेद) होगा और कोई बात पेश आयेगी, पस अगर तुझसे हो सके तो सुलह ही कर लेना। (मुस्नद इमाम अहमद)

मुजाहिद रह. कहते हैं कि यह आयत बनी क़ुरैज़ा के बारे में उतरी है, लेकिन यह ग़ौर-तलब बात है, बल्कि सारा क़िस्सा बदर का है। बहुत से बुज़ुर्गों (उलेमा) का ख़्याल है कि सूरः बराअत की तलवार वाली आयत "क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि....." से मन्सूख़ है। लेकिन यह भी विचारणीय है, क्योंकि इस आयत में जिहाद का हुक्म ताक़त व हिम्मत और गुंजाईश पर है, लेकिन दुश्मनों की ज़्यादती (अधिक संख्या या ज़्यादा ताक़तवर होने) के वक़्त उनसे सुलह कर लेनी बिला शक व शुब्हा जायज़ है। जैसा कि आयत में है और जैसे हुदैबिया की सुलह अल्लाह के रसूल सल्ल. ने की। पस कोई ख़िलाफ़ या कोई ख़ुसूसियत या मन्सूख़ियत नहीं। वल्लाहु आलम

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह पर भरोसा रख, वही तुझे काफ़ी है, वही तेरा मददगार है। अगर ये धोखेबाज़ी करके कोई फ़रेब देना चाहते हैं और उस दरमियान में अपनी शान व शौकत और जंग के हथियार और उपकरण बढ़ाना चाहते हैं तो तू बेफ़िक्र रह, अल्लाह तेरा तरफ़दार है, वह तुझे काफ़ी है, उसके मुक़ाबले का कोई नहीं।

फिर अपनी एक आला (बड़ी) नेमत का ज़िक्र फ़रमाता है कि मुहाजिरीन व अन्सार के ज़रिये अपने फ़ज़्ल से तेरी ताईद कराई, उन्हें तुझ पर ईमान लाने, तेरी इताअ़त करने की तौफ़ीक़ दी। तेरी मदद और तेरी नुसरत पर उन्हें आमादा किया। तू ख़ुद अगरचे रू-ए-ज़मीन के ख़ज़ाने ख़र्च कर डालता लेकिन उनमें वह उलफ़त व मुहब्बत पैदा न कर सकता जो अल्लाह ने ख़ुद कर दी। उनकी सदियों पुरानी अ़दावतें (दुश्मनियाँ) दूर कर दीं। 'औस' व 'ख़ज़रज' अन्सार के क़बीलों में जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) में आपस में ख़ूब तलवार चला करती थी, ईमान के नूर ने उस दुश्मनी को मुहब्बत से बदल दिया। जैसा कि क़ुरआन का बयान है कि अल्लाह के इस एहसान को याद करो कि तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन थे, उसने तुम्हारे दिल मिला दिये और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें भाई-भाई बना दिया। तुम जहन्नम के किनारे तक पहुँच गये थे, लेकिन उसने तुम्हें बचा लिया, अल्लाह तआ़ला तुम्हारी हिदायत के लिये इसी तरह अपनी बातें बयान फ़रमाता है।

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि जंगे हुनैन की ग़नीमत (हाथ आये माल) की तक़सीम के वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. ने अन्सार से फ़रमाया- ऐ अन्सारियो! क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में पाकर ख़ुदा की इनायत से तुम्हें सही राह नहीं दिखाई? क्या तुम फ़क़ीर न थे? अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मेरी वजह से अमीर कर दिया। तुम जुदा-जुदा (एक दूसरे से कटे हुए) थे, अल्लाह तआ़ला ने मेरी वजह से तुम्हारे दिल मिला दिये। आपकी हर-हर बात पर अन्सार कहते जाते थे कि बेशक ख़ुदा और रसूले ख़ुदा का हम पर इससे भी

Maktab E Ashraf

ज़्यादा एहसान है। ग़र्ज़ यह कि अपने इस इनाम व इकराम को बयान फ़रमाकर अपनी इज़्ज़त व हिक्मत का इज़हार किया कि वह बुलन्द शान वाला है, उससे उम्मीद रखने वाला नाउम्मीद नहीं रहता। उस पर तवक्कुल (भरोसा और एतिमाद) करने वाला सरसब्ज़ रहता है। वह अपने कामों में अपने हुक्म में हकीम है। इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि क़राबतदारी (रिश्तेदारी) के रिश्ते टूट जाते हैं और नेमत की नाशुक्री हो जाती है, दिलों के मैल जैसी और कोई चीज़ देखी नहीं गई। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है- अगर तू पूरी दुनिया के ख़ज़ाने भी ख़त्म कर देता तो तेरे बस में न था कि उनके दिल मिला दे। शायर कहता है कि तुझसे धोखा करने वाला, तुझसे बेपरवाही बरतने वाला तेरा रिश्तेदार नहीं बल्कि तेरा हक़ीक़ी (असली) रिश्तेदार वह है जो तेरी आवाज़ पर लब्बैक कहे और तेरे दुश्मनों को कुचलने में तेरा साथ दे।

एक और शायर कहता है कि मैंने तो ख़ूब मिल-जुलकर आज़मा लिया कि क़राबतदारी (रिश्तों-नातों) से भी बढ़कर दिलों का मेल-जोल है। इमाम बैहक़ी रह. फ़रमाते हैं- मैं नहीं जान सका कि यह सारा क़ौल इब्ने अ़ब्बास का ही है या दूसरों रावियों में से किसी का है। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं- उनकी यह मुहब्बत राहे ख़ुदा में थी, तौहीद व सुन्नत की बिना पर (यानी अल्लाह और उसके रसूल के लिये) थी।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि रिश्तेदारियाँ भी टूट जाती हैं, एहसान की भी नाशुक्री कर दी जाती है, लेकिन जब ख़ुदा की जानिब से दिल मिला दिये जाते हैं उन्हें कोई जुदा नहीं कर सकता। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। अ़बदा बिन अबी लबाबा फ़रमाते हैं- मेरी हज़रत मुजाहिद रह. से मुलाक़ात हुई। आपने मुझसे मुसाफ़ा करके फ़रमाया कि जब दो शख़्स ख़ुदा की राह में मुहब्बत रखने वाले आपस में मिलते हैं, एक दूसरे से हंसते चेहरे के साथ हाथ मिलाता है तो दोनों के गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते। मैंने कहा यह काम तो बहुत आसान है? फ़रमाया यह न कहो यही उलफ़त वह है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर तू रू-ए-ज़मीन (यानी पूरी दुनिया) के ख़ज़ाने ख़र्च कर दे तो भी यह तेरे बस की बात नहीं कि दिलों में उलफ़त व मुहब्बत पैदा कर दे। उनके इस इरशाद से मुझे यक़ीन हो गया कि यह मुझसे बहुत ज़्यादा समझदार हैं।

वलीद बिन अबी मुग़ीस कहते हैं- मैंने हज़रत मुजाहिद से सुना कि जब दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ा करते हैं तो उनके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। मैंने पूछा सिर्फ़ मुसाफ़े से ही? तो आपने फ़रमाया क्या तुमने अल्लाह का यह फ़रमान नहीं सुना? फिर आपने इसी आयत की तिलावत की, तो हज़रत वलीद ने फ़रमाया तुम मुझसे बहुत बड़े आ़लिम हो। उमैर बिन इस्हाक़ कहते हैं कि सबसे पहली चीज़ जो लोगों में से उठ जायेगी वह उलफ़त व मुहब्बत है। तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई से मिलकर उससे मुसाफ़ा करता है तो दोनों के गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते तेज़ हवा से। उनके सब गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं चाहे वे समुद्र के झाग जितने हों।

ऐ नबी! आपके लिए अल्लाह तआ़ला काफ़ी है, और जिन मोमिनों ने आपकी पैरवी की है (वे काफ़ी हैं)। (64) **ऐ पैग़म्बर! आप मोमिनों को जिहाद की तरग़ीब दीजिए, अगर तुममें के बीस आदमी**	يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ

ع ٨

Maktab E Ashraf

عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ
يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ اَلْـٰٔنَ
خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ
ضَعْفًا ۚ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ
يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ مَعَ
الصّٰبِرِيْنَ ۝

साबित क़दम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे, और (इसी तरह) तुममें के सौ आदमी हों तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब आ जाएँगे। इस वजह से कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन को) कुछ नहीं समझते। (65) अब अल्लाह ने तुम पर तख़्फ़ीफ़ "यानी कमी और नरमी" कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है, सो अगर तुममें के सौ आदमी साबित-क़दम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे, और अगर तुममें के हज़ार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ जाएँगे, और अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ हैं। (66)

निडर रहिये और जिहादी हिम्मत पैदा कीजिये

अल्लाह तआ़ला अपने पैग़म्बर सल्ल. और मुसलमानों को जिहाद की रग़बत दिला रहा है और उन्हें इत्मीनान दिला रहा है कि वह उन्हें दुश्मनों पर ग़ालिब करेगा चाहे वे साज़ व सामान वाले और बहुत ज़्यादा संख्या में हों, और चाहे मुसलमान बिना सामान व हथियार के और मुट्ठी भर हों। फ़रमाता है- अल्लाह काफ़ी है और जितने मुसलमान तेरे साथ होंगे वही काफ़ी हैं। फिर अपने नबी सल्ल. को हुक्म देता है कि मोमिनों को जिहाद की रग़बत दिलाते रहो। नबी करीम सल्ल. सफ़बन्दी के वक़्त, मुक़ाबले के वक़्त बराबर फ़ौजों का दिल बढ़ाते रहते, बदर के दिन फ़रमाया उठो उस जन्नत को हासिल करो जिसकी चौड़ाई ज़मीन व आसमान की है (यानी बहुत ज़्यादा बड़ी है)। हज़रत उमैर बिन हम्माम कहते हैं कि इतनी चौड़ाई? फ़रमाया हाँ इतनी ही। उसने कहा वाह-वाह। आपने फ़रमाया यह किस इरादे से कहा? कहा इस उम्मीद पर कि अल्लाह मुझे भी जन्नती कर दे। आपने फ़रमाया मेरी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है कि तू जन्नती है। वह उठते हैं, दुश्मन की तरफ़ बढ़ते हैं, अपनी तलवार का म्यान तोड़ देते हैं, कुछ खजूरें जो पास हैं खानी शुरू करते हैं, फ़रमाते हैं इन्हें खाऊँ इतनी देर तक अब यहाँ ठहरना मुझ पर भारी है, उन्हें हाथ से फेंक देते हैं और हमला करके शेर की तरह दुश्मन के बीच में घुस जाते हैं, और अपनी तलवार-बाज़ी के जौहर दिखाते हुए काफ़िरों की गर्दनें मारते हुए राहे ख़ुदा में शहीद हो जाते हैं। रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

इब्ने मुसैयब और सईद बिन जुबैर रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत उमर रज़ि. के इस्लाम लाने के वक़्त उतरी, जबकि मुसलमानों की तादाद पूरी चालीस हुई। लेकिन यह क़ौल ग़ौर-तलब है, इसलिये कि यह आयत मदनी है और हज़रत उमर रज़ि. के इस्लाम का वाक़िआ़ मक्का शरीफ़ का है, हब्शा की हिजरत के बाद का और मदीने की हिजरत से पहले का। वल्लाहु आलम

फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला मोमिनों को ख़ुशख़बरी देता है और हुक्म फ़रमाता है कि तुम में से

Maktab_E_Ashraf

बीस उन काफ़िरों में से दो सौ पर ग़ालिब आयेंगे, एक सौ एक हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे। ग़र्ज़ एक मुसलमान दस काफ़िरों के मुक़ाबले का है। फिर हुक्म तो मन्सूख़ हो गया लेकिन ख़ुशख़बरी बाक़ी है। जब यह हुक्म मुसलमानों पर भारी गुज़रा, एक दस के मुक़ाबले से ज़रा झिझका तो अल्लाह ने कमी कर दी और फ़रमाया कि अब अल्लाह ने बोझ हल्का कर दिया....। लेकिन जितनी तादाद कम हुई उतना ही सब्र नाक़िस हो गया। पहले हुक्म था कि बीस मुसलमान दो सौ काफ़िरों से पीछे न हटें, अब यह हुआ कि अपने से दुगनी तादाद यानी सौ दो सौ से न भागें। पस भारी गुज़रने पर कमज़ोरी और नातवानी को क़बूल फ़रमाकर ख़ुदा ने कमी कर दी। पस दोगुनी तादाद के काफ़िरों से तो लड़ाई में पीछे हटना लायक़ नहीं, हाँ इससे ज़्यादा होने के वक़्त उनसे कतरा जाना जुर्म नहीं। इब्ने उमर रज़ि. फ़रमाते हैं- यह आयत हम सहाबियों के बारे में उतरी है। हुज़ूर सल्ल. ने यह आयत पढ़कर फ़रमाया- पहला हुक्म उठ गया। (मुस्तदरक हाकिम)

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ع ٩ ٥

नबी (की शान) के लायक़ नहीं कि उनके क़ैदी (बाक़ी) रहें (बल्कि क़त्ल कर दिए जाएँ) जब तक कि वह ज़मीन में अच्छी तरह (काफ़िरों का) ख़ून न बहा लें। तुम तो दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआ़ला आख़िरत (की मस्लेहत) को चाहते हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े ज़बरदस्त हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (67) अगर ख़ुदा तआ़ला का एक लिखा हुआ (मुक़द्दर) न हो चुकता तो जो मामला तुमने इख़्तियार किया है उसके बारे में तुमपर कोई बड़ी सज़ा आ पड़ती। (68) सो जो कुछ तुमने लिया है उसको हलाल पाक (समझ कर) खाओ और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े बख़्शने वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (69)

एक ग़ैर-मुनासिब इक़्दाम

मुस्नद इमाम अहमद में है कि बदर के क़ैदियों के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल. ने सहाबा किराम रज़ियल्लाह अ़न्हुम से मश्विरा लिया कि अल्लाह ने इन्हें तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया है, बतलाओ क्या इरादा है? हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया कि इनकी गर्दनें उड़ा दी जायें। आपने उनसे मुँह फेर लिया। फिर फ़रमाया उन्हें अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया है, ये कल तक तुम्हारे भाई-बन्द थे। फिर हज़रत उमर रज़ि. ने खड़े होकर अपना जवाब दोहराया, आपने फिर मुँह फेर लिया और फिर वही फ़रमाया। अब की बार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. खड़े हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारी राय में तो आप उनकी ख़ता से दरगुज़र फ़रमा लीजिये और उन्हें फ़िदया लेकर आज़ाद कर दीजिये। अब आपके चेहरे से ग़म के आसार जाते रहे। आ़म माफ़ी का ऐलान कर दिया और फ़िदया लेकर सबको आज़ाद कर दिया। इस

पर अल्लाह जल्ल शानुहू ने यह आयत उतारी।

इसी सूरः के शुरू में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. की रिवायत गुज़र चुकी है, सही मुस्लिम में भी इसी जैसी हदीस है कि बदर के दिन आपने दरियाफ़्त फ़रमाया कि इन क़ैदियों के बारे में तुम क्या कहते हो? हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ये आपकी क़ौम के हैं, आप वाले हैं, इन्हें ज़िन्दा छोड़ा जाये, इनसे तौबा करा ली जाये, हो सकता है कि कल ख़ुदा की इन पर मेहरबानी हो जाये। लेकिन हज़रत उमर रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! ये आपके झुठलाने वाले हैं, आपको निकाल देने वाले हैं, हुक्म दीजिये कि इनकी गर्दनें मारी जायें। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. ने कहा या रसूलल्लाह! इस मैदान में पेड़ बहुत ज़्यादा हैं, आग लगवा दीजिये और इन्हें जला दीजिये। आप ख़ामोश रहे, किसी को कोई जवाब नहीं दिया और उठकर तशरीफ़ ले गये। लोगों में भी इन तीनों हज़रात की राय का साथ देने वाले हो गये। इतने में आप फिर तशरीफ़ लाये और फ़रमाने लगे बाज़ नर्म-दिल होते-होते दूध से भी ज़्यादा नर्म हो जाते हैं, और बाज़ दिल सख़्त होते-होते पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो जाते हैं। ऐ अबू बक्र तुम्हारी मिसाल तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम जैसी है कि ख़ुदा से अ़र्ज़ करते हैं कि मेरे ताबेदार तो मेरे ही हैं लेकिन मेरे मुख़ालिफ़ भी तेरी माफ़ी और बख़्शिश के मातहत हैं। और तुम्हारी मिसाल हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जैसी है जो कहेंगे कि ख़ुदा अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वे तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो तू ग़ालिब व हकीम है। और ऐ उमर! तुम्हारी मिसाल हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम जैसी है जिन्होंने अपनी क़ौम पर बद्दुआ़ की कि ख़ुदाया ज़मीन पर किसी काफ़िर को बसता हुआ बाक़ी न रख।

सुनो! तुम्हें इस वक़्त ज़रूरत है, उन क़ैदियों में से कोई भी बग़ैर फ़िदये के रिहा न हो, वरना उनकी गर्दनें मारी जायें। इस पर इब्ने मसऊद रज़ि. ने दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह! सुहैल बिन बैज़ा को इस हुक्म से मख़्सूस (अलग) कर लिया जाये, इसलिये कि वह इस्लाम का ज़िक्र किया करता था। इस पर हुज़ूर सल्ल. ख़ामोश हो गये। अल्लाह की क़सम मैं सारा दिन डरा रहा कि कहीं मुझ पर आसमान से पत्थर न बरसाये जायें, यहाँ तक कि रसूले ख़ुदा सल्ल. ने फ़रमाया- सुहैल बिन बैज़ा के अ़लावा। इसी का ज़िक्र इस आयत में है। यह हदीस तिर्मिज़ी, मुस्नद अहमद वग़ैरह में है।

उन क़ैदियों में हज़रत अ़ब्बास रज़ि. भी थे, उन्हें एक अन्सारी ने गिरफ़्तार किया था, अन्सार का ख़्याल था कि उन्हें क़त्ल कर दें। आपको भी यह हाल मालूम था, आपने फ़रमाया रात को मुझे इस ख़्याल से नींद नहीं आई, इस पर हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया कि अगर आप इजाज़त दें तो मैं अन्सार के पास जाऊँ, आपने इजाज़त दी। हज़रत उमर रज़ि. अन्सार के पास आये और कहा कि अ़ब्बास को छोड़ दो, उन्होंने जवाब दिया अल्लाह की क़सम! हम उसे न छोड़ेंगे। आपने फ़रमाया चाहे रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़ुशी इसी में हो? उन्होंने कहा अगर यह है तो आप उन्हें ले जाईये। हमने ख़ुशी से छोड़ा। अब हज़रत उमर रज़ि. ने उनसे कहा कि अ़ब्बास मुसलमान हो जाओ, वल्लाह तुम्हारे इस्लाम लाने से मुझे अपने बाप के इस्लाम लाने से भी ज़्यादा ख़ुशी होगी। इसलिये कि रसूलुल्लाह सल्ल. तुम्हारे इस्लाम लाने से ख़ुश हो जायेंगे।

उन क़ैदियों के बारे में हुज़ूर सल्ल. ने अबू बक्र रज़ि. से मश्विरा लिया तो आपने फ़रमाया ये सब हमारे ही कुन्बे-क़बीले के लोग हैं, इन्हें छोड़ दीजिये। हज़रत उमर रज़ि. से जब मश्विरा लिया तो आपने जवाब दिया कि इन सब को क़त्ल कर दिया जाये। आख़िर आपने फ़िदया लेकर उन्हें आज़ाद कर दिया। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आये और फ़रमाया- अपने सहाबा को इख़्तियार दीजिये कि वे इन दो बातों में से एक को पसन्द कर लें, अगर चाहें तो फ़िदया ले लें और अगर चाहें तो

Maktab E Ashraf

उन क़ैदियों को क़त्ल कर दें, लेकिन यह याद रहे कि फ़िदया लेने की सूरत में अगले साल उनमें से इतने ही शहीद होंगे। सहाबा ने कहा हमें यह मन्ज़ूर है और हम फ़िदया लेकर छोड़ेंगे। (तिर्मिज़ी, नसाई वग़ैरह)

लेकिन यह हदीस बहुत ही ग़रीब है। उन बदरी क़ैदियों के बारे में हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि ऐ मुसलमानो! अगर चाहो तो इन्हें क़त्ल कर दो और अगर चाहो तो इनसे फ़िदया की रक़म और माल वसूल करके रिहा कर दो। लेकिन इस सूरत में इतने ही आदमी तुम्हारे शहीद किये जायेंगे। पस उन सत्तर शहीदों में से सबसे आख़िर में हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु थे, जो जंगे यमामा में शहीद हुए। यह रिवायत हज़रत उबैदा से मुर्सल तौर पर भी मरवी है। वल्लाहु आलम।

अगर पहले ही से ख़ुदा की किताब में तुम्हारे लिये माले ग़नीमत हलाल न लिखा हुआ होता, और जब तक हम बयान न फ़रमायें तब तक अ़ज़ाब नहीं किया करते, ऐसा दस्तूर हमारा न होता, तो जो माल फ़िदया तुमने लिया है इस पर तुम्हें बड़ा भारी अ़ज़ाब होता। इसी तरह पहले से ख़ुदा तय कर चुका है कि किसी बदरी सहाबी को वह अ़ज़ाब नहीं करेगा, उनके लिये मग़फ़िरत तय हो गई है। उम्मुल-किताब में तुम्हारे लिये माले ग़नीमत का हलाल होना लिखा जा चुका है। पस माले ग़नीमत तुम्हारे लिये हलाल है, शौक़ से खाओ पियो और अपने काम में लाओ। पहले लिखा जा चुका था कि इस उम्मत के लिये यह हलाल है, यही क़ौल इमाम इब्ने जरीर रह. का पसन्दीदा है और इसकी ताईद बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस से भी होती है। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- मुझे पाँच चीज़ें दी गईं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गईं। महीने भर के फ़ासले तक मेरी मदद रौब से की गई, मेरे लिये तमाम ज़मीन पाक और नमाज़ की जगह बना दी गई, मुझ पर ग़नीमतें हलाल की गईं जो मुझसे पहले किसी पर हलाल न थीं, मुझे शफ़ाअ़त अ़ता फ़रमाई गई, हर नबी सिर्फ़ अपनी क़ौम की तरफ़ ही भेजा जाता था लेकिन मैं आ़म लोगों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा गया हूँ। आप फ़रमाते हैं किसी काले सर वाले इनसान के लिये मेरे सिवा ग़नीमत हलाल नहीं की गई, पस सहाबा ने उन बदरी क़ैदियों से फ़िदया लिया।

अबू दाऊद में है कि हर एक से चार सौ की रक़म बतौर तावाने जंग के वसूल की गई। पस जमहूर उलेमा-ए-किराम का मज़हब यह है कि इमामे वक़्त (उस वक़्त के मौजूद हाकिम) को इख़्तियार है कि अगर चाहे काफ़िर क़ैदियों को क़त्ल कर दे जैसा कि बनू क़ुरैज़ा के क़ैदियों के साथ हुज़ूर सल्ल. ने किया, अगर चाहे फ़िदया लेकर उन्हें छोड़ दे जैसा कि बदरी क़ैदियों के साथ हुज़ूर सल्ल. ने किया। या मुसलमान क़ैदियों के बदले छोड़ दे, जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने क़बीला मुस्लिमा बिन अक्वा की एक औ़रत और उसकी लड़की को मुश्रिकों के पास जो मुसलमान क़ैदी थे उनके बदले में दिया। अगर चाहे उन्हें ग़ुलाम बनाकर रखे। यही मज़हब इमाम शाफ़ई रह. का और उलेमा-ए-किराम की एक जमाअ़त का है, अगरचे औरों ने इसके ख़िलाफ़ अपनी रायों का इज़हार भी किया है, यहाँ इसकी तफ़सील बयान करने का मौक़ा नहीं।

يٰٓـاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ	ऐ पैग़म्बर! आपके क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं, आप उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे दिल में ईमान मालूम होगा तो जो कुछ (फ़िदये में) तुमसे लिया गया है (दुनिया में) उससे बेहतर तुमको दे देगा, और (आख़िरत में) तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह

तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (70) और अगर (फ़र्ज़ कर लो) ये लोग आपके साथ ख़ियानत करने (यानी अ़हद तोड़ने) का इरादा रखते हों तो (कुछ फ़िक्र न कीजिए) इससे पहले उन्होंने अल्लाह के साथ ख़ियानत की थी, फिर अल्लाह तआ़ला ने उनको गिरफ़्तार करा दिया, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (71)	وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ○

जज़ा या सज़ा

बदर वाले दिन आपने फ़रमाया था- मुझे यक़ीनन मालूम है कि बाज़ बनू हाशिम वग़ैरह ज़बरदस्ती इस लड़ाई में निकाले गये हैं, उन्हें हमसे लड़ाई करने की ख़्वाहिश न थी। पस बनू हाशिम को क़त्ल न करना। अबुल-बुख़्तरी इब्ने हिशाम को भी क़त्ल न किया जाये, अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब को भी क़त्ल न किया जाये, उसे भी उसकी दिली मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इन लोगों ने अपने साथ खींचा है। इस पर अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा ने कहा कि हम अपने बाप-दादों को, अपने बच्चों को, अपने कुन्बे-क़बीले को तो क़त्ल करें और अ़ब्बास को छोड़ दें? वल्लाह अगर वह मुझे मिल गया तो मैं उसकी गर्दन मारूँगा। जब यह बात रसूलुल्लाह सल्ल. को पहुँची तो आपने फ़रमाया ऐ अबू हफ़्स! क्या रसूलुल्लाह के चचा के मुँह पर तलवार मारी जायेगी? हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह पहला दिन था जिसमें रसूलुल्लाह सल्ल. ने मेरी कुन्नियत से मुझे याद फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं अबू हुज़ैफ़ा की गर्दन उड़ा दूँ। अल्लाह की क़सम! वह तो मुनाफ़िक़ हो गया। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं वल्लाह मुझे अपने उस दिन के क़ौल का खटका आज तक है, मैं उससे अब तक डर ही रहा हूँ। मैं तो उस दिन चैन पाऊँगा जिस दिन उसका कफ़्फ़ारा हो जाये, और वह यह है कि मैं राहे ख़ुदा में शहीद कर दिया जाऊँ। चुनाँचे जंगे यमामा में आप शहीद हुए। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. कहते हैं- जिस दिन बदर के क़ैदी गिरफ़्तार होकर आये, रसूलुल्लाह सल्ल. को उस रात नींद न आई। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सबब पूछा तो आपने फ़रमाया मेरे चचा अ़ब्बास के रोने व आह की आवाज़ मेरे कानों में उन क़ैदियों में से आ रही है। सहाबा रज़ि. ने उस वक़्त उनकी बन्दिश खोल दी, तब आपको नींद आई। उन्हें एक अन्सारी सहाबी ने गिरफ़्तार किया था, यह बहुत मालदार थे, इन्होंने सौ औक़िया सोना अपने फ़िदये में दिया। बाज़ अन्सारियों ने सरकारे दो आ़लम की बारगाह में गुज़ारिश भी की कि हम चाहते हैं कि अपने भांजे अ़ब्बास को बग़ैर कोई फ़िदये का माल लिये आज़ाद कर दें, लेकिन मसावात व बराबरी का झंडा उठाने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया एक धेला भी कम न लेना, पूरा फ़िदया लो। क़ुरैश ने फ़िदये की रक़में देकर अपने आदमियों को भेजा था, हर एक ने अपने अपने क़ैदी की मन मानी रक़म वसूल की। अ़ब्बास रज़ि. ने कहा भी कि या रसूलल्लाह! मैं तो मुसलमान ही था, आपने फ़रमाया मुझे तुम्हारे इस्लाम का इल्म है, अगर यह तुम्हारा क़ौल सही है तो अल्लाह तुम्हें इसका बदला देगा। लेकिन चूँकि अहकाम ज़ाहिर पर हैं इसलिये आप अपना फ़िदया अदा कीजिये, बल्कि

अपने दोनों भतीजों का भी। नौफ़ल बिन हारिस बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब का और अ़क़ील बिन अबी तालिब बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब का और अपने हलीफ़ उतबा बिन उमर का जो बनू हारिस बिन फ़हर के क़बीले से है। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मेरे पास तो इतना माल नहीं, आपने फ़रमाया वह माल कहाँ गया जो तुमने और उम्मुल-फ़ज़्ल ने ज़मीन में दफ़न किया है और तुमने कहा है कि अगर मैं अपने इस सफ़र में कामयाब रहा तो यह माल बनू फ़ज़्ल और अ़ब्दुल्लाह और क़ुसम का है। अब तो हज़रत अ़ब्बास रज़ि. की ज़बान से बेसाख़्ता निकल गया कि वल्लाह मेरा यक़ीन है कि आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, उस दफ़ीने के वाक़िए को सिवाय मेरे और उम्मुल-फ़ज़्ल (हज़रत अ़ब्बास की बीवी) के कोई नहीं जानता। अच्छा यूँ कीजिये मेरे पास से बीस औक़िया सोना आपके लश्करियों को मिला है, उसी को मेरा फ़िदया समझ लिया जाये। आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं! वह माल तो हमें ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से दिलवा ही दिया, चुनाँचे आपने अपना, अपने दोनों भतीजों का और अपने हलीफ़ का फ़िदया अपने पास से अदा किया।

इस बारे में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने यह आयत उतारी कि अगर तुम में भलाई है तो अल्लाह उससे बेहतर बदला तुम्हें देगा। हज़रत अ़ब्बास का बयान है कि ख़ुदा का यह फ़रमान मुझ पर पूरा उतरा और उन बीस औक़िया के बदले मुझे इस्लाम में ख़ुदा ने बीस गुलाम दिलवा दिये, जो सब के सब मालदार थे, साथ ही मुझे अल्लाह पाक की तरफ़ से मग़फ़िरत की भी उम्मीद है। आप फ़रमाते हैं कि मेरे बारे में यह आयत नाज़िल हुई है, मैंने अपने इस्लाम की ख़बर हुज़ूर सल्ल. को दी और कहा कि मेरे बीस औक़िया का बदला मुझे दिलवाईये जो मुझसे लिये गये हैं, आपने इनकार किया। अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उसके बदले मुझे बीस गुलाम अ़ता फ़रमाये जो सबके सब ताजिर हैं, आपने और आपके साथियों ने हुज़ूर सल्ल. से कहा था कि हम तो आपकी 'वही' पर ईमान ला चुके हैं, आपकी रिसालत के गवाह हैं, हम अपनी क़ौम में आपकी ख़ैरख़्वाही करते रहे। इस पर यह आयत उतरी कि ख़ुदा दिलों के हाल से वाक़िफ़ है, जिसके दिल में नेकी होगी उससे जो कुछ लिया गया है उससे बहुत ज़्यादा दे दिया जायेगा, और फिर पहले का शिर्क भी माफ़ कर दिया जायेगा। फ़रमाते हैं कि सारी दुनिया मिल जाने से भी ज़्यादा ख़ुशी मुझे इस आयत के नाज़िल होने से हुई है, मुझसे जो लिया गया है वल्लाह उससे सौ हिस्से ज़्यादा मुझे मिला और मुझे उम्मीद है कि मेरे गुनाह भी धुल गये।

ज़िक्र किया गया है कि जब बहरीन का ख़ज़ाना सरकारे दो आ़लम सल्ल. की ख़िदमत में पहुँचा तो वह अस्सी हज़ार का था। आप नमाज़े ज़ोहर के लिये वुज़ू कर चुके थे, आपने हर एक तंगहाली की शिकायत करने वाले और हर एक सवाल करने वाले को इनायत किया और नमाज़ से पहले ही सारा ख़ज़ाना ख़र्च कर दिया। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. को हुक्म दिया कि इसमें से ले लो और गठरी बाँधकर ले जाओ। यह उनके लिये बहुत बेहतर था और ख़ुदा तआ़ला गुनाह भी माफ़ फ़रमायेगा। यह ख़ज़ाना इब्ने हज़रमी ने भेजा था, इतना माल हुज़ूर के पास इससे पहले या इसके बाद कभी नहीं आया। सब का सब बोरियों पर फैला दिया गया और नमाज़ की अज़ान हुई, आप तशरीफ़ लाये और माल के पास खड़े हो गये, मस्जिद के नमाज़ी भी आ गये, फिर हुज़ूर सल्ल. ने हर एक को देना शुरू किया, न तो उसमें नाप तौल थी न गिनती और शुमार था, पस जो आया वह ले गया और दिल खोलकर ले गया। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने तो अपनी चादर में गठरी बाँध ली लेकिन उठा न सके तो हुज़ूर सल्ल. से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ज़रा उठवा दीजिये, आपको बेसाख़्ता हंसी आ गई, इतनी कि दाँत चमकने लगे। फ़रमाया कुछ कम कर दो, जितना उठे उतना ही ले लो। चुनाँचे कुछ कम किया और उठाकर यह कहते हुए चले कि अल्हम्दु लिल्लाह अल्लाह तआ़ला ने एक

Maktab-e-Ashraf

बात तो पूरी होती दिखा ही दी और दूसरा वादा भी इन्शा-अल्लाह तआ़ला पूरा होकर ही रहेगा। यह उससे बेहतर है जो हमसे लिया गया। हुज़ूर सल्ल. बराबर उस माल की तक़सीम फ़रमाते रहे यहाँ तक कि उसमें से एक पाई भी न बची। आपने अपने अहल (घर वालों) को उसमें से एक कोड़ी भी न दी, फिर नमाज़ के लिये आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ाई।

दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल. के पास बहरीन से माल आया, इतना कि उससे पहले या उसके बाद इतना माल कभी न आया। हुक्म दिया कि मस्जिद में फैला दो, फिर नमाज़ के लिये आये, किसी की तरफ़ तवज्जोह न की। नमाज़ पढ़ाकर बैठ गये, फिर तो जिसे देखते देते, इतने में हज़रत अ़ब्बास रज़ि. आ गये और कहने लगे या रसूलल्लाह! मुझे भी दिलवाईये। मैंने अपना और अ़क़ील का फ़िदया दिया है। आपने फ़रमाया अपने हाथ से ले लो, उन्होनें चादर में गठरी बाँधी लेकिन वज़नी होने के सबब उठा न सके तो कहा कि या रसूलल्लाह किसी को हुक्म दीजिये कि मेरे काँधे पर चढ़ा दे। आपने फ़रमाया मैं तो किसी से नहीं कह सकता, कहा अच्छा आप ही ज़रा उठवा दीजिये। आपने इसका भी इनकार किया। अब तो दिल न चाहते हुए उसमें से कुछ कम करना पड़ा, उठाकर कन्धे पर रखकर चल दिये। उनकी इस माल की मुहब्बत की वजह से हुज़ूर सल्ल. की निगाहें जब तक यह आपकी निगाह से ओझल न हो गये उनपर ही रहीं।

पस जब कुल माल बाँट चुके एक कोड़ी भी बाक़ी न बची तब आप वहाँ से उठे। इमाम बुख़ारी रह. ने भी इस रिवायत को कई जगह अपनी किताब सही बुख़ारी शरीफ़ में नक़ल किया है।

अगर ये लोग ख़ियानत करनी चाहेंगे तो यह कोई नई बात नहीं, इससे पहले वे खुद खुदा की ख़ियानत कर चुके हैं तो इनसे यह भी मुम्किन है कि अब जो ज़ाहिर करें उसके ख़िलाफ़ अपने दिल में रखें। इससे तू न घबरा, जैसे खुदा तआ़ला ने इस वक़्त इन्हें तेरे क़ाबू में कर दिया है ऐसे ही वह हमेशा क़ादिर है। अल्लाह का कोई काम इल्म व हिक्मत से ख़ाली नहीं, इनके और तमाम मख़्लूक़ के साथ जो कुछ वह करता है अपने अज़ली अब्दी (हमेशा से और हमेशा रहने वाले) पूरे इल्म और कामिल हिक्मत के साथ। हज़रत क़तादा रह. कहते हैं कि यह आयत अ़ब्दुल्लाह इब्ने सअ़द बिन अबी सरह कातिब के बारे में उतरी है, जो मुर्तद (इस्लाम दीन से बेदीन) होकर मुश्रिकों में जा मिला था। अ़ता ख़ुरासानी रह. का क़ौल है कि हज़रत अ़ब्बास रज़ि. और उनके साथियों के बारे में उतरी है, जबकि उन्होंने कहा था कि हम आपकी ख़ैरख़्वाही करते रहेंगे। सुद्दी रह. ने कहा कि यह आ़म और सब को शामिल है। यही ठीक भी है। वल्लाहु आलम

बेशक जो लोग ईमान लाये उन्होंने हिजरत भी की और अपने माल और जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया, और जिन लोगों ने रहने को जगह दी और मदद की ये लोग आपस में एक-दूसरे के वारिस होंगे, और जो लोग ईमान तो लाये और हिजरत नहीं की, तुम्हारा उनसे मीरास का कोई ताल्लुक़ नहीं, जब तक कि वे हिजरत न करें, और अगर वे तुमसे दीन के काम में मदद चाहें तो तुम्हारे ज़िम्मे	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِى

Maktab E Ashraf

الَّذِيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○	मदद करना (वाजिब) है, मगर उस क़ौम के मुक़ाबले में (नहीं) कि तुममें और उनमें आपस में (सुलह का) अ़हद हो, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों को देखते हैं। (72)

मुसलमानों के शानदार कारनामे

मुसलमानों की क़िस्में बयान हो रही हैं- एक तो मुहाजिर जिन्होंने नामे ख़ुदा पर वतन छोड़ा, अपने घर-बार, माले तिजारत, कुन्बा-क़बीला, दोस्त अहबाब छोड़े। ख़ुदा के दीन पर क़ायम रहने के लिये न जान को जान समझा, न माल को माल। दूसरे मदीने के अन्सार जिन्होंने उन मुहाजिरों को अपने यहाँ ठहराया, अपने माल में उनका हिस्सा लगा दिया, उनके साथ मिलकर उनके दुश्मनों से लड़ाई की, ये सब आपस में एक ही हैं। इसी लिये रसूलुल्लाह सल्ल. ने उनमें भाई-चारा क़ायम करा दिया। एक-एक अन्सारी और मुहाजिर को भाई-भाई बना दिया। यह भाई-बन्दी रिश्तेदारी से भी पहले थी। एक दूसरे का वारिस बनता था, आख़िर में यह मन्सूख़ हो गई। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुजाहिरीन व अन्सार सब आपस में एक दूसरे के वाली वारिस हैं, और फ़त्हे मक्का के बाद के आज़ाद किये हुए मुसलमान लोग क़ुरैशी और क़बीला सक़ीफ़ के आज़ाद आपस में एक दूसरे के वाली हैं क़ियामत तक। एक और रिवायत में है कि दुनिया और आख़िरत में। मुहाजिरीन व अन्सार की तारीफ़ में और भी बहुत सी आयतें हैं। अल्लाह का फ़रमान है:

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ....الخ

पहले पहल सब्क़त करने वाले मुहाजिरीन व अन्सार और उनके एहसान के ताबेदार (यानी नेकी में उनकी पैरवी करने वाले) वे हैं जिनसे ख़ुदा ख़ुश है और वे उससे ख़ुश हैं। उसने उनके लिये जन्नतें तैयार कर रखी हैं, जिनके दरख़्तों के नीचे चश्मे बह रहे हैं.....। एक और आयत में है:

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ..... الخ

कि नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत की तवज्जोह फ़रमाई जिन्होंने सख़्ती के वक़्त भी आपकी इत्तिबा (पैरवी) न छोड़ी। एक और आयत में है:

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ......... الخ

उन मुहाजिर मोहताजों के लिये है जो अपने मालों से और अपने शहरों से निकाल दिये गये। जो ख़ुदा के फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी की जुस्तजू में हैं। ख़ुदा और रसूल की मदद में लगे हुए हैं। यही सच्चे लोग हैं, और जिन्होंने इनको जगह दी, इनसे मुहब्बत रखी, इन्हें खुले दिल के साथ रखा, बल्कि अपनी ज़रूरत पर इनकी हाजत को मुक़द्दम रखा, यानी जो हिजरत की फ़ज़ीलत ख़ुदा ने मुहाजिरीन को दी है इस पर वे इनका हसद नहीं करते।

इन आयतों से मालूम होता है कि मुहाजिर अन्सार पर मुक़द्दम हैं। उलेमा का इसमें इत्तिफ़ाक़ (मतभेद) है, मुस्नद बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. को हिजरत और नुसरत (यानी मुहाजिर या अन्सार बनने) में इख़्तियार दिया तो आपने हिजरत को पसन्द फ़रमाया।

Maktab E Ashraf

फिर फ़रमाता है जो ईमान लाये, लेकिन उन्होंने वतन नहीं छोड़ा, उन्हें उनकी बराबरी और साथ हासिल नहीं, यह मोमिनों की तीसरी क़िस्म है जो अपनी जगह ठहरे हुए थे, उनका माले ग़नीमत में कोई हिस्सा न था, न ख़ुम्स में। हाँ लड़ाई में शिर्कत करें तो और बात है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर सल्ल. जब किसी को किसी फ़ौजी दस्ते का सरदार बनाकर भेजते तो उसे नसीहत फ़रमाते कि देखो अपने दिल में अल्लाह का डर रखना, मुसलमानों के साथ हमेशा ख़ैरख़्वाही का बर्ताव करना। जाओ अल्लाह का नाम लेकर अल्लाह की राह में जिहाद करो, ख़ुदा के साथ कुफ़्र करने वालों से लड़ो, अपने दुश्मन मुश्रिकों के सामने तीन बातें पेश करो, उनमें से जो भी वे मन्ज़ूर कर लें उन्हें इख़्तियार है। उनसे कहो कि इस्लाम क़बूल करें, अगर मान लें तो फिर उनसे रुक जाओ और उनका इस्लाम क़बूल कर लो। और उनसे कहो कि कुफ़्रिस्तान (कुफ़्र के इलाक़े) को छोड़ दें, मुहाजिरों के शहरों को चले जायें, तो जो हक़ मुहाजिरों के हैं उनके भी क़ायम हो जायेंगे, और जो मुहाजिरों पर है उन पर भी होगा। वरना ये देहात के और दूसरे मुसलमानों की तरह होंगे, ईमान के अहकाम उन पर जारी रहेंगे। फ़ै और ग़नीमत के माल में उनका कोई हिस्सा न होगा, हाँ यह और बात है कि वे किसी फ़ौज में शिर्कत करें और कोई फ़तह हासिल करें।

यह पहली बात न मानें तो उन्हें कहो कि जिज़्या (टैक्स) दें। अगर यह क़बूल कर लें तो तुम लड़ाई से रुक जाओ, और उनसे जिज़्या ले लिया करो। अगर इन दोनों बातों का इनकार करें तो अल्लाह की मदद के भरोसे पर ख़ुदा से नुसरत तलब करके उनसे जिहाद करो। जो देहाती मुसलमान वहीं मुक़ीम हैं हिजरत नहीं की, ये अगर किसी वक़्त तुमसे मदद की ख़्वाहिश करें, दीन के दुश्मनों के मुक़ाबले पर तुम्हें बुलायें तो उनकी मदद तुम पर वाजिब है, लेकिन अगर मुक़ाबले पर कोई ऐसा क़बीला हो कि तुम में और उनमें सुलह का मुआ़हिदा है तो ख़बरदार तुम अ़हद के ख़िलाफ़ मत करना, क़समें न तोड़ना।

और जो लोग काफ़िर हैं वे आपस में एक-दूसरे के वारिस हैं, अगर इस (ऊपर ज़िक्र हुए हुक्म) पर अ़मल न करोगे तो दुनिया में बड़ा फ़ितना और बड़ा फ़साद फैलेगा। (73)	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۭ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ۝

कुफ़्र का फ़ितना

ऊपर मुसलमानों के आपस में काम बनाने, एक दूसरे का साथ देने और ताल्लुक़ व दोस्ती का ज़िक्र हुआ। अब यहाँ काफ़िरों के बारे में भी बयान फ़रमाकर काफ़िरों और मोमिनों में दोस्ती का ताल्लुक़ काट दिया। मुस्तदरक हाकिम में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- दो अलग-अलग मज़हब वाले आपस में एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते, न मुसलमान काफ़िर का वारिस और न काफ़िर मुसलमान का वारिस। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई। सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में भी है कि मुसलमान काफ़िर का और काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं बन सकता। सुनन वग़ैरह में है कि दो विभिन्न मज़हब वाले आपस में एक दूसरे के वारिस नहीं, इसे इमाम तिर्मिज़ी रह. हसन कहते हैं। इब्ने जरीर में है कि एक नये मुसलमान से आपने अ़हद लिया कि नमाज़ क़ायम रखना, ज़कात देना, बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करना, रमज़ान मुबारक के रोज़े रखना और जब और जहाँ शिर्क की आग भड़क उठे तो अपने आपको उनका मुक़ाबिल

Maktab E Ashraf

(मुक़ाबला करने वाला) और उनसे जंग करने वाला समझना। यह रिवायत मुर्सल है। एक और तफ़सीली रिवायत में है कि आप फ़रमाते हैं- मैं हर उस मुसलमान से बरी हूँ उसके लिये मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं जो मुश्रिकों में ठहरा रहे, क्या वह दोनों जानिब लगी हुई आग नहीं देखता।

अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जो मुश्रिकों से दिली मेल-जोल रखे और उनमें ठहरा रहे वह उनही जैसा है। इब्ने मरदूया में है कि अल्लाह के रसूल, रसूलों के सरताज हज़रत मुहम्मद सल्ल. फ़रमाते हैं- जब तुम्हारे पास वह आये जिसके दीन और अख़्लाक़ से तुम रज़ामन्द हो तो उसके निकाह में दे दो, अगर तुमने ऐसा न किया तो मुल्क में ज़बरदस्त फ़ितना फ़साद बरपा होगा। लोगों ने दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! चाहे उसमें कुछ हो? आपने फ़रमाया जब तुम्हारे पास किसी ऐसे शख़्स का माँगा (पैग़ाम) आ जाये जिसके दीन और अख़्लाक़ से तुम ख़ुश हो तो उसका निकाह कर दो। तीन बार यही फ़रमाया। आयत के इन अलफ़ाज़ का मतलब यह है कि अगर तुमने मुश्रिकों से किनारा न किया और ईमान वालों से ही दोस्तियाँ न रखीं तो एक फ़ितना बरपा हो जायेगा। यह मेल-जोल बुरे नतीजे दिखायेगा, लोगों में ज़बरदस्त फ़साद (ख़राबी और बिगाड़ पैदा) हो जायेगा।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ع

और जो लोग (अव्वल) मुसलमान हुए और उन्होंने (नबी की हिजरत के ज़माने में) हिजरत की, और अल्लाह की राह में जिहाद (भी) करते रहे, और जिन लोगों ने (उन हिजरत करने वालों को) अपने यहाँ ठहराया और (उनकी) मदद की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं उनके लिये (आख़िरत में बड़ी) मग़फ़िरत और (जन्नत में बड़ी) इज़्ज़त वाली रोज़ी है। (74) और जो लोग (नबी के हिजरत के ज़माने के) बाद के ज़माने में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया, सो ये लोग (अगरचे फ़ज़ीलत में तुम्हारे बराबर नहीं लेकिन फिर भी) तुम्हारी ही गिन्ती में हैं, और जो लोग रिश्तेदार हैं किताबुल्लाह में एक- दूसरे (की मीरास) के ज़्यादा हक़दार हैं, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (75)

ईमान, हिजरत और जिहाद

मोमिनों का दुनियावी हुक्म ज़िक्र फ़रमाकर अब आख़िरत का हाल बयान फ़रमाया जा रहा है। इनके ईमान की सच्चाई ज़ाहिर कर रहा है जैसा कि इस सूरः के शुरू में बयान हुआ है। उन्हें बख़्शिश मिलेगी, उनके गुनाह माफ़ होंगे, उन्हें इज़्ज़त की पाक रोज़ी मिलेगी, जो बरकत वाली, हमेशा रहने वाली, पाक व हलाल होगी। तरह-तरह की लज़ीज़, उम्दा और न ख़त्म होने वाली होगी। उनकी इत्तिबा करने वाले, ईमान

Maktab E Ashraf

व नेक अ़मल में उनका साथ देने वाले आख़िरत में भी दर्जों में उनके साथ ही होंगे।

क़ुरआन पाक की आयतोंः

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ.........

और

وَالَّذِيْنَ جَآءُ وْا مِنْ م بَعْدِهِمْ.......

में है, और बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस बल्कि मुतवातिर हदीस में है कि इनसान उसके साथ होगा जिससे मुहब्बत रखता है। दूसरी हदीस में है कि जो किसी क़ौम से मुहब्बत रखे वह उनमें से ही है। एक रिवायत में है उसका हश्र (क़ियामत में उठना) भी उनके ही साथ होगा। मुस्नद अहमद की हदीस गुज़र चुकी है कि मुहाजिर व अन्सार आपस में एक दूसरे के वली हैं, फ़तह मक्का के बाद के मुसलमान क़ुरैशी और सक़ीफ़ के आज़ाद हुए गुलाम आपस में एक हैं। क़ियामत तक ये सब आपस में वली (एक दूसरे के सरपरस्त और वारिस) हैं।

फिर ख़ूनी रिश्ते वालों का बयान हुआ। यहाँ उनसे वही रिश्तेदार मुराद नहीं जो मीरास वाले उलेमा के नज़दीक इस नाम (उलुल-अरहाम के नाम) से याद किये जाते हैं, यानी जिनका कोई हिस्सा मुक़र्रर न हो और जो अ़सबा भी न हों, जैसे ख़ाला, मामूँ, फूफी, नवासा, नवासियाँ, भांजे, भांजियाँ वग़ैरह, बाज़ का यही ख़्याल है। ये इसी आयत से हुज्जत पकड़ते हैं और इसे अपने मस्लक (विचारधारा) पर एक स्पष्ट दलील समझते हैं, लेकिन सही यह है कि यह आयत आ़म है तमाम रिश्तेदारों को शामिल है, जैसा कि इब्ने अ़ब्बास, मुजाहिद, इक्रिमा, हसन, क़तादा वग़ैरह कहते हैं कि यह नासिख़ (अपने से पहले के हुक्म को निरस्त करने वाली) है, आपस की क़समों पर वारिस बनने की और भाई-चारे पर वारिस बनने का जो पहले दस्तूर था। पस यह मीरास के उलेमा के "ज़विल-अरहाम" को शामिल होगी, ख़ास नाम के साथ। और जो इन्हें वारिस नहीं बनाते उनके पास कई दलीलें हैं, सबसे क़वी और मज़बूत यह हदीस है कि अल्लाह ने हर हक़दार को उसका हक़ दिलवा दिया है। पस किसी वारिस के लिये कोई वसीयत नहीं। वे कहते हैं कि अगर ये भी हक़दार होते तो इनके भी हिस्से मुक़र्रर हो जाते। जब यह नहीं तो वह भी नहीं। वल्लाहु आलम

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से सूरः अनफ़ाल की तफ़सीर ख़त्म हुई।

Maktab E Ashraf

सूरः तौबा

सूरः तौबा (बराअत) मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 129 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, उन मुश्रिकों (के अ़हद) से अलग होना है जिनसे तुमने (बिना मुद्दत तय किये हुए) अ़हद कर रखा था। (1) सो तुम लोग इस सरज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और (यह भी) जान रखो कि तुम ख़ुदा तआ़ला को आ़जिज़ नहीं कर सकते, और यह (भी जान रखो) कि बेशक अल्लाह तआ़ला (आख़िरत में) काफ़िरों को रुस्वा करेंगे। (2)	بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝

मक्का के आस-पास में सिर्फ़ मुसलमान रह सकते हैं

यह सूरः सबसे आख़िर में रसूलुल्लाह सल्ल. पर उतरी है। बुख़ारी शरीफ़ में है- सबसे आख़िर में "यस्तफ़्तून-क...." (यानी सूरः निसा की आख़िरी) आयत उतरी और सबसे आख़िर में सूरः बराअत उतरी है। इसके शुरू में बिस्मिल्लाह न होने की वजह यह है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि. की पैरवी करते हुए इसे (यानी इस सूरः के शुरू में बिस्मिल्लाह को) क़ुरआन में नहीं लिखी थी।

तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने हज़रत उस्मान से पूछा- आख़िर क्या वजह है कि आपने सूरः अनफ़ाल को जो मसानी में से है और सूरः बराअत को जो मियईन में है, मिला दिया, और इनके बीच बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम नहीं लिखी और पहले की सात लम्बी सूरतों में इन्हें रखा? आपने जवाब दिया कि बहुत सी बार हुज़ूर सल्ल. पर एक साथ कई सूरतें उतरती थीं, जब आयत उतरती आप 'वही' के लिखने वालों में से किसी को बुलाकर फ़रमा देते कि इस आयत को फ़ुलाँ सूरत में लिख दो, जिसमें यह ज़िक्र है। सूरः अनफ़ाल मदीना शरीफ़ में सबसे पहले नाज़िल हुई थी, और सूरः बराअत आख़िर में उतरी थी, बयानात (मज़ामीन) दोनों के मिलते-जुलते थे, मुझे शंका हुई कि कहीं यह भी इसी में से न हो। हुज़ूर सल्ल. का इन्तिक़ाल हो गया और आपने हमसे नहीं फ़रमाया कि यह इसमें से है, इसलिये मैंने दोनों सूरतों को मिलाकर और एक साथ लिखीं, और इनके बीच बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम नहीं लिखी, और सात पहली लम्बी सूरतों में इन्हें रखा।

इस सूरः का इब्तिदाई (शुरू का) हिस्सा उस वक़्त उतरा जब आप ग़ज़्वा-ए-तबूक से वापस आ रहे थे। हज का ज़माना था, मुश्रिक लोग अपनी आ़दत के मुताबिक़ हज में आकर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ नंगे होकर किया करते थे, आपने उनके साथ तवाफ़ को नापसन्द फ़रमाया और हज़रत अबू बक्र रज़ि. को हज का इमाम बनाकर उस साल मक्का शरीफ़ रवाना फ़रमाया कि मुसलमानों को हज के अहकाम सिखायें

और मुश्रिकों में ऐलान कर दें कि वे अगले साल हज को न आयें। और सूरः बराअत का भी आम लोगों में ऐलान कर दें। आपके पीछे फिर हज़रत अली रज़ि. को भेजा कि आपका पैग़ाम आपके नज़दीकी रिश्तेदार होने की हैसियत से आप भी पहुँचा दें, जैसा कि इसका तफ़सीली बयान आ रहा है, इन्शा-अल्लाह तआला।

तो फ़रमाया कि यह बेताल्लुक़ी है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से, बाज़ तो कहते हैं ये ऐलान उन लोगों से किये गये जिनसे कोई वक़्त मुक़र्रर न था, या जिनसे अहद चार महीने से कम का था, लेकिन जिनका लम्बा अहद था वह बदस्तूर बाक़ी रहा। जैसा कि फ़रमान है:

فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ۔

उनकी पूरी मुद्दत होने तक तुम उनसे उनका अहद निभाओ।

हदीस शरीफ़ में भी है कि आपने फ़रमाया- हमसे जिनका अहद व पैमान है, हम उस पर मुक़र्ररा वक़्त तक पाबन्दी से क़ायम हैं। अगरचे इस बारे में दूसरे अक़वाल भी हैं लेकिन सबसे अच्छा और सबसे मज़बूत क़ौल यही है। इब्ने अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिन लोगों से अहद हो चुका था उनके लिये चार माह की हद-बन्दी (समय सीमा) अल्लाह तआला ने मुक़र्रर की, और जिनसे अहद न था उनके लिये हुर्मत वाले महीनों के गुज़र जाने की हद-बन्दी मुक़र्रर कर दी। यानी दस ज़िलहिज्जा से मुहर्रम के अंत तक पचास दिन। इस मुद्दत के बाद हुज़ूर सल्ल. को उनसे जंग करने की इजाज़त दे दी गई जब तक वे इस्लाम क़बूल न कर लें। और जिनसे अहद है वे दस ज़िलहिज्जा के ऐलान के दिन से लेकर बीस रबीउल-आख़िर तक अपनी तैयारी कर लें, फिर अगर चाहें मुक़ाबले पर आ जायें। यह वाक़िआ सन् 9 हिजरी का है। आपने हज़रत अबू बक्र रज़ि. को अमीरे हज मुक़र्रर करके भेजा था और हज़रत अली को तीस या चालीस आयतें क़ुरआन की इसी सूरत की देकर भेजा कि आप चार माह की मुद्दत का ऐलान कर दें। आपने उनके ख़ेमों, घरों, ठहरने की जगहों में जा-जाकर ये आयतें उन्हें सुना दीं और साथ ही सरकारे दो आलम सल्ल. का यह हुक्म भी सुना दिया कि इस साल के बाद हज के लिये कोई मुश्रिक न आये और बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कोई नंगा शख़्स न करे। क़बीला ख़ुज़ाआ, क़बीला मुद्लज और दूसरे सब क़बीलों के लिये भी यही ऐलान था।

तबूक से आकर आपने हज का इरादा किया था लेकिन मुश्रिकों का वहाँ आना और उनका नंगे होकर वहाँ का तवाफ़ करना आपको नापसन्द था। इसलिये हज न किया और उस साल हज़रत अबू बक्र और हज़रत अली रज़ि. को भेजा, उन्होंने 'ज़िल-मजाज़' के बाज़ारों में और हर गली कूचे और हर-हर पड़ाव और मैदान में ऐलान किया कि चार महीने तक तो शिर्क और मुश्रिक को मोहलत है, उसके बाद हमारी इस्लामी तलवारें अपना जौहर दिखायेंगी। बीस दिन ज़िलहिज्जा के, मुहर्रम पूरा, सफ़र पूरा और रबीउल-अव्वल पूरा और दस दिन रबीउल-आख़िर के। इमाम ज़ोहरी कहते हैं कि शव्वाल से मुहर्रम तक की ढील थी, लेकिन यह क़ौल ग़रीब है और समझ से भी बाहर है कि हुक्म पहुँचने से पहले ही मुद्दत कैसे शुमार हो सकती है।

और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज की तारीख़ों में आम लोगों के सामने ऐलान (किया जाता) है कि अल्लाह तआला और उसका रसूल दोनों अलग होते हैं उन मुश्रिकों (को अमन देने) से। फिर अगर तुम (कुफ़्र से)	وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ

तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुमने (इस्लाम से) मुँह मोड़ा तो यह समझ रखो कि तुम ख़ुदा तआ़ला को आजिज़ नहीं कर सकोगे, और उन काफ़िरों को एक दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। (3)	خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوٓا۟ أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى ٱللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

Mahtab E Ashraf

ख़ुदा का दीन ग़ालिब है

अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्ल. की तरफ़ से आ़म ऐलान है, हज्जे अकबर के दिन यानी क़ुरबानी की ईद को जो हज के तमाम दिनों से बड़ा और अफ़ज़ल दिन है, कि अल्लाह और उसका रसूल सल्ल. मुश्रिकों से बेताल्लुक़ और अलग हैं। अगर अब भी तुम गुमराही और शिर्क व बुराई छोड़ दो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। तौबा कर लो, नेक बन जाओ, इस्लाम क़बूल कर लो, शिर्क व कुफ़्र छोड़ दो। और अगर तुमने न माना, अपनी गुमराही पर क़ायम रहे तो तुम न अब ख़ुदा के क़ब्ज़े से बाहर हो न आईन्दा किसी वक़्त ख़ुदा को तुम आ़जिज़ बना सकते हो। वह तुम पर क़ादिर है, तुम्हारी चोटियाँ (यानी सर) उसके हाथ में हैं, वह काफ़िरों को दुनिया में भी सज़ा देगा और आख़िरत में भी अ़ज़ाब देगा।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत अबू बक्र ने क़ुरबानी वाले दिन उन लोगों में जो ऐलान के लिये भेजे गये थे भेजा, हमने मुनादी कर दी कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज को न आये, और बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कोई शख़्स नंगा होकर न करे। फिर हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. को भेजा कि सूरः बराअत का ऐलान कर दें। पस आपने भी मिना में हमारे साथ ईद के दिन इन्हीं अहकाम की मुनादी की। हज्जे अकबर का दिन बक़र-ईद का दिन है, क्योंकि लोग हज्जे असग़र बोला करते थे।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के इस ऐलान के बाद हज्जतुल-विदा में एक भी मुश्रिक हज को नहीं आया था। हुनैन के ज़माने में रसूले ख़ुदा सल्ल. ने जोअ़राना से उमरे का एहराम बाँधा था, फिर उस साल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. को अमीरे हज बनाकर भेजा और आपने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. को मुनादी के लिये रवाना फ़रमाया। फिर हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. को भेजा कि बराअत (यानी मुश्रिकों से बरी और बेताल्लुक़ होने) का ऐलान कर दें। हज़रत अ़ली रज़ि. के आने के बाद भी अमीरे हज हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. ही रहे। लेकिन यह रिवायत ग़रीब है। जोअ़राना वाले उमरे के साल अमीरे हज हज़रत इताब बिन उसैद रज़ि. थे, हज़रत अबू बक्र रज़ि. तो सन् 9 हिजरी में अमीरे हज थे।

मुस्नद की रिवायत में है, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं उस साल हज़रत अ़ली के साथ था, हमने पुकार-पुकारकर मुनादी कर दी कि जन्नत में सिर्फ़ ईमान वाले ही जायेंगे। बैतुल्लाह का तवाफ़ आईन्दा से कोई शख़्स नंगा होकर नहीं कर सकेगा। जिनके साथ हमारे अ़हद व पैमान हैं उनकी मुद्दत आज से चार माह की है, इस मुद्दत के गुज़र जाने के बाद अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों की ज़िम्मेदारी से बरी हैं। इस साल के बाद किसी काफ़िर को बैतुल्लाह के हज की इजाज़त नहीं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि यह मुनादी करते-करते मेरा गला बैठ गया। हज़रत अ़ली रज़ि. की आवाज़ बैठ जाने के बाद मैंने मुनादी शुरू कर दी थी। एक रिवायत में है कि जिससे अ़हद है उसकी

Maktab E Ashraf

मुद्दत वही है। इमाम इब्ने जरीर फ़रमाते हैं- मुझे तो डर है कि यह जुमला किसी रावी के वहम की वजह से न हो, क्योंकि मुद्दत के बारे में इसके ख़िलाफ़ बहुत सी रिवायतें हैं। मुस्नद में है कि बराअत का ऐलान करने को आपने हज़रत अबू बक्र रज़ि. को भेजा, वह ज़ुल-हलीफ़ा पहुँचे होंगे तो आपने फ़रमाया कि यह ऐलान या तो मैं ख़ुद करूँगा या मेरे अहले-बैत (घर वालों) में से कोई शख़्स करेगा। फिर आपने हज़रत अ़ली रज़ि. को भेजा।

हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि सूरः बराअत की दस आयतें जब उतरीं, आपने हज़रत अबू बक्र रज़ि. को बुलाकर फ़रमाया इन्हें ले जाओ, मक्का वालों को सुनाओ। फिर मुझे याद फ़रमाया और इरशाद हुआ कि तुम जाओ, अबू बक्र से मिलो, जहाँ भी वह मिलें उनसे किताब ले लेना और मक्का वालों के पास जाकर उन्हें सुना देना। मैं चला जोहफ़ा में जाकर मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे किताब ले ली, आप वापस लौटे और हुज़ूर सल्ल. से पूछा कि क्या मेरे बारे में कुछ आयतें नाज़िल हुई हैं? आपने फ़रमाया नहीं! जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम मेरे पास आये और फ़रमाया कि या तो यह पैग़ाम आप ख़ुद पहुँचायें या और कोई शख़्स जो आप में से हो। इस सनद में कमज़ोरी है और इससे मुराद यह भी नहीं कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. उसी वक़्त लौट आये। नहीं! बल्कि आपने अपनी सरदारी में वह हज कराया। हज से फ़ारिग़ होकर फिर वापस आये जैसा कि दूसरी रिवायतों में स्पष्ट तौर पर यह बात नक़ल की गयी है।

एक और हदीस में है कि हज़रत अ़ली रज़ि. से जब हुज़ूर सल्ल. ने इस पैग़ाम पहुँचाने का ज़िक्र किया तो हज़रत अ़ली रज़ि. ने उज़्र पेश किया कि मैं उम्र के लिहाज़ से और तक़रीर के लिहाज़ से अपने में कमी पाता हूँ। आपने फ़रमाया लेकिन ज़रूरत इसकी है कि इसे या तो मैं ख़ुद पहुँचाऊँ या तू पहुँचाये। हज़रत अ़ली रज़ि. ने कहा अगर यही है तो लीजिये मैं जाता हूँ। आपने फ़रमाया जाओ अल्लाह तुम्हारी ज़बान को साबित रखे (यानी उसमें असर और बयान में ज़ोर पैदा करे) और तेरे दिल को हिदायत दे। फिर अपना हाथ उनके मुँह पर रखा, लोगों ने हज़रत अ़ली रज़ि. से पूछा कि हज के मौक़े पर हज़रत अबू बक्र के साथ आपको रसूलुल्लाह सल्ल. ने क्या बात पहुँचाने के लिये भेजा था? आपने ऊपर वाली चार बातें बयान फ़रमाईं।

मुस्नद वग़ैरह में यह रिवायत कई सनदों से आई है। उसमें ये लफ़्ज़ भी हैं कि जिनसे मुआ़हिदा है वह जिस मुद्दत तक है उसी तक रहेगा। एक और हदीस में है कि आपसे लोगों ने कहा- आप हज में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि. को भेज चुके हैं, काश कि यह पैग़ाम भी उन्हें पहुँचा देते। आपने फ़रमाया इसे तो कोई मेरा घर वाला ही पहुँचायेगा। उसमें है कि हज़रत अ़ली रज़ि. हुज़ूर सल्ल. की अ़ज़बा नाम की ऊँटनी पर सवार होकर तशरीफ़ ले गये थे, उन्हें रास्ते में देखकर हज़रत सिद्दीक़ ने पूछा कि सरदार हो या मातहत? फ़रमाया नहीं! मैं तो मातहत हूँ। वहाँ जाकर आपने तो हज का इन्तिज़ाम किया और ईद वाले दिन हज़रत अ़ली रज़ि. ने लोगों को रसूलुल्लाह सल्ल. के ये अहकाम पहुँचाये। फिर ये दोनों आपके पास आये, पस मुश्रिकों में से जिनसे आ़म अ़हद था उनके लिये तो चार माह की मुद्दत हो गई, बाक़ी जिनसे जितना अ़हद था वह बदस्तूर रहा। एक और रिवायत में है कि अबू बक्र रज़ि. को तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने अमीरे हज बनाकर भेजा था और मुझे उनके पास चालीस आयतें सूरः बराअत की देकर भेजा था। आपने अ़रफ़ात के मैदान में अ़रफ़े के दिन लोगों को ख़ुतबा दिया, फिर हज़रत अ़ली रज़ि. से फ़रमाया उठिये और नबी-ए-पाक सल्ल. का पैग़ाम लोगों को सुना दीजिये। पस हज़रत अ़ली रज़ि. ने खड़े होकर इन चालीस आयतों की तिलावत फ़रमाई। फिर लौटकर मिना में आकर जमरा (शैतान) पर कंकरियाँ फेंकी, ऊँट ज़िबह किया, सर

Maktab E Ashraf

मुंडवाया, फिर मुझे मालूम हुआ कि सब हाजी उस ख़ुतबे के वक़्त मौजूद न थे, इसलिये मैंने लोगों की ठहरने की गाहों में और ख़ेमों में जा-जाकर मुनादी शुरू कर दी, मेरा ख़्याल है कि शायद इस वजह से लोगों को यह गुमान हो गया। यह दसवीं तारीख़ का ज़िक्र है, हालाँकि असल पैग़ाम नवीं को अ़रफ़े के दिन पहुँचा दिया गया था।

अबू इस्हाक़ कहते हैं कि मैंने अबू जुहैफ़ा से पूछा कि हज्जे अकबर का कौनसा दिन है? आपने फ़रमाया अ़रफ़े का दिन। मैंने कहा यह आप अपनी तरफ़ से फ़रमा रहे हैं या सहाबा से सुना है? फ़रमाया सब कुछ यही है। अ़ता भी यही फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि. भी यही फ़रमाते हैं। पस उस दिन कोई रोज़ा न रखे। रावी कहता है कि मैंने अपने बाप के बाद हज किया, मदीना पहुँचा और पूछा कि यहाँ आजकल सबसे अफ़ज़ल कौन है? लोगों ने कहा हज़रत सईद बिन मुसैयब हैं। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मैंने मदीने वालों से पूछा कि यहाँ आजकल सबसे अफ़ज़ल (बेहतर और बुज़ुर्ग) कौन हैं? तो उन्होंने आपका नाम लिया, तो मैं आपके पास आया हूँ। यह फ़रमाईये कि अ़रफ़े के दिन रोज़े के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया लो मैं तुम्हें अपने से एक सौ दर्जे बेहतर शख़्स को बताऊँ वह अ़मर बिन उमर हैं, वह इस रोज़े से मना फ़रमाते थे, और इसी दिन को हज्जे अकबर फ़रमाते थे।

(इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

और भी बहुत से बुज़ुर्गों ने यही फ़रमाया है कि हज्जे अकबर से मुराद अ़रफ़े का दिन है। एक मुर्सल हदीस में भी है कि आपने अपने अ़रफ़े के ख़ुतबे में फ़रमाया- यही हज्जे अकबर का दिन है। दूसरा क़ौल यह है कि इससे मुराद बक़र-ईद का दिन है। हज़रत अ़ली रज़ि. यही फ़रमाते हैं।

एक बार हज़रत अ़ली रज़ि. बक़र-ईद के दिन अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार होकर जा रहे थे, इतने में एक शख़्स ने आकर लगाम थाम ली और यही पूछा, आपने फ़रमाया हज्जे अकबर का दिन आज ही का दिन है, लगाम छोड़ दे। अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ा का क़ौल भी यही है। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि. ने अपने ईद के ख़ुतबे में फ़रमाया- आज ही का दिन क़ुरबानी का दिन है, आज ही का दिन ईद का दिन है, आज ही का दिन हज्जे अकबर का दिन है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी यही रिवायत है। और भी बहुत से उलेमा का यही ख़्याल है कि हज्जे अकबर बक़र-ईद का दिन है। इमाम इब्ने जरीर का पसन्दीदा क़ौल भी यही है। सही बुख़ारी के हवाले से पहले हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने मुनादी करने वालों को मिना में ईद के दिन भेजा था। इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. हज्जतुल-विदा (आख़िरी हज) में जमरों के पास ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को ठहरे और फ़रमाया यही दिन हज्जे अकबर का दिन है। एक और रिवायत में है कि आप सल्ल. की ऊँटनी सुर्ख़ रंग की थी, आपने लोगों से पूछा कि जानते भी हो आज क्या दिन है? लोगों ने कहा क़ुरबानी का दिन है। आप सल्ल. ने फ़रमाया सच है, यही दिन हज्जे अकबर का है। एक और रिवायत में है कि आप ऊटँनी पर सवार थे, लोग उसकी नकेल थामे हुए थे, आपने सहाबा से पूछा जानते हो यह कौनसा दिन है? हम इस ख़्याल से ख़ामोश हो गये कि शायद आप इसका कोई और ही नाम बतलायें। आपने फ़रमाया क्या यह हज्जे अकबर का दिन नहीं? एक और रिवायत में है कि लोगों ने आपके सवाल पर जवाब दिया कि यह हज्जे अकबर का दिन है। सईद बिन मुसैयब रह. फ़रमाते हैं कि ईद के बाद का दिन है। मुजाहिद रह. कहते हैं हज के तमाम दिनों का यही नाम है। सुफ़ियान भी यही कहते हैं कि जैसे यौमे जमल, यौमे सिफ़्फ़ीन इन लड़ाईयों के तमाम दिनों का नाम है, इसी तरह यह भी है। हसन बसरी रह. से

जब यह सवाल हुआ तो आपने फ़रमाया तुम्हें इससे क्या हासिल, यह तो उस साल था जिस साल अमीर हज़रत अबू बक्र रज़ि. थे। इब्ने सीरीन रह. इसी सवाल के जवाब में फ़रमाते हैं कि यह वह दिन था जिसमें रसूलुल्लाह सल्ल. का और आ़म लोगों का हज हुआ।

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝	(हाँ) मगर वे मुशिरकीन (इससे अलग हैं) जिनसे तुमने अ़हद लिया, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ ज़रा कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की, सो उनके मुआ़हदे को उनकी (मुक़र्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, वाक़ई अल्लाह तआ़ला (अ़हद के ख़िलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं। (4)

अ़हद का पूरा करना

पहले जो हदीसें बयान हो चुकी हैं उनका और इस आयत का मज़मून एक ही है। इससे साफ़ हो गया कि जिनसे मुतलक़ तौर पर (यानी आ़म और बिना किसी समय सीमा के) अ़हद व पैमान हुए थे, उन्हें तो चार माह की मोहलत दी गई, कि इसमें वे अपना जो चाहें कर लें। और जिनसे किसी मुद्दत तक अ़हद व पैमान हो चुके हैं वे सब अ़हद अपनी जगह क़ायम हैं, बशर्तेकि वे लोग मुआ़हिदे की शर्तों पर क़ायम रहें। न मुसलमानों को ख़ुद कोई तकलीफ़ और पीड़ा पहुँचायें न उनके दुश्मनों की कुमक और इमदाद करें। अल्लाह तआ़ला अ़हद के पूरा करने वालों से मुहब्बत रखता है।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝	सो जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएँ तो (उस वक़्त) उन मुश्रिकों को जहाँ पाओ वहाँ मारो, और पकड़ो और बाँधो, और दाव-घात के मौक़ों में उनकी ताक में बैठो, फिर अगर वे (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात देने लगें तो उनका रास्ता छोड़ दो, वाक़ई अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। (5)

अब जंग का इक़्दाम सही है

हुर्मत वाले (सम्मानित) महीनों से मुराद यहाँ वे चार महीने हैं जिनका ज़िक्र आयत "मिन्हा अर्बअ़तुन् हुरुम" (सूरः तौबा की आयत 36, जो आगे आ रही है) में है। पस उनके हक़ में आख़िरी हुर्मत वाला महीना मुहर्रम का है। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. और ज़ह्हाक से भी यही रिवायत है, लेकिन यह ग़ौर-तलब है,

Maktab E Ashraf

बल्कि मुराद इससे यहाँ वे चार महीने हैं जिनमें मुश्रिकों को पनाह मिली थी, कि उनके बाद तुमसे लड़ाई है। चुनाँचे खुद इसी सूरः में इसका बयान दूसरी आयत में आ रहा है। फ़रमाता है कि इन चार महीनों के बाद मुश्रिकों से जंग करो, उन्हें क़त्ल करो, उन्हें गिरफ़्तार करो, जहाँ भी पा लो। पस यह आम है, लेकिन मशहूर यह है कि यह ख़ास है, हरम में लड़ाई नहीं हो सकती। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान हैः

وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ..... الخ

यानी मस्जिदे हराम के पास उनसे न लड़ो, जब तक कि वे अपनी तरफ़ से लड़ाई की शुरूआत न करें। अगर ये वहाँ तुमसे लड़ें तो फिर तुम्हें भी इनसे लड़ाई की इजाज़त है। चाहो तो क़त्ल करो, चाहे क़ैद कर लो, इनके क़िलों का घेराव करो, इनके लिये हर घाटी में बैठकर ताक लगाओ, इन्हें निशाने पर लाकर मारो।

यानी यही नहीं कि मिल जायें तो झड़प हो जाये, खुद चढ़ जाओ, इनकी राहें बन्द कर दो और इन्हें मजबूर कर दो कि या तो इस्लाम लायें या लड़ें। इसी लिये फ़रमाया कि अगर वे तौबा कर लें, पाबन्दे नमाज़ हो जायें, ज़कात देने लगें तो बेशक उनकी राहें खोल दो, उनपर से तंगियाँ उठा लो। ज़कात के रोकने और मना करने वालों से जिहाद करने की इसी जैसी आयतों से हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने दलील ली थी, कि लड़ाई इस शर्त पर हराम है कि इस्लाम में दाख़िल हो जायें और इस्लाम के वाजिबात पूरे करें।

इस आयत में इस्लाम के अरकान को तरतीब से बयान फ़रमाया है। पहले सबसे ऊपर के दर्जे वाले को फिर उससे कम वाले को। पस शहादत (यानी इस्लाम के कलिमे की गवाही देने) के बाद सबसे बड़ा इस्लामी रुक्न नमाज़ है जो अल्लाह तआ़ला का हक़ है। नमाज़ के बाद ज़कात जिसका नफ़ा फ़क़ीरों, मिस्कीनों, मोहताजों को पहुँचता है, और मख़्लूक़ का ज़बरदस्त हक़ जो इनसान के ज़िम्मे है वह अदा हो जाता है। यही वजह है कि अक्सर नमाज़ के साथ ही ज़कात का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है।

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मुझे हुक्म किया गया है कि लोगों से जिहाद जारी रखूँ जब तक कि वे यह गवाही न दें कि कोई माबूद सिवाय अल्लाह के नहीं है, और यह कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ों को क़ायम करें और ज़कात दें.......। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि तुम्हें नमाज़ों के क़ायम करने और ज़कात देने का हुक्म किया गया है। जो ज़कात न दे उसकी नमाज़ भी नहीं। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रह. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला हरगिज़ किसी की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता जब तक वह ज़कात अदा न करे। अल्लाह तआ़ला हज़रत अबू बक्र रज़ि. पर रहम फ़रमाये आपकी सूझ-बूझ सबसे बढ़ी हुई थी जो आपने ज़कात के मुन्किरों से जिहाद किया।

मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे लोगों से जिहाद का हुक्म दिया गया है, जब तक कि वे यह गवाही न दें कि सिवाय अल्लाह तआ़ला के और कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। जब वे इन दोनों बातों का इक़रार कर लें, हमारे क़िब्ले की तरफ़ मुँह कर लें, हमारा ज़बीहा (ज़िबह किया हुआ) खाने लगें, हम जैसी नमाज़ें पढ़ने लगें तो हम पर उनके ख़ून, उनके माल हराम हैं, मगर अहकामे इस्लाम हक़ के मातहत (यानी अगर इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ ही किसी वजह से उनके माल और जान लिये जाने का हुक्म हो तो बात अलग है)। उन्हें हर वह हक़ हासिल है जो और मुसलमानों का है, और उनके ज़िम्मे हर वह चीज़ है जो और मुसलमानों के ज़िम्मे है। यह रिवायत बुख़ारी शरीफ़ और सुनन में भी है, सिवाय इब्ने माजा के।

इब्ने जरीर में है, रसूले मक़बूल सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो दुनिया से इस हाल में जाये कि अकेले अल्लाह तआ़ला की ख़ालिस इबादत करता हो, उसके साथ किसी को शरीक न करता हो तो वह इस हाल में जायेगा कि ख़ुदा उससे ख़ुश होगा। हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि यही अल्लाह का दीन है, इसी को तमाम पैग़म्बर अ़लैहिमुस्सलाम लाये थे और अपने रब की तरफ़ से अपनी-अपनी उम्मतों को पहुँचाया था, इससे पहले कि बातें फैल जायें और ख़्वाहिशें इधर-उधर लग जायें। इसकी सच्चाई ख़ुदा की आख़िरी 'वही' में मौजूद है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ.

पस तौबा यही है कि एक अल्लाह के सिवा औरों की इबादत से अलग हो जायें, नमाज़ों और ज़कातों के पाबन्द हो जायें।

एक और आयत में है कि इन तीनों कामों के बाद वे तुम्हारे दीनी भाई हैं।

हज़रत ज़ह्हाक रह. फ़रमाते हैं कि यह तलवार की आयत है, इसने उन तमाम अ़हद व पैमान को चाक कर दिया जो मुश्रिकों से थे। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. का क़ौल है कि बराअत के नाज़िल होने पर चार महीने गुज़र जाने के बाद कोई अ़हद व ज़िम्मा बाक़ी नहीं रहा। पहली शर्तें तोड़ दी गईं, अब इस्लाम और जिहाद बाक़ी रह गया। हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्ल. को चार तलवारों के साथ भेजा- एक तो अ़रब के मुश्रिकों में। फ़रमाता है:

فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ.

मुश्रिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो।

यह रिवायत इसी तरह मुख़्तसर तौर पर बयान हुई है। मेरा ख़्याल है कि दूसरी तलवार अहले किताब में, फ़रमाता है:

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ..... الخ

अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान न लाने वालों और ख़ुदा व रसूल के हराम किये हुए को हराम न मानने वालों और ख़ुदा के सच्चे दीन को क़ुबूल न करने वालों से जो अहले किताब हैं, जिहाद करो, जब तक कि वे ज़िल्लत के साथ जिज़या (टैक्स) देना क़ुबूल न कर लें।

तीसरी तलवार मुनाफ़िक़ों में, फ़रमान है:

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِيْنَ...... الخ

ऐ नबी काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो। चौथी तलवार बाग़ियों में, इरशाद है:

وَاِنْ طَآئِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا..... الخ

अगर मुसलमानों की दो जमाअ़तों में लड़ाई हो जाये तो उनमें सुलह करा दो। फिर भी अगर कोई जमाअ़त दूसरी को दबाती चली जाये तो उन बाग़ियों से तुम लड़ो, जब तक कि वे पलट कर ख़ुदा के हुक्म को क़ुबूल न कर लें।

ज़ह्हाक और सुद्दी रह. का क़ौल है कि यह 'आयते तलवार' इस आयत:

فَاِمَّا مَنًّا ۢ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً......

Maktaba E Ashraf

(यानी सूरः मुहम्मद आयत नम्बर 4) से मन्सूख़ है। यानी बतौर एहसान के या फ़िदया लेकर काफ़िर क़ैदियों को छोड़ दो।

क़तादा रह. इसके उलट कहते हैं कि बाद की आयत पहली आयत से मन्सूख़ है।

और अगर मुशिरकों में से कोई शख़्स आपसे पनाह का तालिब हो तो आप उसको पनाह दीजिए, ताकि वह अल्लाह का कलाम सुन ले, फिर उसको उसकी अमन की जगह पहुँचा दीजिए, यह (हुक्म) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि पूरी ख़बर नहीं रखते। (6)	وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝

ع

अमन की तलब और इस्लामी हुक्म

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी सल्ल. को हुक्म फ़रमाता है कि जिन काफ़िरों से आपको जिहाद का हुक्म दिया गया है उनमें से अगर कोई आप से अमन तलब करे तो आप उसकी ख़्वाहिश पूरी कर दें, उसे अमन दें, यहाँ तक कि वह क़ुरआने करीम सुन ले, आपकी बातें सुन ले, दीन की तालीम मालूम कर ले, अल्लाह की हुज्जत पूरी हो जाये। फिर अपने अमन में ही उसे उसके वतन पहुँचा दो, बेख़ौफ़ी के साथ यह अपने अमन की जगह पहुँच जाये, मुम्किन है कि सोच-समझकर हक़ को क़बूल कर ले। यह इसलिये कि ये बेइल्म लोग हैं, इन्हें दीनी मालूमात अच्छी तरह पहुँचाओ, ख़ुदा की दावत उसके बन्दों के कानों तक पहुँचा दो। मुजाहिद रह. फ़रमाते हैं कि जो तेरे पास दीनी बातें सुनने के लिये आये, चाहे वह कोई भी हो वह अमन में है, यहाँ तक कि कलामे ख़ुदा उसने सुना, फिर जहाँ से आया है वहाँ अमन के साथ पहुँच जाये। इसी लिये हुज़ूर सल्ल. उसे जो दीन समझने के लिये आये, उसे जो पैग़ाम लेकर आये, अमन दे दिया करते थे। हुदैबिया वाले साल यही हुआ, क़ुरैश के जितने क़ासिद आये यहाँ उन्हें कोई ख़तरा न था। उर्वा बिन मसऊद, मिक्रज़ बिन हफ़्स, सुहैल बिन अ़मर वग़ैरह वग़ैरह एक के बाद एक आते रहे, यहाँ आकर उन्हें वह शान नज़र आई जो क़ैसर व किसरा (रोम व ईरान के बादशाहों) के दरबार में भी न थी। यही उन्होंने अपनी क़ौम से कहा। पस यह चीज़ भी बहुत से लोगों की हिदायत का ज़रिया बन गई। मुसैलमा कज़्ज़ाब (जिसने नुबुव्वत का दावा किया था) का क़ासिद जब हुज़ूर सल्ल. की बारगाह में पहुँचा, आपने उससे पूछा कि क्या तुम मुसैलमा की रिसालत के क़ायल हो? उसने कहा हाँ। आपने फ़रमाया अगर क़ासिदों का क़त्ल मेरे नज़दीक नाजायज़ न होता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता। आख़िर यह शख़्स हज़रत इब्ने मसऊद की कूफ़ा में गवर्नरी के ज़माने में क़त्ल कर दिया गया। उसे 'इब्नुत्तवाहिमा' कहा जाता था। जब आपको मालूम हुआ कि यह मुसैलमा का मानने वाला है तो आपने उसे बुलवाया और फ़रमाया- अब तू क़ासिद नहीं है, अब तेरी गर्दन मारने से कोई चीज़ रोक नहीं, उसे क़त्ल कर दिया गया। उस पर अल्लाह की लानत हो।

ग़र्ज़ यह कि दारुल-हरब (काफ़िरों के मुल्क और इलाक़े) से जो क़ासिद आये या ताजिर आये, या सुलह का तालिब आये, या आपस में इस्लाह (सुधार) के इरादे से आये या जिज़्या लेकर हाज़िर हो, इमाम या नायबे इमाम ने उसे अमन व अमान दे दिया हो तो जब तक वह दारुल-इस्लाम (इस्लामी हुकूमत) में रहे, जब तक अपने वतन में न पहुँच जाये उसे क़त्ल करना हराम है। उलेमा कहते हैं कि ऐसे शख़्स को

Maktab E Ashraf

दारुल-इस्लाम में साल भर तक न रहने दिया जाये, ज़्यादा से ज़्यादा वह चार माह तक यहाँ ठहर सकता है, फिर चार माह से ज़्यादा और साल भर के अन्दर के दो क़ौल इमाम शाफ़ई रह. वग़ैरह उलेमा के हैं।

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ○	उन (क़ुरैश के) मुश्रिकों का अ़हद अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के नज़दीक कैसे (रियायत के क़ाबिल) रहेगा, मगर जिन लोगों से तुमने मस्जिदे-हराम के नज़दीक अ़हद लिया है, सो जब तक ये लोग तुमसे सीधी तरह रहें, तुम भी उनसे सीधी तरह रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला (अ़हद के ख़िलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं। (7)

अ़मल में बराबरी

ऊपर वाले हुक्म की हिक्मत बयान हो रही है कि चार माह की मोहलत देने पर लड़ाई की इजाज़त देने की वजह यह है कि वे अपने शिर्क व कुफ़्र को छोड़ने वाले और अपने अ़हद व पैमान पर क़ायम रहने वाले ही नहीं। हाँ सुलह हुदैबिया जब तक उनकी तरफ़ से न टूटे तुम भी न तोड़ना, यह सुलह दस साल के लिये हुई थी ज़ीक़ादा सन् 6 हिजरी से, हुज़ूर सल्ल. ने इस मुआ़हिदे को निभाया यहाँ तक कि क़ुरैशियों की तरफ़ से मुआ़हिदा तोड़ा गया, उनके हलीफ़ (साथी) बनू बकर ने हुज़ूर सल्ल. के हलीफ़ ख़ुज़ाआ़ पर चढ़ाई की, बल्कि हरम में भी उन्हें क़त्ल किया। इस बिना पर रमज़ान शरीफ़ सन् 8 हिजरी में हुज़ूर सल्ल. ने उन पर चढ़ाई की। रब्बुल-आ़लमीन ने मक्का आपके हाथों फ़तह कराया और उसे आपके क़ब्ज़े में कर दिया।

लेकिन आपने बावजूद ग़लबे और क़ुदरत के उनमें से जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया सबको आज़ाद कर दिया उन्हीं लोगों को 'तुलक़ा' कहते हैं। ये तक़रीबन दो हज़ार थे जो कुफ़्र पर बाक़ी रहे और इधर-उधर हो गये। रहमतुल्-लिल्आ़लमीन सल्ल. ने सबको आ़म पनाह दे दी और उन्हें मक्का शरीफ़ में आने और यहाँ अपने मकानों में रहने की इजाज़त इनायत फ़रमाई कि बारह महीने तक वे जहाँ चाहें आ-जा सकते हैं। उन ही में सफ़वान बिन उमैया और इक्रिमा बिन अबी जहल वग़ैरह थे। फिर ख़ुदा ने उनकी रहबरी की और उन्हें इस्लाम नसीब फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला अपने हर अन्दाज़ा करने में और हर काम करने में तारीफ़ों वाला ही है।

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ○	कैसे (उनका अ़हद रियायत के क़ाबिल रहेगा) हालाँकि (उनकी हालत यह है कि) अगर वे तुमपर कहीं ग़लबा पा जायें तो तुम्हारे बारे में न रिश्तेदारी का ख़्याल करें और न क़ौल व क़रार का। ये लोग तुमको अपनी ज़बानी बातों से राज़ी कर रहे हैं, और उनके दिल (उन बातों को) नहीं मानते, और उनमें ज़्यादा आदमी शरीर हैं। (8)

Maktab E Ashraf

क़ुरआन का बयान

और उसकी सच्चाई पर इतिहास की मोतबर गवाही

अल्लाह तआला काफ़िरों के मक्र व फ़रेब और उनकी दिली दुश्मनी से मुसलमानों को आगाह फ़रमाता है, ताकि वे उनकी दोस्ती अपने दिल में न रखें, न उनके क़ौल व क़रार पर इत्मीनान करके बैठ जायें। उनका कुफ़्र व शिर्क उन्हें वादों की पाबन्दी पर रहने नहीं देता। ये तो वक़्त के मुन्तज़िर हैं, इनका बस चले तो ये तुम्हें कच्चे चबा डालें। न रिश्तेदारी को देखें न वादों का लिहाज़ करें। इनसे जो हो सके वह तकलीफ़ तुम पर तोड़ें और ख़ुश हों। 'इल्ल' के मायने रिश्तेदारी के इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से भी नक़ल किये गये हैं, और हज़रत हस्सान के शे'र में भी हैं। दूसरे मायने यह किये गये हैं कि वे अपने ग़लबे (यानी तुम पर छा जाने) के वक़्त अल्लाह का भी लिहाज़ न करें, न किसी और का। यही लफ़्ज़ 'इल्ल' ईल बनकर जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफ़ील में आया है, यानी इसके मायने 'अल्लाह' है, लेकिन पहला क़ौल ही ज़ाहिर और मशहूर है और अक्सर मुफ़स्सिरीन का भी यही क़ौल है। मुजाहिद रह. कहते हैं कि मुराद अ़हद है। क़तादा रह. का क़ौल है कि मुराद क़सम है।

उन्होंने अल्लाह के अहकाम के बदले (दुनिया की) बाक़ी न रहने वाली मताअ़ "यानी सामान और फ़ायदे" को इख़्तियार कर रखा है, सो ये लोग उसके (यानी अल्लाह तआ़ला के) रास्ते से हटे हुए हैं, (और) यक़ीनन उनका यह अ़मल बहुत ही बुरा है। (9) ये लोग किसी मुसलमान के बारे में (भी) न रिश्तेदारी का पास करें और न क़ौल व क़रार का, और ये लोग बहुत ही ज़्यादती कर रहे हैं। (10) सो अगर ये लोग (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात देने लगें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हो जाएँगे, और हम समझदार लोगों के लिए अहकाम को ख़ूब तफ़सील से बयान करते हैं। (11)	اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

अभी मौक़ा है कि वे अपनी सरकशी से बाज़ आ जायें

मुश्रिकों की बुराई के साथ ही मुसलमानों को जिहाद की तरग़ीब (प्रेरणा) दी जा रही है, कि इन काफ़िरों ने कमीनी और घटिया दुनिया को उम्दा आख़िरत के बदले पसन्द कर लिया है। ख़ुद राहे ख़ुदा से रुक कर मोमिनों को भी ईमान से रोक रहे हैं, इनके आमाल बहुत ही बदतर हैं, ये तो मोमिनों को नुक़सान पहुँचाने के ही पीछे लगे हैं। न इन्हें रिश्तेदारी का ख़्याल, न मुआ़हिदे का लिहाज़, ये तो हद से निकल गये

Maktab E Ashraf

हैं। हाँ अब भी सच्ची तौबा और नमाज़ व ज़कात की पाबन्दी इन्हें तुम्हारा बना सकती है। चुनाँचे बज़्ज़ार की हदीस में है कि जो दुनिया को इस हाल में छोड़े कि अल्लाह की इबादतें ख़ुलूस के साथ कर रहा हो, उसके साथ किसी को शरीक न बनाता हो, नमाज़ व ज़कात का पाबन्द हो, तो अल्लाह उससे ख़ुश होकर मिलेगा। यही अल्लाह का वह दीन है जिसे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम लाते रहे, और इसी की तब्लीग़ ख़ुदा की तरफ़ से वे करते रहे, इससे पहले कि बातें फैल जायें और ख़्वाहिशें बढ़ जायें। इसकी तस्दीक़ किताबुल्लाह में मौजूद है, कि अगर वे तौबा कर लें यानी बुतों को और बुतपरस्ती को छोड़ दें और नमाज़ी बन जायें, ज़कात अदा करने लगें तो तुम उनके रास्ते छोड़ दो। एक और आयत में है कि फिर तो ये तुम्हारे दीनी भाई हैं। इमाम बज़्ज़ार रह. फ़रमाते हैं कि मेरे ख़्याल से तो मरफ़ूअ़ हदीस वहीं पर ख़त्म है कि ख़ुदा उससे रज़ामन्द होकर मिलेगा, इसके बाद का कलाम हदीस को बयान करने वाले रबीअ़ इब्ने अनस रह. का है। वल्लाहु आलम।

और अगर वे लोग अ़हद करने के बाद अपनी क़स्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन (इस्लाम) पर ताना मारें तो तुम लोग इस इरादे से कि ये बाज़ आ जाएँ, उन कुफ़्र के पेशवाओं से (ख़ूब) लड़ो, क्योंकि (इस सूरत की) क़समें बाक़ी नहीं रहीं। (12)	وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ○

अ़हद को तोड़ें तो उनसे लड़ो

अगर ये मुश्रिक अपनी क़समों को तोड़कर वादा-ख़िलाफ़ी करें, अ़हद को तोड़ें और तुम्हारे दीन पर एतिराज़ करने लगें तो तुम इन कुफ़्र के सरदारों को तोड़-मरोड़ दो। इसी लिये उलेमा ने कहा है कि जो हुज़ूर सल्ल. को गालियाँ दे, दीन में ऐब ढूँढे, इसका ज़िक्र अपमान और बुराई के साथ करे, उसे क़त्ल कर दिया जाये। उनकी क़समें बिल्कुल बेएतिबार हैं। यही तरीक़ा उनको कुफ़्र व दुश्मनी से रोकने का है। अबू जहल, उतबा, शैबा, उमैया वग़ैरह ये सब कुफ़्र के सरदार थे। एक ख़ारजी ने हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास को कहा कि यह कुफ़्र के पेशवाओं में से एक है, आपने फ़रमाया तू झूठा है, मैं तो उनमें से हूँ जिन्होंने कुफ़्र के पेशवाओं को क़त्ल किया था। हज़रत हुज़ैफ़ा फ़रमाते हैं कि इस आयत वाले इसके बाद क़त्ल नहीं किये गये। हज़रत अ़ली रज़ि. से भी इसी तरह रिवायत है। सही यह है कि आयत आ़म है अगरचे सबबे नुज़ूल के एतिबार से इससे मुराद क़ुरैश के मुश्रिक लोग हैं, लेकिन हुक्म के एतिबार से यह उन्हें और सब को शामिल है। वल्लाहु आलम।

हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने शाम (मुल्क सीरिया) की तरफ़ लश्कर भेजा तो उनसे फ़रमाया कि तुम्हें उनमें से कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जिनकी चन्दिया मुंडी हुई होगी, तो तुम उस शैतानी बैठक पर तलवार मारकर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देना। वल्लाह उनमें के एक का क़त्ल दूसरे सत्तर लोगों के क़त्ल से मुझे ज़्यादा पसन्दीदा है। इसलिये कि फ़रमाने ख़ुदा है- कुफ़्र के इमामों (सरदारों) को क़त्ल करो। (इब्ने अबी हातिम)

तुम ऐसे लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला, और रसूल को वतन से निकालने की तजवीज़ की, और उन्होंने तुमसे पहले ख़ुद छेड़ निकाली, क्या उनसे (लड़ने से) तुम डरते हो? सो अल्लाह तआ़ला इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि तुम उनसे डरो, अगर तुम ईमान रखते हो। (13) उनसे लड़ो, अल्लाह तआ़ला (का वायदा है कि) उनको तुम्हारे हाथों सज़ा देगा और उनको ज़लील (व रुस्वा) करेगा, और तुमको उनपर ग़ालिब करेगा, और बहुत-से मुसलमानों के दिलों को शिफ़ा देगा। (14) और उनके दिलों के ग़ैज़ (व ग़ज़ब) को दूर करेगा, और जिस पर मन्ज़ूर होगा अल्लाह तआ़ला तवज्जोह (भी) फ़रमायेगा, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (15)	اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

तुम्हारे हाथों काफ़िरों पर अ़ज़ाब

मुसलमानों को पूरी तरह जिहाद पर आमादा करने के लिये फ़रमा रहा है कि ये अ़हद तोड़ने वाले और क़समें तोड़ने वाले कुफ़्फ़ार वही हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल. को जिला-वतन करने (देस-निकाला देने) की पूरी तरह ठान ली थी। चाहते थे कि क़ैद कर लें या क़त्ल कर डालें, या देस-निकाला दे दें। इनके फ़रेब और धोखे से ख़ुदा की तदबीर कहीं बेहतर थी। सिर्फ़ ईमान की बिना पर दुश्मनी करके पैग़म्बर को और मोमिनों को वतन से ख़ारिज करते थे, भड़-भड़ाकर उठ खड़े हो जाते थे कि तुझे मक्का शरीफ़ से निकाल दें, बुराई की शुरूआ़त इन्हीं की तरफ़ से है।

बदर के दिन लश्कर लेकर निकले, मालूम हो चुका था कि क़ाफ़िला बचकर चला गया है, लेकिन फिर भी ग़ुरूर व फ़ख़्र से ख़ुदाई लश्कर को शिकस्त देने के इरादे से मुसलमानों से भिड़ गये, जैसा कि पूरा वाक़िआ़ इससे पहले बयान हो चुका है। इन्होंने अ़हद को तोड़ा और अपने हलीफ़ों (साथियों और दोस्तों) के साथ मिलकर रसूलुल्लाह सल्ल. के हलीफ़ों से जंग की। बनू बकर की ख़ुज़ाआ़ के ख़िलाफ़ मदद की, इस वादा-ख़िलाफ़ी की वजह से हुज़ूर सल्ल. ने इन पर लश्कर लेकर चढ़ाई की, इनकी ख़ूब ख़बर ली और मक्का फ़तह कर लिया। फ़ल्हम्दु लिल्लाह

फ़रमाता है कि तुम इन नापाक और गन्दे लोगों से ख़ौफ़ खाते हो, अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारे दिल में सिवाय ख़ुदा के किसी का ख़ौफ़ न होना चाहिये। वही इस लायक़ है कि उससे ईमान वाले डरते रहें। एक और आयत में है कि इनसे न डरो सिर्फ़ मुझसे ही डरते रहो। मेरा ग़लबा, मेरी सल्तनत, मेरी सज़ा, मेरी क़ुदरत, मेरी मिल्कियत बेशक इस क़ाबिल है कि हर वक़्त, हर दिल में मेरी हैबत से लरज़ता रहे।

Maktab E Ashraf

तमाम काम मेरे हाथ में हैं, जो चाहूँ कर सकता हूँ और कर गुज़रता हूँ। मेरी मंशा बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता।

मुसलमानों पर जिहाद की फ़र्ज़ियत का राज़ बयान हो रहा है कि ख़ुदा क़ादिर था, जो अ़ज़ाब चाहता उन पर भेज देता, लेकिन उसका मंशा यह है कि तुम्हारे हाथों उन्हें सज़ा दे, उनकी बरबादी तुम ख़ुद करो, तुम्हारे दिल की ख़ूब भड़ास निकल जाये और तुम्हें राहत व आराम, ख़ुशी व कामरानी हासिल हो। यह बात कुछ उनही के साथ मख़्सूस न थी बल्कि तमाम मोमिनों के लिये भी है, ख़ुसूसन ख़ुज़ाआ़ का क़बीला जिन पर अ़हद के ख़िलाफ़ क़ुरैश अपने हलीफ़ों (साथियों) में मिलकर चढ़ दौड़े, उनके दिल उसी वक़्त ठंडे होंगे, उनके ग़ुबार उसी वक़्त धुलेंगे, जब मुसलमानों के हाथों क़ुफ़्फ़ार नीचे हों। इब्ने अ़साकिर में है कि जब हज़रत आ़यशा रज़ि. ग़ुस्से में और नाराज़ हो जातीं तो हुज़ूर सल्ल. उनकी नाक पकड़ लेते और फ़रमाते ऐ उवैश! यह दुआ़ करोः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْ ذَنْبِيْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِيْ وَاَجِرْنِيْ مِنْ مُّضِلَّاتِ الْفِتَنِ.

ऐ अल्लाह! ऐ मुहम्मद के परवर्दिगार! मेरे गुनाह बख़्श और मेरे दिल का ग़ुस्सा दूर कर, और मुझे गुमराह करने वाले फ़ितनों से बचा ले।

अल्लाह अपने बन्दों में से जिसकी चाहे तौबा क़बूल फ़रमा ले, वह अपने बन्दों की तमाम मस्लेहतों से ख़ूब आगाह है। अपने तमाम कामों में, अपने शरई अहकाम में, अपने तमाम हुक्मों में हिक्मत वाला है। जो चाहता है करता है, जो इरादा करता है हुक्म देता है। वह आ़दिल व हाकिम है। ज़ुल्म से पाक है। एक ज़र्रा बराबर भलाई बुराई ज़ाया नहीं करता, बल्कि उसका बदला दुनिया और आख़िरत में देता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ
وَلِيْجَةً ط وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ع ٨

क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि तुम यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह तआ़ला ने (ज़ाहिरी तौर पर) उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से (ऐसे मौक़े पर) जिहाद किया हो, और अल्लाह और रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को ख़ुसूसी दोस्त न बनाया हो, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है। (16)

एक ख़ुदा को मानते हो तो इसका सुबूत दो

यह नामुम्किन है कि इम्तिहान बग़ैर मुसलमान भी छोड़ दिये जायें, सच्चे झूठे को ज़ाहिर कर देना ज़रूरी है। 'वलीजतन्' के मायने भेदी और दख़ल देने वाले के हैं। पस सच्चे वे हैं जो जिहाद में आगे बढ़कर हिस्सा लें और ज़ाहिर व बातिन में ख़ुदा और रसूल की ख़ैरख़्वाही और हिमायत करें। एक क़िस्म का बयान दूसरी क़िस्म को ज़ाहिर कर देता था, दूसरी क़िस्म के लोगों का बयान छोड़ दिया। ऐसी इबारतें शायरों के शे'रों में भी हैं। एक और जगह क़ुरआने करीम में है कि क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि वे सिर्फ़ यह कहने से छोड़ दिये जायेंगे कि हम ईमान लाये और उनकी आज़माईश होगी ही नहीं? हालाँकि पहले गुज़रे मोमिनों की भी हमने आज़माईश की। याद रखो ख़ुदा सच्चे झूठों को ज़रूर अलग-अलग कर देगा। एक और आयत

Maktab E Ashraf

में इसी मज़्मून कोः

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ..... الخ

के लफ़्ज़ों से बयान फ़रमाया है। एक और आयत में हैः

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ..... الخ

यानी अल्लाह ऐसा नहीं है कि तुम मोमिनों को तुम्हारी हालत पर ही छोड़ दे और इम्तिहान करके यह मालूम न कर ले कि ख़बीस और बुरा कौन है और पाक व अच्छा कौन है? पस जिहाद के मशरू करने में एक हिक्मत यह भी है कि खरे खोटे की तमीज़ हो जाती है, अगरचे अल्लाह तआ़ला हर चीज़ से वाक़िफ़ है, जो होगा वह भी उसे मालूम है, और जो नहीं हुआ वह जब होगा तब किस तरह होगा यह भी वह जानता है, चीज़ के होने से पहले ही उसे उसका इल्म हासिल है और हर चीज़ की हर हालत से वह वाक़िफ़ है, लेकिन वह चाहता है कि दुनिया पर भी खरा-खोटा सच्चा-झूठा ज़ाहिर कर दे, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, न उसके सिवा कोई परवर्दिगार है, न उसकी क़ज़ा व क़द्र (यानी तक़दीर और फ़ैसलों) व इरादों को कोई बदल सकता है।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ قف فَعَسٰٓى اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝

मुश्रिकों में यह क़ाबलियत ही नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जिस हालत में कि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र (की बातों) का इक़रार कर रहे हैं। उन लोगों के सब आमाल बेकार हैं और दोज़ख़ में वे लोग हमेशा रहेंगे। (17) हाँ अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएँ और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और सिवाय अल्लाह के किसी से न डरें, सो ऐसे लोगों के मुताल्लिक़ उम्मीद (यानी वायदा) है कि अपने मक़सूद तक पहुँच जाएँगे। (18)

मस्जिदों को मुश्रिक लोग आबाद नहीं कर सकते

यानी ख़ुदा के साथ शिर्क करने वालों को ख़ुदा की मस्जिदों की आबादी करने वाले बनना लायक़ नहीं। ये मुश्रिक हैं, ख़ुदा के घर से इन्हें क्या ताल्लुक़? 'मसाजिद' को 'मस्जिद' भी पढ़ा है। पस मुराद मस्जिदे हराम है, जो रू-ए-ज़मीन की तमाम मस्जिदों से अशरफ़ (सम्मानित) है, जो अव्वल दिन से सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत के लिये बनाई गई है, जिसकी बुनियादें ख़लीले ख़ुदा हज़रत इब्राहीम ने रखी थीं। और ये लोग मुश्रिक हैं, हाल व क़ाल दोनों एतिबार से। तुम किसी ईसाई से पूछो वह साफ़ कहेगा मैं ईसाई हूँ।

यहूदी से पूछो वह अपनी यहूदियत का इक़रार करेगा। साबी से पूछो वह भी अपना साबी होना अपनी ज़बान से कहेगा, मुश्रिक भी अपने मुश्रिक होने के इक़रारी हैं, इनके इस शिर्क की वजह से इनके आमाल अकारत (बरबाद) हो चुके हैं और वे हमेशा के लिये दोज़ख़ी हैं। ये तो मस्जिदे हराम से और रोकते ही हैं, ये चाहे कहें लेकिन दर असल ख़ुदा के दोस्त और प्यारे नहीं, अल्लाह के औलिया (दोस्त और प्यारे) तो वे हैं जो मुत्तक़ी (परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाले) हों, लेकिन अक्सर लोग इल्म से कोरे और ख़ाली होते हैं। हाँ अल्लाह के घर की आबादी मोमिनों के हाथों होती है, पस जिसके हाथ से मस्जिदों की आबादी हो उसके ईमान का क़ुरआन गवाह है। मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं- जब तुम किसी को मस्जिद में आने जाने की आ़दत वाला देखो तो उसके ईमान की गवाही दो, फिर आपने यही आयत तिलावत फ़रमाई।

एक और हदीस में है कि मस्जिदों के आबाद करने वाले अल्लाह वाले हैं। एक और हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला इन मस्जिद वालों पर नज़र डालकर अपने अ़ज़ाब पूरी क़ौम पर से हटा लेता है। एक और हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है- मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की अपने जलाल की क़सम कि मैं ज़मीन वालों को अ़ज़ाब करना चाहता हूँ लेकिन अपने घरों के आबाद करने वालों और अपनी राह में आपस में मुहब्बत रखने वालों और सुबह सेहरी के वक़्त इस्तिग़फ़ार करने वालों पर नज़रें डालकर अपने अ़ज़ाब हटा लेता हूँ। इब्ने अ़साकिर में है कि शैतान इनसान का भेड़िया है, जैसे बकरियों का भेड़िया होता है, कि वह अलग थलग पड़ी हुई इधर-उधर की बकरी को पकड़ कर ले जाता है। पस तुम फूट और इख़्तिलाफ़ (विवाद) से बचो, जमाअ़त को और मस्जिदों को लाज़िम पकड़े रहो। रसूले पाक के सहाबा का बयान है कि मस्जिदें इस ज़मीन पर ख़ुदा का घर हैं, जो यहाँ आये अल्लाह पर हक़ है कि उसकी इ़ज़्ज़त करे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि जो नमाज़ की अज़ान सुनकर फिर भी मस्जिद में आकर जमाअ़त के साथ नमाज़ न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं होती, वह अल्लाह और रसूल का नाफ़रमान है। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि मस्जिदों को आबाद करने वाले अल्लाह के और क़ियामत के मानने वाले होते हैं। फिर फ़रमाया ये नमाज़ी होते हैं, बदनी इबादत नमाज़ के पाबन्द होते हैं और माली इबादत ज़कात के भी अदा करने वाले होते हैं। इनकी भलाई अपने लिये भी होती है और फिर आ़म मख़्लूक़ के लिये भी होती है, इनके दिल अल्लाह के सिवा और किसी से डरते नहीं, यही हिदायत पाने वाले लोग हैं। अल्लाह को एक मानने वाले, ईमान वाले, क़ुरआन व हदीस के पैरोकार, पाँचों नमाज़ों के पाबन्द, सिर्फ़ अल्लाह का ख़ौफ़ खाने वाले, उसके सिवा दूसरे की बन्दगी न करने वाले ही हिदायत और सही राह पाने वाले, कामयाब और मक़सद को पाने वाले हैं।

यह याद रहे कि बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास, क़ुरआने करीम में जहाँ भी लफ़्ज़ 'अ़सा' (यानी उम्मीद है) है, वहाँ यक़ीन के मायने में है, उम्मीद के मायने में नहीं। जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है:

عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا.

(उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे महमूद में जगह देगा) जबकि मक़ामे महमूद में पहुँचाना यानी हुज़ूर सल्ल. का मेहशर में शाफ़ेअ़ बनना यक़ीनी चीज़ है, जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं- 'अ़सा' का लफ़्ज़ कलामुल्लाह में हक़ व यक़ीन के लिये आता है।

Maktab E Ashraf

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ٥ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ لا اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ط وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ٥ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ٥ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ٥	क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने को और मस्जिदे-हराम के आबाद रखने को उस शख़्स (के अ़मल) के बराबर क़रार दे लिया जो कि अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया हो, ये लोग अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं, और जो लोग बेइन्साफ़ हैं अल्लाह तआ़ला उनको समझ नहीं देता। (19) जो लोग ईमान लाए और (अल्लाह के वास्ते) उन्होंने वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया, वे दर्जे में अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़े हैं, और यही लोग पूरे कामयाब हैं। (20) उनका रब उनको ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से बड़ी रहमत और बड़ी रज़ामन्दी और (जन्नत के) ऐसे बाग़ों की, कि उनके लिए उन (बाग़ों) में हमेशा रहने वाली नेमत होगी। (21) (और) उनमें ये हमेशा-हमेशा को रहेंगे। बेशक अल्लाह तआ़ला के पास बड़ा अज्र है। (22)

बड़ा कारनामा, बड़ा अज्र व सवाब

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि काफ़िर कहते थे- बैतुल्लाह की ख़िदमत और हाजियों के पानी पिलाने की सआ़दत ईमान व जिहाद से बेहतर है। हम चूँकि ये दोनों ख़िदमतें अन्जाम दे रहे हैं इसलिये हमसे बेहतर कोई नहीं। अल्लाह ने उनका घमंड व ग़ुरूर और हक़ से तकब्बुर और मुँह फेरना बयान फ़रमाया कि मेरी आयतों की तुम्हारे सामने तिलावत होती है तो तुम उससे बेपरवाही से मुँह मोड़कर कुफ़्र व इनकार में मुब्तला रहते हो, पस तुम्हारा गुमान बेजा, तुम्हारा ग़ुरूर ग़लत, तुम्हारा फ़ख़्र नामुनासिब है। यूँ भी ख़ुदा पर ईमान और जिहाद बड़ी चीज़ है, लेकिन तुम्हारे मुक़ाबले में तो वह और भी बड़ी चीज़ है, क्योंकि तुम्हारी तो कोई नेकी भी हो उसे शिर्क का घुन खा जाता है। पस फ़रमाता है कि ये दोनों गिरोह बराबर के भी नहीं, ये तो अपने आपको (ख़ुदा के घर को) आबाद करने वाला कहते थे, ख़ुदा ने इनका नाम ज़ालिम रखा। अल्लाह के घर की इनकी ख़िदमत बेकार कर दी।

कहते हैं कि हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने अपनी क़ैद के ज़माने में कहा था कि तुम अगर इस्लाम व जिहाद में थे तो हम भी अल्लाह के घर की ख़िदमत और हाजियों को आराम पहुँचाने में थे। इस पर यह आयत उतरी कि शिर्क के वक़्त की नेकी बेकार है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने इन पर जब ले-दे शुरू की तो

Maktab_E_Ashraf

हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने कहा था कि हम मस्जिदे हराम के मुतवल्ली थे, हम गुलामों को आज़ाद करते थे, हम बैतुल्लाह पर गिलाफ़ चढ़ाते थे, हम हाजियों को पानी पिलाते थे, इस पर यह आयत उतरी।

रिवायत है कि यह गुफ़्तगू हज़रत अ़ब्बास रज़ि. और हज़रत अ़ली रज़ि. में हुई थी। और यह भी रिवायत है कि तल्हा बिन शैबा, अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब, अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि. बैठे-बैठे अपनी अपनी बड़ाईयाँ बयान करने लगे, उस्मान रज़ि. ने कहा मैं बैतुल्लाह की चाबी रखने वाला हूँ। मैं अगर चाहूँ वहाँ रात गुज़ार सकता हूँ। अ़ब्बास रज़ि. ने कहा मैं ज़मज़म का पानी पिलाने वाला हूँ और उसका मुहाफ़िज़ हूँ। मैं अगर चाहूँ मस्जिद में सारी रात रह सकता हूँ। हज़रत अ़ली रज़ि. ने कहा मैं नहीं जानता कि तुम दोनों साहिब क्या कह रहे हो? मैंने लोगों से छह माह पहले क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ पढ़ी है, मैं मुजाहिद हूँ। इस पर यह आयत उतरी। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. ने इस अन्देशे को ज़ाहिर किया कि कहीं मैं ज़मज़म के कुएँ के पानी के ओ़हदे से हटा न दिया जाऊँ, तो रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया नहीं! तुम अपने इस पद पर क़ायम रहो, तुम्हारे लिये इसमें भलाई है।

इस आयत की तफ़सीर में एक मरफ़ूअ़ हदीस वारिद हुई है जिसका ज़िक्र भी यहाँ ज़रूरी है। हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि. कहते हैं कि एक शख़्स ने कहा- इस्लाम के बाद अगर मैं कोई अ़मल न करूँ तो मुझे परवाह नहीं, सिवाय इसके कि मैं हाजियों को पानी पिलाऊँ। दूसरे ने इसी तरह मस्जिदे हराम के आबाद करने को कहा। तीसरे ने इसी तरह राहे ख़ुदा के जिहाद को कहा। हज़रत उमर रज़ि. ने उन्हें डाँट दिया और फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्ल. के मिम्बर के पास आवाज़ें ऊँची न करें। यह वाक़िआ़ जुमे के दिन का है, जुमे के बाद हम सब नबी करीम सल्ल. के पास हाज़िर हुए और आपसे पूछा तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। एक और रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ि. ने वादा किया था कि नमाज़े जुमा के बाद मैं ख़ुद जाकर हुज़ूर सल्ल. से यह बात दरियाफ़्त कर लूँगा......।

ऐ ईमान वालो! अपने बापों को, अपने भाईयों को (अपना) रफ़ीक़ 'यानी साथी और दोस्त' मत बनाओ, अगर वे लोग कुफ़्र को ईमान के मुक़ाबले में (ऐसा) अज़ीज़ रखें (कि उनके ईमान लाने की उम्मीद न रहे), और जो शख़्स तुममें से उनके साथ दोस्ती और दिली ताल्लुक़ रखेगा सो ऐसे लोग बड़े नाफ़रमान हैं। (23) आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा कुन्बा और वे माल जो तुमने कमाये हैं, और वह तिजारत जिसमें निकासी न होने का तुमको अन्देशा हो, और वे घर जिनको तुम पसन्द करते हो, तुमको अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में	يَـٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ

Maktaba Ashraf

اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ۠ ۝	जिहाद करने से ज़्यादा प्यारे हों तो तुम इंतिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला (हिजरत न करने की सज़ा का) अपना हुक्म भेज दे, और अल्लाह तआ़ला बेहुक्मी करने वालों को उनके मक़सूद तक नहीं पहुँचाता। (24)

काफ़िरों से कोई रिश्ता और ताल्लुक़ नहीं

अल्लाह तआ़ला काफ़िरों से ताल्लुक़ व दोस्ती के ख़त्म करने का हुक्म देता है, उनकी दोस्तियों से रोकता है, चाहे वे माँ-बाप हों, बहन-भाई हों, बशर्तेकि वे कुफ़्र को इस्लाम पर पसन्द करें।

एक और आयत में हैः

لَاتَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ....... الخ

अल्लाह पर और क़ियामत पर ईमान लाने वालों को तू हरगिज़ ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्तियाँ करने वाला नहीं पायेगा अगरचे वे उनके बाप हों, बेटे हों या भाई हों या रिश्तेदार हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में ईमान लिख दिया है और अपनी ख़ास रूह से इनकी ताईद फ़रमाई गई है। इन्हें नेहरों वाली जन्नत में पहुँचायेगा।

बैहक़ी में है कि हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि. के बाप ने बदर वाले दिन उनके सामने अपने बुतों की तारीफ़ें शुरू कीं। आपने उसे हर चन्द रोकना चाहा लेकिन वह बराबर करता ही चला गया, बाप बेटे में जंग शुरू हो गई। आपने अपने बाप को क़त्ल कर दिया। इस पर ऊपर बयान हुई आयत नाज़िल हुई।

फिर ऐसा करने वालों को डराता है और फ़रमाता है कि अगर ये रिश्ते और अपने हासिल किये हुए माल, और मन्दी का ख़तरा, और पसन्दीदा मकानात अगर तुम्हें अल्लाह व रसूल से और जिहाद से भी ज़्यादा मरग़ूब (पसन्द) हैं तो तुम्हें ख़ुदा के अ़ज़ाब के लिये तैयार रहना चाहिये। ऐसे बदकारों को अल्लाह भी रास्ता नहीं दिखाता।

रसूलुल्लाह सल्ल. सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ जा रहे थे, हज़रत उमर रज़ि. का हाथ आपके हाथ में था। हज़रत उमर रज़ि. कहने लगे या रसूलल्लाह! आप मुझे हर चीज़ से ज़्यादा अ़ज़ीज़ (प्यारे) हैं सिवाय मेरी अपनी जान के। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुममें से कोई मोमिन नहीं होगा जब तक कि वह मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ न रखे। हज़रत उमर रज़ि. ने अ़र्ज़ किया ख़ुदा की क़सम अब आपकी मुहब्बत मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा है। आपने फ़रमाया अब ऐ उमर! (तू मोमिन हो गया)। (बुख़ारी शरीफ़)

सही हदीस में आपका इरशाद है कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुममें से कोई ईमान वाला न होगा जब तक मैं उसे उसके माँ-बाप से, औलाद से और दुनिया के तमाम लोगों से ज़्यादा अ़ज़ीज़ (प्यारा और महबूब) न हो जाऊँ। मुस्नद इमाम अहमद और अबू दाऊद में है, आप फ़रमाते हैं कि जब तुम ऐन की ख़रीद व फ़रोख़्त करने लगोगे और गाय बैल की दुमें थाम लोगे और जिहाद छोड़ दोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम पर ज़िल्लत डाल देगा, वह दूर न होगी जब तक कि तुम अपने दीन की तरफ़ लौट न

आओ।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِىْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

तुमको ख़ुदा तआ़ला ने (लड़ाई के) बहुत-से मौक़ों में (काफ़िरों पर) ग़लबा दिया, और हुनैन के दिन भी, जबकि तुमको अपने मजमे के ज़्यादा होने से ग़र्रा "यानी एक तरह का उस मजमे पर नाज़" हो गया था, फिर वह ज़्यादती तुम्हारे लिए कुछ कारामद न हुई, और तुमपर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंगी करने लगी, फिर (आख़िर) तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए। (25) फिर (उसके बाद) अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (के दिल) पर और दूसरे मोमिनों (के दिलों) पर अपनी (तरफ़ से) तसल्ली नाज़िल फ़रमाई, और (मदद के लिए) ऐसे लश्कर नाज़िल फ़रमाए जिनको तुमने नहीं देखा और काफ़िरों को सज़ा दी, और यह काफ़िरों की (दुनिया में) सज़ा है। (26) फिर (उसके बाद) ख़ुदा तआ़ला जिसको चाहें तौबा नसीब कर दें, और अल्लाह तआ़ला बड़ी मग़फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। (27)

हुनैन का दिन

मुजाहिद रह. कहते हैं कि बराअत की यह पहली आयत है जिसमें अल्लाह तआ़ला अपना बहुत बड़ा एहसान मोमिनों पर ज़िक्र फ़रमा रहा है, कि उसने अपने नबी के साथियों की ख़ुद इमदाद फ़रमाई। उन्हें दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया और एक जगह नहीं हर जगह उसकी मदद शामिले हाल रही। इसी वजह से कामयाबी व विजय ने कभी साथ न छोड़ा। यह सिर्फ़ अल्लाह की ताईद ही थी कि न माल व असबाब और हथियारों की अधिकता और न तादाद की ज़्यादती (और इसके बावजूद तुम्हें कामयाबियाँ मिलीं, वरना) याद कर लो हुनैन वाले दिन को, ज़रा सा तुम्हें अपनी तादाद की अधिकता पर नाज़ हो गया था तो क्या हाल हुआ, पीठ दिखाकर भाग निकले, थोड़े से ही पैग़म्बरे ख़ुदा के साथ ठहर गये। उसी वक़्त ख़ुदा की मदद नाज़िल हुई। उसने दिलों में तस्कीन डाल दी। यह इसलिये कि तुम्हें मालूम हो जाये कि मदद उसी की तरफ़ से है, उसकी मदद से छोटी-छोटी जमाअ़तों ने बड़े-बड़े गिरोहों के मुँह फेर-फेर दिये हैं। अल्लाह की इमदाद साबिरों के साथ होती है। यह वाक़िआ़ हम जल्द ही तफ़सील के साथ बयान करेंगे। इन्शा-अल्लाह तआ़ला

मुस्नद की हदीस में है कि बेहतरीन साथी चार हैं और बेहतरीन छोटा लश्कर चार सौ का है और बेहतरीन बड़ा लश्कर चार हज़ार का है और बारह हज़ार की तादाद तो अपनी कमी के सबब कभी मग़लूब

Maktaba Ashraf

नहीं हो सकती। यह हदीस अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में भी है। इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं। यह रिवायत सिवाय एक रावी के बाक़ी सब रावियों ने मुर्सल तौर पर बयान की है। इब्ने माजा और बैहक़ी में भी यह रिवायत इसी तरह है। वल्लाहु आलम

सन् 8 हिजरी में फ़त्हे मक्का के बाद शव्वाल के महीने में जंगे हुनैन हुई थी। जब हुज़ूर सल्ल. फ़त्हे मक्का से फ़ारिग़ हुए और प्रारंभिक तमाम चीज़ें अन्जाम दे चुके और ज़्यादातर मक्की हज़रात मुसलमान हो चुके और उन्हें आप आज़ाद भी कर चुके तो आपको ख़बर मिली कि क़बीला हवाज़न एकत्र हो गया है और आपसे जंग करने पर आमादा है। उनका सरदार मालिक बिन औफ़ नसरी है। सक़ीफ़ का सारा क़बीला उनके साथ है, इसी तरह बनू जशम, बनू सअ़द, बनू बकर भी हैं और बनू हिलाल के भी कुछ लोग मैदान में निकल खड़े हुए हैं, यहाँ तक कि अपनी बकरियों और ऊँटों को भी उन्होंने साथ ले रखा है। तो आप अपने उस लश्कर को लेकर जो आपके साथ मुहाजिरीन और अन्सार वग़ैरह का था, उनके मुक़ाबले के लिये चले। तक़रीबन दो हज़ार नौमुस्लिम मक्की भी आपके साथ हो लिये। मक्का और ताईफ़ के दरमियान की वादी (घाटी) में दोनों लश्कर मिल गये। उस जगह का नाम हुनैन था। सुबह सवेरे मुँह अंधेरे क़बीला-ए-हवाज़न जो कमीन-गाह में छुपे हुए थे, उन्होंने बेख़बरी में मुसलमानों पर अचानक हमला कर दिया, बेशुमार तीर बरसाते हुए आगे बढ़े और तलवारें चलानी शुरू कर दीं। यहाँ मुसलमानों में अचानक कमज़ोरी कम-हिम्मती फैल गई और ये मुँह फेरकर भाग खड़े हुए। लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल. उनकी तरफ़ बढ़े, आप उस वक़्त सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे। हज़रत अ़ब्बास रज़ि. आपके जानवर की दाईं तरफ़ से नकेल थामे हुए थे और हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब बाईं तरफ़ से नकेल पकड़े हुए थे। जानवर की तेज़ी को ये लोग रोक रहे थे, आप बुलन्द आवाज़ से मुसलमानों को वापसी का हुक्म फ़रमा रहे थे और आवाज़ लगाते जाते थे कि अल्लाह के बन्दो! कहाँ चले, मेरी तरफ़ आओ, मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ। मैं नबी हूँ झूठा नहीं हूँ। मैं अ़ब्दुल-मुत्तलिब की औलाद में से हूँ।

आपके साथ उस वक़्त सिर्फ़ अस्सी या सौ के क़रीब सहाबा रह गये थे। हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत अ़ब्बास, हज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास, हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस, हज़रत ऐमन बिन उम्मे ऐमन, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह आपके साथ ही थे। फिर आपने अपने चचा हज़रत अ़ब्बास रज़ि. को जो बहुत बुलन्द आवाज़ वाले थे, हुक्म दिया कि दरख़्त के नीचे बैअ़त करने वाले मेरे सहाबियों को आवाज़ दो कि वे न भागें, पस आपने यह कहकर कि ऐ बबूल के दरख़्त के नीचे बैअ़त करने वालो! ऐ सूरः ब-क़रह के हामिलो! पस यह आवाज़ उनके कानों में पहुँचनी थी कि उन्होंने हर तरफ़ से लब्बैक लब्बैक कहना शुरू कर दिया और आवाज़ की तरफ़ लपक पड़े और उस वक़्त लौटकर आपके पास आकर खड़े हो गये, यहाँ तक कि अगर किसी का ऊँट नहीं रहा तो उसने अपनी ज़िरा पहन ली, ऊँट पर से कूद गया और पैदल हुज़ूरे पाक के पास हाज़िर हो गया।

जब कुछ जमाअ़त आपके इर्द-गिर्द जमा हो गई। आपने ख़ुदा से दुआ़ माँगनी शुरू की कि इलाही! जो वादा तेरा मेरे साथ है उसे पूरा फ़रमा। फिर आपने ज़मीन से मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली और उसे काफ़िरों की तरफ़ फेंका, जिससे उनकी आँखें और उनके मुँह भर गये। वे लड़ाई के क़ाबिल न रहे। इधर मुसलमानों ने उन पर धावा बोल दिया, उनके क़दम उखड़ गये, भाग निकले। मुसलमानों ने उनका पीछा किया और मुसलमानों की बाक़ी फ़ौज हुज़ूर सल्ल. के पास पहुँची। इतनी देर में उन्होंने उन कुफ़्फ़ार को क़ैद करके आपके सामने ढेर कर दिया।

Maktab E Ashraf

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबू अ़ब्दुर्रहमान फ़ेहरी जिनका नाम यज़ीद बिन उसैद या यज़ीद बिन उनैस है, और कुरज़ भी कहा गया है, फ़रमाते हैं कि मैं उस लड़ाई में रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ था। उस दिन बड़ी गर्मी पड़ रही थी। दोपहर को हम दरख़्तों के साये में ठहर गये, सूरज ढलने के बाद मैंने अपने हथियार लगाये और अपने घोड़े पर सवार होकर रसूलुल्लाह सल्ल. के ख़ेमे में पहुँचा, सलाम के बाद मैंने कहा हुज़ूर! हवायें ठंडी हो गई हैं। आपने फ़रमाया हाँ ठीक है। बिलाल! उस वक़्त बिलाल रज़ि. एक दरख़्त के साये में थे, हुज़ूर सल्ल. की आवाज़ सुनते ही परिन्दे की तरह गोया उड़कर 'लब्बैक व सअ़दैक व अ-न फ़िदाउ-क' (यानी मैं आप पर क़ुरबान, मैं हाज़िर हूँ) कहते हुए हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया मेरी सवारी कसो। उसी वक़्त उन्होंने ज़ीन निकाली, जिसके दोनों पल्ले खजूर की रस्सी के थे, जिसमें कोई फ़ख़्र व गुरूर की चीज़ न थी, जब कस चुके तो हुज़ूर सल्ल. सवार हुए। हमने सफ़-बन्दी कर ली। शाम और रात इसी तरह गुज़री, फिर दोनों लश्करों की मुठभेड़ हो गई तो मुसलमान भाग खड़े हुए जैसा कि क़ुरआन ने ज़िक्र फ़रमाया है। हुज़ूर सल्ल. ने आवाज़ दी कि ऐ अल्लाह के बन्दो! मैं ख़ुदा का बन्दा और रसूल हूँ। ऐ मुहाजिरो मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। फिर अपने घोड़े से उतर पड़े, मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली और यह फ़रमाकर कि उनके चेहरे बिगड़ जायें, काफ़िरों की तरफ़ फेंक दी। उसी से अल्लाह ने उन्हें शिकस्त दे दी। उन मुश्रिकों का बयान है कि हम में से एक भी ऐसा न था जिसकी आँखों और मुँह में यह मिट्टी न आई हो। उसी वक़्त हमें ऐसा महसूस हुआ कि गोया ज़मीन व आसमान के दरमियान लोहा किसी लोहे की चादर पर बज रहा है।

एक रिवायत में है कि भागे हुए मुसलमान जब एक सौ आपके पास वापस पहुँच गये, आपने उसी वक़्त हमले का हुक्म दे दिया। पहली बार की आवाज़ तो अन्सार की थी फिर ख़ज़्रज ही पर रह गई, यह क़बीला लड़ाई के वक़्त बड़ा ही साबिर (जम कर लड़ने वाला और बहादुर) था। आपने अपनी सवारी पर से मैदाने जंग का नज़ारा देखा और फ़रमाया अब लड़ाई गर्मा-गर्मी से हो रही है। उसमें है कि अल्लाह ने जिस काफ़िर को चाहा क़त्ल करा दिया, जिसे चाहा क़ैद करा दिया, और उनके माल और औलाद अपने नबी को फ़ै में दिला दिये। हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ि. से किसी ने कहा कि ऐ अबू उमारा! क्या तुम लोग रसूलुल्लाह सल्ल. के पास से हुनैन वाले दिन भाग निकले थे? आपने फ़रमाया लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल. का क़दम पीछे न हटा था, बात यह है कि क़बीला-ए-हवाज़न के लोग तीर-अन्दाज़ी के फ़न के उस्ताद थे, ख़ुदा के फ़ज़्ल से हमने उन्हें पहले ही हमले में शिकस्त दे दी, लेकिन जब लोग माले ग़नीमत पर टूट पड़े तो उन्होंने मौक़ा देखकर फिर जो तीर बरसाये तो यहाँ भगदड़ मच गई। सुब्हानल्लाह! रसूलुल्लाह सल्ल. की कामिल बहादुरी और पूरी दिलेरी का यह मौक़ा था। लश्कर भाग निकला है, उस वक़्त आप किसी तेज़ सवारी पर नहीं जो भागने दौड़ने में काम आये, बल्कि ख़च्चर पर सवार हैं और मुश्रिकों की तरफ़ बढ़ रहे हैं और ख़ुद को छुपाने और आ़म लोगों की नज़र से बचाने की भी कोशिश नहीं फ़रमाते, बल्कि अपना नाम अपनी ज़बान से पुकार-पुकारकर बतला रहे हैं कि न पहचानने वाले भी पहचान लें। ख़्याल फ़रमाईये कि अल्लाह की ज़ाते पाक पर किस क़द्र आपका तवक्कुल और भरोसा है, और कितना कामिल यक़ीन आपको अल्लाह की मदद पर है। जानते हैं कि अल्लाह तआ़ला रिसालत के मामले को पूरा करके ही रहेगा, और आपके दीन को दुनिया के और दीनों पर ग़ालिब करके ही रहेगा। आप पर बेशुमार दुरूद व सलाम हों।

अब अल्लाह तआ़ला अपने नबी सल्ल. और मुसलमानों के ऊपर सुकून व इत्मीनान नाज़िल फ़रमाता है और अपने फ़रिश्तों का लश्कर भेजता है, जिन्हें कोई न देखता था। एक मुश्रिक का बयान है कि हुनैन

Maktab E Ashraf

वाले दिन जब हम मुसलमानों से लड़ने लगे, एक बकरी का दूध निकाला जाये इतनी देर भी हमने उन्हें अपने सामने जमने नहीं दिया, फ़ौरन भाग खड़े हुए और हमने उनका पीछा शुरू किया, यहाँ तक कि हमें एक साहिब सफ़ेद ख़च्चर पर सवार नज़र पड़े। हमने देखा कि ख़ूबसूरत नूरानी सफ़ेद चेहरे वाले, कुछ लोग उनके ईद-गिर्द (आस-पास) हैं, उनकी ज़बान से निकला कि तुम्हारे चेहरे बिगड़ जायें वापस लौट जाओ। पस यह कहना था कि हमें शिकस्त हो गई, यहाँ तक कि मुसलमान हमारे काँधों पर सवार हो गये।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं भी उस लश्कर में था। आपके साथ सिर्फ़ अस्सी मुहाजिर व अन्सार रह गये थे। हमने पीठ नहीं दिखाई थी, हम पर अल्लाह ने इत्मीनान व सुकून नाज़िल फ़रमा दिया था। हुज़ूर सल्ल. अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार दुश्मनों की तरफ़ बढ़ रहे थे, जानवर ने ठोकर खाई, आप ज़मीन पर से नीचे की तरफ़ झुक गये। मैंने आवाज़ दी कि हुज़ूर! ऊँचे हो जायें, अल्लाह आपको ऊँचा और बुलन्द ही रखे। आपने फ़रमाया एक मुट्ठी मिट्टी की तो भर दो, मैंने भर दी, आपने काफ़िरों की तरफ़ फेंकी जिसने उनकी आँखें भर दीं। फिर फ़रमाया मुहाजिर व अन्सार कहाँ हैं? मैंने कहा यहीं हैं। फ़रमाया उन्हें आवाज़ दो। मेरा आवाज़ देना था कि वे तलवारें सूँते हुए लपक-लपक कर आ गये। अब तो मुश्रिकों की कुछ न चली और वे भाग खड़े हुए।

बैहक़ी की एक रिवायत में है, शैबा बिन उस्मान कहते हैं कि हुनैन के दिन जबकि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल. को इस हालत में देखा कि लश्कर शिकस्त खाकर भाग खड़ा हुआ है, और आप अकेले रह गये हैं तो बदर वाले दिन अपने बाप और चचा का मारा जाना याद आ गया, कि वह अ़ली और हमज़ा के हाथों मारे गये थे। मैंने अपने जी में कहा कि उनका बदला लेने का इससे अच्छा मौक़ा और कौनसा मिलेगा, आओ पैग़म्बर को क़त्ल करें। इस इरादे से मैं आपकी दायीं तरफ़ से बढ़ा, लेकिन वहाँ मैंने अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब को पाया, सफ़ेद चाँदी जैसी ज़िरा पहने मुस्तैद खड़े हैं। मैंने सोचा कि चचा हैं, अपने भतीजे की पूरी हिमायत करेंगे, चलो बायीं तरफ़ से जाकर अपना काम करूँ। उधर से आया तो देखा कि अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल-मुत्तलिब खड़े हैं। मैंने कहा इनके भी चचा के लड़के, भाई हैं, अपने भाई की ज़रूर हिमायत करेंगे।

फिर मैं नज़रों से बचकर पीछे की तरफ़ आया और आपके बिल्कुल क़रीब पहुँच गया। अब यही बाक़ी रह गया था कि तलवार सूँतकर वार कर दूँ कि मैंने देखा- एक आग का कोड़ा बिजली की तरह चमक कर मुझ पर पड़ना चाहता है, मैंने आँखें बन्द कर लीं और पिछले पाँव पीछे की तरफ़ हटा। उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल. ने मेरी तरफ़ तवज्जोह की और फ़रमाया- शैबा मेरे पास आ। ख़ुदाया इसके शैतान को दूर कर दे। अब मैंने आँख खोलकर जो रसूलुल्लाह सल्ल. की तरफ़ देखा तो वल्लाह आप मुझे मेरे कानों और आँखों से भी ज़्यादा महबूब थे। आपने फ़रमाया शैबा जा काफ़िरों से लड़।

शैबा का बयान है कि उस जंग में नबी करीम सल्ल. के साथियों में मैं भी था, लेकिन मैं इस्लाम की वजह से या इस्लाम की मारिफ़त (नूर और पहचान) की बिना पर नहीं निकला था, बल्कि मैंने कहा वाह यह कैसे हो सकता है कि हवाज़न क़बीले वाले क़ुरैश पर ग़ालिब आ जायें? मैं आपके पास ही खड़ा हुआ था जो मैंने चितकबरे अब्लक़ रंग के घोड़े देखकर कहा कि या रसूलल्लाह! मैं तो चितकबरे रंग के घोड़े देख रहा हूँ। आपने फ़रमाया शैबा! वह तो सिवाय काफ़िरों के किसी को नज़र नहीं आते, फिर आपने मेरे सीने पर हाथ मारकर दुआ की कि ख़ुदाया! शैबा को हिदायत कर। फिर दोबारा तिबारा यही किया और यही कहा, अल्लाह की क़सम आपका हाथ हटने से पहले ही सारी दुनिया से ज़्यादा मुहब्बत आपकी मैं अपने दिल में

पाने लगा।

हज़रत जुबैर बिन मुतअ़िम रज़ि. फ़रमाते हैं- मैं उस ग़ज़्वे (लड़ाई) में आपके साथ था। मैंने देखा कि कोई चीज़ आसमान से उतर रही है, चींवटियों की तरह उसने मैदान घेर लिया, और उसी वक़्त मुश्रिकों के क़दम उखड़ गये। अल्लाह की क़सम हमें कोई शक नहीं कि वह आसमानी मदद थी। यज़ीद बिन आ़मिर सवाई अपने कुफ़्र के ज़माने में जंगे हुनैन में काफ़िरों के साथ थे, बाद में यह मुसलमान हो गये थे। इनसे जब दरियाफ़्त किया जाता कि उस मौक़े पर तुम्हारे दिलों का रौब व ख़ौफ़ से क्या हाल था? तो वह तश्त में कंकरियाँ बजाकर कहते बस यही आवाज़ हमें हमारे दिल से आ रही थी। कलेजा बुरी तरह उछल रहा था और दिल दहल रहा था। सही मुस्लिम में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि मुझे रौब से मदद दी गई है, मुझे जामे कलिमात दिये गये हैं। ग़र्ज़ यह कि कुफ़्फ़ार को ख़ुदा ने यह सज़ा दी और यह उनके कुफ़्र का बदला था। बाक़ी हवाज़न पर ख़ुदा ने मेहरबानी की, उन्हें तौबा नसीब हुई, मुसलमान होकर रसूले पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त आप विजयी होकर लौटते हुए मक्का शरीफ़ के क़रीब जोअ़राना के पास पहुँच चुके थे। जंग को बीस दिन के क़रीब गुज़र चुके थे, इसी लिये आपने फ़रमाया कि अब तुम दो चीज़ों में से एक पसन्द कर लो, या तो क़ैदी या माल? उन्होंने क़ैदियों का वापस लेना पसन्द किया, उन क़ैदियों की छोटे बड़ों की, मर्द औ़रत की, बालिग़ व नाबालिग़ की तादाद छह हज़ार की थी। आपने यह सब उन्हीं को लौटा दिये, उनका माल ग़नीमत के तौर पर मुसलमानों में तक़सीम हुआ और नौमुस्लिम जो मक्का के आज़ाद किये हुए थे उन्हें भी आपने उस माल में से दिया, कि उनके दिल इस्लाम की तरफ़ पूरे माईल हो जायें। उनमें से एक-एक को सौ-सौ ऊँट अ़ता फ़रमाये।

मालिक बिन औ़फ़ नसरी को भी आपने सौ ऊँट दिये और उसी को उसकी क़ौम का सरदार बना दिया जैसे कि वह था। इसी की तारीफ़ में उसने अपने मशहूर क़सीदे में कहा कि मैंने तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसा न किसी और को देखा न सुना। देने में और बख़्शिश व अ़ता करने में और ग़लतियों से दरगुज़र करने में दुनिया में आपका सानी नहीं। आप क़ियामत के दिन होने वाली तमाम बातों से बाख़बर फ़रमाते रहते हैं। यही नहीं बल्कि शुजाअ़त और बहादुरी में भी आप बेमिस्ल हैं, मैदाने जंग में गरजते हुए शेर की तरह आप दुश्मनों की तरफ़ बढ़ते हैं।

ऐ ईमान वालो! मुश्रिक लोग (अपने गन्दे और नापाक अ़क़ीदों की वजह से) बिल्कुल नापाक हैं, सो ये लोग इस साल के बाद मस्जिदे-हराम के पास न आने पाएँ, और अगर तुमको तंगदस्ती का अन्देशा हो तो (ख़ुदा पर भरोसा रखो) ख़ुदा तुमको अपने फ़ज़्ल से अगर चाहेगा (उनका) मोहताज न रखेगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (28) अहले किताब जो कि न ख़ुदा पर	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

Maktab E Ashraf

بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ۠ ؏	(पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं और न क़ियामत के दिन पर, और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं जिनको ख़ुदा तआ़ला ने और उसके रसूल ने हराम बतलाया है, और न सच्चे दीन (इस्लाम) को क़बूल करते हैं, उनसे यहाँ तक लड़ो कि वे मातहत होकर और रअ़िय्यत बनकर जिज़्या "यानी इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स" देना मन्ज़ूर करें। (29)

Maktab E Ashraf

एक मनाही

अल्लाह तआ़ला तमाम हाकिमों का हाकिम अपने पाक दीन वाले, पाकीज़गी और तहारत वाले मुसलमान बन्दों को हुक्म फ़रमाता है कि वे दीन की रू से नजिस (नापाक और गन्दे) मुश्रिकों को बैतुल्लाह शरीफ़ के पास न आने दें। यह आयत सन् 9 हिजरी में नाज़िल हुई। उसी साल नबी करीम सल्ल. ने हज़रत अ़ली रज़ि. को हज़रत अबू बक्र रज़ि. के साथ भेजा और हुक्म दिया कि हज में ऐलान कर दो कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज को न आये, और कोई नंगा शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ न करे। इस शरई हुक्म को अल्लाह तआ़ला क़ादिर व क़य्यूम ने यूँ ही पूरा किया कि न वहाँ मुश्रिकों को प्रवेश नसीब हुआ न किसी ने उसके बाद नंगा होकर ख़ुदा के घर का तवाफ़ किया। हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि. ग़ुलाम और ज़िम्मी शख़्स को इस हुक्म से अलग बताते हैं। मुस्नद की हदीस में नबी करीम का फ़रमान है कि हमारी मस्जिद में इस साल के बाद सिवाय मुआ़हिदे वाले और तुम्हारे ग़ुलामों के और कोई काफ़िर न आये, लेकिन इस मरफ़ूअ़ से ज़्यादा सही सनद वाली मौक़ूफ़ रिवायत है। मुसलमानों के ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. ने फ़रमान जारी कर दिया था कि यहूद व ईसाई को मुसलमानों की मस्जिदों में न आने दो। इस मना करने में आपका अ़मल इसी आयत पर था।

हज़रत अ़ता रह. फ़रमाते हैं कि हरम सारा इस हुक्म में मस्जिदे हराम की तरह है। यह आयत मुश्रिकों की नजासत (बातिनी गन्दगी और नापाकी) पर भी दलील है। सही हदीस में है कि मोमिन नजिस (नापाक) नहीं होता, बाक़ी रही यह बात कि मुश्रिकों का बदन और ज़ात भी नजिस है या नहीं? पस जमहूर का क़ौल तो यह है कि नजिस नहीं, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने अहले किताब का ज़बीहा हलाल किया है। बाज़ ज़ाहिरिया (यह एक फ़िर्क़ा है) कहते हैं कि मुश्रिकों के बदन भी नापाक हैं। हसन रह. फ़रमाते हैं कि जो उनसे मुसाफ़ा करे वह हाथ धो डाले। इस हुक्म पर बाज़ ने कहा कि फिर तो हमारी तिजारत गिर जायेगी, हमारे बाज़ार बेरौनक़ हो जायेंगे और बहुत से फ़ायदे जाते रहेंगे? इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला कहता है कि तुम इस बात से न डरो, अल्लाह तुम्हें और बहुत सी सूरतों से दिला देगा। तुम्हें अहले किताब से जिज़्या दिला देगा और तुम्हें ग़नी (मालदार) कर देगा। तुम्हारी मस्लेहतों को तुमसे ज़्यादा तुम्हारा रब जानता है। उसका हुक्म उसकी मनाही किसी न किसी हिक्मत से ही होती है। यह तिजारत इतने फ़ायदे की नहीं जितना फ़ायदा वह तुम्हें जिज़्ये से देगा उन अहले किताब से जो ख़ुदा के और उसके रसूल के और क़ियामत के मुन्किर हैं, जो किसी नबी के सही मायने में पूरे पैरोकार नहीं, बल्कि अपनी ख़्वाहिशों के और

अपने बाप-दादा की तक़लीद के पीछे पड़े हुए हैं। अगर उन्हें अपने नबी पर, अपनी शरीअ़त पर पूरा ईमान होता तो वे हमारे इस नबी पर भी ज़रूर ईमान लाते। इनकी बशारत (ख़ुशख़बरी) तो हर नबी देता रहा, इनकी इत्तिबा (पैरवी और अनुसरण) का हुक्म हर नबी ने दिया, लेकिन बावजूद इसके वे इस तमाम रसूलों से अफ़ज़ल व अशरफ़ रसूल के इनकारी हैं। पस पहले नबियों की शरीअ़तों से भी दर असल इन्हें कोई सरोकार नहीं, इसी वजह से उन नबियों का ज़बानी इक़रार इनके लिये बेफ़ायदा है, क्योंकि ये तमाम अम्बिया के सरदार, ख़ातिमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कुफ़्र करते हैं। इसलिये इनसे भी जिहाद करो।

इनसे जिहाद के हुक्म की यह पहली आयत है, उस वक़्त तक आस-पास के मुश्रिकों से जंग हो चुकी थी, उनमें के अक्सर तौहीद (इस्लाम) के झंडे तले आ चुके थे। अ़रब के इलाक़े में इस्लाम ने जगह कर ली थी, अब यहूद व ईसाईयों की ख़बर लेने और उन्हें हक़ रास्ता दिखाने का हुक्म हुआ। सन् 9 हिजरी में यह हुक्म उतरा और आपने रोमियों से जिहाद की तैयारी की, लोगों को अपने इरादे से मुत्तला किया। मदीने के इर्द-गिर्द (आस-पास) के अ़रब वालों को आमादा किया और तक़रीबन तीस हज़ार का लश्कर लेकर रोम का रुख़ किया, सिवाय मुनाफ़िक़ों के यहाँ कोई न रुका। अगर कुछ रह गये तो वे बहुत ही थोड़े थे।

मौसम सख़्त गर्म था, फलों का वक़्त था, रोम से जिहाद के लिये शाम के मुल्क का दूर-दराज़ का कठिन सफ़र था। तबूक तक तशरीफ़ ले गये, वहाँ तक़रीबन बीस रोज़ क़ियाम किया, फिर इस्तिख़ारा करके हालत की तंगी और लोगों की कमज़ोरी की वजह से वापस लौट आये। जैसा कि अ़न्क़रीब इसका पूरा वाक़िआ इन्शा-अल्लाह तआ़ला बयान होगा।

इसी आयत से दलील पकड़ कर बाज़ ने फ़रमाया कि जिज़्या (ग़ैर-मुस्लिमों से लिया जाने वाला टैक्स) सिर्फ़ अहले किताब से और उन जैसों से ही लिया जाये, जैसे मजूसी हैं। चुनाँचे हिज्र के मजूसियों से नबी करीम सल्ल. ने जिज़्या लिया था। इमाम शाफ़ई रह. का यही मज़हब है और मशहूर मज़हब इमाम अहमद का भी यही है। इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं कि सब अ़जमियों (ग़ैर-अ़रबी लोगों) से लिया जाये, चाहे वे अहले किताब हों चाहे मुश्रिक हों। हाँ अ़रब वालों में से सिर्फ़ अहले किताब से ही लिया जाये। इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि जिज़्ये का लेना तमाम कुफ़्फ़ार से जायज़ है, चाहे वे अहले किताब हों या मजूसी हों या बुत परस्त वग़ैरह हों। इन मज़हबों के दलाईल वग़ैरह की तफ़सील की यह जगह नहीं। वल्लाहु आलम।

पस अल्लाह फ़रमाता है कि जब तक वे ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ अपने हाथों जिज़्या न दें उन्हें न छोड़ो। तो ज़िम्मी लोगों को मुसलमानों पर इज़्ज़त व सम्मान देना और उन्हें तरक़्क़ी व बुलन्दी देना जायज़ नहीं। सही मुस्लिम में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल. फ़रमाते हैं- यहूद व ईसाई से सलाम की इब्तिदा न करो, और जब उनमें से कोई रास्ते में मिल जाये तो उसे तंगी की तरफ़ मजबूर करो। यही वजह थी जो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि. ने उनसे ऐसी ही शर्तें की थीं। अ़ब्दुर्रहमान बिन ग़नम अश्अ़री कहते हैं कि मैंने अपने हाथ से अ़हद-नामा लिखकर हज़रत उमर रज़ि. को दिया था, कि मुल्क शाम वालों के फ़ुलाँ-फ़ुलाँ शहरी लोगों की तरफ़ से यह मुआ़हिदा है अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ से, कि जब आपके लश्कर हम पर आयें हमने आपसे अपनी जान और अहल व अ़याल (घर वालों और बाल बच्चों) के लिये अमन तलब की, हमसे इन शर्तों पर वह अमन हासिल करते हैं कि हम अपने इन शहरों में और इनके पास कोई दीर और कोई गिरजाघर और कोई ख़ानक़ाह नया नहीं बनायेंगे, और न ऐसे ख़राबी वाले मकान की मरम्मत करेंगे और जो

Maktab E Ashraf

मिट चुके हैं उन्हें दुरुस्त नहीं करेंगे। उनमें अगर कोई मुसाफ़िर मुसलमान उतरना चाहे तो रोकेंगे नहीं चाहे दिन हो चाहे रात हो। हम उनके दरवाज़े और रास्ते मुसाफ़िरों के लिये खुले रखेंगे, और जो मुसलमान आये हम उसकी तीन दिन तक मेहमान-नवाज़ी करेंगे। हम अपने मकानों या रिहाईशी मकानों वग़ैरह में कहीं किसी जासूस को न छुपायेंगे, मुसलमानों से कोई धोखा फ़रेब नहीं करेंगे, अपनी औलाद को क़ुरआन न सिखायेंगे, शिर्क का इज़हार न करेंगे, न किसी को शिर्क की तरफ़ बुलायेंगे। हम में से कोई अगर इस्लाम क़ुबूल करना चाहे तो हम उसे हरगिज़ न रोकेंगे, मुसलमानों की इज़्ज़त व सम्मान करेंगे। हमारी जगह अगर वे बैठना चाहें तो हम उठकर उन्हें जगह देंगे। हम मुसलमानों से किसी चीज़ में बराबरी नहीं करेंगे, न लिबास में न जूते में न माँग निकालने में। हम उनकी ज़बान (भाषा) न बोलेंगे, उनकी कुन्नियतें न रखेंगे, ज़ीन वाले घोड़े पर सवारियाँ न करेंगे, न तलवारें लटकायेंगे, न अपने साथ रखेंगे, अंगूठियों पर अ़रबी नक़्श नहीं करवायेंगे, शराब नहीं बेचेंगे, अपने सरों के अगले बालों को कटवा देंगे और जहाँ कहीं होंगे ज़ुन्नार ज़रूरत के तौर पर डाले रहेंगे। सलीब का निशान अपने गिरजों पर ज़ाहिर नहीं करेंगे, अपनी मज़हबी किताबें मुसलमानों की गुज़रगाहों और बाज़ारों में ज़ाहिर नहीं करेंगे। गिरजों में नाक़ूस बुलन्द आवाज़ से नहीं बजायेंगे, न मुसलमानों की मौजूदगी में बुलन्द आवाज़ से अपनी मज़हबी किताबें पढ़ेंगे, न अपने मज़हबी शिआ़र (पहचान और निशान) को रास्तों पर करेंगे। न अपने मुर्दों पर ऊँची आवाज़ से हाय-वाय करेंगे, न उनके साथ मुसलमानों के रास्तों में आग लेकर जायेंगे, मुसलमानों के हिस्से में आये हुए गुलाम हम न लेंगे, मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही (भला चाहना) ज़रूर करते रहेंगे, उनके घरों में नहीं झाँकेंगे।

जब यह अ़हद-नामा हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. की ख़िदमत में पेश हुआ तो आपने एक शर्त और भी इसमें बढ़वाई कि हम किसी मुसलमान को हरगिज़ मारेंगे नहीं। ये तमाम शर्तें हमें क़ुबूल व मन्ज़ूर हैं और हमारे सब हम-मज़हब लोगों को भी इन्हीं शर्तों पर अमन मिला है, अगर इनमें से किसी एक शर्त की भी हम ख़िलाफ़वर्ज़ी (उल्लंघन) करें तो हमसे आपकी ज़िम्मेदारी अलग हो जायेगी, और जो कुछ आप अपने दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों के साथ करते हैं उन तमाम के हम मुस्तहिक़ हो जायेंगे।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ نِ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِئُوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ○ اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○

और यहूद (में से बाज़) ने कहा कि उज़ैर ख़ुदा के बेटे हैं, और ईसाइयों (में से अक्सर) ने कहा कि मसीह ख़ुदा के बेटे हैं, यह उनका क़ौल है, उनके मुँह से कहने का, यह भी उन लोगों जैसी बातें करने लगे जो इनसे पहले काफ़िर हो चुके हैं, ख़ुदा इनको ग़ारत करे, ये किधर उल्टे जा रहे हैं। (30) उन्होंने ख़ुदा को छोड़कर अपने आ़लिमों और बुज़ुर्ग हस्तियों को (इताअ़त के एतिबार से) रब बना रखा है, और मसीह इब्ने मरियम को भी, हालाँकि उनको सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया है कि फ़क़त एक (बरहक़) माबूद की इबादत करें जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह उनके शिर्क से पाक है। (31)

Maktab E Ashraf

यहूद व ईसाईयों के ज़ेहनी धोखे

इन आयतों में भी अल्लाह तआ़ला मोमिनों को मुश्रिकों, काफ़िरों, यहूदियों और ईसाईयों से जिहाद करने की रग़बत दिलाता है। फ़रमाता है देखो वे ख़ुदा की शान में गुस्ताख़ियाँ करते हैं। यहूदी लोग हज़रत उज़ैर को ख़ुदा का बेटा बतलाते हैं, अल्लाह इससे पाक और बरतर व बुलन्द है कि उसकी औलाद हो।

उन लोगों को हज़रत उज़ैर के बारे में जो यह वहम हुआ इसका क़िस्सा यह है कि जब अ़मालिक़ा बनी इस्राईल पर ग़ालिब आ गये, उनके उलेमा को क़त्ल कर दिया, उनके सरदारों को क़ैद कर लिया। हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम इल्म के उठ जाने, उलेमा के क़त्ल हो जाने और बनी इस्राईल की तबाही से सख़्त रंजीदा हुए। अब जो रोना शुरू किया तो आँखों से आँसू ही न थमते थे। रोते-रोते पलकें भी झड़ गईं। एक दिन इसी तरह रोते हुए एक मैदान से गुज़र हुआ, देखा कि एक औ़रत एक क़ब्र के पास बैठी रो रही है, और कह रही है- हाय अब मेरे खाने का क्या होगा? मेरे कपड़ों का क्या होगा? आप उसके पास ठहर गये और उससे फ़रमाया इस शख़्स से पहले तुझे कौन खिलाता था और कौन पहनाता था? उसने कहा अल्लाह तआ़ला। आपने फ़रमाया फिर अल्लाह तआ़ला तो अब भी ज़िन्दा बाक़ी है, उस पर तो कभी मौत आयेगी ही नहीं। यह सुनकर उस औ़रत ने कहा ऐ उज़ैर! फिर तुम यह तो बतलाओ कि बनी इस्राईल से पहले उलेमा को कौन इल्म सिखाता था? आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला। उसने कहा आप यह रोना-धोना लेकर क्यों बैठे हैं? आपकी समझ में आ गया कि यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आपको तंबीह है।

फिर आपसे फ़रमाया फ़ुलाँ नहर पर जाकर ग़ुस्ल करो, वहीं दो रक्अ़त नमाज़ अदा करो, वहाँ तुम्हें एक शख़्स मिलेंगे वह जो खिलायें वह खा लो। चुनाँचे आप वहीं तशरीफ़ ले गये, नहाकर नमाज़ पढ़ी, देखा कि एक शख़्स हैं, कह रहे हैं कि मुँह खोलो, आपने मुँह खोल दिया तो उन्होंने तीन बार कोई चीज़ आपके मुँह में बड़ी सी डाली, उसी वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपका सीना खोल दिया, आप तौरात के सबसे बड़े आ़लिम बन गये। बनी इस्राईल में गये, उनसे फ़रमाया कि मैं तुम्हारे पास तौरात लाया हूँ। उन्होंने कहा आप हम सबके नज़दीक सच्चे हैं, आपने अपनी उंगली के साथ क़लम को लपेट दिया और उसी उंगली से एक ही वक़्त में पूरी तौरात लिख डाली।

उधर लोग लड़ाई से लौटे, उनमें उनके उलेमा भी वापस आये तो उन्हें उज़ैर अ़लैहिस्सलाम की इस बात का इल्म हुआ, ये गये और पहाड़ों और ग़ारों में तौरात शरीफ़ के जो नुस्ख़े छुपा आये थे वो निकाल लाये, और उन नुस्ख़ों (प्रतियों) से हज़रत उज़ैर के लिखे हुए नुस्ख़े का मुक़ाबला (तुलना) किया तो बिल्कुल सही पाया। इस पर बाज़ जाहिलों के दिल में शैतान ने यह वस्वसा डाल दिया कि आप अल्लाह के बेटे हैं। ईसाई लोग हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते थे, उनका वाक़िआ़ तो ज़ाहिर है। पस इन दोनों गिरोहों की ग़लत-बयानी क़ुरआन बतला रहा है और फ़रमाता है कि ये इनकी सिर्फ़ ज़बानी बातें हैं जो महज़ बेदलील हैं। जिस तरह इनसे पहले के लोग कुफ़्र व गुमराही में थे, ये भी उनही के मुरीद व पैरोकार हैं। अल्लाह उन पर लानत करे, हक़ से कैसे भटक गये।

मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने जरीर में है कि जब अ़दी बिन हातिम को रसूलुल्लाह सल्ल. का दीन पहुँचा तो मुल्क शाम की तरफ़ भाग गये, जाहिलीय में ही यह ईसाई बन गये थे, यहाँ उनकी बहन और उनकी जमाअ़त क़ैद हो गयी, फिर हुज़ूरे पाक ने बतौर एहसान उनकी बहन को आज़ाद कर दिया और रक़म भी दी, यह सीधी अपने भाई के पास गईं और उन्हें इस्लाम की रग़बत दिलाई और समझाया कि तुम

रसूले करीम सल्ल. के पास चले जाओ। चुनाँचे यह मदीना शरीफ़ आ गये। अपनी क़ौम 'तय' के सरदार थे। इनके बाप की सख़ावत (दान करना) दुनिया भर में मशहूर थी। लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल. को ख़बर पहुँचाई, आप ख़ुद इनके पास आये, उस वक़्त अ़दी की गर्दन में चाँदी की सलीब लटक रही थी, हुज़ूर सल्ल. की ज़बान मुबारक से इसी आयत (जिसकी यह तफ़सीर चल रही है) की तिलावत हो रही थी, तो इन्होंने कहा- यहूद व ईसाईयों ने अपने उलेमा और दुर्वेशों की इबादत नहीं की, आपने फ़रमाया हाँ! सुनो उनके किये हुए हराम को हराम समझने लगे, और जिसे उनके उलेमा व दुर्वेश हलाल बता दें उसे हलाल समझने लगे, यही उनकी इबादत थी। फिर आपने फ़रमाया अ़दी क्या तुम इसका इनकार करते हो कि अल्लाह सबसे बड़ा है? क्या तुम्हारे ख़्याल में ख़ुदा से बड़ा और कोई है? क्या तुम इससे इनकार करते हो कि माबूदे बरहक़ अल्लाह के सिवा कोई नहीं? क्या तुम्हारे नज़दीक उसके सिवा और कोई भी इबादत के लायक़ है? फिर आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी, उन्होंने मान ली और ख़ुदा की तौहीद (एक होने) और हुज़ूर सल्ल. की रिसालत (अल्लाह का रसूल होने) की गवाही अदा की। आपका चेहरा ख़ुशी से चमकने लगा और फ़रमाया- यहूद पर ख़ुदा का ग़ज़ब उतरा है, और ईसाई गुमराह हो गये हैं।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास वग़ैरह से भी इस आयत की तफ़सीर इसी तरह मन्क़ूल है, कि इससे मुराद हलाल व हराम के मसाईल में उलेमा और इमामों की महज़ बातों की तक़लीद है। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि उन्होंने बुज़ुर्गों की माननी शुरू कर दी और ख़ुदा की किताब को एक तरफ़ हटा दिया। इसी लिये अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि उन्हें हुक्म तो सिर्फ़ यह था कि अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत न करें, वही जिसे हराम कर दे हराम है, और वह जिसे हलाल फ़रमा दे हलाल है, उसी के फ़रमान शरीअ़त हैं, उसी के अहकाम अ़मल करने के लायक़ हैं, उसी की ज़ात इबादत की हक़दार है, वह शिर्क से और शरीक से पाक है। उस जैसा, उसका शरीक, उसका नज़ीर, उसका मददगार, उसका मुक़ाबिल कोई नहीं। वह औलाद से पाक है, न उसके सिवा कोई माबूद न परवर्दिगार।

वे लोग (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुँह से बुझा दें, हालाँकि अल्लाह तआ़ला अपने नूर को कमाल तक पहुँचाये बग़ैर नहीं मानेगा, चाहे काफ़िर लोग कैसे ही नाख़ुश हों। (32) (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी क़ुरआन) और सच्चा दीन देकर भेजा है, ताकि उसको (बक़िया) तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, चाहे मुश्रिक कैसे ही नाख़ुश हों। (33)	يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ○ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ○

النصف

अल्लाह के नूर का बोल-बाला

फ़रमाता है कि हर क़िस्म के कुफ़्फ़ार का इरादा और ख़्वाहिश यही है कि ख़ुदा के नूर को बुझा दें, अल्लाह की तरफ़ से आई हिदायत और दीने हक़ को मिटा दें। तो ख़्याल कर लो कि अगर कोई शख़्स

अपने मुहँ की फूँक से सूरज व चाँद की रोशनी बुझाना चाहे तो क्या यह हो सकता है? इसी तरह ये लोग भी नूरे ख़ुदा के बुझाने की ख़्वाहिश में अपनी संभावित कोशिश कर लें, आख़िर आ़जिज़ होकर रह जायेंगे। ज़रूरी बात है और ख़ुदा का फ़ैसला है कि दीने हक़ और तालीमे रसूलुल्लाह सल्ल. का बोल-बाला हो। तुम मिटाना चाहते हो, अल्लाह तआ़ला बुलन्द करना चाहता है। ज़ाहिर है कि ख़ुदा की तक़दीर (तय की हुई बात) तुम्हारी ख़्वाहिशों पर ग़ालिब रहेगी, तुम अगरचे नाख़ुश रहो लेकिन हिदायत का सूरज आसमान के बीच में पहुँचकर ही रहेगा (यानी इस्लाम तरक़्क़ी पायेगा)। अ़रबी लुग़त में **काफ़िर** कहते हैं किसी चीज़ के छुपा लेने वाले को। इसी एतिबार से रात को भी काफ़िर कहते हैं, इसलिये कि वह भी तमाम चीज़ों को छुपा लेती है। किसान को भी काफ़िर कहते हैं क्योंकि वह दाने ज़मीन में छुपा देता है। जैसा कि फ़रमान है:

يُعْجِبُ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ.

यानी किसानों को उनकी खेतियाँ अच्छी लगती हैं।

उसी ख़ुदा ने अपने रसूल सल्ल. को हिदायत और दीने हक़ के साथ अपना पैग़म्बर बनाकर भेजा है। पस हुज़ूर सल्ल. की सच्ची ख़बरें, सही ईमान और नफ़ा देने वाला इल्म यह हिदायत है, और उम्दा आमाल जो दुनिया व आख़िरत में नफ़ा देंगे। यह दीन हक़ है, यह दुनिया भर के तमाम धर्मों पर छा कर रहेगा।

नबी करीम रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं- मेरे लिये ज़मीन के पूरब व पश्चिम लपेट दिये गये। मेरी उम्मत का मुल्क इन तमाम जगहों तक पहुँचेगा। फ़रमाते हैं कि तुम्हारे हाथों पर पूरब व पश्चिम फ़तह होगा, तुम्हारे सरदार जहन्नमी हैं सिवाय उनके जो मुत्तक़ी परहेज़गार और अमानत दार हों।

फ़रमाते हैं यह दीन उन तमाम जगहों पर पहुँचेगा जहाँ पर दिन रात पहुँचेंगे। कोई कच्चा पक्का घर ऐसा बाक़ी न रहेगा जहाँ अल्लाह तआ़ला इस्लाम को न पहुँचाये। अ़ज़ीज़ों (प्यारों और इज़्ज़तदारों) को अ़ज़ीज़ करेगा और ज़लीलों को ज़लील करेगा। इस्लाम को इ़ज़्ज़त देने वालों को इज़्ज़त मिलेगी और कुफ़्र को ज़िल्लत मिलेगी।

हज़रत तमीम दारी रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने तो यह बात ख़ुद अपने घर में भी देख ली, जो मुसलमान हुआ उसे ख़ैर व बरकत, इज़्ज़त व शराफ़त मिली, और जो काफ़िर रहा उसे ज़िल्लत व रुस्वाई, नफ़रत व लानत नसीब हुई, उसने पस्ती और अपमान देखा और ज़िल्लत के साथ जिज़या देना पड़ा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि रू-ए-ज़मीन पर (पूरी दुनिया में) कोई कच्चा पक्का घर ऐसा बाक़ी न रहेगा जिसमें अल्लाह तबारक व तआ़ला इस्लाम का कलिमा (दावत और पैग़ाम) को दाख़िल न कर दे। वह इज़्ज़त वालों को इज़्ज़त देगा और ज़लीलों को ज़लील करेगा। जिन्हें इज़्ज़त देनी चाहेगा उन्हें इस्लाम नसीब करेगा और जिन्हें ज़लील करना होगा वे इसे मानेंगे नहीं, लेकिन इसकी मातहती में उन्हें आना पड़ेगा।

हज़रत अ़दी रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरे पास रसूले करीम सल्ल. तशरीफ़ लाये। मुझसे फ़रमाया- इस्लाम क़बूल कर ताकि सलामती मिले। मैंने कहा मैं तो एक दीन को मानता हूँ। आपने फ़रमाया तेरे दीन का तुझसे ज़्यादा इल्म मुझे है। मैंने कहा आपने सच फ़रमाया, बिल्कुल सच। क्या तू रकूसिया में से नहीं है? क्या तू अपनी क़ौम से टैक्स वसूल नहीं करता? मैंने कहा यह तो सच है। आपने फ़रमाया तेरे दीन में यह तेरे लिये हलाल नहीं। यह सुनते ही मैं तो झुक गया। आपने फ़रमाया मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुझे इस्लाम से कौनसी चीज़ रोकती है। सुन सिर्फ़ इसी एक बात से तू रुकता है कि मुसलमान बिल्कुल ज़ईफ़ और कमज़ोर और पिछड़े हुए हैं। तमाम अ़रब इन्हें घेरे हुए हैं। ये पनप नहीं सकते। लेकिन सुन! हेरा का तुझे कुछ इल्म

Maktabah Ashraf

है? मैंने कहा देखा तो नहीं लेकिन सुना ज़रूर है। आपने फ़रमाया उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अल्लाह तआ़ला इस दीन के मामले को पूरा फ़रमायेगा, यहाँ तक कि एक साँडनी-सवार हेरा से चलकर बग़ैर किसी ख़तरे के मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँचेगा और बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करेगा। अल्लाह की क़सम तुम किसरा (ईरान के बादशाह) के ख़ज़ाने फ़तह करोगे। मैंने कहा किसरा बिन हरमुज़ के? आपने फ़रमाया हाँ किसरा बिन हरमुज़ के। तुम में माल की इस क़द्र कसरत (अधिकता) होगी कि कोई लेने वाला न मिलेगा।

इस हदीस को बयान करते वक़्त हज़रत अ़दी रज़ि. ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्ल. का फ़रमान पूरा हुआ। देखो आज हेरा से सवारियाँ चलती हैं, बेख़ौफ़ व बेख़तर बैतुल्लाह पहुँचकर तवाफ़ करती हैं। अल्लाह के सच्चे नबी की दूसरी भविष्यवाणी भी पूरी हुई, किसरा के ख़ज़ाने फ़तह हुए। मैं ख़ुद उस फ़ौज में था जिसने ईरान की ईंट से ईंट बजा दी और किसरा के छुपे हुए ख़ज़ाने अपने क़ब्ज़े में किये। अल्लाह की क़सम मुझे यक़ीन है कि अल्लाह के नबी सल्ल. की तीसरी पेशीनगोई भी निश्चित तौर पर पूरी होकर रहेगी। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि दिन रात का दौर ख़त्म न होगा जब तक कि फिर 'लात' व 'उज़्ज़ा' (मक्के के मशहूर बुतों) की इबादत न होने लगे। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया या रसूलल्लाह! आयत 'हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू....." (जिसकी यह तफ़सीर चल रही है) के नाज़िल होने के बाद से मेरा ख़्याल तो आज तक यही रहा कि यह पूरी बात है। आपने फ़रमाया हाँ पूरी हो गई और मुकम्मल ही रहेगी जब तक ख़ुदा पाक को मन्ज़ूर हो, फिर अल्लाह तआ़ला एक पाक हवा भेजेगा जो हर उस शख़्स को भी मौत तक पहुँचा देगी जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो, फिर वही लोग बाक़ी रह जायेंगे जिनमें कोई ख़ैर और भलाई न होगी। पस वे अपने बाप-दादों के दीन की तरफ़ फिर से लौट जायेंगे (यानी दुनिया में ख़ालिस बुतपरस्ती रह जायेगी)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍۙ ۝ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝	ऐ ईमान वालो! अक्सर अह्बार और रोहबान लोगों के माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं, और अल्लाह की राह से रोकते हैं, और (हद दर्जा हिर्स से) जो लोग सोना-चाँदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो आप उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। (34) जो कि उस दिन ज़ाहिर होगी कि उनको (पहले) दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा, फिर उनसे उनकी पेशानियों "यानी माथों" और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग़ दिया जायेगा। यह है वह जिसको तुमने अपने वास्ते जमा करके रखा, सो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो। (35)

Maktab-E-Ashraf

ग़लत तरीक़े से लोगों के माल को उड़ाना जुर्म है

यहूदियों के उलेमा को 'अहबार' और ईसाईयों के आ़बिदों को 'रोहबान' कहते हैं। आयतः

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ.... الخ

में यहूद के उलेमा को अहबार कहा गया है, ईसाईयों के आ़बिदों को रब्बानी और उनके उलेमा को क़िस्सीस। इस आयत में कहा गया है:

ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا...

आयत का मक़सद लोगों को बुरे उलेमा, गुमराह सूफ़ियों और आ़बिदों से होशियार करना और डराना है। हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना फ़रमाते हैं कि हमारे उलेमा में से वही बिगड़ते हैं जिनमें कुछ न कुछ यहूदियत का असर होता है, और सूफ़ियों और आ़बिदों में से वही बिगड़ते हैं जिनमें ईसाईयत का असर होता है। सही हदीस शरीफ़ में है कि तुम यक़ीनन पहलों के तरीक़े पर चलेगो, ऐसी पूरी मुशाबहत कि ज़रा भी फ़र्क़ न रहेगा। लोगों ने पूछा क्या यहूद व ईसाईयों की रविश पर? आपने फ़रमाया हाँ उन्हीं की। एक और रिवायत में है कि लोगों ने पूछा क्या फ़ारसियों (ईरानियों) और रोमियों की रविश (तरीक़े और चलन) पर? आपने फ़रमाया और कौन लोग हैं। पस उनके अक़वाल व अफ़आ़ल (यानी बातों और आमाल) की मुशाबहत से बचना चाहिये। यह इसलिये कि ये पद, हुकूमत और सरदारी हासिल करना और फिर उस पद और अपने असर व रुसूख़ से लोगों के माल मारना चाहते हैं। यहूद के अहबार (उलेमा) को ज़माना-ए-जाहिलीयत में बड़ा ही रुसूख़ हासिल था, उनके तोहफ़े, हदिये और वज़ीफ़े वग़ैरह मुक़र्रर थे जो बिना माँगें उन्हें पहुँच जाते थे।

रसूलुल्लाह सल्ल. की नुबुव्वत के बाद इसी लालच ने उन्हें इस्लाम के क़बूल करने से रोका, लेकिन हक़ के मुक़ाबले की वजह से इस तरफ़ से भी कोरे रहे, और आख़िरत से भी गये गुज़रे। ज़िल्लत व अपमान उन पर बरस पड़ा और ख़ुदा के ग़ज़ब में मुब्तला होकर तबाह व बरबाद हो गये। यह हराम खाने वाली जमाअ़त ख़ुद हक़ से रुक कर औरों के भी उससे रोकती रहती थी। हक़ व बातिल को गड्मड् करके लोगों को भी हक़ रास्ते से रोक देते थे। जाहिलों में बैठकर गप हाँकते कि हम तो लोगों को हक़ रास्ते की तरफ़ बुलाते हैं, हालाँकि यह खुला धोखा है। वे तो जहन्नम की तरफ़ बुलाने वाले हैं। क़ियामत के दिन ये बे यार व मददगार छोड़ दिये जायेंगे।

आ़लिमों का, सूफ़ियों का यानी वाइ़ज़ों और आ़बिदों का ज़िक्र करके अब अमीरों, दौलतमन्दों और सरदारों का हाल बयान हो रहा है, कि जैसे ये दोनों वर्ग अपने अन्दर बहुत बुरे लोगों को भी रखते हैं, ऐसे ही इस तीसरे वर्ग में भी शरीर तबीयत के लोग होते हैं। उमूमन इन ही वर्ग के लोगों का अ़वाम पर असर होता है। हामियों के झुंड के झुंड उनके साथ बल्कि उनके पीछे होते हैं। पस उनका बिगड़ना गोया मज़हबी दुनिया का सत्यानास होना है। जैसा कि हज़रत इब्ने मुबारक रह. कहते हैं:

وَهَلْ اَفْسَدَ الدِّيْنَ اِلَّا الْمُلُوْكُ ☆ وَاَحْبَارُ سُوْءٍ وَّرُهْبَانُهَا

यानी दीन वाइ़ज़ों, आ़लिमों, सूफ़ियों और दुर्वेशों के बुरे तबक़े से ही बिगड़ता है।

'कन्ज़' शरीअ़त की इस्तिलाह (परिभाषा) में उस माल को कहते हैं जिसकी ज़कात अदा न की जाती

हो। हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से यही मन्क़ूल है, बल्कि आप फ़रमाते हैं कि जिस माल की ज़कात दे दी जाती हो वह अगर सातवीं ज़मीन के नीचे भी हो तो वह कन्ज़ नहीं, और जिसकी ज़कात न दी जाती हो वह चाहे ज़मीन पर खुला फैला पड़ा हो 'कन्ज़' है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से भी मौक़ूफ़न् और मरफ़ूअ़न् यही नक़ल किया गया है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. भी यही फ़रमाते हैं और फ़रमाते हैं कि बिना ज़कात के माल के ज़रिये उस मालदार को दाग़ा जायेगा। आपके बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि यह हुक्म ज़कात के उतरने से पहले था, ज़कात का हुक्म नाज़िल फ़रमाकर अल्लाह ने उस माल की तहारत (पाक करने का तरीक़ा) बता दी। ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रह. और उराक बिन मालिक ने भी यही फ़रमाया है कि उसे क़ौले ख़ुदा "ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम......" ने मन्सूख़ कर दिया है।

हज़रत अबू उमामा फ़रमाते हैं कि तलवारों का ज़ेवर भी कन्ज़ यानी ख़ज़ाना है। याद रखो कि मैं तुम्हें वही सुनाता हूँ जो मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है। हज़रत अ़ली रज़ि. फ़रमाते हैं कि चार हज़ार और इससे कम तो नफ़क़ा (ख़र्च और ज़रूरत के लिये) है और इससे ज़्यादा कन्ज़ (ख़ज़ाना) है। लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। माल की ज़्यादती की बुराई और निंदा, और क़िल्लत (कमी) की तारीफ़ में बहुत सी हदीसें मौजूद हैं, बतौर नमूने के हम भी यहाँ उनमें से चन्द नक़ल करते हैं।

मुस्नद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है, रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि सोने चाँदी वालों के लिये हलाकत है, तीन मर्तबा आपका यही फ़रमान सुनकर सहाबा पर भारी गुज़रा और उन्होंने सवाल किया कि फिर हम किस क़िस्म का माल रखें? हज़रत उमर रज़ि. ने हुज़ूर सल्ल. से यह हाल बयान करके यही सवाल किया तो आपने फ़रमाया कि ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और दीन के कामों में मदद देने वाली बीवी। मुस्नद अहमद में है कि सोने चाँदी की बुराई और निंदा की यह आयत जब उतरी और सहाबा रज़ि. ने आपस में चर्चा किया तो हज़रत उमर ने कहा लो मैं हुज़ूर सल्ल. से दरियाफ़्त कर आता हूँ। अपनी सवारी तेज़ करके रसूलुल्लाह सल्ल. से जा मिले, और फिर सवाल किया और आपने जवाब दिया जो ऊपर गुज़र चुका।

एक और रिवायत में है कि सहाबा ने कहा फिर हम अपनी औलाद के लिये क्या छोड़ जायें? उसमें है कि हज़रत उमर रज़ि. के पीछे ही पीछे हज़रत सोबान रज़ि. भी थे, आपने हज़रत उमर रज़ि. के सवाल पर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ज़कात इसी लिये मुक़र्रर फ़रमाई है कि बाद का माल पाक हो जाये। मीरास का मुक़र्रर करना बतला रहा है कि माल जमा करने में कोई हर्ज नहीं। हज़रत उमर रज़ि. यह सुनकर ख़ुशी में नारा-ए-तकबीर बुलन्द करने लगे, आपने फ़रमाया लो और सुनो, मैं तुम्हें एक और बेहतरीन ख़ज़ाना बतलाऊँ? नेक औरत, कि जब उसका शौहर उसकी तरफ़ नज़र डाले तो वह उसे ख़ुश कर दे, और जब हुक्म दे तो फ़ौरन उसका हुक्म बजा लाये, और जब मौजूद न हो तो (अपनी आबरू और उसके माल की) हिफ़ाज़त करे।

हस्सान बिन अ़तीया कहते हैं कि हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि. एक सफ़र में थे, एक मन्ज़िल में उतरे और अपने ग़ुलाम से फ़रमाया कि छुरी लाओ, खेलें। मुझे बुरा मालूम हुआ, आपने अफ़सोस ज़ाहिर किया और फ़रमाया मैंने तो इस्लाम के बाद से अब तक ऐसी बेएहतियाती की बात कभी नहीं कही थी। अब तुम इसे भूल जाओ और एक हदीस बयान करता हूँ उसे याद रख लो। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जब लोग सोना चाँदी जमा करने लगें तो तुम इन कलिमात को ख़ूब ज़्यादा पढ़ा करोः

Maktab E Ashraf

اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَسْئَلُكَ الثَّبَاتَ فِى الْاَمْرِ وَالْعَزِيْمَةَ عَلَى الرُّشْدِ وَاَسْئَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَاَسْئَلُكَ حُسْنَ عِبَادَتِكَ وَاَسْئَلُكَ قَلْبًا سَلِيْمًا وَاَسْئَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا وَاَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुस्सुबा-त फ़िल्-अम्रि वल्-अज़ीम-त अ़लर्रुश्दि व अस्अलु-क शुक्-र निअ्मति-क व अस्अलु-क हुस्-न इबादति-क व अस्अलु-क क़ल्बन् सलीमन् व अस्अलु-क लिसानन् सादिक़न् व अस्अलु-क मिन् ख़ैरि मा तअ्लमु व अऊज़ु बि-क मिन् शर्रि मा तअ्लमु व अस्तग़फ़िरु-क लिमा तअ्लमु इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल् ग़ुयूब।

यानी या अल्लाह! मैं तुझसे काम की साबित-क़दमी (जमाव) और भलाईयों की पुख़्तगी और तेरी नेमतों का शुक्र और तेरी इबादतों की अच्छाईयों और सलामती वाला दिल, और सच्ची ज़बान और तेरे इल्म में जो भलाई है वह, और तेरे इल्म में जो बुराई है उसकी पनाह, और जिन बुराईयों तो तू जानता है उनसे इस्तिग़फ़ार तलब करता हूँ। मैं मानता हूँ कि तू तमाम ग़ैब का जानने वाला है।

आयत में बयान है कि ख़ुदा की राह में अपने माल को ख़र्च न करने वाले और उसे जमा करके रखने वाले दर्दनाक अ़ज़ाब से ख़बरदार हो जायें। क़ियामत के दिन इसी माल को ख़ूब तपाकर गर्म करके आग जैसा करके इससे उनकी पेशानियाँ, पहलू (करवटें) और कमर दाग़ी जायेगी, और बतौर डाँट-डपट के उनसे फ़रमाया जायेगा कि लो अपनी जमा-पूँजी का मज़ा चखो। जैसे एक और आयत में है कि फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि जहन्नम के गर्म पानी को धार बाँधकर इनके सरों पर डालो और इनसे कहो कि अ़ज़ाब का लुत्फ़ उठाओ, तुम तो बड़े इज़्ज़त वाले और बड़े आदमी समझे जाते रहे, यह है बदला उसका।

साबित यह हुआ कि जो शख़्स जिस चीज़ को महबूब बनाकर अल्लाह की इताअ़त से उसे मुक़द्दम करेगा, उसी के साथ उसे अ़ज़ाब होगा। इन मालदारों ने माल की मुहब्बत में अल्लाह के फ़रमान को भुला दिया था, आज उसी माल से इन्हें सज़ा दी जा रही है। जैसे कि अबू लहब खुल्लम-खुल्ला हुज़ूर सल्ल. की दुश्मनी करता था और उसकी बीवी उसकी मदद करती थी, क़ियामत के दिन आग के और भड़काने के लिये वह अपने गले में रस्सी डालकर लकड़ियाँ ला-लाकर उसे सुलगायेगी और उसमें वह जलता रहेगा। यह माल जो यहाँ सबसे ज़्यादा पसन्दीदा हैं यही माल क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा मुज़िर (नुक़सानदेह) साबित होंगे। इसी को गर्म करके इससे दाग़ दिये जायेंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि ऐसे मालदारों के जिस्म इतने लम्बे-चौड़े कर दिये जायेंगे कि एक-एक दीनार व दिर्हम उस पर आ जाये। फिर तमाम माल आग जैसा बनाकर अलग-अलग करके सारे जिस्म पर फैला दिया जायेगा, यह नहीं कि एक के बाद एक दाग़ ले, बल्कि एक के साथ सब के सब। अगरचे मरफ़ूअ़ के तौर भी यह रिवायत आई है लेकिन इसकी सनद सही नहीं। वल्लाहु आलम

हज़रत ताऊस रह. फ़रमाते हैं कि उसका माल एक अज़्दहा बनकर उसके पीछे लगेगा, जो अंग सामने आ जायेगा उसी को चबा जायेगा। रसूलुल्लाह सल्ल. फ़रमाते हैं कि जो अपने बाद ख़ज़ाना छोड़ जाये उसका वह ख़ज़ाना क़ियामत के दिन ज़हरीला अज़्दहा बनकर जिसकी आँखों पर बिन्दू होंगे, उसके पीछे लगेगा। यह भागता हुआ पूछेगा कि तू कौन है? वह कहेगा तेरा जमा किया हुआ और मरने के बाद छोड़ा हुआ ख़ज़ाना। आख़िर उसे पकड़ लेगा और उसका हाथ चबा जायेगा। फिर बाक़ी जिस्म भी। सही मुस्लिम वग़ैरह में है कि

जो शख़्स अपने माल की ज़कात न दे, उसका माल क़ियामत के दिन आग की तख़्तियों जैसा बना दिया जायेगा और उससे उसकी पेशानी, करवट और कमर दाग़ी जायेगी। पचास हज़ार साल तक लोगों के फ़ैसले हो जाने तक तो उसका यही हाल रहेगा, फिर उसे उसकी मन्ज़िल की राह दिखा दी जायेगी, जन्नत की तरफ़ या जहन्नम की तरफ़।

इमाम बुख़ारी इसी आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि ज़ैद बिन वहब हज़रत अबूज़र रज़ि. से रबज़ा में मिले और दरियाफ़्त किया कि तुम यहाँ कैसे आ गये हो? आपने फ़रमाया हम शाम (मुल्क सीरिया) में थे वहाँ मैंने आयत 'वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब.....'' (जिसकी तफ़सीर चल रही है) की तिलावत की तो हज़रत मुआविया रज़ि. ने फ़रमाया- यह आयत हम मुसलमानों के बारे में नहीं, यह तो अहले किताब के बारे में है। मैंने कहा हमारे और उनके सब के बारे में है। इसमें मेरा और उनका इख़्तिलाफ़ हो गया, उन्होंने मेरी शिकायत का ख़त हज़रत उस्मान को लिखा, वहाँ का फ़रमान मेरे नाम आया कि तुम यहाँ चले आओ। मैं जब मदीने पहुँचा तो देखा कि हर तरफ़ से मुझे लोगों ने घेर लिया, इस तरह भीड़ लग गई कि गोया उन्होंने इससे पहले मुझे देखा ही न था। ग़र्ज़ मैं मदीने में ठहरा, लेकिन लोगों के आने-जाने से तंग आ गया, आख़िर मैंने हज़रत उस्मान से शिकायत की तो आपने मुझे फ़रमाया कि तुम मदीने के क़रीब ही किसी सहरा (जंगल, ग़ैर-आबादी) में चले जाओ। मैंने इस हुक्म की भी तामील की, लेकिन यह कह दिया कि वल्लाह जो मैं कहता था उसे हरगिज़ नहीं छोड़ सकता। आपका यह ख़्याल था कि बाल-बच्चों को खिलाने के बाद जो बचे उसे जमा करके रखना बिल्कुल हराम है। इसी का आप फ़तवा देते थे, और इसी बात को लोगों में फैलाते थे, और लोगों को भी इस पर आमादा करते थे, इसी का हुक्म देते थे और इसके मुख़ालिफ़ लोगों पर सख़्ती बरतते थे। हज़रत मुआविया रज़ि. ने आपको रोकना चाहा कि कहीं लोगों में आ़म नुक़सान न फैल जाये, यह न माने तो आपने दरबारे ख़िलाफ़त से शिकायत की। अमीरुल-मोमिनीन ने इन्हें बुलाकर रबज़ा में तन्हा रहने का हुक्म दे दिया, यहाँ तक कि आप वहीं हज़रत उस्मान रज़ि. की ख़िलाफ़त में ही इन्तिक़ाल फ़रमा गये। हज़रत मुआविया रज़ि. ने बतौर इम्तिहान एक बार उनके पास एक हज़ार अशरफ़ियाँ भिजवाईं, आपने शाम से पहले ही सब इधर-उधर अल्लाह की राह में ख़र्च कर डालीं, शाम को वही साहिब जो उन्हें सुबह को एक हज़ार अशरफ़ियाँ दे गये थे, आये और कहा कि मुझसे ग़लती हो गई, अमीरे मुआविया ने वे अशरफ़ियाँ दूसरे आदमी के लिये भिजवाई थीं, मैंने ग़लती से आपको दे दीं। वे वापस कीजिये। आपने फ़रमाया तुम पर अफ़सोस है, मेरे पास तो अब उनमें से एक पाई भी नहीं। अच्छा जब मेरा माल आ जायेगा तो मैं आपको आपकी अशरफ़ियाँ वापस कर दूँगा।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि. भी इस आयत के हुक्म को आ़म बतलाते हैं। सुद्दी रह. फ़रमाते हैं कि यह आयत मुसलमानों के बारे में है। अहनफ़ बिन क़ैस रह. फ़रमाते हैं कि मैं मदीने में आया, देखा कि क़ुरैशियों की एक जमाअ़त महफ़िल लगाये बैठी है। मैं भी उस मज्लिस में बैठ गया। एक साहिब तशरीफ़ लाये, मैले कुचैले कपड़े पहने हुए बहुत ख़स्ता हालत में और आकर खड़े होकर फ़रमाने लगे- रुपया-पैसा जमा करने वाले इससे ख़बरदार रहें कि क़ियामत के दिन जहन्नम के अंगारे उनकी छाती पर रखे जायेंगे, जो कन्धे की हड्डी के पार हो जायेंगे। फिर पीछे की तरफ़ से आगे को सुराख़ करते और जलाते हुए निकल जायेंगे। लोग सब सर नीचे किये बैठे रहे, कोई भी कुछ न बोला, वह भी मुड़कर चल दिये और एक सुतून से लगकर बैठ गये। मैं उनके पास पहुँचा और उनसे कहा कि मेरे ख़्याल में तो उन लोगों को आपकी बात बुरी लगी, आपने फ़रमाया ये कुछ नहीं जानते।

Maktab E Ashraf

एक सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने हज़रत अबूज़र रज़ि. से फ़रमाया- मेरे पास अगर उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना हो तो मुझे यह बात अच्छी मालूम नहीं होती कि तीन दिन गुज़रने के बाद मेरे पास उसमें से कुछ भी बचा हुआ रहे। हाँ अगर क़र्ज़ की अदायेगी के लिये मैं कुछ रख लूँ तो और बात है। ग़ालिबन इसी हदीस ने हज़रत अबूज़र रज़ि. का यह मज़हब कर दिया था, जो आपने ऊपर पढ़ा। वल्लाहु आलम।

एक मर्तबा हज़रत अबूज़र रज़ि. को उनका हिस्सा मिला, आपकी बाँदी ने उसी वक़्त ज़रूरत की चीज़ें मुहैया करनी शुरू कीं, सामान की ख़रीद के बाद सात दीनार बच रहे, हुक्म दिया कि इसके फ़ुलूस (खुले पैसे) ले लो। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सामित रज़ि. ने फ़रमाया इसे आप अपने पास रहने दीजिये ताकि ज़रूरत के वक़्त काम आ जाये, या कोई मेहमान आ जाये तो कोई काम न अटके। आपने फ़रमाया नहीं मुझसे मेरे दोस्त सल्ल. ने अ़हद लिया है कि जो सोना चाँदी जमा करके रखा जाये वह रखने वाले के लिये आग व अंगारा है, जब तक कि वह उसे राहे ख़ुदा में न दे दे।

इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत अबू सईद रज़ि. से रसूलुल्लाह सल्ल. ने फ़रमाया- अल्लाह से फ़क़ीर बनकर मिल, मालदार बनकर न मिल। उन्होंने पूछा यह किस तरह? फ़रमाया साईल (माँगने वाले) को रद्द न कर और जो मिले उसे छुपाकर न रख। उन्होंने कहा ये कैसे हो सकेगा? आपने फ़रमाया यही है, वरना आग है। इसकी सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है।

अहले सुफ़्फ़ा में से एक साहिब का इन्तिक़ाल हुआ उनके पास दो दीनार बरामद हुए। आपने फ़रमाया ये आग के दो दाग़ हैं, तुम लोग अपने साथी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ लो। एक और रिवायत में है कि एक अहले सुफ़्फ़ा के इन्तिक़ाल के बाद उनकी नीचे की गिरह में से एक दीनार निकला, आपने फ़रमाया एक दाग़ आग का। फिर दूसरे का इन्तिक़ाल हुआ उनके पास से दो दीनार बरामद हुए आपने फ़रमाया दो दाग़ आग के। फ़रमाते हैं कि जो लोग सुर्ख़ व सफ़ेद यानी सोना चाँदी छोड़कर मरे, एक-एक क़ीरात के बदले एक-एक तख़्ती आग की बनाई जायेगी और उसके क़दम से लेकर ठोड़ी तक उसके जिस्म में आग के दाग़ दिये जायेंगे। आपका फ़रमान है कि जिसने दीनार से दीनार और दिर्हम से दिर्हम मिलाये और जमा करके रख छोड़े उसकी खाल कुशादा करके (यानी फैलाकर) पेशानी, करवट और कमर पर उसके दाग़ किये जायेंगे, और कहा जायेगा कि यह है जिसे तुम अपनी जानों के ख़ज़ाने बनाते रहे, अब इसका बदला चखो। इसका रावी ज़ईफ़ कज़्ज़ाब व मतरूक (यानी कमज़ोर और ग़ैर-मोतबर) है।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَاللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ۬ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ

यक़ीनन महीनों की गिनती (जो कि) अल्लाह की किताब में अल्लाह के नज़दीक (मोतबर हैं,) बारह महीने (चाँद के) हैं, जिस दिन उसने (यानी अल्लाह तआ़ला ने) आसमान और ज़मीन पैदा किये थे (उसी दिन से, और) उनमें चार ख़ास महीने अदब के हैं, यही (जो ज़िक्र किया गया) दीने मुस्तक़ीम है सो तुम सब

Maktab E Ashraf

उन (महीनों) के बारे में (दीन के ख़िलाफ़ करके) अपना नुक़सान मत करना, और उन मुश्रिकों से सबसे लड़ना जैसा कि वे तुम सबसे लड़ते हैं, और (यह) जान रखो कि अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ियों का साथी है। (36)	اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝

बारह महीने

मुस्नद अहमद में है कि रसूले मक़्बूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने अपने हज के ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया कि ज़माना घूमकर अपनी असल पर आ गया है। साल के बारह महीने हुआ करते हैं, जिनमें से चार हुर्मत व अदब वाले हैं, तीन तो लगातार- ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम और चौथा रजब जो क़बीला मुज़र के यहाँ है, जो जमादिउल-आख़िर और शाबान के बीच है। फिर पूछा यह कौनसा दिन है? हमने कहा अल्लाह को और उसके रसूल को ही पूरा इल्म है, आपने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमायी, हम समझे कि शायद आप इस दिन का कोई और ही नाम रखेंगे। फिर पूछा क्या यह क़ुरबानी की ईद का दिन नहीं? हमने कहा हाँ। फिर पूछा यह कौनसा महीना है? हमने कहा अल्लाह जाने और उसका रसूल। आप फिर ख़ामोश रहे यहाँ तक कि हमने ख़्याल किया शायद आप इस महीने का नाम और ही रखेंगे। आपने फ़रमाया क्या यह ज़िलहिज्जा नहीं है? हमने कहा हाँ। फिर आपने पूछा यह कौनसा शहर है? हमने कहा अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानने वाले हैं। आप फिर ख़ामोश हो रहे और हमें फिर ख़्याल आने लगा कि शायद आप इसका कोई और ही नाम रखेंगे। फिर फ़रमाया क्या यह मक्का नहीं है? हमने कहा बेशक। आपने फ़रमाया याद रखो तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें तुम में आपस में ऐसी ही हुर्मत वाली हैं जैसी हुर्मत व इज़्ज़त तुम्हारे इस दिन की, तुम्हारे इस महीने में, तुम्हारे इस शहर में है। तुम अभी-अभी (यानी जल्द ही) अपने रब से मुलाक़ात करोगे और वह तुमसे तुम्हारे आमाल का हिसाब लेगा। सुनो! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने (यानी ख़ून ख़राबा) करने लगो। बतलाओ क्या मैंने तब्लीग़ कर दी? सुनो! तुम में से जो मौजूद हैं उन्हें चाहिये कि जो मौजूद न हों उन तक पहुँचा दें। बहुत मुम्किन है कि जिसे वह पहुँचाये वह उस पहुँचाने वाले से भी ज़्यादा हिफ़ाज़त करने वाला हो।

एक और रिवायत में है कि "अय्यामे तशरीक़" के बीच में मिना में हज्जतुल-विदा के ख़ुतबे के मौक़े का यह ज़िक्र है, अबू हुर्रा रक़ाशी के चचा जो सहाबी हैं, कहते हैं कि उस ख़ुतबे के वक़्त मैं हुज़ूर सल्ल. की ऊँटनी की नकेल थामे हुए था और लोगों की भीड़ को रोके हुए था। आपके पहले जुमले का यह मतलब है कि जो कमी-बेशी और महीनों का आगे-पीछे करना जाहिलीयत के ज़माने में मुश्रिक किया करते थे, वह उलट-पलट कर ठीक हो गई है। जो महीना आज है वही हक़ीक़त में भी है, जैसे कि फ़त्हे मक्का के मौक़े पर आपने फ़रमाया कि यह शहर मख़्लूक़ की पैदाईश के प्रारंभ से हुर्मत व इज़्ज़त वाला (यानी सम्मानित) है, वह आज भी हुर्मत वाला है और क़ियामत तक हुर्मत वाला ही रहेगा। पस अ़रबों में जो यह रिवाज पड़ गया था कि उनके अक्सर हज ज़िलहिज्जा के महीने में नहीं होते थे, अबकी मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल. के हज के मौक़े पर यह बात न थी, बल्कि हज अपने ठीक महीने पर था। बाज़ लोग इसके साथ यह भी कहते हैं कि सिद्दीक़े अकबर रज़ि. का हज ज़ीक़ादा में हुआ, लेकिन यह ग़ौर-तलब क़ौल है, जैसा कि

Maktab E Ashraf

हम मय सुबूत बयान करेंगे।

शैख़ अ़लमुद्दीन सख़ावी ने अपनी किताब "अल-मशहूर फ़ी अस्माइल्-अय्यामि वश्शुहूर" में लिखा है कि मुहर्रम के महीने को मुहर्रम उसकी ताज़ीम (अदब व सम्मान) की वजह से कहते हैं, लेकिन मेरे नज़दीक तो इस नाम की वजह इसकी हुर्मत की ताकीद है। इसलिये कि इस्लाम के आने से पहले अ़रब समाज में इसे बदल डालते थे। कभी हलाल कर डालते, कभी हराम कर डालते। इसकी जमा (बहुवचन) मुहर्रमात, मुहर्रम, महारीम है।

'सफ़र' के सफ़र नाम रखने की वजह यह है कि इस महीने में उमूमन उनके घर ख़ाली रहते थे। क्योंकि ये लड़ाई भिड़ाई और सफ़र में चल देते थे। जब मकान ख़ाली हो जाये तो अ़रब कहते हैं "स-फ़रल् मकानु" इसकी जमा (बहुवचन) 'असफ़ार' है। जैसे 'जमल' की जमा 'अजमाल' है।

'रबीउल-अव्वल' के नाम का सबब यह है कि इस महीने में इनकी इक़ामत (यानी क़ायम होना) हो जाती है और 'इरतिबा' कहते हैं इक़ामत को, इसकी जमा (बहुवचन) 'अरबा' है। जैसे 'नसीब' की जमा 'अन्सबा' और इसकी जमा 'अर्बअ़ह्' है जैसे 'रग़ीफ़' की जमा (बहुवचन) 'अर्ग़फ़ा' है।

'रबीउल-आख़िर' के महीने का नाम रखना भी इसी वजह से है गोया यह इक़ामत का दूसरा महीना है।

'जमादिउल-अव्वल' का यह नाम रखने की वजह यह है कि इस महीने में पानी जम जाता था, उनके हिसाब में महीने गर्दिश नहीं करते थे, यानी ठीक हर मौसम पर ही हर महीना आता था, लेकिन यह बात कुछ मुनासिब नहीं, इसलिये कि जब इन महीनों का हिसाब चाँद पर है तो ज़ाहिर है कि मौसमी हालत हर माह हर साल बराबर नहीं रहेगी, हाँ यह मुम्किन है कि इस महीने का नाम जिस साल रखा गया हो उस साल यह महीना कड़ाके के जाड़े में आया हो और पानी में जमाव हो गया हो। चुनाँचे एक शायर ने यही कहा है कि जुमादा की सख़्त अंधेरी रातें जिनमें कुत्ता भी मुश्किल से एक-आध मर्तबा ही भौंक लेता है, इसकी जमा (बहुवचन) 'जमादियात' जैसे 'हुबारा' और 'हुबारियात'। ये मुज़क्कर व मुअन्नस दोनों तरह इस्तेमाल होते हैं। जुमादल-ऊला और जुमादल-उख़रा भी कहा जाता है। जुमादल-उख़रा का यह नाम रखने की वजह भी यही है गोया यह पानी के जम जाने का दूसरा महीना है।

'रजब' यह तरजीब से लिया गया है। तरजीब कहते हैं ताज़ीम (एहतिराम व सम्मान) को, चूँकि यह महीना बड़ाई व इज़्ज़त वाला है, इसलिये इसे रजब कहते हैं। इसकी जमा (बहुवचन) अरजाब, रजाब और रजबात है। 'शाबान' का नाम शाबान इसलिये है कि इसमें अ़रब के लोग लूट-मार के लिये इधर-उधर बिखर जाते थे। 'तशअ़ुब' के मायने हैं अलग-अलग करना। पस इस महीने का भी यही नाम रख दिया गया। इसकी जमा (बहुवचन) 'शअ़बाबीन' शअ़बानात' आती है। रमज़ान को रमज़ान इसलिये कहते हैं कि इसमें ऊँटनियों के पाँव गर्मी की शिद्दत की वजह से जलने लगते हैं। 'र-मज़तिल् फ़िसालु' उस वक़्त कहते हैं जब ऊँटनियों के बच्चे सख़्त प्यासे हों। इसकी जमा (बहुवचन) रमज़ानात, रमाज़ीन और रामज़ा आती है। बाज़ लोग कहते हैं कि यह अल्लाह के नामों में से एक नाम है, यह बिल्कुल ग़लत और नाक़ाबिले तवज्जोह क़ौल है। मैं कहता हूँ कि इस बारे में एक हदीस भी वारिद हुई है, लेकिन वह कमज़ोर है।

'शव्वाल' अ़रबी की कहावत 'शालतिल् इबिलु' से लिया गया है। यह महीना ऊँटों की मस्तियों का महीना था। ये दुमें उठा दिया करते थे, इसलिये इस महीने का नाम यही हो गया। इसकी जमा (बहुवचन) शवावील, शवावल और शवालात आती है। 'ज़ीक़ादा' का यह नाम होने की वजह यह है कि इस माह में अ़रब लोग बैठ जाया करते थे, न लड़ाई के लिये निकलते न सफ़र के लिये। इसकी जमा (बहुवचन)

Maktab E Ashraf

ज़वातुल-क़अ़दा है। 'ज़िलहिज्जा' को 'ज़िलहज्जा' भी कह सकते हैं चूँकि इसी माह में हज होता था। इसलिये इसका यह नाम मुक़र्रर हो गया। इसकी जमा (बहुवचन) ज़वातुल-हिज्जा आती है। यह तो थी वजह इन महीनों के नाम की, अब हफ़्ते के सात दिनों के नाम और उन नामों की जमा (बहुवचन) सुनिये।

'इतवार' के दिन को 'यौमुल-अहद' कहते हैं। इसकी जमा (बहुवचन) आहाद व हाद और वहूद आती है। 'पीर' के दिन को 'इसनैन' कहते हैं। इसकी जमा (बहुवचन) असानीन आती है। 'मंगल' को 'सलासा' कहते हैं। यह मुज़क्कर भी बोला जाता है और मुअन्नस भी। इसकी जमा सलासावात और असालिस आती है। 'बुध' के दिन को 'अर्बआ' कहते हैं। इसकी जमा अर्बआत और अराबेअ़ आती है। 'जुमेरात' को 'ख़मीस' कहते हैं। जमा इसकी अख़मिसा, अख़ामिस आती है। 'जुमे' को 'जुमुआ' और 'जुमूआ' कहते हैं। इसकी जमा (बहुवचन) जुमुउन और जमाआत आती है। 'शनिवार' यानी हफ़्ते के दिन को 'सब्त' कहते हैं। 'सब्त' के मायने हैं किसी चीज़ को काटना, चूँकि गिनती हफ़्ते के दिनों की यहीं ख़त्म हो जाती है, इसलिये इसे सब्त कहते हैं, और प्राचीन अ़रबों में हफ़्ते के दिन के नाम ये थे।

अव्वल, रहूद, जब्बार, दब्बार, मोनत, अ़रूबा, शियार। अ़रब जाहिलीयत (इस्लाम से पहले के ज़माने) के अश्आर में भी दिनों के नाम पाये जाते हैं। क़ुरआने करीम फ़रमाता है कि इन बारह महीनों में चार हुर्मत (इज़्ज़त व सम्मान) वाले हैं, जाहिलीयत के अ़रब भी इन्हें हुर्मत वाले मानते थे, लेकिन बसल नाम का एक गिरोह (जमाअ़त) अपने कट्टरपन और सख़्ती की बिना पर आठ महीनों को हुर्मत वाला ख़्याल करता था।

हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान में 'रजब' को क़बीला मुज़र की तरफ़ मन्सूब करने की वजह यह है कि जिस महीने को वे रजब का महीना शुमार करते थे, दर असल वही अल्लाह के नज़दीक भी रजब का महीना था। जो जुमादल-उख़रा और शाबान के बीच में है। क़बीला रबीआ़ के नज़दीक रजब, शाबान और शव्वाल के दरमियान के महीने का यानी रमज़ान का नाम था। पस हुज़ूर सल्ल. ने स्पष्ट कर दिया कि हुर्मत वाला रजब मुज़र का है, न कि रबीआ़ का। इन चार हुर्मत के महीनों में से तीन लगातार इस मस्लेहत से हैं कि हाजी ज़ीक़ादा के महीने में निकले तो उस वक़्त तक लड़ाईयाँ, मार-पीट, जंग, झगड़ा, क़त्ल व क़िताल बन्द हो, लोग अपने घरों में बैठे हुए हों। फिर ज़िलहिज्जा में हज के अरकान की अदायेगी अमन व अमान, चैन व सुकून और अच्छी तरह हो जाये। फिर माहे मुहर्रम की हुर्मत में वापस घर पहुँच जाये। साल के बीच में रजब को हुर्मत वाला बनाने की ग़र्ज़ यह है कि बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिये आने वाले अपने तवाफ़े बैतुल्लाह के शौक़ को उमरे की सूरत में अदा कर लें। चाहे दूर-दराज़ वाले हों वे भी महीने भर में आना जाना कर लें। यही अल्लाह का सीधा और सच्चा दीन है।

पस ख़ुदा के फ़रमान के मुताबिक़ तुम इन पाक महीनों की हुर्मत (इज़्ज़त व सम्मान) करो। इनमें ख़ुसूसियत के साथ गुनाहों से बचो, इसलिये कि इनमें गुनाहों की बुराई और बढ़ जाती है जैसे कि हरम शरीफ़ का गुनाह और जगह के गुनाह से बढ़ जाता है। फ़रमाने ख़ुदा है कि जो हरम में दीन के ख़िलाफ़ किसी काम का इरादा ज़ुल्म से करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब देंगे। इसी तरह से इन सम्मानित महीनों का गुनाह और दिनों के गुनाह से बढ़ जाता है। इसी लिये हज़रत इमाम शाफ़ई रह. और उलेमा की एक बड़ी जमाअ़त के नज़दीक इन महीनों के क़त्ल की दियत भी सख़्त है। इसी तरह हरम के अन्दर के क़त्ल की और मेहरम रिश्तेदार के क़त्ल की भी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं 'फ़ीहिन्-न' से मुराद साल भर के तमाम महीने हैं। पस इन तमाम महीनों में गुनाहों से बचो, ख़ुसूसन इन चार महीनों में कि ये हुर्मत वाले हैं। इनकी बड़ी इज़्ज़त है, इनमें

Maktab E Ashraf

गुनाह सज़ा के एतिबार से और नेकियाँ अज्र व सवाब के एतिबार से बढ़ जाती हैं।

हज़रत क़तादा रह. का क़ौल है कि इन हुर्मत वाले महीनों में गुनाह की सज़ा और बोझ बढ़ जाता है अगरचे ज़ुल्म हर हाल में बुरी चीज़ है, लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने जिस मामले को चाहे बढ़ा दे। देखिये अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ में से भी पसन्द फ़रमाया, फ़रिश्तों में इनसानों में अपने रसूल चुन लिये। इसी तरह कलाम में से अपने ज़िक्र को पसन्द फ़रमा लिया, और ज़मीन में से मस्जिदों को पसन्द फ़रमा लिया, और महीनों में से रमज़ान शरीफ़ को और इन चार महीनों को पसन्द फ़रमा लिया, और दिनों में से जुमा के दिन को, और रातों में से शबे-क़द्र को, पस तुम्हें उनकी अ़ज़मत (बड़ाई और सम्मान) का लिहाज़ रखना चाहिये, जिन्हें ख़ुदा ने अ़ज़मत दी है। चीज़ों और अहकाम की ताज़ीम उतनी करनी अ़क़्लमन्दी और समझदार लोगों के नज़दीक ज़रूरी है, जितनी ताज़ीम उनकी अल्लाह तआ़ला ने बतलाई हो। उनकी हुर्मत का अदब न करना हराम है। उनमें जो काम हराम हैं उन्हें हलाल न कर लो, जो हलाल हैं उन्हें हराम न बना लो। जैसे मुश्रिक लोग करते थे। यह उनके कुफ़्र में ज़्यादती की बात थी।

फिर फ़रमाया कि तुम सबके सब काफ़िरों से जिहाद करते रहो। जैसे कि वे सबके सब तुमसे जंग पर मुस्तैद हैं। हुर्मत वाले इन चार महीनों में जंग की इब्तिदा करनी मन्सूख़ या मोहकम होने के बारे में उलेमा के दो क़ौल हैं- पहला तो यह कि यह मन्सूख़ है, यही क़ौल ज़्यादा मशहूर है। इस आयत के अलफ़ाज़ पर ग़ौर कीजिये- पहले तो फ़रमान हुआ कि इन महीनों में ज़ुल्म न करो, फिर मुश्रिकों से जंग करने को फ़रमाया। अलफ़ाज़ के ज़ाहिर से तो मालूम होता है कि यह हुक्म आम है, हुर्मत के महीने भी इसमें आ गये। अगर ये महीने इससे अलग होते तो इनके गुज़र जाने की क़ैद साथ ही बयान होती। रसूलुल्लाह सल्ल. ने ताईफ़ का घेराव ज़ीक़ादा के महीने में किया था जो हुर्मत वाले महीनों में से एक है, जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप हवाज़न क़बीले की तरफ़ शव्वाल में चले, जब उनको शिकस्त हुई और उनमें के बचे हुए अफ़राद भागकर ताईफ़ में पनाह लेने वाले हुए तो आप वहाँ गये और चालीस दिन तक घेराव रखा, फिर बग़ैर फ़तह किये हुए वहाँ से वापस लौट आये। तो साबित हुआ कि आपने हुर्मत वाले चार महीनों में से एक में घेराव किया। दूसरा क़ौल यह है कि हुर्मत वाले महीनों में जंग की इब्तिदा (अपनी तरफ़ से शुरूआ़त) करनी हराम है, और इन महीनों की हुर्मत का हुक्म मन्सूख़ नहीं। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है कि अल्लाह की यादगारों और निशानियों को और हुर्मत वाले महीनों को हलाल न कर लिया करो। और फ़रमान है कि हुर्मत वाले महीने हुर्मत वाले महीनों के बदले हैं, और हुर्मतें क़िसास (बदला) हैं। पस जो तुम पर ज़्यादती करे तो तुम भी उनसे वैसी ही ज़्यादती का बदला ले लो....। एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है:

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ..... الخ

हुर्मत वाले महीनों के गुज़र जाने के बाद मुश्रिकों से जिहाद करो।

यह बयान पहले गुज़र चुका है कि ये चार महीने हैं हर साल में। फिर फ़रमाया कि तुम सब मुसलमान उनसे उसी तरह लड़ो जैसे कि वे तुमसे सबके सब लड़ते हैं। हो सकता है कि यह हुक्म पहले हुक्म से मुख़्तलिफ़ (अलग और भिन्न) न हो, और हो सकता है कि यह हुक्म बिल्कुल नया और अलग हो, मुसलमानों को रग़बत (तवज्जोह और दिलचस्पी) दिलाने और उन्हें जिहाद पर आमादा करने के लिये। तो फ़रमाता है कि जैसे तुमसे जंग करने के लिये वे अ़रब के तमाम इलाक़ों से जमा होकर आते हैं, तुम भी

Maktab E Ashraf

अपने सब दीनी भाईयों को लेकर उनसे मुक़ाबला करो। यह भी मुम्किन है कि इस जुमले में मुसलमानों को हुर्मत वाले महीनों में जंग करने की रुख़्सत (छूट और रियायत) दी हो, जबकि हमला उनकी तरफ़ से हो। जैसे आयत "अश्शहरुल्-हरामु....." में है। और जैसे आयत-

وَلَاتُقَاتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقَاتِلُوْكُمْ فِيْهِ..... الخ

में बयान है, कि उनसे मस्जिदे हराम के पास न लड़ो जब तक कि वे लड़ाई की ख़ुद शुरूआ़त न करें। हाँ अगर वे तुमसे लड़ें तो तुम भी उनसे लड़ो.....।

यही जवाब हुर्मत वाले महीने में हुज़ूर सल्ल. के ताईफ़ के घेराव का है, कि दर असल यह लड़ाई एक हिस्सा और पूरक थी हवाज़न की, और उनके सक़फ़ी साथियों की लड़ाई का, उन्होंने ही लड़ाई की शुरूआ़त की थी। इधर-उधर से आपके मुख़ालिफ़ों को जमा करके लड़ाई की दावत दी थी, पस हुज़ूर सल्ल. उनकी तरफ़ बढ़े। यह बढ़ना भी हुर्मत वाले महीने में था, यहाँ शिकस्त उठाकर ये लोग ताईफ़ में भाग गये थे और वहाँ क़िले में बन्द हो गये, आप उस मर्कज़ (गढ़) को ख़ाली कराने के लिये और आगे बढ़े। उन्होंने मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाया, मुसलमानों की एक जमाअ़त को क़त्ल कर डाला, उधर घेराव जारी रहा, मिन्जनीक़ (उस ज़माने की तोप) वग़ैरह से चालीस दिन तक उनको घेरे रहे। ग़र्ज़ यह कि उस जंग की शुरूआ़त हुर्मत के महीने में नहीं थी, लेकिन जंग लम्बी खिंच गयी तो हुर्मत का महीना भी आ गया। जब चन्द दिन गुज़र गये तो आपने घेराव हटा लिया, जंग का जारी रखना और चीज़ है और जंग की शुरूआ़त करना और चीज़ है। इसकी बहुत सी नज़ीरें (मिसालें) मिलती हैं। वल्लाहु आलम

अब इसमें जो हदीसें हैं हम उन्हें नक़ल करते हैं। वल्लाहु आलम

اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِيَادَةٌ فِی الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِئُوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۭ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ۝ ع	यह हटा देना कुफ़्र में और तरक़्क़ी है जिस से कुफ़्फ़ार गुमराह किये जाते हैं कि वे इस (हराम महीने) को किसी साल (नफ़्सानी ग़र्ज़ से) हलाल कर लेते हैं, और किसी साल (जब कोई ग़र्ज़ न हो) हराम समझते हैं, ताकि अल्लाह तआ़ला ने जो (महीने) हराम किये हैं (सिर्फ़) उनकी गिनती पूरी कर लें, फिर अल्लाह के हराम किए हुए (महीने) को हलाल कर लेते हैं। उनके बुरे आमाल उनको अच्छे मालूम होते हैं, और अल्लाह तआ़ला ऐसे काफ़िरों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता। (37)

ख़ुदा के हुक्म के साथ मुश्रिकों का बुरा सुलूक

मुश्रिकों के कुफ़्र की ज़्यादती बयान हो रही है कि वे किस तरह अपनी फ़ासिद राय को और अपनी नापाक ख़्वाहिश को अल्लाह की शरीअ़त में दाख़िल करके ख़ुदा के दीन के अहकाम में उलट-पुलट कर देते थे। हराम को हलाल और हलाल को हराम बना लेते थे। तीन महीने की हुर्मत को तो ठीक रखा, फिर चौथे महीने की हुर्मत को इस तरह बदल दिया कि मुहर्रम को सफ़र के महीने में कर दिया और मुहर्रम की हुर्मत

Maktaba E Ashraf

न की, ताकि बज़ाहिर साल के चार महीने की हुर्मत भी पूरी हो जाये और असली हुर्मत के महीने यानी मुहर्रम में लूट-मार क़त्ल व ग़ारत भी हो जाये और इस पर अपने क़सीदों (शे'रों) में भी ख़ूब कुफ़्र करते थे।

उनका एक सरदार था जनादा बिन अ़मर इब्ने उमैया कनानी, यह हर साल हज को आता, इसकी कुन्नियत अबू समामा थी। यह मुनादी कर देता कि न तो अबू समामा के मुक़ाबले में कोई आवाज़ उठा सकता है न उसकी बात में कोई कमी और ख़ामी निकाल सकता है। सुनो! पहले साल का सफ़र महीना हलाल है और दूसरे साल का हराम। पस एक साल के मुहर्रम की हुर्मत न रखते थे दूसरे साल के मुहर्रम की हुर्मत मना लेते थे। उनकी इसी कुफ़्रिया ज़्यादती का बयान इस आयत में है।

यह शख़्स अपने गधे पर सवार आता और जिस साल यह मुहर्रम को हुर्मत वाला बना देता लोग उसकी हुर्मत (सम्मान) करते, और जिस साल वह कह देता कि मुहर्रम को हमने हटाकर सफ़र के महीने में और सफ़र को आगे बढ़ाकर मुहर्रम में कर दिया है, उस साल अ़रब में इस मुहर्रम के महीने की हुर्मत कोई न करता। एक क़ौल यह भी है कि बनी किनाना के उस शख़्स को अ़लमस कहा जाता था, यह मुनादी कर देता कि इस साल मुहर्रम की हुर्मत न मनाई जाये, अगले साल मुहर्रम और सफ़र दोनों की हुर्मत रहेगी, पस उसके क़ौल पर जाहिलीयत (इस्लाम के आने से पहले) के ज़माने में अ़मल कर लिया जाता, और अब हुर्मत के असली महीने में जिसमें एक इनसान अपने बाप के क़ातिल को पाकर भी उसकी तरफ़ निगाह भरकर नहीं देखता था, आज़ादी से आपस में ख़ाना-जंगियाँ (गृहयुद्ध), लूट-मार होती। लेकिन यह क़ौल ठीक नहीं मालूम होता, क्योंकि क़ुरआने करीम ने फ़रमाया है कि गिनती में वह मुवाफ़क़त करते थे और इसमें गिनती की मुवाफ़क़त भी नहीं होती, बल्कि साल में तीन महीने रह जाते हैं, और दूसरे साल में पाँच माह हो जाते हैं। एक क़ौल यह भी है कि ख़ुदा की तरफ़ से तो हज फ़र्ज़ था ज़िलहिज्जा के महीने में, लेकिन मुश्रिक ज़िलहिज्जा का नाम मुहर्रम रख लेते, फिर बराबर गिनते जाते और इस हिसाब से जो ज़िलहिज्जा आता उस में हज अदा करते, फिर मुहर्रम के नाम से ख़ामोशी बरत लेते, इसका ज़िक्र ही न करते, फिर लौटकर सफ़र नाम रख देते, फिर रजब को जमादिउल-आख़िर, शाबान को रमज़ान और रमज़ान को शव्वाल, फिर ज़ीक़ादा को शव्वाल, ज़िलहिज्जा को ज़ीक़ादा और मुहर्रम को ज़िलहिज्जा कहते, और इसमें हज करते। फिर इसको इसी तरह लौटाते और दो साल तक हर एक महीने में बराबर हज करते।

जिस साल हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने हज किया उस साल मुश्रिकों की इस गिनती के मुताबिक़ दूसरे बरस का ज़ीक़ादा का महीना था, नबी करीम सल्ल. के हज के मौक़े पर ठीक ज़िलहिज्जा का महीना था, और इसी की तरफ़ आपने अपने ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया कि ज़माना लौटकर अपनी उस असली शक्ल पर आ गया है जिस शक्ल पर उस वक़्त था जब ज़मीन व आसमान अल्लाह तआ़ला ने पैदा किये थे, लेकिन यह क़ौल भी दुरुस्त नहीं मालूम होता। इस वजह से कि अगर ज़ीक़ादा में हज़रत अबू बक्र रज़ि. का हज हुआ तो यह हज कैसे सही हो सकता है? हालाँकि ख़ुदा तआ़ला का फ़रमान है:

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ...... الخ

यानी ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ से आजके हज्जे अकबर के दिन मुश्रिकों से अलग और बेज़ारी का ऐलान है। इसकी मुनादी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के हज में ही की गई। पस अगर यह हज ज़िलहिज्जा के महीने में न होता तो अल्लाह तआ़ला उस दिन को हज का दिन न फ़रमाता, और सिर्फ़ महीनों के आगे पीछे होने को जिसका बयान आयत में है, साबित करने के इस तकल्लुफ़ की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि वह तो इसके बग़ैर भी मुम्किन है। क्योंकि मुश्रिक लोग एक साल तो मुहर्रम के महीने को

Maktab E Ashraf

हलाल समझते और उसकी हुर्मत व इज़्ज़त बाक़ी रखते, ताकि साल के चार हुर्मत वाले महीने जो ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर थे उनकी गिनती में मुवाफ़क़त कर लें। पस कभी तो हुर्मत वाले तीनों महीने जो लगातार हैं उनमें से आख़िरी महीने मुहर्रम की हुर्मत रखते, कभी उसे सफ़र की तरफ़ पीछे को कर देते।

रहा हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान कि ज़माना घूमकर फिर अपनी असली हालत पर आ गया है, यानी इस वक़्त जो महीना इनके नज़दीक है वही महीना सही गिनती में भी है, इसका पूरा बयान हम इससे पहले कर चुके हैं। वल्लाहु आलम

इब्ने अबी हातिम में है कि अक़बा में रसूलुल्लाह सल्ल. ठहरे, मुसलमान आपके पास जमा हो गये, आपने अल्लाह तआला की पूरी तारीफ़ व सना बयान फ़रमाई, उसके बाद फ़रमाया कि महीनों की ताख़ीर (यानी उन्हें पीछे को हटाना) शैतान की तरफ़ से कुफ़्र की ज़्यादती थी, कि काफ़िर बहकें, वे एक साल मुहर्रम को हुर्मत वाला करते और सफ़र को हिल्लत वाला, फिर मुहर्रम को हिल्लत वाला कर लेते। यही उनकी वह तक़दीम व ताख़ीर (आगे और पीछे करना) है जो इस आयत में बयान हुई है।

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. ने अपनी 'किताबुस्सीरत' में इस पर बहुत अच्छा कलाम किया है, जो बेहद मुफ़ीद और उम्दा है। आप तहरीर फ़रमाते हैं कि इस काम को सबसे पहले करने वाला अ़लमस हुज़ैफ़ा बिन उबैद था। फिर क़सीम बिन अ़दी बिन आ़मिर बिन सालबा बिन हारिस बिन मालिक बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इलियास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान, फिर उसका लड़का उब्बाद, फिर उसका लड़का क़िला, फिर उसका लड़का उमैया, फिर उसका लड़का औ़फ़, फिर उसका लड़का अबू समामा जनादा। उसी के ज़माने में इस्लाम ज़ाहिर हुआ। अ़रब के लोग हज से फ़ारिग़ होकर उसके पास जमा होते, यह खड़ा होकर उन्हें भाषण देता और जब ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा की हुर्मत बयान करता और एक साल तो मुहर्रम को हलाल कर देता और मुहर्रम सफ़र को बता देता और एक साल मुहर्रम को ही हुर्मत वाला कह देता कि ख़ुदा की हुर्मत के महीनों की गिनती के मुवाफ़िक़ हो जाये और ख़ुदा का किया हुआ हराम हलाल भी हो जाये।

ऐ ईमान वालो! तुम लोगों को क्या हुआ कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो? क्या तुमने आख़िरत के बदले दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअ़त कर ली? सो दुनियावी ज़िन्दगी से फ़ायदा हासिल करना तो आख़िरत के मुक़ाबले में (कुछ भी नहीं) बहुत कम है। (38) अगर तुम न निकलोगे तो वह (यानी अल्लाह तआ़ला) तुमको सख़्त सज़ा देगा (यानी तुमको हलाक कर देगा) और तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा (और उनसे अपना काम लेगा) और तुम अल्लाह (के दीन) को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकोगे, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है। (39)	يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ۭ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

Maktab E Ashraf

सहाबा के ईमानी जज़्बे और दीन पर जमाव का इम्तिहान

ग़ज़वा-ए-तबूक

एक तरफ़ तो गर्मी सख़्त पड़ रही थी, दूसरी तरफ़ फल पक गये थे और दरख़्तों के साये बढ़ गये थे। ऐसे वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल. एक दूर-दराज़ के सफ़र के लिये तैयार हो लिये। ग़ज़वा-ए-तबूक (तबूक की लड़ाई) में अपने साथ चलने को सबसे फ़रमा दिया। कुछ लोग जो रह गये थे उन्हें जो तंबीह की गई इन आयतों में उसी की शुरूआत है, कि जब तुम्हें ख़ुदा की राह के जिहाद की तरफ़ बुलाया जाता है तो तुम क्यों ज़मीन में धंसने लगते हो? क्या दुनिया की इन फ़ानी चीज़ों पर रीझकर (इतराकर और इन्हें अच्छा समझकर) आख़िरत की बाक़ी रहने वाली नेमतों को भुला बैठे हो? सुनो! दुनिया की तो आख़िरत के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं।

हुज़ूर सल्ल. ने अपनी कलिमे की उंगली की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया इस उंगली को समुद्र में डुबोकर निकालो, इस पर जितना पानी समुद्र के मुक़ाबले में है उतना ही मुक़ाबला दुनिया का आख़िरत से है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से किसी ने पूछा, मैंने सुना है कि आप हदीस बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला एक नेकी के बदले एक लाख का सवाब लिख देता है? आपने फ़रमाया बल्कि मैंने दो लाख का फ़रमान भी रसूलुल्लाह सल्ल. से सुना है। फिर आपने इस आयत के इसी जुमले की तिलावत करके फ़रमाया कि दुनिया जो गुज़र गई और जो बाक़ी है वह सब आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है।

नक़ल है कि अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ बिन मरवान ने अपने इन्तिक़ाल के वक़्त अपना कफ़न मंगवाया, उसे देखकर फ़रमाया बस मेरा तो दुनिया से यही हिस्सा था, मैं इतनी दुनिया लेकर जा रहा हूँ। फिर पीठ फेरकर रोने लगे और फ़रमाया हाय दुनिया तेरा बहुत भी कम है, और तेरा कम तो बहुत ही कम है। अफ़सोस हम तो धोखे में ही रहे।

फिर जिहाद के छोड़ देने और उसकी तरफ़ से बेतवज्जोही पर अल्लाह तआ़ला डाँटता है कि सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब होंगे। एक क़बीले को हुज़ूर सल्ल. ने जिहाद के लिये बुलवाया, वे न उठे, अल्लाह तआ़ला ने उनसे बारिश रोक ली। फिर फ़रमाता है कि अपने दिल में फूलना नहीं कि हम रसूल के मददगार हैं, अगर तुम दुरुस्त न रहे तो ख़ुदा तुम्हें बरबाद करके अपने रसूल के साथी औरों को कर देगा, जो तुम जैसे न होंगे, तुम अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, यह नहीं कि तुम न जाओ तो मुजाहिदीन जिहाद ही न कर सकें, अल्लाह में सब क़ुदरतें हैं। वह तुम्हारे बग़ैर भी अपने दुश्मनों पर अपने ग़ुलामों को ग़ालिब कर सकता है। कहा गया है कि यह आयत-

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا ......

(सूरः तौबा आयत 41) और आयत-

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ.... الخ

(सूरः तौबा आयत 120) यह सब आयतें

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً..... الخ

(सूरः तौबा आयत 122) से मन्सूख़ हैं। लेकिन इमाम इब्ने जरीर रह. इसकी तरदीद (खंडन) करते हैं और फ़रमाते हैं कि यह मन्सूख़ नहीं, बल्कि इन आयतों का मतलब यह है कि जिन्हें रसूलुल्लाह सल्ल. जिहाद के लिये निकलने को फ़रमायें वे फ़रमान सुनते ही उठ खड़े हों। हक़ीक़त में यह तौजीह (मतलब और व्याख्या) बहुत उम्दा है। वल्लाहु आलम

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝	अगर तुम लोग उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) मदद न करोगे तो अल्लाह तआ़ला आपकी मदद उस वक़्त कर चुका है जबकि आपको काफ़िरों ने वतन से निकाल दिया था, जबकि दो आदमियों में से एक आप थे जिस वक़्त कि दोनों ग़ार में थे, जबकि आप अपने हमराही से फ़रमा रहे थे कि तुम (कुछ) ग़म न करो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। सो अल्लाह तआ़ला ने आप (के दिल) पर अपनी तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और आपको ऐसे लश्करों से क़ुव्वत दी जिनको तुमने नहीं देखा, और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों की बात (और तदबीर) नीची कर दी, (कि वे नाकाम रहे) और अल्लाह ही का बोल-बाला रहा, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (40)

अपने रसूल की मदद के लिये उसका ख़ुदा काफ़ी है

तुम अगर मेरे रसूल की इमदाद व ताईद छोड़ दो तो मैं किसी का मोहताज नहीं हूँ। मैं ख़ुद उसका मददगार काफ़ी और उसका हाफ़िज़ हूँ। याद कर लो हिजरत वाले साल जबकि काफ़िरों ने आपको क़त्ल या क़ैद या देस से निकालने की साज़िश की थी और आप अपने सच्चे साथी हज़रत अबू बक्र के साथ अकेले मक्का शरीफ़ से निकल चले थे, कौन उसका मददगार था? तीन दिन ख़ौफ़ और डर की हालत में ग़ारे सौर में गुज़ारे, लेकिन उस वक़्त यह ख़ुदा ही की मदद थी कि मुश्रिक लोग परेशान हुए और मायूस होकर वापस चले गये, और आख़िरकार आप ग़ार से बाहर आये, मदीने की राह ली। सिद्दीक़े अकबर रज़ि. लम्हा-लम्हा घबरा रहे थे कि किसी को पता न चल जाये, ऐसा न हो कि वे रसूलुल्लाह सल्ल. को कोई तकलीफ़ पहुँचायें। हुज़ूर सल्ल. उनकी तसल्ली फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते कि अबू बक्र! उन दो के बारे में तेरा क्या ख़्याल है जिनका तीसरा ख़ुद अल्लाह तआ़ला है।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबू बक्र बिन अबू क़हाफ़ा ने नबी करीम सल्ल. से ग़ार (गुफ़ा) में कहा कि अगर इन काफ़िरों में से किसी ने अपने क़दमों को भी देख लिया तो वह हमें देख लेगा। आपने फ़रमाया उन दो को क्या समझता है जिनका तीसरा ख़ुद ख़ुदा है। ग़र्ज़ इस मौक़े पर भी अल्लाह तआ़ला ने

Maktab_e_Ashraf

आपकी मदद फ़रमाई। बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि मुराद इससे यह है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि. पर अल्लाह तआ़ला ने अपनी तरफ़ से तस्कीन (दिली इत्मीनान व सुकून) नाज़िल फ़रमाई। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. वग़ैरह की तफ़सीर यही है, और उनकी दलील यह है कि नबी करीम सल्ल. तो मुत्मईन और सुकून की हालत में थे ही, लेकिन उस ख़ास हालत में तसल्ली व सुकून का नये सिरे से भेजना कुछ इसके ख़िलाफ़ नहीं। इसी लिये इसी के साथ फ़रमाया कि अपने ग़ायबना लश्कर को उतारकर उसकी मदद फ़रमाई। यानी फ़रिश्तों के ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्र का कलिमा दबा दिया और अपने कलिमे का बोल-बाला किया, शिर्क को पस्त किया और तौहीद (इस्लाम) को ऊँचा किया।

हुज़ूर सल्ल. से सवाल होता है कि एक शख़्स अपनी बहादुरी के लिये, दूसरा क़ौमी तरफ़दारी के लिये, तीसरा लोगों को ख़ुश करने के लिये लड़ रहा है, तो इनमें से राहे ख़ुदा का मुजाहिद कौन है? आपने फ़रमाया जो अल्लाह के कलिमे (दीन) को बुलन्द करने की नीयत से लड़े, वह राहे ख़ुदा का मुजाहिद है। अल्लाह तआ़ला बदला लेने पर ग़ालिब है, जिसकी मदद करना चाहे करता है, उसके सामने कोई रोक न बन सके, न उसके इरादे को कोई बदल सके। कौन है जो उसके सामने होंठ हिला सके? या आँख मिला सके? उसके सब अक़वाल व अफ़आ़ल (यानी तमाम बातें और काम) हिक्मत व मस्लेहत, भलाई और ख़ूबी से पुर (भरे) हैं। अल्लाह की शान बड़ी है।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝	निकल पड़ो (चाहे) थोड़े सामान से (हो) और (चाहे) ज़्यादा सामान से (हो) और अल्लाह तआ़ला की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम यक़ीन रखते हो (तो देर मत करो)। (41)

जिहाद में शिर्कत का हुक्म

कहते हैं कि सूरः बराअत में यही आयत पहले उतरी है। इसमें है कि ग़ज़वा-ए-तबूक के लिये तमाम मुसलमानों को रसूले करीम सल्ल. के साथ निकल खड़े होना चाहिये। अहले किताब के काफ़िर रोमियों से जिहाद के लिये तमाम मोमिनों को चलना चाहिये, चाहे जी माने या न माने, चाहे आसानी नज़र आये या भारी पड़े। ज़िक्र हो रहा था कि कोई बुढ़ापे का कोई बीमारी का उज़्र कर देगा तो यह आयत उतरी। बूढ़े जवान सबको पैग़म्बर का साथ देने का आ़म हुक्म हुआ, किसी का कोई उज़्र (बहाना) न चला। हज़रत अबू तल्हा रज़ि. ने इस आयत की यही तफ़सीर की और इस हुक्म की तामील में मुल्क शाम में चले गये, और ईसाईयों से जिहाद करते ही रहे, यहाँ तक कि जान अपने मालिक को सौंपी। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

एक दूसरी रिवायत में है कि एक बार आप क़ुरआने करीम की तिलावत करते हुए इस आयत पर पहुँचे तो फ़रमाया कि हमारे रब ने तो मेरे ख़्याल से बूढ़े जवान सबको जिहाद की दावत दी है, मेरे प्यारे बच्चो! मेरा सामान तैयार करो, मैं मुल्के शाम के जिहाद में शिर्कत के लिये ज़रूर जाऊँगा। बच्चों ने कहा अब्बा जी! हुज़ूर सल्ल. की ज़िन्दगी तक आपने हुज़ूर सल्ल. की मातहती में जिहाद किया, ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में आप मुजाहिदों के साथ रहे, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में भी आपके जिहादी जोश मशहूर हैं। अब आपकी उम्र जिहाद की नहीं रही, आप घर पर आराम कीजिये, हम लोग आपकी तरफ़ से मैदाने जिहाद में निकलते हैं

और अपनी तलवारों के जौहर (हुनर) दिखाते हैं, लेकिन आप न माने और उसी वक़्त घर से रवाना हो गये, समुद्र के पार जाने के लिये कश्ती ली और चले। अभी मन्ज़िले मक़सूद से कई दिन की दूरी पर थे कि बीच समुद्र में रूह खुदा को सौंप दी। नौ दिन तक कश्ती चलती रही, लेकिन कोई जज़ीरा या टापू नज़र न आया कि वहाँ आपको दफ़नाया जाता, नौ दिन के बाद खुश्की पर उतरे और आपको दफ़न किया। अब तक लाश मुबारक जूँ की तूँ थी। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

और बहुत से बुज़ुर्गों से 'थोड़े और ज़्यादा सामान' की तफ़सीर जवान और बूढ़े से मन्क़ूल है। ग़र्ज़ जवान हों बूढ़े हों अमीर हों फ़ारिग़ हों मशग़ूल हों, खुशहाल हों या तंग-दस्त हों, भारी हों या हल्के हों, हाजतमन्द हों, कारीगर हों, आसानी वाले हों, सख़्ती वाले हों, पेशेवर हों या तिजारती हों, क़वी हों या कमज़ोर, जिस हालत में भी हों बिला उज़्र खड़े हो जायें और राहे खुदा में जिहाद के लिये चल पड़ें। इस मसले की तफ़सील के तौर पर इमाम अबू अ़मर औज़ाई का क़ौल है कि जब रोम के अन्दरूनी हिस्से पर हमला हो तो मुसलमान हल्के-फुल्के और सवार चलें और जब इन बन्दर गाहों के किनारों पर हमला हो तो हल्के बोझल सवार पैदल हर तरह निकल खड़े हो जायें। बाज़ हज़रात का क़ौल है कि यह 'फ़ लौ ला न-फ़-र...' वाली आयत से मन्सूख़ है। इस पर हम पूरी रोशनी डालेंगे। इन्शा-अल्लाह तआ़ला

एक रिवायत में है कि एक भारी बदन के बड़े शख़्स ने आपसे अपना हाल ज़ाहिर करके इजाज़त चाही, लेकिन आपने इनकार कर दिया और यह आयत उतरी। लेकिन ये हुक्म सहाबा पर सख़्त गुज़रा, फिर अल्लाह तआ़ला ने इसे आयत "लै-स अ़लज़्ज़ु-अफ़ा-इ..." (सूरः तौबा आयत 91) से मन्सूख़ कर दिया। यानी बूढ़ों, कमज़ोरों, बीमारों, तंगदस्त, फ़क़ीरों पर जबकि उनके पास ख़र्च तक न हो अगर वे दीने खुदा और नबी पाक की शरीअ़त के हिमायती, तरफ़दार और ख़ैरख़्वाह हों तो मैदाने जंग में न जाने पर कोई हर्ज नहीं। हज़रत अबू अय्यूब रज़ि. पहले ग़ज़वे (इस्लामी लड़ाई) से लेकर पूरी उम्र तक सिवाय एक साल के हर ग़ज़वे में मौजूद रहे और फ़रमाते रहे कि 'हल्के भारी' दोनों को निकलने का हुक्म है और इनसान की हालत इन दो हालतों के अ़लावा नहीं होती।

हज़रत अबू राशिद हुबरानी का बयान है कि मैंने हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद को हिमस में देखा कि हड्डी उतर गई है, फिर भी होदज में सवार होकर जिहाद को जा रहे हैं, तो मैंने कहा अब तो शरीअ़त आपको माज़ूर समझती है, फिर आप यह तकलीफ़ क्यों उठा रहे हैं? आपने फ़रमाया सुनो! सूरः बराअत हमारे सामने उतरी है, जिसमें हुक्म है कि हल्के भारी सब जिहाद को जाओ। हज़रत हय्यान बिन ज़ैद कहते हैं कि सफ़वान बिन अ़मर हिमस के सरदार के साथ जराजमा की तरफ़ जिहाद के लिये चले, मैंने दमिश्क़ के क़रीब एक बड़ी उम्र के बुज़ुर्ग को देखा कि हमला करने वालों के साथ अपने ऊँट पर सवार वह भी आ रहे हैं। उनकी भंवें उनकी आँखों पर पड़ रही हैं। बहुत ज़्यादा बूढ़े हो चुके हैं। मैंने पास जाकर कहा चचा जान! आप तो अब अल्लाह के नज़दीक भी माज़ूर हैं। यह सुनकर आपने अपनी आँखों पर से भंवें हटा लीं और फ़रमाया भतीजे सुनो! अल्लाह तआ़ला ने हल्के और भारी होने की दोनों सूरतों में हमसे जिहाद में निकलने की तलब की है। सुनो! जिससे अल्लाह तआ़ला को मुहब्बत होती है उसकी आज़माईश भी होती है, फिर उस पर साबित-क़दमी (दीन पर जमाव) के बाद खुदा की रहमत होती है। सुनो! खुदा की आज़माईश शुक्र व सब्र, अल्लाह के ज़िक्र और तौहीदे ख़ालिस से होती है।

जिहाद के हुक्म के बाद इस कायनात का मालिक अपनी राह में अपने रसूल की मर्ज़ी में माल व जान के ख़र्च का हुक्म देता है, और फ़रमाता है कि दुनिया व आख़िरत की भलाई इसी में है। दुनियावी नफ़ा तो

यह है कि मामूली सा ख़र्च होगा और बहुत-सी ग़नीमतें मिलेंगी, आख़िरत का नफ़ा यह है कि इससे बढ़कर कोई नेकी नहीं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे दो बातों में से एक ज़रूरी है, वह मुजाहिद को या तो शहीद करके जन्नत का मालिक बना देता है या उसे सलामती और ग़नीमत (जंग से हासिल हुए माल) के साथ वापस लौटाता है। ख़ुद ख़ुदावन्दे आ़लम का फ़रमान है कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया है, इसके बावजूद कि तुम इससे मुँह फेरते हो। लेकिन बहुत मुम्किन है कि तुम्हारी न चाही हुई चीज़ दर असल तुम्हारे लिये बेहतर हो, और हो सकता है कि तुम्हारी पसन्द की चीज़ वास्तव में तुम्हारे हक़ में बेहद नुक़सानदेह हो। सुनो! तुम बिल्कुल नादान हो और अल्लाह तआ़ला पूरा-पूरा दाना बीना (सब कुछ जानने और देखने वाला) है। हुज़ूर सल्ल. ने एक शख़्स से फ़रमाया- मुसलमान हो जा। उसने कहा जी तो चाहता नहीं, आपने फ़रमाया अगरचे न चाहे। (मुस्नद अहमद)

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّا تَّبَعُوكَ وَلَـٰكِنۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝	अगर कुछ हाथ के हाथ मिलने वाला होता और सफ़र भी मामूली-सा होता तो ये (मुनाफ़िक़) लोग आपके साथ हो लेते, लेकिन उनको तो सफ़र की दूरी ही दूर-दराज़ मालूम होने लगी। और अभी ख़ुदा की क़समें खा जाएँगे कि अगर हमारे बस की बात होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते, ये लोग (झूठ बोल-बोलकर) अपने आपको तबाह कर रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला जानता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं। (42)

ع ٦ ١٢

दुनिया की तलब

जो लोग ग़ज़्वा-ए-तबूक में जाने से रह गये थे और उसके बाद हुज़ूर सल्ल. के पास आ-आकर अपने झूठे उज़्र (मजबूरी और बहाने) पेश करने लगे थे, उन्हें इस आयत में डाँटा जा रहा है कि दर असल उन्हें कोई माज़ूरी नहीं थी, अगर कोई आसान ग़नीमत और क़रीब का सफ़र होता तो ये लालची साथ हो लेते, लेकिन मुल्के शाम तक के लम्बे सफ़र ने इनके घुटने तोड़ दिये। इस मशक़्क़त के ख़्याल ने इनके ईमान कमज़ोर और हिम्मत पस्त कर दी। अब ये आ-आकर झूठी क़समें खा-खाकर ख़ुदा के रसूल को धोखा दे रहे हैं कि अगर कोई उज़्र न होता तो भला हम आपके साथ चलने से पीछे न रहते, हम तो जान व दिल से आपके क़दमों में हाज़िर हो जाते। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उनके झूठ का मुझे इल्म है, उन्होंने तो अपने आपको तबाह व बरबाद कर लिया।

عَفَا اللَّهُ عَنكَ ۚ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ۝ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ	अल्लाह तआ़ला ने आपको माफ़ (तो) कर दिया (लेकिन) आपने उनको (ऐसी जल्दी) इजाज़त क्यों देदी थी? जब तक कि आपके सामने सच्चे लोग ज़ाहिर न हो जाते, और आप झूठों को मालूम न कर लेते। (43) जो लोग

Maktab E Ashraf

بِـاللّٰـهِ وَالْيَـوْمِ الْاٰخِـرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِـاَمْـوَالِهِـمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰـهُ عَلِيْمٌ ۢ بِـالْـمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّـمَـا يَسْتَـاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِىْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝	अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपने माल और जान से जिहाद करने के बारे में आपसे रुख़्सत न माँगेंगे (बल्कि वे हुक्म के साथ दौड़ पड़ेंगे), और अल्लाह तआला (उन) मुत्तक़ियों को ख़ूब जानता है। (44) अलबत्ता वे लोग (जिहाद में न जाने की) आपसे रुख़्सत माँगते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल शक में पड़े हैं, सो वे अपने शकों में पड़े हुए हैरान हैं। (45)

अल्लाह की शाने करम

सुब्हानल्लाह! अपने महबूब से कैसी प्यार भरी बातें हो रही हैं। सख़्त बात सुनाने से पहले ही माफ़ी का ऐलान सुनाया जा रहा है। उसके बाद रुख़्सत (छूट और रियायत) देने का अ़हद भी सूरः नूर में सुना दिया जाता है और अल्लाह का इरशाद होता है:

فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ. الخ

यानी उनमें से कोई अगर आपसे अपने किसी काम धंधे और मशग़ूलियत की वजह से इजाज़त चाहे तो आप जिसे चाहें इजाज़त दे सकते हैं।

यह आयत उनके बारे में उतरी है जिन लोगों ने आपस में तय कर लिया था कि हुज़ूर सल्ल. से इजाज़त तलब करें, अगर इजाज़त हो जाये तो ठीक है, और अगर इजाज़त न भी दें फिर भी हम इस ग़ज़्वे (लड़ाई) में जायेंगे तो हरगिज़ नहीं। इसी लिये अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर उन्हें इजाज़त न मिलती तो इतना फ़ायदा ज़रूर होता कि सच्चे उज़्र वाले और झूठे उज़्र, बहाने बनाने वाले सामने आ जाते। नेक व बद में ज़ाहिरी फ़र्क़ हो जाता, इताअ़त करने वाले तो हाज़िर हो जाते, नाफ़रमान बावजूद इजाज़त न मिलने के भी न निकलते। क्योंकि उन्होंने तो तय कर लिया था कि हुज़ूर हाँ कहें या न कहें हम तो जिहाद में जायेंगे ही नहीं। इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने इसके बाद की आयत में फ़रमाया- यह मुम्किन ही नहीं कि ईमान वाले लोग राहे ख़ुदा के जिहाद से रुकने की इजाज़त तुझसे तलब करें, वे तो जिहाद को ख़ुदा की ख़ुशनूदी का ज़रिया समझकर अपने जान व माल के फ़िदा करने के इच्छुक रहते हैं, अल्लाह भी उस मुतक़्क़ी जमाअ़त से बख़ूबी वाक़िफ़ व आगाह है, यह बिना शरई उज़्र के और बहाने बनाकर जिहाद से रुक जाने की इजाज़त तलब करने वाले तो बेईमान लोग हैं, जिन्हें आख़िरत की जज़ा (बदले) की कोई उम्मीद ही नहीं। उनके दिल आज तक तेरी शरीअ़त से शक व शुब्हे में ही हैं, ये हैरान व परेशान हैं, एक क़दम इनका आगे बढ़ता है तो दूसरा पीछे हटता है। इन्हें साबित-क़दमी और इस्तिक़लाल (यानी दीन पर जमाव) नहीं, ये हलाक होने वाले हैं। ये न इधर हैं न उधर, ये ख़ुदा के गुमराह किये हुए हैं, तू इनके संवारने और सुधारने का कोई रास्ता न पायेगा।

Maktab E Ashraf

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّ لٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَ۠اوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝	और अगर वे लोग (लड़ाई में) चलने का इरादा करते तो उसका कुछ सामान तो दुरुस्त "यानी तैयारी" करते, लेकिन (ख़ैर हुई) अल्लाह तआ़ला ने उनके जाने को पसन्द नहीं किया, इसलिए उनको तौफ़ीक़ नहीं दी और (तक्वीनी हुक्म की वजह से यूँ) कह दिया गया कि अपाहिज लोगों के साथ तुम भी यहाँ ही धरे रहो। (46) अगर ये लोग तुम्हारे साथ शामिल होकर जाते तो सिवाय इसके कि और दोगुना फ़साद करते और क्या होता, और तुम्हारे बीच फ़ितना डालने की फ़िक्र में दौड़े-दौड़े फिरते, और (अब भी) तुममें उनके कुछ जासूस (मौजूद) हैं, और (उन) ज़ालिमों को अल्लाह तआ़ला ख़ूब समझेगा। (47)

गुनाह करके झूठा बहाना बनाना और भी बुरा है

यह जो उज़्र करते (बहाना बनाते और मजबूरी ज़ाहिर करते) हैं, इनके ग़लत होने की एक ज़ाहिरी दलील यह भी है कि अगर इनका इरादा होता तो कम से कम सफ़र का सामान तो बाँधकर तैयार कर लेते, लेकिन ये तो ऐलान और हुक्म के बाद भी दिनों के गुज़रने पर भी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। एक तिनका भी इधर से उधर न किया। बात यह है कि ख़ुदा को इनका तुम्हारे साथ निकलना पसन्द ही नहीं था, इसलिये इन्हें पीछे हटा दिया। और तक़दीरी तौर पर इनसे कह दिया गया कि तुम तो बैठने वालों का ही साथ दो (यानी इनकी तक़दीर ही में ऐसी नेकबख़्ती न थी)।

सुनो! इनके साथ को नापसन्द रखने की वजह यह थी कि ये पूरे नामुराद, आला दर्जे के बुज़दिल, बड़े ही डरपोक हैं। अगर ये तुम्हारे साथ होते तो ज़रा सी खड़-पड़ होते ही यह भाग खड़े होते और उनके साथ ही तुम में भी फ़साद बरपा हो जाता। ये इधर की उधर, उधर की इधर लगा-बुझाकर बात का बतंगड़ बना कर आपस में फूट व दुश्मनी डलवा देते, और कोई नया फ़ितना खड़ा करके तुम्हें आपस में ही उलझा देते। इनके मानने वाले, इनके हम-ख़्याल, इनकी पॉलीसी को अच्छी नज़र से देखने वाले खुद तुम में भी मौजूद हैं, वे अपने भोलेपन से इनकी शरारतों से बेख़बर रहते हैं, जिसका नतीजा मोमिनों के हक़ में निहायत बुरा निकलता। आपस में ख़राबी और बिगाड़ फैल जाता।

मुजाहिद वग़ैरह का क़ौल है- मतलब यह है कि उनके जासूस भी तुम में लगे हुए हैं जो तुम्हारी ज़रा ज़रा सी ख़बरें उन्हें पहुँचाते हैं, लेकिन यह मायने करने से वह लताफ़त बाक़ी नहीं रहती जो आयत के शुरू में है, यानी उन लोगों का तुम्हारे साथ निकलना ख़ुदा को इसलिये भी नापसन्द रहा कि तुममें बाज़ वे भी हैं जो उनकी मान लिया करते हैं। यह तो बहुत दुरुस्त है। लेकिन जासूसी की कोई ख़ुसूसियत उनके न निकलने की वजह के लिये नहीं हो सकती, इसी लिये क़तादा वग़ैरह मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है। इमाम

मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह. फ़रमाते हैं कि इजाज़त तलब करने वालों में अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल और जद बिन क़ैस भी था, और यही बड़े-बड़े सरदार और रुसूख़ रखने वाले मुनाफ़िक़ थे, अल्लाह ने इन्हें दूर डाल दिया, अगर ये साथ होते तो इनकी मुँह-देखी मानने वाले वक़्त पर इनके साथ होकर मुसलमानों के नुक़सान का कारण बन जाते। इस्लामी लश्कर में मायूसी और गिरावट फैल जाती, क्योंकि ये लोग रुसूख़ वाले और असर रखने वाले थे, और कुछ मुसलमान इनके हाल से नावाक़िफ़ होने की वजह से इनके ज़ाहिरी इस्लाम और बातें बनाने पर फ़िदा थे, और अब तक उनके दिलों में इनकी मुहब्बत थी। यह उनकी लाइल्मी (अज्ञानता) की वजह से था, सच है पूरा इल्म अल्लाह ही को है। उसी अपने इल्मे ग़ैब की बिना पर वह फ़रमाता है कि तुम मुसलमान इनका न निकलना ही ग़नीमत समझो, ये होते तो और फ़साद व फ़ितना बरपा करते। न करते न करने देते।

इसी सबब अल्लाह का फ़रमान है कि अगर कुफ़्फ़ार दोबारा भी दुनिया में लौटाये जायें तो नये सिरे से फिर वही करें जिससे मना किया जाये, और ये झूठे के झूठे ही रहें। एक और आयत में है कि अल्लाह के इल्म में इनके दिलों में अगर कोई भी ख़ैर होती तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर इन्हें सुना देता, लेकिन अब तो हाल यह है कि सुनें भी तो मुँह मोड़कर लौट जायें। एक और जगह है कि अगर हम इन पर लिख देते कि तुम आपस में मौत का खेल खेलो या वतन से निकल जाओ तो सिवाय बहुत कम लोगों के ये हरगिज़ उसे न करते। हालाँकि इनके हक़ में बेहतर और अच्छा यही था कि जो नसीहत इन्हें की जाये ये उस पर अ़मल करें ताकि उस सूरत में हम इन्हें अपने पास से बड़ा अज्र दें और सीधा रास्ता दिखायें। और भी ऐसी बहुत सी आयतें हैं।

उन्होंने तो पहले भी फ़ितना खड़ा करने की फ़िक्र की थी, और आपके लिए कार्रवाइयों की उलट-फेर करते ही रहे, यहाँ तक कि हक़ (का वायदा) आ गया, और (उसका आना यह कि) अल्लाह का हुक्म ग़ालिब रहा, और उनको नागवार ही गुज़रता रहा। (48)	لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُونَ ○

इस्लाम की तरक़्क़ी और कुफ़्र की ताक़त टूटना

अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ों से नफ़रत दिलाने के लिये फ़रमा रहा है कि क्या भूल गये मुद्दतों ये फ़ितना व फ़साद की आग सुलगाते रहे हैं, और आपके काम को उलट देने की बीसियों तदबीरें कर चुके हैं। मदीने में आपका क़दम आते ही तमाम अ़रब ने एक होकर मुसीबतों की बारिश आप पर कर दी, बाहर से वे चढ़ दौड़े, अन्दर से मदीना के यहूद और मुनाफ़िक़ों ने बग़ावत कर दी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने एक ही दिन में सबकी कमानें उतार दीं। इनके जोड़ ढीले कर दिये, इनके जोश ठंडे कर दिये, बदर की लड़ाई ने इनके होश व हवास उड़ा दिये और इनके अरमान ज़िबह कर दिये। मुनाफ़िक़ों के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने साफ़ कह दिया कि बस अब ये लोग हमारे बस के नहीं रहे, अब तो सिवाय इसके कोई चारा नहीं कि ज़ाहिर में इस्लाम की मुवाफ़क़त की जाये, दिल में जो है सो है। वक़्त आने दो, वक़्त पर देखा जायेगा और दिखाया जायेगा। फिर जैसे-जैसे हक़ की बुलन्दी और इस्लाम की तरक़्क़ी होती गई ये जलते-भुनते रहे, आख़िर हक़

Maktab E Ashraf

ने क़दम जमाये और अल्लाह का दीन ग़ालिब आ गया, और ये यूँ ही पेट पीटते और डंडे बजाते रहे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ○	और उन (ख़िलाफ़ करने वाले मुनाफ़िक़ों) में बाज़ा शख़्स वह है जो कहता है कि मुझको इजाज़त दीजिये और मुझको ख़राबी में न डालिए। ख़ूब समझ लो कि ये लोग ख़राबी में तो पड़ ही चुके, और यक़ीनन (आख़िरत में) दोज़ख़ उन काफ़िरों को घेरेगी। (49)

अपने आपको फ़रेब देना

जद बिन कैस से हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- इस साल ईसाईयों के जिला-वतन करने में तू हमारा साथ देगा? उसने कहा या रसूलल्लाह! मुझे तो माफ़ रखिये, मेरी सारी क़ौम जानती है कि मैं औरतों का बुरी तरह रसिया हूँ। ईसाई औरतों को देखकर मुझसे तो अपना नफ़्स रोका न जायेगा। आपने उससे मुँह मोड़ लिया। इसी का बयान इस आयत में है कि इस मुनाफ़िक़ ने यह बहाना बनाया, हालाँकि वह फ़ितने में तो पड़ा हुआ है। रसूलुल्लाह सल्ल. का साथ छोड़ना, जिहाद से मुँह मोड़ना यह क्या कम फ़ितना है। यह मुनाफ़िक़ बनू सलमा क़बीले का बड़ा सरदार था। हुज़ूर सल्ल. ने जब इस क़बीले के लोगों से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारा सरदार कौन है? उन्होंने कहा जद बिन कैस, जो बड़ा ही बख़ील है। आपने फ़रमाया बुख़्ल (कन्जूसी) से बढ़कर और क्या बुरी बीमारी है, सुनो! अब से तुम्हारा सरदार सफ़ेद और ख़ूबसूरत नौजवान बशर बिन बरा बिन मारूर है। जहन्नम काफ़िरों को घेर लेने वाली है, न वे उससे बच सकते हैं न भाग सकते हैं, न निजात पा सकते हैं।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ○ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ○	अगर आपको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो वह उनके लिए ग़म का सबब होती है, और अगर आप पर कोई हादसा आ पड़ता है तो (ख़ुश होकर) कहते हैं कि हमने तो (इसी लिए) पहले से अपना एहतियात (का पहलू) इख़्तियार कर लिया था, और वे ख़ुश होते हुए वापस चले जाते हैं। (50) आप फ़रमा दीजिए कि हम पर कोई हादसा नहीं पड़ सकता मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमाया है, वह हमारा मालिक है, और सब मुसलमानों को अपने सब काम अल्लाह ही के सुपुर्द रखने चाहिएँ। (51)

Maktaba E Ashraf

मुनाफ़िक़ों की दुश्मनी व बैर

इन बुरे और ख़बीस लोगों की अन्दरूनी ख़बासत (गंदगी और नाफ़रमानी) का बयान हो रहा है कि मुसलमानों की विजय व मदद से, उनकी भलाई और तरक़्क़ी से, उनके तन बदन में आग लग जाती है। और अगर ख़ुदा न करे यहाँ इसके ख़िलाफ़ हुआ तो अलाप-अलाप कर अपनी चालाकी के अफ़साने गाये जाते हैं, कि मियाँ इसी वजह से तो हम इनसे बचते रहे। ख़ुशी से बग़लें बजाने लगते हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इनको जवाब दे कि रंज व राहत और हम ख़ुद अल्लाह की तक़दीर और उसकी मंशा के अधीन हैं, वह हमारा मौला है, वह हमारा आक़ा है, वह हमारी पनाह है, हम मोमिन हैं और मोमिनों का भरोसा उसी पर होता है। वह हमें काफ़ी और बस है, वह हमारा कारसाज़ है और वह बेहतरीन कारसाज़ है।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ۝ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝

आप फ़रमा दीजिए कि तुम तो हमारे हक़ में दो बेहतरियों में से एक बेहतरी ही के मुन्तज़िर रहते हो, और हम तुम्हारे हक़ में इसके मुन्तज़िर रहा करते हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम पर कोई अ़ज़ाब भेजेगा, (चाहे) अपनी तरफ़ से (दुनिया या आख़िरत में) या हमारे हाथों से। सो तुम (अपने तौर पर) इन्तिज़ार करो (और) हम तुम्हारे साथ (अपने तौर पर) इन्तिज़ार में हैं। (52) आप फ़रमा दीजिए कि तुम (चाहे) ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, तुम किसी तरह (ख़ुदा के नज़दीक) मक़बूल नहीं, (क्योंकि) बेशक तुम हुक्म के ख़िलाफ़ करने वाले लोग हो। (53) और उनकी (ख़ैर) ख़ैरात क़बूल होने से और कोई चीज़ इसके अ़लावा रुकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और वे लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर हारे जी से, और ख़र्च नहीं करते मगर नागवारी के साथ। (54)

हालात का उलट-फेर और उतार-चढ़ाव

जिहाद में मुसलमानों के दो ही अन्जाम होते हैं, दोनों हर तरह अच्छे हैं। अगर शहादत मिली तो जन्नत अपनी है, और अगर फ़तह (विजय) मिली तो ग़नीमत (माल) व अज्र है। पस ऐ मुनाफ़िक़ो! तुम जो हमारे बारे में सोच रहे हो वह इन्हीं दो अच्छाईयों में से एक है, और हम जिस बात का इन्तिज़ार तुम्हारे बारे में कर रहे हैं वह दो बुराईयों में से एक का है। यानी या तो यह कि ख़ुदा का अ़ज़ाब डायरेक्ट तुम पर आ जाये, या हमारे हाथों तुम पर ख़ुदाई मार पड़े, कि क़त्ल व क़ैद हो जाओ। अच्छा अब तुम अपनी जगह और

Maktab E Ashraf

हम अपनी जगह मुन्तज़िर (प्रतीक्षा करते) रहें। देखें ग़ैब के पर्दे से क्या ज़ाहिर होता है।

तुम्हारे ख़र्च करने का खुदा भूखा नहीं, तुम ख़ुशी से दो तो और नाराज़गी से दो तो, वह क़बूल फ़रमायेगा नहीं, इसलिये कि तुम फ़ासिक़ (बदकार और गुनाहगार) लोग हो, तुम्हारे ख़र्च के क़बूल न होने का कारण तुम्हारा कुफ़्र है, और आमाल की क़बूलियत की शर्त कुफ़्र का न होना बल्कि ईमान का होना है, साथ ही किसी अ़मल में तुम्हारा नेक इरादा और सच्ची कोशिश व हिम्मत नहीं। नमाज़ को आते हो तो भी मरे हुए दिल से गिरते पड़ते, पिछड़ते, सुस्त और काहिल होकर देखा देखी मजमें में दोचार दे भी देते हो तो मरे जी से, दिल की तंगी से। नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्ल. फ़रमाते हैं कि अल्लाह नहीं थकता जब तक तुम न थक जाओ। अल्लाह पाक है वह पाक ही चीज़ क़बूल फ़रमाता है। मुत्तक़ियों के आमाल क़बूल होते हैं, तुम फ़ासिक़ हो, तुम्हारे आमाल क़बूलियत के दर्जे से गिरे हुए हैं।

सो उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआ़ला को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र की हुई) चीज़ों की वजह से दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) उनको अ़ज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनकी जान कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए। (55)	فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

नाक़ाबिले एतिबार हालात

उनके माल व औलाद को ललचाई हुई नज़रों से न देख, उनकी दुनिया की ख़ुशहाली की कोई हक़ीक़त न गिन, यह उनके हक़ में कोई भली चीज़ नहीं, यह तो उनके लिये दुनियावी सज़ा भी है कि न उसमें से ज़कात निकले न ख़ुदा के नाम की ख़ैरात हो। क़तादा रह. कहते हैं- यहाँ मतलब आगे पीछे है, यानी तुझे उनके माल व औलाद अच्छे न लगने चाहियें, ख़ुदा का इरादा इससे उन्हें इस दुनिया की ज़िन्दगी में ही सज़ा देने का है। पहला क़ौल हज़रत हसन बसरी का है, वही अच्छा और मज़बूत है। इमाम इब्ने जरीर रह. भी इसी को पसन्द फ़रमाते हैं। इसमें ये ऐसे फंसे रहेंगे कि मरते दम तक राहे हिदायत नसीब नहीं होगी। यूँ ही धीरे-धीरे पकड़ लिये जायेंगे और इन्हें पता भी नहीं चलेगा, यही शान व दबदबा, माल व दौलत जहन्नम की आग बन जायेगा।

और ये (मुनाफ़िक़) लोग अल्लाह तआ़ला की क़समें खाते हैं कि वे तुममें के हैं। हालाँकि (हक़ीक़त में) वे तुममें के नहीं, लेकिन (बात यह है कि) वे डरपोक लोग हैं। (56) उन लोगों को अगर कोई पनाह मिल जाती, या ग़ार या कोई घुस-बैठने की ज़रा जगह (मिल जाती) तो ये ज़रूर मुँह उठाकर उधर चल देते (और ईमान का इज़हार न करते)। (57)	وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝

Mahtab E Ashraf

झूठी क़समें

उनकी बुज़दिली, उनकी ग़ैर-मुस्तक़िल मिज़ाजी (मिज़ाज का एक जगह न जमना), उनकी हैरानी व परेशानी, घबराहट और बेइत्मीनानी का यह हाल है कि तुम्हारे पास आकर तुम्हारे दिल में घर करने के लिये और तुम्हारे हाथों से बचने के लिये बड़ी लम्बी-चौड़ी ज़बरदस्त क़समें खाते हैं कि वल्लाह हम तुम्हारे हैं, हम मुसलमान हैं, हालाँकि हक़ीक़त इसके उलट और विपरीत है। यह सिर्फ़ ख़ौफ़ व डर है जो उनके पेट में दर्द पैदा कर रहा है। अगर आज उन्हें अपने बचाव के लिये कोई क़िला मिल जाये, अगर आज ये कोई सुरक्षित ग़ार (खोह और गुफ़ा) देख लें या किसी अच्छी सुरंग का पता उन्हें चल जाये तो ये सारे के सारे दम भर में उस तरफ़ दौड़ पड़ें, तेरे पास उनमें से एक भी नज़र न आये, क्योंकि उन्हें तुझसे कोई मुहब्बत या ताल्लुक़ तो नहीं है, यह तो ज़रूरत, मजबूरी और ख़ौफ़ की बिना पर तुम्हारी चापलूसी कर लेते हैं, यही वजह है कि जैसे-जैसे इस्लाम तरक़्क़ी कर रहा है ये बचते चले जा रहे हैं। मोमिनों की हर ख़ुशी से ये जलते तड़पते हैं, उनकी तरक़्क़ी इन्हें एक आँख नहीं भाती। मौक़ा मिल जाये तो आज भाग छूटें।

और उनमें बाज़ वे लोग हैं जो सदक़ों (को तक़सीम करने) के बारे में आप पर ताना मारते हैं। सो अगर उन (सदक़ों) में से (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़) उनको मिल जाता है तो वे राज़ी हो जाते हैं, और अगर उन (सदक़ों) में से उनको (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़) नहीं मिलता तो वे नाराज़ हो जाते हैं। (58) और (उनके लिए बेहतर होता) अगर वे लोग उस पर राज़ी रहते जो कुछ उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने दिया था, और (यूँ) कहते कि हमको अल्लाह काफ़ी है, आईन्दा अल्लाह अपने फ़ज़्ल से हमको (और) देगा, और उसके रसूल देंगे, हम (शुरू से) अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब (झुके हुए) हैं। (59)	وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝ ع ١٣

एक ग़लत इल्ज़ाम

बाज़ मुनाफ़िक़ नबी करीम सल्ल. पर तोहमत लगाते कि आप ज़कात के माल की सही तक़सीम नहीं करते वग़ैरह, और इससे उनका इरादा सिवाय अपने नफ़े के और कुछ न था। उन्हें कुछ मिल जाये तो राज़ी हैं, और ये रह जायें तो नाराज़ हो जायें। हुज़ूर सल्ल. ने ज़कात का माल जब इधर-उधर तक़सीम कर दिया तो अन्सार में से कोई बोला कि यह अ़दल (इन्साफ़) नहीं। इस पर यह आयत उतरी। एक और रिवायत में है कि एक नौमुस्लिम देहाती हुज़ूर सल्ल. को सोना चाँदी बाँटते हुए देखकर कहने लगा कि अगर अल्लाह ने तुझे अ़दल (इन्साफ़) का हुक्म दिया है तो तू अ़दल नहीं करता। आपने फ़रमाया तू तबाह हो, अगर मैं भी

Maktab E Ashraf

आदिल (इन्साफ़ करने वाला) नहीं तो ज़मीन पर कौन आदिल होगा? फिर आपने फ़रमाया इससे और इस जैसों से बचो, मेरी उम्मत में इस जैसे लोग होंगे, क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वे जब निकलें उन्हें क़त्ल कर डालो। फिर जब ज़ाहिर हों फिर गर्दनें मारो। आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम न मैं तुम्हें दूँ न तुमसे रोकूँ, मैं तो एक ख़ज़ानची हूँ।

जंगे हुनैन के माले ग़नीमत की तक़सीम के वक़्त ज़ुल-ख़ुवैसर हरक़ूस नाम के एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल. पर एतिराज़ किया था और कहा था तू अदल नहीं करता, इन्साफ़ से काम कर। आपने फ़रमाया अगर मैं भी अदल न करूँ तो फिर तेरी बरबादी कहीं नहीं जा सकती। जब उसने पीठ फेर ली तो आपने फ़रमाया इसकी नस्ल से एक क़ौम निकलेगी जिनकी नमाज़ों के मुक़ाबले में तुम में से हर एक को अपने रोज़े हक़ीर (बेहक़ीक़त) मालूम होंगे, लेकिन वे दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार से, तुम्हें जहाँ भी वे मिल जायें उनके क़त्ल में कमी न करो। आसमान के नीचे उन मक़्तूलों (क़त्ल होने वालों) से बुरा मक़्तूल और कोई नहीं.....।

फिर इरशाद है कि उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल. के हाथों जो कुछ भी अल्लाह ने दिलवाया था अगर ये उस पर क़नाअ़त करते, सब्र व शुक्र करते और कहते कि अल्लाह हमें काफ़ी है, वह अपने फ़ज़्ल से अपने रसूल के हाथों हमें और भी दिलवायेगा, हमारी उम्मीदें अल्लाह की ज़ात से वाबस्ता हैं, तो यह उनके हक़ में बेहतर था। पस इसमें ख़ुदा की तालीम है कि ख़ुदा तआ़ला जो दे उस पर इनसान को सब्र व शुक्र करना चाहिये, तवक्कुल और भरोसा उस एक ज़ात पर रखे, उसी को काफ़ी वाफ़ी समझे। रग़बत व तवज्जोह, आशा व उम्मीद और अपेक्षा उसकी ज़ाते पाक से रखे। रसूले करीम सल्ल. की इताअ़त में ज़रा सा भी फ़र्क़ न करे और ख़ुदा तआ़ला से तौफ़ीक़ तलब करे कि जो अहकाम हों उन्हें बजा लाने और जो मना किये गये काम हों उन्हें छोड़ देने, और जो ख़बरें हों उन्हें मान लेने और सही इताअ़त करने की वह रहबरी फ़रमाये।

إِنَّمَا الصَّدَقَٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسَٰكِينِ وَالْعَٰمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغَٰرِمِينَ وَفِى سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ○	सदक़ात तो सिर्फ़ ग़रीबों का हक़ है और मोहताजों का, और जो कार्यकर्ता उन सदक़ात पर मुतैयन हैं, और जिनकी दिलजोई करना (मन्ज़ूर) है, और ग़ुलामों की गर्दन छुड़ाने में, और क़र्ज़दारों के क़र्ज़े में, और जिहाद में, और मुसाफ़िरों में, यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से (मुक़र्रर) है, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले (और) बड़ी हिक्मत वाले हैं। (60)

ज़कात व सदक़ात के मसारिफ़

ऊपर की आयत में उन जाहिल मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र था जो रसूलुल्लाह सल्ल. की ज़ात पर सदक़ात की तक़सीम में एतिराज़ करते थे। अब यहाँ इस आयत में बयान फ़रमा दिया कि ज़कात की तक़सीम पैग़म्बर की मर्ज़ी पर मौक़ूफ़ नहीं, बल्कि हमारे बतलाये हुए मसारिफ़ (ख़र्च करने की जगहों) में ही लगती है। हमने ख़ुद इसकी तक़सीम कर दी है, किसी और के सुपुर्द नहीं की।

अबू दाऊद में है, ज़ियाद इब्ने हारिस सदाई रज़ि. फ़रमाते हैं- मैंने सरकारे नुबुव्वत में हाज़िर होकर आपके हाथ पर बैअ़त की, एक शख़्स ने आकर आपसे सवाल किया कि मुझे सदक़े में से कुछ दिलवाईये। आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला नबी और ग़ैर-नबी किसी के हुक्म पर ज़कात की तक़सीम के बारे में राज़ी नहीं हुआ, यहाँ तक कि ख़ुद उसने तक़सीम कर दी है। आठ मसारिफ़ (ख़र्च करने के मौक़े) मुक़र्रर कर दिये हैं, अगर तू उनमें से किसी में है तो मैं तुझे दे सकता हूँ। इमाम शाफ़ई वग़ैरह तो फ़रमाते हैं कि ज़कात के माल की तक़सीम इन आठों क़िस्म के तमाम लोगों पर करनी वाजिब है, और इमाम मालिक रह. वग़ैरह का क़ौल है कि वाजिब नहीं बल्कि इनमें से किसी एक को ही दे देना काफ़ी है, अगरचे और क़िस्म के लोग भी हों। आ़म अहले इल्म का क़ौल भी यही है, आयत में मसारिफ़ का बयान है, न कि इन सबके देने के वाजिब होने का ज़िक्र। इन अक़्वाल की दलीलों और बहसों की जगह यह किताब नहीं। वल्लाहु आलम

फ़क़ीरों को सबसे पहले इसलिये बयान फ़रमाया कि उनकी हाजत (ज़रूरत) बहुत सख़्त है, अगरचे इमाम अबू हनीफ़ा रह. के नज़दीक मिस्कीन फ़क़ीर से भी बुरे हाल वाला है। हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि जिसके हाथ के नीचे माल न हो उसी को फ़क़ीर नहीं कहते, बल्कि फ़क़ीर वह भी है जो मोहताज होकर गिर पड़ा हो, अगरचे कुछ खाता-पीता कमाता भी हो। इब्ने उलिय्या कहते हैं कि इस रिवायत में अख़्लक़ का लफ़्ज़ है, अख़्लक़ कहते हैं हमारे नज़दीक तिजारत को, लेकिन जमहूर इसके ख़िलाफ़ हैं और बहुत से हज़रात फ़रमाते हैं कि फ़क़ीर वह है जो सवाल से बचने वाला हो, और मिस्कीन वह है जो साईल (सवाल करने वाला) हो, लोगों के पीछे लगने वाला हो और घरों और गलियों में घूमने वाला हो।

क़तादा रह. कहते हैं कि फ़क़ीर वह है जो बीमारी वाला हो और मिस्कीन वह है जो सही सालिम जिस्म वाला हो। इब्राहीम कहते हैं कि मुराद इससे मुहाजिर फ़ुक़रा हैं। सुफ़ियान सौरी कहते हैं यानी देहातियों को इसमें से कुछ भी न मिले। इक्रिमा कहते हैं कि मुसलमान फ़क़ीरों को मिस्कीन न कहो, मिस्कीन तो सिर्फ़ अहले किताब के लोग हैं।

अब वे हदीसें सुनिये जो इन आठ क़िस्मों के मुताल्लिक़ हैं-

1. फ़ुक़रा

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि सदक़ा मालदार पर और तन्दुरुस्त व तवाना पर हलाल नहीं। दो शख़्सों ने आपसे सदक़े का माल माँगा, आपने ग़ौर और ध्यान से उनको नीचे से ऊपर तक देखा, सेहतमन्द क़वी तन्दुरुस्त देखकर फ़रमाया- अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें दे दूँ लेकिन अमीर शख़्स का और ताक़तवर व कमाऊ शख़्स का इसमें कोई हिस्सा नहीं।

2. मसाकीन

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि मिस्कीन यही घूम-घूमकर एक लुक़मा दो लुक़मे, एक खजूर दो खजूर लेकर टल जाने वाले ही नहीं, लोगों ने दरियाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! फिर मसाकीन कौन लोग हैं? आपने फ़रमाया जो इतना माल न पाये जिससे बेफ़िक्र हो जाये और दूसरों का मोहताज न रहे। न अपनी ऐसी हालत रखे कि कोई देखकर पहचान ले और कुछ दे दे, न किसी से ख़ुद कोई सवाल करे।

3. सदक़ा वसूल करने वाले

यह माल को वसूल और जमा करने वाले हैं। इन्हें उजरत उसी माल से मिलेगी। नबी करीम सल्ल. के

Maktaba E Ashraf

रिश्तेदार जिन पर सदक़ा हराम है इस मक़ाम पर नहीं आ सकते। अ़ब्दुल-मुत्तलिब बिन रबीआ़ बिन हारिस और फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास रसूलुल्लाह सल्ल. के पास यह दरख़्वास्त लेकर गये कि हमें सदक़ा वसूल करने का आ़मिल (कारिन्दा) बना दीजिये, आपने जवाब दिया कि मुहम्मद और मुहम्मद की आल पर सदक़ा हराम है, यह तो लोगों का मैल-कुचैल है।

4. दिलजोई के लिये

जिनको इस्लाम की तरफ़ मुतवज्जह करने के लिये कुछ दिया दिलाया जाता है उनकी कई क़िस्में हैं। बाज़ों को तो इसलिये दिया जाता है कि वे इस्लाम क़बूल कर लें, जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने सफ़वान बिन उमैया को हुनैन की ग़नीमत का माल दिया था, हालाँकि वह उस वक़्त कुफ़्र की हालत में आपके साथ निकला था। उसका अपना बयान है कि आपके उस देने और ख़बरगीरी ने मेरे दिल में आपकी सबसे ज़्यादा मुहब्बत पैदा कर दी, हालाँकि पहले सबसे बड़ा दुश्मन आपका मैं ही था। बाज़ों को इसलिये दिया जाता है कि उनका इस्लाम मज़बूत हो जाये और उनका दिल इस्लाम पर जम जाये, जैसा कि हुज़ूर सल्ल. ने हुनैन वाले दिन मक्का के आज़ाद किये हुए लोगों के सरदारों को सौ-सौ ऊँट अ़ता फ़रमाये और इरशाद फ़रमाया कि मैं एक को देता हूँ दूसरे को जो उससे ज़्यादा मेरा महबूब है उसे नहीं देता, इसलिये कि ऐसा न हो कि यह औंधे मुँह जहन्नम में गिर पड़े।

एक मर्तबा हज़रत अ़ली रज़ि. ने यमन से कच्चा सोना मिट्टी समेत आपकी ख़िदमत में भेजा तो आपने सिर्फ़ चार शख़्सों में ही तक़सीम फ़रमाया- अक़रा बिन हाबिस, उयैना बिन अ़ल्क़मा, बदर बिन अ़लासा और ज़ैद ख़ैर, और फ़रमाया मैं इनकी दिलजोई के लिये इन्हें दे रहा हूँ। बाज़ को इसलिये भी दिया जाता है कि उस जैसे और लोग भी इस्लाम क़बूल कर लें। बाज़ को इसलिये दिया जाता है कि वह अपने आस-पास के दुश्मनों की देख-भाल रखे और उन्हें मुसलमानों पर हमला करने का मौक़ा न दे। इन सबकी तफ़सील की जगह अहकाम व फ़ुरूअ़ की किताबें हैं। तफ़सीर में इन मज़ामीन को तफ़सील से बयान नहीं किया जा सकता। वल्लाहु आलम

हज़रत उमर, आ़मिर शअ़बी और एक जमाअ़त का क़ौल है कि नबी करीम सल्ल. के विसाल (इन्तिक़ाल) के बाद अब यह मसरफ़ (ख़र्च का मौक़ा और जगह) बाक़ी नहीं रहा। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को इज़्ज़त दे दी है, मुसलमान मुल्कों के मालिक बन गये हैं और अल्लाह के बहुत से बन्दे उनके मातहत (अधीन) हैं, लेकिन दूसरे हज़रात का क़ौल है कि अब भी दिलों को रखने और जोड़ने के लिये ज़कात देनी जायज़ है। फ़त्हे मक्का और फ़त्हे हवाज़न के बाद भी हुज़ूर सल्ल. ने उन लोगों को माल दिया, दूसरे यह कि अब भी ऐसी ज़रूरतें पेश आ जाया करती हैं।

5. किसी की गर्दन छुड़ाना

गर्दन की आज़ादी के बारे में बहुत से बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मुराद इससे वे ग़ुलाम हैं जिन्होंने रक़म मुक़र्रर करके अपने मालिकों से अपनी आज़ादी की शर्त (मुआ़हिदा) कर ली है, उन्हें ज़कात के माल से रक़म दी जाये कि वे अदा करके आज़ाद हो जायें। दूसरे कुछ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि वह ग़ुलाम जिसने यह शर्त न लिखवाई हो उसे भी ज़कात के माल से ख़रीदकर आज़ाद करने में कोई हर्ज नहीं। ग़र्ज़ मुकातब ग़ुलाम और महज़ ग़ुलाम दोनों की आज़ादी ज़कात का एक मसरफ़ है। हदीसों में भी इसकी बहुत सी

Muftab E Ashraf

फ़ज़ीलतें वारिद हुई है, यहाँ तक फ़रमाया है कि आज़ाद किये हुए गुलाम के हर-हर हिस्से के बदले आज़ाद करने वाले का हर-हर हिस्सा (बदन का अंग) जहन्नम से आज़ाद हो जाता है, यहाँ तक कि शर्मगाह के बदले शर्मगाह भी। इसलिये कि हर नेकी की जज़ा (बदला) उसी जैसी होती है, क़ुरआन फ़रमाता है कि तुम्हें वही जज़ा दी जायेगी जो तुमने किया होगा।

हदीस में है कि तीन क़िस्म के लोगों की मदद अल्लाह के ज़िम्मे हक़ है- वह ग़ाज़ी जो राहे ख़ुदा में जिहाद करता हो, वह मुकातब गुलाम और क़र्ज़दार जो अदायेगी की नीयत रखता हो, वह निकाह करने वाला जिसका इरादा बदकारी से सुरक्षित रहने का हो। किसी ने हुज़ूर सल्ल. से कहा कि मुझे कोई ऐसा अ़मल बतलाईये जो मुझे जन्नत से क़रीब और दोज़ख़ से दूर कर कर दे। आपने फ़रमाया 'नसमा' (यानी किसी की जान) आज़ाद कर और गर्दन छुड़ा। उसने कहा क्या ये दोनों एक ही चीज़ नहीं? आपने फ़रमाया नहीं! नसमा की आज़ादी तो यह है कि तू अकेला ही किसी ग़ुलाम को आज़ाद कर दे, और गर्दन छुड़ाना यह है कि तू भी उसमें जो तुझसे हो सके मदद करे।

6. क़र्ज़दार की मदद

क़र्ज़दार की मदद करने की भी कई क़िस्में हैं- एक शख़्स दूसरे का बोझ अपने ऊपर ले ले, किसी के क़र्ज़ का ख़ुद ज़िम्मेदार और ज़मानती बन जाये, फिर उसका माल उठ जाये या वह ख़ुद क़र्ज़दार बन जाये, या किसी ने किसी बुरे काम के लिये क़र्ज़ उठाया हो और अब तौबा कर ले, पस उन्हें ज़कात का माल दिया जायेगा, कि यह क़र्ज़ अदा कर दें। इस मसले की असल (विना और आधार) क़बीसा बिन मख़ारिक़ बिलाली की यह रिवायत है कि मैंने दूसरे का हवाला अपनी तरफ़ लिया था, फिर मैं हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया तुम ठहरो हमारे पास सदक़े का माल आयेगा तो हम उसमें से तुम्हें देंगे। फिर फ़रमाया क़बीसा सुन! तीन क़िस्म के लोगों को ही सवाल हलाल है, एक तो ज़ामिन (किसी दूसरे की गारंटी देने वाला) उस रक़म के पूरा होने तक उसे सवाल जायज़ है, फिर सवाल न करे। दूसरे वह जिसका माल किसी नागहानी आफ़त (आपदा) से ज़ाया हो जाये, उसे भी सवाल करना दुरुस्त है। यहाँ तक कि उसकी हालत सुधर जाये। तीसरा वह शख़्स जिस पर फ़ाक़ा गुज़रने लगे और उसकी क़ौम के तीन समझदार लोग उसकी गवाही और सिफ़ारिश के लिये खड़े हो जायें कि हाँ बेशक फ़ुलाँ शख़्स पर फ़ाक़े गुज़रने लगे हैं। उसे भी माँग लेना जायज़ है, यहाँ तक कि उसका सहारा हो जाये और सामाने ज़िन्दगी मुहैया हो जाये। इनके अ़लावा औरों को सवाल करना हराम है। अगर वे माँगकर कुछ खायेंगे तो हराम खायेंगे। (मुस्लिम शरीफ़)

एक शख़्स ने ज़माना-ए-नबवी में एक बाग़ ख़रीदा, क़ुदरते ख़ुदा से आसमानी आफ़त से बाग़ का फल मारा गया और इससे वह बहुत क़र्ज़दार हो गया। हुज़ूर सल्ल. ने उसके क़र्ज़े वालों से फ़रमाया तुम्हें जो मिले ले लो, इसके सिवा तुम्हारे लिये और कुछ नहीं। (मुस्लिम)

आप फ़रमाते हैं कि एक क़र्ज़दार से अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन दरियाफ़्त करेगा- तूने क़र्ज़ क्यों लिया और क्यों रक़म ज़ाया कर दी? जिससे लोगों के हुक़ूक़ बरबाद हुए। वह जवाब देगा कि ख़ुदाया तुझे ख़ूब इल्म है, मैंने न उस रक़म को खाया न पिया न उड़ाया, बल्कि मेरे यहाँ से चोरी हो गई, या आग लग गई या कोई और आफ़त आ गई। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मेरा बन्दा सच्चा है, आज तेरे क़र्ज़ के अदा करने का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ मैं ही हूँ। फिर अल्लाह तआ़ला कोई चीज़ मंगवाकर उसकी नेकियों के

Maktab E Ashraf

पलड़े में रख देगा, जिससे नेकियाँ बुराईयों से बढ़ जायेंगी और अल्लाह तआ़ला उसे अपने फ़ज़्ल व रहमत से जन्नत में ले जायेगा। (मुस्नद अहमद)

7. राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर

राहे ख़ुदा में वे मुजाहिदीन ग़ाज़ी शामिल हैं जिनका दफ़्तर में कोई हक़ नहीं होता। हज भी राहे ख़ुदा में शामिल है।

8. मुसाफ़िर की मदद

मुसाफ़िर, जो सफ़र में बिना सामान व असबाब के रह गया हो, उसे भी ज़कात के माल से इतनी रक़म दी जाये जिससे वह अपने शहर पहुँच सके अगरचे वह अपने यहाँ मालदार ही हो, यही हुक्म उनका भी है जो अपने शहर से सफ़र को जाने का इरादा रखते हों लेकिन माल न हो तो उसे भी सफ़र-ख़र्च में माले ज़कात से देना जायज़ है, जो उसे आने जाने के लिये काफ़ी हो।

आयत के इस लफ़्ज़ की दलील के अ़लावा अबू दाऊद वग़ैरह की यह हदीस भी इसकी दलील है कि हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया- मालदार पर ज़कात हराम है सिवाय पाँच क़िस्म के मालदारों के- एक तो वह जो ज़कात वसूल करने पर मुक़र्रर हो। दूसरा वह जो माले ज़कात की किसी चीज़ को अपने माल से ख़रीदे। तीसरा क़र्ज़दार। चौथा राहे ख़ुदा का ग़ाज़ी मुजाहिद। पाँचवाँ वह जिसे कोई मिस्कीन बतौर तोहफ़े के अपनी कोई चीज़ जो ज़कात में उसे मिली हो दे। एक और रिवायत में है कि ज़कात मालदार के लिये हलाल नहीं मगर जो अल्लाह के रास्ते में हो और जो सफ़र की हालत में हो, और जिसे उसका कोई मिस्कीन पड़ोसी बतौर तोहफ़े के दे, या अपने यहाँ बुला ले।

ज़कात के इन आठों मसारिफ़ (ख़र्च के मौक़ों) को बयान फ़रमाकर फिर इरशाद होता है कि यह ख़ुदा की तरफ़ से फ़र्ज़ है यानी तयशुदा है। अल्लाह की तक़दीर, उसकी तक़सीम और उसके फ़र्ज़ करने से। अल्लाह तआ़ला ज़ाहिर व बातिन का आ़लिम है, अपने बन्दों की मस्लेहतों से वाक़िफ़ है, वह अपने क़ौल व फ़ेल, शरीअ़त और हुक्म में हिक्मत वाला है, सिवाय उसके कोई इबादत के लायक़ नहीं, न उसके सिवा कोई किसी का रब (पालने वाला) है।

और उन (मुनाफ़िक़ों) में से बाज़े ऐसे हैं कि नबी को तकलीफ़ें पहुँचाते हैं और कहते हैं कि आप हर बात कान देकर "यानी तवज्जोह से" सुन लेते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि (वह नबी) कान देकर "यानी तवज्जोह से" तो वही बात सुनते हैं जो तुम्हारे हक़ में ख़ैर (ही ख़ैर) है कि वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों का यक़ीन करते हैं, और आप उन लोगों के हाल पर मेहरबानी फ़रमाते हैं जो तुममें ईमान का इज़हार करते हैं, और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ें पहुँचाते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (61)	وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

Maktab E Ashraf

मुनाफ़िक़ों का तकलीफ़ पहुँचाना

मुनाफ़िक़ों की एक जमाअ़त बड़ी तकलीफ़ देने वाली है, अपनी बातों से पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. को दुख पहुँचाती है और कहती है कि यह नबी तो कानों का बड़ा ही कच्चा है, जिससे जो सुना मान लिया। जब हम इसके पास जायेंगे और क़समें खायेंगे वह हमारी बात का भी यक़ीन कर लेगा। अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि वह बेहतर कानों वाला अच्छा सुनने वाला है, वह सच्चे और झूठे को ख़ूब जानता है, वह अल्लाह की बातें मानता है और ईमान वाले लोगों की सच्चाई भी जानता है। वह मोमिनों के लिये रहमत है और बिना ईमान वालों (काफ़िरों) के लिये ख़ुदा की हुज्जत है। रसूल के सताने वालों के लिये दुख की मार है।

ये लोग तुम्हारे सामने अल्लाह तआ़ला की (झूठी) क़समें खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें, (जिसमें माल व जान महफ़ूज़ रहे) हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़ रखते हैं कि अगर ये लोग सच्चे मुसलमान हैं तो उसको राज़ी करें। (62) क्या उनको ख़बर नहीं कि जो शख़्स अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा (जैसा कि ये लोग कर रहे हैं) तो (यह बात तय हो चुकी है कि) ऐसे शख़्स को दोज़ख़ की आग (इस तौर पर) नसीब होगी (कि) वह उसमें हमेशा रहेगा, यह बड़ी रुस्वाई है। (63)	يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ○ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ○

एक ही को राज़ी करो

वाक़िआ़ यह हुआ था, मुनाफ़िक़ों में से एक शख़्स कह रहा था कि हमारे सरदार और रईस बड़े अ़क़्लमन्द, दाना और तजुर्बेकार हैं, अगर मुहम्मद की बातें हक़ होतीं तो ये क्या ऐसे बेवक़ूफ़ थे कि उन्हें न मानते? यह बात एक सच्चे मुसलमान सहाबी ने सुन ली और उसने कहा वल्लाह हुज़ूर सल्ल. की सब बातें बिल्कुल सच हैं और उन न मानने वालों की बेवक़ूफ़ी में कोई शक नहीं। जब यह सहाबी दरबारे नुबुव्वत में हाज़िर हुए तो यह वाक़िआ़ बयान किया, आपने उस शख़्स को बुलवा भेजा लेकिन वह सख़्त क़समें खा-खाकर कहने लगा कि मैंने तो यह बात कही ही नहीं, यह तो मुझ पर तोहमत बाँधता है। उस सहाबी ने दुआ़ की कि परवर्दिगार! तू सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा कर दिखा। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। क्या उनको यह बात मालूम नहीं कि ख़ुदा और रसूल के मुख़ालिफ़ हमेशा की जहन्नमी ज़िल्लत और रुस्वाई व अ़ज़ाबे दोज़ख़ भुगतने वाले हैं। इससे बढ़कर बदक़िस्मती, इससे ज़्यादा रुस्वाई और इससे बढ़कर बदबख़्ती और क्या होगी।

Maktab E Ashraf

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ○	मुनाफ़िक़ लोग (तबई तौर पर) इससे अन्देशा करते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरः (मिसाल के तौर पर, या आयत) नाज़िल (न) हो जाये जो उनको उन (मुनाफ़िक़ों) के दिल के हाल की इत्तिला दे दे। आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला उस चीज़ को ज़ाहिर करके रहेगा जिस (के इज़्हार) से तुम अन्देशा करते "यानी डरते" थे। (64)

मुनाफ़िक़ों की आपस में बातें

आपस में बैठकर बातें तो कर लेते लेकिन फिर डरे रहते कि ख़ुदा की तरफ़ से मुसलमानों को अल्लाह की 'वही' के ज़रिये ख़बर न हो जाये। एक और आयत में है कि तेरे सामने आकर वे वो दुआ़यें देते हैं जो अल्लाह ने नहीं दीं, फिर अपने जी में अकड़ते हैं कि हमारे इस क़ौल पर अल्लाह हमें कोई सज़ा क्यों नहीं करता। उनके लिये जहन्नम की काफ़ी सज़ा मौजूद है, जो बदतरीन जगह है। यहाँ फ़रमाता है कि दीनी बातों में मुसलमानों की हालतों पर दिल खोलकर मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह भी वह खोल देगा जो तुम्हारे दिलों में है। याद रखो एक दिन रुस्वा और फ़ज़ीहत होकर रहोगे। चुनाँचे फ़रमान है कि ये रोगी दिल के लोग यह न समझें कि इनके दिलों की बदियाँ ज़ाहिर ही न होंगी, हम तो इन्हें इस क़द्र फ़ज़ीहत करेंगे, और ऐसी निशानियाँ तेरे सामने रख देंगे कि तू इनके लब व लहजे (बोल-चाल के अन्दाज़) से ही इन्हें पहचान ले...। इस सूरत का नाम ही सूरः फ़ाज़िहा है, इसलिये कि इसने मुनाफ़िक़ों की क़लई खोल दी।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ○ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً ۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ○ ع ٨ ١٤	और अगर आप उनसे पूछिये तो कह देंगे कि हम तो बस मज़ाक़ और दिल्लगी कर रहे थे। आप (उनसे) कह दीजिएगा कि क्या अल्लाह के साथ और उसकी आयतों के साथ और उसके रसूल के साथ तुम हँसी करते थे? (65) तुम अब (यह बेहूदा) उज़्र मत करो, तुम तो अपने को मोमिन कहकर कुफ़्र करने लगे, अगर हम तुममें से बाज़ को छोड़ भी दें फिर भी बाज़ को तो (ज़रूर ही) सज़ा देंगे, इस वजह से कि वे (इल्मे-अज़ली में) मुजरिम थे। (66)

कितनी बड़ी जुर्रत

एक मुनाफ़िक़ कह रहा था कि हमारे ये क़ुरआन पढ़ने वाले (यानी ईमान वाले) लोग बड़े बोदे और बुज़दिल हैं। हुज़ूर सल्ल. के पास जब इसका ज़िक्र हुआ तो यह उज़्र (बहाना) पेश करता हुआ आया- या

Maktab E Ashraf

रसूलल्लाह! हम तो यूँ ही वक़्त-गुज़ारी के लिये हंस-बोल रहे थे। आपने फ़रमाया हाँ तुम्हारी हंसी के लिये अल्लाह, रसूल और क़ुरआन ही रह गया है। याद रखो कि अगर किसी को हम माफ़ कर देंगे तो किसी को सख़्त सज़ा भी करेंगे। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल. अपनी ऊँटनी पर सवार जा रहे थे, यह मुनाफ़िक़ आपकी तलवार पर हाथ रखे पत्थरों से ठोकरें खाता हुआ यह कहता हुआ साथ-साथ जा रहा था, आप उसकी तरफ़ देखते भी न थे, जिस मुसलमान ने उसका यह क़ौल सुना था उसने उसे जवाब भी दिया था कि तू बकता है, तू झूठा है, तू मुनाफ़िक़ है।

यह वाक़िआ जंगे तबूक के मौक़े का है। मस्जिद में उसने यह ज़िक्र किया था। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि तबूक जाते हुए हुज़ूर सल्ल. के साथ मुनाफ़िक़ों का एक गिरोह भी था, जिनमें वदीआ बिन साबित और फ़ुहश बिन हुमैर वग़ैरह थे। ये आपस में कह रहे थे कि ईसाईयों की लड़ाई को अ़रब वालों की आपस की लड़ाई जैसी समझना सख़्त ख़तरनाक ग़लती है। अच्छा है कि उन्हें वहाँ पिटने दो फिर हम भी यहाँ उनकी दुर्गत बनायेंगे। इस पर उनके दूसरे सरदार फ़ुहश ने कहा भई इन बातों को छोड़ दो, वरना यह ज़िक्र फिर क़ुरआन में आयेगा, कोड़े खा लेना हमारे नज़दीक तो उस रुस्वाई से बेहतर है। आगे-आगे ये लोग यह तज़किरे करते जा ही रहे थे कि हुज़ूर सल्ल. ने हज़रत अ़म्मार रज़ि. से फ़रमाया जाना ज़रा देखना ये लोग जल गये, इनसे पूछ तो कि यह क्या ज़िक्र कर रहे थे? अगर ये इनकार करें तो तू कहना कि तुम ये बातें कर रहे थे। हज़रत अ़म्मार रज़ि. ने जाकर उनसे यह कहा, ये हुज़ूर सल्ल. के पास आये और उज़्र माज़िरत (बहाने और शर्मिन्दगी ज़ाहिर) करने लगे कि या हुज़ूर! हंसी-हंसी में हमारे मुँह से ऐसी बात निकल गई। वदीआ ने तो यह कहा, लेकिन फ़ुहश बिन हुमैर ने कहा या रसूलल्लाह! आप मेरा और मेरे बाप का नाम मुलाहिज़ा फ़रमाईये। पस इस वजह से यह बेकार और बुरी हरकत और हिमाक़त मुझसे सरज़द हुई। इसलिये माफ़ किया जाये। पस उसको अल्लाह ने माफ़ फ़रमा दिया और उसी माफ़ी और दरगुज़र का इस आयत में ज़िक्र भी हुआ है। उसके बाद उसने अपना नाम बदल लिया, अ़ब्दुर्रहमान रखा, सच्चा मुसलमान बन गया और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ख़ुदा मुझे अपनी राह में शहीद कर ताकि यह धब्बा धुल जाये, चुनाँचे यमामा वाले दिन यह बुज़ुर्ग शहीद कर दिये गये और इनकी लाश भी न मिली। रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

उन मुनाफ़िक़ों ने बतौर ताना मारने के कहा था कि लीजिये क्या आँखें फट गई हैं, अब ये चले हैं कि रोमियों के क़िले और उनके महलों को फ़तह करें। भला इस अ़क़्लमन्दी और दूर-अन्देशी को तो देखिये। जब हुज़ूर सल्ल. को अल्लाह तआ़ला ने उनकी इन बातों पर बाख़बर कर दिया तो ये साफ़ इनकारी हो गये और क़समें खा-खाकर कहा कि हमने यह बात नहीं कही, हम तो आपस में हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। हाँ उनमें से एक शख़्स था जिसे इन्शा-अल्लाह अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमा दिया होगा, यह कहा करता था कि ख़ुदाया मैं तेरे पाक कलाम की एक आयत जब भी सुनता हूँ जिसमें मेरे गुनाह का ज़िक्र है तो मेरे रौंगटे खड़े हो जाते हैं और मेरा दिल काँप उठता है। परवर्दिगार! तू मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मुझे अपनी राह में शहीद कर, और इस तरह कर कि न कोई मुझे ग़ुस्ल दे न कफ़न दे न दफ़न दे। यही हुआ, जंगे यमामा में यह शुहदा के साथ शहीद हुए। तमाम शहीदों की लाशें मिल गईं लेकिन इनकी लाश का पता ही न चला। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से और मुनाफ़िक़ों को जवाब मिला कि अब बहाने न बनाओ, तुम अगरचे ज़बानी ईमान वाले बने थे लेकिन अब इसी ज़बान से तुम काफ़िर हो गये। यह क़ौल कुफ़्र का कलिमा है, तुमने अल्लाह, रसूल और क़ुरआन का मज़ाक़ बनाया। हम अगर किसी से दरगुज़र कर जायें लेकिन तुम सबसे यह मामला नहीं होगा। इस जुर्म, इस बदतरीन ख़ता और इस कुफ़्र के कलिमे की बहुत सख़्त सज़ा

तुम्हें भुगतनी पड़ेगी।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक तरह के हैं, कि बुरी बात (यानी कुफ़्र और इस्लाम की मुख़ालफ़त) की तालीम देते हैं और अच्छी बात (यानी ईमान व नबी-ए-करीम की पैरवी) से मना करते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने ख़ुदा का ख़्याल न किया, तो ख़ुदा ने उनका ख़्याल न किया, बेशक ये मुनाफ़िक़ बड़े ही सरकश हैं। (67) अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और (खुलेआम) कुफ़्र करने वालों से दोज़ख़ की आग का अ़हद कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। वह उनके लिए काफ़ी (सज़ा) है, और अल्लाह तआ़ला उनको अपनी रहमत से दूर कर देगा और उनको हमेशा का अ़ज़ाब होगा। (68)

मुनाफ़िक़ हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे

मुनाफ़िक़ों की ख़स्लतें (आ़दतें और हरकतें) मोमिनों के बिल्कुल उलट और विपरीत होती हैं। मोमिन भलाईयों का हुक्म करते हैं और बुराईयों से रोकते हैं, मुनाफ़िक़ बुराईयों का हुक्म देते हैं और भलाईयों से मना करते हैं। मोमिन सख़ी (दान करने वाले) होते हैं, मुनाफ़िक़ बख़ील (कन्जूस) होते हैं। मोमिन ज़िक्रुल्लाह में मशग़ूल रहते हैं, मुनाफ़िक़ को ख़ुदा का ख़्याल भी नहीं आता। इसी के बदले अल्लाह भी उनके साथ वह मामला करता है जैसे किसी को कोई भूल गया हो। क़ियामत के दिन यही उनसे कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें ठीक उसी तरह भुला देंगे जैसे तुम इस दिन की मुलाक़ात को भुलाये हुये थे। मुनाफ़िक़ राहे ख़ुदा से दूर हो गये हैं, गुमराही की भूल-भुलैयों में फंस गये हैं, उन मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों के इन बुरे आमाल की सज़ा उनके लिये ख़ुदा तआ़ला जहन्नम को मुक़र्रर फ़रमा चुका है, जहाँ वे हमेशा रहेंगे, वहाँ का अ़ज़ाब उन्हें काफ़ी होगा, उन्हें रब्बे हकीम अपनी रहमत से दूर कर चुका है और उनके लिये उसने हमेशा के अ़ज़ाब तैयार कर रखे हैं।

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا

(ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम्हारी हालत उन लोगों की-सी है जो तुमसे पहले हो चुके हैं, जो क़ुव्वत में तुमसे ज़बरदस्त और माल व औलाद की कसरत में तुमसे भी ज़्यादा थे, तो उन्होंने अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया,

اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ط اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ٥	सो तुमने भी अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, जैसा कि तुमसे पहले लोगों ने अपने हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया था। और तुम भी (बुरी बातों में) ऐसे ही घुसे जैसे वे घुसे थे, और उन लोगों के (अच्छे) आमाल दुनिया व आख़िरत में बेकार गए, और वे लोग बड़े नुक़सान में हैं। (69)

उनके आमाल बरबाद हो गये

इन लोगों को भी पहले लोगों की तरह के अ़ज़ाब पहुँचे। 'ख़लाक़' से मुराद यहाँ दीन है, जैसे पहले लोग झूठ और बातिल के साथ मुलव्वस थे, ऐसे ही इन लोगों ने भी किया, इनके ये फ़ासिद आमाल अकारत गये, न दुनिया में फ़ायदेमन्द हुए न आख़िरत में सवाब दिलाने वाले हुए। यही खुला नुक़सान है कि अ़मल किया और सवाब न मिला। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं- जैसे आजकी रात कल की रात के जैसी होती है, इसी तरह इस उम्मत में भी यहूदियों की मुशाबहत आ गई मेरा तो यही ख़्याल है।

हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया है- उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुम उनकी पैरवी करोगे यहाँ तक कि अगर उनमें से कोई गोह जानवर के सुराख़ में दाख़िल हुआ है तो तुम भी उसमें घुसोगे। हुज़ूर सल्ल. का इरशाद है कि उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है तुम अपने से पहले के लोगों के तरीक़ों की हू-ब-हू (वैसी ही) ताबेदारी (नक़ल और पैरवी) करोगे, यहाँ तक कि अगर वे किसी गोह के बिल में घुसे हैं तो यक़ीनन तुम भी घुसोगे। लोगों ने पूछा इससे मुराद आपकी कौन लोग हैं? क्या अहले किताब? आपने फ़रमाया और कौन। इस हदीस को बयान फ़रमाकर हज़रत अबू हुरैरह ने फ़रमाया अगर तुम चाहो तो क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों को पढ़ लोः

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ..... الخ

(यानी यही आयत जिसकी यह तफ़सीर चल रही है)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि 'ख़लाक़' से मुराद दीन है, और तुमने भी उसी को तलाश किया और खोजा जिस तरह की तलाश उन्होंने की। लोगों ने पूछा क्या फ़ारसियों और रोमियों की तरह? आपने फ़रमाया और लोग हैं ही कौन? इस हदीस के शाहिद (पुष्टि करने वाले मज़ामीन) सही हदीसों में भी हैं।

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۵ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ط اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ	क्या उन लोगों को उन (के अ़ज़ाब व हलाक होने) की ख़बर नहीं पहुँची जो उनसे पहले हुए हैं, जैसे क़ौमे नूह और आ़द और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मद्यन वाले और उल्टी हुई बस्तियाँ, कि उनके पास उनके पैग़म्बर (हक़ की) साफ़ निशानियाँ लेकर आए

Maktab E Ashraf

بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝	(लेकिन न मानने से बरबाद हुए)। सो (इस बरबादी में) अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन वे ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (70)

नाफ़रमान क़ौमों का अन्जाम इन्हें मालूम है

इन बुरे किरदार वाले मुनाफ़िक़ों को वअ़ज़ (दीनी नसीहत) सुनाया जा रहा है कि अपने से पहले के अपने जैसों के हालात पर इबरत (सबक़) की नज़र डालो। देखो कि नबियों के झुठलाना क्या फल लाया? क़ौमे नूह का ग़र्क़ होना, सिवाय मुसलमानों के किसी का न बचना याद करो। आ़द वालों का हूद अ़लैहिस्सलाम के न मानने की वजह से हवा के झोंकों से तबाह हो जाना याद करो। समूद वालों का हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम के झुठलाने और ख़ुदा की निशानी ऊँटनी के काट डालने से एक जिगर को फाड़ देने वाली कड़ाके की आवाज़ से तबाह व बरबाद होना याद करो। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का दुश्मनों के हाथों से बच जाना और उनके दुश्मनों का तबाह होना। नमरूद बिन किनआ़न इब्ने कोश जैसे बादशाह का मय अपने लाव-लश्कर के तबाह होना न भूलो। वे सब लानत के मारे बेनिशान कर दिये गये।

क़ौमे शुऐब इन्हीं बुरे आमाल और कुफ़्र के बदले ज़लज़ले से और सायबान वाले दिन के अ़ज़ाब से अस्त-व्यस्त (तबाह) कर दी गई, जो मद्यन की रहने वाली थी। क़ौमे लूत जिनकी बस्तियाँ उल्टी पड़ी हैं, मद्यन और सद्दूम वग़ैरह अल्लाह ने उन्हें भी अपने नबी लूत को न मानने और अपने बुरे आमाल के न छोड़ने के सबब एक-एक को मिटा दिया। उनके पास हमारे रसूल, हमारी किताब, खुले मोजिज़े और साफ़ दलीलें लेकर पहुँचे लेकिन उन्होंने एक भी मानकर न दी, आख़िरकार अपने ज़ुल्म से आप बरबाद हुए। अल्लाह तआ़ला ने तो हक़ वाज़ेह (स्पष्ट) कर दिया। किताब उतार दी, रसूल भेज दिये, हुज्जत पूरी कर दी लेकिन ये रसूलों के मुक़ाबले पर आमादा हुए, किताबे ख़ुदा की तामील से भागे, हक़ की मुख़ालफ़त की, पस ख़ुदा की लानत उतरी और उन्हें स्याह मिट्टी कर गई।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝	और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें आपस में एक-दूसरे के (दीनी) साथी हैं, नेक बातों की तालीम देते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानते हैं उन लोगों पर ज़रूर अल्लाह तआ़ला रहमत करेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला (पूरी तरह) क़ादिर है, हिक्मत वाला है। (71)

मुसलमान ख़ुदा की रहमत व शफ़क़त के मुस्तहिक़

मुनाफ़िक़ों की बुरी ख़स्लतें बयान फ़रमाकर मुसलमानों की नेक सिफ़ात बयान फ़रमा रहा है कि ये एक

दूसरे की मदद करते हैं, एक दूसरे का सहारा बने रहते हैं। सही हदीस में है कि मोमिन मोमिन के लिये एक दीवार की तरह है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूती पहुँचाता और ताक़तवर बनाता है। आपने यह फ़रमाते हुए अपने हाथों की उंगलियाँ एक दूसरे में डालकर दिखा भी दिया। एक और सही हदीस में है कि मोमिन अपनी दोस्तियों और एक दूसरे के साथ सुलूक करने में एक जिस्म की तरह हैं, कि एक हिस्से को भी अगर तकलीफ़ हो तो तमाम जिस्म बीमारी और बेदारी (जागने) में मुब्तला हो जाता है। ये पाक नफ़्स लोग औरों की तरबियत से भी ग़ाफ़िल नहीं रहते। सब को भलाईयाँ सिखाते हैं, अच्छी बातें बतलाते हैं, बुरे कामों से बुरी बातों से अपनी कोशिश भर रोकते हैं। हुक्मे ख़ुदा भी यही है, फ़रमाता है कि तुम में एक जमाअ़त ज़रूर ऐसी होनी चाहिये जो भलाईयों का हुक्म करे, बुराईयों से मना करे.....।

ये नमाज़ी होते हैं, साथ ही ज़कात भी देते हैं, ताकि एक तरफ़ अल्लाह की इबादत हो, दूसरी तरफ़ मख़्लूक़ की दिलजोई हो। अल्लाह व रसूल की इताअ़त ही इनका दिलचस्प मशग़ला है, जो हुक्म मिला बजा लाये, जिससे रोका रुक गये, यही लोग हैं जो रहमते ख़ुदावन्दी के मुस्तहिक़ हैं। यही सिफ़ात हैं जिनसे ख़ुदा की रहमत नाज़िल होती है। अल्लाह अ़ज़ीज़ (हर चीज़ पर ग़ालिब) है, वह अपने फ़रमाँबरदारों की ख़ुद भी इज़्ज़त करता है और उन्हें इज़्ज़त वाला बना देता है। दर असल इज़्ज़त अल्लाह ही के लिये है, और उसने अपने रसूलों और अपने ईमान वाले ग़ुलामों को भी इज़्ज़त दे रखी है, उसकी हिक्मत है कि इनमें ये सिफ़तें रखीं और मुनाफ़िक़ों में वे ख़स्लतें रखीं। उसकी हिक्मत की तह (गहराई) को कौन पहुँच सकता है, जो चाहे करे, वह बरकतों वाला और बुलन्दियों वाला है।

और अल्लाह तआ़ला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों से ऐसे बाग़ों का वायदा कर रखा है जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और नफ़ीस मकानों का जो कि उन हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगे, और (इन नेमतों के साथ) अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी सब (नेमतों) से बड़ी चीज़ है, यह (ज़िक्र हुई जज़ा) बड़ी कामयाबी है। (72)	وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ ع ١٥

मुसलमानों से ख़ुदा का वादा

मोमिनों की इन नेकियों पर जो अज्र व सवाब उन्हें मिलेगा उसका बयान हो रहा है, कि हमेशा की नेमतें, हमेशा बाक़ी रहने वाले बाग़ात और जन्नत जहाँ क़दम-क़दम पर ख़ुशगवार पानी के चश्मे उबल रहे हैं, जहाँ बुलन्द व बाला ख़ूबसूरत सुसज्जित साफ़-सुथरे सजे हुए महल और मकानात हैं। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं दो जन्नतें तो सिर्फ़ सोने की हैं, उनके बरतन और जो कुछ भी वहाँ है सब सोने ही सोने का है। और दो जन्नतें चाँदी की हैं, बरतन भी और तमाम चीज़ें भी उनमें, और अल्लाह के दीदार में कोई हिजाब (पर्दा और रुकावट) सिवाय उस बड़ाई की चादर के नहीं, जो अल्लाह जल्ल शानुहू के चेहरे पर है। ये जन्नते अ़दन में होंगे।

एक और हदीस में है कि मोमिन के लिये जन्नत में एक ख़ेमा होगा, एक ही मोती का बना हुआ, उसकी लम्बाई साठ मील की होगी। मोमिन की बीवियाँ वहीं होंगी, जिनके पास यह आता-जाता रहेगा, लेकिन एक दूसरे को दिखाई न देंगी। आपका फ़रमान है कि जो अल्लाह व रसूल पर ईमान लाये, नमाज़ क़ायम रखे, रमज़ान के रोज़े रखे, अल्लाह पर हक़ है कि उसे जन्नत में ले जाये। उसने हिजरत की हो या अपने वतन में ही रहा हो। लोगों ने कहा फिर हम औरों से भी यह हदीस बयान कर दें? आपने फ़रमाया जन्नत में एक सौ दर्जे हैं जिन्हें ख़ुदा तआ़ला ने अपनी राह के मुजाहिदों के लिये बनाये हैं। हर दो दर्जों में इतना ही फ़ासला है जितना ज़मीन व आसमान में। पस जब भी तुम अल्लाह तआ़ला से जन्नत का सवाल करो तो जन्नतुल-फ़िरदौस तलब करो, वह सबसे ऊँची और सबसे बेहतर जन्नत है। जन्नतों की सब नहरें वहीं से निकलती हैं, उसकी छत पर रहमान का अ़र्श है। फ़रमाते हैं कि जन्नत वाले जन्नत के बालाख़ानों को इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम आसमान के चमकते हुए सितारों को देखते हो। यह भी मालूम रहे कि तमाम जन्नतों में ख़ास एक आला मक़ाम है जिसका नाम 'वसीला' है, क्योंकि वह अ़र्श से बिल्कुल ही क़रीब है, यह जगह है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। आप फ़रमाते हैं जब तुम मुझ पर दुरूद पढ़ो तो अल्लाह से मेरे लिये वसीला तलब किया करो, पूछा गया वसीला क्या है? आपने फ़रमाया जन्नत का वह आला दर्जा जो एक ही शख़्स को मिलेगा और मुझे अल्लाह की ज़ात से क़वी (प्रबल) उम्मीद है कि वह शख़्स मैं ही हूँ।

आप फ़रमाते हैं कि मुअज़्ज़िन की अज़ान का जवाब दो, जैसे कलिमात वह कहता है तुम भी कहो, फिर मुझ पर दुरूद पढ़ो, जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह तआ़ला उस पर अपनी दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। फिर मेरे लिये वसीला तलब करो, वह जन्नत की एक मन्ज़िल है, जो तमाम मख़्लूक़े ख़ुदा में से एक ही शख़्स को मिलेगी, मुझे उम्मीद है कि वह मुझे ही इनायत की जायेगी। जो शख़्स मेरे लिये ख़ुदा से उस वसीले की तलब करे उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त क़ियामत के दिन हलाल हो गई। फ़रमाते हैं कि मेरे लिये अल्लाह से वसीला तलब करो, दुनिया में जो भी मेरे लिये वसीले की दुआ़ करेगा मैं क़ियामत के दिन उसका गवाह और सिफ़ारिशी बनूँगा।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने एक दिन आपसे पूछा कि या रसूलल्लाह! हमें जन्नत की बातें सुनाईये। उसकी बिना किस चीज़ से है? फ़रमाया सोने चाँदी की ईंटों से, उसका गारा ख़ालिस मुश्क है, उसकी कंकर लुअ्लुअ् और याक़ूत (यानी क़ीमती मोती) हैं, उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है, उसमें जो जायेगा वह नेमतों में होगा जो कभी ख़ाली न हों, वह हमेशा की ज़िन्दगी पायेगा जिसके बाद का खटका भी नहीं, न उसके कपड़े ख़राब हों न उसकी जवानी ढले। फ़रमाते हैं कि जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (चौबारे) हैं जिनके अन्दर का हिस्सा बाहर से नज़र आता है, और बाहर का अन्दर से। एक देहाती ने पूछा हुज़ूर! ये बालाख़ाने किनके लिये हैं? आपने फ़रमाया जो अच्छा कलाम करे, खाने खिलाये, रोज़े रखे और रातों को लोगों के सोने के वक़्त तहज्जुद की नमाज़ अदा करे।

फ़रमाते हैं कोई है जो जन्नत का शौक़ीन हो और उसके लिये मेहनत करने वाला हो? अल्लाह की क़सम जन्नत को कोई चारदीवारी सीमित करने वाली नहीं, वह तो एक चमकता हुआ नूर का मक़ाम है, और महकता हुआ गुलिस्तान है, और बुलन्द व बाला पाकीज़ा महल हैं, और जारी व सारी लहरें मारने वाली नहरें हैं, गदराये हुए और पके हुए मेवों के गुच्छे हैं, और बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत, पाक-सीरत हूरें हैं, और बहुमूल्य रंगीन रेशमी जोड़े हैं, यह मक़ाम है हमेशगी का, घर है सलामती का, मेवे हैं लदे फंदे, सब्ज़ा है

Maktab E Ashraf

फैला हुआ, कुशादगी और राहत है, अमन और चैन है, नेमत और रहमत है, आलीशान अच्छे नज़र आने वाले कोशिक और हवेलियाँ हैं। यह सुनकर लोग बोल उठे कि हुज़ूर हम सब उस जन्नत के मुश्ताक़ और उसके हासिल करने के लिये प्रयासरत हैं। आपने फ़रमाया इन्शा-अल्लाह कहो, पस लोगों ने इन्शा-अल्लाह तआ़ला कहा।

फिर फ़रमाता है कि इन तमाम नेमतों से आला और बेहतर नेमत अल्लाह की रज़ामन्दी है। फ़रमाते हैं अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को पुकारेगा कि ऐ जन्नत वालो! वे कहेंगे 'लब्बैक रब्बना व सअ्दैक वल्ख़ै-र फ़ी यदि-क' (यानी हम हाज़िर हैं ऐ हमारे रब! हर तरह की ख़ैर व भलाई तेरे ही हाथ में है)। पूछेगा कहो तुम ख़ुश हो गये? वे जवाब देंगे कि ख़ुश क्यों न होते, तूने ऐ परवर्दिगार! हमें वह दिया जो मख़्लूक़ में से किसी को न मिला होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा लो मैं तुम्हें इससे बहुत ही अफ़ज़ल व आला चीज़ अ़ता फ़रमाता हूँ। वे कहेंगे ख़ुदाया इससे बेहतर चीज़ और क्या हो सकती है? अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा सुनो! मैंने अपनी रज़ामन्दी तुम्हें अ़ता फ़रमाई। आजके बाद मैं कभी तुमसे नाख़ुश न हूँगा।

हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं जब जन्नती जन्नत में पहुँच जायेंगे अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कुछ और चाहिये तो दूँ? वे कहेंगे ख़ुदाया तूने हमें जो अ़ता फ़रमा रखा है इससे बेहतर तो और कोई चीज़ हो ही नहीं सकती। अल्लाह फ़रमायेगा वह मेरी रज़ामन्दी है, जो सबसे बेहतर है। इमाम हाफ़िज़ ज़िया मक़्दसी ने जन्नत की सिफ़तों के बारे में एक मुस्तक़िल किताब लिखी है और इस हदीस को सही की शर्तों पर बतलाया है। वल्लाहु आलम

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝	ऐ नबी! कुफ़्फ़ार (से तलवार के साथ) और मुनाफ़िक़ों से (ज़बानी) जिहाद कीजिये, और उन पर सख़्ती कीजिए। (ये दुनिया में तो इसके हक़दार हैं) और (आख़िरत में) इनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है। (73) वे लोग अल्लाह की क़समें खा जाते हैं कि हमने (फ़ुलाँ बात) नहीं कही, हालाँकि यक़ीनन उन्होंने कुफ़्र की बात कही थी, और (वह बात कहकर) अपने (ज़ाहिरी) इस्लाम के बाद (ज़ाहिर में भी) काफ़िर हो गये, और उन्होंने ऐसी बात का इरादा किया था जो उनके हाथ न लगी, और यह उन्होंने सिर्फ़ इस बात का बदला दिया है कि उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने अल्लाह के रिज़्क़ से मालदार कर दिया, सो अगर (इसके बाद भी) तौबा करें तो उनके लिए (दोनों जहान में) बेहतर होगा। और अगर मुँह मोड़ा तो अल्लाह तआ़ला उनको दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा देगा, और उनका दुनिया में न कोई यार है और न मददगार। (74)

काफ़िर और मुनाफ़िक़ जहन्नम में जायेंगे

काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों से जिहाद और उन पर सख़्ती का हुक्म हुआ। मोमिनों से झुककर मिलने का हुक्म हुआ। काफ़िरों की असली जगह जहन्नम मुक़र्रर फ़रमा दी। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि हुज़ूर सल्ल. को अल्लाह तआ़ला ने चार तलवारों के साथ मबऊस फ़रमाया- एक तलवार तो मुश्रिकों में, फ़रमाता है:

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ.

हुर्मत वाले महीनों के गुज़रते ही मुश्रिकों की ख़ूब ख़बर लो।

दूसरी तलवार अहले किताब के काफ़िरों में, फ़रमाता है:

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ.... الخ

यानी जो अल्लाह पर क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं लाते ख़ुदा और रसूल के हराम किये हुए को हराम नहीं मानते, दीने हक़ को क़बूल नहीं करते, उन अहले किताब से जिहाद करो जब तक कि वे ज़िल्लत के साथ झुककर अपने हाथ से जिज़्या देना मन्ज़ूर न कर लें।

तीसरी तलवार मुनाफ़िक़ों में, इरशाद होता है:

جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ.

काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो।

चौथी तलवार बाग़ियों में, फ़रमाया:

فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ.

बाग़ियों से उस वक़्त तक लड़ो जब तक कि वे ख़ुदा के हुक्म के सामने झुक न जायें।

इससे साबित होता है कि मुनाफ़िक़ जब अपना निफ़ाक़ ज़ाहिर करने लगें तो उनसे तलवार से जिहाद करना चाहिये। इमाम इब्ने जरीर रह. का पसन्दीदा क़ौल भी यही है। इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि हाथ से न हो सके तो उनके मुँह पर डाँट-डपट से। इब्ने अ़ब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों से तो तलवार के साथ जिहाद करने का हुक्म दिया है और मुनाफ़िक़ों के साथ ज़बानी जिहाद का हुक्म फ़रमाया है, और यह कि उन पर नर्मी न की जाये। मुजाहिद रह. का भी तक़रीबन यही क़ौल है। उन पर शरई सज़ा का जारी करना भी उनसे जिहाद करना है। मक़सद यह है कि कभी तलवार भी उनके ख़िलाफ़ उठानी पड़ेगी, वरना जब तक हो सके ज़बान से काम लिया जाये, जैसा मौक़ा हो उसके मुताबिक़ अपना तर्ज़े-अ़मल (व्यवहार और रणनीति) इख़्तियार करे।

क़समें खा-खाकर कहते हैं कि उन्होंने ऐसी कोई बात ज़बान से नहीं निकाली, हालाँकि दर हक़ीक़त कुफ़्र का ही बोल बोल चुके हैं और अपने ज़ाहिरी इस्लाम के बाद खुला कुफ़्र कर चुके हैं। यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में उतरी है। एक जोहनी और एक अन्सारी में लड़ाई हो गई, जोहनी शख़्स अन्सार पर ग़ालिब आ गया (छा गया) तो उस मुनाफ़िक़ ने अन्सार को उसकी मदद पर उभारा और कहने लगा अल्लाह की क़सम! हमारी और उस मुहम्मद की तो वही मिसाल है कि अपने कुत्ते को मोटा ताज़ा करो कि यह तुझे ही काटे, वल्लाह हम अब की मर्तबा मदीना वापस गये तो हम इज़्ज़तदार और सम्मानित लोग इन तमाम कमीने लोगों को वहाँ से निकाल बाहर करेंगे। एक मुसलमान ने जाकर हुज़ूर सल्ल. से यह

Maktab E Ashraf

गुफ़्तगू दोहरा दी, आपने उसे बुलवाकर उससे सवाल किया तो यह क़सम खाकर इनकार कर गया, अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

हज़रत अनस रज़ि. फ़रमाते हैं कि मेरी क़ौम के जो लोग हर्रा की जंग में काम आये उन पर मुझे बड़ा ही रंज व सदमा हो रहा था, इसकी ख़बर हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म को पहुँची तो आपने मुझे ख़त में लिखा कि रसूलुल्लाह सल्ल. से मैंने सुना है, आप दुआ़ करते थे कि खुदाया अन्सार को और अन्सार के लड़कों को बख़्श दे। नीचे के रावी इब्नुल-फ़ज़्ल को इसमें शक है कि आपने अपनी इस दुआ़ में उनके पोतों के नाम भी लिये या नहीं। पस हज़रत अनस रज़ि. ने मौजूदा लोगों में से किसी से हज़रत ज़ैद के बारे में सवाल किया तो उसने कहा यही ज़ैद वह हैं जिनके कानों की सुनी हुई बातों की सच्चाई की गवाही खुद खुदा-ए-अ़लीम ने दी।

वाक़िआ़ यह है कि हुज़ूर सल्ल. तो खुतबा पढ़ रहे थे कि एक मुनाफ़िक़ ने आकर कहा- अगर यह सच्चा है तो फिर हम गधों से भी ज़्यादा अहमक़ हैं। हज़रत ज़ैद रज़ि. ने कहा अल्लाह की क़सम! नबी करीम सल्ल. बिल्कुल सच्चे हैं और बेशक तू अपनी हिमाक़त में गधे से भी बढ़ा हुआ है। फिर आपने यह बात हुज़ूर सल्ल. के सामने अ़र्ज़ की लेकिन वह मुनाफ़िक़ पलट गया, साफ़ इनकार कर गया और कहा कि ज़ैद ने झूठ बोला है, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी और हज़रत ज़ैद की सच्चाई बयान फ़रमाई। लेकिन मशहूर बात यह है कि यह वाक़िआ़ ग़ज़वा-ए-मुस्तलक़ का है, मुम्किन है कि रावी को इस आयत के ज़िक्र में वहम हो गया हो, और दूसरी आयत के बदले इसे बयान कर दिया हो। यही हदीस बुख़ारी शरीफ़ में है, लेकिन इस जुमले तक कि ज़ैद वह हैं जिनके कानों की सुनी हुई बात की सच्चाई की गवाही खुद खुदा-ए-अ़लीम ने दी है। मुम्किन है कि बाद का हिस्सा मूसा बिन उक़्बा रावी का अपना क़ौल हो। इसी की एक रिवायत में यह पिछला हिस्सा इब्ने शिहाब के क़ौल से नक़ल किया गया है। वल्लाहु आलम।

'मग़ाज़ी-ए-उमवी' में हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ि. के तबूक वाले वाक़िए के बाद है कि जो मुनाफ़िक़ बाद के लिये छोड़ दिये गये थे और जिनके बारे में क़ुरआन नाज़िल हुआ, उनमें से बाज़ नबी करीम सल्ल. के साथ भी थे, उनमें जलास बिन सवीद बिन सामित भी था। उनके घर में उमैर बिन सअ़द की वालिदा थीं जो अपने साथ हज़रत उमैर को भी ले गई थीं, जब उन मुनाफ़िक़ों के बारे में क़ुरआनी आयतें नाज़िल हुईं तो जलास कहने लगा वल्लाह अगर यह शख़्स अपने क़ौल में सच्चा है तो हम तो गधों से भी बुरे हैं। हज़रत उमैर बिन सअ़द रज़ि. यह सुनकर फ़रमाने लगे कि यूँ तो आप मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं और आपकी तकलीफ़ मुझ पर अपनी तकलीफ़ से भी ज़्यादा भारी है, लेकिन आपने इस वक़्त तो ऐसी बात मुहँ से निकाली है कि अगर मैं उसे पहुँचाऊँगा तो रुस्वाई, और न पहुँचाऊँ तो हलाकत है, रुस्वाई यक़ीनन हलाकत से हल्की चीज़ है। यह कहकर यह बुज़ुर्ग हुज़ूरे पाक के पास हाज़िर हुए और सारी बात आपको कह सुनाई। जलास को जब यह पता चला तो उसने सरकारे नुबुव्वत में हाज़िर होकर क़समें खा-खाकर कहा कि उमैर झूठा है, मैंने यह बात हरगिज़ नहीं कही। इस पर यह आयत उतरी।

रिवायत किया गया है कि इसके बाद जलास ने तौबा कर ली और दिल से ईमान लाये। मुम्किन है कि जलास के तौबा कर लेने का ख़्याल खुद इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ का हो और हज़रत कअ़ब से इस सिलसिले में कोई वज़ाहत मन्क़ूल न हो। वल्लाहु आलम

एक और रिवायत में है कि जलास बिन सवीद बिन सामित अपने सौतेले बेटे हज़रत मुस्अ़ब रज़ि. के

Maktaba E Ashraf

साथ क़ुबा से आ रहे थे, दोनों गधों पर सवार थे, उस वक़्त जलास ने यह कहा था, इस पर उनके बेटे ने फ़रमाया कि ऐ दुश्मने ख़ुदा! मैं तेरी इस बात की रसूलुल्लाह सल्ल. को ख़बर करूँगा। फ़रमाते हैं कि मुझे तो डर लग रहा था कि कहीं मेरे बारे में क़ुरआन नाज़िल न हो, या मुझ पर कोई अ़ज़ाबे इलाही न आ जाये, या इस गुनाह में मैं भी अपने बाप के साथ शरीक न कर दिया जाऊँ। चुनाँचे मैं सीधा हाज़िर हुआ और हुज़ूर सल्ल. को मय अपने इस सिलसिले में ख़तरों और आशंकाओं के, पूरी बात सुनाई।

इब्ने जरीर में इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल. एक सायेदार पेड़ के नीचे बैठे हुए फ़रमाने लगे- अभी तुम्हारे पास एक शख़्स आयेगा और तुम्हें शैतान दिखेगा, ख़बरदार तुम उससे कलाम न करना। उसी वक़्त एक इनसान केरी आँखों वाला आया, आपने उससे फ़रमाया तू और तेरे साथी मुझे गालियाँ क्यों देते हो? वह उसी वक़्त गया और अपने साथियों को लेकर आया। सबने क़समें खा-खाकर कहा कि हमने कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं कहा, यहाँ तक कि हुज़ूर सल्ल. ने उनसे दरगुज़र फ़रमा लिया। फिर यह आयत उतरी, इसमें जो यह फ़रमाया गया है कि उन्होंने वह इरादा दिया जो पूरा न हुआ, मुराद इससे जलास का यह इरादा है कि अपने सौतेले बेटे को जिसने हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में बात कह दी थी, क़त्ल कर दे। एक क़ौल है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने ख़ुद हुज़ूर सल्ल. के क़त्ल का इरादा किया था, यह भी कहा जाता है कि बाज़ लोगों ने इरादा कर लिया था कि इसे सरदार बना देंगे अगरचे रसूलुल्लाह सल्ल. राज़ी न हों। यह भी मरवी है कि दस से ज़्यादा आदमियों ने ग़ज़्वा-ए-तबूक में रास्ते में हुज़ूर सल्ल. को धोखा देकर क़त्ल करना चाहा था। चुनाँचे हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. फ़रमाते हैं- मैं और हज़रत अ़म्मार नबी करीम सल्ल. की ऊँटनी के आगे पीछे थे। एक चलाता था दूसरा नकेल थामता था। हम अ़क़बा में थे कि बारह शख़्स मुँह पर नक़ाब डाले आये और ऊँटनी को घेर लिया। हुज़ूर सल्ल. ने उन्हें ललकारा और वे दुम दबाकर भाग खड़े हुए। आपने हमसे फ़रमाया तुमने इन्हें पहचाना? हमने कहा नहीं! लेकिन उनकी सवारियाँ हमारी निगाहों में हैं, आपने फ़रमाया ये मुनाफ़िक़ थे, और क़ियामत तक इनके दिल में निफ़ाक़ रहेगा। जानते हो ये किस इरादे से आये थे? हमने कहा नहीं! फ़रमाया अल्लाह के रसूल को अ़क़बा में परेशान करने और तकलीफ़ पहुँचाने के लिये। हमने कहा हुज़ूर! उनकी क़ौम के लोगों से कहलवा दीजिये कि हर क़ौम वाले अपनी क़ौम के जिस आदमी की शिर्कत इसमें पायें उसकी गर्दन उड़ा दें। आपने फ़रमाया नहीं! वरना लोगों में बातें बनने लगेंगी कि मुहम्मद पहले तो इन्हीं लोगों को लेकर अपने दुश्मनों से लड़े, उन पर फ़तह हासिल करके फिर अपने इन साथियों को भी क़त्ल कर डाला। आपने उनके लिये बद्दुआ़ की कि ख़ुदा उनके दिलों पर आग के फोड़े पैदा कर दे।

एक और रिवायत में है कि ग़ज़्वा-ए-तबूक से वापसी में हुज़ूर सल्ल. ने ऐलान करा दिया कि मैं अ़क़बा के रास्ते से जाऊँगा, उस राह में कोई न आये। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. आपकी ऊँटनी की नकेल थामे हुए थे और हज़रत अ़म्मार रज़ि. पीछे से चला रहे थे, कि एक जमाअ़त अपनी ऊँटनियों पर सवार आ गई। हज़रत अ़म्मार रज़ि. ने उनकी सवारियों को मारना शुरू किया और हज़रत हुज़ैफ़ा हुज़ूर सल्ल. के फ़रमान के मुताबिक़ आपकी सवारी को नीचे की तरफ़ चलाने लगे, जब नशेबी इलाक़ा आ गया तो आप सवारी से उतर गये, इतने में अ़म्मार रज़ि. भी वापस पहुँच गये। आपने मालूम किया कि ये लोग कौन थे पहचाना भी? हज़रत अ़म्मार रज़ि. ने कहा मुँह तो छुपे हुए थे, लेकिन सवारियाँ मालूम हैं। पूछा उनका इरादा क्या था जानते हो? जवाब दिया कि नहीं। आपने फ़रमाया इरादा था कि शोर करके हमारी ऊँटनी को भड़का (बिदका) दें और हमें गिरा दें।

Maktab E Ashraf

एक शख़्स ने हज़रत अ़म्मार रज़ि. से उनकी तादाद दरियाफ़्त की तो कहा चौदह। आपने फ़रमाया अगर तू भी उनमें था तो पन्द्रह। हुज़ूर सल्ल. ने उनमें से तीन शख़्स के नाम गिनवाये, उन्होंने कहा वल्लाह हमने न तो मुनादी की निदा सुनी और न हमें अपने साथियों के किसी बुरे इरादे का इल्म था। हज़रत अ़म्मार रज़ि. फ़रमाते हैं कि बाक़ी के बारह लोग अल्लाह व रसूल से लड़ाई करने वाले हैं, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने उनमें से बहुत से लोगों के नाम भी गिनवाये हैं। वल्लाहु आलम

सही मुस्लिम में है कि अहले अ़क़बा में से एक शख़्स के साथ हज़रत अ़म्मार रज़ि. का कुछ ताल्लुक़ था तो उससे आपने क़सम देकर अ़क़बा वालों की गिनती मालूम की, लोगों ने भी उससे कहा कि हाँ बतला दो। उसने कहा- हमें मालूम हुआ है कि वे चौदह थे, अगर मुझे भी शामिल किया जाये तो पन्द्रह हुए। उनमें से बारह तो ख़ुदा व रसूल के दुश्मन ही थे और तीन शख़्सों की इस क़सम पर कि न हमने मुनादी सुनी न हमें जाने वालों के इरादे का इल्म, इसलिये माज़ूर रखा गया। गर्मी का मौसम था पानी बहुत कम था, आपने फ़रमा दिया था कि मुझसे पहले वहाँ कोई न पहुँचे, लेकिन इस पर भी कुछ लोग पहुँच गये थे, आपने उन पर लानत की, आपका फ़रमान है कि मेरे साथियों में बारह मुनाफ़िक़ हैं जो न जन्नत में जायेंगे न उसकी ख़ुशबू पायेंगे। आठ के मौंढों पर तो आग का फोड़ा होगा जो सीने तक पहुँचेगा और उन्हें हलाक कर देगा। इसी सबब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. को रसूलुल्लाह सल्ल. का राज़दार कहा जाता था, आपने सिर्फ़ इन्हीं को उन मुनाफ़िक़ों के नाम बतलाये थे। वल्लाहु आलम

तबरानी में उनके नाम ये हैं- मअ़तब बिन क़शीर, वदीआ़ बिन साबित, जद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नबील बिन हारिस जो अ़मर बिन औफ़ के क़बीले का था, और हारिस बिन यज़ीद ताई और औस बिन क़ीती और हारिस बिन सवीद और सफ़ीह बिन वर्राह और क़ैस बिन फ़हर और सवीद और दाइस क़बीला बनू जअ़ला के, और क़ैस बिन अ़मर बिन सहल और ज़ैद बिन सीत और सलाला बिन हुमाम, ये दोनों क़बीला बनू क़ैनुक़ाअ़ के हैं। यह सब ज़ाहिर में मुसलमान बने हुए थे।

इस आयत में इसके बाद फ़रमाया गया है कि उन्होंने इस बात का बदला लिया है कि उन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से अपने रसूल के हाथ से मालदार बनाया, अगर उन पर ख़ुदा का पूरा फ़ज़्ल हो जाता तो उन्हें हिदायत भी नसीब हो जाती। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने अन्सार से फ़रमाया कि क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में नहीं पाया था कि फिर अल्लाह ने मेरी वजह से तुम्हारी रहबरी की (यानी सही रास्ता दिखाया), तुम आपस में बिखरे हुए थे अल्लाह तआ़ला ने मेरी वजह से तुम में उलफ़त डाल दी। तुम फ़क़ीर बेनवा थे, अल्लाह ने मेरे सबब से तुम्हें ग़नी और मालदार कर दिया। हर हर सवाल के जवाब में अन्सार रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़रमाते जाते थे कि बेशक अल्लाह और उसके रसूल का हम पर इससे ज़्यादा एहसान है। ग़र्ज़ कि बयान यह है कि बिना वजह के बिना क़सूर के ये लोग दुश्मनी और बेईमानी पर उतर आये। जैसे सूरः बुरूज में है कि इन मुसलमानों से उन काफ़िरों का इन्तिक़ाम (बदला) सिर्फ़ इनके ईमान के कारण था। हदीस में है कि इब्ने जमील सिर्फ़ इस बात का इन्तिक़ाम लेता है कि वह फ़कीर था, अल्लाह ने उसे ग़नी (मालदार) कर दिया।

फिर फ़रमाता है कि ये अब भी तौबा कर लें तो इनके हक़ में बेहतर है। और अगर वे अपने इसी तरीक़े पर कारबन्द रहे तो उन्हें दुनिया में भी सख़्त सज़ा होगी, क़त्ल से भी और सदमे व ग़म से भी, और दोज़ख़ के ज़लील, रुस्वा करने वाले और नाक़ाबिले बरदाश्त अ़ज़ाब से भी। दुनिया में कोई न होगा जो

इनकी तरफ़दारी करे, इनकी मदद करे, इनके काम आये, इनसे अ़ज़ाब हटाये या नफ़ा पहुँचाये। बिल्कुल असहाय और बिना मददगार के रह जायेंगे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰـنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَـصَّـدَّقَـنَّ وَلَـنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ٥ فَلَمَّآ اٰتٰـهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُـمْ مُّعْرِضُوْنَ ٥ فَـاَعْـقَبَهُـمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَـا وَعَـدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ٥ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰهُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ٥	और उन (मुनाफ़िक़ों) में बाज़ आदमी ऐसे हैं कि ख़ुदा तआ़ला से अ़हद करते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला हमको अपने फ़ज़्ल से (बहुत-सा माल) अ़ता फ़रमा दे तो हम ख़ूब ख़ैरात करें, और हम (उसके ज़रिये से) ख़ूब नेक-नेक काम किया करें। (75) सो जब अल्लाह तआ़ला ने उनको अपने फ़ज़्ल से (बहुत-सा माल) दे दिया तो वे उसमें बुख़्ल करने लगे (कि ज़कात न दी) और (इताअ़त से) मुँह मोड़ने लगे, और वे मुँह फेरने के आ़दी हैं। (76) सो अल्लाह तआ़ला ने उसकी सज़ा में उनके दिलों में निफ़ाक़ (क़ायम) कर दिया (जो) ख़ुदा के पास जाने के दिन तक (रहेगा) इस सबब से कि उन्होंने ख़ुदा तआ़ला से अपने वायदे में ख़िलाफ़ किया और इस सबब से कि वे (उस वायदे में शुरू ही से) झूठ बोलते थे। (77) क्या उनको ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला को उनके दिल का राज़ और उनकी सरगोशी "यानी कानाफूसी" सब मालूम है, और यह कि अल्लाह तआ़ला तमाम ग़ैब की बातों को ख़ूब जानते हैं। (78)

मुनाफ़िक़ अपने वादे से फिर गये

बयान हो रहा है कि इन मुनाफ़िक़ों में वह भी है जिसने अ़हद किया कि अगर मुझे अल्लाह तआ़ला मालदार कर दे तो मैं बड़ी सख़ावत करूँ और नेक बन जाऊँ। लेकिन जब अल्लाह ने उसे अमीर और ख़ुशहाल बना दिया, उसने अपने वादे को तोड़ डाला और बख़ील बन बैठा, जिसकी सज़ा में क़ुदरत ने उसके दिल में हमेशा के लिये निफ़ाक़ डाल दिया। यह आयत सालबा बिन हातिब अन्सारी के बारे में नाज़िल हुई है। उसने हुज़ूर सल्ल. से दरख़्वास्त की कि मेरे लिये मालदारी की दुआ़ कीजिये, आपने फ़रमाया थोड़ा जिसका शुक्र अदा हो उस बहुत से अच्छा है जो अपनी ताक़त से ज़्यादा हो। उसने फिर दोबारा भी दरख़्वास्त की तो आपने फिर समझाया कि तू अपना हाल अल्लाह के नबी जैसा रखना पसन्द नहीं रखता? वल्लाह अगर मैं चाहता तो ये पहाड़ सोने चाँदी के बनकर मेरे साथ चलते। उसने कहा हुज़ूर! वल्लाह मेरा इरादा है कि अगर अल्लाह मुझे मालदार कर दे तो मैं ख़ूब दान-पुन करूँ। हर एक को उसका हक़ अदा करूँ। आपने उसके लिये माल की बरकत की दुआ़ की, उसकी बकरियों में बढ़ोतरी शुरू हुई, जैसे कीड़े बढ़

रहे हों, यहाँ तक कि मदीना शरीफ़ उसके जानवरों के लिये तंग हो गया। यह एक मैदान में निकल गया, ज़ोहर असर तो जमाअत के साथ अदा करता था, बाक़ी नमाज़ें जमाअत से नहीं मिलती थीं। जानवरों में और बरकत हुई तो उसे और दूर जाना पड़ा, अब सिवाय जुमे के और सब जमाअतें उससे छूट गईं। माल और बढ़ता गया, होते-होते जुमे को आना भी उसने छोड़ दिया। आने जाने वाले क़ाफ़िलों से पूछ लिया करता था कि जुमे के दिन क्या बयान हुआ।

एक बार हुज़ूर सल्ल. ने उसका हाल मालूम किया, लोगों ने सब कुछ बयान कर दिया। आपने इज़हारे अफ़सोस किया, उधर आयत उतरी कि उनके माल से सदक़ा ले और सदक़े के अहकाम भी बयान हुए।

आपने दो शख़्सों को जिनमें एक क़बीला जोहनिया का था और दूसरा क़बीला सुलैम का, उन्हें (ज़कात सदक़े का) माल वसूल करने वाला बनाकर सदक़ा लेने के अहकाम लिखकर परवाना देकर भेजा और फ़रमाया सालबा से और बनू सुलैम के फ़ुलाँ शख़्स से सदक़ा ले आओ। ये दोनों सालबा के पास पहुँचे, फ़रमाने पैग़म्बर दिखाया, सदक़ा तलब किया तो वह कहने लगा वाह-वाह यह तो एक तरह का टैक्स है, यह तो बिल्कुल वैसा ही है जैसे काफ़िरों से जिज़या लिया जाता है। यह क्या बात है, अच्छा अब तो जाओ लौटते हुए आना।

दूसरा शख़्स सुलैमी था उसे जब मालूम हुआ तो उसने अपने बेहतरीन जानवर निकाले और उन्हें लेकर ख़ुद ही आगे बढ़ा। इन्होंने ने उन जानवरों को देखकर कहा- न तो ये हमारे लेने के लायक़ न तुझ पर इन का देना वाजिब। उसने कहा मैं तो अपनी ख़ुशी से ही बेहतरीन जानवर देना चाहता हूँ आप इन्हें क़बूल फ़रमाईये। आख़िरकार उन्होंने ले लिये, औरों से भी वसूल किया और लौटते हुए फिर सालबा के पास आये, उसने कहा ज़रा मुझे वह पर्चा तो पढ़वाओ जो तुम्हें दिया गया है। पढ़कर कहने लगा भाई यह तो साफ़ साफ़ जिज़या (एक तरह का टैक्स) है। काफ़िरों पर जो टैक्स मुक़र्रर किया जाता है यह तो बिल्कुल वैसा ही है, अच्छा तुम जाओ मैं सोच समझ लूँ।

ये वापस चले गये, इन्हें देखते ही हुज़ूर सल्ल. ने सालबा पर इज़हारे अफ़सोस किया और सुलैमी शख़्स के लिये बरकत की दुआ की। अब इन्होंने भी सालबा और सुलैमी दोनों का वाक़िआ कह सुनाया। पस अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। सालबा के एक क़रीबी रिश्तेदार ने जब यह सब कुछ सुना तो सालबा से जाकर कहा और आयत भी पढ़कर सुनाई। यह हुज़ूर सल्ल. के पास आया और ख़्वाहिश की कि उसका सदक़ा क़बूल किया जाये। आपने फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे तेरा सदक़ा क़बूल करने से मना फ़रमा दिया है। यह अपने सर पर ख़ाक डालने लगा, आपने फ़रमाया यह सब तो तेरा ही किया-धरा है, मैंने तो तुझसे कहा था लेकिन तू न माना। यह वापस अपनी जगह चला आया। हुज़ूर सल्ल. ने इन्तिक़ाल तक इसकी कोई चीज़ क़बूल नहीं फ़रमाई।

फिर ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में आया और कहने लगा कि मेरी जो इज़्ज़त हुज़ूर सल्ल. के पास थी वह और मेरा जो मर्तबा अन्सार में है वह आप ख़ूब जानते हैं, आप मेरा सदक़ा क़बूल फ़रमाईये। आपने जवाब दिया- जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़बूल नहीं फ़रमाया तो मैं क्यों करने लगा? ग़र्ज़ आपने भी इनकार कर दिया।

जब आपका भी इन्तिक़ाल हो गया और अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि. मुसलमानों के वाली हुए तो फिर यह आया और कहा कि अमीरुल-मोमिनीन! आप मेरा सदक़ा क़बूल फ़रमाईये। अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि. ने जवाब दिया कि जब रसूलुल्लाह सल्ल. ने क़बूल नहीं फ़रमाया, ख़लीफ़ा-ए-अव्वल ने क़बूल नहीं फ़रमाया तो अब मैं कैसे क़बूल कर सकता हूँ। चुनाँचे आपने भी अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में

उसका सदका कुबूल नहीं फ़रमाया।

फिर ख़िलाफ़त हज़रत उस्मान रज़ि. के सुपुर्द हुई तो यह मुनाफ़िक़ फिर आया और लगा मिन्नत व ख़ुशामद करने, लेकिन आपने भी यही जवाब दिया कि ख़ुद हुज़ूरे अकरम सल्ल. ने और आपके दोनों ख़लीफ़ाओं ने तेरा सदक़ा कुबूल नहीं फ़रमाया तो मैं कैसे कुबूल कर लूँ? चुनाँचे कुबूल नहीं किया। इसी दौरान में यह शख़्स हलाक हो गया।

ग़र्ज़ पहले तो वादे किये थे सख़ावत के और वह भी क़समें खा-खाकर, लेकिन बाद में बजाय सख़ावत (दान-पुन) के और बुख़्ल हो गया और वादे को तोड़ डाला, इस झूठ और अ़हद तोड़ने के बदले उसके दिल में निफ़ाक़ जड़ पकड़ गया, जो उस वक़्त से उसकी पूरी ज़िन्दगी तक उसके साथ ही रहा।

मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ

हदीस में भी है कि मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें (पहचान और निशानियाँ) हैं-

1. जब बात करे झूठ बोले।
2. जब वादा करे उसके ख़िलाफ़ करे।
3. जब उसको अमानत सौंपी जाये तो ख़ियानत करे।

क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह छुपे खुले का, दिल के इरादों और सीने के भेदों का जानने वाला है। वह पहले ही से जानता था कि यह ख़ाली ज़बानी बकवास है, कि अगर मालदार हो गये तो यूँ ख़ैरातें करेंगे, शुक्रगुज़ारी करेंगे, नेकियाँ करेंगे, लेकिन दिलों पर नज़र रखने वाला ख़ुदा ख़ूब जानता है कि ये माल में मस्त हो जायेंगे और दौलत पाकर मस्तियाँ, नाशुक्री और बुख़्ल करने लगेंगे। वह हर हाज़िर व ग़ायब का जानने वाला है, वह हर छुपे खुले का आ़लिम है, ज़ाहिर बातिन सब उस पर रोशन है।

ये (मुनाफ़िक़ लोग) ऐसे हैं कि नफ़्ली सदक़ा देने वाले मुसलमानों पर सदक़ों के बारे में ताना मारते हैं, और (ख़ासकर) उन लोगों पर (और ज़्यादा) जिनको सिवाय मेहनत (व मज़दूरी की आमदनी) के और कुछ मयस्सर नहीं होता, यानी उनसे मज़ाक़-ठट्ठा करते हैं, अल्लाह उनको इस मज़ाक़ उड़ाने का तो ख़ास बदला देगा, और (मुतलक़ ताना मारने का यह बदला मिलेगा ही कि) उनके लिए (आख़िरत में) दर्दनाक सज़ा होगी। (79)	اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○

मुनाफ़िक़ों की बकवास और बेहूदा बातें

यह भी मुनाफ़िक़ों की एक बुरी ख़स्लत है कि उनकी ज़बान से कोई भी बच नहीं सकता, न सख़ी न बख़ील। ये ऐब तलाशने वाले और बुराई करने वाले लोग हैं। अगर कोई शख़्स बड़ी रक़म अल्लाह के लिये दे तो ये उसे रियाकार (दिखावा करने वाला) कहने लगते हैं और अगर कोई मिस्कीन अपनी माली कमज़ोरी

Maktaba E Ashraf

की बिना पर थोड़ा बहुत दे तो ये नाक-भौं चढ़ाकर कहते हैं- लो इनकी इस मामूली सी चीज़ का भी ख़ुदा भूखा था। चुनाँचे जब सदक़ात देने की आयत उतरी तो सहाबा रज़ि. अपने अपने सदक़ात लिये हुए हाज़िर हुए। एक साहिब ने दिल खोलकर बहुत बड़ी रक़म दी, उसे तो मुनाफ़िक़ों ने रियाकार का ख़िताब दिया, और एक साहिब बेचारे मिस्कीन आदमी थे, सिर्फ़ एक साअ़ अनाज लाये, उन्हें कहा कि इसके इस सदक़े की ख़ुदा को क्या ज़रूरत थी? इसका बयान इस आयत में है।

एक मर्तबा आप सल्ल. ने बक़ीअ़ (एक मक़ाम) में फ़रमाया- जो सदक़ा देगा मैं उसके बारे में क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने गवाही दूँगा। उस वक़्त एक सहाबी ने अपनी पगड़ी में से कुछ देना चाहा लेकिन फिर लपेट लिया। इतने में एक साहिब जो स्याह रंग और छोटे क़द के थे, एक ऊँटनी लेकर आगे बढ़े जिससे ज़्यादा अच्छी ऊँटनी बक़ीअ़ भर में न थी, कहने लगे या रसूलल्लाह! यह अल्लाह के नाम पर ख़ैरात है। आप सल्ल. ने फ़रमाया बहुत अच्छा। उसने कहा लीजिये संभाल लीजिये। इस पर किसी ने कहा इससे तो ऊँटनी ही अच्छी है। आपने सुन लिया और फ़रमाया तू झूठा है, यह तुझसे और इससे तीन गुना अच्छा है। अफ़सोस सैंकड़ों ऊँट रखने वाले तुझ जैसों पर। तीन मर्तबा यही फ़रमाया, फिर फ़रमाया मगर वह जो अपने माल को इस तरह इस तरह करे और लपें भर-भरकर आप सल्ल. ने अपने हाथों से दायें बायें इशारा किया, यानी ख़ुदा की राह में ख़र्च करे। फिर फ़रमाया उन्होंने फ़लाह (कामयाबी) पा ली जो कम माल वाले हों और ज़्यादा इबादत वाले हों।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि. चालीस औक़िया चाँदी लाये और एक ग़रीब अन्सारी एक साअ़ अनाज लाये, मुनाफ़िक़ों ने एक को रियाकार बतलाया दूसरे के सदक़े को हक़ीर (बेहक़ीक़त) बतलाया। एक मर्तबा आप सल्ल. के हुक्म से लोगों ने माल ख़ैरात देना और जमा करना शुरू किया, एक साहिब एक साअ़ खजूरें ले आये और कहने लगे हुज़ूर! मेरे पास खजूरों के दो साअ़ थे एक मैंने अपने और अपने बाल-बच्चों के लिये रोक लिया और एक ले आया। आपने उसे भी जमा शुदा माल में डाल देने को फ़रमाया। इस पर मुनाफ़िक़ बकवास करने लगे कि ख़ुदा और रसूल को इसकी कोई ज़रूरत नहीं। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ि. ने कहा मेरे पास एक सौ औक़िया सोना है, मैं सबको सदक़ा करता हूँ। हज़रत उमर रज़ि. ने कहा होश में भी है? आपने जवाब दिया हाँ होश में हूँ। फ़रमाया फिर क्या कर रहा है? आपने फ़रमाया सुनो! मेरे पास आठ हज़ार हैं, जिनमें से चार हज़ार तो मैं ख़ुदा को क़र्ज़ दे रहा हूँ और चार हज़ार अपने लिये रख लेता हूँ। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया अल्लाह तुझे बरकत दे, जो तूने रख लिया और जो तूने ख़र्च कर दिया। मुनाफ़िक़ उन पर फब्तियाँ कसने लगे कि फूल गये, अपनी सख़ावत दिखाने के लिये लोगों में इतनी बड़ी रक़म दे दी। पस अल्लाह तबारक व तआ़ला ने यह आयत उतारकर बड़ी रक़म और छोटी रक़म वालों की सच्चाई और उन मुनाफ़िक़ों की असलियत ज़ाहिर कर दी।

बनू अ़जलान के आ़सिम बिन अ़दी रज़ि. ने भी उस वक़्त बड़ी रक़म ख़ैरात की थी, एक सौ वसक़ खजूरें दी थीं, लेकिन मुनाफ़िक़ों ने इसे रियाकारी पर महमूल किया था। अपनी मेहनत मज़दूरी की थोड़ी सी ख़ैरात देने वाले अबू अ़क़ील थे। यह क़बीला बनू उनेफ़ के शख़्स थे, इनके एक साअ़ ख़ैरात पर मुनाफ़िक़ों ने मज़ाक़ बनाया। एक और रिवायत में है कि यह चन्दा हुज़ूर सल्ल. ने मुजाहिदीन की एक जमाअ़त के जिहाद पर रवाना करने के लिये किया था, उसमें है कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान ने दो हज़ार दिये थे और दो हज़ार रखे थे, दूसरे बुज़ुर्ग ने रात भर की मेहनत में दो साअ़ खजूरें हासिल करके एक साअ़ रख लीं और एक साअ़ दे दीं। यह हज़रत अबू अ़क़ील रज़ि. थे। रात भर अपनी पीठ पर बोझ ढोते रहे थे, उनका नाम

हुबाब था, और एक क़ौल है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन सालबा था। पस मुनाफ़िक़ों के इस मज़ाक़ उड़ाने की सज़ा में ख़ुदा ने भी उनसे यही बदला लिया, उन मुनाफ़िक़ों के लिये आख़िरत के दर्दनाक अ़ज़ाब हैं और उनके आमाल का उन अ़मलों जैसा ही बुरा बदला है।

आप चाहे उन (मुनाफ़िक़ों) के लिए इस्तिग़फ़ार करें या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी इस्तिग़फ़ार करेंगे तब भी अल्लाह तआ़ला उनको न बख़्शेगा, यह इस वजह से है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और अल्लाह तआ़ला ऐसे सरकश लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (80)	اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ۠ ع ١٠ ٨ ١٦

आपका इस्तिग़फ़ार मुनाफ़िक़ों के हक़ में मुफ़ीद नहीं

अल्लाह फ़रमाता है कि ऐ नबी! ये मुनाफ़िक़ इस क़ाबिल नहीं कि तू इनके लिये ख़ुदा से बख़्शिश तलब करे। एक बार नहीं अगर तू सत्तर बार भी बख़्शिश इनके लिये चाहेगा तो ख़ुदा इन्हें नहीं बख़्शेगा। जो सत्तर का ज़िक्र है, इससे मुराद सिर्फ़ ज़्यादती (अधिकता) मुराद है। वह सत्तर से कम हो या बहुत ज़्यादा हो। बाज़ ने कहा कि मुराद इससे सत्तर का ही अ़दद है। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया कि मैं तो इनके लिये सत्तर बार से भी ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा अगर ख़ुदा इन्हें बख़्श दे। पस ख़ुदा तआ़ला ने एक और आयत में फ़रमा दिया कि इनके लिये तेरा इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ करने की दरख़्वास्त) करना न करना बराबर है। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ का बेटा हाज़िर होकर अ़र्ज़ करता है कि मेरा बाप मौत के क़रीब है, मेरी तमन्ना है कि आप उसके पास तशरीफ़ ले चलें, उसके जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ायें। आपने पूछा तेरा नाम क्या है? उसने कहा हुबाब। आपने फ़रमाया तेरा नाम अ़ब्दुल्लाह है, हुबाब तो शैतान का नाम है। अब आप उनके साथ हुए उनके बाप को अपना कुर्ता अपने पसीने वाला पहनाया, उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। आपसे कहा भी गया कि आप इसके जनाज़े पर नमाज़ पढ़ा रहे हैं? आपने फ़रमाया- अल्लाह ने सत्तर मर्तबा के इस्तिग़फ़ार से भी न बख़्शने को फ़रमाया है तो मैं सत्तर बार फिर सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करूँगा (यह आपकी इनसानों पर रहमत व शफ़क़त का प्रतीक है, फ़ैसला तो अल्लाह ही फ़रमायेंगे)।

ये पीछे रह जाने वाले ख़ुश हो गये अल्लाह के रसूल के (जाने के) बाद अपने बैठे रहने पर, और उनको अल्लाह तआ़ला की राह में अपने माल और जान के साथ जिहाद करना नागवार हुआ, और (दूसरों को भी) कहने लगे कि तुम	فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

Maktaba Ashraf

وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا ۗ لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ○ فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا ۚ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ○	गर्मी में मत निकलो। आप कह दीजिए कि जहन्नम की आग (इससे भी) ज़्यादा गर्म है, क्या ख़ूब होता अगर वे समझते। (81) सो थोड़े (दिनों दुनिया में) हँस लें, और बहुत (दिनों आख़िरत में) रोते रहें, उन कामों के बदले में जो कुछ (कुफ़्र, निफ़ाक़ और ख़िलाफ़त) किया करते थे। (82)

जहन्नम की लपट

जो लोग ग़ज़्वा-ए-तबूक में हुज़ूर सल्ल. के साथ नहीं गये थे और घरों में बैठने पर अकड़ रहे थे, जिन्हें राहे ख़ुदा में माल व जान से जिहाद करना मुश्किल मालूम होता था, जिन्होंने एक दूसरे के कान भरे थे कि इस गर्मी में कहाँ निकलोगे? एक तरफ़ फल पके हुए हैं, साये बढ़े हुए हैं, दूसरी जानिब को लू चल रही है। पस अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमाता है कि जहन्नम की आग जिसकी तरफ़ तुम अपने बुरे आमाल की वजह से जा रहे हो, वह इस गर्मी से ज़्यादा बढ़ी हुई गर्मी अपने अन्दर रखती है। यह आग तो उस आग का सत्तरवाँ हिस्सा है, जैसा कि सहीहैन की हदीस में है। एक और रिवायत में है कि तुम्हारी यह आग दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है, फिर भी यह समुद्र के पानी में दो बार बुझाई हुई है, वरना तुम इससे कोई फ़ायदा हासिल न कर सकते थे। हुज़ूर सल्ल. फ़रमाते हैं कि एक हज़ार साल तक दोज़ख़ की आग दहकाई गई तो सुर्ख़ हो गई। फिर एक हज़ार साल तक जलाई गई तो सफ़ेद हो गई। फिर एक हज़ार साल तक धोंकाई गई तो स्याह हो गई। पस वह अंधेरी रात जैसी सख़्त सियाह है। एक बार आपने आयतः

وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ.....

(यानी सूरः ब-क़रह की आयत 24) की तिलावत की और फ़रमाया एक हज़ार साल तक जलाये जाने से वह सफ़ेद पड़ गई। फिर एक हज़ार साल तक भड़काने से सुर्ख़ हो गई। फिर एक हज़ार साल तक धोंके जाने से स्याह हो गई। पस वह स्याह रात जैसी है, उसके शोलों में भी चमक नहीं।

एक हदीस में है कि अगर दोज़ख़ की आग की एक चिंगारी पूरब में हो तो उसकी गर्मी पश्चिम तक पहुँच जाये। अबू यअ़ला की एक ग़रीब रिवायत है कि अगर इस मस्जिद में एक लाख बल्कि इससे भी ज़्यादा आदमी हों और कोई जहन्नमी यहाँ आकर साँस ले तो उसकी गर्मी से मस्जिद और मस्जिद वाले सब जल जायें। एक और हदीस में है कि सबसे हल्के अ़ज़ाब वाला दोज़ख़ में वह होगा जिसके दोनों पाँव में जूतियाँ आग की तस्मे समेत होंगी, जिससे उसकी खोपड़ी इस तरह जोश मारेगी जैसे कि हाँडी, और वह समझ रहा होगा कि सबसे ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब उसी को हो रहा है, हालाँकि दर असल सबसे हल्का अ़ज़ाब उसी का है। क़ुरआन फ़रमाता है कि वह आग ऐसी भड़कीली है जो खाल उतार देती है। एक और आयत में है कि उनके सरों पर खौलता हुआ गर्म पानी बहाया जायेगा, जिससे उनके पेट की तमाम चीज़ें और उनकी खालें झुलस जायेंगी। फिर लोहे के हथोड़ों से उनके सर कुचले जायेंगे और जब वे वहाँ से निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जायेंगे और कहा जायेगा कि जलने का मज़ा चखो।

Maktab E Ashraf

एक और आयत में है कि जिन लोगों ने हमारी आयतों से इनकार किया हम उनको भड़कती हुई आग में डाल देंगे, उनकी खालें झुलसती जायेंगी और हम और बदलते जायेंगे कि वे ख़ूब अ़ज़ाब चखें। इस आयत में भी फ़रमाया है कि अगर इन्हें समझ होती तो ये जान लेते कि जहन्नम की आग की गर्मी और तेज़ी बहुत ज़्यादा है, तो यक़ीनन ये बावजूद मौसमी गर्मी के रसूलुल्लाह सल्ल. के साथ जिहाद में ख़ुशी-ख़ुशी निकलते और अपनी जान व माल को राहे ख़ुदा में फ़िदा करने पर तुल जाते। अ़रब का शायर कहता है कि तूने अपनी उम्र सर्दी गर्मी से बचने की कोशिश में गुज़ार दी, हालाँकि तुझे चाहिये था कि ख़ुदा की नाफ़रमानियों से बचता कि जहन्नम की आग से बच जाये। अब अल्लाह तबारक व तआ़ला इन बुरी फ़ितरत वाले मुनाफ़िक़ों को डरा रहा है कि थोड़ी सी ज़िन्दगी में यहाँ तो जितना चाहें हंस लें, लेकिन उस आने वाली बड़ी ज़िन्दगी में इनके लिये रोना ही रोना है, जो कभी ख़त्म न होगा।

हुज़ूर सल्ल. का फ़रमान है कि लोगो रोओ और रोना न आये तो ज़बरदस्ती रोओ, जहन्नमी जहन्नम में रोयेंगे यहाँ तक कि उनके गालों पर नहरों जैसे गड्ढे पड़ जायेंगे। आख़िर आँसू ख़त्म हो जायेंगे, अब आँखें ख़ून बरसाने लगेंगी। उनकी आँखों से इस क़द्र आँसू और ख़ून बहेगा कि अगर कोई उसमें कश्तियाँ चलानी चाहे तो चला सकता है। एक और हदीस में है कि जहन्नमी जहन्नम में रोयेंगे और ख़ूब रोते रहेंगे, आँसू ख़त्म हो जाने के बाद पीप निकलना शुरू होगा, उस वक़्त दोज़ख़ के दारोग़ा उनसे कहेंगे कि ऐ बदबख़्तो! रहम की जगह तो तुम कभी भी न रोये, अब यहाँ का रोना धोना बेफ़ायदा है। अब ये चिल्ला-चिल्लाकर जन्नतियों से फ़रियाद करेंगे कि तुम लोग हमारे हो, रिश्ते-कुन्बे के हो, सुनो हम क़ब्रों से प्यासे उठे थे, फिर मैदान-ए-मेहशर में भी प्यासे ही रहे और आज तक यहाँ भी प्यासे ही हैं। हम पर रहम करो, कुछ पानी हमारे हलक़ में डाल दो, या जो रोज़ी अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें दी है उसमें से ही थोड़ा बहुत हमें दे दो। चालीस साल तक कुत्तों की तरह चीख़ते रहेंगे, चालीस साल के बाद उन्हें जवाब मिलेगा कि तुम यूँ ही धुतकारे हुए भूखे प्यासे ही इन सख़्त अ़ज़ाबों में पड़े रहो। अब ये तमाम भलाईयों से मायूस हो जायेंगे।

तो अगर ख़ुदा तआ़ला आपको (इस सफ़र से मदीना को सही-सालिम) उनके किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाये, फिर ये लोग (किसी जिहाद में) चलने की इजाज़त माँगें तो आप (यूँ) कह दीजिए कि तुम कभी भी मेरे साथ न चलोगे, और न मेरे साथ होकर किसी (दीन के) दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहले भी बैठे रहने को पसन्द किया था, तो उन लोगों के साथ बैठे रहो जो (वाक़ई) पीछे रह जाने के लायक़ ही हैं। (83)	فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِىَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝

पूरी तरह बायकाट

इरशाद है कि जब अल्लाह तआ़ला तुझे सलामती के साथ इस ग़ज़्वे (लड़ाई) से वापस मदीना पहुँचा दे और उनमें से कोई जमाअ़त तुझसे किसी और ग़ज़्वे में साथ चलने की दरख़्वास्त करे तो बतौर सज़ा तू

Maktab E Ashraf

साफ़ कह देना कि न तो तुम मेरे साथ वालों में मेरे साथ चल सकते हो न तुम मेरे साथ में दुश्मनों से जंग कर सकते हो। तुम जब मौके पर दग़ा दे गये और पहली बार ही बैठे रहे तो अब तैयारी के क्या मायने? पस यह आयत इस आयत की तरह है:

وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَالَمْ يُؤْمِنُوْابِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ..... الخ

यानी हम भी उनके दिलों और निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग इस पर पहली बार ईमान न लाये, और हम उनको उनकी सरकशी में हैरान व परेशान रहने देंगे।

बदी का बुरा बदला बदी के बाद मिलता है, जैसे कि नेकी की जज़ा भी नेकी के बाद मिलती है। हुदैबिया के उमरे के वक़्त क़ुरआन ने फ़रमाया था:

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَاانْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ..... الخ

यानी ये पीछे रह जाने वाले लोग तुमसे जब तुम ग़नीमतें (जंग में हासिल होने वाला माल) लेने चलोगे कहेंगे कि हमें इजाज़त दो हम भी तुम्हारे साथ हो लें.....। यहाँ फ़रमाया- उनसे कह देना कि बैठ रहने वालों में ही तुम भी रहो, जो औरतों की तरह घरों में घुसे रहते हैं।

और उनमें कोई मर जाये तो उस (के जनाज़े) पर कभी नमाज़ न पढ़िये और न (दफ़्न के लिये) उसकी क़ब्र पर खड़े होईये, क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है और वे कुफ़्र ही की हालत में मरे हैं। (84)	وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ۝

मुनाफ़िक़ की नमाज़े जनाज़ा

हुक्म होता है कि ऐ नबी तुम मुनाफ़िक़ों से बिल्कुल बेताल्लुक़ हो जाओ, उनमें से कोई मर जाये तो तुम न उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ो न उसकी क़ब्र पर जाकर उसके लिये दुआ-ए-मग़फ़िरत करो। इसलिये कि ये कुफ़्र व फ़िस्क़ पर ज़िन्दा रहे और इसी पर मरे। यह हुक्म तो आ़म है चाहे इसका शाने नुज़ूल ख़ास अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के बारे में है, जो मुनाफ़िक़ों का सरदार और इमाम था। सही बुख़ारी शरीफ़ में है कि उसके मरने पर उसके बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ि. रसूलुल्लाह सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दरख़्वास्त की कि मेरे बाप के कफ़न के लिये आप अपना ख़ास पहना हुआ कुर्ता इनायत फ़रमाईये। आपने दे दिया। फिर कहा कि आप ख़ुद उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ायें, आप सल्ल. ने यह दरख़्वास्त भी मन्ज़ूर फ़रमा ली, और नमाज़ पढ़ाने के इरादे से उठे, लेकिन हज़रत उमर रज़ि. ने आपका दामन थाम लिया और अ़र्ज़ कि या रसूलल्लाह! आप उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ायेंगे? हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने इससे मना फ़रमाया है। आप सल्ल. ने फ़रमाया सुनो! अल्लाह तआ़ला ने मुझे इख़्तियार दिया है, फ़रमाया है कि तू उनके लिये इस्तिग़फ़ार कर या न कर, अगर तू उनके लिये सत्तर मर्तबा भी इस्तिग़फ़ार करेगा तो भी अल्लाह तआ़ला उन्हें नहीं बख़्शेगा, तो मैं सत्तर मर्तबा से भी ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा। हज़रत उमर रज़ि. फ़रमाने लगे या रसूलल्लाह! यह मुनाफ़िक़ था, लेकिन फिर भी हुज़ूर सल्ल. ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। इस पर यह आयत उतरी।

एक और रिवायत में है कि उस नमाज़ में सहाबा भी आपकी इक़्तिदा में थे। एक और रिवायत में है, हज़रत उमर फ़रमाते हैं कि जब आप उसकी नमाज़ के लिये खड़े हो गये मैं सफ़ से निकलकर आपके सामने आ खड़ा हुआ और कहा कि क्या आप इस दुश्मने ख़ुदा अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के जनाज़े की नमाज़ पढ़ायेंगे? हालाँकि फ़ुलाँ दिन इसने यूँ कहा और फ़ुलाँ दिन यूँ कहा। उसकी वे तमाम बातें दोहराईं। हुज़ूर सल्ल. मुस्कुराते हुए सब सुनते रहे, आख़िर में फ़रमाया उमर! मुझे छोड़ दे, अल्लाह तआ़ला ने इस्तिग़फ़ार का मुझे इख़्तियार दिया है, अगर मुझे मालूम हो जाये कि सत्तर मर्तबा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार इनके गुनाह माफ़ करा सकता है तो मैं यक़ीनन सत्तर मर्तबा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार (यानी इनके लिये अल्लाह से मग़फ़िरत तलब) करूँगा। चुनाँचे आप सल्ल. ने नमाज़ भी पढ़ाई, जनाज़े के साथ भी गये, दफ़्न में भी मौजूद रहे। उसके बाद मुझे अपनी गुस्ताख़ी पर बहुत अफ़सोस होने लगा कि ख़ुदा और रसूले ख़ुदा ख़ूब इल्म वाले हैं, मैंने ऐसी और इस क़द्र जुर्रत क्यों की। कुछ ही देर हुई होगी जो ये दोनों आयतें नाज़िल हुईं। उसके बाद आख़िरी दम तक न तो हुज़ूर सल्ल. ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी न उसकी क़ब्र पर आकर दुआ़ की।

एक और रिवायत में है कि उसके बेटे ने आपसे यह भी कहा था कि अगर आप तशरीफ़ न लाये तो हमेशा के लिये यह बात हम पर रह जायेगी। जब आप तशरीफ़ लाये तो उसे क़ब्र में उतार दिया था, आप सल्ल. ने फ़रमाया इससे पहले मुझे क्यों न लाये? चुनाँचे वह क़ब्र से निकाला गया, आपने उसके सारे जिस्म पर थुथकार कर दम किया और उसे अपना कुर्ता पहनाया। एक और रिवायत में है कि वह ख़ुद यह वसीयत करके मरा था कि उसके जनाज़े की नमाज़ ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल. पढ़ायें, उसके लड़के ने आकर हुज़ूर सल्ल. को उसकी आरज़ू और इस आख़िरी वसीयत की भी ख़बर की थी, और यह भी कहा था कि उसकी वसीयत यह भी है कि उसे आपके लिबास में कफ़नाया जाये। आप उसके जनाज़े की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए ही थे कि हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ये आयतें लेकर उतरे। एक और रिवायत में है कि जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आपका दामन तानकर नमाज़ के इरादे के वक़्त यह आयत सुनाई लेकिन यह रिवायत ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। एक और रिवायत में है कि उसने अपनी बीमारी के ज़माने में हुज़ूर सल्ल. को बुलाया, आप तशरीफ़ ले गये और जाकर फ़रमाया कि यहूदियों की मुहब्बत ने तुझे तबाह कर दिया। उसने कहा या रसूलल्लाह! यह वक़्त डाँट-डपट का नहीं बल्कि मेरी ख़्वाहिश यह है कि आप मेरे लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करें, मैं मर जाऊँ तो मुझे अपने लिबास में कफ़नायें......।

बाज़ बुज़ुर्गों से रिवायत है कि कुर्ता देने की वजह यह थी कि जब हज़रत अ़ब्बास रज़ि. आये तो उनके जिस्म पर कोई कपड़ा ठीक नहीं आया, आख़िर उसका कुर्ता लिया वह ठीक आ गया। यह भी लम्बा पूरी चौड़ी-चकली हड्डी का आदमी था। पस इसके बदले में आपने उसे उसके कफ़न के लिये अपना कुर्ता अ़ता फ़रमाया। इस आयत के उतरने के बाद न तो किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ आपने पढ़ी न किसी के लिये इस्तिग़फ़ार किया। मुस्नद अहमद में है कि जब आपको किसी जनाज़े की तरफ़ बुलाया जाता तो आप पूछ लेते, अगर लोगों से उसकी भलाईयाँ मालूम होतीं तो आप जाकर उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाते, और अगर कोई ऐसी-वैसी बात कान में पड़ जाती तो साफ़ इनकार कर देते। हज़रत उमर रज़ि. का तरीक़ा आपके बाद यह रहा कि जिसके जनाज़े की नमाज़ हज़रत हुज़ैफ़ा पढ़ते उसके जनाज़े की नमाज़ आप भी पढ़ते, जिसकी हज़रत हुज़ैफ़ा न पढ़ते आप भी न पढ़ते। इसलिये कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. को हुज़ूर सल्ल. ने मुनाफ़िक़ों के नाम गिनवा दिये थे और सिर्फ़ उन्हीं को यह मालूम थे। इसी बिना पर उन्हें राज़दारे

रसूलुल्लाह कहा जाता था। बल्कि एक मर्तबा ऐसा भी हुआ कि हज़रत उमर रज़ि. एक शख़्स के जनाज़े की नमाज़ के लिये खड़े होने लगे तो हज़रत हुज़ैफ़ा ने चुटकी लेकर उन्हें रोक दिया।

जनाज़े की नमाज़ और इस्तिग़फ़ार इन दोनों चीज़ों से मुनाफ़िक़ों के बारे में मुसलमानों को रोक देना यह दलील है इस बात की कि मुसलमानों के बारे में इन दोनों चीज़ों की पूरी ताकीद है। इनमें मुर्दों के लिये भी नफ़ा और लाभ है और ज़िन्दों के लिये भी पूरा अज्र व सवाब है। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है, आप फ़रमाते हैं कि जो जनाज़े में शिर्कत करे नमाज़ पढ़े, उसे एक क़ीरात सवाब मिलता है, और जो दफ़न तक साथ रहे उसे दो क़ीरात मिलते हैं। पूछा गया कि क़ीरात क्या है? फ़रमाया सबसे छोटा क़ीरात उहुद पहाड़ के बराबर होता है। इसी तरह यह भी हुज़ूर सल्ल. की आ़दते मुबारक थी कि मय्यित के दफ़न से फ़ारिग़ होकर वहीं उसकी क़ब्र के पास ठहर कर हुक्म फ़रमाते कि अपने साथी के लिये इस्तिग़फ़ार (बख़्शिश की दुआ़) करो, इसके लिये साबित-क़दमी की दुआ़ करो, इससे इस वक़्त सवाल व जवाब हो रहा है।

और उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआ़ला को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र हुई चीज़ों) की वजह से उनको दुनिया में (भी) अज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनका दम कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए। (85)	وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۚ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ٥

इस मज़मून की आयते करीमा गुज़र चुकी है, और वहीं उसकी पूरी तफ़सीर भी अल्हम्दु लिल्लाह लिख दी गई है।

और जब कभी क़ुरआन का कोई टुकड़ा (इस मज़मून में) नाज़िल किया जाता है कि तुम (दिल के ख़ुलूस से) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो, तो उनमें के ताक़त वाले आपसे रुख़्सत "यानी न जाने के लिए छुट्टी" माँगते हैं, और कहते हैं, हमको इजाज़त दीजिए कि हम भी यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएँ। (86) वे लोग (निहायत बेग़ैरती के साथ) घर में बैठी औ़रतों के साथ रहने पर राज़ी हो गए और उनके दिलों पर मोहर लग गई, जिससे वे (ग़ैरत या बेग़ैरती को) समझते ही नहीं। (87)	وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ جَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ٥ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ٥

बहाने बाज़ियों की निंदा

उन लोगों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) बयान हो रही है जो वुस्अ़त, ताक़त और क़ुव्वत होते हुए

Maktab E Ashraf

जिहाद के लिये नहीं निकलते, जी चुराते हैं और हुक्मे ख़ुदा सुनकर फिर भी रसूलुल्लाह सल्ल. के पास आकर अपने रुकने की इजाज़त चाहते हैं। उनकी बेहिम्मती (हौसले की कमी) तो देखो कि ये औरतों जैसे हो गये, लश्कर चले गये, ये नामर्द औरतों की तरह पीछे रह गये, जंग के वक़्त बुज़दिल डरपोक और घरों में घुसे रहने वाले और अमन के वक़्त बढ़-चढ़कर बातें बनाने वाले, ये भौंकने वाले कुत्तों और गरजने वाले बादलों की तरह ढोल के पोल हैं। चुनाँचे दूसरी जगह ख़ुद क़ुरआने करीम ने बयान फ़रमाया है कि ख़ौफ़ के वक़्त ऐसी आँखें फेरने लगते हैं जैसे कोई मर रहा हो, और जहाँ वह मौक़ा गुज़र गया तो बातें बनाने और लम्बे-चौड़े दावे करने और डींगें मारने लग जाते हैं। अमन के वक़्त तो मुसलमानों में फ़साद फैलाने लगते हैं और वह लम्बे-चौड़े बहादुरी के ढोल पीटते हैं कि कुछ ठीक नहीं, लेकिन लड़ाई के वक़्त औरतों की तरह चूड़ियाँ पहनकर पर्दे में बैठ जाते हैं, बिल और सूराख़ ढूँढ-ढूँढकर अपने आपको छुपाते फिरते हैं।

ईमान वाले तो सूरत (यानी क़ुरआन) उतरने और ख़ुदा का हुक्म होने का इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन बीमार दिल वाले जहाँ सूरत उतरी और जिहाद का हुक्म सुना बस आँखें बन्द कर लीं। उन पर अफ़सोस है और उनके लिये तबाही लाने वाली मुसीबत है। अगर ये इताअ़त-गुज़ार (हुक्म मानने वाले) होते, अगर इनकी ज़बान से अच्छी बात निकलती, इनके इरादे अच्छे होते और ये ख़ुदा की बातों की तस्दीक़ करते तो यही चीज़ इनके हक़ में बेहतर थी, लेकिन इनके दिलों पर तो इनके बुरे आमाल से मोहर लग चुकी है, अब तो इनमें इस बात की सलाहियत भी नहीं रही कि अपने नफ़े व नुक़सान को ही समझ लें।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ
لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ ع 12

(हाँ) लेकिन रसूल और आपके साथ में जो मुसलमान हैं उन्होंने (इस हुक्म को माना और) अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिए सारी ख़ूबियाँ हैं, और यही लोग कामयाब हैं। (88) अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, वे उनमें हमेशा को रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

मोमिनों की ख़ुसूसियत

मुनाफ़िक़ों की मज़म्मत (बुराई और निंदा) और उनकी आख़िरत में होने वाली दुर्गत बयान फ़रमाकर अब मोमिनों की तारीफ़ और उनकी आख़िरत की राहत बयान हो रही है, कि मोमिन जिहाद के लिये कमर बाँधे रहते हैं। ये जान व माल राहे ख़ुदा में फ़िदा करते रहते हैं। इन्हीं के हिस्से में भलाईयाँ और ख़ूबियाँ हैं, यही फ़लाह (कामयाबी) पाने वाले लोग हैं, इन्हीं के लिये जन्नतुल-फ़िरदौस है और इन्हीं के लिये बुलन्द दर्जे हैं। यही मक़सद हासिल करने वाले, यही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं।

Maktab E Ashraf

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ط سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ○	और कुछ बहाना बनाने वाले लोग देहातियों में से आये ताकि उनको (घर रहने की) इजाज़त मिल जाये, और (उन देहातियों में से) जिन्होंने ख़ुदा से और उसके रसूल से (ईमान के दावे में) बिल्कुल ही झूठ बोला था, वे बिल्कुल ही बैठ रहे, उनमें से जो (आख़िर तक) काफ़िर रहेंगे उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (90)

मजबूरियाँ

यह बयान उन लोगों का है जो वास्तव में किसी शरई उज़्र (मजबूरी) के सबब जिहाद में शामिल न हो सकते थे। मदीने के आस-पास के ये लोग आकर अपनी कमज़ोरी, ज़ईफ़ी, बे-ताक़ती बयान करके अल्लाह के रसूल सल्ल. से इजाज़त लेते हैं कि अगर हुज़ूर उन्हें वाक़ई माज़ूर समझें तो इजाज़त दे दें। यह बनू ग़िफ़ार के क़बीले के लोग थे। इब्ने अ़ब्बास की क़िराअत में 'व जाअलु मुअ़्ज़िरून' है, यानी उज़्र और मजबूरी वाले लोग, यही मायने ज़्यादा ज़ाहिर हैं क्योंकि इसी जुमले के बाद उन लोगों का बयान है जो झूठे थे, ये न तो आये न अपने रुक जाने का सबब पेश किया, न हुज़ूर सल्ल. से रुके रहने की इजाज़त चाही। बाज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि उज़्र पेश करने वाले भी दर असल उज़्र वाले न थे, इसी लिये उनके उज़्र मक़बूल न हुए। लेकिन पहला क़ौल सही है और वही ज़्यादा ज़ाहिर है। वल्लाहु आलम। इसकी एक वजह तो वही है जो हमने ऊपर बयान की, दूसरी वजह यह है कि अ़ज़ाब का वादा भी उनसे हुआ जो बैठे ही रहे।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ط مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ○ۙ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ص تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ○	कम ताक़त लोगों पर कोई गुनाह नहीं, और न बीमारों पर, और न उन लोगों पर जिनको ख़र्च करने को मयस्सर नहीं, जबकि ये लोग अल्लाह और रसूल के साथ (दूसरे अहकाम में) ख़ुलूस रखें, (उन) नेक काम करने वालों पर किसी क़िस्म का इल्ज़ाम (आयद) नहीं, और अल्लाह पाक बड़ी मग़फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (91) और न उन लोगों पर (कोई गुनाह और इल्ज़ाम है) कि जिस वक़्त वे आपके पास इस वास्ते आते हैं कि आप उनको कोई सवारी दे दें और आप (उनसे) कह देते हैं कि मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं जिस पर मैं तुमको सवार कर दूँ, तो वे (नाकाम) इस हालत से वापस चले जाते हैं कि उनकी आँखों से आँसू बहते होते हैं, इस ग़म में कि (अफ़सोस) उनको

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝	ख़र्च करने को कुछ भी मयस्सर नहीं। (92) पस इल्ज़ाम (और पकड़) तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो बावजूद सामान (और ताक़त) वाले होने के (घर रहने की) इजाज़त चाहते हैं, वे लोग (निहायत बेशर्मी से) घर में बैठी औरतों के साथ रहने पर राज़ी हो गये, और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी, जिससे वे (गुनाह व सवाब को) जानते ही नहीं। (93)

Maktab_e_Ashraf

इन पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं

इस आयत में उन शरई मजबूरियों का बयान हो रहा है जिनके होते हुए अगर कोई शख़्स जिहाद में न जाये तो उस पर पकड़ नहीं। पस उन असबाब (कारणों) में से एक क़िस्म तो वह है जो लाज़िम (यानी हर वक़्त साथ जुड़ी) होती है, किसी हालत में इनसान से अलग नहीं होती, जैसे पैदाईशी कमज़ोरी या अंधापन या लंगड़ापन, कोई लूला लंगडा अपाहिज बीमार या बिल्कुल ही बे-ताक़त हो। दूसरी क़िस्म के वे उज़्र होते हैं जो कभी हैं और कभी नहीं, यानी इत्तिफ़ाक़ से पेश आने वाले कारण हैं। जैसे कोई बीमार हो गया, या बिल्कुल फ़क़ीर हो गया, जिहाद के सफ़र के लिये सामान मुहैया नहीं कर सकता, वग़ैरह। पस ये लोग अगर जिहाद में शिर्कत न कर सकें तो इन पर शरई तौर पर कोई पकड़, पूछ, गुनाह या आ़र नहीं। लेकिन इन्हें अपने दिल में सलाहियत और ख़ुलूस रखना चाहिये, मुसलमानों के, दीने ख़ुदा के ख़ैरख़्वाह बने रहें, औरों को जिहाद पर आमादा करें, बैठे-बैठे जो ख़िदमतें मुजाहिदों की अन्जाम दे सकते हों देते रहें। ऐसे नेक लोगों पर इल्ज़ाम और एतिराज़ की कोई वजह नहीं, अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

हवारियों (हज़रत ईसा के साथियों) ने अल्लाह के नबी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि हमें बतलाईये ख़ुदा का ख़ैरख़्वाह कौन है? आपने फ़रमाया जो अल्लाह के हक़ को लोगों के हक़ पर मुक़द्दम करे और जब एक काम दीन का और एक काम दुनिया का आ जाये तो दीनी काम की अहमियत का पूरा लिहाज़ रखे, फिर फ़ारिग़ होकर दुनियावी काम को अन्जाम दे। एक बार क़हत-साली (सूखा पड़ने) के मौक़े पर लोग नमाज़े इस्तिस्क़ा (बारिश होने की दुआ़ के लिये पढ़े जाने वाली नमाज़) के लिये मैदान में निकले उनमें हज़रत बिलाल बिन सअ़द भी थे, आपने खड़े होकर अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ व सना बयान की फिर फ़रमाया ऐ मौजूद हज़रात! क्या तुम यह मानते हो कि तुम सब ख़ुदा के गुनाहगार बन्दे हो? सबने पूरा इक़रार किया। अब आपने दुआ़ शुरू की कि परवर्दिगार! हमने तेरे कलाम में सुना है कि नेक काम करने वालों पर कोई राह नहीं, हम अपनी बुराईयों के इक़रारी हैं, पस तू हमें माफ़ फ़रमा, हम पर रहम फ़रमा, अपनी रहमत से बारिशें बरसा। अब जैसे ही आपने हाथ उठाये और आपके साथ ही सबने, रहमते ख़ुदावन्दी जोश में आई और उसी वक़्त झूम-झूमकर रहमत की बदलियाँ बरसने लगीं।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. का बयान है कि मैं हुज़ूर सल्ल. की 'वही' लिखता था, सूरः बराअत उतर रही थी, मैं उसे भी लिख रहा था, मेरे कान में क़लम लगा हुआ था, जिहाद की आयतें उतर रही थीं, हुज़ूर सल्ल. मुन्तज़िर थे कि देखें अब क्या हुक्म नाज़िल होता है कि एक नाबीना (अंधे) सहाबी आये और

कहने लगे- हुज़ूर! मैं जिहाद के अहकाम इस अंधेपन में कैसे बजा ला सकता हूँ? उसी वक़्त यह आयत उतरी। फिर उनका बयान होता है जो जिहाद की शिर्कत के लिये तड़पते हैं मगर क़ुदरती असबाब से मजबूर होकर दिल के न चाहते हुए भी रुक जाते हैं। जिहाद का हुक्म हुआ, रसूलुल्लाह सल्ल. का ऐलान हुआ, मुजाहिदों का लश्कर जमा होना शुरू हुआ तो एक जमाअ़त आई जिनमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल बिन मुक़रिन मुज़नी वग़ैरह थे, उन्होंने कहा कि हुज़ूर! हमारे पास सवारियाँ नहीं, आप हमारी सवारियों का इन्तिज़ाम कर दें, ताकि हम भी राहे ख़ुदा में जिहाद करने का और आपके साथ चलने का शर्फ़ हासिल करें। आप सल्ल. ने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम मेरे पास तो एक भी सवारी नहीं, ये नाउम्मीद होकर रोते पीटते ग़मज़दा और रंजीदा लौटे, इन पर इससे ज़्यादा भारी बोझ कोई न था कि ये उस वक़्त आपके साथ जाने और जिहाद की सआ़दत से मेहरूम हो गये, और औ़रतों की तरह उन्हें यह मुद्दत घरों में गुज़ारनी पड़ेगी, न उनके पास ख़ुद ही कुछ है न कहीं से कुछ मिलता है। पस अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर उनकी तसल्ली कर दी। यह आयत क़बीला मुज़ीना की शाख़ बनी मुक़रिन के बारे में उतरी है।

मुहम्मद बिन कअ़ब रह. का बयान है कि ये सात आदमी थे बनी अ़मर के सालिम बिन औ़फ़, बनी वाक़िफ़ के हरमी इब्ने अ़मर, बनी माज़िन के अ़ब्दुर्रहमान बिन कअ़ब, बनी मुअ़ल्ला के फ़ज़्लुल्लाह, बनी सलमा के अ़मर बिन अ़समा और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर मुज़नी, और बनू हारसा के उलिय्या बिन ज़ैद। बाज़ रिवायतों में कुछ नामों में हेर-फेर (अदल-बदल) भी है, इन्हीं नेक-नीयत बुज़ुर्गों के बारे में अल्लाह के रसूल, रसूलों के सरताज सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है कि ऐ मेरे मुजाहिद साथियो! तुमने मदीने में जो लोग अपने पीछे छोड़े हैं उनमें वे भी हैं कि तुम जो ख़र्च करते हो, जिस मैदान में चलते हो, जिहाद करते हो, सब में वे भी सवाब के शरीक हैं। फिर आप सल्ल. ने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

एक और रिवायत में है कि यह सुनकर सहाबा रज़ि. ने कहा वे बावजूद अपने घरों में रहने के सवाब में हमारे शरीक हैं? आप सल्ल. ने फ़रमाया हाँ! इसलिये कि वे माज़ूर हैं, अपनी मजबूरी के कारण रुके हैं। एक और रिवायत में है कि उन्हें बीमारियों ने रोक लिया है।

फिर उन लोगों का बयान फ़रमाया जिन्हें वास्तव में कोई उज़्र (मजबूरी) नहीं, मालदार हट्टे-कट्टे हैं, लेकिन फिर भी हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में आकर बहाने बनाकर जिहाद में साथ नहीं देते, औ़रतों की तरह घर में बैठ जाते हैं, ज़मीन पकड़ लेते हैं (यानी ज़मीन में पसर गये उठने का नाम ही नहीं लेते)। फ़रमाया उनके बुरे आमाल की वजह से उनके दिलों पर अल्लाह की मोहर लग चुकी है, अब वे अपने भले-बुरे के इल्म से भी कोरे (ख़ाली और ग़ाफ़िल) हो गये हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह पारा नम्बर दस की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

Maktab E Ashraf

इस तफ़सीर में इस्तेमाल किये गये कुछ अलफ़ाज़ के मायने

अबा:- लम्बा कोट, चौग़ा, जुब्बा।

अज़लः- शुरू, मख़्लूक़ की पैदाईश का दिन। वह समय जिसकी कोई शुरूआ़त न हो।

अ़जायबातः- अनोखी या हैरत-अंगेज़ चीज़ें।

अ़ज़ाबः- गुनाह की सज़ा, तकलीफ़, दुख, मुसीबत।

अज्रः- नेक काम का बदला, सवाब, फल।

अ़क़ीदाः- दिल में जमाया हुआ यक़ीन, ईमान, एतिबार, आस्था आदि। इसका बहुवचन **अ़क़ीदे** और **अ़क़ायद** आता है।

अ़दमः- नापैदी, न होना।

अबदः हमेशगी। वह ज़माना जिसकी कोई इन्तिहा न हो।

अय्यामे-तशरीक़ः- बक़र-ईद के बाद के तीन दिन।

अमानतः- सुपुर्द की हुई चीज़।

अमीनः- अमानतदार।

अ़लीमः- जानने वाला, अल्लाह तआ़ला का एक सिफ़ाती नाम।

अहकामः- **हुक्म** का बहुवचन, मायने हैं फ़रमान, इरशाद, शरई फ़ैसला आदि।

आयतः- निशान, क़ुरआनी आयत का एक टुकड़ा, एक रुकने की जगह का नाम जो गोल दायरे की शक्ल में होती है।

आबख़ोराः- पानी पीने का छोटा सा मिट्टी का बरतन।

आख़िरतः- परलोक, दुनिया के बाद की ज़िन्दगी।

इस्मे आज़मः- अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक बड़ाई वाला नाम, इसके ज़रिये दुआ़ की क़बूलियत का अवसर बढ़ जाता है।

इबरानीः- यहूदियों की भाषा, किनआ़न वालों की ज़बान, इब्र की औलाद यानी इस्राईली।

इल्लिय्यूनः- बड़े और ऊँचे दर्जे के लोग, जन्नती।

इजमाः- जमा होना, एकमत होना, मुसलमान उलेमा का किसी शरई मामले पर एकमत होना।

ईलाः- शौहर का बीवी के पास चार महीने या इससे ज़्यादा समय के लिये न जाने की क़सम ले लेना।

इस्तिग़फ़ारः- तौबा करना, बख़्शिश चाहना।

उज्रः- बहाना, हीला, सबब, हुज्जत, एतिराज़, पकड़, माफ़ी, माफ़ी चाहना, इनकार।

एहरामः- बिना सिली एक चादर और तहबन्द। मुराद वह कपड़ा और लिबास है जिसको पहनकर

Maktab E Ashraf

हज और उमरे के अरकान अदा किये जाते हैं।

कहानतः- ग़ैब की बात बताना, फ़ाल कहना, भविष्यवाणी करना।

कफ़्फ़ाराः- गुनाह को धो देने वाला, गुनाह या ख़ता का बदला, क़ुसूर का दंड जो ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से मुक़र्रर है। प्रायशचित।

क़ियासः- अन्दाज़ा, अटकल, जाँच।

क़िसासः- बदला, इन्तिक़ाम, ख़ून का बदला ख़ून।

कूज़ाः- डोंगा।

ख़ल्क़ः- मख़्लूक़, सृष्टि।

ख़ालिक़ः- पैदा करने वाला। अल्लाह तआ़ला का एक सिफ़ाती नाम।

ख़ियानतः- दग़ा, धोखा, बेईमानी, बद्-दियानती, अमानत में चोरी।

ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ः- आ़जिज़ी करना, गिड़गिड़ाना, सर झुकाना, विनम्रता इख़्तियार करना।

ख़ुतबाः- तक़रीर, नसीहत, संबोधन।

ख़ुलाः- बीवी का कुछ माल वग़ैरह देकर अपने पति से तलाक़ लेना।

ग़ज़्वाः- वह जिहाद जिसमें ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्ल. शरीक हुए हों। दीनी जंग।

ग़ैबः- ग़ैर-मौजूदगी, पोशीदगी की हालत, जो आँखों से ओझल हो। जो अभी भविष्य में हो।

ज़माना-ए-जाहिलीयतः- अ़रब में इस्लाम से पहले का ज़माना और दौर।

ज़िरहः- लोहे का जाली दार कुर्ता जो लड़ाई में पहनते हैं। आजकल बुलेट-प्रूफ़ जाकेट।

जिहादः- कोशिश, जिद्दोजहद, दीन की हिमायत के लिये हथियार उठाना, जान व माल की क़ुरबानी देना।

ज़िनाः- बदकारी, हराम कारी।

जिज़्याः- वह टैक्स जो इस्लामी हुकूमत में ग़ैर-मुस्लिमों से लिया जाता है। बच्चे, बूढ़े, औ़रतें और धर्मगुरु इससे बाहर रहते हैं। इस टैक्स के बदले हुकूमत उनके जान माल आबरू की सुरक्षा करती है।

ज़िहारः- एक क़िस्म की तलाक़, फ़िक़्ह की इस्तिलाह में मर्द का अपनी बीवी को माँ बहन या उन औ़रतों से तशबीह देना जो शरीअ़त के हिसाब से उस पर हराम हैं।

टट्टीः- बाँस का छप्पर, पर्दा खड़ा करना, क़नात।

तक़दीरः- वह अन्दाज़ा जो अल्लाह तआ़ला ने पहले दिन से हर चीज़ के लिये मुक़र्रर कर दिया है। नसीब, क़िस्मत, भाग्य।

तर्काः- मीरास, मरने वाले की जायदाद व माल।

तौहीदः- एक मानना, ख़ुदा तआ़ला के एक होने पर यक़ीन करना।

तस्दीक़ः- सच होने की पुष्टि करना, साबित करना।

तकज़ीबः- झुठलाना, झूठ बोलने का इल्ज़ाम लगाना।

तरदीदः- किसी बात को रद्द करना, खण्डन करना।

तहरीफ़ः- बदल देना, तहरीर में असल अलफ़ाज़ बदल कर और कुछ लिख देना, या तर्जुमा करने में जान-बूझकर ग़लत मायने करना।

तिलावतः- पढ़ना, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना।

तजल्लीः- पर्दा हटना, ज़ाहिर होना, रोशनी, चमक, उजाला आदि।

तरग़ीबः- शौक़, इच्छा, किसी काम के करने पर उभारना।

तवाफ़ः- अल्लाह के घर का चक्कर लगाना।

तमत्तोअ़, इफ़राद, किरानः- ये हज की क़िस्में हैं।

तावीलः- शरह, व्याख्या, बयान, बचाव की दलील, ज़ाहिरी मतलब से किसी बात को फेर देना।

दारुल-हरबः- वह देश जहाँ मुसलमानों का जान, माल और धर्म सुरक्षित नहीं।

दारुल-अमनः- वह मुल्क जहाँ मुसलमानों को अमन-अमान हासिल है।

दारुल-इस्लामः- वह देश जहाँ इस्लामी हुकूमत हो।

दियतः- ख़ून की क़ीमत, वह माल जो मक़्तूल के वारिस क़ातिल से लें।

नफ़्ख़ः- फूँकना, फूँक मारना।

नफ़्ख़ा/नफ़्ख़ा-ए-सूरः- वह सूर जो क़ियामत के दिन हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये फूँका जायेगा।

नस्ख़ः- तरदीद, निरस्त करना।

निफ़ाक़/मुनाफ़क़तः- ज़ाहिर में दोस्ती अन्दर में दुश्मनी। बिगाड़।

नुबुव्वतः- नबी होना, पैग़म्बरी।

नासिख़ः- मिटाने वाला, निरस्त करने वाला।

पेशवाः- रहबर, सरदार, अगुवाई करने वाला।

पाराः- टुकड़ा, हिस्सा।

फ़िदयाः- नक़द मुआ़वज़ा, ख़ून बहा, माल या रुपया जिसे देकर छुटकारा हो जाये।

फ़िक़ाः- इस्लामी क़ानून। शरीअ़त के अहकाम की मालूमात।

फ़र्ज़े-ऐनः- लाज़िमी और ज़रूरी काम, ज़रूरी फ़र्ज़।

फ़र्ज़े-किफ़ायाः- वह फ़र्ज़ और दायित्व जो चन्द आदमियों के अदा करने से सब की तरफ़ से अदा हो जाये जैसे नमाज़े जनाज़ा। अगर कोई भी उसको अदा न करे तो सब के सब गुनाहगार होंगे।

फ़ालः- शगुन, ग़ैब की बात मालूम करना।

बैतुल-मालः- इस्लामी सरकार का ख़ज़ाना।

बरगुज़ीदाः- चुना हुआ, मुन्तख़ब, ख़ास किया हुआ, पसन्दीदा।

बुराक़:- वह जन्नती सवारी जिस पर सवार होकर हज़रत मुहम्मद सल्ल. मेराज की रात आसमानों के सफ़र पर तशरीफ़ ले गये।

बेसत:- रिसालत, पैग़म्बर का ज़माना (ख़ास कर हज़रत मुहम्मद सल्ल. का ज़माना), पैग़म्बर का भेजा जाना।

बिद्अ़त:- दीन में कोई नई बात या नई रस्म निकालना। नया दस्तूर, नई रस्म।

बैअ़त:- मुरीद बनना, फ़रमाँबरदारी का अ़हद।

बर्ज़ख़:- मरने के बाद से क़ियामत तक की ज़िन्दगी, आड़, पर्दा।

बातिल:- झूठ, बेअसल, नाहक़, ग़लत वग़ैरह-वग़ैरह।

मग़फ़िरत:- बख़्शिश, निजात, छुटकारा।

मोजिज़ा:- वह काम जो इनसानी अ़क़्ल व सोच और ताक़त से बाहर हो। चमत्कार, आ़जिज़ कर देने वाली चीज़, नबी के द्वारा ज़ाहिर होने वाली कोई ख़िलाफ़े मामूल बात।

मन्सूख़:- रद्द किया गयाा, निरस्त किया गया, छोड़ दिया गया।

मुस्तहब:- पसन्दीदा। इबादात में वह फ़ेल जिसे नबी करीम सल्ल. ने पसन्द फ़रमाकर ख़ुद किया हो या उसका सवाब बयान फ़रमाया हो।

मुबाह:- जायज़, रवा, वैध, दुरुस्त, हलाल।

मक्रूह:- नापसन्दीदा, बुरा। वह बात जो बाज़ इमामों के नज़दीक हलाल और बाज़ के नज़दीक नाजायज़ हो।

मरवी:- रिवायत किया गया, बयान किया गया।

रिवायत:- किसी बात की नक़ल, बयान।

रावी:- बयान या रिवायत करने वाला।

माज़िरत:- उज़्र, बहाना, हीला।

मन्न व सलवा:- वह खाना जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लश्कर बनी इस्राईल पर मुल्क शाम के जंगल में नाज़िल हुआ था।

मेहशर:- क़ियामत के दिन इकट्ठा होने की जगह, क़ियामत।

मीरास:- मरने वाले का छोड़ा हुआ माल व जायदाद जो उसकी तरफ़ से हक़दारों को मिलती है।

मसाईल:- पूछी गयी बात, दीनी बात, इसका एक वचन मसला है।

मुता:- एक निर्धारित वक़्त के लिये निकाह करना। (अब यह जायज़ नहीं रहा)

मबऊस:- भेजा हुआ, उठाया हुआ।

मोहकम:- मज़बूत, स्थिर, पायदार, मुस्तक़िल, पक्का।

मुबाहला:- किसी विवादित मसले को अल्लाह तआ़ला पर छोड़ते हुए बद-दुआ़ करना कि जो झूठा हो वह बरबाद हो जाये।

मुलाअ़ना:- एक दूसरे पर लानत करना।

Maktab E Ashraf

Maktab E Ashraf

रजमः- संगसारी, पत्थर मार-मारकर हलाक करना।

रहबानियतः- संन्यास, दुनिया से नाता तोड़ लेना, अलग-थलग हो जाना।

रज़ि. :- "रज़ियल्लाहु अ़न्हु" का मुख़्तसर, मायने हैं "अल्लाह उनसे राज़ी हो" यह एक दुआ़ का कलिमा है जो सिर्फ़ रसूले पाक के सहाबा के लिये इस्तेमाल होता है।

रह. :- "रह्मतुल्लाहि अ़लैहि" यह एक दुआ़ का कलिमा है जो मरहूम बुज़ुर्गाने दीन के साथ लिखा और पढ़ा जाता है। मायने हैं "उस पर अल्लाह की रहमत हो"।

रिसालतः- पैग़ाम पहुँचाना, दूत का फ़र्ज़ निभाना।

लिआ़नः- एक दूसरे पर लानत करना। शौहर का अपनी बीवी पर ज़िना की तोहमत लगाना, फिर काज़ी के सामने अपने सच्चा होने पर चार बार क़सम खाना और पाँचवीं बार कहना कि अगर मैं झूठा हूँ तो मुझ पर अल्लाह की लानत हो। इसी तरह औ़रत का क़सम खाना। उसके बाद निकाह टूट जाता है।

लौहे-महफ़ूज़ः- वह तख़्ती जिस पर ख़ुदा तआ़ला ने दुनिया में होने वाले हर काम के बारे में शुरूआ़त से लेकर इन्तिहा तक लिख रखा है, और उसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता।

लब्बैकः- हाज़िर हूँ, मौजूद हूँ।

वहीः- ख़ुदाई पैग़ाम, अल्लाह की किताब, वे अहकाम या पैग़ाम जो नबियों पर नाज़िल होते थे।

वजूदः- होना, ज़िन्दगी, जिस्म, पैदाईश, ज़ाहिर होना।

वस्वसा/वस्वासः- दिल में आने वाला बुरा ख़्याल, शुब्हा, डर।

वअ़ज़ः- धार्मिक तक़रीर, मज़हबी नसीहत, धार्मिक बातों का बयान करना।

वरसाः- मरने वाले का माल, तर्का।

विरासतः- मीरास, मरने वाले का छोड़ा हुआ माल।

वली/सरपरस्तः- संरक्षक।

वल्लाहु आलमः- और अल्लाह ज़्यादा जानता है।

वाजिबः- दीन का वह रुक्न जिसको बग़ैर उज़्र के अदा न करने वाला गुनाहगार होता है। ज़रूरी और लाज़िमी।

शक़्क़ुल-क़मरः- चाँद का फटना। हुज़ूरे पाक सल्ल. का एक मोजिज़ा।

शरीअ़तः- क़ानूने मुहम्मदी जो क़ुरआन के मुताबिक़ है। सीधा रास्ता।

शिर्कः- अल्लाह का साझी बनाना।

शाने नुज़ूलः- क़ुरआनी आयत या सूरत के उतरने का मौक़ा, उतरने का सबब।

शारेअ़ः- शरीअ़त लाने वाला, पैग़म्बर।

सदक़ाः- दान, ख़ैरात।

सूरः- सींग की शक्ल की एक चीज़ जिसको फ़रिश्ता इस्राफ़ील इस दुनिया को फ़ना करने के लिये फूँकेगा।

Maktab E Ashraf

सवाबः- नेक काम का बदला जो दूसरी दुनिया में मिलेगा। इनाम, भलाई।

सूरः/सूरतः- क़ुरआन मजीद का एक हिस्सा, एक अध्याय।

सलीबः- ईसाईयों का पवित्र निशान, सूली, एक ख़ास शक्ल की लकड़ी का निशान जिस पर लटका कर पुराने ज़माने में मुजरिमों को हलाक करते थे।

सल्ल. :- "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" का मुख़्तसर, यह एक दुआ का कलिमा है जो पैग़म्बरे इस्लाम के नाम के साथ लिखा और पढ़ा जाता है। मायने हैं "उन पर अल्लाह का दुरूद व सलाम हो"।

सुन्नतः- वह तरीक़ा जिस पर रसूलुल्लाह सल्ल. और सहाबा किराम ने अ़मल किया हो। तरीक़ा, आ़दत।

सहीफ़ाः- किताब, रिसाला, पन्ना, लिखा हुआ पेज। छोटी किताब जो कुछ नबियों पर नाज़िल हुई। इसका बहुवचन **सहीफ़े** आता है।

हुज्जतः- दलील, बहस, तकरार।

हदः- सज़ा जो इस्लामी शरीअ़त के मुताबिक़ हो। इन्तिहा, बहुत ज़्यादा।

हिजरतः- काफ़िरों के अत्याचारों से तंग आकर मुसलमानों का अपने वतन को हमेशा के लिये छोड़ना। रसूलुल्लाह सल्ल. का मक्का से मदीना तशरीफ़ ले जाना.

हिदायतः- नेक राह, रहनुमाई, सही रास्ता दिखाना।

हकीमः- दाना, अ़क्लमन्द, अल्लाह तआ़ला का एक सिफ़ाती न..

हसब-नसबः- माँ-बाप का ख़ानदानी सिलसिला।

हरामः- हलाल के विपरीत, नाजायज़, ख़िलाफ़े शरीअ़त, बदकारी।

हजूरे-अस्वदः- ख़ाना काबा की दीवार में फ़िट वह काला पत्थर जिसको हाजी साहिबान बोसा देते हैं।

हश्र व नशरः- ज़िन्दा होकर एक स्थान पर जमा होना।

हक़ः- सच्चाई, हक़ीक़त, सही, ठीक वग़ैरह-वग़ैरह।

हुरूफ़े-मुक़त्तआ़तः- वे हुरूफ़ जो क़ुरआन पाक की बाज़ सूरतों के शुरू में आये हैं। जो अलग-अलग पढ़े जाते हैं जैसे- अलिफ़-लाम-मीम, हा-मीम आदि। उनके मायने मालूम नहीं।

हुदूदः- धार्मिक नियम।

और ज़्यादा अलफ़ाज़ और मायने के लिये देखें

इसी तफ़सीर की पहली जिल्द के आख़िरी पृष्ठ।